प्रकाशक :
[illegible]
[illegible]

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मूल्य १२ रु०

छप्पय

जुरजोधन जांणियौ, पाट हथणापुर बैठू ।
एहड़ी कद जांणतौ, जाय जल़ भीतर पैंठू ॥
सह कौरव लै साथ, कियौ भारथ मुदा सू ।
मन रीस्ही मन माह, मुऔ भीम री गदा सू ॥
त्रयलोक नाथ होतब तणा, अलप करै कुण अख्खरां ।
कवि 'ओप' अग्यांनी नर कहै, नौवां री तेरह करा ॥

—ओपौ आढौ

संस्था की ओर से—

चौपासनी सिक्सा समिति, राजस्थान मे सिक्सा रै कामा मैं ठेठ सूं लगाथ नै आज ताई आगीवाण रैवती आई है। पछिमी राजस्थान मे जठै "अणभणिया घोडा चढै भणिया मागै भीख" ईज सईका ताई नारो रियौ उठै आ समिति आपरा लगौलग जतना सूं ग्यौन रा दीपईज नी चासियौ, घर घर मैं ग्यान री गगा नै भी पुगती कीवी। राजस्थान रै पुराणै इतिहास, सस्क्रति नै समाज रा मान—मूल्या नै जीवतां राखण खातर नै नवी पौध नै राजस्थान री जूनी सभ्यता नै समझणै, परखणै, अजमांणै ताई 'राजस्थांनी शोध सस्थान' री थरपना कीवी। घणा अणमोल ग्रथा नै भेला किया। पछै सिक्सा समिति रा जाग्रत लोगा साहित्य इतिहास नै राजस्थानी भासा री रक्सा नै बढोतरी रै खातर 'राजस्थानी सबद कोस" री घणी जरूरत समझी। आज रै विग्यान सू खवा—ठौरी करता समै मैं अैडा लूठा कामा मै समै, स्रम, धीरज नै धन री घणी जरूरत पडै। घणा फोडा देखणा पडै घणी अवकायां झेलणी—उठावणी पड़ै। राजस्थानी सबद कोस रा काम मैं भी अैडा घणा उतार—चढाव आया, पण जठै चाह उठै राह। सो, कोस रै छपणै री काम डकरां भरता रथ री भात चालतौ ईज रियौ।

राजस्थानी सबद कोस रा चौथा खड री प्रथम जिल्द रौ साहित्य ससार घणौ, आघमान कियौ इण माथै म्हनै घणौ मोद है नै आज उणी लडी मैं औ "व" आखर री चौथा खड री दूजी जिल्द साहित्य रा पिंडता रै आगै अरपण करतां म्हारौ मन हरख सूं बासां उछलै है।

आ, सवा सोलै आना खरी वात है कै रुपिया रौ काम रुपिया सूंईज सरै। कोस जैंडा ठाढा कामा मैं अणूतौ द्रव चायीजै। राज सरकार नै केंद्र सरकार भरपूर मदत करै जद भी कोस कारयालय मे धनाभाव इज रेवै इण अभाव नै मेटण ताँई घणा जुगाड बैठावणा पडै। समिति रा सदस्य गाढी भागा—दौड करै, जद जाय नै कठैई कोस री जिल्द छपावण रौ जोग वणै। इण खातर समिति नै आपरी बीजी योजनावां मैं कटौतरी भी करणी पडै। पण, फेर भी, कोस री छपाई रै काम मे लाची नी आवण देवा, इण कांम री मदत खातर राजस्थान राज रा राज्यपाल महामहिम जोगेंद्रसिंहजी, राजस्थान रा मुख्य मत्री स्रीमान् हरिदेव जोसी, सिक्सा आयुक्त स्रीमान् जगन्नाथसिंहजी मेहता, जोधपुर रा जिलाधीस स्रीमान् क्रस्णकुमारजी भटनागर रा म्हैं घणा गुण माना जिका जद भी कोस रै छपण रौ गाडौ अरथाभाव रा कीच मैं कलीजतौ दीठौ म्हारी मदत कराय नै चीला माथै दौडतौ करता रिया। अै महानुभाव इण काम री कीमत आकी, पंरख कीवी नै साधना रौ अभाव टालियौ।

राजस्थानी साहित्य नै सस्क्रति रा खभ ठोक पुजारी नै साचा हेतालु राणी लक्समीकुमारीजी चूडावत, राजस्थान रा मोवी पूत, साहित्य रा कोडीला सम्रथ मानवी लक्समीमलजी सिंघवी, सरूगेत सू ईज कोस रा मेढी गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर रै सहयोग री स्मरण नी करणौ क्रतघणता ईज कहीजै। अै लोग देस, समाज नै आपरा घर घराऊ कांमा मैं समै काढ नै, कोस रै काम खातर सदा उछाव रै साथै त्यार मिल्या। राजस्थानी रा जाणीता अर मानीता साहित्यकार स्री कोमलजी कोठारी, स्री मरुधरजी अदुल, स्री कपूरचन्दजी कुलिस, स्री रेवतदानजी चारण नै स्री सोहनदानजी चारण रै प्रति आभार परगट करणौ म्हारौ धरम है, आ लोगा री नेक सलाह सू काम नै आगै वधावण मैं घणी मदत मिली है। कोस रा सगला बीजा हेत—प्रीत पालणिया री भी म्है घणैमान आभार मानू।

सगला सू घणौ तौ म्हनै औ हरख है कै इण साल कोस रा सपादक स्री सीतारामजी लालस री तपस्या नै जोधपुर विस्वविद्यालय आकी अर साहित्य रा इण ग्यानी गौरख नै डी॰ लिट् री मानद पदवी देय नै साहित्यसाधका रौ उछाह वधायौ। राजस्थांनी साहित्य रा प्रेमिया नै समिति रा सदस्या सारा खातर स्री लालस रौ औ मान गौरव री वात है।

इण जिल्द री छपाई रै काम नै भली तरै समै माथै पूरौ करावण खातर स्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस रा प्रबधक स्री हरिदत्तजी थानवी रौ भी म्हैं आभार मांनू। सिक्सा समिति रा सदस्या नै तौ रग है ईज जिका इण काम री महत्ता नै समझ बरोबर मदत करता रेवै।

कागद रै मूघा पणै नै छपाई री दरा री वढोतरी रै कारण इण खड री कीमत ६२) रिपिया राखणी पडी है।

चौपासनी शिक्षा समिति,
बसत पचमी सवत् २०३२

—नारायण सिंह मांणकलाव
सचिव
उप समिति राजस्थांनी सबद कोस, जोधपुर.

अपनी बात

राजस्थानो शब्द कोश के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द का देश - विदेश के विद्वानो ने स्वागत, सम्मान कर हमारा उत्साह बढाया है। इससे हमारा उत्साह ही नही बढा, अपितु कार्य की महत्ता और गुरुता का बोध भी हुआ है। सभी जानते हैं कि कोश जैसे दुष्कर और अभिनव कार्य मे अनेक प्रकार के बाधा - व्यवधान उपस्थित हुआ हो करते है, पर साहसी और लग्नशील व्यक्ति बाधाओं के बारिधि को बिना विचलित हुए पार भी करते है। हमने भी कोश के प्रकाशन और मुद्रण के व्यवधानो के समक्ष बिना अवनत हुए आगे और आगे ही बढना अपना लक्ष्य रखा। फलतः कोश के चतुर्थ खण्ड की द्वितीय जिल्द आज हम विद्वानो को समर्पित करने मे समर्थ हुए हैं।

आशा करते हैं कि विद्वत् समाज कोश के पूर्व खण्डो की भाँति ही इस जिल्द का भी स्वागत कर हमारा उत्साह - वर्द्धन करेंगे।

इस अवसर पर मुझे यह जानकारी देते हुए भी अतीव गर्व, और आल्हाद की अनुभूति हो रही है कि जोधपुर विश्वविद्यालय ने हमारे विद्वान् संपादक स्री लालस को इस अवधि मे मानद डी. लिट् की उपाधि से विभूषित किया है। चौपासनी शिक्षा समिति, उप समिति राजस्थानी शब्द कोश तथा भारती के उपासक सभी लोगो के लिए यह सम्मान गौरव का प्रतीक है। इस प्रकार शिक्षा समिति तथा डॉ. लालस की ऋषि तुल्य साधना फलवती हुई है।

मुझे विश्वास है कि शिक्षा समिति के लग्नशील सदस्यो, डा. लालस और राजस्थान सरकार के सतत सहयोग से यह कार्य यथा - समय संपन्न हो सकेगा।

प्रह्लादसिंह
अध्यक्ष
उप समिति राजस्थानी शब्द कोश
व
कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर.

दिनांक ५-२-१९७६

॥ श्री ॥

* निवेदन *

— दूहा सोरठा —

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढो होय, साच अमर संसार में । कैतो घोवो कोय श्री सेत्रट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरतो मे साचो धरम । इण सू पूरै आस सकल मनोरथ सावरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईश्वर किरपा सू उदय ॥४॥
खत ऊजळा सदेश, उदयराज ऊजल अखै । दीपै वारा देश, ज्यारा साहित जगमगै ॥५॥

भारत ससद मे सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावा मानी गई उणा रे सामल राजस्थानी भाषा ने नही मानी तो कुदरती तौर सू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रो मे शुरू हुवो।

राजस्थानी रै विरोध मे अक्सर आ वात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नही हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है। श्री सीताराम जी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सू मेंनत सू कोश रो काम शुरु कियो ने इण मे खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा वावत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहव वार एटला पोकरण ने अरज की। इणाँ कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवा। सीतारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दीयो और म्है दोनू तारीख १-५-५१ सू सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपिया मे लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पोकरण ठाकुर साहव री सहायता वद हो गई, इण सू सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम वद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री लगन ही। म्है करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ मे कोश मे सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जवाव उणा तारीख २९-६-५६ रा कागद मे म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री धनोपसिहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे मे देरी हुई। उणा रे स्वर्गवास होणे रे वाद मे नवम्वर रा अन्त मे ने दिसम्वर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत वावत वातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणाँ री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सू सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दियो क्योंकि जद उणा रो तवादलो जोधपुर मे हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दो की स्लिप कोपियाँ पेली वणी हुई ही। इणतरे सव शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणा अक्षरवार रजिस्टर मे लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हे पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो।

इणरे वाद प्रेस कापी वणावण रो काम चालू हुवो। उणरे खरचे रो प्रवन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड दरवार सूं श्री नीवांज ठाकुर साहव सूं रुपिया री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रवन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासनी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध सस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण सस्थान मे काम करण लागा।

इस कोश ने तैयार कैरावण मे व्युत्पति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मतद ही इण वास्ते वैकूंठवासी विदवान ने घणा घन्यवाद देवा हा। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजव हो —

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी उज्जवल यन्त्रो (मेकेनिकल) के वल सचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य मव प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योकि इन्होने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश विविध भापाओ के वल पर यह कार्यभार उठाया है। वीच वीच मे हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने मे श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने महायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से सतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशमा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एम० एलन जो ससार री करीब चालीस भापाओ रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भापा शास्त्री है वे राजस्थानी भापा रे ध्वनि विज्ञान सवधी जाच वो शोध रो काम सारु सन् १६५२ मे राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा ने भापा रे सिलसिले मे म्हारे कने घणा आता उणाने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्माह वधायो उणा री सम्मति नीचे मुजव है —

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied

Sd. W S Allen M A, P H d.
Professor Comprative Philology
In the University of Cambridge

कोश दोय दातार राजपूत सरदारो री रुपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो वणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण वावत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजोया वो अठे दिया जावे है इण मे दोनूं सरदारा रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो मे तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी मे

कोम मरू वाणरी सुणे बण्यो नह किण सू लाख शब्दो तणो वडो लेखो गया मूवात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू लागता पथ घन छोड लाढा ॥२॥
मेव साहित्य ही रहे ससार मे, सुजसफल लगावे धणी सरसे । गिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनो दिन कितां सनमान दरसे ॥३॥
पांण मरू वांन है प्रात रो परपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो । रखो नह पढण मे भावखा प्रांत री, निरक्षता जाय है प्रात नीचो ॥४॥
वणाई चारणो व्याकरण विधोविध, वणेगो कोश ही लाखसवदो । 'सीत'रो परिश्रम अथग फलियो सिरे, रेटियो'उदय'मिल सकल सवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत घन खर्च कियो । पडता लाच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति मे हजारों खरचनै, दाद उजल 'उदे' देम दीधी ॥७॥
चारणो दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह वीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने वनाया वस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदीयापुर रान के कोप बल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानींसिह स्यामसिह रोडला के कोप हित कोप बने दानी घन घर के ।
प्रात की प्रवल भापा प्रतिष्ठित परपरा विवुधन दीनमान वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं मे रखी मही होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
डूवत है मात्र भापा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है ।
जीवित उठैगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेमे जिशाला है ।

Compared by
Sd Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्जवल
Sd Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur

संकेत और चिह्न

साकेतिक रूप	पूर्ण नाम	साकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अ०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्र०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वतमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	स०	सस्कृत
गो० रा०	गोरादि	स० उ०	सज्ञा उभयलिंग
चौ०	चीनी भाषा	स० पु०	सज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	स० स्त्री०	सज्ञा स्त्रीलिंग
डि०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गो खिड़ियो
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रा०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
☆	शब्द के आगे	—	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
’	शब्द के अक्षरों के बीच मे सिर पर	—	यह ध्वनी-लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहा आता है।
—	शब्द के नीचे	—	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'. .'	शब्द के दोनो ओर सिरो पर	...	व्यक्ति वाचक सज्ञा का सूचक (इनवर्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोष	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधान माळा	उदयराम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदान लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	वीरभाण रतनू उदयराम बारहठ
ऐ० जै० का० स०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	सपा. अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयराम बारहठ
का० दे० प्र०	कान्हडदे प्रबंध	पद्मनाभ
गी० रा०	गीत रामायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढो
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० ना० मा०	डिंगल नाम माला	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियाण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्र०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	सपा० अगरचन्द नाहटा
ना० मा०	नांम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना० द०	नागदमण	सांइया झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियो
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्र०	पीरदान ग्रन्थावळि	पीरदान लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिमपू०,	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि० द्र०	"	"
मा० कां० प्र०	माधवानल काम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

मा० म०	मारवाड मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरा	मीरा बाई	मीरां
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदान कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकास	किसनो आढो
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जग्गो खिडियौ
र० हमीर	रतनाहमीर री वारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै० छंद	राउ जैतसी रौ छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रा० रा०	राम रासौ	माधौदास दधवाडियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीर मांण रतनू
रा० व० वि०	राठौड वंसरी विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह I	सम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगल	हमीरदान रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालजी कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	संपादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनय कुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० सं० सा०	विष्णोई संप्रदाय और साहित्य	डॉ हीरालाल माहेश्वरी
वि० स०	विड़द सिणगार	कविराजा करणीदांन कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदान बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	संग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पति	गोपालदान कविया
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समयसुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समय सुंदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदांन
ह० ना० मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनू
ह० पु० वा०	श्रीहरिपुरुषजी की वाणी	श्री हरिपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० झा०	हाला झाला रा कुंडळिया	ईसरदास बारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

व

व—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन-वर्ण जो उकार, विकार और अंतस्थ अर्द्ध व्यंजन माना जाता है। इसका उच्चारण दन्त्योष्ठ है। उच्चारण मे जिह्वा-पश्च उकार के समान-संवृत्त या अर्घ-संवृत्त स्थान तक उठता है और तुरंत परवर्ती स्वर के स्थान पर पहुंच जाता है। इसमे व्यंजनात्मकता से अधिक स्वरात्मकता ही पाई जाती है।

वंक-सं. पु — १ गर्व, अभिमान, घमण्ड।

उ०—१ दिपै रघुनायक दीन दयाळ, पुणा खळ घायक सेवग पाळ। चढै दसमाथ विभंजण वंक, लछीवर देण भभीखण लंक।
—र ज. प्र.

उ०—२ वेहु सायवी पगा राखीवैं, वाळी घरा वचूटी वंक। सबळा अनडा वेहु तणैं सर, आवु अनड तुहाळी अंक। —दुरसौ आढौ

२ देखो 'बांक' (रू भे)

उ०—दरपइ दीठइ वोरडइ, साप न आणइ संक, वीहइ बिलाडा-बच्चडइ, वाघिणी वालइ वंक। —मा. का. प्र

३ देखो 'वांकौ' (मह, रू भे.)

४ देखो 'बंक' (रू भे)

५ देखो 'वक्र' (रू भे.)

उ०—दीक्षा पाधर वंक गय, भुज धरिये कुळ-भार। —गु रू ब

वंकड—१ देखो 'वांकौ' (मह, रू भे)

२ देखो 'बांक' (मह, रू भे)

३ देखो 'बंक' (मह, रू भे)

वंकडी—देखो 'वांकी' (अल्पा, रू भे)

उ०—कटि-तटि हूंती वंकडी, काढी करि करवाल्। तव आगीउ आवी करी, करि वलगु ततकाल्। —मा का प्र

वंकडौ—देखो 'वांकौ' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ 'वीरम' भाई वंकडौ, ज्यू बेटौ जगमाल। दत कयावर चावा दुनी, साहा उर रा साल। —वी. मा

उ०—२ भडा दुबाहा वंकडा, हुई सनाहा सत्थि। सेघ निवाहा सूरमा, राहा वेध अरत्थि। —रा. रू.

(स्त्री वंकडी)

वंकट—देखो 'वकट' (रू भे) (ना मा)

वंकति—देखो 'वक्र' (रू भे)

उ०—छट सुंदर वीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ रूप तणा। दुति वंकति तुंड लगाम दिया, कुळवंतिय घूंघट जाणि किया। —रा रू

वंकनाळ, वंकनाळि, वंकनाळी—देखो 'बंकनाळ' (रू. भे)

उ०—१ वंकनाळ घर अभरा भरि हैं, अरघ उरघ घर निरझर झरि है। —अनुभववाणी

उ०—२ अजरामर का मारग औळा, सौळा संत पिछाणै। वंक-नाळि मेर सचरि कै, भवरगुफा सुख माणै। —अनुभववाणी

उ०—३ पलटि पूरब अपूरब पाणा, करि वंकनाळी ले मेर थाणा। —अनुभववाणी

वंकनाडी—देखो 'वंकनाळ' (रू भे)

वंकि, वंकी—१ देखो 'वंक' (रू भे)

उ०—वंकि पटा फूलहथा, सोरि खिलकार कुसत्री। तस कसीस लेजमा, जजर गती जाजत्री। —सू. प्र.

२ देखो 'वांकी' (रू भे)

उ०—वारण सिर तोडै खग वंकी। ताणै स्र गणि अढारह टंकी। —सू. प्र.

वंकीनाळि, वंकीनाळी—देखो 'वंकनाळ' (रू. भे.)

उ०—वंकिनाळि चढावै वाटा, धण अटकै हीरामण घाटा। —सू प्र

वंकेण—१ देखो 'वांकौ' (मह रू भे)

उ०—दिन वंकै वंकेण, वाणी मन्न तत सा बुद्धी। दुरजण सज्जण थानै सज्जन होइ दुज्जणाकारं। —रा रू.

२ देखो 'वक्र' (मह, रू भे)

वंकौ—देखो 'बांकौ' (रू भे)

उ०—१ ढकै जस जेती वरण, वडपण अके वार। इण वंकै 'पातल' अगै, सह सकै ससार। —जैतदान बारहठ

उ०—२ वदै अगदेस हुवा जोध वंका। लगा भोकरै भोक प्राजाळ लंका। —सू प्र

उ०—३ मिळिया वंका राठवड चितहित राख वचाव। मुख गाडौ कीधौ सगै, रीधौ हाडौ राव। —रा रू

उ०—४ पेखेवा पतिसाह नू 'अजन' थयौ असवार, गति वंकी दिन पाधरै, छत देखे ससार। —रा रू.

वंक्रत—देखो 'वक्र' (मह, रू भे)

उ०—माहा जटीयळ भ्रगुट भेक वक्रत मयक, अलकत सेस मेचख ऊयाळी। करण पत प्रभा परभात रा समोकर। तेज पुंज नाथ रा तणी ताळी। —भीमसिंह जी री गीत

वंग-स पु. [स] १ जस्ता या रांगा नामक धातु।

२ उक्त धातु का भस्म।
३ प्रेम, मुहब्बत।
४ अधिकार, कब्जा।
५ वश।
६ सीधा व सरल होने का भाव।
७ विना कष्ट के, आसानी से होने वाला कार्य।
८ अवसर, मौका।
९ एक चंद्रवंशी राजा। १० कपास। ११ बैंगन।
रू भे —भग
१२ देखो 'वंग' (रू भे)
उ०—मगध मंडळ अंग वंग कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पंचाल जागल '   ।   —व. स

वगर—वि —एकाकी, अकेला।

वगस, वगसी, वगस्स – देखो 'वगस' (रू. भे)

वगा —देखो 'वगाल' (रू भे.)

वगार—देखो 'वघार' (रू भे)
उ०—झोळ में तौ मुसाला, पाणी अर वगार घी री है। मा'राज आ री तौ थानै सोगन दिराई कोनी।   —फुलवाडी

वगारणौ, वगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारवौ' (रू भे.)
वगारणहार, हारौ (हारी), वगारणियौ—वि०।
वगारिओड़ौ, वगारियोड़ौ, वगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वगारीजणौ, वगारीजवौ—कर्म वा०।

वगाळ, वगाल—देखो 'वगाळ' (रू. भे)
उ०—वरहार, मथुरा, अवध्या, वणारसी, चदेरी मल्लिवाल, महोब, हरियाणउ, भयाणउ, रत्नपुर, कामरू, झाडियाणा, जलधर, आरब, वगाल, थिहूण, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण'   ।   —व स

वगाळी, वगाली—देखो 'वगाळी' (रू. भे.)

वगास्टक—स. पु. [स वगाष्टक] रागा आदि आठ धातुओ के योग से बना एक रसौषध।

वगेसरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू भे)

वगेस्वर—स पु [स वगेश्वर] एक रसौषध।   (वैद्यक)

वगेस्वरी—१ देखो 'वगेस्वरी' (रू भे)
२ देखो 'वागीस्वरी' (रू भे)

वगोवग—क्रि वि —यथास्थान, उचित स्थान।
२ व्यवस्थानुसार।
३ उपयुक्त, यथोचित।

वच—स. पु [स] १ सूर्य।
२ तोता।
रू भे —वच।

वचक—वि – [स] १ छल, प्रपच से जो दूसरो को ठग लेता है, ठग, धोखेबाज। २ धूर्त खल।
उ०—१ विभचारी वैरी बद वचक, छळ बळ कपटी छानौ। महामोह हिंसक मूरख सू, मरणौ उत्तम मानौ।   —ऊ का
उ०—२ 'वाका' वचक वाणियौ, नहिं जाण्या नहिं राह। त्यां हदा धन ताणिया, या आण्या घर राह।   —बा दा.
३ पढने वाला, पाठक।
उ०—परधन हरण परायण पामर, वचक वाणी रे। ते झूठी बुगला री बाता नाहक ताणी रे।   —ऊ का
रू भे —बचक, वछक
४ सोधियार, चोर।

वचकता—स स्त्री. [स वचक+प्र. ता] १ छल-प्रपच से दूसरो को ठगने का कार्य, ठगी, धोखावाजी, धूर्तता।
२ चोरी।
रू भे —बचकता

वचणा—देखो 'वचना' (रू भे)

वचणौ, वचवौ—क्रि. स [स वचनम्] १ ठगना, धोखा देना।
२ चालबाजी करना, बेईमानी करना।
३ देखो 'बाचणौ, बाचबौ' (रू भे)
उ० —इम कागद आवियौ, पेखि वचै 'गजपत्ती'। अग पौरस ऊफणी, माहि छित जेम-विभत्ती।   —सू प्र
४ देखो 'वचणौ, वचवौ' (रू भे)
उ०—१ हरयिा नारी नागणी, सब जुग लीया खाय। जे कोई वचै बापडी, गुर का मतर पाय।   —अनुभववाणी
उ०—२ है मुह फाड्या बाघनी, दाब्या सब ससार। जो वचै भाज करि, लख चौरासी जेर।   —अनुभववाणी
वचणहार, हारौ (हारी), वंचणियौ—वि०।
वचिओड़ौ, वचियोड़ौ' वच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वचीजणौ, वचीजवौ—कर्म वा०।
बचणौ, बचबौ—रू० भे०।

वचत—१ देखो 'वाछित' (रू. भे)
२ देखो 'वचित' (रू भे.)

वचना—स स्त्री. [स] १ ठगी, धोखा, जाल, फरेब।
उ०—लोग प्रिय उत्तम आचार थी, वचना रहित अक्रूरौ जी। पाप करम थी जे डरता रहइ, कपट थकी रहइ दूरौ जी।   —स कु
रू भे —वचणा, वचरा।

वचाणौ, वचावौ—क्रि स. ['वचणौ' क्रि. का प्रे. रू] १ ठगवाना, धोखा दिराना।

२ चालबाजी कराना, बेईमानी करवाना।

३ देखो 'वचाणी, वचावौ' (रू भे)

उ०—१ हिवै म्हानु वचावौ, ताहरा वाळक हसियो वामण छुडाया।
—देवजी वगडावत री वात

उ०—२ लक्ष्मी नै कुण नोतरै, गगोदक कुण पवित्र करै हसनै गति कुण सिखावै, व्रहस्पति नै कुण वचावै। कृपण नै कुण सचावै। तिम सज्जन नै स्वभावै जाणवी। —रा सा स.

वचाणहार, हारो (हारी), वचाणियौ—वि०।
वचायोड़ो—भू० का० कृ०।
वंचाईजणो, वंचाईजवौ—कर्म वा०।
वचावणौ, वंचाववौ—रू० भे०।

वचायोडो–भू का कृ—१ ठगवाया हुआ, धोखा दिराया हुआ
२ चालबाजी या बेईमानी करवाया हुआ।
३ देखो 'वचायोडौ' (रू भे)
(स्त्री वचायोडी)

वचावणौ, वंचाववौ—१ देखो 'वचाणी, वचावौ' (रू भे)
२ देखो 'वचाणी, वचावौ' (रू भे)
उ०—हस नै गति कुण सिखावै, व्रिहस्पति नै कुण वचावै क्रिपण नै कुण सचावै। —रा सा. स

वचावणहार, हारौ (हारी), वचावणियौ—वि०।
वचाविओडौ, वचावियोडौ, वचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वचावीजणो, वचावीजवौ—कर्म वा०।

वचावियोडौ—१ देखो 'वचायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'वचायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. वचावियोडी)

वचित–वि [स] १ जो ठगा गया हो, धोखा खा गया हो।
२ जो किसी की कृपा या सहायता प्राप्त करने से अलग रह गया हो, दूर रह गया हो।
३ जो अभीष्ट फल या लाभ न पा सका हो।
४ विमुख।
५ हीन।
रू भे.—वचत, वचित, वचत।

वचियोडो–भू का कृ—१ ठगा हुआ, धोखा दिया हुआ २ चालबाजी किया हुआ, बेईमानी किया हुआ।
३ देखो 'वाचियोडौ' (रू भे)
४ देखो 'वचियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वचियोडी)

वछक–वि (स्त्री वछकी) १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला।
२ कामना करने वाला।
३ देखो 'वचक' (रू भे.)
रू भे.—वछक

वंछणो, वछवौ–क्रि अ. [स वाञ्छम्] १ चाह होना, इच्छा होना।
उ०—हरि समरण रस समझण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि। वैसै सभा पारकी वोलण, प्राणी वछइ त वेलि पढि।
—वेलि

क्रि स—१ चाहना इच्छा करना, अभिलाषा करना।
उ०—१ आकास राता, मेह करि माता। क्या किण नीला, क्या किण पीला। नाना प्रकार ना रग, भला सुरग। वाधै अनग, जगी करै जग, भोगी पीयै भग, स्त्री वछै सग आदि।
—रा सा स.

उ०—२ माधव करि माहरू कहिउ, जु मुझ वछइ खेम। सास लगइ सेवा करिसि, सीत दमयती जेम। —मा का प्र

उ०—३ औ अवसाण सूरमा आयौ, पूरा नरा वछता पायौ। असमर हथा घणी मुख आगै, लडता गयण भुजा डड लागै।
—रा रू

२ जिज्ञासा करना।
३ प्रेम करना।
वछणहार, हारौ (हारी), वछणियौ—वि०।
वछिओडो, वछियोडौ, वछ्योडौ—भू० का० कृ०।
वछीजणो, वछीजवौ—भाव वा०/कर्म वा०।
वचणौ, वचवौ उछणो, वछवौ—रू० भे०।

वछत, वछती, वछतौ—देखो 'वाछित' (रू भे)
उ०—१ नर न्रप अमर चद्र अयनेता, क्रम क्रम चाहा करो सकाज। सफळ करण वछत सगळा रा, तो हाता रघुकुळ सिरताज।
—र. रू

उ०—२ जग मुगति मुगति दाता जगा, दान मान वछत दिये। पारथं किसू मेळग कुपह, प्रभू नाथ पारत्थियो। —ज. खि

वछना—देखो 'वाछना' (रू भे.) (ह ना मा)

वछाणो, वंछावौ–क्रि. स ['वछणौ' क्रि का. प्रे रू] १ चाह कराना, इच्छा कराना।
२ कामना कराना, अभिलाषा करवाना।
वछाणहार, हारो (हारी), वछाणियौ—वि०।
वछायोडौ—भू० का० कृ०।

वछाईजणो, वछाईजबो—कर्म वा० ।
वछाणो, वछावो—रू० भे० ।

वछायोडो–भू का कृ —१ चाह कराया हुआ, इच्छा कराया हुआ. २ कामना कराया हुआ, अभिलाषा करवाया हुआ ।
(स्त्री- वछाय डी)

वछासुर—देखो 'वत्सासुर' (रू भे)

वछित – देखो 'वाछित' (रू भे)

उ०—महि सुइ खट मास प्रात जळ मजे, आप अपरस अरु जित इद्री । आगे वेलि पढता नित प्रति,त्री वछित वर यछित श्री ।—वेलि

वछियोडो–भू का. कृ — १ चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. २ जिज्ञासा किया हुआ ३ प्रेम किया हुआ ।
(स्त्री वछियोडी)

वजण–स. पु [देशज] १ घास ।

उ०—१ ताहरा सात-बीस भैसा दिया । भैसा लै-नै घरै आयो । चारणी सखरा आसरा घताया . भैस्यां व्याया नै वजण पडिया । फोफाणद रै आणद हुवा । —फोफाणद री वात
उ०—२ तैरी बेटी पण लियो छै। जियै रै सात बीस भैस्या नै वजण पडै तियै चारण नू परणीजूं । —फोफाणद री वात
२ शरीराग, अग-उपाग ।
३ शरीर के जन्मजात या स्वाभाविक वे चिह्न जिनके द्वारा मनुष्य की पहचान की जाती है । (जैन)
उ०—ए थारो सरीर छै रै, वजण लखण उदार । रोग रहित दोस को नही रे, जोवन कला अपार । —जयवाणी
४ देखो 'व्यजन' (रू भे)
रू भे —वजन ।

वजणो, वजवौ–क्रि अ [स वज्=गति] १ पराजित होना, भागना ।
उ०—रजपूतै भुइ भागियै, दळ मूका छळ देस । 'वीहारी' वजै नही, सूना मेल्है नेस । —गु रू ब
२ चलना ।
वजणहार हारो (हारी), वजणियो वि० ।
वजिओडो, वजियोडो, वज्योडो—भू० का० कृ० ।
वजीजणो, वजीजबो—भाव वा० ।
वझणो, वझबौ—रू० भे० ।

वजन—१ देखो 'वजण' (रू भे)
२ देखो 'व्यजन '(रू भे.)

वजियोडो–भू का कृ —१ पराजित हुवा हुआ, भागा हुआ २ चला हुआ ।
(स्त्री वजियोडी)

वझ—देखो 'वध्या' (रू भे)

वझणो, वझबौ—देखो 'वजणो, वजबो' (रू भे)
उ०—वळियो मुगैस 'पतो' वाढाळो, वंकियो 'गुरजन' देत वट । गढ चित्तोड गग्य तण गरजै, गाटो गो रणथभ गढ ।
—पत्ता चूंडावत री गीत

वझि—देखो 'वध्या' (रू. भे)
उ०—माई हुई माइ हुई काइ नवि वझि, अह जाया नवि मूआ तुम्हे राजु काई देवि दिदउ । —प. प च

वझियोडो—देखो 'वजियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वझियोडी)

वट–स पु [स] १ वटवारा करने की क्रिया या भाव ।
२ विभाजन ।
उ०—थे सूना कूकनै लोक हुसायता हा सो आयो उरा अबै आज इण दिन बराबर वट होवै है । —बी स टी.
३ विभाजन द्वारा होने वाला हिस्सा, भाग ।
उ०—अबै आज इण दिन बराबर वट होवै है सो आछो वट व्है सो आप लेलीजो । —बी स. टी.
४ अश ।
५ पीसने की क्रिया या भाव ।
६ विधुर ।
७ हसिया नामक उपकरण का बेंट या दस्ता ।
रू भे —बट, बाट, वांट, वाठ ।

वटणो, वटबो—देखो वटणो, वटवो' (रू भे)
उ०—अब घर अघर कीया मन भाई, बागा अनहद वटी वधाई । नाव अखडत खडै नाही, सुरति सबद कै मडी माही ।
—अनुभववाणी
वटणहार, हारो (हारी), वटणियो—वि०
वटिओडो, वटियोडो, वट्योडो—भू० का० कृ० ।
वटीजणो, वटीजवो—कर्म वा० ।

वटवाडो, वटवारो—देखो 'वटवारो' (रू भे)

वटाइत—देखो 'वटायत' (रू. भे)

वटाई—देखो 'वटाई' (रू भे)

वटाडणो, वटाडवो—देखो 'वंटाणो, वटावो' (रू भे.)
वटाडणहार, हारो (हारी), वटाडणियो—वि० ।
वटाडिओडो, वटाडियोडो, वटाड्योडो—भू० का० कृ० ।
वटाडीजणो, वटाडीजवो—कर्म वा० ।

वटाडियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू भे)
(स्त्री वटाडियोडी)

वटाणो, वटावो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू भे.)

वटाणहार, हारौ (हारी), वटाणियौ—वि० ।
वटायोडौ—भू० का० कृ० ।
वटाईजणौ, वटाईजबौ—कर्म वा० ।

वटायत—देखो 'वटायत' (रू भे)

वटायोडौ—देखो 'वटायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री वटायोडी)

वटारौ—देखो 'वटारौ' (रू भे)

वटावणौ, वटावबौ—देखो 'वटाणौ, वटावौ' (रू भे)
वटावणहार, हारौ (हारी), वटावणियौ—वि० ।
वटाविप्रोडौ, वटावियोडौ, वटाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
वटावीजणौ, वटावीजबौ—कर्म वा० ।

वटावत—देखो 'वटायत' (रू भे)

वटियोडौ—देखो 'वटियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वटियोडी)

वटीलौ–वि [स वट+प्रालुच् प्र] (स्त्री वटीली) १ जिसका किसी हिस्से, भाग या अश पर अधिकार हो । हकधारी ।
२ हिस्सेदार, भागीदार ।
३ साझीदार

वठ, वठौ–वि [स वठ] (स्त्री वठी) १ उद्दण्ड ।
२ अविवाहित, कुंआरा ।
३ बोना ।
४ पगु, अगहीन ।
स पु [स वठ] १ अविवाहित व्यक्ति ।
२ नोकर, सेवक ।
३ भाला, वर्छा, शूल ।

वंड—देखो 'वडौ' (मह, रू. भे)

वडणौ, वडबौ–क्रि स —पीसना ।
उ०—भोरे-भोरे तन करै, वडै कर कुरवाए । मिठ्ठा कोडा ना लगै, दादू तोहू साए । —दादूवाणी
वडणहार, हारौ (हारी), वडणियौ—वि० ।
वडिप्रोडौ, वडियोडौ, वड्योडौ—भू० का० कृ० ।
वडीजणौ, वडीजबौ—कर्म वा० ।

वडियोडौ–भू का कृ —पीसा हुआ ।
(स्त्री वडियोडी)

वडौ–वि [स वण्ड] १ वह पुरुष जिसके लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर चमडा न हो, जो सुन्नी किया हुआ हो ।
२ वधिया किया हुआ, आख्ता किया हुआ ।
३ अग-भग, पगु ।
४ अविवाहित ।
रू भे —वडौ ।
मह,—वड, वयड, वड, वयड ।

वतळ–स स्त्री [स वर्तनम्] १ चित्त का किसी कार्य मे लग जाना, मनवहलाव ।
उ०—नी कोई वूढी-ठाडी डोकरी ई-अरै वतळ करण सारू आई । —फुलवाडी
२ बातचीत, वार्तालाप ।
उ०—दीवाणजी री एक खास सुभाव के वै लुगाया सू घणी वतळ नी करता । —फुलवाडी
रू. भे.—वतल, वतळ, वतोळ, वतोल, वतळ ।
अल्पा.,— वतकलो ।

वतूळियौ—देखो 'वथूळौ' (अल्पा, रू भे)

वतूळौ—देखो 'वथूळौ' (रू भे)

वतोळ, वतोल—१ देखो 'वथूळौ' (मह, रू भे)
उ०—चिहुंदिसि चमकइ वीजळी, वादलवा वतोळ । दुख-दरिया-माहा हु गई, टळवळनी द्रहि बोळ । —मा का. प्र
२ देखो 'वतळ' (रू भे)

वतोळियौ, वतोलियौ, वतोलीयौ, वथूळियौ—१ देखो 'वथूळौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ मझ जावा तुझ तेडवा, विमासिउ निसि दिन्न । वैसाखि वंतोलीया, मरडी नाखइ मन्न । —मा का. प्र
उ०—२ उडइ रेणु अबीर नी, सुरतरु नइ सींदूर । गयणि गुलाल वतोलिया, छलर विछाहिउ सूर । —मा का प्र

वथूलौ—देखो 'वथूळौ' (रू भे)

वद—देखो 'वद्य' (रू भे) (डिं ना मा)

वद—देखो 'वदन' (रू भे) (डिं. को)
उ०—ताण मूंछ तोले तिजड, विमन सकति कर वद । कूच नगारा हुय कटक, चवै हुकम जयचद । —सू प्र

वदगण–स पु —१ पत्थर । (अ मा)
२ वन्दीजन ।

वदगी——देखो 'वदगी' (रू भे.)
उ०—तद ठाकुरजी फुरमायो कै थारी जात मानी । थे घरे जावौ । थे तौ अठैई घणी वदगी करी छौ । सू जाम्रा सू इधकी माना छा । —द दा

वदण—१ देखो 'वदन' (रू. भे.)

उ०—कवि वेदव्यास वलमीक कवि, करि अस्तुनि वदण कियो। —सू प्र.

२ देखो 'वदिरण' (रू. भे)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, अति रग रग अनूप। जसवारिण वदण जीह, उचरत विरद सईह। —रा रू.

वंदणा—देखो 'वदना' (रू भे)

उ०—हीदू तुरक नही को इसउ, रिणि राउतवटि लखणउ जिसउ। जे समरगणि साम्हा मरइ, ते सुर सिद्ध वदणा करइ। —का दे प्र

वदणो, वदवो—क्रि स [स वदनम्] १ नमस्कार करना, प्रणाम करना, अभिवादन करना।

उ०—१ कमधज्ज मिळै सू कमधजा, हीया परफूल्लत हुवै। वदियो 'गजण' विय चदवरि, ताम तुरक्क हिंदुवै। —गु रू व

उ०—२ सेतुज वदिअ तीरथराउ, गुरु या गणहर करउ पसाउ। वाग वाणि हउ समरउ देवि, चिहुगति गमण कहउ सखेवि। —वस्तिग

२ स्तुति करना, प्रार्थना करना।

३ पूजा करना, अर्चना करना।

४ प्रशसा करना, तारीफ करना।

वदणहार, हारो (हारी), वदणियो—वि०।

वदिअोडो, वदियोडो, वदयोडो—भू० का० कृ०।

वदीजणो, वदीजवो—कर्म वा०।

वणो, वदवो, बधणो, बधवो, बदेणो, बदेवो विदणो, विंदवो, विंदणो, विंदवो—रू० भे०।

वदन—स पु [स] १ नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।

उ०—१ राजा वदन कीध उभै कर। आसी-वाच विप्रा इम उच्चर। —गु रू व

उ०—२ इम सिध वयण सुणै उदमदियो, वदन करै नरेसुर वदियो। —सू प्र.

२ प्रार्थना, स्तुति।

३ पूजा, अर्चना।

रू भे—वदण, वदन, वदिण, वदिन, वद, वदण।

वदनमाळ, वदनमाळा, वदनवार—देखो 'वादरमाळ' (रू भे.)

उ०—प्रथीनाथ गढपोळि, प्रथम 'अभसाह' पधारे। तोरण वदनमाळ प्रगट उछव अणपारे। —रा रू

वदना—स स्त्री [स वदन] १ नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम।

उ०—कर कहू नइ करू वदना हु वारी। पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे हु वारी लाल। —स कु

२ स्तुति, प्रार्थना।

३ पूजा, अर्चना।

रू भे.—वदणा, वदना, वदणा, वदनी।

वदनी—स. स्त्री. [स वन्दनी] १ जीवातु नामक औषधि, जो मृतक को जीवित कर सकती है।

२ गोरोचन।

३ तिलक।

४ वटी।

५ याचना कर्म।

६ देखो 'वदना' (रू भे)

वदनीक, वदनीय—वि [स वन्दनीय] १ प्रणाम या नमस्कार करने योग्य।

उ०- वदनीक पाय रा गाय रा दुजा विसावीस। आसुरा भजणा आडे घाय रा अमाब। —र. ज प्र.

२ स्तुति व प्रार्थना योग्य।

३ पूजा व अर्चना करने योग्य।

वदर—१ देखो वदर'' (रू भे)

२ देखो 'वानर' (रू भे)

वदरगाह—देखो 'बदरगाह' (रू भे)

वदरमाळ, वदरमाळा, वदरवाळ, वदरवाल, वदरवाळा—देखो 'वादरमाळ' (रू भे)

उ०—१ पाणिग्रहण-तणउ परियाण, माड्यो विहु भूपति मडाण। महोछव तोरण वदरमाळ, अधि वाधइ बारणइ विसाळ। —ढो मा

उ०—२ वेलि जु एक रूख थें दूसरै रूख जाइ लागि छै। सु वदरवाळ बधाणी छै। —वेलि टी

उ०—३ चारू घट जुगल दीप प्रदीप मणिमाळा प्रवाल वदरवाल ए द्रव्य मगलीक स्त्रीदेवपूजन गुरू वदन प्रमुख भाव-वदन मगलीक। —व स

उ०—४ तिणि वेला नऊइ कोरणा वाधीयइ तोरण, वाधीयइ वदरवाल, उत्सव विसाल वानिविलास। —व स

वदरियो—१ देखो 'वदर' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'वानर' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'वदरियो' (रू भे.)

वदाडणो, वदाडवो—देखो 'वदाणो, वदावो' (रू. भे)

वदाडणहार, हारो (हारी), वदाडणियो—वि० ।
वदाडिग्रोडो, वंदाडियोड़ो, वदाड्योडो—भू० का० कृ ।
वदाडीजणो, वदाडीजवो—कर्म वा० ।

वदाडियोडो—देखो 'वदायोडो' (रू भे)
(स्त्री वदाडियोडी)

वदाणो, वदाबो—क्रि स [स. वदनम्] १ स्वागत करना, सम्मान पूर्वक, अगवानी करना ।

उ०—ताहरा राजा वरदाईसेनजी साम्हा जाय कुवर नू वदाय घरे ले आया छै । —नैणसी

२ अभिवादन कराना, नमस्कार कराना ।

उ०—१ जागळू रा लोक ऊचा चढ चढनै जोवै छै । राजलोक पिण गोखा चढि-चढिने जोवै छै । इण जुगत करिनै तोरण वदायो छै । —लाली मेवाडी री वात

उ०—२ विवध उतारै वीनती, धारै निजर तुरग । लगन वदायो तूंवरा, पायो समै सुरग । —रा. रू

उ०—३ तरै पुरोहितजी नै आघा ले'र कान मे पूछियो—यँ नाळे'र किणने वदायो ? मैं थानै काहु कहि नै मेलिया था । —राव रिणमल री वात

४ स्तुति कराना, प्रार्थना कराना ।
५ पूजा कराना, अर्चना कराना ।
वदाणहार, हारो (हारी), वंदाणियो—वि० ।
वंदायोडो—भू० का० कृ० ।
वंदाईजणो, वदाईजवो—कर्म वा० ।
बदाडणो, बदाडबो, बदाणो, बंदावो, बदावणो, बदाववो, बधाड़णो, बधाड़वो, बधाणो, बधावो, बधावणो, बधाववो, वदाडणो, वदाडवो, वदावणो, वदाववो—रू० भे० ।

वदायोडो—भू. का कृ –१ सम्मान पूर्वक अगवानी कराया हुआ, स्वागत कराया हुआ. २ अभिवादन कराया हुआ, नमस्कार कराया हुआ. ३ स्तुति व प्रार्थना कराया हुआ. ४ पूजा व अर्चना कराया हुआ ।
(स्त्री वदायोडी)

वदावणो, वदाववो—देखो 'वदाणो, वदावो' (रू. भे.)
वदावणहार, हारो (हारी), वदावणियो—वि० ।
वदाविग्रोडो, वंदावियोडो, वदाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वदावीजणो, वंदावीजवो—कर्म वा० ।

वदिण—देखो 'वदिन' (रू. भे)

वदित—वि [स] १ जिसको नमस्कार किया गया हो, अभिवादित, सम्मानित ।
२ जिसकी प्रार्थना की गई हो, स्तुत्य ।
३ जिसकी पूजा या अर्चना की गई हो, पूजित ।

वंदिन—देखो 'वदिन' (रू भे)

वदियोड़ो—भू. का कृ.—१ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम व अभिवादन किया हुआ २ स्तुति व प्रार्थना किया हुआ. ३ पूजा व अर्चना किया हुआ.
(स्त्री वदियोडी)

वदीखानो—देखो 'वदीखानो' (रू. भे)

वंदीग्रह, वदीघर—देखो 'वदीघर' (रू भे)

वदीजण, वदीजन—देखो 'वदीजन' (रू भे)
उ०—सुम खमा खमा जय सद्द री, कोळाहळ वदीजणां । —रा रू.

वदीदाद—स. स्त्री —पारसी लोगो की एक धार्मिक पुस्तक ।

वदेणो, वदेबो—देखो 'वदणो, वदवो' (रू भे.)

वदोकडी, वदोखडी, वदोगडी—देखो 'वदोकडी' (रू भे)

वंदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वदोळो—देखो 'वदोळो' (रू भे)

वदोवस्त—देखो 'वदोबस्त' (रू भे)
उ०—पण उणारी चौडै लडणरी आसग हुई नही । तद वरसघ नू लालच देय अजमेर बुलायो, अरु खातरी करनै वीटलो चाढियो । पीछै वदोवस्त कियो । —द दा

वदो—देखो 'वदो' (रू भे)
उ०—वदा करियै वदगी, आतम तै आधीन । जनहरिया । धम धम घटै, यो तन होसी छीन । —अनुभववाणी

वद्य—वि [स] १ नमस्कार, प्रणाम व अभिवादन करने योग्य ।
२ पूजा, अर्चना व स्तुति करने योग्य स्तुत्य, पूज्य ।
३ प्रार्थना व निवेदन करने योग्य ।

वंद्रवाळय—देखो 'वादरमाळ' (रू भे.)

वद्रावनवासी—देखो 'व्र दावनवासी' (रू भे)
उ०—वीयो टमरियो वद्रावनवासी, वणराय भार अढार सख्या, विस्णु वाणी ऐह । —रुकमणी मंगळ

वघ—देखो 'वघ' (रू. भे.)

वधणो, वधवो—देखो 'वधणो, वधवो' (रू भे)

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू भे)

वधन—देखो 'वधन' (रू भे)

उ०—काळ का भै वघन कापै, जाप अजपा आप आपै।

—ह पु वा.

वंघव—देखो 'वघु' (रू भे.)

उ०—होय कै निकासी वनौ वंघवां समेत हल्यौ। ऊमल्यौ सामुद्र सेना हळीतौ उदार। —वादरदांन दघवाडियौ

वघाणौ, वघावौ—देखो 'वधाणौ, वधावौ' (रू. भे)

वघायोडौ—देखो 'वधायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वघायोडी)

वघियोडौ—देखो 'वधियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वघियोडी)

वघेज—देखो 'वबेज' (रू. भे)

वघ्या—देखो 'वध्या' (रू भे)

वघ्याचळ, वघ्याचळि—देखो 'विंघ्याचळ' (रू भे)

उ०—करपूर कावेरी तीरि, कुकुम कास्मीरि, चदन मलयाचलस गि, कस्तूरी कुरगि, गजराज वघ्याचलि, मोती जयकुजरि। —व स

वघ्यापणौ—देखो 'वाझपणौ' (रू भे)

वनर—देखो 'वानर' (रू भे)

वनरमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू. भे)

उ०—वर्णं ग्रहि वनरमाळ सुविंद। —रामरासौ

वनोली—देखो 'वदोळी' (रू भे.)

वन्न—देखो 'वरण' (रू. भे)

उ०—मारुवणी मूंह-वन्न, आदित्ता हू उज्जळी। सोह भांखऊ सोवंन, जो गळि पहिरउ रूपकउ। —ढो मा

वम्नर—देखो 'वानर' (रू भे)

ववाळी—देखो 'धवाळी' (रू भे)

ववि, ववी—देखो 'ववी' (रू भे)

उ०—गुर का सवदलै भौंरा जगायवा। सरप ववि तजि अगम तहाँ जायिवा। —ह पु वा

वभ—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे) (जैन)

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे.)

वंभर, वभार—देखो 'ववार' (रू भे.)

उ०—फर फाटस नाह सनाह फडै। भाअलोड वभार करत भडै।

—पा. प्र

वभि, वभी—देखो 'ववी' (रू भे)

ववक—देखो 'ववक' (रू भे)

ववाळी—देखो 'ववाळी' (रू भे)

वस-स. पु [स वश] १ किसी जीव, प्राणी या मनुष्य की सतान परम्परा, कुल, खान्दान, गोत्र।

उ०—१ सोह-छतीसी सामळै, छाकै वस छतीस। 'वाकै' पाटी वीर रस, वरणी विसवावीस। —वा दा.

उ०—२ देवी गाजता दैततां वस गमिया। देवी नवै खड त्रिभुवन तूझ नमिया। —देवि

२ सतान, सतति, परिवार।

उ०—हिव एकु अम्ह मानु, दियउ विहू पखउ तु छडि। कउरव वस विणासिया, काई मूडु म माडि। —प प च.

३ वेडा।

४ समुदाय, समूह।

५ रीढ की हड्डी, मेरुदड।

६ खडग के बीच का भाग जो अधिक चौडा होता है।

७ युद्ध की सामग्री।

८ गांठ।

९ गन्ना, ऊख।

१० साल का पेड।

११ शहतीर, वल्ला, लट्ठा।

१२ पुष्प, फूल।

१३ विष्णु का एक नाम।

१४ पुरुषो की वहत्तर कलाओ मे से एक। (व स)

१५ वस लोचन।

१६ वारह हाथ का एक नाप।

१७ देखो 'वास' (रू भे) (ना मा.)

उ०—यौं चिता उद्वेगो, लग्गी अग्ग वस घासाए। —रा. रू

१८ देखो, 'वसी' (मह, रू भे)

उ०—तती ताल टवक्कडा, मद्दल वस विसाल। निरति करइ नव रागमा, माडी मस्तक थाल। —मा का प्र.

रू भे—वस, वास।

अल्पा—वंसौ।

वंसक—वि. [स. वश+प्र क] वश का, वश सम्वन्धी।

स पु [स वशक] १ वास का पेड।

उ०—सू डाळां आलम ढल्ल सिरै। नन्नाविध वंसक नदगिरै।

—गु रू. व.

२ वास की गाठ।

३ अगर की लकड़ी।
४ मछली।
रू भे —वसक।

वसकर—स. पु. [स. वशकर] जिस से किसी वश, कुल या गोत्र का प्रारम्भ होता हो, मूल पुरुष।

वसकार—स. पु.—राजवर्ग विशेष

उ०—कवि काठीया, मसूरिया, दीवटीया उपाध्याय वड्कार करडिकार आलविणिकार वीणाकार वंसकार आउज्जी पखाउजी पास्त्वात्यपक्षो तार्रकिक ज्योतिसी वैद्य महावैद्य। —व स

वसछेतर—स पु. [स.वशछेतृ] १ किसी वंश का अतिम पुरुष।
२ एक सर्प विशेष। (शेखावाटी)
रू भे —वसछेतर।

वसज—स. पु. [स वशज] जो किसी कुल, वश या गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो, सतान, सतति, औलाद।
वि —वास का बना।
रू भे —वसज।

वसजा—स स्त्री [स वशजा] १ कन्या, पुत्री।
२ वंसलोचन।

वसधर—सं पु [स. वशधर] १ वश-परंपरा व वश की मर्यादा को धारण करने वाला, वशज। वंश की मर्यादा को उज्ज्वल करने वाला।
२ सन्तान, सतति।
रू. भे —वसोघर, वसोधर,

वंसनास—स पु [स वशनाश] १ शनि और राहु का सूर्य के साथ एक लग्न मे पडने, विशेषत पचम लग्न मे पडने पर होने वाला एक योग जो वश—नाश का कारण माना जाता है। (फलित—ज्योतिष)
२ एक भयकर विषैला सर्प जिसके किसी एक व्यक्ति को काटने से शनै-शनै उस (व्यक्ति) के पूर्ण वश का नाश हो जाता है।

वसपरिपाटी—स स्त्री [स वश+परिपाटी, वशपरम्परा] १ वश की मर्यादा, गौरव।

उ०—राज्य—द्रग-दुरग—देस वैभवज सुख हेय। राखी द्रढ वसपरिपाटी की प्रभत्ता को। —बालाबक्ष बारहठ

२ क्रमश चलने वाली वश-परपरा, पीढी, शृखला।

वसब्रख—देखो 'वसब्रक्ष' (रू भे)

वसभाई—स पु [स वश+भ्रात] कुटुबी, सम्बन्धी, बधु, बाधव, सगोत्री।
रू. भे.—वसभाई।

वसरी, वसळी—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

उ०—गावणहार माडइ (अ) र गाई। रास कइ (मम) यइ वसली वाई। —वी. दे
२ देखो 'वसावळी' (रू.भे.)
३ देखो 'वासरी' (रू भे)

वसलोचण वसलोचन—स पु [सं. वशलोचन] लम्बी पोर वाले बडे बासो की गाठो को जलाने पर निकलने वाला वास का सार भाग जो सफेद रग के छोटे छोटे टुकडो के रूप होता है। वश-शर्करा, वशकपूर।
रू भे —वंसलोचन।

वसब्रक्ष—स पु [स वशवृक्ष] १ किसी वश का, उसके मूल पुरुष मे से लेकर परवर्ती वशजो का, वृक्ष के रूप मे, बनाया हुआ रेखा चित्र या नक्शा।
२ किसी वश का क्रमश दिया गया, विवरण।
रू भे —वसब्रक्ष, वसब्रख।

वसस्थ—स पु [स. वशस्थ] बारह वर्णों का एक वर्ण-वृत।
रू भे —वसस्थ।

वसा—स पु —१ शकरि प्रभा नामक नर्क। (जैन)
२ देखो 'वास' (रू. भे) रू भे वसा।

वसावळियो—देखो'वसावळियो' (रू भे.)

वसाळी—देखो 'वसावली (रू. भे.)

वसावळियो— देखो 'वसावळीयो' (रू. भे)

वसावली—स. स्त्री [स वशावली] १ किसी वश या कुल मे उत्पन्न व्यक्तियो की पूर्वोत्तर क्रम से सूची, विवरण।

उ०—१ वसिष्ठ कहै वसावळी, राज ख्यात दसरथ। —रामरासो
उ०—२ पाछलै पानै वसावळी छै। —नैणसी

२ वस, कुल, गोत्र।
रू भे.—वसावळी, वसळी, वसाळी वासावली।

वंसावळीयो—स. पु [स वश+राज आवळियो] वशगुरु, कुलगुरु।
वि —वंश का, वश सम्बधी।
रू भे —वसावळियो, वसावळीयो, वसावळियो, वंसावळीयो, वसावळियो।

वसि, वसी—वि [स. वंशी] किसी वश विशेष में उत्पन्न। वश का।

उ०—१ लागउ पाय माजीया आसू, जणणी दीइ असीस। वसि अम्हारइ तु अजरामर, प्रतिपे कोडि वरीस। —का दे. प्र.

उ०—२ वसि तू सूर वसि मू पीक। नेजे सू वह धातउ निभीक —रा ज सी

उ०—छटतीस वस राजकुळी सिरोमणि सूरज वंसी राजान मारवाडि

रा नव कोटारी ठकुराई जळावोळ राज पदी भोगवै ।

—रा सा स.

स स्त्री—१ वास की नलिका मे छेद करके (स्वर बनाकर) बनाया हुआ एक बाजा जो मुह से फूंक हाथ की अगुलियों द्वारा बजाया जाता है। मुरली, बासुरी।

उ०—१ तिसा वैण स्रीमडळ जत्र ताल । सहनाय वसी अनै सोस ढाल । —रा रू

उ०—२ दोय बजावइ ताल दोय वीणा वसी, दोय बजावइ वासली ए। —स कु

२ रक्त वाहिनी सिरा, नस।

३ चार कर्ष या आठ तोले का एक मान।

४ वशलोचन।

५ घोडे का नथुना।

रू भे—वसरी, वसली, वसी, बनसी, बासरी, बासळी, वासुरी, वासुळी, वसरी, वसीय, वसु, वसू, वनसी, वासरी, वासी, वाहली।

मह—बस, वस।

वसीघर, वसीघरण, वसीधारी– स. पु [म. वशीघर वशीधारिन्]

१ श्रीकृष्ण। (अ.मा.)

उ०—वसीधारी अज वासी विहारी। —पि प्र

२ ईश्वर। (ना मा)

वि—वसी बजाने वाला।

रू भे—वसीधर, वसीधरण,

वसीय— देखो 'वसी' (रू.भे)

वसीवट– स. पु. [स वशीवट] वृन्दावन का वह वट-वृक्ष जिसके नीचे वैठ कर श्रीकृष्ण वासुरी बजाया करते थे।

रू भे—वसीवट, बसीवट

वसीयाळो–स.पु—१ श्रीकृष्ण।

उ०—गाया ग्वाळो वानो काळो वसीयाळो वेहारी। —पि प्र.

२ वह जिसके पास वसी हो।

वसु, वसू–देखो 'वसी' (रू भे)

उ०—खुरताळा विकखणी, घणी लग्गी ग्रायासा। नह सुणिजै नीसांण, वसू वाजी वरहासा। —गु रू व

वसै–देखो 'वासै' (रू भे)

उ०—तद राणी कही थानै जं वास्तै वसै रासिया हता मु विद्या सीखी क नही —चौबोली

वसोघर—देखो 'बसघर' (रू. भे.)

उ०—मिणघर मेछ कमळ मह-मेहण, थाच वसोघर दे चलण।

—नैणसी

वसौ—१ देखो 'वास' (अल्पा, रू भे)

उ०—वसौ वधति बहुअ, अतर गति गठि वेध उतपन्नो। सजोगि अगनि पतगो, प्रजळय अप मज्झेण। —गु. रू व.

२ देखो 'वस' (अल्पा, रू. भे)

व–स. पु [स] १ वर्ण। २ वायु, पवन, हवा। ३ वाण, तीर। ४ शिव। ५ उपमा। ६ सुखी। ७ अव्यय। ८ अर्थ ९ वरुण देव। १० समुद्र। ११ राहु का नाम। १२ कल्याण मगल। १३ सात्वना। १४तुष्टि साधन। १५ बस्ती। १६ वास, निवास। १७ सम्बोधन। १८ मत्रणा। १९ बाहु २० वस्त्र। २१ शार्दूल। २२ चीता। २३ कलश से उत्पन्न ध्वनि। २४ वदन। २५ वृक्ष। २६ मूर्वा-लता। २७ अस्त्र। २८ खड्गधारी पुरुष। २९ सेरकी नामक कद। ३० जल-कद, शालूक। ३१ मद्य। ३२ प्रचेता। (एका.)

अव्य [फा.] १ और, तथा।

सर्व—२ 'वह' का सक्षिप्त रुप।

वअ—देखो 'वय' (रू भे.) (जैन)

वइगण, वइगणीउ, वइगणु–स पु—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—पटसाउल मेघाडवर सभारावउ रावेटउ कणवीर सौवन्न-च्छलेउ मनेत्र नीलउ नेत्र रात कडाहुउ वइगणीउ कलही ।

—व स.

२ देखो 'वेंगण' (रू भे)

वइ—देखो 'वय' (स भे) (जैन)

वइड—देखो 'वितड' (रू भे.)

उ०—तिआ चोपडै तेल सिंदूर तन्न, वइडां वणावै घणू स्याम अन्न। नोडी भीडिआ अग लग्गा निहग, जटाजूट सन्नाह जे कोड जग।

—वचनिका

वइअर—देखा 'वैर' (रू भे)

देखो 'वैर' (रू भे)

वइठणो, वइठवो—देखो 'वैठणो, वैठवो' (रू भे)

उ०—मारू वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास। पूनिम-केरे चद ज्यू, मदिर हुवउ उजास। —ढो मा)

वइठियोडो—देखो 'वैठियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वइठियोडी)

वइठ्ठणो, वइठ्ठवो—देखो 'वैठणो, वैठवो' (रू भे)

उ०—रुखमइयो नइ राजा भीमक, मत्र करेवा वइठ्ठा।

—रुकमणी मगळ

वइठ्ठियोडो—देखो 'वैठियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वइठ्ठियोडी)

वइण—१ देखो 'वचन' (रू भे)

उ०—स्रो सखेस्वर 'पास' जी रे लो, सुणि वारू दोइ वइण रे सनेही। —वि कु

२ देखो 'वहन' (रू भे.)

वइताळ—देखो 'वैताळ' (रू भे)

उ०—कानि कुडल सिरि मुगट, मुत्ताहलि गलि माल। दिव्य वस्त्र दीसइ भला, वीर जिके वइताल। —मा. का प्र

वइदउ-देखो 'वैद्यक' (रू भे)

उ०—ब्रह्मा वीणा वाइ, पवन बुहारइ, गणपति गादह चारइ, ऋतात कोट राखइ, सनीस्वर रसोइ चाखइ, मगल खीखड घसइ, बुध सौनउ कसइ, अढार भार वनस्पति फूलपगर भरइ, घन्वतरि वइदउ ''करइ। —व स.

वइन—देखो 'वचन' (रू भे)

उ०—त्यु सदुपदेस विसेस दे कइ विमल एकइ वइन। बूझव्यौ सो रहनेमि विसयी गई जहा यदुपति सइन। —वि कु.

२ देखो वहन' (रू भे)

वइर—१ देखो वैर' (रू. भे)

उ०—चउड रा वइर ले चतुरग देवरा मारि ढाहिय दुरग। —रा ज सी

२ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—पाखरि पलाणि काळउ पहाड। वरिजाग चढिय वइरा विभाड —रा ज सी.

३ देखो 'वैर' (रू भे)

वइरतमाण—देखो विरहमाण (रू भे.)

वइरसेन—देखो 'वीरसेन' (रू भे.)

वइराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—१ जेती जउ मनमाहि, पजर जइ तेती पुळइ। मनि वइराग न थाइ, वालभ वीछुडिया तणी। —ढो मा

उ०—२ आगइ वार विच्यारि हराव्या, तुरकि न लाधउ लाग। मोटे राजि लाज अम्ह आवी, एहवु हुईइ वइराग। का दे प्र

उ०—३ चित्त विचारि समाचरइ रे लाल, वलि मरकट वइराग रे। —वि कु

वइरागर—स पु—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जादर हीरागर वइरागर फूलपगर चोर वलगार चुतार पीतावर चादर रत्तावर, नेत्रावर । —व स

रू भे —वयरागर, वयरागरि।

२ देखो 'वैरागर' (रू भे.)

उ० उडीसा री नइ नाहूलो, चीणा भोट चभेरी। गवड देस वइरागर सागर, जाळधर भभेरी। —रूकमणी मगळ

वइरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे)

उ०—१ माली तम्रोली हरमेखलीया जोगी भोगी वइरागी नट विट सुट खरड लाठा रगाचार्य .। —व. स

उ०—२ वइरागी थिउ विस्तरइ, रामा सू पि राग। कारत कांटे काकरि, पुलतु अणुह्राणि पाग। —मा का प्र

वइराट—१ देखो 'विराट' (रू भे) (व स.)

२ देखो 'वैराट' (रू भे)

वइरि, वइरी—१ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—१ वइरिया तणइ सिरि मिरी वाटि। पहू मलइ कूभ वइसारि पाटि। —रा ज सी

उ० २ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्के पाव। सयणे घाटा वउळिया, वइरि जु हूआ वाव। —ढो. मा

२ देखो 'वैर' (रू भे)

३ देखो 'वैर' (अल्पा रू भे)

वइवस्तु—देखो 'वैवस्वत' (रू भे)

उ०—सुत कासिप सूरज तप असाधि। वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। —सू प्र

वइस—देखो वैस्य' (रू भे)

उ०—वाणिज्य वइस फबि जेण वेर। कोटेक जाण वप घर कुमेर। —सू प्र

वइसणौ, वइसवौ—देखो 'वैठणौ, वैठवौ' (रू. भे)

उ०—कणक सिंहासण स्वामी वइसण। —स कु

वइसनव—देखो 'वैस्णव' (रू भे)

उ०—वइसनव ग्यान केवल वियाप। छक प्रेम श्रुलिसिका तिलक छाप। —सू प्र

वइसाख—देखो 'वैसाख' (रू भे) (उ र)

वइसाणौ, वइसावौ—देखो 'वैठाणौ, वैठावौ' (रू भे.)

उ०—अपरापति चडि चाल्यौ राय। ली अस्त्री अरधग वइसाय। —ऐ. ते

वइसायोडौ—देखो 'वैठायोडौ' (रू भे)

(स्त्री 'वैठायोडी' (रू भे)

वइसाह—देखो 'वैसाख' (रू भे)

उ०—सव्वे भला मासडा, पण वइसाह न तुल्ल। जे दवि दाधा रूखडा, तीह मायइ फुल्ल। —रा सा. स

वइसियोडो—देखो 'वैठियोडो, (रू भे)

(स्त्री. वइसियोडी)

वइहनडी— देखो 'वहन' (अल्पा., रू भे)

उ०—भूरइ रा वइहनडी अकन कुवार। महाजन भूरई राई साघार।
—वी दे

वइहरमांण—देखो 'विरहमाण' (रू. भे)

वई—देखो 'वेई' (रू. भे)

उ०पछै आ वात रावळ मालेजी रै हजूर हुई जु खाघ रै वई एक जरपूत रजपूताणी छोडी। —नैणसी

वईअर—१ देखो 'वहीर' (रू भे)

उ०—दलै कबीला देसने, वईअर कीघा वेग। साथै वघव सातही, तिकै उरस री तेग। —बी. मा.

२ देखो 'वैर' (रू भे.)

वईकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे)

वईजयती—देखो 'वैजयती' (रू भे) (च मा)

वईदराज—देखो 'वैदराज' (रू. भे)

उ०—वईदराज के विसाल, ओखघी उपाइक। तई रसायणी स्वघातु, स्वच्छय रसायक। —सू. प्र

वइद्रभा—देखो विदरभा (रू भे)

उ०—बलिभद्र वघव तेडीयोजी, बीजउ प्रमनकुमार। वईद्रभा नयरी वीवाह छइ जी, रहीय म लावो वार —रुकमणी मगळ

वईध्रत—देखो 'वैध्रत' (रू भे)

वईयर—१ देखो 'वैर' (रू भे)

उ०—वईयर वालै रूसणै सखि भाखै देवी वाणि। —वि. कु.

२ देखो 'वहीर' (रू भे.)

वईर—देखो 'वहीर' (रू भे)

उ०—दुग्व मेटण पोट कवीर घरा दिस। हाकळ कीघ वईर हरी।
—भगतमाळ

वईस—देखो 'वेस्य' (रू. भे) (जैन)

वईस्रवण—देखो 'वैस्रवण' (रू भे)

वउ—देखो 'वहू' (रू. भे.)

वउवदोळी—देखो 'वहुवदोळी' (रू भे)

वउरात—देखो 'वहुरात' (रू भे)

वउलण—१ देखो 'वोलण' (रू भे)

२ देखो 'वोलणी' (रू भे)

वउळणौ, वउळवौ, वउलणौ, वउलवौ—देखो 'वोळणौ, वोळवौ' (रू भे)

उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पाव। मयगो घाटा वउळीया, वइरि जु हूम्रा वाव। —ढो मा

उ०—२ अभिलास आयन कउ समानत, मउज मानत लोग। वैसाख मइ वयसाख वउलत, कहा पीछइ भोग। —वि. कु

वउलसरी—देखो 'वोलसरी' (रू भे.)

वउळाणौ, वउळावौ, वउलाणौ वउलावौ—देखो 'वोळाणौ, 'वोळावौ' (रू भे.)

उ०—सज्जणियां वउळाइ कइ, मदिर वइठी आइ। मदिर काळउ नाग जिउ, हेलउ दे दे खाइ। —ढो मा.

वउळायोडो, वउलायोडो—देखो 'वोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री वउळायोडी)

वउळावणौ, वउळाववौ वउलावणौ, वउलाववौ—देखो 'वोळाणौ, वोळावौ' (रू भे)

उ०—१ तत तणक्कइ पिउ गियइ, करहउ ऊगाळेह। भल वउळावौ ढोहडा, दई वळावण देह। —ढो मा.

उ—२ कुती मुद्री जाइ वउलावेवा नदणह। —प प च

वउळावियोडो—देखो 'वोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री वउळावियोडी)

वउळाव् वउळावौ—देखो 'वोळाऊ' (रू भे)

उ०—१ वउळावू सगळा विलविलइ, ढोलउ किउही पाछउ वळइ। साथी मारू द्रागण-भणी, घणु कहइ पति न रहइ घणी।

उ०—२ जिणि वेळा ढोलउ नीकळइ, केता वउळावा साथइ करउ। सीख करेवउ इण वात रउ, पडिम्यइ रखै तुम्हा पातरउ। —ढो मा

वउळियोडो, वउलियोडो—देखो 'वोळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० वउळियोडी, वउलियोडी)

वउलसिरी—देखो 'वोलसरी' (रू भे)

उ०—जइ सूकी तउ वउलसिरी, त्रूटी तउ मोतीसरी, जइभागउ तउ वारहउ, थाकउ तउ सेराह, जइ खाडउ तोइ चद्र. .. ।
—व स

वऊ—देखो 'वहू' (रू भे)

वऊवदोळी—देखो 'वहुवदोळी' (रू भे)

वऊरात—देखो वहुरात' (रू भे)

वएसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे)

उ०—सभै खाडस स्रगार सुतनी। वएसा भूल चली रिखवनि।
—रामरासी

वक—देखो 'वक' (रू भे.)

उ०—सुकवि तजै सुदतार नूं, जिण मुख कुकवि प्रसस। जळद अग्र वक देख जू, व्है प्रछन्न कळहस। —वा दा
(स्त्री वकी)

वकट—देखो 'विकट' (रू भे)

उ०—हूले थाट दखणाद लग टळ तोपा हमत, खसत मद मीढ रा नरा खागा। मरट तिणवार राखी वकट मोसरा, सुपेती चौसरा तणी 'सागा'। —सग्रामसिह सक्तावत री गीत

वकणौ, वकबौ—देखो 'वकणौ, वकबौ' (रू भे)

उ०—१ बाणा वाण वाजै गोळा चोसरा सवीर वकै, वाहा हार मील भाजै छाजै पखा बोळ। जठी-तठी भार पडै मीरजा ग्रोहटै जठी, तठी-तठी राजा ग्राडो ग्रोडजै सतोळ। —ग्रमरदास बारहठ

उ०—२ ग्रवळी वयण ग्रहीर, उठतै तैहिज ग्राखियौ। वकियौ मैं पिण वीर, वात न जाणा वीझरा। —वीझरैग्रहीर री वात

वकणहार, हारौ (हारी), वकणियौ—वि०।
वकिग्रोडौ, वकियोडौ, वक्योडौ—भू० का० कृ०।
वकीजणौ, वकीजबौ—कर्म वा०।

वकत—१ 'वक्त' (रू भे)
२ देखो 'वखत' (रू भे)

वकतर—१ देखो 'वकत्र' (रू भे) (डि को)
२ देखो 'वखतर' (रू भे)

वकतरियौ—१ देखो 'वखतरियौ' (रू भे)
२ देखो 'बखतर' (ग्रल्पा रू भे)

वकता—स स्त्री [स वक्तृ] १ जिव्हा, जीभ, रसना। (ह ना मा)
रू भे—वगता।
२ देखो 'वक्ता [रू भे]
उ०—मकल प्रताप सुरसरी, हरिपद रूद्र सहित। सुरता राम सूमित्रसुत, वकता विसवामित्र। —रामरासौ

वकतावर—देखो 'वखतावर' [रू भे]

वकत्र—स पु [सं वक्त्र] १ मुख, मुह, वदन। [ग्र मा.]
उ०—देवी भाव स्वादे हसतै वकत्रे। देवी पाणपाणा पिये मद्य पत्रे। —देवि
२ जानवरो का थूथन।
३ पक्षियो की चोच।
४ ग्रग्रभाग या नौक।
५ ग्रारम्भ।
६ ग्रनुष्टप छद।
७ जिव्हा, जीभ।
रू भे—वकत्र, वकतर।

वकपचक—देखो 'वकपचक' (रू भे)

वकफ—स पु [ग्र. वक्फ] १ देवी-देवताग्रो या ईश्वर को भेंट करने ग्रथवा धार्मिक कार्यों के लिये दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु।
२ उक्त प्रकार का उत्सर्ग या भेंट करने की क्रिया।
३ दान।
४ वर्षात मे छत के टपकने या चूने की ग्रवस्था।
५ दो घटनाग्रों के बीच का समय, विराम, मध्यान्तर।
६ फुरसत, ग्रवकाश, छुट्टी।
७ देर, विलम्ब।
रू भे—वक्फ।

वकफनामौ—स पु [ग्र वक्फनाम] दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु का दान-पत्र।
रू भे—वक्फनामौ।

वकबाद—देखो 'वकवाद' (रू भे)

वकवादी—देखो 'वकवादी' (रू भे)

वकवादी—देखो 'वकवादी' (रू भे)

वकर—स पु—१ वलिदान, वध।
उ०—उठै देवी ग्रागै भैसो वकर करण नू तयार कियो छै। —नैणसी
२ देखो 'वक्र' (रू भे)
उ०—तरण तप जुळण ग्रगीट रा सरोतर, सत्रा रिण रीठ रा खगा सालै। कर मकर कर धीट रा वचन ना काढै, चकर ग्रणदीठ रा वकर चालै। —महाराजा मानसिह जी रौ गीत

वकरगति, वकरगती—देखो 'वक्रगति' (रू भे)

वकरगामी—देखो 'वक्रगामी' (रू भे)

वकरगुल्फ—देखो 'वक्रगुल्फ' (रू भे)

वकरणौ, वकरवौ—देखो 'वकरणौ, बकरवौ' [रू भे]

उ०—डायण चढी जिया परि डकरै। वाणी विकट भयकर वकरै। —सू प्र.

वकरदरस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू भे)

वकद्रस्ट—देखो 'वक्रद्रस्ट' (रू भे.)

वकरद्रस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू भे.)

वकरपूछ—देखो 'वक्रपुच्छ' (रू भे)

वकराग—देखो 'वक्राग' (रू भे)

वकराणौ, वकरावौ—देखो 'वकराणौ, वकरावौ' (रू भे.)

वकरायोडौ—देखो 'वकरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वकरायोडी)

वफरियोडौ—देखो 'वकरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वकरियोडी)

वफरी—१ देखो 'वक्री' (रू भे)

२ देखो 'वकरी' (रू भे)

वकरोगति—देखो 'वक्रोक्ति' (रू. भे.)

वफरौ—देखो वकरौ' (रू. भे)

(स्त्री वकरी)

वफळ—१ देखो 'विकळ' (रू भे)

उ०—करि अग वफळा हुआ रीस जळाकरी, अगँ अकळा करी भगत अमळा। करी चक्रवाह तन ग्राह तडळा करी, करी रावण गयौ घरी कमळा। —हुकमीचद खिडियौ

२ देखो 'व्याकुळ' (रू. भे)

३ देखो 'वकळ' (रू भे)

वकवाद—देखो 'बकवाद' (रू भे)

उ०—सुक-पिक लगैं सवाद, भल थोडी ही भाखणों। ग्रथा करैं वकवाद, भेक लवै ज्यूं 'भैरिया'। —रतलाम नरेस बळवतसिंह

वकव्रत, वकव्रत्ति—देखो वकव्रत्ति' (रू भे)

वकसणौ, वकसबौ—देखो 'बकसणौ, बकसबौ (रू भे.)

वकसियोडौ—देखो 'बकसियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वकसियोडी)

वकाण, वकान—१ देखो 'बखाण' (रू भे)

२ देखो 'वकायन' (रू भे)

वकाई—देखो 'बकाई' (रू भे)

वकाईण, वकायण, वकायन—देखो 'बकायन' (रू भे)

उ०—अरक आउल तिणासिरा, सिम रोहिडौ रोहिण। इद्रोख अवरस आसिद्रो, अरम्यज वकाईण। —रुकमणी मगळ

वकार—देखो 'वाकार' (रू. भे)

वकारणौ, वकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू भे)

उ०—१ वार हजार वगाळ, 'विलद' तिण वार वकारै। करि कवाण टकार, घाव सामा पग धारै। —सू प्र

उ०—२ नाईं री आ बात राजाजी रै ई सोळै आना हीयैं ढूकी। बोल्या – हा, आ बात तौ थारी साव साची। पोहरौ देवणीया टाळ तौ वौ किणी नैं वकारिया ईं नी। —फुलवाडी

उ०—३ उडै रीठ अणपार, पीठ लगा लाखा पिसण। वेढीगार वकार पैठौ उदियाचळ 'पतौ'। —अज्ञात

वकारणहार, हारौ (हारी), वकारणियौ—वि०।

वकारिओडौ, वकारियोडौ, वकारयोडौ—भू० का० कृ०।

वकारीजणौ, वकारीजबौ—कर्म वा०।

वकारियोडौ—देखो 'वाकारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वकारियोडी)

वकाळ—१ देखो 'वक्काल' (रू भे)

उ०—विसायतो वकाळ और सहर के लोग, इस वजह से गुजारा करै। केतेक भाडभूंजे केतेक भीख माग पेट भरैं। —दुरगादत्त बारहठ

२ देखो 'वकील' (रू. भे.)

वकालत—स स्त्री [फा] १ न्यायालय या कचहरी में किसी मुकद्दमे में किसी की तरफ से की जाने वाली बहस, पैरवी या अभिभाषण।

२ वकीलो का कार्य व व्यवसाय।

३ किसी का स्थानापन्न होकर किया जाने वाला कार्य या उसके पक्ष का मडन।

वकालतन—क्रि वि [फा] वकील के द्वारा, वकील के जरिये।

वकालतनांमौ—स पु [फा वकालतनाम] किसी न्यायालय या कचहरी मे किसी के मुकद्दमे पर विधिवत बहस या अभिभाषण करने का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र।

वकासुर—देखो 'बकासुर' (रू भे)

वकी—देखो 'बकी' (रू भे)

वकील—स पु [फा.] १ वह व्यक्ति जो कानून की परीक्षा पास हो और जिसको न्यायालय या कोर्ट मे किसी मुकद्दमे की बहस या कार्यवाही करने का अधिकार पत्र प्राप्त हो।

२ किसी के कार्य मे उसके प्रतिनिधि के रूप मे कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ सदेश वाहक, दूत।

४ किसी के पक्ष को युक्तियुक्त अभिवाचन करने वाला व्यक्ति।

रू भे—वकाल, ववकाल, वक्काल, वक्काल।

वकुल—देखो 'वकुल' (रू भे)

उ०—अन्न उदक पय परिहरी, आभरणां ऊवेसि। वकुल-त्वचा वीटि करि, तरुणी तापस वेसि। —मा का प्र

वकूऔ—स पु [अ वकूआ] १ प्रकटीकरण।

२ देखो 'वाको' (रू. भे)

३ देखो 'वाकौ' (रू भे)

४ देखो 'वाकियौ' (रू भे)

वकूफ—१ देखो 'वाकिफ' (रू भे)

२ देखो 'वेवकूफ' (रू भे)

ववकतण—१ देखो 'वक्रता' (रू भे)

उ०—हा हा दसम कालवलु, खल वक्कत्तण जोइ। नामेणिइ सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरीय होइ। —षष्टि शतक-प्रकरण

वक्कर—१ देखो 'वकरी' (मह, रू भे)

२ देखो वकर' (रू भे)

३ देखो 'वक्र' (रू भे)

उ०—तव राकस रूपै रवौ, ददुर पग धूजवै। हुंकार वक्कर हुलसीयौ, कुवर खडग करि पूजवै। —रीसालू री वात

वक्करणौ, वक्करवौ—देखो 'वकरणौ, वकरवौ (रू भे.)

उ०—अचळेस कहै अहमद्द-सूं, वदै न कथयण, वक्करै। पतसाह पुत्री परणी नही, कवर वीर करिणयागरै। —अ वचनिका

वक्कराणौ, वक्करावौ—देखो 'वकराणौ, वकरावौ' (रू भे)

वक्करायोडौ—देखो 'वक्करायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वक्करायोडी)

वक्करियोडौ—देखो 'वकरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वक्करियोडी)

वक्काल—देखो 'वक्काल' (रू भे)

वक्त—स स्त्री [अ.] १ समय, काल, वेला।

मुहा—१ वक्त काटणी=समय गुजारना, किसी तरह निर्वाह करना। २ वक्त गमाणी=समय नष्ट करना। ३ वक्त री चीज=समयानुसार मिलने वाली चीज, ऋतु के अनुसार गाना या राग।

२ किसी कार्य का उपयुक्त समय, अवसर मौका।

मुहा.—१ वक्त पर=समय पर, यथा समय। २ वक्त रा बाया मोती नीपजै=समय पर किया काम उचित लाभ देता है। ३ वक्त हाथ सूं गवाणी=अवसर चूकना, मौके का फायदा न उठाना।

३ विशिष्ट कार्य के लिये निश्चित किया हुआ समय।

४ पल, घडी, दिन। (ज्योतिष)

५ किसी कार्य मे लगने वाली समय की मात्रा, विलब, देर।

६ अवकाश, फुरसत, टाइम।

७ मृत्यु का समय, मौत की घडी।

रू भे—वकत, वखत, वस्त, वगत, वकत्त, वखत, वखत्त, वस्त, वगत।

वक्तव्य—वि. [स] १ व्यक्त करने योग्य, निरूपण करने योग्य।

२ वह जिसके लिये कुछ व्यक्त किया जावे, कहा जावे।

स. पु—१ किसी घटना विशेष या विषय विशेष पर, लोगो की जानकारी के लिये दिया जाने वाला लिखित या कथित स्पष्टीकरण, मन्तव्य, टिप्पणी।

२ वक्ता का कथन,

वक्ता—वि. [स वक्तृ] १ कहने या बोलने वाला, भाषण देने वाला।

२ जो किसी बात या घटना को ठीक ढग से व्यक्त कर सकता हो, कह सकता हो, भाषण पटु।

स पु—१ कहने, बोलने या भाषण देने वाला व्यक्ति।

२ उपदेशक, शिक्षक।

३ पठन पाठन करने, स्तवन करने व उच्चारण करने वाला व्यक्ति।

उ०—उज्जीण नगरी रै माही देव सरमा नामे विरामण निवास करै। उवौ च्यार वेद री वक्ता, सठ सास्त्र री जाण हार, वडौ पडित थौ। —साईं री पलक री वात

४ विद्वान, पण्डित।

रू भे—वकता, वकता, वखता, वगता।

वक्फ—देखो 'वकफ' (रू भे)

वक्फदार—वि [फा] वक्फ प्राप्त करने वाला।

वि वि—जिस प्रकार भविष्य मे की जाने वाली सेवा के लिये जागीरदारो को जागीरें दी जाती थी उसी प्रकार पिछली जानदार सेवा या कार्य करने के बदले पेंशन के तौर पर अथवा पहलवानो, विद्वानो, कलाकारो आदि को जीवन-यापन के लिये जागीरें दी जाती थी उन्हे वक्फ कहते थे। अत उक्त प्रकार की जागीर प्राप्त करने वाला।

वक्फनामौ—देखो 'वकफनामौ' (रू भे)

वक्र—वि [स.] १ सीधा का विपर्याय, टेढा, तिरछा वाका।

२ झुका हुआ, मुडा हुआ, नत।

३ घुघराला, छल्लेदार, गोल-मटोल।

४ कुटिल, धूर्त, वेईमान, छलिया।

५ निष्ठुर, वेरहम।

६ दीर्घ। (छन्दशास्त्र)

स पु—१ मुख। (ह ना मा.)

२ रुद्र।

३ मगल ग्रह

४ शनि,

५ त्रिपुर-नामक राक्षस, त्रिपुरासुर।

६ नदी का मोड।

७ प्रथम गुरु के रागण का नाम (र. ज. प्र)

रू. भे.—वक वक्र, वाको, वक, वकनि, वकेण, वंक्रत, वक, वक्कर।

वक्रफोटी–सं. पु – एक वस्त्र विशेष।

उ०—घोत पट्ट, राजपट्ट, गजवडि, हंसवडि, चोरिग्रावडी, ऊमावडि, मूमावडि, पूमावडि, सिलहटी, कपूरीया, चउकपडीया, पोतिया, वक्रफोटी नागवटा…। —व स.

वक्रगति, वक्रगती–वि. [स वक्रगति] १ जिसकी गति तिरछी हो, टेढी चाल चलने वाला।

२ जिसके आचार-विचार व व्यवहार सीधा-सादा न हो।

३ विपरीत दशा मे चलने वाला।

४ कुटिल।

स. पु.—१ सूर्य से पाचवे, छठे, सातवें व आठवें ग्रह। (ग्रह लाघव)

वि वि.—मगल ३६ दिन, बुध २१ दिन वृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ वक्री होते हैं।

२ मगल ग्रह।

३ सर्प, साप। (ह. ना. मा.)

रू. भे —वकरगत, वकरगति।

वक्रगामी–वि. [स. वक्रगामिन्] तिरछी चाल चलने वाला।

रू. भे.—वकरगामी।

वक्रग्रीव–स. पु. [स वक्रग्रीव] ऊट।

वक्रता–स पु. [स] १ वक्र होने की दशा या अवस्था।

२ टेढापन, तिरछापन।

३ साहित्य रचना की एक शैली जो रचना को सौन्दर्य व उत्कृष्टता प्रदान करती है।

रू भे —वक्रत्तण।

वक्रति—देखो 'विक्रति' (रू. भे.)

उ०—इम करतइ कूवड हवु भूप, कालु कुछित अतिहिं करूप। दैवगति आहवी सपनी, एवली वक्रति किहा थी ऊपनी। —नळ दवदती रास

वक्रतुड–स. पु [स वक्रतुण्ड] १ गणेश।

२ तोता।

रू भे —वक्रतुड, विक्रतड, विक्रतुड।

वक्रदस्ट्र–स पु. [स वक्रदंष्ट्र] सूअर, शूकर, वराह।

रू भे.—वकरद्रस्ट।

वक्रद्रस्टि–वि [स वक्रदृष्टि] १ जिसकी दृष्टि मे दुष्टता भरी हो, जिसकी दृष्टि पडने पर कुछ अमगल होता हो।

२ जिसकी दृष्टि मे क्रोध भरा हो।

३ मन्द, दृष्टि वाला।

४ ईर्षालु, डाही।

स. स्त्री —१ टेढी दृष्टि, तिरछी नजर।

२ क्रोध पूर्ण नजर।

३ मन्द दृष्टि।

४ ऐंचाताना।

रू भे.—वकरद्रस्टी, वक्रद्रस्टी।

वक्रपुच्छ–स पु. [स.] कुत्ता, श्वान।

रू भे —वकरपूंछ।

वक्रांग–वि —जिसका अग सीधा न हो, कूबड वाला।

स पु —१ हस।

२ चक्रवाक, चकवा।

३ सर्प, साप।

रू. भे —वकरांग।

वक्री–वि [स वक्रिन] १ अपना मार्ग छोड कर विपरीत दिशा मे चलने वाला। (ग्रह)

२ टेढे मेढे अगो वाला।

३ क्रोधी।

४ विपरीत, उल्टा।

रू भे —वक्री, वकरी,

वक्रोक्ति–स. स्त्री [स] १ एक काव्यालकार जिसमे काकुश्लेष से किसी वाक्य या बात का और का और अर्थ निकलता है।

२ चमत्कार पूर्ण कथन।

३ काकूक्ति।

रू भे.—वक्रोक्ति, वकरोगति।

वक्रोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे)

वक्ष–स पु [स. वक्षस्] १ पेट और गले के बीच का भाग, छाती। सीना।

२ स्त्रियो के कुच, स्तन, चूंचियें व पुरुषो के स्तन चिन्ह।

रू भे—वकस, बक्स, बक्खल, बक्स, वच्छ, बछ, वख, वच्छ, वछ।

वक्षस्थल–स. पु [स] १ छाती, सीना, उर-स्थल।

उ०—अरु आदमी तरवारा वाय मा'राज नूं छेडे किया तो हेठे जादूराय मूघो लाधो वा कटारी सूघो हाथ मा'राज री जादूराय रैं वक्षस्थल मार्या सू काढियो। —द दा.

२ कुच, स्तन, चूचिया।

रू भे —वच्छस, वखिस्थळ।

वक्षोज–स पु [स वक्षस्] १ छाती, सीना।

२ कुच, स्तन, चूचिया।

रू भे —वक्षोज

वक्ष्मांण–वि [स वक्ष्यमाण] १ जो कहने योग्य हो, वक्तव्य, वर्णनीय

२ जो कहा जारहा हो।

वख—१ देखो 'विख' (रू. भे.)

उ०—अह दाटक थका कमण मण अरैं, जेरै कुण हासै वख जाण। काळ तणी टेरै जायै कुण, फेरै कुण थारा फुरमाण।

—पसजी तिडियो

२ देखो 'वग' (रू भे.)

उ०—अरु वीकानेर सूं मूमडै रुघनाथ वा चोरटियै मान जगतपसिंघ विहारीदास जी नूं इसो निसावट करी थी कै मोहनो थानूं मारण नूं आदूणी सूं हुकम लेय नै आयो है, सू थे घणा सैंठा रहज्यो, तथा थारो वख लागै तो मुहतै नूं धरम-करम देय नै चूक कर मारज्यो। —द दा.

३ देखो 'वख' (रू भे)

वखडी—देखो 'वखटी' (रू भे)

वखत—१ देखो 'वक्त' (रू भे)

उ०—१ पच वखत निमाज ताज सुलताह मोहन, रोजा मान वजीर मलिक उबरै मन मोहट। —व म

उ०—२ फौज तहव्वरखांन री, आवी कौ सूर। वखत वणी दिण मद्दरा, नरा नग सुर नूर। —रा रू

२ देखो 'वगत' (रू भे.)

उ०—ताहरा पागती ना लोग लोटी गी मा नु समभावण लागा हिवै तो बीजी परणीज्यो कोई नहीं। इण रा वखत मे इसटी हीज लिखीयो। —कावडी जोइयो नै सोढी नरळ री वात।

वखतवत—देखो 'वखतवन' (रू भे)

उ०—विसम वाणि निसवाद, विसयरस अगि न वाधइ, वखतवत वर विबुध वांन दिन प्रति वाधइ। —ऐ जै. का. स

वखतवडाळ—देखो 'वखतवडाल' (रू. भे)

उ०—सणु सेहर मकमगर मांगळराव तुरंग। भूपाळ भूपाळ माटीवटी वखतवडाळ। —नैणसी

वखतवायरी—देखो 'वखतवायरो' (रू भे)

उ०—'वखता' वखतवायरा, तैं मारयो 'अजमाळ'। हिंदवांणी री वादमा, तुरकाणी रो काळ। —कविराजा करणीदान

वखतविलद—देखो 'वखतविलद' (रू भे)

वखतसर—क्रि वि —उपयुक्त समय पर, ठीक समय पर।

उ०—मोटा ताजा नै टील साढ़ रूसाई री गोरसी ओळावै। पीसणिया पीसै राधणिया राधै वखतसर न्हावो धोवो अर तिरस्या गोरस री वाता सावै। —दसदोस

वखता—देखो 'वक्ता' (रू भे.)

वखतावर—देखो 'वखतावर' (रू भे)

उ०—धरम्यांनै दिण तजि घरै, मद्द वखतावर सीर। दुइ चेडा नै अवगिणी, भयो कोसिक री भीर। —ध व. ग्र.

वखतावरी—देखो 'वखतावरी' (रू भे.)

वखतावर—देखो 'वखतावर' (रू. भे.)

उ०—विद्याधर वड वखतावर महियान मैं हो महिमा महिमाय।

—ध. व. ग्र

वखती—देखो 'वगती' (रू भे)

उ०—ताहरा राजा सो जैत अरज करण लागो, 'राज वदे माहे कौण खामी जु महाराज अतरा (नाराज) हुवा ?' तद राजा जैत नूं कहीयो" जु मैं तो थानूं सगळो ऊपर कीयो थो, तिको तूं बाहर चढ नै वाणीया री हुणा वखती माल छोड आयो।

—जैतमाल प्रमार री वात

वखतैत—देखो 'वखतैत' (रू भे)

वखत्त—१ देखो 'वक्त्र' (रू. भे)

उ०—सपदा विहीण गौर कन्यका सतोगियो क, निसाधू मौजियो क सुधा मैं घणी नखत्त। राजियो विमत्र' रो सनह रोकियो क, बिजा 'किमत्र' रो विलोकियो वखत्त। —साहिबो सुरताणियो

२ देखो 'वक्त' (रू भे)

३ देखो 'वगत' (रू भे)

वखमी—देखो 'विसम' (रू. भे)

उ० —जिय जायत थाग विना जखमी। वखना आज वार घणा वखमी। —पा प्र

वखर—देखो 'भखारी' (मह, रू भे)

उ०—जवाईडा मेरी गुदडा मे रोटी मागै, नेक लाडो मेरी ना चलै। सासूडी मैं कलेवै का वखर भरा ग्यू, एक तेरी लाडो ले चलूं। —लो. गी.

वखसीस—देखो 'वकसीस' (रू भे)

उ०—वादसाह री मारी वखसीस ओर वीरमजी दिया सो सगळा आगे मेल्हिया। —ठाकुर जैतसी री वारता

वखांण—देखो 'वखाण' (रू. भे) (अ. मा, ह ना मा.)(उ र)

उ० —१ धणउ वखांण किसु हिंद कीजइ, अभिनव सारद देवि। तेह तणउ जे कवतिग वीनवउ, ते निसुणउ सनेविइ।

—हीराणद सूरी

उ०—२ सिणगार सोह मैं सजुत्त सुदरी वखांण ए। पयच आगुळी जु पाण, काम पच बाण ए। —गु रू. व.

उ०—३ सोल सहस पणि सामटी, परण्या पुरस पुराण। तु हि गोकुल-गोलिणी, विजस्या-तणउ वखांण। —मा का. प्र

उ०—४ माळव-देस विरोडिया, मारू किया वखांण। मारू सोहा-गिण थई, सुंदरि सगुण सुजाण। —ढो मा.

उ०—५ ऐ प्रोहित दीदारू सखरा पण । अर वीण आछी वजावै । तद सहर माहे वखांण हुवौ । —नैणसी

वखाणण—देखो 'वखाणण' (रू भे.)

वखाणणौ, वखाणबौ—देखो 'वखाणणौ, वखाणबौ' (रू भे) (उ. र.)

उ०—१ भडा मंत्रिया जूथ भारा, सजै निज दरबार सारा । भला पाता जूथ भेळा, वखाणै पह जेण वेळा । —सू प्र.

उ०—२ पचविध पाचू पच उभै पण, पिंड ताहरै तणा प्रकार । 'जैता' हरा वदीता जग मे, हारै नही वखाणणहार । —द. दा

वखाणणहार, हारौ (हारी), वखाणणियौ—वि० ।

वखाणिप्रोडौ, वखाणियोडौ, वखाण्योडौ—भू० का० कृ० ।

वखाणीजणौ, वखाणीजबौ—कर्म वा० ।

वखाणसद—देखो 'व्याख्यानसद' (रू. भे)

वखांणियोडौ—देखो 'वखाणियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वखाणियोडी)

वखाणिवू—वि. [स. व्याख्यातव्य] १ जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता हो । (उ र)

[स व्याखेय]—२ जिसकी व्याख्या होने को हो । (उ र)

३ व्याख्या करने योग्य (उ र)

वखाणु—देखो 'वखाण' (रू भे)

उ०—ऊपनु केवल नाणु सागीय ए नेमि जिणेसरह ए । साभली सामि वखांणु विरता ए सावयव्रतु धरह ए । —प. प च

वखाणौ--देखो 'वखाण' (रू भे)

उ०—तौ चौथै धन धन छै जिकै राजा ईसरादिक जाणौ रे । स्त्री-वीर समीपै जाय नै, नित नित का सुणै वखाणौ रे —जय वाणी

वखात—देखो 'विखायत' (रू भे)

उ०—एकरसूं मोटै न्रप आगै, पण तज वग्वो दियौ प्रण पार । जण दन तौ 'गोपळ' जीवाया, लाधौ वखो वखाता लार । —ठाकुर सवाईसिंह री गीत

वखारी—देखो 'भखारी' (रू भे)

उ०—चोर नै इण बात री सुराग हो के वखारी मे रूई पडी है । —फुलवाडी

वखिस्यळ—देखो 'वक्षस्थल' (रू भे.)

उ०—महावर कध पचाइन मड, वखिस्यळ जड हरावळि वड । —रामरासौ

वखेडौ—देखो 'वखेडौ' (रू भे)

उ० वखेडिया री टोळी घर रै सामी हाकी करण लागी-काढौ तुरक नै बारै, काढौ तुरक-नै बारै' । —वरसगाठ

वखे—देखो 'पखे' (रू. भे.)

उ०—तठै ऐक महावेल खाडी । तकण री पाखती सेखा वनर असै नाम नगर रै वखे आय नीसरियौ ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

वखेर—देखो 'विखेर' (रू. भे.)

वखेरणौ, वखेरबौ—देखो 'विखेरणौ, विखेरबौ' (रू. भे)

उ०—१ 'अजन' नमौ तप तेज राजा 'गजन' अभनमा, चीत ही दुधरम रीत चाही । पत जका राखतौ पातसाही पगा । सुत जका वखेरी पातसाही । —तेजसी खिडियौ

उ०—२ म्हैं तौ आगण मूग वखेरस्यां, म्हारा साजन रा कोडा । चोखौ रै मादळ धुळ रह्यौ, रग रातौ रै मादळियौ, थारौ रै सवद सुवावणौ । —लो गी

वखेरियोडौ—देखो 'विखेरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वखेरियोडी)

वखौ—देखो 'विखौ' (रू भे)

उ०—१ मरणौ हुवै जकै पग माडौ, ऊवरणौ हुवै जिकै अखौ । दिल धवरीज मौत सूं डरपौ, वळै कही किण भात वखौ ।

—जादूरामजी आढौ

उ० -२ राज जनमिया ईज हुता, तरै धरती माहे वखौ हुवौ ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ महवेचा' वखौ करता 'मधकर', मछर तणा गढग्रवळी-माण । सोहडा गलै न ऊतरै सलहा, पमगा न उत्तरै पलाण ।

—माधोसिंह महेचा री गीत

वख्त—देखो 'वक्त' (रू भे)

वख्तर—देखो 'वख्तर' (रू. भे)

उ०—तिका सस्त्र विद्या घोडा री सवारी व वखतर पहरणै री विद्या सिखावै । —नी प्र

वग—१ देखो 'वाग' (रू भे)

उ०—कविता टुक सुण सुख अधिक, स्रीमुख हुकम सहत । पै जस अस वग फुक 'पता', रुक पग नीठ रहत ।

—जैतदान वारहठ

२ देखो 'वरग' (रू भे)

उ०—१ वगां वीचाळै काढिया, हुड जिम पग झल्लै । ऊभी मेली साहत्री, गढ गढ महल्लै । —केसौदास गाडण

उ०—२ जिकै धरती रा धणी पताल वासी भुयग नै धण रा धणी दौलतवत श्रो विन्है एकै वग हुता सु धरती री पुड भेद नै विमरै पेठा । उठै रहण लागा । —रा सा स

वगड देखो 'वगड' (रू भे)

उ०—मीमाळइ जल माहि सरि, उन्हालइ पचागि । वरसालइ वगडइ, वसइ कामकदला-काजि । —मा का प्र.

वगडइ—देखो 'वगड' (रू भे)

वगडणी, वगडबौ—देखो 'विगडणी, विगडबौ' (रू भे)

वगडावत—स. पु [देसज] १ गोठण निवासी बाघ नामक क्षत्रिय के वंसज जो २४ विभिन्न जाति की कन्याओं मे उत्पन्न हुए थे। ये बडे शूरवीर और दानी थे।

वि वि —बाघ ने उक्त कन्याओ के साथ जगल मे गधर्व-विवाह कर लिया, जब यह बात प्रगट हुई तो कन्याओ के माता-पिता ने इनका बाघ के साथ विवाह कर दिया। वास्तव मे इन कन्याओं की सख्या २५ थी परन्तु विवाह के लिये आये हुए प्रोहित ने एक कन्या को विवाह कराने के उपलक्ष मे माग लिया। इस प्रकार ये चौबीस की सतान वगडावत कहलाई

रू भे —वगडावत, वघडावत।

२ उनकी प्रसगा मे गाया जाने वाला लोक गीत।

वि —बहादुर, वीर।

वगट—स पु [स भृकुट] सिर, मस्तक।

वगट—देखो 'वगड' (रू भे)

वगणी, वगबौ —१ देखो 'वजणी, वजबौ' (रू भे)

२ देखो 'बाजणी, बाजबौ' (रू भे)

वगणहार, हारौ (हारी), वगणियौ—वि०।

वगिओड़ौ, वगियोडौ, वग्योडौ—भू० का० कृ०।

वगीजणी, वगीजबौ—भाव वा०।

वगत—१ देखो 'वक्त' (रू भे)

उ०—१ राजाजी तौ सूरज रै ऊगणा री वाट जोवता जोवता पूरा आती आयग्या हा। मेवट सूरज नै तौ वगत माथै ऊगणौ हौ इज। —फुलवाडी

उ०—२ मवर नै ऐडी अणचीती जीत री आस नी ही। वौ जाणतौ हौ के उणनै पाधरी सणक करणा मे की वगत लागेला। —फुलवाडी

२ देखो 'वगत' (रू भे)

वगतर—देखो 'वगतर' (रू भे)

उ०—वाही राण प्रतापसी, वगतर में बरछीह। जाणक भीगर-जाळ में, मूंह काढ्यो मच्छीह। —अज्ञात

वगतरियौ, वगतरौ—१ देखो 'वखतरियौ' (रू भे)

उ०—धीरज रग म्हारा धणी, ओढ लयू असमान। वगतरिया पोवै वरम, पींपळ हदा पांन। —पा प्र.

२ देखो 'वखतर' (अल्पा, रू भे)

वगता—देखो 'वकता' (रू भे) (ग. मा)

२ देखो 'वक्ता' (रू भे)

वगतावर—देखो 'वखतावर'

वगतौ—स पु —लूटा गया माल या धन दौलत।

उ०—१ ताहरा वाणीयै पुकार घाती। ताहरां नरो राजा कनै वैठौ हुतौ। सु राजा कहीयो 'खबर करो कोण पुकारै ? ताहरा नरो कहण लागौ, 'राज जैंत वाहर चढियौ हुतौ। खबर मगाव छू।' ताहरा वाणीये कहीयो। राज जैन आप न चढियौ, रजपूत चढीया हुंता। तिका म्हारो वगतौ माल छोड ने आया।

—जैंत पुमार री वात

उ०—२ राजा देदै वारट नूं पूछजै छै। ताहरा राज देदे नूं बुलायौ। सु देदौ महाराज रै हजूर आय कहीयो, "जु महाराज मैं तौ इहा नूं कहीयो, वगतौ माल ढीलौ मता करो।

—जैंत पुमार री वात

रू भे —वगनौ।

वगर—१ देखो 'वगैर' (रू भे)

उ०—दूभर पेट भरण नु दन दन दस रडवडता वडसा देस वदेस। पाग्या वगर पीया पारेवा, जाता तुरग पीया 'जगतेस'।

—जवानजी आढौ

२ देखो 'वगट' (रू. भे)

उ०—सावरो सगन लगावत मे मा, काहु कछु काम वहानै कोई, अपनै वगर मे आवत मे मा। —रसीलै राज रा गीत

स पु —एक देश विशेष जहा के ऊट बढिया होते है।

वगरू—देखो 'वगरू' (रू. भे)

उ०—सू ऊठ कुण-कुण दिसावर रा छै ? काछी थोदला, छपरी, जालोरी, वगरू बलोची, सिववाडिया, और ही अनेक जात-भात रा ऊठ छै। —रा सा. स

वगळ, वगल—देखो 'वगल' (रू. भे)

उ०—छुरी वगल मे हाथि गेडियौ, छानै वेसर गळी छोडियौ

—अनुभववाणी

वगलवदी, वगलवधी—देखो 'वगलवधी' (रू भे.)

वगळांणा—देखो 'वगळाणा' (रू भे.) (बां. दा. ख्यात)

वगलामुखी—देखो 'वगलामुखी' (रू. भे)

वगसणी, वगसबौ—१ देखो 'विकसणी, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—पोहप वगसीया महकक करे पस, पागरीया वन नीला पान। राव 'पीथल' वाळी गर रूडो, आवूडो लागो असमान।

—आबू परवत रो गीत

२ देखो 'वकसणी, वकसबौ' (रू भे)

वगसणहार, हारो (हारी), वगसणियो—वि० ।
वगसिग्रोडो, वगसियोडो, वगस्योडो—भू० का० कृ० ।
वगसीजणो, वगसीजवो—कर्म वा० ।

वगसर—देखो 'वगसर' (रू भे)

वगसरिया – देखो 'वगसरिया' (रू भे)

वगसरियो—१ देखो 'वगसरियो' (रू. भे)
२ देखो 'वगसर' (ग्रल्पा, रू. भे)

वगसाणो, वगसावो—देखो 'वकसाणो, वकसावो (रू. भे)

वगसियोडो—१ देखो 'विकसियोडो' (रू भे)
२ देखो 'वकसियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वगसियोडी)

वगसी—देखो 'बकसी' (रू भे)
उ०—तद पातसाह जी वगसी नू फुरमायो के इसका रोजगार चढ्या है जितना लेखो कर चुकाय देवो । पीछै वगसी यांसू लेखो कियो जिणमे तळब रा रिपिया पनरा लाख हुवा । —द दा

वगहरा—देखो 'वगैरह' (रू. भे)
उ०—सो वडा ही गाढ सू केसरीसिंहजी नै नागोर मेलियो । हजार तीस री पटो, सावा ग्रोडीट वगहरा लिख दिया ग्रर रिपिया दस थाळी रा कर दिया । —ग्रमरसिंह गजसिहोत री वात

वगाणो, वगावो—१ देखो 'वगाणो, वगावो' (रू भे)
उ०—१ इतरा मे भीतर सू माई-मा पधारया । हाथ पकड धूजी ने परा रे वगाया । —लो गी
उ०—२ छोटा छोटा गुलाबी होठ फरूकण लागा । पग पटकनै एक काकरी उठाई । पछै उण कागा रै साम्ही वगाई । —फुलवाडी
२ देखो 'बजाणो, बजावो' (रू भे)

वगायोडो—१ देखो 'वगायोडो' (रू. भे)
२ देखो 'बजायोडो' (रू भे)
(स्त्री वगायोडी)

वगार—देखो 'वघार' (रू. भे)

वगारणो, वगारवो—देखो 'वघारणो, वघारवो' (रू भे)

वगारियोडो—देखो 'वघारियोडो (रू भे)
(स्त्री वगारियोडी)

वगावणो, वगाववो—१ देखो 'वगाणो, वगावो' (रू. भे.)
उ०—वाप तो घडी एक ई वात कैवतो के वै उणनै छोडनै कठै ई नी जावै । थोडा दिना ताई कमाई लारै धूळ वगाई ।
—फुलवाडी
२ देखो 'वजावणो, वजाववो' (रू भे)

वगावत—देखो 'वगावत' (रू भे)

वगावियोडो - १ देखो 'वगायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वजायोडो' (रू भे)
(स्त्री वगावियोडी)

वगि—देखो 'वरग' (रू भे)
उ०—पेले कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मगळ ग्रह एक वगि । एणि कवण सुभ क्रम ग्राचरता, जाणियै वेलि जपति जग ।
—वेलि

वगियोडो—१ देखो 'वजियोडो' (रू भे.)
२ देखो 'वाजियोडो' (रू भे)
(स्त्री वगियोडी)

वगीचो—देखो वगीचो' (ग्रल्पा., रू भे)

वगीचो—देखो 'वगीचो' (रू भे.)
उ०—गढाळ सहर गढ कोट बाजार पोळि पगार वाग बावडी वगीचा कूग्रा सरवरा री वडा पीपळा री छिबि सहर री पासती विराजिनै रही छै । —रा सा स.

वगूतणो, वगूतवो—देखो 'विगूतणो, विगूतवो' (रू भे)
उ०—युधे तमारी ए ग्रति वलिया वाधव वहु वगूता । नहि तरे द्यूत रमता तमो तिवारा ग्रमो पासै हूता —नलाख्यान

वगूतियोडो—देखो 'विगूतियोडो' (रू भे)

वगेर —देखो 'वगैर' (रू भे)

वगेरे, वगेरै—देखो 'वगैरह' (रू भे)
उ०—पछै साचोर ऊपर माडवा री तथा वोगरा पातसा वगेरे केई राज रैया । —मारवाड री ख्यात

वगेलू—१ देखो 'वघेल' (रू भे)
२ देखो 'वाघेल' (रू. भे.)

वगेसरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू भे)
उ०—भणत स्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खंमायची पटगय, वगेसरी विहगय । —रा रू

वगैर—देखो 'वगैर' (रू. भे)

वगैरह–ग्रव्य [फा वगैर] १ ग्रादि इत्यादि।
२ इसी प्रकार ।
३ सम्वन्धित ।
४ शेष ।
५ प्रभृति ।
६ प्रमुख ।

रू भे—वगहरा, वगहरा, वगेरै।

वगोरणौ, वगोरबौ—क्रि स. [स विकुर्वम्] १ प्रयजन करना, व्यक्त करना।

उ०—गजेंद्र कुभस्थल मीस डोलइ, कोइ हींडोला जिम मीस डोलइ, तुरग मातंग तिं नीद्र घोरई, न पलीया नीद्रलडी वगोरइ।
—सालिसूरि

२ प्रगट करना, बताना।

वगोरणहार, हारौ (हारी), वगोरणियौ—वि०।
वगोरिओड़ौ, वगोरियोड़ौ, वगोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वगोरीजणौ, वगोरीजबौ—कर्म वा०।
विगोरणौ, विगोरबौ—रू० भे०।

वग्ग—१ देखो 'वग्ग' (रू भे)

उ०—१ घापै ही जागावसी, मलो ज होमी वग्ग। कै मांगिण दग्मावियां, कै ऊछजियां ग्गिग।
—हा का.

उ०—२ माहिव, म्हा का वापकइ, छुड गग्हा कड वग्ग। जइ करहइ गोटउ हुवइ, मादह दीजइ दग्ग।
—ढो मा

२ देखो 'वाग' (रू भे)

उ०—१ घाघारि वग्ग घायासि लग्ग। सुरिसाणि नेटि गिविया सदग्ग।
—रा ज गी

उ०—२ पेरे वग्ग तुरग री, तौनै गग्ग गरग्ग। रिण पग उमगे सगं, 'रैणायर' गयग्गग।
—रा. रू

वग्गणी, वग्गवौ—१ देखो 'वजणी, वजबौ' (रू भे)

२ देखो 'वाजणी, वाजबौ' (रू भे)

उ०—१ वग्गा मद मेवाड रा नीमोद्या ग्रह मार। ग्राहू दिस मळ सल्लळी, पळाग्गळी मसार।
—रा रू

उ०—२ तें जोधा छळ झल्लियो, पग्गी 'अजो' मिर धार। कळ लागै जाणै रवग्ग, विग वग्गी तरवार।
—रा रू

उ०—३ दग्ग दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखान। दग्ग दिसि वग्गा सिधुवा, भुज लग्गा असमान।
—रा रू

उ०—४ लग्गो सूर परवग्गणी, वग्गो धारा रीठ।
—रा रू

३ देखो 'भागणी, भागबौ' (रू भे)

वग्गणहार, हारौ (हारी), वग्गणियौ—वि०।
वग्गिओड़ौ, वग्गियोड़ौ, वग्गयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वग्गीजणौ, वग्गीजबौ— भाव वा०।

वग्गय—देखो 'वाग' (रू भे)

उ०—ऊगटे वग्गय गाजवा लग्गय। गोम गयग्गय, धूजिया नग्गय।
—गु. रू व

वग्गियोड़ौ—१ देखो 'वजियोड़ौ' (रू भे)

२ देखो 'वाजियोड़ौ' (रू भे)

३ देखो 'भागियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री वग्गियोड़ी)

वग्घ—१ देखो 'वाघ' (रू. भे)

उ०—वयणे गाढा वउ घडे, मूठी गाढा खग्ग। हाजरती दरबार मैं विरता वीयै वग्घ।
—गु. रू व

२ देखो 'वाग' (रू भे)

वग्रहणौ, वग्रहबौ—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू भे)

उ०—कहीया मुख वचन घणा अनकारै, वग्रहीया खळ ग्तावण। नर ममजति तरै नरजहीया, रहीया 'चापा' तरै रण।
—गोपाळदास चापावत री गीत

वग्रहियोड़ौ—देखो 'विग्रहियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वग्रहियोड़ी)

वघवर—देखो 'वाघवर' (रू भे)

उ०—वघवर जेम मिगै विकराळ। मदै गळिमाळ जिका रुंडमाळ।
—सू. प्र

वघवाय, वघयाय, वघवाव, वघवाह—देखो 'वघवाव' (रू भे)

उ०—१ विध वाघ जिम वघवाय, पलटत गज पछ पाय।
—सू. प्र

उ०—२ वाघ करै नह कोट वन, वाघ करै नह वाड। वाघां रा वघवाव सू, भिळै अमजी झाड।
—बा. दा

उ०—३ दळ गयंद टाळा दियै, वाघ तणी वघवाह। हौल पडै अगणा हियै, गरुन 'पतौ' गजगाह।
—किसोरदान बारहठ

वघार—देखो 'वघार' (रू भे)

उ०—मोठ मटर चूंला फली रे लाल, छमकारघा देइ वघार। मुंग फूल फल पानडा रे लाल, अथाणा सुमकार।
—प. च चौ

वघारणौ, वघारबौ—देखो 'वघारणौ, वघारबौ' (रू भे)

उ०—तूअरि नी दालि ना साक, उढ़वा ना साक, चिणा ना साक, राईता मिरीता माटा खारा मीठा गल्या तीखा तमतमा तल्या वघारयां छमकारघा पुगारघा।
—व स.

वघारणहार, हारौ, (हारी), वघारणियौ—वि०।
वघारिओड़ौ, वघारियोड़ौ, वघारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वघारीजणौ, वघारीजबौ—कर्म वा०।

वघारियोड़ौ—देखो 'वघारियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वघारियोड़ी)

वघूल—देखो 'वघूलो' (मह रू भे)

वघूलो—देखो 'वघूलो' (रू. भे)

वघेरो—देखो 'वघेरो' (रू भे.)

उ०—जगळ माहे रमता-रमता गया । ताहरा एक वघेरी दीठो । —नैणसी

वघेल—१ देखो 'वघेल' (रू भे)

२ देखो 'वाघेल' (रू भे)

वघेलखड—देखो 'वाघेलखड' (रू भे)

वड—१ देखो 'वट' (रू भे)

उ०—वड पीपल जांबू विरख, नींबू नीव पळास । आसूपाळा अति सरस, आधो फरं अकास । —गज उद्धार

२ देखो 'वडी' (मह, रू भे.)

उ०—होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठिया, मीर वड वीर रिणधीर रोसइ । —प च चौ

वडछणो, वडछनो-क्रि स —१ काटना, कतरना ।

उ०—श्राण पाखर भरणण हजारी तडछिया, रोळ भुज वडछिया रचण राडा । कर मछर धाडवी लियण वित कडछिया, घडचिया 'वृड रज' भुजा धाडा । —रावत हम्मीरसिंह चुडावत री गीत

वडणो, वडबो—देखो 'वडणो, वडवो' (रू भे.)

उ०—१ डाढाळो अर भूडण पाचरा उठाय अठी उठी जोयो के चाणचक डाढाळं रै लिलाड मे तच करती री एक तीर वडग्यो । अर भूंडण रै डावं पसवाडं सूसाड करती गोळी वडगी ।—फुलवाडी

उ०—२ गोगादेजी आप सिनान करण नू पैठा । पण वानर तेजो तळाव माहे वडै नही । —नैणसी

वडणहार, हारो (हारी), वडणियो—वि० ।

वडिश्रोडो, वडियोडो, वडयोडो—भू० का० कृ० ।

वडीजणो, वडीजवो—भाव वा० ।

वडवी—देखो 'वरदी' (रू. भे)

वडलो—देखो 'वट' (अल्पा, रू. भे)

उ०—खेत में वडलोरडिया आयोडी, गहर टम्मर व्हियोडी, जाणै, वडला ऊभा । —रातवासो

वडवड—देखो 'वडवड' (रू भे)

उ०—तटफड सायक अति सत्राड, वडवड काळज घाव वराड । चडचट जोगणियां रतचोस, जुडै भिड 'धूहड' वाधै जोस । —गौ रू.

वडवडणो, वडवडवो—देखो 'वडवडणो, वडवडवो' (रू भे)

उ०—१ भडभडै के लडथडै भारथ, श्रडै के श्रणडैत । वडवडै कै हडहडै वीजळ, जटै के जरदैत । —र ज प्र

उ०—२ वूर पडि जवूर विहु धड, भुरज वीछडि पडै रवड भड । विढण घरि अड सुहड समवड वडवडै पिड चार । —रा रू.

वडवडियोडो—देखो 'वडवडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वडवडियोडी)

वडवा—१ देखो 'वडवा' (रू. भे)

वडवाअगन, वडवाअनळ, वडवाग, वड़वाग, वडवागि, वडवाग्नि, वडवानळ, वडवानल—देखो 'वडवानळ' (रू भे)

उ०—१ जडी असमर समर कवर 'सुवमान' ज्या, पडी वडवाअनळ सीस पिसणा । —महाराजा सुनमानसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ सोर आग सपरस्स, किना वडवाग अकारी । माग हूत सामद्र, च्याग वरतण उर धारी । —रा रू

उ०—३ वध प्रचड 'वखतेस' कियो कोडड कुमक्कं । ओप वदन ऊभरं, रूप वडवाग निरक्खं । ज्वाळाकार खतग, कीध गुण सग तमक्कं । प्रळंवत सिव चक्ख, जाणि अमरक्ख भभक्कं । —रा रू

उ०—४ मुखि 'माधव-माधव' जपइ, नयणे नीर प्रवाह । टक नमइ नही टलवळइ, घटि वडवानळ दाह । —मा का प्र

वडवामुख—देखो 'वडवामुख' (रू. भे) (अ मा.)

वडवाय-स. पु —वट वृक्ष की उपशाखा ।

उ०—'मान' महावड साख कर, आसो फिर वडवाय । साहू सभा वन में खडी, छाया सू जग छाय । —बा. दा.

वडसावित्रीव्रत-स पु [स वट सावित्री व्रत] स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला एक व्रत जो ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को किया जाता है, इस दिन वड की पूजा होती है ।

वडसी-स स्त्री [स वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति का प्रति वर्ष आने वाला मृत्यु का दिन ।

२ उक्त दिन को किया जाने वाला भोजन आदि का विशेप आयोजन

३ देखो 'वडी' (रू भे)

वडाणो, वडाबो—देखो 'वडाणो, वडावो' (रू भे)

वडारण—देखो 'वडारण' (रू भे.)

उ०—चौगडदा कनात खची छै । तैण समै अचूकी रा सुखपाळ श्राण लवाई । तैण समै दूजी वडारणां खवासी उठै हीज वरजी । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

वटि—१ देखो 'वट' (रू भे)

२ देखो 'वडी' (रू भे)

वडियोडो—देखो 'वडियोडो' (रू भे)

(स्त्री वडियोडी)

वडियो—देखो 'वडियो' (रू भे)

वडी—देखो 'वडी' (रू भे)

वडो—१ देखो 'बडो' (रू भे)

उ०—उपाड सेल अवदल्ल पर, राम भुजांबळ रोपियौ। वीधियौ जाण तळियौ वडो, ऊचलियौ तन ओपियौ। —रा रू

२ देखो 'वडी' (रू.भे)

उ०—रूडा रूडा उपदेश दे दे वडा वडा भूप, कीधा, धम्म, रूप, खडा तडा गेवँ पाय। —ध. व. ग्र

वच-स पु [स वच्] १ वचन, वाक्य।

स स्त्री.—२ सरस्वती, शारदा।

[स. वचा] ३ औषधि विशेष।

रू भे—वच।

४ देखो 'वच' (रू.भे)

५ देखो 'बीच' (रू भे.)

उ०—वगे रम मनवछन, वर्स सुर थान वच, एळा सर गुजस दय कडां अडियौ। —माहसिंह नाटी री गीत

६ देखो 'वचन' (रू. भे)

वचकढा—स स्त्री [स वच कला] पढने का ढग या कला, तरीका।

वचखण—देखो 'विचखण' (रू भे)

उ०—१ अन्नी पण राजा री राण्या सू अनेक अमोघ थाण लगाए जाए। हेत घणौ बाधौ। या पण महावीर वचखण एम करता सामणी री दीहाडी आवियौ।

—परयाणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ अहडौ वीर वचखण, महा चतर आमेर दौकिओ

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

वचणौ, वचवौ—देखो 'बचणौ, बचवौ' (रू. भे)

उ०—१ मर सवळा आगै निवळ, नीर धकै वांनीर। बाय धकै त्रण जाय वच, गलो नमण गुण भीर। —बां दा

उ०—२ चूर लियौ श्री चोतरफ, केयौ वयण कहत। बाघ केम छिपियौ वचै, रुपिया धरम रहंत। —बां दा

उ०—३ नारिन को पुरगा, चतर न मुररता, बेद न त्यारि वचंदा है। —अनुभववाणी

वचणहार, हारौ, (हारी), वचणियौ—वि०।

वचिओडो, वचियोडो, वच्योडो—भू० का० कृ०।

वचीजणौ, वचीजवौ—कर्म वा०।

वचत—१ देखो 'विचित्र' (रू भे)

उ०—पर आफु क्यारी पकत, मोताहळ बोह मत। वीरम ठग वाळा बकट, वाका वडा वचत।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ देखो 'वचत' (रू भे)

वचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे)

उ०—वारध फुण वाधै राघव वण, धरा सेस वण कवण धरै। वीकावत पाछै वचत्रा रा, कमण दूसरौ तडळ करै।

—तेजसी खिडियौ

वचन-स. पु. [स.] १ बोलने की क्रिया या भाव, उच्चारण।

२ मुंह से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाणी, वाक्य।

उ०—१ कदाचित पाणी माहि पाखाण तरइ, कदाचित मेरु चूलिका चलइ, कदाचित् ब्रहस्पति वचन तु स्कलइ कदाचित् सिलातलि ऊपरि कमल विकास लहइ। —व. स

उ०—२ वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाग। वे खाधा वे मांनिया, हुवा फताल खुराक। —बा दा.

३. कही हुई बात, उक्ति, कथन।

उ०—सामलि एहवा वचन कुमार, रागातुर हुवौ तिणवार।

—वि कु.

४ प्रतिज्ञा या प्रण के रूप मे दृढता पूर्वक कही हुई बात, वादा, प्रण।

मुहा—१ वचन तोडणौ = प्रण को तोड देना, वादे के अनुसार न रहना। २ वचन देणौ=किसी के वचनो मे बधजाना, वचन बद्ध होना, वादा करना, प्रतिज्ञा करना। ३ वचन भग करणौ=देखो 'वचन तोडणौ' ४ वचन राखणौ= प्रतिज्ञा पूरी करना, दिये वचन निभाना, वादा पूरा करना। ५ वचन हारणौ=प्रतीज्ञा पूरी करने में असमर्थ रहना। वादा न निभाना, वचन विमुख होना।

५ घोषणा।

६ उपदेश, निर्देश, मार्ग दर्शन।

उ०—सील संतोस दया सत भक्ती, स्वधरम ग्यान वैरागी। सत्वगुण का पायक सब सायै, गुरु वचनां का पागी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

७ आदेश, आज्ञा।

८ सलाह, परामर्श।

९ वर्णन, बयान, उल्लेख।

१० अभिव्यक्ति।

११ पुनरावृत्ति।

१२ शब्दशास्त्र मे शब्द के रूप में वह विधान जिसके द्वारा एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है।

१३ नियम।

१४ सरस्वती।

१५ भाषा।

रू. भे.—वन, वचन, वचन्न, वयण, वयन, वेंण, वेण, वैण, वैन, वेंन, वैंन, वइण, वइन, वच, वचनि, वचन्न, वच्चन, वयण, वैण।

अल्पा.—वचनड़ो, वयणड़ो।

वचनका—देखो 'वचनिका' (रू. भे.) (द दा)

वचनकारी-वि. [सं. वचनकारिन्] १ वचन को मानने वाला।

२ आज्ञाकारी।

वचनगुप्ति-सं. स्त्री. [सं.] वाणी का संयम—जिसमें वचन का निग्रह कर प्रयोजन, उचित सत्य, तथ्य व निर्दोष वचन का ही उच्चारण हो। (जैन)

उ०—सप्त धातु शोणित लोभ मद, क्रोधाग्नि वध्यापन पयपूर, मायातमस्विनी सहस्रसूर, मानगिरवरदलनदम्भोलि, त्यक्त पुत्रमित्र धनपातिसमुदाय, मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति प्रधान। —व. स.

वचनपाटव-सं.स्त्री. [सं. वचनपटुता] १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ बोलने की चतुराई, वाक्पटुता।

वि. [सं. वचनपटु] बोलने में चतुर, प्रवीण।

वचनप्रतिष्ठा-सं.स्त्री. [सं. वचन+प्रतिष्ठा] वचनों की मर्यादा, कहे हुए वचनों की रक्षा, सच्चाई।

उ०—प्राक्रमि नरसिंह, गुरु नियम रामचन्द्र, साहसि विक्रमादित्य, [illegible] वचनप्रतिष्ठा युधिष्ठिर, धनुर्वेदि अरजुन, [illegible] अजयपाल।

—व स

वचनयुद्ध-सं.पु. [सं. वचनयुद्ध] १ जबानी लड़ाई वाद-विवाद। वाग्युद्ध

२ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

वचनयोग-पु. [सं.] सत्यासत्य भाषा का उच्चारण करने की क्रिया या ढंग। (जैन)

वचनरसिका-सं. स्त्री. [सं.] वह परकीया नायिका जिसकी बात चीत में उसके हृदय में प्रेम लक्षित या प्रगट होता हो।

वचनविदग्धता, वचनविदग्धता-सं. स्त्री. [सं. वचनविदग्धता] बोलने की चतुराई, पटुता।

वचनविदग्धा-सं. स्त्री. [सं. वचनविदग्धा] १ परकीय नायिका जो अपनी वचन चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती है।

२ मधुर भाषणों वाली मन-मोहिनी स्त्री।

रू. भे.—वचन विदग्धा।

वचनसिद्ध-वि. [सं. वचनसिद्ध] वह महात्मा या सिद्ध-पुरुष जिसके मुंह से बोले सब ही सत्य हों, वचन-सिद्धि प्राप्त महात्मा।

सं. स्त्री.—अपने वचनों या बोल की सिद्धि।

वचनात-सं. स्त्री.—राजा महाराजाओं द्वारा अपने छोटे को पत्र में लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसूं लिखा-वट आगै न रही। प्रथीराज रै मनसब घणौ हो जिण सूं वचनात नही नै लिखावतू लिखीजती। —बां. दा. ख्यात

वचनि—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—चरण चारिहिं हंस हरावती। वचनि जिणइं जीती भारती।

—सालि सूरि

वचनिका-सं. स्त्री.—१ गद्य और पद्य रचना का एक ढंग विशेष। (र वचनिका)

२ गद्य रचना में छोटे-छोटे युग्म रूप।

३ कोई गद्य रचना।

४ वृत्त-गंधी नामक काव्य रचना का एक विधान। (र. रू.)

५ चम्पू काव्य।

रू भे.—वचनका, वचनिका, वचनका।

वचनीय-वि. [सं.] १ कहने योग्य, वर्णन करने योग्य।

२ प्रशंसनीय।

रू. भे.—वचनीय।

वचन्न—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ तवै 'भीम' वाका वचन्न तियार। 'कुमांण' आद्र जुद्ध सूं गूंदकार। —गु. रू. वं.

उ०—२ वर विनद राय लिखिया वचन्न। वांचिया किया चख चोळ वन्न। —वि. स.

उ०—३ गादह डाघ्यउ दश करि, सासू कहइ वचन्न। करहउ ए पूछइ मनइ, मोडउ करइ यतन्न। —ढो. मा.

उ०—४ मेड़तियो मुगल ऊपरै, हैमतसिंघ वचन्न। मारौ दुरजण गांम रा, कुण भाई कुण तन्न। —रा. रू.

वचा—देखो 'वाचा' (रू. भे.)

उ०—वचा विराट विराट ग्रह, वचळ आद्र धाड़ियो। 'पाल' फर कार समदां परै, कमध भूत नै काढ़ियो। —पा. प्र.

वचाड़णो, वचाड़बो—देखो 'बचाणो, बचावो' (रू. भे.)

उ०—जसवंत औरंगसाहि जय, वेद कतेब बचाडि, वे छत्रपती वहतिया, रवि दिन राढि। —वचनिका

वचाड़णहार हारो (हारी), वचाड़णियो—वि०।

वचाड़िग्रोड़ो, वचाड़ियोड़ो—भू० का० कृ०।

वचाड़ीजणो, वचाड़ीजबो—कर्म वा०।

वचाडियोड़ो—देखो 'वचायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. वचाटियोड़ी)

वचाणो, वचावो—देखो 'वचाणो, वचावो' (रू भे)

उ०—तिणि नयरि जेसिंगदे राउ, नवउ सरणावइ तिहां तलाव। ते मरणावता लिपि नीसरी, ते न वचाइ कुणहि परी।

—हीराणंद सूरि

उ०—२ नेस वचाया कोलिया, पेस परे नृप पाय। पाटण 'प्रजन' पधारिया, प्ररि पागरै लगाय। —रा रू.

वचावणहार, हारो (हारी), वचाणियो—वि०।

वचायोड़ो—भू० का० कृ०।

वचाईजणो, वचाईजवो—कर्म वा०।

वचायोड़ो—देखो 'वचायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री वचायोड़ी)

वचार—देखो 'विचार' (रू भे)

उ०—प्राहे मुंदरि महरगा, जासू मूंह स वचार। मनुहरि पटि पळ मेवळा, पग भ्रमर झणकार। —ढो मा.

वचाळै—देखो 'विचै' (रू. भे)

उ०—प्रवसर गोय जेतमा प्राया, गोरी दळा वचाळै गान। मेवाळै ग्यानी मोकळीयो, पोह महमद 'जसो' जग पात।

—राणा कुंभा री गीत

वचाव—देखो 'वचाव' (रू भे)

उ०—पायका के हमल्लै बांक पट्टै फून हरयू पा दाव। नजर वहंक का हुन्नर अगूणा वचाय। हणमत रूप जगजेठ नै भुजग दडूपर दसतताळ दिया। —सू प्र

वचावणो—वि—वचाने वाला, रक्षा करने वाला।

उ०-भुज दट लीजै मांमणा, प्रघियावणा प्रमीत। विध-विध दास वचावणा, जुध पावणा सजीत। —र ज प्र.

वचावणो, वचायवो—देखो 'वचाणो, वचावो' (रू. भे.)

उ०—१ सप्रवट धरम सदा थां गोळै, प्रो हिंदवाण वचावो प्रोळै।

—रा. रू

उ०—२ प्राज न दीसै प्रापरो, प्राण वचावण हार। —पा प्र.

उ०—३ तवता कुरांण काजी तठै,ब्रहम पुरांण वचाविया। प्रासुग धरम मेटै 'प्रजै', सुरां धर्म दरसाविया। —सू प्र.

वचावणहार, हारो (हारी), वचावणियो—वि०।

वचावियोड़ो वचावियोड़ो, वचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वचावीजणो, वचावीजवो—कर्म वा०।

वचावियोड़ो—देखो 'वचायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री वचावियोड़ी)

वचिखण—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

उ०—प्रनि वचिखण प्रम्नाय व्यापरिउ, करणवारनइ विसइ कुसलीउ, वैरिजन प्रनाकलनीय, गुहिर गमीर। —व स

वचियोड़ो—देखो 'वचियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री वचियोड़ी)

वचै—देखो 'विचै' (रू भे)

उ०—प्रव त्रास वचै वाणास प्राछटी, कहर 'पदम' घमजगर कर। 'मुहण' मरण कीया मार हतै, एकण घाय छहूंरा थर।

—सकर वारहठ

वचो—देखो 'वच्चो' (रू भे.)

वच्चंसी—वि [स. वर्चस्विन्] किसी के छल कपट के बोल में न आने वाला (जैन), प्रभावशाली वचन वाला।

वच्चक—वि [स वाचक] लिखी हुई लिखावट को ठीक ढग से पढ़ कर सुनाने वाला। वाचने वाला, पढ़ने वाला।

रू. भे —वच्चग।

वच्चणो, वच्चवो—क्रि स [स व्रज्, प्रा वच्च्] १ जाना, गमन करना, यात्रा करना।

उ०—प्रट्ठासयपमुह सवि नमीह तित्थ जा घरि पहुच्चई। मणिचूडह भित्तह भयणि राउ एकु परिहरीउ वच्चई। —प प च.

२ निर्वासित करना। होना।

३ देखो 'वचणो, वचवो' (रू. भे.)

उ०—प्रा सुणतां प्रालोचिया, 'सोनंगर' दुरगेस।' 'प्रजन' रहै, सच्चे जतन, वच्चे मुरधर देस। —रा रू.

वच्चणहार, हारो (हारी), वच्चणियो—वि०।

वच्चिप्रोड़ो, वच्चियोड़ो, वच्च्योड़ो—भू० का० कृ०।

वच्चीजणो, वच्चीजवो—कर्म वा०।

वच्चन—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—जेता बोल बोलै तेता दे सभाळ ली, वच्चने वच्चने दिए द्रढ वाळी। —ना. द.

वच्चाळइ—देखो 'विचै' (रू भे.)

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देवै वीस वसाळ। ऊभै थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ। —ढो. मा

वच्चियोड़ो—भू का कृ. —१ गया हुप्रा, गमन किया हुप्रा, यात्रा किया हुप्रा, २ निर्वासित।

३ देखो 'वचियोड़ो' (रू भे.) —(स्त्री. वच्चियोड़ी)

वच्छ—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

उ०—१ सदा मिळै विस स्याळ रै, वच्छ पुच्छ सुर चाम । मिळै गया म्रगराज पहु, गज रद मोती-ग्राम —बां दा

उ०—२ तूं तो गैनो है, वच्छी तो इया ही वचियो-चुचियो दूध चूप लेवी पर घास-फूस खा लेती । —वरस गांठ

उ०—३ वच्छा वल्लह तुम तणी, गिरूई रिद्धि समेत । —स्त्रीपाल रास

२ देखो 'वक्ष' (रू भे)

उ०—रही प्रतच्छ रच्छनी, दुगच्छ गच्छ दच्छवनी । लगें विपच्छ लच्छ पें, भुजाग वच्छ लच्छनी । ऊ का

वच्छड़ो—देखो 'वत्स' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री वच्छा, वच्छी, वच्छड़ी)

वच्छनाग वच्छनाभ—देखो 'वत्सनाभ' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ मुगट मरद्दी मुमाग, ज वाधिया वच्छनाग । बदकसमी वेलारी रंग वगसी सधारी । —गु रू व

उ०—२ अगरकाट मादूं अला, सूरज रोम रताल । वच्छनाग वाकुभीया, भेद्धागारी भालि । —मा का प्र

वच्छर, वच्छरी—देखो 'वत्सर' (रू भे)

उ०—नीपनउ नयर नादउद्दि वच्छरी ए पक्खदहोत्तर ए । सद्गमंपमानोय गूत्र माभिना ए भव अम्हि ऊधरया ए । —प प च

वच्छळ, वच्छल—देखो 'वत्सल' (रू भे.)

उ०—१ नर रा दियण जगत रा वच्छळ । नर रा रूप नमो रघुनाथ । —र रू

उ०—२ जयउ जयउ जगदीश्वरी, आनदि भारत्रि । वकता स्रोता वच्छली, गू न्याए नय-मात्रि । —मा का प्र

वच्छळता—देखो 'वत्सलता' (रू भे)

उ०—अमी ै भायली देस' र गाय हुर हुर गरजी अर वै'री वाणियां में सरळता वच्छळता अर मरणा री मिलावट रा भाव साफ प्रगट हुआ । - वरसगांठ

वच्छि—देखो 'वत्स' (रू. भे)

उ०—जीव बिना जिम देहडी, वारि-विना जिम मच्छि,पुण्य विना जिम पदमिणी, माघूं समनि वच्छि । —मा का प्र

वछ—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

उ०—१ गुणि माधव मोर वछ तुं, बांम पदमा पेम, माई हणि नदि समरूं, मद जरि परिसा येव । —मा का प्र

उ०—२ वीरसी वछ वारि पूगी, गई दासव पानि । माहरू प्राण म जाओ दूरस वछ वीहरूं गहनि । —रूपमणि मगळ

उ०—३ खूब पराक्रम देखिने, विजयसेन राजान । तब वोल्यो वछ आपणो, प्रगटी रूप वलवान । —स्त्रीपाल रास

२ देखो 'वक्ष' (रू भे)

उ०—उरघ लिलाड नीर भव आखें, नाक कीर छिव न्यारी । दंत भुजा वछ दौर घीर घर, उर तसवीर उतारी । —ऊ का.

३ देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

वछक—देखो 'वत्सक' (रू भे)

उ०—पोहतो सुरग एम करि पौरिस, जगत विख्यात ब्रहदवळ री जस । न्रप जे सुत वरकिय कुळ नाइक, वछक अग्घ ते सुत वरदाइक । —सू. प्र.

वछड़ो—देखो 'वत्स' (अल्पा, रू भे.)

(स्त्री वछड़ी)

वछचोर—स पु [स वत्स=बछड़ा+चोर] ब्रह्मा । (डिं नां मा) रू भे.—वछचोर,

वछवारस—स. स्त्री [सं वत्स-द्वादशी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की द्वादशी जिस दिन स्त्रियें बछड़े सहित गाय की पूजा करती हैं । वि वि इस दिन प्राय मोठ व बाजरी का खाना ही खाया जाता है गेहूँ का नही ।

रू भे—बछवारस ।

वछर—देखो 'वत्सर' (रू भे)

उ०—बोल्या हिव वछर पूरा चोपन लाख सामी मुनि सुव्रत हुआ सुत्रे माव । —ध. व प्र.

वछराज—देखो 'वत्सराज' (रू भे.)

वछरि - देखो 'वत्सर' (रू भे)

उ०—तेरह नउया एम जाणि जिण पउम गणीसरु, लद्ध नाम जिनसवद्ध सूरि चहुदय सय वछरि । —ऐ. जै का सं.

वछळ—देखो 'वत्सळ' (रू. भे)

उ०—भगत वछळ ब्रद ताहरो, सब के सिरजनहार, सकट मेटो सामजी, स्रवणा सुणो पुकार । —गज उद्धार

वछाणो, वछावो—देखो 'विछाणो, विछावो' (रू भे)

उ०—आसाढ़ उमय्या मेह, गया पथि आपणि गेह । हु पणि जोउ प्रियु वाट, दांति वछाउ खाट । —स कु.

वछाणहार, हारो (हारी), वछाणियो—वि० ।

वछायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वछाईजणो, वछाईजवो—कर्म वा० ।

वछायत—देखो विछायत' (रू भे.)

वछायोडो—देखो 'विछायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री वछायोडी)

वछावणो, वछावबो—देखो 'विछाणो, विछावो' (रू भे.)

वछावणहार, हारो (हारी), वछावणियो—वि० ।

वछाविग्रोडो, वछावियोडो, वछाव्योडो भू० का० कृ० ।

वछावीजणो, वछावीजबो—कर्म वा० ।

वछावत—देखो विछावत (रू. भे)

वछावियोडो—देखो 'विछायोडो' (रू भे)

(स्त्री वछावियोडी)

वछूटणो, वछूटबो—देखो 'विछूटणो, विछूटबो' (रू भे)

उ०—दस नेई जगनीत नरेसर, मसरथ नागहठ ग्राविउ । वाणावली विहू दले वछूटी, उण पनि ग्रवर नावउ । —हीराणद सूरि

वछूटियोडो—देखो विछूटियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वछूटियोडी)

वछेर—देखो 'विमेर' (रू भे)

उ०—वदं दहुवं वद देगि वछेर, एमो भट 'ऊदक' ग्रद ग्रनेक । —सू प्र

वछेदणो, वछेदबो—देखो 'विच्छेदणो, विच्छेदबो' (रू भे)

उ०—१ सवा समल नी इच्छा मरत, नीमसेनु तउ वनि-वनि फिरइ । ग्रमउण देगी बोलइ राउ, नीम पामि वछेदिइ जाउ । —प प च.

उ०—२ मतीय वेउ छद् गामगि गही, उदर ग्राव्यु तु तुम्ह गही । मेनहृत पदव जउइ वछेदि, विगु हथियारइ वाया भेदि । —प. प च.

वछेदियोडो—देखो 'विच्छेदियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वछेदियोडी)

वछेर—देखो 'वछेरो' (मह, रू. भे)

उ०—वछेर पेनम मयागि, पेरक फरावत, नटम नाटक विधान, गाम्ना समाजत । —सू प्र

वछेरियो—देखो 'वछेरो' (ग्रल्पा, रू भे)

वछेरो—देखो 'वछेरो' (रू भे)

उ०—१ विसनदाम लेजाय नै घोडी वोर नै घोटी दिखायो । वरस १ नू व्याई । वछेरो जायो । —नैणसी

उ०—२ नोहा लकरा घामटा, पहला किसा वखाण, वह वछेरा डीकरा, नीमटिया परवाण । —ग्रज्ञात

(स्त्री वछेरी)

वछोडणो, वछोडबो—देखो 'विछोडणो, विछोडबो' (रू भे)

वछोडियोडो देखो 'विछोडियोडो' (रू भे)

(स्त्री वछोडियोडी)

वछोडणो, वछोडबो—देखो 'विछोडणो, विछोडबो' (रू. भे.)

उ०—सोसइ मइरु महातपि, ग्रातपि रहइ गभीर । मोह तणा जगवधव, वंध वछोडइ धीरु । —जयसेखर सूरि

वछोहणो, वछोहबो—देखो 'विछोहणो, विछोहबो' (रू भे.)

उ० जइ करवत सिर ताहरइ, दीजत सिरजणहार । वर वछोह्यां साजणा रे, तउ तउ जाणत सार । —हीराणद सूरि

वछोहियोडो—देखो 'विछोहियोडो (रू भे)

(स्त्री वछोहियोडी)

वछो—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

२ देखो 'वच्चो' (रू भे)

उ०—रोयतो य ग्ण वधूग्र निवारी, वच्छि रोयसि म मइ तू वारी । —सालि सूरि

(स्त्री वच्छि, वछी)

वजतरी, वजत्री—देखो 'वजत्री' (रू. भे.)

वजद्र—स पु [स वज्र] कुलिश, वज्र ।

वज—स स्त्री [वजम] १ शरीर की बनावट, रचना ।

२ बनावट का ढग, प्रणाली, रीति ।

३ ग्रवस्था, दशा, हालत ।

४ देखो 'वज' (रू भे.)

वजड—देखो 'वज्र' (रू भे)

उ०—खोल्या खोल्या वजड कमाड । —लो. गी.

वजजत्र—देखो 'वाद्यपत्र' (रू भे)

वजण—१ देखो 'वाजण' (रू भे)

उ०—सरण ग्रसरण ग्रदण साभ्रण, टकार वण किय वजण दिन, तिण वार तेर विसाळ । —सू. प्र

२ देखो 'वजन' (रू भे)

वजणो, वजबो—१ देखो 'वजणो, वजबो' (रू भे)

२ देखो वाजणो वाजबो' (रू भे.)

उ०—१ कठै वजै वडवोर, कठै भाडी मोटोडी । कठै वोरटी नाव, वणी देवा री छोडी । —दसदेव

उ०—२ काळवी कियो 'पाल' विनो कजियो, वसुधा पर नाम घणो वजियो । —पा. प्र

उ०—३ वजि ग्रदग चग रग उपग वारग, ग्रनग छवि चग उमग ग्रग ग्रग । —सू प्र

वजणहार, हारो (हारी), वजणियो—वि० ।

वजिग्रोडो वजियोडो, वज्योडो—भू० का० कृ० ।

वजीजणौ, वजीजवौ—भाव वा० ।

वजन–स पु [फा वज्न] १ बोझ, भार ।

२ भार का परिमाण, तौल ।

३ भारीपन, गुरुता ।

४ महत्व या मान का सूचक ।

उ०—यह सिफत कुतबुदीन साहजादे की पढ़ै । बहुत ही वजन सुख से बढ़ै । —कुतबीदीन साहजादे री वात

५ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

६ दवाव, दाब ।

रू भे —वजन, वजरण ।

वजनी–वि [फा वज्नी] १ जिसमे वजन हो, भार हो, भारयुक्त, बोझिल ।

२ जिसमे अधिक बोझ या भार हो, गुरुतर ।

३ ठोस

४ महत्वपूर्ण ।

५ गभीर, महान ।

वजरग–वि. [स वज्राग] १ जिसका शरीर वज्र के सामान कठोर व मजबूत हो, सुदृढ ।

उ०—१ अति सुघट पीड वजरग ओप, अय पाक उलट चव जव अनोप । —रा. रू

उ०—२ वरियाम जगी जरण वाजतौ, जोधपुरा जोधहपुरी । वजरग हुओ हरणमत वरि, भलो भीम' कल्यारण रौ । —गु रू व

२ धूल से लथ पथ ।

स पु [स वज्र-अग] पवनसुत हनुमान का नामान्तर ।

(अ मा)

रू भे—वजरग, वजरगी, वजरअग, वजरअगी, वज्रागी, वजरगी, वजरागी, वज्र गी, वज्रअगी, वज्राग, वज्रागी ।

वजरगवळी, वजरगवली—देखो 'बजरगवळी' (रू. भे)

वजरगी—देखो 'वजरग' (रू भे)

वजर–स पु [फा फजर] १ प्रात काल, प्रभात ।

२ देखो 'वज्र' (रू भे)

उ०— १मचियै काकळ मदत री, वीर न देखैं वाट । एक अनेका सूं हिचै, छाती वजर कपाट । —वा दा

उ०—२ जरदैता ओरे असि जाऊ, वजर धजर घरण गजर वजाऊ । —सू प्र

उ०—३ दातूसळ वजर धजर जमदाढा, वाढा ऊगाढा विहर । असपति नजर भलो आफळियो, कुजर नै नाहर कवर । —लिखमीदास गाडरण

उ०–४ सुरतारण हुओ भय भीत सपेख, गुडिया खान सू पडियौं गाढ । 'अमर' तरणा भुज हूता अवर, जारणै वजर पडी जमदाढ । —केसोदास गाडरण

वजरतुड—देखो वज्रतुड' (रू भे) (डि को)

वजरदड—देखो 'वज्रदड' (रू. भे)

वजरदत—देखो 'वज्रदत' (रू भे) (अ मा)

वजरदती—देखो 'वज्रदती' (रू भे)

वजरधर —देखो 'वज्रधर' (रू भे)

वजरनख—देखो 'वज्रनख' (रू. भे)

वजरपांण, वजरपाणि, वजरपांणी—देखो 'वज्रपारिण' (रू भे)

वजरबांह—देखो 'वज्रबाहु' (रू भे)

वजरमूठी—देखो 'वज्रमुस्टि' (रू भे)

वजरवारक–वि [स वज्रवारक] वज्रप्रहार को रोकने वाला ।

स स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

वजरसार—देखो 'वज्रसार' (रू भे)

वजरागी देखो 'वजरग' (रू भे)

वजराक, वजराग—देखो 'वजराक' (रू भे)

वजरायुध—देखो 'वज्रायुध' (रू भे)

वजरासण, वजरासन—देखो 'वज्रासन' (रू भे.)

वजरेसुरी, वजरेस्वरी—देखो 'वज्रेस्वरी' (रू भे)

वजरोळी—देखो 'वज्रोळी' (रू भे)

वजवजणौ, वजवजवौ–क्रि स. [स भज्] १ प्रभाव या प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रसिद्धि पाना ।

उ०—बारा बुध न ऊपजी, सोळा कळा न होय । बीसा न वजवजियौ भळपरण वाट न जोय । —अज्ञात

२ वैभव प्राप्त करना ।

वजवजियोडो—भू का. कृ —१ प्रभाव, प्रतिष्ठा, व प्रसिद्धि प्राप्त किया हुआ । २ वैभव प्राप्त किया हुआ ।

(स्त्री वजवजियोडी)

वजह–स स्त्री [अ. वज्ह] १ कारण, हेतु, निमित्त ।

२ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन ।

३ कोई असाधारण परिस्थिति ।

४ मुखाकृति, चेहरा ।

५ प्रकृति, तत्त्व ।

रू भे.—वजह, वजै ।

वजाई—देखो 'विजाई' (रू भे)

वजाडणौ, वजाडवौ—देखो 'वजारणौ, वजावौ' (रू. भे)

उ०—पाट हूंतो तिण प्रवाडा पाटपत, वजाई वार समार वाजा। म्राप री राग रज गुरग वगियो "प्रना," राज रिघ भोगवे महाराजा। —द दा

वजाडणहार, हारो (हारी) वजाडणियो—वि०।
वजाडियोड़ो वजाडियोड़ो, वजाड्योड़ो—भू० का० कृ०।
वजाडीजणो वजाडीजवो—कर्म वा०।

वजाडियोड़ो—देखो 'वजायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. वजाडियोड़ी)

वजाणो, वजावो—देखो 'वजाणो, वजावो' (रू भे)
उ०—जिण 'प्रवरंग' तणा दळ जीता, प्रातम मयति वजाई प्रनमर। मारि वहादरसाह मनाया, जोरै मुनक लिया जोरावर। —सू प्र

वजाणहार, हारो (हारी), वजाणियो—वि०।
वजायोड़ो—भू० का० कृ०।
वजाईजणो, वजाईजवो—कर्म वा०।

वजायोड़ो—देखो 'वजायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री वजायोड़ी)

वजावणो, वजाववो—देखो 'वजाणो, वजावो' (रू भे)
उ०—१ वेग बाम नागली वजावण। चिनो मोहन रसिका घरण। —ह. नां मा
उ०—२ 'विजावत' उग्रमनै भमि वाग। नगी गुर 'फ्रत्त' वजावत राग। —सू प्र

वजावणहार, हारो (हारी), वजावणियो—वि०।
वजाविग्रोड़ो, वजावियोड़ो, वजाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
वजावीजणो, वजावीजवो—कर्म वा०।

वजावियोड़ो—देखो 'वजायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री वजावियोड़ी)

वजित्र, वजिन्त्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू भे)
उ०—१ चतुरंग वणाय गजराज चढि, वजित्र अनेक वजाविया। —सू प्र.
उ०—२ दोहळं मीर धड़ा गज डवर, वजिन्त्र नर हैमर कर वेम। श्राकगति हिंदुग्रा ऊपरि, दम सहसि नवसहसउ देस। —दूदो

वजियोड़ो—१ देखो 'वजियोड़ो' (रू. भे)
२ देखो 'वाजियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री वजियोड़ी)

वजीफादार—वि [फा वजीफ दार] जिसको वजीफा या सहायता मिलती हो, महायता-वृत्ति पाने वाला।

वजीफो—स पु. [फा वजीफ] १ वह प्रार्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्वानों, छात्रों, दीनों व बिगडे हुए रईसों आदि को भरण पोषण के निमित्त दी जाती है।
२ निवृत्ति, वेतन, पेंशन।
३ छात्र वृत्ति।
४ नियम या श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला मंत्र-पाठ, जप।

वजीर—स. पु [फा] १ बादशाह का प्रधान, शासक का मुख्य सलाहकार, अमात्य, मन्त्री, प्रधान, सचिव, दीवान।
उ०—१ हुकम वजीरां हुवा, करो लसकर अधिकारा। तर कलमा दफतरा, हुवै अन्नेक हजारा। —सू प्र
उ०—२ पच वखत निम्माज ताज कुलहराह सोहइ। खोजा खान वजीर मलिक उवरे मन मोहइ। —व स
२ राजदूत।
३ रावणा-राजपूतों का एक नाम। (मा म)
४ शतरंज नामक खेल का एक मोहरा जो बादशाह से छोटा व अन्य मोहरों से बड़ा होता है।
रू भे.—उजीर, वजीर।

वजीरात—स स्त्री. [फा] १ वजीर का पद, वजीर का कार्य।
उ०—थांहरी दियानत सूं हू म्हारै राज री वजीरात तोनूं सौंपी। —नी प्र.
२ वजीर का कार्यालय, कचहरी।

वजीरी—स स्त्री. [फा.] १ वजीर का कार्य व पद।
२ उक्त पद की नोकरी।
३ बलूचिस्तान में पाई जाने वाली घोड़ों की एक जाति।

वजुग्रात—स. स्त्री [फा] १ वजह का बहुवचनात्मक रूप।
२ कारणों का समूह।
रू भे.—वजूग्रात।

वजू—स पु [ग्र. वुजू] नमाज पढने से पहले हाथ-पांव धोने की क्रिया। (मुसलमान)

वजूग्रात—देखो 'वजुग्रात' (रू भे)

वजूद—स पु [ग्र.] १ शरीर, देह।
उ०—ग्रलाहे सिजदा कुनद, वजूद रा चे कार। दादू नूर दादनी, ग्रासिकां दीदार। —दादूवाणी
२ सत्ता, अस्तित्व।
उ०—दादू इस्क ग्रलह की जाति है, इस्क ग्रलह का ग्रग। इस्वक ग्ररलाह वजूद है, इस्क ग्रलह का रंग। —दादूवाणी

वर्ज—स. स्त्री.—१ तरह, भांति, प्रकार।
उ०—सरद की चंदणी चंद्रवसी विमलू का उजास। रितराज के

दिवम तहा सूरज वसी कवलू का प्रकास, इस वजै खर्टारतु की क्रीला जल्ले गुलावू की छाक। —सू प्र

२ देखो 'वजह' (रू. भे)

वजोग—देखो 'विजोग' (रू भे)

उ० – हूर घर ध्यान कमध हेमाळै, परिहा चाढेवा प्रभत। किसन वजोग चारणा कारण, गळियो जुजठळ राव गत। —वा. दा

२ देखो 'वियोग' (रू भे)

वजो—देखो 'वजो' (रू भे)

वज्जणो वज्जवो १ देखो 'वजणो वजवो (रू भे)

२ देखो 'बाजणो, बाजवो' (रू भे)

उ०—१ जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ। उम्रा लगं मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ। —ढो मा.

उ०—२ हाथी तुरिय तुसार सार अरिम्रण उतारइ, वज्जइ ढोल नीसाण म्राण जगि सघळे जाणइ। —व स

उ०—३ रिणमलोत रिण वज्जियौ, सुदर 'हरी' सुजाव। सहसा ले पडियो समर, घट सौ लग्गा घाव। —रा रू

उ०—४ या 'मधकर' हर वज्जिया, म्राद विखै अण रेह। ज्याउलटै मेघा रवि, सिद्ध पलट्टै देह। —रा रू

उ०—५ गुजारव भेरिया, घनक टका-रव वज्जै। —गु रू ब

उ०—६ वागी खग्गा वे घडा, ज्या वज्जै घडियाळ। पाव न मडै राव पिड, गौ छडै रिण ताळ। —रा रू

वज्जणहार, हारो (हारी), वज्जणियो—वि०।

वज्जिम्रोडौ वज्जियोडौ, वज्ज्योडौ—भू. का कृ।

वज्जीजणो, वज्जीजवो—कर्म वा०/भाव वा०।

वज्जपांणी वि [स वज्रपाणि] १ वह जिसके हाथ मे वज्र हो।

स पु—इन्द्र।

वज्जमम्रौ—देखो 'वज्रमय' [रू भे]

उ०—रोपीउ पवणिहि कलपतरी, सुमिणइ कुति दूयारि। पवणह नदणु वज्जमम्रो, भीमु सु भूयण मझारि। —प प च

वज्जया—देखो 'विजया' [रू भे]

उ०—देवी दडणी देव वेरी उदडा, देवी वज्जया जया दैता विखडा। —देवि

वज्जर—देखो 'वज्र' (रू भे)

उ०—१ करा खग तोल खडै कयकाण, पडै मनु वज्जर सीस, पठाण। —पे रू

उ०—२ वट्टा वट्टा गोळा वज्जर। धूम्रा-धार उठदा घोमर। —गु रू. व

वज्जरणो, वज्जरवौ—क्रि स [स वज्जर] १ कहना, बोलना।

२ क्रोध मे वडवडाना।

उ०—काळ रूप जम रूप, ग्रहे गयणागक उडळ। वासग वळ वज्जरै, भुज्ज घूणी बीजूजळ। —गु रू. व

वज्जरणहार हारो (हारी), वज्जरणियो—वि०।

वज्जरिम्रोडौ, वज्जरियोडौ, वज्जरयोडौ—भू० का० कृ०।

वज्जरीजणो, वज्जरीजवो—कर्म वा०।

बजरणो, वजरवो वज्जरणो, वज्जरवो—रू० भे०।

वज्जरियोडो—भू का कृ - १ कहा हुम्रा, बोला हुम्रा। २ क्रोध मे वडवडाया हुम्रा।

(स्त्री वज्जरियोडी)

वज्जियोडौ—१ देखो 'वजियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वाजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वज्जियोडी)

वज्र गी—देखो 'वजरगी' (रू भे)

उ० – वज्र गी किवाड मू मेवाड भुजा डडा वका, वरूथा विभाड वीरभद्र सौ वेछाड। मातगा पछाड सेर म्रोछाड म्रहाड मेर, पिडगै पहाड मेर सावळो पहाड। —हुकमीचद खिडियो

वज्र द—वि [स वज्र+इद्र] १ जबरदस्त, जोरदार, प्रचड भयकर।

उ०—म्ररावा तणो म्रसबाव म्रपणावियो, भट किलकता तणो भागो। म्राड रोपी वज्र द म्रीक वागो म्रसम, 'लीक' टोप पटक पथ लागो। —कविराजा बाकीदास

२ महान।

वज्र—वि. [स] १ वहुत म्रधिक कठोर, कडा, सख्त।

२ म्रत्यन्त मजबूत, दृढ।

३ तीव्र, उग्र।

स पु—१ इन्द्र का प्रधान शस्त्र जो दधीचि ऋषि की हड्डियो से बना हुम्रा माना जाता है। (पौराणिक)

पर्या—म्रतोट, म्रतोल, म्रसनी, इदरससतर, इद्रावध, कुलिस, खटकूणी खयपत्रगिर, खळसाळ, गेत्रभेदी, जोतसुत्र, दभोळ दधीचास्थी, पवि, पुरहूतजय, भिदुर।

२ विष्णु का सुदर्शन चक्र। (ना मा)

३ कोई भी विनाशक शस्त्र, हथियार।

उ०—मुग्दर, लगुड, गदा दड भिडमाल गाजीव विस्फोटक वज्र तरुवारि। —व स.

४ वरछा, भाला।

५ शकर का शस्त्र, त्रिशूल।

६ तलवार।

७ विद्युत, बिजली।

८ फौलाद नामक लोहा, स्टील।

उ०—घड़ै नळ हीक तुरी उर चोट। फळाहळ भूम हुवै व्रज कोट।
—सू प्र

९ हीरा। (अ मा)

उ०—थाभूखण वज्र तणा प्रपाहै। मायारणा हार गळि माहै।
—सू प्र.

१०—हीरा काटने का औजार।

११—एक सभा जिसके मध्य भाग होते हैं। (वास्तु-विद्या)

१२ चन्द्रमा की एक बनावट।

१३ व्यूह रचना विशेष।

१४ विश्वामित्र का एक पुत्र, वज्रनाभ।

१५ श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का पुत्र जिसकी माता का नाम रोचना था।

१६ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से नवा योग।
(फलित ज्योतिष)

१७ फलित ज्योतिष में २७ योगों में से पन्द्रवें योग का नाम।
(फलित ज्योतिष)

१८ कोकिलाक्ष नामक वृक्ष।

१९ सफेद कुश

२०—मलमवीर नामक पौधा।

२१ थूहड़, सेंहुड।

२२ वज्रपुष्प।

२३ त्रिशूल।

रू. भे—वजट, वजर, वज्जर, वजरी, वज्ज, वज्जर, वज्र, वजट, वजर, वज्जर वज्रउ, वज्रह।

वज्रमणी—देखो 'वजरणी' (रू. भे)

उ०—एम गयवाह रे प्राक्रमीस वज्रमणी। जेठो बीस वाहरै धनम्मी इद्रजीत —मतमार्नसिंघ हाडा री गीत

वज्रउ—देखो 'वज्र' (रू. भे)

उ०—स्फुलिंग सहस्र वज्रमतउ ज्वाला ना सहस्र, भरतउ, देदीप्यमान, दशग सृनि वज्रउ लइ चउगमी, महस्र प्रति स्वच्छ निरमल वस्त्र।
—व. स.

वज्रकक्कट—स. पु [स वज्रकङ्कट] १ हनुमान। (अ मा., ना मा)

२ हीरकणी।

३ कोकिलाक्ष वृक्ष।

४ थूहड़-सेंहुड़।

वज्रकंटशाल्मली—स. पु. [स वज्रकण्टशाल्मली] अट्ठाईस नरकों में से एक नरक। (पौराणिक)

वज्रक—स. पु [स] १ हीरा।

२ वज्रक्षार।

३ सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक जो सूर्य से तेइसवा नक्षत्र है।
(फलित ज्योतिष)

४ चर्मरोग के लिये एक तेल विशेष। (वैद्यक)

वज्रकपाट—स. पु [स] दरवाजे पर लगे वे कपाट जो वज्र के समान दृढ़ और मजबूत हो।

रू भे—वजड़कपाट, वजड़किंवाड़, वजरकपाट, वजरकिंवाड।

वज्रकीट—स पु [स.] पत्थर में छेद कर देने वाला कीड़ा। बनरोहू।

वज्रकूट—स. पु [स] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

वज्रकेतु—स पु [स] नरक का राजा, एक राक्षस। (पौराणिक)

वज्रक्षार—स. पु [स] वैद्यक का एक रसायन योग, जो उदर रोगों में काम आता है।

वज्रगोप—स पु [स] बीरबहूटी नामक कीड़ा, इन्द्रगोप।

वज्रघट—स पु [स] लंका का एक राक्षस।

उ०—कर सूळ विकटह सुभट कौचट, राम थट भट झपट झँझट। पछट वज्रघट कुपट ऊपट, रगट भट फुट भ्रकुट मरकट।
—सू. प्र

वज्रतुंड—स. पु [स] १ गणेश।

२ गरुड़।

३ गिद्ध।

४ मच्छर।

५ थूहड़-सेंहुड़।

रू. भे—वजरतुंड, वज्रतुंड, वजरतुंड।

वज्रदंड—स. पु [स] इंद्र द्वारा अर्जुन को प्रदान किया जाने वाला एक अस्त्र।

रू भे.—वजरदंड।

वज्रदंत—स. पु [स] १ वन्य-सूकर, सूअर।

२ चूहा।

रू भे—वजरदत, वजरदंत,

वज्रदंती—सं स्त्री [स] १ औषधि विशेष।

२ उक्त औषधि का पौधा।

रू भे.—वजरदंती

वज्रधर—वि [स] वज्र या हथियार धारण करने वाला।

स. पु.—१ इन्द्र।

२ महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध (बौद्ध)।

रू. भे.—वज्रधर, वजरधर।

वजूधार–स पु [स वज्रधारिन्] इंद्र।

वजूनख–स पु. [स] नृसिंग।

रू भे —वजरनख।

वजूनाभ, वजूनाभ्र–स पु. [स. वज्रनाभ] १ श्री कृष्ण का चक्र।

२ एक सूर्य वंशी राजा।

उ०—वाळ सुतन नृप सिथळ उवंवर। वजूनाभ्र जिण सुतण भुपवर। —सू प्र

३ वज्रपुर नगरी का एक राक्षस राजा जो निकुंभ का भाई था। यह कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न के हाथो से मारा गया था।

४ एक दुष्ट राक्षस जो ब्रह्मदेव के हाथ मे स्थित कमल के प्रहार से मारा गया।

५ स्कद का एक सैनिक।

६ प्रद्युम्न का एक पुत्र।

७ विश्वामित्र का पुत्र।

रू भे —वज्रनाभ।

वजूपाणि–स. पु [सं. वज्रपाणिन्] १ इन्द्र।

२ ब्राह्मण।

३ एक देव-योनि। (बौद्ध)

रू. भे —वजरपाण, वजरपाणि, वजरपाणी।

वजूपात–स पु [सं] १ विद्युत या विजली का आकाश से गिरने का आघात।

उ०—तठै करि खीज वहे तरवार, अकाळिय वीज तणी उणिहार। गजा करि खडळ तडळ गात, पवि जिम कीध हुवा वजूपात। —सू प्र

२ उक्त प्रकार से विजली के गिरने से होने वाला क्षय, क्षति।

३ कोई भयकर आपत्ति, दुःख, मुसीवत।

४ शस्त्र-प्रहार।

उ०—गुडै गज्ज प्राहाड, टूक ढहिया कूंभायळ। वजूपात करमाळ, गुडै तूटै कवूं-मळ। —गु रू व

५ दुर्घटना।

रू भे —वज्रपात,

वजूपोस–स. पु —कवचधारी योद्धा।

उ०—जोगावत 'ऊदल' क्रमल जोस। पच्छट्टत खाग हरौं वजूपोस। विहारियदास अभग अजागि। लडै सुत 'वीरम' अंबर लागि। —सू. प्र

वजूप्राणघातक–स. पु —एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

वजूबाहू–स पु [स] १ इन्द्र।

२ रुद्र।

३ अग्नि।

४ राम की सेना का एक वानर जिसका कुम्भकरण ने भक्षण किया।

रू भे —वजरबाहु।

वजूभाखी–वि. [स. वज्र+भाषिन्] अपने वचनो पर कायम रहने वाला, दृढ प्रतिज्ञ।

वजूभास–वि.—वज्र के समान शरीर वाला, दृढ और मजबूत।

रू भे —वज्रभास।

वजूमय–वि. [स] १ मजबूत और दृढ, वज्र के समान।

उ०—तरै देवी जी हुकम कियौ—एक थारी पाकी ईंट, एक माहरै नावं काची ईंट, इण भात रो गढ कराय, वजूमई दुरग अविचळ हुसी। —नैणसी

२ प्रबल, शक्तिशाली।

वि —हीरे का, हीरे सम्बन्धी।

रू भे.—वज्जमग्री।

वजूमाग–स पु [स वज्र-मार्ग] आकाश, अम्बर, व्योम। (डिं को)

वजूमुठि–स स्त्री [स. वज्रमुष्ठि] १ इन्द्र।

२ तीर चलाते समय की एक विशेष हस्त मुद्रा।

वि —वज्र के समान मुष्ठिका वाला।

रू भे —वजरमूंठी।

वजूविसन–स पु [स विष्णु+वज्र] सुदर्शन चक्र। (अ मा)

वजूसरीर–वि [स वज्र-शरीर] जिसका शरीर वज्र के समान दृढ व मजबूत हो, शक्तिशाली, ताकतवर।

उ०—गयणह वाणी आपीयउ आगइ वजूसरीर। वाधइ पचइ चद जिम पडव गुण गभीर। —पं प. च

वजूसार–वि [स] अत्यन्त कठोर।

स पु —हीरा।

रू भे —वजरसार।

वजूसोह–स पु —वज् की चोट या प्रहार।

वजाग—देखो 'वजरगी' (रू भे.)

वजागी–स. स्त्री. [स] १ चोट पर लगाई जाने वाली हडजोड नाम की लता।

२ देखो 'वजरगी' (रू भे)

वजाग, वजाग्नि—देखो 'वजराक' (रू भे)

उ०—१ 'अखा'हर वाहत खाग उनग। जुडै जिम भारथ दारुण जग। वळोवळ लूवत रोद्र वजाग। भिडै सुजि सूर हुवै दुय भाग। —सू प्र.

उ०—२ घड लाकड हुवै वळै हस सुधा, झाळ हुवो रणताळ झलू।
वळणो नाग अभाग वैरिया, वळती श्राग वजाग 'वलू।
—पैसोदास गाडण

वजागरा–स स्त्री —पृथ्वी, धरती, धरा। (डि ना. मा)

वजायुध वजायुधो–स पु [स. वज्रायुध] इन्द्र। (ना मा)

रू भे —वजरायुध।

वजासन–स पु [स]योग के चौरासी आसनों मे से एक।

२ गया मे बोधितरु के नीचे की वह शिला जिस पर बैठ कर बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त की थी।

रू भे —वजरासण, वजरासन।

वजी–स. पु. [स वज्रिन्] इन्द्र। (अ. मा)

रू भे —वज्री

वजेसरी, वजेसुरी, वजेस्वरी–स स्त्री [स वज्र-ईश्वरी] १ देवी, दुर्गा। (बौद्ध)

२ शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहिनिका भी कहते हैं।

रू भे —वजरेसुरी, वजरेस्वरी।

वजोळी–स स्त्री. [स.] १ अंगुलियों द्वारा बनाई जाने वाली एक मुद्रा विशेष। (हठयोग)

२ नाथ सम्प्रदाय की वज्रायनी शाखा की योग साधन की एक मुद्रा जिसमें स्त्री का संयोग होना आवश्यक है।

वि वि.—इस सम्बन्ध मे ऐसी किवदती है कि साधक साधन करते समय एक साथ कई स्त्रियों का संयोग कर सकता है, लिंगेन्द्रिय द्वारा स्त्री के रज का शोषण कर सकता है, वीर्य का स्तम्भन कर सकता है, इत्यादि इस प्रकार की कई चेष्टाएं कर सकता है।

रू भे —वजरोळी, वजरोली।

वझणो, वझबो–क्रि अ [सं वज्=आश्रय लेना]१ फंसना, गिरफ्तार होना।

उ०–पारती अस्टा री झीगडि धीगरडि पडि नै रही छै। कुहारी घटाको लागिनै रहिश्रो। पारती नीळ वझि नै रही छै।
—रा सा स

२ देखो 'वझणो, वमबो' (रू भे)

३ देखो 'वाजणो, वजबो' (रू भे)

४ देखो 'वाजणो, वाजबो' (रू भे)

वझियोडो—१ फंसा हुआ, विस्तार प्राप्त।

२ देखो 'वझियोडो' (रू भे)

३ देखो 'वाजियोडो' (रू भे)

४ देखो 'वाजियोडो' (रू भे)

(स्त्री वझियोडी)

वझो—देखो 'वजो' (रू भे)

वट–स पु [स वट] १ बरगद का पेड, वड।

उ०—१ ता मधि राजन एक वट, छाह रहतु ठहराय। सदा विराजत सारती, ग्रान-दिसा नह जाय। —गजउद्धार

रू भे —वट, वट्ट, वट, वड, वट, वटि, वड, वड्ड।

अल्पा -वडलो, वडल्यो, वडलो।

[स वर्त्मक, प्रा वट्ट] अभिमान, गर्व, घमड।

उ०—१ काय आडा पग आरण, काय कर घात वटारिया। छोगाळा छळ छाड, राणा रावत वट तणो। —नैणसी

उ०—२ गौरा भाज उजळा रूका, वैर वाळ उजवाळ वट। पग मलग निरलग अग पाऊँ, भुज निरलग निरलग भ्रकुट। —द दा

मुहा —१ वट काढणो=अभिमान को समाप्त करना, मन की निकालना, २ वट निकलणो=घमड समाप्त होना, मन की मुराद पूरी होना। ३ वट भरीजणो=गर्व करना।

३ मर्यादा, गौरव, परम्परा, कायदा।

उ०—१ आकुली कुळ वट लोपिय, गोपिय रमइ रगि। फास फेसि चागूर ए, चूरए दे वट्ट भगि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ ज्याग रा गीन गुण प्रीन न करी जिकै, प्रीत हद चारणा हूत पाळी। वीत रै बाहरू हुवो जिण वार मे, चीत रज रीत वट तणी चाली। —गिरधरदान सादू

४ गुण, धर्म।

उ०—कुळवट छोडै काण, छनै पाण गढ छोडियो। रजवट री वट राण, छाटोडी न रहियो निमन'। —लक्ष्मीदान बारहठ

५ मोट, ऐठन, बल।

उ०—आ बात कैय राजाजी गुमान सूं मूछ्यां रै वट देवण लागा
—फुलवाडी

मुहा —हाथा री वट काढणी=किसी को पीट कर अपने मन की निकालना।

६ भूखाना, साकन, लगर।

७ एक वर्ग विशेष।

उ० —मामगर कडतिगीया कुहटीया नट वट गाछा छीपा परियटा मुइ नाई तेली मोची मतूआरा वधारा चीतारा। —व स

वि [स वट=शून्य] १ भयानक, भयावह।

उ०—वट वाटै घाट ओघटे रण वन। जळ थळ महियळ अजर जरै। चेलक चाड आप रया रण, करणी सदा सहाय करै। —दोलो

२ देखो 'वाट' (रू भे)

रू भे —वट, वट्ट।

वटकणी,वटकवौ,—देखो 'वटकणी, वटकवौ' (रू. भे.)

वटकियोडो—देखो 'वटकियोडो' (रू भे.)
(स्त्री वटकियोडी)

वटकी—देखो 'वाटकी' (रू. भे)

वटको—१ देखो 'वटको' (रू. भे)
उ०—ईतरे उमरा उपर कागला पाच आय वैठा। तद रजपूत लाकडी री वटको वायो। जणी सू पांच कागला मुवा।
—पच मार री वात

२ देखो 'वाटकी' (रू भे)

वटक्कणी, वटक्कवौ – देखो 'वटकणी, वटकवौ' (रू. भे)

वटक्कियोडो—देखो 'वटकियोडो' (रू भे)
(स्त्री वटक्कियोडी)

वटक्को—देखो 'वटको' (रू भे)
उ०—वीर झटक्के वज्जिया, वे रणधीर दुवाह। अग वटक्के उडता, सेन अटक्के साह। —रा रू.

वटचड–स पु [अनु] १ बेचैनी मे धीरे धीरे बोलने या बडबडाने की क्रिया या भाव।
२ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

वटणियो—देखो 'वटणी' (अल्पा., रू भे)

वटणो, वटवौ—१ देखो 'वटणी, वटवौ' (रू भे)
उ०—१ ताहरा भीतर सू कहायो—कुवर ने ले आवणी छै तो आप पधारो नही तो कोई आवै नही। जै साहूकार नै आदमी आगा री खबर हुई तो कही परदेस मेल देसी। पछै क्यो ही वटसी नही।
—पलकदरियाव री वात

उ०—२ डाकण भखै न वाघ अढोळै, दीधा वटै न कोडी दाम। अस जो उरो लियो श्री "चूडै", गज दीधो काय दीधो गाम।
—ओपो आढो

२ देखो 'वाटणी वाटवौ' (रू. भे)
उ०—गाय, भैंस और ऊटा रा घाव भरै वट नीम दे धवसो पान उत्राळ धोया, नव्य त्वचा सट सीम दे —दसदेव
वटणहार, हारो (हारी), वटणियौ – वि०।
वटिओडो, वटियोडो, वटचोडो—भू० का० कृ०।
वटीजणो, वटीजबो—कर्म वा०।

वटत—देखो 'वटत' (रू भे)

वटतर–स पु [देशज] वेर, दुस्मनी।
उ०—तरै राजा बूझियो तो कठा सू आया, असो कासू वटतर छै।
—कल्याणसिह नगराजोत वाढेल री वात

वटपत्री–स स्त्री [स. वटपत्र] १ रामतुलसी।
[स वटपत्रा] २ चमेली।
३ एक वनस्पती विशेष [जडी] जिसके रस से पत्थर फूट जाता है। पत्थर फोड।

वटपाडो—देखो 'वटपाडो' (रू भे)
उ०—१ जग दळ वटपाडो नह जासी, पासी नहीं विगाडो थारै। जगपत निस दिन नांम जपतां, सता सारा काज सुधारै।
—र ज. प्र.
उ०—२ वटपाडा धग्पाडा वाळी आभ जडा तार्ने ऊसाड। कोय न गाज सके किनियाणी, झोकळियाळ तुहाळा झाड —वा दा

वटभरणो–स पु.–धनुषाकार एक काष्ट का बना छोटा यत्र जिसके मध्य के छेद मे लकडी का डडा लगा रहता है, जिसकी सहायता से मोटी रस्सियो या जेवडी के वट दिया जाता है।
रू भे—वटभरणो।

वटर–स. पु [स वट+अरन् वटर] १ चोर, डाकू।
२ वटेर पक्षी।
३ बिस्तर, बिछोना, चटाई,
४ पगडी।
५ मथाणी।
६ मुर्गा।
७ एक सुगध युक्त घास।

वटळणो, वटळवो—देखो विटळणी, विटळवौ' (रू भे)
वटळणहार, हारो (हारी), वटळणियौ—वि०।
वटळिओडो, वटळियोडो, वटळयोडो—भू० का० कृ०।
वटळीजणो वटळीजवौ—भाव वा०।

वटसावत्री-पूनम–स स्त्री—जेष्ठ मास की पूर्णिमा। इस दिन कबीर जयती भी मनाई जाती है।

वटसावत्री-व्रत वटसावित्री व्रत–स पु—जेष्ठ शुक्ला त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला व्रत जिसमे तीन दिन निराहार रहा जाता है और वट की पूजा होती है।
वि वि—मतान्तर से जेष्ठ वदी अमावस्या को भी यह व्रत किया जाता है।

वटाउ –देखो 'वटाऊ' (रू भे)
उ०—जु सोरमजी रै घाट थी गगादिक आणनै देवरै पाटण सोमइयै ऊपर चाढै, सु सातमो वार गगोदक कावड भरी नै आणतो हुतो सु किणहेक सहर वटाउ थको किण हेक रे चौंतरै उतरियो हुतो।
—नैणसी

वटाउडो—देखो 'वटाऊ' (अल्पा., रू भे)
उ०—मारग चालतो एक वटाउडो वोल ऊठ्यो-तेरे मन कुछ और है करता के कछु और। —रातवासो

वटाऊ—खरीददार।

उ०—किसतूरी भली मई, केसर घटियो भाव। सह वस्तू सुहगी थई, गयो वटाऊ वाघ। —म्रासो बारठ

२ देखो 'वटाऊ' (रू. भे)

उ०—रोतां मग रोवरावीया, वाट वटाऊ लोक। जाता जीव वहे नहीं, वीछड्या नो सोक। —स्रीपाल रास

वटाऊडो—देखो 'वटाऊ' (अल्पा, रू भे)

उ०—मेवै नर सदीना मुरघर, सदा नीरोगी ही रवै। वूठै जारी वातडी नै, वगत वटाऊडा कवै। —दस देव

वटाड़णो, वटाड़बो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू. भे)

वटाड़ियोड़ो—देखो 'वटायोडो' (रू भे)

(स्त्री वटाड़ियोडी)

वटाणो, वटाबो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू भे)

वटाणहार, हारो (हारी), वटाणियो—वि०।
वटायोडो,—भू० का० कृ०।
वटाईजणो वटाईजवो—कर्म वा०।

वटायोड़ो—देखो 'वटायोडो' (रू भे)

(स्त्री वटायोडी)

वटारक-स स्त्री [म.] डोरी, रस्सी।

रू भे—वटारक।

वटाळ—देखो 'वटाळो' (मह, रू. भे)

(स्त्री वटाळी)

वटाळणो, वटाळबो-देखो 'विटाळणो, विटाळवो' (रू भे)

वटाळणहार, हारो (हारी), वटाळणियो—वि०।
वटाळिग्रोडो, वटाळियोडो, वटाळयोडो—भू० का० कृ०।
वटाळीजणो, वटाळीजवो—कर्म वा०।

वटाळो-वि [स्त्री वटाळी] दुष्ट, नीच, धूर्त।

वटाव—देखो 'वाट' (रू भे)

उ०—तेजसी तासली लेने टैरै आयो। रावजी बुरी मानियो। वास छूटो, वटाव माहे लोग कहै छै-थाळी तेजसी ली-सु दण भात लीधी। —राव रिडमल री वात

वटावणो, वटावबो-देखो 'वटाणो, वटावो' (रू भे)

उ०—सब कोइ प्रीत वटायतै, सब कोइ करतै भाव। सम्मन वै कुण रूंगटा, ज्या न फलोळै वाव। —सम्मन

वटावणहार, हारो (हारी), वटावणियो—वि०।
वटाविग्रोडो, वटावियोडो, वटाव्योडो—भू० का० कृ०।
वटावीजणो, वटावीजवो—कर्म वा०।

वटावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू भे)

(स्त्री वटावियोडी)

वटावू—देखो 'वटाऊ (रू भे)

उ०—१ जमला जोवन फूल है, फूलत ही कुम्हलाय। जाए वटावू पथ सिर, वैठे भी उठ जाय। —जमाल

उ०—२ मस्तक नीरी लूग, धरण री धूड ठरावै। सेजट सेवा खाय, मद मे छान छवावै। वगत वटाया हेत, गेत किरसाणा ताई, वन में पसवा प्रेम, हमीरा ग्राम हथाई। —दसदेव

वटियोडो—देखो वटियोटो' (रू भे.)

(स्त्री वटियोडी)

वटियो—१ देखो 'वाटियो' (रू भे)

२ देखो 'वाटो' (अल्पा, रू. भे)

३ देखो वटमरणो।

वटी-स पु [स] १ रस्सी, डोरी।

२ गोली या टिकिया।

३ उपवन, वगीचा, उद्यान।

रू भे.—वटी।

वटु, वटुक-स पु. [स. वटुक] १ बालक, लडका।

२ ब्रह्मचारी, माणवक।

३ धर्म शास्त्र पढने वाला विद्यार्थी, छात्र।

४ एक भैरव।

वि—मूर्ख मूढ।

रू भे—वटुक, वटुया, वटुय।

वटूकणो वटूकवो—देखो 'वटूकणो, वटूकवो' (रू. भे)

उ०—कथा कारक न छोडियै, हिरण किसा घी खाय। आक वटूकै, पवन भखै, घोडा आगळ जाय। —अज्ञात

वटूकणहार, हारो (हारी), वटूकणियो—वि०।
वटूकिग्रोडो, वटूकियोडो, वटूक्योडो—भू० का० कृ०।
वटूकीजणो, वटूकीजवो—कर्म वा०।

वटूकरण-स. पु—उपनय सस्कार, यज्ञोपवीत सस्कार। (हिं को)

रू भे—वटूकरण।

वटूकियोडो—देखो 'वटूकियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वटूकियोडी)

वटेवाहू—देखो 'वटाऊ' (रू. भे.)

उ०—इकि डोकरि तिणि दीसि पाच पुत्र इकि वहूय सउ। कुंती नइ आवासि वटेवाहू वीसमिया। —प प. च.

वटैंत—देखो 'वटाऊ' (मह , रू. भे)

वटौ—देखो 'वट्टौ' (रू. भे)

वट्ट—१ देखो 'वाट' (रू भे)

उ०—अति आणंद ऊमाहियउ, वहइज पूगळ वट्ट । श्रीजइ पुहरि उलाघियउ, आडवळा रउ घट्ट । —ढो. मा

ऊ०—२ कूच नगारा वज्जिया, गिर गज्जिया गहीर । समद उलट्टै जिम सजळ, वट्टै लगै वहीर । —सू प्र

२ देखो 'वट' (रू. भे)

उ०—फट थट्ट गयौ खग झट्ट कहै, रण थट्ट घणा भट पास रहै । घर वट्ट पहट्ट गहट्ट घड, पिड खड विहड पमग पड । —पा प्र

वट्टि—देखो 'वाट' (रू भे)

उ०—हरि हथीआर हलावता, मुकत्यह रुघी वट्टि । ते मुभ-लीघइ आविजै, नाकि घणा जिणि घट्टि । —मा का प्र

वट्टौ—स पु [स वट प्रा वट्टुल] १ गोला, गोली, कोई गोल मोगरा ।

उ०—आणे खबर फिरै ओहट्टा । वाटा दूत थया नट वट्टा, अति सोचै पतसाह अछानै, खिण सज्या खिण तारतखानै । —रा रू.

२ आर्यावर्त का एक जनपद, एक देश ।

उ०—विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स वरण दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग वट्टा कुणाल लाट केकयमडलारद्ध इत्यरद्ध पच विंशति जनपदा आरया । —व स.

४ देखो 'वट्टौ' (रू. भे)

वठ-पु—१ अनुसार, अनुरूप ।

उ०—रसा रूठी रूठौ अलख इक रूठी मत रहै । हमारी देखे ना विरुद निज लेखे वठ वहै । —ऊ का

२ देखो 'वठै' (रू भे)

वठल—वृक्ष विशेष ।

उ०—कल्प द्रुम नइ केतकी, कठल वठल ककुस्ट । कमरख अनइ कालुवरी, केसर सुर सतुस्ट । —मा का प्र

वठांऊ-क्रि वि.—वहा से, उधर से ।

वठी—देखो 'वठै' (रू भे)

रू भे—वठी, वठीनै ।

वठे, वठै-क्रि वि —वहाँ, उधर ।

उ०—अवै ईणा वामण रा वेटा नै कनात माहै लीधौ । कथा वचाणी माडी । वठै वामण रूपवत असतरी देखे नै मन डीग्यौ यकौ कथा वाचवा लागौ । —गाव रा घणी री वात

रू. भे—वठेई वठै, वठैई, वटै, वठ ।

वड-स. पु—१ शिर ढापने या घूघट निकालने के लिये स्त्रियो द्वारा खीचा जाने वाला ओढनी का पल्ला, छोर ।

उ०—धरती माहे नै थारै दरवार माहे इण सरीखौ दातार कोई नही । तिणसू लोवडी रो वड माथा ऊपर खेंच्यो । —जगदेव पवार री वात

२ देखो 'वडौ' (मह., रू भे.) (ह ना मा.) (उ र.)

उ०—१ हरि मन हरिखि हकारिय नारिय स्यउ निजजाति । वईसिइ वड लहुडाईय, भाई जिम ते पाति । —जयसेखर सूरि

उ०—२ वड जगड विसतारै, निधि मेघा तुझौ नभ ।—रामरासौ

उ०—३ दीसंत दुयग पटदेवगत्ति । दीवाण वडौ वड देसपत्ति । —गु रू व.

३ देखो 'वट' (रू भे) (उ र)

वडउ—देखो 'वडौ' (रू भे) (उ० र०)

उ०—तु ही रावत गोरल्ल, तु हीज दल माही वडउ, तु ही रावत गोरल्ल, तु हीज मोरउ भाईडउ । —प च. चौ.

वडकवार—१ देखो 'वडकुमारी' (रू भे.)

उ०—तरै किणही कहयो-काइक वडकवार वेटी वरस १५ तथा १६ री वैर हुवै तिका जो च्यार पोहर छाती सु लगाय सोवै तो बाहुडै । वीजू तो जीवै नही । —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू भे)

वडकारण-वि [देशज] १ वडाई करने वाला, प्रससा करने वाला ।

उ०—केहर वाघ आद वडकारण, चक्रवत पगे एक सो चारण । पति की प्रीत धारिया पूरी, हेमराज अवदार हजूरी । —रा. रू

२ स्तुति व यशोगान करने वाला ।

वडकुवार—१ देखो 'वडकुमारी' (रू भे.)

उ०—जेसळमेर सोढा रे विच मे कोटेचा रजपूत रहै । कोटेचा रै वडकुंवार दीकरी सु पडिहारै रो मोहिल परणीजणनू आयौ । —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे)

वडको—देखो 'वडको' (रू भे.)

उ०—कामैंती ग्यारै घन कूडा, पडिया दुख भुगतै रजपूत । यौं वडको था वडका आगो, वटका हुय भडिया अगवूत । —ऊमरदान लाळस

(स्त्री वडकी)

वडगात-वि—१ वीर, शक्तिशाली, बहादुर ।

उ०—१ प्रथम 'अभैपति' पूछियौ, भूप कणैठी भात । अब भगडौ कीजै किसू, वखतसिंघ वडगात । —सू प्र

उ०—२ वाणी अवरळ सुध वचण, गुण सागर वडगात । ढोलो पुगळ आवता, पय मळ कविपात । —ढो. मा

रू भे —वडगात ।

वडगूजर—सं. पु.—एक क्षत्रिय वंश या इस वंश का व्यक्ति ।

उ०—भजि जात प्रजा मय थात भगेळा, पाटण तूंअर कपपुरे । वडगूजर जाट अहीर तजै वळ, दाट सगा पुर राट दुरै । —रा. रू.

रू भे—वडगूजर ।

वडगोतण—देखो 'वडगोतण' (रू. भे.)

वडगोळी—स पु [स वट+राज गोळी] वट वृक्ष का फल ।

वडचड—वि १ दुराग्रही, जिद्दी, हठी ।

२ विरुद्ध आचरण करने वाला ।

वडचीत—वि.—१ दानवीर, उदार चित्त, महान ।

उ०—१ त्याग तियाग, रसण सूमाणा, सगराहा हिंदू सुप्रयीत । सिवयमी न मिळै 'प्रहमी' सुत, चीतोडो मामद वडचीत ।
—जादुराम आढो

उ०—२ लगधीर वडो लख लूट वणी वपि लाज । वडचीत वरीसण वाज गरीब निवाज ।। —ल पि

२ वीर, साहसी ।

उ०—म्हारो मुजस अमर 'करणागत' वामुर जग वह हुवै वितीत । वाधारियो पायटो विरतै, चैराडियो नहीं वडचीत । —द दा.

रू. भे —वडचीत, वडचीन ।

वडजांनी—स पु —बारात में वर के दादा, पिता, चाचा आदि मुखिया पुरुष ।

उ०—वेली सहि विरदैत, जेठी 'गोवरधन' जिसा, "कम्नाजळ" अणावर वन्है, वडजांनी वानैत । —वचनिका

वडणो, वडवो—देखो 'वदणो, वद्धो' (रू भे)

उ०—कमळ वीय समिवळा, कळा वडती जग वदै । कळाहीण गळ हुवै, जेम निस पूनिम चंदै । —गु. रू व

वडणहार, हारो (हारी), वडणियो—वि० ।

वडिग्रोडो, वडियोडो, वडयोडो—भू० का० कृ० ।

वडीजणो, वडीजवो—भाव वा०

वडत्यागी—वि.—दान वीर, त्यागमूर्ति ।

उ०—आवेर उदैपुर मुरधर आबु, पुगो जस गुजरात परै । ताहरो मुजस सदा वडत्यागी, "भगवन" वुदी साख भरै । —ओपो आढो

वडनाळ—स स्त्री तोप ।

उ०—मुरजां भुरजां भिरडगढ, वडनाळ गुडक्की, सोर धुम्रा रव घोर सज, घर अवर ढक्की, ध्राई बीज अचीत की, असमान कडक्की, भूप तुराटा भेळिया, जुध कारण जक्की । —वी मा.

रू भे —वडनाळ, वडीनाळ, वडीनाळ ।

वडपण, वडपणो, वडप्पन, वडप्पणो—देखो 'वडप्पण' (रू. भे)| (उ० र०)

उ०—१ हाथी हीडत देस, कूकर लव-लव कर मरै । घडपण तणै विवेक, क्रोध न आणै किसनिया । —अज्ञात

उ०—२ राणै प्रताप राव-मालदै सत्रजीता चाळा सटै । पण वाघ विग्रो भांजो यो पिमण, विगा वडप्पण नह घटै । —रा रू

वडफर, वडफरि, वडवफर—वि. [स वड्+फलक] रक्षा करने वाला, रक्षक ।

उ०—कहर हर निज थरहर ऊपर कायरा, अतर सर सोक जरहर अरात । जो वर 'तेज' हर इसो मोसर जठै, होऐ वडफर मोहर खूद हुत । —कवि करणीदान

स पु. [स वड्+फलक] ढाल ।

उ०—१ मति भीजै सुण सुण असुर, जण जण छीजै प्राण । अप्रदलगा चढियो अकम, कस वडफर केवाण । —रा रू

उ०—२ गज बाधा वहे उपगार सत्री गुर, वदन वहे खग आकविया । (तै), ऊथारिया वडफरां ओटा, कोटा पावण हार किया । —महाराजा गजसिंह री गीत

उ०—३ मग्गियां सू बलभद्र लोह माहियै, वडफरि उच्छजतै विरुधि । झलामली सति तोईज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि । —वेलि

उ०—४ वडफफर टूक ऊगे गजवाज, तडफफड मच्छ जिही सिरताज । मरइ जरइ पडै अनमध, कहवकह वीरह नाचि कमध । —वचनिका

रू भे —वडफर ।

वडवडणो, वडवडवो—देखो 'वडवडणो, वडवडवो' (रू भे)

उ०—वरियांम विढोवा वडवडत । जमदूत जोध सिलहा जडत । —गु रू ब

वडवडियोडो—देखो 'वडवडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वडवडियोडी)

वडवेहडो—देखो 'वडवेहो' (रू भे)

उ०—कोई सिरदार नै सत्रुओ नै मार भगाया सो सिरदार री फतै हुई । पाछा आया तरै वडवेहड़ा सूं वधाया, वधावा ठावा २ आदमी तिका रा नाम सूं गावीजण लागा । —वी स टी

वडवोर—देखो 'वडवोर' (रू. भे)

उ०—कठै वजै वडवोर, कठै झाडी मोटोडी । कठै बोरटी नाव, वणी देवा री छोडी । —दसदोख

वडवोरडी, वडवोरी—देखो 'वडवोर' (१) (अल्पा., रू. भे)

उ०—खेत मे वडवोरडियां आयोडी, गहर डम्मर व्हियोडी, जाणै वडला ऊभा। —रातवासो

वडभाग—१ देखो 'वडभाग' (रू भे)

२ देखो 'वडभागी' (रू. भे)

उ०—दोनू देरावर तणी, भटियाणी वडभाग। ओपै वर वरदळ अभो, सोभै अचळ सुहाग। —रा. रू.

वडभागी—देखो 'वडभागी' (रू भे.)

उ०—ए वडभागण राधका, कवण तपस्या कीन। तीन लोक तारण तरण, सो थारै आधीन। —अज्ञात

(स्त्री. वडभागण, वडभागणी, वडभागिण)

वडमन–वि —१ उदार चित्त, दयालु।

उ०—अति उतिम दीजै उकति, सरसति हू सुप्रसन। गाआ 'लखपत्ती' गुणां, महि पत्ती वडमन। —ल पिं

२ विशाल हृदय, महान, श्रेष्ठ,।

वडम–स पु —१ यश, कीर्ति, वडाई, विरुद, महत्व, विशेषता।

उ०—१ कनक जडाव दयण 'करणावत,' तैं कीधो कुण करै तम। आठ पोहर मोटा आथाणा, वाखाणा थारी वडम। —किसनो आढो

उ०—२ फब खट ब्रन चहु फेर, घेर रावता सुभटा। करण जेर केवियां, वाय समसेर विकटा। मारू जैसलमेर, बळै आवेर वखाणू, नागद्र वीकानेर हेर दीठो हिंद वाणू। रैणवा दियण कुमेर रिध वडम सुमेरज विसतरै। धज, वध 'सेर' रिया धणी, अेक वेर फेर अवतरै। —पहाडखा आढो

२ पूर्वज, बुजुर्ग।

३ बडप्पन, महानता, सज्जनता।

उ०—१ हिव चालो प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सफाई। चद्रदीप मांहे वैठा किम, आवै वडम वडाई। —वि कु

उ०—२ लछवर तास वारणा लीजै, वडम तणा कीजै वाखाण। —ह ना मा

उ०—३ प्रसण वखाण करै जोधापत, वडम तुहाळी साख वळै। अे जो जिकै वहै ऊनेडा, खेडा तले राखिया खळै। —महाराजा गजसिंह रो गीत

४ देखो 'वडो' (मह., रू भे)

उ०—१ वडम पराक्रम वीर वर, विहर निडर वळ वाह। सर "प्रताप" केई सुखी, छत्र धर तो कर छाह। —जैतदान वारहठ

उ०—२ वडम सुदातार हर भगत ताळा वीळंद, सरसरी ऊवार गुण अरत सरसै। वरसता सदन कर इद जिम 'वगतसी,' दरस ता इता साभाव दरसै। —महाराजा वगतसिंह रो गीत

रू. भे —वडम, वडिम, वडिमि वडमि, वडिव, वडिम, वडिमि, वडीम, वाडम, वाडव, वाडिम।

वडमन, वडमनो, वडमन्न—देखो 'वडमन' (रू. भे)

उ—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढा नीर पवन्न। तिण रित नेह न छाडियइ, हे वालम वडमन्न। —ढो मा

उ०—२ विधो-विध धूहड दाख वचन्न। मेले नह चाल राणी वडमन्न। —गो रू

वडमपण, वडमपणो–स. पु —१ वृद्धापन, बुजुर्गियत।

२ देखो 'वडप्पण' (रू भे)

उ०—विया जैचद छत वडमपण वेखता, लेखता छत्रपति झोक लागै। तीसरो थयो ईसाण न्रप ताहरो, अभग 'वीक' "जैतसी" कीध आगै। —द दा.

वडमि—देखो वडम' (रू भे)

उ०—गढपति गहगीर हद विहद हेल हमीर। धरपति लखधीर वडमि घण बावन वीर। —ल. पिं

वडराग–स स्त्री.—देखो 'वडो-राग' (रू. भे)

उ०—धकै सिसोद मेवास चढिया घटा, गोळिया गाज वडराग गवता। —दल्लो मोनीसर

वडरूप—देखो' विडरूप' (रू भे)

वडलाज–वि स्त्री —जिसको वहुत लाज आती हो, जो, लज्जाशील हो, लजालु।

उ०— रूप नरूकी राणिया, वडभागणि वडलाज। पाधारै आया प्रथम महिल जिके महाराज। —रा रू

वडवडाळो–वि [अनु] बडे से बडा, सब से बडा।

उ०—अवे अछाया दैतराय रोद्र काया रूप ए। अन्नड कराळा वडवडाळा भड भुजाळा भूपए। —गु रू व

वडवानळ—देखो 'वडवानळ' (रू भे)

उ०— आगलि रही करि अरदास, चाहूआण राउ लीलविलास। जउ सायर वडवानळ समइ, तउ कान्हउ तुरकानइ नमइ। —का दे प्र

वडवार—देखो 'वडवार' (रू भे)

उ०—लगर वध दुलावत 'लाला', सुपह दात फरसी झळ सार। सर डूचण दुसहा नवसहसा, वड करसण झोका वडवार। —लालसिंह राठोड वडली रो गीत

वडवामुख–स पु [स वडवा+मुख] पाताल। (डिं. को)

रू. भे.—वडवामुख ।

वडवालु, वडवालो—स. पु —वट वृक्ष का फल ।

उ०—वडवालु नइ पुरिण वली, वास वणसरी वेलि । वाकुमा वाघइ भला, वकुल ग्रद्धतरु वेलि । —मा का प्र.

वडव्वड—क्रि वि.—वड वड कर ।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहत । लडत्थड सकर सीस लहत । —गु रू व

वडस—देखो 'विडस' (रू भे.)

वडहठ—युद्ध, लडाई, जंग ।

उ०—वीरम पहली वीरवर इतरै वड़ आया । साहै राग वळ सांमले, वटहठ रचाया । —वी मा.

रू. भे —वडहठ ।

वडहत, वडहत्थ, वडहथ—वि [स वद्हस्त] १ आजानबाहु ।

उ०—१ विदा किया भाटी भगवाहा, वेलो सामै कमध दुवाहा । मारण दुयण करन महवेचै, वडहथ 'नाथो' ग्रमर घवेचै । —रा रू.

उ०—२ भदल भांण वरती दळा, जमराज जमाया । वडहथ पूगळ जिणधगत, भाटी मन भाया । —द. दा

रू भे —वटहत, वडहत्थ, वटहथ, वटहाथ ।

वडहर—वि. [स वद्+हर ?] उच्च कुल का ।

स पु.—पाकर से मिलता जुलता पत्तों वाला एक वृक्ष विशेष ।

रू. भे —वडहर, वटहार, वटहर ।

वडहार—देखो 'वटहर' (रू भे)

वडां—वि वृद्ध (सामान)

वडांवडी—वि. स्त्री.—१ महान, बडी, समर्थ ।

उ०—वडांवडी किनियांणी वांका' पोग पूजगा पाळे । देस विदेस माय डाढाळी, राज दरबार रखाळे । —कविराजा बांकीदास

२ देखो 'वडावडी' (रू भे)

वडाई—देखो 'वडाई' (रू. भे)

उ०—१ बडा बडाई ना करै, वडा न बोलै बोल । हीरा मुख से ना कहै, लाख हमारा मोल । —अज्ञात

उ०—२ कहै प्रोहित 'केहरी' ग्रम्हा घरवट अधिकाई । सांम सुधळ सत्र वाढि, वडा जुध तरै वडाई । —सू प्र

उ०—३ जिकी पवारा री आदमी आवै तिण आगै पवारा री घणी बडाई करै । —नैणसी

वडाऊ—देखो 'वटकौ' ।

वडाक—स. पु.—भेडिया ।

उ० ताहरा जान नू मारग मे जावतां वडाकां री सवण हुवौ । ताहरा सवणिया कही—राज ! सवण भला न हुवा छै, पाछा फिरो —नैणसी

रू. भे —वड्डाक, वड्डाख ।

वडापण, वडापणौ—देखो 'वडप्पण' (रू भे)

वडार—देखो 'वडहार' (रू. भे)

वडारण—स स्त्री [स अवदरिका, भाटकारिणी=भडारण] दासी सेविका, बांदी, दरोगा जाति की स्त्री ।

उ०—१ हाडा राव 'रतन' री हवेली कनै डेरो हुतो । राणी राठोड बीकावतजी रात कियो । वडारण पातर खवास ऐ ११ बळी —बां दा ख्यात

उ०—२ ताहरा वडारण पूजा करण नू आई । ताहरा मूळ 'वडारण नू पकड आपरी दोयड माहै पोट बांध अर उबैरा कपडा पैहरनै पोट ऊपर चढियो। —नैणसी

उ०—३ दात रा चुडा विना वडारण रावण री आखडी । —रा. सा स.

रू. भे —वडारण, वडारण, वडारण ।

वडाळ—स. पु —१ रथ । (डिं ना. मा.)

२ देखो 'वडो' (मह , रू. भे)

उ०—'वरसिंघ देव' राजा वडाळ । बूंदेल पडै चम्मर ववाळ । —गु रू. व

रू भे —वडाळ ।

वडाळो—देखो 'वडो' (मह., रू. भे)

उ०—१ उत्तम नांम वस उजवाळो, वेद-धरम को वयण वडाळो । —सू प्र.

उ०—२ हाडा गोड जादव्व झाला हुठाळा । वळै वस छत्रीस साथै वडाळा । —वचनिका

उ०—३ सोळहसै समत हुग्रो जोगण पुर चाळै । सम्मै एकासियै मास काति वडाळै । —गु रू वं.

उ०—४ 'करण' तणै परणतै पयावर, कर मुकता कवि दिये कल्यांण । वडहर कहियो पथ वडाळो, जागळवा कहियो जेसाण । —द दा.

(स्त्री वडाळी)

वडाळोराग—देखो 'वडोराग' (रू भे)

उ०—रूडे वडाळाराग, हूर अच्छ सिव हरखिया । —गो. रू.

वडावड, वडावडी—१ देखो 'वढावढी' (रू. भे)

उ०—राव मालदे रै कूपो जी सिरै चौकी हुवा । बीकानेर डीडवाना सरीखा तखत पटै हुवा । तोही तद रिणमला रै घरै दसडी वडावड हुती । —राव मालदे री वात

२ देखो 'वडाबड' (रू. भे.)

वडिब, वडिम, वडिमि–स. पु.—देखो 'वडम' (रू. भे)

उ०—घन वडिम गोवरघन धारण। चख यक सूर वियो चख चद।
—ह ना. मा.

उ०—२ रथि हाथ रूक सम थर रेखगि, महिपति पग तिस एक एक मण। प्रम कमधज जिण वडिम पूजतो, प्राप वडिम सुजि प्राचरण। —जैमल राठोड री गीत

उ०—३ धारण सलज चखा चद धारै। प्राच उठाया वडिम उच्चारै। विच पुर घसे विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चद राजा। —सू प्र

उ०—४ उदह वेळा वडिम महारस दानेत, जोति जळ प्रचळ सीतळ प्रबळ जाण। कोक जळचर निजर दमगचर पाळ कव, मीन सागर गिरद चद खूमाण। —महाराणा जगतसिह सीसोदिया री गीत

उ०—५ भिडै पतसाह सै हाथि जिण भाजिया, वडिम विधि जास दरगह विराजै, इसै विरदै लियै प्रो जगति ऊपरा 'सूर' सुत तपै खत्रवाट साजै। —केसोदास गाडण

वडियाससुर–स पु (स्त्री वडियासासु) श्वसुर का बडा भाई।

वडिस–स. पु [स वडिश, वलिश] मछली पकडने का काटा, वशी। (हि को)

रू भे वडिस।

वडी देखो 'वडी' (रू भे)

वडीतीज–स स्त्री —भाद्रव मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया।

वि वि —देखो 'तीज'।

रू. भे.—वडीतीज।

वडीदेव–स. स्त्री —१ श्री करणी देवी।

उ०—सग वीतज प्राया उरा सार, कियै बूब करनला कर पुकार। दरसण दियै ताछिन वडीदेव, साजो कियै करहो फळी सेव।
—रामदान लाळस

२ भगवती, दुर्गा।

वडीनाळ—देखो 'वडनाळ' (रू भे.)

उ०—वडीनाळ दस विखम, धोम सतपच मुहर धर। तीन राडि विच जीत, प्रायो रेवा नदि ऊतर। —सू प्र.

वडीम—देखो 'वडम' (रू. भे)

वडीमां–स. स्त्री —पिता की भोजाई, ताई।

वडीराग– स. स्त्री —देखो 'वडीराग'।

वडु—१ देखो 'वडौ' (रू भे) (उ० र०)

उ०—लक वडु घूटी लहु, पीडी चडतई मांसि। घूंटण पणि घाठा जिस्या, काई न कीजइ पासि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'वट' (रू भे) (उ० रा०)

वडुप्रार—देखो 'वडौ' (मह., रू. भे)

उ०—१ वड पह वडुप्रार भुजि कुळिभार धर सिणगार सपै लखधीर। विलसण गजवाज कुंप्रर सकाज वसधा राज करै वर वीर। —ल पिं.

उ०—२ साख सिणगार वडुप्रार सामी, नवै खड जास जसवास नांमी। —ल. पिं.

वडूजा—देखो 'विडूजा' (रू भे.)

वडूजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू. भे.)

वडेर–स पु [स• वड्+रा प्र प्रेर] १ वडा घर।

२ 'कूटे' एव माटी से बनी हुई प्रनाज डालने की कोठी (गोडवाड)

रू भे.—वडेर।

वडेरउ, वडेरौ—देखो 'वडेरौ' (रू भे.)

उ०—१ वडउ वडेरउ भाइगु जाणि, स्रावक नइ घरि चडइ प्रमाणि। करम ना जोइ एवडा फेर, धरम प्राडा छइ काठिप्रा तेर।
—वस्तिग

उ०—२ ताहरा गोगैजी कही—थे वडेरा छो, छोटा तोई सुसरा छो, पग वडा छो, थे वैसो, हू ले प्राईस। —नैणसी

उ०—३ ताहरा वडेरा लोक एकठा हूवा। दावड्या तेडीया। वात पूछी। —दैवजी बगडावता री वात

उ०—४ हेमो कहै–कूंभा! थारै प्रजेस पिंड लोह नही लागो छै, वाळक छै। तूं घाव कर। हू वडेरो छू, घाव क्यू करू? कूंभो कहै–हेमाजी! वरसै थे वडा पण पगै म्हे वडा। था माहरो धान पर्लै मे लियो, थे माहरा चाकर, तै मे वडा, थे घाव करो।
—नैणसी

२ देखो 'वडौ' (प्रल्पा., रू. भे)

उ०—नान्हइ किसनइ नाथियौ, वासिग नाग वडेरौ रे। नास करइ रवि नान्हडौ, प्रधकार वहुतेरौ रे। —प च चौ.

वडै—समान, बराबर।

वडेरौ—देखो 'वडेरौ' (रू भे)

उ०—सु 'जैतो' 'कूंपो' तौ वडी वेढ काम प्राया था, नै तद वडेरां ठाकुरा मैं रावजी कन्है जेसो भैरवदास हुतो, तरै जेसैजी रावजी सु कह्यो। —राव मालदे री वात

वडोडो—देखो 'वडौ' (प्रल्पा, रू भे.)

उ०—१ प्रा तौ उण डाढाळा रा मन में सुहावै नही वे वारा भाला

तो ऊगिड-सूर वडोडो माप री डाटा प्रळा रूपी दिखाय भाज न्हाकनी। —वी स टी

उ०—२ चाकरडी, रे मारू थारै वडोडे वीरेजी ने मेल, राय भरियै रे मादवै रे, म्हारा गाडा म्हारू घर वसो। —लो गी.

वडो—देखो 'वडो' (रू. भे)

उ०—१ वळिहरा 'करनोत' वडा काळ नळ, 'भेडक' 'नापू' निवड भडं। सत्रयाट करै वहवाट 'लखमण', पण थाए वर त्रिधि घिपट। —गु. रू बं.

उ०—२ व्रज रासियो विनोयो वासव, वडो प्रवर कृण विसन वड। —ह ना मा

उ०—३ छाडू, गिवो वडा रजपूत, नै कनै वडो वित, तिण घर २० तथा २५ रजपूता रा वसाया। वडी वसती हुई। —नैणसी

उ०—४ पुर तूटियो वडो मिघ पाई। सभिया सुज मारिया सिपाई। —रा रू.

उ०—५ ते वडो चिटो नही जे वडठ फडहुट, ते वडो नइ नही जे वडठ मद हद। —व स

(स्त्री वडी)

वडो-दूहो—स पु —दोहे नामक छद का एक भेद जिसके प्रथम व चौथे चरण में ११–११ तथा दूसरे व तीसरे चरण मे १३–१३ मात्राए होती है। —वा दा.

उ०—गिन्नियां वडाराग माहै वडादूहा गवाडो। —वचनिका

वडो-बाप—देखो 'वडो-वाप' (रू भे)

वडो-भाव—स. पु —हाथी का एक रोग (मोतीजरा) जिसके कारण उसका शरीर सूक जाता है और वह खाना पीना बद कर देता है। वि वि —इस दशा में अगर हाथी की पूछ चीरी जाय तो उसमे खून के स्थान पर पानी निकलता है।

वडो-राग—देखो 'वडो-राग' (रू भे)

उ०—१ गिन्नियां रा वडा राग माहै वडा दूहा गवाटो। —वचनिका

उ०—२ नोवति भीगडी पडी नै रही छै। भेर नफेर, करनाळ भमक नै रह्यो छै। सुरणाया री रुहक पडि नै रही छै। वडो-राग सिधवो वागि नै रह्यो छै। —रा. सा सं

वडो-राज—स पु [स. वृद्ध राज्य] राजा का राज्य, बड़ा राज्य।

उ०—मोटी मायप होय, पिडा हुवै पूजता, वडाराज रो गाव लोग सोह वूमना। नह को लोपै लीह, क धरे घचोलणा, एता दे किरतार फेर नहीं बोलणा। —भोमिया वचन

वडो रावळो—स. पु.—गाव के ठाकुर का घर।

रू. भे.—वडो रावळो।

वडो-लाट—देखो 'वडो-लाट' (रू. भे)

वडो-साणोर—स पु —एक प्रकार का डिंगल-गीत जिसके प्रथम व तृतीय विषम चरणों मे २०–२० मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ सम चरणो १८–१८ मात्राएँ होती है, साथ ही प्रथम द्वाले के प्रथम पद मे २३ मात्राएँ होती हैं। (र रू)

वि वि —इसका दूसरा नाम 'शुद्ध-साणोर' भी है।

वडुवड्डी—स. स्त्री.—सर्व शक्तिमान देवि, दुर्गा।

उ०—देवी चद्रघटा महम्माय, वडी। देवी वीहळा भ्रम्नळा वडुवड्डी —देवि.

वड्डाक, वड्डाख—देखो 'वडाक' (रू. भे.)

उ०—वैताळ वीर मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महासद। मिळ समळ ग्रीध भ्रामग्ग भकरा, जवक्क रीछ वड्डाक जक्ख। —गु. रू ब.

उ०—२ जरख रीछ वड्डाख, सिवा सत लख्ख मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळचक्का। —गु. रू ब

वड्डो—स पु —१ देखो 'बडो' (रू भे)

२ देखो 'वडो' (रू. भे)

रू भे —वड्ढो।

वड्डणो, वड्डवो—देखो 'वढणो, वढवो' (रू भे)

वड्डियोडो—देखो 'वढियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वड्डियोडी)

वढ—स पु [स वर्ध] १ घाव।

उ०—वढियो मुसेस 'पतो' वाढाळो, वमियो 'सुरजन' देरा वढ। गढ चित्तौड गरब तण गरजै, गाडो गो रणथभ गढ। —पत्ता चूडावत रो गीत

२ कटाव।

उ०—तासणी री वाडी री नोपनो इकतीस ताडी री, नाळेर सो मोटी, सोपरा वढ री, गरी रै दळ री, हाथ सू छूट पडै तो काच री सीसी ज्यू किरचा-किरचा हुय जावै। —रा. सा स.

३ काट-छाट।

४ देखो 'वढ' (रू भे)

५ देखो 'वढो' (रू. भे)

रू भे —वढो वड्ढ।

वढणी—स स्त्री —१ आमातिसार मे होने वाला पेट का दर्द, ऐंठन।

२ काटना क्रिया का भाव।

वढणो, वढवो—१ देखो 'वढणो, वढवो' (रू भे)

उ०—१ वढ पड विहर थाटा विळ द, भुजलग भट सेला भचढि।

स्रग वमूं कहे 'हृटमल' सुतन, "ग्रमूनि" जिम 'खाटै ग्रचढि ।
—सू प्र.

उ०—२ रजपूता रै स्त्रिया री तौ धरम पती रै लारै काठ चढ जाणौ नै रजपूता री धरम स्याम धरम सारू तथा निजकुळ सारू तरवारा री धाग सृ वढ जावणौ । —वी स टी

२ देखो 'वधणौ, वधवौ' (रू रू)

वढणहार, हारौ (हारी), वढणियौ—वि० ।

वढिग्रोडौ, वढियोडौ, वढ्योडौ—भू० का० कृ० ।

वढीजणौ, वढीजवौ - भाव वा० ।

वढवार—देखो 'वढवार' (रू भे)

वढाणौ, वढावौ—देखो 'वढाणौ, वढावौ' (रू. भे.)

उ०—पण म्हारौ मन तौ ग्रो इज कैवै कै खुदा रा इण रामतिया री ग्रव काई जरूरत है, इण तौ ग्रणगिण मिनखा रा गळा वढाय दिया वढावतौ इ जावैला । —फुलवाडी

वढाणहार, हारौ (हारी), वढाणियौ—वि० ।

वढायोडौ—भू० का० कृ० ।

ढाईजणौ, वढाईजवौ—कर्म वा० ।

वढायोडौ—देखो 'वढायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वढायोडी)

वढाळ, वढाळी, वढाली—स स्त्री.—तलवार ।

उ०—१ वढाळ सेल के वणाय, कीध ग्रोपमै कळा । जिकै कुमार वीज जाणि, चचळा ग्रपच्चळा । —सू प्र.

उ०-२ वीजली परि झलकती, तीन्ही धाराळी वढाली ग्रणी ग्राळी —व स

वढावणौ, वढाववौ—देखो 'वढाणौ, वढावौ' (रू. भे)

उ०—२ इण तौ ग्रण गिण मिनखा रा गळा वढाय दिया, वढावतौ इज जावैला । —फुलवाडी

वढावणहार, हारौ (हारी), वढावणियौ—वि० ।

वढाविग्रोडौ, वढावियोडौ, वढाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वढावीजणौ, वढावीजवौ—कर्म वा० ।

वढावियोडौ—देखो 'वढायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वढावियोडी)

वढियोडौ—१ देखो 'वढियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'वधियोडौ'

(स्त्री वढियोडी)

वढूलियौ—देखो 'वघूळौ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—धूळि जु ऊडी छै । रयं खेह माहे । सूरज किसो देखिजै छै । जैसे वढूळिया (वघूलिया) माहे पात दीसै । —वेलि टी

वड्ढ—१ देखो 'ग्रढ' (रू. भे.)

उ०—सग्राम खडग्ग वाहृत सनड्ढ । वपै पळ तडळ ऊखळ वड्ढ ।
—गु रू व.

२ देखो 'वढ' (रू. भे.)

३ देखो 'वढौ' (मह, रू भे.)

वड्ढणौ, वड्ढवौ—१ देखो 'वढणौ, वढवौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रारण कियौ उछाह, वीरातन वड्ढियौ । मारू लोहमराट, चमू सफ चड्ढियौ । —किसोरदान वारहठ

२ देखो 'वधणौ, वधवौ' (रू. भे.)

वड्ढियोडौ—१ देखो 'वढियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वधियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वड्ढियोडी)

वढौ—स पु—१ रुपये पैसे के ग्रभाव में ऋणमुक्त होने के लिए दिया जाने वाला सामान, पशु ग्रादि ।

२ वधन के कारण शरीर मे रस्सी का होने वाला निशान ।

३ देखो 'वढ' (मह, रू भे)

४ देखो 'वढ' (मह, रू भे)

वण—सर्व.—१ उस, उन ।

उ०—१ ग्राप वण ठोड कर जोडि कीधी ग्ररज । दीकपुर पधारौ इद्र वाई । —मे. म.

उ०—२ खेल भुजा बळ खेलणौ, ग्राहव मन झमेल । वरदायक दीठा वणै, वण फुळ री वाघेल । —पा. प्र.

२ देखो 'विना' (रू भे)

उ०—वण दीपक मंदिर किसौ, वण पूता परिवार। कसी महेली कत वण. ग्रत वण ग्रळप ग्रहार । —ढो मा.

३ देखो 'वणौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०-१ चदण नीरू वण चरै, वण नीरू सण खाय । ए हर ढीलौ करहलौ, जित वरजू तित जाय । —जलाल वूवना री वात

उ०—२ खेत कवळा । वाजरी मोट मूग वण घणौ । —नैणसी

३ देखो 'ग्रण' (रू भे.)

४ देखो 'वन' (रू. भे)

उ०—जिण दाहे वण हर धरइ, नदी खळक्कइ नीर । तिण दिन ठाकुर किम चलइ, घण किम वाधइ धीर । —ढो मा.

रू भे.—वण,विण, वण, विण ।

ग्रल्पा,—वणि, वणौ, वणी ।

वणक—देखो 'वणिक' (रू भे.)

उ०—कै पूजै स्रीकत नूं, कै पूजै ग्ररिहत । 'वांका' मत विस्वास कर, ए सह वणक ग्रसत । —बा दा.

वणकर—देखो 'बुनकर' (रू भे)

उ०—सोइ नइ मराणी मा, कसारा तिहा कोडि । वणकर नइ वालंद परिण, घसता हाथा जोडि । —मा. का. प्र

वणकल—देखो 'वरिणक' (अल्पा, रू भे)

वणगत स स्त्री—१ मेल जोल ।

२ कपड़े बुनने का ढग या प्रकार, बुनाई ।

रू भे—वाणक ।

वणचरि—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—सूयर देखी मेल्हिउ जाणु, अरजुन सिउ कुणु करइ मचाणु । तिणि मिणि मेल्हिउ वणचरि बाणु, ऊडिउ गयणि हुउ अप्रमाणु । —प प च

वणज—१ देखो 'विणज' (रू भे)

२ देखो 'वाणिज्य' (रू भे)

वणजणौ, वणजवौ—देखो 'विणजणौ, विणजवौ' (रू भे)

वणजणहार, हारौ (हारी), वणजणियौ—वि० ।

वणजिग्रोड़ौ, वणजियोड़ौ, वणज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणजीजणौ, वणजीजवौ—कर्म वा० ।

वणजार—१ देखो 'विणजार' (रू भे)

२ देखो 'विणजारौ' (मह, रू भे)

वणजारा—देखो 'विणजारा' (रू भे)

वणजारौ—देखो 'विणजारौ' (रू. भे)

वणजियोड़ौ—देखो 'विणजियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वणजियोड़ी)

वणठण—देखो 'बणठण' (रू भे)

वणठणौ, वणठवौ—देखो 'विणठणौ, विणठवौ' (रू भे)

वणठणहार, हारौ (हारी), वणठणियौ —वि० ।

वणठिग्रोड़ौ, वणठियोड़ौ, वणठयोड़ौ —भू० का० कृ० ।

वणठीजणौ, वणठीजवौ—भाव वा० ।

वणठियोड़ौ—देखो 'विणठियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री वणठियोड़ी)

वणणौ, वणवौ—देखो 'बणणौ, बणवौ' (रू भे) (उ र)

उ०—१ करै तिकारा काटला, कठ नृपत कुवराह । बधनहिया ज्या सिर वर्णं, कीरत जेण कराह । —वा. दा

उ०—२ सगी अमीणी माहिवो, मदन मनोहर गात । महाकाळ मूरत वर्णं, करण गयदा घात । —वा दा

उ०—३ भाण उदय इव विधि वयण, कुण तिण रूपण करेह । त्युंही हुकम 'पातल' तणौ, वणवौ त्युंही वरोह । —जैतदान बारहट

उ०—४ आभा रूप जोम ऊफाणिक । वणियौ अनक दूसरै वाणिक । —सू. प्र.

उ०—५ साजिहानजी रै वेटा ४ हुआ । दारासाह, साहसूजो, औरगजेव, मुरादवगस । सू इणा रै आपस मे वणै नही । —द दा.

उ०—६ औरगसा अजमेर सु, कूच करता वार । वणी अनायत खान सू, काने सुणी पुकार । —रा रू

उ० – ७ अग नयणी अगपति-मुगि, अगमद तिळक निलाट । अगरिपु-कटि मृदर वणी, मारू अइहइ घाट । —ढो मा.

उ०—८ कसूमल केसरिया हरी मजज सपताळ, मोसनिया नारगिया सपेता जांणै तिजारा की वाडी फूली छै । ऊपर उणहीज वणता हथियार बाधजै छै । —रा सा. स

वणणहार, हारौ (हारी), वणणियौ —वि० ।

वणिग्रोड़ौ, वणियोड़ौ, वण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणीजणौ,वणीजवौ—भाव वा० ।

वणता—देखो 'वनिता' (रू. भे)

वणराइ, वणराई वणराज, वणराय,—१ देखो 'वनराज' (रू भे)

उ०—१ निसिहि आविउ वगत हुउ सीत तणउ अत । दक्षिण दिसि तणउ, सीतल वाउ वाइ विहुमइ वणराइ । —रा सा. स.

उ०—२ थळ भूरा वन भाखरा, नही सु चपउ जाइ । गुणै सुगधी मारवी, महकी सहु वणराइ । —ढो. मा

उ०—३ वणराय भार अढार सख्या, विस्नु वाणी एह । जेलु जाण्यु तेतनु, वखाण्यउ, भणइ पदम विसेस । —रूकमणी मगळ

उ०—४ अत तपियै तन अवनि, दियै परजन सरदाई । सुधा पाय ससि करै, जेम वणराय सवाई । —रा रू

उ०—५ विद्या सवि सिद्धिहिं गई, जा पेमइ वणराइ । आहेडी आरोहीउ ता तकु सूअरु धाइ । —प प. च.

वणराव—देखो 'वनराज' (रू भे)

वणरावमुनी—स पु —नारद मुनि ।

वणवास, वणवासु—देखो 'वनवास' (रू. भे.)

उ०—वारह ए वरस वणवासु नाठै होडिवु तेरमई ए । अम्हि किम ए जाणिसु तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए । —प. प च.

वणवीरोत—स पु —राठौड वश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

वणसटी—देखो 'वणस्टी' (रू भे.)

वणसणौ, वणसवौ – देखो 'विणसणौ, विणसवौ' (रू भे.)

उ०—गाडा मे नाव नाव मे गाडो, लेख तणा कुण भेद लदै । 'ओपा' राम तणी गत अवळी, वणसै दखी' र दखण वदै । —ओपो आढौ

वणसणहार, हारौ (हारी), वणसणियौ—वि० ।
वणसिम्रोडो, वणसियोड़ो, वणस्योडौ—भू का. कृ.।
वणसीजणौ, वणसीजवौ—भाव वा० ।

वणसियोडौ—देखो 'विणसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वणसियोडी)

वणस्टी-स. पु [स वणयष्टि] कपास के पौधे का डठल ।
रू. भे.—वणसटी, बणस्टी, बनसटी, वणसटी।

वणस्सइ—देखो 'वनस्पति'
उ०—सात लाख जीव प्रथवी माहि, साते श्रप साते तेउ माहि । वाउकाई जीव साते विचारि, दस लाख वणस्सइ मझारि ।
—वस्तिग

वणाक—१ देखो 'वणाक' (रू भे.)
२ देखो 'विनायक' (रू भे.)

वणाकियौ—देखो 'वणाक' (अल्पा., रू भे)

वणाडणौ, वणाडबौ—देखो 'बणाणौ, बणावौ' (रू. भे)

वणाडियोडौ—देखो 'वणाणियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री वणाडियोडी)

वणाणौ, वणावौ—देखो 'बणाणौ, बणावौ' (रू भे)
वणाणणहार, हारौ (हारी), वणाणणियौ—वि० ।
वणायोडौ—भू० का० कृ० ।
वणाईजणौ, वणाईजवौ—कर्म वा० ।

वणायतौ-वि —१ प्रभाव पूर्ण व्यक्तित्व वाला ।
उ०—तरै सहाणी लायक ठावो वणायतौ डील देखि उठि मिळियौ ।
—जगदेव पवार री वात
२ सुन्दर, तेजस्वी ।

वणायोडौ—देखो 'वणायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री वणायोडी)

वणारसी—१ देखो 'वनारसी' (रू भे)
२ देखो 'वनारस' (रू भे)
उ०—वरहार मथुरा अवच्या वणारसी चदेरी वल्लिवाल महवर महोव हरियाणउ भयाणउ ।
—व स.

वणारिस-स पु [स वाचनाचार्य] वाचनाचार्य (उ र)

वणाव—देखो 'वणाव' (रू भे)
उ०—१ आद कठ चव अक्खिरा, अत दोय ठहराव । यौ सुवध घट अखिया, बिगडै कठ वणाव ।
—र ज प्र
उ०—२ मन हरखै तन उच्छव मोटै, कियौ वणाव 'अभै' नवकोटै । सुरग वसन सुदर तन सोहै, वेखि रूप रति भूप विमोहै ।
—रा रू.
उ०—३ जुद्ध रा भागळ मरियोडा घरे आया सो पति मरिया पछै विधवा रै काई वणाव ।
—वी स. टी

वणावटी—देखो 'वनावटी' (रू. भे)
उ०—कोई वीर पुरुष की स्त्री वणावटी सूरवीरा नै कहै है वणावटी रावता सीह मत वाजो थारै माहै सीह वाजो जैडी सकती नहीं ।
—वी म टी

वणावणौ-वि —१ जो बनाने योग्य हो, बनाने वाला ।
२ जो बनाने का माध्यम हो, जिससे कुछ बनाया जाय ।
उ० —घाव काळजै घला निजरं, मिनखा घर वणावणो । पर कारजा देव सधेडो, अह निस आडो आवणो ।
—दसदेव

वणावणौ, वणायबौ—देखो 'बणाणौ, बणावौ' (रू भे)
उ०—१ वेह समरथ वणावियौ, बाघ डाच जम बरथ । जिण माझल लग जाडिया, माय जाय गज मरथ ।
—बा. दा.
उ०—२ ग्यान ब्रह्म 'जसराज' गुण, पुन उग्र तप करि पाविया । सार 'जसवत' आदि स्मृतिवर, विविध ग्रथ वणाविया ।
—सू प्र.
वणावणहार, हारौ (हारी), वणावणियौ—वि० ।
वणाविम्रोडौ, वणावियोडौ, वणाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
वणावीजणौ, वणावीजवौ—कर्म वा० ।

वणावि—देखो 'वणाव' (रू भे)
उ०—गयण दास खवास भणै, अवसर मन भाणौ । घर वाल्हो आप रो तिकै पट घूघट ताणौ । उण वणावि आमासि प्रभू दरसाव न पासै । सुख छूटो सभारि दीह कट्टौ ते सासे ।
—रा. रू

वणावियोडौ—देखो 'वणायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. वणावियोडी)

वणास—१ देखो 'विनास' (रू भे)
उ०—१ 'पाल' तणे ग्रेह पागडो, आखी म्है अरदास । अब सूरजमळ आवियौ, वधै न वैर वणास।
—पा प्र
उ०—२ वणाय खाग चाढि वाढ, ओपवै उजास रा । वणत वीच नीर वाधि, रूप मे वणास रा ।
—सू प्र
२ देखो 'बनास' (रू. भे.)

वणासणौ, वणासबौ—देखो 'विनासणौ, विनासबौ' (रू भे.)
उ०—सु आनै रे देस माहै काळ पडै, तद थोरीए एक जिनावर वणासियौ ।
—नैणसी
वणासणहार, हारौ (हारी), वणासिणियौ—वि० ।
वणासिम्रोडौ, वणासियोडौ, वणास्योडौ—भू० का० कृ० ।
वणासीजणौ, वणासीजवौ—कर्म वा० ।

वणासियोडो—देखो 'विनासियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वणासियोडी)

वणिक-स. पु [स वणिक] (स्त्री वणिग्राणी, वणिगोणी) १ व्यापार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने वाला, बनिया, व्यापारी।
उ०—करै वणिक मुळ सम्बळ कर, हित मांहे चित हाण। वणिक दखो दे बिरचियो, डर उपरज मत आण। —वा दा
२ व्यापारी समुदाय।
उ०—महेसदत्त नामैं धनवंत, छहू वणिक मांहै सोभंत। —वि कु
३ वैश्य।
उ०—वणिआंणी लखमी नहीं, रूहरी सूपांणी। सोनारी जासी परी, (म्हे) भावज सूमांणी। —अज्ञात
रू. भे —वणक, वणिग, वाणक, वाणिक, वणक, वाणक, वाणजू।
अल्पा —वणियो, बनियो, वाणयो, वाणियो, वाण्यो, वणियो, वाणियो, वाण्यो।

वणिकपण—स पु. [स वणिक+त्व] १ बनिया या व्यापारी होने का भाव।
२ बनिये का स्वभाव।

वणिग्यो—स. पु.—घृत तोलने के परोते के ऊपर का डंडा जिसमें सतुला रहता है।
रू भे —वणीग्यो।

वणिज—देखो 'वाणिज्य' (रू भे) (उ र)
उ०—गज तुरंग नर पालखी, पाच गया प्रत्येक। पोठा जेहने पाच सै, करै वणिज सुविवेक। —वि कु

वणिजारो—देखो 'विणजारो' (रू भे)
उ०—जरासिंध नउ आविउ दूत, कालकुमार जई लगाइ सूत। वणिजारा नी वात सांभली, जरासिंधु भावउ सुभट भली। —प प च.

वणिज्ज—देखो 'वाणिज्य' (रू भे)
उ०—करै वणिज्ज एक हट्ट, रूप सक्कनत्त ए। सागा चौतार सुक्कमल्ल, रेसमी वगत्त ए। —सु. रू व

वणियांणी—स स्त्री १ एक बरसाती कीडा।
२ एक पौधा विशेष।
३ वणिक जाति की स्त्री, वणिक की स्त्री।
रू भे —वणयाणी, वणियाणी, बनियाणी, वाणण वाणनी, विणियाणी, विराणी, वांणण, वाणणी, विराणी।

वणियो—देखो 'वणिक' (रू भे)
उ०—जग अपजस देखै नही, देखै स्वारथ दाय। जिम तिम कर वणियो रहै, वणियो तेण कहाय। —वा दा

वणी—स स्त्री. [सं. वनज प्रा वउणी] १ कपास का पौधा।
१ कपास का डोडा।
३ करधा।
४ देखो 'वन' (अल्पा, रू भे) (उ. र)
५ देखो 'वनी' (रू भे)
६ देखो 'वण' (अल्पा, रू भे)
७ देखो 'वह्नि' (रू. भे)
रू भे.—वणि वणी।
अल्पा,—वण, वण।

वणीग्यो—देखो 'वणिग्यो' (रू भे)

वणीठणी—वि स्त्री. [अनु] १ जो बन-ठन कर तैयार हो, सुसज्जित, तैयार।
२ किसी निर्णायक स्थिति में आई हुई, व्यवस्थित।
ज्यू—वणीठणी वात बिगडगी।

वणीमग—स पु [स वनीपक, वनीयक,] १ भिक्षुक, भिखारी (उ र)
२ याचक।

वणीमगट्ठो—स पु —एक प्रकार का दोष जो दानशाला का भोजन ग्रहण करने में लगता है। (जैन)

वणीमगदोस—स पु —भिखारी जैसी दीनता दिखलाने पर लगने वाला दोष। (जैन)

वणीयण—वि —१ आतंक फैलाने वाला, आतंकित करने वाला।
उ० —'तेजो' नेजा ऊपरा, ओरै तेज तुरग। कहर वणीयण 'चदको' मुहर अणी रण जग। —रा. रू.
२ बनाने वाला।

वणेच—स पु —आभूषण। (अ मा.)

वणोघडो—देखो 'वणोघडो' (रू भे)

वणोडो—देखो 'वणोडो' (रू भे)

वणोद—देखो 'विनोद' (रू. भे)

वण्यो—वि —१ अचल, अटल, शाश्वत।
२ देखो 'वणियोडो' (रू भे)

वत—वि [स. वत्] १ किसी वस्तु की सम्पन्नता प्रगट करने के लिये संज्ञा शब्दों के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय।
२ समान, तुल्य।
उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य। आरण्य-रुदन वत भी अयोग्य। —ऊ. का.
अव्य —१ कष्ट।

२ दया ।
३ विस्मय ।
४ सुखी ।
५ आमन्त्रण ।
६ देखो 'वित' (रू भे)

उ०—सत रा हरचद सुमत रा सागर, चित रा विलंद सुदत रा चाव । धत रा प्रवण प्रभत रा वाधण, नत रा तार सुक्रत रा नाव । —र. ज प्र

७ देखो 'वात' (रू भे)

उ०—वर्द रिख स्र ग लोमंजर वत । —राम रासो

अल्पा —वतौ ।

वतक—देखो 'वतक' (रू भे)

उ०—आवि विदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह मतवाळा री वतक ज्यू, पिय नइ परहरियाह । —ढो मा

वतकलौ—देखो 'वतल' (अल्पा, रू भे)

वतका, वतडी—देखो 'वात' (अल्पा, रू भे)

उ०—वतका जग जाहर हुई, साम्रत आसुर माय । तनुजा सांम दैन तजी, मिळी देवगत माय । —पा प्र.

वतकाव, वतगाव—देखो 'वतळाव' (रू. भे)

उ०—आयौ साथ निवाव रै, कोटँ हुदौ राव । मिळिया स्री महाराज सू, साह कियौ वतकाव । —रा रू

वतन—स पु. [फा] १ जन्म-भूमि, स्वदेश ।

उ०—सो एक समय उठै काळ पडियौ सो पेट भरणै री जरूरत सू वतन छोड नीसरयौ । —नी प्र

२ देश, राष्ट्र ।

उ०—ईरांण वतन हिम्मत अथाह । सिरविलद तुज सिरसा सिपाह । —वि स

वतरणौ—देखो 'वरतणौ' (रू भे)

वतळ—देखो 'वतल' (रू भे.)

वतळाणौ, वतळावौ—१ ललकारना ।

उ०—तद रैवारिया कही, साहिवी कुवरसी साखलै री छै । तिण कही म्हारा रजपूत था पल्हू में मारियौ । तेरै वैर मे ले जावा छां अर थाना मारा छा । तद अै मोटियार था सताव खड कोसा पाचा साता आय पोहता । आण वतळाया अै घिरिया सो रीठ वागौ । —कुंवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वतळाणौ, वतळावौ' (रू भे)

उ०—ताहरा पचाइण तीसा असवारां सू वीरमदेजी रै ऊपर आयौ । नै वीरमदेजी नू वतळायौ । —नैणसी

३ देखो 'वताणौ, वतावौ' (रू. भे.)

वतळाणहार, हारौ (हारी), वतळाणियौ—वि० ।

वतळायोडौ—भू० का० कृ० ।

वतळाईजणौ, वतळाईजवौ—कर्म वा० ।

वतळायोडौ—१ ललकारा हुआ ।
२ देखो 'वतळायोडौ' (रू भे.)
३ देखो 'वतायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. वतळायोडी)

वतळाव, वतळावण, वतळावणी—देखो 'वतळावण' (रू भे)

उ०—१ निवाव थटैरी, दूसरी मौवतरा ठिकाणा मूं-ड़णामूं चूक री वतळावण थी । —द. दा.

उ०—२ पछै रामदासजी बरछी फेरनै बुठी री दीधी इका रै छाती में । सो सास जातो रयो । तरै बीजा इका रै ने रामदासजी रै वतलावण हुई । —रा सा सं.

वतळावणौ, वतळाववौ—१ देखो 'वतळाणौ, वतळावौ' (रू भे)

उ०—सुणि एम वचन प्रजळ असुर, इसौ तेज दरसावियौ । वमरीर वाघ वतळावियौ, जाणै नाग रिजावियौ । —सू. प्र

२ देखो 'वताणौ, वतावौ' (रू भे)

वतळावणहार, हारौ (हारी), वतळावणियौ—वि० ।

वतळावियोडौ, वतळावियोडौ—भू० का० कृ० ।

वतळावीजणौ, वतळावीजवौ—कर्म वा० ।

वतळावियोडौ—१ देखो 'वतळायोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'वतायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वतळावियोडी)

वतसर—देखो 'वत्सर' (रू भे)

वतहा—स पु [फा] अरव के मदीना नामक शहर का नाम ।

उ०—मदीना रो नाम वतहा । —बा दा. ख्यात

वतागर—स पु—सलाह मशविरा करने वाला, परामर्श करने वाला, सलाहकार ।

उ०—जरा आपरा उमराव वतागरां नै तेडीया । पूछ्यौ-थानै तो म्हाका राज की काई चिन्ता फिकर नही अर नानौ मामोजी करै सो हुवै छै । —राव रिणमल री वात

वताणौ, वतावौ—देखो 'वताणौ, वतावौ' (रू भे)

उ०—जिम ककण विध भूप जताई । वीर अग्र तिम जती वताई । —सू प्र

वताणहार, हारौ (हारी), वताणियौ—वि० ।

वतायोडौ—भू० का० कृ० ।

वताईजणौ, वताईजवौ—कर्म वा० ।

वतायोडौ—देखो 'वतायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वतायोडी)

वतावणौ, वतावबौ—देखो 'वताणौ, वतावौ' (रू भे)

उ०—तमासो वतावण वीर हुत तंलीया, लार रिजवार गोरां महत लै लीया। भट भुजा ईस दैरू अजव भेलिया, या गजव रीस निण सीस भलवंलीया। —महादान महडू

वतावणहार, हारौ (हारी), वतावणियौ—वि०।

वताडिग्रोडो, वतावियोडो, वताव्योडो—भू० का० कृ०।

वतावीजणौ, वतावीजवौ—कर्म वा०।

वतावियोडो—देखो 'वतायोडो' (रू भे)

(स्त्री वतावियोडी)

वती-वि—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

२ बहुत, अधिक ज्यादा।

३ अक्षय, स्थायी।

स पु.—१ मारवाड़ी मकानों में रोशनी के निमित्त प्रजा से लिया जाने वाला कर।

२ देखो 'वत्ती' (रू. भे)

उ०—नही तार, नहि टैम है, नही वत्ती में तेल। आ वाले मन रे मतै, मारवाड़ री रेल। —अज्ञात

३ देखो 'वात' (रू भे)

उ०—दिसभर जिका सा येम माना वती, दटपति समोवट आप वाळै। —र रू

वतीखर-स पु.—कपट। (अ मा)

वतीत—देखो 'व्यतीत' (रू भे)

उ०—आया वगिया आपणी, ग्रीखम भई वतीत। १७३६ गुण चाळो लागो वरम, चाळो सम्म मजीत। —रा रू

वतीतणौ, वतीतबौ—देखो 'व्यतीतणौ, व्यतीतबौ' (रू भे)

उ०—सो घाग नट उगिया, किता वतीता काळ। ओ जायल ऊंमा करै, गोगा आफू गाळ। —पा प्र.

वतीतणहार, हारौ (हारी), वतीतणियौ—वि०।

वतीतिग्रोडो, वतीतियोडो, वतीत्योडो—भू० का० कृ०।

वतीतीजणौ, वतीतीजबौ—भाव वा०।

वतीतियोडो—देखो 'व्यतीतियोडो' (रू भे)

(स्त्री वतीतियोडी)

वतूळियौ—देखो वगूळो' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ जिसै एक वतूळियौ आयौ सू रेत सू कपडा भरीज गया। —द दा

उ०—२ रेढा नै मार्ईता री वात मन परवारी मानणी ई पडी। डुमक्या भरता वै येह सूं वारै निकळिया अर निकळतां ई वतूळिया रै वेग जैमाणै री सीव कांनी दडवडा सोकट गनाई। —फुलवाडी

वतूळौ—देखो 'वगूळौ' (रू भे)

उ०—एक भरघो ए वतूळौ आवौ विनायक, विणजारा के वैल ज्यूं। —लो गी

वतेरौ—देखो 'वत्तेरो' (रू भे)

उ०—मारी मीठै सूं सरस है, भळै वतेरा पानडा। देस विदेस दुवाया वणै, मुगी ढाकधर रानडा। —दसदेव

वतं-स पु—प्रकार। (वाकीदास)

वतोकड-वि [स्त्री वतोकडी] १ अत्यधिक बोलने वाला, वाचाल।

२ अधिक वात वनाने या कहने वाला।

रू भे—वतोकट।

वतौ—१ देखो 'वत' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'वत्तौ' (रू भे)

वत्त—देखो 'वात' (रू भे)

उ०—१ गुणी कमधा ऊपरा, उत मेवाडा वत्त। सांपै साहम भलियौ, वातै हात परत्त। —रा रू

उ०—२ इणि परि ऊमा देवडी, जाणी माहू वत्त। सु प्रभाति गहिवा भणी, पिगळ पामि पहुत्त। —ढो मा

उ०—३ मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल, ढढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळनळइ रत्त रोगाट मपत्त, मम्मळइ सत्त विसथरइ वत्त। —रा ज सी.

उ०—४ गाइ नट नैरावियो, कही विगत्या, वत्त। वाउव को वेम्या जपड, टालि पडते रत्त। —मा का प्र

वत्तडी—देखो वात' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ सूरा पूरा वत्तडी, सूरा कान सुहाय। भागल अवधा राजवी, सुणता ही टळ जाय। —राव रिणमल री वात

उ०—२ नेक धणो चोटै हुआ, अमसर करा अदोस। डेरा डेरा वत्तडी, डेरा डेरा जोस। —रा रू

२ देखो 'वाती' (रू भे)

वत्ती—१ देखो 'वत्ती' (रू. भे)

वत्तीस - देखो 'बत्तीस' (रू भे)

उ०—वत्तीस आखडी री निवाहणहार, वैरिया विभाडणहार। —रा सा स.

वत्तौ-वि० [स्त्री वत्ती] अधिक, वढकर।

उ०—१ साच रै पथ वधण री दुख दुनिया रै सरब सुखा सूं घणौ वत्तौ है। —फुलवाडी

उ०—२ थारै-सूं वत्ती लिखमी और कुण हुमी। —वरसगाठ

रू. भे —वतो, वतो।

वत्थपुन्न–स पु [स. वस्त्र-पुण्य] वस्त्र-दान से होने वाला पुण्य। (जैन)

वत्थिरि–क्रि वि —विस्तार से।

उ०—अजितनाथ वर भवण नदि मडिय गुरु वत्थिरि।
—अभयतिक

वत्थु—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—जिम गगाजल जलइ मझि सुपवित्त भणिज्जइ। जिम सोह गह वत्थु मझि ससहरू वन्निज्जइ। —ऐ जै. का. स

वत्री—देखो 'वात' (अल्पा., रू भे)

उ०—दुगम पिनाक सहल तो दीसै, विगत हमैं सुण वत्री। राईं मैं वसुधा विण खत्री, कीधी वार इकीसै। —र. रू

वत्रीस—देखो 'वत्तीस' (रू भे)

वत्स–स पु [स] १ वेटा, पुत्र।

२ गाय का बछडा।

३ किसी जानवर का बच्चा।

४ छोटा बच्चा, शिशु, बालक।

५ सतान, औलाद।

६ इन्द्र।

७ कस का एक अनुचर।

८ एक प्रचीन देश जहाँ का राजा उदयन था। इसकी राजधानी कौशाबी थी।

रू भे—वच्छ, वछ, बछक, वाच, वाछ, वच्छ, वच्छि, वछ, वाच, वाच्छि, वाछ।

अल्पा—वच्छडी, वच्छ, बछडो, वछरी, वछवो, वछियो, वछो बाछडियो, वाछड़, वाछडो, वाछरू, वाछियो, वाछो, वचो, वच्छडो, वच्छ, वछडो, वछो वाछडउ, वाछडो, वाछरू, वाछरो, वाछो।

वत्सक–स पु [स वत्सक] १ छोटा वछडा, बच्चा।

२ कुटज का पौधा।

३ एक इक्ष्वाकुवशीय राजा।

४ एक यादव वशीय राजा जो वसुदेव का भाई था।

[स वत्सक] ५ पुष्प कसीस।

६ कुटज।

७ निर्गुण्डी।

८ कस के अनुचर वत्स का नामातर।

रू भे—वछक, वछक।

वत्सनाभ–स पु [स] १ हिमालय की तराई मे कम ठडे भागो मे पैदा होने वाला वछनाभ नामक एक प्रकार का पौधा।

२ उक्त पौधे की जड से निकलने वाला विप विशेष जो मीठा होता है, मीठा विप।

रू भे—वच्छनाग, वच्छनाभ, वछनाग, वछनाभ, वच्छनाग, वच्छनाभ।

३ एक महर्षि। (चरित्र कोश)

वत्सर–स. पु [स. वत्सर] १ द्वादश मास की एक अवधि, वर्ष।

२ विष्णु का एक नाम।

३ एक राजा जो ध्रुव राजा का छोटा पुत्र था।

[स वत्सतर] ४ वह बछडा जो जवान व जोतने योग्य हो गया हो।

रू भे—वच्छ, वच्छर, वतसर, वरसर, वच्छर, वच्छरी, वछर वछरि, वतसर।

वत्सराज–स पु. [स. वत्स.,+राज] १ गाय का बछडा।

२ गौतम बुद्ध का समकालीन कौशाबी का प्रसिद्ध राजा, उदयन।

३ कौशल देश का एक राजा जो द्रौपदी स्वयवर मे उपस्थित था, वत्स।

४ सवत् १५६० के लगभग हुए अजमेर के प्रसिद्ध दानवीर गौडवशीय राजा का नाम।

रू भे—वछराज वछराज।

वत्सळ वत्सल–वि. [स वत्सल] (स्त्री वत्सला) १ जो पुत्र या सतान के प्रति स्नेहालु हो प्रेम से परिपूर्ण हो।

२ जो अपने छोटो के प्रति कृपालु दयालु हो।

स पु [स वत्सल] १ अनुराग, प्रेम।

२ वात्सल्य रस।

रू. भे—वछळ, वछळ, वच्छळ, वच्छल, वछळ, वाछळ।

वत्सलता–स स्त्री—१ स्नेहालु या कृपालु होने की अवस्था, भाव।

२ अनुराग, प्रेम।

३ कृपा, दया, अनुग्रह।

रू भे—वच्छलता।

वत्सासुर–स पु [स] वत्स नामक असुर जो श्रीकृष्ण के हाथो मारा गया।

रू भे—वछासुर, वछासुर, वछासुर, वछासुर।

वथ—देखो 'वाथ' (रू भे)

उ०—रथ छाडि राजन उतरया, रुखमणी साहित वथ। दड दोट वाजई कोट भाजई, वेग वाल्या हथ। —रुकमणी मगळ

वथवो, वथूअउ—देखो 'वथवो' (रू भे) (उ र) (अमरत)

वथूळियो—देखो 'वथूळो' (अल्पा. रू. भे)

वथूळो—देखो 'वथूळो' (रू भे)

वद–स. पु —१ किसी विषय का विशेषत धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का वास्तविक ज्ञान।

२ वृत्त।

३ चारों वेद।

४ किसी मास का अर्धभाग, कृष्ण पक्ष, जिसमे चद्रमा की कलाओ का क्रमश ह्रास होता है और पूर्व दिशा मे अधकार बढता जाता है।

५ एक रोग विशेष। (भाव प्रकाश)

६ देखो 'वद' (रू भे)

रू भे.—वद।

वदक–वि [स वद्] कहने वाला, वक्ता।

वदको–वि —१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढिया।

२ सज्जन, भला।

३ अधिक, बहुत।

रू भे.—वदको।

वदखोर, वदखोरो—देखो 'वदखोर' (रू भे.)

उ०—कर जुध धरा रहपी कत्नाणी। वदखोरी आयी चढ वाढ। —द दा.

वदगळ–स पु.—दिल्ली का एक नामान्तर।

वदणी, वदबी–क्रि स [स वद्] १ कहना।

उ०—१ महा सुगण रूप है सुचित सार आचार मे, सरा कवण जोड़-जै, प्रघट आज ससार मे। वळा मह वदै वसो, सुजन राम माधार है। पुणा जम जिवै पढी, मुज काया स ससार है। —र ज प्र.

उ०—२ सुनण 'नाथ' 'गेतमी' वदै मांडू मग वाहण। 'वगतौ' गिडियी वदै, रचूं 'भ्रमरा' जैही रण। —सू प्र

२ उच्चारण करना, बोलना।

३ वर्णन करना, उल्लेख करना, निरूपण करना।

उ०—मात सहस नव मी सकळ, ऊपरि रूप अढार। जजसन लघु गुर जाणिजै, वदि गुण रतन विचार। —ल. पिं.

४ बात करना।

५ सूचना देना, बताना।

६ पुकारना, चिल्लाना।

७ महत्व देना, बडा मानना, मान देना, इज्जत करना।

उ०—१ मु रावळ घड़सी जगमालनू कहै छै-ऐ हूंईया पोहड द्रेग वसै छै, तिकै ऐ म्हानू लिगार मात्र वदै न छै। ए जठा ताई जैसल-री धरती मे छै तितरै म्हानू धरती री आस काई नही। —नैणसी

८ किसी प्रकार की मान्यता देना, मानना, किसी श्रेणी मे गणना करना।

उ०—१ सो ए पाच दड हुवै तिण नै राजा वदा। —पच दडी री वारता

उ०—२ वदियो स्वांन वनचरा, नहि लाज निहारै। मुख भख ग्रामज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै। —सू. प्र

९ मानना, स्वीकार करना।

१०—आज्ञा देना, निर्देश देना।

उ०—१ सापन्ना सूझ हुवै सुख सात, वदौ जो हि देव करै सो ही बात। माप्रत सामी मो मज्झ सरीर, गोविंद गदाधर ग्यान गहीर। —ह र.

उ०—२ पांवा रहण वदी पतसाहा सिर दावा धावा सहण। दारण रूप वाजिया दारण, वारण नै वारण वहण। —लिखमीदास गाडण

११ बाजी लगाना, शर्त वदना, होड लगाना।

उ०—समद फाळ मृदै हणू, जहर जारै सकर, सेस ही भुजा घर मार साहै। 'करण' रै 'पदम' जिम साह रै फटैहै, वदू जो कोई तरवार वाहै। —द दा

१२ प्रतिस्पर्धा करना।

उ०—वदि रुद्र साग स्रोहया वाहै। सूर वभि रथ हाथि सराहै। —सू. प्र.

१३ बढ बढ कर बातें करना, डींग हाकना।

१४ बहस करना, जिद्द करना।

१५ परस्पर निश्चय करना, नियत, मुकर्रर या तय करना।

१६ परिश्रम करना, उद्योग करना।

१७ देखो 'वधणी, वधबी' (रू भे.)

वदणहार, हारौ (हारी), वदणियो—वि०।

वदिओडो, वदियोडो, वद्योडो—भू० का० कृ०।

वदीजणी, वदीजबौ—कर्म वा०।

वदणौ, वदवो, वधणौ, वधवौ—रू० भे०।

वदन–स पु. [स] १ मुख, मुह। (अ मा.)

२ चेहरा, शक्ल, सूरत।

उ०—१ अति रूप क्रांति उजास, प्रफुल्ल वदन प्रकास। आवियौ पह उण वार, मिंदरा राज मझार। —सू प्र.

उ०—२ पूछ्या विना पयपै पापी, घट विच कहै लात सिर थापी। वदन मत दिखाळै वस द्रोही वळै। —र रू.

उ०—३ विळखीजै तरुणी वदन, कथ न आयो तीज। मावडिया आया मुहम, वदन जाय विळखीज। —वा. दा.

३ रूप, आभा।

४ अग्र भाग, अगला हिस्सा।

५ प्रथम सध्या।

६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

७ देखो 'वदन' (रू. भे)

रू भे—वदन, वदन्न, वदनि, वदन्न, वदीन ।

वदनारविंद-स पु [सं वदन+अरविंद] कमल के समान मुख, मुखारविंद ।

वि—उक्त प्रकार के मुख वाला ।

वदनि—देखो 'वदन' (रू भे)

उ०—वदन चद महारस लेइ पडिउ अमीय गह तणी रगत जडिउ । पवन चदनगध हुरायतउ, वदनि वासि वसद दिसि वासतउ । —सालिसूरि

वदनीत—देखो 'वदनीयत' (रू भे)

उ०—वदनीत पाप चल धरम बाध, सव तजै धरम कत दुष्ट साध । मिट पूज देव मरजाद मूक, चळ विचाळ अमर सत थांन चूक । —मि रू.

वदन्न—देखो 'वदन' (रू भे.)

उ०—सुण निवाव ममसत्त, जाव छत्रपत्ति जवन्ना । सूर मीर सोचिया, नूर खचिया वदन्ना । —रा रू.

वदपख-स पु. [स वदि-पक्ष] किसी मास का कृष्ण पक्ष ।

उ०—मधि हिमरित वर अघण मास । तिथि चतुरदस वदपख सकाज । —सू प्र.

वदरग—देखो 'बदरग' (रू भे.)

वदरगी—देखो 'बदरगी' (रू. भे)

वदरा-स स्त्री—धन, दौलत, वित्त ।

रू भे—बदरा ।

वदरीनाथ—देखो 'बदरीनाथ' (रू भे)

वदळ—देखो 'बादळ' (रू भे)

उ०—भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै । खीण वदळ मामळ रवि भळकै । —सू. प्र

वदळणौ, वदळबौ—देखो 'बदळणौ, बदळबौ' (रू भे)

वदलाडणौ, वदलाडबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू भे)

वदळाणौ, वदळाबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे)

वदळावणौ, वदळावबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळायत—देखो 'बदळायत' (रू भे)

उ०—वदळायत नायक अग वर्जै, भय आणय पायक नोज भजै । मोह चाल मालाळ विचाळ लियौ, किरणालर भाळ कुडाळ कियौ । —पा प्र

वदळी—१ देखो 'बादळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—मेरे पिया कै देस सघन वदळी, मेरे पिया मै । —मी. गी.

२ देखो 'वदळौ' (रू भे)

वदळे, वदळै—देखो 'बदळै' (रू भे)

उ०—रात गमाई सोयकर, दिवस गमायो खाय । हीरा जनम अमोल था, कौडी वदळै जाय । —अज्ञात

वदळौ—देखो 'बदळौ' (रू भे)

वदान्य-वि. [स. वदान्य] १ जो मृदु भाषी हो, जिसकी बोली मधुर हो ।

२ जो बहुत उदार चित्त हो, दयालु ।

३ बात चीत करने पर संतुष्टि देने वाला ।

रू भे—वदान्य ।

वदान्यता-स. स्त्री [स वदान्यता] १ वदान्य होने की अवस्था या भाव ।

२ उदारता, कृपा ।

वदांम—देखो 'बादांम' (रू भे)

वदांमण—१ देखो 'वदावण' (रू भे)

२ देखो 'वदावन' (रू भे.)

वदांमी—देखो 'बादामी' (रू भे)

वदांयण—१ देखो 'वदावण' (रू. भे)

२ देखो 'वदावन' (रू भे)

वदाईदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

वदाई—देखो 'वधाई' (रू भे)

वदाऊ, वदाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू भे.)

वदाऊडो—देखो 'वधाऊ' (अल्पा, रू भे)

वदाडणौ, वदाडबौ—देखो 'वदाणौ, वदाबौ' (रू भे)

वदाडणहार, हारौ (हारी), वदाडणियौ—वि० ।

वदाडियोडौ, वदाडियोडौ, वदाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

वदाडीजणौ, वदाडीजबौ—कर्म वा० ।

वदाडियोडौ—देखो 'वदायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वदाडियोडी)

वदाणौ, वदाबौ-क्रि स ['वदणौ' क्रिया का प्रे रू] १ कहलाना ।

२ उच्चारण कराना, बोलाना ।

३ वर्णन कराना, उल्लेख कराना, निरूपण कराना ।

४ बात कराना ।

५ सूचना दिराना, बतलाना ।

६ आवाज दिराना, चिल्लाहट कराना ।

७ महत्व, मान व इज्जत दिराना, बडा मनाना ।

८ किसी को किसी प्रकार की मान्यत दिराना, मनवाना, किसी श्रेणी मे गणना करवाना
९ स्वीकार कराना।
१० आज्ञा या निर्देश दिलवाना।
११ बाजी लगवाना, शर्त लगवाना, होड लगवाना।
१२ प्रतिस्पर्धा कराना।
१३ बढ-बढ कर बातें करवाना
१४ निश्चय, नियत या तय कराना।
१५ बहस या जिद्द कराना।
१६ परिश्रम कराना, उद्योग कराना।
१७ देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे)

वदाणहार, हारौ (हारी), वदाणियौ—वि०।
बदायोडौ—भू० का० कृ०।
वदाईजणौ, बदाईजबौ—कर्म वा०।
बवाणौ, बदाबौ, बदावणौ, वदाववौ, विधाणौ, बिधावौ, वदाड़णौ, वदाडबौ, वदावणौ, वदाववौ—रू भे.।

वदायोडौ—भू का कृ—१ कहलाया हुआ २ उच्चारण कराया हुआ, बोलाया हुआ. ३ वर्णन कराया हुआ, उल्लेख कराया हुआ, निरूपण कराया हुआ. ४ बात कराया हुआ ५ सूचना दिराया हुआ, बतलाया हुआ ६ आवाज दिराया हुआ, चिल्लाहट कराया हुआ ७ महत्व, मान व इज्जत दिराया हुआ, बडा मनवाया हुआ ८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दिराया हुआ, गणना कराया हुआ ९ स्वीकार कराया हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिलवाया हुआ ११ प्रतिस्पर्धा कराया हुआ १२ बढ-बढ कर बातें करवाया हुवा १३ बाजी, शर्त या होड लगवाया हुवा १४ निश्चय, नियत या तय कराया हुवा. १५ बहस या जिद्द कराया हुआ. १६ परिश्रम कराया हुआ, उद्योग कराया हुआ।
१७ देखो 'वधायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. वदायोडी)
रू. भे—'विधायोडौ'।

वदारौ—देखो 'बधारौ' (रू भे.)

वदावणौ, वदाववौ—१ देखो 'वदाणौ, वदावौ' (रू भे)
२ देखो 'वधाणौ, वधावौ' (रू भे)
उ०—ल्याई मालण सेहरौ हे सहेली, पनाजी रै मौस गुलाब री। रसीलाराज उण राजकवर नै ग्रौर वदावण बेहुरौ।
—रसीलै राज रा गीत

वदावणहार, हारौ (हारी), वदावणियौ—वि०।
वदाविग्रोडौ, वदावियोडौ, वदाव्योडौ—भू० का० कृ०।
वदावीजणौ, वदावीजवौ—कर्म वा०।

वदावन—सं स्त्री—१ स्वागत, सत्कार।
२ अगवाणी।
रू भे.—वदामण, वदावण, वदावन, वदामण, वदावन, वद्धामणी।

वदावियोडौ—१ देखो 'वदायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'वधायोडौ (रू. भे)
(स्त्री वदावियोडी)

वदि—अव्य [स. वदि] किसी मास के कृष्ण पक्ष की।
उ०—१ दीसै न न्याय भोगवि दसा, पडछौ सुदि वदि पख री देखैं नै साच दाखैं दुनी, खाडौ चाडौ ए-खरी। —ध. व ग्रं.
उ०—२ सतरह, सतसठ्ठ, वरीसइ, मिगसर वदि दुतिया दीसइ हो। —ध. व. ग्र
रू. भे.—वदि, वदी, वदी।

वदियोडौ—भू का कृ—१ कहा हुआ। २ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ। ३ वर्णन किया हुआ, उल्लेख किया हुआ, निरूपण किया हुआ ४ बात किया हुआ. ५ सूचना दिया हुआ, बताया हुआ ६ पुकारा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिया हुआ, बडा माना हुआ। ८ किसी प्रकार की मान्यता दिया दिया हुआ, किसी श्रेणी मे गणना किया हुआ. ९ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिया हुआ ११ बाजी, शर्त या होड लगाया हुआ. १२ प्रतिस्पर्धा किया हुआ. १३ बढ बढ कर बातें किया हुआ, डींग हाका हुआ. १४ बहस या जिद्द किया हुआ १५ निश्चय, नियत या तय किया हुआ १६ परिश्रम किया हुआ, उपयोग किया हुआ
१७ देखो 'वधियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. वदियोडी)

वदी—१ देखो 'वदि' (रू भे)
२ देखो 'वदी' (रू. भे)
उ०—सासण श्रै उथपिया साभळ, विरड कुमत्री करै वदी। जादव कानौ दियै नह जग, जादव थाभौ दियै जदी —कविराजा वाकीदास

वदीत, वदीतउ—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)
उ०—येहडी जाग आहाडा हुऐ, तुऊ घर वीया न होय। दत देता ग्रीखम दरसाणी, सीत वदीत हुई सगळोय।
—जोगिदास कवारीयौ
२ देखो 'विदित' (रू भे)
उ०—१ राउल स्री भीम कहइ जी, जादव वसि वदीत रे। पधारौ जेसलमेरु नइजी, प्रीति घरी निज चित्त रे। —ऐ जै का स.
उ०—२ वसुधा वीर वदीतउ जीतउ जिणि जरासघु। तहि हरि अखिल टालए पालए राज सुवधु। —जयसेखर सूरि

वदीतं—१ देखो 'व्यतीत' (रू भे)

२ देखो 'विदित' (रू भे)

वदीतो–वि [स. विदित] (स्त्री वदीती) १ प्रसिद्ध, विख्यात ।

उ०—१ जपियो सिघ जिण विघ जुघ जीता, वधै वस खैरोंद वदीता । असुर हणै ग्रद वणै ग्रयागा, वर सिधकरि खैरोदा वागा ।
—सू प्र

उ०—२ बीजा पुरी सैन वीतो, वजाए जेग्राई वाजा । जीतो जीतो महाराजा वदीतो जगति । —दूदो सुरताणोत वीठू

उ०—३ पूज्या सहु इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै दूरै हो । जिण चोसट योगिनी जीती, वरतइ ए वार वदीती हो । —घ व ग्र

२ देखो 'व्यतीत' (रू भे)

वदूळ—देखो 'बादळ' (रू भे)

उ०—सो कैसे सांमळ वदूळ पर वीजूजळा का सिळाव । ऐसे भयाणक एकलगिड वराह ढाए । —सू. प्र

वदूसणो, वदूसबो—देखो 'विदूसणो, विदूसबो' (रू. भे)

वदूसियोडो—देखो 'विदूसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वदूसियोडी)

वदेस—देखो 'विदेस' (रू भे.)

उ०—बहु घघाळ आव घरि, फासू करइ वदेस । सपत सघळी सपजे, श्रै दिन कदी लहेस । —ढो. मा

वधोतर–वि. [स वृद्धोत्तर] १ बढा हुआ, अधिक ।

२ बढ़ने योग्य ।

३ समास प्राय ।

वदोवद, वदोवदि–स पु. होड, प्रतिस्पर्धा ।

रू. भे —वादोवदी ।

वद्दळ—देखो 'बादळ' (रू. भे)

उ०—गिरि जाणि चरण लहि लखत गोम, वद्दळ इळ दरसै छाडि व्योम । जयाळस वदण चित्र जास, किरि जळद इद्र धानुख-प्रकास ।
—रा. रू

वद्दळी, वद्दल्ली–देखो 'वादळ' (ग्रल्पा , रू भे)

वद्धणो, वद्धबो—देखो 'वधणो, वधबो' (रू भे.)

उ०—लोय लोयण दळं ग्रमिउ वरसतउ वद्धए सुद्ध जिम चीय चदो । —ऐ जै का. स

वद्धमांण—देखो 'वरद्धमान' (रू भे)

वद्धांमणी–स स्त्री —१ देखो 'वधामणी' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०—जीतउ कान्ह वात इम सुणी, नगर लोक घइ वद्धांमणी । मदनभेरि भूगळ भरहरइ, वरण अठारइ जय-जय करइ ।
—का. दे. प्र.

२ देखो 'वदावण' (रू. भे.)

वद्धामणो—देखो 'वधामणो' (रू. भे.)

वद्धाणो, वद्धावो—देखो 'वधाणो, वधावो' (रू भे.)

वद्धापन—देखो 'वृद्धापण' (रू भे.)

वद्धायोडो—देखो 'वधायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धायोडी)

वद्धावणो, वद्धाववो—देखो 'बधाणो, बधावो' (रू. भे)

उ०—वगु विणासी वगु विणासी भीमु आवेइ, वद्धावइ जगु सयलु जीव दानु तइ देव दिद्धऊ केवलिवयणु जु सच्चु किउ त्रिहु भुयणि जसवाउ लिद्धउ । —पं. प. च

वद्धावियोडो—देखो 'बधायोडो' (रू भे)

(स्त्री वद्धावियोडी)

वद्धियोडो—देखो 'वधियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वद्धियोडी)

वध—स. पु [स] १ जान-बूझ कर किसी को मारने की क्रिया या भाव, हत्या ।

२ विनाश, विध्वंस ।

३ विरोध, वैर, वैमनस्य ।

उ०—राणो कुभो पाट छै । माहोमाहि भाइया ग्रासि वध लागो ।
—नैणसी

४ ग्राघात, प्रहार ।

५ युद्ध ।

रू. भे —बध, ग्रघ ।

वधक–स पु —१ मछली पकडने का काटा । (ग्र. मा.)

२ देखो 'वधिक' (रू. भे)

उ०—हाणि कह्या कोई न पतीजे, निहचै ग्रग वधक कू धीजै । जमनिति सदा वधक न हिरणा, चोरासी में दौडघाई फिरणा ।
—ह पु वा.

रू भे.—बधक ।

वधण–सं. स्त्री. [स वृद्धि] वढने की क्रिया या भाव, वृद्धि, वढोतरी ।

उ०—वधण सरस वरसा वरस, दरस कमध कुळदाप । ग्ररस लगी छक ऊफणै, पौरस तूझ 'प्रताप' । —जैतदान बारहठ

वधणो, वधवो—देखो 'वधणो, वधवो' (रू भे)

उ०—१ ग्राभा रूप जोम ऊफाणिक, वणियो ग्रनग दूसरै वाणिक ।

वीर तदिन कीरति वाधारी, भरथ साख वधियौ कुळ भारी ।
—सू. प्र

उ०—२ पाए जोड रिणछोड पूजजै, प्रथी चौगणौ वधै प्रमाण ।
—ह ना. मा

वधणहार, हारौ (हारी), वधणियौ—वि० ।

वधिग्रोडौ, वधियोडौ, वध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधीजणौ, वधीजवौ—कर्म वा० ।

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू भे)

वधतेरौ—देखो 'वधतौ'

वधतौ—देखो 'वधतौ' (रू भे)

उ०—१ तद पूलै नू कयौ 'चौधरी इसी दातारगी कर सू पाहू गोदारै सू नाम वधतौ हुवै । —द दा.

उ०—२ 'पातळ' दत वीरत पणौ, समदर तणौ सभाव । वधती सूं वधती वणै, चढती लहर चढाव । —जैतदान वारहठ

(स्त्री. वधती)

वधरणौ, वधरवौ–क्रि अ. [स वर्धनम्] १ आगे बढना, अग्रसर होना ।

उ०—जेसळ आप वडइ असवार, कोस वधरइ वारा वार । जोयण एक घडी मइ जाइ, हारइ नही न थाका थाइ । —ढो मा

२ वृद्धि को प्राप्त होना, वृद्धि होना ।

३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु का त्रुटित होना, टूटना ।

४ काटा जाना ।

५ किसी देवता को चढाने के लिये नारियल आदि को फोडा जाना, तोडा जाना ।

६ विस्तार होना, विस्तृत होना, लम्वा होना ।

७ बोला जाना ।

वधरणहार, हारौ (हारी), वधरणियौ—वि० ।

वधरिग्रोडौ, वधरियोडौ, वधरयोडौ—भू० का० कृ०

वधरीणौ, वधरीजवौ—भाव वा० ।

वधरणौ, वधरवौ—रू० भे०

वधराणौ, वधरावौ–क्रि स [वधरणौ क्रि. का प्रे रू] १ आगे बढाना, अग्रसर कराना

२ वृद्धि कराना/करना ।

३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडाना ।

४ कटवाना ।

५ देवताओ को नारियल आदि फोडकर चढवाना ।

६ विस्तार कराना, लवा कराना ।

७ वोलाना, बुलवाना ।

वधराणहार, हारौ (हारी), वधराणियौ—वि० ।

वधरायोडौ—भू० का० कृ० ।

वधराईजणौ, वधराईजवौ—कर्म वा० ।

वधराणौ, वधरावौ, वधरावणौ, वधराववौ, वधरावणौ, वधराववौ —रू भे

वधरायोडौ–भू का. कृ [स्त्री वधरायोडी] १ आगे वढाया हुआ, अग्रसर किया हुआ. २ वृद्धि कराया हुआ/किया हुआ. ३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडाया हुआ. ४ कटवाया हुआ. ५ देवताओ को नारियल आदि फोड कर चढवाया हुआ. ६ विस्तार कराया हुआ, लवा कराया हुआ. ७ वोलाया हुआ, बुलवाया हुआ ।

वधरावणौ, वधराववौ—देखो 'वधराणौ, वधरावौ' (रू भे.)

वधरावणहार, हारौ (हारी), वधरावणियौ—वि० ।

वधराविग्रोडौ, वधरावियोडौ, वधराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वधरावीजणौ, वधरावीजवौ—कर्म वा० ।

वधरावियोडौ—देखो 'वधरायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वधरावियोडी)

वधरियोडौ–भू का कृ—१ आगे बढा हुआ, अग्रसर हुवा हुआ. २ वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ ३ त्रुटित हुवा हुआ, टूटा हुआ (चूडी आदि) ४ कटा हुआ ५ फोडा हुआ, फूटा हुआ, तोडा हुआ. (नारियल आदि) ६ विस्तारित, विस्तृत ।

(स्त्री वधरियोडी)

वधरोम, वधरोमौ–स पु—सुअर, वराह । (अ मा, ह ना मा)

रू भे—वधरोम ।

वधामण, वधामणउ—देखो 'वधामणौ' (रू भे)

उ०—जाय हुइ वेटउ, तउ आवइ लोक भेटउ, कीजइ वधामणउ, सकल लोक आणदणउ । —व स

वधामणी–स स्त्री—देखो वधामणौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—मागइ मात वधामणी, धव धव धाया लोक । ताहरु माधव आवीउ, आज समाविन सोक । —मा. का प्र

उ०—२ आवी नै वन पालक दीध वधामणी रै, गुरु आगमन प्रघोस । वादिवा चाल्यो निज परवार सु रै, हो न्रप तेहनै सतोस । —वि कु.

उ०—३ राजडीउ भाथाइत जेठ, नइ केल्हए रइवारी वेउ । राउल भणी गया परि सुणी, वेगइ मागइ वधामणी । —का. दे प्र.

वधामणौ–स पु [स वर्द्धमानकम्] १ स्वागत, अगवानी ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजांन सिलामति राजान राजावत ग्रैराव रै रिणखेत हाथी आयो छै । रिण जीत नगारा घुवै छै ।

फतै रा सैदाना वागा छै। जस जैत रा डका वाजिम्रा छै। कुसळखेम म्राणद रा वधाइदार दौडिया छै। घरा साम्हा फौजा रा घहूस चालीम्रा छै। म्रावै छै सु किण भात बखाणीजै छै। पातसाह रा डेरा हसम रखत तखलूम्रा हूता सु म्राणि थाणै दाखलि कीम्रा छै। म्रजमेर रा थाणा री जमीत कीजै छै। घरि घरि मगळाचार म्राणद वधामणा कीजै छै। घणा माल निजराति उवारीजै छै।

—रा सा स

२ म्रादर, सत्कार, मान सम्मान।

३ म्रानन्द, उत्साह, खुशी। (उ र)

उ०—१ म्रम्हारइ है, म्राज वधामणा, सहेली है गावउ मगल-च्यार। पहिलउ है मगल माहरइ, सहेली है गावउ म्ररिहत देव। तित्थकर त्रिभुवन तिलो, कर जोडी है। करि सुरनर सेव।

—स कु

उ०—२ निवोजां फतै करै नै गाव धिणलै पधारिया, वधामणा हूवा।

—वीरमदै सोनगरा री वात

४ किसी के स्वागत मे या म्रानन्द या खुशी में गाया जाने वाला गीत।

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नगर, वाजै सुसर वधामणा। वाजम्र सुतान खटत्रीस वगि, सोभै ग्यान सुहामणा।

—रा रू.

५ शुभ समाचार या शुभ सन्देश सुनाने की क्रिया या भाव।

६ उक्त समाचार सुनाने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार।

रू भे.—वदावणो, वधामणो, बधावणो, वद्धामणो, वधामण, वधामणउ, वधावणो।

म्रल्प,—वधामणी।

वधांमणो, वधामवो—देखो 'वधाणो, वधावो' (रू भे)

वधाम्रणो, वधाम्रवो—देखो 'वधाणो, बधावो' (रू भे.) (उ. र)

वधाइ—देखो 'वधाई'।

उ०—वधाइ वधाई जसोदा वधाई।

—नागदमण

वधाइदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—फतैरा सैदाना वागा छै। जस जैत रा डंका वाजिम्रा छै। कुसळखेम म्राणद रा वधाइदार दौडिम्रा छै।

—रा सा. स.

वधाई—देखो 'वधाई' (रू भे)

उ०—सिवो नदी तिरनै साहजादी नू ले नीसरियो। सारै वधाई वाटी। साहजादी सिवै सू वहोत राजी हुई। वहोत वधाई दीवी। घोडो सिरोपाव दियो।

—नैणसी

वधाईदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—विळकुलै वधाईदार वधि, म्राणद उछव म्रथाह सू। म्रागम्म खवर 'म्रभसाह' री, जाय कहै 'जैसाह' सू।

—सू प्र

वधाउ—देखो 'वधाऊ' (रू भे.)

उ०—महि वीता दस मास, जाम नृप कुंवर जनम्मे। वधाउवा जिणवार 'म्रजै' वहु दरव उधमै।

—सू प्र.

वधाउडो, वधाऊडो—देखो 'वधाऊ' (म्रल्पा, रू भे.)

वधाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू भे)

उ०—ए उछाह करता म्राया, म्रागै जनक वधाऊ म्राया।

—रामरासो

वधाऊहार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—इसो म्राणद देखि के कटक माहि थै वधाऊहार म्रागै वदोवदि दौड्या।

—वेलि टी

वधाणो, वधावो—देखो 'वधाणो, बधावो' (रू भे)

उ०—१ इसा रग उच्छाह सू, राम म्राया। वधै मात कौसल्या म्राए वधाया।

—सू. प्र

उ०—२ साथ सारो म्रमला सू लाल्हरतो थको वहै छै। वधाईदार म्रागै वधाइया छै। सू वधाई प्राण दीवी छै।

—रा. सा. स

वधाणहार, हारो (हारी), वधाणियो—वि०।

वधायोडो—भू० का० कृ०।

वधाईजणो, वधाईजवो—कर्म वा०।

वधापण—देखो 'वूढापण' (रू भे)

वधापो—देखो 'वधापो' (रू भे)

वधायक–वि [स वृध्-वर्धयते] १ वढाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उ०—वधै राज सुख विहद, वधै हित सपत वधायक। म्रवर वधै दिन इतो, वधै पल पल वरदायक।

—सू प्र.

२ देखो 'विधायक' (रू भे)

३ देखो 'विधेयक' (रू भे)

वधायोडो—देखो 'वधायोडो' (रू भे)
(स्त्री वधायोडी)

वधारण–वि [स वृद्धि-कार] १ वढाने वाला, वृद्धि करने वाला।

२ खीचने वाला, लम्बा करने वाला।

३ त्रुटित करने वाला, तोडने वाला।

वधारणो, वधारवो–क्रि. स ["वधरणो" क्रिया का प्रे रू] १ म्रागे वढाना, म्रग्रसर करना, म्रागे जाने के लिये प्रेरित करना।

उ०—'रूपा' 'पाता' 'घाघळा' छळ जोधाण नरिंद। वस छत्रीसा झल्लिया, घस वधारण दुद।

—रा. रू

२ वृद्धि करना, वढाना। (उ र)

उ०—१ वनि वनि विकसइ, वेउल खेउ लगाडइ चीति । दीठा द्राखह मडव मड वधारइं प्रीति । —जयसेखरसूरि

उ०—२ देवर माहरि घरि नही, ऊठी गिउ आखेटि । प्रीऊडा-पजरि पापीइ, जलण वधारिउ जेठि । —मा का प्र

३ विस्तार करना, फैलाना, लम्बा करना ।

उ०—१ वधि रा' ण सुवप वधारियौ, असमाण छिवतौ आवियौ । —सू. प्र

उ०—२ सिखा फरहरती, उत्तरासगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउ जनोइ सिर मद्रिउ तिलक वधारिउं, गायत्री साधनु । —व. स

उ०—३ ऊणी राजा जोवा गयु, दीठू खडग रलिया अति थयु । वेगि लेईं वधारु चीर, पिहिरी खड नीसरयु वीर । —नळाख्यान

उ०—४ राज गरीब निवाज, जेण प्रहळाद उबारै । राज गरीब निवाज, द्रोपदा चीर वधारै । —गजउद्धार

४ मान देना, इज्जत देना, सम्मान ।

उ०—१ सु पछै रावळ घडसी धरती वाळी, तरै सारा विखायता नू वधारिया तरै महिपा नू कह्यौ—'थे माहरी वडी चाकरी पोहता छौ, सु थे मागौ जितरी धरती म्हे थानू दा । —नैणसी

उ०—२ पाछै जिण दिन तख्त बैठियौ छत्र धारियौ ताहरा वहराम कवी से ने तेड पूरौ वधारियौ । —नी प्र.

५ काटना, कतरना, टुकडे करना ।

६ किसी देवता को चढाने के लिये नारियल आदि को फोडना, तोडना ।

७ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडना, समाप्त करना ।

वधारणहार, हारौ (हारी), वधारणियौ—वि० ।

वधारिओडौ, वधारियोडौ, वधारयोडौ—भू० का० कृ० ।

वधारीजणौ, वधारीजबौ—कर्म वा०

वदारणौ, वदारबौ, वधारणौ, वधारबौ,वदारणौ, वदारबौ,वधारणौ, वधारबौ, वनारणौ, वनारबौ, वाधारणौ, वाधारबौ, वाधारणौ, वाधारबौ । —रू भे ।

वधारियोडौ-भू का कृ—१ आगे वढाया हुआ, अग्रसर किया हुआ, वढने के लिए प्रेरित किया हुआ २ वृद्धि किया हुआ, बढाया हुआ ३ विस्तार किया हुआ, फैलाया हुआ, लम्बा किया हुआ ४ मान, सम्मान व इज्जत दिया हुआ. ५ काटा हुआ, कतरा हुआ, टुकडे किया हुआ ६ फोडा हुआ, तोडा हुआ (नारियल) ७ तोडा हुआ, समाप्त किया हुआ (मागलिक पदार्थ)
(स्त्री वधारियोडी)

वधारौ—देखो 'वधारौ' (रू भे)

उ०—१ दिग्रा वधारा देस दे, हैंवर द्रव्व हसत्ति । पतिसाही था ऊपरा, यू कहिग्रौ असपत्ति । —वचनिका

उ०—२ थया हरख सौ गुणा, भडा चौगुणा वधारा । साज हूत गजराज, किताइ धजराज सिरा रा । —रा रू

उ०—३ आविया सेव पावौ उतन्न । घर सहत वधारा विगुण घन्न । —सू. प्र.

वधाव—देखो 'वधाव' (रू. भे)

उ०—नितु नितु जोसी पूछीइ, नितु नितु सुकन मुभाव । नित नित निरति विहूणडा, आविइ वली वधाव । —मा का प्र.

वधावणौ—देखो 'वधामणौ' (रू भे.)

उ०—महाराय स्री कल्याणमलजी जन्म महोच्छव मागळिक-वधावण कराया । —द वि

वधावणौ, वधावबौ—देखो 'वधाणौ, वधावौ' (रू भे) (उ. र.)

उ०—१ भलौ भलौ सारौ जग भाखै, कही न लाई वात कई । मागज धरा वधावण मोटा, मोटी पाघ ससार मई । —द्र दा.

उ०—२ सहू महाजन हरखीया, कोण देस कहौ कुणि ठामि ? रावळी पोळै आवीया, पौळया वेगी वधावउ जाह । —वी दे

उ०—३ इणि परि राउ वधावीइ, मनि आण्या हे परमाणंद । नयर लोक आसाचरीजि' जउ इम बोलइ ए 'हीराणद' । —हीराणंद सूरि

वधावणहार, हारौ (हारी), वधावणियौ—वि० ।

वधाविओडौ, वधावियोडौ, वधाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वधावीजणौ, वधावीजबौ—कर्म वा० ।

वधावधि, वधावधी—देखो 'वढावढी' (रू भे)

उ०—वधावधि राडि करै खगवाह । सत्रा 'परसावत' 'माहवसाह' । —सू प्र

वधावियोडौ—देखो 'वधायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. वधावियोडी)

वधावौ—देखो 'वधावौ' (रू. भे)

उ०—१ तद वीर पुरस री स्त्री नै आ वात रुची नही, तिण सूं कहै है कि हे सखिया फगत ऊजळा कपडा राखण वाळा रा थे वधावा गाओ पण वीर पुरस नै पिछाणौ नही । —वी स टी

उ०—२ घणौ रस रहियौ वडा वधावा हुआ । —गौड गोपाळदास री वारता

वधिक-स पु [स. वधक] १ हत्या करने वाला, हत्यारा, वध करने वाला ।

२ प्रहार, घात व चोट करने वाला, घातक ।

३ जल्लाद।

४ शिकारी, व्याध।

५ मृत्यु।

रू. भे.—वधक, वधिक, वधक।

वधियोडौ—देखो 'वधियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. वधियोडी)

वधिर—देखो 'वधिर' (रू. भे)

वधिरपणौ—देखो 'वधिरपणौ' (रू. भे)

वधु, वधू—स. स्त्री. [स वधु, वधू] १ ऐसी युवती जिसका विवाह तुरन्त ही हुआ हो, दुलहिन, नव विवाहिता।

२ पुत्र-वधू।

३ सम्बन्ध की दृष्टि से छोटे की स्त्री।

४ पत्नी।

५ स्त्री, औरत।

रू. भे.—वधु, वधू।

वधूवर—स पु [स वधू-वर] १ दूल्हा। (उ. र.)

२ पति।

वधेतौ—देखो 'वधतौ' (रू. भे)

वधेपौ—देखो 'वधापौ' (रू. भे)

वधेवधि—देखो 'वढावढी (रू भे)

उ०—समोभ्रम 'दीप' हिंदाळ' सधीर। वधेवधि लोह करै नर वीर। —सू प्र

वधोतरी—देखो 'वढोतरी' (रू भे.)

वधोवधू, वधोवधौ—स पु—मवेशी को चरने के निमित्त हाकते समय किया जाने वाला शब्द।

वधौ—देखो 'वाधौ' (रू भे)

उ०—भ्रम सनेह कुळ मारग धारा। प्राण हूत वधि आप पियारा। —सू प्र

(स्त्री वधि, वधी)

वध्धाणौ, वध्धावौ—देखो 'वधाणौ, वधावौ' (रू भे)

वध्धाई—देखो 'वधाई' (रू भे)

वध्धाईदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—सुणि अविया वह सुघन, दुभ्फळ वध्धाईदारा। सर्फ़ अवासा डवर, चित्र अवछाडि बजारा। —सू. प्र.

वध्धावणौ, वध्धाववौ—देखो 'वधाणौ, बधावौ' (रू. भे)

उ०—सुमत्रा अनै केकई मात साई। भली भात वध्धाविया च्यार भाई। —सू. प्र.

वध्धावियोडौ—देखो 'वधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वध्धावियोडी)

वध्रारु—स पु.—शाक विशेष

उ०—वालु नइं वेलातरु, वेऊ वेतस वाणि। वध्रारु वाहलु लीउ, वाउलीउ वखाणि। —मा. का. प्र

वनंचर—देखो 'वनचर' (रू. भे)

उ०—वदियो स्वान वनचरा, नहिं लाज निहारै। मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै। —सू प्र.

वन—स. पु [स] १ जगल, विपिन।

उ०—कुजर ज्यू जो केहरी, तू लेतो तालीम। कळ में रखवाळत कवण, सपूरण वन सीम। —बा. दा

पर्या०—अटवी, अरण्य, आरण, ऊख, कतारक, कखवा, कच्छ, कातार, कानन, खड, गहन, भक, रन, रिख, विपन, विखवात।

मुहा०—वन मे जाणौ=दिशा (मैदान) जाना, (साधु के लिये)

२ जल, पानी। (ह ना मा)

३ जल का स्रोत।

४ वाटिका, वगीचा।

५ कमल।

६ कमल के फूलो का दस्ता।

७ आवास स्थान, घर।

८ काष्ठ, लकडी।

उ०—आतुर चित्त आगळी, धाम विसराम सुधारे। वन चंदण वावना, अगर घणसार अपारे। महल-काठ चुणि विमळ, पहल, रूई घ्रत पूरित। ओप सदळ ओछाड, अमळ परिमळ आकूरित। उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी। लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी। —रा. रू.

९ किरण, रश्मि।

१० शकराचार्य के अनुयायी दशनामी सन्यासियो की एक शाखा।

रू. भे—वण, वन, वन्न, वण, वनु, वन्न।

अल्पा.—बनी, वणी, वणी, वन्नि, वन्हि।

मह.—वनाळ।

वनअमावस्या—स. स्त्री—श्रावण मास की अमावस्या, हरियाली अमावस्या।

वनउक, वनओक—स पु [स वन+ओकस्, वनौक] १ वानर, वदर। (अ मा, ह ना मा)

२ वन्य-पशु।

३ वानप्रस्थाश्रमी, तपस्वी, मुनि।

वि —वन मे निवास करने वाला, वनवासी।
रू भे —बनउक, बनग्रोक।

वनकर—स. पु. [स. वन्यकर] सूर्य, भानु।
रू. भे.—बनकर।

वनखड—स. पु. [स. वनखड] वन, जगल।
उ०—१ जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वनखड दाह। जिण रित मालवणी कहइ, कुण परदेसा जाह। —ढो. मा
उ०—२ वनखड गिर झगर नह वसियौ, हू ग्री देख कतूहळ हसियौ। —सू प्र.
रू. भे.—वणखड, बनखड।

वनखडी—स. पु [स वनखड+रा प्र ई.] १ साधु, सन्यासी, तपस्वी। २ वनवासी।
रू भे.—वणखडी, बनखडी।

वनगव, वनगाय, वतगाव—स स्त्री [स. वन+राज गव] १ नीलापन लिये हुए भूरे रग का गाय के ग्राकार का एक वन्यपशु, नीलगाय। २ एक प्रकार का तेंदू वृक्ष।
रू भे.—बनगव, बनगाय, बनगाव।

वनडी—देखो 'वनी' (ग्रल्प, रू भे)

वनडौ—देखो 'बनौ' (ग्रल्पा, रू. भे)
उ०—होय रग हवोळोय माढहडो। वळियो जनवास हमैं वनडौ। —पा प्र

वनचर, वनचरी, वनचरु, वनचारी—वि. [स वनचर] (स्त्री वनचारण, वनचारिण) १ वनमे विचरण करने वाला।
उ०—हाडा, कूरम राठवड, गोखा जोख करंत। कहज्यो खाना खाननैं, वनचर हुवा फिरत। —महाराणा ग्रमरसिंह
२ वनवासी, उदासी।
उ०—ग्ररजुन वनचर लागउ वादु, करउ झूझु ऊतारउ नादु। —प प च
स. पु —१ जगली प्राणी, जगली पशु।
उ०—जळचर वनचर ग्रातरौ, जळचर जळ मे जोर। वनचर ग्रति वेढीमणी, जो कछु लाभै कोर। —गज उद्धार
२ वदर, वानर। (ग्र मा., ना मा)
३ हनुमान, वजरगी।
उ०—हणु मिलत धुर हर दीध सिर हथ, रिधु वजरग हुवौ समरथ। चवै रघुवर वयण वनचर, सीत सुध साजै। —र. रू
४ हरिण।
५ शरभ नामक जगली जतु।
६ एक प्रकार का जगली घास।
रू. भे.—वणचर, बनचर, बनचरी, बनचारी, वणचरि, वनचर, वनेचर।

वनज—वि. [स. वन+जन्य, वनज· वनज] वन मे उत्पन्न होने वाला।
स. पु.—१ कमल २ वृक्ष ३ वनस्पति ४ हाथी। ५ सुगन्ध युक्त तृण। ६ नील कमल का पुष्प। ७ जगली कपास का पौधा।
रू भे —बनज।

वनझगर—सं पु —वन की झाडी समूह।
उ०—इण भात रा वनझगरा माहे हरिण, सूग्रर, सावर, रोज, खरगोस, गैंडा, खग भाति भाति रा जानवर चरै छै। —रा सा. स·

वनडकारण—देखो 'दडकारण्य' (रू भे)

वनता—देखो 'वनिता' (रू. भे) (ह ना. मा)

वनतुळसी—स स्त्री [स वन+तुलसी] तुलसी के समान मजरी व पत्तियो वाला ववँर नाम एक पौधा विशेष, बर्वरी।
वि वि —यह चरपरी, रूचिकारक, गरम तथा कफ, वात रोग ग्रौर नेत्र रोग नाशक है तथा सुख पूर्वक प्रसव कराने वाली है।
रू भे —बनतुळसी।

वनद—स पु [स वनद] मेघ, बादल।
रू भे —बनद।

वनदरसाव—स पु.—इन्द्र। (ग्र. मा)

वनदेव—स पु [स. वनदेवता] (स्त्री. वनदेवी) वन का ग्रधिष्ठाता देवता।

वननाथ—स पु. [स.] १ समुद्र। २ मलय-वन।

वननिधि—स पु [स.] समुद्र।
रू. भे.—बननिधि।

वनपत, वनपति, वनपती—स पु. [स. वनपति] वन का राजा सिंह, शेर। (ग्र मा)
उ०—१ कोरण सुभट घटा घट कटका, त्रजडा हय दामणी तप। 'सूर' तणो घरहरै नरेसुर, वनपत थर खैंगरै वप—देवराज रतनू
उ०—२ लक वन पति हसगति को करमण, मनमत —ढो मा.
रू भे.—वनपत, बनपति, बनपती।

वनपाळ, वनपाळक—सं पु [स वनपालक] वन या वगीचे का रक्षक, वागवान, माली।
रू भे —बनपाळ, बनपाळक।

वनफळ—स पु. [स. वन+फल] वन के फल-फूल।

रू. भे.—वनफळ ।

वनबिलाव-स पु [स. वन+बिडाल] १ बिल्ली की जाति का परन्तु कुछ बडे आकार का एक जगली हिंसक जतु ।

वि वि —इसके शरीर का रंग मटमैला होता है और कानो का बाहरी भाग काला होता है। यह प्राय झाडियों मे रहता है और चिडियो को पकड-पकड खाता है ।

२ उक्त प्रकार के जन्तुओ का वर्ग ।

रू भे —वनबिलाव ।

वनभ्र ग-स पु. [स वनभृ ग] वन का भ्रमर ।

उ०—जिम केतकी वनभ्र ग, तिम सुगुरु सु सुभ रग ।

—समय सुदरगणि

वनमय-वि [स. वन+मय=युक्त] वनो से युक्त या परिपूर्ण ।

रू. भे —वनमय ।

वनमांनस, वनमानुस-स पु [स वन+मानुष] १ एक जगली जतु जो बन्दर से कुछ उन्नत और मनुष्य से कुछ मिलता-जुलता होता है ।

२ उक्त प्रकार के जतुओ का वर्ग जिसमे गोरिल्ला, चिंपेंजी, ओरग उटग आदि जतु हैं ।

रू भे.—वनमानस, वनमानुस ।

वनमाळ, वनमाळा-स पु [स वनमाला] वन के पुष्प एव पल्लवो की गुथी हुई कठ से पाव पर्यन्त लटकने वाली माला ।

रू. भे —बनमाळ, वनमाळा, वन्नमाळा ।

वनमाळी-वि [स] वनमाला धारण करने वाला ।

स. पु —१ ईश्वर । (ना. मा)

२ विष्णु ।

उ०—पर प्रहळाद तणी प्रतपाळी । वळ धू अखी कियी वनमाळी ।

—र. ज. प्र

३ श्री कृष्ण । (अ मा)

उ०—भीमकराय भणइ रुखमइया, वर वनमाळी जाणु । छपन कोडि जादव नो राजा, वस विसुध वखाणु । —रुकमणि मगळ

४ बागवान, माली ।

उ०—वन माळी रै पुत्तर जायो । जिण तुळछा रो वन रोपायो ।

—लो गी.

रू भे.—वनमाळी, वनमाली, वनवारी, वनवारी, वन्नमाळी, ।

वनमुरगो-सं पु यो [स वन+फा. मुर्ग] जगली मुर्गा जो साधारण मुर्गे की अपेक्षा कुछ बडा होता है, वन-कुक्कुट ।

रू भे —वनमुरगो ।

वनमूत-स पु [स वनमूत] बादल, मेघ ।

वनर—देखो 'वानर' (रू भे) (ना मा)

वनरमाळ—देखो 'बादरमाळ' (रू भे)

वनराइ, वनराज, वनराय, वनराव-स पु [स. वनराज] १ सिंह, शेर ।

उ०—पद वनराव न पामियो, दुरद दिखाळै दात । सीह थयो वन साहिबो, ठीगांरी सकरात ।

—बा दा.

२ बडा जगल, विशाल वन ।

[स वनराजि] ३ वृक्ष, पेड, वृक्ष समूह ।

उ०—१ धमक खोद धरणी सहै, काट सहै वनराय । फुटक वचन असली सहै, ओरा सह्या न जाय । —श्री हरिरामजी महाराज

उ०—चैत्रइ विचित्र थइ रही, अब तणी वनरायो जी । शुद्ध साखा अकुरित थइ, सोह वसतइ पायो जी ।

—वि कु.

४ वृक्ष पक्ति ।

५ पेड पौधे, वनस्पति आदि ।

उ०—२ पोस मे ओस पडै निस, रुदन करै वनराय । दोस विना पिउ रोस करै, तै सोस ज थाय ।

—ध. व ग्र.

६ वन, जगल ।

उ०—कीधी परतग्या इसी, मन सेती महाराय । पदमणि परणु तो घरि रहु, नहिं तो गिरि वनराय ।

—प च चौ.

७ वनखण्ड ।

रू भे —वणराइ, वणराइ, बणराज, वणराय, बणराव, वनराइ, । बनराज, वनराय, वनराव, वणराइ, वणराइ, वणराई, वणराज, वणराय, वणराव ।

वनरवाल, वनरवालि—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे)

उ०—तलिआ-तोरण ऊभीआ घरि-घरि बाधीआ ए वनर वालि । गुहगइ मादल रण कीआ तिहिं नाचइ ए नवरगि बाल ।

—हीराणद सूरि

वनरावन—देखो 'व्र दावन' (रू भे)

उ० —आस्रम चौथे आयकै इक वनरावन जावै । आस्रम चौथे आयकै इक तीरथ दिस धावै ।

—अरजुनजी बाहरठ

वनरुह-स पु [स वनरुह] कमल का फूल ।

वनरोई,वनरोही-स. पु —१ वन, जगल ।

२ बीहडवन, दुरुह जगल ।

रू भे —वनरोई, वनरोही ।

वनलक्ष्मी-स स्त्री [स] १ वन की शोभा, वनश्री ।

२ केला ।

वनलो—देखो 'वनो' (अल्पा , रू भे)

उ०—बरसता सहरा बीटाणी, नमख न हुए नराळो । डाणा आज लगो डुगरियो, वनलो काठळ वाळो ।

—अज्ञात

वनवारी—देखो 'वनमाळी' (रू भे)

उ०—सोधन पीवजी साज सवारी, अब वेगि मिळौ तन जाइ वनवारी। —दादूवाणी

वनवास–स. पु [स] १ घर, नगर व वस्ती छोड कर जगल का निवास।

उ०—वस राज (जी) रौ राखणी, कुण घणी आयत होयवै । वनवास अती दुख घणा, क्या जाणा क्या जोय वैं। —रीसालु री वात

२ उक्त प्रकार के निवास की क्रिया, दशा, व्यवस्था, विधान।

मुहा —वनवास दैणौ=घर से दूर जगळ मे उदासी बन कर रहने की आज्ञा देना ।

रू. भे.—वनवास, बनवास, वनोवास।

अल्पा —वनवासौ, वणवासु, वनवासु, वनवासौ, ।

वनवासी–वि [स वनवासिन्] १ वन मे निवास करने वाला, बसने वाला।

२ उदासी, तपस्वी ।

स पु —१ ऋषि-मुनि, सन्यासी, २ वानप्रस्थी ।

रू भे —बनवासी ।

वनवासु, वनवासौ—देखो 'वनवास' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ वारह ए वरस वणवासु नाठै हीडिवु तेरमई ए। अम्हि किम ए जाणिसु, तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए। —प प च

उ०—२ वनवासौ चवदै वरसा रौ, वामा सग विळावै । वीते पलही कलप वरावर, जिकै दिवस किमि जावै। —र रू.

वनविळासिणी–स स्त्री —वन मे विलास या विचरण करने वाली देवी।

वनवीरोत–स पु —राठौड वश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

वनसण–स स्त्री. [स वनशण] शण-पुष्पी नामक ओषधि विशेष। (निघटु)

रू भे.—वनसण।

वनसपति, वनसपती—देखो 'वनस्पति' (रू भे.)

उ०—१ वनसपति फूली फळी, नाना रग धरति। तिम तू यौवन जाणीजै, खिण एक-माहि खिरति। —मा का प्र

उ०—२ वनसपती पुहपति विसतारैं। भवर गुजार करैं सुर भारैं। —सू प्र

उ०—३ वनसपती सू वेला लपटनै रही छै। —रा सा स

वनसी—१ देखो 'वसी' (रू भे) (अ मा)

२ देखो 'वसी' (रू भे)

वनासपति, वनासपती—देखो 'वनासपति' (रू भे.)

वनस्थळि, वनस्थली–स. पु. [सं वनस्थली] १ वनो से घिरा हुआ प्रदेश। अरण्य देश।

२ वन का भाग।

रू. भे.—वनसथळी, वनस्थळी।

वनस्पति–स स्त्री [स. वनस्पति.] १ जमीन से अकुरित होकर उत्पन्न होने वाले पेड, पौधे, लताए, घास आदि।

२ वडा जगली वृक्ष जिसमे पुष्प लगे विना ही फल लगते हो।

३ वृक्ष, पेड।

रू भे —वनमपति, वनसपती, वनस्पति, वनस्पती, वनासपति, वनासपती, वनसपति, वनसपती, वनासपति, वनासपती।

वनस्पतिसास्त्र–स पु [स वनस्पति+शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें पेड-पौधो की उत्पत्ति, गुणधर्म तथा जातियो का वैज्ञानिक ढग से विवेचन किया हो, वनस्पति-विज्ञान।

रू भे —वनस्पति-विद्या।

वनागनी, वनाग्नि–स स्त्री यौ [स वन+अग्नि] वन मे लगने वाली आग, दावानल।

रू भे —वनागनी, बनाग्नि, वनिअगनि।

वनात—देखो 'वनात' (रू भे)

उ०—घणी रग रग री वनात मुखमल कळावूती सोने रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजे छै। —रा मा. स.

वनाती—१ देखो 'वनाती' (रू. भे)

उ०—वनाती झूला घातिया रहकला, इर्का, खडसला जूता छै। सू हालिया थका घोडा री माम पाडै। —रा सा. स.

२ देखो 'वनात' (रू भे)

उ०—घोडौ तो भीजै, पिया, नवलखौरै, कोई भीजै रे वनाती, भीजै रे वनाती, रे साज। —लो गी

वनाधिप, वनाधिपति–स पु [स वन+अधिपति] सिंह, शेर।

रू भे —वणाधिप, वणाधिपति।

वनापार–वि —अत्यधिक, अपार।

उ०—मोसरा ताण घमसाण रै मागडै, पागडै जैत खाटै वनापार। जोधपुर नाथ कर कोप पुठै जका, ऊतन छूटै तका हुए आधार। —जवान जी आढौ

वनायु–स पु [स] १ एक प्रचीन देश जहा के घोडे प्रसिद्ध होते थे।

२ उक्त देश का निवासी।

३ पुरुरवस् राजा का उर्वशी से उत्पन्न पुत्र।

४ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के दस प्रधान पुत्रों मे मे एक था।

वनायुज–स पु [स] १ उक्त देश (वनायु) का घोडा। (डिं को)

२ घोडा (डिं को)

वनाळ-स. स्त्री [स वन+अलिका] १ सूरजमुखी।

२ देवदाली घघरवेल, वदाळ। (अमरत)

३ देखो 'वन' (मह., रू. भे)

वनास—देखो 'वनास' (रू. भे)

उ०—चढती सुहाससर ,वनास फळती छोळा, सुभ्र गीडुलती वीरा करीरा सुवास। समीरा हलती वेस गहीरा तरा री साखा, कमोद फूलती नीरा चौगणों प्रकास। —महाराजा मानसिंह

वनासपति वनासपती—१ देखो वनस्पति' (रू भे.)

उ०—गिरा खळक्कै नीर नदि, झरणा झरै अपार। वनासपति पासर वणी, विविध अठारै भार। —गज उद्धार

२ देखो 'वनासपति' (रू भे)

वनि-स स्त्री [स वह्नि] १ अग्नि, आग। (ना डिं. को)

[स वनि] २ अभिलापा ,कामना।

३ याचना।

४ देखो 'वनी' (रू भे)

उ०—१ पथी एक सदेसडइ, लग ढोलइ पैंहच्याइ। विरह-वाप्र वनि तनि वसइ, सेहुर गाजइ आइ। —ढो मा

उ०—२ (इसी) जु मालिए छै सु वनि वनि रै विखै केसरि चुणै छै। —वेलि टी

५ देखो 'वनी' (रू भे)

रू. भे.—वनि, वन्हि, वन्ही वहनि वहनी वेहनि, वेहनी, वनी, वन्ति, वन्हि, वन्ही।

वनिअगनी—देखो 'वनागनी' (रू भे)

उ०—आवै सगण अचीत, जेम वनिअगनि सिळग्गा। सरप विकल सोव्वा, मत्र आवै सुखमगा। —रा रू

वनिता-स स्त्री. [स] १ पत्नी, भार्या।

उ०—वनिता-पती विदेस गय, मदिर-मझै अद्धरयणीए वाळा। लिहइ भुयगी, कहि सुदरि कवरा चुज्जेरा। —ढो मा

२ स्त्री, औरत, नारी, रमणी।

उ०—वनिता रूपं रात्रि आमणी। —धरम-पत्र

३ प्रियतमा, प्रिया, प्रेयसी।

४ स्वामिनी, मालकिन।

५ वेश्या।

६ दो सगण युक्त छै वर्णों की एक वृत्ति।

रू भे —वनता, वनिता, वणता, वनता, वनित्ता, वनीता।

वनितामुख-स. पु.—मनुष्यो की एक जाति। (मारकण्डेय पुराण)

वनिता सुत-स पु [स वैनतेय] गरुड। (डिं ना मा)

वनित्ता—देखो 'वनिता' (रू भे.)

उ०—वप सोळह सिणगार वनित्ता, लखण वतीस मजुगत ललित्ता। सोभा सारिख किरण मवित्ता, दीपै मदर राज दुहित्ता। —गु. रू व.

वनिस्पत—देखो 'वनिस्पत' (रू. भे.)

वनी-स स्त्री [स] १ छोटा वन, वाटिका।

उ०—वैरि गदिरि स लाछि सामही, आतम पौरस वनी समई दही। भ्रू टि झूवि मुझ नारि विनोई, आयमिउ मिहर मू मुह जोई। —सालि सूरि

२ बीहड व भयावह जगल।

३ वनस्थली, झाडी, कुज।

४ देखो 'वनी' (रू. भे)

५ देखो 'वनि' (रू भे.)

रू. भे —वणी, वनि, वनी, वन्नी, वन्हि, वन्ही, वणी।

वनीत—देखो 'वनीत' (रू भे)

वनीता—देखो 'वनिता' (रू भे)

उ०—सोहत वाम दिसा निज सीता, बादळ वीज प्रभाव वनीता। —र ज. प्र.

वनीपक, वनीयक-स. पु [स] भिखारी, भिक्षुक, याचक। (ह ना मा)

वनीसिख-स स्त्री. [स वह्नि-शिख] केसर। (ह. ना मा)

वनु—देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—दह दिसि इम जा वनु आरोडइ। जीव विणासइ तरुयर मोडइ। जा इम दलवइ पारधि लागई तांम अ भमु पेखइ आगइ। —प प च

वनेचर—देखो 'वनचर' (रू भे)

वनै—देखो 'वनै' (रू. भे)

वनोक-स पु [स वनौकस्] वानर।

रू भे —'वनोक'

वनोडा - देखो 'वणोडो' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हेमो वोलियो-कूंभा मालाणी! कटक वाळ वनोडा मता नाखै। साझ्या मिळो! ताहरा कूभो घोडै हू उतरियो। —नैणसी

वनोत्सरग-स पु [स वन+उत्सर्ग] १ देव मन्दिर, वापी, कूप उपवन आदि वनवा कर सार्वजनिक उपयोगार्थ, शास्त्र विधि से दिया जाने वाला दान, उत्सर्ग।

२ उक्त प्रकार के दान की शास्त्रोक्त विधि।

वनोद-स पु [स वनोदय] १ कमल।

२ देखो 'विनोद' (रू भे)

वनोदनैणी-वि स्त्री.— जिसके नैत्र कमल के सदृश्य हो, कमल-नयनी।

उ०—नाहरा नु करै जेर जाहरा बिनोदनैणी, प्रचा दोय राहरा। नु देर लैणी पेस। दिळी ईस जिसा फेर नरा नू ऊथाप दैणी, दीना नाथ 'सैणी' वीस करा नूं ग्रादेस। —नवलजी लालस

बनोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे.)

बनोळौ—देखो 'वदोळौ' (रू. भे.)

बनोवास—देखो 'वनवास' (रू भे)

उ०—किसा दीह ग्राणद-विन्नोद कीधा। लहै भूप ग्राग्या वनोवास लीधा। —सू प्र.

बनौ—देखो 'बनौ' (रू भे.)

उ०—१ रहियौ एकज रात, कोलूमड पावू कमद। पमंग चढै परभात, वरवा धण खडिया बनौ। —पा. प्र

उ०—२ दुखा री डेरियौ बीकानेरियौ दिना री दादौ, दीठा सीस ढेरियौ हेरियौ जरादूत। भूटे लोव लाग बनौ हेरियौ वखाकभड, पीढी सात मातै पाणी फेरियौ कपूत। —उदैभाण बारहठ

बनौकस—स पु [स] १ बदर, वानर।

२ वनवासी।

बनौसद बनौसद—स. स्त्री [स वन+ग्रौपधि] १ जगल मे पैदा होने वाली ग्रौषधि, जडी, बूटी।

बन्न—देखो 'वन' (रू भे)

उ०—सीहा देस विदेस, सम, सीहा किसा उतन्न। सीह जिकै वन सचरै, सो सीहा री वन्न। —वा. दा.

बन्नमाळ—देखो 'वनमाळा' (रू भे.)

बन्नमाळी—देखो 'वनमाळी' (रू भे.)

उ०—तिसी तंत ताती वजी ताल ताळी, मडघौ पाव ग्रारभियौ वन्नमाळी। —ना. द

बन्नर—देखो 'वानर' (रू भे)

उ०—मूगले कहिय मुहि मारि मारि, धूणियउ कोट काळइ कधारि। पतिसाह तणी भालिय पखाण, जुधि चढिय लक बन्नर जाण। —रा ज. सी

बन्नरमाळ, बन्नरमाळा, बन्नरवाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू. भे)

उ०—१ दिल्ली नगरी-रै साज-रो ग्राज काई कैणी। घर घर फरिया ग्रर बन्नरमाळावां बाधीजै है। चारू कानी वाजा वाजै है। —वरसागठ

उ०—२ ग्रति ग्रव मोर तोरण ग्रजु ग्रवुज, कळी सु मगळ कळस करि। बन्नरवाळ वघाणी वल्ली, तरुवर एका विये तरि। —वेलि

बन्नि—१ देखो 'वन' (ग्रल्पा रू. भे.)

उ०—१ केमरि कथिन्न साभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि। 'वीकाहर' राजा ए वखाण। जाळोवळि सीतउ घ्रित्त जाण। —रा. ज सी

उ०—२ एकइ वन्नि वसतडा, एवड ग्रतर काई। सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाई। —ग्र वचनिका

२ देखो 'वनि' (रू भे)

बन्निजणौ, बन्निजबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू भे)

उ० —जिम चिंतामणि रयण मभि, उत्तम सलहिज्जइ। जिम कणयाचल गिरिह मभि, किरि धुरहि ठविज्जइ। जिम सोह गह वत्थु मभि, ससहरु वन्निज्जइ, जिम तरुह मभि वछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ। —ग्रभयतिक यति

२ देखो 'विणजणौ, विणजबौ' (रू. भे.)

बन्निजियोडौ—१ देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विणजियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वन्निजियोडी)

बन्नीयणौ, बन्नीयबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू भे)

उ०—तीणइ थापिउ तिहू यण सारो, वीजउ ग्रमरापुरि ग्रवतारो। हथिणाउरपुर वन्नीयए। —प. प च

बन्नीयोडौ—देखो 'वरणियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वन्नीयोडी)

बन्य—वि [स] १ वन का, वन सम्बन्धी, जगळी।

२ जगल मे उत्पन्न, जगल की पैदाइश।

३ बर्बर, हिंसक।

४ ग्रसभ्य, ग्रशिष्ट।

स. पु १ जगली सूरन।

२ क्षीर विदारी।

३ वाराही कन्द।

४ राख।

बन्यकर—देखो 'वनकर' (रू. भे.)

बन्या—स स्त्री [स.] १ बडा वन, ग्रनेक वन।

२ जल की बाढ।

३ ग्रस्वगध।

६ गोपाल ककडी।

(४) मुद्‌गपर्णि।

(५) गुजा।

बन्रमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—पूजा-पाठ निराठ, वरै वन्रमाळां मोखी। जागण राती जगा, दसुटण दायजा चोखी। —दसदेव

बन्हि—१ देखो 'वनि' (रू भे)

२ देखो 'बनी' (रू. भे)

३ देखो 'वन' (अल्पा, रू. भे)

४ देखो 'वह्नि (रू भे.)

उ०—सीत न तावड मनि गणइ, दिवस न रयणी सक। भूख पिपासा न वह्नि जल, केवल यथा करक। —मा का प्र

वन्ही—१ देखो 'वणी' (रू. भे)

उ०—सवको सीर सपूत मे, सब कोई मित सपूत। कुळरी ढाकण होत है, ज्यू वन्ही को सूत। —अज्ञात

२ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

वन्हो—देखो 'बनो' (रू भे)

वप—देखो 'वपु' (रू भे) (ह. ना. मा)

उ०—पेखियो सहर जोधाण-पत, सब जण धणी सपेखियो। वप आभ परस च्यारू वरण, लाभ नयण पण लेखियो। —रा. रू.

उ०—२ राम लखण सत्रघण भरथ, सूरज वस सिंगार। एक अस चत्र वप अवधि, ऐ चत्रधा अवतार। —सू प्र.

वपणी—स. स्त्री—१ नाईयो के हजामत करने का स्थान

२ देखो 'विपणी' (रू. भे)

वपन—स पु [स] १ बीज बोने की क्रिया या भाव।

२ सिर-मुडाई, हजामत।

३ वीर्य।

वपराणौ, वपरावौ—क्रि स. [स व्यापरणम्] १ अपने उपयोग के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था करना, उस वस्तु को किसी तरीके से प्राप्त करना। उपलब्ध करना।

उ०—मन फन्ती जणा ई मासी सिरै गाय वपराय लेती गाया री ई एक छोटी-मोटी छाग वणगी ही। —फुलवाडी

२ व्याप्त करना, मचार करना, फैलाना।

उ०—वपराती ठाडोळ, तूठजे वार मेगाळा। दुखिया मेठण दुकम विहद घण सपत याळा। —मेघ

३ उपयोग करना, उपभोग करना, इस्तेमाल करना।

वपराणहार, हारौ (हारी), वपराणियौ—वि०।

वपरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वपराईजणौ, वपराईजवौ—कर्म वा०।

वपराणौ, वपरावौ, वपरावणौ, वपरावबौ—रू भे।

वपरायोड़ौ—भू का कृ.—१उपयोग या आवश्यकता पूर्ति के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था किया हुआ, प्राप्त किया हुआ उपलब्ध किया हुआ २ व्याप्त किया हुआ, मचार किया हुआ, फैलाया हुआ.

३ उपभोग किया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ।

(स्त्री वपरायोड़ी)

वपरावणौ, उपरावबौ—देखो 'वपराणौ, वपरावौ' (रू भे.)

वपरावणहार, हारौ (हारी), वपरावणियौ—वि०।

वपराविओड़ौ, वपरावियोड़ौ, वपराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वपरावीजणौ, वपरावीजबौ—कर्म वा०।

वपरावियोड़ौ—देखो 'वपरायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री वपरावियोड़ी)

वपरीत—देखो 'विपरीत' (रू भे)

उ०—'केहर' 'कादळ' मारकै, ऐ अगलूणी रीत।' कादळ' 'केहर' मारियौ, रीत कना वपरीत। —हरराम आसियौ

वपरुच-स पु [स वपु+रुचि=कांति] खून, रक्त। (अ. मा)

वपा—स स्त्री [स] १ चर्बी।

२ मेद।

३ गुफा।

४ चीटियो या दीमक द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का टीला। वल्मीक

५ वावी।

रू. भे—वपा।

वपि—देखो 'वपु' (रू भे)

उ०—वपि—केसरिया साज वणाया। उभै सहस सिंधुर धुज आया। —सू प्र

वपु—स पु [स वपुस] १ शरीर, देह, अग, काया।

उ०—१ खग नीर धीर अतर खरा मद कुजर वपु जिम मयण। मन वसै तेम तू माहरै, मो मन वसियौ महमहण। —ह र.

उ०—२ वपु दस गुणै, जोर न्रप वधियौ। सो गुण अनत पराक्रम सधियौ। —सू प्र.

२ रूप, सौन्दर्य, वरण।

३ आकार आकृति।

रू भे—वप, वपु, वपुस, वप्प, वप्पु, वप, वपि, वपुख, वप्प।

वपुस—देखो 'वपु' (रू भे)

उ०—सिर नासा कान दसन आसै, नख गाळ वपुख ना मल नासै। मिलणी लेखो करै मअणो, विहचण अपणी करि घन घरणी। —वृ स्त।

२ देखो 'वपुस' (रू भे)

वपुस—म पु [स. वपुष] देवता।

रू भे.—वपुख, वपुस।

वपुस्टमा—स स्त्री. [स वपुस्टमा] काशिराज सुवर्णवर्मन् की कन्या जो

जन्मेजय को व्याही गई थी।

वि वि —इसके शतानीक व शकुकर्ण नामक दो पुत्र थे।

वपुस्मती–स स्त्री [स. वपुष्मती] १ सिन्धुराज की पुत्री जो राजा मरुत्त की पत्नी थी।

२ स्कद की एक अनुचरी।

वप्प—देखो 'वपु' (रू भे.)

उ०—देवी वाहन नाम कै वप्प-वाळी। देवी खग्ग सूलधरां खप्पर वाळी। —देवि

वप्र–स पु [स वप्र, वप्र] १ मिट्टी की दीवाल।

२ शहर-पनाह।

३ मिट्टी का टीला।

४ चोटी या शिखर।

५ नदी तट।

६ किसी भवन की नीव।

७ पहाड का उतार।

८ शहर-पनाह का द्वार या फाटक।

९ खाई की मिट्टी का उसके किनारे बना हुआ धुस्स।

१० वृत्त का व्यास।

११ खेत।

१२ मिट्टी, धूल, रेणु।

[स वप्रिन्] १३ प्रजापति।

१४ द्वापर युग के व्यास।

वप्रवरण–सं पु [स वप्रावरण] गढ, किला। (अ मा, ह. ना मा)

वप्रौढौ–स पु [स. विवोढ़] १ पति। (ह ना मा)

२ दूल्हा, वर।

वफा–स स्त्री [फा] १ निर्वाह, पालन, अमल।

२ सद्व्यवहार, वर्ताव।

३ प्रेम, मोहव्वत।

४ निष्ठा, आस्था, भक्ती।

५ सुशीलता, सज्जनता।

वफादार–वि [फा] १ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, वचन निभाने वाला।

उ०—हर वात मे कौल पालणौ वडी वात छै। वफादार साच रौ सग करजै, साचौ कोल पाळणौ —नी प्र.

२ स्वामी भक्त, नमक हलाल।

३ कर्त्तव्य-निष्ठ।

४ सच्चा।

रू भे —वफादार।

वफादारी, वफेदारी–स स्त्री. [फा. वफादारी] १ वफादार होने की अवस्था या भाव।

२ प्रतिज्ञा पालन करने की क्रिया या भाव।

उ०—तो गोपाळदास नवाव नू कहाई जे वात तौ म्हासूं ही मालुम हुई छै। नवाव तुम हम सू सलाह करो तो वफेदारी है। —गौड गोपाळदास री वारता

३ स्वामी भक्त।

उ०—तद गोपाळदास कही वादशाह री चाकरी मे वफेदारी काई नही। —गौड गोपाळदास री वारता

४ कर्त्तव्य निष्ठा।

५ सच्चाई।

रू भे —वफादारी, वफेदारी।

वफारौ—देखो 'वफारौ' (रू भे)

वभीखण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

वभीखणौ—देखो 'विभीसण' (अल्पा, रू भे)

उ०—उवै वार वभीखणौ चालि आयौ। लखै ते हणूमान पावा लगायौ। —सू. प्र

वभक—देखो 'भभक' (रू भे)

वभकणौ, वभकवौ—देखो 'भभकणौ, भभकवौ' (रू भे)

उ०—१ वहक पावक वभक चहु चक। तद अरक रथ थरक कौतिक, उदधि रण अण थाह। —सू. प्र

उ० - २ जळ वडवानळ जिकौ जळावै, ऊन्हौ तिकौ समदचै आवै। वात एम कहता न्रप वाणी, पहाड फोडि वभकियौ पाणी। —सू प्र

उ०—३ घड फूटत तूटत सीस धार पडनाळ स्रोण वभकै अपार।

उ०—४ डील ऊकळै वभकि ऊठै, मरद ग्वाळा आ गिरै। जाळ झाली देय वुलावै सुखद छाय सरजित करै। —दमदेव

वभकणहार, हारौ (हारी), वभकणियौ—वि०।

वभकिओडौ, वभकियोडौ, वभक्योडौ—भू० का० कृ०

वभकीजणौ वभकीजवौ—भाव वा।

वभकाणौ, वभकावौ—देखो 'भभकाणौ, भभकावौ'।

वभकाणहार, हारौ (हारी), वभकाणियौ—वि०।

वभकायोडौ—भू० का० कृ०।

वभकाईजणौ, वभकाईजवौ—कर्म वा०

वभकायोडौ—देखो 'भभकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वभकायोडी)

वभकार—देखो 'भभकार' (रू भे)

उ०—तिर आयो तीरू, गज हमगीरू, चवै सरीरू, कर चीरू।
वभकार गहीरू, आयो भीरू, होय कठीरू, हडडतू। —भगतमाळ

वभकियोडो—देखो 'भभकियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वभकियोडी)

वभकी—देखो 'भमकी' (रू. भे)
उ०—डील ऊफळै वभकी उठै, मरद अंवाळा आ गिरै। जाळ झाली देय बुलावै, सुखद छाय सरजित करै।। —दसदेव

वभक्कणो,वभक्कवो—देखो 'भभकरणो, भभकवो' (रू भे)
उ०—१ लोही घळधक्क वभक्कत लाल। पडै घर जाणि पतग पखाल। —सू प्र
उ०—२ रोळ गजा गंघडा वमक्कै भाव चोळ रत्ता। सळावोळ कीघा आयो वेताळीम क्रोध। —हुकमीचद खिडियो
वभक्कणहार, हारो (हारी), वभक्कणियो—वि०।
वभक्कियोडो, वभक्कियोडो, वभक्कयोडो—भू० का० कृ०।
वभक्कीजणो, वभक्कीजवो—भाव वा०।

वभक्काणो, वभक्कावो—देखो 'भभकाणो, भभकावो (रू. भे.)
वभक्काणहार, हारो (हारी), वभक्काणियो—वि०।
वभक्कायोडो—भू० का० कृ०।
वभक्काईजणो, वभक्काईजवो—कर्म वा०।

वभक्कायोडो—देखो 'भभकायोडो (रू भे)
(स्त्री वभकायोडी)

वभक्कियोडो—देखो 'भभकियोडो' (रू भे)
(स्त्री वभक्कियोडी)

वभयंद्री—स पु [स. इन्द्रिय-विभु] इन्द्र। (अ. मा)

वभाड—देखो 'विभाड' (रू भे)
उ०—पतसाहा हु अमेल परठीयो, भरीयो सुरत अनत वभाड। असमर "अमर" तणो ऊगाडो, छत्र धारीया तणो श्रोछाड। —अमरसिंह रो गीत

वभाडणो, वभाडवो—देखो 'विभाडणो, विभाडवो' (रू. भे)
वभाडणहार, हारो (हारी), वभाडणियो—वि०।
वभाडिग्रोडो, वभाडियोडो, वभाड्योडो—भू० का० कृ०।
वभाडीजणो, वभाडीजवो—कर्म वा०।

वभाडियोडो—देखो 'विभाडियोडो' (रू भे)
(स्त्री वभाडियोडी)

वभीखरण, वभीसण—देखो 'विभीसण' (रू भे)
उ०—रवि वभीसरण लक राज रघुवर आपिया अवधेस। —सू प्र

वभुत—१ देखो 'विभूता' (रू भे)
२ देखो 'विभूति' (रू भे.)

वभूत—देखो 'विभूति' (रू भे)
उ०—घू परि आड वभूत तिलक घरि। कदळी पत्र दीघ राजा करि। —सू. प्र.

वभूतासिद्ध—देखो 'विभूतिसिद्ध' (रू. भे)

वभूति—देखो 'विभूति' (रू भे)

वम्भीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)
उ०—उरघ अबर उद्धरण, वेद ब्रह्मा गावाळण। दळ दाणव निरदळण, अब्ब रामण ची गाळण। वम्भीखण जण करण, सवळ देता सघारण। नवनाथ निमधियण, त्रिविध लोका ऊपावण। —ज खि

वभ्रु—देखो 'बभ्रु' (रू. भे.)

वभ्रुपिपळा—स स्त्री —घनि। (अ. मा)

वभ्रुवाहन—देखो 'वभ्रुवाहन (रू. भे.)

वमणो, वमवो—क्रि. स. [स. वमनम्] १ कै करना, वमन करना। (उ. र)
२ थूकना।
३ उडेलना।
४ उगलना, प्रकट करना। (उ. र.)
५ फेंकना।
६ खारिज करना, अस्वीकार करना, त्यागना।
उ०—हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियो अति घणु। दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणु। —वि कु.
वमणहार, हारो (हारी), वमणियो—वि०।
वमिग्रोडो, वमियोडो, वम्योडो—भू० का० कृ०।
वमीजणो, वमीजवो—कर्म वा०।

वमथु, वमथू—स पू. [स. वमथु] १ हाथी की सूड का पानी।
२ कै, उलटी।

वमन—स पु. [स.] १ कै या उलटी करने की अवस्था, क्रिया या भाव।
२ कै, उलटी।
३ थूक।
४ उडेलना क्रिया।
५ उगलना क्रिया।
६ फेंकना क्रिया।
७ त्याग छुटकारा, अस्वीकृति।

वमर—देखो 'विवर' (रू. भे.)
उ०—एक महामोटो प्रवत छै। तरण ऊपरा देवळ छै। तठै वमर छै। सो गुपत गेलो आपा रा घर वीच नीसरै छै। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वमियोडो—भू. का. कृ—१ कै किया हुआ, वमन किया हुआ ।
२ थूका हुआ. ३ उडेला हुआ ४ उगला हुआ, प्रगट किया हुआ
५ फेंका हुआ । ६ खारिज किया हुआ, अस्वीकार किया हुआ, त्यागा हुआ ।
(स्त्री. वमियोडी)

वमुख, वमुह—देखो 'विमुख' (रू भे.)
उ०—१ घर कारण वेहू आवडै छत्रधर, पाछट खग दाखवीयो पाण। कुंभळमेर न दीधो कूमै, सेवा वमुख गयो सुरताण।
—महाराणा कुंभा री गीत
उ०—२ सुजड झडता वाड न्रप वेहू अडतां समर, खत्री अन देख ऊत वमुह खडता। अंगाडी तणा भड लडै अस आवीया, पछाडीं ऊपरै भार पडता।
—पहाडखा आढौ

वमेक—देखो 'विवेक' (रू भे)
उ०—इसी वमेक सद्रढ मत ऐही। जोगेसुरा दुलभ अति जेही।
—सू. प्र.

वम्मरी—देखो 'विवर' (अल्पा, रू भे)
उ०—देवी वम्मरे डूगरे रन्न वन्नै। देवी थूंवडे लींवडे थन्न थन्नै।
—देवि

वयंड—देखो 'वितड' (रू भे.) (अ मा., हू. ना. मा)
उ०—१ तूटा गज सिर करै अवाका, दातूसळा बजावै डाका। गत ऊत करि सिंधू सुर गावै, वयड सूड ची भेर वजावै। —सू. प्र.
उ०—२ पटहसुति सूडि फेरइ प्रचड, भ्रिख दिसा वोम नाखइ वयड। पटहसती छाया पक्खरेह, पाहाड जाणि हालइ पगेह।
—रा ज सी
उ०—३ निपट खळा ची नार कथ कहै नित नाह नै, वयड खळ झाड तो देख हथवाह नै। रोस दळ छोड जावै अगम राह नै, समर मत छेडजे कवर "रणसाह" नै।
—रणसिंह सीसोदिया री गीत
२ देखो 'वडो' (मह, रू भे)

वयडकनी—वि. स्त्री [स वड+कणिक] कटे कान वाली।

वयडचर—स. पु. [स वितड+चर] अनलपक्षी।
उ०—वयडा घडा आडा-खडा वाढते, गाढमल जाजमा धकै गाहै। मझी समर वीर नारद अछर माल्हिया, माल्हिया वयडचर समर माहै।
—राव वुर्धसिह हाडा री गीत

वयडमुख—देखो 'वितडमुख' (रू भे)

वयद—देखो 'वियत' (रू भे) (ना मा)

वय—स स्त्री. [स] १ बीता हुआ जीवन-काल, उम्र, अवस्था। (अ. मा)
उ०—१ अग सो लियो कनिक उणहारं। सोळ वरस वय सोळ सिंगारं।
—सू प्र.
उ०—२ वय किसोर ऊतरै, जोर जोवन परगट्टै। अणमायो अव मैं ति किरि रतनाकर तट्टै।
—रा रू.
२ जवानी, युवावस्था।
३ समय, काळ। (ह ना मा) (अनेका.)
उ०—पलटै वय पलटै प्रकत, रितु दिन पलटै रैण। पलटै नहीं "प्रतापसी," विछुटै जे मुख वैण।
—जैतदान बारहठ
४ क्रम। (अनेका)
५ विस्तार। („)
६ वल, शक्ति। („)
७ पक्षी, विहग („)
[स वच्] ८ वचन, वाणी, बोल।
उ०—१ झुक वहणी नह जाणियो, दीयण वय मुख दव्व। "पातल" हुदा उरध पण, सधा अनम सरव्व।
—जैतदान बारहठ
उ०—२ जाणमती वय ससी राजिद, तात कहू विध तोनू। स्त्रीपत सेस उधारण सता, देह धरी नर दोनू।
—र. रू.
९ स्वर, आवाज।
उ०—डहत केळि डाळय, उपति वद्रवालय। वहत दुदभ वय जपत देव जै जय।
—सू. प्र.
१० छप्पय छंद का एक भेद जिसमें, ४८ गुरु व ५६ लघु कुल १५२-मात्राऐं होती हैं।
उ०—गुर अडचाळा गाइजै, लघु कर छप्पन लेख। वय छपय वाखाणीयै, सेसो कहै विसेख।
—पिंगळ सिरोमणि
११—जुलाहा।
१२ वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
वि [स वयस्य] समान।
उ०—वावर वीखरिया ओढणियें आडै, डावर नयणा री टावर वय डाडै।
—ऊ का.
रू भे—वय, वग्र, वइ।

वयअभीत—स पु [स अभीत-वय] युधिष्ठिर। (अ. मा)

वयकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे)

वयगरण, वयगरणो—देखो 'व्ययकरणिक' (रू भे) (उ र)
उ०—मत्रि महामत्रि राणा स्त्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देव गरणा नायक दडनायक अग लेखक भाडागारिक।
—व स.

वयगरणी—देखो 'व्ययकरणिक' (रू. भे.)
उ०—क्षण एक जाइ वयगरणी, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण

एक जाइ हस्ति साला, क्षरण एक जाइ आयुध साला, क्षरण एक जाइ वाहरिण, क्षरण एक जाइ राजकुलि । —व. स.

ट्ठणी, वयट्ठबो—देखो 'वैठणी, वैठबो' (रू. भे)

उ०—सेज रमता मारुवी, खिरण मेल्हणी भजाइ । जारिणक विकसी केतकी, भमर वयट्ठउ आई । —ढो. मा.

वयट्ठियोडो—देखो 'वैठियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वयट्ठियोडी)

वयण—देखो 'वचन' (रू. भे)

उ०—१ चूर लियो श्री चोतरफ, केवी वयण कहत । वाघ केम छिपिया वचै, रुपियां धरम रहत । —वा. दा

उ०—२ गाठि री कोइ न लगे गरथ, सिगला हुइ जिरण थी सयण । धरम नै करम सहु मे धुरा, वडी वस्तु मीठी वयण । —ध. व ग्र

उ०—३ वयणै गाढा वडचढै, मूठी गाढा खग्ग । हजरती दरवारमे, विरतावीयै वग्ग । —गु रू. व.,

वयणडो—देखो 'वचन' (अल्पा , रू. भे)

उ०—वलिहारी गुरु वयणडै, वलिहारी गुरुमुख चद रे । वलिहारी गुरु नयरगडै, पेखहता परमाणद रे । —स. कु.

वयणदूठ-वि —अपने वचनो पर दृढ रहने वाला ।

उ०—साम धरम रत्ता पण साचै । वयणदूठ मुख झूठ न वाचै । —रा. रू.

वयणपुन्न-स. पु [स वचन+पुण्य] मुख से शुभ वचन बोलने पर होने वाला पुण्य । (जैन)

वयणसगाई-स स्त्री.—डिंगल काव्य का एक शब्दालकार विशेष जिसमे, किसी छन्द के प्रथम चरण के प्रथम शब्द के आदि मे जो वर्ण आता है वही वर्ण उस चरण के अतिम शब्द के आदि मे आता है ।

उ०—वयणसगाई वेस, मिल्या साच दोखरण मिटै । किरणयक समँ कवेस, थपियौ सगपरण ऊथपै । —र रू

वि. वि —वयरण सगाई के प्रमुख तीन भेद माने गये हैं—

(१) शब्द-वर्ण वयरण सगाई, (२) वर्ण सख्यक वयरण सगाई व (३) मिश्र वर्ण वयरण सगाई ।

(१) शब्द-वर्ण वयणसगाई—के र. ज. प्र के अनुसार व र रू के अनुसार तीन भेद हैं ।

"वयरण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अत । —र ज प्र

(१) आदिमेल—इसमे छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के आदि में होती है ।

(२) मध्यमेल—इसमे छन्द चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के मध्य मे होती है ।

(३) अन्तमेल—इसमे छद चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के अत मे होती है । इनके अतिरिक्त इसकी तीन श्रेणिया भी मानी गई है—

(१) अत्युत्तम आदि मेल ।

(२) अत्युत्तम मध्य मेल ।

(३) तथा अत्युत्तम अत मेल ।

(२) वर्ण सख्यक वयण सगाई—इसमे छद चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के नियम से न होकर चरणान्त वर्ण सख्या के हिसाब से होती है । इसके निम्नलिखित पाच भेद माने गये हैः—१ अत्युत्तम २ उत्तम ३ मध्यम ४ अधम ५ अधमाधम ।

(३) मित्र-वर्ण वयण सगाई अथवा 'असरोट'—इसके अन्तर्गत छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द में होने के स्थान पर उस वर्ण के मित्र वर्ण की आवृत्ति हो जाती है । मित्र वर्ण निम्न लिखित हैं—

(१) अधिक मित्र—आ, ई उ, ए, य, व, ।

(२) सम मित्र—ज-झ, ब-व, प-फ, न-ण, ग घ च-छ ।

(३) न्यून मित्र—त-ट, थ-ढ (ठ), द-ड ।

डिंगल काव्य मे वयरण सगाई का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है । परन्तु इसका निर्वाह अनिवार्य हो ऐसा नही है । इसका निर्वाह न होने से किसी छन्द मे दोष आ जाता हो ऐसी वात नही है । गीतो मे इसका प्रयोग अनिवार्य माना गया है । १४ वी शताब्दी की रचना मे इसका प्रयोग देखा जाता है । सभवत इसकी शुरुआत इससे पूर्व मे हो चुकी थी ।

रू भे —वयरणसगाई, वैणसगाई, वैणासगाई

वयद—१ देखो 'वियत' (रू भे)

२ देखो 'वैद्य' रू भे.)

उ०—विध सब करि जिम ग्रथ बतावै । ओखद ज तू कहै सुजि भावै । सुणै राज दत हुकम सनेही । अरज वयद कीधी फिर एही ।

—सू प्र

वयवधणा-स. स्त्री —चोहान वश की एक शाखा ।

वरकरार—देखो 'वरकरार' (रू भे)

उ०—राठोड़ा सोह वधी, वधी सोह हिंदुसथाना । वरकरार नवकोट, हसम राखिया खजाना । —गु. रू. व.

वयर—देखो 'वैर' (रू भे.)

उ०—१ म्हाराजा ग्रहा ससत्र भुज मुदारा, सो-गुणै जोस पडा कथन सुधारा । आज री वार लेसी वयर ऊधारा । देखजै आच करण सर घरै दुधारा । —पदमसिंह आढो

उ०—अनि करै कुण इण भाति, खित वयर काढण खाति । इक वयर घरा अवीह, सुजि वस दूजौ 'सीह' । —सू प्र

वयरणीओ-[स. पु] शत्रु, वैरी ।

उ०—वयरणीओ रहु वेगली, मुझ-सिउ म करु बात । आठ दीवाली आज थी, भमु लगी भव सात । —म का प्र

वयराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—१ धर ध्यान सुजाय लिये धिप मे । वयराग सुमाग हुवो विप में । —पा प्र

उ०—२ वयराग इ मन वालियउ रे, सयम पालइ सुद्ध रे । —स कु

वयरागर—१ देखो 'वैरागर' (रू भे.)

उ०—१ किहा करीतरु, किहा गुजाफल, किहा लोहागर, किहा वयरागर, किहा गुजाफल, किहा मुक्ताफल । —व. स.

उ०—२ उत्तम औसधि, सप्त धातुनी खाणि । परवत गधक हीगली, वयरागर वखाणि । —मा का. प्र

२ देखो देखो 'वइरागर' (रू भे)

उ०—१ वामसऊआ मुगवना मागलिया वयरागरा हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडवर नेत्रपट्ट घोतपट्ट राजपट्ट । —व. स.

वयरागरी—१ देखो 'वैरागर' (रू भे)

उ०—गजराज वध्यावलि, मोती जयकुंजरि, पदम पदमाकरि, तेजस्विता दिवाकरि, हीरा वयरागरि, प्रधान, स्वरणमदिरि, विवेक गूरजरि, विधि विवेकिया तणइ घरि । —व स.

२ देखो 'वइरागर' (रू भे)

वयरागियौ—१ देखो 'वैरागियौ' (रू भे)

उ० —देस्य धन जामात नै, कन्या परणावेह । व्रत लेस्यै वयरागियो मन धरि परम सनेह । —वि कु

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा, रू भे)

वयरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे.)

उ०—साहेली हे वयरागी गुरु वालहा, साहेली हे वाचइ सूत्र सिद्वात । —स कु

वयराडी-स स्त्री —एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

उ०—गावत वयराडी रागइ, अलापत सोमथ आगइ । —स कु

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रू भे)

वयराजीउ—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटा सारनाला खासटा अगिहिल कवीच सजरामा मदवी फूलपगरीया सारीपी तिलवास गरभसूत्र राजिउ वयराजीउ महिद उरउ । व स

वयराट—१ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

२ देखो 'विराट' (रू भे)

उ०—वयराट राणी मनि देवि आणी, गई तेह नइ लेविणु मद्य पाणि । —सालिसूरि

वयरि, वयरी—देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—१ राउ बाभण ना वयरि मारइ । —उ र

उ०—२ वयरि वारिउ ऊगता, वली वधारि वयर । रोसि रथ राखी रहिउ आदित अे कुण पइरि । मा का प्र.

उ०—३ जिण दीहे पावम झरइ, समनेहा सुख होइ । तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ । —ढो. मा

उ०—४ हू क्षणि क्षणि क्षीणी थइ, बाधी वयरणि आस । बाधइ वली वक्षस्थली, निसि नइ उर-निसास । —मा. का प्र

उ० — ५ मोटउ कूडउ मागसिरि, वली विचारी जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी काइ विगोइ । —मा का प्र

(स्त्री वयरण, वयरणि, वयरणी)

वयळ—देखो 'वयल' (रू भे) (अ. मा)

उ०—१ घण खळ असि झोकै खग धाऊ । वयल-मडळ नट कुडळ वणाऊ । —सू प्र.

उ०—२ दूझड़ा रायपाळा दुझळ, वयळ धरा सिर दुंद वण । ऐ कहै करो खग झट इसी, रवि वाळाणै हाथ रिण । —सू प्र.

वयसधि-स पु. [स] दो अवस्थाओ के बीच की स्थिति ।

उ०—सु इहा तौ म वाळक अवस्था माहे सूऐ छै । नै यौवण आयै जागै छै । इहि विधि की सधि सु वयसधि कहावै । —वेलि टी.

वयस-स पु [स वयस्] (स्त्री वयसा) १ उम्र ।

२ जवानी ।

[स वयस्य] ३ साथी मित्र ।

४ सहयोगी ।

५ हम-उम्र ।

रू भे —वयस, वेस वैस वयस्य, वेस, वै' ।

वयसाख—देखो 'वैसाख' (रू भे)

वयसाखी—देखो वैसाखी' (रू भे)

उ०—वीवइ दीवाली, कालू कात्तिकी,वरस वयसाही नितु बधामणउं, पेटि पेटि आग्रहणी । —व स.

वयस्थविर-वि साठ वर्ष की अवस्था वाला । (जैन)

वयस्य—देखो' वयस'

वयाणौ-स पु [देशज] विवाह मे गीत गाने के लिये आई स्त्रियो में बाटी जाने वाली मिठाई ।

वयार—देखो 'वयार' (रू. भे.)

उ०—देखौ वनरईया फूलन लागी मा, आगम वसत वहार कै। और की और भई छिव वन की, कौतक झोलै वयार कै।
—रसीलो राज

वयाळ—देखो 'व्याळ' (रू भे.)

वयोधर-वि [स. वयोधस्.] (स्त्री. वयोधरी) युवा, तरुण।

उ०—निसास-रोज आननी उरोज धारनी नही। क्रसोदरीय कामिनी विमा वयोधरी नही।
—ऊ का

वयोम—देखो 'व्योम' (रू भे)

उ०—साहण समद ऊछळिय सारि, साइयर कउण सकइ सहारि। रहचडियउ आवइ रीस रोम, वाजा सवहि फाटइ वयोम।
—रा ज सी

वयोवरध, वयोव्रद्ध वयोव्रध, वयोव्रिध-वि. [स वयोवृद्ध] जो अवस्था, अनुभव और ज्ञान में वडा हो, वृद्धपुरुष, वूढा।

वरग-स पु [स वर+अगम्] १ शिर, मस्तक।

२ उत्तम शरीराग।

३ सुडौल शरीर।

४ देखो 'वराग' (रू भे.)

[स वर+अग] ५ हस्ती, हाथी।

६ देखो 'वरग' (रू भे)

उ०—किता वप वरगा उडै कट किरमरा, सघर घर लडै उतवग वोलै सरा। चापडै मचै रिण निसाचर वनचरा, वीर कौतिक रचै जाण वादीगरा।
—र रू.

उ०—घैघमै आरीठ घटा आवटै मथाण धाण, उडै फाड कूभाथळा वरगा उरग। राकसा विभाडै पाडै आखाडै वजाडै रूक, 'नाथ' री सूरा रमाडै ऊपाडै निहग।
—राव सत्रसाल री गीत

वरगन—देखो 'वारगना' (रू भे.)

उ०—वरगन कठ धरै वरमाळ, रूका उडी सीस चढै रुडमाळ। अपच्छर सूर जोडै हिज आय, जई रथ वैठि वसै स्रगि जाय।
—सू प्र

वरगी-वि —वरग का, वरग सम्वन्धी।

रू भे.—वरगी।

वरच-अव्य [स] १ अपितु, वल्कि।

२ परतु, किन्तु, लेकिन।

३ देखो 'विरचि' (रू. भे)

वरड-स पु [स] १ समूह, झुण्ड।

२ समुदाय।

३ घास का ढेर, गट्ठर।

४ चेहरे पर होने वाले मुहासे।

५ जेव, खीसा।

६ वसी की डोर।

[स. वितड] ७ फीलखाने मे दो लडाके हाथियों के वीच वनाई जाने वाली दीवार जो इनको लडने से रोके।

८ हाथी, गज।

९ देखो 'वरडौ' (मह., रू भे.)

रू भे—वरडक।

वरंडक-स पु. [स] १ हाथी पर रखी जाने वाली अवाडी, होदा।

२ मिट्टी का टीला।

३ दीवार।

४ देखो 'वरड' (रू भे)

वरडा-स स्त्री [स] छुरी, खजर।

२ सारिका पक्षी।

३ लैंप की वत्ती।

वरडी—देखो 'मिडी' (रू. भे)

उ०—१ पानि तणी पग्गिरु देहुरी तण उमहरु, चउकी चउ खडे झलहलइ, उआरे पाणी खलहलइ, पगथिआरा सारुन्यारा, वरडी उदार लहरीमाला उच्छलइ, मत्तवारण उपरि पाणी वलइ।
—व स

उ०—२ भीवै मन माहे जाण्यो, वावडी माहे किसूं करै छै। यो जाण वरडी रा छेकडा माहे जोवै। तठै देखे तो अस्त्री छै।
—जगडा मुगडा भाटी री वात

३ देखो 'आडी' (रू. भे)

वरडौ-स पु [स वरड] वरामदा।

उ०—निवड लोह तणी स्र खला तोडी, पुतार पाडी, कपाट संपुटु फाडी, पडिहारु गाजी, चरण सवघीया त्रिगडा भाजी, वरडा पाडतउ, माणस मारतउ राउत रसाडतउ।
—व स

रू भे—वरडो, विरडो।

मह.—वरड।

वर-वि [स वर] १ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ।

२ उत्तम, वढकर, श्रेष्ठ।

उ०—१ लाघै विखमी चालता होजी, वाट अनड वर वीर प्रवल पराक्रमी।
—वि कु

उ०—२ वामा अग वणी वर सुदरि, कनकलता जाणी कळप्पतरि।
—गु रू. व.

३ चुनने योग्य, योग्य, लायक।

४ दानी। (५) सुदर। (६) भला।

स. पु. [स. वर] १ पति, भरतार। (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ मारू नू आखइ सखी, एह हमारी बुज्झ। साल्ह कुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुंदरि सउ वर तुज्झ। —ढो मा

उ०—२ बेटी इतरी मोटी हुई नैं इण रैं वर री खबर ही नहीं। न जाणा ग्वो किना कठी ही जोगी सन्यासी हुय गयो। —नैणसी

उ०—३ वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देअराणी हसइ, नणद नरनरावइ सासु काम करावइ। —व. स

२ वधू-प्रार्थी।

३ स्वामी, मालिक।

उ०—वीर विचखण क्रीत तणी वर, ढाहण खाग धरिंदा ढूको। 'नाथ' तणी 'सुरतेस' नभे नर, चित ठीक नही कुळ रीत न चूको। —ठाकर सूरतसिंह चहुवाण री गीत

४ दामाद, जमाता।

५ देवी-देवताओ से अभीष्ट वस्तु पाने के लिये की जाने वाली प्रार्थना, याचना, विनय, उपासना।

६ उक्त प्रकार से प्राप्त होने वाली सतुष्ठि।

७ देवी-देवताओ से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद, वरदान, अनुग्रह, सिद्धि।

उ०—१ मारग माहे पाणी नही। कटक मरण लागो। तद जती नू कह्यौ-पाणी पैदा कर। सु जती नू खेतपाळ रो वर हुतो, रोही माहे जाइ खेत्रपाल जी री आराधना करी। —नैणसी

उ०—२ इक धारण तो जिम चित आवै। पूजे भेव जिको वर पावै। —सू प्र

८ अभिलाषा, इच्छा कामना।

९ भेंट, पुरस्कार।

१० चुनाव य पसद करने की क्रिया या भाव।

११ चयन, चुनाव।

१२ वरण करने, अपनाने, की क्रिया या भाव।

१३ दहेज।

१४ लपट व्यक्ति।

१५ गोरैया पक्षी।

[स वर] १६ केसर। (हि को.)

१७ हल्दी।

१८ दाल चीनी।

१९ अदरक।

२० सुगध तृण।

२१ मौलसिरी।

२२ सेंधा नमक।

२३ मधु मक्खी का छाता।

२४ गुग्गुल।

२५ श्रीकृष्ण।

२६ दो लघु के गणण के भेद का नाम। (डिं को)

[देशज] २७ रहट के माल की एक लडी।

प्रत्य. [फा] १ सज्ञा शब्दो के आगे लगने वाला एक प्रत्यय।

ज्यू —ताकतवर।

अव्य.—२ अगर, यदि, और।

रू भे.—वर, वरु।

वरउमिया—स पु [स उमा-वर] महादेव, शिव।

वरकठ—स पु [स] सुग्रीव।

उ०—वरकठ वामा घरी धामा किता कामा बद किया। भय मेट भारी धनुसधारी अरज सारी येह। —र रू.

वरक—स पु [फा वरक.] १ सोने या चादी को कूटकर बनाया हुआ बहुत पतला झिल्ली नुमा पत्तर जो मिठाइयों पर लगा कर खाया जाता है तथा औषधियो मे काम आता है।

२ पत्र, पृष्ठ, पन्ना।

३ पत्ता, दल।

४ टिकट, प्रयोग-पत्र।

[स. वरक] ५ इच्छा, चाह, वर।

६ चुगा।

७ जगल में उत्पन्न होने वाला मूग, वन-मूंग।

८ तोलिया, दस्तर (डस्टर), झाडन।

९ कपडा, वस्त्र।

१० नाव के ऊपर की छाजन।

११ देखो 'विरक' (रू भे.)

रू भे.—वरक, वरख, वरग, वरग।

वरकरार—देखो 'बरकरार' (रू भे)

उ०—साकर प्रथीराजोत। समत १६७२ अरटियों गाव २ सूं वरकरार। समत १६८४ पूनासर। —नैणसी

वरकिंगकमेटी—स स्त्री. [अ] कार्य-कारिणी-समिति।

वरकस—देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—ओथै तेरस ऊजळी, माह उजाळै पक्ख। 'ईदावत' ईजत सटै, गो वासटै वरक्ख। —रा. रू.

वरक्रतु, वरक्रत, वरक्रतू, वरक्रित—स पु. [स वरक्रतु] इन्द्र।

(ना. मा, ह. ना मा.)

वरख—देखो 'वरस' (रू भे)

वरखणो, वरखवौ—देखो 'वरसणो, वरसवौ' (रू. भे.)

उ०—१ वरस बि च्यारि न मेह वरखि । पडै घर काळ सगो लगि पखि । —रामरासो

उ०—२ बेऊ चतुर सुजाण, पेम-रग-रस पिया । वरखा-रुति घण वरख जाणि कु हरखिया । —ढो मा

वरखणहार, हारौ (हारी), वरखणियौ—वि० ।

वरखिम्रोडो, वरखियोडो, वरख्योडो,—भू० का० कृ० ।

वरखीजणो, वरखीजवौ—भाव वा० ।

वरखम–स पु. [स वर्ष्मन्] १ शरीर, देह । (श्र मा)

२ ऊचाई, माप ।

वरखा—देखो 'वरसा' (रू. भे)

उ०—१ माळवणी ढोलउ कहइ, हिव म्हां मीख करेह । ऊन्हाळउ वरखा विन्है, रहिया तुझ्क सनेह । —ढो मा

उ०—२ सुर तैंतीसू साथ लै, सुरपत साम्हो आय । पोहपन की वरखा करी, लीधौ ग्राह वधाय । —गजउद्धार

उ० —३ इसी समइयौ वरण रह्यौ छै, वरखा मडने रही छै । विजळी झिळमिळ करने रही छै, वादळा झड लायो छै । —रा सा स.

वरखामापक–स पु [स वर्षा+राज. मापक] वर्षा मापने का एक यन्त्र, रेनगेज ।

वरखारत, वरखारित, वरखारिति, वरखारितु वरखारुत वरखारुति—देखो 'वरसारितु' (रू भे)

उ०—१ वरखारितु लागि विरहणी जागी आभा झरहरै बीजा आवास करै । —रा सा स.

उ०—२ बेऊ चतुर सुजाण पेम-रग-रस पिया । वरखारुति घण वरख जाणि कु हरखिया । —ढो मा

वरखियोडो—देखो 'वर्सियोडो' (रू भे)

(स्त्री वरखियोडी)

वरख्यात–स पु. सरोवर, तालाव । (ह ना मा.)

रू भे—वरख्यात

वरग–स पु [स. वर्ग] १ श्रेणी, जमात. ।

२ जति, समुदाय, समाज ।

३ एक ही समान धर्म वाली वस्तुओ या प्राणियो का समूह, झुड, दल, टोली ।

उ०—१ इसे हीज तत मे कुंवरसी चढियो सो जाय साढा रा वरग सरव घेरिया । रैंवारी वीस पच्चीस हाथ आया सो मारिया । —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ ताहरा पाबूजी कह्यो-थाई! हू तोनूं दोई मूंगरै री सांढा रा वरग आण देईस । —नैणसी

उ०—३ सो इहा रै गाव भेंस साढा रा वरग घणा । सो सांढा रै लारै रैंवारी रहै । सो अति अटावरा रहै, अपजोरा हाले । कही नू खातर में न आणै । सो जिके ही गाव जाय वग्गा री पीछो करै, तिकै गांव च्यार पुहर री तिसवारी पडै ।

—कुवरसी साखला री वारता

४ किसी उद्देश्य विशेष के लिये बना हुआ कुछ व्यक्तियो का दल, पक्ष ।

५ निश्चित प्रकार समूह मे किसी एक वर्ग मे उच्चरित प्राणी का नाम जिसकी मान्यता पशु, पक्षी के नाम से की जाती है ।

(फलित ज्योतिष)

७ विभाग, भाग ।

८ न्याय शास्त्र के नौ या सप्त पदार्थ विभाग ।

९ व्याकरण मे एक स्थान से उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यजन, वर्णों का समूह ।

१० ग्रथ विभाग, परिच्छेद, प्रकरण, अध्याय ।

११ दो समान अको या राशियों का गुणनफल ।

१२ वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौडाई समान हो, समकोण ।

१३ शक्ति, ताकत ।

१४ शत्रु दल ।

१५ पत्र, पत्ता ।

१६ पाच री सख्या । * (डि को)

वि.—पाच ।

रू भे.—वग वग, वरग, वाग, वग वग, वरग, वाग, ।

वरगडो, वरगड्ड–स. पु —१ सिंह । (सभा)

२ देखो 'वरगडो' (रू. भे)

वरगफळ–स पु [स वर्गफल] किसी अक को उसी से गुणा करने पर आने वाला गुणनफल ।

वरगमूळ–स पु [स वर्गमूल] किसी वर्गांक का वह अक जिसे यदि उसी से गुणान करें तो गुणन का वही वर्गांक हो ।

ज्यू०—४×४=१६ । १६ का वर्ग मूल ४ है ।

वि वि —ये वास्तविक और काल्पनिक दोनो प्रकार के होते हैं ।

वरगळणो, वरगळवौ–क्रि अ.—१ गुमराह, होना, भ्रम मे पडना ।

२ उत्तेजित होना, भडकना ।

वरगळणहार, हारौ (हारी), वरगळणियौ—वि० ।

वरगळिम्रोडो, वरगळियोडो, वरगळ्योडो—भू० का० कृ० ।

वरगळीजणो, वरगळीजवौ—भाव वा० ।

वरगळणो, वरगळवौ—रू० भे० ।

वरगळाणो, वरगळावो–कि स [राज० 'वरगळणो' क्रि का प्रे. रू]
१ गुमराह करना, भ्रम मे डालना ।
२ उत्तेजित करना, भडकाना ।
वरगळाणहार, हारौ (हारी), वरगळाणियौ—वि० ।
वरगळायोडो - भू० का० कृ० ।
वरगळाईजणो, वरगळाईजवो—कर्म वा० ।
वरगळाणो, वरगळावो—रू० भे० ।

वरगळायोडो–भू का कृ १ गुमराह किया हुआ, भ्रम मे डाला हुआ
२ उत्तेजित किया हुआ, भडकाया हुआ ।
(स्त्री वरगळायोडी)

वरगळियोडो–भू का कृ.—१ गुमराह हुवा हुआ, भ्रम मे पडा हुआ
२ उत्तेजित हुवा हुआ, भडका हुआ ।
(स्त्री वरगळियोडी)

वरगिरजा–स. पु [स गिरिजा-वर] महादेव, शिव ।

वरगोत्तम–स पु [स वर्गोत्तम] राशियो के वे श्रेष्ठ अश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं। (फलित ज्योतिष)

वरग्ग—देखो 'वरग' (रू भे)
उ०—वदै असुर गढ न दू वरग्गा । कूची दे आपरा करग्गा ।
—सू प्र

वरघू–स पु देखो 'वरघू' (रू भे)
उ०—सबद उग्र करनाळ सवाई । सुर वरघू तुरही सहनाई ।
—रा. रू.

वरडणो, वरडवो—देखो 'वरडणो, वरडवो' (रू भे.)
उ०—अधपत "भीम" कुमत्री आटै, वरडै तीजी वेळा । 'माधव' जिसा खीजाया मामी, मडीया ऊवळमेळा । —नवलजी लाळस
वरडणहार, हारौ (हारी), वरडणियौ—वि० ।
वरडिओडो, वरडियोडो, वरडयोडो—भू० का० कृ० ।
वरडीजणो, वरडीजवो—भाव वा० ।

वरडियोडो—देखो 'वरडियोडो' (रू भे)
(स्त्री वरडियोडी)

वरडी–स स्त्री [देशज] १ लाल रग की मिट्टी विशेष जिस पर पानी बडा स्वच्छ दिखाई देता है ।
उ०—तिको तळाव किण भात रो छै। राती वरडी रो। पाडरो नीर। पवन रो मारियो फीण आछटतो थको झोला खाय रह्यो छै।
—रा. सा स.
२ देखो 'वरडी' (रू भे)
उ०—दोय तो म्हानै छाळी दीज्यो दोय दीज्यो लरडी । काळी भूरी दोनू दीज्यो एक वणाला वरडी । —लो गी

वरच—देखो 'वरचस' (रू. भे)

वरचणो, वरचवो—देखो विरचणो, विरचवो' (रू. भे)
उ०—सवत चौद पच्यासीइ ए, वरचीउ चरी रसालू ए, अचल वधामणु ए। —हीराणद सूरि
वरचणहार, हारौ (हारी), वरचणियौ—वि० ।
वरचिओडो, वरचियोडो, वरच्योडो—भू० का० कृ० ।
वरचीजणो, वरचीजवो—कर्म वा० ।

वरचस–स पु [सं वर्चस्] १ प्रकाश, उजाला, तेज ।
(ना. मा., ह ना मा)
२ कान्ती, दीप्ति ।
३ रूप, शक्ल ।
४ शक्ति, पराक्रम ।
५ विष्ठा ।
६ वृक्ष, पेड ।
रू भे—वरचस, वरच ।

वरचियोडो—देखो 'विरचियोडो' (रू भे)
(स्त्री वरचियोडी)

वरछणो, वरछवो–क्रि. स. [स व्रश्चम्] १ घाव करना, काटना ।
उ०—धीम पिंड वरछियो, वेध माती धरा, खार खुद राम रिण हाथ लागा खरा । पाण तज मेलिया माण हुय पाधरा, मिळै वहवाट ग्या थाट मडोवरा । —द दा
२ चीरना, फाडना ।
३ काट कर अलग अलग करना ।
४ देखो 'विरचणो, विरचवो' (रू भे)
वरछणहार, हारौ (हारी), वरछणियौ - वि० ।
वरछिओडो, वरछियोडो, वरछयोडो—भू० का० कृ० ।
वरछीजणो, वरछीजवो—कर्म वा० ।

वरछियोडो–भू. का कृ—१ घाव किया हुआ, काटा हुआ । २ चीरा हुआ, फाडा हुआ । ३ अलग-अलग किया हुआ ।
४ देखो 'विरचियोडो' (रू भे)
(स्त्री वरछियोडी)

वरजण—देखो 'वरजन' (रू भे.)
उ० —महिपत वूढै मेलियो, वरजण कज असवार । मूक लोक जादा करै, हमैं मैं खादी हार । —पा प्र

वरजणीक—देखो 'वरजनीक' (रू भे.)

वरजणो, वरजवो—देखो 'वरजणो, वरजवो' (रू भे)
उ०—१ खैर नाखै जुगल जोदपुर खजानै, दुजल हव जका नै वरज

दीजै। श्रीत रा मडप री नीव गाढी करण, किसन रा पोतरा मदत्त कीजै। —कविराजा बांकीदास

उ०—२ जोतिस सगुन विहू विध जाणै। पोह ज्या वरजै लेख प्रमाणै। —सू. प्र.

उ०—३ दिन रयण सुख विधि वरजि, हिम दुख गरजि करण रुग गोहुए। —रा रू.

उ०—४ एह विख्याता नीलज निसि दमयती नि सरजी। प्राकृत नारी नीपाईनि सृष्टि जेणि नवि वरजी। —नलाख्यान

वरजणहार, हारौ (हारी), वरजणियौ—वि०।

वरजिओडौ, वरजियोडौ, वरज्योडौ—भू० का० कृ०।

वरजीजणौ, वरजीजवौ—कर्म वा०।

वरजत–वि [स वर्ज्य] जो निषिद्ध हो, निषेध करने योग्य।

स. पु.—पाप। (अ मा)

वरजन–स. स्त्री [स. वर्जनम्] १ निषेध करने की क्रिया या भाव।

२ मनाही मुमानियत, निषेध, रोक।

३ व्यवधान, बाधा, अवरोध।

४ परित्याग, त्याग।

५ वैराग्य, विरक्ति।

रू भे—वरजण।

वरजनीक—देखो 'वरजनीक' (रू. भे)

वरजाग, वरजागी—देखो 'वजराक' (रू. भे)

उ०—१ खाग श्राग वरजाग, प्रिसण वाळै परजाळै। सत्रवाट कुळवाट, पाट परिया उजवाळै। —गु. रू ब.

०उ—२ जोऐ जुध रीस चढी वरजागि। उठी घ्रत सींचिया जाणिक श्रागि। —सू. प्र.

वरजाणौ, वरजावौ—देखो 'वरजाणौ, वरजावौ' (रू भे.)

वरजाणहार, हारौ (हारी), वरजाणियौ—वि०।

वरजायोडौ—भू० का० कृ०।

वरजाईजणौ, वरजाईवौ—कर्म वा०।

वरजायोडौ—देखो 'वरजायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वरजायोडी)

वरजियोडौ—देखो 'वरजियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वरजियोडी)

वरजिस–स स्त्री [फा. वर्जिश] १ ऐसा कार्य जिसको करने मे शारीरिक श्रम अधिक लगता हो।

२ कसरत, व्यायाम।

३ अभ्यास, प्रयास।

वरजोर—देखो 'वरजोर' (रू. भे)

उ०—'अजमाल' सुणिजै एह, कर जोट एम कहेह। इण माह की हुइ श्रोर, जग किया हुम वरजोर। —सू प्र.

वरजोरा–स स्त्री [देश] राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

वरजोरी—देखो वरजोरी' (रू भे)

वरज्या—देखो 'अज्या' (रू भे)

वरट–स. पु [स. वरट] (स्त्री वरटा) १ हंस।

२ बरैया।

३ जिर्रा अनाज।

४ कुन्द का फल।

वरटापति–स पु [स. वरटा+पति] हंस।

उ०—वरटापति सुदर तां दीठू कनक समू सरीर। एक चरण पासमाहि (ली) धो, वाजु श्रवनी माही। —नळाख्यान

वरडौ, वरढौ—देखो 'वढौ' (रू. भे)

वरण–स पु [स वरण, वरण] १ इच्छा श्रौर रुचि के अनुसार किया जाने वाला चयन।

२ कन्या के योग्य वर के चुनाव की क्रिया।

उ०—सिणगारी मग्राह म, विस कामणि वरियाम। वरि श्राई हाला वरण, करण, महा जुध कांम। —हा. झा

३ उक्त चुनाव के पश्चात कन्या द्वारा वर को वरमाला डालने की क्रिया, अंगीकार, विवाह, शादी।

उ०—तरण रथ थिकत घण वहै साग श्रतर, अडर कर कर मरे वरण श्रवरी। पड़ै धड गजाराण कहै इम पचाराण, गजाराण कठै रिण सोभ गवरी। —पीथो सादू

४ श्रादर, सत्कार।

५ यज्ञ श्रादि के लिये उपयुक्त ब्राह्मण का चुनाव व उसका श्रादर-सत्कार।

६ उक्त ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान।

७ पूजन, अर्चना, धर्मानुष्ठान।

८ याचना।

९ ढकने या लपेटने की क्रिया भाव।

१० श्रावरण, श्राच्छादन।

११ पर्दा, चादर।

१२ शहरपनाह की दीवार, प्राकार।

१३ घेरा।

१४ पुल, सेतु।

१५ श्रार्या गीति या स्कधाण (स्कधक) का भेद विसेश।

१६ गाने मे स्वर विस्तार की क्रिया—इसके चार भेद स्थायी,

आरोही, अवरोही, व सचारी ।
१७ पवार वश की एक शाखा ।
[स अवरण-भागुरे अलोप] १८ ऊंट ।
[स वर्णिणी] १९ स्त्री, पत्नी ।
[स वर्ण]—२० रगरूप ।

उ०—१ कथडा झालि किरमाळ कैडो करा । सार झड वरण सो सोक सैला सरा । —हा झा.

उ०—२ भुज विसाळ लकाळ, वरण झाळाहळ सुदर । भरि माते भाद्रवै, जाणि ऊगो भासकर । —गु रू व.

२१ अक्षर, स्वर ।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सव लघु देह । सव वरण वाण सरीर, इम कहत दुरत अधीर । —रा रू

२२ अकारादि शब्दों के चिन्ह या सकेत ।
२३ प्रार्थना, स्तुति ।
२४ गुण ।
२५ आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य ममाज के चार विभाग । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
२६ भेद, किस्म ।
२७ यश, कीर्ति । (अ मा.)
२८ देखो 'वरुण' (रू भे) (अ मा)

उ०—आवेरी "जैसाह" सूरसागर आसम्मै, वरण दिसा वाग सूं, घणी वूंदी वड धम्मै । 'अभा' आदि उमराव, राण वाळा मन रक्खै, वरण इद्र घनवत, इसौ "अगजीत" निरक्खै । —रा रू

२९ देखो 'व्रण' (रू भे)
३० देखो 'वरणन' (रू भे.)

उ०—कान सुणण भागवत तणी कथ । वरणव करि अवरण वरण । —ह ना. मा.

रू भे.—वरण, वरन, वरन्न, व्रण, व्रन, व्रन्न, वन, वरन, वरन्न,

वरणग्रढार—देखो ग्रढारवन्न'

वरणखडमेरु-स पु [स. वर्ण-खडमेरु] छन्द शास्त्र या पिंगल की वह क्रिया जिससे विना मेरु वनाये वर्ण-वृत्त व मात्राएँ ज्ञात की जा सकती है ।

वरणजथा-स स्त्री.—डिंगल गीत रचना का एक नियम विशेष जिसमे गीत के प्रत्येक द्वाले मे नवीन वर्णन किया जाता हैं ।

वरणज्येस्ठ-स पु [स ज्येष्ठवर्ण] सव वर्णों से वडा, ब्राह्मण वर्ण ।

वरणण—देखो 'वरणन' (रू. भे)

उ०—१ वर विचार मनहू कहू, वरणण सुद्ध वणाय । तगसीरो छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय । —र ज. प्र

उ०—२ व्हौ मिळण सीता परसपर हर, घणा उतसव उमड घर घर । वखत जिण आमोद वरणण, को करै कवराज । —र. रू.

वरणणौ, वरणवौ—क्रि स [स वर्णनम्] १ वर्णन करना, (उ. र.)

उ०—१ सवळ करण अगे कुरुपत उच्चरणौ । कुळ राठोड वळे "मोडो" कव वरणै । —पा प्र.

उ०—२ मानव मनसा यूं कहै वरणै जरी जराय । रचना कहु (न) विरच की, उपमा कही न जाय । —गजउद्धार

२ उल्लेख करना ।

उ०—सोई ग्रथा थी सुण्यो, जोई वरणिय जाण । मोई जोई धर सुकवि, आदि ग्रत ग्रहिनाण । —डिं. ना मा.

३ रचना करना, लिखना ।

उ०—गणपति मोहि सुमत्ति दै, सुभ अख्यर ततमार । मो मत सारू वरणवूं, हरि गुण ग्रथ अपार । —गजउद्धार

४ व्याख्या करना ।

उ०—नारकीइ वरणवउं हउ, जेहा नारकीना दुख सभारता स्मरता हूता भव्वाण भव्य जीव हुइ हरि विस्णु•हर ईस्वर तेह नी रिद्धि सम्रद्धि लक्ष्मीनउ विस्तार उद्धोसं उद्धरसण रोमाच जणाइ करइ । —पष्टीशतक प्रकरण

५ प्रशसा करना, सराहना ।
६ निवेदन करना ।
७ चित्रण करना ।

वरणणहार, हारौ (हारी), वरणणियौ—वि० ।
वरणिग्रोडौ, वरणियोडौ, वरण्योडौ—भू० का० कृ० ।
वरणीजणौ, वरणीजवौ—कर्म वा० ।
वरणणौ, वरणवौ, वन्निजणौ, वन्निजवौ, वन्नीयणौ, वन्नीयवौ —रू भे ।

वरणत—देखो 'वरणन' (रू. भे) (ह ना मा)

वरणदूत-स पु —पत्र ।

उ०—इण रीति रो आदेम सुणि टीले दूत रै माथ सत्कार रौ वरणदूत तौ अगाऊ भेजियौ । —व. भा.

२ लिपि ।

रू भे —वरणदुत ।

वरणन-स पु [स वर्णन] १ किसी विषय, व्यक्ति, घटना, दृश्य आदि का विस्तार पूर्वक कथन, वृत्तान्त, हाल, वयान ।

उ०—अलख पुरुष आदेस, देस वचाय दयानिधे, वरणन करू विसेम, सुहृद नरेस 'प्रतापसी' । —दुरसौ आढौ

२ रगने की क्रिया या भाव, चित्राकन ।
३ व्याख्या, उल्लेख ।

४ निवेदन, स्तुति, प्रार्थना ।
५ प्रशसा, श्लाघा, सराहना ।
६ वखान ।
७ लेखन ।
रू भे —वरणण, बरणन, वरणाव, वरण, वरणण, वरणत, वरणव, वरणाम, वरणाव ।

वरणनस्ट—स पु [स वर्ण-नष्ट] प्रस्तार के अनुसार वर्ण-वृत्तो के किसी रूप को लघु गुरु के विचार से जानने की, छन्दशास्त्र की एक क्रिया ।

वरणना—स स्त्री [स वर्णनम्] गुण कथन ।

वरणनास—स पु. [स वर्णनाश] व्याकरण मे, उच्चारण की कठिनता या किसी अन्य कारण से किसी शब्द के अक्षर या वर्ण के लुप्त हो जाने की अवस्था या स्थिति । (निरुक्तकार)

वरणपताका—स. स्त्री [स. वर्णपताका] वर्ण वृत्तों के भेदो मे से लघु-गुरु जानने की क्रिया । (पिंगल)

वरणपात—स पु. [स.] किसी वर्ण (अक्षर) का शब्द मे से लुप्त होने की क्रिया, वर्णनाश ।

वरणपाताळ—स पु [स वर्ण—पाताल] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे किसी सख्या के वर्ण के वृत्त और उन वृत्तो में से लघ्वादि, लघ्वत व गुर्वादि, गुर्वंत एव सर्व लघु ज्ञात किये जा सकते हैं ।

वरणपास—स पु [स. वरुण-पाश वृक्षभक्ती=पाशवरण] १ वरुण देव, वरुण । (अ मा)
२ समुद्र मे रहने वाला एक भयकर जलजतु जिसे अग्रेजी मे शार्क कहते हैं ।
३ वरुण का एक अस्त्र ।
४ ऐसा पाश या फदा जिससे बचना बहुत कठिन हो ।

वरणपुर—स पु [स वरुण-पुर] १ वरुणलोक ।
२ शुद्ध राग का एक भेद । (सगीत)

वरण प्रत्यय—स पु [स वर्ण प्रत्यय] छन्दशास्त्र या पिंगल की वह प्रक्रिया जिससे वर्ण-वृत्तो के भेद, स्वरूप तथा सख्याएँ जानी जाती हैं ।

वरणप्रस्तार—स. पु [स वर्ण प्रस्तार] छदशास्त्र की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तो के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदो के स्वरूप इस प्रकार होगे ।

वरणमरकटी—स. स्त्री [स वर्णमर्कटी] पिंगल या छन्दशास्त्र मे एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितने वर्णो के कितने वृत्त हो सकते हैं और उनमें कितने लघ्वादि, लघ्वत तथा गुर्वादि गुर्वंत तथा सब वृत्तो को मिलाकर कितने वर्ण, कितने गुरु-लघु, कितनी कलाएँ और कितने पिंड होगे ।

वरणमाता—स. स्त्री. [स वर्णमातृका] १ सरस्वती ।
२ लेखनी ।

वरणमाळा—स. स्त्री [सं वर्णमाला] १ किसी भाषा या लिपि के वर्णों (अक्षरो) की श्रेणी या लिखित सूची ।
२ तेसठ की सख्या * (डिं को)
[स. वरणमाला] ३ वह माला या पुष्पहार जो दुलहिन दुल्हे के गले मे पहनाती है ।

वरणव—देखो 'वरणन' (रू भे)

वरणविचार—स पु [स वर्णविचार] आधुनिक व्याकरण का वह अश जिसमे वर्णों के आकार, उच्चारण और सधि आदि के नियमो का उल्लेख हो ।

वरणविपरज, वरणविपरय्य—स. पु. [स वर्णविपर्यय] निरुक्त के अनुसार किसी शब्द के वर्णो मे उलट-फेर होने की स्थिति ।
(भाषा विज्ञान)
ज्यू—पकडणो=कपडणो ।

वरणव्यवस्था—स स्त्री [स वर्णव्यवस्था] हिन्दुओं की समाज-व्यवस्था जिसके अनुसार समाज को चार भागो मे विभाजित किया गया है। वे चारो भाग हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र ।

वरणव्रत—स पु [स वर्णवृत्त] वह पद्य जिसके चरणो में वर्णों की सख्या व लघु गुरु के क्रम मे समानता हो ।
वि वि —मात्रावृत्त का उल्टा ।

वरणसकर—स पु [स. वर्णसङ्कर] १ वह व्यक्ति, जाति या कुल जो विभिन्न जाति के स्त्री-पुरुष के सयोग से उत्पन्न हुवा हो। (दोगला)
२ रगो का मिश्रण ।

वरणसमाम्नाय—स पु [स वर्ण-समम्नाय] वर्ण माला ।

वरणसरिक—स पु [स वर्ण+सरिक] एक आभूषण विशेष। (व स)

वरणसूची—स स्त्री [स वर्ग-सूची] छन्दशास्त्र या पिंगल की एक क्रिया जिससे वर्ण वृत्तो की सख्या की शुद्धता, उनके भेदो मे आद्यत लघु और आद्यत गुरु की सख्या जानी जाती है ।

वरणस्रेस्ठ—स पु [स वर्ण-श्रेष्ठ] सब वर्णों मे श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।

वरणाम—देखो 'वरणन' (मह , रू. भे)
उ०—धर रूप भुजा असमान धरे। कव 'पाल' तणो वरणाम करे ।
—पा. प्र.

वरणा—स स्त्री. [स. वरुणा] १ काशी के उत्तर मे बहने वाली एक छोटी नदी ।

२ पजाव की एक नदी, वरुणा नदी ।

३ एक ग्रार्य जन पद ।

उ०—विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट, केकयमडल ।
—व. स.

वरणागियौ—स. पु [स वर्ण] रूप-रग, वर्ण ।

उ०—तास वरणागिये दीठि मनह तणौ । मलफियौ सामहौ, कळह बेढीमणौ ।
—द्वा. झा

वरणाधिप—स. पु [स वर्णाधिप] ब्रह्मादि वर्णों के अधिपति ग्रह ।
(फलित ज्योतिष)

वरणायव—स पु—१ सूर्य २ इन्द्र ३ वरुण ४ जल ।

वरणाव—देखो 'वरणन' (रू भे)

उ०—भमरी ग्रळवामणी डाण भरै । कवराव किसौ वरणाव करै ।
— पा. प्र.

वरणास्रम—स पु [स वर्णाश्रम] १ ग्रार्य सस्कृति के ग्रनुसार समाज की एक व्यवस्था जिसमे मनुष्य समाज को-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार वर्णों मे विभक्त किया गया है ग्रौर मनुष्य जीवन के चार ग्राश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास निर्धारित किये गये हैं ।

उ०—ग्र म हरी मुख ग्र म विचारण, सो वरणास्रम कारिज सारण ।
—जयपुर री गीत

२ उक्त व्यवस्था के ग्रन्तर्गत निर्धारित नियम या धर्म ।

उ०—वरणाश्रम ध्रम मरजाद वेद । भाखा खट नवरस ग्ररथ भेद ।
—वि. स.

रू भे—वरणास्रम, ।

वरणि—देखो 'वरणी' (रू भे)

उ०—चद वयणि, चपक-वरणि, ग्रहर ग्रलत्ता रगि । खजर-नयणी, खीण कटि, चदन परिमळ ग्रग ।
—ढो मा

वरणियोडौ—भू का कृ—१ वर्णन किया हुग्रा, निरूपण किया हुग्रा २ बयान किया हुग्रा, उल्लेख किया हुग्रा ३ रचना किया हुग्रा, लिखा हुग्रा ४ व्याख्या किया हुग्रा ५ प्रशसा किया हुग्रा, सराहना किया हुग्रा ६ निवेदन किया हुग्रा ७ चित्रण किया हुग्रा ।
(स्त्री वरणियोडी)

वरणियौ—स पु—डाभ का बना मोटा रस्सा । (पानी भरने के काम ग्राता है ।

वरणी—वि [सं वर्णिन्] १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धित ।

२ किसी वर्ण से सम्बन्धित ।

३ किसी रग से सम्बन्धित, रग वाला ।

४ रग रूप से सम्पन्न ।

स. स्त्री—१ किसी साधनीय कार्य के ग्रनुष्ठान के लिये नियोजित कर बैठाई जाने वाली ब्राह्मणो की मडली ।

उ०—कुंवरसी ग्रसवार हुवौ, जिण दिन सू भरमल एक टक मध्यान ढळिया रोटी जवा री खाघी, जमी सूती, तीन वखत री सिनान, ग्रापरै इस्ट री भजन करती रहती । काजळ, तेल, तबूळ, कूकू सारो त्यागियौ । दूध, दही, घिरत मीठौ सारौ छोडियौ । ब्राह्मण पचास वरणी पर बैसाणिया ।
—कुवरसी सासला री वारता

२ साधनीय कार्य के ग्रनुष्ठान की विधि ।

[स वर्णिनी] ३ स्त्री, ग्रर्धागिनी, पत्नी ।

४ नियोजन की क्रिया ।

५ हल्दी ।

रू भे—वरणी, वरणि, वरन्नी ।

वरणोद्दिस्ट—स पु [स वर्णोद्दिष्ट] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिसमे वर्ण वृत्त के रूप एव भेद की जानकारी की जाती है ।

वरणौ—वि [स वर्णिन्] (स्त्री वरणी) १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धी ।

२ किसी वर्ण या जाति से सम्बन्धित ।

उ०—कि जोग जाग जप तप तीरथ कि, व्रत कि दानास्रम वरणा । मुख कहि क्रसन रुक्मिणि मगळ, काइ रे मन कलपसि क्रपणा ।
—वेलि

३ किसी रग से सम्बन्धित रग का ।

उ०—१ बावळिया रै मोनल वरणा पीळा फूला सू गवाडी री छिब सवाई बधगी ही ।
—फुलवाडी

उ०—२ कैंता-कैंता हरी रौ मूडौ तावै वरणौ हुयग्यौ ग्रर होट फडकण लागग्या ।
—वरसगाठ

४ रूप-रग से सम्पन्न ।

स पु—वृक्ष विशेष जिसके पत्ते बिल्व पत्र से मिलते जुलते होते हैं ।

रू भे—वरणौ, वरनौ, वरन्नौ ।

वरणौ वरवौ—क्रि स [स वरणम्] विवाह के लिये चुन कर वरण करना, ग्रगीकार करना, शादी करना ।

उ०—१ 'ग्रभपाल' ग्राप छळि करि ग्रचड, वप विहडाय रभा वरू । जग करण महा भारथ ज्युही, 'करण' नाम साचौ करू ।
—सू प्र

उ०—२ परण्यौ पतसाह री, रजवट लागै रोग । वर ग्रपछर वीरम कहै, जाणौ सुर पुर जोग ।
—वा दा.

उ०—३ कोई भगडा मे सूर वीर मारीजिया तिका नै ग्रपछरागमा

वरिया सो स्वरग वधावा हुता लारै री लारै सतिया पिण सत कर नै गई सौ अपछराआ रा वधावरणा देख सतिया कहै।
—वी स टी.

२ चुनाव करना, पसद करना।
३ स्वीकार करना, मानना।
४ निगलना, खाना। (उ र)
५ वरदान देना, आशीर्वाद देना।
६ मागना, याचना करना।
वरणहार, हारौ (हारी), वरणियौ—वि०।
वरिओडौ, वरियोडौ, वरयोडौ—भू० का० कृ०।
वरीजणौ, वरीजवौ—कर्म वा०।
वरणौ, वरवौ—रू० भे०।

वर'णौ, वर'बौ—देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू. भे)

उ०—१ भली भाति सू अरथ बरथा भरै। विनै इद्र सामद्र 'जेहौ' वरै'।
—ल. पि

उ०—२ अरि मुख पारथ बाण वरखिया एहि घगारा। ज्यू कमळा पर मेघ वरै' थू अणगिण धारा।
—मेघ

वरत—स. स्त्री. [स वरत्रा] १ चमडे का मोटा रस्सा जो हाथी को बाधने,कूए से मोट खीचने तथा नट के नटक्रीडा मे काम आता है।

उ०—१ रै चित अत द्रढ एम रख, सूरत स्याम मझार। मेल्ह सुरत नट वास मे, प्रगट वरत व्है पार।
—र ज प्र

उ०—२ एक वैर जावै छै। सु साठीको कोहर, तियै री वरत छै सु वरत सावटिनै काख माहे घाली छै।
—नैणसी

२ देखो 'व्रत' (रू भे)

उ०—१ कीजै वरत भजन पिण कीजै। भगत वछळ रीझै व्रज-भूप।
—ह ना मा.

उ०—२ आज मिरति मगळी, आज पति वरत समाळै। ऊपनौ जग अस, आज सुन वस 'उजाळै'।
—रा रू

उ०—३ केहरि तण पण लडण अकूणौ। लीधा वरत 'जोगपती' 'लूणौ'।
—रा रू

उ०—४ तठा उपराति देव जागिआ छै। काती मास रा वरत महोछव कीजै छै। घरि घरि दीपमाळिका रा वणाव हुइ नै रहिया छै।
—रा सा स.

३ देखो 'विरत' (रू. भे)

रू भे—वरत, भरत, वरतर, वरता, वरत्त।
मह—वरत्रौ।

वरतण—२ देखो 'वरतण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरतन' (रू. भे)

उ०—सोर आग सपरस्स, किना वडवाग अकारी। माग हूत सामद्र, ध्याग वरतण उर धारी।
—रा. रू.

वरतणि, वरतणी—देखो 'वरतणी' (रू भे)

उ०—जोधपुर सुपह री चाड माडै जुडण, आपरा लिया परिग्रह उजासै। 'पाल' री खूद वरतणि जुदी पामतौ, पूजियौ विघन ची वार पासै।
—केसोदास गाडण

वरतणी—देखो 'वरतणी' (रू भे)

उ०—पाच दोरा रे लेखणी पाच मसीजणा, वास कूपी रे कावी वारू वरतणा।
—स. कु.

वरतणौ, वरतबौ—देखो 'वरतणौ, वरतणौ' (रू भे)

उ०—१ सुर तजी चित बरतौ असोक। लकेस हुणू सुख करा लोक।
—सू. प्र

उ०—२ तथा स्रीभाभोजी आपरो वडो मुलायजौ वरतै है सू हमार फळोधी रा गाव ८४ खालसै किया है।
—द. दा

उ०—३ देवावत 'लिछमण' जग दाता, हेळा करण खिताब हुवौ। भिडजा भडा चारणा भाटा, मुहगा वरतणहार मुवौ।
—बा दा'

उ०—४ मुथरा माहि वरतिया मगळ। घण कितूहळ घरोघरि।
—ह ना मा

उ०—५ रूक हू झरत्त रत्त, करतौ कोप धूहड, वेहडा घडा करतौ, वरतौ दुवाह।
—दूदौ वीठू सुरताणोत

उ०—६ सवत मोल चिहुत्तरइ, पोस सुदि तेरस वरतई। साग करइ सहि लोक, पूज पहुता परलोक।
—कविवर स्रीसार

उ०—७ ससार चक्र तणउ इण परि हालु, चडतउ पडतउ वरतई कालु। कल्प द्रुम मनवछित होइ जुगलाधरम तिहा वरतइ सोइ।
—वस्तिग

उ०—८ जासी हाट वात रह जासी जग, अकवर,ठग जासी एकार। रे राखियौ खत्री ध्रम राणै, सारो ले वरतौ ससार।
—प्रथ्वीराज राठौड

उ०—९ घर घर मगळचार, मोहन चढियौ मडोवर। नाद वेद वरतिया, सुकवि बोलै सुभ अक्खर।
—गु रू व

वरतणहार, हारौ (हारी), वरतणियौ—वि०।
वरतिओडौ, वरतियोडौ, वरत्योडौ—भू० का० कृ०।
वरतीजणौ, वरतीजवौ—कर्म वा०।

वरतन—१ देखो 'वेतन' (रू भे)

उ०—जगदेवजी कह्यौ, सेर बाजरी नै हीज आयो छू। तरै राजा कह्यौ, पटो लेस्यौ कै कोरी वरतन (वेतन) लेस्यौ। जगदेवजी कह्यौ, कोरी वरतन लेस्यू।
—जगदेव पवार री वात

२ देखो 'वरतन' (रू भे)

वरतनी—देखो 'वरतणी' (रू. भे)

वरतमाण, वरतमान–वि [सं वर्तमान] १ विद्यमान, मौजूद।

उ०—ज्यूं लारलडा वह गया वरतमाण वह ज्याय। काळ-कळत मे कळ रह्या, ठीक न 'विसना' ठाय। —विसनो

२ जीव धारी, जिन्दा।

३ जो अपने अस्तित्व व सत्ता मे हो।

४ घूमने-फिरने वाला।

५ सहयोगी।

६ जो प्रभाव मे हो, लागू हो (नियम, विधान)

स. पु–[स वर्तमान] १ व्याकरण मे क्रिया के तीन कालो मे से एक जो किसी क्रिया का चालू होना सूचित करता है।

२ वर्तमान काल, मौजूदा समय।

उ०—त्रकाळग्यानदरसी निज भ्रमकू पहिचाणै। भूत भवस्त वरतमान जुगति सौं जणै। —सू प्र

३ समय, वक्त, वेला,। (ह. ना. मा)

रू भे—वरतमान।

वरतमा—देखो 'वरतम' (रू भे) (ह ना. मा)

वरतर, वरता—देखो 'वरत'₄(रू. भे) (ड. र)

वरताडणो, वरताडबो—देखो 'वरताणी, वरतावो (रू भे)

उ०—वसती सु दळि वरताड, अनि गाम धाम उजाड। पह रोस जोस अपार, लेखवै मेछ लिगार। —रा. रू.

वरताडणहार, हरो (हारी), वरताडणियो—वि०।

वताड़िग्रोडो, वरताडियोडो, वरताडयोडो—भू० का० कृ०।

वरताडीजणो, वरताडीजबो—कर्म वा०।

वरताडियोडो—देखो 'वरतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वरताडियोडी)

वरताणो, वरतावो—देखो 'वरताणी, वरतावो' (रू भे.)

उ०—नै क्रिमनदासजी गढ मैं आया। राव कल्याणसिंघ जी री आण वरतायी। —द दा.

वरताणहार, हरो (हारी), वरताणियो—वि०।

वरतायोडो—भू० का० कृ०।

वरताईजणो, वरताईजबो—कर्म वा०।

वरतायोडो—देखो 'वरतायोडो' (रू भे)

(स्त्री वरतायोडी)

वरतार—देखो 'वरतारो' (मह, रू भे)

२ देखो 'भरतार' (रू भे)

वरतारी—देखो 'व्रतारि' (रू भे)

वरतारो–स पु [स वृत्तवार] १ प्रयोग ईस्तोमाल करने की क्रिया।

उ०—पछै सवत १८४१ रै वरस नागोरी लूका रा गछ रा स्रीपूज हरखचद जिन मत रा टीपणा री वरतारो कियो। —बा. दा. ख्यात

२ समय, वक्त।

उ०—म्रग जळ नीर सीग ससियेका, ज्यू बभ्रया का वारा। दुख सुख जरा मरण सुपना मे, यू सतोगुण वरतारा। —सुखरामजी महाराज

३ किसी देवि-देवताग्रो या देव-योनि मे गई हुई मृतात्मा का किसी मनुष्य शरीर मे प्रवेश की अनुभूति एव तदनुसार होने वाली चेष्टाऐं।

४ वह पद्य जिसमे कविता या छदो के रचना सबधी नियमो का निरूपण हो।

५ आधार, सहारा, आश्रय।

रू. भे—वरतारी।

मह.—वरतार

वरताव—देखो 'वरताव' (रू भे)

उ०—ऐडो वरताव करती जाणै किणी पाडोसण री टाबर व्है। —फुलवाडी

वरतावणो, वरतावबो—देखो 'वरताणी, वरतावो'

उ०—१ हिंदुस्थान का छत्र जगत छाया वरतावण। हिंदुस्थान मे सूरज कवि कमळ-विकसावण। —रा रू.

उ०—२ स्रीपुर नगर सोहामणु, तिहा वरतावो अमार। —स. कु

वरतावणहार, हारो (हारी), वरतावणियो—वि०।

वरताविग्रोडो, वरतावियोडो, वरताव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वरतावीजणो, वरतावीजबो—कर्म वा०।

वरतावियोडो—देखो 'वरतायोडो' (रू भे)

(स्त्री वरतावियोडी)

वरतियोडो—देखो 'वरतियोडो' (रू भे)

(स्त्री वरतियोडी)

वरतियो, वरतीयो—देखो 'भरतियो' (रू भे)

उ०—१ तरै वरतिया कना मेह वधावण री तलास कियो। तरै वरतिये कह्यो—एक हिरण मगावो। तरै हिरण, आणजै कागळ? मे जत्र लिखनै वरतिये फोरनै हिरण रै सीग माहे घात नै कोस २ आगर थो तठै हिरण रै सहनाण कर छोट दियो। —नैणसी

उ०—२ हिवै इया रै देस माहे धान घणा। वहवारीया रै लागै ग्यान हुवो। केलैकोट, वगै, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुया। होई नै एक वरतीयै नु कह्यो, जु "धान म्हाहरै घणो। ज्यु नरो

ज्यु धान रा पईसा हवै ।" ताहरा महाजन मेह वधायो ।
—लाखै फूलाणी री वात

वर , वरतुल-वि. [सं वर्तुल] चक्करदार, गोल ।

स. पु १ चक्कर, गोला ।

२ चक्र ।

३ वातचक्र ।

रू भे.—वरतुळ, वरत्तुल ।

अल्पा ,—वरत्तुळो, वरतुलो ।

वरतेसरी—देखो 'प्रतेसरी' (रू भे.)

वरतौ—देखो 'वरतणौ' (रू भे)

वरत्त—१ देखो 'वरत' (रू भे.)

२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

वरत्तणौ, वरत्तवौ—देखो 'वरतणौ, वरतवौ' (रू भे)

उ०—१ भाण प्रताप पडै भूपत्ती । विच गढ कमधा आण वरत्ती ।
—सू प्र

उ०—२ घोपट्टै लीध धरत्ती । जिहृगीरे आण वरत्ती ।
—गु. रू. ब.

वत्तरणहार, हारौ (हारी), वरत्तणियौ—वि० ।

वरत्तिग्रोडो, वरत्तियोडो, वरत्योडो—भू० का० कृ० ।

वरत्तीजणौ, वरत्तीजवौ—भाव, कर्म वा० ।

वरत्तमांन—देखो 'वरतमान' (रू. भे.)

वरत्तिकाविंदु—स पु [स. वर्तिकाविंदु] हीरे का एक दोष ।

वरत्तियोडो—देखो 'वरतियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वरत्तियोडी)

वरत्तुळ, वरत्तुल—देखो 'वरतुळ' (रू भे)

उ०—हुदै मूल वरत्तुल इक होइ । दुहु पूखे लांवा द्यौ दोइ ।
—ध व ग्र

वरत्तुळो, वरत्तुलो—देखो 'वरतुळ' (अल्प , रू भे.)

उ०—दूजो लवौ ग्रीव परि, जहा धरिजे जोत । दो लवणे द्यो वरत्तुला, च्यारे इहि विधि होत ।
—ध व. ग्र

वरत्म-स. पु. [सं. वर्त्मन्] १ मार्ग, पथ, रास्ता, राह ।

२ सडक ।

३ पगडंडी ।

४ पथ ।

५ स्थान ।

६ लीक ।

७ पद्धति, रस्म, चलन, परम्परा ।

८ किनारा, तट ।

रू भे.—वरतमा ।

वरत्तारि—देखो 'व्रत्तारि' (रू भे)

वरत्नी-स स्त्री [स. वर्तनि] मार्ग, रास्ता, सडक, राह । (ह ना मा)

वरद-वि [स] १ वरदान देने वाला, अभीष्ट की पूर्ति करने वाला, वर-दाता ।

२ शुभ ।

स पु.[स. वरद.] १ देवता (अ. मा)

२ देखो 'विरुद' (रू. भे) (अ. मा)

रू भे —वरद ।

वरदउदात-स स्त्री [स. उदात वरद, वरद+उदात] सरस्वती, शारदा । (अ. मा.)

वरदपत, वरदपति,—देखो 'विरुदपति' (रू भे)

उ०—हाथी वहु हेला दिये कर बाहर करतार । वेगा आवो वरदपत मेरी भीर मुरार ।
—गजउद्धार

वरदळ, वरदल, वरदळि, वरदलि-[स पु] १ दूल्हा, वर ।

उ०—१ वघव अनुज 'गजै' री वेटी, लाज सील गुण प्रीत लपेटी । वरदळ लख घर मेळ सवायो, प्रकट तिकण रो लगन पठायो ।
—रा रू

उ०—२ सरीखा खेड धरा खुरसाण, मरीखौ राउ अने सुरताण । वरदळ बेढी वडे वीवाह, मिळी घण तुग्ग महा-रिण माह ।
—रा. ज सी

उ०—३ दळपति कोइ न दूजौ वरदळि । निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियो । राव तणै घरि लहीस वर ।
—दूदौ

२ वर-पक्ष ।

उ०—ढोलउ-मारु परणिया, वरदळ हुवउ उछाह । आ पूगळ री पदमिणी, अउ नरवर रउ नाह ।
—ढो मा

३ बारात ।

वरदाणी—देखो 'वरदायिणी' (रू भे)

उ०—हंस गमणा ब्रहमाणी हंसा रूप हंस आरूढ । देवगुरु वरदाणी निधि वाणी तुम्यो नम ।
—देवि

वरदान-स, पु [स वरदान] १ किसी देवी, देवता या बडों द्वारा अभीष्ट की पूर्ति के लिये दी जाने वाली सिद्धी । शुभ कार्य की कामना की पूर्ति के लिये दिया जाने वाला आशीर्वाद ।

उ०—देवी माई हिंगोळ पच्छम माता, देवी देव देवाधि वरदान दाता ।
—देवि

२ वह वस्तु, अवस्था या स्थिति जो मगल दायिनी हो, अनुग्रह रूप हो ।

रू भे —वरदान ।

वरदांनी-वि [स वरदान+रा प्र. ई] १ वर देने वाला, मनोरथ सिद्ध करने वाला ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो, सिद्धिधारी।

वरदा-स स्त्री [स] १ कुंवारी कन्या, लडकी।

२ असगंध।

३ अडहुल।

४ एक नदी का नाम।

५ सरस्वती, शारदा।

रू. भे.—वरदा।

वरदाइ—देखो 'वरदाई' (रू भे)

उ०—वरदाइ पढत गुण कवि वखाणि। मगळीक वयण मौसर प्रमाणि। —सू. प्र

वरदाइक—देखो 'वरदायक' (रू. भे)

उ०—वरदाइक 'जाखौ' वसि वधारण वान। मनमोट महिपती। मेर जिसौ अनमान। —ल पिं

वरदाई-वि [स वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—नव दुरगा नचै खेट वरदाई, करगि मगळीक रूचए। वदिण जैकार विंद कोळाहळ, विप्रा वेदउ वच्चए। —गु रू. व

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सुदि अगसर सप्तमी वार मगळ वरदाई। अम परम "अभसाह" विमळ ग्रहि वस वडाई। —रा रू.

३ यशस्वी।

उ०—१ 'सूजा' पाट सकाज, 'वाघ' कमधज वरदाई। कर दन खग वह कवर, पिता पहिला व्रत पाई। —सू प्र.

उ०—२ वीर पाबू समराथ, वीर साचौ वरदाई। वीर खाग सिर वहन, वीर चारणिया भाई। —पा. प्र

४ वीर।

उ०—'सूरा 'अखूवाळ' सुजड हथ 'साडा,' 'जैता' 'जगमल' जैत्राई। 'काधिळ' कळिमूळ सदा कळि चालण, 'गैरा' वेढक वरदाई। —गु रू व

उ०—२ वरदाई भुजे वडाई तमांण सवाई। सिधि पाई जुध जैत्राई सकति सहाई। —ल पिं

५ वरदान या सिद्धि प्राप्त।

उ०—१ 'सावत' 'माहव' तणौ सवाई। 'वीटल' रौ 'सकती' वरदाई। —रा रू

उ०—२ पाबू पाट रै रूप राठवडा, सेवै तूझ सधीरा। वेगडै पाल्ह लीया वरदाई, सिंघ तणा साढी रा। —पाबू राठौड धाधलौत रो गीत

६ वरदान से उत्पन्न होने वाला।

उ०—पाण का कविराज सूरज का वंस। देवी का वरदाई दईव का अंस। दिल का दलेल लहरू का दरियाव। —सू. प्र.

८ अनुकूल, लाभप्रद।

रू भे —वरदाई, वरदाउ, वरदायी, विरदाई।

वरदाचतुरथी, वरदाचौथ-स स्त्री [स वरदाचतुर्थी] माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

वरदात-वि. [स वरदातृ] वर देने वाला, वरदाता।

स. स्त्री [स वरदात्री] १ सरस्वती। (अ मा.)

२ पार्वती गिरिजा (अ मा)

३ देखो 'वरदाता' (रू. भे)

वरदाता-वि [स वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदायक।

उ०—दीनानाथ अभै वरदाता, त्राता सेवग तारणा। —र ज प्र.

स पु.—ब्रह्मा।

रू भे —वरदात।

वरदाय, वरदायक-वि —१ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—जानुकी वर मरम जाणग, तेम अरेसा तायक। 'किसन' भज जन मान रक्खे, दान अभै वरदायक। —र ज. प्र

२ सिद्धि देने वाला।

३ यशस्वी, कीर्तिवान, विरुदधारी।

उ०—वधै राज सुख विहद, वधै हित सपत वधायक। अवर वधै दिन इतौ, वधै पल पल वरदायक। —सू प्र.

४ श्रेष्ठ।

उ०—'सुरतौ' 'गागावता' 'नरा 'पदमौ'। नर नायक। अणभग 'वृंडावता' 'विजौ' कमधा वरदायक। —सू. प्र

५ वीर।

उ०—उदर सुमित्र लछण जीपण अरि, घरै मैम अवतार धुरधर। वियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघवाह वडौ वरदायक। —र. रू

६ सिद्धि प्राप्त।

७ वर प्राप्त, वरदान धारी।

उ०—आमो-सामही झटका हुवे उतरिआ। आप रणी रा वरदायक हूता। सो मद्ध री दया वासतै घणा सेहर रा लोक मद्ध ऊपरा तरवारिआ वाढिया। —कल्याणसिंह नगराजोत वाटेल री वात

उ०—२ वरदायक सकति रौ, कन क्रीत रौ महाचै। उरड़ जोम अगरी, अवर यह मीढ न आवै। —सू प्र.

८ फलदायक, सफलता देने वाला।

उ०—१ वरदाय 'लखण' रण सूर वीर। धारण प्रवीण अण धार धीर। —रा रू

उ०—२ इत्ता भड चारण क्रोध असाधि। विढै वरदायक वीर-विराध। —सू. प्र

रू भे —वरदायक, विरदाक, वरदाइक, विरदायक

६ देखो 'विरुदायक' (रू. भे)

वरदायण, वरदायणि, वरदायणी, वरदायिणी—स स्त्री. [स्त्री. वर+दायिनी] सरस्वती। (डिं को)

उ०—ऐवास विराजै ऊजळा, विध ऊजळ हंस-वाहणी। ऊजळ अडोल गाऊ 'अभो', दीजै वर वरदायणी। —वखतो खिड़ियो

वि —१ सिद्धि व सफलता देने वाली।

उ०—पाण बुध 'अनावत' तणी जस पायणी, प्रेम बण बायणी तेज आनेक। मीर भक डायणी अवखासा मही, असी वरदायणी कटारी एक। —करनीदानजी कवियो

२ वर देने वाली।

रू. भे —वरदायण, वरदायणि, वरदाणी।

वरदायी—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

उ०—नानण छावहडो, वरदायी हुवो। पोकरण आय वसियो। —बा दा ख्यात

वरदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह, रू भे)

उ०—कप जेह छळ कूदियो, झट वडाळी फाळ। एक कटारी अगरग, वकट, 'कलो' वरदाळ। —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

वरदाळो—देखो 'विरुदाळी' (रू. भे)

उ०—जै झळ ऊठी, तठी जुध जीपण, हठी भीम कारज हडमत। वणीयो वळ राखण वरदाळा, झाडाळा केसव री दत। —किसनो आढो

वरदी—स स्त्री. [अ. वर्दी] किसी विभाग, संस्था या वर्ग के कर्मचारियों के लिये निर्धारित पोशाक विशेष, यूनिफॉर्म।

रू भे —बरदी, वडदी।

वरदेत, वरदैत—देखो 'वरदायक'

उ०—१ कथ 'पाल' तै साची कही, वरदेत झूठ न वात। आया समैरा मारिया, एकरैसू कवं उतपात। —पा. प्र.

उ०—२ त्वडा खळ खाग हणै वरदैत। जुडै इम 'भाण' समोभ्रम जैत। —सू. प्र

वरद्धक—वि. [स. वर्द्धक] १ वृद्धि करने वाला, बढाने वाला।

[स-वर्धक] २ काटने वाला।

३ विभाजन करने वाला।

रू भे.—वरधक, वरधकि।

वरद्धन—स पु [स. वर्द्धन] १ वृद्धि, बढोतरी।

२ उन्नति।

३ वृद्धि या बढोतरी होने की अवस्था।

४ काटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

रू भे —वरधन।

वरद्धमान—वि [स. वर्द्धमान] १ जो बढ रहा हो, वृद्धिशील हो, बढने योग्य।

२ बढने की प्रवृत्ति वाला।

३ उन्नति के लिये उन्मुख।

स. पु.—१ जैनियो के चौबीसवें तीर्थंकर, महावीर स्वामी।

२ एक वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण मे १४, दूसरे मे १३, तीसरे मे १८ व चौथे चरण मे १५ वर्ण होते है।

३ वार व नक्षत्र सम्बन्धी २८ योगो मे से २८-वा योग। (फलित ज्योतिष)

४ देखो 'वरद्धमानतप'

रू. भे —वधमान।

वरद्धमानतप—स. पु एक प्रकार का व्रत विशेष

उ०—स्थान पचमी, मुकुट सहामी, माणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमण-तप, वरद्धमानतप, इद्रियजय, कसायजय। —व स.

वरधक—स. पु [स. वर्धक वर्धकि] १ बढई, तक्षक।

२ देखो 'वरद्धक' (रू. भे)

रू. भे —वरधकि, वरधकी, वरधकि।

वरधका—सं स्त्री. [स वृद्धा] १ गाथा-छंद का एक भेद जिसमे विप्र गण (चार मात्रा के समूह) का प्रयोग बहुत होता है।

उ०—भगण बहुत सो प्रौढा भणजै। गण वोह विप्र वरधका गिणजै। —र ज प्र

२ देखो 'वृद्धा' (रू भे)

वरधकि—देखो 'वरधक' (रू भे)

वरधन—देखो 'वृद्धापन' (रू भे)

वरधापन—देखो 'वृद्धापन' (रू. भे)

उ०—ऐ अस्सीयात कीद 'आसावत', रोदा सु तेवडै रिण। जप वढीयो वरधापण वढता, पोरस मच्छर जवानपण। —दुरगादास आसकरणोत री गीत

वरन—अव्य [स.] १ बल्कि २ ऐसा नहीं।

वरन—देखो 'वरण' (रू भे)

उ०—१ पसरि पत्र है पाई, इल्ला चहु आघतरि। जरद लाल इक स्याह, वरन वामा विबहथरि। —गु रू ब.

उ०—दुति सोभा दामणी, वरन आदीत वरनी। भाव-सिंध सारधू, देव कन्या उतपन्नी। —गु रू. ब

उ०—३ जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट ग्रामै वरो। जोधपुर ग्राज ग्रजुधापुरी, राम राज कमधज्ज रो। —गु रू व

वरनसन-स पु [स. वर्णाऽऽसन] कवि, पडित। (ग्र. मा)

वरना-ग्रव्य [फा वर्ना] १ ग्रन्यथा।

२ नही तो।

३ ऐसा नही हुग्रा तो।

वरनोळी, वरनोली—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वरनोळौ, वरनोलौ—देखो 'वदोळौ' (रू भे.)

उ०—ताजा नेजा गयणइ सोहइ, वरनोलइ इम मनमोहत। —कविवर स्रीसार

वरनौ—देखो 'वरणौ' (रू. भे)

उ०—फौजा डेरा फाविया, दीसै हद्द विहद्द। सवज वरना स्याह ग्रन, लाल सपेत जरद्द। —गु रू. व.

वरन्न—देखो 'वरण' (रू भे)

उ०—मारू मारइ पहियडा, जउ पहिरइ सोवन्न। दती, चूडइ मोतिया, ग्रीया हेक वरन्न। —ढो. मा

उ०—२ वेधै खळ सावळ चोळ वरन्न। कहै रवि झोक लडै 'सुभक्रन्न'। —सू प्र

वरन्नी—देखो 'वरणी' (रू भे)

उ०—एक खडी मुख रूप नियाळै, एक खडी सिर चम्मर ढाळै। काम लता पिण कणक वरन्नी, पाम खडी सुख रास पतन्नी। —गु रू व

वरन्नौ—देखो 'वरणौ' (रू भे)

उ०—विवह वरन्ना कप्पडा, विवह वरन्नी पाग। फजर हुवदी फूलिया, जाण मलूका वाग। —गु रू व.
(स्त्री वरन्नी)

वरपूर—देखो 'भरपूर' (रू भे)

उ०—तद तरवार म्यान सू लीवी सू प्यादा झाडो वरपूर हुवो। —द दा

वरम-स पु [रू वर्मन्] १ कवच, बखतर।

उ०—काटसी घणा ग्रघ ग्रोघवाला करम। वेव नह सकै जम पहर इसडौ वरम। —र ज प्र.

२ घर, मकान।

३ छाल, गूदा।

४ पित्तपापडा।

[फा. वरम] ५ किसी ग्रग पर ग्राने वाली सूजन, शोथ।

६ घाव।

७ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

रू. भे—वरम, वरम्म, वरम्म।

वरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वरमा-स. स्त्री. [स वर्म्मन्] १ नाम के ग्रत मे लगाई जाने वाली क्षत्रियो की एक उपाधि।

२ उपनाम।

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे) वरमा

वरमाळ—देखो 'वरमाळा' (रू भे)

उ०—१ करण ग्रखियात चढियौ भला काळमी, निवाहण वयण भुज वाधिया नेत। पवारा सदन वरमाळ सू पूजियौ, खळा किरमाळ सू पूजियौ खेत। —वा. दा.

उ०—२ रामायण भारथ तणाय रग, जाणियौ ग्रमायण विकट जग। गठ-जोड ग्रच्छर भ्रूलान गठ। फदगा ग्रवळ वरमाळ कठ। —वि सं.

वरमाळणौ, वरमाळवौ-क्रि स १ दुलहिन द्वारा वर के गले मे माला डालना, वरमाला डालना।

उ०—विध जुत कूरमराज विचारै, स्रीफळ कचन रतन सिंगारै। सुभ दिन लगन घडी ले सुदर, वरमाळियौ 'ग्रभौ' प्रथमी-वर। —रा रू

२ जयमाला डालना।

३ वरण करना विवाह करना, शादी करना।

उ०—वीरम ना वरमाळतां, मिटियै रे 'किसमीर'। 'वूकण' री घर वूडसी, नदी वहते नीर। —वी मा

४ स्वीकार करना, ग्रगीकार करना।

वरमाळणहार, हारौ (हारी), वरमाळणियौ—वि०।
वरमाळिग्रोडौ, वरमाळियोडौ, वरमाळयोडौ—भू० का० कृ०।
वरमाळीजणौ, वरमाळीजवौ—कर्म वा०।

वरमाळा, वरमाला-स स्त्री [स वर+माला] १ दुल्हन द्वारा दूल्हे को पहनाया जाने वाला पुष्पहार, हार।

उ०—१ विच गळ रभ वरू वरमाळा। ग्रोपण मझि उझळता ग्रग्राळा। —सू. प्र

उ०—२ इसी वात सुण लाडी वरमाळा लेय घणा लोगा री भीड सू उछाह करती ग्राई वरमाळा गळै पहराई। —पच दडि री वारता

उ०—दसण सयण रयण छळ दमगगळ, राछ गळो वळ भीच रहै। धड ग्रारती ऊतरै धारा, वरमाळा किरमाळ वहै। —दूदो

१ जयमाळा।

रू भे—वरमाळ, वरमाळा, वरमाळ, वरम्माळ, वरम्माळा।

वरम्म—१ देखो 'वरम' (रू भे)

उ०—नमसकार सूरा नरां, विरद नरेस वरम्म । रिजक उजाळ साम री, पाळै मागधरम्म । —बां दा

वरम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

वरमाळियोडो—भू का कृ—१ वरमाला डाला हुआ २ जयमाला पहनाया हुआ ३ वरण किया हुआ, विवाह किया हुआ, शादी किया हुआ ४ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ ।
(स्त्री वरमाळियोडी)

वरम्माळ, वरम्माळा—देखो 'वरमाळा' (रू. भे)

उ०—१ करी छद गोलै प्रभू अग्रकारी । धणी कंठि सीता वरम्माळ धारी । —सू प्र

वरयता—स पु [स वरयिता] स्त्री का पति, भर्तार, स्वामी ।
(श. मा , ह ना मा)

वि —वरण करने वाला ।

रू भे —वरयिता ।

वरयात्रा—स स्त्री [स वर+यात्रा] १ वर का विवाह के लिये वधू के यहाँ बरात सहित किया जाने वाला गमन ।

२ बरात ।

वरवेचा—स स्त्री —राठोड़ वश की एक उप-शाखा ।

वररमा—स पु [स रमा+वर] १ रामचन्द्र ।

उ०—तोड़ गढ़ जमा री आच ग्रग तोलिया, ईस गण नाच घमघमाणो ओप । गजब री तमाची अजब री थको गण, करा सर वररमा री कोप । —बद्रीदास खिडियो

वररुचि—स पु [स] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन पडित जो व्याकरण और काव्य के ममज्ञ थे । सुप्रसिद्ध प्राकृत व्याकरणकार ।

२ एक प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र प्रणेता ।

रू भे —वररुचि ।

वरळ—स पु [स वरल] १ सूर्य, सूरज । (ना. मा , ह ना. मा)

२ हस ।

३ बरैया ।

४ प्रकाश, उजाला, रोशनी ।

रू. भे.—वरळ ।

वरळार—स पु [स वरल+रा प्र अ.] उजाला, चमक ।

उ०—सै धरियो धरा मरा वळि तार्क, सिणगट 'कृपा' रूप रसा । वरळार धरै परै सोंगारसि, पति जिम वारो तूंन 'थसा' । —ओपा बारहट

वरलच्छि—स. पु. [स. लक्ष्मी-वर'] विष्णु ।

रू. भे.—वरलच्छि, वरलाछ ।

वरळणो, वरळबो—देखो 'विरळणो, विरळबो' (रू भे)

उ०—दादू स्वाद लाग ससार सब, देखत वरळय जाय । इद्री स्वारथ साच तज, सबै वधाणी आई । —दादूवाणी

वरला—स स्त्री. [स] मादा हस, हसिनी ।

वरलाछ—देखो 'वरलच्छि' (रू. भे.)

वरळियोडो—देखो 'विरळियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वरळियोडी)

वरळु, वरलु—देखो 'विरळो' (रू भे)

उ०—जनम लगइ विहडइ नही, भली नारी जे होइ । एतला ऊफरू सार नथी, राखइ ज वरलु कोइ । —नळदवदती रास

वरवछक, वरवछत—वि —बुरा चाहने वाला, दुश्मन ।

उ०—आसीस दीयै 'सुरताण' अछरा, न्रप हा वडा वधारण नेह । वरवछत लाधा तो वडता, छत्र पतीया सु बाधा छेह । —दुरसो आढो

वरवडी—स स्त्री. [देशज] चारण वशोत्पन्न एक देवी जिसने महाराणा हमीर को राज्य प्राप्त कराया था ।

वि वि.—यह चसडा की पुत्री थी ।

रू भे —वरवडी, विरवड ।

वरवती—वि. (स्त्री) १ सौभाग्य शालिनी, सुहागन ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो ।

स स्त्री —१ वह स्त्री जिसका पति जिन्दा हो, सुहागन स्त्री ।

रू भे —वरवती ।

वरवर—देखो 'वरवर' (रू भे)

वरवरण—स. पु [स वरवर्ण] १ अच्छा वरण, सुन्दर वरण ।

२ स्वर्ण, सोना ।

वरवरणी—स स्त्री [स वरवर्णिनी] १ लक्ष्मी ।

२ दुर्गा ।

३ सरस्वती ।

४ सुन्दर स्त्री ।

५ उत्तम स्त्री ।

६ लाख ।

७ हल्दी ।

८ प्रियगुलता ।

वरवरणो, वरवरबो—देखो 'वडवडणो, वडवडबो' (रू. भे)

उ०—वरवरतो वेध वग्द वीमाळा, ठहतो गळा घाल तो ढाळ । आयुदमा आवतो आडू, वैरीया दळ दीठो 'विजपाल' ।

—दुरसो आढो

वरवरियोड़ी—देखो 'वडवडियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वरवरियोडी)

वरवार—देखो 'वारवार' (रू भे)

वरवासण, वरवासणी–स स्त्री. [स. वरवासिनी] कछवाहो की कुल देवी।

उ०—पछै मलीरणा रै गाव झूपडा खेडै सोहड भगवतगढ सेस भारिज्ये मलीरणै रै वीछू दैनै हुय जीरोतरो गाव हाडोती री हुयनै आगै खडारगढ चावळ मेळी हुई तठै देवी वरवासण री थान छै। —नैणसी

वरवीर–स पु. [स वर-वीर] १ श्रेष्ठ वीर, श्रेष्ठ योद्धा।

उ०—वडो वडग्रार भुजे कुळ भार, धरा सिणगार इसो लखधीर। वहै खत्रवाट नमावण नाट, विघासण थाट सत्रा वरवीर।
—ल पिं.

२ श्रेष्ठ विद्वान, सुयोग्य पडित।

उ०—ह झ घ र घ न ख भ होय, अक अठ दगध अघीरह। आखर दग्घ अठार वदे, कवसल वरवीरह। —र. रू

३ बुद्धिमान, विवेकी।

उ०—तुरातुर नीमरजा भव तीर, विसे-विस वीसरजा वरवीर। हमे गुरु वायक मा बुधहार, सभै निज नायक की सुध सार।
—ऊ का

४ एक छन्द विशेष।

उ०—चव कळ उरोज थळ च्यार वोज। वरवीर छद, कह यम फव्यद। —र ज प्र

वरवेरण–स पु [स वडवा–रमण] घोडा। (ना. डिं को)

वरसत, वरसति–स पु [स वर्ष+अत] किसी वर्ष या साल का अन्त या समाप्ति।

उ०—इम करता हूउ प्रभात, राय भणइ सुणि मुहता वात। ईणि पुरि देवि जईवत, तेह नी जात्र हुई वरसति। —हीराणद सूरि

वरस–स पु [स वर्ष] १ काल-क्रम के अनुसार वह अवधि जिसमे सब ऋतुओ की आवृत्ति हो जाती है। बारह महीनो की एक अवधि, वर्ष, साल।

उ०–१ एता दीह न जाणिया रे, निरगुण जाणी कत। हिव तिण जातउ वरस सउ रे, जाइ मुझ विलवत। —हीराणद सूरि

उ०—२ कुंभसुति ते आचमन कीधू, कोटि वरस रहु ठालु। अनेकि कुभि ऊलेचता ए घरि नही सर चालु। —नळाख्यान

२ किसी सवत्सर की निर्धारित दिन से क्रमश चलने वाली अवधि।

उ०—आया वसिया आपणी, ग्रीसम थई वतीत। १७३६ गुणचाळी लागो वरस, चाळी सरस सजीत। —रा रू.

३ पुराणानुसार सप्त द्वीपो का एक विभाग।

४ भारत वर्ष।

५ वादल।

उ०—सजै फौज काठळ घरर घणा निसाण घुर, अनल धूआ रवण रण ऊजाथै। वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेरगिर 'गजण' रा तणै माथै। —अजवो वारहठ

६ एक व्याकरणाचार्य जो पाणिनि का गुरु था।

७ वसुदेव व उपदेवी के पुत्रो मे से एक पुत्र।

८ सहस्रार्जुन राजा का पुत्र, एक राजा।

रू भे —वरख, वरस, वरिस, वरीस, वरक्ख, वरख, वरसि, वरमी, वरस्स, वरिस, वरिसि, वरीस।

अल्पा,—वरसडो वरसडी।

वरसकटी–स स्त्री [स वर्ष+कट्य=समूह] १ ऋणी और ऋणदाता के मध्य तय होने वाली वह शर्त जिसके अनुसार निश्चित अवधि तक ऋणी की भूमि का उपभोग ऋण दाता कर सकता है।

२ ऋण के ऊपर लगने वाला ब्याज या सूद जिसमें ब्याज पर भी ब्याज जोडा जाता हैं।

वरसगाठ–स स्त्री [स वर्ष+ग्रन्थि] १ प्रत्येक वर्ष या साल मे आने वाला किसी के जन्म का दिन या तिथि, सालगिरह।

२ उक्त दिन को मनाया जाने वाला उत्सव।

रू भे वरसगाठ।

वरसट, वरसठ–स पु [स वरिष्ठ] ताम्र, तावा। (ह ना मा)

रू भे —वरसट, वरस्ट।

वरसण–स पु [स वर्षण] वादल, मेघ। (अ मा, ह ना मा.)

वि —१ वरसने वाला।

२ दानी, दातार।

रू भे —वरसण, वरसणी, वरीसण।

वरसणी–स स्त्री [स वर्षणि] १ वृष्टि।

२ व्यवहार, वर्ताव।

३ यज्ञीय कर्म, यज्ञ।

४ क्रिया।

५ एक महाविद्या।

उ०—आवासगामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनःस्तंभिनी जलस्तंभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी नगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी अवलोकिनी भुजगिनी . . . इत्यादि महाविद्या।
—व स

वरसणो, वरसबो–क्रि अ [स वर्षण] १ बादलो से पानी का बूदो के रूप मे पृथ्वी पर पडना, वर्षा होना।

उ०—१ यहु तन जारी मसि करु, धूआ जाहि सरग्गि। मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि। —ढो मा.

उ०—२ उत्तग गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ वरसत जोर। दमकती दामिनी बहुर भामिनी, चमक्ती तिहिं ठोर। —वि कु

मुहा —१ आग वरसणी बहुत तेज धूप होना, कर्कस वाणी निकालना (ऊ का) २ दूध री मेह वरसणो=आनन्दोत्सव होना,आनद ही आनद होना। ३ पुमपा री वरसा करणी महान कार्य करने पर उसके स्वागतार्थ उस पर फूल उछालना।

२ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणो या टुकडो के रूप मे बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिरना।

३ आखो से लगातार आसू बहना, अश्रुओ की झडी लगना।

४ मुख से मधुर वाणी निकलना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग होना।

उ०—कमला कहउ कि सरसति, बरसति अमीरस वाणि। कचणु कुणि किर जाविय, पाविय सारगपाणि। —जयसेखर सूरि

५ धन या दौलत का चारो ओर से आना, थोडे से परिश्रम से खूब लाभ होना, अच्छी आमदनी होना।

मुहा —दूध री वरसा होणी=आनन्द मगल होना।

६ चहरे की कान्ति और ओज का अच्छी तरह से झलकना।

ज्यू—उणरी चेहरी तौ अवार वरसै, सिणगार करया पछै तो बात ई छोडो।

७ क्रोध और आवेश के कारण किसी के द्वारा डाटा जाना, फटकारा जाना।

८ लगातार अस्त्र-शस्त्र प्रहार होना।

उ०—१ अयी समर सर वरसता अमर नर ऊवरै, आवधा ठेलफीळा अराणी। पाळि रूपै अवर तूटि पडै, पडग गमियो नही ताम पाणी। —राव छत्रसाल हाडा री गीत

९ तुष्ट मान होना (देने के लिये)

१० दान देना।

वरसणहार, हारी (हारौ), वरसणियौ—वि०।
वरसिओडो, वरसियोडो, वरस्योडौ—भू० का० कृ०।
वरसीजणो, वरसीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।
वरसाणो, वरसाबौ—सक० रू०।

वरखणो, वरखबो, बरीसणो वरीसबो, वरक्खणो, वरक्खबो। वरखणी, वरखबौ वर'णो, वर'वो, वरीसणो, वरीसबो।—रू० भे०।

वरसधर–स पु [स वर्ष-धर] बादल, मेघ।

वरसप, वरसपत, वरसपती–स पु [स वर्षप, वर्षपति] वर्ष के अधिपति ग्रह। वह ग्रह जो सवत्सर के वर्ष का अधिपति हो। (फलित ज्योतिष)

वरसवियाणि, वरसवियावणी—देखो 'वरसव्यावणी' (रू. भे)

वरसव्यावणी–स. स्त्री.—जिसके प्रति वर्ष प्रसव होता हो (प्रायः गाय, भैस)

रू. भे.—वरसव्यावणी, वरसवियाणी, वरसवियावणी।

वरससत–स पु [स. शत-वर्ष] सौ वर्ष। (उ र)

वरसा–स. स्त्री. [स वर्षा] १ वरसने की क्रिया या भाव।

२ आकाश के मेघो से पानी का वरसना, बारिस, बरसात।

उ०—करि पाण सुताण कमाण कसै। वरसाण सराण तणा वरसै। —सू प्र.

३ वरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।

पर्या —वरसण, व्रस्टी।

४ किसी चीज का अधिक मात्रा मे ऊपर से गिरना, वृष्टि।

क्रि. प्र —करणी, होणी।

५ लगातार चलने वाला कोई क्रम, बौछार।

क्रि प्र —आणी, पडणी, होणी।

६ किसी वस्तु की बहुतायत होने की अवस्था।

रू भे —वरखा, बरसा, बरिखा, बिरक्खा, बिरखा, वरखा,वरिक्खा, वरिखा।

वरसाऊ–वि [स वर्षा+रा प्र ऊ] १ वरसने वाला।

२ वरसने योग्य।

३ आभा और कान्ति वाला।

उ०—जोया धर कर जग, पीहव वीरम जग पडियौ। तद मिळ सळखा तणो, जरु चदनौमो जुडियो। कहर बिखो काढियो, कमध चूडै काळाऊ। "आलै" जद ओळख्यो, सही ताळै वरसाऊ। मेहवै जाय 'आलो' मिळै, मलीनाथ राखो मदत। आपणो गाम चूडो उठै, सुत वीरम री सापरत। —राव चूडा री छप्पय

रू. भे —वरसाऊ।

वरसाकरण–स पु —इन्द्र।

रू भे —विरखाकरण।

वरसाकाळ–स पु [स वर्षा-काल] बरसात का मोसम, वर्षा ऋतु। (उ र.)

वरसागम–स पु [स वर्षा+आगम] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षारभ।

वरसाणो, वरसाबो–क्रि. स —१ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणो या टुकडो के रूप मे बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराना।

२ आंखो से लगातार आसू बहाना, अश्रुओ की झडी लगाना।

३ मुख से मधुर वाणी निकालना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग करना/कराना।

४ धन या दौलत को चारो ओर से प्राप्त करना, थोडे से परिश्रम से खूब लाभ कमाना, अच्छी आमदनी करना/कराना ।

५ क्रोधवश या आवेश-वश किसी को डाटना, फटकारना ।

६ निरन्तर अस्त्र-शस्त्र का प्रहार करना/कराना ।

७ खर्च करना/कराना।

८ दान देना, दिलवाना।

वरसाणहार, हारो (हारी), वरसाणियो—वि० ।

वरसायोडो—भू० का० कृ०।

वरसाईजणो, वरसाईजबो—कर्म वा०।

रू. भे —वरसाणो, वरसावो, वरसाणो, वरसावो वरसावणो, वरमाववो वरीसाणो, वरीसावो ।

वरसात—स स्त्री [स वर्षा+रा प्र त] १ आकाश के मेघो से पानी की वर्षा जल वृष्टि।

उ०—हरियाळी वारे वास्तै ई विकसै । वारै वास्तैई वादळा गरजै, वीजळिया खिवै अर वरसात व्है ।

—फुलवाडी

२ वह रात या दिन जब वर्षा हो रही हो। (उ र)

३ वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

उ०—तरै वरसात रा दिन था। कार्चं खडै पखाळद थको राव घीणोद री पाखती थी। —नैणसी

रू भे.—वरसात, वरमाद, वरसायत, वरसाति, वरसाती, वरसायत, वरात।

वरसाति, वरसाती-वि [स वर्षा+रा प्र ति ती] १ वरसात का वरमात सम्बन्धी।

२ वरसात की मौसम मे होने वाला।

स स्त्री —१ प्लास्टिक या मोमजामे का बना हुआ एक बडा कोट जिसको पहनने से शरीर व वस्त्र वर्षा के पानी से भीगने से बच जाते हैं।

२ घोडो का एक रोग। (शा हो)

रू. भे —वरसाती।

३ देखो 'वरसात' (रू भे)

उ०—१ आगनि थी प्रतीहारडी, हाथमा मोवन कज। ग्दिय कमल विकास हुइ जिम वरसाति वदव। —नळ दवदती राम

उ०—चद्र सूरय पामलि कूडालू थाई छि वरसाति।

—नळाल्यान

वरसातीबुखार—स पु —वर्षा काल मे मच्छरो के काटने से फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमे आरभ में जाडा लगता है, शीत-ज्वर।

वरसाधिप—देखो 'वरसपती' ।

वरसाभू—सं पु [स. वर्षाभू] १ मेढक ।

२ इन्द्रगोप या वीरवहूटी नामक कीडा।

३ रक्त पुनर्नवा।

रू भे.—वरसाभू ।

वरसायत—देखो 'वरसात' (रू. भे.)

उ०—वरसायत आवण की थारी छै, आपकै जावण की त्यारी छै। जमी नीला सिणगार धारसी, 'जसा' सिणगार उतारसी । मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिल्लीगन झणकसी, भमरा भणकसी सीतळ पवन वाजसी, मुधरी मेह गाजसी —मयाराम दरजी री वात

रू भे —वरसायत।

वरसायोडो—भू का. कृ—१ किसी पदार्थ को छोटे-छोटे कणो या टुकडों के रूप मे वादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ २ आंखो से लगातार आसू बहाया हुआ, अश्रुओ की झडी लगाया हुआ ३ मुख से मधुर वाणी निकाला हुआ, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग किया हुआ ४ धन या दौलत को चारों ओर से प्राप्त किया हुआ, थोडे परिश्रम से अधिक लाभ कमाया हुआ, अच्छी आमदनी किया हुआ ५ क्रोध या आवेश के वशीभूत होकर किसी को डाटा हुआ, फटकारा हुआ. ६ निरन्तर लाठी या अस्त्र-शस्त्र प्रहार किया हुआ, कराया हुआ. ७ खर्च किया हुआ, कराया हुआ (स्त्री. वरसायोडी)

वरसारितु—स स्त्री [सं. वर्षा-ऋतु] वर्षा काल, वरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।

रू भे —विरखारत, वरसारत, वरसारित, वरसारिति, वरखारुत, वरखारुति, वरिसारित, वरिसारितु, वरिसारुत, वरिखारुति।

वरसाळ, वरसाल—स स्त्री [स वर्षा+आलुच्] १ वर्षा, वृष्टि, वारिस ।

उ०—१ साळ रत्त खळहळै जाण वरसाळ नदी जळ। गज तुरग गुड्डिया, गुडै भड हुवा गुट्टळ । —गु. रू व.

उ०—२ तोपृ का जजीरा चौतरफ फेरे । दोऊ तरफ दगी तोपृ झताळ। भानूंका भन्नहळ गोळूं का वरसाळ। घोमू का प्रधार ।

—सू प्र

२ वर्षा ऋतु।

रू भे —वरसाळ, वरसाळा, वरसाळा, वरसाला।

वरसाळइ, वरसालइ—देखो 'वरसाळो' (रू भे) (उ र.)

उ०—सीग्रालइ जल-माहि सरि, उन्हालइ पचागि । वरसालइ वगडइ वसइ, कामकदला-काजि । —मा. का. प्र.

वरसाळा, वरसाला—देखो 'वरसाळ' (रू भे)

उ०—वरसाला ऋतु सोहामणी, जलधर वरसइ मेह। कदब रूडा वन वहिसीइ, विरहीग्रा जागइ नेह। —नळदवदती रास

वरसाळी-वि [स. वर्षा+ग्रालुच्] १ वर्षात का वर्षा सम्बन्धी ।

२ वर्षात की मौसम मे होने वाला ।

स. स्त्री.—१ वर्षात के मौसम की फसल, खरीफ की फसल ।

उ०—उदेपुर री हवेली रा गाव नजीक तिणरो हैंसो भोगरो वरसाली हैंसो ३ लाग सूधो ग्राधा उनाळी हैंसो ३ ग्राध पडै । —नैणसी

२ उक्त उपज का मुग्रावजा, हिस्सा, भाग, ग्रश ।

उ०—दौलतावाद रो हुकम ग्रायो सु स्रीजी पोस वद३ ग्रसवार हुवा तद गुजरात रा परगना री वरसाळी स्रीजी नु दिराई । —नैणसी

३ देखो 'बारसाली' (रू. भे)

रू भे.—वरसाळी, बरसी ।

वरसाळू, वरसाळू-वि –१ जो बरसने की स्थिति मे हो, वरसने योग्य ।

२ जो वरसता हो, बरसने वाला ।

उ०—गोरी तो भीजै ढोला गोखडै जी, कोई ग्रालीजो भीजै, ग्रालीजो भीजै फौजा माय, हाजी ढोला माय, ग्रब घर ग्रायजा, वरसाळू बादला हो जी । —लो. गी.

३ वर्षा ऋतु सम्बन्धी ।

४ उक्त ऋतु की फसल के लिये चलने वाला (व्यक्ति, हळ)

उ०—कसबै सोजत हळ २०१ दरबार हासलीक वरसाळू जुपै छै । —सोजत रे मडळ री वात

स स्त्री —१ वर्षा, बारिस ।

उ०—मोतिया री लडिया उची सोवै बुगला विसाळ, रसराज पिया पपिया रै कारण ग्राई वरसाळू । —लो गी

२ वर्षात की मौसम ।

३ उक्त मौसम में होने वाली फसल, खरीफ ।

४ उक्त मौसम में होने वाला बुखार, विषमज्वर ।

रू भे —वरसाळू ।

वरसाळै-क्रि वि —वर्षा ऋतु मे ।

उ०—सुदर स्याम सरीर, बाधो कट राम पीत पीतवर । काळै बादळ सू कै, वीटाणी वीज वरसाळै । —र ज. प्र.

वरसाळो-स पु [स वर्षा+ग्रालुच] १ वर्षा ऋतु, वरसा का मौसम ।

उ०—१ ऊनाळो उतरियो, वरसाळो उतरियो, सीयाळो ग्रायो । —नैणसी

उ०—२ वरखा छूट गोळिया वाळै, वणियो मेघ जाण वरसाळै । समदै मुडै मुहै समडावै, ग्रसुर सजोस रोस उफणावै । —रा. रू.

२ वर्षा ऋतु के चार मास की ग्रवधि, चातुर्मास ।

३ वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

वि —वरसने वाला, वरसने योग्य ।

रू. भे.—वरसाळो, वरसाळइ, वरसाळउ ।

वरसावरस, वरसावरसी—स. पु. [स वर्ष+वर्ष] प्रति वर्ष, हर साल ।

उ०—१ सीदो उदियासिंघ सू कीधो राम करार । सोभत लो वरसा वरस, रुपिया सात हजार । —रा. रू.

उ०—२ पछै जाम बात कर मेळ कियो । घोडा ५ जाम दिया । घोडा १० री जमै ग्रागै की, सु वरसावरस दे । ग्राय मिळियो । ग्रमीखान दिसिया कह्यो-मार ल्यो, थाहरो गुनैगार छै । हमैं घोडा ६० वरसावरस दे छै । —नैणसी

रू. भे —वरसावरस, वरसावरसी ।

वरसि—देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—का कलपात ज ग्रादरइ ? गूझ कहू गुण-रेस । इणि घटि माघव मेलवसि, वरसि दीह विसेखि । —मा का. प्र.

वरसिंघ—स पु —भाटी वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बा दा ख्यात)

रू. भे —वरसिंघ, वरसिह, वरसिह ।

वरसि —१ देखो 'वरस' (रू भे)

उ० - कान्हडदेवि कही परि घणी, किसी वात समीयाणा तणी । केहउ गरव तुम्हे मनि घरउ, सात वरसि लीघउ डूगरउ । —का दे प्र

२ देखो 'वरसो' (रू भे)

वरसिण—देखो 'वरसण' (रू भे)

वरसियोडो—भू का कृ —१ बूदो के रूप मे पृथ्वी पर पडा हुग्रा. (पानी) २ बादलो के पानी की तरह छोटे-छोटे कणो के रूप मे गिरा हुग्रा. (कोई पदार्थ) ३ ग्राखो से बहा हुग्रा. (ग्रासू) ४ मधुर वाणी निकला हुग्रा, मधुर भाषित ५ चारो ग्रोर से ग्राया हुग्रा, थोडे परिश्रम से मिला हुग्रा (धन, लाभ) ६ ग्रच्छी तरह से झलकित (कान्ती) ७ किसी को किसी के द्वारा डाटा जाना, फटकारा जाना ८ ग्रस्त्र-शस्त्र प्रहार हुवा हुग्रा, ग्रस्त्र-शस्त्र प्रहारित । ९ दान दिया हुग्रा ।

(स्त्री. वरसियोडी)

वरसींघोत—देखो 'वरसिंघ' (रू भे)

वरसी—स स्त्री [स. वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति के पीछे किया जाने वाला प्रथम वार्षिक श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन, दान पुण्यादि ।

उ०—तद फूलमती कही- राजा जो तूं मोनु हाथ लगायो तो हू पण मरीस ग्रर तनेंई मारीस। ग्रर एक वरस ताई हर हेके हू जदेह महल रहीम एतै वरस दिन ताई पुन्य कर कुंवर री वरसी कर पछै थारै ढोलीये ग्राईस इतरै मनें छेडे मती। —चौवोली

२ मृत व्यक्ति के पीछे प्रति वर्ष मृत्यु के दिन किया जाने वाला श्राद्ध, ब्राह्मन भोजन, दान।

३ प्रति वर्ष ग्राने वाली मृतक की मृत्यु तिथि।

४ द्वादशी तिथि।

५ देखो 'वरस' (रू. भे)

उ०—रिसभदेव वरसी तप कीधउ, छमासी कीधउ वरधमान। —स. कु

रू. भे —वरसी, वरसि।

वरसूवलिया-स स्त्री —राठौड वश की एक उपशाखा।

वरसेस-स. पु [स वर्ष+ईश] किसी सवत्सर के किसी वर्ष का ग्रधिपति ग्रह। (फलित ज्योतिष)

वरसोत, वरसोव-स स्त्री. [स वार्षिक वर्षोत्थ, वर्षोदय] १ किसी कार्य के बदले दिया जाने वाला वार्षिक वेतन, साल भर की मजदूरी जो एक साथ दी जाती है।

उ०—इयै नै म्हा चाकर राखियो छै, ग्रो कहै छै-मनै साहूकारा कन्हा वरसोद कराय देवो, पछै चोरी काई हुवण देऊ नही। —राजा भोज व खाफरा चोर री वात

२ राजा या शासक को प्रति वर्ष भेंट के रूप मे दिया जाने वाला लगान, कर।

उ०—पूनियं रै परगने मे हळगणत-ग्रावै। डीडवाणे रा साहूकारा री वरसोत ग्रावै। परवतसर चोरासी मारोठ री दाळ ग्रावै ग्रौर च्यारू पासा री माल खायजै। —सूरे खींवें कांधलोत री वात

३ प्रति वर्ष दी जाने वाली सहायता, ग्रनुदान।

४ वार्षिक पुरस्कार।

उ०—वारोटी, देण री, कवल पैला तै कीधो। वचन करे वरसोद, रुकी हाथा लिख दीधो। रुपीया दोय हजार, धान मण तीन हजारा, ज्याज पाट री जेम, सोय पीढै जळ धारा। —ग्ररजुनजी वारहठ

रू भे.—वरसोद, वरसोद, वरुद, वरुध, वरोद, वरोध।

वरसोदण-वि. स्त्री. [स वर्षोदयन] १ जो प्रति वर्ष फल दायिनी हो। जो प्रति वर्ष फल देने के लिये ग्राती हो।

उ०—ल्यावणवाळा ने लिच्पिच लापसी, जी क काटणवाळा ने गुडळी खीर। ग्रो क वरसं वरसोदण होळी पावणी जे। —लो. गी

२ वर्ष भर निभने वाली, वर्ष भर चलने वाली।

३ प्रति वर्ष उत्थान या उन्नति करने वाली।

रू भे —वरसोदण।

वरसोदियो, वरसोदीयो-वि. [स वर्षोदयन] (स्त्री. वरसोदण) १ प्रति वर्ष प्राप्त होने वाला।

२ प्रति वर्ष उन्नति देने वाला।

३ वर्ष भर तक मौजूद रहने वाला, निभने वाला, चलने वाला।

४ प्रति वर्ष ग्राने वाला।

रू भे —वरसोदियो, वरसोदियो, वरसोदीयो।

ग्रल्पा.—वरसोदी।

वरसोदी-वि —प्रति वर्ष।

ग्रल्पा —वरसोडी।

वरसोळो-स पु. [स वर्षोपल.] १ वर्षा की बूंदो के साथ गिरने वाला छोटा हिम खण्ड, ग्रोला। (ड. र)

२ एक खाद्य पदार्थ विशेष।

३ वढई का लकडी छीलने का एक उपकरण, ग्रौजार।

रू भे —वरसोळो, वरसोलो।

वरसोह-स पु —[स. वर्ष्मन्] विवाह के समय दूल्हा व दुल्हन के चेहरे तथा शरीर पर ग्राने वाली ग्राभा या कान्ती।

उ०—करियरि ककण सुकरि, नैग्र वाधौ सिखराळह। वीररस्स वरसोह, कठ लज्जी वरमाळह। विकट रूप वीदणी, खुरम घड कीध ग्राडवर। लगन प्रव्व रणताळ, धमळ-मगळ सिंधू-सुर। ग्रधपति बहुतरि ऊमरा, सतरि खान सुरताण रा। दळ थभ 'गजण' दुल्लह हुग्रो, जान सेन जोगणपुरा। —गु. रू. व.

वि वि —देखो 'सोळो' (१)

रू. भे —वरस्सोह।

वरस्ट —देखो 'वरसट' (रू भे.) (ग्र मा)

वरस्वरग-स पु —१ मुक्ति। (ग्र. मा.)

२ जीना।

३ निश्रेणी।

वरस्स —देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—ग्रायो जाळ घर 'ग्रजो' सुख ऊपनो सरस्स। सुज तिण ऊपर सपनो, पचावनो वरस्स। —रा. रू.

वरस्सोह—देखो वरसोह' (रू भे)

उ०—तुरा तोलै मेलवा लोह ताती। मरेवा तणी होंट री कोड माती। वरस्सोह वधावळै ग्राक ग्राठो, लखे थाट जानी हुग्रो 'भीम' लाटो। —गु. रू. व.

वरह-स पु. [स. वर्ह] १ मोर की पछ।

२ मोर री पूछ का चदोवा।

३ पक्षी की पूँछ ।

४ पत्र, पत्ता (अ. मा)

५ अनुचर वर्ग ।

६ देखो 'विरह' (रू भे)

उ०—वरह दावानल आकुली, सखी प्रिय प्रिय भाखइ रे । भाखइ नइ दाखइ, कत किहा गयु ए । —छन दवदती रास

रू भे.—वरह, वरहण ।

वरहण –१ देखो 'वरह' (रू भे) (ना. मा)

२ देखो विरहण' (रू भे)

वरहमुख–स पु. [स. वर्हिमुख] देवता, देव (ह ना मा)

मि —अग्नि-मुख ।

वरहार–स पु —एक प्राचीन देश ।

उ०—पचाल गोरजर नागद्रह ऊच वरहार मथुरा अवच्या वणारसी चदेरी । व. स

वरहास–स. पु [स. वर+भास] १ घोडा, अश्व । (ह ना. मा)

उ०—१ वरहास दौडै वेगला, किरि खडै नम उर मडळा । हुइ हुमस घम घम है-खुरा, वाजत धम-धम पाखरा । —गु रू व.

उ०—२ वरहास नास चाचर विखेरि, फारक्का जेम असि, फिरइ फेरि । आसिरा तणउ ऊजळ इ आसि, वेताळि केल्ह चडियउ अहासि । —रा ज. सी.

२ ऊट, उष्ट्र ।

उ०—१ कमळा किया कतार, भर बुही तग भार । लेह देह छोडीजै लास, विलोहणै वरहास । —गु रू ब

उ०—२ ढोली कहै म साहणी, वाळी अतुळ ग्रास । साभ्रै पुगळ पुजवै, कोई एहडो वरहास । —ढो. मा.

रू भे.—वरहास, वरास, अहास, अहास, वरास, अहास ।

वर्हि, वरही—देखो 'वरही' (रू भे)

उ०— कोकल परिया गान घणकिया, ग्रीधा भमर भणकिया गाढ । वरही कपण ढणकिया चहुवळ, विविध सुवास खणकिया वाढ । —राव चापा रो गीत

वरहीवाह–स. पु. [सं. वर्ही-वाह] स्वामी कार्त्तिकेय । (ना मा)

वरहु—देखो 'विरह' (रू. भे)

उ०—वार घडी जीणइ उघउ लीध, वार वरस तीणइ वरहु कीध । पुत्र राजि बइसारी करी, नल दवदती सयम वरी ।

—नळ दवदती रास

वरांग–स. पु [स वर+अग,] १ हाथी । -

[स. वर+अगम्] २ सिर, मस्तक ।

३ सुडौल शरीर ।

४ विष्णु जिन के सब अग श्रेष्ठ माने गये हैं ।

५ ३२४ दिनो का एक नक्षत्र वत्सर ।

६ दाल चीनी ।

७ वृक्ष की शाखा, टहनी ।

८ गुदा ।

९ भग, योनी ।

वि [स. वर+अगी] १ सुन्दर अगो वाला ।

२ उत्तम, अवयव ।

रू. भे —वरंग, वर-अग, वरग, वरागी ।

वरागना—देखो 'वारगना' (रू. भे.)

वरांगी–स. स्त्री. [स. वर+अगी] १ हल्दी ।

२ मजीठ ।

३ देखो वराग' (रू. भे)

वरांसइ, वरासउ, वरासिउ, वरांसीयइ–वि [स विपर्यस्त] १ परिवर्तित, बदला हुआ । (उ र.)

२ भ्रामक ।

स पु.—१ अभाव, अनस्तित्व ।

उ०—फरस राम आपणी माइ तणउ सिर-कमल छेदइ । माघ जेवडो विद्वास पग सूजि भूखि मूउ. नागारजुन स सिद्धि पूठिउ, गागेय जेवडो सुभट पुत्र नइ वरासइ पडइ । —व स

२ प्रतिकूलता, उलटापन, विरुद्धता । (उ. र)

३ अदल-बदल, उलट-पलट । (उ. र)

वरा–सं स्त्री. [स.] १ पार्वती । २ लक्ष्मी । ३ हल्दी । ४ त्रिफला । ५ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य । ६ ब्राह्मीवूटि । ७ मजीठ । ८ मदिरा, शराब । ९ गुडच । १० विडग । ११ चित्रकला १२ मेदा ।

वराक–वि. [स. वराक] १ तुच्छ, नगण्य ।

उ०—काट जिका फुळ ऊवटै, आठ-वाट इतफाक । वा सवळा ही पुरसडा, वैरी गिणै वराक । —वा दा.

२ नीच, पामर, हीन ।

३ अभागा, दीन, गरीब, वेचारा ।

स पु [स वराक] १ शिव महादेव ।

२ युद्ध, लडाई ।

३ पापड, पर्पट ।

४ दूध भरने से उभरे हुए स्तन ।

५ योनि । (पशु)

६ वगला ।

रू भे —वराक ।

वराड़-स पु [स. वरऽर] १ विचार।

२ चदा ।

उ०—विणज हुग्रो विछडती वेळा, वळीयो कर आपरो वराड ।
विणज करै केईक वावडिया, गया कतायक मूळ गमाड़।
—ग्रोपो ग्राढो

३-देखो 'वराड' (रू भे)

वराडणो वराडबो—देखो 'वराणो, वरावो' (रू. भे)

वराडणहार, हारो, (हारी), वराडणियो—वि० ।

वराड़िग्रोडो, वराडियोडो, वराडयोडो—भू० का० कृ० ।

वराडीजणो, वराडीजबो—कर्म वा० ।

वराचक, वराचख, वराछक—देखो 'वराछक' (रू भे)

उ०—हुवा रण छेह हुठै न हनोज, कटै हथणापुर ग्रोर कनोज ।
ग्रणी सिर नाखत खैग ग्रमीर, वराचख जूझत पावूग्र वीर।
—पा प्र

वराट वराटक-स पु [स] १ कौडी।

२ रस्सी, डोरी।

३ कमलगट्टा ।

रू. भे.—वराट, वराटक ।

वराटिका-स स्त्री. [स] १ कौडी।

२ तुच्छ वस्तु ।

वराणो, वरावो-क्रि स ["वरणो" क्रि का प्रे रू] १ विवाह के लिये चुनकर वरण कराना, अगीकार कराना, शादी कराना।

२ चुनवाना, पसद करवाना।

३ स्वीकार कराना, मनवाना ।

४ निगलवाना, गिलाना।

५ वरदान दिलाना, आशीर्वाद दिलाना ।

६ याचना करवाना।

वराणहार, हारो (हारी), वराणियो—वि०।

वरायोडो—भू० का० कृ०।

वराईजणो, वराईजबो—कर्म वा० ।

वराडणो, वराडबो—रू० भे०।

वरात—देखो 'वरात' (रू भे.)

उ०—'पाल' रो वराती वरन पाल, सभरी हाय ग्रहिया चडाल ।
बाचत खत ग्रायो वडे वेव, दाखू वरात मझ गोगदेव। —पा प्र

वरा'त—देखो 'वरसात' (रू भे) (डूगरपुर)

वराती—देखो 'वराती' (रू. भे)

उ०—'पाल' रो बराती' वरन पाल, सभरी हाय ग्रहिया चडाळ ।
वाचत खत ग्रायो वडे वेव, दाखू वरात मझ गोगदेव।
—पा. प्र.

उ०—२ कोई तावडियै वळैगा जान-वरातियां। —लो. गी.

वरापूर—देखो 'वरापूर' (रू. भे.)

उ०—मिळै जैत माळा मुदी वैल माळा। वरापूर सूरा घजा सगि वाळा। ग्रणी सामि आगै इसै काम ईंदा, वणै ऊहडे वकडा क्रीत विंदा ।
—रा. रू.

वरारक-स. पु [स वरारक] हीरा।

रू. भे—वरारक।

वराळ, वराल-स. पु [स वाष्प+राज. राळ] १ अग्नि की लपट

उ०—धुवि झाळ वराळ पुरा धूंवाडे, ज्वाळ कराळ विसाळ जळै।
इक सूर लडे रिण चूर हुवै, अरि पूर घकै इक दूर पुळै ।
—रा. रू

२ वाष्प।

३ तीव्र उष्णता ।

रू भे.—वरळ, बराळ ।

[स. वराळ, वरलका] ४ लौंग, लवग ।

वरावणो, वरावबो—देखो 'वराणो, वरावो' (रू. भे.)

उ०—समोभ्रम 'भाडण' दारुण सूर। हठी दळ भीर वरावत हूर।
—सू. प्र.

वरावणहार, हारो (हारी), वरावणियो—वि०।

वराविग्रोडो, वरावियोड़ो, वराव्योडो—भू० का० कृ०।

वरावीजणो, वरावीजबो—कर्म वा० ।

वरास—देखो 'वरहास' (रू भे.)

उ०—वैराड देस रा के वरास, हालता झाप भरता हुवास। पीडा-स चाक ग्ररु तन प्रचड, हरडा स बाज ताजी हुमड। —पे. रू.

वरासन-स पु [स. वर+ग्रासन] १ उच्च व श्रेष्ठ ग्रासन।

२ वर के बैठने का ग्रासन। (विवाह)

३ दरवान।

४ अड्डुल।

५ नपुसक।

वराह-स पु [स] १ शूकर, सूअर।

उ०—१ केहर रै हाथळ करी, कीधी दात वराह। सूर काज कीधो सुजड, विघ करतापण वाह। —बा दा.

उ०—२ केताएक दिन पीछै वीसल महाराज कुमार सिकार गया। तहा एक वराह रो पीछो कियो। सग बीछुडियो। अकेला दूर गया।
—सिघासण बत्तीसी

२ विष्णु के दश अवतारो मे से तीसरा अवतार।

उ०—सिर हल्लिय अघ सेस, हहर चित्त कछप हल्लिय। हल्लिय दाढ वराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय। —र ज प्र.

३ मेढा।

४ साड।

५ बादल।

६ युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।

७ अष्टादश पुराणो मे से एक।

८ शूकर के रूप का व्यूह।

९ घडियाल, नक्र, मगर।

१० एक प्राचीनपर्वत।

११ वाराही कन्द।

रू भे —वराह, बाराह, वराहउ वराहै, वराहा, वारा, वाराह, वाराहउ, वाराहर।

वराहउ—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—जइ सूकी तउइ वउलसिरी, जइ बीधी तउ मोतिसिरी, जउ भागउ तउ वराहउ, जइ थाकउ, तउइ सोराहउ, जइ राडउ तउ चद्र। —व स

वराहक–स. पु. [स] १ कुवेर सभा मे उपस्थित एक यक्ष।

२ धृत राष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्पसत्र मे दग्ध हुआ था।

वराहजयती–स स्त्री —भादो सुदि तृतीया की तिथि।

वराहजी–स पु [स. वराह+रा प्र. जी] १ विष्णु का वराह अवतार।

२ देखो 'वाराही' (रू भे)

उ०—भीनमाल नगर रतन महेसदासोत रै समै स्वप्न दे नै स्री वराहजी अथी बाहर आया। —बा दा. ख्यात

वराहदूहो–स. पु —दूहा नामक छद का एक भेद जिसमे २१ गुरु व ६ लघु होते हैं। इसको भ्रामर या सुभ्रामर भी कहते हैं।

उ०—विस्व दुगण मुनि कहि वरण, रस मुनि त्रिगुण रहोइ। नाम वराह सु छद वद, जिण फिरि लघु गुर जोइ। पि प्र

वराहमिहिर–स पु [स] वृहत्सहिता, पच सिद्धातिका और वृहज्जातक नामक ग्रथों के रचयिता ज्योतिष के प्रधान आचार्य।

रू भे —वराह मिहिर।

वराहमोती—स पु [स वराह+मौक्तिक] एक प्रकार का मोती जो सूअर के मस्तक मे से निकलता है।

वराहसहिता–स. पु —वराहमिहिर द्वारा रचित वृहत्सहिता नामक ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रथ।

वराहावतार स पु. [स] विष्णु का तीसरा अवतार जो हिरण्याक्ष नामक असुर का वध करने के लिये हुआ था।

रू. भे —वाराहावतार, वाराहावतार।

वराही—देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इळा आधार आसुर हाता। —देवि

वरि–क्रि. वि [स उपरि] १ ऊपर, पर।

उ०—१ कठि निगोदर अवसर नवसर उर वरि हार। कचण कंकण चूडिय रुडिय बाहु स गार। —जयसेखर सूरि

उ०—२ अणियाळा नयण बाण अणियाळा, सजि कुडळ सुरमाण सिरि। वळे वाढ दे सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियो किरि। —वेलि

२ फिर, पुन, बाद मे।

वि —१ समान, अनुरूप।

उ०—वदन कळा सोळह मिसहर वरि, कोमळ वप्प वरन्नी केसरि। वामा अग वणी वर सुदरि, कनकलता जाणे कळप्पतरि। —गु रू ब

स स्त्री —तरह, भाति।

उ०—१ संसव तनि सुम्नपति जोवण न जाग्रति, वेस सघि सुहिणा सु वरि। हिव पल-पल चढतो जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवी परि। —वेलि

उ०—२ मावीत्र अजाद मेटि बोले मुखि, मुवर न की सिसुपाळ सरि। अति अबु कोपि कुवर ऊफणियो, वरसाळ वाहळा वरि। —वेलि

देखो 'वरी' (रू भे)

रू भे —वरि।

वरिआन–स पु —१ एक वर्ण वृत्त जिसमे प्रथम एक दीर्घ, फिर चार ह्रस्व वर्ण के क्रम को तीन वार रखकर अत में गुरु लघु कुल सत्रह वर्ण होते हैं। —ल पि.

२ देखो 'वरियाण' (रू भे)

३ देखो वरियाम' (रू भे)

वरिआम—देखो 'वरियाम' (रू भे.)

उ०—'प्राग'हर मोटा प्राक्रम जाचणा वगसणो जगम। अलविधणा हीदू ओपम वीरवर वरिआम। —ल. पि.

वरिक्खा, वरिखा—देखो 'वरसा' (रू भे.)

उ०—१ प्रजा राज आणद पूगी परखा। वधै देवता कीध फूला वरिक्खा। —सू प्र.

वरिखारित, वरिखारितु, वरिखारुत, वरिखारुति—देखो 'वरसारितु' (रू भे.)

उ०—१ दसराहा लग भी रहयउ, मालवणी री प्रीत। वरिखारित पाछी वळी, आवी सरद सुचीत। —ढो मा.

उ०—२ ग्रीध चाग्रिग वीरघटा दादुर बोलै, मुगळ लाल ममोला सा निजरि आवै। वरिखारित वरणी। सरदरित कहणी। —वचनिका

वरिट्ठ—देखो 'वरिस्ठ' (रू. भे.)

उ०—आणद वरत्या हुया उच्छव, वसुह माहि वरिट्ठ ओ। सो गुरु स्रीजिणचद सूरि, धन्न नयणे दिठ्ठ ओ। —स. कु

वरियण—स. स्त्री पृथ्वी, भूमि। (डि. ना मा.)

वरिया—देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०—१ समभाय एक वरियां सकाज, रण हुता असुर वंनीत-राज —शि रू.

उ०—२ नून चाहजै सो पद सो नहि, पद निकमौ है अधिक पद। पद इक द्वै वरियां सु कथित पद, हुव सुण पतत प्रकर्स हद। —वा. दा

वरियांण—स पु. [स वरियाण] १ ज्योतिष के २७ योगो मे से अठारवें योग का नाम। (फलित ज्योतिष)

रू भे—वरिआण, व़रीयाण।

२ देखो 'वरियाम' (रू भे)

वरियांम—वि [स वरेण्य या वरीयस्] १ श्रेष्ठ, उत्तम, शिरोमणि, सर्वोत्तम।

उ०—१ सहकोय साजत करी सुभडा, विरद झल वरियांम। कुळ जनक कुमरी व्याह करसी, रिघू वरसी राम। —र. रू

उ०—२ अखरती मदा करैवा अचडा, वैर वाराह कमध वरियांम। आभै दळै सामहो आयो, रूक भुगत करवा बळराम। —बळराम राठोड री गीत

उ०—३ घडै वेल वरियाम, सुजळ ते आगळ चचळ। गरजि नाद गभीर, रोडि रिणतूर अबागळ। —गु रू व

२ प्रवीण, चतुर।

३ वरण करने योग्य।

उ०—"आसकन्न" वडो एकाधगत्ति, नींवउत्त नमो आतम सकत्ति। ओपमा करन्न अण-नीद, वरियांम कुंमारी घडा-वीद,। —गु रू व.

४ सुन्दर, रूपवान।

उ०—१ वरियांम लगाण पलाण वणावी, एस रुपाडै ऊकडता। परचड हुसड किया तहि पक्खर, अवर सामा ऊछळता। —गु रू व.

उ०—२ निज कौसल्य केकइ सुमित्रा नाम। वरियांम तणै अति हेत वाम। दसरत्थ विभै इम नजर दीघ। कामना पुत्र घरि जिगन कीघ। —सू प्र.

उ०—३ सिणगारी सन्नाह सू, चिसकामिणि वरियांम। वरिआई हाला वरण, करण महाजुध काम। —हा भा

५ वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—१ ऐ वरियाम निहस्सिया, दोय घडी इक जाम। "अजबौ" वीठळदास री, पडियौ खेत दुगाम। —रा. रू.

उ०—२ सनमुख साह निविद्धियो, कीधौ नारद कांम। कळि लग्गी रट्ठौड हर, भरसी के वरियाम। —गु रू. व.

उ०—३ 'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि। मुळकियौ मच्छरि घण रोस मज्झि, कमधज्ज कहै कर धूणि तेग। वरियांम विडगा चढौ वेग। —गु रू व

६ जोरावर, जबरदस्त।

उ०—१ आरव मारघो 'अमरसी,' वड हथ्थै वरियांम। हठ कर खेंडै हारणी, कमधज आयौ काम। —द दा.

उ०—२ राजकुळी वस छत्तीसेइ रावत, वीरति वका वरियाम। मारूघर साम तणै छळि मिळिया, करण कणंगिरि संग्राम। —गु. रू. व

७ प्रमुख, मुख्य।

उ०—१ रहच खळा दळ रोळणा, वीर उभै वरियाम। 'किचनर' 'पातल' रै करा, लदन तणी लगाम। —किसोरदान बारहठ

उ०—२ सू किसा-एक सरदार जुवान छै? पाका पाका वरियांम नू, अजरायला नू खीवरा नू डाण हुला, डाकिया नूं।—रा. सा. स.

स पु—मत्री, वजीर। (डिं. ना. मा)

रू भे—वरयाम, वरियाम, वरीयाम, वारियाम, वारीयाम, वरिआम वरीआम, वरीयान, वरीयाम।

वरियोडौ—भू का कृ—१ विवाह के लिये चुना हुआ, वरण किया हुआ, अगीकार किया हुआ, शादी किया हुआ. २ पसद किया हुआ, चुना हुआ ३ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ ४ निगला हुआ, खाया हुआ ५ वरदान दिया हुआ, आशीर्वाद दिया हुआ. ६ मागा हुआ, याचना किया हुआ।

(स्त्री वरियोडी)

वरियोवेस—स पु—राठौडों की प्रसिद्ध तेरह शाखाओं में से एक। (वा. दा ख्यात)

वरियौ—देखो 'वहियौ' (रू भे)

वरिस—देखो 'वरस' (रू भे)

वरिसणौ, वरिसबौ—१ देखो 'वरणौ, वरबौ' (रू भे)

उ०—इक भव अथवा दोइ भव अतरै रे, वरिस्यो सिवगति नार।
—वि कु.

२ देखो 'वरसणौ, वरसवौ' (रू भे.)

वरिसि—देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—वार वरिसि गोदावरी, अेहवी अेक जिवार। हूम हवइ छाडइ नही, गुण केहा गमार। —मा का प्र

वरिसियोडौ—१ देखो 'वरियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'वरसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वरिसियोडी)

वरिस्ठ-वि. [स वरिष्ठ] १ श्रेष्ठ, उत्तम, उच्च।

उ०—मिथ्या मनण मती कर मन तू, सत् विचार उर धरना। वर वरीयान वरिस्ठ पदवी, पोथा सोई तिरना।
—श्रीसुखराम जी महाराज

२ पूजनीय, पूज्य।
३ पुराना, बुजुर्ग।
४ तुलना मे किसी से बढकर।
५ सबसे बडा।
६ सब से अधिक लबा।
७ सबसे अधिक भारी।
स पु [स. वरिष्ठ] १ तित्तिर या तीतर पक्षी।
२ नारगी का पेड।
[स वरिष्ठ] ३ ताम्र, ताबा।
४ मिर्च।
५ चाक्षुप मनु के पुत्रो मे से एक।
६ धर्म सावर्णि मन्वतरो के सप्त ऋषियो मे से एक।
७ उरुतम्स ऋषि का एक नाम।
रू भे—वरिट्ठ, बरिस्ठ, वरिट्ठ।

वरी-स स्त्री [स] १ सूर्य पत्नी छाया का नाम।
२ शतावरी का पौधा।
३ विवाह के समय वर पक्ष की ओर से वधू के लिये भेजी जाने वाली विशेष पोशाक।
४ दुल्हे व दुल्हिन की पोशाक।
५ कुए से पानी निकालने की छोटी रस्सी।
देखो 'वरि' (रू भे)

उ०—उडै पग हात फिरका हुवै अग रा, वहै रत जेम सावण वहाळा आप आपौ वरी जोयनै भाडिया, लडै रिण भल-भला निराताळा
—र रू

रू. भे—वरी, वरि, भरी।

वरीआम—देखो 'वरियाम' (रू. भे)

उ०—इण भाति रो घघळो तजारो, वाघळोतजारो मो फिरनूं जी पाका पाका वरीआमां जोधारा करउदता।
—रा. सा स.

वरीयां—देखो 'वेळा' (रू. भे)

उ०—१ दुपहरा की वरीयां यैमो बीजण होय गयो छै जु कोई मनुष्य फिरै डोलै न छै कैसी भाति जैसी माह की राति होय।
—वेलि टी

उ०—२ तद राजा कहि गावास आहीज आहीज वरीया ले आयो।
—चौबोली

वरीयाण—१ देखो 'वरियाम' (रू भे)

२ देखो 'वरियाण' (रू भे),

वरीयान, वरीयांम—देखो 'वरियाम' (रू भे.)

उ०—मिथ्या मनण मती कर मन तू, सत् विचार उर धरना। वर वरीयान वरिष्ट पदवी, पोथा सोई तिरना।
—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ वस विसुद्ध वरीयाम साम्ही थिढण। घणा दिमि दोइणी म्हालियो विरद धण।
—हा. झा

उ०—३ 'पाल' हुरा काळ रूपी वीज जिही तीज वडै, अडै भुजा भला गो इसो वरीयांम। —मारवाड रा अमरावा री वारता

वरीस-स पु [स. वारि+ईश] १ समुद्र, सागर।

उ०—'भीम' भाण सारीस, 'करन' सिवदान सरीसा। जोधा छळ जोधाण, बोल दळ वेळ वरीसा।
—रा रू

२ देखो 'वरीसण' (रू भे)

उ०—१ वीस च्यार धुर वरणवी, सुज वरीस ससार प्रथवी सीस पचीसमौ, ईस 'पतौ' अवतार।
—जैतदान बारहठ

उ०—२ माहण समद मेन मीमोदा, रांणा तोसू राम रिम। अरय वरीस करै सिर ऊपर, कळह वरीस न करै किम।
—महराणा कुंभा मोकळोत रो गीत

उ०—३ गढपत्ती मासण गजा, आपण लाख पसाव। अभो प्रतप्पो कोटि जुग, कोडि वरीस सुभाव।
रा रू

उ०—४ विरुदावली हुमती वरीस अवनीस, लाख सामण कोडि वरीस। अडड डडण अगजी गजण, अनमी असूत ताहि नमो भूत करण।
—रा रू.

३ देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—१ जोड विराजै वर तरुणि, मोड विराजै सीस। कव आसीसै लोड धन, जीवौ कोड वरीस।
—रा रू

उ०—२ राजा तुम्ह रहुँ हजो, इम माहरी आसीस। परिकर सहू परिवार सिउ. जीवै कोडि वरीस।
—मा का प्र

रू भे—वरीस।

वरीसण, वरीसणौ–वि [स. वर्षणम्] १ दान देने वाला, दातार, उदार-चित्त।

उ०—१ लख धीर वडौ लख लूट वणी चपि लाज, वड चीत वरीसण वाज गरीबनिवाज, जदुवस उजाळ महागुण जाण, तप तेज दिनकर जेम तपै तुडिताण। —ल. पि

उ०—२ ग्राहुई वडो राठौड विसरामिया, तज गया दूसरा न मायत टेक। हसत नित वरीसण न को इळ रायहर, हसत वध कवि नही जगत मैं हेक। —द्वारकादास धधवाडियौ

उ०—३ कोडि वरीसणौ लखधीर वडाकर, राजिद रूपक रजणौ। वैर वराहळि ग्रादळ वादळ, भूप खळा दळ भजणौ। —ल पि

२ दान।

३ उत्सर्ग, त्याग।

रू भे—वरीस, वरीसण, वरीस।

वरीसणौ, वरीसबौ–देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू भे)

उ०—लाख वरीसै भोज तू, कवित नवा कहणाह। लडालूब वणियौ विहद, गढपत जस गहणाह। —बा दा

वरीसणहार, हारौ (हारी), वरीसणियौ— वि०।

वरीसिग्रोडौ, वरीसियोडौ, वरीस्योडौ—भू० का० कृ०।

वरीसीजणौ, वरीसीजबौ—कर्म वा०।

वरीसियोडौ—देखो 'वरसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वरीसियोडी)

वरु—देखो 'वर' (रू भे)

उ०—१ जो ग्रम्हारू वयणु सुणेसिइ, निस्चि सो वरु मइ परिणेसिइ। खेचरु भूचरु भूमिधरी। —प प च

उ०—२ खूटा ग्ररजुन सवि हथियार, माल झूझ वेड करइ ग्रपार। साहिड ग्ररजुनि धनचरु पाणि प्रकटु हुई वोलइ वरु मागि। —प प च.

वरुग्रो–स. पु. [स वटुक, प्रा वडुग्र] १ ब्रह्मचर्यावस्था, वटुक, ब्रह्मचारी।

२ उपनयन सस्कार, यज्ञोपवीत।

३ उक्त सस्कार के ग्रवसर पर गाया जाने वाला गीत।

४ ब्राह्मण बालक।

५ प्रोहित कर्म करने वाला विद्वान् ब्राह्मण।

रू भे—वरुग्रो।

वरुण–स. पु [स.] १ सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता जो जल का ग्रधिष्ठाता, दस्युग्रो का नाशक व देवताग्रो का रक्षक माना गया है।

उ०—१ वरुण जाय दीन्हा तहा, रतन पदारथ जाय। ग्राय ग्रवतिका सो रतन, ब्राह्मण दीधा ग्राय। —सिघासण बत्तीसी

उ०—२ ता पुर मे जैते बसै, सब ही वरुण समान —गजउद्धार

२ ग्राठ दिक्पालो मे से एक, पश्चिम दिशा का दिक्पाल।

३ पश्चिम दिशा।

४ मित्र देवताग्रो के साथ रहने वाले बारह ग्रादित्यों मे नौवें ग्रादित्य का नाम।

५ समुद्र।

६ पानी, जल, नीर।

उ०—वरुण येती कठा सूं ग्राण सू विचारै, चवै इम तरण सूं मूंह चढियौ। करण दरियाव री रीत लग केन्पुर, पुरदर भरण री चीत पडियौ। —महाराणा राजसिंह री गीत

७ सूर्य।

८ ग्राकाश।

९ सौर जगत का सब से दूरस्थ ग्रह (नेपचून)

१० एक मरुत, जो मरुतो के तीसरे गण मे शामिल था।

११ एक देव गधर्व, जो कश्यप एव मुनि के पुत्रो मे से एक था।

रू भे—वरुण, वरण, वारुण।

वरुणग्रह–स पु—१ घोडो का एक रोग, जिसमें घोडे की जीभ, तालू, ग्राख ग्रौर लिंगेद्रिय ग्रादि ग्रग काले पड जाते हैं। (शा. हो)

२ देखो 'वरुण' (रू भे)

वरुणदेव—स पु [स] जल के ग्रधिष्ठाता, सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता।

उ०—सै' प्रसन्न होय ग्रासीस देय विदा हुग्रा। जद समय देख वरुणदेव प्रसन्न होय राजा नूं कही-राजा, तू बडौ उदार, धीर-वीर, हू तो'सू प्रसन्न हुवौ। —सिघासण बत्तीसी

वरुणपुरी, वरुणलोक–स स्त्री [स] वरुण देवता का निवासस्थान, वरुणलोक।

उ०—बडे महल हैं वरुण कै, बडे हाट बाजार। जोजन ग्रढी हजार में, वरुणपुरी विसतार। —गजउद्धार

रू भे—ग्ररुणपुरी।

वरुणालय—स पु [स] समुद्र, सागर।

वरुथ—देखो 'वरूथ' (रू भे)

वरुथणी, वरुथनी—देखो 'वरूथणी' (रू भे)

वरुथी—देखो 'वरूथी' (रू भे)

वरूथ–स पु [स वरूथ] १ लोहे की चद्दर या जाली का बना रथ का ग्रावरण जो शस्त्र के ग्राघात से रथ की रक्षा करता है।

२ कवच, बख्तर।

३ ढाल।

४ सैन्यदल, सेना।

५ समूह, समुदाय।

[स वरूथिन्] ६ रथ ।
वि.—१ कवचधारी ।
२ रक्षक ।
३ रथारुढ ।
रू. भे.—वरुथ, वरुथी, वरुथ्थ, वरूथ, वरूथी, वरूथ्य, विरूथ वरुथ, वरुथी, विरुत्थ, विरुथ ।
अल्पा,—विरूतो ,वरूथी ।
वरुथणी, वरुथनी वरूथिनी-स. स्त्री [स वरूथी] सेना, फौज ।
(ह. ना. मा)
रू भे —वरुथणी, वरुथनी, वरुथिनी, वरुथी, वरुथ, वरूथणी, वरूथनी, वरूथिनी, विरूथण, विरूथणी, विरूथनी, वरुथणी, वरुथनी वरुथी ।
वरूथिनी-एकादसी-स स्त्री.—वैशाख कृष्ण एकादशी ।
वरूथी—१ देखो 'वरूथ' (रू भे)
२ देखो 'वरूथणी (रू भे)
वरूथी-वि [स वरूथिन्] १ प्रचड, भयकर, जबरदस्त ।
२ वीर, योद्धा ।
३ कवचधारी ।
स पु —१ सेनापति ।
२ देखो 'वरूथ' (अल्पा , रू भे.)
रू भे —वरुथी, विरुथी, विरूथ, विरूथी, विरूतो ।
वरे, वरै-क्रि. वि.—१ अधिकार मे, कब्जे मे ।
वि.—माफिक, अनुकूल ।
उ०—कुतब, गोस, अबदाल सूफी अनै कळदर, पीरजादा मिळै साफ परभात । कान पातसाह रा भरै एक राह कज, वरै न पड़ै 'जसवत' जिते वात । —नरहरदास बारहठ
रू. भे —भरै ।
वरोळ-स पु. [स. वर्ह] १ वरै ।
२ देखो 'विरोळ' ।
वरोलण-वि [राज वरोळ] १ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।
उ०—जग करण घमजगर हुए 'तेजळ' जुही, राव रावळ रजा राण रोदा । आवसी नजर जण दन वळै आरासा, हजारा वरोळण वजर होदा । —ठाकुर कुसळसिहजी री गीत
वरोळणौ, वरोळबौ-क्रि स.—देखो 'विरोळणौ, विरोळबौ' (रू भे)
उ०—१ चातुरगी वरोळ थाटकै आवळा चमु, भू काज बावळा खळा दाटकै भनेव । आराण छेडिया चखा भाटकै अजाग आग, भाटकै वचाळै अवा हेडीया जनेव । —जवानजी आढौ
उ०—२खडा वरोळ मार चौधारा,काळ वहता कमरण फळै । रोळै दळ वोळै रुद्रायण, वळीयो जेम समद वळै । —महेसदास आढौ
उ०—३ देवी मेरगिर रूप सायर वरोळै । देवी सायरं रूप गिर मेर चोळै । —देवि.
उ०—४ 'माल' हरै वध सुछळ महारिण, आगै मह मानव सुर-ईस । पाणी असुर वरोळै पीधौ, भारी दूध तणौ 'गज' 'भीम' । —कल्याणदास महडू
वरोळणहार, हारौ (हारी), वरोळणियौ—वि० ।
वरोळिग्रोडौ, वरोळियोडौ, वरोळयोडौ—भू० का० कृ० ।
वरोळीजणौ, वरोळीजबौ—कर्म वा० ।
वरोळणौ, वरोळबौ—रू भे
वरोळियोडौ-भू का कृ —देखो 'विरोळियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री वरोळियोडी)
वरौ-स. पु [स. वराट] १ कूए, वापी आदि मे पानी निकालने की रस्सी ।
२ हाथी को बाधने या गर्दन मे डालने का मोटा रस्सा ।
उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति कपोळा रै मदगध करिनै भौरा रा झोर पडनै रहीआ छै । भौरा नूं बैठा सासहै नही, सूडीर वरां वळाका नाइ नै रहीमा छै । —रा. सा स
३ आश्रय ।
उ०—जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट ग्रामै वरौ । जोधपुर अजुधापुरी, रांम राज कमधज्ज रौ । —गु रू ब
वळ-स पु —१ भोजन, खाना ।
उ०—१ हाथी १ घोडा ६ सोना रूपा सू मढिया नाळेर देनै प्रोहित कामदार धार मेल्हिया । तिकै धार आया । तद सगळा नै खबर हुई, गोडा रा नाळेर आया । तदि डेरो दिरायो वळ री चारा री जावती करायी । —जगदेव पवार री वात
उ०—२ किसतुरी विना रहवा री आखडी । फाटा कपडा सीवण री आखडी । साथ नै वळ हुआ विना जीमण री आखडी । वावडी री पाणी पीवण री आखडी । वेहती नदी रो पाणी पीवण री आखडी । —रा सा स
२ भोजन की सामग्री ।
उ०—उठी नू दिन पाच कुवरसी टिकियो सो ज्यू ही तो भुजाई हुवै ज्यू ही अळ तुलै । लोग सारी आय भेळो हुवै ।
—कुंवरसी साखला री वारता
(मि पेटियो)
३ वलि ।
उ०—१ ताहिरा भैसो राकस रूप कर बोल्यो । कहियो वडा रजपूत । श्री राजा तो केहि काम रो न छै । अर तूं वरदाईसेन रो बेटो छै, सो तू म्हनै सौ वाकरा, सौ भैसा अर सौ मण दारू री म्हनै वळ दे तो तोनै हू वर देऊ । —नैणसी ।

उ०—२ सु उठै कोई कसवण हुवो, तरै क्यु' पग ठागिया, उठै छतरिया सवणी बुलायो, तरै सवणी कह्यो-एक आदमी अठै वळ दियो जोईजै । तरै रावळ साथै आदमी १२ मास-साख रा था, नै एक रतनूं आसराव बेटी सूघो थो, तरै वारठ विचारियो, विचारनै कह्यो—सिगळी ही साग री एकूको छै, नै म्है दोय जणा छा, सु म्हा माहिलो एक जणो वळ चाडो । —नैणसी

४ गोष्ठी, भोज ।

उ०—इतरी थोरिया विचारी । ताहरा पाबूजी तो कारणीक मरद । तद पाबूजी ईया रै जीव री लखी । ताहरा पाबूजी बोलिया । कही—रै थोरिया ! थे आ साढ लै जावो, आज री वळ करो । —नैणसी

५ भोज या बलि पर लिया जाने वाला कर । (नैणसी)

६ दर्द के कारण ऊरु-मूल, काख या कर्ण मूल मे से किसी स्थान पर होने वाली ग्रन्थी, शोथ । (अमरत)

वि वि.—ऐसा सधि स्थलो का खुल कर कार्य न करने के कारण होता है ।

७ घुमाव, मोड ।

८ टेढापन, लचक

९ ऐंठन, मरोड, वाक ।

उ०—वळ काढि गासिया, परा चाढिजै पखाळा । वाढ अणी करि वलक, आव कीजै अणियाळा । —सू प्र.

१० दिशा ।

११ मेघ, बादल ।

१२ एक असुर ।

१३ पार्श्व पहलू ।

१४ सिकुडन ।

१५ झुकाव ।

सर्व—उन ।

उ०—तूटै कमळ वहै वळ तेगा, नेगी अपत करण रिण नेगा । पहिलै घकै पाच सौ पडिया, मुगला प्राण चका सै मुडिया । —रा रू

क्रि वि [स वलन्] १ फिर, और ।

उ०—१ घुर तुक मत चौवीस धर, वळ दूजी अकवीस । ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस —र ज प्र

उ०—२ सट वहन प्रथम जनमी विसंक, दिल थयो दुचिन वळ सुना देख । मन विकता पडी नह कुटव माय, अवतरी जोग माया जु आय । —रामदान लालस

२ ओर, तरफ ।

३ देखो वळ' (रू भे)

वलउ, वळक, वलक—स स्त्री [रा वलक] १ प्रकाश, चमक । (उ. र)

उ०—वळ काढिजै गासिया, परा चाढिजै पखाळा । वाढ अणी करि वळक, आव कीजै अणियाळा । —सू प्र.

२ आभा, कान्ति, तेज ।

३ किरण, रश्मि ।

४ शत्रु दुश्मन ।

उ०—वैर वारह वाहरु वैरा, वळका कर करवा दईवान । सत्र घर गणै नसा जसवारो, मनखा रो लागै मझमान ।

—रावत अरजणसिंह री गीत

५ आवेश, तेजी ।

६ काष्ठ का लट्टा ।

७ तामस मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक ।

८ कटि, कमर ।

उ०—हार त्रोडती, वलक मोडती, आभरण भाजती, वस्त्र गाजती, किंकिणीकलापुच्छोडती, माथउ फोडती, वक्षस्थल ताडती, कुंतलकलाप रोलती, प्रथ्वीतलि लोलती, मरुज्जल वास्पजलि कचुक सिंचती । —व स

रू भे—वळक वलक ।

वळकणौ, वळकवौ—क्रि अ—१ वादलो के बीच बिजली का बल खाते हुए चमकना, दमकना ।

उ०—१ डोहत सूडाडड ए, त्रीखड सरपक हिंड ए । गज-वाग मत्थै मैगळा, वळकत्त बीजक वद्दळा । —गु रू बं.

उ०—२ रिमै कूंत अदभूत, भडा वाका भूहडै । वादळ वादळ वळकि, बीजलत्ता ब्रहमडै । —गु रू ब

२ किसी वस्तु का चमकना ।

उ०—१ वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूसर सावळ भळहळ ए । अडडै काछूसळ कुटकै कम्मळ स्रोणी रळ-चळ सळहळ ए । —गु रू. व.

उ०—२ वाजी हाक वाहदरा, होय वीर हकारा, वळवळ वाढ वळकिया खुरसाण दुधारा । —वी मा

३ आभा, कान्ती, या तेज का झलकना, शोभा देना ।

४ प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना ।

वळकणहार, हारो (हारी), वळकणियो—वि० ।

वळकिओडो, वळकियोडो, वळक्योडो—भू० का० कृ० ।

वळकीजणो, वळकीजबो—भाव वा० ।

वळक्कणो, वळक्कवो—रू भे ।

वळकती-मेळ—स पु—माला, वल्लभ । (ना डि को)

वलका–स स्त्री.—सजीवनी बूटी । (श्र. मा.)

वळकियोडो–भू. का कृ —१ चमका हुआ, दमका हुआ. २ झलका हुआ, शोभित. ३ प्रकाशमान हुवा हुआ ।
(स्त्री वळकियोडी)

वळकी—देखो 'वल्लकी' (रू भे.)

वळक्कणो, वळकबो—देखो 'वळकणो, वळकवो' (रू. भे)

उ०—१ भिदे जाळिया रूप सोभा भळक्की । वणे वीजळी जाण आभे वळक्की । —सू प्र

उ०—२ वाराह घडक्कं दाढ खडक्कं कंध कडक्कं कूरम । सम्मूह सळक्कं कूत वळक्कै खेग खळक्कं कैजम्म । —गु रू व

वळक्कियोडो—देखो 'वळकियोडो' (रू भे)
(स्त्री वळक्कियोडी)

वळख–स. पु [स अवलक्ष] १ उज्वल, शुभ्र । (श्र. मा)
२ श्वेत, सफेद ।

वलगणो, वलगबो–क्रि अ [स. वल्गन] १ लूबना, लटकना, भूमना ।

उ०—बल करी वलगइ बाहडी, तई आपी तस बाह । रग वधारइ वली वली, ते तूठउ तनि ताह ।
—मा का प्र

२ लिपटना ।

उ०—गोरी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम व्रक्षि । विनय करीनइ विलपती, विधि-विधि थई विलक्षि । —मा का प्र

३ उछलना, कूदना ।
४ पकडना ।

उ०—कटितटि हूती वकडी काढी करि करवाल । तव आगीउ आवीकरी, करि वलगु ततकाल । —मा. का प्र

५ छलाग मारना ।
६ व्यर्थ की उछल कूद करना ।
७ ऊछल उछल कर चलना ।
८ अवलबन करना ।
९ उलझना, फसना ।

उ०—वलता ग्रहदत्त [ऋखि] बोलि, साभलि राजा धरम । प्राणि सरव सदायि दूखिया, [येन्हि] वलगा करम । —नळाख्यान

वलगणहार, हारो (हारी), वलगणियो—वि० ।
वलगिग्रोडो, वलगियोडो, वलग्योडो—भू० का० कृ० ।
वलगीजणो, वलगीजबो—भाव वा० ।
वलग्गणो, वलग्गबो—रू० भे० ।

वळगत, वळगताऊ–क्रि वि [स वल्गित] राह चलते हुए ।

वलगा—देखो 'वल्गा' (रू. भे.)

वलगार–स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—जादर हीरागर वइरागर फूलपगार, चीर वलगार चुनार, पीतांबर चादर रत्तांबर नेत्रांबर । —व स

वलगियोडो–भू का कृ.—१ लूंबा हुआ, लटका हुआ, झूमा हुआ, भूला हुआ २ लिपटा हुआ ३ उछला हुआ, कूदा हुआ ४ पकडा हुआ ५ छलाग मारा हुआ ६ व्यर्थ की उछल-कूद किया हुआ. ७ उछल उछल कर चला हुआ ८ अवलबन किया हुआ ९ उलझा हुआ, फसा हुआ ।
(स्त्री वलगियोडी)

वलग्गणो, वलग्गबो—देखो 'वलगणो, वलगबो' (रू भे)

उ०—रवि किरणे हू वलगि चडिय अट्ठावय तित्थहि । निय २ वन्न पमाण बिंब वदिय, जिण मतिहि । —अभयतिक यति

वलग्गियोडो—देखो 'वलगियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वलग्गियोडी)

वळण, वळणि, वळणी–स पु. [स वल] १ प्रस्थान, गमन ।

उ०—मेहा वूठा मन बहळ, थळ ताढा जळ रेम । करसण पाका कण खिरा, तद कत वळण करेस । —ढो मा

२ लौटना क्रिया ।

उ०—सेवगा रगरळी मेट वसीयो सुरग, रैण सर ऊजळी क्रीत राहै । वळण करवा तणी हूस पाछी वळी, मिळी जळ बूंद दरियाव माहै । —चिमनजी आढो

३ आगमन ।
४ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव ।
५ घूमने या मुडने की क्रिया या भाव ।
६ वक्र गति, वक्र चाल, टेढी-मेढी चाल ।

उ०—नदी दो तड पाडती, कचवर उपाडती, रूख उन्मूलती, कुभिणि घातती, सीव ज हणति. जडि मूलि खणती, मारग लोक खलती, वळणी चलती, तरु तोखती, नीचउ जोअती, महापूरि कल-कलती, कल्लेलि उच्छलती । —व स

७ भुगतान ।
८ ग्रह, नक्षत्रादि का सायनांश से हट कर चलना (ज्योतिष)
रू भे —वळण, वलन ।

वळणो, वळबो–क्रि अ [स. वल्] १ वापस लौटना, लौट कर जाना, जाना ।

उ०—१ कमधज वर मागै जोडै कर, हुवै दान चाहौं सुज हाजर । तथास्तु कहि मुनिंद वळै तुर, राव। दिन मिळसी राजेस्वर ।
—सू प्र

उ०—२ लै 'ओपा' कय कीरत लाडी, वड पीआर वजाडै। इण माहृठै कई आला आला, वळिया ढोल वजाडै। —ओपो आढो

उ०—३ एक काठिया रै वास थो, तठै रावळ वाड माहे कूद पड़ियो। लागै दीठो-जु जु जाइ (?) तरै पाळसेट तरवार वाही, सु गुदडी माहे आगळ वै वैठी। लाखो पाछो वळियो। रावळ काठिया मामा माहैं गयो। —नैणसी

उ०—४ कहियो ओ ठाकुर सुणै, अै लोक सुणै ओ नीलो रूख छै, जै छै मास ताई नायो तो तै कहियो न मैं सुणियो, मैं कहियो न तै सुणियो, वाचा अवाचा छै। ताहरा वीजाणद आघो हालियो। सयणी पाछी वळी। —सयणी री वात

२ प्रस्थान करना, गमन करना।

३ लौट कर आना, वापिस आना।

उ०—१ पछै आए सिघमुख डेरो कियो। पाछा फतै कर वळिया। पाछा आवता नै दासू वैहणीवाळ आय मिळियो। दासू कह्यो—राज म्हारो वैर छै। जो लरावो तो धरती थाहरी छै, सो लेवो —नैणसी

उ०—२ भला पधारो भींवडा, गरक मिलह मैं गात। केहर वाळा कळह री, वळता कीजो वात। —वा दा

४ प्राप्त होना, आना। (वृद्धा अवस्था)।

उ०—सरघा घटगी सेंग, वेग विरधापण वळियो,। निकळण री रथ नही, कळण ऊडी मैं कळियो। मगरपचीसी माय, डोकरी वणगी डाकी, डागडिया निठ डिगै, थिगै टागडिया थाकी। —ऊ का

५ घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। (व्यायाम)

६ घूमना; मुड़ना।

उ०—जुडै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठा पचमुख। वाच न क्यू परगह वोळावै, रावत वळियो तेण रुख। —द दा

७ बल खाना, वक्रगति चलना।

८ आगे बढना।

उ०—हाथी लख मन हेत, वळियो वेढ लगाय कै। चित उत धरियो चेत, मिळवा कामण माणवा। —गजउद्धार

९ ढलना।

उ०—१ छाह गुआळ वळती छाया, जको पटतर देख जुए। सुवस वसीजै सहर सितारो, हथणापुर मे वेढ हुए। —ओपो आढो

उ०—२ मन जाणै वडलो हुवा, (ऊगा) वेगाप री थळियाह। वीझा ढाळै ढोलियाँ, वळती छाहडियाह।
—वीझा सोरठ री वात

१०—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ तरै देवराज कह्यो—भली वात। म्हारै माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतो हू मोटो हुईस, नै माहरी धरती गई छै सु वाळीस। माहरो दावो वरिहाहा माहे छै, सु वळसी। राज री मैहर था माहरै सोह वात भली हुसी।
—नैणसी

उ०—२ तरै जोगी खुसी हुय, दवा दीनो कह्यो—थाहरी ठाकुराई दिन दिन वधसी, थाहरै पग सू आ धरती कदै नही जाय, थाहरा दावा वळसी। —नैणसी

११ आकर्षित होना।

१२ अकन होना, लिखा जाना।

उ०—मन जाणै पीवूं पै-मिमरी, छाछ सुवरणी मिळै न छाट। वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा आट।
—ओपो आढो

१३ आना।

१४ लगना, पड़ना।

उ०—सैणा ठरिया नयण, हिया अमणा परजळिया। जस प्रताप वाधियो, घाउ नीसाणा वळिया। —गु रू व.

१५ प्रवेश होना, घुसना।

उ०—दरवाजो तूटण सू किला मे खळवळी माचगी। जेज विहया नाकावदी होवण री भी ही सो भीमडो विजळी रै पळाका रै ज्यूं किला रै मायनै वळियो। पण ड्योढी पूगता-पूगता चाफेर सूं घेरीजग्यो। —अमरचूंनडी

क्रि स—१६ ढकना, लपेटना।

१७ लौटाना, देना।

उ०—इण गोरवधियै रै कारणै मैं तो नव दिन निरणी रह गई रै। म्हारो गोरवध वळनो कर। —लो गी:

१८ प्रत्युत्तर करना, उत्तर देना।

१९ भरपाई करना, चुकता करना।

२० देखो 'वळणो, वळवो' (रू भे)

उ०—१ करहा लवी वीस भरि, पवना ज्यूं वहि जाइ। झम वळतइ दीवळइ, धण जागती जाइ। —ढो मा.

उ०—२ सूरज ना किरण पच्छिम ढळया, पयी सगा नइ मिळया। विरही ना हीया वळया, गोवाळ घरे वळया। —रा सा स.

वळणहार हारो (हारी), वळणियो—वि०।
वळिग्रोडो, वळियोडो, वळयोडो—भू० का० कृ०।
वळीजणो, वळीजवो—भाव/कर्म वा०।
वलणो, वलवो, वल्लणो, वल्लवो—रू. भे।

वलणो, वलवो—देखो 'वळणो, वळवो' (रू. भे)

उ०—१ दानि धरंमि एक वीर विचारैं, मद नरेंद्र न वलइ

अरणमारै। हेम नी गजवडिइ पताका, करण जाणिन किसिउ सिराका। —सालि सूरि

उ०—२ करि लज्जा वलती कहै रै हां, घर मन अधिक उमग। महाराज इण पापीयै रै हा, कीधउ मुझ घर भग। —वि कु.

उ०—३ तुरगम आसवतउ, पवन जिम चालतउ, सरप जिम वलतउ मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ, लीला चालतउ, रभसि माल्हतउ, क्रीडा रोमतु, सूत्कार मेल्हतउ। —व. स

उ०—४ ग्रहदस्व रवि ग्रोचरै साभलि, कुतातन। पुण्य स्लोक एम वलतु वदि रै सुणीनि वचन।

वलणहार, हारौ (हारी), वलणियौ—वि०।

वलिग्रोडौ, वलियोडौ, वल्योडौ—भू० का० कृ०।

वलीजणौ, वलीजवौ—भाव/कर्म वा०।

वळतपूंछ–स पु [स वलित-पुच्छ] श्वान, कुत्ता। (अ मा)

वळतासख–स पु—वह छप्पय छद जिसमे प्रथम कही हुई तुक की पुनरावृति लाटानुप्रास शब्दालकार के समान होती है। (र ज प्र)

वलद—देखो 'वळद' (रू भे)

उ०—हाली नइ भवि हल खडघा, फाड्या प्रथिवी पेट। सुउ निदाण किया घणा, दीधी वलद थपेट। —स कु

वळदार–वि—जो मुडा हुआ हो, घुमावदार, ऐंठा हुआ।

रू भे—वळदार।

वळदियौ—देखो 'वळद' (अल्पा, रू भे)

उ०—मूळ गळघो रोहण गळी, आद्रा वाजी वाय। हाळी वेचौ वळदियौ, खेती लाभ नसाय। —वर्षा-विज्ञान

वळद्दिख–स पु [स वलिदृक] इन्द्र।

वलन—देखो 'वळण' (रू भे.)

वलनास–स. पु [स. वलनाश] अयनाश से किसी ग्रह के वलन अर्थात् हटकर चलने की दूरी का अश। (ज्योतिष)

वळपूरण–वि [स वल=भोजन+पूर्ण] १ भोजन देने वाला।

स स्त्री—२ अन्न-पूर्णा।

३ वरवडी देवी का नाम।

उ०—हू इज वूंट वेद्धरा वीसहथी हू वाजू। वळपूरण वरवडी हू इज सिह वण अग्राजू। —पा प्र.

रू. भे—वलांपूरण।

वळवड—देखो 'वळवड' (रू भे)

वलभ—देखो 'वल्लभ' (रू भे) (अ मा)

वळभउतग—देखो वलभी उतग' (रू भे) (अ मा)

वलभज्जन, वलमज्यन–सं. पु [स वल्लभ+जन] १ श्रीकृष्ण। (अ मा.)

२ मित्र-वर्ग, मित्रगण।

३ बधवजन।

रू भे—वळभज्जन।

वलभतन–स. पु. [स वल्लभ-तनु] मित्र। (ह. ना. मा)

वळभद्र—देखो 'वळभद्र' (रू. भे.)

वळभद्रोत–स पु—कछवाहा वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति (वा दा ख्यात)

वळभन–स पु [स वल्लभ] भोजन। (ह. ना मा)

वलभा—देखो 'वल्लभा' (रू. भे) (अ मा, ह ना मा)

वलभाचारी—देखो 'वल्लभाचारय' (रू भे)

वळभि, वलभी–स स्त्री [स वलभि] १ घर के ऊपर बना हुआ मडप, गुंबज, गुमटी।

२ घर का सब से ऊपरी भाग, हिस्सा।

३ छत।

४ छप्पर।

५ शिखर।

६ झोपडी। (हिं को)

७ काठियावाड की एक प्राचीन नगरी।

रू भे—वळभि, वळभी।

वलभीउतग–स पु यौ [स वलभी-उतुग] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

रू भे—वळभउतग।

वलम-१ देखो 'वल्लभ' (रू भे)

२ देखो वल्लभ' (रू भे)

उ०—सो एका-एक बेटौ, फेर कुवर सरब राजा री भार सभाळ लियौ। तेथी राजा नै घणौ वलम। —पलक दरियाव री वात

३ देखो 'वालम' (रू भे)

वलय–स पु [स वलय, वलय] १ ककण, कगण।

उ०—ललाट पट्ट मध्यविभागिकृत कस्तूरिकातिलक, बाहुवल्लरी पहिरित रत्नमय वलय, स्रवणि तारस्फार झलकता कुडन। —व स

२ सधवा के धारण करने की कलाई की चूडी।

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड खाय दिखाय थण, घण पण वलय वताय। —वी. स

३ बाजूबध।

उ०—१ ललाट तिलक, कने झलक, बाहे वलय अगुलि अगुलियक कंठि कठिका, गलइ हार । —व स

उ०—२ जी हो एक वलय मंगल भणी, जी हो रास्या रमणी बाह् । —स कु.

४ कडा, छल्ला।

५ घेरा, कुज ।

६ वृत्त की परिधि।

७ व्यूह रचना विशेष ।

८ वेष्ठन ।

९ कमरपेटी, इजारबध ।

१० किनारा, छोर ।

११ गल-गड नामक एक रोग ।

१२ ढगण के प्रथम भेद आदि ह्रस्व मात्रा का नाम ' (र ज. प्र)

१३ णगण के प्रथम भेद दीर्घ मात्रा का नाम (र ज. प्र.)

१४ देखो 'विलय' (रू भे.)

रू भे —वलय, वला ।

वलयावळि-स पु.[स वलय+अवलि] हाथो मे धारण करने के कगन ।

उ०—वलयावळि हत्थ मे यौं दसतान दिपाया । —व भा.

वळयोडो—देखो 'वळियोडो' (रू भे)

(स्त्री वळयोडी)

वळराव—देखो 'बळिराव' (रू भे)

उ०—वीडा झलै ऊठीयो, लगा असमाण । जाणै श्रीकम वाधिया, वळराव छळाणा । —द दा

वलवड—देखो 'वळवड' (रू भे.)

वळवत, वळवती—देखो 'वळवत' (रू भे)

उ०—जाधपुरो जोगणिपुरो, जग जेठो वळवत । लेण क लका रामचद, हुंकारै हणमत । —गु रू व.

वलवत्त—स. पु – १ एक देश का नाम ।

उ०—देस सम्या आदिइ अयोध्या नगरी, उखा मडाल ग्राम च्यारि कोडि, वलवत्ता देम ३ कोडि —व स.

२ देखो 'वळवत' (अल्पा , रू भे)

वळवळ-स पु [स वल] १ विलाप, रुदन ।

२ प्रकाश, चमक ।

३ झलक ।

४ जलन, दाह ।

५ कपन ।

क्रि वि (अनु) १ चारो ओर, चहुओर ।

उ०—वळवळ कठ विलास, हार भुजग गग सिर झळहळ । —रामरासो

२ फिर-फिर कर, रह-रह कर, पुन पुन. ।

उ०—ग्राह गयद विढवा लागा, वळवळ दाखै पाण । उदध छोळ यवर लगा, फेर मथै महराण । —गजउद्धार

३ क्रमश ।

४ निरन्तर ।

रू भे —वळवळ, वलवळ, वलवळा, वळवळा, वळविळ, वळावल, वली-वली, वल्वल ।

वळवळणो, वळवळवो-क्रि अ —१ चमकना, प्रकाशमान होना ।

उ०—झळहळ रत खाळ भवकि खग झळ हळ, कठल वळवळ वीज कळा । कळ ऊकळ हुए गळोत्र (ळ) कदळ, आफळ धाया उभै दळा । —गु रू व.

२ धीरे-धीरे जलना, शनै-शनै जलना ।

३ जलन होना, दाह होना ।

४ झिलमिलाना, झलकना ।

५ कम्पायमान होना, कम्प-कम्पाना ।

वळवळणहार, हारो (हारी), वळवळणियो—वि० ।

वळवळिओडो, वळवळियोडो, वळवळयोडो—भू० का० कृ०

वळवळीजणो, वळवळीजवो—भाव वा० ।

वळवळणो, वळवळवो, वलवलणो, वलवलवो—रू० भे० ।

वलवलणो, वलवलवो—देखो 'वळवळणो, वळवळवो' (रू भे)

उ०—१ टलवलइ जिम निरजलि माछिली, वलवलइ अति अगि वली वली । झखड लाउइ लावर आकुलउ, विरहि विन्हल वातर बाउलउ । —मालि सूरि

उ०—२ वलवलती विन्हल वदनि, वलती वदइ उदार । 'राजा रुठउ मनाविमु, सुपी सपति सार ।' —मा. का. प्र

वलवलणहार, हारो (हारी), वलवलणियो—वि ।

वलवलिओडो, वलवलियोडो, वलवल्योडो—भू० का० कृ०

वलवलीजणो, वलवलीजवो—भाव वा० ।

वळवळा—देखो 'वळवळ' (रू भे)

उ०—१ वण उतग वळवळा छटा घण अदभुत छाजै । जाळी विद्रुम जडत विवध मण नगा विराजै —भोपालदान सांदू

उ०—२ वळवळा अजस वधै, भडा त्रळा' छक भारियो मुत । 'बाघ' तणो उछरग मझै, गणगव अप्राजियो । —गू प्र

वळवळाट—स पु —१ चमक, प्रकाश, रोशनी ।

२ झलक ।

३ जलन, दाह ।

४ झिलमिलाहट ।

५ कपन ।

६ व्यर्थ का प्रलाप, बकझक ।

वळवळियोडो—भू. का कृ —१ चमका हुआ, प्रकाशमान हुवा हुआ. २ शनै-शनै जला हुआ ३ जलन हुवा हुआ, दाह हुवा हुआ. ४ भिल-मिलाया हुआ, झलका हुआ ५ कपायमान हुवा हुआ । (स्त्री वळवळियोडी)

वलवलियोडो—देखो 'वळवळियोडो' (रू भे) (स्त्री वलवलियोडी)

वळवाण—देखो 'वळवान' (रू. भे)

उ०—'नरहर' जोगीदास निभै नर, आणदसुत कुळ रीत उजागर । बधव त्रण आगळ वळवाणे, 'अखइ' हरा वधै अवसाणे ।—रा रू.

वळविळ—देखो 'वळ-वळ' (रू भे)

वलसणो, वलसवो—देखो 'विलसणो, विलसवो' (रू भे)

उ०—ठगीया देवता नर नाग ठगारी, हे लछमी सुण वात हमारी । वलसणहारी "कमो" वेहारी, घूर्त तो जाणू घूतारी ।
—कमा विहारी री गीत

वलसणहार, हारो (हारी), वलसणियो—वि० ।
वलसिम्रोडो वलसियोडो, वलस्योडो—भू० का० कृ० ।
वलसीजणो, वलसीजवो—कर्म वा० ।

वळसवन—देखो 'वळसदन' (रू भे)

वलसाडणो, वलसाडवो—देखो 'विलसाणो, विलसावो' (रू. भे)

वलसाडणहार, हारो (हारी), वलसाडणियो—वि० ।
वलसाडिम्रोडो, वलसाडियोडो, वलसाड्योडो—भू० का० कृ० ।
वलसाडीजणो, वलसाडीजवो—कर्म वा० ।

वलसाडियोडो—देखो 'विलसायोडो' (रू भे) (स्त्री वलसाडियोडी)

वलसाणो, वलसावो—देखो 'विलसाणो, विलसावो' (रू भे)

वलसाणहार, हारो (हारी), वलसाणियो—वि० ।
वलसायोडो—भू० का० कृ० ।
वलसाईजणो, वलसाईजवो—कर्म वा० ।

वलसायोडो—देखो 'विलसायोडो' (रू भे) (स्त्री वलसायोडी)

वलसावणो, वलसाववो—देखो 'विलसाणो, विलसावो' (रू भे)

वलसावणहार हारो (हारी), वलसावणियो—वि० ।
वलसाविम्रोडो, वलसावियोडो, वलसाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वलसावीजणो, वलसावीजवो—कर्म वा० ।

वलसावियोडो—देखो 'विलसायोडो' (रू भे) (स्त्री. वलसावियोडी)

वलसियोडो—देखो 'विलसियोडो' (रू. भे.) (स्त्री वलसियोडी)

वलसूदन—स. पु [स वल+ल्यु-अन] इन्द्र ।

वलहता—स. पु.—इन्द्र ।

वळहट—स. पु [राज. वळ=भोजन+स. हठ] १ हठ पूर्वक कराया जाने वाला भोजन ।

उ०—वळहट देवे 'कुवरसी,' आवै वरण अढार । पंतीसू राजा कुळी साख-साख सरदार । —कुवरसी साखला री वारता

२ देवडा (चौहान) राजपूतो का विरद ।
३ सोलकी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।
रू भे —वळहट ।

वळहटमल, वलहटमल्ल—स पु [राज वळ+हठ+स मल्ल] १ हठ पूर्वक भोजन कराने वाला व्यक्ति ।
रू भे —वळहटमल, वळहटमल्ल ।

वळहळ—स स्त्री —चमक, दमक, चमचमा'ट ।

उ०—कुडळा कान वळहळ करत, सुव फळा लोवडी सिर सोहत ।
—रामदान लाळस

वळहणो, वळहवो—क्रि अ —बढना ।

उ०—रस वन फळ बोह पाय रसाळी, पुत्रा हेत करै रिनपाळी । वरिण ससिवेस रमैं माझळ वन, तैं वळहती वेल सोग्रन तन ।
—सू प्र

वळहियोडो—भू का कृ —बढा हुआ । (स्त्री वळहियोडी)

वलहो—देखो 'वल्लभ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वेगाह वळजो वलहा, सपत लच्छी सहेत ।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

वळां—क्रि. वि —१ ओर, तरफ ।

उ०—१ भिड फौजा गज दहुँ वळा । निज घोर नगारा ।
—द. दा

उ०—२ वळवळा जोगण खपर चढवै, सिंभ कमळा स्र ग । जग गीत चिहूवै—वळा जाहर, सुजस हुवै सुढग ।
—र ज प्र.

२ दफा, मर्तबा, वार ।
रू. भे.—वळा, वळाई ।

वळांणो—देखो 'वळाणो' (रू भे)

उ०—दसरावा री डूगलो, गणगोरी रो सिरपाव, 'वळाणो घोडो सलूंबरसू भीडर महाराज पावै । —वा. दा ख्यात

वळांपूरण—देखो 'वळपूरण' (रू. भे.)

उ०—नित वळा ग्रनवळ दियरण नर ही, वळांपूरण विरवडी मा वळापूरण विरवडी । —वरवडी देवी रा छद

वळांमण—स पु —ढग, तरीका, रीति ।

वळा, वला—क्रि वि —१ ग्रोर, तरफ।

उ०—उठै चत्रकोट वळा उजवाळ, करै जुध नाह इहा कळिचाळ । —सू प्र

उ०—२ किलवाइरण चचळ पाय कळा, वघ, सोच खडव्मड ग्राठ वळा। —रा रू

२ वार, दफा, मरतवा ।

उ०— वा दो तीन वळा मासी रै मूडा साम्ही जोयी तौ उरानै ऐडो लखायी जाणै उणरी ग्राख्या होठा माथै चिप्योडी व्है ज्यू । —फुलवाडी

१ खलिहान।

२ ग्रफगानिस्तान का निवासी, ग्रफगान ।

[ग्र वला] ३ लोभ, लालच ।

४ ग्रासक्ति, मोह ।

५ इश्क, प्रेम ।

६ देखो 'वलय' (रू भे) (उ र)

वळाकौ—स पु [स वल्ल+राज. प्र कौ] १ एक विन्दु से दूसरे विन्दु ग्रथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक लगाया जाने वाला चक्कर, चक्कर, फेरा, ट्रिप ।

उ०—दीवारणजी नगर री गळिया मे टपाटप वळाका देवरण लागा उरण वेळा पूरी सोपो पड्यो ही। —फुलवाडी

२ घुमाव, मोड टेढापन ।

३ ऐंठन, मरोड, वट ।

उ०—मछा रा वळाका दीघा सीमोद गनीमा माथै, धू हाम तमासै मुनिंद्र रीधा धीर। म्यान हू उरेलताई कीधा खाग तेढीमरणे, वंढोमरणे मेलताई कीधा महावीर। —वद्रीदान खिडियो

४ मोच ।

५ कसक ।

रू भे —वळाकौ, भळाकौ।

वळानाथ—स पु [राज वळा=ग्रावली पर्वत+स नाथ] हाडा राजपूतो की विरुद, उपाधि ।

रू भे —वळानाथ।

वळावध—स पु.—ग्ररावली पर्वत का नाम ।

उ०—ले पाए घातिया, मेर माथा कर वाढै, वळावध ढढोल, 'कमो' ग्रळगा हू काढै। भड तुरग वीरणार, चडै माभी गज फेमर फौज लगै फूलियै, दीघ परराठां पत्तर। —गु रू व

रू. भे —वळावंघ ।

वलायत—देखो 'विलायत' (रू भे)

उ०—तो वडका दिल्ली तखत, रक्खी पत केइ वार। ते जुय मदत वलायतां, सह जस कथ ससार। —जैतदान वारहठ

वलारा—स पु [देशज] ग्रनाज सहित कुचले हुए भूसे के ढेर के दोनो ग्रोर के किनारे ।

वलालौ—देखो 'विलालौ' (रू. भे)

उ०—चत लागो जा री हर चरणा, करै न प्रेत भजन ग्रघकार। सुकव वलाला थनै सेवीयो, सेवूं कम वीजा सरदार। —किसनजी ग्राढो

(स्त्री वलाली)

वळाव—स पु.—१ दिशा।

उ०—वळकति खग्ग चहुवै वळाव। सिहरे क जारण वीजा सिळाव। —गु रू व

२ खलिहान ।

३ वह भूमि जहा खलिहान वनाया जाता है ।

वळावरणौ, वळाववौ—देखो 'वोळाणौ, वोळावौ' (रू. भे)

उ०—तत तरणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळे ह। भल वउळावौ दीहडा, दई वळावण देह । —ढो मा

वळावळ—देखो 'वळवळ' (रू भे)

उ०—'पदम' मुख ग्रागळी दखरिणया पधारण, वधारण व्हग घड करणवा वार। वळावळ वाज नै महारिण वाजियो, साद रखे सिर सायरणी मार । —गोरघन गाढण

वळावियोडी—देखो 'वोळायोडी' (रू भे)

(स्त्री वळावियोडी)

वळावौ—देखो 'वोळाऊ' (रू भे.)

वळाहक—देखो 'बळाहक' (रू भे) (मभा)

वळि, वलि—क्रि वि [स वलति] १ फिर, ग्रोर।

उ०—१ वळि मालवणी वीनवइ, हु प्री दासी तुज्झ। का चिंता चित ग्रतरे, सा प्री दाखउ मुज्झ । —ढो मा.

उ०—२ पडित भीमु ग्रासामिउ राइ गदा लेउ वलि साम्हउ धाइ। ग्ररजुनु जा भूमेवा जाइ राग्न सु भीमि रहाविउ ठाइ । —प प. च.

२ पुन दुवारा ।

उ०—गह छडइ गहिलउ हुग्रउ, पूछइ वळि पूछन। मारू तरणउ संदेसडइ, ढोलउ नह घापन। —ढो मा.

३ इस पर भी ।

उ०—सीह अनइ वलि पाखरयउ, कहु किम जीपणउ जाय ।
—सहज कीरति

४ तब ।

उ०—लहरी सायर-सदिया, वूठउ-सदउ वाव । वीछुड़िया साजण मिळइ, वळि किउ ताढउ ताव ।
—ढो. मा.

५ ओर, तरफ ।

उ०—जातो किण ही न दीठो तेह, फिर पाछो ना' थो वलि गेह ।
—वि. कु.

६ वार, दफा, मर्तबा ।

स स्त्री —१ रेखा, लकीर ।

२ झुर्री, सिकुड़न ।

३ छप्पय नामक छद का एक भेद जिसमे ४६ गुरु व ५४ लघु मात्राए होती हैं ।

४ देखो 'बळि' (रू भे)

उ०—सपहुता सज्जण मिळचा, हूता मुझ हीयाह । आजूणइ दिन ऊपरइ, वीजा वळि कीयाह ।
—ढो मा

उ०—२ वळि राजा छळि जैण बाधियो । नमो पराक्रम नारिग्रण ।
—ह. ना. मा

रू भे —वळि, वलि, वलिय, वळी, वली, वलीय ।

वलित–वि [स.] १ गतिशील ।

२ घूमा हुआ, मुड़ा हुआ ।

३ गुथा हुआ ।

४ लिपटा हुआ, वेष्टित ।

५ झुर्री पडा हुआ ।

वळिभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू भे)

उ०—वळिभद्र वधव वधव तेडीयो जी, वीजउ प्रसन कुमार । वईद्रभा नयरी वीवाह छइजी, रहीय म लावो वार ।
—रुकमणी मगळ

वलिमधु–स पु —मधुप ।

वळिमुख–स पु [स] वानर, वदर । (डिं. को)

वलिय —१ देखो 'वलि' (रू भे)

उ०—वरतणा वारु वलिय कमली, पाच झलमलि अति भली । थापना चारिज पाच ठवणी मुहपती पुड पाटली ।
—स कु.

२ देखो 'वलित' (रू भे.)

वळियोडो–भू का कृ —१ वापस लौटा हुआ, लौट कर गया हुआ, गया हुआ २ प्रस्थान किया हुआ, गमन किया हुआ ३ लौट कर आया हुआ ४ घूमा हुआ, फिरा हुआ, चक्कर लगाया हुआ । ५ घूमा हुआ, मुड़ा हुआ. ६ वक्र गति या बल खाकर चला हुआ. ७ आगे बढा हुआ. ८ ढला हुआ. ९ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. १० आकर्षित हुवा हुआ. ११ ढका हुआ, लपेटा हुआ. १२ लौटाया हुआ, दिया हुआ १३ प्रत्युत्तर किया हुआ, उत्तर दिया हुआ ।

१४ देखो 'बळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वळियोडी)

वळियोभवर–स पु —रेगिस्तान की वह भूमि जिसमें चलते समय मनुष्य धस जाता है ।

वळियो–स पु —१ समय ।

२ अवसर ।

३ बैलो के सीगो पर लपेटने की रगीन डोरी ।

४ बल खाई हुई कोई वस्तु ।

५ देखो 'बळियौ' (रू भे.)

६ देखो 'वळि' (२) (अल्पा., रू. भे.)

वळिराज, वळिराजा, वळिराव—देखो 'बळिराजा' (रू भे.)

वळिहारी, वलिहारी—देखो 'बळिहारी' (रू. भे)

उ०—साग काछि माया मडचा, हरि विचि भी भारो । जन हरिदास माया तजै, ताकी बळिहारी ।
—ह पु. वा

वळिवड—देखो 'वळवड' (रू भे.)

वळोंड – देखो 'वळोड' (रू भे)

वली–स स्त्री [स] चर्म या चमडी की सिकुड़न, झुर्री ।

२ पेट के दोनो ओर पेटी के सिकुड़ने से पडी हुई लकीर ।

३ पक्ति ।

४ रेखा, लकीर ।

५ उत्तराधिकारी, वारिस ।

रू भे —वळि ।

वळी, वली–स स्त्री [देशज] १ पहाड के नीचे की भूमि, लम्बी भूमि ।

उ०—पवारा री पैंतीस साख, त्या माहे एक साख भायला री, भायला री मायासरो गाव रोहीसी मगरा नीचे वळी छै तठै नै मिवांणचीनू ।
—नैणसी

२ रेतीलै टीवै पर प्राकृतिक रूप से बनी लहरनुमा उभरी रेखाए ।

३ रीढ की हड्डी, मेरुदड ।

४ सीधा रोपा जाने वाला वह काष्ठ का डडा जिस पर धनुपाकार लकडी रख कर उस पर बैठ कर चक्कर काटा जाता है ।

वि वि —देखो 'चकचूदियौ'

५ रुपया-पैसा ।

स पु [ग्र] ६ वह धर्मात्मा ग्रौर महात्मा व्यक्ति जो ईश्वर की दृष्टि मे प्रिय ग्रौर मान्य हो ।

७ शासक, बादशाह ।

उ०—ग्रकबर साह जलालदी, खितवा वली खुदाय । बाजदार कर वदगी, ताजदार हुय जाय । —बा दा

८ हाकिम ।

९ देखो 'वळि' (रू भे.)

उ०—१ एक सुयखध इणि ग्रग नउजी, वरग छइ ग्राठ ग्रभिराम । ग्राठ उद्देसा छइ वली जी, सख्याता सहस पद ठाम । —वि कु.

उ०—२ ग्रगनि मे बाण छूटा ग्रसख, वळी बीढ चिहूँवै वळां । पछि बाण हुवौ पूठीरुखौ, 'गजण' ताम दिल्ली दळा ।—गु रू ब

उ०—३ जासक कटक ग्रांपणइ ठामि, गूजराति ग्रावसइ ग्रनामि । करि वीवाह मनि ग्राणी रली, छपन कोडि घन देमइ वली । —का दे प्र

रू भे—वळी, बली ।

वलीग्रयद, वलीग्रहद—स पु [ग्र वलीग्रहद] १ वादशाह के बाद होने वाला उत्तराधिकारी, वारिस, युवराज ।

२ राजकुमार, शाहजादा ।

३ सतान ।

उ०—पातसाह साजिहानजी रै वलीग्रयद सायजादा च्यार हुवा । —द दा.

वलीगण—स पु [स ग्रवलिंगन] ताप पर चढाये जाने वाले रसोई के बर्तनो के पेंदे पर लगाया जाने वाला मिट्टी का लेपन ।

वळीट, वळीठ—देखो 'वलिण्ठ' (रू. भे)

उ०—वरू थोय जोयग ग्रवर वाथ, हुवौ हव पावुए एकण हाथ । धराचक ढाकिय कोट वळीट, परा थट दीठ उगाडिय पीठ । —पा प्र.

वलीय—देखो 'वळि' (रू भे)

उ०—वाहण जेह नै पाच सै, वलीय पाचसइ हाट । घर गाकुल पिण पाचसै तितला सकट सुघाट । —वि कु

वली-वली—देखो 'वळ-वळ' (रू भे) (उ र)

वळू—वि —१ मददगार, सहायक ।

२ रक्षक ।

३ पक्षका, तरफ का ।

रू. भे —वळू ।

वळे, वले—देखो 'वळै' (रू भे.)

उ०—१ मगळ बुद्ध मयक, वळे सनि सुक्र ब्रहस्पति । राहु केत रिस भरण, नवै ग्रह साति फरै नित । —ह र.

उ०—२ ग्री हव वळे तक्षक हुय ग्रावै । पाण हूत तो जाण न पावै । —सू प्र.

उ०—३ ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणगार ग्रपार । ग्रास्या तउ मिळस्या वळे, नरवर कोट जुहार । —ढो मा.

उ०—४ मागी दू बधावणी तोने, पथीडा लाखपसाव हो राज । वले सघ जोता वाटडी, थे तो ग्रावी ग्राज सुणाय हो राज । —राज

उ०—५ ग्रायत छळा ग्रनळ पुड ग्रायत, समद ग्रायता वळे ज सात । लागा तेथ वहचिया लाखै, वडा वडा जुग रहसै वात । —महाराणा लाखा री गीत

वळेरण—स पु [देशज] छत पर बनी मुडेर ।

वळेवडो—स. पु [देशज] १ ऊट या बैल की गर्दन पर कपर्दिका गूथा हुग्रा, बाधने का ग्राभूषण ।

उ०—इसा ऊठ मेकजे छै, हाथ फेरजै छै । पीतळ रा गिरवाण रूपे रा कडा छै । ता माहे मोहरा वेळची मोहरा घातजै छै लूबा कवडाळा वळेवडा घातजै छै । —रा. सा स

२ बैलो के दोनो सीगो को लपेटते हुए बाधी जाने वाली डोरी ।

वळै—क्रि वि.—१ फिर, ग्रौर ।

उ०—१ सिव नै सिसहर निलै सकति नै सीह चढन्नी । वामण ग्रनियै वळै वाच वळराजा दीनी । —गु. रू ब.

उ०—२ कुटवा सहेता हुती नाव कीरं । वळै पाय रैणा नरी रघुवीर । —सू प्र

उ०—३ खुशी भेळी एक वळै गुमी । उच्छव भेळो एक वळै उच्छव । —फुलवाडी

२ पुन, दुबारा ।

उ०—१ स १६७७ पछै ग्रमरसिंघजी साथै गयौ । पछै वळै ग्राय वसियो तरै लवेरा री पटो दियो । —नैणसी

उ०—२ तरै सोच धारै कपी देह त्याग । वळै ग्रावियौ ग्रादि ग्रासोक बाग । —सू प्र

३ पीछै, बाद मे ।

वि —ग्रतिरिक्त, ग्रन्य ।

स स्त्री —तरह, भाति, प्रकार ।

रू भे —वळे, वले, वळैं, विळै वळ, वळे, वने, भळ, भळे, भळै ।

वळोवळ, वळोवळी—स. पु [राज वळ] भोजन ।

उ० —सामै भूगा सोई, करै परभात वळोवळ । हाथऊ कूत उपाडि, मार ढाहै मोताहळ । —राव रिणमल री वात

क्रि. वि —१ चारो तरफ, चहु ओर।

उ०—१ वाजि घमस ऊडड, वाजि अवाळ चहूवळ। द्रोण वाजि है खुरा, वाजि दळ सोक वळोवळ —सू. प्र.

उ०—२ आगरै तखत सु 'डूगरो' आणता। वळोवळ लिखांणा जगत वाका। जुहारीसीघ का टाळिया जगत मे, डाकुवा रूप रा सुजस डाका। —बुधजी आसियो

२ जिधर-किधर, यत्र-तत्र, इधर-उधर।

उ०—तद जाटा री सारीई साथ भागो सू वळोवळी मूडा लेय नै पावै पुनै गया नै कवर स्री बीकैजी री वडी फतै हुई। —द दा

३ पृथक-पृथक।

४ अपने अपने मन से।

५ पुन पुन, बार-बार।

उ०—करामति देखि छत्ति 'नीवदे' कळोधर, राळा भुज वळोवळ जितू खाडे। चाळवधै जिकै लडता चापडै, मागवा बाजरी चाळ माडै। —दुरगादास राठोड आसकरणोत री गीत

६ निरन्तर, लगातार।

रू भे.—वळोबळ, वलोवळी, वळोवल, वळोवळी, वळोवळ, वळोवळी

वळो—स पु —१ अरावली पर्वत।

उ०—घर हरै पाखरा वाजतै घूघरै, दीह सूफै नही खेहरै डवरै। रूधियो वळो रायसिघरै लस्करै, डूगरै घणा ओलाडिया डूगरै। —द दा.

२ पर्वत श्रेणी।

३ स्तभ, खम्भा।

४ वास।

५ कच्चे मकानो की छाजन के नीचे लगाई जाने वाली लकडी, फडी।

उ०—खूटा खडा वळा डूचिया, हाला सू हुळ ठाटिया। सिरधर अर सैतीर साळा, खूड भूण थम, पाटिया। —दमदेव

६ हुक्के की नै के ऊपरी भाग पर लगाया जाने वाला सोने या चादी का छल्ला।

रू भे —वळो।

वळोवळ, वळोवळी—देखो 'वळोवळ' (रू भे)

उ०—१ ग्रीध हूळवळ समळ गळळ पळउळ गरा। त्रिसळ सळ वळोवळ काळळ हूकळ तुरा। —महादान मेहडू

उ०—२ वळोवळि ऊछळै सोर साहा विढण, बीज जागी विचै असत वूडे। उडाडै लोह एका सिरै 'अरा' री, 'असा' रा ऊपरा लोह ऊडै। —कमा अराावत पडियार री गीत

वल्कल—स पु [स वल्कल] १ वृक्ष की छाल।

२ उक्त छाल का वस्त्र जिसे ऋषि, मुनि महात्मा, अरण्यवासी पहनते थे।

३ ऋषि मुनि महात्माओं व तपस्वियो के पहनने का वस्त्र।

४ छिलका।

५ ऋग्वेद की वाष्कल नामक शाखा।

रू भे.—वकल, वक्कल, बलकल वकल।

वल्गन—स स्त्री. [स वल्ग-गतौ] १ घोडे की एक चाल जिसमें वह उछलता कूदता चलता है, दुलकी। (ना डो.)

[स वल्गन], २ उछाल, फलांग, छलांग।

वल्गा—स. स्त्री [स] लगाम, रास, बाग-डोर।

रू भे —वलगा, वलगा।

वल्गित—स स्त्री [स वल्गित] १ घोडे की सरपट चाल।

२ डीग, शेखी।

वल्द—स पु [अ.] पुत्र, तनय, सुत, बेटा।

वल्दियत—स. स्त्री. [अ] १ पिता के नाम का परिचय।

२ पुत्र होने की अवस्था या भाव।

वल्ल—स. पु [स] १ गिलाफ, आवरण।

२ चादर।

३ तीन घुघची के बराबर की तोल।

४ वर्जन, निषेध।

५ गमन, चाल।

वल्लकी—स. स्त्री. [स] १ नारद की वीणा का नाम।

२ वीणा।

३ सलई का पेड।

रू भे —वलकी, वल्लकी, वलकी।

वल्लणी, वल्लवो—देखो 'वळणी, वळवो' (रू भे.)

उ०—सज्जण वल्लै गुण रहै, गुण भी वल्लणहार। सूकण लागी वेलडी, गया ज सीचणहार। —ढो मा

वल्लणहार, हारो (हारी), वल्लणियो—वि०।

वल्लिओडो, वल्लियोडो, वल्ल्योडो—भू० का० कृ०।

वल्लीजणी, वल्लीजवो—भाव वा०।

वल्लभ—वि [स] (स्त्री. वल्लभा) १ प्रिय, प्यारा, स्नेही, प्रेमी।

उ०—अति वल्लभ तेहने पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे। रूपे करि जीति जाणै रति, अपछर जिम अभिराम रे। —वि कु

२ सुख प्रद, सुखद।

उ०—वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळ।

उण-किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळ ।
—रा रू

३ वाछनीय ।
४ सर्वोपरि, उत्तम ।
५ सुन्दर ।
सं पु —१ पति, स्वामी, प्रियतम ।
२ प्रिय व्यक्ति, प्रेमी ।
३ स्वामि, मालिक ।
४ मित्र, दोस्त ।
५ अध्यक्ष ।
६ पर्यवेक्षक ।
७ प्रधान या मुख्य ग्वाला, गोप ।
८ वैष्णव सम्प्रदाय का एक आचार्य ।
९ शुभ लक्षणो वाला घोडा, अश्व ।
१० पाण्डव पुत्र भीम का एक नाम ।

उ०—द्यूत लक्षण कला सवि जाणू, मू हरइ हुसि राज पराणउ ए युधिष्ठिर नरेंद्र सूयार, नामि वल्लभ भुजा बलि, सार ।
—सालि सूरि

११ ज्योतिष मे कर्ण ।

रू. भे —वलभ, वलम, वल्लभ, वल्लम, वलभ, वलम, वल्लव, वल्लह, वल्लहउ, वल्लहु, वल्ह, वल्हम, वालंभ, वालम, वालिभ ।
वालिभि, वालिम, वाल्हम ।
अल्पा,—वल्लहो, वल्ही, वलहो, वल्लहो, वल्हो, वालमियो ।

वल्लभा–वि स्त्री [स. वल्लभ] प्यारी, प्रिय ।
उ०—'जग रूप' सधू 'जगनाथ-कुळ,' पदमणि किरि सूरज प्रभा । वनीतौ कुलीणा कुरम वडी, परम लछि पती वल्लभा ।
—गु रू व.

स स्त्री – पत्नी, स्त्री, प्रिया ।
रू. भे —वल्भा, वल्लहा, वल्लही ।

वल्लभाचारय–स पु [स वल्लभ-आचार्य] चार वैष्णव सम्प्रदायो मे से एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक ।
रू भे —वलभाचारी ।

वल्लव—देखो 'वल्लभ' (रू भे)
उ०—कय समर खेड नरेंद्र कही । मन मधिय वल्लव जोद सही ।
—पा प्र

वल्लवसिया–स. पु [स शिवा+वल्लभ] चदन । (अ मा)

वल्लह, वल्लहउ—देखो 'वल्लभ' (रू भे)
उ०—१ वच्छा ! वल्लह तुम तणी, गिरूई रिद्धि समेउ मासअंभिंतर निच्छइण, मिलस्यै धरी म खेउ ।
—श्रीपाल रास

उ०—२ ठविउ नेमि जिणिद जग वल्लहउ । परमतेजिहिं तेजलु ते कहउ ।
—जयसेखर सूरि

वल्लही—देखो 'वल्लभा' (रू भे.)
उ०—बहु गुणवती गोरडी, कठि विलाइ कत । मभ-पाहि तुझ वल्लही, ते कहीइ कुण कत ।
—मा का प्र.

वल्लहु—देखो 'वल्लभ' (रू भे)
उ०—मुभनइ ते अति वल्लहु, सदा न तजतु सग । ते देखता तुझसिउ, रमता न रहइ रग ।
—मा का. प्र.

वल्लहो—देखो 'वल्लभ' (अल्पा , रू भे)
उ०—१ जीव उहा पिंजर इहा, हिवडै हूला-हेल । रे परदेसी वल्लहा, वेल विहूणा फूल ।
—जलाल बूबना री वात

उ०—२ हा ! बाधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्राण । पाणी मे पडतो थको, इम स्यु थयो अजाण ।
—वि. कु.

वल्लाह–अव्य [अ] १ ईश्वर की शपथ ।
२ सचमुच ।

वल्लियोडो—देखो 'वळियोडो' (रू भे)
(स्त्री वल्लियोडी)

वल्ली–स स्त्री [स. वल्लि, वल्ली] १ लता, वल्लरी, बेल ।
उ०—१ सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । अण वल्ली विसतरी, वर्णं ग्रह वरी दिसा वन ।
—रा रू.

उ०—२ वल्ली तसु बीज भागवत वायौ, महि थाणौ प्रिथु दास मुख । मूळ ताल जड अरथ मडहे, सुथिर करणि चढि छाह सुख ।
—वेलि

२ पृथ्वी ।
३ मिट्टी ।
४ शाल-वृक्ष ।
५ अग्नि-दमयती ।
६ केवटी मोथा ।
७ काली अपराजिता ।
रू भे —वल्लि, वल्लो ।

वल्लुर, वल्लूर–स पु [स वल्लुर, वल्लूर] १ लता कुंज, लता मण्डप ।
२ पवन ।
३ मजरी ।
४ अनजुता खेत ।
५ रेगिस्तान ।

६ वीरान जगल, वन ।

७ उपवन ।

[स वल्लूर.] ८ जगली शूकर का मास ।

९ सूखा मास ।

वल्वल-स पु —१ वलराम द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य ।

२ देखो 'वलवल' (रू भे.)

वल्ह वल्हम—देखो 'वल्लभ' (रू भे.)

उ०—मालवणी जाणुँ थणुँ, मारू माथै सल्ल । पिण ढोली जाणुँ नही, बीछडीया वे वल्ह । —ढो मा

उ०—२ ये आदर दैण कू आपही ऊभा हुआ छै। जैसें कोई और भी वल्हम हितू आवै छै। त्यो ते ऊभा हुव्यै छै। —वेलि टी

वल्हौ—देखो 'वल्लभ' (अल्पा, रू. भे)

वव-स पु [स] ग्यारह करणो मे एक करण जिसमे जन्म लेने वाले मनुष्य को बलवान, धीर-गभीर और विचक्षण होना माना जाता है। (फलित ज्योतिष)

रू भे —बब, वव ।

ववकणौ, ववकवौ—देखो 'भभकणौ, भभकवौ' (रू भे)

उ०—१ मेछ तडफफड मारका, ग्रीधाण गहक्की । पत्र भरै रत पूरिया वीराण ववक्की । —वी मा.

उ०—२ सुण इम वचन सधीर, वीर रणधीर ववक्कै । मतवाळा मदमत्त, घोम झाळा धकधक्कै। —पे रू

उ०—३ माहा क्रोधगी गनीमा हुता हुचकै नरीद 'माधौ'। भूचकै भूलोक वादौ चकै कोम भार । वोमगी अरावा झाळ वैताळ ववकै बकै, वांजद्रा 'वाहदरैस' हूकै जैण वार ।

—हुकमीचद खिडियो

ववकणहार, हारौ (हारी), ववकणियौ—वि० ।

ववकिओडो, ववकियोडौ, ववक्योडौ—भू० का० कृ० ।

ववकीजणौ, ववकीजवौ—भाव वा० ।

ववड—देखो 'वधू' (मह, रू. भे)

ववडी—देखो 'वधू' (अल्पा, रू भे)

उ०—म्हारी ओ ववडिया सरवणती, आ सासड रै हुकमा मे चालै ववडिया सरवणती । —लो गी

ववज-स पु —१ व्यवधान, बाधा ।

उ०—सदेसाहि ववज पडयो, लाध्या परवत दुरघट-घाट। परिदेसा परि-भूमि गयउ, वीरी जण हन चालइ वाट । —वी दे

२ कारण ।

ववणौ, ववबौ-क्रि अ [स वपनम्] वोवाई होना, वोया जाना ।

उ०—केहर रा नख रध्र सूं, गज मोतिया निपात । सूरत कीरत वेल रा, बीज ववै अवदात । —बा. दा.

ववयण-स पु [स वि+वचन] यश, कीर्ति, प्रशसा । (अ मा.)

ववळाणौ, ववळावौ—देखो 'वोळाणौ, वोळावौ' (रू भे.)

उ०—सज्जणिया ववळाई कद, गउखे चढी लहक्क। भरिया नयण कटोर ज्यउ, मुंधा हुई डहक्क । —ढो. मा.

ववळाणहार, हारौ (हारी), ववळाणियौ—वि० ।

ववळायोडो—भू० का० कृ० ।

ववळाईजणौ, ववळाईजवौ—कर्म वा० ।

ववळायोडौ—देखो 'वोळायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री ववळायोडी)

ववहाणौ, ववहावौ—देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू भे)

उ०—ववहाय धणी घण दग वही, सेखराव पडियौ समर । दोलत्तिइ पाव तजि गौ जदिन, गगाराव धरियौ गुमर । —सू. प्र

ववहायोडौ—देखो 'वहायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री ववहायोडी)

ववहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

ववहाररासि-स. पु —जीवाणु समूह का एक अश ।

उ०—किमइ निगोदह जीव नीसरइ, ववहाररासि ते जाई नय वरइ । असख सइर तणउ करइ सहार, जीवह जीव करइ आहार ।

—वस्तिग

ववाण—देखो 'विमान' (रू भे.)

उ०—'माले' वेस ववाण माई, क्रीत जुगा ताई कहलोत । अपछर परण गयौ इकदाई, गळवाई कीदा गहलोत । —महादान मेहडू

ववासीर—देखो ववासीर' (रू भे)

वसग—देखो 'वासुकि' (रू भे)

उ०—इद्र वज्र है एक कडक सारी घर धूजै । गुरड एक वसग अनेक पस आपाण न पूजै । —पा प्र

वसत-स पु [स] १ षट ऋतुओ मे प्रथम एव प्रमुख मौसम जिसका समय चैत्र व वैशाख मास होता है।

वि वि —इस मौसम के आगमन के पूर्व पेड पोधो के सब पत्ते झड जाते हैं। और सारी वनस्पती पुन फलने-फूलने लगती है। इसलिये यह ऋतुओ का राजा माना है । यह शिशिर और ग्रीष्म के बीच का मौसम है, जो अत्यन्त सुहावना होता है।

२ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना है।

३ सगीत मे छै रागो मे से दूसरा राग ।

उ०—कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसत । तरुणी दल दोलारस सारस भमइ हसत । —जयसेखर सूरि

४ एक ताल। (सगीत)

५ माघ सुदी पचमी को ग्राने वाला पर्व।

वि वि.—इस दिन से इस ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है।

६ फूलो का गुच्छा।

७ एक वस्त्र विशेष।

उ०—ग्रनेक एक पेखियति, रूप मे चिरत्त ए। वसंत पट्टण विसाळ, जोति मे नखत्त ए। —गु रू व.

८ ग्रतिसार रोग।

९ शीतला या चेचक की बीमारी।

१० मसूरिका नामक रोग।

११ पीला रग*। (डिं को)

रू. भे.—बसत, वासंत।

ग्रल्पा.—वसतडो, वसतौ।

वसतजा–स स्त्री [स] १ वासन्ती या माधवी लता।

२ सफेद जूही।

३ वसन्तोत्सव।

वसतडो–वि —१ बसने वाला, रहने वाला।

उ०—ग्रेकइ वन्नि वसतडा, एवड ग्रतर काइ। सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ। —ग्र. वचनिका

२ देखो 'वसत' (ग्रल्पा, रू. भे)

वसततिलक–स पु [स] १ वसत का ग्राभूषण।

२ देखो 'वसततिलका' (रू भे)

वसततिलका–स पु [स. वसततिलक, वसततिलका, वसततिलकं] चौदह वर्णो का एक छन्द जिसके, प्रत्येक चरण मे तगण, भगण, जगण भगण ग्रौर दो गुरु होते हैं।

रू. भे—वसततिलक।

वसतदूत–स पु [स] १ कोयल।

२ चैत्र मास।

३ ग्राम का वृक्ष।

४ पचम राग।

वसतदूती–स. स्त्री. [स] १ कोयल।

२ पाडर वृक्ष।

३ माधवी लता।

वसतपचमी, वसतपाचम, वसतपांचिम–स. स्त्री [स. वसतपचमी] माघ शुक्ला पचमी, माघ मास के शुक्ल पक्ष की पचमी, इस दिन वसत तथा रति सहित कामदेव की पूजा करने का विघान है।

उ०—प्रथमादि ग्राग वसतपाचिम, राग फाग परीसिये। हित घाम-घांम घमाळ सुस हूय, उरघ भीमळ ईसिये। —रा रू

वि. वि.—ग्राज कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है।

रू. भे.—वसतपचमी, वसतपाचम, वसतपाचिम, वसतपांचिमी, वसतपाचम, वस्तपाचम।

वसतबधु–स. पु. [स] कामदेव।

वसतभैरवी–स. स्त्री. [स.] एक रागिनी का नाम। (सगीत)

वसतमाल–स. पु.—सब शुद्ध स्वरो का सपूर्ण जाति का एक राग। (सगीत)

वसतमालतीरस—देखो 'सुवरण-मालिनी-वसत' (वैद्यक)

वसतरत—देखो 'वसतरितु' (रू भे)

उ०—मचियौ रसवीर वसंतरत मातौ, ग्रवध पवन पोह गोळा तीर। कुसुम पात तर जठै 'कुसळ' हर, गहरापण कीधौ गजगीर। —ग्रभैराम महीयारियौ

वसतरमण, वसतरमणि, वसतरमणी–स. पु —एक छद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण मे १९ मात्राएँ होती हैं तथा शेष तीनो चरणो मे १६-१६ मात्राएँ होती हैं तथा ग्रत भगण ग्राता है। इसकी तुकात मिलती है।

उ०—१ ग्राद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वखाण। ग्रत भगण जिण गीत न, वसतरमणि वखाण। —र. ज प्र.

उ०—२ कर फर ग्राद मे हिक नगण सुभकर, धुर उगणीस मत्त नहचै धर। वे लघु होय तुकत वरावर, सुसबद राम कहै मभ सुंदर। गीत वसतरमण किव गावत, सोळह पद-ग्रत मात सुभावत —र. ज. प्र.

रू. भे.—वसतरमणी।

वसतरित, वसतरितु—देखो 'वसत' (१)

उ०—ऊपर तिठा वसतरित ग्राई, सीत वितीत हुई ग्रमुहाई। सोभै ग्रव ग्राद तर सारा, वरण नीत जिम प्रज चा वारा। —रा रू.

रू भे—वसतरितु, वसतरत।

वसतवाक–स पु. [स वसतवाक्] सगीत दामोदर के चोदह तालो में से एक।

वसतसख, वसतसखा–स. पु [स वसत सख] कामदेव का एक नाम।

वसति, वसती–वि [स वसन्ती] १ वसत ऋतु का, वसत ऋतु सम्बधी।

२ वसत ऋतु मे होने वाला, चलने वाला।

उ०—ग्रबा डार कोयलिया बोलै, बहत वसती बयार मा। कुज-कुज रसराज दपत जहा, भवरन ज्यू मिळ डोलै। —रसीलै राजरा गीत

३ वसती (पीले) रग का।

स स्त्री —१ वसत ऋतु की देवी, सरस्वती।

उ०—दस मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति। कठिण वेयणि कोकिल मिमि कूजति, वनसपती प्रसवती वसति। —वेलि

२ सरसो के फूल के समान हल्का पीला रग ।
३ जूही ।
रू भे —वसती, वासती ।

वसतोत्सव-स पु [स] १ वसतपचमी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव ।
२ प्राचीन काल मे वसतपचमी के दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव ।
३ होली का उत्सव ।

वसतौ—देखो 'वसत' (अल्पा , रू भे)
उ०—खेलै अति ही उलसती, वालभ विनु कैसौ वसतौ हो लाल । —ध. व ग्र

वसधरा—देखो 'वसुधरा' (रू. भे)
उ०—असुराण प्राण मिटसी इळा, सुर वध पाण वसधरा । नवकोट नाथ निसचौ निजर, डर धारो हरि ऊपरा । —रा रू

वसभर—देखो 'विस्वभर' (रू भे)
उ०—भीर म्हैं जका भीरू वसभर, गाज कुण सकै 'जसवत' रा गाव । राव एक थाप ऊथापीया रडमला, रडमलां पुडदडी राखीया राव । —दुरसो आढी

वस-वि. [स वश] १ नियन्त्रण या काबू मे आया हुआ, अधीनस्थ ।
२ आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी ।
३ विनम्र ।
४ किसी किसी प्रकार के जादू-टोने के प्रभाव मे आया हुआ, वशीभूत ।
मुहा —वस मे होणौ=काबू मे होना, अधिकार मे होना, मुग्ध होना, मोहित होना, मोहजाल में फसना, भ्रमित होना ।
स. पु. [स वश] १ अभिलाषा, कामना सकल्प, इच्छा चाह ।
२ नियन्त्रण, काबू, अख्त्यार ।
उ०—वस राखो जीभ कहै इम 'बाकौ', कडवा बोल्या प्रमत किसी । लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।—बा दा
३ किसी विषय या वात को अपने अनुकुल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति ।
४ प्रभाव, प्रभुत्व, धाक ।
५ पहुच ।
६ गति, वेग । (अ मा)
मुहा —१ वस चालणौ=स्थिति काबू मे होना ।
२ वस मे होणौ=कोई कार्य अपने अधिकार-क्षेत्र मे होना ।
३ वस री वात=वह स्थिति जहा पर अपनी पहुँच हो, प्रभाव हो ।
७ उत्पत्ति, जन्म ।
८ रडियो का चकला, रडी खाना ।
९ देखो 'विस' (रू. भे)
रू भे —वस, वसि ।

वसक्कि, वसख—देखो 'विसिख' (रू भे.) (ह ना मा.)
उ०—वसक्कि झवक्कि वळक्कै सार । धावा मिळ तिम्मर घोर अधार । —गु रू ब.

वसट-अव्य [स वषट्] यज्ञो मे अग्नि मे आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला एक शब्द ।

वसटकार-स. पु [स वषट्कार] १ उक्त शब्द उच्चारण करने वाला व्यक्ति ।
१ एक देवता ।
३ देवताओ के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ ।

वसटक्रत-वि [स वषट्कृत] हवन किया हुआ, होमा हुआ, हुत ।

वसटक्रत्य-स पु [स वषट्कृत्य] हवन, यज्ञ, होम ।

वसण—१ देखो 'वसन' (रू भे)
उ०—१ खघ वसण रण हाथ खग, घोडा ऊपर गेह, घर रखवाळी विन धरण, गिणै न अण सम देह । —जैतदान बारहठ
उ०—२ आज झगडा ऊपरै जावता भेस करियो छै-कुसुम फूला री मौड अनै वसण कपडा रगिया है । —वी स टी
२ देखो 'वसण' (रू भे)

वसणौ—१ देखो 'वसणौ' (रू भे)
२ देखो 'वसन' (अल्पा , रू भे)

वसणौ, वसबौ—देखो 'वसणौ, वसबौ' (रू भे) (उ र)
उ०—१ हसतौ न्रप देखे सिध हसियौ । विभ्रम ताम न्रपति उर वसियौ । —सू प्र
उ०—२ पेड दियै अममेद रा, मरै खडग री मीच । अछरां वाहडियां गळै, वसै विमाणा बीच । —वा दा
उ०—३ समत १६६१ अमरसिंघजी साथै गयौ । पछै समत १६—६६ वळै वसियौ । काठसी पटै । —नैणसी
उ०—४ जिणै देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वजउ वाउ । उआ लगै मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो मा
उ०—५ पवन चदनगध हरावतउ, वदनि वासि वसइ दिसी वासतु । —शालि सूरि
वसणहार, हारौ, (हारी), वसणियौ - वि० ,
वसिओडौ, वसियोडा, वस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वसीजणौ, वसीजवौ—भाव वा० ।

वसत—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—१ रत घ्रति चदण कपूर, सर्म समसाण सफाई । विविघ भ्रमित सुचि वसत चेहुग्नि निमति चलाई । —रा रू

उ०—२ वणक कहै आवै वसत, कै कूडै कै गूण । चेळै पडै सो होय सुघ, सँभर पडै स लूण । —बा दा

उ०—३ इतरी वसत कनक घट आणै। सपुट दियै किये सहनाणै । बाळजत्ती पतिवरता वेवै । सपत निसा जाग्रण करि सेवै । —सू. प्र

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे)

वसतपाचम—देखो 'वसतपचमी' (रू भे)

वसतर—देखो 'वस्त्र' (रू. भे) (भ्र. मा., ह ना मा)

उ०—पीढै ताम उठावै ऊपरि । केसर चदण भीण वसतर करि । —सू प्र

वसति, वसती—स स्त्री [स वशित्व] १ अष्ट सिद्धियों मे से एक जिससे सब को वश मे करने की शक्ति आजाती है । (डिं को)

२ देखो 'वस्ती' (रू भे)

उ०—१ श्रोपी आढो कहै ईसवर, नित राखूं चित थारो नाम । तूं छती माय देवण सुख तूंही, रणा तणी वसती तू राम । —श्रोपी आढो

उ०—२ वसती माय मिळै नही वासो, खरच पला री खासी । साजण सैण सीरवी सुख रा,जीव हेकली जासी । —भीखजी रतनू

उ०—३ ऊडा जळ सूकै अवस, नीलो वन जळ ज्याय । चुगल-तणा पग फेरसूं, वसती ऊजड ज्याय । —बा दा

उ०—४ ऊग्यो डूब अफीम, नीमरो रूख निरोगी । वसती होड हकीम, नीमडो जगम जोगी । —दसदेव

वसतु—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—ताखी, ताव तमाम, पीनणी अर पुसळाई । नैडी थैडी तणी जाळ वसतुवा वणाई । — दसदेव

वसतौ—देखो 'वसतो' (रू भे)

वसत्त—१ देखो 'वस्तु' (रू. भे)

उ०—हुता सज्जण-हीयडै, सयणा हृदा हुत्त । जउ सोहणो साचइ होग्रइ, सोहणो वडी वसत्त । —ढो मा

२ देखो 'वस्त्र' (रू भे.)

उ०—फरै वणिज्ज एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए । साला चौतार मुक्खमल्ल, रेसमी वसत्त ए । —गु रू ब.

वसत्र—देखो 'वस्त्र' (रू भे.)

उ०—भ्रामी वसत्र सेत तन भासत, वसन लाल खियणी सुवासत —र ज प्र

वसदे—१ देखो 'वसुदेव' (रू भे.)

२ देखो 'वासदे' (रू भे)

वसदेराव—देखो 'वसुदेव' (रू भे)

वसदेव—देखो 'वसुदेव' (रू भे)

उ०—१ सेत अस्व सुभद्रेस करण सत्र । सरा तास वसदेव सुत । —ह. ना. मा.

उ०—२ घन वसदेव तणै गरधारी, जमदग रै घर फरस जपै । सकर रै गणपत सारीखो, दूजो 'फतमल' असो दपै । —मेगराज आढो

२ देखो 'वासदेव' (रू भे)

उ०—रुइ अ्रत पूछ लपेट कर, वसदेव जगाया । देता का एवास सव, जद आग जळाया । —केसोदास गाडण

वसधा—देखो 'वसुधा' (रू. भे)

उ०—वड पह वहुआर भुजि कुळिभार, घर सिणगार तपै लखधीर । विलसण गजवाज कुंअर सकाज, वसधा राज करै वरवीर । —ल पिं.

वसधापत, वसधापति—देखो 'वसुधापति' (रू भे.)

उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रवघू करै, भुव कपित भार दिगीस डरै । मन आन महीपन के प्रजरे, किन पै वसधापति कोप करै । —ला. रा.

वसन—स पु [स वसन] १ वस्त्र, कपडा, परिघान । (भ्र. मा , ह ना मा.)

उ०—१ भूटि भूंविय महीतलि रोली । काढिवा वसन कीघ हीयाली —सालि सूरि

उ०—२ तन स्याम अवुद रूप तडिता, वसन पीत विचार । वासभ्र पीत विचार सरवर, घनुस सायक घार। —र. ज. प्र.

२ कफन ।

३ आवरण, गिलाफ, आच्छादन ।

४ स्त्रियो के कमर में घारण करने का एक आभूषण, करघनी ।

रू भे —वसना ।

५ देखो 'विस्णु' (रू भे)

६ देखो 'वसण' (रू भे)

रू भे —वसण, बसन, वसन्न, वसण, वसन्न, वासन्न ।

अल्पा—वमणी ,वमणी ।

वसनस—म. पु. [स वस्नसा] स्नायु, रग, नाडी ।

वसना—देखो 'वसन' (३) (रू भे.)

वसन्न—देखो 'वसन' (रू. भे)

उ०—वर्णां सागळी गात भीणां वसन्नै। तिसी भूखणे जोत मोती रतन्नै। —रा रू

वसमगत, वसमगति—देखो 'विसमगति' (रू भे.)

उ०—हीयै धारीया खान जुवान छवतो नहग, अवर नर वीसरै तरा अछभा। वसमगत देख 'जसराज' खग वाहतै, रही रथ साह गजगाह रभा। —महाराजा जसवतसिंह री गीत

वसरामणो, वसरामवो—१ देखो 'विसरामणो, विसरामवो' (रू. भे)

उ०—वडो सूर दातार रायसीग वसरामियौ, वडरा कुरा वड वडी घडा वरसी। कुजरा तणी मोताज करसी कमरा, कमरा कोडा तणी रीझ करसी। —दुरसो आढो

२ देखो 'विस्रामणो, विस्रामवो' (रू. भे.)

३ देखो 'विसराणो, निसरावो' (रू भे.)

वसरामियोडो—१ देखो 'विसरामियोडो' (रू भे)

२ देखो 'विस्रामियोडो' (रू भे)

३ देखो 'विसरायोडो'

(स्त्री वसरामियोडी)

वसराळ—देखो 'विसराळ' (रू भे)

उ०—अवक वाग वसराळ गैणाग जग आतसा, खाग दावायता आव खूटी। लाय वूदी तगत लयता लगाई, आग जैपुर नगर जाग ऊटी। —दुरजणसिंह री गीत

वसव—देखो 'विस्व' (रू भे)

उ०—सरखी कमद वरी सायजादी, मार नारपड जना सगार। वसव ऊपरै येक वखाणा, मार्णां वीजै सुरग मझार। —मेसदास आढो

२ देखो 'विस' (रू भे.)

उ०—वसव छांडै भुजग, गग, ऊलट वहावै, कहावै वेद कुण साच करसी। लख दीया 'भीम' आखर जकै रुपावै, ऊदै रव न थावै वीया 'अरसी'। —जवानजी आढो

वसवान—देखो वसीवान' (रू भे)

उ०—१ धर डुल्लिय परिभार, पहुमि वसवान उचल्लिय। हल मिल्लिय परि जोर, सेस अहि फन पर सल्लिय। —ला रा

उ०—२ सुतरा दासरथ रूप लसवान कौटक समर, समर जसवान न्रप, सियासामी। तवता नाम नसवान अघ भव तरा, भव तरा हिया वसवान भामी। —र. ज. प्र.

वसामध—स पु.—पाटल नामक वृक्ष। (अ मा)

वि वि—देखो पाडळ'

वसा—स स्त्री [स वशा] १ औरत, नारी, स्त्री।

२ पत्नी, भार्या, जोरू।

३ लडकी, पुत्री।

४ पति की बहन, ननद।

५ वध्या स्त्री।

६ गौ, गाय।

७ बाझ गौ।

८ हथिनी।

[स वमा] ६ मेद। (डिं को)

१०—चरवी, मास।

११ मस्तिष्क।

रू भे.—वसा।

वसाकेतु—स पु [स] पश्चिम मे उदय होने वाला एक धूम केतु, तारक-पुंज।

वसाडणो, वसाडवो—देखो 'वसाणो, वसावो' (रू भे)

उ०—जादम जाडा वजिया, 'रामो' नै ऊदल्ल। विच सुरपुरा वसाडिया, मछरा तणा महल्ल। —रा रू

वसाडणहार, हारौ (हारी) वसाड़णियो—वि०।

वसाडिओडो, वसाडियोडो, वसाडयोडो—भू० का० कृ०।

वसाडीजणो, वसाडीजवो—कर्म वा०।

वसाडियोडो—देखो 'वसायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वसाडियोडी)

वसाणो, वसावो—देखो 'बसाणो, बसावो' (रू भे)

वसाणहार, हारो (हारी), वसाणियो—वि०।

वसायोडो—भू० का० कृ०।

वसाईजणो वसाईजवो—कर्म वा०।

वसायोडो—देखो 'बमायोडो' (रू भे)

(स्त्री वसायोडी)

वसारेळ—स पु [स वसु=पृथ्वी+राज रेळ=तरवतर] इद्र।

उ०—घटा बाध चमराळ पग्गराळ फौजा घसण, दुजड तडिताळ छिबझाळ दखतो। आरा अरणगाळ रो गिरा अप्राजियो, वैरिया काळ वसारेळ 'वखतो'। —फरणोदान कवियो

वसाळ—स पु—भेड।

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखे बीस वसाळ। ऊचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ। —ढो मा

वसाव, वसावट—देखो 'वसाव' (रू भे)

उ०—नस महल न पोडै प्रमण नचीता, वमरे गिरै वसाव कीया। वस तणो ऊडाव वीडरे, सीमोदा वक रास कीया। —मेपजी वारहठ

वसावणो, वसाववो—देखो 'वसाणो, वसावो' (रू भे)

उ०—१ मुलक वसावणहार, चिणावै चेजा भारी। ढूंढा पड़वा साळ, भखारी भीत तिबारी। —दसदेव

उ०—२ घर आगण माहै घणा, त्रासै पडिया ताव। जुध आगण सोहै जिके, वालम वास वसाव। —बा दा.

वसावणहार, हारौ (हारी), वसावणियौ—वि०।

वसाविप्रोड़ो, वसावियोड़ो, वसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वसावीजणौ, वसावीजबो—कर्म वा०।

वसावियोड़ो—देखो 'वसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री वसावियोड़ी)

वसाह-स पु—नगर या शहर के चौहटे का नाम। (सभा)

वसि—१ देखो 'वसी' (रू भे)

२ देखो 'वस' (रू. भे.)

उ०—अगथीआ चदन घूम्रो, देह माहारानि कसि। प्रत्यक्ष जूम्रो पारखू, विसधर जेणि वहु वसि। —नळाख्यान

वसितव, वसिता—देखो 'वसित्व' (रू भे) (ना. मा)

वसितागाथा-स स्त्री—गाथा छद का एक भेद जिसमे आठ गुरु व ४१ लघु होते हैं। (पिंगल सिरोमणि)

वसित्व-स पु [स. वशित्व] १ वशता, अधीनता।

२ एक प्रकार की सिद्धि।

रू भे—वसितव, वसिता, वसीता।

वसिमा—देखो 'वसि' (रू. भे)

वसियकरण—देखो 'वसीकरण' (रू भे)

उ०—मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही, वसियकरण कियो कोइ। रग दिखालइ हो रालइ जे दुख आपणो, ते गुण रसिया जोइ। —वि कु

वसिया—देखो 'वस्ती' (रू भे)

वसियोड़ो—देखो वसियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री वसियोड़ी)

वसिस्ट, वसिस्ठ-स पु. [स वसिष्ठ] १ एक प्रचीन एव प्रसिद्ध ऋषि, जो स्वायंभुव मन्वतर मे उत्पन्न हुए ब्रह्मा के दस मानसपुत्रो मे से एक माना जाता है।

उ०—१ होता प्रभु करता जग हरता, कहता गुर वसिस्ट जिम करता। धरि गुर वचन वचन पित धारै, प्रभु सिय जुत वनवास पधारै। —सू प्र

उ०—२ वसिस्ठ आदि ब्रह्मय, करत जातकमय। हळद् कुकम हरी, करत छोह केसरी। —सू प्र

वि. वि—वसिष्ठ नामक सुविख्यात ब्राह्मण वश का मूल पुरुष भी इसे ही माना जाता है एव यही वश अयोध्या के वैदिक-कालीन सूर्यवशी (इक्ष्वाकु वशी) राजाओं का सदियो तक पौरोहित्य करता रहा था। इन्हें ही ऋग्वेद के सातवें मडल के रचयिता माना जाता है।

२ एक स्मृतिकार ऋषि।

३ एक ऋषि जो भरतवशीय सम्राट रतिदेव साकृत्य का पुरोहित था।

४ रैवत मन्वतर का एक ऋषि।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

६ श्राद्ध देव का प्रोहित एक ऋषि।

७ सप्तर्षि मडल का एक तारा।

८ आठवा वेद व्यास, जिसे इन्द्र ने ब्रह्माड पुराण सिखाया था।

९ एक शिल्प शास्त्रज्ञ।

१० अगस्त्य ऋषि का छोटा भाई विदेह-राज निमि का प्रोहित था।

रू. भे.—वसिस्ठ, वसीठ, वासिस्ट, वासिस्ठ, वसीठ।

वसिस्ठपुरांण-स. पु [स वसिष्ठपुराण] एक उपपुराण, जिसे लिंग पुराण भी मानते हैं।

वसी-स पु [सं. वसि] १ गृह, घर, निवासस्थान। (अ. मा)

उ०—आया वसियां आपणी, ग्रीखम थई वतीत। १७३९ गुण चाळी लागो वरस, चाळो सरस सजीत। —रा रू.

२ वश्य।

[स वश्य] ३ नोकर, चाकर, दास, अनुचर (परिग्रह)

उ०—१ रावळ नू डूंगरपुर नेड़ीहीज ठौड़ पाधर मे वताई तठै ऐ आपरा गाडा आण वसी सूधा छोडिया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा एक दिनै ऐ चढनै घूघरोट रा पाहड़ा माहै राव मालदेजी री वसी हुती, तिकै नू बध कीवी। —नैणसी

५ जागीरदारो द्वारा लिया जाने वाला कर विशेष जो प्रजा की रक्षा करने के कारण लिया जाता था।

६ वह व्यक्ति जो जागीरदार का विशेष कृपा पात्र होता था और सभी प्रकार के कर व लागो से मुक्त होता था।

उ०—हुवै वसी री वाणियो, पातर हुयै खवास। हुवै कीमियागार ठग, निध हर जावै नास। —बा. दा.

वि वि—उक्त कृपा व स्वतन्त्रता के साथ ही इसे जागीरदार की इच्छा का हर वक्त ध्यान रखना पडता था।

७ वसने के लिये दी जाने वाली जागीरी, स्थान।

उ०—सहसो तेजसी वरसिंघ जोधाउत्त रो पोत्रो मेड़तीयो वास राखीयो थो तिणनु रीया वसी नुं दीनी थी।

—राव मालदे री वात

८ निवास।

उ०—जैतो जोधपुर चाकरी करै । कूपो सोभत चाकरी करै । सु जैतै री वसी वगडी माहैं । सु वगडी वीरमदै रै वांटै मे आई ।
—नैणसी

[म. वशि] ८ अधिकार, कब्जा ।

९ अधीनता ।

१० मनमोहकता ।

वि —१ बसाया हुआ, २ आकर बसा हुआ, ३ वश मे रहने वाला ।

रू भे.—बसि, वसी, वस्सी, वसि ।

वसीकर–वि [स वशीकर] १ वश मे करने वाला ।

उ०—मत्र वसीकर महली, वाणी वोयलियाह । कुरजडिया गरदन कहू, कठा कोयलियाह । —पा प्र

२ मोहित करने वाला, मुग्ध करने वाला ।

रू भे —वसीकर ।

वसीकरण, वसीकरणि–स पु [स वशीकरण] १ वश में करने की क्रिया या भाव ।

२ एक मत्र, जिसके प्रयोग से किसी को वश मे किया जा सकता है । (तन्त्र)

३ अष्ट सिद्धियो मे से एक सिद्धि । (ह ना मा)

४ कामदेव के पाच बाणो मे से एक ।

उ०—आकरसण, वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पच । चितवण हसणि लसणि गति सकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा सच । —वेलि

५ वश मे करने का कोई साधन ।

उ०—वाजिन्त्र गरय वसीकरण वीजा सहु अकयथ्थ । जिए चडया दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ । —व स

उ०—२ रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलियलित, वसीकरणि अमूढ लक्ष सडी । —व स

रू भे.—वसीकरण, वसियकरण ।

वसीका–स स्त्री [अ वसिका] अगर की लकडी ।

वसीको–वि [अ वसिक] १ शून्य, रहित ।

२ रीता, खाली ।

[अ वसीक] ३ पेंशन पाने वाला ।

[स पु] (१) ऋण पत्र । (२) दस्तावेज । (३) इकरार नामा ।

४ सरकारी खजाने मे जमा कराया जाने वाला धन जिसका सूद जमा कराने वाले के सम्बन्धियों को मिलता है ।

रू भे —वसीको ।

वसीकृत–वि [स वशीकृत] १ मोहित, मुग्ध ।

२ वश मे किया हुआ ।

वसीटाळू—देखो 'विस्टाळू' (रू. भे)

वसीटाळो—१ देखो 'विस्टाळो' (रू भे)

२ देखो 'विस्टाळू' (रू भे)

वसीट्ठी–स. पु.—१ दूत ।

उ०—पचे मिलि वात पतीठी, परगच्छी हुआ वसीट्ठी ।
—कविकनक सोम

२ देखो 'वसीठी' (रू भे)

वसीठ–स. पु —१ सदेशवाहक, दूत ।

उ०—हे सखी म्हारै पती कोई जोधार नें मारण री इच्छा न होवै तद उणनें उर छाती मे भाला री वूडी दे अटकावै-रोकै-पण काळ तौ उठा सू प्राण लेण नें वसीठ दूत भेज देवै ।
—वी स टी.

३ राज दूत ।

४ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

रू भे —वसीठ ।

वसीठी–स स्त्री —१ वसीठ का कार्य ।

२ सदेश लाने-लेजाने का कार्य ।

रू. भे —वसीठी, वसीट्ठी ।

वसीता—देखो 'वसित्व' (रू भे)

वसीतुनीर–स पु.—तीर, बाण । (अ. मा)

वसीभूत–वि [स वशीभूत] १ वश मे या काबू मे किया हुआ, नियत्रित, अधीन ।

२ दूसरो की इच्छा के अधीन रहने वाला ।

३ मोहित, मुग्ध ।

रू भे.—वसीभूत ।

वसीयत–स स्त्री [अ.] १ विदेश गमन या मरणासन्न व्यक्ति द्वारा अपनी सम्पत्ति के विभाग उपयोग के लिये की जाने वाली व्यवस्था ।

२ मरणासन्न व्यक्ति का अपनी सम्पत्ति के व्यय एव प्रबध के लिए अतिम आदेश, निर्देश ।

३ मरने वाले का अतिम कथन ।

४ सम्पत्ति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला दस्तावेज ।

रू भे —वसीयत ।

वसीयतनामो–स पु [अ वसीयतनाम] १ अपनी सम्पति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला कानूनी दस्तावेज ।

२ इच्छा-पत्र ।

सीरो-स पु. [स. सिच क्षरणे+क्त=अवसिक्त या शीकृ सेचने+क्त =अवशीकित। भागुरी के मत से अ का लोप सिक्त अथवा शिकित=वसीकौ=वसीरौ] प्रजा ।

उ०—१ राव सुरताण रै वसीरा रजपूता रा गाव छै, तिण ऊपर फोज १ पैलीजै ज्यू रजपूत जुदा जुदा विखर जाय, पछै सुरताण नू कूट मारिस्या। —नैणसी

उ०—२ चौपदौ घण। सो ईंया रौ घण लोका रा खेत खावै । वसीरा लोकारा खेत ऊभा खाईजै। सु लोक वसीरौ भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार घालै । —नैणसी

वसीलौ-स. पु. [फा वसील] १ आश्रय, सहारा ।

उ०—सावळ सत तणौ सुण सामी, ढळवळ सहज न धारै ढील । वचन उसीला तणौ वसीलौ, वड दरबारा तणौ वकील । —ओपो आढौ

२ सम्बन्ध, लगाव।

३ साधन, जरिया, माध्यम ।

उ०—अग असीला हो लाल, तुझ नइ दीठा आणदा । मुगति वसीला हो लाल, समता सुरतरु कदा । —वि. कु.

४ उपकरण ।

५ बिचौलिया ।

रू. भे —वसीलौ ।

वसीवान-वि. [स वसि+अ वत्] १ बसने वाला, निवास करने, वाला, निवासी ।

२ वश परम्परा के अनुसार जो स्थायी रूप से निवास करता हो ।

रू भे —वसीवान, वसैवान, वसवान।

वसुधरा-स. स्त्री. [स] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—एंक तीन वसत निभाइयौ विनायक, पवन-पाणी-वसुधरा । —लो गी

रू. भे —वसदरा, वसधरा, वसुधरा, वसधरा, वसुधर, वसुधरा।

वसु-स. पु [स] १ धन, दौलत, द्रव्य। (अने)

२ प्रकाश, तेज।

३ देवता, सुर।

४ रत्न।

५ स्वर्ण, सोना।

६ एक ही श्रेणी के आठ देवताओ का एक गण (समूह)

उ०—तहा वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मत्र-वळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इद्र आदि देवता अडसठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु, अस्ट परवत दसो दिगपाल आदि सैं आवाहन करि आहुति कर प्रसन्न किया । —सिंघासण बत्तीसी

वि वि —आठ देवताओ के नाम इस प्रकार है —आप (अह), ध्रुव, सोम, धर या धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास ।

७ कुबेर। (ह ना. मा)

(८) इन्द्र । (९) मेघ, बादल । (ना. डिं. को.) (१०) सूर्य । (११) विष्णु। (१२)शिव,रुद्र। (१३)जल, पानी। (१४) वायु। (१५) प्रजापति। (१६) तालाव, सरोवर (१७) मरुद्गण। (१८) पदार्थ, वस्तु। (१९) लवण विशेष। (२०) अगस्त्य का वृक्ष। (२१) वक-वृक्ष। (२२) छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ३ गुरु व १४६ लघु होते हैं। (२३) साधु पुरुष, सज्जन। (२४) अधिकार, कब्जा, वश। (२५) आठ की सख्या।* (डि. को) (२६) दीप्ति, चमक । (अनेका) (२७) अग्नि, आग। (अ) (२८) किरण, रश्मि। (२९) पृथ्वी, धरती।

उ०—कछव कछवाह वासौ पलट करै किम, वसु-ह चौ माड विह भडा वामै । —मिरजा राजा जयसिंह रौ गीत

(३०) उषा। (३१) अश्वी। (३२) इन्द्र की अमरा-पुरी। (३३) कुबेर की अलका पुरी। (३४) अमरा-पुरी व अलका पुरी मे बहने वाली एक नदी। (३५) दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम। (३६) मौलश्री। (३७) वृद्धि नामक औषधि, जडी। (३८) लगाम, रास बागडोर।

वि —१ जो सब मे निवास करता हो।

२ जिसमे सबका निवास हो।

३ अधीन, अवलम्बित।

क्रि वि —अधिकार मे, कब्जे मे, अधीन।

उ०—माल-वित सारौ सभाळनै हाथ वसु कियौ। —नैणसी

रू भे —वसु, वसू, विसू, वसुह, वसू।

वसुचरण-स पु —डगण के चतुर्थ भेद का नाम, इसमे आदि गुरु, फिर दो लघु (ऽ।।) होते हैं।

वसुद-स पु. [स वसु+अ द] १ विष्णु। २ कुबेर।

वसुदरम-स पु. [स वसुधर्म] इन्द्र।

रू भे —वसुदरम।

वसुदा—देखो वसुधा' (रू भे.)

उ०—'जुजा' सुतन जमायो जबरो, मग्रहा ऊपर इसो सधीर। वसुदा सँग वळा नैं वादै, वादै वळौ तोनै नर वीर।

—ठाकुर उंदरसिंह रौ गीत

वसुदेव-स पु [स] श्रीकृष्ण के पिता एव यदुवशियो के राजा।

(ह. ना मा)

उ०—अवळा वाळर एक, अरज करूं ऊभी अठै। टावर ध्रुव री टेक, तूं रानी वसुदेव तण। —रामनाथ कवियौ

रू भे —वछदेव, वसुदेव, वसदे ,वसदेव ।

वसुधर, वसुधरा—देखो 'वसूधरा' (रू भे.) (डिं ना मा, ना मा.)

वसुधान, वसुधा–स स्त्री [स वसुधा] पृथ्वी, धरती, धरा। (अ मा, डिं को, डिं ना. मा, ना डिं को, ना मा, ह्. ना मा)

उ०—१ हिचै मरै खळ हात, खगधारा कुळ खोवणा । सूपै हेकण साथ, सिर वित घर वसुधा सुजस। —वा. दा.

उ०—२ दत देता घन माणता, जगि सुणता जसवास। वसुधा इण पर वौळिया, नव कोटी म्रट-मास। —गु रू. व

रू भे.—वसुदा, वसुधा, व्रिसुधा, वसधा, वसुध्धा, वसुह, वसुहा, वसूधा ।

वसुधाधर–स पु [स] १ विष्णु ।

२ शेषनाग ।

३ पर्वत ।

वसुधाधिप, वसुधाधिपति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे)

वसुधाधोख–स पु. [स वसुधाधुक्] पानी, जल। (अ. मा)

वसुधापति–स पु —राजा, नृप ।

रू भे —वसुधाधिप, वसधापत, वसधापति, वसुधाधिप, वसुधाधिपति ।

वसुधारा–स. स्त्री. [स] १ कुबेर की राजधानी, अलकापुरी ।

२ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

३ जैनों की एक देवि, शक्ति।

वसुधेस–स. पु. [स. वसुधा+ईश] १ ईश्वर ।

२ राजा, नृप।

रू. भे —वसुधेस।

वसुध्धा—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—वसुध्धा वट्ट। पैमाळ पहट्ट। गोधूळ गरद्द। पाखै गय-मद्द। —गु रू व.

वसुपय–स पु —डगण के चतुर्थ भेद का नाम। (र. ज प्र)

वसुप्रसून–स. पु [स विसप्रसून] १ कमल ।

रू. भे —वसूप्रसून ।

वसुमता, वसुमति, वसुमती, वसुमत्ती–स स्त्री [स. वसुमति] पृथ्वी, धरती। (डिं ना मा, ना मा., ह्. ना मा)

उ०—१ डारण समर अडोल, मारण चढघो मेवासिया । तिण कारण खग तोल, वोल उवारण वसुमती ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंह री वात

उ०—२ रजनीचरण करन निरमूळहि, सारदूळ चढि गहिय त्रिसूळहि। अगपति चलिय हलिय वसुमत्ती, स्रीकरनी जयजयति सकत्ती। —मे. म

रू. भे.—वसुमति, वसुमती, वसूमती।

वसुरेता–स पु [स वसुरेतस्] १ अग्नि।

२ शिव ।

वसुरोघी–स. पु —शिव ।

वसुह—१ देखो 'वसु' (रू भे)

उ०—जिम धायौ जोगेस, वसुह दिख ज्याग विध्वंसण। जिम धायौ ग्रह बाण, पत्य गौ ग्रह छाडावण। —गु रू. व.

२ देखो 'वसु' (२६) (रू भे) (ना. मा.)

उ०—परचड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पच दिन। 'गजसाह' वसुह राखी पगौ, डहै भुज्ज डिगियौ गिगन। —गु. रू व.

वसुहा—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—१ बामा देवीउ भर सुत्ति मजुल मुत्ताहल। सयल कलावलि कलिकाय कलिमलि वसुहा हल। —स कु

उ०—२ वसुहां वर वड वीर धीर दुज्जणाजण गजण, सुभट पणइ सुरताण स्रीय महिमूद मनरजण। —व स

वसूंलौ—देखो 'वसूलौ' (रू भे)

वसू—देखो 'वसु' (रू भे) (अ मा, ना मा., ह्. ना मा)

उ०—१ वडी विपत सह वीर, वडी कीत खाटी वसू। धरम-धुरधर धीर, पोरस धिनो प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

उ०—२ धुजा फरक्की धूहडा, बहरक्की गज वोह। वसू थरक्की कावली, मुरधर छक्की मोह। —किसोरदान बारहठ

उ०—३ पछै पताई रावळ रै साळो सइयौ वाकलियौ तिकै री वडी मामली, वडो इतवार गढी री कूची तै वसू। —नैणसी

उ०—४ कटोरा माहे फूल लीजै छै। वाकरा होसनाका वसू कीजै छै। —रा सा. स

उ०—५ तिण कारण मरवो भलो रे, तिरसारत इण ठाम। पिण न हुवा तेह ना वसू रे, लोक वदै सहु ग्राम। —वि कु

उ०—६ मुरधर सखोधार, लियो लोहा वळि ईडर। वसू लाज छत्तीस, पूठि कन्नोज वडो घर। —गु रू व

वसूधा—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—वसूधा प्रगट दीसती वेस्या, भूकै भूप भुजग सु भूठ।
—घ. व. ग्र

वसूप्रसून—देखो 'वसुप्रसून' (रू भे) (अ. मा)

वसूमती—देखो 'वसुमती'. (रू भे.) (अ मा)

वसूल—वि. [अ] १ वसूली करने पर जो प्राप्त हुआ हो, जो लिया गया हो, लब्ध।

२ जो व्यय या श्रम के प्रति फल में मिला हो ।

स पु.—१ आय, प्राप्ति ।

२ प्राप्ति की रकम ।

वसूली–स स्त्री [अ.] १ वसूल करने या उगाही करने की क्रिया या भाव ।

२ लोगों से प्राप्य धन लेकर एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

वि.—जो वसूल के लिये हो ।

रू भे —वसूली, वसोली ।

वसूलो–स पु [स वासि] १ लकडी छीलने का, बढई का एक औजार।

उ०—रदोही होवै मती, मती वसूलो मित्त । होवै करवत सारिसो, वाटण-खाटण वित्त । —अज्ञात

२ ईंट काटने का एक औजार विशेष ।

रू भे.—वसूलो, वसेलो, वसोलो, बायलो, बासोलो, वाहोलो, भसोलो, भासोलो, भोयलो, भौहलो वसूलो, वसोलो, वायलो, वासोलो, वाहोलो, वासूलो ।

अल्पा.—वसूली, वसोली, बासोली, वाहोली, वायली, वासोली ।

वसेक, वसेख—देखो 'विसेस' (रू भे)

उ०—१ पावूजी अर हरियो थोरी असवार हुयने साढिया देने कोळू आया । ताहरा वसेक हुवी । —नैणसी

उ०—२ दुवार है मरख्ख दास, जै वसेख दुज्जय । अतीत ग्रेह तप्प आय, प्रीत हूत पुज्जय । —सू प्र.

वसेखो—देखो 'विसेस' (अल्पा , रू भे)

उ०—मुजरो छै पारख मरदा री, वीरत अग रायवाट वसेखो । आया खग झटका ईसर सु दोय दोय बटका देखो ।

—पहाडखा आढो

वसेरो—देखो 'बसेरो' (रू भे)

वसेस—देखो 'विसेस' (रू. भे)

उ०—अिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पूगळ देस । ढोला म्हा विच मोकळा, वासा घणा वसेस । —ढो मा

उ०—सकारा चुरसा थारा जाणीयो जेहान सारा वाखाणीयो छत्र धारा जोडरा वसेस । आडवरा भडाळा सावरा साज ओछा-डीया, अगाछाळा वागंबरा पूजीया महेस ।

—करणजी मईयारीयो

वसोख–स पु [स विशिखा] राजमार्ग, राजपथ, आमरास्ता ।

उ०—बाजार हाट वाटा वसोख, इण भात दान द्रव ओपत अनोख । हिम मणि जटत गव ग्रह होय, पूर अवर वताओ जोड कोय ।

—दि रू

वसोलो—देखो 'वसूलो' (रू भे)

वसो–क्रि वि.—१ वैसा, तैसा ।

उ०—आप पोढिया था सो हू तौ म्हारै मन री खुसी सूं जसो दरसाव देखियो वसो कहियो । —कुंवरसी साखला री वारता

२ लिये, निमित्त, हेतु ।

वस्त–स. पु. [स वस्तु, वस्त] १ वासा, डेरा ।

२ गमन ।

३ मागना क्रिया ।

४ घायल करना, मारना क्रिया ।

५ नाभि के नीचे का हिस्सा, मूत्राशय ।

६ परवस्ती, कृपा ।

उ०—अतरजामी, तु अछै हो लाल, वाल्हेसर सुवीदीत जि० । साहिब वस्त तिका करो हो लाल, जिण करि करि आवै चीत जि० ।

—वि. कु

[स. वस्त] ७ बकरा ।

[अ] ८ बीच का भाग, मध्य ।

९ देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—१ जन हरिदास मन गहि पवन ब्रह्म अगनि विसवन दहो । अगम वस्त अतरि अगह तहा उनमनि लागा रहो । —ह. पु. वा

उ०—२ मिळता राण घरै महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा । जिती वस्त नित अम्रत जोडा, राजै नव नवभांत रसोडा ।

—रा रू

उ०—३ घणी प्रीति सू, अविकाजी आपणा हाथ सू पूजि । जु वस्त आपणा मन नइ प्यारी थी । सु वस्त अपणै हाथि की । पूजा को फळ हाथि आयो । —वेलि टी.

उ०—४ जे नगर माहइ दानसाला, पौसधसाला, धरमसाला, गढ मदिन प्रकार, चुरासी चुहुटाणी हटस्रेणी, माहइ वस्त संपूरण वरतइ । —व स.

उ०—५ सचा वस्त अनेकी तणा, का न रहइ मननी कामिणा । ऊचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ।

—प. च चौ

वस्तपाचम—देखो 'वसतपचमी' (रू भे)

वस्तर—देखो 'वस्त्र' (रू भे)

उ०—घर घर ग्वालन दही विलोवै, कर कगन झनकारै । वस्तर भूखण तन पर धारो, पगिया पेच सवारै । —मीरा

वस्तवत–वि [स वस्तु-वत्] जो वस्तुओं से भरपूर हो, वस्तुओं से परि-पूर्ण, वस्तु युक्त, सामग्री युक्त ।

उ०—वन ते जे वृक्षवत, नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवत, देस ते जे प्रजावत, प्रासाद ते जे ध्वजावतु, वाट ते जे सूधवत, हाट

ते जे वस्तवत, वचन ते जे सत्यवत सस्य ते जे विनयवत, प्रधान ते जे बुद्धिवत, राजा ते जे न्यायवत, तिम धरम ते जे दयावत ।
—व. स

वस्ति—स स्त्री [स वस्ति] १ निवास, ठहराव ।

२ नाभि के नीचे का पेट का भाग ।

३ कोख ।

४ मूत्राशय ।

५ पिचकारी ।

६ योग की एक क्रिया जिसमे उदर-शुद्धि होती है ।

उ०—नाभि प्रमाण सु वारि मे, उत्कट आसन लाय । नळि दे गुद सकोच कर, वारि उदर ले जाय । कर सुनौळि फिर त्याग दे, यह ही वस्ति कहाय । वात पित्त कफ जन्य जे, गुल्मादिक गद जाय ।
—स्वामी नारायणदास

रू भे—वसति, वसती, वसत्ती, वस्ति, वस्ती, वस्ती ।

७ देखो 'वस्ती' (रू भे)

वस्तिकरम—स पु. [स वस्ति-कर्म] १ पिचकारी देने की क्रिया ।

२ पेट की आंतें साफ करने या रेचन करने के लिये गुदा मार्ग से पानी चढाने की क्रिया (एनिमा) ।

३ उदर शुद्धि के लिये की जाने वाली योग-साधना ।

रू भे—वस्तिकरम ।

बस्तिमळ—स. पु [स वस्ति-मल] पेशाव, मूत्र ।

रू. भे.—वस्तिमळ ।

वस्ती—१ देखो 'वस्ती' (रू भे)

उ०—वडी साहिवी हुती । तद सैंहर वस्ती घणी हुती । हमे ही जैतारण सारीखो सहर वसैं छै । मुदो वस्ती रो वाणिया ऊपर छै ।
—नैणसी

२ देखो 'वस्ति' (रू भे)

वस्तु—स स्त्री [स] १ वह चीज या पदार्थ जिसका अस्तित्व हो, सत्ता हो, जिसको देखा व छूआ जा सकता हो, जो अपनी वास्तविकता रखता हो ।

२ मारवान चीज, धन, दौलत ।

३ साधन व सामग्री जिसमे कोई चीज बनती हो ।

४ सार, तथ्य ।

५ खाका, ढाचा ।

६ श्रम द्वारा निर्मित कोई चीज ।

७ विषय-वस्तु जिस पर वाद-विवाद व विचार विमर्श किया जा सकता है ।

८ किसी नाटक की कथावस्तु, कथानक ।

रू. भे—वसत, वस्त, वस्तु, वुसत, वुस्त, वस्थु, वसत, वसतु, वसत्त वस्त, वुसत, वुस्त ।

अल्पा.—वसतडी ।

वस्तुनिरदेस—स. पु. [स वस्तु-निर्देश] नाटक के मगलाचरण का एक भेद जिसमे कथा का कुछ आभास दिया जाता है ।

वस्तौ—देखो 'वस्तौ' (रू. भे.)

वस्य—स पु. [स वश्य] १ अनुचर, नौकर, दास ।

२ देखो 'वस्या' (रू भे)

उ०—कहिन वहिन बाई कुण नई एह जाई, करिन मझ पसाई ताहरउ हउ जिमाई । कहइ हिव सुदरसणा वस्य देवग अस्णा, मझ तणी ए सिलिद्री स्रीसमाणी पुरिद्री ।
—सालिसूरि

वस्यकरम—स पु [स वश्यकर्म] ७२ कलाओ मे से एक ।

वस्या—स. स्त्री. [स वश्या] आज्ञा कारिणी स्त्री ।

रू भे—वस्य ।

वस्त्र—स. पु [स] १ ऊन, रुई, रेशम आदि के धागो से बुन कर बनाया हुआ कपडा जो अनेक प्रकार से उपयोग मे आता है। (ड र.)

२ शरीर पर धारण करने का कपडा, पोशाक, परिधान । (ड. र.)

रू भे—वसत्र, वस्तर, वस्त्र, वसत, वसतर, वसत्त, वसत्र, वस्तर ।

अल्पा,—वासतो, वासत्थो, वास्तो ।

वस्त्रकार—स पु. [स] १ वस्त्रो के आगार का अधिकारी ।

उ०—उदीसकार धुतिकार रूपकार, करणीकार रसकार क्षीरकार सस्यकार वस्त्रकार विभूसणकार, पुतार, अस्त्रसिक्षाकार, रथकार ।
—व. स.

२ वस्त्रो का व्यापारी, वजाज ।

वस्त्रगाठ, वस्त्रगाठि—स. स्त्री [स वस्त्र ग्रथि] ३ कपडे की गाठ, वडल । (ड र)

वस्त्रगोपना—स पु—१ वस्त्रो की रक्षा ।

२ स्त्रियों की ६४ कलाओ मे से एक ।

वस्त्रपरिधायक—वि [स] वस्त्र धारण कराने वाला, पहनाने वाला ।

उ०—राज वैद्य, वृत्तिवायक, वहीवायक, आचायक, त्रिहायक अगरक्षक चलाक वस्त्रपरिधायक, काठिया लोहटिया
—व स.

वस्त्रागार—स पु [स वस्त्र+आगार] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहां कई प्रकार के वहुत से वस्त्र हो, वस्त्र भण्डार ।

२ घर का वह कक्ष जहा पहनने के कपडे रहते हो (ड्रेसिंग रूम)

वहग—देखो 'विहग' (रू भे)

उ०—रग रळा दहू नमैं अढग मे जगन रण, कमव अणभग ऊछरग कीधो । सोहीयो पलग जग हूवं वान्ते मुत, दुगम उतवग वहग त्याग दीधो ।
—ठाकुर जोगीदास रो गीत

वहंगपत वहगपति—देखो 'विहगपति' (रू. भे.)

उ०—थाळ सारग न खेग सख कज पलग थत, वहगपत न पुगो चाल वासै। हाल ऊगो लगा नहग छवतो हरी, पाल अरचग गयो मतग पासै। —हुकमीचद खिडियो

वहगराज, वहगराजा—देखो 'विहगराज' (रू. भे.)

उ०—१ पतग ऊगतै रहै थाकै वहगराज पंथ, जाय गग वमुह खाय नहग झाली। सेस धर तजै पथ भजै वागा समर, देजगर डगै तौ चगै 'दोलो' —नाथजी वारहठ

उ०—२ राहा सकाजा अळ गा सम्र दौड मे वहगराजा। ताव तेज भोड में नहग राजा तास। रूप रग घाट थाट देख रीझै रावराजा, वाग माहाराजा असो मोजीयो अहास। —हुकमीचद खिडियो

वहडणो, वहडबो—देखो 'विहडणो, विहडबो' (रू. भे.)

उ०—जद वारग कहै 'जोगावत', घडा वहड सुरलोक गयो, मह जोधा सळखा रडमाळा, कमदा कुळ ऊजळो कियो। —हटैसिंग पातावत री गीत

वहडणहार, हारो (हारी), वहडणियो—वि०।
वहडिग्रोडो, वहडियोडो, वहडयोडो—भू० का० कृ०।
वहडीजणो, वहडीजबो—कर्म वा०।

वहडियोडो—देखो 'विहडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वहडियोडी)

वहत–स पु [स वहन्त] १ हवा, पवन। (२) बच्चा।

वह–सर्व [स वह्] कर्तृ कारक प्रथम पुरुष सवनाम जो किसी सदर्भ का अनुमान देता है।

स पु [स वह] १ परोक्ष या दूर की वस्तुओ का सकेत करने का एक निर्देशकारक शब्द।
२ समर्थन, सहमति।
३ लेजाने की क्रिया।
४ वाहन, सवारी।
५ घोडा।
६ हवा, पवन।
७ मार्ग, सडक।
८ नद।
९ वैल का कधा।
१० कधा, स्कध।
११ चार द्रोण भर का एक नाप।
१२ देखो 'वाह' (रू. भे.)

उ०—हरामखोरा न् नंडा आवण देवो। जाहरा तीर वह माहे आसी, ताहरा म्हे हंकारो करसा। —राजा नरसिंघ री वात

रू. भे.—वह, वहै।

वहकणो, वहकबो—देखो 'महकणो, महकबो' (रू. भे.)

उ०—मंच प्रति मच तणी रचना हुई। स्वरगपुरी तणी सोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुष्प परिमल वहकई नाचई पात्र। राजभवन आवई अक्षत पात्र। —वाग्विलास

वहचरा, वहचराय—देखो 'वहचराय' (रू. भे.)
उ०—वहीचरा देवी अरथ कुकूकटवहणी लोक वहचरा कहै। —वा दा ख्यात

वहजावणो, वहजावबो—देखो 'वजाणो, वजावो' (रू. भे.)

उ०—रामण इद्रजीत खर दूखर, गजे कूंण गिणावै। खात लगै केता खळ खाधा, वळै दात वहजावै। —र. ज. प्र.

वहण–वि —१ वार करने वाला, मारने वाला।

२ चलने वाला, गमन करने वाला।
उ०—उट्ठि महाभर कथ, भार भलपण सव्वाहै। वेगट वामी वहण प्रथी प्राक्री पति साहै। —गु रू. बं.
३ धारण करने वाला।
स पु [स वहन] १ वाहन, सवारी।
२ रथ।
उ०—जाय जोगण वद जाजा, प्रजुण वन्ही करै प्राजा। वहण आवध होम वाजा, रुपि दराजा रोस। —र रू.
३ नाव नौका।
उ०—वहण पोत (भव महण लघावण, तरण उदय हरि नाम तराज)। —ह ना. मा.
४ नदी, सरिता।
उ०—जुग जवदा जोड्या जिम वहण वहाई। —केसोदास गाडण
५ समय। (अ मा.)
६ वार, प्रहार।
७ चाल, गति।
८ देखो 'वहन' (रू. भे.)
९ भे—वहण, वहणो।

वहणी–स स्त्री —१ चलने की क्रिया या भाव।
२ आचार-व्यवहार, चाल-चलन।
३ वर्ताव।
४ तेज चलने वाली, शीघ्र गामी।
५ चाल, गति।
६ वहने की क्रिया या भाव।
रू. भे—वहणी, वहनि, वहनो, वह्निणि, वैणी।

वहणो–वि. [स वह्] (स्त्री वहणी) १ चलने वाला, गतिशील।

२ घूमने वाला, टहलने वाला, विचरण करने वाला।

उ०—भार अठारा पसरि न पोखै, नभ वहणि पवन धरती नहिं सोखै। निरभै भया भरम सब भागा, ल्यौ की डोरी उनमनि लागा।
—ह. पु वा

३ तेज चाल वाला।

४ बहने वाला।

वहणौ, वहबौ-क्रि अ [स वहन] १ चलकर कहीं जाना, गमन करना, चलना, किसी की ओर निरन्तर चलना।

उ०—१ धवळ न अटकै धुर वहै, कासू पाणी कीच। इण री जननी तारही, वैतरणी रै बीच।
—वा दा

उ०—२ मारवणी मनि रगि, वाटइ तिणि आवी वहइ। कुञ्भी एकणि सग, तालि चरती दिट्ठिया।
—ढो मा

उ०—३ वायक वामाना सुणी, आकासमारगि अणसरी। वेगि वही नि तै गयु रै हस नलरानी पुरी।
—नळाख्यान

उ०—४ वहै क वाज पत्थए, अकास मैं क रत्थए। सीरम साह नस्सहै, विवाण उड्डिया वहै।
—गु रू. ब.

२ पास से गुजरना, निकट से होकर चलना।

३ द्रव्य पदार्थ या पानी का धारा रूप मे बहना, प्रवाहित होना।

उ०—तठै समुद्र माहै पैठा। पैस अर एक वडो पाटलो तिण ऊपर भाणेज नू बैसाण अर पाटला नू धकाय अर वह तैपाणी माहै वहाय दियौ।
—नैणसी

मुहा—वहती गगा मे हाथ धोणा=अवसर का लाभ उठाना, सहज मे ही कार्य साधना, अवसरानुसार परोपकार करना।

४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहना, प्रवाहित होना।

उ०—ऊफळै नीर पताळा एहा, जळनिध प्रबळ घटा घण जेहा। राजा दास कुसळहु घट रहिया, वैरी सकळ सुजळ महि वहिया।
—सू प्र.

५ इधर-उधर घूमना, भटकना।

६ गतिमान होना।

७ घूमना, मडराना।

उ०—१ रहियौ रवि कौतिग ताण रत्थ, सिव सुरा कोडि तेतीस सत्थ। अपच्छर विवाण ऊपरि वहत, हुय औसर नारद हड हडत।
—गु रू व.

उ०—२ वहै क वाज पत्थ ए अकास मैं क रत्थ ए। सीरम साह नस्स है, विवाण उड्डिया वहै।
—गु रू व

८ आचरण करना।

उ०—रहणौ एकण रग, वहणौ वीरत ढग विच। सदा स्याम ध्रम सग, ताहरै अग 'प्रतापसी'।
—जैतदान बारहठ

९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चल पडना।

उ०—प्रचडै गोळै नाळ प्रचड, वहतै हैकपियो अहमड। जुडत सुरम अनै जिहगीर, तिडा किरि अवर उडै तीर।
—गु रू व.

१० गोली, तीर आदि का छूटना, निकलना।

११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन करना।

१२ कीर्ति या विरुद धारण करना।

१३ स्वाभिमान व अभिमान रखना।

उ०—नलै जाण्यू 'हू जीतीस सही, ए असम हारवा आव्यु अही। काहि 'भालण' 'अभिमान ज वहि, परि काल तणी गति को नवि लहि।
—नळाख्यान

१४ घुसना, धसना।

उ०—कह्यौ-'यूही'। यू कही नै राव बीजी कानी जोयौ। तरै लाडक राव नू पाछा सू झटको वाह्यौ। राव रै मोरै लागो। घणो वूहौ। सु राव लाडक नू गावड मू झालनै नीचै दियो।
—नैणसी

१५ कूप का पानी निकाला जाना।

उ०—जावता एकै जायगा अरहट वहतौ दीठो तेथ आया। आय अर घोडा पाया। घोडा रा मूह छाटिया। हाथ धोया। आल्या छाटी अर अमल कियो। पाणी पियो।
—नैणसी

[स वह्] १६ प्रचलित होना, फैलना।

१७ झरना, टपकना।

उ०—पटा वहत मद्द ऐं, (कि) धरा मैं जळद ऐं। नेजा बरक्क फव्व ऐं (सु) ताड ब्रिक्ख पव्व ऐं।
—गु रू. व

१८ खेत मे अनाज बोया जाना।

उ०—मुहारा रै खडीण रो उनाव जैसळमेर सू कोस ६ तथा ७ दिखण नू वडी ठोड कोस ५ माहै उनाव भरीजै। पासती रा आखरा री पाणी आवै। माहै गोहूँ मण ५००० बीज वहै तितरी भोग अखै। पाणी निठै जदी वेरा माहै २० तथा २५ बगायोडा, पाणी घणो मीठो
—नैणसी

[स वध] १९ शस्त्र प्रहार होना, आघात होना, वार होना।

उ०—१ वाहै खग 'केहर' रोस वघत, वकी खग 'केहर' सीस वहत। फिरै खळ गेहरिया जिम फाग, खिवै घण 'केहरिया' पर खाग।
—सू. प्र

उ०—२ सग्राम खडग्ग वाहत सनड्ढ, वपै पळ तड्ळ ऊखळ वड्ढ। वढै जरदैत जडाळ वहति, तुटत गडा किरि साब्रिण तति।
—गु रू व

२० वीर गति प्राप्त होना।

उ०—वारा दुहा अभिनमै वीरम, कायर नह जिम कीध किसा।

वहि दुरवेम दुरग कीयो वसि, दीन्हो वहियँ दुरवेसा।

—दूदो वारहठ

२१ उछलना।

उ०—विपरीत विस्सम घात, किरि वाण वज्जहे पात। वरजाग वूग वहति, किरि अगिग अस्टि हुवति। —गु रू. व.

२२ वध करना, मारना, समाप्त करना।

उ०—कुअर पयपै 'केहरि', करि मोसू रिणताळ। 'गोइद' हूतो साथि मो, मैं वूहो 'गोपाळ'। —गु रू. व.

उ०—२ ऊघम किर राळै घर अदर, वाग असोक लागडै वानर। दहुवै जुवा भडा खळ दहिया, वीरोचन अमर दळ वहिया।

—सू प्र.

उ०—३ केवी भरडै वाहि कटारी, केवी दिम उठियो कहे। वळै किणी रा पिता वहे तू, वळै किणी रा चचा वहे।

—राठौड भरडा वूडावत रो गीत

उ०—४ वळ थियो दित हरणाक्ष अप्रवळ, तेज मीहर घर रसातळ ताम। ब्रहम पुकार रघुपत करण मुख कहे। गरुडधुज विप धाम "गिड, प्रळय जळ मग गथ सुध पड। आण घरघर देत अणघट, विकट अर वहे। —र ज प्र

२३ प्रहार करना, वार करना, आघात करना।

२४ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन करना, धारण करना।

२५ धारण करना।

उ०—हु निज वीती हो वात सी दासव् जी, जाणउ छउ जिनराय। तारक विरुद हो वहियइ आपणो जी, वाह ग्रह्यानी लाज।

—वि. कु

२६ लाद कर ले जाना, ढोना।

उ०—करण्णराइ आपणी जीभइ घोडउ वाध्यउ, विक्रमादित्य काग खाधउ पुण अजरामर न हुउ, नलिराइ रसोइ पची, हरिस्चद चाडाल तणइ घरि पाणी वहयउ, पुरसरामि जननीवधु कीधउ।

—व स

वहणहार, हारो (हारी), वहणियो—वि०।

वहिओडो, वहियोडो, वहयोडो—भू० का० कृ०।

वहीजणो, वहीजबो—भाव वा०/कर्म वा०।

वहणो, वहवो, वहवणो, वहववो, वुवणो, वुववो, वूहणो, वुहवो, वूहणो, वूहवो, वे'णो वे'वो, वेवणो, वेववो, वॅ'णो, वॅ'वो, वॅवणो वॅववो, वॅहणो, वॅहवो, वहाणो, वहीवो, वहेणो, वहेवो, वे'णो, वे'वो, वॅ'णो, वॅ'वो, वॅवणो, वॅववो—रू० भे०।

वहत–स. पु [स वहत] १ यात्री।

२ बैल।

रू भे—वहत, वहत्त।

वहतिक—१ देखो 'वहित्रिक' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

देखो 'वोहित्त' (रू भे)

वहतीवाण–स पु—१ सीमा मे होकर चलने का महसूल।

उ०–बीकानेर रै देस था वहै तिणनूं रु० ॥।) देस मे वहतीवाण नूं लागै। घोडै १ दीठ रु० ४ वहतीवाण कारवान नै लागै सरब रु० १५००० री ठोड वरस १ री तुलावट विकरी। —नैणसी

२ देखो 'वँतियाण'।

वहत्तर, वहत्तरि—देखो 'वओतर' (रू भे)

उ०—पातिसाह अजमेर, आप आयो गुडि पक्खरि, सतरिखान खीटिया अनै उवरा (व) वहत्तरि। —गु रू व.

वहत्रक—देखो 'वहित्रिक' (रू भे)

वहद—देखो 'वेहद' (रू भे)

उ०—है वह हीयै सेल यारो हद, वहद खटकै पच वखत। लोह जसो दूखै नह लागो, अण लागो दूखै अखत। —सगराम सादू

वहन–स पु. [स.] १ ग्रहण करने या धारण करने की क्रिया या भाव

२ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी सम्भालने की क्रिया या भाव।

३ भार या वोझा लादकर लेजाने या ढोने की क्रिया।

४ सवारी।

५ नाव या वेडा।

६ ध्वजा।

७ खभे के नौ भागो मे से सब से नीचे वाला भाग (वास्तुकला)

८ देखो 'वह्नि' (रू भे) (ना डि को.)

९ देखो 'वहन' (रू भे.)

रू भे—वहण, वहन, वहण।

वहनट—देखो 'अहनट' (रू भे.)

वहनि, वहनी—१ देखो 'वहणी' (रू भे)

२ देखो 'वहन्य' (रू भे)

उ०—जिण नृप वहनि मुजाव कतजय। जेण सुजाव नरेस रणजय

—सू. प्र.

३ देखो 'वह्नि' (रू भे) (अ मा., ह ना मा.)

उ०—अडडाट नाद वैराट आज, घट्ट जाणि दूजो घडै। धरनाळ झाळ गोळा वहनि, प्रळै काळ छोळा पडै। —सू. प्र

वहनीसिरा—देखो 'वह्निसिख' (रू भे) (अ मा.)

वहन्न, वहन्नि—१ देखो 'वह्नि' (रू भे)

उ०—१ कपि जेम सुदिढ पड तीख वन्न। वाजिन्न जेम उन्हड

वहन्न । साहणाह दीवउ वाण साहि । मछळेसर चढियउ थट्ट माहि
—रा ज. सी.

उ०—२ केसरि कथिन्न साभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि । वीकाहर राजा ए वखाण, जाळोवळि सीतउ ग्रित्त जाण ।
—रा. ज सी

२ देखो 'वहन' (रू भे.)

वहन्य–स पु.—एक सूर्य वंशी राजा, जिसका पुराणों मे शुद्ध नाम वहि मिलता है । दूसरा नाम धर्मी भी मिलता है ।

ऊ०—जे सुत व्रहद भोज जगजाहर । व्रहदभोज सुत वहन्य श्रीतवर ।
—सू प्र.

रू. भे —वहनि, वहनी ।

वहम–स पु [अ] १ किसी प्रकार के अनिष्ट या हानि के प्रति मन मे उठने वाली निराधार कल्पना, सभावना या धारणा ।

२ भ्रम, भ्राति ।

३ शक, सदेह, शका ।

उ०—दरबार तौ आप रै माथै पूरा महरबान है । आप नै नाराजगी रौ फकत वहम है । आप निसक हौयनै किलै पधारौ ।
—अमरचूनडी

रू भे.—वहम, वेम, वे'म, वै'म ।

वहमी–वि [अ] १ वहम करने वाला, शक करने वाला ।

२ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला, शक्की मिजाज ।

रू. भे —वहमी, भहमी, वैमी ।

वहरणौ, वहरवौ—देखो 'वैरणौ, वैरवौ' (रू. भे)

उ०—मोरधुजी महाराज था जन सचा हर का । करवत हत्था वहर कै दिय सीस कवर का । —दुरगादत बारहठ

वहरणहार, हारौ (हारी), वहरणियौ—वि० ।

वहरिओडौ, वहरियोडौ, वहरयोडौ—भू० का० कृ० ।

वहरीजणौ, वहरीजवौ—कर्म वा० ।

वहरामसद–वि [फा वहरामद] धनाढ्य, सम्पन्न, भाग्यशाली ।

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै । —रा सा स

वहराडणौ, वहराडवौ—देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू भे)

उ०—पाधरै सेत भाराय री पाढियौ, माथ भूलाडियौ रुधर सूरा । पागडौ गगा वहराडियौ मीम पर, भोयण वहराडीयौ नहीं भूरा ।
बादरसिंह री गीत

वहराडणहार हारौ (हारी), वहराडणियौ—वि० ।

वहराडिओडौ, वहराडीयोडौ, वहराडयोडौ—भू० का० कृ० ।

वहराडीजणौ, वहराडीजवौ—कर्म वा० ।

वहराडियोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वहराडियोडी)

वहराणौ, वहरावौ—देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू भे)

वहराणहार, हारौ (हारी), वहराणियौ—वि० ।

वहरायोडौ—भू० का० कृ० ।

वहराईजणौ वहराईजवौ —कर्म वा० ।

वहरायोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री, वहरायोडी)

वहरावणौ, वहरावबौ—देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू भे.)

वहरावणहार, हारौ (हारी), वहरावणियौ —वि० ।

वहराविओडौ, वहरावियोडौ, वहराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वहरावीजणौ, वहरावीजवौ—कर्म वा० ।

वहरावियोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वहरावियोडी)

वहरियोडौ—देखो 'वैरियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वहरियोडी)

वहरूपियौ—देखो 'वहुरूपियौ' (रू. भे)

वहळ, वहल—१ देखो 'वहल' (रू भे)

उ०—१ मोरी सइया ए, रुण झुण वहळ जुडायी —लो गी

उ०—२ पछै कलौ नादुल वहळ बैस नै गयौ ।
—राव चद्रसेण री वात

उ०—३ भरमल आप री तरफ री कपडौ वसत सारी मगाई, सो ऊठ वीस भरीया । दस वहला तयार कीवी । दस घोडा तयार किया इव कर इण री सखरी महुरत देख भार सभावण लागौ ।
—कुंवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वेहळ' (रू भे)

उ०—मडै सरट ललाटी जैमल, सथर गहर घु वेद ससार, वहळा सपत विपत वैरीया, सुज 'सुरताण' कळोधर सार ।
—भीमौ आसियौ

३ देखो 'वळद' (रू भे)

वहलवान—देखो 'वहलवान' (रू भे)

वहलि–स स्त्री —१ हाथी या घोडे को हाकने की छडी (उ. र)

२ देखो 'वहल' (अल्पा , रू भे)

३ देखो 'वहली' (रू. भे.)

वहलियौ—१ देखो 'वळद' (अल्पा , रू भे)

उ०—मोटी, हासल छोटी दीधी छै ओर गाएं पेरएं दासदासी नै रोजगार रथ नै वहलिया ऐ समाचार छै । —जगदेव पवार री वात

२ देखो 'वह्लियो' (रू भे)

वह्ली—स स्त्री, [स. वह्ला] १ बडी इलायची।

[सं. वहल'] २ ऊख विशेष।

रू. भे.—वहलि।

३ देखो 'वहल' (अल्पा, रू भे)

वह्व – देखो 'वहू' (रू भे)

उ०—रामापीर ऊगी रुणेचा रे माहि मागू पूत रलो री जोड कुळ मे वह्वा री जाजी झूलगी —रामदेवजी तुवर री गीत

वह्वारियो—देखो 'व्यवहारीयो' (अल्प, रू भे)

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वह्वारिया सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू वसं छै। —रा सा. स

वहाडणो, वहाडबो – देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू भे)

उ०—आहवि वाहि वहाड़ि असिस्मर, महाराज ले जाज्यो मधुकर। —वचनिका

वहाडणहार, हारो (हारी), वहाडणियो—वि०।

वहाडिग्रोडो, वहाडियोडो, वहाड्योडो—भू० का० कृ०।

वहाडीजणो, वहाडीजबो—कर्म वा०।

वहाडियोडो—देखो 'वहायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वहाडियोडी)

वहाणो, वहाबो–क्रि. स. ['वहणो' क्रिया का प्रे रू] १ कही जाने के लिये प्रेरित करना, भेजना, गमन कराना, चलाना।

२ द्रव पदार्थ या पानी को धारा के रूप मे बहाना, प्रवाहित करना।

३ उक्त धारा मे बहाना, प्रवाहित करना, तिराना।

उ०— तठै समुद्र माहे पैठा। पैस अर एक वडो पाटलो तिण ऊपर भाणेज नूं वैसाण अर पाटलानू धकाय अर वहतै पाणी माहे वहाय दियो। —नैणसी

४ भटकाना, घूमाना।

५ गतिमान करना, गति देना।

६ घूमाना, टहलाना।

७ आचरण कराना।

८ अलग हटाना, दूर कराना।

९ शस्त्र प्रहार कराना, आघात कराना, वार कराना।

१० वध कराना, मरवाना, वीर गति प्राप्त कराना।

११ उछालना।

१२ प्रचलित कराना।

१३ टपकाना, भरवाना।

१४ खेत मे अनाज वोग्राना, वोवाई कराना।

१५ किसी उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी को वहन कराना, धारण कराना, जिम्मेदारी डालना।

१६ लदवा कर ले जाना, ढोवाना।

१७ शपथ दिलवाना।

वहाणहार, हारो (हारी), वहाणियो—वि०।

वहायोडो—भू० का० कृ०।

वहाईजणो, वहाईजबो—कर्म वा०।

वहाडणो, वहाडबो, वहाणो, वहाबो, वहावणो, वहावबो, वुवाणो, वुवाबो, वुहाणो, वुहाबो, वूहाणो, वूहाबो, वंवाणो, वंवाबो,वहाडणो, वहाडबो, वहावणो, वहाववो—रू० भे०।

वहानो—देखो 'वहानो' (रू. भे)

वहायोडो–भू का कृ—१ कही जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, चलने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ २ वहाया हुआ, प्रवाहित किया हुआ ३ भटकाया हुआ. ४ गतिमान किया हुआ. ५ घुमाया या टहलाया हुआ ६ अलग हटाया हुआ, दूर किया हुआ ७ शस्त्र प्रहार कराया हुआ, आघात या वार कराया हुआ. ८ वध कराया हुआ, मरवाया हुआ. ९ उछाला हुआ. १० प्रचलित कराया हुआ. ११ टपकाया हुआ, भरवाया हुआ. १२ वोवाई कराया हुआ, वोवाया हुआ. १३ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन कराया हुआ, धारण कराया हुआ १४ भरवाया हुआ (स्त्री वहायोडी)

वहार—देखो 'वहार' (रू भे)

उ०—मिळी सहेली महल मे, वणी किसीक वहार। चुतर सरद रो चद्रमा, नवल चानणी नार। —र हमीर

वहाळो—देखो 'वाळो' (रू भे)

वहालो—देखो 'वालो' (रू. भे.)

(स्त्री. वहाली)

वहाव—देखो 'वहाव' (रू. भे)

वहावणो वहावबो—देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू भे)

वहावणहार हारो (हारी), वहावणियो—वि०।

वहाविग्रोडो, वहावियोडो, वहाव्योडो—भू० का० कृ०।

वहावीजणो वहावीजबो—कर्म वा०।

वहावियोडो—देखो 'वहायोडो' (रू भे)

(स्त्री वहावियोडी)

वहिंचणो, वहिंचबो—देखो 'वंचणो, वंचबो' (रू भे)

उ०—जाइ उगै तळाव पर घोडा वहिंचिया।

—डूगरै वळोच री वात

वहिचियोडौ—देखो 'वंचियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वहिचियोडी)

वहि—देखो 'वही' (रू भे)

वहिड-वि [स व्यूढ] १ फैला हुआ, चौडा, प्रशस्त। (उ. र.)

२ वृद्धि को प्राप्त। („)

३ वृद्ध, बूढा। („)

४ दृढ, मदमत्त। („)

५ विवाहित। („)

वहिचणौ, वहिचवौ—देखो 'वंचणौ, वंचवौ' (रू भे)

उ०—ताहरा विजो वोलीयो जी हालो आधो आध वहिच लेस्या।
—चौवोली

वहिचियोडौ—देखो 'वंचियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वहिचियोडी)

वहिण—देखो 'वहन' (रू. भे)

वहिणि—देखो 'वाहनि' (रू. भे)

२ देखो 'वहन' (रू भे)

वहितिक, वहित्र, वहित्रक, वहित्रिक-सं स्त्री [स. वहित्रक] १ नाव, जहाज। (ह. ना. मा)

२ बेडा, पोत।

रू भे—वहित्र, वहतिक, वहत्रक।

वहित्थ-स. पु [स वाहित्थ] हाथी का मस्तक।

उ०—जिरै वहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर व्हे। भिरै भटाळि भाळ में, भिगार भूर-भूर व्है। —ऊ का

वहित्री-स. पु—नगर का चौहटा। (सभा)

वहिन—१ देखो 'वहि' (रू भे)

२ देखो 'वहन' (रू भे)

वहिनमुग—देखो 'वहिनमुग' (रू.भे.) (अ. मा)

वहिनी-सं. स्त्री [स. वहिनी] १ नाव, नौका।

२ बेडा, पोत।

३ देखो 'वाहनी' (रू. भे)

४ देखो 'वहन' (रू भे.)

५ देखो 'वति' (रू भे)

वहिया-स. पु—पवार वश की एक शाखा।

(बा दा. ख्यात)

वहियोडौ-भू का कृ. (स्त्री वहियोडी) १ चलकर कहीं गया हुआ, गमन किया हुआ, चला हुआ, किसी की ओर निरन्तर चला हुआ। २ मार्ग मे होकर गुजरा हुआ, निकट से होकर चला हुआ ३ द्रव पदार्थ या पानी का धारा के रूप मे वहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ ४ उक्त प्रकार की धारा के साथ वहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ ५ इधर-उधर घूमा हुआ, भटका हुआ ६ गतिमान हुवा हुआ ७ घूमा हुआ, मडराया हुआ. ८ धारण किया हुआ ९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चला हुआ १० गोली, तीर आदि का छूटा हुआ, निकला हुआ ११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन किया हुआ १२ कीर्ति या विरुद धारण किया हुआ १३ स्वाभिमान व अभिमान रखा हुआ १४ घुसा हुआ, धसा हुआ. १५ प्रचलित हुवा हुआ, फैला हुआ १६ झरा हुआ, टपका हुआ. १७ खेत मे अनाज वोया हुआ १८ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ, आघात हुवा हुआ, वार हुवा हुआ १९ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ. २० उछला हुआ २१ वध किया हुआ, मारा हुआ, समाप्त किया हुआ २२ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ, आघात किया हुआ. २३ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन किया हुआ, धारण किया हुआ २४ धारण किया हुआ २५ लाद कर ले जाया हुआ, ढोया हुआ.

वहिरग-स पु [स] १ अतरग का विपर्याय, उल्टा।

२ शरीर का वाहरी भाग।

वि—१ ऊपर-ऊपर का, वाहर का।

२ अनावश्यक, फालतू।

वहिरणौ, वहिरवौ—देखो 'वैरणौ, वैरवौ' (रू भे)

उ०—थानक, नित्य पिंड कलाल री पाणी वहिरणौ आदि छोड, नवो साधपणो पचख्यो, पिण सरधा तो वाहीज पुन री।

—भि. द्र

वहिरलापिका-स स्त्री [स वहिर्लापिका] वह प्रश्न या टेढा वाक्य जिसका श्रोताओ से उत्तर पूछा जाय, पहेली समस्या।

वहिराणौ, वहिरावौ—देखो 'वैराणौ, वैराणौ' (रू भे)

वहिराणहार, हारो (हारी), वहिराणियो—वि०।

वहिरायोडौ—भू० का० कृ०।

वहिराईजणौ, वहिराईजवौ—कर्म वा०।

वहिरायोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू भे)

उ०—वहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो, अनुकपा कीधी रे च्यारे अगना रे लो। धन धन तु प्रिय गुण निधान जो मुनि पडिलाभ्या वस्त्र सुचगना रे लो।
—वि कु

वहिरावियोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वहिरावियोडी)

वहिरउ—देखो 'वहरौ' (रू भे)

उ०—वज्जिय ए तूर गभीर अरव वहिरिउ पडिरमन। नाचहि ए धवलिय वाल, रजिय सुर वयला गेहि। —श्रीधम्म कलस मुनि।

वहिरमाण-स. पु.—महादि देह क्षेत्र के तीर्थंकर ।

उ०—वहिरमाण स्रीमघर स्वामि, सीघा वि ग्राव्यउ सिर नामी ।
—ऐ. जै का. स

वहिरौ—देखो 'वहरौ' (रू. भे.)

वहिल—१ देखो 'वहल' (रू.भे)

उ०—१ तठा उपरात करि नै राजान कुमार री जान घणं आडवर सूं हाथी घोडा वहिल सुग्वासण रथ पायक रा वणाव किया थका वघेल जानिया रै साथ लिया घणं मोती जडाव जरकसी सूं लडालब हुआ छै। —रा सा. स

उ०—२ तहरा भींवौ भळका लेनै हालियो । भरमल पासै आयो अर कह्यौ-थानै वाघोजी वोलावै छै। तद सहिनाण लेनै वहिल चढ़ि चाली । —ऊमादे भटियाणी री वात

उ०—३ ताहरा साहूकार हूआ वडो लवेस करि थाहे रंस करि वहिल उठ त्यार करि । कपडो ले नै चालीया। —चोवोली

२ देखो 'वैल' (रू भे)

वहिलउ, वहिलु—देखो वहिलौ' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण । तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण विन लाल कमाण । —ढो. मा.

उ०—२ राइ कागल मोकलिउ, माधव वहिलु आवि । जिम जाणइ तिम तुं करइ, तेणि सदनि सिघावि । —मा का प्र

वहिळौ वहिलौ-क्रि वि [प्रा वहिल्ल] (स्त्री वहिली) १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—१ रुनी रने चढेह, जाताही जोयौ नही । वहिला वळण करेह, जुग जीवूं जी जेठवा। —जेठवौ

उ०—२ माघव वहिला आवज्यो, हु जोऊ थरि वाट । फल दल जल अग्नि घरू, भूमि सयन नही खाट । मा का प्र

उ०—३ किसं जवानं करं प्रघट दाखियो पहिलो । दंत भणं अकरूर विसन ना त्याव वहिलो —पी ग्र

उ०—४ मम ढील करो हल वार म लावो, वेग चढो वहिळा वहिळा । —गु रू व

२ पहले, पूर्व।

उ०—खट-दस-वीस वस खत्रिया गुरु, खट दरसण आचार खरो । वाखाणं ऊगा दिन वहिलो, हरि पहिला किलियाणहरो ।
महाराजा करणसिंह रो गीत

वि—१ उदार, दानी।

२ प्यारा, प्रिय ।

३ विरला ।

रू भे—वहिलउ, वहिलु, वहीलौ, वहेलो ।

वहिल्ल—१ देखो 'वैल' (रू भे)

उ०—उदर दर खण मरै पैस भोगवै भुवगह । हल वहि मरै वहिल्ल, हरी जव चरै तुरगह । —नैणसी

२ देखो 'बहल' (रू भे)

वहिस-अव्य—१ अच्छे समय पर ।

उ०—प्रथम दुतिय चवथे पदें, मोहरा वहिस मिळत । रह अमेल पद तीसरो, जो झड लुपत झिलत । —र. रू.

२ देखो वहिस' (रू भे.)

वहीं-अव्य [राज. वह] १ उसी स्थान या जगह पर ।

२ उसी बिंदु स्थान, समय या स्थिति पर।

३ उसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के प्रति ।

रू. भे—वहि, वही ।

स स्त्री [स वयस्] आयु-उम्र ।

उ०—दूत हकीकत कहै छै, जु राजान कुंअर ऊठती वही री जुवांन आजानवाह राज हस लीलग छै। —रा सा. स.

वही-सर्व [राज, वह] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति निश्चित रूप से संकेत करने वाला सर्वनाम।

उ०—करहा पीपल पान चर, आगं मरसि भूख। जासा उणहीज देसडे, वे फळ वहीज रूख । —ढो. मा.

रू. भे—वहि, वाहि, वाही।

२ देखो 'वही' (रू भे.)

३ देखो 'वही' (रू भे)

उ०—तव गोतम आव्या तिहा वही, लोक सहु हरस्या गह गही ।
—स्रीपालरास

वहीण—देखो 'विहीन' (रू भे)

उ०—म्यारा़जी ये मुरघरा, वालम जाय वसाह । आप वहीणी एक दन, जीवै नही 'जसाह' । —मयाराम दरजी री बात

(स्त्री वहीणी)

वहीणो, वहीवौ—देखो 'वहणो, वहवौ' (रू भे) (उ. र.)

वहीर-स पु—१ प्रस्थान, गमन, प्रयाण, कूच ।

उ०—१ अरु गढ मैं आदमी हजार दोय हा सूं खरच घणो, सु जोइया नूं तया दूजै माथनू तो घरनूं वहीर कर दीना वा गढ मे भाटी आदमी पाच सो रया । —द. दा

उ०—२ ताहरा विसनदास फोज ले अर वहीर हुवो। —नैणसी

२ सदा साथ रहने वाले नोकर, अनुचर, परिजन ।

उ०—बेटो खान इनात रो, गढ सू थयो तगीर । चाली महमद बेग री, दिल्ली दिना वहीर । —रा. रू

३ कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार।

उ०—गोकुळ हूत गयौ ज्यूं गिरधर, ऊभा छोड अहीरा। 'सगता' जेम गयौ सग सासू, वार्स छोड वहीरा। —बुधजी आसियौ

४ सेना।

उ०—१ वहती इसी पथि ओपै वहीर, नदी हेम थी ले चली जाणि नीर। कतारा कठठ्ठे चलै जूग काळा, वहै वादळा जाणि भाद्रव्व-वाळा। —वचनिका

उ०—२ वह रहि हिलै वहीर, पाइक ओठक पडतळा। मिळवा फिर चाली महण, नवसै नदि ले नीर। —वचनिका

उ०—३ एकणी नगारै थाट एम। हल्ले वहीर जिम सलित हेम। —सू. प्र

रू भे.—बहिर, बहीर, वईअर, वईयर, वईर।

वहीलौ—देखो 'वहिलौ' (रू भे)

वहीवेस—स स्त्री [स वय-वयस्] १ युवावस्था, जवानी।

उ०—तिण सू स्रीमाजी साहिब, हुकम करो तौ पातिसाहा री उळग करू। इण वहीवेस माहे सारौ विवहार छै। —जखडा मुखडा भाटी री वात

[स वह्+वयस्] २ अस्थाई अवस्था, वीतने योग्य उम्र।

वहु—देखो 'वहू' (रू भे)

वहुअड—देखो 'वहू' (मह, रू. भे)

वहुअर—देखो 'वहू (मह, रू भे)

वहुअडी—देखो 'वहू' (अल्पा, रू भे)

वहुआरी—देखो 'वहू' (अल्पा., रू भे)

वहुवदोळौ—देखो 'बहुवदोळौ' (रू भे)

वहुरात—देखो 'बहुरात' (रू भे)

वहुरावणौ, वहुरावबौ—देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू भे)

उ०—गुरु देखी हरसित थया, वहुराव्यौ पुन रतन। धरम लाभ गुरु तव दीये, करजौ पुन्न जतन। —कवियण

वहुरावियोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वहुरावियोडी)

वहुव—देखो 'वहू' (रू. भे)

वहुअड, वहुअर, वहुवड, वहुवर—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

उ०—१ आयौ आयौ अे वहुअड फागण मास, वहुअड फागण मास घर-घर होय रयौ नीपणौ अे। —लो गी

उ०—२ नीपौ नीपौ अे वहुअड चाकडली री चूळ, वहुअड चाकडली री चूळ नीपौ चूलौ वेवणी —लो गी

उ०—३ माय कहै वहुअर सहित, जीवौ कोडि वरीस। अविचल जोडी तुम्ह तणी, इम दीधी आसीस। —स्रीपालरास

उ०—४ हे चार चतर, मिळ म्हारी जच्चा राणी ने, हे किस वहुघड किस धीय। —लो. गी

वहूवासौ—देखो 'बहुवासौ' (रू भे)

वहू—देखो 'वहू' (रू भे.)

उ०—१ वहू च्यार पगा लगै जेण वारै। सुमत्रा अनै केकई कोमल्या रै। —सू प्र

उ०—२ कद हू कवी कुमारडी, कद्दि नै कदि परणेसि। वद हू वाजिद कोटडै, वीजा वहू कहेसि। —सयणी री वात

वहूअर—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

उ०—जीवडलु जाया करइ, जोई जोई जठ। वेदन वीनवीइ किमी, हू वहूअर तू जेठ। —मा का प्र.

वहूदक—स. पु [स] चार प्रकार के सन्यासियो मे से एक।

वहूवदोळौ—देखो 'बहुवदोळौ' (रू भे)

वहूरात—देखो 'बहुरात' (रू भे)

वहूवत—देखो 'वधूवत' (रू भे.) (उ र)

वहेडौ—देखो 'वे'डौ' (रू. भे)

उ०—हरड वहेडा आवळा, घी-शक्कर मे खाय। हाथी दावै खाख मे साठ कोस ले जाय। —अज्ञात

वहेणौ, वहेवौ—देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू भे)

उ०—सुदरि मो सारउ नही, कुअर वहेसी मग्ग। साहिब चित्त उपाडियउ, जिम केकाणा वग्ग। —ढो. मा

वहेलौ—देखो 'वहिलौ' (रू भे)

उ०—विहाणे नवे नाथ जागो वहेला, हुवा दोडिवा वेन गोवाळ हेला। —नागदमण

वहौ—देखो 'बहुत' (रू भे.)

उ०—बुधवत वहौ कथ साच कहौ, सुण लीध सहौ ग्रह पथ गहौ। —र रू

वहौत्तर—देखो 'वओत्तर' (रू भे)

उ०—देवळ एक खभ दोइ जाके, पाच भाति रग दीया। दस दरवार वहौत्तर छाजा, गळी गाव 'वहौ' कीया। —ह पु वा

वहौत—देखो 'बहुत' (रू भे)

उ०—वहौत जतन करि वाणिक वाण्या, ऊपरि कळस चढाया। ए दोइ रतन उजागर दीसै, वहौत भाति सूं लाया। —ह पु वा

वहौडि, वहौडी—देखो 'वहुरि' (रू भे)

उ०—माया तजि भजि नाव निरजन, जीवन अजली नीर। यहु औसर भी वहौडि न लाभै, जम का काटि जजीर। —ह. पु. वा.

वह्नि-स. स्त्री. [स] १ अग्नि, आग।

उ०—त्रिभुवन माहे ए जिन तारण, वारण दुख वन वह्नि जी।
—ध. व ग्र

२ अन्न को पचाने की शक्ति, पाचन-शक्ति।

३ भूख।

४ चिता।

५ सवारी।

स पु —६ राम की सेना का एक बन्दर।

रू. भे —वहन, वहनि, वहनी, वहिन, वहिनी।

वह्निकर-वि [स] १ जलाने वाला।

२ भूख बढाने वाला।

३ आग पैदा करने वाला।

स स्त्री.—१ विद्युत, बिजली।

२ चकमक।

३ पथरी।

वह्निबीज-स पु [स] १ सोना, स्वर्ण।

२ नीबू।

वह्निमुख-स पु. [स.] देवता।

रू भे —वह्निनिमुख।

वह्निसिख-स स्त्री [स] १ केसर। (ना मा)

२ कुसुंम।

[स वह्नि—सख] ३ पवन, हवा।

रू भे —वनीसिख, वहनीसिख।

वह्व—देखो 'वहू' (रू. भे)

उ०—जितरै साह री वह्व घर मे आयी।
—राजाभोज अर खापरा चोर री वात

वां-सर्व —१ उन।

उ०—१ काट जिका कुळ ऊवटै, आठ वाट इतफाक। वा सवळा ही पुरसडा, वैरी गिणै वराक।
—वा दा

उ०—२ ज्यारी जीभ न ऊपडै, सेणा माही सेत। वा रा कर किम ऊपडै, खळा घिरघा विच खेत।
—वा दा.

उ०—३ लाखो वां असवारा माहै हुय नै भुज आयो।
—नैणसी

२ उन्होने।

उ०—१ कैरव ज्यूं आया कमध, पाडव ज्यूं पतिसाह। वां हरि नाम उचारियो, वां रहिमाण अलाह।
—वचनिका

उ०—२ नारायण री नाम ज्यां, नह लीधौ निरणाह। वां जमवारौ वोळियो, ज्यूं जगळ हिरणाह।
—हरिरस

अव्य —५ वहा, उस जगह।

रू भे —वा।

वाइटौ-स. पु [स वात-घटो] १ शरीर मे वात-विकार के कारण होने वाली ऐंठन या शून्यता।

२ पेचिस आदि के कारण पेट में होने वाली ऐंठन या मरोड।

रू भे —वाइटो, वाईटो, वायटो, वाइंटो, वाइंटो, वाईंटो, वाईंटो।

वाई-स स्त्री. [स वायी] १ सर्प का विल।

२ खाट के पैताने की ओर आडा वाधा जाने वाला मोटा वधन जो खाट की बुनाई व वदावन का आधार होता है।

वि वि —यह रस्सी खाट बुनने वाली मूज की बनती है। मूज को पाच-सात बार आडी लपेट कर उस पर चिथडे लपेट दिये जाते हैं जिससे यह एक मोटे रस्से के समान हो जाती है।

रू भे —वाई, माई, म्याई।

३ करधनी।

वांईटौ—देखो 'वाइटौ' (रू भे)

उ०—उण नै बूगी आयगी। डील थर थर धूजण लागो। मासी है जठै ई हेटै गुडगी। हाथा पगा वाईटा आवण लागा। —फुलवाडी

वांक—देखो 'वाक' (रू भे)

उ०—१ रज्जब पारस परस कै, मिटगो लोह विकार। तीन वात तो ना मिटी, वाक धार अरु मार।
—सतकवि रज्जब

उ०—२ आप वस्तुआ नू तयार कर ऊट पर घाल गगाजळी पाणी री एक हाने घाली। वाक एरू पताकै बाघी।
—साह रामदत्त री वारता

उ०—३ आदित्य आदि ज विम्बनी, ऊघाडण ए आक। थाकिइ अघ उलूक तु, सूरि जनु स्यु वांक।
—मा का प्र

उ०—४ तूं रूठइ थइ आपदा पूज जी, राय थका करइ राक। मेर थका सरसव करइ पूज जी, वाका काढइ वाक।
—स कु

वाकउ—देखो 'वाको' (रू भे) (उ र)

देखो 'वाक' (मह, रू भे)

वाकड—देखो 'वाको' (मह, रू भे)

उ०—घरि वडठा हो आविस्यइ, लाखे लिया लडग। तिणि मइ लेस्या टाळिमा, वाकड मुहा विडग।
—ढो. मा

(स्त्री. वाकी)

वाकटलौ—देखो 'वाको' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री वाकटली)

वाकटो—१ देखो 'वाको' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ भुग्र मजोडे दीपे वाकडो कवाण नै जोपै हो। माही-माही न छीपै ते भान विमान ममीपै हो।
—वि. गु

उ०—२ कमघजिबा लैरा भाला ली । मोहीं मोहीं वांकडी तरं सु । —रसीलै राज री गीत

२ देखो 'वाकडी' (रू भे)

३ देखो 'वाकली' (रू भे)

वांकड़ीनाळ, वाकडीनाळी—देखो 'वाकली' (रू भे)

वाकडौ—१ देखो 'वाकौ' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ वांकडा कमघ वीर, साकडा आया सघीर । ताम सोढि देखि ताव, पालटै कुरग पाव । —सू. प्र.

उ०—२ परवाणी पतसाह री, लिख मूकं मेलाण । इण गढ हिंदू वाकडौ, कर ग्रहिया केवाण । —नैणसी

उ०—३ दगै तोफा वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जो लार सकै सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ वाकडौ बीटियौ दूजा गढा भोळै, लोहा जाळ घसै कही नसैणी लगाय । —वा दा.

उ०—४ वारु थई विवहारीउ, वाहणि घोडा साथ । पूरण पुहुँचा-लगि भरिउ, वेढि वाकडा हाथि । —मा का प्र.

उ०—५ कडियें कटारो घरमी रे वाकडौ, सोरठडी तरवार ओ । —लो गी.

(स्त्री वाकडी)

२ देखो 'बाकडौ' (रू भे)

वाकम, वांकमि—देखो 'वाकम' (रू भे)

उ०—१ तेज तरह वांकम तोखारा, घर वाकम पाघर कर घूत । अग वाकम रग छै 'ऊदाणी', रग वाकम वाका रजपूत । —जोरावर सिंह ऊदावत री गीत

उ०—२ सखी अमीणी साहिबी, वाकम सूं भरियोह । रण विकसै रितुराज मैं, ज्यू तरवर हरियोह । —वा दा

उ०—३ राजीवाई राव आय नैडी ऊतरियौ । करा भाल केवाण वीद वाकम वळ भरियौ । —द दा

उ०—४ ऊचा जोर अकास हू, पहला अप्रमाण । वाकम जोर मरोर अग, एहे अहिनाण । —गजउद्धार

वाकल-स. स्त्री —देखो 'वाकल' (रू भे)

उ०—राय आगण चौपड रमौ, महिला सरब सुदाह । रखसी वांकल राज री, चूडी अमर सदाह । —पा प्र

३ देखो 'वाक' (मह, रू भे)

वाकस—देखो 'वाक' (रू भे)

उ०—कुचा दर फावै अलका री वाकस । —र हमीर

वाकिम, वाकिम्म—देखो 'वाकम' (रू भे)

उ०—१ नर नरिंद अणनिंद, विंद वाकिम्म वीरवर । सुत सुरिंद हरचद, कद काढण केवी हर । —गु. रू. ब.

उ०—१ 'ऊदो' 'अनो' विकट ऊदावत, जोड मोड दळ विन्है जगावत । 'रतन' जगावत वाकिम राती, 'रामै सुभावत मेळ अराती । —रा. रू.

वांकियौ—१ रथाग विशेष ।

उ०—जूं सहरी अ्रूह नयण अग जूता, विसहर रामि कि अलक वक्र । वाळी किरि वाकिया विराजै, चद रथी ताटक, चक्र । —वेलि

२ देखो 'वाकियौ' (रू भे)

३ देखो 'वाक' (अल्पा, रू भे.)

वाको—देखो 'वाकौ' (रू. भे.)

उ०—खरगो, लुद्रवा कनै । घोडा, घ्राव, वडी वाको ठोड, मुहारा दिसी जैसळमेर था कोस १६, खडाळ मे । —नैणसी

वाकु—देखो 'वाकौ' (रू भे) (उ र)

उ०—बल नी वामा बोलि भरम, वाकु छि अति मन नु घरम । मनि मांनु ते मानुम देव, जे पणि लखिणु करम निखेव । —नळाख्यान

(स्त्री वाकी)

वाकौ—देखो 'वाकौ' (रू भे)

उ०—१ सोहिली भोमि वाक सुभट्ट । झूझार दियइ करिमाळ झट्ट । —रा ज सी

उ०—२ 'वीकै' दुरग थापियौ वाकौ । काटा सरण उवेळ करो । —महाराजा करणसिंह

उ०—३ फूलांरा चोस पैहरिया थका टोय अणियाळा काजळ ठासिया थका वाका नैणारी भोक नाखती पायलै रै ठमकै सू घूघरै रै घमकै सू बिछीया रै छमकै सू रमझोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती बाजारि चाली जाय छै । —रा. सा स

उ०—४ दुरजन जे वाका हता, नार कीया ते जेरी रे । जिम अगपति नै आगलो, न सकै गयवर फेरी रे । —वि कु

उ०—५ तूं रूकउ घइ आपदा पूजजी, राय थका करइ राक । मेर थका सरसव करइ पूजजी, वाका काढइ वाक । —स. कु.

(स्त्री. वाकी)

वाग—देखो 'वाग' (रू भे)

वागड-वि —वीर, बहादुर ।

उ०—अवळा रै आगेह, कासूं सबळा पण करै । वांगड जद वागेह केवा लै खीची कनै । —पा. प्र.

रू भे —वागड ।

वांगण-स पु. [सं. अवाञ्जन] १ वह स्निग्ध पदार्थ जो गाडी या रहट को आसानी से घूमने के लिये चक्रो की धुरी मे लगाया जाता है।

२ उक्त पदार्थ लगाकर वागने की क्रिया या भाव।

वागणो, वागवो-क्रि. स. [स अवाञ्जनम्] १ गाडी या रहट के चक्रो की धुरी में स्निग्ध पदार्थ (ग्रीस आदि) लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाना।

२ पीटना, मारना।

३ सभोग करना, मैथुन करना। (बाजारू)

४ गमन करना।

वांगणहार, हारौ (हारी), वागणियौ—वि०।
वांगिग्रोडो, वागियोडो, वाग्योडो—भू० का० कृ०।
वागीजणो, वागीजवौ—कर्म वा०।
बांगणौ, वागवौ—रू० भे०।

वागरी-स. स्त्री —एक प्रकार की घास।

वांगळी-स. स्त्री —१ रेगिस्तान के मैदान मे धूल पर पडने वाली लहरें।

२ पानी जाने की छोटी नाली।

वागळी—देखो 'वाघळी' (रू भे)

उ०—चोळ चख कीया घरण बोळ पजा चढत, भुज अटत आभ खळ घटत भाळी। वाहरु रसा री फतै कर वावडे, वांगळी सीह 'वगतेस' वाळी। —मेगराज आढो

वागियोडी-भू का कृ—१ सभोग की हुई, मैथुन की हुई (स्त्री)

२ ग्रीसादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाई हुई (गाडी)

वांगियोड़ो-भू का कृ—१ ग्रीस आदि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाया हुआ। (रथ, रहट)

२ पीटा हुआ, मारा हुआ।

३ गमन किया हुआ।

(स्त्री वागियोडी)

वांगो-स पु—१ प्रवाह, गति, चाल।

२ पानी वहने की गति।

३ पानी के वहने से भूमि पर पडने वाले चिन्ह।

४ प्रथा, परपरा।

वाघळौ—देखो 'वाघळौ' (रू भे)

वांचणो, वांचवौ—१ देखो 'वाचणो, वाचवौ' (रू भे)

उ०—१ जिए वार्चं उच्छव न्रप जाएं। आरभ समर करण घरा आएं। —सू प्र

उ०—२ सदेसा मति मोकळउ, प्रीतम तू आवेस। आगलडी ही गळि गया, नयण न वांचण देस। —ढो. मा.

उ०—३ गीता री पाठ होवतौ। आनमा परमातमा एक है री चरचा चालती। रामायण वाचीजती। सगळं पूछ्ण आवता पण टुणटुणी वजाय' र टरकत। —वरसगाठ

२ देखो 'वाछणौ, वाछवौ' (रू भे)

वाचणहार, हारौ (हारी), वांचणियौ—वि०।
वाचिग्रोडो वाचियोडो, वाच्योडो—भू० का० कृ०।
वाचीजणो, वांचीजवौ—कर्म वा०।

वाचियोडो—१ देखो 'वाचियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'वाछियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वाचियोडी)

वाञ्छित—देखो 'वाछित' (रू भे.)

वाछक-वि [सं.] इच्छा, अभिलापा या चाह करने वाला।

उ०—विधि वतावै छै मूआ इहै पाठक वकता हुआै। मारस छै स रस वाछक छै। —वेलि टी.

वांछणो, वांछवो-क्रि. स [स. वाछनम्] १ चाहना, इच्छा करना, अभिलापा करना। (उ. र)

उ०—१ चित सू आगम चितवै, आ मजवूत उपाध। 'वंक' जुहै नही वांछियो, इण कारण है आध। —वा. दा

उ०—२ मनुस्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवै छै। अर रूखा की छाह वाछै छै। —वेलि टी.

उ०—३ जिह घडी नै घणु वाछता था घणा दिन लगै। सु घडी आण मिळी। —वेलि टी.

उ०—४ सध्या को समय हुआै छै। क्रस्णजी रति वाछै छै। —वेलि टी

२ जिज्ञासा करना।

३ प्रेम करना।

वाछणहार, हारौ (हारी), वाछणियौ—वि०।
वाछिग्रोडो, वाछियोडो, वाछ्योडो—भू० का० कृ०।
वाछीजणो, वांछीजवौ—कर्म वा०।
वाचणो, वाचवौ, वाछणो, वाछवौ, वाचणो, वाचवो—रू० भे०।

वाछना-सं स्त्री [स. वाछा] १ चाहना, चाह।

२ इच्छा, अभिलापा।

३ कामना।

४ जिज्ञासा।

रू भे.—वाछना, वछना।

वांछनीय-वि. [स] १ जिसकी इच्छा, चाहना या कामना की गई हो।

२ चाहने या इच्छा करने योग्य ।

वाछा-स स्त्री [स वाञ्छा] १ इच्छा, चाह ।

उ०—पछै वहु मोटी हुई सो या तौ काम री वाछा करै ।

—राजा रा गुर रा बेटा री वात

२ अभिलाषा ।

३ कामना ।

उ०—वर प्राप्ति हुआ वर की वाछा करै छै तिहि समय परमेसर रा गुण भणि जिकाई इच्छा उपनी छै । —वेलि टी.

४ जिज्ञासा ।

उ०—उवा कहीया म्हानु ही मिळण री वाछा हुतो आदनै मिळीया । —चौबोली

रू. भे.—वछ्या, वाछा, विछ्या ।

वांछित-वि [स.] चाहा हुआ, अभिलषित, इच्छित ।

उ०—१ वाछित वर पाया पाछै । आप माहै प्रीति राति दिन इसी उपजै । —वेलि टी.

उ०—२ आया साध न देवे उत्तर, वाछित वस्तु बतावै । कहै जेडी कर देवे हाजर, पद ऊचा जद पावै । —ऊ का

रू भे—वचत, वछित, वाछित, वचत, वछत, वछती, वछती, वछित, वाञ्छित ।

वाछियोडौ-भू का. कृ—१ चाहा हुआ २ इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ ३ कामना किया हुआ ४ जिज्ञासा किया हुआ. ५ प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री वांछियोडी)

वाझ—देखो 'वध्या' (रू भे)

उ०—१ दूहो टुपटी दाम, जोडघा सो ही जाणसी । ब्यावर-तणी विराम, वाझ न जाणै वीझरा । —वीझरा अहीर री वात

उ०—२ वांझा सू घर वास कर, कोई पुत्र खेलावै ।

—कैसोदास गाडण

वांझगाई, वाझगाय-स स्त्री [स वन्ध्या-गौ] वह गाय जो वध्या हो, जिसके प्रसव न होता हो । (उ र)

उ०—सेवै क्रपण सरदार, करै दलाली कोयला । हे काई लेवणहार, वाझगाय सू 'वसतिया' । —समेळजी वारहठ

वाझडी, वाझणी, वाझि, वाझिणी—देखो 'वध्या' (अल्पा., रू. भे)

उ०—विवेकी जुउ-जुउ वस्तु-स्वभाव, छते जोग जोवन वतीजी वाझणी न जणै वाल । मूछ नही महिला मुखेजी, करतल ऊगै न वाल । —वृ स्त

वाझीयौ—देखो 'वाझडो' (रू. भे)

उ०—नारी विन तू वांझीयौ । —धरम पत्र

वाट—देखो 'वट' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हुरदास कहै—एकै जोधपुर रा कासू दो वाट करा ?

—नैणसी

वाटणौ, वांटवौ—देखो 'वाटणौ, वांटवौ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—नूर सूर सम वदन निहावै, आपै मात रतन धन आवै । सहर गळी प्रत गळी सुहावै, गुळ वाटै प्रिय मगळ गावै । —रा. रू.

उ०—२ चोर च्यार ही डूंगर मे वाटण लागा । तनरे देहलगढ़ री धणी सकार रमतो आय नीसरियो ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ रुपीया पचास वडारण कनिया मगाय आप रै हाथ निछरावळ कर वडारण नूं सौंप फुरमायो 'परभात अतीत फकीर गरीब वाट दीजो । —कुंवरसी सांखला री वारता

वाटणहार हारो (हारी), वाटणियो—वि० ।

वांटिओडौ, वाटियोडौ, वाटयोडौ—भू० का० कृ० ।

वाटीजणो, वांटीजवौ—कर्म वा० ।

वांटियोडौ—देखो 'वाटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाटियोडी)

वांटौ—देखो 'वाटौ' (रू. भे.)

उ०—१ कटक्का मिळै मेखळा मेर कानै, खडा ऊमरा खान दीवाण खानै । विढेवा कियौ साहिजादौ विचार, अणि फौज वाटौ हुऔ अस्वार, । —गु रू. व.

उ०—२ करदंत ताकइ, त्रुटि फार अरिरिकार हाकइ, वांटै चडया योध ताकइ उसरइ, पइसरइ, तीह वीर तणा नाभिप्रमाण वहुल कूंच । —व. स.

उ०—३ सुजैते री वसी वगडी वीरमदेव रे वाटै में आन ।

—नैणसी

वाटयोडौ—देखो 'वाटियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वाटयोडी)

वाठ—१ ' ' ' '

उ०—द्रस्टि जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर, वाट जाणइ घोडा, स्त्री जाणइ मुह मुचकोडा, गारुडी जाणइ साप, मा जाणइ वाप, वणिग जाणइ माप, मन जाणइ पाप, मुख जाणइ मीठा, द्रस्टि जाणइ दीठा । —व स.

२ देखो 'वट' (रू भे.)

वाठि, वाठी—स स्त्री—अहकार, गर्व ।

उ०—गुरधम खोया गाठिस् तन सू रखै साठि । हरिया ऐसे पतित की, मिटै न मन की वाठि । —अनुभव वाणी

रू. भे—वाठि ।

वाड-स पु —खड, टुकडा।

उ०—नाराजीग्रारी झाट पडि नै रही छै। वगतरा ऊपरा तरवा-रीग्रा रा वाड ग्रूटि ने रहीग्रा छै। —रा सा. स

वाडणौ, वाडबौ–क्रि. स —देखो 'वाढणौ, वाढबौ' (रू भे)

उ०—उगै पग लगा जाणे भुजग डांडियो, सुग्ग रग चडियो स्रोण गारी। वार वरछी कही खळा विप वाडियो, व्रीनटी काडियो हाथ वारी। —महाराणा भीमसिंह रे भाला री गीत

वांडणहार, हारौ (हारी), वाडणियौ—वि०।

वाडिग्रोडौ, वाडियोडौ, वाड्योडौ—भू० का० कृ०।

वाडीजणौ, वाडीजबौ—कर्म वा०।

वाडियोडौ—देखो 'वाढियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वाडियोडी)

वांडौ, वाढौ–वि [स वड] २ अविवाहित।

उ०—कोई माई री लाल हुकारौ भरतौ तौ या तौ पेला पाघडी मागतौ अथवा लुगाई टावरा वाळा नै तौ राखण नै तैयार हो पण म्हारै जिसा वाडा फुतका नै नही। —रातवासौ

२ मूर्ख, वेवकूफ।

स. पु —१ अविवाहित व्यक्ति।

२ परिवारहीन व्यक्ति।

३ अपने परिवार से अलग दूर कही अकेला रहने वाला व्यक्ति।

रू भे.—वडौ, वाढौ।

मह., —वड।

वाण-स स्त्री [स. वाणि] १ वनावट, रचना।

२ मूर्ति।

स पु [स वाक्] ३ पडित, कवि।

उ०—वाण सराहै वाण, खाग सराहै समर खळ। मोज उभळ महराण, सारा है रघुवर सुकव। —र ज प्र

४ सिंह, शेर। (ना डि को)

[स यान] ५ गाडी।

६ वायुयान, विमान।

७ गाय-भैंस आदि मादा पशुओ का ऋतुमति होकर गर्भधारण करने योग्य होने की क्रिया।

क्रि प्र —आणौ

८ वुनावट मे काम आने वाली रस्सी, जेवरी।

उ०—पचरग दीया ढोलिया, पुतळी पागो जाण। सेझ सुहाली अति भली, रेसम वणीयौ वाण। —ढो मा

९ एक प्रकार का वात रोग विशेष।

क्रि. प्र —वहणौ।

१० देखो 'वाणी' (रू भे)

उ०—१ नाम है राम को, श्रोक आराम को। साच गधो कथा, वाण दूजी व्रथा। —र ज. प्र.

उ०—२ अनु आतुर चढियो 'अजन' रिम सुणि जाता राह। वांण नगारा ऊधरी, सारा धरी सनाह। —रा. रू

उ०—३ जग लोक वाण सीखै जवन, पढै ग्रहम मुन्न पारसी। हित देव सेव आघा हुआ, काई लग्गा आरसी। —रा रू

उ०—४ दिलीपति ढीली हुवो, पहुचै कोई न पाण। अचरिज आसगी न सकै, वोलै एहवी वांण। —प. च चौ

११ देखो 'वाण' (रू भे)

उ०—१ वडा पुरस री वाण, अदना री आदर करै। ओछा रा ऐलाण, चुभता वोलै चकरिया। —मोहन लाल साह

उ०—२ वाण्या थारी वाण, नर कोई जाणै नही। पाणी पीवै छाण, लोही अणछाण्यो पिवै। —अग्यात

उ०—३ प्यारा पान्नर पेम की, काइ ज पहिरि अगि। वयण खटक्कइ याण ज्यु, कोइ न लागइ अगि। —ढो मा.

वाणक, वाणक्क–स स्त्री —१ कांती, शोभा, दीप्ति, आभा।

उ०—१ वाणक दीठा ही वण आवै। —अग्यात

उ०—२ ओ मद हास किण नू न मोहै है, इण बत्तीसी री इमी वाणक है। इण आका गैई मोती माणक है, हसता फूल झडै है।

२ सुदरता, रूप, सौदर्य।

उ०—जिह वाणक्क कटारा, चपळ नयणी चद्राणणि। के कुरग लोचना, काम अक्खी केकाणी। —गु रू वं.

३ सूरत, शक्ल, आकृति, स्वरूप, बनावट।

उ०—१ ओपै हाट ओछाडिया, पाटवर अणपार। वाणक जाणक वद्दळा, इद्र धनुस उणहार। —रा रू.

उ०—२ तारागढ छायी रहै, सोर तणै नीसार। आबू जाणक ओपियो, वाणक वद्दळ धार। —रा. रू.

४ सजावट, ठाट-बाट।

५ रग-ढग।

६ ढग, प्रकार।

उ०—तदि जोड राम लछमणतणी, विध वांणक विसतारिया। वह कळस वादि धर रजत वह, पह मेड्तै पधारिया। —नू प्र

७ एक वर्ण-वृत्त जिसमे सर्व प्रथम नगण फिर भगण और अंत मे भगण होना है।

उ०—आठ आठ सो वजि उमै, सहस रूप मझळाधि। नगण भगण स जगण निरखि, वाणक छद वताधि। —ल पि.

८ देखो 'वणगत' (रू भे)

उ०—राव 'दुरगौ' जोरावर थकौ रहै। राणा सूं मिळै नही। राणा नै राव दुरगै आपस में वाणक को नही। —नैणसी

रू. भे.—वाणक, वाणिक, वानक, वाणिक, वाणक।

वाणण, वांणणी—देखो 'वणियाणी' (रू भे)

उ०—थळ कतार लाघणा थटै, ले जिहाज जळ ग्रत। भोळी ढाळी वाणणी, वेटा घूत जणत। —वा. दा.

वांणप्रस्थ—देखो 'वानप्रस्थ' (रू. भे)

वांणरस—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—सजुत वसत वाणरस सोखा। नागलता मघई पत्र नोखा।
—सू प्र.

वांणवहण-स पु—१ नाव, जहाज। (ग्र. मा)

२ देवी प्रकोप होने की अवस्था या भाव।

वाणा—देखो 'वाणी' (रू. भे)

उ०—सारद थे सु-प्रसन हुवौ, दे ग्रक्खर वाणा। —द. दा.

वाणारसी—देखो 'वाराणसी' (रू भे)

उ०—पछै गाम रै घणी राजा रा गुर रा वेटा नै पूछ्यो थे वाणारसी गया था सो का ही भण्या।
—राजा रा गुर रा वेटा री वात

वाणाळ—१ देखो 'वाण' (मह, रू भे) (डिं. ना मा)

२ देखो 'वाणावळी' (मह, रू. भे)

वाणावळी—देखो 'वाणावळी' (रू भे)

वाणावळो-स पु—रथ। (डिं ना मा.)

वाणास—देखो 'वाणास' (रू. भे.) (ना. डिं को.)

वांणि—देखो 'वाणी' (रू. भे)

उ०—१ डीभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही वाणि। ढोला एही मारुई, जेहा हुभ्र नियाणि। —ढो मा

उ०—२ वाणि ग्रनादह फुड वयण, सुभ भाखा सरजिग्र। गाहा करई वर रसाउला, दूहा छद कवित्त। —गु रू व

वाणिक—देखो 'वाणक' (रू. भे.)

उ०—१ तपत वाण कीधौ हर ताणिक। वांमी-वध एरसै वाणिक।
—सू प्र.

उ०—२ ग्राभा रूप जोम ऊफाणिक। वणियौ ग्रनग दूसरै वांणिक
—सू. प्र

२ देखो 'वणिक' (रू भे)

वांणिज—१ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे)

उ०—वाणिज विण साह, सहर हाटा विण, जळ विण गाव वसै जेहडो। विण गाया ग्रिग्वम, सभा पडित विण, विण महमा तीरथ तेहडो। —ग्रासो वारहठ

२ देखो 'वणिक'

वाणिजू—१ देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—लाग्व विच्यारि वांणिजू चालइ, वार लाख ऊलगाणा। करकटीया हुवसी माथाइत, फरसीघर सपराणा। —का दे प्र.

वाणिज्य-स पु. [स. वाणिज्य] वस्तुग्रो का क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यवसाय।

उ०—वाणिज्य वइस फवि जेण वेर। कोटेक जाण वप घर कुमेर
—सू. प्र.

रू भे.—वणज, वणिज, वनज, बिनज, वाणिज, ग्राणिज्य, वनिज, विणज, वणिज्ज, वाणिज, वाणिजू, वानिज, विणण, विणज।

वाणिनी-स. स्त्री [स वाणिनी] १ चालाक स्त्री, धूर्त ग्रौरत।

२ नर्तकी, ग्रभिनेत्री।

३ दूती।

४ स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

५ शराब के नशे में चूर स्त्री, मदोन्मत्त स्त्री।

६ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १६ वर्ण होते हैं तथा इनका क्रम नगण, जगण, भगण, जगण तथा रगण ग्रौर एक गुरु होता है।

वांणिया फूटावणियो-स पु.—लुब्धक नामक तारा।

वाणिया-रो देवळ-स. पु—वर्षा ऋतु मे होने वाला एक उद्‌भिज पदार्थ जिसे 'लाकी-मूळो" भी कहते हैं।

वाणियावटी, वाणियावाटी-स स्त्री [स वणिक-वृत्ति वणिक-पाटी]

१ एक प्रकार की गणित विद्या जो बनियो के व्यापार व लेन-देन मे काम ग्राती है।

२ एक प्रकार की भाषा एव लिपि जो बनियो की बहियो मे लिखी जाती है।

३ बनिये का कर्म।

वि—१ बनिये की, बनिये सम्बन्धी।

२ महाजनी।

रू भे.—वाणियावटी, वाणियावाटी।

वाणियो—देखो 'वणिक' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—गाहै सोदै ग्राहका, ढाहै जे गज ढह्न। लाहो लोटै वाणियो, ग्रा है साची गल्ल। —वा. दा

वां'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे)

उ०—धरती री जित्ती वार काळजो चीरीज वां'णिया लागै उत्ती वत्ती नैपै व्है, साख फळै। —फुलवाडी

वाणी-स. स्त्री. [स वाणी] १ सरस्वती, शारदा। (ग्र मा)

उ०—भेत गुणा गाय भेव, भ्रामडै न ग्रहमेव, इंदसा सुरा अजेव, साफ तास सेव। कीरती वांणी कहैव, दिला घरै समदेव, वाह जेण चेत वेव, देव देव देव। —र ज प्र.

२ मुह से निकलने वाला सार्थक शब्द, वचन।

उ०—१ सुणं नृपति हित बात सुहाणी। विधिवत कहण लागो मिष वाणी। —सू प्र

उ०—२ मन री बात नै वांणी मिळता ही राजाजी नै चेतो व्हियो —फुलवाडी

३ वाक शक्ति।

उ०—अथाह सुख भर दुख दोनूं ई निपट गूंगा व्हैगा। गळा री वांणी बारी भार मेल नी सकै। च्यारू जणा ग्वासी ताळ ताई बोला-बोला एक दूसरा री मूडो जोवता रह्या। —फुलवाडी

४ स्वर, ध्वनि, आवाज, नाद।

उ०—परम हुम आणद मे प्राणी। ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वाणी। —सू प्र

५ योग के अनुसार च्यार प्रकार की वाणियो मे कोई एक

उ०—चार अवस्था सत भूमिका, पच कोस विगनाना। चार सरीर भाव पुनि च्यारू, वाणी चार सयाना। —स्रीसुखराम जी महाराज

वि वि—योग के अनुसार वाणी के च्यार भेद माने गये हैं:— वैखरी, मध्यमा, पश्यती, अस्यता।

६ भाषा, शब्द, वाक्य।

उ०—चाद सूरज गळै मिळया। धरती रा कण कण मे हरख समायग्यो। पान पान मे रस साचरग्यो। उण मिळण भर भाणद री कोई वाणी नी ही। —फुलवाडी

७ जिव्हा, जीभ।

८ बोलने की क्रिया या भाव।

उ०—१ अतस रा मून मिळाग पछै वांणी री सुध-बुध बावडी। होठ खुलता सा निगे आया। —फुलवाडी

९ साधु-सतो द्वारा कथित या रचित, उपदेशात्मक पदो, दोहो या सोरठो का सग्रहित ग्रथ।

उ०—पाप चीकणा भव पैलै मे, खूब करैला स्वारिया। वाणी लिखि गया साध विचारो, मुकति हुवै मन मारिया। —ऊ का.

१०—प्राय 'तदूरा' पर गाया जाने वाला निर्गुण भक्ति का पद।

११ साहित्यिक निबध।

१२ एक छद।

१३ केवट, नाविक। (भ मा)

१४ प्रशसा।

१५ ध्रुपद की चार वाणियो मे से कोई एक या सब—गोग्हारी, नौहारी, डागरी, भौर खडारी (सगीत)

रू भे.—वाण, वाणि, वाणी, बानी, वाग, वाणा, वाणि।

वाणीमंड-स पु [स वाणीमण्ड] दात। (भ मा)

वांणीरणजोधार-स पु.—पडित, विद्वान। (व. भा.)

वांणोतरो-स पु—वनिक समाज।

उ०—सो साहुकार री वहू मूंई। पछै कितरैक दिनै माहूकार नै सहर रा वाणोतरां कही। साहजी विवाह करो। तद साह वाणोतरा नै कह्यो। अबै हू वरस पचास री हुयो, हूं विवाह करूं नही। —साहूकार री वात

वांणो-स. पु [सं वाहन] १ पानी लाने के लिये गाडी पर रखे हुए जल पात्रो का समूह।

२ उक्त प्रकार से पानी लाने की क्रिया या ढग।

३ रू भे—वाहणो।

वांण्यो—देखो 'वणिक' (अल्पा, रू भे)

उ०—वाण्यो मित्र न वेस्या सती, कागो हस न बुगलो जती। —अज्ञात

वाति-सं. स्त्री. [स. वाति] १ वमन, कै।

२ उगाल।

वातो-स पु—अतर, फर्क।

वाथ—देखो 'वाथ' (रू भे)

उ०—तद कुवरसी दीठो माजी छेहडे आय गया। तद ठाढी वांथ घात कहण लागो, जी माजी जीव मनै भी प्यारो छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

वाद—१ देखो 'वादो' (मह, रू भे)

उ०—ऊचा नीचा वाक्य बोलइ, ग्रही प्राहुणो टलइ, छोरु चाकरु भिडइ, वाद गुलाम मूंहि चडइ, थकी सीकउ श्रोडइ, बोलावी माथु फोडाडइ, कुटंब सदा दुखि पाडइ। —व. स.

२ देखो 'वाद' (रू भे)

वांदणो, वादवो—देखो 'वादणो, वादवो' (रू भे) (उ र.)

उ०—१ आयो चाहता मगद, मह सेन मझारै। प्रभु पद वादे जोड पाण, अग्र मुकट अधारै। —सू. प्र.

उ०—२ अव डाळ कुभ भाणि, विमळ वर तरणि वंदावै। वादि वळस तिण वार, भूप द्रव रूप भरावै। —सू प्र.

उ०—३ वांदण आव्या स्रेणिक राय, नगर लोक पिण वांदण जाय। आपै प्रभु गणधर उपदेस, भजन ज्नद अनुसार विसेस। —स्रीगान राम

उ०—४ बळ दुधमार वयण वीणासुर, आयै दिन न कीध अवार। वडा वडा गा तोरण वांवै, नवल वना अहकार निवार।
—ओपो आढो

उ०—५ फ़रण चतुरद्दसी तणइ दिनि चतुपथि स्नान करइ, सिद्धायतनि घ्यान घरइ, अस्वत्थ प्रभ्रति वनस्पति वादइ, सकुनग्यानीया आनदइ। —व. स.

वांदणहार, हारौ (हारी), वांदणियौ—वि०।
वांदिग्रोड़ौ, वांदियोड़ौ, वादचोड़ौ—भू० का० कृ०।
वादीजणौ, वादीजवौ—कर्म वा०।

वांदर—देखो 'वांनर' (रू भे)

वांदरपगौ–स पु—वह बैल जिसके पिछले पैर के टखने भूमि को स्पर्श करते हो।
(मि —मोदीपगौ)

वांदरमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू भे)

वांदरी–स स्त्री [देशज] १ मोट की रस्सी के साथ जुडा हुआ एक लकडी का उपकरण जिसमें कील डाल कर बैलो के साथ जोडा जाता है।
२ देखो 'वानर' (स्त्री.)

वांदरौ—देखो 'वानर' (अल्पा, रू भे)

वादियोडौ—देखो 'वादियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वादियोडी)

वांदी—देखो 'वादी' (रू भे)
उ०—नै जीमण री वखत हुवौ। तरा ठाकुरा वांदी सागै वीरमदे जी री माजी सीसोदणी नू कहायौ जीमण सारू। —द. दा

वांदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वांदोळौ—देखो 'वदोळौ' (रू भे)

वाधणौ, वांधवौ—१ देखो 'वाघणौ, वाधवौ' (रू. भे)
उ०—ना हू सीची सज्जणे, ना वूठउ अग्गाळि। मो ताळि ढोलउ वहि गयउ, करहउ वाध्यउ डाळि। —ढो मा
वाधणहार, हारौ (हारी), वांधणियौ—वि०।
वांधिग्रोड़ौ, वांधियोड़ौ, वाध्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वांधीजणौ, वाधीजवौ—कर्म वा०।

वाधियोडौ—१ देखो 'वाधियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वाधियोडी)

वांन–सं पु.—१ यश, कीर्ति, शोभा।
उ०—१ कटा वेक्ष भाड भाडा पहाड सैलोट कीधा। वस राण मेवाडा अहाडा चाढै वांन। —राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—वाधारण हिंदुसथान वांन। 'अभमाल' जोड नह भूप आन।
—सू प्र.

उ०—३ ऊभै करग जग ऊपरा, सखरा खरा सहज्ज। वांन वधारण वीरवर, सूर सधीर सकज्ज। —ल. पिं.

२ हौसला, साहस, जोश।
उ०–२ वान वधारे कमधजा, आधारे असमान। 'गजवधी' नवसाहसे, भागा वारह खान। —गु रू ब.

३ उमग, उत्साह।
उ०—वाहे खग नींद जिही चढि वांन। घरा नवकोट सिरै परधान।
—सू प्र.

४ प्रतिष्ठा, इज्जत,।
उ०—ग्वित पुडि साहिब खान हणमत ज्यू 'जैता' हरी, उणि वेळां लागौ अरसि, वस वधारण वांन। —वचनिका

५ तेज, कान्ति, दीप्ति।
उ०—अळगी वे (व्है) जोहे अली, जोवण दीजो जान। माणीगर म्याराम को, वेखण दीजो वांन। —मयाराम दरजी री वात

६ वचन।
उ०—वहिनी थई त्रिलोचना, वदै परम्पर वांन। —वि कु

७ स्वाद, जायका।
उ०—वळी वीजा आण्या पकवान, जिमता वाधइ मुख नु वांन, ने कुण जाति, नव नवी भाति, दही वडा गुदवडा —व. स

[प्रत्य] ६ कुछ शब्दो के आगे लगने वाला एक सम्पन्नता सूचक प्रत्यय।
७ देखो 'वाद' (रू भे)
रू भे—वान।

वानइत—देखो 'वानैत' (रू भे)
उ०—पतिसाह सल्ल ऊघाडि प्रोळि, ऊतेडि अखि आउघ इतोळि। वानइत जेस रांणिग देव। बोलिया वाघ विहु वाह वेव।
—रा ज. सी

वानक—देखो 'वाणक' (रू भे)

वांनगी—देखो 'वांनगी' (रू भे.)

वांनणी—देखो 'वानणी' (रू भे)

वानप्रस्थ–स पु [स वानप्रस्थ] आर्य सस्कृति के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमो मे से एक जो गृहस्थ आश्रम के बाद तथा सन्यास आश्रम से पहले आता है। जीवन की तीसरी अवस्था।
रू भे—वाणप्रस्थ, वानप्रस्त, वानप्रस्य, वाणप्रस्थ।

वांनर–स पु. [स. वानर] १ मनुष्य से मिलती-जुलती शक्ल का एक प्रसिद्ध प्राणी, बंदर, कपि।

उ०—ऊधम किर राळै धर अदर। बाग असोक लागडै वानर।
—सू प्र

पर्या —कपी, कीस, प्लवग, प्लवगम, बनचर मरकट माकड लगूर साखामृग, हरि।

२ दोहा नामक छद का एक भेद विशेष।

वि वि —देखो 'मरकट' (७)

३ राठौड वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—'नारण' 'केसव' तणं निभै नर। वन्नर नील जिसो वळ वानर।
—रा. रू

४ भाटी वश की एक शाखा।

५ बढई का एक औजार विशेष।

रू. भे —बदर, बनर, बन्नर, बादर, बानर, वनर, वन्नर, वनर वन्नर, वादर।

अल्पा —वदरियौ, वादरियौ, बादरौ, बानरडौ, वादरौ, वानरौ।

६ देखो 'वदर' (रू भे)

वांनरमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू भे)

उ०—हे पान अणावौ ए मारी जच्चा राणी रै ताम रा, हे जठै पूरवि छै वांनरमाळ ए।
—लो गी

वांनरमुख–स पु —नारियळ। (अ मा)

वानरी–वि [स वानर+ई प्रत्य] १ बदर की, बदर सम्बन्धी।

२ बदर के समान।

उ०—रूखारा जूट रामचद री वानरी सैन्या ज्यौं रीछा री जमात सा निजर आवै छै।
—रा. सा स

स स्त्री.—१ कौंवाच, कौछ।

२ देखो 'वानर' (स्त्री)

वानरौ—देखो 'वानर' (अल्पा., रू भे)

उ०—दादू डोरी हरि के हाथ है, गळ माहि मेरे। बाजीगर का वानरा, भावै तहा फेरै।
—दादूवाणी

वानवासिका–स स्त्री. [स वानवासिका] सोलह मात्राओं का एक छन्द विशेष जिसमे नवी और बारहवी मात्रा लघु होती है।

वांना–स. स्त्री [स] बटेर, लवा।

वानायुज—देखो 'वनायुज' (रू भे) (डि ना. मा.)

वांनावध, वानावधण, वांनावधण—देखो 'वानावध' (रू भे)

वानी–स स्त्री —१ भस्म, विभूति, राख।

उ०—१ वांनि अग वळेट, मेखळी भुज पर मेली। ले माछदर नाम, साह तन कया सेली।
—पा. प्र

उ०—२ दूध पाय मूडा मे वानी री चिमटी भुरकाती।
—फुलवाडी

२ काती, दीप्ति।

उ०—जोम अनग सी गुणी जवानी। वप व्हे कनक सोळिमा वांनी।
—सू प्र.

रू भे —वाणी।

वानीर–स पु [स वानीर] १ बेंत।

मर सवळा आगै निवल, नीर धकै वानीर। वाय धकै अण जाय वच, भलौ नमण गुण भीर।
—बां दा.

२ पाकर का पेड। (सभा)

वांने–क्रि वि —१ ओर, तरफ।

उ०—हिंदवा छात दोय वात ले हालियो, वाळयो आक जुग चिह्न वाने।
—दुरसौ आढौ

वानेत, वानैत—देखो 'वानैत' (रू भे)

उ०—१ मुख वानेत महीपती, करन' अनै चद्रभांण। कियो सकोधा साम कज, या जोधा आराण।
—रा रू.

उ०—२ तरै अजब' भड तैडिया, वड रावन वानैत। मार मार मुख मुख मुणै, वाह प्रळव वरदैत।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ वेनो महि विरदैत, जेठी गोवरधन जिसा। 'करनाजळ' अणवर कन्है, वडजानी वानैत।
—वचनिका

उ०—४ रिण पाखै झगडा विना दुमनो रहै लाज इतरी के चित मैं ही नही समावै झगडा री वेळा पाछा पग दे नही जाणै लाज रा लगर पडिया है। उण वीर नें वानैत कहणी।
—वी. स. टी.

वानोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वानोळौ—देखो 'वदोळौ' (रू. भे)

वानौ—देखो 'बानौ' (रू भे)

उ०—१ वांनो देखै वादिये, क्या करणी सू काम।
—अग्यात

उ०—वाना औरै हद्द विहद्द, लाल सपेत स्याह जरद्द।
—गु रू वं.

उ०—३ वीर सिंगार चढै वांना। पहरै अतर अरोगै पाना।
—सू. प्र

उ०—४ वणिया गजा तणै सिर वांना। मिळिया तुग्ळ रजी असमाना।
—रा रू

उ०—५ सब्जे जरदाई लाल सिहाई वानै छायौ प्रहमट। फररा वैरक्का फावी कटक्का जाणक फूलै वन-सट।
—गु रू व

उ०—६ इद्र समोवर जागियै, रिद्धि स्नी राजा नो रे। गुनह नमैं निज प्रजा तणो, दिन दिन वधतै वानो रे।
—दि कु

उ०—७ जिकू चाहीजै सू सरब थानू दिरावीस, थाहरा घणा वांना करीस, ग्रर थे मागिस्यौ सू राजा देसी । —सयणी री वात

वावासणौ, वावासवौ–क्रि स —जोश दिलाना ।

वांवासियोड़ौ–भू. का कृ.—जोश दिलाया हुग्रा ।

(स्त्री. वावासियोडी)

वाभ—देखो 'भाव' (रू. भे)

उ०—वसती री हुवै वाभ, वेठ नह काढणी । कामेती हुकम हुवै घणी । बाकी किण री बीह, खुसी से खेलणा, ऐता दे करतार फैर नई बोलणा । —ग्रग्यात

वाभण—१ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—सबळ सेन साथइ बहु थट्ट, याचक मगण वाभण भट्ट । —ढो मा

(स्त्री वाभणी)

२ देखो 'भाभी' (स्त्री)

वाभणी–स स्त्री —१ मेवाड की एक नदी ।

उ०—नदी तीन री विगत —१ चावळ, १ वाभणी, १ पगथोई । —नैणसी

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री.)

३ देखो 'भावी' (पु)

वाभी—देखो 'भावी' (रू भे)

(स्त्री. वाभण)

वामग—देखो 'वामांग' (रू भे.)

उ०—१ राठौड रवेवा रणताळ, वामग डहै बीजळा भाळ । बाधै कदीळ सधै विवाण, कोसीस भुजै दीना कवाण । —गु रू ब

उ०—२ वडफर भुज वामग, समे दक्खिण भुज साबळ । जाम विक्ख भरि जमी, वहसि ग्रसि चढे ग्रतुळवळ, । —सू. प्र.

वाम–स. पु [स वाम] १ शिव, महादेव ।

२ एक रुद्र ।

३ काम देव । (ग्रनेक)

४ सूर्य ।

५ कृष्ण का एक पुत्र ।

६ चन्द्रमा के रथ का एक घोडा ।

७ जन्तु ।

८ सर्प ।

९ स्तन, कुच ।

१०—चौबीस ग्रक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण ग्रौर एक यगण होता है ।

११ छै मात्राग्रो का एक मात्रिक छद ।

[स व्याम] १२ लबाई का एक नाप जो दोनो भुजाग्रो को दोनों ग्रोर फैलाने पर एक हाथ की उगलियो के सिरे से दूसरे हाथ की उगलियो के सिरे तक की लबाई का होता है । (उ र)

१३ धन, सम्पत्ति ।

स. स्त्री —१४ सर्पाकार चितकबरी मछली विशेष ।

१५ पृथ्वी, भूमि । (डिं. ना मा)

वि. [स. वाम] १ बाया, दाहिने का विपर्याय ।

उ०—ऊससै घणै उछाह, चाप वाण धरै चाह । वाम हाथ लीध वाह, जीमणै कसीस जाह । —र. रू.

२ बाई ग्रोर स्थित, वामभागस्थित ।

उ०—दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै । सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणै सभारै । —रा रू

३ उल्टा, ग्रौंधा ।

४ विरुद्ध या विपरीत स्वभाव का ।

५ कुटिल स्वभाव का । (ग्र मा , ग्रनेक)

६ दुष्ट, नीच ।

७ मनोहर, सुन्दर । (ग्र मा , ग्रनेक.)

रू भे —वाम ।

८ देखो 'वामा' (रू. भे) (ग्र मा , ह. ना. मा)

उ०—१ पास सहेली पीव रै, वण यूं ऊभी वाम । निसरे चावक नेह रा, लोपै लाज लगाम । —ग्रग्यात

उ०—२ सुंदर सोभत घणस्याम, तडिता पट-पीत छिब ताम । वामै ग्रग सीता वाम, रूप ग्रनग कोटिग नाम । —र ज प्र

उ०—३ मणो ग्राप री देस रो, ग्रौर वाम री नाम । ग्रामद कुण से देस ते, इत ग्राये की काम । —पच दंडी री वारता

वामग्ररधपादासन–स पु [स वामार्धपादासन] योग के चौरासी ग्रासनो के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन विशेष ।

वि वि —इसमे बायें पाव की पिंडली दबाकर उसी पाव को दाहिने पाव के घुटने पर रख दिया जाता है, तथा दाहिने पाव की एडी दाहिने भाग की जघा के निम्न भाग के लगाकर बैठा जाता है । इसका विपरीत दक्षिणार्धपादासन होता है ।

वामजान्वासन–स पु —योग के चौरासी ग्रासनो मे से एक ।

वि वि —यह दक्षिणजान्वासन से विपरीत होता है ।

वामण—१ देखो 'वामन' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ ग्रसनिकुमार ग्रगनि वन ग्राखो, देवनाथ महि वामण दाखो । समद प्रजापति ग्रादि सुरेसर, कमधा धणी तणी रक्षा कर । —रा रू

उ०—२ सखी ग्रमीणो साहिबो, सूर धीर समरत्थ । जुध मे वामण डड जिम हेलो वावै हत्थ । —बा. दा.

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—वामण परण प्रताप विधि, हिम पित गोरी विहून।
—रांमरासौ

(स्त्री वामणी)

वांमणदेव—देखो 'वामन'

वामणौ–वि [स वाम] (स्त्री वामणी) १ विरुद्ध, प्रतिकूल।

उ०—सहु को देखो वामणौ, नृप कन्या स्रीपाल। कुमरी वर वरवा मणी, कठ ठवी वरमाळ। —श्रीपाळ

२ तिरछा, टेढा।

वामदक्षिणपादासन–स. पु —योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जिसमें बाये पांव को लवा करके दाहिने पाव पर खडा रहना पडता हैं।

वांमदक्षिणस्वामगमनासन–स. पु —योग के चौरासी ग्रासनों में से एक।

वि वि —इसमें दाहिने पैर के घुटने को दाहिने हाथ की वगल मे रखकर शरीर का वोझा उसी पर दिया जाता है, तथा बाये पैर को घुटने से मोडकर उसकी ऐडी उसी तरफ की जघा के निम्न भाग को लगाकर गुदा ऊची करके वैठना होता है।

वांमदेव–स. पु. [स वाम+देव] शिव, महादेव। (ह ना मा.)

रू भे —वामदेव।

वांम देवी–स स्त्री [स वाम-देवी] १ दुर्गा।

२ सावित्री।

वामन–स पु [स वामन] १ ईश्वर।

२ विष्णु भगवान के पाचवे ग्रवतार का नाम, जो वलि राजा को छलने के लिये लिया था। (ग्र मा)

उ०—प्रीतावर मु प्रीति पहिलकी, ते ता मुहई जाणई। मछ कोरम वाराह नारसिंघ, वामन फरस वखाणई। —रुकमणी मगळ

उ०—२ मछ वाराह घरणीवर, नारसिंह वामन करुणा कर।
—गजउद्धार

३ वौना या ठिंगना ग्रादमी।

४ विष्णु।

५ शिव।

६ दक्षिणी दिग्गज का नाम।

७ ग्रठारह पुराणो मे से एक।

८ काशिका वृत्ति के रचयिता का नाम।

९ ग्रकोट वृक्ष का नाम।

वि.—१ छोटे डील का, ठिंगना, वौना, नाटा, खर्व।

२ नम्र।

३ नीच, कमीना, शठ।

रू. भे.—वामण, वामन, वावन, वावन्न, वांमण।

ग्रल्पा.—वावनियौ, वावनो, वावन्यू।

(स्त्री वामनी)

वांमनजयती, वांमनद्वादसी–स स्त्री —भाद्रपद मास के शुक्ल-पक्ष की द्वादसी।

वि वि —यह वामन भगवान का जन्म दिन माना जाता है। इस दिन व्रत रखा जाता है व वामन भगवान की पूजा की जाती है।

वांमपदग्रपानगमनासन–स पु.—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक।

वि वि —यह दक्षिणपादग्रपानगमनासन से विपरीत होता है।

वांमभुजासन–स पु —योग के चौरासी ग्रासनो में से एक।

वि. वि —इसमें बाये हाथ की टेहुनी मोड कर भूमि पर रख दी जाती है तथा उस हाथ की हथेली को गाल पर लगा कर शरीर का बोझ डाल कर बैठा जाता है तथा पीछे दोनो पावों को संकुचित करके बाये पाव पर दाया पाव रखकर दाहिना हाथ उस पर रख दिया जाता है।

वाममारग–स पु [स. वाममार्ग] वेद विहित दक्षिण मार्ग के विरुद्ध एक तांत्रिक मत जिसमे मद्य, मास, व्यभिचार ग्रादि निषिद्ध तत्वो का विधान रहता है।

रू भे —वाममग।

वामराड़–वि —देखो 'वावराड' (रू भे)

वामलोचना–स स्त्री [स वाम+लोचन] १ सुदर-स्त्री।

२ स्त्री, नारी। (ग्र मा, ह. ना मा)

वामवक्रासन–स पु.—योग के चौरासी ग्रासनों मे से एक जो दक्षिणवक्रासन के विपरीत होता है।

वामसाखासन–सं पु —योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जो दक्षिणसाखासन के विपरीत होता है।

वामसिद्धासन–स पु.—योग के चौरासी ग्रासनों में से एक जिसमे बाये पैर की एडी सिवनी मे लगाकर दाये पैर के सम्मुख लबा करके वैठना होता है।

वामसर, वांमसुर–स पु [स वाम-सुर] महादेव, शिव। (ना. मा)

वामहयौ–स. पु —प्रयान में ग्रशुभ भौंरी वाला घोडा।

वांमहस्तचतुस्कोणासन–स पु [स वामहस्तचतुस्कोणासन] योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जिसमे दाहिने पैर को घुटने से मोडकर बैठना होता है तथा पीछे बाये पाव के पजे को बाये हाथ की ठेउनी में लगाना तथा दाहिने हाथ की उगलियो पर परस्पर मिलाना होता।

वामहस्तभयकरासन-स पु.—योग के चौरासी आसनो मे से एक जिसमे वाये हाथ को ऊचा रखकर पलथी मार कर वैठना होता है।

वांमाग-वि. [स वाम-अग] १ वायें अग का, वायें अग सम्बन्धी।

२ वायें अग की ओर का।

३ देखो 'वामागी' (रू. भे)

रू भे—वामाग, वामग।

वांमागिनी, वामागी-स स्त्री. [स वामा+अगी] पत्नी, स्त्री।

रू भे—वामांग।

वामा-स. स्त्री [स वामा] १ धर्मपत्नी, स्त्री।

उ०—देवी काम ही लोचना हाम कामा, देवी वासनी मेर माहेस वामा।

—देवि

२ सरस्वती, शारदा।

३ लक्ष्मी।

४ रमणी, युवती।

उ०—फूटै चीर सावळा नीसाण वार पार फूटै, माथा सम्रा तूटै जाणै हारा मोती लाल। छकै-पजै मेछा छळै वांमां हुवै अग्रामा छूटै, सम्रामा प्रजका लूटै बीजो रायासाल।

—रावदेवीसिंह सेखावत री गीत

५ सुन्दरी, स्त्री।

६ पृथ्वी। (ना मा.)

८ दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण और भगण तथा अत मे एक गुरु होता है।

रू भे—बामा।

वामाचार-स. पु [स. वामाचार] तान्त्रिक मत का एक भेद, जिसमे पच मकार—मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की आराधना की जाती है।

वांमादेवी-स. स्त्री [स. वामदेवी] पारसनाथ जी की माता का नाम।

उ०—अस्वसेन नृप कुल तिलो रे, वांमादेवी को नद। —वि. कु.

वामासर-स पु.—पाडल नामक वृक्ष। (अ. मा.)

वामी-क्रि वि [स वाम] बायी ओर, बाई तरफ।

उ०—महोदर वजर मुसटदु दाहिं मसत, दुरीमुख घूमनर धूम वामी दसत। —र. रू

स. स्त्री [स. वामी] १ घोडी।

२ गधी।

३ हस्तिनी।

४ गीदडी।

वि.—५ वाम मार्गी।

रू. भे.—वांमी।

वांमीवद, वांमीवध-स. पु—१ राठौडों का विशेषण सूचक शब्द।

२ राठौड राजपूत।

उ०—तपत वाण कीधो हर ताणिक। वांमीवध एरसै वाणिक।

—सू प्र.

वि. वि—इनके साफे या पगडी का वध वाई ओर होता है।

३ गौड राजपूत।

उ०—वापम वामीवध, कध अवकध कहाणी, सान जिहा भजियी, पछ घर वतग पछांणी। —विनवरासी

रू भे.—वदवामी, वधवामी, वामीवद, वामीवध।

वांमै-क्रि वि [स वाम] वाई ओर।

उ०—'दुरग' खडे दयिवण दिमा, अकवर सू हित आव। कर धर गुज्जर जीमणै, छप्पन वामै राव। —रा. रू

वांमो-वि [स वाम] (स्त्री. वामी) १ दाहिने का विपर्याय, बाया।

उ०—सु लोहार की जु वांमो हाथ। रुकमणजी रो डील हुओ। रुक्मइये की तरफ की देखै छै तब तपि आवै। रुकमणीजी की तरफ देख्यै सीतळ होय आवै। —वेलि टी.

उ०—२ पूठी वांमै दाहिणै, आगळि अगै-वाण। राजा "गाजी साह" नूं, राखदो रहमाण। —गु रू ब.

२ प्रतिकूल, उल्टा, विरुद्ध।

उ०—'वैणो' वहै जगत सू वामो, नाहर अमर करण जग नामो। तेरो घरा जावतो सोयो, करणी मौज करारी कामो।

—वैणीदास साचोरा री गीत

३ दुष्ट, शठ, नीच।

रू भे—वामो।

वांयली-वि स्त्री. १ पिछली, पीछे की।

२ देखो वसूली' (अल्पा, रू भे)

वायलो-वि—(स्त्री वायली) पिछला, पीछे का, शेष।

२ देखो 'वसूलो' (रू. भे.)

वांये—देखो 'वासै' (रू भे)

वांरुवो-स पु—वात रोग की एक प्राचीन चिकित्सा।

वांस-वि—१ वश का, वश सम्वन्धी।

२ देखो 'वस' (रू भे) (उ र)

३ देखो 'बास' (रू भे)

उ०—१ चिगता उखेल पखरे चरित, रखै मेळ अमेळ रुख। वध बेध बळै खळ वास ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख। —रा रू.

उ०—३ वेण वांस वासळी वजावण । धिनी मोहन राधिका धव ।
—ह. ना. मा.

वांसइ–ग्रव्य —१ पीछे ।

उ०—१ के मेहल्या पूगळ दिसइ, किही भळाया भार । साल्ह कुंवर करहइ चढयउ, वांसइ चाढि नार । —ढो मा.

उ०—२ ग्रस तरे सलीता ग्रस्सराळ । कामाळा पूठी के कठाळ । ऊभारि तडगी पूरि ग्रभ वासइ सहारि वूहा विलभ । —रा ज सी

उ०—३ वादल कहै सहू भलौ, हुइ ग्रावीसीइ तुम नाम रे भाई । करज्यौ वांसइ कुमरजी, सवळौ ऊपर सामि रे भाई ।
—प च चौ

२ निकट, समीप, पास ।

उ० —सूवा एक सदेसडउ, वार सरेसी तुझ्झ । प्रीतम वासइ जाइ नइ, मुई सुणावै मुझ्झ । —ढो मा.

वांसरी—१ देखो 'वसी' (रू भे)

२ देखो 'वासरी' (रू. भे)

वांसली–वि स्त्री १ पीछे की, पिछली ।

उ०—१ रात पोहर १ वासली थी, सु सासरिया हालण दै नही ।
—नैणसी

उ०—तरै इण वांसली वात सोह माडनै कहची । —नैणसी

रू भे —वाहली ।

२ देखो वंसी' (रू. भे)

उ०—१ क्षणु भुखि वाइ वासली, क्षणु करि वेणा ताळ । सीसि मुगट पय घूघरी, गळि मोत्ताहळ माळ । —मा का प्र

उ०—२ वीणा ताल ऋदग वाज रहिग्रा छै । वांसली वाजि रही छै । ढोलका वाजि रही छै । —रा सा स

३ देखो 'वासरी' (रू भे)

वासळौ, वासलौ–वि [स वश+रा प्र लौ] (स्त्री वासली) १ वशज सतान, वशके ।

उ०—१ तारा पातसाजी इण नू नरवर पटै दीनी । सू नरवर ग्रासकरण रा वासला राज करै है । —द दा.

उ०—२ सोम केहर रौ, देवडी लाछा रै पेट रौ । इण रै को दिन विकूंपुर हुतौ । तिण सोम रै वांसला सोम-भाटी छै । —नैणसी

वि —२ पीछे का, पिछला ।

उ०—१ गढ वांसलौ भोमिया लीयौ राणी । ग्रांवावरी जात करनै गांव नांगदहैं बाभणा रै ग्राय डेरौ कियौ । —नैणसी

उ०—२ तिको जखडौ वासलै ग्रासण भीला सांमो वैठौ ।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

३ शेप, ग्रवशिष्ट ।

उ०—राव दूदै सूं लडाई कीवी । सु राव दुदौ काम ग्रायौ । ग्रर ग्राकूतणा पण काम ग्रायौ, घडी ५ तथा ६ दिन वांसलै थकै ।
—नैणसी

रू. भे —वासलो ।

वासा–स. स्त्री [देशज] १ घोडे की जीन ।

२ देखो 'वासै (रू भे)

उ०—१ कासम परखै जोस कमधा, एक धकै हुयगौ ऊवंधा । भाजै ग्राप गयौ मझ भीता, वांसा लोक लखै सुख वीता । —रा. रू.

उ०—२ वासा सूं ऊदैजी तरवार काढ ग्रर वाही सु विघड हुग्रा ।
—नैणसी

वासावळी—१ देखो 'वासावळी' (रू. भे.)

२ देखो वसावळी' (रू भे)

३ देखो 'वासवाळी' (रू भे)

वासियौ–स पु—१ वास का वना ग्रनाज वोने का एक उपकरण ।
(शेखावाटी)

वि वि.—देखो 'नाई'१

२ एक ग्रर्द्ध चन्द्राकार गोल घडा हुग्रा पत्थर ।

रू. भे —वासियौ ।

वासौ–क्रि वि —पीछे ।

उ०—सो प्रोहित चाल जागळू ग्रायौ । माळी रै घर डेरौ लियौ । रात रहो । परभात खवर लीवी । सो कुवर तो सिकार चढ गयौ । तद प्रोहित पिण वासी चढ गयौ । —कुवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वसी' (रू भे)

वासै–क्रि वि —१ पीछै से, पीछे ।

उ०—१ केहर मत वाळक कहौ, देखौ, जात सुभाव । वांसै देखै वाहरा, परत न छडै पाव । —बा दा

उ० - २ करहो कथ कुवेरिया सुगणी मारु सग ।वांसै उमर सुमरो, ताता खडै तुरग । —ढो. मा.

उ० — हुरम कवीला रिद्ध तर, साथै मीर प्रचड । इण वांसै कर-चल्लियौ, ग्रासा खड विखड । —रा रू

२ पश्चात वाद में ।

उ०—१ 'सत्तो' लूण करणोत, राव रणमल साथै चीतोड काम ग्रायौ । 'सत्ता' रो राव रिणमल सू वोल हुतौ—"था वासै हू नहीं जीवू" ।
—नैणमी

उ०—२ ताहरा सयणी तो हीमाळै नू हालो । यासै ग्रात मे दिन वीजाणद ग्रायौ ।
—सयणी री वात

३ शेप, वाकी ।

४ समीप, पास ।

उ०— राणी अजमेर कितरा एक दिन रहसी । सवारे सोह साथ वांसै छै, तिकै भेळा करनै जाय अजमेर लेस्या ।

—राव मालदे री वात

५ साथ मे ।

६ मदद में, इमदाद में ।

उ०— वीकाणी देसाणै वांसै । करनादे पलटै किम कोट ।

—द दा.

वि —७ अधीन, अन्तर्गत ।

उ०—१ किसनावत भाटियां रा गाव आगै तो पूगळ वासै हुता हमैं तो वीकानेर वासै छै ।

—नैणसी,

उ०—२ आ खरड विकूंपुर सू जुदी जेसळमेर वांसै, जुदी चाकरी करै ।

—नैणसी

रू. भे.—वासा, वांसे बासै, वसै, वाये, वांसा ।

वांसोली—देखो 'वसूली' (अल्पा , रू भे.) (उ र)

वासोलो—देखो 'वसूली' (रू भे)

वांसो—स पु —१ पीछा ।

उ०—१ सोनगरां अर राव तीडैजी रै वेढ हुई । सोनगरा रा पग छूटा । तरै राठौडा वासो कियो ।

—नैणसी

उ०—२ कान्है नू मारियो । वित रौ वासौ कियो । मेर ज्यूं,-ज्यू, लाधा, त्यु मारिया ।

—नैणसी

२ पीछे का भाग, पीठ ।

उ०—१ तरै राजा री वासै सु राठी फाडने वाळक काढियो ने पाटी वाध्यो ।

—रा. व वि

उ०—२ कछव कछवाह वासौ पलट करै किम । वसुह वी माह विहूं भडा वासै ।

—महियारियो पुरी

३ साथ ।

४ मदद, इमदाद ।

५ बेंट, दस्ता, मूठ ।

६ देखो 'वास' (अल्पा , रू भे)

रू भे —बासो ।

वांह—देखो 'वाह' (रू भे)

उ०—चाचर सूर पकर गह, चाचर चाडै देग । लक्ख लहै दुह्रु वाह बळि, दुह दुइ वधै तेग ।

—गु रू व

वाहडी—देखो 'वाह' (अल्पा , रू भे)

उ०—रतन मे राखडी वेणी वासग जडी, सूमरा वांहडी लहक लोडै । स्वाति नौ विंदलौ नासिका निरमयौ, आज आल्यगन अरुन क्रोडै ।

—रूकमणी मगळ

वांहणो—देखो 'वाणो' (रू. भे.)

उ०—तिण गाव कूवो १ छै, तिण पाणी निपट मीठो पालर सारीसो छै, उठारा वाहणा पाणी सहर आवै छै ।

—नैणसी

वांहळी—देखो 'वाळी' (अल्पा , रू भे)

वाहली—१ देखो वसी' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'वासली' (रू भे)

वाहोलो—देखो 'वसूली' (रू भे)

वा—सर्व स्त्री —१ वह ।

उ०—१ कुळवती सूं कीत रो, उलटो है आचार । वा न तजै घर आपरो, जग इण रो सचार ।

—वा दा.

उ०—२ पडसी जद काम दोडसी पाळी, दाढाळी असुरा मुजडाण वा आवै ऊपर इकताळी, देसणोक वाळी दीवाण ।

—अग्यात

२ उस, उन ।

उ०—१ राज पद पावै या कहावै राजकुळ मे । गायो कवि गुन के बतायो वा को महावीर ।

—क का

उ०—२ म्हारी गळिया ना फिरै, वा के आगण डोले हो । म्हारी अगुळी ना छुवै, वा की बहिया मोडे हो ।

—मीरा

अव्य.—१ अथवा, या ।

उ०—सिंघासणो वा इद्रासणो वा प्रिथीपती वा सरगपती वा । भ्रित सुरो वा भ्रित नरो वा, दिलीसरो वा जगदीम रो वा ।

—गु रू. व

२ और, तथा, भी ।

३ जैसा, सदृश ।

४ विकल्प या सन्देह वाचक ।

५ समाप्ति सूचक अव्यय, इत्यलम, बस ।

उ०—पेट रा आतरा गळै चढै जद वात कहीजै । लारला भौ री थनै मागत चूकावू । कमसल रा मूडा सूं वा तो निकळै ई कोनी ।

—फुलवाडी

स. स्त्री —१ अवा । (एका)

२ विकलय । („)

३ प्रेम, स्नेह । („)

४ प्रति । („)

५ प्रहार, चोट । („)

६ देखो 'वायु' (रू भे)

उ०—पछि चैद देस ता आवी, मि नवी जाणी मासी । वा वाइ तेह्वा ओलवा लीजि, थई रही तिहा दासी ।

—नळाख्यान

रू भे.—वा ।

वा'—१ देखो 'वाह' (रू भे)
२—देखो 'वास' (रू भे)
वाअणी—१ देखो 'वाहनी' (रू. भे.)
२ देखो 'वाहणी' (रू भे.)
वाअणी, वाअवी—१ देखो 'वाजणी, वाजवौ' (रू. भे) (उ. र.)
उ०—सीयाळउ तउ सी पडइ, उन्हाळइ लू वाइ । वरसाळइ भुइ चीकणी, चालण रत्ती न काइ । —ढो. मा.
२ देखो 'वावणी, वाववौ' (रू भे)
वाअदी, वाअदे—देखो 'वासदे' (रू भे)
वाअळी—देखो 'वाळी' (अल्पा., रू भे)
वाअली—देखो 'वा'ली' (रू. भे.)
वाइटौ—देखो 'वाइटौ' (रू भे)
वाइदौ—स. पु [देशज] फूस, कचरा
वाइ—स स्त्री. [स वाद] १ आवाज, ध्वनि ।
उ०—कुरझडिया कळिअळ कियउ, सुणी उ पखइ वाइ । ज्याकी जोडी बीछडी, त्या निसी नीद न आइ । —ढो मा
२ देखो 'वायु' (रू भे)
उ०—१ वदीवाळू घणा सीदाता, दीठा पाडइ डाढि । दिसि अगासई तावडि दाझइ, रातइ वाइ ताढि । —का दे प्र.
उ०—२ माघै वाइ माहावठी, सीत करइ सचार । माहरइ माधव सरण थी, लागइ नही लगार । —मा का प्र
३ देखो 'वापी' (रू भे)
उ०—सरोवरा तटाक हौद, तीरथ प्रमाण ए । वावी अनूप कूप थाइ, नीझरै निवाण ए । —गु रू व
४ देखो 'वादी' (रू भे)
उ०—वाइ करडि केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू । पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु । —धरम कलस मुनि
५ देखो 'वाई' (रू भे)
वाइक—स पु.—१ मित्र, दोस्त । (ह. ना मा)
२ देखो 'वाक्य' (रू भे)
उ०—तो 'केहर' कहिजै सताव, वाइक विगताळा । कूदि पडा गज कटहडा, चढि गोख विचाळा । —सू प्र
३ देखो 'वायक' (रू भे)
वाइकचर—स पु. [स. वाक्य+चर] श्रवण, कान । (ह ना मा.)
रू भे.—वायकचर ।
वाइड, वाइडि—देखो 'वायड' (रू भे)
वाइडियौ—देखो 'वायडियौ' (रू. भे)
उ०—मेळौ कहै—मिखराजी ! हू तो वाइडियौ छूं । कह्यौ— उठौ ठाकुर अमल करौ । —ऊदे उगमणावत री वात

वाइडौ—देखो 'वायडौ' (रू. भे)
वाइणौ, वाइवौ—१ देखो 'वावणी, वाववौ' (रू भे.)
२ देखो 'वाजणी, वाजवौ' (रू भे.)
उ०—अकस्मात् नक्षत्रमाला अदृश्य थइ, विली वाउ वाइवा लागा, तलानी माटी ऊपरि आणइ । —व. स
वाइदौ—देखो 'वादौ' (रू भे)
वाइन—स पु [अ] शराब ।
वाइफ—सं स्त्री [अ.] पत्नी, जोरू, स्त्री ।
वाइमल्ल—स पु.—वादियो मे मल्ल ।
उ०—मिगसर वदी छट्ठ प्रभारइ, मिलिआ पतिसाह संघातइ । वाइमल्ल बोलायउ पिछांणी, साहि बान सहु गुदराणी । —कवि कनकसोम
वाइयोडौ—१ देखो 'वाजियोडौ' (रू भे.)
२ देखो 'वावियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वाइयोडी)
वाइर—देखो 'वैर' (रू. भे)
उ०—कहियौ जी म्हारा घर सु उठीया म्हारी वाइर थानूं मूकिया तै म्हारी वडाई । —चौबोली
वाइरियौ, वाइरौ—देखो 'वायरौ' (अल्पा, रू. भे)
वाइरौ, वाइलउ—देखो 'वायरौ' (रू भे) (उ र)
वाइस—१ देखो 'वायस' (रू भे)
उ०—ढोला, मिळिमि म बीसरिसि, नवि आविसि ना लेसि । मारू-तणइ करकडइ, वासइ ऊडावेसि । —ढो. मा.
२ देखो 'वाईस' (रू भे)
वाइसचांसलर—स पु [स] किसी विश्व विद्यालय का उपकुलपति ।
वाइसचेयरमेन—स पु [अ] १ उपसभापति ।
२ उपाध्यक्ष ।
वाइसप्रेसिडेंट—स पु [अ] १ उपराष्ट्रपति ।
२ उपाध्यक्ष ।
वाइसराय—स पु [अ] अग्रेजी शासन-काल का भारत का सबसे बडा शासक, जो सम्राट का प्रतिनिधि होता था ।
वाइसौ—देखो 'वाईसौ' (रू. भे)
वाईटौ—देखो 'वाइटौ' (रू भे)
वाई—स. पु—युवा बैलो को कृषि कार्य व गाडी खीचने के लिये शिक्षित करने की क्रिया ।

२ उक्त क्रिया से शिक्षित बैल ।

उ०—वाई पय प्रायै हुवै, चचल गति तिण नाहि । राय कहै वछ माहरै, तु वसीयो मन माहि । —वि. कु

क्रि प्र —करणी, काडणी ।

३ देखो 'वादी (रू भे)

रू. भे —वाई, वाइ ।

३ देखो 'वायु' (रू भे)

उ०—सकसै का जैत वार, अकसै का वाई । रहणी मैं जोगेस्वर, बहणी मैं जगदीस । —रा. रू.

वाईदडो—देखो 'वायडो' (रू भे.)

वाईसी—देखो 'वाईसी' (रू भे)

वाउ—देखो वायु' (रू भे) (उ र)

उ०—१ झिलै राग वागा मुठी वाउ झल्लै । चतुरवाह रा रत्थ ज्यू पत्थ चल्लै । —वचनिका

उ०—२ वनिता समई न वेदना, करता कोडि उपाय । वाउ विलोलइ वीजणइ, को चदन घसी लाय । —मा का प्र.

उ०—३ हेमत रित लागी पछिरो वाउ फिरियो । उतराधो वाउ, बाजियो । —रा सा. स

वाउकाय–स पु —वायु के जीव, वायु मे रहने वाले जीवाणु ।

उ०—जद स्वामीजी कह्यो—ओ पाणी कठै पडसी ? जद तिण कह्यो—हेठै पडसी । स्वामीजी कह्यो—इहा पाणी पडता वाउकाय आदि जीवा री अजयणा व्है । —भि द्र

वाउचर–स पु [अ] हिसाब के ब्योरे का कागज, प्रमाणक ।

वाउदेवता—देखो 'वायुदेवता' (रू भे)

उ०—लका राजधानि त्रिकुट परवत गढ जीणइ अत्यु बाधी पातालि घालिउ, नवग्रह खाट तणइ पाईइ बाध्या, वाउ-देवता आगणउ बुहारइ, चउरासी देव छ डउ देइ । —व स.

वाउमडळ—देखो 'वायुमडळ' (रू भे)

उ०—मिटतै खूरम 'भीमेण' अत दिन मछर, विढै वीछोडिया खागवाहे । पडै गज सबळ धरमडळ ऊपरा, मिळै गज-कमळ वाउमडळ माहे । —चतरौ मोतीसर

वाउल —१ देखो 'वयूळो' (मह., रू भे) (उ र)

२ देखो 'वावळ' (रू भे)

३ देखो 'वावळ' (रू भे.)

वाउलउ—१ देखो 'वावळो' (रू भे.) (उ र)

२ देखो 'वावळ' (अल्पा , रू भे)

वाउळि, वाउळी —१ देखो वावळी' (स्त्री) (उ र.)

२ देखो 'वावळी' (रू भे)

३ देखो 'वावळ' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—१ जीव जजालै उलझ्यो ज्यू जोगि जटा, पाचै पाम मझार ज्यूं भोमर मे भटा । नाणै मन मे धरम करै साटा नटा, घेरी ज्यासै काल जेम वाउळि घटा । —ध व. ग्र

उ०—२ केसरि कथन्न साभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागइ वहन्नि । 'वीका' हर राजा ए वखाण, जाळोवळि सीतउ ध्रित जाण । —रा ज सी.

वाउलीउ—देखो 'वावळ' (अल्पा , रू भे)

उ०—वालु नड वेलानइ, वेढ वेतस वाणि । यघ्राग वाहलु लीउ, वाउलीउ वखाणि । —मा का. प्र

वाउळो, वाउलो –१ देखो 'वावळो' (रू भे.)

उ०—सरसती न सूझै वाउवा हुओ कि वाउळो । मन सरिसो धावतो मूढ मन, पहि किम पूजै पागुळो । —वेलि

२ देखो 'वावळ' (अल्पा , रू भे)

(स्त्री वाउळि, वाउळी)

वाउवौ–वि [स वातिक] वात रोग ग्रस्त (लबार) वाचाल ।

उ०—सरसती न सूझै ताइ त सोझै, वाउवा हुओ कि वाउलो । —वेलि

वाउसू—देखो 'वावसू' (रू भे)

उ०—भारी कटक्क घर धुसइ भारि, आविया वाउसू सरि उतारि । हलहलिय देस हद्दवइ हुवासि, तडवागै पडिया लोक आसि । —रा. ज. सी

वाएक—१ देखो 'वाक्य' (रू भे)

उ०—राइ-वाएक । —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ देखो 'वायक' (रू भे)

वाएरौ—देखो 'वायरौ' (रू भे.) (अ मा)

वाओकळो–स पु [स. वायुस्थलम्] हवादार व खुला स्थान ।

वाक—स स्त्री [स वाक्] १ सरस्वती, शारदा । (ह ना मा.)

२ जिव्हा, जीभ ।

उ०—कमध-अगजी विमनो कहियो, वड दाता कीरत चो वीद । वाक तुहाळो करडो वाळो, काळो कू वाक कासीद । —ओपो आढो

३ वाणी, वचन, वाक्य ।

उ०—विदेह प्रतग्या कहै एम वाक । पुत्री जो वरै सो ज ताणै पिनाक । —सू प्र.

४ आवाज, ध्वनि ।

५ देखो 'वाकौ' (मह , रू भे)

रू. भे —वाक ।

वाकई–क्रि वि. [अ वाकिई] यथार्थ मे, वास्तव मे, वस्तुत ।

रू. भे.—वाकेई ।

वाकचपळ–वि. [सं वाकक्चपल] बहुत बोलने वाला बातूनी, लबार।

वाकप—देखो 'वाकिफ' (रू भे)

उ०—वासा थी साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयी, कावौ अबु मेडतै वरस २ रह्यौ छै, उठा री वाकप छै। —नैणसी

वाकपटु–वि [स. वाक्पटु] बातो मे या बोलने मे चतुर।

वाकपति–स पु [स. वाक्पति] १ बृहस्पति ।

२ विष्णु ।

३ सत्य देवो मे से एक ।

वाकपतिराज–स. पु [स वाक्पतिराज] १ भव भूति का समसामयिक एक कवि जो राजा यशोवर्मा का आश्रित था।

२ सीयक का पुत्र मालवा का एक परमार राजा।

वाकफ—देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

वाकफियत–स. स्त्री [अ वाकफीयत] १ जान कारी, परिज्ञान।

२ अनुभव ।

रू भे—वाकवियत ।

वाकब—देखो 'वाकिफ' (रू भे)

उ०—रतना इमरती सुं भात भात पकी कीवी। भिन भिन वाकब कर दीवी। भात भात री बुराका चढाई, सूवा ने पढावै इण भात पढाई। —र हमीर

वाकबदार—देखो 'वाकिफकार' (रू भे)

वाकबियत—देखो 'वाकफियत' (रू भे.)

वाकबी—देखो 'वाकिफ' (रू, भे)

उ०—अबे करीं ज वाकबी हुगीगत अबेलेनं । प्रचड जूझ मल्लनै बुलाय वीर पानै । —पा प्र.

वाकयौ—देखो 'वाकियौ' (रू भे)

वाकळ–स पु. [सं. वाष्पकल] १ धूए का पानी ।

२ पवार वशोत्पन एक देवी । (बा. दा ख्यात)

[स वल्कल] ३ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—रत्न कम्मल छाइल मकन्ल अराल साउला उग्साला वाला पटुला वाकला घनवेलि । —व स

रू. भे.—वाकळ ।

वाकळा—देखो 'वाकळा' (रू भे)

उ०—वाकळां यळा सोह छोडसी वकायत, वायरा वकायत ठीक वहसी। पखा मत्र न माझी लियो पाप रो, राज मत्र खीलियो थको रहसी । —भेरू दांन बारहठ

वाकवांणी–स. स्त्री. [सं वाकवाणी] १ सरस्वती शारदा ।

२ वाणी।

रू. भे.—वाकवाणी, वाकवानी ।

वाकसाळी–सं स्त्री. [स. वाक्+शालिन्] एक देवी जिसकी वाणी प्रभावशाली हैं।

रू भे.—वाकसाली ।

वाकानवीस–वि. [अ वाकिअ नवीस] १ घटना, वृत्तान्त या हाल लिखने वाला ।

उ०—हलकारा वाकानवीस कुफियानवीस डाक चौक्या अरज लिखे दिन रात।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ इतिहासकार ।

३ सवाद-दाता ।

वाकार–स. स्त्री —१ ललकारने की क्रिया या भाव।

२ ललकार, वीरहाक ।

३ सम्बोधन करने की क्रिया या भाव ।

४ बिरुदाने की क्रिया ।

५ पुकार ।

६ व अक्षर या वर्ण

रू भे.—वकार, वाकार, बकार ।

वाकारणो, वाकारबौ–क्रि स [स. वक्र आकारण] १ युद्ध के लिये ललकारना ।

उ०—१ वेहु तो पेख पतसाह वाकारियौ, टाळ मन करै मन जही टाळियौ। —द. दा.

उ०—२ कर हथनाळ कलाइया दे घनुस टकार। सर गए ऊपर साघनै, वळिया दळ वाकार । —पा प्र.

उ०—३ विळकुळियौ वदन जेम वाकार्‌यो, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि । किसन रुकम अवध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बधि । —वेलि

२ उत्तेजित करना, जोश दिलाना ।

उ०—वयणै वाकरियौ ताम मामी गज केसरी। पवन पूर ऊफणी, जळण जाणै वन अतरि। —गु. रू. ब.

३ आव्हान करना

४ सम्बोधन करना, पुकारना, बुलाना ।

५ प्रशसा करना ।

वाकारणहार, हारौ (हारी), वाकारणियौ—वि० ।

वाकारिअोड़ो, वाकारियोडौ, वाकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाकारीजणो, वाकारीजबौ—कर्म वा० ।

वकारणो, वकारवो, वाकारणौ, वाकारवो, भकारणौ, भकारवो भखारणो, भखारवो, वकारणो, वकारवो —रू भे

वाकारियोड़ो–भू का कृ —१ युद्ध के लिये ललकारा हुआ. २ उत्तेजित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आव्हान किया हुआ ४ सम्बोधन किया हुआ, पुकारा हुआ, बुलाया हुआ ५ प्रशंसा किया हुआ।

वाकावत–स. पु —कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति —बा दा ख्यात

वाकिफ–स स्त्री. [अ] १ जानकारी, खबर, पता।

२ ज्ञान, अनुभव।

वि —१ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू भे.—वकूफ, वाकप, वाकफ, वाकब, वाकबी।

वाकिफकार–वि [अ वाकिफेकार] १ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू भे —वाकबदार।

वाकिमि—१ देखो 'वाकम' (रू भे)

उ० —नर समद साहण समद नरियद। जुधि मयद वाकिमि विंद राजिंद। —ल. पि

वाकियो–सं पु. [अ वाकिअ] १ कोई घटना, दुर्घटना।

२ वृत्तान्त, हाल, चर्चा।

३ समाचार, खबर।

रू —वाकूओ, वाकयो, वाको।

वाकी—देखो 'बाकी' (रू. भे)

उ०—१ धरिया तन का क्या गुमान है, जम सूं कुण वाकी। —केसोदास गाडण

उ०—२ तद कुंवर कह्यो, कई तो मरदार था, वैर तो बडो पडियो। इब जाणा हा ततो पूठो कर वाकी रा काहिणू जावण देवा हा। —कुवरसी सांखला री वारता

वाकुंडिम–स स्त्री —सर्प की कचुकी ?

उ०—अवसरि सूंआलइ गीत गाइ, मामउ जोइ फण मडावइ, सरीर नी वाकुटिम छडावइ इमा गारुडी। —व स

वाकुम–स. पु —वृक्ष विशेष।

उ०—घडवालु नइ कुणि बली, वास वणसरी वेलि। वाकुमा वाधइ भला, वकुल अद्धतर वेलि। —मा. का प्र

वाकुंमीय–स पु —कद विशेष।

उ०—अमर कद आद् अला, सूरण रोफ रताल। वच्छनाग वाकुमीया, भेडागारी भालि। —मां का प्र.

वाकुर–स पु —चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। —बा. दा ख्यात

वाकेई—देखो 'वाकई' (रू भे)

वाको–वि [अ वाकिअ] १ जो घटित हो चुका हो।

२ घटित होने वाला।

३ देखो 'वाकियो' (रू. भे.)

उ०—१ सयदा (ण) इम साजिया, उडै वाका अणथाहै। सुणै वहादरसाह, मगळ अजळै उर माहै। —सू प्र

उ०—२ वाको भूठो अक्खियो, दक्खण गयो सदूर। आप वडाई आप री, आपी साह हजूर। —रा रू.

उ०—३ जवन पखी राजा उर जळिया, फिळवा अनम सुणं बिळ कुळिया। इळ ईरान मकै लग वाको, जवना सुण उर पडै जराको। —रा. रू.

उ०—४ आगरै तखत सू डूंगरो आणता, वळी-वळ लिखाणा जगत वाका। जुहारीसिंघ का वाळिया जगत मे, डाकुवा रूप रा सुजस डाका। —बुधजी आसियो

४ देखो 'बाको' (रू भे)

वाक्य–स. पु. [स] १ ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो किसी एक विचार या आशय को व्यक्त करता हो।

२ भाषण, कथन।

रू भे —वाइक, वाएक, वाइक, वायक।

वाक्यकर–स पु [स] १ एक की बात दूसरे को कहने वाला, सदेश-वाहक, दूत।

वि —बातें बनाने वाला।

वाक्यानवीस–स पु.—मुगल कालीन एक ओहदा या पद विशेष।

वि वि —कभी-कभी सूबे के बख्शी को वाक्यानवीस का कार्य भी करना पडता था, वैसे आम तौर पर इस कार्य के लिए अलग ही अधिकारी रखा जाता था। वह अधिकारी अपनी देख रेख में सूबे भर मे प्रमुख-प्रमुख स्थानो पर यहाँ तक कि सिपहसालार, दीवान, काजी, फौजदार आदि अफसरो के कार्यालयो तक मे सवाद-लेखको और गुप्तचरो को नियुक्त करता था। ये लोग उसके पास प्रतिदिन रिपोर्टें भेजते थे। इन रिपोर्टों का वह सूक्ष्म रूप तैयार करता था और उसे शाही दरबार मे भेज देता था। क्यो कि सम्पूर्ण शासन-प्रबंध की सफलता गुप्तचर विभाग के ऊपर भी बहुत कुछ निर्भर होती है, इसलिये इस ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। कभी-कभी केन्द्रीय सरकार भी अपने सवाद-लेखको

और गुप्तचरो को सूवो और परगनो मे भेजती थी, जो उसी की आज्ञा-आदेशो का पालन करते थे।

वाखर—देखो 'वाखर' (रू भे.)

उ०—१ जिसडे ही रामसिंघजी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीत तिसडै ही मूरछा आइ पडिया। तिसडै गोवळजी सवाहूचा। पेट रो वाखर सहु झळकतो दीठो। —द वि

उ०—२ सुकर धर सर बजर ससतर, गहर हर बह पथर तर गिर। वहर सिर कर देह वाखर। पहर चौसर सुवर अपछर। —र ज प्र

वाखळ—देखो 'वाखळ' (रू भे)

उ०—निकळै मिरडा लार, गठेळी सूकी साकळ। घरकोटा रै घ्येय, पडी लद लकडचा वाखळ। —दसदेव

वाखांण—देखो 'वखाण' (रू भे)

उ०—जस वाखांण राज पछ वाजै, अखिळ भुवेण सुणै इम। राणा अवर घणा दिन रहसी, जुग जुग पगी चग जिम। —राणा जगतसिंह री गीत

वाखाणण—देखो 'वखाणण' (रू भे)

वाखाणणो, वाखांणबो—देखो 'वखाणणो, वखाणबो' (रू भे.)

उ०—१ पनरै तेरैह मत्त पय, छद उल्लाल पिछाण। रघुनाथ सुजस सो छद रच, बीदग मुख वाखाणजै। —र ज. प्र

उ०—२ दीना लका जे हाथा न कजै दीधा जग सारो जाणै। वेदा भेदा धाता वीठळ, वारवार रटै वांखाणै। —र ज प्र

उ०—३ दुभ्कडा रायपाळा दुभ्कळ, वयळ धरा सिर दुद वण। ऐ कहै करी लग भ्कट इसी, रवि वाखाणै हाथ रिण। —सू प्र

वाखाणणहार, हारो (हारी), वाखाणणियो—वि०।

वाखांणिओडो, वाखाणियोडो, वाखाण्योडो—भू० का० कृ०।

वाखाणीजणो, वाखाणीजबो—कर्म वा०।

वाखाणियोडो—देखो 'वखाणियोडो' (रू भे)

(स्त्री वाखाणियोडी)

वागबर—देखो 'वाघवर' (रू भे)

वाग—स स्त्री—१ मोट की सूड के नीचे का वह भाग जिमके रस्सी वाधी जाती है।

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—वाछडिया रा वाग चरावै चढ चढ घोरा। गाया एवड ग्वाळ अगीरै रागा छोरा। —दसदेव

३ देखो 'बाग' (रू भे)

उ०—१ ऊपडी धाग "अरजण" हरो, सूर धीर सत आगळै। तिण दीह रहै 'डूगर" तणो, राघव भाटी रिण खळै। —गु रू व

उ०—२ वाग धरि करि ताजणउ, राग-तणइ रसि जाइ। आगलि न रहइ आगल्या, पाछै न नु मिलाइ। मा का. प्र.

उ०—३ रोज सिकारा खेलणो, देखै वाग तडाग। हूकळ दळ गज हैवरा, अमरख नरा अथाग। —रा. रू.

उ०—४ सर सरिता वहु वाग सडवर। मझि तिण सिंगी काम चित्र मदिर। —सू. प्र.

उ०—५ लेगो सिध वा त्रिय बुगलाणै, उलट गयो आस्रम आपाणै। सुंदर न्रप चित्रमहल बसाई, वाग चद्रिका जेणि बणाई। —सू. प्र

५ देखो बाज' (५-८) (रू भे)

उ०—१ हुय हुवक किलक्क समुक्ख हला, भयंकार घडी वण वार भला। सिर ढाल कडक्कड रुक सदै, जिम वाग हडैहड फाग जदै। —रा रू

उ०—२ रंग राग वाग अगराग सू न रीजै, पातिसाह महमदसाह चिंता मैं छीजै। —रा रू.

वागड—स पु.—१ डूगरपुर-बासवाडा प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

उ०—१ ऐ रावळ करन रै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण माहे राहप राणा रा चीतोड धणी। रावळ माहप रा वागड धणी। ऐ सदा चीतोड रा राणा री चाकरी करता। पछै सै दिल्ली रा पात-साहा सूं पिण रजूआत राखै छै। वागड नू गाव ३५०० सै लागै। आधा डूगरपुर वासै आधा बासवाहळा वासै हुवा। पेहली तो ठकुराई डूगरपुर मुदै हुती। पछै सू रावळ उदैसिंह गागै रै सूधी तो वागड एक छत्र भोगवी। —नैणसी

उ०—२ वागड देस विदरा गर नाम, जिहा खट दरसन ना विस्राम। राजधानी नु रुडउ ठाम, देस मध्य गिरि पुर वली गाम। —जय विजय मुनि

२ वर्त्तमान शेखावाटी तथा बीकानेर-वाटी से मिले हुए प्रदेश (हिसार) का पुराना नाम।

उ०—१ सोडस ज्वर लक्षण सहित, औसध क्वाथ बखान। कह्या वागड देसाधिपति, न्रप स्री दउलतीग्यान —दुउलति विनोद सार

उ०—२ वीरा वागड लाट करणाट। —धरम पत्र

३ एक वैश्य जाति।

उ०—सोनी नइ सुतार पणि, आगड वागड वस। तेली तबोली वली, दोमी उपरि हस। —मा. का प्र

४ सादर का विपर्याय, एक प्रकार का भू-भाग जो अपेक्षाकृत ऊंचा व कम आबाद होता है, पठार।

उ०—नित वरसो, मेहा वागड में, मोठ बाजरी वागड निपजै। गेहूडा निपजै सादर मे, नित वरसो मेहा, वागड मे। —लो. गी.

५ कच्छ राज के एक भू-भाग का नाम।

६ देखो 'बगड' (रू भे.)

उ०—जोवन कारमौं रै वीहांणै उठ जासी, आदर भजन तणौ अभियास। प्रांणिया न आवै कदै प्रामणी, वळै न वींजै दागट वास। —ओपो आढौ

रू. भे —धागड, वागड, वागर, वाघड, वागर।

अल्पा —वागडियौ।

वागडणौ, वागडवौ—क्रि. अ —चलना, फिरना।

उ०—भागूडदि भूत जोगण गण भैरव, आगूडदि अमर अपछर गण आण। पागूडदि प्रवळ परचर पुर पेखत, वागूडदि व्योम सुर-छाया विमाण। —र रू

वागडणहार, हारौ (हारी), वागडणियौ—वि०।

वागडिओडौ, वागडियोडौ, वागडयोडौ—भू० का० कृ०।

वागडीजणौ, वागडीजवौ—भाव वा०।

वागडणौ, वागडवौ—रू० भे०।

वागडिया—स. स्त्री —चौहानो की एक शाखा।

रू. भे —वागडिया।

वागडियौ—वि —१ वागड का, वागड सम्बन्धी।

स पु —१ वागड प्रदेश का निवासी।

२ वागड जाति का वैश्य।

३ रहट की माल मे छोटी-छोटी काष्ठ की कीलिया लगाने के समय माल को स्थिर रखने के लिये लगाई जाने वाली मोटी कीली, कील।

४ वागडिया जाति का चौहान।

रू. भे.—वागडियौ।

वागडौ—स पु.—१ चौहान राजपूत वश की एक शाखा।

उ०—डाहळिया री छापर वडी साहिवी थी। नै वागडी रजपूता री भोम नागोर थी। —नैणसी

२ बावरियों के समान एक जगली जाति विशेष जो खेतो की रखवाली का काम करती है।

३ इस जाति का व्यक्ति।

रू भे —बागडी।

वागडोर—देखो 'वागडोर' (रू भे)

उ०—१ करै पोस जरकसी, कडी सोव्रन कोतल कसि।। वागडोर रेसमी, तरह पचरग घरै तसि। —सू प्र

उ०—२ जीण माडजै छै। केसवाळी रग-रग री गुथजै छै। अगाडी-पछाडी खोलजै छै। रेसम री वागडोरा सूं आण हाजर कीजै छै। किसा हेक घोडा छै? वैंपत भला, ऊचा अलला, कटोरनखा, आरसी सारीखा। —रा सा स.

वागढाल—स. पु.—घोडे की लगाम को ढीली करना, विश्राम करना।

उ०—घोडा रा तग ढीला करौ, वागढाल करीजै, माहे थाहरो चोर छै तो अवै जाय कठै ही नही। —राव रिणमल री वात

वागणौ, वागवौ—१ देखो 'वाजणौ, वाजवौ' (रू भे)

उ०—१ लाल वदन अवर सिर लागो। विक्रमादित जवना हू वागो। —सू प्र.

उ०—२ असुर हणै अद वणै अथागा। वर मिथकरि मैंगोदा वागा। —सू प्र

उ०—३ चारण अहि चोवार, सम्र मारण अवमाण सिघ। वागो डाकण 'वेणुउत' सिरदाग सिरदार। —वचनिका

उ०—४ हुवौ अति सीधवौ राग, वागो हका। थाठ आया विसण घाट लागै थका। —हा झा.

उ०—५ जोम गाडावाळी प्रळय काळा री उनागी जठै। वागी हाडावाळी नराताळ री वांणास। —दुरगादत्त बारहठ

उ०—६ आडौ अडि एकाएक आपडै, वाग्यौ एम रुसमणी वीर। अवळा लेइ चणी मुंह आयौ, आयौ हूं पग माडि अहीर। —वेलि

उ०—७ धीरवत कुवर नै निरखी, धीवर पाइ लागा। स्वामी पर्णं याप्यौ सहु मिलनै, जस ना वाजत्र वागा। —वि. कु

उ०—८ गावय वयराडी रागइ, आलापइ स्त्री सग आगइ। वासुरी मधुरी वागइ, सुख पावइ सयण। —स. कु.

३ देखो 'भागणौ, भागवौ' (रू भे.)

वागणहार, हारौ (हारी), वागणियौ—वि०।

वागिओडौ, वागियोडौ, वाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वागीजणौ, वागीजवौ—भाव वा०।

वागमी—देखो 'वाग्मी' (रू भे) (अ. मा, ह ना मा)

वागर—स पु [स] १ विद्वान पडित, गुणी।

२ ऋषि, मुनि, महात्मा।

३ शूरवीर, योद्धा।

४ देखो 'वागड' (रू भे)

उ०—जवू द्वीप देस तहा वागर, नगर फतेहपुर नगरा आगर। आसि पासि तहा सोरठ मारू, भासा भल्ली भाव पुनि सारू। —रूपवती

३ देखो वागर' (रू भे)

वागरवाळ—वि [स वाग्वर-पालक] कवि, विद्वान, पडित।

उ०—१ ढाढी गुणी वोलावियां, राजा तिणही ताळ। नरवर गढ ढोलइ-कन्हेइ, जावउ वागरवाळ। —ढो. मा

उ०—२ वागरवाळ विचारीयउ, ए मति उत्तिम कीध। साल्ह-महल हू ढूकडा, ढाढी डेरउ लीध। —ढो मा.

वागरी—देखो 'वागरी' (रू. भे.)

उ०—घर चगी, नर चोरटा, वागरियां रे वेस । भालडिया घिसता फिरै, प्रइ हो प्रावू देस । —अग्यात

वागळ—देखो 'वागळ (रू भे)

उ०—कोचर प्रर चमचेरा वागळ, श्रोर उलूक प्रग्याना हो । इनके रवी द्रस्टि नहिं प्रावै, तम का इन कू ग्याना हो ।
—स्री सुखरामजी महाराज

वागळी, वागली—१ देखो 'वागळी' (रू. भे.)

२ देखो 'वागळ' (रू. भे)

उ०—वील्हा वायस विंभला, प्रागलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ वागली, ते ऊघी टंगाय । —मा का. प्र.

वागवांणी—स स्त्री [स वाग्वाणी] सरस्वती, शारदा ।

उ०— 'नाल्ह' रसायण नर भणइ, राजा रह्यो उडीसई जाय । वागवांणी मो वर दीयो, प्रस्त्री-रसायण करू वखाण ।—वी दे.

वागसणो, वागसबो—देखो 'वकसणो, वकसबो' (रू भे)

उ०—धनुस धरण प्रवगुण नह धारै, सरण सधार कहै जग सारै । वागसै तनै गुणी इण वारै, चित प्रयणी जो विरद विचारै ।
—र रू.

वागसणहार, हारो (हारी), वागसणियो —वि० ।

वागसिग्रोडो, वागसियोडो, वागस्योडो—भू० का० कृ० ।

वागसीजणो, वागसीजबो—कर्म वा० ।

वागसियोडो—देखो 'वकसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वागसियोडी)

वागासपूर—देखो 'वागासपूर' (रू. भे)

उ०—वाटका पोड वजर समान, घाटका नळी मिघोटवान । सुभ लछा प्रछा वागासपूर, लागा स रान वच्चा लगूर । —पे रू

वागाइत, वागायत—देखो 'वागायत' (रू भे)

वागी—देखो 'वागी' (रू. भे)

उ०—साहजादो खुरम पातसाह जहागीर सूं वागी हुवो ।
—वा दा ख्यात

वागीचौ—देखो 'वगीचौ' (रू. भे)

उ०—फव हार घार घण फरहरत । वागीचा चादर जळ वहत ।
—सू प्र.

वागीस—स पु. [सं वागीश] १ ब्रह्मा ।

२ वृहस्पति ।

३ कवि ।

४ वक्ता ।

वागीसा—स स्त्री. [स. वागीशा] सरस्वती ।

वागीस्वर—स पु. [स वागीश्वर] १ ब्रह्मा ।

२ वृहस्पति ।

३ कवि ।

वागीस्वरी—स स्त्री [स वागीश्वरी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ एक रागिनी विशेष ।

३ एक महाविद्या ।

रू. भे —वगेसरी, वगेस्वरी, वागेसरी, वागेसुरी, वागेस्वरी, वगेसरी, वगेस्वरी, वागेसरी, वागेस्वरी, वाघेसुरी, वाघेस्वरी ।

वागुर, वागुरि, वागुरी—स. स्त्री. [स वागुरा] १ फदा, जाल ।
(ऊ. र.)

उ०—१ लागी त्रिहुँ करे धूयणे लीधं, केस पास मुगता करण । मन-म्रग वै कारणै मदन वी, वागुरि जाणै विसतरण ।
—वेलि

उ०—२ हस गतइ चालती, गज गतइ माहालती, काम कांमनी पालती, प्राखिनइ मटकारइ मदन नी वागुरा घालती कस्तूरी प्रल-कृत भाल पट्ट, तरु (ण) तणा भाजइ मरट्ट । —व. स.

स. पु [स. वागुरिक] २ वहेलिया, शिकारी, चिडीमार । (ऊ. र.)

वागुळि—स. स्त्री. [सं. वल्गुलिका] १ मजूषा, पेटी ।

२ पिटारी ।

३ कत्थई रग का पतग जाति का कीट, तैलपायी । (ऊ. र.)

वागेलौ—स पु —गायो का समूह ।

रू. भे.—वागेलो ।

वागेसरी, वागेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे)

उ०—१ कमळापति तणी कहेवा कीरती, प्रादर करै जु प्रादरी । जाणै वाद माडियो जीपण, वागहीण वागेसरी । —वेलि

उ०—२ वारुणी दारुणी भास्करी, सकरी जया विजया घोरा कौवेरी प्रवाही मदनसेना बलमथनी गौदिनी पेसानी वागेस्वरी सिद्धावी प्रजरामरा इत्यादि महा विद्या । —व. स.

वागोल—देखो 'वागोल' (रू. भे.)

वागोलणो, वागोलबो—देखो 'वागोलणो, वगोलबो' (रू भे)

उ०—वो हेळै होळै हालतो वखारी रै प्रडोप्रड पूगग्यो । वखारी रै प्रेक वाजू प्रेक भैंस ऊभी वागोलती ही । वो भैंस रै पाखती ई रूई बाघण सारू प्रापरो खेसलो विछायो । —फुलवाडी

वागौ—देखो 'वागो' (रू. भे)

उ०—१ वेहद हद वागै वणाव, चम्मीर हीर जामै जडाव ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ सो माथा पर किलगी अने सेवरो केसर में रंगिया दकूल-कपडा वागो केसर मे रग दो आप रा सिरदार ने कहे ।
—वी स. टी

उ०—३ वागा वेस सोहामणा, मुखरण मोती माळ । कनक कचोळा जडावरा, सुंदर सोवन थाळ । —ढो. मा

उ०—४ पाग विण प्रीतम कहे, तपइ सूयण पाय । वागो कीनो अरगजो, सुंदर नें वहोत सुहाय । —व स

वागेयकार–स पु —सगीत एव पद रचयिता ।

वाग्देवी–स स्त्री [सं वाक्+देवी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ वाणी ।

वाग्दोस–स. पु [स. वाग्दोष] वोलने मे व्याकरण सम्बन्धी त्रुटी ।

वाग्भट्–स. पु. [स.] अष्टाग सहिता नामक वैद्यक ग्रथ का रचयिता ।

वाग्मिता–स स्त्री —वाक पटुता ।

उ०—दान दुरभिक्षे, पौरुस रणे, स्त्री सील सगमे, धोरेय पथे, वाग्मिता सदसि, साहस दुरदासोय, मित्र व्यसने, कलत्रमायदि, पुत्री प्रद्धस्वे ग्यायते । —व. स.

वाग्मी–स पु [स वाग्मिन्] १ वृहस्पति ।

२ वाकपटु-व्यक्ति ।

वि —१ वाकपटु, अच्छा वक्ता ।

२ बातूनी, वाचाल ।

३ वहुवादी, वहुत वोलने वाला ।

४ पडित, कोविद ।

५ कवि ।

वाग्युद्ध–स पु. [स] १ केवल वोली से ही की जाने वाली लडाई, जबानी-झगडा ।

२ पुरुषो की वहत्तर कलाओ मे से एक ।

वांघवर—देखो 'वाघवर' (रू भे)

उ०—गज अंत्रराळ हणा अणगिणिया । वाघवरा चीर सिर वणिया । —सू. प्र

वाघ—१ देखो 'वाघ' (रू. भे.) (उ र, अ मा)

उ०—१ विण जुध कारण, वाघ रै दूजो नावै दाय । एक अनेका ऊपरा, जुल्म करेवा जाय । —वा. दा.

उ०—२ सरप वाघ गज रीछ सरीखा, तुंड कुदाळ मगर सम तीखा । —सू प्र

उ०—३ हाका पीथळ हाक हक, हथपाह हडदै । वाघण व्याई वेढ मे, कुण दूर करदै । —पा. प्र

उ०—४ दरपइ दीठइ ठोरडइ, साप न आणइ सक । वीहइ विलाडा-वच्चडइ, वाघिणी वालाइ वक । —मा का. प्र.

(स्त्री वाघण, वाघणी, वाघिणी)

२ देखो 'वाग' (रू भे)

वाघचव, वाघचरम—देखो 'वाघचरम' (रू. भे)

उ०—जठा मुगट माहि गंगा दीठी, अगि भसमीअ धूल । वाघचव पागुरणे दीठा, दीठउ वळी त्रिसूळ । —का. दे. प्र.

वाघनख, वाघनखी—देखो 'वाघनख' (रू. भे)

वाघनखो —देखो 'वाघनखो' (रू भे)

वाघमुखी, वाघमुखो—देखो 'वाघमुखो' (रू भे.)

उ०—वड चख ऊजळ वरन, स्रवण मोती वंद्रज । मुगता फळ गळ मई, कडा कर वाघमुखा कज । —पा प्र.

वाघमूत—देखो 'वाघमूत' (रू. भे.)

वाघूळ–स पु [स. वाह=पानी+धूल] १ वादल, वारिद ।

उ०—तूल जिम उडै खळ थूळ गुरजां तडछ, झूळ चवसठ लगो लेण झपा । सूळ घमकावता फिरै बावन सुभट, स्याम वाघूळ विच जाण सपा । —वालावक्स पाल्हावत

२ वात-चक्र ।

वाघेल—१ देखो 'वाघेल' (रू. भे)

उ०—डड लिया झाला दूर चूडासमा वल चूर । वाघेल गोहिलवाड, रस कीध घाट वराड । —रा रू

वाघेला—देखो 'वाघेला' (रू भे) (वा दा ख्यात)

वाघेलो—देखो 'वाघेलो' (रू भे)

वाघेसुरी, वाघेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे)

उ०—मोर चढै खळ मारणी, महिप चढै भालाण । वाघ चढै वाघेस्वरी, नाग चढै नागाण । —पा. प्र.

वाड–स स्त्री —१ आड, ओट

उ०—१ वावै दयाणे भोजाया री वाड । —पावूजी रो पवाडो

२ देखो 'वाड' (रू भे.)

उ०—१ वाघ करै नह काट वन, वाघ करै नह वाड । वाघा रा वधवाव सू, झिलै अगजी झाड । —वा दा.

उ०—२ दिवी भोलावण तुम नै घणी, प्रदेसे चाल्यो मुझ धणी । घर हूंती किम उठै धाड, चीभडला किम खायै वाड ।
—घ व. प्र

उ०—३ वैर हमेस विसावणा, वाड विना वसणोह । वाधा रै क्यूंकर वणै, आरण आळसणोह । —वा दा.

वाडणी, वाडबौ—देखो 'वाडणी, वाडवौ' (रू भे)

वाडमेय—देखो 'वाडवेय' (रू भे) (अ. मा)

वाडलियौ—देखो 'वाडलौ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—महडा तौ वाडलिया म्हारै घर घणा रे, लजा ओठीडा ऐ लौ। खूट्या टक्या नवसरहार वाला जी। —लो गी.

वाडली-स स्त्री —देखो 'वाडलौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—तिमणियै रै वाद आई वाडली, कातरिया नै कडोलिया री बारी। —रातवासो

वाडलौ—देखो 'वाडलौ' (रू भे)

वाडव, वाड़वा—१ देखो 'वाडव' (रू. भे)

उ०—१ वदन तेज कळपत रौ वयळ वाडव वर्णं, ऊफणै क्रोध पोरस अमामो। मडाणो हेक राजा घणै मछर सू, साहजादा दहू तणै सामो। —महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—२ देवी कूरम रे रूप तू मेर पूठी। देवी वाडवा रूप तू आग ऊठी। —देवि

२ देखो 'वडवा' (रू भे)

वाडवाग, वाडवाग्नि—देखो 'वडवाग्नि' (रू भे.)

उ०—१ भूम वहतौ को जण भाळै, वाडवाग निफ समद विचाळै। —रा रू

वाडवामुल-स पु—पाताल। (ह ना मा)

वाडवेय, वाडिमेय, वाड़िवेय-स पु [स वाडवेय] १ बैल,

२ साड। (ह ना मा)

रू भे—वाडमेय, वाडमेय।

वाडि—देखो 'वाडी' (रू भे)

उ०—नोबत टकोरा पडि नै रहिआ छै वाहरि डेरा कीआ छै। असपका खडी हुई छै। तबू समीआणा सिराइचा, रावटी, वाडि समेत करणाटी, गूहर ताणीआ छै। —रा सा. स

वाडियौ—देखो 'वाडियौ' (रू भे.)

२ देखो 'वाडौ' (अल्पा., रू भे.)

वाडी—देखो 'वाडी' (रू भे)

उ०—१ सखि ए साहिब आविया, मन चाहदी मोइ। वाडी हुवा वधामणा, सज्जण मिळिया सोइ। —ढो मा

उ०—२ सत्तम प्रहरै दिवस कै, घण जु वाडिया जाइ। आणै द्राख-विजोरिया, घण छोलइ, प्रिउ खाइ। —ढो मा

उ०—३ वे अरथ छाह पथी विरथ, हेत कपट हरियावळी। मोकमा कमध मोटा मिनख, वाडो फूली रावळी —अरजुणजी वारहठ

उ०—४ नवाव खानजानो सारा वेहा हुता इण री बीगटीयो कुही नही। सारा री खबरदार बीच नायक वाडी फिरता था। पोहोर २ पछै सारा उमराव आया तठै दळथभण नाम पायौ। —नैणसी

वाडोटियौ—देखो 'वाडौ' (अल्पा, रू भे)

वाडौ—देखो 'वाडौ' (रू भे.)

उ०—सूवरा रै, आयै माल वधाया सूं वाडौ एवड री गळाई भरीजग्यो हो। —फुलवाडी

वाच-स स्त्री [स वाक्] १ सरस्वती का एक नाम।

२ जिव्हा। (अ मा)

३ वाणी, शब्द, ध्वनि, वचन।

उ०—१ इम वाच ज्वाव 'अभमाल' रा, धरि अजागि वळधाखियौ। घ्रत जेम आग सींची घणूं, उरस लाग उपडाखियौ। —सू प्र

उ०—२ खावौ—विलसौ भोगवौ, जो जग माहै किम जाणौ साच। स्वाद अछै इण वात मा, इम जपइ हो ते अद्धा वाच। —वि कु

उ०—३ काचा कुभ ज्यू काया जाणै, परायी छठी जागै। रिहतौ तेज, भूखियौ लोह लिया रहै, काछ-वाच निकळंक।—रा सा स.

४ बयान, वर्णन, उल्लेख।

५ वादा, कौल, वचन।

उ०—वाण पत्य बलि भीम, जिसी अहंकार हि रामण। जिसौ वाच जुजठिल्ल, जिसौ माणाहि द्रोजोवण। —गु रू व

६ प्रतिज्ञा, प्रण।

उ०—१ जाय पूछ्यौ महल में, राणी भाल्यौ साच। पदमणि परणेवा सही, चाल्यौ पालण वाच। —प च चौ

उ०—निस प्रथम जाम आलोभ नर, दारण 'सोनागिर' दुरग'। कर वाच वाद अकवर कुसळ, 'वीद' हुरै समिया विहग। —रा रू.

७ यश, कीर्ति। (ह ना मा.)

८ प्रशसा, स्तुति।

उ०—जिका भला धन जोडियौ, ऊपभियौ निज आच। कीरत पोहरै करन रै, वीदग ऊठै वाच। —बा. दा.

९ मछली।

१० मदन नामक, पौधा।

[अ] ११ घटिका, घडी।

१२ देखो 'वरस' (रू भे) (ह ना मा)

रू भे—वाच।

वाचक-वि [स] १ कहने वाला, बोलने वाला।

२ बताने वाला, बोध कराने वाला।
३ वाचन करने वाला, पढकर सुनाने वाला।
४ साधक।
उ०—माया कथा मिळै नहिं माया, यूं वाचक तत कूं नहिं पाया। दरद मिटै नहिं कोई। —स्त्री सुखरामजी महाराज
५ द्योतक, सूचक, प्रतीक।
[स. वाचिक] ६ वाणी सम्बन्धी।
७ शाब्दिक।
८ मौखिक।
स पु [स वाचक] १ वक्ता, व्याख्याता।
उ०—वाचक ग्यानी बुगल बराबर। लक्ष हंस रहता सुख सागर, हीरा चुण चुगोई। —स्त्री सुखरामजी महाराज
२ व्यंजक शब्द।
३ पाठक।
४ सदेशवाहक, दूत।
५ समाचार, सदेश, खबर।
६ भाषा विज्ञान के अनुसार तीन प्रकार के शब्दो मे साक्षात्-अर्थ बोधक शब्द, नाम, सज्ञा।
रू. भे —वाचक, वाचिक, वाची।

वाचकधरमलुप्ता—स. स्त्री. [स वाचकधर्मलुप्ता] १ एक प्रकार की उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो। लुप्तोपमा।

वाचकलुप्ता—स स्त्री [स.] उपमा अलकार का एक भेद जिसमे उपमा-वाचक शब्द लुप्त होता है।

वाचकवर—स पु —उपाध्याय वर्य।
उ०—तस सतीरथ्य वाचकवरू रे, हरस कुसल सुजगीस। —वि कु

वाचकोपमानधरमलुप्ता, वाचकोपमानलुप्ता—स स्त्री [स वाचकोउपमानधर्मलुप्ता] उपमा अलकार का एक भेद जिसमे वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनो लुप्त हो, केवल उपमेय हो।

वाचकोपमेयलुप्ता—स स्त्री [स वाचकोउपमेयलुप्ता] उपमा अलकार का एक भेद जिसमे वाचक शब्द व उपमेय का लोप हो।

वाचडवायो—देखो 'वाछडवायो' (रू भे.)

वाचणो, वाचबो—देखो 'वाचणो, वाचबो' (रू भे) (उ. र)
उ०—१ स्री सुविहाण दीवाण सू हुकम फुरमायो, सेर विलद गुजरात राज ठहरायो। दिली को नाम सुण कमान कूं खाचै, मोरे फुरमाण हासी तें वाचै। —रा रू
उ०—२ कारज कहीयै एह विसेस, हीयडै धरीज्यो वाची लेख —वि कु
उ०—३ अगा नैणी वाचजो, सैणा पत्र सनेह। वैणा हीये वरतजे, नैणा हुवी नेह। —अग्यात

वाचणहार, हारो (हारी), वाचणियो—वि०।
वाचिओडो, वाचियोडो, वाच्योडो—भू० का० कृ०।
वाचीजणो, वाचीजबो—कर्म वा०।

वाचन, वाचना—स. पु [स. वाचन] १ पढ़ने की क्रिया या भाव।
२ पढने का ढग।
३ पठन, पाठ।
उ०—परित्त जेहनी वाचना रे जिनजी, सख्याता अनुयोग। —वि. कु.
४ कथन।
५ घोषणा।
६ प्रतिपादन, व्याख्या।
७ बताना क्रिया।
८ वाक्य, शब्द।
रू भे.—वाचण, वाच्यन।

वाचनालय—स पु [स. वाचन+आलय] वह स्थान या कक्ष जहा समाचार-पत्र, पत्रिका आदि पढने की व्यवस्था हो।

वाचनिकळक—सं पु [स. वाच+निष्कलक] युधिष्ठर।
रू. भे —वाचनिकळक।

वाचवाह—देखो 'बाहबोल' (रू भे)
उ०—कवर कह्यौ—स्री इकलिंग जी री वाचवाह छै, ज्यौ थे कह वाळी कहस्यौ तो परमाण छै। —राव रिणमल री बात

वाचलो—वि. [स. वात्सल्य] प्यार करने वाला, प्रेम करने वाला।
उ०—वीदा तो रण वाचला, वीदा वेर वराह। वीये दळ पयली हुवै, वीदा री हथवाह। —मारवाड रा अमरावा री वारता

वाचसपति, वाचस्पति—स पु. [स वाचस्पति] १ वाणी के प्रभु देव गुरु बृहस्पति की उपाधि। —अ. मा.
उ०—ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्सायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुर वेदायुर वेदादि सास्त्र रत्नसागर कूरचालसरस्वती महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वास। —व स.
२ प्रजापति, ब्रह्मा।
३ सोम।
४ बहुत बडा विद्वान।

वाचा—स. स्त्री, व व [स.] १ वाणी, बोली।
उ०—दाणवा तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपडै विचार। अणभग 'सिवो' खाग ऊपाडै, हालियो लक लगावण हार। —जोगीदान चारण

मुहा–१ वाचा खुलणी=जवान खुलनी, बोलने की शक्ति आनी ।
२ वाचाबद होणी=बोलने की शक्ति समाप्त होना, शारीरिक शक्ति शिथिल पडना ।
३ वाचा वद करणी, (दंणी) निरुत्तर करना, आतंकित करना ।
२ जिव्हा, जीभ । (ह ना. मा)
३ वचन, वाक्य, शब्द।
४ बोलने की शक्ति।
५ वादा, कौल, इकरार ।

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचद । साच के अजातसत्र गात रति विंद । —रा रू

उ०—२ ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ, अन्य उपरि रहै लीण । वाचा न काचा हो जे तुझनइक हइ, ते मूरख मतिहीण । —वि कु

उ०—३ समुद्र कना वाचा लीन्ही, लेय नै छोड दीयौ । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ धरिया न्रप दत्त खाग विरद धज, ग्रह तिण रै इक रग सेतगज । सुणि न्रप सचिव मेल्हिया साचा, वित वहु दियण कहै तिण वाचा । —सू प्र

उ०—५ इतरी सुण देवी कही–वर माग । राजा कही–वाचा पाऊ । देवी कही थ्रि वाचा । —सिंघासण वत्तीसी
७ प्रतिज्ञा, प्रण ।

उ०—१ इण भात 'पतो' रावत अभग, वाचा सिघ आपै वयण । मेवास नास मेलूं मुकर, गुमर धार लागो गयण । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

८ उपदेश ।
९ सिद्धान्त या श्रुतिवाक्य ।
रू भे —वाचा, वाया, वचा, वाया ।
अल्पा ,—वायौ ।

वाचाइ–स स्त्री —चारण वशोत्पन्न वाचा की पुत्री एक देवी ।

उ०—लटीयाळ तू ही लख विरद लैण, वाचाइ घुंघी साच वैण । वैंछरा काळका तू अवाय, मन रंग थळ चाळकनैचराय । —रामदान लाळस

वाचाछळ–वि —किसी के साथ वचन-बद्ध होकर धोखा देने वाला ।
स स्त्री.—चौहानो की एक देवी ।
उ०—चहुवाण धणखरा सारा राव लाखण नाडूळ धणी तिण री पीढी आसराव हुवो । तिणरै घरै वाचाछळ देवी जी आया छा । —नैणसी

वाचाबध–वि [स वाचा+बद्ध] जो किसी प्रकार के वचन, कौल या प्रतिज्ञा मे बधा हो, प्रतिज्ञाबद्ध ।

उ०—चोईसा आखडी चालगा, सु तौ राव ताल्हण । महाराज मागियो सो पायो, वाचावध्री सुरताण पातसाह आयो । —अ वचनिका

रू. भे.—वाचवध, वाचावध, वाचावधी, वाचावद्ध ।

वाचावधन–स. पु [स. वाचा+वधन] १ प्रतिज्ञा या वचन-बद्ध होने की अवस्था या भाव ।
२ वचन बद्धता ।

वाचावद्ध—देखो 'वाचावध' (रू भे)

वाचाळ, वाचाल–वि [स वाचाल] १ जो बोलने मे चतुर हो, वाक्पटु ।

उ०—अधिक वाचाल मछराल स्रीपाल इम, धाव धमसाण हैराण कीधा । घाव ठामे रुहिर विंब धारा पडै, अरि तणा जीव कण काढि लीधा । —स्रीपाल रास

२ जो अपने वचनो पर दृढ हो, दृढ प्रतिज्ञ ।

उ०—साचाळा वाचाळा वोल जगाळा साचा । भीछाळा ए हाळा हालै हाडा रै सुभाव । —सनमान हाडा री गीत

३ बहुत बोलने वाला, व्यर्थ बकने वाला, बकवादी ।
४ उद्दण्डता पूर्ण वहुत बढ बढ कर बातें करने वाला ।
स. पु —बहुत बोलने का एक रोग जिसमे अप शब्द भी बोल दिये जाते हैं । (अमरत)
रू भे —वाकचाळ ।

वाचाळता–स. स्त्री —१ वाचाल होने की अवस्था या भाव ।
२ बकवास ।
३ वाक्पटुता ।

वाचि—देखो 'वाचक' (रू भे.)

वाचिक—देखो 'वाचक' (रू भे)

वाचियोडौ—देखो 'वाचियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वाचियोडी)

वाची—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाच्य–वि. [स.] १ जो पढने व बाचने योग्य हो ।
२ कहने योग्य, जो कहा जा सके ।

उ०—मन बुध अमान पहुचे न प्रान, वाचक न वाच्य वह पद अवाच्य । —ऊ. का.

३ जिसका शाब्दिक सकेत द्वारा बोध हो ।
४ जो अभिधा में जाना जाय, अभिधेय ।
५ निंदनीय, तिरस्करणीय ।
स पु —१ कठोर शब्द ।
२ कलंक, दोष ।

३ भर्त्सना, निंदा ।

४ क्रिया का वाचक ।

वाच्छि—देखो 'वत्स' (रू भे)

वाच्छिल, वाच्छिल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू भे)

उ०—१ कामसेन किंकर थई, सेव करइ सुविचारी । विधि विधि वाच्छिल विस्तरइ, सयरि समप्पइ सार । —मा का. प्र.

उ०—२ वाडव वली विचारतु, लिखवा गाथा एक । सार सरस सोहामणी, वाच्छिल्य वचन विसेस । —मा कां प्र

वाच्यन—देखो 'वाचन' (रू भे.)

उ०—दळ दूजा री पद दळ दूजै, जाण अवै अमवन मत जोग । कवि वाछत पद वाच्यन करही, पढ अनभीहित वाच्य प्रयोग । —वा दा

वाछ—देखो 'वत्स' (रू. भे) (अ मा, ह. ना मा)

वाछड़उ, वाछड़ो, वाछरू, वाछरो—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू भे.) (उ. र) (अ मा., ह ना मा)

उ०—१ सो खेंचा ताण करी पण उठै हीज हचका खावै पण चले नही जद उण हीज वीर धवळा री वाळक वाछड़ो तिको हीज इण सकट रै ऊध लगाय नै ताकूं छै । —वी. स टी

उ०—२ धवळ धेनुवे धवळइ वरणि, सारीखा वाछड़ा सुवरण । घोडा-तणी कलि माहि आणि, पाइ गहइ वाध्या तिणि ठाणि । —ढो. मा

उ०—३ गाया नै घेरी, घरमी, वाछरू वाध्या जाय गवाळ ओ । —लो. गी

वाछळ—१ देखो 'वात्सल' (रू. भे)

उ०—देव राघव दीन पाळ दयाळ वछित दायक । नाम मानव देव नाम रटत सीय सुनायक । माथ-पच दुयेण भज अगज भूप महाबळ । वद तू 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळ । —र ज प्र.

२ देखो 'वात्सल्य' (रू. भे)

वाछल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू भे)

उ०—गोपाळ गोव्यद खगेस-गामी, नागेस सज्या श्रत सैन नामी । है जंग वार्गा दस-माथ हता, माहेस वाछल्य सुकठ मीता । —र ज. प्र.

वाछांट—स. स्त्री. [स वात-छटा या वायुच्छटा] वायु के झोके से मकान या खिडकी से दरवाजे के अन्दर आने वाली वर्षा की बूंदे, बौछार।

उ०—पण ओरी मे ई वाछाट सूं गिरिया-गिरियां तक पाणी भरीजग्यो अर सांमनै सू ठडी टीप वायरो आवतो हो । —रातवासो

रू. भे —वाछाट ।

वाछिल—देखो 'वत्सल' (रू. भे)

उ०—१ पुत्र-पाहि प्रीछिउ भलु, वाछिल करि विवेक । परठिउ पाणी छाटवा, सही तिणि दीधउ सेक । —मा का प्र.

उ०—२ कोई सखी कौतुक गणी, वाछिल जपइ वांणि । क्षमा करइ तु हू स्वरू, जपू जोडी पांणि । —मा का प्र.

वाछोड—स पु [सं वात्सकम्] गायो के बछडों का समूह ।

वाछोडियो, वाछोलियो, वाछोलो—स पु —१ गाय या भैंस का मरा हुआ बच्चा जिसमे मसाला भर कर रखा गया हो ।

२ गाय के बछडे का चमडा ।

३ देखो 'वत्स' (अल्पा, रू. भे)

वाछो—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू भे.)

उ०—मेरा वाछा रमै छै गो-ठाण कुण चुघावै, वाबल तेरी धीय विना । —लो गी

वाजत वाजत्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू भे)

उ०—१ हुकम लेर भड हालिया, साह करा समसेर । जेझ न कीधी जादवां, वाजत्र दिया विसेर । —वी. स. टी

उ०—२ मंगळ धमळ उदमाद, वजै वाजंत्र जिण वेळा । ग्रहि ग्रहि उडि गुडिया, मिळै सज्जण घण मेळा । —सू. प्र

उ०—३ आरभ काज गज आरुहै, अनमित सेन उलट्टियो । सुणियो प्रचड वाजत्र सुर, फिर ग्रहमड पलट्टियो । —रा. रू

वाजद, वाजद्र—देखो 'वाज' (मह, रू. भे)

उ०—अनि लोक सपति इद, जिण मांहि दळ वाजद । दइवाण सोवादार, पाठाण सूर अपार । —सू. प्र.

वाज—स. पु [स.] १ सग्राम, युद्ध ।

२ ध्वनि, नाद ।

३ घृत, घी ।

४ यज्ञ ।

५ अन्न ।

६ जल ।

७ बल ।

८ पलक ।

९ मुनि ।

[फा वा' ज] १० धार्मिक उपदेश ।

११ सीख, नसीहत ।

वि. [फा. वाज] १ स्पष्ट, खुला ।

२ व्यक्त, प्रकट ।

३ देखो 'वाज' (रू भे) (अ मा, ना. डि को.)

उ०—१ वहै क बाज पत्थए, अकास मैं क रत्थऐ । सीरम साह नस्स है, विवाए उड्डिया वहै । —गु. रू. व.

उ०—२ ढेंच ढाळव्वळा, अस्सि ऊतामळा । वहै वेगागळा, बाज वाहै नळा । —गु. रू. व.

उ०—३ दिल्लीवै सुरताए, वाज वका वैगागळ । सूटी ले मेल्हीया जूह मद वहता मैंगळ । —गु. रू व

उ०—४ तरै सरव ठाकुर आरोगै छै-श्री ठाकुर हाथ नीचो करै तो बाज नही । तरै श्री बोलियो-ठाकुरै अजू बाज ही नही आयी छै काहू आरोगा ।

बाजण—देखो 'बाजए' (रू. भे.)

बाजणी—देखो 'बाजणी' (रू भे)

उ०—सुराही गळारै घाटि सभा सला पोडी भीगै गिरीऐ ऊपरि बाजणी पायाल रा घूघरा रमझोळ झणकिआ जाणे कळहस रा बच्चा चकोर करि रहिआ छै । —रा. सा स

बाजणू', बाजणो—देखो 'बाजणो' (रू भे)

उ०—१ रगीली चग बाजणू' म्हारै वीरैजी मढायो चग बाजणू । —लो गी

उ०—२ म्हारी मा री ए जायी विछिया घडा चूं ए बाई तनै बाजणा। —लो गी

बाजणो, बाजवो—देखो 'बाजणो, वाजवो' (रू भे) (उ. र)

उ०—१ सो पडिया दूजा सुहड, मन ऊपडिया खेत । अग नत्रीठा वाजिया, आद 'दुरग्ग' सचेत । —रा. रू

उ०—२ तठै झगडो हुवो ठाकर जगरूपसिघ विहारीदास दोनू बाज मूवा । —दा. दा.

उ०—३ गहगहिय थाट वेऊं गरीठ राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ । सूरा सधीर वाजइ सरोस, पडिफाळ ऊडइ जिरहपोस । —र. ज सी.

उ०—४ इम जीपै आवियो, गग' वाजता नगारा । सुजस वधै घर सिरै' उछक छक वधै अपारा । —सू प्र

उ०—५ आरती उतारीजै छै। केसरि-चदण चरचीजै छै। अगर उखेवीजै छै। पचसबदा वाजि रहिआ छै । झालरिआ झणकार हुइ नै रहिआ छै। —रा सा स

उ०—६ के जम नाम तणी तन तज कर, भै जमहू डर डर मन भाजै । किया सुनाथ हाथ ग्रह केता, वीठळनाथ अनाथा वाजै । —र. ज प्र

उ०—७ जिए दीहै पावस झरइ, वाजइ ताढो वाय तिए रिति मेल्है माळविए, प्री परदेस म जाय । —ढो. मा.

उ०—८ मोर सोर मडै, इद्र धार न खडै, आभो गाजै, सारग वाजै । —रा. सा म

उ०—६ जुध तणो भरोसो अगै ही जाणत, कमध खग चाळ घणचाळ करता । 'भानडो' 'वैण' फौजा तणा मोहरी, वाजि वैकूठ गया डाए भरता । —जगो सादू

वाजणहार, हारो, (हारी), वाजणियो—वि ।

वाजिओडो, वाजियोटो, वाज्योडो—भू० का० कृ० ।

वाजीजणो, वाजीजवो—भाव वा० ।

वाजन्न—देखो 'वाद्ययत्र' (रू भे)

उ०—१ बाजत्र वजत विमेक, न्रित गान करत अनेक । सोभन इद्र समाज, रविवस रवि महाराज । —सू प्र.

उ०—२ धीरवत कुमर नै निरखी, धीवर पाइ लागा । स्वामी पणे थाप्यो सहू मिलनै, जस ना बाजत्र वागा। —वि. कु.

वाजपत, वाजपति—स पु. [स. वाजपति] अग्नि, आग ।

वाजपेई, वाजपेय, वाजपेयी—स. पु. [स. वाजपेयी] १ कान्यकुब्ज ब्राह्मणो की एक उपाधि ।

उ०—जोसी जानी जेतला, पाठक पड्या पाढि । वाजपेय दीक्षित दवे, राउल-सरसा राढि । —मा का प्र

२ अत्यन्त कुलीन पुरुष ।

[स. वाजपेय] ३ एक प्रसिद्ध यज्ञ ।

वाजव—देखो 'वाजिव' (रू. भे)

उ०—अवै ही तो चूडो ऊवरै अनै हू ई इण म्हारै सूरवीर धणी नै समझाय नै कहूँ की जगत मे वळै ही सूरवीर है सो आपने अवै मानणो वाजब है । —वी. स टी

वाजवी—देखो 'वाजिवी' (रू भे)

वाजा—स पु —राठौड वश की एक उपशाखा । (वा दा. ख्यात)

वाजाळ—देखो 'वाज' (मह , रू भे) (डि. ना. मा)

वाजिंत्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)

उ०—वजि थाळ सकळ वाजित्र वजै, कुसम सघण सुरियद किया । वेखिया हीज आवै वणे, उण दिन तणी अजोधिया । —सू. प्र

वाजिद, वाजिंद्र, वाजिद्रक—देखो 'वाज' (मह., रू भे)

उ०—१ नल नदिया वीजळ निमा, गिणे न जळ थळ घाट । आवै राजिद प्रीतवस, वाजिद खडिया वाट । —पना

उ०—२ थोर पीडा पग्ग थभ, गात जाणे गज'भ । सतेज रूप साहण, वांजिद राज वाहण । —गु. रू. व

उ०—३ घण जाणिक घट्टा साटण छुट्टा सातक फट्टा सामद्र । सणणी सीचाणा जेम विवाणा वानर डाणा वाजिंद्र । —गु रू. व.

उ०—४ डाणा किरि पाउ पलव ढहै । वांजिद्रक वेग विवाण वहै । —गु. रू. ब.

वांजिदौ—देखो 'वांजिदौ' (रू. भे.)

वाजि—देखो 'वाज' (रू भे) (डिं ना. मा)

वाजित्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ कर उघट कहत संगीत केक । नृत करत वजत वाजित्र अनेक । —सू प्र

उ०—२ चित्तौड़ दलीपत चढिया रे । गहरे सुर वाजित्र गुडिया रे । —रावत अचळदास सक्तावत री गीत

उ०—३ हुई सोपारी मनि हरख्यौ छड़ राय । वाजित्र वाजइ नीसाणी घाव । —वी दे

उ०—४ पचसब्द वाजित्र वाजई छई । गल्या पीतल रताजणी तणा पखावज धौंकार करइ छइ । —का दे प्र

उ०—५ इण परि उच्छव विस्तरइ, गीत नृत्य वाजित्र । पचाम्रत पकवांनि परिण, जिकै जिमाडचा मित्र । —मा का प्र.

उ०—६ वलि तेहनै चौ पाखती, विकट दुरग विराजै रे । वरण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे । —वि कु

वाजिनी–स स्त्री [स.] घोडी।

वाजिन्न–स पु [स वाजिन] १ घोडा, अश्व।

उ०—सग्रहिय सुकरि नगराज सार । वाजिन्न चडिय रिणजग वार। —रा ज सी

[स वाद्य] २ बाजा, वाद्य।

उ० —जेसाणइ ऊपरि करनि जाइ। वाजिन्न लेय नीसाण वाइ। —रा ज. सी

[स वाज+इन] ३ शक्ति।

४ होड।

५ सघर्ष।

वाजिब, वाजिबी–वि [अ] १ ठीक, उचित, मुनासिब।

२ आवश्यक, जरूरी, अनिवार्य।

३ योग्य, लायक।

रू भे —वाजब।

वाजिया–स पु, व. व —देखो 'वाजिया' (रू. भे.)

वाजी—१ देखो 'वाज' (रू भे)

२ देखो वाजी' (रू भे)

उ०—वाजीगर वाजी रची, माया विसतारा। —ह पु वा

वाजीकरण—देखो 'वाजीकरण' (रू भे)

वाजीगर—देखो 'वाजीगर' (रू भे)

उ०—वाजीगर वाजी रची, माया विसतारा । वाजीं सूं वाजी रमै, वाजीगर न्यारा । —ह. पु वा.

वाजूदौ—देखो 'वांजिदौ' (रू. भे)

वाजू—देखो 'वाजू' (रू भे)

वाजूवद, वाजूवध—देखो 'वाजूवध' (रू भे) (अ. मा)

वाजेंद्र—देखो 'वाज' (मह., रू. भे.)

उ०—अन्न अढार भोजण भाणि, तबोळ मुख तरणि । वाजेंद्र राह वाहणि आरूढ वळै । रिति वरखा सरद हैमत सैसर हद वसत गीखम सह सुख सगळै । —गु रू ब.

वाजोट—देखो 'वाजोट' (रू भे.)

उ०—वाजोट थी ततरि रगमणिजी गादी आय वैठा । सिंगार कै रसि इतरै इक सखी आरसी ले मुंह आगइ आय ऊभी हुई। —वेलि टी

वाजौ—देखो 'वाजौ' (रू भे)

उ०—दसवैं द्वारि वसै मन राजा, सवद अनाहद वाजै वाजा। —ह पु वा

वाट–स स्त्री [स वाट, वाट] १ मार्ग, रास्ता, राह, सडक। (ह ना मा)

उ०—१ सामठी हल्लको, मेंगळा सब्बळो। वाट ऊभी वहै, जाण आडो-वळो। —गु. रू व

उ०—२ पातरिया वाट न पी'रा पीहर, अवळा रै निरधारा आप। —ओपो आढो

उ०—३ नळ नदिया वीजळ निसा, गिणै न जळ थळ घाट। आवै रांजिद प्रीत वस, वांजिद खडिया वाट। —पना

२ प्रतीक्षा, इतजार।

उ०—१ ताहरा जैतसी ऊदावत बोलियो –सीख करी, लोग आपणी वाट जोवै छै। —नैणसी

उ०—२ सखी सहेली साभळै म्हे मन वांध्या थाट। नव दिम कीधा नोरता, सो प्रीतम हद वाट। —अज्ञात

उ०—३ माधव वहिला आवज्यो, हू जोऊ घरि वाट । फळ दळ जळ अग्नि घरू, भूमि सयन नही खाट । —मा का प्र.

उ०—४ तिण द्वारिकाजी माहें लोग चिंतातुर हुआ वाट जोयं छै। —वेलि टी.

३ दीपक की लौ।

४ दीपक की बत्ती।

५ दिशा, कोण।

६ चक्कर।

७ घेरा, आहता।
८ बाग, उद्यान।
९ लतामण्डप।
१० समय, वक्त।
११ कमर, कटि, कूल्हा।
१२ पेट में होने वाला मरोडा, ऐंठन।
१३ वस्तु।
१४ अन्न विशेष।
१५ इमारत।
१६ घोडे या घोडी का पेशाब।
१७ घोडी की योनि।
१८ तोलने के आधान, तोले।
१९ विवाह मण्डप मे अग्नि की परिक्रमा (भावर) देने के पश्चात कन्या को उसके पिता द्वारा पहनाई जाने वाली पोशाक।
वि वि.—देखो 'घरममढ'
रू. भे—वट, वट्ट, वाट, वाटी, वट, वट्ट, वट्टि, वांटि, वाटि वाटी।
अल्पा.—वाटडली, वाटडी, वाटली, वाटडली, वाटडी, वाटली।
मह—आटड, वाटड।

वाटकडी—देखो 'वाटकी' (अल्पा., रू भे)

उ०—आटकडी नही जीमे वाटकडी नही जीमे। ऐ तो जीमे वारा फोडिला सालाजी रा मोटोडा थाळ मे। —लो. गी

वाटकडो—देखो 'वाटको' (अल्पा, रू भे)

वाटकियो—देखो 'वाटको' (अल्पा., रू भे)

उ०—हरसा वीर मेरा रे, एकै आगण मे रै दोन्यू खेलिया, एकै वाटकियै पीयो दूध। —लो. गी

वाटकी—देखो 'वाटकी' (रू भे)

उ०—उपरि सोना ना थाळ अत्यत घणु विसाल, विचिमाहि चउ-सठि वाटकी लगार नही जाति काटकी। —व स

वाटकीटाळ—देखो 'वाटकीटाळ' (रू भे)

वाटको—देखो 'वाटको' (रू भे)

उ०—सु ग्वारा रै चावळ मूगा री खीचडी तयार थी सु वाटका एकण माहे घात ल्याया, माणकराव चढियै हीज खाधी। —नैणसी

वाटड—स. पु—देखो 'वाट' (अल्पा, रू. भे)

वाटडली—देखो 'वाट' (अल्पा, रू भे)

उ०—लागै रै भवरजी मेहूडा री छीटा, रावळी कटारी रा घाव। पधारो मारवण रा रसिया, मेला जोऊ वाटडली। —लो गी

वा डा—स पु—राठोड वश की एक शाखा। (बा दा. ख्यात)

रू भे—वाटडा, वाटाडा।

वाटडी—देखो 'वाट' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ वाटडी जोवता थई कन्यका जी, लावण्य गुण रूप तणो जाणे धाम हो। —वि कु.

उ०—२ सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारंग। जिण वाटइ सज्जण गया, मा वाटडी सुरग। —ढो. मा

वाटणो, वाटवो—देखो 'वाटणो, वाटवो' (रू. भे)

वाटवड—देखो 'वाटवड' (रू भे)

वाटपाडउ, वाटपाडो—देखो 'वटपाडो' (रू भे)

उ०—१ चोर चरड नइ चाडिया, गाठीछोडा गाहाट। वाटपाडा नइ फासिया, नाडी ओडा नाट। —मा. का प्र.

उ०—२ चोर चरड बहुल, वाटपाडा तणा कलकल, धरम गुरु चपल पापोपदेस कुसल —व. स.

वाटभोजन—स पु [स वाट+भोजन] यात्रा मे मार्ग में, किया जाने वाला भोजन।

वाटर—स पु [अ] पानी, जल।

वाटरप्रूफ—वि [अ] जिस पर पानी का असर न हो, जिसमें से पानी नही निकलता या छनता न हो।

सं पु—उक्त प्रकार का कपडा।

वाटरवरक्स—स पु. [अ वाटरवर्क्स] नगर मे पानी की व्यवस्था करने वाला विभाग, जलदाय विभाग।

वाटलउ—देखो 'वाट' (रू भे-)

उ०—जातु सही जासइ हरी, चोर तणी जिम चाल। वछित पामिउ वाटलउ, ते पणि आटला काल। —मा का प्र.

२ देखो 'वाटलो' (रू भे)

वाटली—स. स्त्री. [स वर्त्तुलिका प्रा वट्टुली] १ अगूठी। मुद्रिका। (ड र)

उ०—१ मोती-जडी ज हाथि, सुरह-सुगंधी वाटली। सूती माझिम रात, जाग्यू ढोलू जागवी। —ढो मा

उ०—२ खूणानी ख्याति वली, वली वाटली कोट। वाली परवाळी अधर, अमी तणी तिहा ओट। —मा कां. प्र

रू भे—वाटुली।

५ देखो 'वाट' (अल्पा, रू. भे)

६ देखो 'वाटी' (अल्पा, रू. भे)

७ देखो 'वाटली' (रू. भे)

वाटलीयो—स पु—१ वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुटीया सणीआ

कस्तूरीग्रा प्रतापीग्रा, कुसमीग्रा मोलीग्रा माडवीग्रा मीणीग्रा, वाटलीग्रा जलोदरीग्रा मगीग्रा जोडदरीग्रा प्रागीग्रा। —व स.

२ देखो 'वाटली' (ग्रल्पा., रू. भे)

वाटलु, वाटलो—स. पु. [प्रा वट्ट] १ प्याला, पात्र।

उ०—थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चग। मग गोधूमादि दियँ, प्रथवी रतन सुरग। —वि. कु.

२ वृत्ताकार, गोल।

उ०—ईस तुम्हारइ एतलउ, भलउ भणइ ते शूर। क्षिणु नाकउ क्षिणु वाटलु क्षिणु कालु क्षिणु क्रूर। —गा का प्र.

रू भे.—वाटलउ।

ग्रल्पा —वाटलियो।

वाटवड—देखो 'वाटवड' (रू भे)

उ०—तीतर लउवा वाटवड, वैदाणी बुगलाह। लरें पखीवण उड रह्या, वा' वा' जी वा'-वाह। —गजउद्धार

वाटवाणो—स पु.—विवाह मडप मे ग्रग्नि परीक्रमा के पश्चात कन्या के पिता द्वारा कन्या को पहनाई जाने वाली पोशाक।

वाटवालनु—स पु—१ राह चलने या यात्रा करने की क्रिया। (उ र.)

२ प्रतीक्षा करने की क्रिया या भाव।

वाटा—देखो 'वाटा' (रू भे.)

वाटाउ, वाटाऊ—देखो 'वटाऊ' (रू भे)

उ०—१ सातमी वार गगोदक री कावड भरिनें ग्राणतो हुतो सु किण हेक सहर वाटाउ थको किणहेक रैं वारणें रैं चातरैं उतरियो। —नैणसी

उ०—२ विढण वखाण करै वाटाऊ, ग्रेती जाणू ग्रावडियो। सग्रा सहेत 'महेवा' सामी, पाडि माझी रण पडियो।

—राव वीरम राठौड री गीत

वाटि, वाटि—देखो 'वाट' (रू भे) (उ र)

उ०—१ सिविका वइसी सचरइ, घरि थी राउलि जाइ। वाटिं वली विलोकती, विनता विव्हल थाइ। —मा. का प्र.

उ०—२ ढोला, मारवणी मुई, तइ सारडी न लध्ध। दीवा-केरी वाटि जिम, खोडी-खोडी दद्ध। —ढो मा

२ देखो 'वाटी' (रू भे)

वाटिका—स स्त्री [स] १ फूल, वगिया, बगीचा, उपवन।

उ०—कणकार वेस्याकार, चरमकार, मल्लकार खलकार धान्य-खलक वाटक वाटिक वापी पुस्करिणी क्रीडातडाग सरोवर।

—व स

२ इमारत।

उ०—क्षण ऐक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ राज-वाटिकां, क्षण एक जाइ वाटिका, इसी क्रीडा करइ। —व. स.

३ वह भू-खड जिस पर कोई इमारत बनी हो।

रू. भे—वाटिका, वाटी, वाडि वाटी।

वाटी—स. स्त्री [स] ग्रनाज पीसने की चक्की के चारो ग्रोर का वह घेरा जिसमे पीसा हुग्रा ग्राटा गिरता रहता है।

२ घेरा, ग्राहता।

३ कर, टेक्स।

उ०—दाण पूछी हल मोल भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक वल पचा चारिका गढ वाटी छत्र ग्रालहण थोटक कुमारादि मुत्कडी प्रति क्रमेणास्टादसा करा जाता। —व. स.

४ कमर, कटि।

रू भे.—वाडि, वाटी।

५ देखो 'वाटी' (रू भे.)

उ०—तदनतर लाडता लडसडता इसा पुण्यवत, लीला कामदेव जिसा, ग्रारोगिवा वइठा। तदनतर थाट थाटा वाटी कचोला कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। —व स

६ देखो 'वाट' (रू भे)

७ देखो 'वाटिका' (रू. भे)

वाटिइ—देखो 'वाटी' (रू भे.)

उ०—क्षणि क्षणि साकर वाटीइ, क्षणि क्षणि कढीइ दूध। क्षणि क्षणि बीडी ग्रापीइ, मुख तबोलि सुध। —मा. का प्र.

वाटीकोळो—स पु—वर्षा ऋतु में होने वाला कुष्माड।

वाटीपच—देखो 'पचवटी' (रू भे.)

उ०—मारे व्याघ कवध ग्रमाई, वाटीपच वसानूंदा। रामण तद हरी जानुकी राणी, भीली बेर भखानूदा। —र ज. प्र

वाटूली—देखो 'वाटली' (रू भे)

उ०—चोसठि व्यजन रूप ग्राहार दइ, एक स्थाल विसाल वाटूली सीप कच्चोला श्र गारादिक भाजन सरवे समोपइ ''। —व स

वाटूलो—स पु.—पात्र विशेष, कटोरा।

उ०—१ ग्रथ पुग सोपारा, ग्रति फारा, प्रधान रसनिधान, स्त्रीखडि खरड्या, करपूर धवला ग्रावावना वाटूलां सुरग सुभग चीकणा क्रोचडीयाला, चाव्या रस मूकइ, इस्या ग्रपूरवोत्तम पूग। —व स.

उ०—२ सूक्ष्म सकोमल रोमराइ, सघलाइ गुण वसइ जेह तणइ काइ, जाणीइ राखैं ग्रम्लितउ पाछउ थाइ, वाटूला ग्रकाई चोपड्या तीन्हा इस्या स्त ग, सुवद्ध मासल ग्रग, जेह तणी कुहदि चग, उज्ज्वल दत, जेहनी सोभा ग्रनत सुभ इसउ वसभ। —व स.

उ०—सीरयव्रत्ति जेह नइ समग्र, मूस माहि फिरता सुवरण्ण नी परिइ वाटुलां, वीज सरीखा नयन तेह नइ भइ ऊपजइ गजनइं रोगक्षयन। —व स

वाटौ—देखो 'धाटी' (रू भे.)

वाड—१ देखो 'वाड' (रू भे)

उ०—यत्र मत्र मसाण गीध करका की वाड मडी।

—ग्र. वचनिका

२ देखो 'वाट' (रू. भे) (७)

उ०—जठै ग्रमरसिंघजी घोडो कुदायो सो हमर्जं रै हाथी रै दातूसळां ऊपर पग मेलिया। ग्ररु ग्रमरसिंघजी री डावो हाथ होदै री वाड मैं पडियो। —द दा

३ देखो 'वाढ' (रू भे)

उ०—जमी खँद लागा प्रळै काळ रूपी वीर जुटा, नीराताळा वाण छूटा ग्रातसा नीहाव। कँवाण वाड स सत्रा झोकीया भारात कूपै, 'हरा' वाळै जाडा थडा झोकिया हेराव।

—विसनसिंघ री गीत

वाडगिरी—स. पु—पर्वतो मे श्रेष्ठ हिमालय पर्वत।

वाडचर—स. पु.—सूग्रर, वराह। (ग्र मा, ह ना मा)

वाडणौ—देखो 'वाढणी' (रू भे)

उ०—वाहरू धरा ग्राटायता वाडणा, पखा जळ चाडणा ग्रखाडे पाथ। 'नाथ' री ऊथपै जको राजा नही 'नाथ' री थपै सुज जोधपुर नाथ। —हुटोजी खिडियो

वाडणौ, वाडबौ—देखो 'वाढणी, वाढवौ' (रू भे)

उ०—'विडदेस' पवगं वाडतै, खग नागपुर घर खाटतै। जीवता केहर तणी जाणै, खाच काढी खाल। —रा रू.

वाडणहार, हारौ (हारी), वाडणियौ—वि०।

वाडिग्रोडो, वाडियोडो, वाड्योडो—भू० का० कृ०।

वाडीजणौ, वाडीजबौ—कर्म वा०।

वाडभेय—देखो 'वाडवेय' (रू. भे.) (ग्र मा)

वाडम—१ देखो 'वडम' (रू भे)

२ देखो 'वडो' (मह, रू भे.)

वाडली—देखो 'वाडलौ' (ग्रल्पा, रू भे)

वाडलौ—सं. पु—१ ऊठ या घोडे को खुला छोडते समय उनके पावो मे लगाया जाने वाला वधन, जिससे पशु चल सकता है पर भाग नही सकता।

उ०—तितरै मारग माहे ढोलेजी नै चारण मिळीयो। कह्यो, जे ठाकुरा, उठ म्होडावै नें वेऊ जणा ऊपर चढीया। सो इसो फरहा मे कासूं खून छै। तारै ढोलेजी छुरी कमर माहा काढनै दीनी। तारै चारण उठ रै पग माहा वाडलो काटीयो। ऊठ च्यारू पगा हुवो। —ढो. मा.

२ देखो 'वाडली' (रू भे)

वाडव—स पु—[स वाडव्य] १ ब्राह्मण।

उ०—१ पणि वाडव वधवु नही, दीजइ देस-निकाल। वार विलब न कीजइ, ते माटइ ततकाल। —मा का प्र.

उ०—२ दैवइ लिखिउं ते नवि टलइ, वाडव रहिउ विचारि। धीर धरी घर उडितु, हईडा हवइ म हारि। —मा का. प्र

उ०—३ वाडव सभलि वीनती, सूर देवराव् साखि। यौवन मइं इम जालविउ, रक रयण जिम राखि। मा का प्र.

उ०—४ घरि घरि दो दो दीसीइ, वरसिइ ग्रामि ग्रगालि। लेई ग्रावै लाख ते वाडव वाचा पालि। —मा का. प्र.

वाडवक—स पु—श्रृगार मे एक ग्रासन विशेष।

वाडवेय—स पु. [स.] १ साड।

२ वैल।

रू भे—वाडभेय, वाडभेय, वाडिभेय।

वाडहोळौ—स पु—भय का गोला।

उ०—वैरिया री फौज रै म्हारी पती जावता ही दुसमणा री छाती मे हौल म्हाडा पडण ढूक जावै वाडहोळा (भै रा गोटा उठै छाती नै) निजर पडता ही ग्रर सिपाही ग्रोडो ग्रोळा ताक ताक नै कहै ग्रायो ग्रायो। —वी स. टी

वाडि—देखो 'वाटिका' (रू भे.)

उ०—माझळि झूय मतगा, घण मद मोद तोल घूमता। ताकि वाडि धिलगा काकीडा, नर्न कूदति। —रामरासौ

२ देखो 'वाटी' (रू भे.)

वाडिभेय—देखो 'वाडवेय' (रू भे.) (ह. ना मा)

वाडिम—१ देखो 'वडम' (रू भे)

उ०—देसा सिरोमणि दीपणौं, जुध जीपणौं जमराण। देसोत वाडिम दाखणो, धर राखणी लखधीर। —ल. पिं

२ देखो 'वडो' (मह, रू भे)

वाडियोडौ—देखो 'वाढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाडियोडी)

वाडियौ—देखो 'वाडियौ' (रू भे)

वाडी—स स्त्री—१ रथ।

उ०—इक दिन इक ग्रटवी में ऊभो, छवि सखरी तरु छाया। वाडी चढि राय दसारण, उणहिज वढि तलि ग्राया। —ध व ग्रं.

२ हाथी का हौदा, अवाडी ।
३ देखो 'वाटी' (रू भे) (उ र)
४ देखो 'वाटिका' (रू भे) (उ र)
उ०—वीर जइ वाडो महिं वेगि कीउ विस्राम। चपक-तलि चिता समी, निद्रा आवी ताम । —मा. का. प्र

वाडौ—देखो 'वाडो' (रू भे)

वाढ—देखो 'वाढ' (रू भे)

उ०—१ वणाय खाग वाढि वाढ, ओपवै उजास रा ।वणत वीच नीर वाधि, रूप मे वणास रा । —सू प्र

उ०—२ मरद घमसाण पुह लिये आलोमणा, वढण कज वाढ मेरीजीये वीजळा । डोह घड चोवडा फतह जग खळा डळा, सत्री गुर री छएल करै नत धूकळा । —अज्ञात

उ०—३ दातूसळ वजर धजर जमदाढा वाढ़ा ऊगाढा विहर। असपति नजर भलो आफळियो, कुजर नै नाहर कवर ।
—लिखमीदास गाडण

उ०—४ घणी तरवारघा रा वाढ उछळै छे।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—५ लड पडै फूट छड छाक लोह, छड पकड जडै जमदढ छछोह । झडियाल वाढ खग धजर झाट, धडियाल फजर गढ लक घाट । —वि. स.

वाढण—देखो 'वाढण' (रू. भे.)
उ०—पायका पद खाग घणू पलकी, हव लागत 'पाल' तणी हलकी । दोयणा सिर वाढण आन हुओ, हरणाखुर 'ढेव' सवार हुओ । —पा प्र

वाढणो—देखो 'वाढणो' (रू भे)

वाढणौ, वाढबौ—देखो 'वाढणौ, वाढबौ' (रू भे)

उ०—१ वहता रगत देखि खळ वाढै । चद्रप्रहास ग्रहे धक वाढै ।
—सू. प्र

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजे सकत्ति । वाढेल कहाया इण विगत्ति। —सू प्र

उ०—३ 'वीरम' सलखावत खगा वाग । जोइया वाढि विढियो अजाग । —सू प्र

उ०—४ तरै गरीबनाथ कुहाडियो लेनै आवा वाढण नूं ऊठियो । तरै चेले १ कह्यो—हाथा रा पाळिया काय वाढौ। —नैणसी

उ०—५ राजाजी नै रीस तो ऐडी आई के डोकरा रो माथो वाढ न्हाकं । पण पटकता बोल्या—थू झूठो नी है तो काई म्हैं झूठो हू। —फुलवाडी

उ०—६ मिळग्यो तो कुचमादी री एक-एक रग सगळा सस्तरा सू वाढेला। —फुलवाडी

उ०—७ वाक मुहा वाजिद विवांणां, दाढ़ां पीसै रोस लगांणां । धरती धमस तुरा धम धमी, वाढै साढ सेट सीरम्मी ।—गु रू. व.

वाढणहार, हारो (हारी), वाढणियो—वि० ।

वाढिओडो, वाढियोडो, वाढयोडो—भू० का० कृ० ।

वाढीजणो, वाढीजबो—कर्म वा० ।

वाढाळ—देखो 'वाढाळी' (मह, रू भे)

उ०—धोराडि जमद्द्ढ फाटि फटै घट, नीसर सुस्सर सैल नरा । वाढाळ वहै रत साळ विछूटै, रभ वरै वरमाळ वरा । —गु. रू व

वाढाळी—देखो 'वाढाळी' (रू भे.)

वाढाळो—देखो 'वाढाळो' (रू. भे)

उ०—१ चाढा दहु वळ वाढवै, मळहळ भूलाळा । सुरमाण दहू दळ खिवै, वीजळ वाढाळा । —सू प्र

उ०—२ वढियो मुनेस 'पतो' वाढाळो, वझियो सुरजन देख वढ । गढ चित्तोड गरव तण गरजै, गाडो गो रणथभ गढ।
अज्ञात ।

उ०—३ बीकानेर भोज वाढाळै, सारा मुह ओढवै सरीर । 'रूपा' हूर राखियो रूडो, नेहचैई ऊतरतो नीर । —द दा.

वाढियोडो—देखो 'वाढियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वाढियोडी)

वाढेती—देखो 'वाढेती' (रू. भे.)

वाढेल—स. पु —१ राठोड वश की एक उपशाखा ।
२ पवार वश की एक शाखा ।
३ देखो 'वाढेलो' (मह., रू भे)
रू भे.—वाढेल ।

वाढेलो—वि —१ वीर, योद्धा, बहादुर ।
स. पु —२ पवार वश की 'वाढेल' शाखा का व्यक्ति ।
३ राठोड वश की 'वाढेल' उपशाखा का व्यक्ति ।
रू. भे.—वाढेलो ।
मह —वाढेल, वाढेल ।

वाढोवाढ—स पु —प्रहार पर होने वाला प्रहार, घाव पर घाव ।

वा'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

वा'णौ, वा'बौ—देखो 'वावणौ, वावबौ' (रू. भे)
उ०—पाछी री पाछी सुथरा पाणी री लोटो लेय मासी रै गोडै आई । हाथ पग दबावण लागी । पछै नाक री फुरणिया भीच मासी री सास रोकयो । पाणी रा छावका दिया । दो तीन तडाचा वा'यनै मासी थोडी सी आख्या खोली । —फुलवाडी

वात—स. पु [स] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव, आठ दिग्पालो मे से एक ।

स. स्त्री.—२ वायु, पवन, हवा। (अ मा, ह. ना मा)

उ०—फागुन फरहरै वात प्रभात नो सीत अपार। नाह सु फागन रमैं बहु राग, सुहागणि नारि। —घ. व. ग्र.

२ शरीरस्थ तीन तत्व-कफ, वात पित मे से दूसरा, जिसके कुपित होने से अनेक रोग पैदा होते हैं।

उ०—आधि भूतक अधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित। त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध मे, न भवति वेलि जपतनित। —वेलि

३ शरीर की अपान वायु, अधो-वायु।

रू. भे—वत, वात, वाय, वायइ।

४ देखो 'बात' (रू. भे)

उ०—१ ग्रहे अम्रावळि, उडि चली ग्रीभ्रणी। त्रिहू भुवण रही वात सोहडा तणी। —हा झा

उ०—२ वरि हू आविसी थई रही, मभ्क लागी हू मात। मइ माधव-विण एक क्षण, जीव्यानी नही वात। —मा का प्र

उ०—३ पिता प्रणाम करू किस्यू, मोकलावउ किहा वात। करसिइ ते कलपात कलि, स्रवणि सुणता वात। —मा का प्र

उ०—४ रावळा आसापुरा जाणै, था थका क्यु न जाणा। रावळ टीकै वैठै, तरै म्हा नै रावळ वात। —नैणसी

उ०—मास तीन चार री आवाघान छै। समुद्र मोहल मे वैठो छै। वाता एकायत करै छै। —कुवरसी साखला री वारता

वातकटक—स पु [स.] एक वायु रोग जिससे पावो की गाठो (ग्रथियो) मे दर्द होने लगता है।

वातकार—वि [स] १ वायु उत्पन्न करने वाला।

२ वह खाद्य पदार्थ जिनका उपयोग करने से वायु उत्पन्न होती है।

३ देखो 'वातकार' (रू. भे)

उ०—वसकार यत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुगलकार आउजकार पत्ताउजकार गीतकार वातकार, न्रत्यकार पाडकार। —व स

वातकोप—स. पु [स] शरीर के अन्दर होने वाला वायु का प्रकोप। (वैद्यक)

रू. भे—वातप्रकोप।

वातगर—देखो 'वातकार' (रू भे.)

उ०—राजद्वारिक लेखक कथक वातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय वड्कार। —व स.

वातगुल्म—स. पु [स.] १ वात विकार से होने वाला गुल्म रोग (वैद्यक)

२ वात चक्र, अघड।

वातडली, वातडी—देखो 'वात' (अल्पा रू भे)

उ०—१ था वीना सारी वातड़ी, सूनी होयसी सार वै। कुवर कहहै रै सूवटा, आइ राकस हार वै। —रीसालू री वात

उ०—२ मात-पिता सै वीसरै, वधू वीसारैह, सूरा पूरा वातडी, चारण चीतारैह। —अग्यात

उ०—३ सेवै नर सदीना सुरधर, सदा नीरोगी ही रवै। वूठै जारी वातडी नै, वगत वटाऊडा कवै। —दसदेव

उ०—४ पथी नइ पूछ, वातडी रे, तुमे आया उग्रसेन पुर थी आज रे। तिहा दीठा अम्ह गुरु राजीया, श्रीजिनकुसल सूरि राज रे। —स कु.

वातचक्र—स पु [स] १ आषाढ मास की पूर्णिमा के सूर्यास्त को आने वाला ज्योतिष का एक योग।

२ देखो 'वधूळो' (रू भे)

उ०—ऊपडी रजी मभ्कि अरक एहवो, वातचक्र सिरि पत्र वसति। सद नीसह नीसाण न सुणिजै, वरहासा नासा वाजति। —वेलि

वातचीत—देखो 'वातचीत' (रू भे) (उ र)

वातज—वि [स] वायु द्वारा उत्पन्न, वायुकृत।

स पु—१ हनुमान।

२ भीम।

वातजात—स पु [स. वात-जायते] १ हनुमान।

२ भीम।

वातज्वर—स पु [स] वायु विकार के कारण होने वाला ज्वर।

रू भे—वायज्वर'।

वातप—स पु—हरिण, मृग। (ह ना मा)

रू भे—धातप।

वातपुत्र—स पु [स] १ हनुमान।

२ भीम।

वातपोत, वातपोय—स. पु [स. वात पोय] पलास का वृक्ष।

वातपोस—देखो 'वातपोस' (रू. भे.)

उ०—राव जोधो पोढियो हुतो। वातपोस वात करता हुता। राजवियां री वाता करता हुता। —नैणसी

वातप्रकोप—देखो 'वातकोप' (रू भे)

वातप्रकृति, वातप्रगति—वि [स वातप्रकृति] १ जिसकी प्रकृति मे वायु की प्रधानता हो।

२ जिसके खाने से शरीर मे वात-वृद्धि होती हो, जो वायु

फारकहो ।

वातरक्त, वातरगत–स. पु [स वात-रक्त] कुपथ्य या अयुक्ताहार-विहार से वात विकार के कारण रक्त विकार होने का एक रोग ।

वातरोहिणी–स स्त्री [स] मुह मे होने वाला एक रोग ।

वि वि.—इस रोग में जीभ पर चारो ओर काटे के समान मास उभर आता है ।

वातल, वातली–स पु. [स. वाताल] १ चना ।

वि —१ वायु वर्द्धक ।

२ वात युक्त, वायु प्रधान ।

उ०—भक्ष्य भोजन निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमरयाद, रहस भेद, रसच्छेद, आक्रमा स्तोक निवारणिज लोक देह वातली, भक्ति पातली, अल्प अत्यु, पगि पगि अकृत्य, आप वेटा तणा गरथ सातइ, आपणा छोरु कुक्षेत्रि घातई । —व. व

३ देखो 'वातोल' (रू. भे)

वातलड़ी—देखो 'वात' (रू भे)

वातविगत—देखो 'वातबिगत' (रू भे)

वातवैरी–स पु —बादाम ।

वातव्याधि–स स्त्री -गठिया रोग ।

वातहृदा–स पु —कोई जाति या वर्ग विशेष । (सभा)

वाताट–स पु.—१ सूर्य का घोडा ।

२ मृग या हरिण ।

वातात्मज–स पु [स] १ पवन-पुत्र हनुमान ।

२ भीम ।

वातापि, वातापी–स पु. [स वातापि] १ एक पौराणिक राक्षस जो वातापि का भाई था ।

उ०—वातापी पीधू वली अगह अणि अगस्ति । इंद्र तणा आयुध गली, दीध दधीचिह अस्थि । —मा. कां. प्र

२ हरिण, मृग ।

वातायण, वातायन–स पु [स वात+अयन] १ खिडकी ।

२ झरोखा ।

३ रोशनदान ।

४ घर के दरवाजे के आगे की पटी हुई जमीन ।

५ फर्श, गच ।

६ जाली ।

[स वात+अयन] ७ घोडा, अश्व ।

रू भे—वातायण ।

वातायनासन–स पु —योग के चौरासी आसनो मे से एक ।

वि वि —इसमे बायें पैर की ऐडी दाहिने पैर के जाघ के मूल में लगा कर, घुटना दाहिने पाव के घुटने पर लगाकर खडा रहना होता है ।

वातायु, वातायू–स. पु. [स. वातायु] १ हरिण । (अ मा, ह. ना मा)

२ बारहसिंगा ।

वातारि–सं. पु [स] १ एरड ।

२ अजवायण ।

३ वायवडिंग ।

४ सतावर ।

५ बील का पोधा ।

वाताल–वि —बातें करने वाला, वातुनी ।

वाताळगो–स. पु —बात चीत, वार्तालाप ।

उ०—ताहरा भाटियै कहियो-पाणी पावो, ज्यु वाताळगो करा वैर भाजा । —नैणसी

वाति–स स्त्री.—१ घोडे का मूत्र ।

उ०—घोडो मोल लेता डावो पग आघो करै सो न लीजै । जीमणो पग आघो करै सो लीजै । (शुभ) जको घोडो मोल लेता हीसै और खता करै लाद करै सो लीजै । (शुभ) वाति करै सो न लीजै, लाद करै सो सुखदाई । —शा हो.

रू भे —वाती ।

वातियौ—देखो 'वात्यौ' (रू भे)

वाती–स स्त्री —१ कच्चे मकानो की छाजन पर लगाया जाने वाला पतली लकडियो का बध ।

उ०—वाडै फोग खेतडा कढै, सीवा वाड वणावता । टापी टाटा टेर वाती, फलसा छाट छवावता । —दसदेव

२ देखो 'वाति' (रू. भे)

३ देखो 'वाती' (रू भे)

वातुनो, वातूंनी—देखो 'वातूनी' (रू. भे.)

वातुल, वातूल–वि [स वातुल] १ उन्मत्त, मस्त । २ पागल । ३ सनकी । ४ वायु से पीडित, गाठिया का रोगी ।

रू भे —वातूल ।

वातोकळो—१ देखो 'वातूनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वारतालाप' (रू. भे)

वातोदर–स पु [स] एक रोग विशेष जिसके कारण हाथ-पाव, नाभि, काख, पसली पेट, कमर और पीठ मे पीडा होती है, तथा सूखी खासी आती है और शरीर भारी रहता है ।

उ०—महोदर जलोदर कठोदर वातोदर भगदर अतिसार ।

—व. म

वातोरमी–स स्त्री. [स वातोर्मी] एक वर्ण वृत्त जिसमें ग्यारह अक्षर होते है, जिसका क्रम मगण, भगण तगण और अत मे दो गुरु होते हैं ।

वातोळ-स. स्त्री —रबी की फसल मे बोवाई से पहले की जाने वाली खेत की जुताई ।

वार्तोण-स. पु —वातचीत ।

उ०—वरी सू वार्तोण, कासूं हुव झगडा करै । इण सात्रव हाथाण, केवा लै जमडा कनै । —पा. प्र.

वात्रक-स. स्त्री —ईडर राज्य की एक नदी ।

वि वि.—यह दक्षिण-पूर्व में मेघराज के पास से निकल कर दक्षिण-पश्चिम में जाकर माझम नदी में मिलती है तथा वोथा स्थान पर सावरमती से मिलती है ।

वात्सल्य-स पु [सं. वात्सल्य] १ संतान के प्रति होने वाला स्नेह, ममत्व । २ प्रेम ।

रू भे—वाछळ, वाछल, वाच्छिल, वाच्छिल्य, वाछल, वाछल्य ।

वात्सायन-स पु [सं] १ कामसूत्र के रचयिता एक ऋषि । २ न्याय सूत्रो पर भाष्य रचयिता ।

वात्सायनसास्त्र-स पु—वात्सायन ऋषि द्वारा रचित कामशास्त्र ग्रंथ (व स)

वाद-स पु [स] १ हठ, जिद्द ।

उ०—१ कुंवर मत कर वाद, राव कहै सो साभळी । —कुंवरसी साखला री वात

उ०—२ तरै सारै चाकरै नागद्दी रा देवातन री वात राव कनै कही, पण मडळीक मानै नही । वाद लागो । —नैणसी

उ०—३ दुयणां री जाई नै किती कह्यो के दोना नै जगाय नै सिघावती वेळा मिळाय दां । चोज राख्या वातडी विगडैला । पण वादीली मानी ई नी । ओई कोई वाद है । —फुलवाडी

२ वादा, कौल, वचन ।

उ०—वाकिम्म वीद दिन वाकडै, वाद न छडै वकपण । वाकडो सेर उठै विढेण, वदै जीह वका वयण । —गु रू व.

३ विवाद, प्रतिवाद ।

उ०—१ किसो वाद रिख सू करो, साभळी जनक सुगात्र चाप दिखाळो रामचद, भणै लिखमण भ्रात्त । —राम रासो

उ०—२ कियो वाद हाथे जिका वात इतरी कही । दादि जिण वात री जगत दीधी । —कवर नरपाळ देवल री गीत

४ तर्क, दलील, बहस ।

उ०—साधन काव्य कला सुर साधत, वाद विवाद करै मत वाधत । —अग्यात

५ युद्ध, झगडा ।

उ०—१ राजा राणा मेलिया, कीध ढकीला वत्त । वाद वडा सू छडियै, एहस प्राद मत्त । —गु. रू. व.

उ०—२ माणस २ रूडा मेलनै रायसिंघ नू कहाडियो—थे नै जसै वेई वाद कियो छै थै स्याणा छो, जसो मोटियार छै । —नैणसी

६ प्रण, प्रतिज्ञा ।

उ०—१ वीरा रस हेक न मेल्है वाद । निहस्से हेक करै सिह नाद । —गु रू. वं.

उ०—२ आप लोगा नै समझावण री वाद भगवान ई करै तौ उण नै हार माननी पडैला । —फुलवाडी

७ वातचीत, कथन ।

८ वाणी ।

९ शब्द, वचन, वाक्य ।

१० वयान, वर्णन, निरूपण ।

११ टीका, व्याख्या, भाष्य ।

१२ उत्तर ।

१३ अफवाह, किंवदती ।

१४ तर्क शास्त्र ।

उ०—वाद भणी विद्या भणी जी, पर रजण उपदेस । —धरमपत्र

१५ शास्त्रार्थ ।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद सरवानुवाद पंचावयवि दसावयवि वादीसिउ वाद लिइ छए भासा बोलइ । —ध. स.

१६ किसी पक्ष के तत्वज्ञो द्वारा निश्चित किया हुआ कोई सिद्धान्त

१७ किसी अभियोग या मुकद्दमें पर विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला मन्तव्य ।

१८ दुराग्रह ।

१९ सज्ञा शब्दो के आगे लगने वाला एक प्रत्यय ।

२०—७२ कलाओ में से एक ।

२१ भैस के चर्म की पतली रस्सी ।

उ०—खालडी मे लूण भराय घाणी में घाल पीलावैला के सूळी चाढ मारैला के माथा रै वाद वंधाय प्राण काढैला इणरी की ठा' कोनी । —फुलवाडी

२२ भैस का चमडा ।

२३ देखो 'वाद्य' (रू. भे.)

रू भे—वाद, वाघ, वादि, वादी, वाध ।

वादक-स. पु [स] १ गवैया, गायक ।

२ वाद्य बजाने वाला, संगीतज्ञ ।

३ तर्क या बहस करने वाला ।

४ वक्ता ।

रू. भे.—वाद्यक ।

वादण–स. पु [स. वादन] १ वाद्य बजाने की क्रिया भाव।

२ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

३ वाजा, वाद्य।

४ भैंस के चमडे की रस्सी जो गाडी के हिस्सो को बाधने के काम आती है ।

उ०–दाता झालै डाढिया खीजै गउ खाणाह। थे राणा अवगा थयो वादण दी वाणाह। —पा. प्र.

५ वादी जाति की स्त्री।

रू भे.—बादण ।

वादणौ, वादबौ–क्रि. स [स. वादन] १ वाद-विवाद या बहस करना ।

२ वादन करना, बजाना ।

३ युद्ध करना।

४ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे)

उ०—तिम सयल वादि निय निय घरि हिं, ताम गरव पटावइ चडइ। जिन भद्र सूरि गुरु तणीय, हयुन जा कन्नि हि पडई । —जिन भद्र सूरि

वादणहार, हारौ (हारी), वादणियौ—वि० ।

वादिश्रोडौ, वादियोडौ, वाद्योडौ—भू० का० कृ०।

वादीजणौ, वादीजबौ—कर्म वा० ।

बावणौ, बावबौ—रू.भे. ।

वादप्रतिवाद–स पु —१ वाद या तर्क मे होने वाला परस्पर कथोपकथन, बहस ।

२ वाद-विवाद ।

वादरग–स पु [स] १ वट वृक्ष ।

२ अश्वत्थ का वृक्ष, पीपल ।

वादरायन–स पु.—वेदव्यास का एक नाम ।

रू भे —वादरायणि ।

वादरायणि–स पु —१ व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि ।

२ देखो 'वादरायण' (रू भे.)

वादरी–स स्त्री —चमडे का तस्मा जो घोडे के चारजामे के साथ रकाब मे कसा जाता है ।

वादळ, वादळउ—देखो 'वादळ' (रू भे.)

उ०—१ उडतौ जिका ओप कवि आणै। अनळ दक्षिण बादळ अहिनाणै । —सू प्र.

उ०—२ एक सोर सारत्ति घोर घूवा रवि डबर । ज्यौं वावळि वावळ विसाल ओपै मग अवर। —रा. रू.

उ०—३ कोट भुरजा रा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड ज्यौं वावळा रा कीरण सारीखा ऊजळा सीकोट सौं निजरि आवै छै। —रा सा. स

वावळावाळौ—देखो 'वादळावाळौ' (रू. भे)

वादळियौ—देखो 'बादल' (अल्पा, रू भे.)

उ०—सावण आयौ सायवा, कहौ य तो पीवर जाय। पग-पग पाणी पालरौ, वादळिया री छाय। —ली. गी.

वावळी—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू भे.)

उ०—आयो-आयो सावण भादवो, कोई काळी घटा घिर आय । आज म्हारी बावळी वरसेगी । —लो. गी

वादळौ—१ देखो 'बादळौ' (रू भे)

उ०—१ इसी देख भीवै कह्यो, मयू पाणी छै तो कही ज्यूं उजळाई करा। तरै कह्यो, म्हारा घोडा रै हानै बादळौ जळसू भरियो छै; सो ल्यो। —जखडा मुखडा भाटी री बात

उ०—२ अतलस थरमा ऊमदा, तास बादळा त्यार । जसडा कसीया जानीया, कसीयो राजकुमार। —मयराम दरजी री बात

२ देखो 'बादळ' (अल्पा, रू भे.)

वादविवाद–स. पु.—१ तर्क वितर्क, बहस ।

उ०—दारू पीलै पदमणी, मत कर वादविवाद। दारू में मारू दूसरी, पी कर देख सवाद। —लो. गी.

२ शास्त्रार्थ।

वादवी–स स्त्री. [स वाद+वी='वी गति व्याप्ति-प्रजने'] सैना, फौज। (अ मा.)

वावसाह—देखो 'बादसाह' (रू भे)

उ०—पछै बादसाह जी दिखण मे खानजहा लारै बुरहानपुर गया। —बा दा ख्यात

वादसाही—देखो 'बादसाही' (रू. भे)

वादाम—देखो 'बादाम' (रू भे.)

वादामी—देखो 'बादामी' (रू भे)

वादानुवाद—देखो 'वादविवाद' (रू भे)

वादाळ, वादाळक–स पु. [स. वादाल] १ सहस्रदष्ट्र नामक मछली ।

रू. भे —वादाळक।

वादासिर–स पु —वादा, कौल, प्रतिज्ञा के अनुसार।

उ०—राण वणवीर रौ वडो रजपूत हुवौ, जिणनू कवर वीरमदे ग्रोळ पातसाह कनै राखनै ग्राप ग्रायो, पछै वीरमदे वादासिर ग्रायो नही। —नैणसी

वादि–वि [स] १ विद्वान।

२ निपुण, दक्ष।
३ देखो 'वादी' (रू भे)
४ देखो 'वाद' (रू भे)

उ०—पहुवी पयउ पमाण लखण वर वखाणइ, वादि विवादि विनोदि सक नियं चित्त न याणइ। —जिनभद्र सूरि

वादित्र–स. स्त्री.—१ चौसठ कलाग्रो मे से एक। (व. स)

२ देखो 'वाद्ययत्र' (रू भे)

उ०—१ ग्रर घणा महोच्छ्व सेती गीत वादित्र, नाटिक, मगळाचार करि दूलह-दुलहणि रा सोहला गाईजता वीकानेर पधारिया छै। —द वि

उ०—२ जिम नरेंद्र माहे राम, जिम रूपवन्त माहे काम, जिम स्त्री माहे रभा जिम वादित्र माहे भमा। —वागविलास

वादियोडौ–भू का. कृ—१ वाद-विवाद या बहस किया हुग्रा २ वादन किया हुग्रा, वजाया हुग्रा ३ युद्ध किया हुग्रा।

४ देखो 'वाजियोडौ (रू भे)

(स्त्री वादियोडी)

वादियौ–स पु—सोने-चादी के ग्राभूपणो पर चमक (पालिस) करने का एक ग्रोजार विशेप।

वादीसिउ–स पु.—छै प्रकार के तर्कों मे से एक।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद, ग्ररथानुवाद, सरवानुवाद, पचावयवि, दसावयवि, वादीसिउ वाद लिड —व स

वादी—देखो 'वादी' (रू. भे)

उ०—१ एरिस जि केवी भुवणिहि भलइ वादी मयगळ गउयडइ। जिनभद्र सूरि केसरि उरिहि त धुज्जवि धरणिहि पडड। —जिनभद्र सूरि

उ०—२ तिण भाग री काई देखा ग्रमरसिहजी इसे वादी ग्रहकारी हुवा। —ठा राजसिह री वारता

उ०—३ सौ सूरेजी रो वेटो वेरसी- वरस ग्राठ री खीवे री वेटी जागर वरस दस री सो सयाणी ग्रर वेरसी री सुभाव वादी, रीसट सो सारा जाणै। —सूरे खीवे काधलोत री वात

वादीकर—देखो 'वादीकर' (रू. भे)

वादीगर—देखो 'बाजीगर' (रू. भे)

उ०—जरमनी जोधार मिटावै मारका। ज्यू वादीगर वाग ग्रछत्ता ग्रारखा। —किसोरदान वारहठ

वादीलौ—देखो 'वादीलौ (रू भे)

उ०—१ पग-पग काटा पाथरै, वादीलौ वनराव। होणी ज्यू त्यू होवसी, दियै न होणी दाव। —वा. दा

उ०—२ दुधणी री जाई नै कित्ती कह्यो के दोना नै जगाय सिधावती वेळा मिळाय दा। चोज राख्या वातडी विगडैला। पण वादीली मानी ई नीं। ग्रोई कोई वाद है। —फुलवाडी

(स्त्री वादीली)

वादीवाय–स. पु [स. वातविकार] ऊटो का एक रोग जिसमे उनका चलना फिरना वद हो जाता है।

वादू – देखो 'वाधू' (रू भे)

वादूमाळा—देखो 'विद्युन्माला' (रू. भे)

वादै–क्रि वि [स वाद] शास्त्रार्थ मे, विवाद मे।

उ०—व्राह्मण वादै हराविया ''। —धरमपत्र

वादोधुनि—देखो वेदध्वनी' (रू भे.)

वादोवदि—देखो 'वदोवदि' (रू भे.)

उ०—इसी ग्राणद देखि कै कटक माहे थै वधाऊहार ग्रागै वादोवादि दौड्या। —वेलि टी

वादोवाद—देखो 'वादोवाद' (रू भे)

वादौ–स पु [फा वाद] १ किसी कार्य के लिये निश्चित किया जाने वाला समय, नियत समय।

२ किसी कार्य को पूरा करने के लिए किया जाने वाला सकल्प, प्रण, प्रतिज्ञा।

उ०—जो इण भाति नहीं करै छै, सो वादो खोटो छै। —नी. प्र.

३ कौल, वचन, इकरार।

रू. भे —वादो, वाइदौ, वायदौ।

वाद्य–स. पु [स] १ वाद्ययत्र, वाजा। (सगीत)

२ उक्त यत्र की ध्वनि।
३ वहोत्तर कलाग्रो मे से एक।
४ चौसठ कलाग्रो मे से एक।
रू भे.—वाद।

वाद्यक—देखो 'वादक' (रू भे.)

वाद्यकळा–स स्त्री [स वाद्यकला] वाद्य वजाने की कला। (सगीत) (व स)

वाद्ययत्र–स. पु. [स] वह यन्त्र जिसको विविध तरह से वजाकर विविध प्रकार की ध्वनिया निकाली जा सकती है, साज-वाज, वाजा।

रू भे —वाजत्र, वाजत्र, वाजत्र, वाजित्र, वादत्त, वादित्र, वाद्यत, वाद्यत्र, वजजत्र, वजित्र, वजित्रि, वाजत, वाजत्र, वाजित्र, वाजत्र, वाजित्र, वादित्र ।

वाघ–वि —१ विशेष, अधिक ।

उ०—वीसा सात नगद वाटै वणा, वळै एक रिपिया दस वाघ। दसराव दसरावै दीजै, अणफट खत मामलो असाध । —द दा.

२ बढकर, बढती हुई ।

उ०—महाराज कुमार आप जे फरमावै था तीसूं सौ विस्वा वाघ नीकळी । —कुंवरसी साखला री वारता

३ देखो 'वाद' (रू. भे)

उ०—तरै कह्यो—राज ! आदमिया नू हुकम करो, हू भायसो भिजोय चीराइनै वाघ कढाईस, तिण हेठै आवसी तितरी लेईस । —नैणसी

वाघक–वि —१ वृद्धि कर्त्ता ।

२ बढिया ।

३ देखो 'वाघक' (रू भे)

वाघण–स स्त्री.—१ वृद्धि होने की क्रिया या भाव ।

२ वृद्धि होने की अवस्था या दशा ।

३ वृद्धि कारक ।

वाघणो, वाघवो—१ देखो 'वघणो, वधवो' (रू भे.) (उ र)

उ०—१ वयणे नेह वधइ नही रे लो, नयणे वाघइ नेह रे सनेही। —वि कु

उ०—२ क्रोध करइ कर कूटता, कायर करडइ मुंछ । विधिविधि जाइ वाधता, जाणे हनुमत-पुंछ । —मा का प्र

उ०—३ मारवै रावता गाजता मैणला, वाघियो वाद सूं इद्र री वादळा । —गु. रू व

उ०—४ विरहानल वाध्यो गोविंद । —घरम पत्र

२ देखो 'वाघणो, वाधवो' (रू. भे)

वाघणहार, हारो (हारी), वाघणियो —वि० ।

वाघिओडो, वाघियोडो, वाध्योडो—भू० का० कृ० ।

वाघीजणो, वाघीजवो—भाव वा० ।

वाघरी–स स्त्री.—भैस के चमडे की डोरी ।

उ०—आगै जायनै देखै तो ऊदोजी पोढिया छै। ताहरा मेलै जायनै हथियारा रा वाघरचा वाढी । सेजवघ वाढिया । अस्त्री री चोटी वाढी । —नैणसी

वाघांमणो—देखो 'वधावो' (रू भे.)

वाघांमणो, वाघामवो—देखो 'वधाणो, वधावो' (रू भे)

वाघामणहार, हारो (हारी), वाघामणियो—वि० ।

वाघामिओडो, वाघामियोडो, वाघाम्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वाघामीजणो, वाघामीजवो —कर्म वा० ।

वाघांमियोडो—देखो 'वघायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वाधामियोडी)

वाघा—देखो 'वाघा' (रू भे.)

वाघाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू भे)

उ०—सहिए साहिब आविस्यइ, मो मन हुई सुजाण । आगम वाधाऊ हुया, अग तणा अहिनाण । —ढो मा

वाघारणो, वाघारवो—देखो 'वधारणो, वधारवो (रू भे)

उ०—१ सोहियो 'अभो' इण विध सकाज, रघुवस उजागर महाराज । वाधारण हिंदुसथान वान, 'अभमाल' जोड नह भूप आन । —सू प्र

उ०—२ आभा रूप जोम ऊफाणिक, वणियो अनग दूसरै वाणिक। वीर तदिन कीरति वाघारी, भरत साख वधियो कुळ भारी । —सू प्र

उ०—३ म्हारो सुजस अमर 'करणावत', वासुर जग वहु हुवै वितीत । वाधारियो पाघडो विढतै, चैराडियो नही वडचीत । —द दा.

उ०—४ सदा सोह चाडै समाना मणी, अनमादै अणी जगमा दान । तपै देस पत्ती तणी मू ला मारणी वस वाघारणो वान । —ल. पिं.

वाघारणहार, हारो (हारी), वाघारणियो—वि० ।

वाघारिओडो, वाघारियोड़ो, वाघारचोडो—भू० का० कृ० ।

वाघारीजणो, वाधारीजवो—कर्म वा० ।

वाघारियोडो—देखो 'वधारियोडो' (रू भे)

(स्त्री वाधारियोडी)

वाघारो—देखो 'वधारो' (रू भे.)

उ०—राम राज जोधपुर, सहू हरच्द वारो । मास पच खट मास, साह आपै वाघारो । —गु रू. ब.

वाघावणो, वाघाववो—देखो 'वधाणो, वधावो' (रू भे)

उ०—१ गज वध वाधाविजै, मोती उच्छाळेय । लूण उतारै राइ घी, चढियै अट्टाळेय । —गु रू व

उ०—२ मथाण्यो भाग धिन क्रपा फुरमावियो, तोर वाघावियो सुकव ताई । —खेतसी वारहठ

वाघावणहार, हारो (हारी), वाघावणियो—वि० ।

वाघाविओडो, वाघावियोड़ो, वाघाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वाघावीजणो, वाघावीजवो—कर्म वा० ।

वाधावियोडी—देखो 'वधायोडी' (रू भे.)

(स्त्री वाधावियोडी)

वाधि—१ देखो 'वद्धि' (रू. भे)

२ देखो 'व्याधि' (रू भे)

३ देखो 'वाघौ' (पु)

वाधियोड़ौ—१ देखो 'वधियोडौ (रू. भे)

(स्त्री वाधियोडी)

वाधी—१ देखो 'व्याधि' (रू भे)

२ देखो 'बढ़ी' (रू भे)

३ देखो ''वाघौ' (पु०)।

वाघु, वाघू—देखो 'वाघौ' (रू. भे)

उ०—१ वर्ण रूप व्रदावन ग्रोप वाघू, सदा सोवत देवत व्रद साघू। तरा भार अङ्कार नू भार तैसो, अनेका विराजै व्रखा रूप ऐसो। —रा रू.

उ०—२ रिघू लाज 'पाता' 'भदा' काजि 'रूपा'। इका एक वाघू मनूपै अनूपा। —रा. रू

वाधैपौ—देखो 'वधापौ' (रू भे)

वाधौ—देखो 'वाघौ' (रू भे.)

उ०—नखत परमाण वाखाण वाधौ नरै। ग्रावगो झूझ री भार भुजि ग्रापरै। —हा. झा.

(स्त्री वाधि, वाधी)

वापक—देखो 'व्यापक' (रू. भे)

वापणी—वि स्त्री [स व्यापन] १ भीतर-वाहर, सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति।

उ०—देवी मत्र मूळ देवी वीजवाळा, देवी वापणी सव्व लीला विसाळा। —देवि

२ व्यापने वाली।

वापणौ, वापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापवौ' (रू भे)

वापणहार, हारो (हारी), वापणियौ—वि०।

वापिग्रोडौ, वापियोडौ, वाप्योडौ—भू० का० कृ०।

वापीजणौ, वापीजवौ—भाव वा०।

वापरणौ, वापरवौ—क्रि स. [स. व्यासरणम्] १ उपयोग मे लाना, इस्तेमाल करना, काम मे लेना।– (उ र)

उ०—१ दाता लूण ज वापरै, भोजन ऊनो खाय। डावै पसवाडै सूवै, जिण घर वैद न जाय। —अज्ञात

उ०—२ गोडीजी इस्ट सोढा रै जिण सू वीरवाव कोट मे मदमास वापरै नही। —वा दा ख्यात

२ लेकर आना, लाना।

उ०—अमारि करावी, सरवत्र मंगलाचार दीजइ, तूर वाजइ, अक्षतपात्र साचरइ, तबोळ वापरइ, ग्ररथ व्यय नी सभाल नहीं। —व स

क्रि अ—३ व्याप्त होना, फैलाना।

उ०—१ के रोळी वापरियौ, वा'वा' रोळी वापरियौ। देस मे अग्रेज ग्रायौ रे, के रोळी वापरियौ। —लो गी

उ०—२ गोरसात भोजन, गजात दान, वाघवात वियोग, विपदात मैत्री गजात लक्ष्मी, वापरात दरिद्र नायकात युद्ध। —व स.

४ आगमन होना, आना।

उ०—१ जग में ऊसरियौ खापरियौ जं'रो। वाल्हा वीछोडण वापरियौ वैरी। —ऊ का.

उ०—२ ग्रति विचक्षण, अम्नायक वापरिउ, करणण वारनइ वखइ कुसलीउ वंरजन ग्रनाकलनीउ'।' —व. स

५ उदय होना, पैदा होना।

उ०—भटियाणी री निरोगी देह मे दिना परवाण केई केई मादगिया वापरगी। —फुलवाड़ी

६ खुशी या दुख का संचार होना, अनुभूति होना।

उ०—जीव में सोराई वापरी तो वा वापरी! म्हारी वेटी रो नाव परमेस्वर सू कोई कमती माया थोडी ई है। —फुलवाडी

७ शुरू होना, प्रारम्भ होना।

उ०—निहसति जोध नत्रीठि। रिण रूक वापरि रीठ। वे निहस सेन निसक। किरि राम रामण लक। —गु रू. व

वापरणहार, हारौ (हारी), वापरणियौ—वि०।

वापरिग्रोडौ, वापरियोडौ, वापरयोडौ—भू० का० कृ०।

वापरीजणौ, वापरीजवौ—भाव वा०/कर्म वा०।

वापरणौ, वापरवौ, वावरणौ, वावरवौ, वावरणौ, वावरवौ—रू भे

वापरियोडौ—भू. का कृ.—१ उपयोग में लाया हुग्रा, इस्तेमाल किया हुग्रा, काम में लाया हुग्रा २ लेकर ग्राया हुग्रा, लाया हुग्रा. ३ व्याप्त हुवा हुग्रा, फैला हुग्रा. ४ ग्रागमन हुवा हुग्रा, ग्राया हुग्रा ५ उदय हुवा हुग्रा, पैदा हुवा हुग्रा ६ खुशी या दुख का संचार हुवा हुग्रा ७ शुरू या प्रारम्भ हुवा हुग्रा।

(स्त्री वापरियोडी)

वापस—वि [फा.] १ लौटा हुग्रा, प्रत्यागत।

२ लौटाया हुग्रा, फेरा हुग्रा, प्रतिदत्त।

३ छिपा हुग्रा।

क्रि वि.—४ पुन, दुवारा।

वापसी—स स्त्री. [फा] १ लौटने या वापस ग्राने की क्रिया या भाव।

२ लौटाने या फेरने की क्रिया या भाव ।
वि.—लौटने वाला ।

वापार—देखो 'व्यापार' (रू भे.)

उ०—पड गहणा लीयँ दीयँ नह पाचा, सत्र खत्त नह दाखँ ग्रह सार । 'सोड' तणा वापार सारखो, वळ माडीयो 'ग्रखँ' वौपार ।
—दुरसौ आढ़ौ

वापारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—१ लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू वसँ छै ।
—रा सा स.

उ०—२ जु आदमी खबर दी-जु वापारी लोक छै । पंडै जाय छै ।
—नैणसी

वापि, वापिका—देखो 'वापी' (रू भे.)

वापियोड़ौ—देखो 'व्यापियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री वापियोडी)

वापी-स स्त्री. [स] एक चौडा कुआ, कुण्ड या जलाशय, जिसमे पानी तक पहुचने के लिये सीढिया बनी रहती है । बावली ।

उ०—१ वाटिका वापी पुसकरिणी क्रीडातडाग सरोवर ।
—व. स

उ०—२ पीयार प्रिथी पुड उद्धरै, सर वापी उद्धरि वरण । 'गजसाह' 'गागे' हूर ऊठियौ, पतिसाहा छळ उधरण ।—गु रू. ब

रू भे.—वापि, वापिका, बापी, बिआपी, वाइ, वापि, वापिका, वाय वाव, वावि, वावी, वावीय, वाव्य विआपी ।

अल्पा —बावडी, वावडी, वावडी, वावळि, वावळी ।

वाफणी—देखो 'भापणी' (अल्पा. रू भे)

वाफणौ, वाफवौ—देखो 'वाफणौ, वाफवौ' (रू भे)
वाफणहार, हारौ (हारी), वाफणियौ—वि० ।
वाफिओडौ, वाफियोडौ, वाफ्योडौ—भू० का० कृ० ।
वाफीजणौ, वाफीजवौ—कर्म वा० ।

वाफतौ—देखो 'बाफतौ' (रू भे)

उ० —तद नवाव हुकम दियौ—जावौ, तोसाखानँ से वाफता लावौ ।
—पदमसिंह जी री वात

वाफियोडौ—देखो 'वाफियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री वाफियोडी)

वामराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू भे)

उ०—कावडी नैं खुणा मे वगाय वा सिंघणी ज्यू रीस मे वामराभूत हियोडी वारै निकळगी ।
—फुलवाडी

वाभी—देखो 'भाभी' (रू. भे.)

उ०—पडै न पथ मे विघन विलखती वाभी मिळसी । गिणती दुख रा दिवस जीव रै जतना घुळती ।
—मेघ

वाभीजी, वाभीसा—देखो 'भाभीजी' (रू भे.)

उ०—दोराणी कहै वाभीजी आज पुरस आपारा घरै नही नैं वैरीया री नगारी सामै काकड वाजतो सुणीजै छै । —वी. स. टी.

वाभो, वाभोजी—देखो 'भाभोजी' (रू. भे.)

उ०—१ तद राव सूजै आपरी माजी नूं कयौ, 'माजी थे वाभैजो वीकैजी खनै जावौ, नै था गया वात सलटसी ।
—द दा

उ०—२ तीन चार वळा आडो भचेडियो, पण आगळ नी खुली नवी मा रै साथै वाभोजी वतळ करता व्हैला, आ सोच थोडी ताळ ताई बोला बोला बारै ऊभा रिह्या ।
—फुलवाडी

वाभोसा—देखो 'भाभोसा' (रू भे.)

उ० —कह्यो—के वाभोसा नै गाय चीथ न्हाकिया, माथै वैठगी । हाडका कुळै ।
—फुलवाडी

वायगणतंत्र-स पु —एक वस्त्र विशेष । (व स.)

वाय-स स्त्री [फा. वाय·] १ मनोकामना, मुराद ।
२ प्रतिदिन ली जाने वाली अफीम की खुराक, मात्रा ।
[स वाय] ३ बुनन, बुनावट ।
४ सिलाई ।
[स वायु] ५ पश्चिमोत्तर कोण, वायव्य कोण ।
[स वचन] ६ वाणी, वचन ।

उ०—१ भगवत बोल्या इसडी वाय । देवाणुपिया जिम सुख थाय ।
—जयवाणी

उ०—२ आय माता नैं इम कहै, मैं सुण्या वीर ना वाय । घन अतारथ तुम पुता ! इम बोली छै माय ।
—जयवाणी

७ देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—पाणी रो गाव रै खेडै दुख हीज छै, मुहै खारो कूवो सहर में तेजसी री वाय ऊपर छै, तिण तीण ६ वहै छै ।
—नैणसी

८ देखो 'वायु' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ ऽवा माहि मिळै 'जैसाह' आय । वैसदर जाणिक भोळ वाय ।
—सू प्र.

उ०—२ दिन ऊनाळै वोभर भठ्ठी, घोरा मौज प्रभात री । कासमीर री ठड वखेरै, वाय ठगोरी रात री ।
—दसदेव

उ०—३ सुरै वाय वडी लघुनीत तणी । सग्या कुगुलिया दोस सुंणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया, चादीनी नाखै चार्वडिया ।
—व्र स्त

उ०—४ वायव कूणै वण रही, पुरी वाय की जाण । अति प्रचड सोभा अधिक, को कर सकै बखाण ।
—गजउद्धार

उ०—५ पजरि पावक परजळइ, जिम जिम नाखइ वाय । मूधि न जाणउ एतलुं, तिम तिम अधिकु थाय । —मा का प्र.

रू भे —वाय ।

वायइ–स पु [स वाति] १ सूर्य । २ चद्रमा । (उ र)

३ देखो 'वात' (रू भे)

वायक–स पु [स. वायक] १ जुलाहा ।

२ ढेर, सग्रह ।

३ समुदाय ।

४ सदेश, खबर, समाचार ।

वि [स वाचक] १ सदेशा लाने वाला, सूचना देने वाला दूत ।

२ कहने वाला, वक्ता, व्याख्याता ।

३ पढने वाला, पाठक ।

४ देखो 'वाक्य' (रू भे)

उ०—१ वायक सतगुर वैद री, घणी करै हित घोस । रे ! इण लालच रोग री, सद औसद सतोस । —वा दा

उ०—२ अद्रु वायक बोध दियै महिला, प्रिति लागन काळ कियै पहिला । —ऊ का

उ०—३ वह वायक सिंघ जिम बोलता । तायक भुजा पयण तोलता । —सू प्र

उ०—४ महाराजा रघुवसमण सुज रावण समथ रा धनु सर पाँणा धारै । वायक सत सीतावरण न्रप नायक रघुनाथ तू सता तारै । —र ज प्र

रू भे —वाइक, वाएक, वायक, वाइक, वाएक ।

वायकचर—देखो 'वाइकचर' (रू भे) (अ मा)

वायकूंडो, वायकूंडौ–स पु [स वात कुण्ड] १ चन्द्रमा के चारो ओर फीका वर्ण युक्त विशाल वृत्त जो प्रचण्ड वायु का सूचक माना जाता है ।

वि वि —इस वृत्त मे तारा नही होता है ।

२ सूर्य के चारो ओर कभी कभी होने वाला वृत्ताकार घेरा जो, शकुन शास्त्र के अनुसार, वर्षा का अभाव सूचित करता है ।

उ०—कोपै कौल तुडा कासवाणी छाय वायकूडा, गै अठाणी भुसडा भमाय भूलै गाज । रथा गैण देव रभा अवोक अचूडा रोकै, राजा राडीगारो ऊडा झोकै वाजराज ।

—हुकमीचद खिडियो

रू भे —वावकूडियो, वावकूडो ।

वायड—देखो 'वायड' (रू भे.)

वायडियो—देखो 'वायडियो' (रू भे)

वायडो–स. पु [स वात-कारक, वातल] १ पागल कुत्ता ।

२ उक्त कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग ।

३ दीवाना, पागल ।

४ वात-विकार से पीडित ।

५ ज्वर-प्रलाप ।

६ वात-कारक ।

कहा —किणी रे वेंगण वायडा, किणी रे वेंगन पच्च । किणी रे चढे आफरो, किणी रे चढे मच्च । —अग्यात

रू. भे —वायडो, वायडे, वायडो, वाइडो, वाईदडो ।

वायज्वर—देखो 'वातज्वर' (रू भे)

वायण, वायणि, वायणी–स स्त्री —१ दुर्गा या देवी का एक नाम ।

उ०—साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि । समळ महा सिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि । —सू. प्र.

२ गहलोतो की कुल देवी ।

उ०—गहलोता रे वायण चु डाय दीप देवी, तिलगापुर पाटण सू उठिया । —वा. दा. ख्यात

३ वाद्य बजाने वाली ।

उ०—पोळि परठिया पोलीया, माँहि माघव बभ । आगळि नाचइ उरवसी, गायणि वायणि रभ । —मा. का प्र.

वायणो—देखो 'वाजणो' (रू भे)

उ०—समुद्र खारउ, वाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ जन बोलणउ, सुणह भपणउ, ससउ, नासणउ राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ । —व स

(स्त्री वायणी)

वायणो, वायबो—१ देखो 'वाजणो, वाजवो' (रू भे)

उ०—१ गुण कथीइ गाईइ सुसर, वाईइ चग अदग । पात्र पचारा नाचता, अहनिसि इणी परि रग । —मा का. प्र

उ०—२ सेमनाग राज छत्र धरइ, गगा यमुना चमर ढालइ, ब्रह-स्पति घडिआलउ वायइ, सुक्र मत्रि वइसइ । —व स.

उ०—३ तीन गढ जीत मन मीत चौथै मिल्या, पात्र पचीस मिळ एक पाया । दास हरिराम कहै राज अणभै भया, नाद अनहद नीसाण वाया । —अनुभववाणी

२ देखो 'वावणो, वाववो' (रू, भे)

वायणहार, हारो (हारी), वायणियो—वि० ।

वायोडो—भू० का० कृ० ।

वाईजणो, वाईजवो—कर्म वा० ।

वायदो—देखो 'वादो' (रू भे)

उ०—१ यमन री वादसाह मोनू माल मतो गाव देणै री घणी वायदो दियो छै । —नो प्र

उ०—२ वायदो पाळणो श्रो छै न्याय गरीब री अन्याई कना सू लेवै । —नी. प्र

वायनद-स पु [स वायु+नदन] १ पवन पुत्र हनुमान ।

उ०—नागेस पनगा सिरै, जतद्रीयो वायनद, चवा गोरखेस, जोगारवा सिरै चीत, ऊददा खीरोद सिरै जुधा गुडाकेस श्रोपै । श्रोपै खाग त्याग सिरै ऊदारी श्रदीत । —ठाकुर सावतसीग नीवाज री गीत

२ पाडुपुत्र भीम ।

रू भे—वायनद ।

वायपुरी-स स्त्री [स वायु+पुरी] पवन देव की पुरी ।

उ०—जोजन श्रढी हजार में, वायपुरी विसतार । सो सब ही कचन मई, सोभत श्रधिक श्रपार । —गजउद्धार

वायब—देखो 'वायव्य' (रू भे) (श्र. मा,)

उ०—कोस ६ वायब कूरा माहै बडीवास भेळी छै । जाट विसनोई वाणीया वसै । —नैणसी

वायबिडग, वायबिडग—देखो 'वायबिडग' (रू. भे.)

वायर—१ देखो 'वैर' (रू. भे)

उ०—तरै भीवो बोल्यो, म्हारा देस एक कुरीत छै । कोई ठावो गामेती वासडियो तथा घररो धणी रजपूत मरै, मोटियार कै काम श्रावै, तो उण री वायर गाघराणी करै । —जखडा मुखडा भाटी री वात

२ देखो 'वायु' (रू भे.)

उ०—सूरा नूर दरस्सिया, तोलै सेल करग्ग । वायर ज्यौं लग्गा विमुह, कायर श्राठू मग्ग । —रा. रू

वा'यर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—श्रब मोहतो रायमल जाय वीरमदे रै ढोलियै प्रदक्षण देय नै वा'यर श्रायो । —द. दा

वायरियो-स. पु—१ वायु सम्बन्धी एक लोक गीत ।

२ लडकी को विदा करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

३ देखो 'वायरो' (श्रल्पा, रू भे)

वायरी-स स्त्री.—देखो 'वायरो' (श्रल्पा., रू भे.)

वायरो—देखो 'बायरो' (रू भे.)

उ०—१ रात रा ई वायरो वाजतो तो करसा चूकता कोयनी, कारण के सियाळा री दिन तो पीलू जितोक व्है । —रातवासो

उ०—२ ताहरा राजा ताळी उखेलियो । देखै तो माहै मोर छै । मोर कह्यो धन्य राजा तूं मोनु ससार रो वायरो लगायो । —चौबोली

वाय'रो—देखो 'वा'यरो' (रू. भे.)

वायल-स स्त्री—१ स्त्रियो के पावों में पहनने की चूडी जिसके नीचे गुरिया या मनका लगे हुए होते हैं ।

२ बढिया किस्म का एक बारीक वस्त्र ।

श्रल्पा.—वायली ।

३ हल द्वारा बोया हुश्रा ज्वार श्रादि का खेत ।

रू भे—वायल, बोयल ।

वायव—देखो 'वायव्य' (रू भे)

उ०—वायव कूंरां वरण रही, पुरी वाय की जारण । श्रति प्रचड सोभा श्रधिक, को कर सकै वखांण । —गजउद्धार

वायविडग, वायविडग—देखो 'वायबिडग' (रू. भे)

वायवी-स. स्त्री—१ एक महाविद्या ।

उ०—श्राकास गामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मन स्तभिनी जलस्तभिनी श्राग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी···। —व. स

२ वायव्य कोण सम्बन्धी ।

३ देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

वायव्य-स पु. [स] १ उत्तर-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण ।

वि—वायु सम्बन्धी ।

रू. भे.—वायब, वायव, वायवी ।

वायस-स पु. [स. वायस·] १ कौश्रा, काक ।

उ०—१ वील्हा वायस विझला, श्रागलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ वागली, ते ऊधी टगाय । —मा का प्र.

उ०—२ वायस वीजउ नाम ते, श्रागळि लल्लउ ठवइ । जइ तूं हुई सुजाण, तउ तू वहिलउ मोकळे । —ढो. मा

२ श्रगरू का वृक्ष ।

३ तारपीन ।

४ कौर, निवाला ।

५ सूर्य या चन्द्र ग्रहण ।

६ पकड या गिरफ्त ।

रू. भे.—बइस, वाइस, वायस, वाइस ।

श्रल्पा.—वायसडो ।

वायसडो—देखो 'वायस' (श्रल्पा, रू. भे.)

उ०—उड वायसड़ा म्हारा पी'यर जा नूंत पि'यर रा मातवी जे । —लो गी.

वायससात्रव–स पु. [स वायसः+शाश्रव'] जल कौश्रा, जल काक ।

वायसूळ–स पु [स वायु+शूल] १ घोडो का एक रोग जिसमें उनका मलमूत्र रुक जाता है । (शा. हो)

२ वायु के विकार से शरीर में उत्पन्न पीडा

वाया—१ देखो 'वाचा' (श्र मा , ह ना मा.)

उ०–१ साचा सवद एक है सोई, दूजा काम सरै नही कोई । सो मैं सबद गरू तै पाया, फुरै मत्र दूसरो वाया । —अनुभववाणी

उ०—२ मुनिवर मिलि जिणद मैं आया, हाथ जोडी नै बोलै वाया । प्रभु ! तमारी आग्या थाय, तो म्हा द्वारिका मे गोचरी जाय । —जयवाणी

२ देखो 'वायु' (रू भे)

उ०—सेलि वलइ जल ऊछलइ, सायर छडइ सीम । वाया विण वाजइ सबद, महाभयंकर भीम । —मा का. प्र

वायार—स पु [स वातार] वरुण । (श्र मा)

वायु—सं पु [स.] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव ।

२ पवन, हवा, वात । (डिं. ना मा)

उ०—धरणी वीर तेज वायु नभ, सबै सता प्रकासी । निराकार आकार मे पूरण, नहिं आवै नही जासी ।

—श्रीसुखराम जी महाराज

३ त्रिदोषो में से एक ।

उ०—१२ ज्वर, १३ सनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात, ८४ वायु, ३६ महावायु दोस, ४५ खाधाविकार, १०८ कोढि ।

रू भे —बाव, बाथ, वायु, बायू, वा, वाइ, वाई, वाउ, वाय, वाया, वायू, वावू । —व स

वायुकाय—देखो 'वाउकाय' (रू भे)

वायुकुमार–स. पु [स]—१ भुवनपति जाति के देव (जैन)

२ हनुमान ।

३ भीम ।

वायुघ्न—स पु [स] गुग्गल, गुगुल ।

वायुदेवता—सं. पु [स वायु देव] पवन देव ।

उ०—नवग्रह खाट तणई पाइ वाधा, वायुदेवता अगणइ बुहारइ । —व स

रू भे —वाउदेवता ।

वायुमडळ–स. पु [स. वायुमडल] पृथ्वी के चारो ओर का वाष्पीय वायुमडल आवरण या घेरा, वातावरण, आब हवा, क्लाईमेट ।

रू भे —वाउमडळ ।

वायुवाह—स पु [स] धूआ ।

रू भे.—वायुवाह, वायुवाह ।

वायुविरोधी–सं. पु.—गरुड । (ना. डि. को.)

वायुसखा—स पु. [स वायु–सख] अग्नि, आग ।

रू भे —वायुसखा, बायूसखा ।

वायुसुत–स पु [स.] १ हनुमान ।

२ भीम ।

रू. भे.—वायसुत, बायुसुत ।

वायुहन–स पु [स वायुघ्न] मकण ऋषि के पुत्र, एक ऋषि ।

वायू—देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—१ इसडो छै आछो आयू, ज्यू ओस खिरै वागै वायू —जयवाणी

उ०—२ तठा उपराति करिनै राजान सिलामति ग्रीखम रित माहै पवन पावक समान वाजियो छै । प्रथी अप नै वायू अकास च्यारि तत पाचमं अगनी । —रा. सा. स.

वायेरो—१ देखो 'वायरो' (रू भे.) (ना. डि. को)

उ०—१ बीझणा सू वायेरो लीजै छै सू किण भातरा बीझणा छै ? लाहोर रा कियोडा छै । —रा. सा. सं

उ०—२ कह्यो-भलो हो राजा मानधाता थारै विना ससार रो वायेरो कुण दिखावै । —चौबोली

(स्त्री वायेली)

वायेलो—देखो 'भायेलो' (रू. भे)

उ०—नैणा रो सिणगार कागळ कूपळी मे रैगी रै, बाळापण रो वायेलो, पीवर मे रैगो रे परो बुलावो । —लो. गी.

वायोड़ो—१ देखो 'वाजियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'वावियोडो' (रू भे)

(स्त्री वायोडी)

वायौ–वि [स वातल] १ उन्मत्त, मस्त ।

उ०—इण पर तहवरखान अछायो । विचित्र हुवो लडता रस वायौ । —रा रू.

२ बावरा, पागल ।

वारग–स स्त्री [स वारग] १ तलवार की मूठ,

२ छुरी का दस्ता ।

सं पु —३ एक वृक्ष विशेष, जो तणछ से मिलता-जुलता होता है जिसके पत्ते न तो अधिक गोल होते हैं न लम्बे । मध्यम दर्जे का वृक्ष ।

४ देखो 'वारगना' (रू भे)

उ०—१ झझक्कत वारग फेर झुकत, हुवै इम चूक मुनेस हसत । —सू. प्र.

उ०—२ वर अनेक वारग पाव वदै सुरपत्ती। पावरण करि पारग त्रिपुर नारग सकत्ती। —सू. प्र.

उ०—३ वजि अदग चग रग उपग वारग। अनग छबि चग उमग अग अग। —सू. प्र

उ०—४ जद वारग कहै 'जोगावत' घडा विहड सुरलोक गयौ। मह 'जोधा' 'सलखा' सुमाला, कमधा कुळ ऊजळौ कियौ। —हरिनाथ जोधा रौ गीत

वारगना, वारगा–स स्त्री [स वारगना] १ स्त्री, नारी, औरत। (अ मा)

२ अप्सरा, परी।

उ०—१ वारगना रही धारै व्रत, व्रत स्यामावत्त तरणै उमाह। पिडि सुरसारणै बीद परखियौ, वळि कुडारणै हुवौ विमाह। —उदैभारण राठौड री गीत

उ०—२ उधम होय इचरज घर असुरा। घम घम तखत जडाली धार। घम घम विखम अरि तरणा घाटा ' वारगना झमझम जुध वार। —लूणकरण

उ०–हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा, गई सु्ग विवाण वेस इद्र आगळी, वुही वारगना विना वीदा। —महाराज जसवंतसिह री गीत

३ देव कन्या।

४ गरिणका, नर्त्तकी।

५ वेश्या, रण्डी।

रू. भे.—वरगा, वरागना, वारग वारंगना, वारगा, बारागना, वरगन, वारग, वारागना।

वारट–स. पु [अ.] १ आज्ञा-पत्र, अधिकार-पत्र।

२ अदालत द्वारा पुलिस या किसी राज्य कर्मचारी को दिया जाने वाला वह अधिकार-पत्र जिससे किसी को गिरफ्तार किया जा सके या किसी की तलासी ली जासके।

३ साधारण माने मे किसी को गिरफ्तार करने के लिये निकाली जाने वाली अदालती सूचना।

वारटरिहाई–स पु [अ. वारट+फा रिहाई] गिरफ्तार व्यक्ति या बदी को मुक्त करने के लिये दिया जाने वाला अदालती-आज्ञा-पत्र।

वारवार—देखो 'वारवार' (रू भे)

उ०—लज्जा छोडी वारवार, ऊचइ स्वर ते करइ पुकार। मन में धारै अधिकौ सोग, हीयडौ फाटई नाह वियोग। —वि. कु

वार–सं पु [स] १ दिन, दिवस।

उ०—१ जकै वार री औधि सोभा जगांणी, व्रहम सारदा होत जामै वखाणी। —सू. प्र

२ सप्ताह के सात दिनो मे से कोई एक और सब।

उ०—१ धन दीहडो, धन घडी, धन वार, धन मोहरत धन वेळा जको राज पधारिया।

—कल्याणसिह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ सतरै समत पोस पैंत्रीसै, दसमी वार व्रहस्पत दीसै। सुरधर छत्र 'जसौ' महाराजा, सुरपुर गयौ लिया अद साजा। —रा. रू.

३ समय, वक्त।

उ०–१ वदै मुनेस जेण वार, देखि भूप वीनती। मख सहाय काज मेलि, पुत्र लै रघुपती। —सू प्र.

उ०–२ प्रायै छोरू न लहै सार, मावीत्रा नी किरण ही वार। पिण मावीत्र तपै दिन राति, पाणी वल विरही न खमात। —वि कु

उ०—३ पिंगळ राजा नू मिल्यउ, सउदागर तिणि वार। राज दुवारइ तेडियउ, आदर करै अपार। —ढो मा.

४ देर, विलम्ब।

उ०—१ जगवासी न साभली, ए ससार असार। तिहा तन धन यौवन निफल, जाता न लहै वार। —वि. कु

उ०–२ तरै कलियारणसिध जाणियौ अस्तरी तो वाहुडै नही, अर वार घरणी लागी। तरा नैणा मे गद-गद कठ वेहा री हुमौ। आप असवार होअै हालिआ। अस्त्री घरै आवी।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ इतरा माहे वात करता वार लागै। वैकुठ री रीस गैब री इच्छा सरूप गढ कोट बाजार सतखणा सोव्रन मैं आवास गोख जोख चित्राम चित्रसाळा रचाई। —र० वचनिका

५ काल, युग।

उ०—१ द्रोणपुर, भारद्वाज री बेटौ द्रोणाचारज नू थौ, पाडवा कैरवा री वार माहे। पछै पमार डाहळिया नूं हुंतौ द्रोणपुर। —नैणसी

उ०—२ सीयळ पवार लुद्रवा री रैत ज्यौ भोग दे। मुन्हार रावळ भीम री वार माहे खेतसी मालदेअोत नू थो। पछै रावळ मनोहरदास मान खीमावतनूं पटै दियौ थौ। —नैणसी

रू भे.—वाहार।

६ किसी शासन करने वाली जाति के नाम के अगाडी लग कर उसके अधीनस्थ भू-भाग का बोध कराने वाला शब्द। ज्यूजोइया री वार, भाटिया री वार।

७ ऋतु, मौसम।

८ आघात, प्रहार, चोट।

उ०—१ पाच कलँ परवार सूं, रावळ आलोचेह । आपँ मर गढ आपस्या, विजडा बार करेह । —नैणसी

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसँ लगस, बार चक्रधार तिण बार दीधा । विळ वँ बार समराथ जळ दळ विगरि, कुंभसुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा । —राव सत्रसाल री गीत

उ०—३ वीता अधूरा धारा पूरा वेध सूरा वच्चए । सेले प्रहार धार सार मार मार मच्चए । —रा रू.

६ युद्ध ।
१० तीर, बाण ।
११ समुद्र, सागर ।
१२ नदी ।
१३ दशा, हालत, परिस्थिति ।

उ०—जळ सह ऊतर जाय, नग सिर पर पावै नही । विगडी जारी बार, वळँ न पाछी 'वसतिया' । —समळोजी बारहठ

१४ किनारा, तट, कूल ।

उ०—१ जोय प्रबळ अणपार जळ, बार रह्या भड आन । निडर उलघण वारनिध, हुवौ त्यार हनुमान । —र रू

उ०—२ अठी रमजानवेग पजाव री विजय करि महमद नूं निरवळ निहारि पाछौ जाइ आरचावरत नूं आगमण रै काज तैमूर नूं अटक नदी रै बार आणियौ । —व भा

१५ इस किनारे ।
१६ उस किनारे ।

उ०—आगै आवता एक खाळ बारह हाथ को चौडौ, घणौं ऊडौ, आडै आयौ जठै कुमार दूदौ तौ सहज मैं सावळिया नै झपाइ खाळ रै बार आइ भालौ ऊभाइ साम्हौ खडौ रहियौ । —वं. भा

१७ अवरोध, रुकावट ।
१८ शिव, महादेव ।
१९ क्षण, पल ।
२० कुज नामक वृक्ष ।
२१ एक गज की लम्बाई का नाप ।
२२ सात की सख्या । * (हिं को)
[स. वार्] २३ जल, पानी । (ह ना मा)

उ०—नैणा पल पल निरखती, वार पीवती वार । विसरै उवा क्यू विरहणी, अटक रही उणिहार । —अग्यात

२४ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें पन्द्रह मात्रा पर यति से कुल तीस मात्राऐं हो एव अन्त मे मगण या रगण हो । (र. ज प्र) मतान्तर से अन्त में रगण हो (र रू)

२५ काम, कार्य ।

उ०—सूवा एक सदेसडउ,बार सरेसी तुझ्झ । प्रीतम वासइ जाइ नइ, मुई सुणावे मुझ्झ । —ढो. मा.

२६ दफा, मरतबा ।

उ०—१ सुंदरी तइ सच्चउ कहिउ, तँ मुझ प्राण प्रीयार । तेणी-करी जीवूं अम्हीं, जनमिउ बीजी वार । —मा का. प्र.

उ०—२ बार सत्त पचास, गुडै गैमर गळ गजै । लख्ख एक तोखार, ठिल्ल अरीयण घड भजै । —नैणसी

क्रि वि —२ इस ओर, इस तरफ ।

उ०—आयौ बूंदी आपरी, अमल दरारै बार । वधियौ रहसी जतन बिण, प्रतपण म्हारौ पार । —वं. भा.

प्रत्य [फा.] ३ क्रमश , क्रमानुसार ।
४ देखो 'वार' (रू. भे) (१)

उ०—इसै हीज तत मे कुंवरसी चढियौ, सो जाय साढा रा वरग सरब घेरिया । रैबारी बीस हाथ आया, सो मारिया । बाकी केई था, सो नाठा में गया । सो नाठा, जाय बार घाती । —कुंवरसी साखला री वारता

५ देखो 'वारी' (रू भे.)

उ०—१ और निधडक अभिमान देख रात मे सोवै जद नीद वस असावधान होवै तद सत्रुआ री वार लागै । —वी स. टी.

उ०—२ तजियै मान गुमान, रहाय गुरु गम चली । सिवरी सिरजनहार, वार आई भली । —श्री सुखरामजी महाराज ।

उ०—३ बाळ मुकुंद विरदाधिपति, क्यू नह सुणी पुकार । काहे ऐती ढील की, मोहन मेरी वार । —गज उद्धार

बा'र—देखो 'बाहर' (रू भे)

उ०—१ चोधरी चुपचाप आय'र बैठग्यौ अर थाळी में सोगरी ने लूण-मिरच देखनै झट-भट खावण लाग्यौ—जाणै लारै बा'र आवती व्है । —रातवासौ

उ०—२ चोर लारै बा'र वणाई, आव लारै उपाय बताई ।
—दसदोख

उ०—३ आया बा'र निदान री, वीस हजार मुगल्ल । —रा. रू.

बारक—स. पु [स] १ निषेध करने वाला घोडा ।
२ घोडे की चाल ।
३ वह स्थान जहा पीडा होती हो ।
४ बाल छड ह्रीवेर ।
[स वारकिन्] ५ विरोधी, शत्रु ।
६ समुद्र ।
७ शुभ लक्षणो वाला घोडा ।
८ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी ।

वि.—अड़चन डालने वाला, रोकने वाला, अवरोध करने वाला।

वारकन्या-स. स्त्री. [स] वेश्या, रण्डी।

वारख—देखो 'वारिख' (रू. भे)

वारगह, वारगाह-स पु.—देखो 'वारिगह' (रू. भे.)

उ०—कुंभ कुंभ अधारी कुच सू कंचुकी, कवच सभु काम का कळह। मनु हरि आगमि मंडे मंडप, वधरण दीध कि वारगाह। —वेलि

वारगिरी, वारगीर-वि.—देखो 'वारगीर' (रू. भे)

उ०-अडा भीड आवधां, वाळ आवै पिडिहारा, किया त्यार साकुरा, घात पाखरा अपारा। अत ताता ऊधरा, जात जात रा भिडजो, वारगीर वाटजै, साख साख रा सकाजा। —बखतो खिडियो

वारड-स पु —देखो 'वारड', (रू भे)

वारडो—१ देखो 'वार' (अल्पा., रू. भे)

उ०—धानतर मयंक हणू सुक्र घावो, नरपाळग रुद्र रिख निवड। एक वारड़ी 'करन' उठावो, अन खट तणी प्रीयागवड। —ईसरदास बारहठ

२ देखो वारी (रू. भे.)

उ०—निकमाळ निकमा फिरै ना, लगै कूवटा कारडी। मीणेदार मजूरी करै, विच विच अपणी वारडो। —दसदेव

वारचर-स पु. [स वारिचर] १ जल में रहने वाला जतु, जल जतु।
२ मत्स्य, मछली (अ मा., ह. ना. मा.)

वारज—देखो 'वारिज' (रू. भे) (अ मा., ह. ना मा)

उ०—वप घणस्याम नैन्न दुति वारज। क्रत अवतार सुराचै कारज। —सू. प्र

उ०—२ वारज द्रग वारद वरण, गहर धरण गुणगाथ। करुणा-निध अकरण करण, नमो नमो रघुनाथ। —र. रू.

उ०—३ सस्त्र विद्या के आचारज। जळ रूप क्षत्रिया के वारज। —रा रू

वारड-स पु [अ. वार्ड] १ रक्षा, हिफाजत।
२ अस्पताल या जेल का कोई कक्ष या विभाग।
३ किसी नगर या मोहल्ले का किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत किया हुआ समूह।

वारण-स. स्त्री [स] १ निषेद, मनाही।
२ रोक, रुकावट, अवरोध।
३ वाधा।
४ सुरक्षा. सहायता।
५ न्योछावर होने या बलैया लेने की क्रिया या भाव।
६ हरताल।
७ सफेद गोरेया।

स पु. [स] ८ हाथी, गज। (ह. नां. मा.)

उ०—१ मुख मद हास आणदमय, आराधित अहि नर अमर। दह व्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर। —सू. प्र.

उ०—२ कहै तिया सुण कंत, किसी बात तोसूं कहूं। मोलाए गज दंत, वारण पाछो वळ गयो। —गज उद्धार

९ हाथी का अंकुश।
१० सयम।
११ कवच, बखतर।
१२ आर्यागीति या स्कंधाण का एक भेद विशेष।
१३ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राए होती हैं।
१४ छप्पय का ३० वा भेद जिसमें ४१ गुरु तथा ७० लघु कुल १११ वर्ण व १५२ मात्राए होती हैं।

वि. वि—मतान्तर से इसमे ४१ गुरु, ६६ लघु के अनुसार १०७ वर्ण व १४८ मात्राएँ भी मानी जाती है।

वि.—१ मिटाने वाला, निवारण करने वाला।

उ०—धिन हो दुख वारण, काज सुधारण। भगत उधारण भगवन तू। —भगतमाळ

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।
३ मना करने वाला, रोकने वाला।
४ जबरदस्त।

क्रि. वि.—५ रोकने हेतु।
६ रक्षा करने हेतु।

रू. भे.—वारण, वारणु, वारिणि।

वारणपति-स. पु [स वारण+पति] १ महावत।
२ हाथी।
रू. भे.—बारणपति, वारणपती।

वारणवासोत-स पु—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

वारणा-स. पु, ब. व —१ बलिहारी जाने की क्रिया या भाव।
२ बलैया, न्योछावर।

उ० १ आखियां लाज लीधां अडर, सारा काज सुधारणा। मादक अलीण मेलै न मुख, वारा लेऊ वारणा। —ऊ का.

उ०—२ राजा अजीत दसरत्थ ज्यों, सुत सजीत परखै सही। वारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कोसल्या जिही। —रा. रू.

उ०—३ अब वे हीज सिरदार भामणा वारणा लेवै है पण जेथ जठै वाही भडा घोडा मे जै—फतै तो म्हारा कत घणी ने मिळी है। —वी. स. टी.

रू भे.—वारणा।

वारणावत–स. पु [स] गगा किनारे का एक प्राचीन नगर या जनपद। —(महाभारत)

वारणी–स पु [स वारण] १ विवाह के समय दुल्हा-दुल्हिन तथा इनके सम्मुख नाचने वाली के ऊपर रुपये, पैसे आदि न्योछावर करने की क्रिया। (एक प्रथा)

वि वि.–इस प्रकार की न्योछावर के पैसे ढोल-वाजा वाले या नाई को दिया जाता है।

२ देखो 'वारुणी' (रू भे)

उ०—चौरग पात फौज चौवडती, फूल धार वारणी करै। फुते हुलै मिळै करणावत, काळै भात मनवार करै। —वळराम राठौड री गीत

वारणीय–वि.—१ न्योछावर योग्य, उत्सर्ग योग्य।

२ निपेध योग्य।

वारणू, वारणो–स. पु.—१ वारणा या वारीजाने की क्रिया या भाव।

२ वारा जाने वाला या न्योछावर किया जाने वाला पदार्थ।

रू. भे —अवारणौ

३ देखो 'वारणौ' (रू. भे)

४ देखो 'वारण' (रू भे)

उ०–१ वोम लागा वहै लोडता वारणू। हुलवै द्रोण ऊपाड जाणै हणू। —गु रू. व

उ०—२ ताहरा वेणीदास, चदण चोपदार, हरदान, रामदान ओळखवा नै साथै ले वजार गयौ। जाय हाट रै वारणै आया थका खडा रहि देखा किया। —पलक दरियाव री वात

वारणौ, वारबौ–क्रि स. [स वारण] १ वलिहारी जाना, वलैया लेना, वारी जाना (उ र)

उ०—१ नर नारि द्वार नरपत्त रै, ईख करै तन वारणै। उमराव परस्सण उल्लसै, कोडा दरसण कारणै। —रा रू

उ०—२ हाथी रै होदै मारियो पती ने देख वीर स्त्री कहै-वारी वालम वारणै जाऊ। —वी स टी

उ०—३ देखै मुख वसुदेव देवकी वार-वार वारै पै वारि। —वेलि

२ न्योछावर करना, उत्सर्ग करना।

उ०—१ त्याग पर वारू आपरी दातारगी री एक दूहे पर नव लाख रिपिया वगसिया। —द दा

उ०—२ चारी नाणू व्है खारी भर चारै, अपणी प्यारी पर प्राणा तक वारै। —ऊ का.

उ०—इसडी आखडियाह किया अग वारणै। सर मनमथ गा हारि क अजण सारणै। —वा दा

३ दैवी-प्रकोप, जादू-टोना या कष्ट निवारणार्थ कोई वस्तु या प्राणी को शरीर पर फेर कर वारना। (उ. र)

उ०—सासुवा रूप और तरह देख घणी राजी हुई राई लूण व वारिया। थुथकारा नाखिया। —कु वरसी साखला री वारता

उ०—२ क वरजी रो डील रूडो नही, तरै भाटी गोयददास मोहणदास नू क वरजी ऊपर वारियो। क वरजी रै डील समाघ हुई, मोहणदास राम कह्यो। —नैणसी

४ दूल्हे-दूल्हिन या उनके सामने नाचने वाली के ऊपर से रुपये पैसे आदि वार कर ढोली, नाई आदि को देना।

५ सामना करना, वाघा डालना, रोकना। (उ र.)

उ०—ऊलटियो सिर आगरै, अवदुल्ला 'अजमाल'। आगै पौहतै आगलो, वारण खान दुफाल। —रा. रू

६ रक्षा करना, सहायता करना, उवारना।

उ०—साहिव रै सहि थारी सारो, वडा धिणी जम त्रासै वारौ। खोटी वात ससारोइ खारी, आतिमा मुना पारि उतारी। —पी प्र

७ इनकार करना, मना करना। (उ. र)

८ निवारण करना, छोडना। (उ. र)

उ०—घणा नीदाळवा नीद वारो घणी। तू ग नह छै भली हीस घोडा तणी। —हा झा.

९ दूर करना, हटाना, मिटाना।

उ०–तारै दासा त्रिकमाह, भय वारै जम भूप। हू वलिहारी स्रीहरी, रे! थानै निज रूप। —र ज. प्र.

वारणहार, हारो (हारी), वारणियो—वि०।
वारिओडो, वारियोडो, वारघोडो—भू० का० कृ०।
वारीजणो, वरीजवो—कर्म वा०
अवारणो, अवारवो, वारणो, वारवो—रू० भे०

वारता–स. स्त्री [स वार्त्ता] १ जनश्रुति, अफवाह, किंवदति।

२ वार्तालाप, कथोपकथन, सवाद।

३ कुशल-समाचार, हाल, खवर।

उ०—१ रखी सुनमान दीघो। तरै आप रूजक पगै मेलियो। टहेल कीधी। रखी वारता पूछी–तरै आप सारा ही क्रम कथा कही। —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ जामण की ये जाई! मा वावल वूजे ये थारी वारता —लो गी.

४ वात।

उ०—हा ये गोरी! अन्न करस्या मनुवार। घर आय पूछा मनडे री वारता जी। —लो गी.

५ किसी विषय पर होने वाली चर्चा, बातचीत ।

उ०—ब्रह्म वारता निसिदिन करतं, गुरू भाव की हान। वा जन की सग कबू न करियै, पोते जो होय भगवान ।

—श्री सुखरामजी महाराज

६ मामला, विषय ।

७ घटना, वृत्तात ।

उ०—सती कहै ते वारता, पाडोसण नै तेड । च्यार नगर ना थभ ते, मु के नही मुक्त केड । —घ व. ग्र

८ कहानी, श्राख्यान ।

९ राजस्थानी का गद्य ।

१० क्रिया-कलाप ।

उ०—तरै चोदस रै दिन इतरी वारता उमादे करसी, थानु सपडावसी, वागा पहरावसी । —पचदडी री वारता

११ ऐतिहासिक श्रारयान ।

रू भे —वारता, वारथा ।

वारतालाप–स पु. [स वार्तालाप] परस्पर की जाने वाली बातचीत, कथोपकथन, सवाद।

वारतिक, वारतिक्क–स पु [स वार्तिकम्] १ किसी ग्रन्थ के उक्त, श्रनुक्त श्रोर दुरुक्त अर्थो को स्पष्ट करने वाला वाक्य या शब्द, व्याख्या ।

वि. वि —भाष्य मे केवल मूल ग्रथ का श्राशय ही स्पष्ट किया जाता है परन्तु वार्तिक मे वार्तिककार नई बात कहने के लिये भी स्वतन्त्र होता है ।

२ छद शास्त्र के नियमो से रहित एक प्रकार का तुकात गद्य पद्य मय छद ।

३ कात्यायन का एक प्रसिद्ध ग्रथ जिसमें पाणिनि के सूत्रो की विश्लेषणात्मक व्यारयाए लिखी हुई हैं ।

[स. वार्तिक]—४ वृत्तात, हाल ।

५ जासूस ।

६ दूत, चर ।

७ किसान ।

वि. [स वार्तिक] १ वार्त्ता या सवाद सम्बन्धी ।

२ व्याख्याकारी ।

३ खबर लाने वाला ।

वारतिय–स स्त्री [स वारस्त्री] वेश्या रण्डी ।

वारथा—देखो 'वारता' (रू भे)

उ०—म्हारो पती हाथळ रै जोर हाथी मारै है सो श्री नाहर इणा ने कहणा चाहीजै इती भा वारथा । —वी स टी

वारद—देखो 'वारिद' (रू भे)

उ०—१ सुदर तन स्याम स्याम वारद सम । कौटक भा रद काम सकाम । —र. ज. प्र

उ०—२ वारद विद्युत वरण, पीत ग्ररु धरण नीलपट । तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट । —र. रू

वारदद्रू–स. पु. [स वारिद-द्रु] इन्द्र । (ग्र मा)

वारदा—देखो 'वरदा' (रू भे)

वारदात–स. स्त्री. [फा वारिदात] १ कोई सोचनीय काण्ड, दुर्घटना

उ०—ठोड ठोड खून ग्रर कतल री वारदाता होवती ग्रर रात-दिन करफ्यू लाग्योडो रैवतो । —रातवासो

२ दगा फसाद, मारकाट ।

३ चोरी, डकैती ।

४ वृत्तात, हाल, हकीकत ।

उ०—साम्है देख पूछी—क्यो, केसरिया कुवर किस तरह ? तद केसरसिहजी सारी वारदात जाहिर की । —पदमसिह री वात

वारद्ध–स पु—१ देखो 'वारिद' (रू भे.)

२ देखो 'वारिधि' (रू भे)

वारद्धक–स पु [स वार्द्धक्य] १ वृद्धावस्था, बुढापा ।

उ०—किताक काळ पछै अठी यवावदा नै नरेस हालू १८२१ ग्रनेक उपाय करि थाको तौ भी रण मरण न पायो जाणि प्रतिदिन वारद्धक नू वरद्धमान देखि —व भा

२ वृद्धि, बढोतरी ।

३ बुढापे की शिथिलता ।

रू भे —वारद्धक ।

वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस—देखो 'वारिधि' (रू भे)

उ०—वारधेस जोम गाज गाळीया ग्रकूट वासी, राजचीळ जाळीया तारसी तेज रूस । —हुकमीच द खिडियो

वारनारी–स स्त्री [स] रडी, वेश्या ।

वारनिध, वारनिधि—देखो 'वारिनिधि' (रू. भे) (ग्र मा , ह ना. मा.)

उ०—जोय प्रवळ ग्रणपार जळ, वार रहया भड ग्रान । निडर उलघण ग्रारनिध, हुवो त्यार हनुमान । —र रू.

वारनिस–स पु [ग्र. वार्निस] लकडियो या लकडी के बने फर्नीचर पर चमक लाने के लिए लगाया जाने वाला एक तरल पदार्थ ।

रू. भे —वारनिस,

वारनिसांणी—देखो 'वार' (२४)

वारपार–स पु [स ग्रवर-पार] १ एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक की पूरी चौडाई, मोटाई ।

२ पूरा या समूचा विस्तार।
३ सीमा, मर्यादा।
उ०—रूप न रेख अलेख है, कुछ वार न पारा।
—केसोदास गाडण
वि—१ पारगत,दक्ष।
उ०—हाथ री उछाग नै पगा री फुरती अर गाढ पर अमट। तिकौ सरदार री वातानो वार। सो म्होकमसिंघ तो च्याराही में वारपार। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
अव्य—२ इस किनारे से उस किनारे तक।
रू भे—वारापार,

वारवधू—देखो 'वारवधू' (रू भे.)
उ०—आगै वरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग। हुवणौ का अलियळ हुआ, वारबधू वप लाग। —बा. दा.

वारबुद-वि. [स वारिबुद] तुच्छ, सुक्ष्म। (अ. मा.)

वारमुखी-स. स्त्री. [स] रण्डी, वेश्या।
रू. भे—वारमुखी।

वारमौं—देखो 'वारवौं' (रू भे)
उ०—वरस वारमइ वइठउ राजि। अरि भाजइ सभळि आवाजि।
—ढो मा

वारवधु, वारवधू-स स्त्री [स वारवधू] १ वेश्या, रण्डी। (अ मा)
२ नर्तकी, गणिका।
उ०—वरवाजू के ततकार खटरागू के घीर, वारवधु के न्रतकार त्रिछायतू के वणाय अत अतरू के डवर .. । —र रू
रू भे—वारवधू, वारवधूटी, वारवधू।

वारवार—देखो 'वारवार' (रू. भे)
उ०—हुज रद रदन दसन मुख दीपन, ढळियौ कस पकडि गज-दत। वारवार करतार वखाणौ, सुर मिणगार सुधारण सत।
—ह ना मा

वारवाह—देखो 'वारिवाह' (रू भे)

वारविलासणी, वारविलासनी, वारविलासिनी-स स्त्री [स वारविलासिनी] १ वेश्या, रण्डी।
२ नर्तकी, गणिका।
उ०—चामरधारिणी वारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्यान गावन . । —व स
रू भे—वारविलासिणी,

वारविलोवण-वि [स वारि-विलोवन] समुद्र मथन करने वाला।
स पु—विष्णु, हरि।

रू भे—वारिविरोळण।

वारस—१ देखो 'वारस' (रू भे)
उ०—आसू वद वारस दिन आसुर। मौत अचित गया कर समर।
—रा. रू.
२ देखो 'वारिस' (रू. भे.) (मा. म)
उ०—दिस दिस 'जोदै' रोह उवै लोक सह ईखतो। लड जिय लीधै रोह, वारस कोइय न आवियो। —पा. प्र.

वारसार—देखो 'वारिसार' (रू. भे) (अ मा)

वारसिक-वि [स वार्षिक] १ एक वर्ष भर या एक वर्ष तक। रहने वाला।
२ सालाना।
३ वर्षा ऋतु या वर्षा सम्बन्धी।
स पु—१ वर्ष के वर्ष दिया जाने वाला कर।
२ वर्ष के वर्ष मिलने वाला लाभ।

वारसिप-स पु [अ वारशिप] युद्ध पोत, जंगी वेडा।

वारसी-स स्त्री—१ वाला, युवती।
उ०—पहिलू परजापति-थिकी परठाइ ए पइरि। भोगवि सोडस वारसी, सुक सिघावीइ घिरि। —मा. का प्र.
२ रक्षा, सहायता, मदद, पक्षपात।
वि स्त्री—१ वर्ष की, वर्ष सम्बन्धी।
२ देखो 'वारस्त्री' (रू भे)

वारसुदरी-स स्त्री [स] १ वेश्या, रडी।
२ गणिका, नर्त्तकी।
रू भे—बारसुदरी।

वारसूळ-स पु यौ [स वार-शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार शूल का विशिष्ट वारो को विशिष्ट दिशाओ में होने वाला निवास।
वि वि—इसका सोम, शनि को पूर्व दिशा में, गुरु को दक्षिण में, रवि, शुक्र को पश्चिम मे तथा मगल बुधको उत्तर दिशा मे निवास रहता है। मतान्तर से रवि का उत्तर में भी।

वारस्त्री-स स्त्री [स] १ वेश्या, रण्डी।
२ नर्त्तकी, गणिका।

वारहौ-स पु.—यवन, मुसलमान।
उ०—असल दळ दिली रा भुजा उछवाळतो, समर भर 'भीम' दीठो सवा ही। घेर विच वारहो मंडोवर घातियो, मडोवर घेर आवेर माही। —द दा.

वारागना—देखो 'वारगना' (रू भे)
उ०—एक एक नै दोय दोय वारागना घिनु हजार गिणती करी आमना। —जयवाएँ

वाराणसी–स. स्त्री [स. वाराणसी] बनारस का प्राचीन एवं आधुनिक नाम।

उ०—वाराणसी नगरी भली, राजा तिहा मकरध्वज नाम ए। तेह नो पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जाणे रूपै काम ए। —वि. कु.

रू. भे.—वाणारसि, वाणारसी, वाणरस, वाणारसी।

वारांह—देखो 'वराह' (रू. भे)

उ०—साहिजादो सुरताण वै, रिण क्रूर्म रिम राह। डार परिग्गह करि मुहरि, नीसरियो वाराह। —गु रू ब.

वारा–स स्त्री [स वार] १ मदिरा, शराब। (अ. मा.)

२ देखो 'वराह' (रू भे.)

३ देखो 'वार' (रू भे)

उ०—१ बीछुडता ई सज्जणा, राता किया रतन्न। वारा विहु चिहुं नाखिया, श्रासू मोती ब्रन्न। —ढो मा

उ०—२ न को मास पख न को तिथ वारा। —अनुभववाणी

वाराणसी–देखो 'वाराणसी' (रू. भे)

वाराधिप–स. पु. [सं. वारि-अधिप] समुद्र।

उ०—वाराधिप सेता बंधण री, कुळ राखस जूथ निकंदण री। दिल तू 'किसना' जग वंदण री, नहची रख कौसळ नंदण री। —र. ज प्र.

वारापार—देखो 'वारपार' (रू. भे)

उ०—उण मुख तै गग्गी कयौ, इण कर धरी दुधार। वार कहण पायो नही, निकसी वारापार। —द. दा.

वाराह, वाराहउ, वाराहर—देखो 'वराह' (रू भे)

उ०—१ धडहडै सात पयाळ धूजै, सेसनाग धडक्क ए। खित भार दाढ वाराह खडक्कै, कोम कध कडक्क ए। —गु रू. ब

उ०—२ जइ भागउ तो वाराहउ, जइ थाकउ तो पारकरउ घोडउ जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दावडउ। —व. स

उ०—३ हुवो आप हयवाह, राव वाराहर भालो। ले छकडा सिरलार, पुळै वाजू दळ पाळो। —पा प्र.

वाराहिकद—देखो 'वाराहीकद' (रू भे)

वाराही–स. स्त्री [स.] १ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आठ देवियो मे से एक।

२ पृथ्वी।

३ सूअर के रूप मे विष्णु की एक शक्ति।

४ सूमरी।

५ सप्त मातृकाओ मे से एक जिसका वाहन बैल है।

६ माप विशेष।

रू. भे.—वाराही, वराहजी, वराही।

वाराहीकद–स पु. [स.] एक महाकद जो औषधियों मे काम आता है और जिसे गैठी भी कहते हैं।

रू. भे.—वाराहीकद, वाराहिकद।

वारि–स. पु [सं] १ पानी, जल।

उ०—१ बापरै तखत बैठो, धारि छत्र जोम धारि। बीजळा दिलेस देस, मारि कीध थाळ वारि। —सू प्र.

उ०—२ अहिलइ गयु अवतार, इम, कामकदला नारि। परवतनु गि तलावडी, वृथा रहिउ जिम वारि। —मा. का प्र.

उ०—३ वारि वसती पद्मिनी, ससीहर सूर आकासि। महीपति! तिम महिला-तणा, मन ते माधव-पासि। —मा का. प्र

२ कोई तरल पदार्थ।

३ सरस्वती, वाणी।

४ निसानी छद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे ४ गुरु व १५ लघु वर्ण होते हैं।

५ देखो 'वार' (रू. भे)

उ०—१ छाना नितु पुहचइ परधान, रळियात थ्या चिति परधान। मास दोह आगळि असवार, आया पूगळि नयरि ते वारि। —ढो. मा

उ०—२ कहिस्या तो तूझ भलो करणाकर, वपि एकणि सहु वरै विचारि। रावळ जाम सरीखो राजा, वळै घडिस जो बीजी वारि। —ईसरदास बारहठ

६ देखो 'वारी' (रू भे)

रू भे.—वारि, वारीय।

वारिईस—देखो 'वारीस' (रू भे)

उ०—जळेस वारिईस की, सुरेस नेस श्री जिसा। 'अभी' त्रिलोक में अचभ, भोग भागवै इसा। —रा रू.

वारिख–स पु [स. वार्क्षम्] वन, जगल। (ह. ना. मा)

रू भे.—वारख।

वारिगह, वारिग्रह—देखो 'वारिगह' (रू भे.)

उ०—जु मन वाध्यो चाहिजै। त्यै कै कारणै या वारिगह दीघी छै। —वेलि टी.

वारिचर–स.पु. [स] १ जल में विचरण करने वाले प्राणी, जल-जन्तु।

२ मछली, मत्स्य।

३ शख।

वारिज–सं. पु [स] १ कमल।

उ०—रवि ऊगता जिसो मुख राजै वारिज प्रफुल्लित नैत्र विराजै।
—सू प्र

२ शख। (ह. ना मा)
३ घोघा।
४ मत्स्य, मछली।
रू भे.—वारिज, वारज।

वारिजपुंड्र—स पु [स] श्वेत-कमल।

वारिजलोचण—स पु [स वारिजलोचन] परमेश्वर। (ह. ना. मा)

वारिजात—देखो 'वारिज'

वारिद, वारिद्द—स. पु [स. वारिद] मेघ, बादल।

उ०—१ रित सारिद वारिद रहित, आगम अघहण मास।'अजन' विदा कीधो 'अभो' निरखण ग्रेह निवास। —रा रू

उ०—२ किना कध धारा झरै मद्द काळा। वर्ण जाणि वारिद्द भाद्रव्व वाळा। —रा रू.

रू भे—वारद, वारिंद, वारद।

वारिद्र—स पु [स] चातक-पक्षी।

वारिध—देखो 'वारिधि' (रू भे)

उ०—अगीकृत ईस्वरइ जहर पीधउ दुख हतइ। वारिध वाडव अग्गि वहूँ पाणी सासंतइ। —प च चौ

वारिधर—स पु. [स] १ बादल, मेघ।

२ समुद्र।
३ नागरमोथा।
४ एक समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण और दो भगण होते हैं।
रू भे—वारिघर।

वारिधि—स पु [स.] समुद्र, सागर।

उ०—१ पदमणि स्यु पाणी ग्रहण, विचि वारिधि अतिक्रूर। ऊखाणी साची हुई, बाघ नदी जल पूर। —प च चौ

उ०—२ हू वारिधि माहे पड्यो, मीनोदर रह्यो केम। गणिका घरि सुक किम थयो, भाखो जिम छै तेम। —वि कु

रू भे—वारध, वारधि, वारिंधि, वारद्ध, वारघ, वारघी, वारधीस, वारधेस, वारिघ वारध।

वारिनाथ—स पु [स] १ समुद्र।

२ वरुण देव।
३ बादल।

वारिनिधि—स पु [स] समुद्र।

रू भे.—वारनिध, वारनिधि।

वारियां—देखो वेळा' (रू भे)

उ०—वात वड साळ फरीया जकण वारियां, भाटी कह 'दान' 'सादूळ' छक भारीया। धणी सूंपा सरण मरण सक धारीया, लाज मन धरै जेसाण गढ लारीया। —जसो ग्राढो

वारियो—स पु—देखो 'वारियौ' (रू भे.)

उ०—सामै स्यारी जूप, ताकडै राल्यूं रेवै, करै कीलिया राग, वारियो दूहा देवै। —दसदेव

वारिरुह—स. पु [स] कमल।

वारिवारि—१ देखो 'वारवार' (रू भे)

उ०—तु वारिवारि पथ साहानि कहुछौ राजन। चरण त्यजवा तह्यारा किम चालि माहारू मन। —नळाख्यान

२ देखो 'वारीवारी' (रू भे)

वारिवाह—स पु [स] बादल, मेघ।

रू भे—वाग्विाह, वारवाह।

वारिविरोळण—देखो 'वारविलोवण' (रू भे.) (ना मा)

वारिस—स पु [फा] १ किसी की जायदाद का हकदार, जायदाद के लिये मनोनीत किया हुआ या कानूनन अधिकारी।

२ उत्तराधिकारी।
३ वह जिसने अपने आपको किसी अन्य के कार्यो के लिये योग्य बना लिया है।
रू भे—वारस।

वारिसार—स पु—चन्द्रगुप्त का एक पुत्र, अशोक का पिता, बिंदुसार।

वारिसास्त्र—स पु [स वारिशास्त्र] गर्ग मुनि द्वारा रचित फलित ज्योतिष का एक ग्रथ।

वारी—स स्त्री—१ अवसर, मौका, पारी।

उ०—१ थावी केतली रे नर ऊमर थारी। भावे मुख असहा वच भारी। वचस्यो नही आविया वारी, गावो रे गावो गिरधारी। —वक्सीराम लाळस

उ०—२ सेज सवारी छै तन री तयारी छै। और उवा री वारी छै आज। —रसीलै राज रा गीत

२ न्योछार, उत्सर्ग।

उ०—१ हू वारी रे माधवा, विरह जलंती जाणि। तू तु तापइ दूरि थी, प्रेमि पसारी पाणि। —मा का प्र.

उ०—२ नीवूडे री गहरी गहरी छाय ओ था पर वारी रे सैंया। ढोला नै मरवण सुख भर पोढिया ओ राज। —लो. गी.

३ निवारण, निवृत्ति।

उ०—सदा सेवका लोक सानिध्यकारी। प्रभु 'पास' स्तमनो विघ्न वारी। —स. कु.

४ साधुवाद या धन्यवाद देने की क्रिया या भाव ।

उ०—हाथी रै होदै मरियो पती नै देख वीर स्त्री कहै वारी वालम वारणै जाऊ धणी री वाह हथ वाहनै वारणै । —वी. स टी.

[स वारी] ५ हाथी को बाधने की रस्सी या जजीर ।

६ हाथी को पकडने के लिये बनाया हुआ गड्ढा ।

७ हाथी को बाधने का स्थान ।

८ कैदी, बदी ।

९ जल-पात्र ।

१० तरल पदार्थ रखने का एक टोटीदार बर्तन ।

११ सरस्वती का नाम ।

१२ देखो 'बारी' (रू भे)

उ०—तद भरमल रै रहवासरै उण घडी खिडकी कराई । सो रात घडी च्यार गया भरमल हजूर आवै, उठै जीमै, सेफ बिछावै । बारी होवै सो मोहल आवै । रात घडी च्यार पाछली रहा वहोड जावै । —कुवरसी साखला री वारता

रू. भे.—बारि, वारि ।

वारीय—देखो 'वारि' (रू भे)

वारीवारी—देखो 'वारी वारी' (रू भे)

उ०—दारूडा री मनवार आपस री, वण रही वारी वारी । —रसीलै राजरो गीत

वारीस–स पु. [स वारि+ईश] १ समुद्र ।

२ जल के अधिपति वरुण देव ।

रू- भे.—बारिस, बारीस, वरीस, वारिईस ।

वारुंवार—देखो 'वारवार' (रू. भे.)

वारु—१ देखो 'वारू' (रू. भे)

उ०—१ वैशाख वारु मास, नही ताढि तडकउ तास । उची थढि आवास, वइसयइ केहनइ पास । —स कु.

उ०—२ पहुआवर धनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ ग्वालेर । करणसाही लाडु भला रे लाल, वारु बीकानेर । —प. च. चौ

उ०—३ हउआ [हुइतो] सभालु [मन] मारू ठारु । सोकागनीजवा [ला लागी] छि, सीतल [वचनि] वारु । —नळाख्यान

वा'रु—देखो 'बाहरू' (रू भे)

वारुण–वि. [स.] १ वरुण का, वरुण सम्बन्धी ।

२ वरुण को समर्पित किया हुआ, दिया हुआ ।

[स पु] १ नव खण्डो मे से एक ।

२ शतभिषा नक्षत्र ।

३ देखो 'वरुण' (रू. भे.)

वारुणास्त्र–स. पु [स.] एक अस्त्र विशेष ।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवर्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दानवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र डिभककारास्त्र नारायास्त्र अस्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणी । —व. स

वारुणि–स. पु [स. वारुणि] १ एक पैतृक नाम जो अगस्त्य, भृगु एव वाशिष्ठ आदि ऋषियो के लिये प्रयुक्त होता है ।

वि. वि —ये सब ऋषि ब्रह्मा के यज्ञ से उत्पन्न हुए और वरुण ने इनको पुत्र रूप में माना इसलिये इनका नाम वारुणि पडा ।

२ धर्म सावर्णि मनवन्तर का एक ऋषि ।

३ एक पक्षिराज, जो कश्यप एव वनिता के पुत्रो मे से एक था ।

४ वानरो का एक राजा ।

वारुणी–स स्त्री [स] १ स्वायभुव मनवन्तर के वरुण की पत्नी ।

२ अरण्य प्रजापति की कन्या जो चक्षुप् राजा की पत्नी एव चक्षुप् मनु की माता थी ।

७ एक महाविद्या ।

उ०—वारुणी दारुणी भास्करी सकरी जया विजया घोरा कोवेरी प्रवाही मदनसेना । —व स.

८ उपनिषद विद्या ।

९ पश्चिम दिशा ।

१० मदिरा, शराव ।

११ शतभिषा नक्षत्र, जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को पडता है ।

१२ उक्त दिन का माना जाने वाला पर्व ।

१३ दूर्वा, दूव ।

१४ घोडे की एक चाल ।

१५ मादा हाथी, हस्तिनी ।

रू भे —वरुणी, वरूणी, बारणी, बारुणी, बारूणी, वारणी ।

वारुध—देखो 'वारिधि' (रू. भे) (अ मा)

वारुसी–स पु —भाटी वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (वा दा. ख्यात)

वारूवार—देखो 'वारवार' (रू भे.)

उ०—सकति गणेस नवै ग्रह सोई सुर तेतीस सहाय सकोई । वड पहि जतन सु वारूंवारा, हुवो धरम लख कोड हजारा । —रा. रू

वारू–वि (स वर] १ वर, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—१ तो वारू राजा रे अहि उसीया पछी मोहरा साहिवा, अनगसेना इण नाम रे वेस्या विगताली । —वि कु

उ०—२ भोग परित्याग प्रव्रज्या परयवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो । —वि कु.

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ तु गुण अनत करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे। सुदर तुझ मुख नउ मटको, वारू लोयण नउ लटकउ रे।
—वि. कु.

उ०—२ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मडप नीपाईउ, पोइणि ने पानि छाइउ, कमूना छावडा मोतीना चडक। —व स

३ स्वादिष्ठ।

उ०—मोतीआ लाडू, दाखडिआ लाडू, दहीथरा तिलसाकली, फीणा वरसोला, साकरीआ चणा, कोहलापाक, दूध पाक सेलडी पाक खरगा पाजा जलेवी हेसमी, वारू पडसूधी तणा आछा माडा, लगार नही खाडा। —व. स

स. पु —१ वह हाथी जिस पर विजय पताका रहती है।

रू भे—'वारु'।

वा'रू—देखो 'वाहरू' (रू भे)

वारूगु वारूगौ—स पु —एक कारीगर।

उ०—गलीआरा चीतारा घणा, ताई वणकर तेहनी नही मणा। कडीआ जडीआ गणीआ भला, लाभइ वारूगा रूडी कला।
—नळदवदती रास

वारूवार—देखो 'वारवार' (रू. भे)

वारेवौ—स पु —त्यागने, निवारण करने की क्रिया या भाव।

उ०—राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवोहो। सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार वारेवौ हो। —वि. कु

वारोत—देखो 'वारोत' (रू भे)

वारोवार, वारोवारी—१ देखो 'वारवार' (रू भे)

उ०—१ तिहा जिनवर मुनि सुव्रत स्वामिनै, देव ग्रह निज आय। वारोवार करै गुण वरणना, मन सुद्ध प्रणमै रे पाय। —वि कु

उ० —२ किम रिहिसि ए निराधार, वाघ सघ करसि ता आहार। एणी पिरि करता वारोवारि, कलियुगि मन प्रेरयू अपार।
—नळाख्यान

२ देखो वारीवारी' (रू भे)

उ०—तूटै सनाह फूटै तुरस, वाह सरस तरवारिया। सोहै निराट हिंदू असुर, वाहै वारोवारिया। —रा रू.

वारौ—स पु —१ कूए से पानी निकालने का चरस, मोट।

उ०—१ ताहरा पावूजी कोहर तेवण आप लागा। ताहरा एक वारौ काढियौ। तैसू कोठा कूडचा खेळिया भरी। —नैणसी

उ०—२ सो नापौ ऊपर खडो थौ। कोहर तेवायौ सो वारा आठ नो नीसरिया। दसमो वारौ खाचता नाको खुस गयो। वरत ढीली पड गई। —नापै साखलै री वारता

२ कूए के पानी का मोट उडेलते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

३ रात्रि के समय मादा ऊटो के झुण्ड के बैठने का स्थान।

४ उजाड, जगल।

५ लघुशका करने की क्रिया।

६ समय, काल।

उ०—१ राम राज जोधपुर, सहू हरचद वारौ। मास पाच खट मास, साह आपै वाधारौ। —गु रू व

उ०—२ दिन आया चक्कवै गया सक्कवै समाए। दिन आया हरिचद गयौ वारौ वरताए। —रा रू

७ किसी काम या बात के लिए वह अवसर जो कुछ अन्तर देकर क्रम से आता है, पारी।

उ०—१ ताहरा जियै वडू री वारौ हुतौ, सु मारग रोकि ऊभी। ज्यू हरदास पाछली रात री बाहुडियौ ताहरा कह्यौ—सासूजी। हरदास बाहुडै छै। —नैणसी

उ०—२ घडी च्यार वैस पूछी वारौ कैरो। तद अरज कीवी भरमल री वारौ ले असवार हुया सो इहा री छै। तद आप उठि भरमल रै मोहल पधारियौ। —कुवरसी साखला री वारता

८ चेचक।

उ०—वणवीर आणि अर मूंहतै अचळै नू अर नाई लखमन लाहोरी नूं सूपियौ। आगै भोपतजी समाधिया हुया हुता। काचौ पाकौ वारौ ढळियौ हुतौ। —द वि.

९ स्कन्दापस्मारादि वालग्रहो से पीडित बच्चे के शिर के ऊपर वारा जाने वाला जल जो किसी वृक्ष विशेष की जडो में डाला जाता है।

१० वडी तीज के रोज लडकी के पिता के द्वारा उसके ससुराल भेजी जाने वाली मिठाई।

वि वि —इसमे वडे-वडे लड्डू भेजे जाते हैं।

११ वडी तीज के रोज लडके के पिता के द्वारा (शादी होने के पहले) पुत्र वधु के लिए भेजे जाने वाली मिठाई व वस्त्र आदि।

१२ देखो 'वार' (अल्पा, रू भे)

उ०—मरण तणौ डर कोई नही, मरना है इक वारौ रे। वहुत निवाज वडा करू, द्यु वहु देस भडारौ रै। —प च चौ.

रू. भे —वारौ।

वालटियर—स पु [अ] निस्वार्थ भाव से किसी कार्य मे योग देने वाला स्वय-सेवक।

वालघ—स. पु —एक जाती या वर्ग विशेष।

उ०—माली तवोली छीपा परीयट वघारा तूनारा सोनारा ठाठार लोहार चमार सुई वालघ कडीया सिलवट उड गाछा कोली टाटिया वावर ढेढ हूव। —व स.

वालंभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे)

उ० —१ वालभ एक हिलोर दे, आई सकै तउ आइ। वाहुडिया वे थक्कियां, काग उडाइ उडाइ। —ढो मा

उ०—२ प्रीतडी वालभ पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे। कठिन हियु नवि किजियइ, कीजइ सगुण सनेह रे। —स कु

थाळ, वाल–स पु. [स वल्ल] १ चादर, गिलाफ। (उ र)

२ पर्वत की तलहटी।

३ पर्वत की तलहटी मे स्थित खेत।

४ घुडसाल, अस्तबल।

५ घोडों का समूह।

उ०—घन हाथा हिंदु घणी, कीरत वणी सकाज। वाल तणी छोगी अवी, 'रूपमणी' घजराज। —चिमनजी आढो

६ तीन घुघची के बराबर एक तोल।

७ निषेध, वर्जन।

८ बारीक खुदाई या जाली काटने का एक औजार।

६ एक प्रत्यय।

१० देखो 'बाल' (रू. भे) (ह ना मा.]

११ देखो 'वाला' (मह., रू. भे)

उ०—लौकिक न रहइ लोकमा रे लाल, विसय थकी मन वाल सुकुलणी रे। काम भोग भुडचा कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल सुकु रे। —स कु

रू भे —वालइ, वालई, वाळि, वालि, वाळी, वाली।

वालइ, वालई—१ देखो 'वाल' (रू भे)

उ०—कान्हडदे पाटनउ घणी, बीजी भूमि भोगवई घणी। राज-रिद्धि नू किसू वखाण, वालइ पच-वरण केकाण। —का दे प्र.

२ देखो 'वाला' (रू भे)

वालउ—१ देखो 'वाल' (रू भे)

२ देखो 'वालो' (रू भे)

उ०—हु कित वालउ माय गहिरि गयदतउ खेलउ, हु कित वालउ माय, सेसफण विमुहा पिलहउ। —प च चौ

वाळक–स. पु [देशज] १ जगल मे स्वतन्त्र चरने वाले पशु, जिनके साथ चरवाहा नही होता।

२ नव प्रसूता मादा ऊट जो अपने बच्चे को छोड कर जगल मे चरने जाती है।

३ हाथ मे पहनने का कगन, बाल छड।

वि —१ बधन रहित, स्वच्छन्द, मुक्त (पशु)

वाळकी—१ देखो 'बाळी' (अल्पा, रू. भे)

२ देखो 'बालिका' (रू भे)

वाळको—देखो 'बाळक' (अल्पा, रू भे.)

वाळछी—देखो 'वाळछी' (रू भे.)

वालट्ठादोस–स पु —बालक के खाने के लिये बनाई हुई वस्तु को लेने मे लगने वाला दोष। (जैन)

वाळण–वि [स वलन] १ रोकने वाला, सामना करने वाला।

२ लौटाने वाला।

३ वापिस लाने वाला।

४ मोडने वाला, घुमाने वाला।

५ प्रतिशोध लेने वाला।

६ आने वाला।

वाळणोत—देखो 'बाळणोत' (रू. भे.)

वाळणो वाळवो–क्रि. स. [स वलन] १ वापस लौटाना, लौटा कर लाना।

उ०—१ जुडै तै वार किता इद्रजीत, सँहार दइत्ता वाळी सीत। —ह र.

उ०—२ वाळियौ वरग गाया तणौं वीसहथ, सीर सभाळियौ बीर सागी। अरण विच वरण विच घटा जिम ओवडी, लोवडी जाय असमान लागी। —गोपीनाथ गाडण

उ०—३ रतन मजरी रीस करि कहियो, राजा नर ब्रह्म री आण दीवी छै। जु साढ पाछी वाळ। —पच दडी री वारता

२ वापस लेना, प्राप्त करना, अधिकार में करना।

उ०—१ म्हारै माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतो हू मोटो हुईस, नै माहरी घरती गई छै सु वाळीस। —नैणसी

उ०—२ आपै वेढ सू अलाहिदा रहिस्या, नै आपा नू घरती वाळणी छै। —नैणसी

उ०—३ वाळण दक्खण वसुह, कटक वध चढिया कोप्रण। भेरी पचसद्द ताम, सुणियै लग जोजण। —गु रू व

३ प्रति शोध लेना।

उ०—ओसेरसाह राव ओजैतसिघ जी रै वैर वाळण रै किये राव मालदे ऊपरि आप पधारि अर। राव मालदे रा रजपूत उमराव घणा मारिया। —द. वि

४ रोकना, सामना करना।

५ वापस बुलाना।

६ घुमाना, फिराना, चक्कर लगवाना।

७ विदा करना, लौटाना।

८ मोडना ।

उ०—१ विचै आवता वधवा बाह वाळै । रटै राम वाण जती छेदि राळै । —सू प्र

उ०—२ किण री ई रहचो न हटकियो, निज हट कियो निभाव । बाळै ज्यूंइ वळियो नही, वाळापणंइ सुभाव । —जैतदान बारहट

९ खारिज करना, निरस्त करना ।

उ०—जनम जनम में करज कियो है माथै करडो । मिनख कियो महाराज काट दे क्यू नहि खरडो । यो खरडो करडो घणो, कीकर बणै बणाव,निस वासर सगराम कह,रामघणी नै ध्याव । रामघणी नै ध्याव,वाळदे खावद खरडो । जनम-जनम मे करज कियो है माथै करडो । —सगराम दास

१० मिटाना ।

उ०—मन जाणो पीवू पै मिसरी, छाछ सूवरणी मिळै न छाट । वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखन रा आट । —ओपो आढो

११ झुकाना ।
१२ वसूल करना, लेना ।
१३ जेवरी गूथना ।
१४ हवाकरना, पवन डुलाना ।
१५ पशुओं को एक स्थान पर एकत्र करना ।
१६ देखो 'बाळणी, वाळवौ' (रू भे)

वाळणहार, हारो (हारी), वाळणियो—वि० ।
वाळिओडो, वालियोडो, वाळयोडो—भू० का० कृ० ।
वाळीजणो, वाळीजबो—कर्म वा० ।
वालणो, बालबो—रू० भे० ।

वालणो, वालबो—देखो 'वाळणी, वाळवी' (रू भे)

उ०—आऊखा नै अतपक्ष, अणसण पाली नै । सवत पनरपचीस, मन वैराग वाली नै । —ऐ जै का स

उ०—२ सद सु सव थई पाडइ, लेख न लिखिउ जाय । पिऊ माहरु परदेसि थि, किणी-परि वालसि वाय । —मा. का प्र

उ०—३ माहरो मन पापी हो, कहूं अवगुण किसा । मन पाछो वाल्यो हो, एम कहे मदालसा । —वि कु

वालणहार, हारो हारी), वालणियो—वि० ।
वालिओडो, वालियोडो, वाल्योडो—भू० का० कृ० ।

वालीजणो, वालीजबो—कर्म वा० ।

वाळध-स. पु—श्वान, कुत्ता । (अ मा)

बालम—१ देखो 'बालम' (रू. भे)

उ०—१ हेटै दुसमण हाथी रै होदै मरियो पती नै देख वीर स्त्री कहै वारी वालम वारणै जाऊ घणी री वाह हथ वाहने वारणै । —वी स. टी.

उ०—२ कहै कुमरी नै हो ताहरो भाग्य फल्यो । मन मानीतो हो वालम आयो मिल्यो । —वि. कु

वालमकाकडी-स स्त्री —लम्बे आकार की एक ककडी विशेष ।

रू भे —वालमकाकडी ।

वालमियो—देखो 'वालमियौ' (रू भे)

२ देखो 'वालम' (अल्पा, रू भे)

वालमिक, वालमीक—देखो 'वालमीक' (रू. भे)

उ०—देवी वालमिक व्यास रुपे तु कर्त्ता । देवी रामायण पुराणी भागवत्त । —देवि

वालर-स पु—हरिण, मृग ।

वालरकाकडी-स स्त्री [स. वल्लूर-कर्कटी] रेगिस्थान में होने वाली एक ककडी विशेष । (उ र)

वाळलियो—देखो 'वाळलो' (अल्पा, रू भे)

वाळलो-स पु—स्त्रियो के गले मे पहनने का हसुली के आकार एक आभूषण ।

रू भे —बाळलो ।

अल्पा —वाळलियो, वाळलियो ।

बाळव-स पु [स वालव] फलित ज्योतिष मे दूसरा करण जिसमें शुभ कर्म वर्जित नही है ।

रू. भे —बालव ।

वाळस—देखो 'वाळस' (रू. भे.)

वालहउ—देखो 'वालो' (रू भे.)

उ०—सखे आतीस साभळी रे, भरम पडघउ भरतार । एहनउ अनेरउ वालहउ रे, मूंकी दडाकार । —स. कु.

वालहली-स. स्त्री [स वल्ल फल्लिका] लता की फली ? (उ. र.)

वाळहो—देखो 'वालो' (रू भे)

उ०—वळवळती रेत रै माथै ढाळोढाळ पाणी रळकण लागो । सूखा वाळहा खाळा जीवण साचरता ई भरणाटै दौडण लागा । —फुलवाडी

वालहो—देखो 'वालो' (रू भे.)

उ०—१ जिम सालूरा सरवरा, जिम धरणी अर मेह । चपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह । —ढो मा.

उ०—२ माहरा वालहा, ताहरी न तजुलार तू हीयडा नु हार । तू यौवन सिणगार, तू भोमी भरतार । —वि. कु.

उ०—३ मदन मजरी बेटी मुझने वालही रे, ए सरिखो वर जोइ।
—स्रीपाल रास

(स्त्री. वालही)

वाला–स. स्त्री —१ पवार वश की एक शाखा। (बा. दा. ख्यात)

२ वस्त्र विशेप।

उ०—रत्न कबल छाइल मकवल अगल साउला उरसाला वाला पटुला वाफला घनवेलि कमलवेलि। —व. स

३ वृद्ध व्यक्तियो द्वारा ससुराल मे स्त्रियो के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द विशेप।

२ देखो 'वाला' (रू भे) (व. स., ग्र. मा.)

उ०—नह वाला नह तरणा, ग्रध परण्या न कवारा।
—कॅसोदास गाडण

रू. भे.—वाल्हा, वाल्हा।

वालावत–स पु —राठोड वश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

वालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू भे)

उ०—हो वालिभ मइ तुनइ वारियउ, वा' रे, हो जूयटइ रमिवा तू म जाइ। —स. कु

वालिभि—देखो 'वल्लभ' (रू भे.)

उ०—कविन्याति कायस्थ वड, वालिभि विख्यात। पूरुए पद वधता दीह थया दह सात। —मा का. प्र

वालि—१ देखो 'वाल' (रू भे)

उ०—१ कूकडा कध कालम्म कन्न, रेवत जोति दीवा रतन्न। पाणेण पियइ जळ पोव पथ, सोहइ सरूप धुरि वालि सथ।
—रा ज. सी

उ०—२ पांडव दीइ चासणी खाण। वालि लेई वाध्या केकाण।
—का. दे प्र

उ०—३ हइ वालि खभि सोहइ हसत्ति। गढपत्ति जइतसी ग्रडव गत्ति। —रा ज. सी

२ देखो 'वाली' (रू भे)

वालिद–स. पु [ग्र] पिता, जनक।

वालिदा–स स्त्री [ग्र] माता।

वालिबध–स पु. एक प्रकार का घोडा जो उत्तम गिना जाता है।

वालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू भे)

उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहु ग्रकयथ्य। जिए चडचा दळ उतरइ तरुणि पसारइ हथ्थ। —ढो मा

वाळियोडो,वालियोडो–भू. का. कृ. १ वापस लौटाया हुग्रा, लौटाकर लाया हुग्रा. २ वापस लिया हुग्रा, प्राप्त किया हुग्रा, ग्रधिकार में किया हुग्रा. ३ प्रतिशोध लिया हुग्रा. ४ सामना किया हुग्रा, रोका हुग्रा ५ वापस बुलाया हुग्रा. ६ घुमाया, फिराया व चक्कर लगवाया हुग्रा ७ विदा किया हुग्रा, लौटाया हुग्रा, ८ निर्देश दिया हुग्रा. ९ मोडा हुग्रा, वल डाला हुग्रा १० खारिज किया हुग्रा. ११ मिटाया हुग्रा. १२ भुकाया हुग्रा. १३ वसूल किया हुग्रा, लिया हुग्रा १४ जेवरा गूथा हुग्रा. १५ हवा किया हुग्रा, पवन डुलाया हुग्रा. १६ एक स्थान पर एकत्र किया हुग्रा (पशु)

१७ देखो 'वाळिगोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वाळियोडी, वालियोडी)

वाळी–स स्त्री [स. वाळी] १ कान व नाक का ग्राभूपण विशेप।

प्रत्य.—२ सज्ञा या क्रिया शब्दों के ग्रागे लगने वाला सम्बन्ध बोधक प्रत्यय।

३ देखो 'वाळो' (पु.) (रू भे.)

वाली–वि स्त्री —प्यारी, प्रिया।

उ०–वोह सिर दार सीला सुं सवायो। वाली सासडली रो जायो।
—रसीले राज रा गीत

देखो 'वाल' (रू. भे.)

उ०—वाळिया—वधइ घरि-घरि ग्रहास। ग्रासिया सपूरित ग्रास वास। —रा. ज. सी.

१ देखो 'वाळी' (ग्रल्पा, रू भे.)

२ देखो 'वाली' (रू भे)

वाळिवेस—देखो 'वाळीवेस' (रू. भे)

वालीसा–स. पु.—चौहान वश की एक शाखा।

उ०—सु लाले रै वैर रा भाखरसी सादूळोत सू थो, तिण ऊपर वालीसा री धरती में रहतो। —नैणसी

वालीसो–स. पु —वालिसा शाखा का व्यक्ति।

वालु–स पु —एक शाक विशेप।

उ०—वालु नइ वेलातरु, वेऊ वेतस वांणि। वग्रारु वाहलु लीउ, वाउलीउ वखाणि। —मा. का प्र.

वालुका–स स्त्री [स] १ ककडी विशेप।

२ देखो 'वालु' (रू. भे)

वाळुकाजत्र—देखो 'वाळ्काजत्र' (रू. भे.)

वालुकाप्रभा–स पु [स] एक नरक का नाम।

वाळुकायत्र—देखो 'वाळ्काजत्र' (रू भे)

वाळुचो, वाळुछो, वाळूचो—देखो 'बाळछो' (रू. भे)

वालेय—देखो 'वालेय' (रू भे) (ह ना. मा)

वालेसर—देखो 'वालो' (मह. रू भे)

उ०—१ गाव सिधाया ओ अजमो कूरण सोवसी ओ राज। थेई ओ मानेतरण राणी थेई ओ वालेसर राणी। —लो गी

उ०—२ वालेसर हो वली परभातें वात, कहस्यु आइ होसी जीसी जी। दिलीसंर हो वाची चीठी वात, सीख करा जावा घरे जी। —प च चौ

वालोच—स पु.—प्रेम, प्यार।

वालोत—स पु [स्त्री वालोतरणी] चौहान-वश की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (वा दा ख्यात)

वालोळ—स स्त्री —सेम की फली जिसकी तरकारी बनती है।

वाळो—स पु—१ बरसात मे चलने वाला पानी का नाला, जल स्रोत।

२ नेहरुवा नामक रोग व इसका कीडा।

वि वि —देखो 'नारू

प्रत्य [स आलुच्] (स्त्री. वाली) ३ क्रिया शब्द के आगे लग कर कर्तृ वाचकसज्ञा का अर्थ बोध करने वाला शब्द।

ज्यू—करण वाळो, मरण वाळो, बोलण वाळो।

उ०—मारण वाळा सूं मरण वाळो वत्तो सूरवीर व्है। मारण वाळो तो कायर ई व्हिया करै पण कोई सूं मरणियो कायर नी व्है। —फुलवाडी

४ सज्ञा, पदार्थ या स्थान-वाचक शब्द के आगे लग कर सम्बन्ध वाचक अर्थ-बोधक शब्द। (ह ना. मा)

ज्यू—दूधवाळो, घर वाळो।

उ०—१ साहिजादा अनै रायजादा सगळा, बाधियो वळै दिखणाद वाळो। —सुभराम गोड री गीत

उ०—१ नाडी वाळो तोतक तो गजब इज रह्यो। आ तो सूळी चढरणा बिचै ई सवाई व्ही। —फुलवाडी

रू भे —आळो।

५ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, का।

उ०—१ उदधि कछवाह वाळो उदक ऊकळै, रूक तरण भीम ज्वाळा तणं रोस। —राव दुरजणसाळ हाडा री गीत

६ देखो 'वाळो' (रू भे)

उ०—चमकै बूंदा झमकै वाळा, और बुलाक मोती लटकन वाळा। —रसीले राज री गीत

रू. भे.—वहाळो, वाळो, वाहळो, वाहाळो, व्हाळो, वहाळो, वाळहो, वाहळो, वाहलो, वाहल्यो, वाह्हाळो, व्हाळो।

वालौ—स पु.—१ पति, खाविंद।

उ०—तूनै धूप खेवत के हरसघी, कर हेत। वाला वीछडिया मलै, मनवछत फळ देत। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ स्वामी, मालिक।

३ चुंबन, बोसा।

उ०—बेटा आगै बाप नै फेर हार मानणी पडी। लुळनै उरण रा लिलाड माथै वालो दियो। —फुलवाडी

वि (स्त्री वाली) १ प्यारा, प्रिय, स्नेही।

उ०—१ वालो लागे छै म्हारो देसडो ए लो। केम कर जावूं परदेस, वाला जो। —लो गी.

उ०—२ ज्या घणूं वालो जीवणो, घट तिका डर व्यापै घणो। महाराजा सूं भ्रम द्वार मागै, सहर तजि ईद्र साह। —रा. रू.

२ मनोहर, मोहक।

३ मीठा, मधुर।

रू भे —व्हालो, वालहो, वालो, वाल्हो, व्हालो, वहालो, वा'लड, वालहउ, वालहो, वाल्हू, वाल्हो, वाहलउ, वाहलु, वाहलू, वाहलो, वाहल्यो, वाहुलु, वाहुलो।

अल्पा.,—वालुडो, वालूडो, वालडो, वाहलकडू, वाहलकडो, वाहिलियो।

मह.,—वाल्हेसर, वालेसर, वाल्हेसर।

वाल्मीक, वाल्मीकि—देखो 'वालमीक' (रू. भे)

वाल्हम—१ देखो 'वल्लभ' (रू भे)

उ०—श्री म्हारो झूपडो लूटनै पुळीजै न्हास जाओ विवेक राख नै, वाल्हम जो म्हारो पती आय गयो तो अडब-अडब रुपीया री कर एक एक तिणखलो ही वेचसी। —बी स. टी.

२ देखो 'बालम' (रू भे)

वाल्हा—देखो 'वाला' (रू भे)

वाल्हीक—स पु [स] १ भारत की उत्तर-पश्चिम की सीमा पर स्थित एक प्राचीन जनपद। (सभा)

२ आधुनिक बलख का नाम।

३ बलख देश का घोडा।

४ केसर।

५ हींग।

६ एक गधर्व।

रू. भे.—वालिक, वाल्हीक, वाहलीक, वाहलीकण।

वाल्है—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—तुम्ह थी फुरण मुझ नइ वाल्हूँ, हु तउ तुम हिज ऊपरि माल्हु हो। —वि कु

वाल्हेसर—देखो 'वालो' (मह, रू. भे)

उ०—१ वाल्हेसर सामी मानि नें तु ग्रतरयामी, मानि नें सिवगति गामी, वीनतडी मुझ मांनो वा। —प च चौ

उ०—२ प्रीतडिया न कीजइ हो नारि परदेसिया रे। खिण-खिण दाझइ देह। वीछडिया वाल्हेसर मलवो दोहिलउ रे। सालइ सालइ अधिक सनेह। —स. कु.

वाल्हो—देखो 'वालो' (रू भे.)

उ०—१ हे नीला मो पहली जुद्ध मे कट पडरण री उतावळ थनें नही करणी ही म्हैं थनै घणा वाल्हा कवा खवाय पालियो हो सो म्हनै मरण देनै पडियो होवती। —वी स टी

उ०—२ गायरण दास खवास भरणै अवसर मन मांणो। घट वाल्हो आपरो तिकै पट घूघट ताणो। —रा. रू.

उ०—३ ईसारगद, बारट आराधे, भल गुरण धारा व्यास भणै। वालमीक् तू नां अति वाल्हो पीरदास अरदास पणै। —पी ग्र

उ०—उणरा लिलाड माथै लुळनै वाल्हो दियो। —फुलवाडी

उ०—५ भुज भरिनै भेळाह, मिळस्यू जदि मन मेळुवा। वाल्ही साइ वेलाह, जनम सफल गिरणस्यू 'जसा'। —जसराज

उ०—६ वाल्ही नै वलि विनय वहै, गुरण संग्रह म्हारा लाल। वहै धरम पमाडै जेह जगत मे जस लहै म्हारा लाल। —स्रीपाल रास

(स्त्री. वाल्ही)

वाव-स. स्त्री [स. वात] १ पवन, हवा।

उ०—१ चलत धाव वेग वाव धाव पाव चचळे। अही कपाळ नीठ धीर, पीठ कोम आकुळै। —रा. रू

उ०—२ वेगा लीयै मूठी वाव, राज रथ पखा राव। मैंगळा ऊरध मड, खेसै आठ भीत खड। —गु. रू व

२ अपान वायु।

उ०—पिरिणयारिया छैला, तनक सी तान, किरकाटचा सा रग। कागदी जवान, वचन का कहाव ऊट का वाव। —दुरगादत्त बारहठ

३ पताका, ध्वजा।

उ०—वाव फरूकै वेढ वळै न वापरै। पांणा चढिया किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोर दान बारहठ

४ देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—१ आदमी हजार ४००० जुहर हुवो। सरोवर, कुवा, वाव एतला माहे सू बाळक ३००० जाळ नखावै काढिया। —नैणसी

उ०—२ देवी देव जाळंधरी शत दीपं, देवी कदरे सरूपरे वाव कूपं। —देवि.

रू. भे.—वाव।

वावकूढियो, वावकूंढो—देखो 'वायकूंटियो' (रू. भे.)

वावड—देखो 'वावड' (रू. भे)

वावडणो, वावडवो—देखो 'वावडणो, वावडवो' (रू भे)

उ०—१ वाह वाह 'कुसळा'लघु वेसां, 'हरा' सुतन भेळ वरहास। 'अभा' सुद्धळ दुरदा आवटीयो, वावडियो रगीया वाणास। —ठाकुर कुसळसिंह री गीत

उ०—२ ताहरा कह्यो—थे मोन् कोई द्रव्यवत वावड्डो। —सयणी री वात

उ०—३ ताहरां ऊदैरी मा नूं बोलाई। कह्यो—बीरम वावडो नही तर उदै री खाल कढाळ छू, अर भुस भराळ छू। —नैणसी

वावडणहार, हारो (हारी), वावडणियो—वि०।

वावडिग्रोडो, वावडियोडो, वावडचोडो—भू० का० कृ०।

वावडीजणो, वावडीजवो—भाव वा०।

वावडियोडो—देखो 'वावडियोडो' (रू भे)

(स्त्री वावडियोडी)

वावडी—देखो 'वावडी' (रू भे.)

उ०—गदाळ सहर गढ कोट बाजार पोळि पगार बाग बावडी बगीचा कूआ सरवरा री वडा पीपळा री छिबि सहर री पाखती विराजि नें रही छै। —रा. सा स.

वावची—देखो 'वापची' (रू भे)

वावणो, वाववो—१ देसो 'वावणो, वाववो' (रू भे.)

उ०—१ मूळ मोळता मिनख, मिरडिया घरणा घुमावै। हळ वावतडी वेर फोगडा बीज तुपावै। —दसदेव

उ०—२ रावळजी तो पूखता छै नै नीबो तो मोटीयार छै। कदेस भालो पकडने पूठै। रावळजी नै वावै तो म्है किसुंरा करा। —वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—४ सुघ क्षेत्र समकित बीज वावइ, सघ आनद अति घणौ। जिन सिंघ सूरि करउ चउमासउ, स्रावण मास सोहामणौ। —समय सुंदर

उ०—५ सचित पूरव करम ना, फल भोगवीइ पुण्य। जिहा वाविउ तिहा ऊगमइ, अण-वाविउ तिहा सून्य। मा. का प्र.

२ देखो 'वाजणो, वाजवो' (रू भे)

उ०—१ घर लुकट मुकट वन वीथियां वावजै। बासरी वावजै म्हीरा वास। —बां दा.

उ०—२ मतसागर उनमत्ती, वीणा सुर मधुरे वावत्ती। वाहण हस विगत्ती, साय सुप्रसन हुई सरसत्ती। —गजउद्धार

उ०—३ डफ ताल चग ग्रदग वावत, उडावतहि गुलाल। इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि वेहाल। —वि कु.

उ०—४ वरसिंघ वदि हूता छडावि, ग्रजमेरि कोटि नीसाण वावि। —रा. ज. सी

वावणहार, हारौ (हारी), वावणियौ—वि०।

वाविग्रोडौ, वावियोडौ, वाव्योडौ —भू० का० कृ०।

वावीजणौ, वावीजवौ—भाव वा०/कर्म वा०।

वावदूक–वि [स] १ बातूनी, बकवादी।

२ वक्ता।

३ वाक्पटु।

वावपोटी–स स्त्री -घोडे का एक रोग जिससे उसके पिछले पैरो मे नरम ग्रथिया हो जाती हैं। (शा हो)

वावरणौ, वावरबौ—देखो 'वापरणौ, वापरबौ' (रू भे)

उ०१ सूरवीर दोई साथ, बोळ चोळ लूथबाथ। वावरन्त रूप बीज, खजरा कटार खीज। —सू प्र

उ०—२ कूपावत पहिलै ग्रणी, वावर खग्ग करग्ग। 'भीमाजळ' सारा मुहर, पडियौ धारा लग्ग। —रा रू

उ०—३ विसन समरजै मीठी वाणी, वावरजो घन देह वडाणी 'ग्रोपा' ग्रा ऊमर ग्रोच्छाणी, परवत हूँत विछूटा पाणी। —ग्रोपौ ग्राढौ

उ०—४ जउ दातार तउ वलि करण ग्रवतार, जउ लक्ष्मी न वावरइ तउ प्रच्छन्न पुण्य करइ, जो उणु वोलि तो भोलउ। —व स

उ०—५ स्री सघ मन पुगि रुलीए, गुण गाइ गोरडी सवि मिलिए। दक्षीण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रै घन वावरइए। —सिवचूला गणि

वावरणहार, हारौ (हारी), वावरणियौ वि०।

वावरिग्रोडौ, वावरियोडौ, वावरघोडौ—भू० का० कृ०।

वावरीजणौ, वावरीजवौ—कर्म वा०

वावरवी–वि.—वरदी सहित।

उ०—माहाराजा जसवतसिंघ सात हजारी ग्रसवार तिण मे पाच हजार दोसपा सेंसपा, दोय हजार वावरदी २५८० ग्रासामी ५ कासमखान वगैरे। —नैणसी

वावरियोडौ –१ देखो 'वापरियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'वावडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वावरियोडी)

वावरी—देखो 'वावरी' (रू भे)

(स्त्री वावरण, वावरणी)

वावळ, वावल–स स्त्री [स वायुगुल्म, वातगुल्म] १ प्रचण्ड-हवा झझावात 'ग्राधी'।

उ०—वावळ ग्रागै वीझणौ, की पावै सनमान। तूझ रीझ ग्रागै तिसौ, 'देवा' जग चौ दान। —वा. दा.

२ ग्राधी।

उ०—सिर सिंधुर सेरखा, ग्रोप ग्रवर सिर लग्गा। डरड वडा ऊमरा वधै तुरही सुर वग्गा। कायमखान तरीम जोड चड तीन हजारी। ग्रलीयार ग्रसवार हुवौ, गज सिंघ प्रहारी। ग्रारुहै गयद ग्रवदळ ग्रली, सैद महावळ सद्दळा। हाहूळि ग्रसख मिळि हल्लिया, जाणक वावळ वद्दळा। —रा. रू

३ वायु, हवा, समीर।

वि —१ मस्त, मदोन्मत्त, उन्मत्त।

क्रि वि —२ ग्रोर, तरफ।

उ०—'केहर' साहा भजणा, सक राखण कथ्था। विहु वावळ खागा ग्रडै, भुज डड समथ्था। —द दा

रू भे — वउल, वाउल, वावल, वाउळ, वावल्ल।

ग्रल्पा —वाउलउ, वाउळउ, वाउळि, वाउळी, वाउळौ, वावळि, वावळी वावळौ, वावलौ।

वावळि, वावळी—१ देखो 'वावळ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ एक सोर सारत्ति घोर घूवा रवि ढवर। ज्यौ वावळि वादळ विसाळ ग्रोपै मग ग्रवर —रा रू

२ देखो 'वावडी' (रू भे)

३ देखो 'वावळी' (रू भे)

४ देखो 'वावळौ' (स्त्री)

उ०—२ जोध जडाग ग्रभनमौ 'जैतौ,' सदा चलै ग्रापरै सुभाय। लख दत दीयै भाजणौ लाखा, खेडेचौ वावळी खुदाय। —तेजसी खिडियौ

वावळौ, वावलौ—१ देखो 'वावळौ' (रू भे)

उ०—१ सुण सुण मीठी बोलगत, वैठ न वैरी पास। दही भरोसे वावळा, खायै कदै कपास। —ग्रज्ञात

उ०—२ धारण सलाह चित नह धरै, ग्रारण करण उतावळौ। वावळा गयद मसता विधी, वीफरियौ रिण वावळौ। —सू प्र.

उ०—३ वप गिणत वावळी कुंभ वार, जुध गिणै सती स्रीफळ जुझार। —पे. रू

(स्त्री वावळि, वावळी)

२ देखो 'वावळ' (ग्रल्पा, रू भे)

वावल्ल–स पु —१ एक आयुध या शस्त्र विशेष ।

उ०—चाप चक्र नाराच अरद्ध चद्र असिपत्र करपत्र क्षुरप्र क्षुरिका करवाल कुत सल्ल वावल्ल भल्ल । —व. स

२ देखो 'वावळ' (रू. भे)

वावसू–स पु [स वाह वसु] १ दूत, चर, सदेश-वाहक ।

उ०—साम्हा दौडे वावसू, घोडो डाक प्रमाण । साह अकब्बर वयण सू खबर लियण सुरताण । —रा रू

२ जासूस ।

उ०—१ इतरे अस खड आविया, साथ वावसु सताव । अकवर कहियौ आवतें, वहियौ साह निवाव । —रा रू

उ०—२ तठा पछै रावळ देवराज वार ऊपर कटक कियौ, सु पवारा रा वावसू था त्या रावळ चढिया री खबर दी। —नैणसी

रू भे —वाउसू ।

वावार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणिया पधारण, वधारण खडग धड करण वावार । —गोरधन गाडण

वावि, वाविय—देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—१ जिम वन माहि मालती, वास-विहूणी वाजि । तिम घट माहरू पापीउ , एकू कामि न आवि । —मा का. प्र.

उ०—२ कूआ वावि, सरोवर घणा, विवहारीयानी नही कोई मणा तिण नयरी स्रेणिक नरनाह जिणवर आण धरै उच्छाह । —स्रीपालरास

उ०—३ गढ मढ मदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ खाइ आराम वन खड विभुइआ त्रिभुइआ आवास । —व स

उ०—४ मुहि मुहि किय अड दत दतहि दतहि अड वाविय । वावि-वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न (ना) विय । —अभयतिक यति

वावियोडौ—१ देखो 'वावियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वाजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वावियोडी)

वावी—देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—सरोवरा तटाक ह्रीद, तीरथ प्रमांण ए। वावी अनूप कूप वाई, नीझरै निवाण ए । —गु रू. व.

वावीसेक—देखो 'वाईसेक' (रू भे)

वावु, वावू—देखो 'वायु' (रू भे)

उ०—ढोलइ चढि परतालिया, डूगर दीन्हा पूठि । खोजै वावू हथ्थडा, घूडि भरेसी मूठि । —ढो. मा

वावेळौ, वावेलौ–स पु [फा वावैला] १ कोलाहल, शोर गुल ।

२ रोना-पीटना, त्राहि-त्राहि ।

३ चिल्लाहट ।

वावोफळौ–स पु. [स वाताकुल्य] वह स्थान जहाँ खुली हवा आती हो।

वावोड—देखो 'वावड' (रू भे)

वावौ–स पु [स वपनम्] १ रबी की फसल मे बोया जाने वाला बीज ।

२ रबी की फसल की बोवाई या जुताई ।

वाव्य—देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—वाव्य कुवा सरोवर जिहा । —धरम पत्र

वासत–स पु. [म. वासत] १ ऊट ।

२ हाथी ।

रू भे —वासत ।

३ देखो 'वसत' (रू भे)

उ०—देवी रूप वासत रे वन्न राजै। देवी आग रे रूप तू वन्न दाझै । —देवि

वासती–स स्त्री –१ एक वर्ण वृत जिसके प्रत्येक चरण मे चौदह वर्ण होते हैं और ६, ७, ८, व ९ वा वर्ण लघु होता है। शेष सभी वर्ण गुरु होते हैं ।

२ देखो 'वसती' (रू भे)

वासदर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे)

उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडइ रवद । का वासदर सेवियइ' कइ तरुणी कइ मद । —ढो मा

वास–स पु [स वास.] १ रहने की क्रिया, निवास, आवास ।

उ०—१ काळ है, प्रदेस ना सदेस भी करचौं । देसतें विदेस वास आसतें डरचौं । —ऊ का

उ०—२ हर कोई जीव वालिया हाळी, वास सदा जिण माय वसै । परठण कज रोटी कपडा री, जिको कमावै भोग जिसै । —ओपो आढौ

उ०—३ लोग सारो कामरो वडो दिलावर पण धूहुड गवार लोग सो उघाडो ही जे रहे । पछै ज्यू वास रहे । —दूलची जोइयेरी वारता

२ विश्राम, आराम ।

उ०—१ पण पावू स्त्री री मुख ही न दीठौ नै तरवारा रै धारातीरथ मे स्नान कर सती सहेता सुरग वास कीधौ । —वी स. टी

उ०—२ हे प्रभू इण आराम री ठौर रे वणावणे वाला नू वृकुंठ री वास देय आराम दीजै । नी. प्र

३ रहने का स्थान, डेरा ।

उ०—१ ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पछी ग्रह वास। उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी कइ पास। —ढो मा

४ घर, गृह। (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ म्हारै तो माता ओ हीज डायजो है म्हनै तो सुख रै वास परणाजै—अरथात ऐडौ सुवस होवै किण सू इ लडै न भिडै गरीब होवै तो सुख है। —वी स टी

उ०—२ अबै राघवदे सासरै गयौ। दिन पाच रह्यौ। आणी करि छिपियै आयौ। तिकौ जैतसीजी रै वास वसियौ।

—जैतसी ऊदावत री वात

५ मोहल्ला।

उ०—१ अणंद पढीया री वास १ रायसळ री वास १ अचळा जसड री वास। —नैणसी

अल्पा —वासडियौ, वासेडौ, वासडियौ, वासडौ।

६ जगह, स्थान।

उ०—नही तू अन्न नही त आस। नही तु वन्न नही तू वास। —ह. र

७ शरण, पनाह, आसरा।

उ०—१ ताहरा हरदास उण वगत वीरमदेजी री वास छाडियौ। नागोर नूं हालिया, सरखेलखा रै वास रहण नू। —नैणसी।

उ०—२ पछै कितराहेक दिने राठौड तेजसी राणा उदयसिघ रै वास वसीया। —राव मालदेव री वात

उ०—३ सहर अजमेर वडौ गढ। तेथ राजा वीसलदे चहुवाण राज्य करे। वीसलदे रे वास हरराम चहुवाण रहै।

—देवजी वगडावता री वात

८ पास मे रखने या बसाने की क्रिया।

उ०—ताहरा राजा हरराम नु कहै। हरराम तु आ घरै वास। घरै ले जाह ज्यु थारी दुहुवां री पण रहै।

—देवजी वगडावता री वात

९ गध, बू।

उ०—१ अबूझ वाळक नै तो जाणै प्रीत री वास आवै।

—फुलवाडी

उ०—२ जिण मारग केहर वुवौ, लागी वास तिणाह। ते खड ऊभा सूकसी, नह चरसी हिरणाह। —अग्यात

१० सुगध, महक।

उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणै आणद चहक्की। सग वेळ सूरमा, वास अगरेळ महक्की। —रा रू

उ०—२ सुहडा स्रव अग चग दिग्गवर' राइ अगण सोभ ए। मधुकर गुजार डवरी सामळ, परिमळ वास लोभ ए। —गु रू व.

उ०—३ जावसी देह सोभा न जावसी। वास रह जावसी फूल वाळी। —भीखजी रतनू

अल्पा,—वासडी, वासडी।

११ वस्त्र, परिधान, पोशाख।

[स वाश] १२ गर्जना, दहाडना क्रिया।

१३ चिल्लाहट।

१४ भूकने की क्रिया।

१५ गुंजन, गुजार।

१६ बुलावा, पुकार।

१७ वस्तु, पदार्थ।

१८ जागीर।

रू भे —वास, वास, वासइ, वासई, वासउ, वासि।

अल्पा,—वासडी, वासडौ, वासडली, वासडी।

वासइ, वासई, वासउ—देखो 'वास' (रू भे)

उ०—१ चिंतामणि निव्रत्ति करिवा आविउ, कल्पतरु जीणइ कारणि वेस्या तैं काई भक्ति प्रकासइ, जीणइ पिरायु मन वासइ। —व स.

उ०—२ करहा तो वैसासडउ, मो विण-सारघा काज। अतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ आज। —ढो मा.

उ०—३ वावा म देइस मारुवा, सूधा एवाळाह। कधि कुहाडउ सिरि घडउ, वासउ मझि थळाह। —ढो. मा

वासक-स पु [स वासक] वस्त्र, कपडा।

रू भे —वासक।

वि [स. वासक] १ बसने वाला, निवास करने वाला।

२ बसाने वाला, आबाद करने वाला।

[स वाशक] ३ दहाडने वाला, गर्जने वाला।

४ ध्वनि करने वाला।

५ देखो 'वासुकि' (रू भे)

उ०—वद्री वासक व्यास वेदा-भ्रण। परम निरत मुकति सद पावण। —ह र

वासडी —देखो 'वास' (९, १० अल्पा, रू भे)

वासकसज्जा-स स्त्री [स] वह नायिका जो अपने नायक से मिलने के लिये सज धज कर तैयार बैठी हो।

रू भे —वासकसज्जा।

वासकेट-स स्त्री [अ वेस्टकोट] विना आस्तीन व विना गले की पट्टी की एक प्रकार की फतुही, जाकिट या वडी जिसके आगे-पीछे के कपडे मे प्राय भेद होता है।

वासग—देखो 'वासुकि' (रू भे)

उ०—१ रतन मे राखडी वेणी वासग जडी, सूभरा वाहडी लहक लोडे । स्याति नो विंदलो नासिका निरमयो, श्राज श्राल्यगन क्रम्न क्रोडे । —रुकमणी मगळ

उ०—२ हामी-तमासो कर रह्या छै, माथै रा जूडा केसां रा छूटा छै । सू किसा नजर श्रावै जाणै काळा वासग तिरै छै ।

उ०—३ सरग इद्र सलहियै राव पायाळै वासग । मान लोक नू राव कहा हव श्रोपम कासग । —नैणसी

उ०—४ जैता तणी रीत श्रजवाळी, खागा मुहै पाडिया खळ । 'जग राजोत' ईढ रा जाता, जडिया वासग सर जुयळ । —तेजसी खिडियो

वासग नाग—देखो 'वासुकि'

उ०—सीस वण्यो ए नारेळ, मिरगानैंणी जी राज । चोटी तो कहियै वासग नाग, की सी म्हारा राज । —लो गी

वासगेस—देखो 'वासुकि' (मह , रू भे)

उ०—लादा पाता वैरडा रूपगा राग नाही लुवै, सनातना दीधा त्याग इरादा कुसीक । वासगेस नाग 'मघा' कैड रा 'कुसाळ' वापो, लोपै नोज सोभाग श्रजादा मग्रा लीक । —कविराजा करनीदान

वासडली—देखो 'वास' (६, १०) (अल्पा , रू भे)

उ०—कहा बसियो कान्हा रातडली । श्ररे तेरै मुख विच श्रावै मोहै वासडली । —मीरा

वासडियो-स पु [स. वास+रा प्र डियो] १ गाव के एक मुहल्ले (वास) का जागीरदार ।

उ०—कोई ठावो गामेती वासडियो तथा घररो धणी रजपूत मरै, मोटियार के काम श्रावै तो उणरी वायर गाघराणी करै । —जखडा मुखडा भाटी री वात

२ देखो 'वास' (अल्पा , रू. भे)

३ देखो 'वासी' (अल्पा , रू भे)

रू भे —वासडियो ।

वासडे-क्रि वि —निकट, समीप, नजदीक, पास ।

वासडो—देखो 'वास' (अल्पा , रू. भे)

उ०—वैरी वाडै वासडो, सदा खणक्कै खाग । हेलो कै दिन पावणो, चूडो भाग सुहाग । —वी स

वासण-स.पु [स वासन] १ दुर्गन्धित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ सुगन्धित या सुवासित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

३ निवास करने या बसने की क्रिया ।

४ घर, मकान ।

५ कोई पात्र, टोकरा, पेटी आदि ।

उ०—१ ताहरां वेलदारा ऊडा निणाने काढिया । देगै तो भूंजाई रा वासण छै । चरवा, द्रेगा, कुंडिया थाळिया । —नैणसी

उ०—२ तठा उपरायत भोइया नै हुकम हुवो छै । भुजाई रा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यो । सू वासण तयार कीजै छै —रा. सा स

उ० —३ थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चग । मग गोधूमादि दियै, प्रथवी रतन सुरग । —वि कु

६ वस्त्र, परिधान ।

७ चादर, गिलाफ ।

८ श्राच्छादन ।

९ ज्ञान ।

रू भे —वासण ।

वासणो, वासबो—१ सुगध लेना, सूंघना ।

उ०—कडिया सूंवै पाणी मे पैस पगा रा नख फारै छै, दूध रै भोळावै विलाव वासीजै छै । ऊपर कूजा, सारमा गहकनै रह्यो छै । —रा. सा स

२ देखो 'भासणो, भासवो' (रू. भे)

उ०—गोवर कीडउ किसिउ भ्रमर जिम रण झणइ, घवलउ वक किसिउ राजहस जिम चालइ, काग किसिउ कोकिला जिम वासइ, मयूर जिम किसिउ ढेलि किगाइ । —व स.

३ देखो 'वासणो, वासवो' (रू भे)

उ०—देखो किण एक भवि मुनि श्रान जो, निंदा कीधी रै तेहनी घणुं घणी रै ली । एतो मीनक नी परि म्लान जो, मछ जिम वासै गध देही तणी रै ली । —वि कु.

४ देखो 'वसाणो, वसाबो' (रू भे)

उ०—ताहरा ईयै वामण एक जाइनै फूटरी देखिनै टाळि लीवी । वामण खोडो हुतो तिकै श्राणिनै घर वासी । —देवजी वगडावता री वात

वासणहार हारो (हारी) वासणियो—वि० ।

वासिश्रोडो, वासियोडो, वास्योडो—भू० का० कृ० ।

वासीजणो, वासीजवो—कर्म वा. ।

वासत—स पु [स] गधा ।

वासतपत, वासतपति-स. पु [स वास्तोपति] १ इन्द्र ।

२ वास्तुपति ।

वासते, वासतै—देखो 'वास्तै' (रू भे)

उ०—१ देस सिंध ऊनड दियो, दीधो सिर जगदेव । 'वाका' जस रै वासतै, दाता न कू श्रदेव । —वा दा.

उ०—२ ताहरा सुसरो-साळा कहण लागा—थे वाहिर निकळो नही, घर माहे बैठा रहो सो किसै वासतै । —नैणसी

उ०—३ ताहरा हरराम कहै। माहाराजा मो में दोस कोई छै नही। स्रीपरमेस्वरजी जाएं छै। हु किसं वासते ईयं नु ले जाऊ। —देवजीवगडावता री वात

वासदी, वासदे—स पु [स विश्वे-देव, वैश्वानर] १ यज्ञ का अधिष्ठाता, अग्नि देव।

२ अग्नि, आग।

उ०—१ रामजी री माळा रै वासदी लगाय घणी सू छानै बचायोडी गूंजी हाथ में राखती तो म्हनै ऐ दिन नी देखणा पडता। —फुलवाडी

उ०—२ खाफरा जइत वाहइ खडग्ग, वासदे जाणि वन्ने विलग्ग। ऊतरा सेनि 'जइतउ' अवीह, सीधरै पईठउ जाणि सीह। —रा ज. सी

रू भे—वासते, वासतै, वासदी, वासदे, वासदेव, वास्ती, वास्ते, वाहदी, वसदे, वसदेव, वाग्रदी, वाम्रदे, वामदेव।

वासदेव—१ देखो 'वासदे' (रू भे)

उ०—ताहरा खापरै नीचै वासदेव जगायो, खाड रा काबा माहै घात पाणी घातियो। —राजा भोज अर खापरा चोर री वात

२ देखो 'वासुदेव' (रू भे) (अ. मा, ना मा)

उ०—वसदेव पिता हुआ तैंके घर वेटो हुओ तो वासदेव स्रीक्रस्ण हुओ। —वेलि टी

वासदेवा—देखो 'वासुदेवा' (रू भे.)

वासना—स स्त्री [स] १ अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना, चाह। (ह ना मा)

२ जन्मान्तर के जमे हुए सस्कारो से उत्पन्न मानसिक दु ख-सुख के भाव, विचार।

उ०—दादू देह यतन कर राखिये, मन राख्या नहीं जाइ। उत्तम मध्यम वासना, भला बुरा सब खाइ। —दादूवाणी

३ भावना, ख्याल, धारणा।

उ०—प्रभणति पुत्र इम मात पिता प्रति, अम्हा वासना वसी इसी। ग्याति किसी राजविया ग्वाळा, किसी जाति कुळ पाति किसी। —वेलि.

४ न्याय के अनुसार देहात्मक बुद्धि जन्य मिथ्या सस्कार, विचार।

उ०—विमळ हुवै मन मिटै वासना, रहि एकत समरिये राम। —ह ना मा

५ कल्पना।

६ स्मृति।

७ ज्ञान।

८ दुर्गा का एक नाम।

९ अर्क नामक वसु की पत्नी का नाम।

१० भोग-विलास, विषय।

११ गध, बू।

उ०—१ तद राजा सारा सरदारा ने कही—या किसी वासना है। जद सारा ही कही, महाराज या तो सागै ही मछी री वासना आवै है। —साहुकार री वात

उ०—२ तिहा वली सवळो सिंह विकूरवी रे, ते कहै मैं दीठो इक सींह रे। माणस नी लेती वासना रे, आवै छै इण वार अवीह रे। —वि कु

१२ सुगध महक।

उ०—१ फूला मर्फ वासना, तिल तेल विलोये। —कैसोदास गाडण

उ०—२ पछै ढोलोजी ने मारवण ढोलीयै पोढीया छै। तिण समै मारवणीजी रै वासना कस्तूरी सरीखी वास रही छै। विहु जणा सुख मे पोढीया छै। —ढो मा.

रू. भे—वासना।

वासनी—स. स्त्री—शराब, मदिरा।

वि. स्त्री—निवास करने वाली, बसने वाली।

उ०—देवी कामही लोचना हाम कामा। देवी वासनी मेर माहेस वामा। —देवि.

वासन्न—वि.—१ सुगधित, सुवासित।

२ देखो 'वसन' (रू भे.)

उ०—वासन्न पीत विचार सरवर। धनुख सायक धार। —र. ज. प्र.

वासपुज्ज, वासपूज, वासपूज्य—देखो 'वासुपूज्य' (रू भे.)

वासमती—स. पु.—सफेद चावलों की एक जाति व इस जाति के चावल जो ऊंचे दर्जे के व स्वादिष्ट होते हैं।

उ०—छूटा चावळ राधण रै पगा वासमती मगायजै छै। —रा. सा. स

वासर—स पु [सं वासर, वासर] १ दिन, दिवस। (अ मा)

उ०—१ हुवै जेम हरहस सू वासर कमळ विकास। एम धरम जस व्है उभै, दत सू वाकीदास। —वा दा.

उ०—२ वासर चित्त न वीसरइ, निसि मरि अवर न कोइ। जइ निद्रा-भरि भोगवूं, तउ सुपनतरी सोइ —ढो. मा

उ०—३ इम वासर ऊगता ढाक वागी दसदेसा। जुध जीता 'अगजीत' सुणं जवनेस नरेसा —सू प्र.

२ प्रात काल, सवेरा।

रू. भे.—वासर, वासुर, वासुरी, वासुर, वासूर।

वासरकर, वासरकिरण—स. पु [स वासर+कर, वासर+किरण] सूर्य, भानु।

रू भे—वासरकर, वासरकिरण।

वासरमणि—स. पु. [स] सूर्य, सूरज।

वासव—स पु [स वासव] १ इन्द्र का एक नाम, इन्द्र।

(ना डि को, ना मा, ह ना मा,)

उ०—१ व्रज राखियो विगोयो वासव। वडो अवर कुण विसन वड। —ह ना मा.

उ०—२ दीजै जोड किसो न्रप दौलत, राज विभौ अवरेख। मात सुखा भुगतै दिन साजा, वासव हूत विशेप। —र. रू

उ०—३ इण वें विधि वासव विध विध भजे, इणरी महिमा कहै महेस। —गी रा

२ महादेव, शिव। (ना डि. को)

वि. [स वसव]—इन्द्र, का, इन्द्र सम्बन्धी।

रू भे—वासव, बासव, वासिव।

वासवांणो—स पु [स वस्] निवास स्थान, निवास।

उ०—मेडतो गाम सोह पडायो, रावळा घरा रा खेत किया सहैर नाडी दोराणी कन्है वासवांणो कीयो थो। कहै छै कइक ढुढा हुवा था। —नैणसी

वासवि, वासवी—स स्त्री [स वासवी] उपरिचर वसु की कन्या सत्यवती (मत्स्यगधा), व्यास की माता। (डि. को)

स. पु.—१ अर्जुन। (डि को)

२ इन्द्र पुत्र जयन्त।

रू भे—वासवी।

वासवीदिसा—स पु. [स,] इन्द्र की दिशा, पूर्व की दिशा।

रू. भे—वासवीदिसा।

वाससुद्रुम—स पु.—चदन। (ना मा)

वाससुमेर, वाससुमेरु—वि [स. वास+सुमेरु] सुमेरु पर्वत पर निवास करने वाला।

स. पु.—देवता।

रू भे—वाससुमेर, वाससुमेरु।

वासावळी—स स्त्री [स. वास+अवळी] १ सुगध, महक।

उ०—१ अवर मोरीजै छै। कूंपळा फूटीजै छै। वणराइ मंजरी छै। वासावळी फूटि रही छै। केसु फूलि रहिया छै। रितिराज प्रगटीओ छै —रा सा स

उ०—२ साहरी आवळी घडा सर सावळा, भीक पड कावळी रोप भंडा। अर गर्जा खून काटै विना आवळी, खुलै वासावळी तेण खडा। —राव ऊदाजी री गीत

२ सुगधित पदार्थों का समूह।

रू भे.—वसावळी, बासवाळी, वासावळी, वासावळी, वासावळी

वासिग—देखो 'वासुकि' (रू. भे)

उ०—उठियो राउ भाटि लागै अंबरि, दोमजि वासिग खाड डहै। जुध सूतो कुभ करन्न जगायो, गोइददास बाणस ग्रहै। —गु. रू. व.

वासिदो—देखो 'वासिदो' (रू भे.)

उ०—धूळ अर रूढिया री रजी सूं भखभूरव्हियोडा आ टपरिया रा वासिदा इण धरती माथै कोढ ज्यूं रगवगै। —फुलवाडी

वासि—स पु [स वाशि] १ अग्नि देव।

[स. वासि] २ वसूला।

३ कुठार।

४ छैनी।

५ देखो 'वास' (रू भे)

उ०—१ साई एहा भीचडा, मोलि महूगै वासि। ज्या आछन्ना दूरि भौ, दूरि थका भौ पासि। —हा. झा.

उ०—२ स्त्रीकृस्णजी जैसे कोई आणि वधाई दे छै। तइसें सोधा के वासि, अर नूपुर कै सवद, आणि वधाई दीन्ही। —वेलि टी.

वासिग—देखो 'वासुकि' (रू भे)

उ०—१ सिरि वेणी सिरली असी, जाणइ वासिग नाग। वीहता माटइ बभणइ, कीधु ताहरु त्याग। —मा. का प्र.

उ०—२ नान्हइ किसनइ नाथियो, वासिग नाग वडेरो रे। नास करइ रवि नान्हडो, अधकार वहुतेरो रे। —प. च. चौ

उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति नख सिख सूधौ सिणगार वखांणीजै छै। वासिगा सारीखो पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिआरो वणाव वणिनै रहिओ छै। —रा सा. स.

वासिट्ट—देखो 'वासिस्ठ' (रू भे)

वासिह—स. पु—शिव, महादेव। (डि ना. मा)

वासियोडो—भू का कृ—१ सुगन्ध लिया हुआ, सूघा हुआ।

२ देखो 'भासियोडो' (रू. भे)

३ देखो 'वासियोडो' (रू. भे)

४ देखो 'वसायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वासियोड़ी)

वासियो—वि—निवास करने वाला, निवासी।

उ०—भुज लगा ऊडै अण पोहोर भाराथिया, वासिया सुरग अर कीया गळ वाथिया। सूर 'सुरताण' रग घणा समराथिया, सुज घणा रग 'सुरताण' रा साथीया। —ठाकुर सुरताण सिंह री गीत

वासिव—देखो 'वासव' (रू. भे)

उ०—वासिव घर मजलेस, नेस लखि ईस परक्खौ। 'अभै' जिसौ नर अवर, राज घर कुंवर निरक्खौ। —रा रू.

वासिस्टी, वासिस्ठ—स. स्त्री [स वाशिष्ठी] राजस्थान की बनास नदी का नाम।

उ०—पच अयुत लय सग दळ, होय किलम हमगीर। कियौ मुकाम उलधि जळ, खळ वासिस्टी तीर। —ला रा.

वि.—१ वसिष्ठ का, वसिष्ठ सम्बन्धी।

२ वसिष्ठ का वशज।

रू. भे —वासिस्टी, बासिस्ठी, वासिट्ट।

वासींदौ—देखो 'बासिंदौ' (रू. भे)

वासी—वि. [सं वासिन्] १ निवास करने वाला, रहने वाला, निवासी।

उ०—१ नाम तुमारू स्यु अछै, किम छोड्या मा बाप। किण नगरी किण देस ना, वासी छौ महाराज। —वि. कु.

उ०—२ अळगी-अळगी भाय रा वासी आप-आप री बोली में दाछट बोलै अर सुणणिया दाछट समझै। —फुलवाड़ी

३ मुहल्ले का, मुहल्ले सम्बन्धी।

सं पु.—१ वह व्यक्ति जिसका किसी गाव या कस्बे के केवल एक मुहल्ले पर ही जागीरी सम्बन्धी अधिकार हो।

२ देखो 'बासी' (रू भे)

अल्पा —वासडियौ।

वासीजवारी—स. स्त्री —विवाह के समय दूल्हे को सुसराल की तरफ से दी जाने वाली प्रथम भेंट। (चारण, राजपूत)

रू भे —बासीजवारी।

वासीवड—स. पु. [देशज] किसी सम्बन्धी या कुटुम्बी के मृत्यु के बाहरवे दिन प्रात काल स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला रुदन।

वासु—सं पु. [स] १ जीव, आत्मा।

२ विश्वात्मा, परमात्मा।

३ विष्णु भगवान का नामान्तर।

वासुकि वासुकी, वासुगि—स पु [स वासुकि] १ कश्यप एवं कद्रू के नाग पुत्रों मे से एक जो आठ नाग राजाओं मे से एक गिना जाता है।

उ०—काम देव कटारउ बाधइ, वासुगि खाट पहरउ दिइ। —व स.

वि. वि —इसकी पत्नी का नाम शतशीर्षा था। देवों व असुरो के समुद्र मन्थन के समय यह मथनदण्ड की रस्सी बना था। यह शिव के गले पर निवास करता है। त्रिपुरदाह के समय यह शिव के धनुष की प्रत्यचा व रथ का कूबर बना था। इसके भतीजे का नाम आस्तीक था जो एक ऋषि था।

२ शेष नाग, जो कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक था। यह आठ नागराजाओं मे से एक माना जाता है।

वि वि.—इसे भगवान् का अशावतार माना जाता है एव उसके लिए शय्यारूप होकर उसे धारण करता है। इसका निवास स्थान पाताल लोक है। यह समस्त पृथ्वी को अपने शिर पर धारण करता है। गगा के उपासना करने पर इसने उसे ज्योतिष शास्त्र एव खगोल शास्त्र का ज्ञान दिया था। श्रीकृष्ण जब वसुदेव द्वारा गोकुल ले जाये जा रहे थे उस समय इसने उसकी रक्षा की थी।

३ एक प्राचीन देवता।

४ सर्प, साप।

उ०—१ आवाहन कर वासुकि हि, विक्रम कही सुणाय। ब्राह्मण नू अब हाल ही, निस्चय देहू जिवाय। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ कुब्जा नूं करि रूप युत्त, मनसा मम इमि याय। इतरी सुण कर वासुकी, विधा दई बताय। —सिंघासण बत्तीसी

रू भे —वासक, बासग, वासिग, वासुकि, बासुकी, वासुग, वासंग, वासग, वासिग, वासिग।

वासुदे, वासुदेव—स पु [सं. वासुदेव] १ श्रीकृष्ण।

उ०—१ वासुदेव पिता सुत थिया वासुदै, प्रद्युमन सुत पित जगतपति। —वेलि.

उ०—२ महासग्राम राम रावण तणउ, लवण सागर तणु, लावण्य तउ वासुदेव तणउ, आचारय तप सनत्कुमार तणउ...। —व स.

उ०—३ भरतेस्वर बाहु बलि आपमाहिं सग्राम करइ, वासुदेव वलदेव द्वारिकानउ दाघ ऊवेखइ। —व. स.

२ परमेश्वर, ईश्वर। (ह ना मा)

उ०—रामकिसन हर नारियण, सचितानंद गोविंद। वासुदेव बीठळ बिसन, नरहर गोकुळचद। —ह. र.

३ वसुदेव के वशज।

रू भे —वासदेव, वासुदे, वासुदेव, वासदेव।

वासुदेवक—स पु —श्री कृष्ण का उपासक।

वासुदेवा—स. पु —भाटो की एक शाखा।

रू भे —वासदेवा, वासुदेवा, वासदेवा।

वासुदेवौ—स पु —भाटो की वासुदेवा शाखा का व्यक्ति।

वि वि —ये जाडो की पिछली रात मे गीला कपड़ा सिर पर ओढ कर बस्ती मे फेरी लगाते हैं और याचक वृत्ति करते हैं।

वासुपुज्य, वासुपूज्य–स. पु. [स वासुपूज्य] जैनियो के बारहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

रू. भे.—वासपुज्य, वासपुज, वासपूज्य।

वासुभद्र–स. पु. [स] श्रीकृष्णचद्र।

वासुर—देखो 'वासर' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ कनक दान कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सत सग, ग्यान गुर वाणि उजागर। —रा रू

उ०—२ म्हारो सुजस ग्रमर, 'करणावत' वासुर जग बहु हुवै वितीत। —द दा.

उ०—३ सुभ वासुर सुभ्भ जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट ताण ए। सोलह मुखि कळा चद सपूरण, द्वादस ऊगति भाण ए। —गु रू व

वासुरा–स स्त्री [स] १ पृथवी, धरती।

२ रात्रि, रात।

३ स्त्री, नारी।

४ हथीनी।

रू. भे.—वासुरा।

वासू–स. स्त्री. [स] १ जवान लडकी।

२ कुंवारी लडकी।

वासूर—देखो 'वासर' (रू भे)

वासूळौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे)

उ०—ऊछळै खळै तज तुरग एक। वासूळै पूळा सू विसेख। —रा रू.

वासै—देखो 'वांसै' (रू भे)

उ०—१ वारा कूंपौ जोधपुर गयौ। नै इण जावता साराई रिण-मलोत गया। ग्रर वासै घोडा सात सौ रायमल खनै रया। —द दा.

उ०—२ तद इहा कही म्हे वीरभाण कुवर रा चाकर छा। सु म्हानै वासै राख हुती सु हमै म्हे कवर री खबर करण जावा छा। —चौबोली

वासौ–स पु. [स वास] १ रहने क्रिया या भाव, निवास।

उ०—१ सरस्वती रो वासो सब्दा मे। —फुलवाडी

उ०—२ गया भ्रम्म ग्रकरम्म, गया जमहदा पासा। गया मुगति दोइ पक्ख, गया ग्रभ हुंदा वासा। —जगौ खिडियौ

२ निवासस्थान।

उ०—भगा पौरस माण भग्गौ, ग्रड सगर उमराव ग्रग्गौ। ताप सुणि ग्रग जेम तासा, वसै खळ गिर-झिगर वासा। —सू प्र

३ विश्राम।

उ०—१ एक पडतळ नूं वळद। तिकै रजपूत गाव मोतीसर ग्राय वासौ लियौ। रात रह्यौ। —नैणसी

ऊ०—२ विदेसीडा रे ग्रायौ छै रे चौमासौ, मारग रौ प्यारौ खेद उतारौ, म्हारै डेरै लै वासौ। —रसीलैराजरौ गीत

४ विश्रामस्थल, डेरा।

५ गाव।

उ०—ग्रिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पुंगळ देस। ढोला म्हा विच मोकळा, वासा घणा वसेस। —ढो मा

६ पडाव।

७ एक शिकारी पक्षी।

उ०—हमें तीतरा ऊपर वाज छूटै छै। करवानका ऊपरै जुररा छूटै छै। तिलोरा ऊपरा वासा छूटै छै। —रा सा स.

रू. भे.—वासौ।

वास्तव–वि [स.] १ ग्रसली, मूल, सही, सच्चा।

२ प्राकृतिक।

३ सारयुक्त, तथ्य युक्त।

४ निश्चित, निर्दिष्ट।

स. पु —निश्चित की हुई कोई वस्तु।

वास्तवा–स. स्त्री [स] उपा काल, प्रात: काल।

वास्तविक–वि. [स] १ सत्य, यथार्थ, प्राकृतिक, ग्रसली।

२ ठीक, उचित।

रू. भे.—वास्तविक।

वास्तविकता–स स्त्री [स वास्तविक+ता प्र] १ सच्चाई, ग्रसलियत।

२ ग्रौचित्य।

वास्तुपूजा–स स्त्री [स.] नवीन घर मे गृह प्रवेश के ग्रारभ मे की जाने वाली वास्तु-पुरुष की पूजा।

वास्तुविद्या–स स्त्री. [स] भवन-निर्माणकला, ग्रभियान्त्रिक, इन्जी-नियरिंग।

२ चौसठ कलाग्रो में से एक। (व. स.)

३ बहत्तर कलाग्रों मे से एक। (व. स)

वास्तुसांति–स स्त्री [स. वास्तु-शान्ति] नवीन-गृह-प्रवेश के समय किये जाने वाले शान्ति कर्म ग्रादि।

वास्तुशास्त्र–स पु [स वास्तु शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमे भवन-निर्माण सम्बन्धी सारी बातो का उल्लेख होता है।

वास्तुसिद्धि–स. स्त्री [स.] स्त्रियो का चौसठ कलाग्रो मे से एक। (व स)

वास्ते, वास्तै–ग्रव्य. [ग्र] १ निमित्त, लिये।

उ०—१ ताहरा नरै कह्यौ–माजी। हू ईयै नू गुदरू छूं थाहरै वास्तै छै ईयै रै घरै। —नैणसी

उ०—२ ताहरां फरवास वढायो ढोल रै वास्तै। ताहरा पुकार गई। राज ! फरवास वीरमजी रै लोकै वाढियौ। तोई जोईया गई कीवी। —नैणसी

उ०—३ दीवाणजी कह्यौ–घोडो तो फगत म्हारै वास्तै ई चाहीजे। दूजोडा तौ सगळा लुक्योडा रैवैला। कठै ई कुचमादी न्हाटग्यौ तो म्हारै मन री मन में रै जावैला। थूं आ वात घणी चौडै किणा वास्तै करै। —फुलवाडी

२ कारण से, प्रयोजन से।

उ०—ताहरा गोगादेजी मगरा में पराणी घाव दीठा, तद कह्यौ औ कासू छै। ताहरा उठै रजपूत वहुत दिलगीर हुवौ। ताहरा गोगा-देजी कह्यौ–रे किसै वास्तै ? ताहरा राजपूत सारी हकीकत कही। —नैणसी

उ०—२ कह्यौ रे तू अठै क्यो ऐकलौ रहै छै। सहर तो कोई नही। जद सूथार कही जी अठै एक वस्तु हू वणाऊ छु तैरै वास्तै रहूँ छु। —चौबोली

रू भे—वासते, वासतै, वास्ते, वास्तै, वासते, वासतै।

वास्तौ–स पु [अ वास्त] १ सम्वन्ध, लगाव।

२ प्रयोजन, मतलब।

उ०—राजाजी उणारा हाथ सू पानो लिय इण भात जोर जोर सूं वाचण लागा, जाणै नाई नै वाच सुणावै, वारा सू उणरो की वास्तौ नी। —फुलवाडी

३ माध्यम, जरीया।

४ कारण।

उ०—मोटा रूप सूं जठा ताईं सुणनै समझण री सवाल है, आखा प्रात में वातचीत सारू अटकण री कोई वास्तौ कोनी। —फुलवाडी

५ शक्ति, वल।

६ पुरुषार्थ।

रू भे—वासतौ, वासत्थौ, वासत्तौ, वासम्थौ वास्तौ।

वास्प–स स्त्री [स वाष्प] १ आसू।

२ भाप।

३ कोहरा।

४ लोहा।

रू भे.—वासप।

वाह–सं स्त्री [स] १ शस्त्र प्रहार, चोट।

उ०—१ वैणावत 'पातल' वीजळ वाह, गोडै गज वाज खळा गजगाह। —सू प्र.

उ०—२ तठै माराज फुरमायो सत्रसालजी नू कै कहो तो सावतराय पाळा मे निजीक है सू इणरी छाती मे खाग री वाह करू। —द दा

२ आक्रमण, हमला।

उ०—अ मन्न घडै। सुमाँण खडै। खडि-वाह किय। मेल्हाण लिय। —गु. रू. व

३ युद्ध।

उ०—तो मोनै धरती री आस छै जो वाह करसी, धरती घेरसी। —ठा. जैतसी री वारता

४ प्रहार की सीमा, परिधि, क्षेत्र।

५ शस्त्र, आयुध।

६ धनुष।

उ०—ऊससे घणै ऊछाह, चाप वाण धरै चाह। वाम हाथ लीध वाह, जीमणै कसीस जाह। —र रू

७ गति, चाल।

उ०—मद लख वाह सुपरण तजै माग में, चरण ऊवाहणै धरण चलै। —र. ज. प्र

८ वाहन, सवारी। (अ मा)

उ०—घोडा हस्ती तणी नही वाह, लोक नइ घरि न वीवाहना गाह। —नळदवदती रास

९ घोडा, अश्व। (अ मा, डिं नां मा)

१० वैल।

११ वोझा लादने वाला पशु।

१२ नदी। (अ मा)

१३ मदद।

१४ वायु, हवा।

१५ सुगध, महक।

उ०—घणी वासावली री वाह लागी नै रहिजो छै। भीर वाट वाट नै पाणी उछाळीजै छै। —रा. सा. स.

१६ वदवू, दुर्गन्ध।

१७ खेत मे हल चलाने की अवस्था, दशा, हल चलाने का मौसम।

उ०—कहीयो जु देखा अर्ज लग सत्रा री साथ सावतो ऊभो छै। वूठै ऊपरि वाह देणरी इहै वेळा छै। —वेलि टी.

अव्य—१ धन्य, सावास।

उ०—१ जुधै जुध 'नाहर' री 'जगसाह'। उडावत लोह कहै रवि वाह। —सू प्र.

उ०—२ 'वीको' 'गाजीसाह' तण, वाह अडोळ कमध। फट्टा साह समद नू, दियण अघट्टा वध। —रा रू

२ आश्चर्य या घृणा सूचक शब्द ।

३ आनन्द या हर्ष सूचक शब्द ।

वि —खूब, अत्यन्त ।

उ०—सद माल सूर 'दूदे' सगाह । विजपाल दळा जूझोह वाह ।
—रा रू.

५ बस ।

रू भे.—वाह, वह वा', वाहा ।

वाहक–वि. [स] १ लेजाने वाला, ढोने वाला ।

२ वहन करने वाला ।

स पु —१ कुली, हमाल ।

२ गाडीवान ।

३ घुड सवार ।

४ एक विषैला कीडा ।

वाहण—देखो 'वाहन' (रू भे) (डिं ना मा)

उ०—१ रस वाग कुसम भ्रम छाह रूप । अवतार अरक वाहण अनूप । —रा रू

उ०—२ कहै–आडा वाहण कनारै घोडा छै । पछै इण भात करनै कटक आयो । —नैणसी

उ०—३ तारा-बळ चद्र-बळ, घडी-मुरत साधारण । चतुर पच सह बळी, नाम वाहण सुभ वाहण । —गु रू ब

उ०—४ तद गागैजी वा जैतसी जी जोसी नू बुलायो, ने कयो "सवारै जोगणी काई वाहण छै । —द दा.

उ०—५ वाहण जेहनै पाचसै, वलीय पाचसइ हाट । घर गोकुल पिण पाचसै तितला सकट सुघाट । — वि कु

वाहणगरुड–स पु [स गरुड-वाहन] विष्णु ।

वाहणवल्लभ—देखो 'वाहनवल्लभ' (रू भे) (अ मा)

वाहणसभु–स पु.—१ नन्दी–बैल ।

२ वृषभ, बैल । (डिं ना मा)

वाहणसिखी–स पु.—स्वामीकार्तिकेय का एक नाम । (अ मा)

वाहणि, वाहणी–स स्त्री —१ खेत की भूमि को बार-बार जोत कर बीज बोनेयोग्य बनाने की क्रिया या ढग ।

उ०—काकड प्रबळ वाहणी काढै, महपत सबळ घणा दळ माण । सत्र हर ढगळ करे सह सूघा, दळ चावर फेरे दीवाण" ।
—लालसिंह राठोड री गीत

२ देखो 'वाहन'

उ०—१ ताम तरिया सावधान हूआ, होआहीण अण बूडइ वाहणि मूआ । —व स

उ०—२ मकरध्वज वाहणि चढयो अहिमकर, उत्तर वाड वाए अडर । कमळ वालि विरहिणी वदन किय, अब पालि सजोगि उर ।
—वेलि

३ देखो 'वाहनी' (रू. भे) (ह. ना. मा) (अ मा)

रू भे —वाहणी ।

वाहणी—देखो 'वाहन' (अल्पा , (रू भे.)

उ०—अरधगी हेम-पुत्री सरपी कठेणि, वाहणी साढो । सिगा-नेत भाळ चदो, तस्मै रुद्राय नमो । —गु रू ब

वाहणो, वाहवो –देखो 'बावणो, बाववो' (रू भे) (उ र)

उ०—१ सु ओळ रुखा ऊभा हुता, तिकै केई भाला वाही सकिया कै न वाही सकिया, नै आय ऐ भेळा हुवा । —नैणसी

उ०—२ वाहि बुहाय घणी वीजूजळ । तडळ खगा करै ज्हा तडळ । —सू. प्र

उ०—३ रिण आगै राजान रै, नग वाहतो विकट्ट । कवि 'किमनौ' लड केविया, झड पडियो खग झट्ट । —रा रू

उ०—४ मो गळि घालउ घूघरा, मो मुखि वाहउ लज्ज । हू ज भलेरउ करहलउ, गूघ मिलाऊ अज्ज । —ढो. मा.

उ०—५ वलि ऊखर घर ऊपइ, जउ वीज फउ वाहै रे । अकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहै रे । —वि कु

उ०—६ रातता गात बथाळ रगत्त, करमर वाहि किया करवत्त । अणी भभरक्क हुला ऊझेल, सनाह सु सुतण तोडै सेल ।
—गु रू ब

वाहणहार हारो (हारी), वाहणियो—वि० ।

वाहिओडो, वाहियोडो, वाह्योडो—भू० का० कृ० ।

वाहीजणो, वाहीजबो—कर्म वा० ।

वाहन–स पु [स] १ वहन करने या ढोने की क्रिया या भाव ।

२ वह पशु, प्राणी या साधन जिस पर बैठ कर कही आया जाया जासकता हो । सवारी ।

३ घोडा ।

४ हाथी ।

५ रथ ।

६ नाव, जहाज ।

७ सवार ।

८ लक्कड बग्धा ।

९ उद्योग, प्रयत्न।

१० सेना।

११ नदी।

रू भे—वहाण, वाहण, वाहिण, वाहण, वाहन, वाहेण, वाहण, वाहणि, वाहणी, वाहिण।

अल्पा—वाहणो।

वाहनव्रखभ-स पु [स वाहन+वृषभ] शिव, महादेव। (ना मा)

रू भे—वाहणव्रखभ।

वाहनी-स स्त्री. [स. वाहिनी] १ सेना, फौज। (अ मा)

२ प्राचीन भारतीय सेना का एक दल जिसमे ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार, तथा ४०५ पैदल होते थे।

३ आधुनिक सेना का एक विशिष्ठ विभाग, डिवीजन।

वि.—चलाने वाली।

उ०—देवी जम्मणी मस्ख आहूति ज्वाळा, देवी वाहनी मत्र लीला विसाळा। —देवि

रू. भे.—वाग्रणी, वाहणी, वाहनी वाहिणी, वाहिनी, वहिणी, वहिनी, वाग्रणी, वाहणि, वाहणी, वाहिणि, वाहिणी।

वाहपत्री-स स्त्री. [स पत्रवाह] सर, वाण, तीर।

वाहर—देखो 'वाहर' (रू भे.)

उ०—१ सिया वाहर समर दसाणण साभा, अवी उछाहर दीन निवाजा। —र ज प्र

उ०—२ तद कही राज! घोडी थानू दीवी छै, जो म्हारै काम पड़ै तद म्हारी वाहर करज्यो। —नैणसी

उ०—३ वाहर काज खळा वळवाणा, रैहै जीण पमग जवनाणा। —रा रू

वाहरलौ—देखो 'वारलौ' (रू भे)

(स्त्री वाहरली)

वाहरवौं—देखो 'बारवौं' (रू भे)

वाहरि—देखो 'वाहर' (रू भे)

उ०—तव ये भ्र् हा ही मे थोडो थोडो हसि। भर एक एक होय ग्रह थें स जु वाहरि गई। —वेलि टी

वाहरु—देखो 'वाहरू' (रू. भे)

उ०—आय पातियं वैठा। आरोगता हुता। आघाइक जीमिया हुता नै वाहरु आया। —नैणसी

वाहरुग्रौ—देखो 'वाहरू' (अल्पा, रू. भे)

उ०—नह सादूळो नीमजै, जुघ जिण तिण सू जाय। ओ वाहरुआ आफळै, कुंजर हलका काय। —वा. दा.

वाहरू—देखो 'वाहरू' (रू भे)

उ०—१ चीत रा कीत रा रिखी सुकठ मीत रा घनो। वाहरू सीत रा राम अदीत रा वस। —र. ज प्र.

उ०—२ वाळियो वैर-वैरा तणै वाहरू, 'अमर' मुहरै हुयै सर रग आयो। —अमरसिंह राठौड गजसिहोत री वात

उ०—३ तद इण कह्यौ 'कुवरसी साखला री रजपूत छू, चेतो कर मारजो। म्हारै वाहरू सबळा छै। ऐ तो आवा हुवा वहै कै नै गिणं? सो मार हेठो नाखियो। —कुवरसी साखला री वारता

वाहळ-स पु—१ घृत परोसने का एक टोंटीदार बर्त्तन।

२ बैल के पिछले पैरों में होने वाली बालो की पक्ति या कतार।

३ देखो 'वहल' (रू भे) (डि ना मा.)

वाहलउ—१ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—जान्हवी यमुना वेहू मिलीआ, माइ वेटी तेह। आपणउं वाहलउं देखी करीनइ, अधिक ऊपजइ नेह। —नळ दवदंती रास

२ देखो 'वाळौ' (रू भे)

वाहलकड, वाहलकडौ—देखो 'वाळौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—वाहलकड वारू गणी, हेलि! न धरीइ हेजि। सेज-थिकी नर नीसरिउ, वली न लीजइ सेजि। —मा का प्र

वाहळि, वाहळी—देखो 'वाली' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पडसी वाहळियांह। उर ओलैं प्री राखियइ, मूवा काहळियाह। —ढो. मा.

उ०—२ वाणिया नाळा माग वहै दुत वाहळी। मेह ओसर में वहै, नाळा भर नाहळी। —लो. गी

वाहलीकजा—देखो 'वाल्हीक' (रू भे) (डिं ना. मा.)

वाहळ, वाहळू—देखो 'वाळो' (रू भे)

वाहलु, वाहलू—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—भमरी भुडा भ्रखनी, मनि मदार न जाणि। एक ज वाहलु ऊलखइ, जिम काणी केकाणि। —मा. का. प्र.

वाहळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ आगै पोकरण रा वाहळा ऊपर रैहता। उरजनोत जोधपुर चाकर। —नैणसी

उ०—२ जउ साहिब तूं नावियउ, मेहा पहलइ पूर। विचइ वहेसी वाहळा, दूर स दूरे दूर। —ढो. मा.

उ०—३ अति रोस करि जैसउ उलटयौ ज्यो वरसाला कउ वाहल्यौ ऊफणइ। —वेलि टी.

वाहलौ, वाहल्यौ—१ देखो 'वाळो' (रू भे)

उ०—कलकलती कल्लोलि उच्छलती लहरि करी सूसूती, वाहळ फूफूती, जिसी कृतात तणी मूरत्ति तिसी रौद्र वेउ तट इ आव्ही नदी। —व स

२ देखो 'वालौ' (रू भे)

उ०—१ वाहला पइ विसहर भलु, डसी करि वली अत। प्रेम पन्नगइ जै डस्या, तै किम सुख पामति? —मा का प्र

उ०—२ सूल पाणि सकर तिहा, जाश्र मिली जोग्रेसि। फालि देई हु फणगटइ, वाहला! वाढि पाडेसि। —मा का. प्र.

वाहलौ—देखो 'वालौ' (रू भे)

'वा' वा'—देखो 'वाहवाह' (रू भे)

वाह वाह—वि अनु [फा] धन्य धन्य साधु-साधु।

उ०—१ ग्रर सोलखी भाणुराज प्रतिहार तेजसिंह री मस्तक उडाय महारुद्र रा मुख सूं वाह-वाह पढायो। —व भा

उ०—२ एसी अनेक बात कही। और ही कवेसर बोल वाह-वाह कही। —रा रू.

उ०—३ एक बात ऊवरा, सुणै रीझियो नरेसुर। वाह-वाह अखियौ, तोल खग लगै अघतर। —सू. प्र

वाह-वाही—स. स्त्री. [फा.] १ प्रशसा, धन्यवाद, साधुवाद।

२ किसी कार्य के प्रति प्रगट किया जाने वाला आश्चर्य।

रू. भे.—वाहवाही।

वाहा—देखो 'वाह' (रू. भे)

वाहाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू भे)

उ०—द्वारकादास, एका हमीर बळू नू मनावण सारा भाटी नै राव सूरसिंघ श्राया था। उठै वाहाऊ आयो तठै राव सूरसिंघ बळू भा। —नैणसी

वाहादर—देखो 'वहादुर' (रू भे.)

उ०—तोई झगडै री आसग हुई नही। दलपत वडो जमंमरद वाहादर देख्यो। —द दा

वाहार—१ देखो 'वार' (रू भे)

उ०—घर १ राजा स्त्री गजसिंहजी री वाहर माहै नवो हुवो छै, दुडो छै। —नैणसी

२ देखो वाहर' (रू. भे)

वाहाळौ—देखो 'वाळो' (रू भे)

वाहालौ—देखो 'वालौ' (रू. भे)

उ०—१ हा माहा नाथजी, काहा गया जी, मूंहि एकली मेल्हेली वंन रे वच्चमि कठिण ते किम थयू रे, वाहाला तम्हारू मन रे। —नळाख्यान

उ०—२ वेस्या किणि वाहाली करी, भूमडलि? भूदेव। कोडि कोटि-ध्वज क्षय गया, करता वेस्या-सेव। —मा का प्र.

(स्त्री. वाहाली)

वाहिण—देखो 'वाहन' (रू. भे)

वाहिणि, वाहिणी—देखो 'वाहनी' (रू भे)

वाहित्यदेस—देखो 'वाहित्यदेस' (रू भे)

वाहियात-वि. [फा] व्यर्थ, निरर्थक।

वाहियोडो—देखो 'वाधियोडो' (रू भे)

(स्त्री वाहियोडी)

वाहिर—देखो 'वाहर' (रू. भे)

उ०—पाचा दिना पछै महला महा दाढी समराइ ग्रर वाहिर पधारिया। —द वि

वाहिलियौ—देखो 'वालौ' (ग्रल्पा, रू भे)

वाही—१ देखो 'वही' (रू भे)

उ०—केतीवार जेठी जोर ग्रागै पेच कीना, पूरै चापि जेठि नै भ्रमाया नाति दीना। वाही स्याति नीसरिगा जेठी का प्राण। पूरा मल्ल वादिस्याह कीना फुरमाण। —शि व

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे) (जैन)

वाहु—देखो 'वाहु' (रू. भे)

वाहुडणौ, वाहुडवौ-देखो 'वावडणौ, वावडवौ' (रू भे.)

उ०—१ वाहुडि गोरी! तु घरि जाह, हु लेइ आवऊ थारउ हो नाह। सोना तो वाध्यो गांठडी, दीधी सोपारी दोय कर प्यार। —वी दे

उ०—बोलिन सक्कू वीहतउ, हेक ज वात हुई। राजि ग्रपूठा वाहुडउ, माळवणी मूई। —ढो मा

वाहुडणहार, हारौ (हारी), वाहुडणियौ—वि०।

वाहुडिग्रोडो, वाहुडियोडो, वाहुडयोडो—भू० का० कृ०।

वाहुडीजणौ, वाहुडीजवौ—भाव वा०।

वाहुडियोडो—देखो 'वावडियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वाहुडियोडी)

वाहुलु, वाहुलो—१ देखो 'वाळो' (रू भे)

उ०—१ वाट-वचइ छइ वाहुलु, तिहां जाइ नर नारि। नाव नरेसर मेहलि करि, परि परि पार ऊनारि। —मा का प्र

उ०—१ मारगि मोटा डूगरा, नद वाहुला विसेखि। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रूधी रूखि। —मा. का प्र.

२ देखो 'वालौ' (रू भे)

विंचियौ—देखो 'वींछियौ' (रू भे)

विंछियौ—देखो 'विछियौ' (रू भे)

विंछुडी—देखो विच्छुडी' (रू भे)

विंछ्या—देखो 'वाछा' (रू भे)

उ०—कूकर के मन काम की, रुत सिर विंछ्या होय। कामी नर के काम की, हरीया निसदिन होय। —अनुभववाणी

विंजणौ, विंजवौ—देखो 'वीजणौ, वीजवौ' (रू भे)

उ०—हरि ने हलधर दोनू गज चढ्या, साथे लियौ गज कुमार। छत्र ने चामर दोनू विंजै रह्या, वाजै वाजा रा झणकार। —जयवाणी

विंजणहार, हारौ (हारी), विंजणियौ—वि०।
विंजिग्रोडौ, विंजियोडौ, विंज्योडौ—भू० का० कृ०।
विंजीजणौ, विंजीजवौ—कर्म वा०।

विंजन—देखो व्यजन' (रू भे)

उ०—१ भूप वधायौ मोतिया, कीधा निजर तुरग। भोजन मूजाई विवध, विंजन पाक सुरग। —रा रू

उ०—२ निज मजलम रस सजणा, विंजन पाक ऊग विहाण। हित करणै जैसाह रै, वरणै को कवि वाण। —रा रू.

उ०—३ जनकपुरी में जीमिया है, विध विध विंजन कौर। भला सरस भोजन हुवा है, पण श्री ग्रानद ग्रौर। —गी. रा

विंजाहरि—देखो 'विजयहरी' (रू भे)

उ०—गढ गिरुड ग्रनड विममड, जेह नउ पायउ पातालि पयठउ, महागज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसा, गरुई पोलि निविड कमाड लोहभोगल, विंजाहरी तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि, ढीकुली तणी परपरा. .। —व स

विंजियोड़ौ—देखो 'वीजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विंजियोडी)

विंजुल–सीत–स स्त्री. [स वञ्जुल-शीत] १ कुज, कुजगलि। (ग्र मा)

२ ग्रशोक वृक्ष।

विंझगिरी—देखो 'विंध्यगिरि' (रू भे)

विंझगिरिपादमूळ—देखो विंध्यगिरिपादमूळ' (रू भे)

विंझलौ–स पु [स वीजन] चक्रवाक नामक पक्षी।

उ०—वील्हा वायस विंझला, ग्रागलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊधी टगाय। —मा का प्र

विंझाचळ—देखो 'विंध्याचळ' (रू भे)

उ०—थियौ चोळ सिंदूर कुंभाथळय, वन गेरुग्र जाण विंझाचळयं। —गु रू. वं.

विंट—देखो वींट' (रू भे)

उ०—ग्रवतार वहै ग्रापै ग्रनत, सह विंटु हुय जावै सगा। तक विंट नाम स्री राम री, जग समद तिर तूं 'जगा'। —ज. खि.

विंटणौ, विंटवौ—देखो 'वीटणौ, वींटवौ' (रू. भे)

उ०—एहवी धातकी खडए, परदक्षण परकार। ग्रठ लख जोयण विंटीयौ, समुद्र कालौ दधि सार। —वृ स्त

विंटणहार, हारौ (हारी), विंटणियौ—वि०।
विंटिग्रोडौ, विंटियोडौ, विंट्योडौ—भू० का० कृ०।
विंटीजणौ, विंटीजवौ—कर्म वा०।

विंटाणौ, विंटावौ—देखो 'वींटाणौ, वीटावौ' (रू. भे.)

विंटाणहार, हारौ (हारी), विंटाणियौ—वि०।
विंटायोडौ—भू० का० कृ०।
विंटाईजणौ, विंटाईजवौ—कर्म वा०।

विंटायोड़ौ—देखो 'वींटायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. विंटायोडी)

विंटियोडौ—देखो 'वीटियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वीटियोडी)

विंट्टणौ, विंट्टवौ—देखो 'वीटणौ, वींटवौ' (रू भे)

उ०—कमनेत नेतवधी सिपाह, सब सिलह पूर विंट्टै सनाह। चवगान जान रनवीर खेत, ताजी तमाम पक्खर समेत। —ला. रा.

विंट्टणहार, हारौ (हारी), विंट्टणियौ—वि०।
विंट्टिग्रोडौ, विंट्टियोडौ, विंट्ट्योडौ—भू० का० कृ०।
विंट्टीजणौ, विंट्टीजवौ—कर्म वा०।

विंट्टियोडौ—देखो 'वीटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री विंट्टियोडी)

विंठणौ, विंठवौ—क्रि. ग्र [स. विनष्टनम्] १ नष्ट होना, बरबाद होना।

उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु, ते विंठीया हारि बाहार। तेह राक नु वाक किसु, जु दसा पडी ग्रपार। —नळाख्यान

२ भ्रष्ट होना, बिगडना।

३ ग्रदृश्य होना, गायब होना।

विंठणहार, हारौ (हारी), विंठणियौ—वि०।
विंठिग्रोड़ौ, विंठियोडौ, विंठ्ययोडौ—भू० का० कृ०।
विंठीजणौ, विंठीजवौ—भाव वा०।

विठियोडो—भू का. कृ —१ नष्ट हुवा हुम्रा, बरबाद हुवा हुम्रा २ भ्रष्ट हुवा हुम्रा, बिगडा हुम्रा. ३ म्रदृश्य हुवा हुम्रा, खोया हुम्रा.

(स्त्री विठियोडी)

विण—देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—म्रावकि पइठी म्राळि, सुंदरि दीठी सास विण। जिमि व्हाला विच वाळ, प्रिव जोई मारू नहीं। —ढो मा.

विरणो, विणवो—१ देखो 'विरणरणो, बिरणवो' (रू भे)

२ देखो 'बुरणरणो, बुरणवो' (रू. भे.)

विणणहार, हारो (हारी), विणणियो—वि०।

विणिम्रोडो, विणियोडो, विण्योडो—भू० का० कृ०।

विणीजणो, विणीजवो—कर्म वा०।

विरिणयोडो—१ देखो 'बिरिणयोडो' (रू भे)

२ देखो 'बुरिणयोडो' (रू भे)

(स्त्री विरिणयोडी)

वितर—देखो 'व्यतर' (रू भे.)

उ०— पचेंद्रि तिरजच नै मानव, एह थया इकवीसजी। वितर जोतिसी नै वैमानिक, इम दडक चोवीस जी। —ध व ग्र.

उ०—२ वाघ सिंघ वितर घरणा, भुइ बीहती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा रत घरणु ए। —नळ दवदती रास

उ०—३ ज्योतिसी भुवरिण नी वितरी श्री परणं, नैरित कूरण जिरण वारिण ऊभी सुरणं। —ध व ग्र.

(स्त्री. वितरी)

वित्तणो, वित्तवो—देखो 'वीतणो, वीतवो' (रू भे)

उ०—सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभी पोगड मड सिंगारो। ज्यो म्र दारक तरय, प्रामै डाळ खगि पत्तेराम्। —रा रू

वित्तणहार, हारो (हारी), वित्तणियो—वि०।

वित्तिम्रोडो, वित्तियोडो, वित्त्योडो—भू० का० कृ०।

वित्तीजणो, वित्तीजवो—भाव वा०।

वित्तियोडो—देखो 'बीतियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वित्तिम्रोडी)

विंद—स पु [स] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक, जिसका वध भीम ने किया था।

२ भारतीय युद्ध मे कौरव पक्ष का एक केकय-राजकुमार जिसका वध सात्यकि द्वारा किया गया था।

३ म्रवती देश के राजा जयसेन एवम् वसुदेव की बहिन राजाधिदेवी के दो पुत्रो में से एक पुत्र।

वि. वि.—इसके कनिष्ठ भ्राता का नाम म्रनुविंद एव एक बहिन का नाम मित्रविंदा था। यह दुर्योधन एव जरासघ का पक्षपाती था। इसकी बहिन का विवाह दुर्योधन से होना तय हुम्रा था मगर इसकी बहिन की इच्छानुसार श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा से विवाह किया। भारतीय युद्ध मे यह एक म्रक्षौहिणी सेना के साथ कौरव पक्ष मे सम्मिलित हुम्रा था तथा यह दस रथियो मे से एक था। म्रपने दक्षिण दिग्विजय के समय सहदेव ने इसे जीता था। म्रन्त मे यह म्रर्जुन द्वारा मारा गया।

४ देखो 'वींद' (रू भे)

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचद। साच के म्रजातसत्र गात रति विंद। —रा रू

उ०—वरै रभ बैसि रथा रण विंद। म्रघोमध राज लियै सुरइद। —सू प्र.

उ०—३ विंदया भद्रा गोपिया विंद। म्रारती करै ऊपरा इद। —पी ग्र

उ० —४ नर नरिंद म्रणनिंद, विंद वाकिम्म वीर वर। सुत सुरिंद हरचद, कद काढण केवी हर। —गु रू. ब

२ देखो 'वृंद' (रू भे)

उ०—निज रोस रु छेम से काम नही, उर हाम म्रारांम हराम नही। गरवै स्तुति निंद समान गिनैं, हरवै न बनैं नहिं विंद हनैं। —ऊ का

३ देखो 'बिंदु' (रू भे)

उ०—जाय हिमाळै गळत जिंद, उलटि रात्तत नाद विंद। कोटि गउ दिज दान देत, मरत कासी मुगति लेत। —म्रनुभववाणी

४ देखो 'निंदी' (मह, रू भे)

विंदक—वि —१ जानने वाला, ज्ञाता।

२ जन्म देने वाला।

३ देखो 'बिंदक' (रू भे.)

विंदगी—देखो 'वदगी' (रू भे)

उ०—सो इद्रायण थै नै म्राठ ही म्रपचरा मारी विंदगी घणी कीधी, सो थे वर मागो सो थानै मे वर देनै गुर-चेलो म्रलोप होसां। —मयाराम दरजी री बात

विंदण—देखो 'विंदग' (रू भे)

विंदणो, विंदवो—देखो 'वदणो, वदवो' (रू भे)

उ०—कोउ येक निंदो कोउ येक विंदो, नाम सुधारस पागा। जन मीरा गिरधर वर पायो, भाग हमारा जागा। —मीरां

विंदणहार, हारौ (हारी), विंदणियौ—वि० ।

विंदिग्रोडौ, विंदियोडौ, विंद्योडौ—भू० का० कृ० ।

विंदीजणौ, विंदीजवौ—कर्म वा० ।

विंदली—देखो 'व्रिंदी' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०—सोहै भाळ विसाळ, लाल विंदली सिंदूर । नैणे काजळ, मुख तत्रोळ, वणि वदन सनूर । —गज उद्धार

विंदवी—देखो 'विंदवी' (रू भे)

विंदसरोवर-स पु—गुजरात मे पाटण (सिद्ध पुर) से ग्राधा कोस दूर, एक तीर्थ स्थान ।

विंदावन—देखो 'ग्र दावन' (रू भे)

उ०—धन गोकळ नर ग्वाळ धन, धन जसोदा धन । विंदावन घन सरव वन, वाह वाह मधवन । —पी ग्र.

विंदी—देखो 'बिंदी' (रू भे)

उ०—सीसफूल तारा भला रे, ग्ररधचद सम भाग रे रग । विंदी जाणं मणि धरी रे, पीवत ग्रम्रत नाग रे रग । —प च चौ

विंदु—२ देखो 'विंदु' (रू भे)

२ देखो वूद' (रू भे)

३ देखो 'बिंदी' (रू भे)

उ०—स्यामा तणं लिलाट सोहिया, कूकुम विंदु प्रसेद कण । —वेलि

विंदु ग्रांगिरस-स पु—वेदो के एक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

विंदुचित्रक-स पु [सं] सारे शरीर पर गोल चित्तियो वाला मृग ।

विंदुजाळ, विंदुजाळक-स पु [स विंदुजाल] १ सफेद विंदियों का वह समूह जो किसी हाथी के मस्तक ग्रौर सूंड पर बनाया जाता है ।

२ पद्मक नामक हाथियो का एक रोग ।

विंदुतीरथ-स पु [स विंदुतीर्थ] काशी के पचनद तीर्थ का एक नाम जहा विंदुमाधव का मदिर है

विंदूत्रिवेणी-स स्त्री [स] स्वर साधन की एक प्रणाली । (सगीत)

विंदुमति, विंदुमती-स स्त्री—राजा शशि विंदु की पुत्री एव ग्रयोध्या पति माधाता की पत्नी ।

विंदुमाधव-स पु [स] काशी के पचनद नामक तीर्थ मे स्थित एक विष्णु मूर्ति का नाम ।

विंदुळरथी-स स्त्री [स विंदुल रथ्या] कुज गलि । (ग्र मा)

विंदुली—देखो 'बिंदी' (ग्रल्पा, रू भे)

विंदुसर-स पु [स] १ कैलाश पर्वत के दक्षिण स्थित एक सरोवर, जो तीर्थ माना जाता है । (पौराणिक)

वि वि—यह सरोवर गगा के जलकणो से बना था । यही पर वैठ कर भागीरथ ने गगा को भूलोक मे लाने हेतु तप किया था ।

२ एक नदी जिसके किनारे कर्दम प्रजापति का ग्राश्रम था ।

विंदुसार—देखो 'विंदुसार' (रू. भे)

विंदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

विंदोळौ—देखो 'वदोळौ' (रू. भे)

विंदौ—१ देखो 'वींद' (रू भे.)

उ०—ग्रणी सामि ग्रागं इसं काम इंदा । वणं ऊहडं वकडा क्रीत विंदा । —रा रू

२ देखो 'वदौ' (रू भे.)

विंध—देखो विंध्य' (रू भे)

उ०—जैसें राजहसनिसौं राजै मानसर राज, जैमें विंध भूधर विराजें गजराज सौं । —ध. व. ग्र.

विंधणौ, विंधवौ—देखो 'विंधणौ, विंधवौ' (रू भे)

उ०—१ मोसा री मार री काळजै तीर नी विंधतौ तौ कदास मासी रा बोल उण रै काळजै इण भात ग्रसर नी करता । तीर विंधणा रै समचै ई हिवडा रै विस री पोटळी फूटगी ही । —फुलवाडी

उ०—२ पण ग्रा वात सुणता इ उण री मुळक रै गैं'ण लागग्यौ उण री उणियारौ काळौ घ्राक पडग्यौ । माथा मे कीडी-नगरी कळवळण लागी । मोसा री तीर पाधरौ काळजै जाय विंध्यौ । —फुलवाडी

उ०—३ क्रीडा खेलतु, सूत्कर मेल्हतउ, परवत जिम दलतउ, पवन जिम चालतउ दताग्रि विंधतउ, पाडतउ फोडतउ । —व. स

उ०—४ मैं नही कहत कहत परिग्यानु, सुणि हो सबै सयाणा । मैं तं राग दोस जुग विंध्या, ए कळि के इहनाणा । —ग्रनुभववाणी

विंधणहार, हारौ (हारी), विंधणियौ—वि. ।

विंधिग्रोडौ, विंधियोडौ, विंध्योडौ—भू का. कृ ।

विंधीजणौ, विंधीजवौ—भाव वा ।

विंधर-वि—ग्रशव्दश्रावी ।

उ०—देवमांहि कुण हू न स्वामी, न दास, न मूक, न ऊतसूक, न वधिर, न विंधर, न कूवड न वामण, न हूड, न छोटा, न पागुला, न ग्राधला, तिहा डास मुमा । —व. स.

विंधाचळ—देखो 'विंध्याचळ' (रू भे)

उ०—धर चौडै सरवर विपन, विंधाचळ दिस एक । च्यार महूरत उत्तरे, धारस मत्र विवेक । —रा रू.

विंधियोडौ—देखो 'विंधियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विंधियोडी)

विंध्य–स पु [स] १ उत्तर भारत के दक्षिण मे स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत जो भारतवर्ष के मध्य मे पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है, विंध्याचल नामक पर्वत ।

उ०—जिको पण वळा विंध्य २ रा अधीस 'राम' भूपाळ ? —व भा.

२ रैवत मनु के पुत्रो मे से एक ।

रू भे – विंझ, विंध, विंध्य, वीझ, विंघ ।

विंध्यकूट–स पु [स विंध्यकूटन] १ अगस्त्य मुनि की एक उपाधि ।

२ विंध्य पर्वत ।

विंध्यगिरि–स पु.—विंध्यपर्वत, विन्ध्याचल ।

रू. भे —विंझगिरि ।

विंध्यगिरिपादमूळ – विंध्यगिरी पर्वत की तलहटी ।

रू भे —विंझगिरिपादमूळ ।

विंध्यवासिणी, विंध्यवासिनी–स स्त्री [स विंध्यवासिनी] १ मिर्जापुर जिले मे विंध्य के एक टीले पर अवस्थित देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति, जो इन्द्र द्वारा स्थापति की गई थी ।

२ दुर्गा की एक उपाधि ।

विंध्यवासी, विंध्यस्थ–स पु [स] संस्कृत व्याकरणी व्याडि मुनि की उपाधि ।

विंध्याचळ, विंध्याचल–स पु [स विंध्य+अचल] मध्य भारत की दक्षिणि सीमा स्थित-पर्वत का नाम ।

उ०—१ द्विजवर ! जा द्वारा वती, विंध्याचळ जल लिंग । कोटेश्वर कैलास पणि, ऊंकारि अम्यग । —मा का प्र

उ०—२ तद लडकी कही-मो सू रात का प्राय यक्ष मिळै सो मो नू कहै- हू तो नू विंध्याचळ लेय हालस्यू । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ विंध्याचळ वाधै तुं घणु, अवर अडकै आज । आदित्य नह ऊगी सकइ, सरइ अम्हारा काज । —मा का प्र

रू भे —वद्रचला, ग्रिध्याचळ वीझाजळ, वीझाचळ, वीझाजळि, ब्रुध्याचळ, वध्याचळ वध्याचळि, विंझाचळ, विंधाचळ ।

विंध्यावळि विंध्यावळी–स स्त्री [स विंध्यावलि] दैत्य राज वलि की स्त्री का नाम, जो वाण की माता थी । शकुनी, पूतना आदि इसकी पुत्रिया थी ।

विंवार विंभार—देखो 'वंवार' (रू भे)

उ०—गुण सिंधु टणक ठणक गजै, विप छेद खणक छणक वजै । भुरजाळ रोसाळ उडार भरै, कर तीर विंवार वभार करै । —पा. प्र.

विंभौ—देखो 'वैभव' ।

विंयासियौ—देखो 'बयासियौ' (रू भे)

उ०—महपति आयो मेडते, गढ खाटै नागोर । सिर तिण वरस विंयासियौ, आयौ वड सुख ओर । —रा रू

विंस–वि. [स विंश] १ बीसवा ।

२ एक राजा जो क्षुप राजा का पुत्र था ।

३ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र जो विविंश का पिता था ।

४ देखो 'वीस' (रू. भे)

विंसतिबाहु–स पु [स विंशतिबाहु] रावण का एक नाम ।

विंसोत्तरी–स. स्त्री. [स विंशोत्तरी] मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति ।

वि वि —इसमे मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके भाग करके नक्षत्रो और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है । (फलित ज्योतिष)

विंहचणौ, विंहचवौ—देखो 'वंचणौ, वंचवौ' (रू भे) (उ र)

विंहचणहार, हारौ (हारी), विंहचणियौ—वि० ।

विंहचिग्रोडौ, विंहचियोडौ, विंहच्योडौ—भू० का० कृ० ।

विंहचीजणौ, विंहचीजवौ—कर्म वा० ।

विंहचियोडौ—देखो 'वंचियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. विंहचियोडी)

वि–अव्य [स] १ किसी शब्द के पूर्व लगकर विशेष अर्थ उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग ।

वि वि —इससे इसके निम्न लिखित अर्थ होते हैं'—पार्थक्य, विलगाव, किसी क्रिया का विपरीत, विभाग, विशिष्टता, आक-जाच, भेद, क्रम, विरोध, तंगी, विचार, आधिक्य ।

२ भी ।

उ०—१ करणु भणइ सच्चु कहउ, पुणु छइ एकु वि नाणु । दुरयोधन रहिं आपणा, मइ कल्पना छइ प्राण । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ क्षात्रधरम मन हूतउ छडिउ, कौरवाधिपति गोग्रह माडिउ । सैन्यराय विहु भागि वि लायउ, तउ सुमरम न्रप दक्षिण धायउ । —सालि सूरि

३ ही ।

उ०—१ झनहलिय सायर रत सुरगिरि, सिंगु सिंगि खडहडी । खणु एकु असरणु हुउ तिहुयणु राय सयल वि थरहडी । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सो धनुखु नामइ कीमु काटकि, धरणि आसकि धडहडी । वभड खड विखड थाइ कि, सगि सयल वि रडवडी । —सालिभद्र सूरि

स पु [स. वि] १ रवि ।

२ शशि ।
३ दधि ।
४ पक्षी ।
५ गरुड ।
६ लवा । (एका)
७ घोडा ।
८ आख ।
९ आकाश ।
१० अन्न ।
११ देखो 'वी' (रू. भे)

उ०—१ फवि विस सहस गयद धज फरहर । घरै महीरि वि-सहस वाजित्र घर । —सू प्र.

उ०—२ कहिए माळवणी-तणइ, रहियउ साल्ह वि मास । ऊन्हाळउ कतारियउ, प्रगटयउ पावस-मास । —ढो मा

विग्रक्खण, विग्रक्खणि, विग्रक्खणु—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

उ०—मत्रीसर घरि आविउ, सयल लोक रजन सुलक्खण । पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिणिए, नारि विलसइ विग्रक्खणि । —हीराणद सूरि

विग्रखरी, विग्रखयरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे)

उ०—सोलह मात्रा पय सकळ, नही गुरु लघु नेम । आखा छद विग्रखयरी, इणरी पद्धति एम । —ल पिं

विग्रद-स पु [स वियत्] आकाश, नभ । (ह. ना. मा)

विग्रापणो, विग्रापबो—देखो 'व्यापणो, व्यापबो' (रू भे)

उ०—१ हू अयाण अणबूझ, अघळ कपटी वड पापी । कामी क्रोधी कहर, विळै पर निंदा विग्रापी । —पी ग्र

उ०—२ विग्रापै सत्र सदा दख व्रिद, आग्रो जिम जाय कहा सुर इद । —रामरासो

विग्रापणहार, हारो (हारी), विग्रापणियो—वि० ।
विग्रापिग्रोडो, विग्रापियोडो, विग्राप्योडो—भू० का० कृ० ।
विग्रापीजणो, विग्रापीजबो—भाव वा० ।

विग्रापियोडो—देखो 'व्यापियोडो' (रू भे)
(स्त्री विग्रापियोडी)

विग्रापी—१ देखो 'व्यापी' (रू भे)
२ देखो 'वापी' (रू भे)

विग्रारणम-[स विप्रतारणम्] पीटना, मारना । (उ. र)

विग्रास—देखो 'व्यास' (रू भे)

उ० —'दीपो' वाळकिसन्न पण, ऊगरै विग्रास । साथ लिया रिधि साम री, नव ही रिद्ध निवास । —रा. रू

विइगिच्छा-स स्त्री —विचिकित्सा । (उ. र.)

विइत्तु-वि [स विदित्वा] जानकार । (उ र.)

विइय-वि. [स. द्वितीय] १ दूसरा । (उ र)
२ विदित ।

विउड—देखो 'विकट' (रू भे)

उ०—विउड मिउड ताडिउ, तु चपेटा ऊपाडिउ । कूंयरि मनि विराडिउ, बोल बोलइ सु ताडिउ । —सालि सूरि

विउरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

उ०—रानल वर विउरण भणु, तिहुग्रणि पडिउ त्रास । वेस्या विलपति तिहा, सकल मिलिउ सहिवास । —मा. का. प्र

विउल—देखो 'विपुल' (रू. भे)

विउलग्रसणपाण-स. पु [स विपुलाग्रसनपान] विपुल अशन-पान, पुष्कल खान पान ।

विउलतव-स पु. [स विपुलतप] विपुलतप ।

विउलघण-स पु [स विपुलघन] विपुल धन, पुष्कल धन ।

विउलसग्ग-स पु. [स विपुलसर्ग] व्युत्सर्ग, कायोत्सर्ग, एक तप विशेष ।

उ०—अणसण तप पहिलो कह्यो, छेल्लो विउलसग्ग जांण । बारे भेदे तपस्या करो, ज्यो पहुचो निरवाण । —जयवाणी

विउलसिरी—देखो 'मोलसिरी' (रू भे.)

उ०—जिहा किण कमल अपार रे, चापो मरुवो रे दमणो मालती रे । विउलसिरी सुखकार रे र, जाई जूई रे दुखडा पालती रे । —वि कु

विऊ-वि [स. विद्] जानकर, वेत्ता । (जैन)

विग्रोग—देखो 'वियोग' (रू भे ।

विकपन-स पु [स]१ रावण पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो राम-रावण युद्ध मे मारा गया था ।
२ रुद्रगणो में से एक।

विकंपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू भे)

उ०—पूगळ पाळटी, थरकियो विकपुर, कहै छूटा काहि । उदधि राजा सूर उलटो, जादवा गढ जाहि । —हरखो वारहठ

विकच-स पु [स] १ एक प्रकार के धूम केतु, जिनकी सख्या ६५ कही जाती है ।
२ बौद्ध भिक्षुक ।
३ केतु का नामान्तर ।
वि. [स] १ खिला हुग्रा, फैला हुग्रा ।

२ बिखरा हुआ।
३ जिसके बाल न हो, केश विहीन।

विकचा-स. स्त्री. [स] विरूपक नामक नैर्ऋत राक्षस की पत्नी, जिस से भूमिराक्षस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

विकट-वि [स] १ भयकर भीषण, विकराल, डरावना।

उ०—बजरग घाट काळा विकट, दुरत थाट जमदूत सा। कर जोम गयण ग्रोघस करै, घोम नयण ग्रवधूत सा। —सू प्र.

२ चौडा, प्रशस्त।
३ विशाल, बडा।

उ०—१ असमर झट झपट विकट थट ग्रावट, गो गाहट थट गरट गहे। ऊकट थिय काट सुभट लख ग्रारट, खळ ग्रट रिणवट खडग वहे। —गु रू. ब

उ०—२ एहनी-ग्राबीयो ताम करि जोर बल फोरतो, बब्बराधीस मन रीस ग्राणी। सुभट थट विकट साथै करी ग्रापणा, रोस चढीयो वदै ग्रसुभ वाणी। —स्रीपाल रास

उ०—३ इम गढ निकट विकट थट ग्राया, छपन कोडि जाणै घण छाया। सुजळ जांणि ऊभळ समराथै, समद सात नवसै नदि साथै। —सू. प्र

४ जबरदस्त।

उ०—१ दट ग्रणघट ग्रघ विकट दळा री, राजा साचो राम। वळ सोहै दिन जन निबळां री, नित जापो तै नाम। —र ज प्र

उ०—२ विकट विहारी बकडो, जाळ घर गढ राज। सो राठौडा घेरियो, जोडै सेन सकाज। —रा रू

उ०—३ कोपमान नरसिंघ रूप करि, विकट विराट वदन विकराळ। सोसै रगत ग्रसुर हरिणाकस, प्रभु प्रहलाद भगत प्रतिपाळ। —ह. ना मा

५ बलवान, शक्ति शाली।

उ०—१ काळ हुकम जिम काळ रा, किंकर कहरारै। होय लटा चट्टा हिचै, विकटा वाकारै। —सू प्र

उ०—२ असी सहस विकटा ग्रसवारा। वाग उपाडि लडै जिण वारा। —सू प्र

६ दुर्गम, दुरूह, दुस्साध्य।

उ०—मन जाणै सहल दीयणा वित मोजां, ग्रै दोय पण धरीया ग्रमठ। वैडा री वाता इज वेंडी, वैडा रा पेंडा इ विकट। —ग्रज्ञात

७ कठिन, मुश्किल।
८ बदशक्ल, कुरूप, भोंडा, भद्दा।
९ उग्र, तीव्र।

उ०—मारै घणा चाढिया माथा, त्रिजड विकट तट गग तणी। राजा जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियो किणी। —किसनो ग्राढो

१० टेढा, वक्र।
११ ग्रहकारी, ग्रभिमानी।

उ०—दुरवेस विकट करिया दुरस, पुरस रूप जोधापुरो। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मडोवरो। —रा. रू.

१२ जगली, ग्रभद्र।

स पु.—१ विस्फोटक।
२ सोमलता।
३ बाल तोड-फोडा।
४ सेना, फौज। (ह. ना. मा)
५ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष।
६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
७ रावण पक्षी, एक राक्षस जो ग्रगद द्वारा मारा गया।
८ रुद्रगणो मे से एक।
९ एक राक्षस जिसकी गगाजल पीने के कारण मुक्ती हुई।
१० सिंह, शेर। (ह ना मा.)

रू भे—वकट, वगट्ट, विकट, विकट्ट, वेकट, वेकठ, विकट्ट विकट्टी विगट।

ग्रल्पा.—विकटौ।

विकटाणण, विकटानन—देखो 'विकटानन (रू. भे)

विकटा-स स्त्री. [स] १ बुद्धदेव की माता का नामान्तर।
२ अशोक वन मे सीता पर पहरा देते वाली राक्षसियो मे से एक राक्षसी।

रू. भे—विक्कटा।

विकटानन-स पु—धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक।

रू. भे.—विकटाणण, विकटानन।

विकटौ—देखो 'विकट' (रू भे.)

उ०—ऊडै जळ मे ले चल्यो, गज कू विकटौ ग्राह। तब ततकार समारियो, राधानागर नाह। —गजउद्धार

विकट्ट, विकट्टी—देखो 'विकट' (रू. भे)

उ०—१ 'विजपाळ' 'राम' 'केहर' विकट्ट, 'भीमेण' 'राम' 'फतमल' सुभट्ट। हरिभांण 'नाथ' भाराथ हाम, द्रढवत साम पेखै दुगाम। —रा. रू.

उ०—२ कट कट ग्रघ दुघट विकट्ट थट ग्रणघट, झट झट रट रट 'किसन' जिको। —र ज, प्र

उ०—३ आला झलि हल्लै भिडण, करि फौज विकट्टी। खार खधा ग्रसि वेढिया, धावै बह घट्टी। —सू. प्र

विकणो, विकवो—देखो 'विकणो, विकवो' (रू भे.)

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न विकतौ जोय। हरीया गाहक पेम कौ, सिर दे लेसी सोय। —अनुभववाणी

उ०—२ हीरो हाटा माहि, हरिया विकतौ देखीयो। पारिख विन कुछि नाहि, कौडी वदलै जात है। —अनुभववाणी

उ०—३ घणै सीळ सत घणै, भणै लाला भटियाणी। किसूं दाव बळ कोप, आव जम हत्य विकाणी। —रा रू

विकणहार, हारो (हारी), विकणियो—वि०।

विकिग्रोडो, विकियोडो, विक्योड़ो—भू० का० कृ०।

विकीजणो, विकीजबो—भाव वा०।

विकत्ता—वि० [स विकर्त्ता] नहीं करने वाला, अकर्ता।

विकत्थन—स. पु [स] १ शेखी, डींग।

२ व्यग्य।

३ झूठी प्रशसा।

विकत्था—स स्त्री [स] १ अफवाह, जनश्रुति।

उ०—अस्टा दस आतुरं, वात विसतरं विकत्या। राह थाह नरनाह, ताहि चिंता समरत्था। —रा रू

२ झूठी प्रशसा।

३ व्यग्य।

४ शेखी, डीग।

५ निरर्थक या वेहूदी वात।

६ चुगली।

रू भे—विकथा, विकहा, विगहा।

विकथा—देखो विकत्था' (रू भे)

उ०—१ राज कथादिक विकथा राग सू, वारु कहुग्र वणाय। समता धरि न करी मन सुद्ध सु, सूत्र सिद्धात सभाय। —ध व. ग्रं.

विकप्पणा—स स्त्री [स विकल्पना] सदेह, भ्रम। (जैन)

विकम—देखो 'विक्रम' (रू भे)

विकमाईत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

उ०—तइ नरसिंघदास-का कटक-बध चालिता सातरि आगळइ दळि पाणी पाछिलइ दळि कादम। तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ। दूसरउ विकमाईत। —अ वचनिका

विकमायत—स. पु [स विक्रम+आदित्य] १ राठौडो की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

विकरद—स. स्त्री [स विकर+गध] वदवू, दुर्गंध।

रू. भे.—विकरद।

विकर—स पु [स.] १ रोग, विमारी।

२ तलवार चलाने का एक ढग।

३ राक्षस।

४ देखो 'विकार (रू भे)

विकरण—स. पु [स विकर्ण] १ धातु व प्रत्यय के बीच मे होने वाला वर्णागम। (व्याकरण)

२ एक शिवभक्त महर्षि।

३ धृत राष्ट्र का एक पुत्र, जो बडा न्यायी था।

४ कर्ण का एक पुत्र।

५ एक प्रकार का साप।

६ एक प्रकार का तीर या बाण।

वि. [स वि+करणम्] १ इन्द्रिय रहित।

[स वि+कर्ण] २ जिसके कान न हो, कर्ण रहित।

३ जो सुन न सके, वहरा।

विकरणक—स पु—शिव का एक व्याडि नामक गण।

विकरतन, विकरत्तन—स पु [स विकर्तन] १ सूर्य। (डि को)

२ आक, मदार।

३ वह राजकुमार जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

४ एक सूर्यवशी राजा जो कोढ से पीडित था और सावरमती नदी मे स्नान करने से मुक्त हुआ था।

विकरम—स पु [स विकर्म] वेद विहित कर्म के विपरीत कर्म, दुष्कर्म, पाप।

२ विरुद्धाचार।

३ देखो 'विक्रम' (रू भे)

विकरमादित्य, विकरमादीत—देखो' विक्रमादित्य' (रू भे)

विकरमी—वि [स विकर्मन] १ निषिद्ध कर्म व कुकर्म करने वाला।

२ देखो 'विक्रमी' (रू भे)

विकरस—स पु [स विकर्ष] १ वाण, तीर।

२ धनुष की प्रत्यचा खीचने का कार्य।

३ अन्तर, दूरी, फासला।

विकरसण—स पु [स. विकर्पण] १ कामदेव के पाच वाणो मे से एक।

[स. विकर्षणम्] २ आकर्षण, खिचाव।

विकरांत—देखो 'विक्रांत' (रू भे)

विकरांति—देखो 'विक्रांति' (रू. भे)

विकरार—देखो 'विकराळ' (रू. भे)

उ०—वार विकरार सिरदार विंध वाहियो, समर भर भार धर भार सूरै। सार सेलार ऊभार भभार सर, पार चौधार कर पार पूगो। —नाथो सादू

विकराळ, विकराल–वि [सं. विकराल] (स्त्री विकराळी) १ भीषण आकृति वाला, भयंकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ भरै हिक स्रोणी पिंड भुजाळ । विढै हिक वीर हुआ विकराळ । —गु रू. ब

उ०—२ वो हळफळियो भिभकनै बैठो व्हियो । काई देखै के खुद भावरा माचा रै पसवाड़े चढी री विकराळ रूप धारयां ऊभी है । —फुलवाडी

उ०—३ खेहैचे खडिया थाट खूर, सम्रवां काळ विकराळ सूर । —वि सं.

उ०—४ ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल । विसम वचन मुख बोलतौ, रूठौ जाणि कराल । —वि कु.

२ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—१ नगा असि नाळ वजै विकराळ । घरा रजि घोम वर्णं उहि वोम । —सू. प्र.

उ०—२ असुर घणा विकराळ कह्यो किम मारिया । सता-सुख उपजाय देवा-दुख टारिया । —गी रा

उ०—३ श्रवक धुन अदग विकराळ रज घोम तम, ज्वाळ घर मसाला तोप ज्वाळा । —महाराजा बहादरसिंघ री गीत

उ०—४ ए नीकल्यो किम जीवतो, वैरी विकराल । वली मुझ थी अधिको थयो हीयडे ऊठी झाल । —स्त्रीपालरास

३ प्रचण्ड, तीव्र, तेज ।

उ०—१ भाव वताय सामुही भाळै । अगनि झाल विकराळ उझाळै । —सू प्र.

उ०—२ तन पौरस अहिया तुरस, करग धरै किरमाळ । पावक घ्रत सजोग पुरा, कोप वधै विकराळ । —मा वचनिका

उ०—३ जाण जीह नागणी, अणी ओपै अतमाळी । तिलो सेल फल तरल, तीर पावक विकराळी । —वखतो खिडियो

४ व्याकुल ।

५ क्रोधित, क्रोध युक्त ।

उ०—१ झाडी माथै गोळिया री वरखा होवरा लागी, तो सेवट विकराळ व्हियोडी सूर वारै निकळियो आल्या सूं आग बरसै ही अर वो चरड चरड करतो दांतरडिया घिसै हो । —अमरचूनडी

६ जंगी, विशाल, दीर्घ, बडा ।

उ०—१ ओ धनुम बडो विकराळ रघुवर छोटो मो । —गी रा

उ०—२ दौडिया लंका लियरा दारुण, वधै कपि विकराळ । —सू. प्र

सं पु—१ सिंह, शेर । (अ मा)

२ युद्ध । (अ. मा.)

रू. भे.—वकराळ, विकराळ, विक्कराळ, विकरार, वकराळ, विकरोळ, विक्कराळ, विक्कराल, विक्करु ।

अल्पा.,—वकराळो, वकराळो, विकराळो, विकराळो, विकरूल्यो ।

विकराळो—देखो 'विकराळ' (अल्पा , रू भे.)

उ०—तेजावत तिणवार, 'रूप' बोलै मछराळो । विकराळा दळ विचै, करू घमचक कळिचाळो । —सू प्र.

उ०—२ राजा देखि तरह विकराळै । अहि चित भेंचकि दीध उछाळै । —सू प्र.

उ०—३ छत्रपतिहूत सहस गुण छाजै, वीरभद्र गण तठै विराजै । रोम जटा ऊभा विकराळा, काळा रोम रोम अहि काळा । —सू प्र.

उ०—४ रीछ लाल अगिया विकराळी । कसि जिम कसै भुजंगम् काळी । —सू प्र.

उ०—५ तासु वयणु अवहेलइ राओ, अति घणु घल्लइ जीवह घाउ । कोपि चडिउ तसु वणारसवालो, धनुखु चडावइ जम विकरालो । —सालिभद्र सूरि

उ०—६ पइठउ गढ नइ गिरुई खालि, सरप डस्यउ तेह अति विकरालि । धरि आवतउ पडिउ असार, सुर सेना गणिका नइ वारि । —हीराणंद सूरि

(स्त्री विकराळी)

विकरी—देखो 'विकरो' (अल्पा., रू. भे)

विकरूल्यो—देखो 'विकराळ' (अल्पा , रू भे)

उ०—ताम तेज तन सझ्यो, विख आवध अय धूल्यो । डग डग डैरू वाय, नाद कै विख विकरूल्यो । —सुरजनदास पूनियो

विकरेता—देखो 'विक्रेता' (रू भे.)

विकरोळ—देखो 'विकराळ' (रू भे)

उ०—विडरी असत 'विजो' थियो वासै, वाजै हाक थई विकरोळ । —नैणसी

विकरौ—सं पु [सं विक्रयः] १ दाम लेकर कोई चीज देना, दाम लेकर किसी चीज के अधिकार का हस्तान्तरण करना, बेचना ।

उ०—हाटा पडी हटनाल, हमें मद सूगो हुवौ । कूकै घणा कलाळ, विकरो मागो वाघजी । —आसो बारहठ

२ वस्तु के बेचने से प्राप्त होने वाला धन ।

रू भे—विकरो, विकरी, विक्री ।

अल्पा ,—विकरी, विक्री, विकरी, विक्री ।

विकळ, विकल–वि [सं विकल] (स्त्री. विकला) १ व्याकुल, बेचैन, दुखी ।

उ०—१ माळवणी इणि विधि घणउ, विरह विकळ विलपति।
ढोलउ पूगळ पथ सिरि, आणंद अधिक खडति। —ढो. मा.

उ०—२ ज्योतिसिया कही ग्रहा रै योग सू इसी मालूम होय छै जे पाणी री अधिक्त कर सहर विकळ होय से। —नी प्र.

उ०—३ कत्या पासि कराक कामु, वयरी नु हु फेडउ ठामु। कत्या आवी धाई सकल कइ मारू कइ करू विकल। —सालिभद्र सूरि

उ०—४ का तन आळस कर ऊध, का फिर सूंघा करत सूध। का मन मूरख विकळ जास, का हुय वैठ वेदव्यास। —अनुभववाणी

उ०—५ विकल हुवा सुक सारिका हे! चुगै न पीवै नीर मियाजी। —मी रा

२ उदास' खिन्न-चित्त।

उ०—व्याकुल सीता सोधत फिरता, जो थी नैण जटाऊ जी, नारायणजी परमेसरजी। सुणनैं कथा मुगत हरि दीनी, चाल्या विकळ अगाऊजी, नारायणजी परमेसरजी। —मी रा

३ भयभीत, डरा हुआ, घमड़ाया हुआ, विह्वल।

उ०—अर गुजरात री अधीस विकळ थको परीवार सूं चन्द्रहास लेनो ही आगै आय पडियो। —व भा.

४ क्षोभ युक्त।

५ खडित, भग।

६ हीन, रहित।

उ०—१ प्रथवी मद फळ, मत्र सर्व नि फळ, जडी मूळी रस विकळ। कूळ स्त्री निररगळ, न्यायी राय तुच्छ दळ। चरड बहुल, वाट पाडा तणा कल कल। —रा मा स

उ०—२ जै समजणी हुवै तै उणनै मूरख जाणै। जै भगी री मीटी तो न खाधी नैं भगी री कीधी खाधी तिण सू उणनै विवेक रो विकल जाणै। —भि द्र

७ कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ।

८ सडा हुआ।

९ प्रभाव या शक्ति से रहित, असमर्थ।

१० क्रोधित, क्रुद्ध।

उ०—ते रात्रिचर अति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलनो, रुठो जाणि कराल। —वि कु

११ अस्वाभाविक।

१२ मिथ्या, झूठ, असत्य। (अ मा)

१३ चचल, अस्थिर।

१४ अपूर्ण, अधूरा।

१५ जिसमे कल नही हो, कल से रहित।

स पु—१ कपट छल। (अ मा, ह ना मा)

२ देखो 'वेअकल' (रू भे) (अ मा)

उ०—जद सुहागण वोली-वामण नैं माहै वसाणै ने कथा वचाई थी सो कथा तो वाचै थोडी नै माहरे सामो देखै। जो हु जाणा मूरख है विकळ है। —गाम रा घणी री वात

रू. भे—विकळ, वेकळ, वैकळ, वकळ।

अल्पा,—विकळी।

विकळकांमी—स पु—नारद।

उ०—कीयो रामायण लक कुरखेत भारथ कीयो ग्रोय कोई पेखियो मीत्र ग्रेहो। त्रिनयण तरण नारद पूछै त्रिण्है, कहो भगवत भगवत केहो। महारुद्र महाग्रह महामुणै, महाजुध कीया थे महादळ मारि। कहो करणाकरण पूछजै तो कन्हा, ऊथ को ऊदउत तणी उणिहारि। दइत कपि क्रूरता पइ कुर देखीया, कहि रुद्र कहि रवि विकळकामी। गागहर आभरण जिसो गजदळ गिळण, साख दे पूछियो आख सामी। —दुरसो आढो

विकळचित्त—वि—१ अस्थिर चित्त।

२ चंचल।

रू भे—विकळचत, विकळचित्त।

विकळता, विकळताई—स स्त्री—१ विकल होने की अवस्था या भाव।

२ वेचैनी।

रू. भे—विकळता, विकळाई।

विकळप, विकलप—स पु. [स. विकल्प] १ भ्रम, भ्रान्ति।

उ०—जा घट पेम प्रकासीया, विखीया विकळप नाहि। हुंगीया छाना ना रहे, आया अतर माहि। —अनुभववाणी

२ धोखा।

३ विरुद्ध कल्पना।

उ०—अति उतिम नामी असथानु, मन सकळप विकळप नहीं ठानु। अति उनिम सिवरन सरवगा, अछर एक भया अणभगा। —अनुभववाणी

४ योग शास्त्रानुसार पच विधि चित्त वृत्तियो में एक, जो ऐसे शब्द ज्ञान की शक्ति है कि जिसकी वाच्य वस्तु नही होती।

५ मन की दुविधा।

उ०—अनर एक लीया रहै सदव्रन, अमतन आखै वोल वचनतो। करत न को सकलप नही विकळप, सुख दुख देह न वछै मनतो। —अनुभववाणी

६ मन में उत्पन्न होने वाली भाति-भाति की कल्पनाए।

उ०—१ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणै। ससयी नाम मिथ्यात चोथो भणै। —ध व ग्र

उ०—२ मन सकळप विकळप है मनही, मन जाग्रत मन सूता। मन ही त्याग चलै चोह माया, मन ही लाग विगूता।
—अनुभववाणी

७ निर्धारण।

८ सदेह, हिचकिचाहट, सकोच।

९ इच्छा, अभिरुचि।

१० भूल चूक। ११ अज्ञानता।

रू. भे—विकळप, विकलप।

विकळाग, विकलाग–वि. [स विकल+अग] जिसका कोई अग टूटा या खराब हो, अगहीन।

रू. भे.—विकळाग, विकलाग।

विकळा, विकला–स स्त्री [स विकला] १ वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होना बद हो गया हो।

२ कला का सातवा अश।

३ उपद्रव।

४ कलह।

५ बुधग्रह की गति।

उ०—चद्रकला तै विकला जाणी, घटत वधत नइ लेखइ। साहिब नइ तउ सदा सुरगी, वाधइ कला विसेखइ। —वि. कु

६ दुर्गा देवी का नामान्तर।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सवेही रूप विरूपा। विकळा सकळा प्रजा, उपावण आप आपुपा। —देवि.

वि.—चचल, अस्थिर।

रू भे.—विकळा।

विकलिंदी—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू भे.)

उ०—मनुम विन नव माहै तेऊ वाऊ वै जावै। विकलिंदी तै दस माहि जावै पूठा ही आवै। —ध व ग्र

विकळी–वि —१ चिरस्थाई, अमिट।

उ०—राजा काम भळावियो, राखै विकळी कत्थ। कह्यो वजीरा 'गजपती', तेडो साऊ सत्थ। —गु रू. ब

२ देखो 'विकळो' (पुं)

विकलेंद्रि, विकलेंद्रिय–वि [स विकलेंद्रिय] १ जिसकी इन्द्रिय वश मे न हो।

२ जिसकी इन्द्रिय मे कोई दोष हो।

स. पु —जैन मतानुसार द्वींद्रिय, त्रींद्रिय और चतुरेंद्रिय जीवो का समूह।

उ०—१ प्राण विकलेंद्रिय भूत वनस्पति, जीव पचेंद्रिय जात। चार स्थावर सत्वज कह्या, भगवतै साक्षात। —जयवाणी

उ०—२ साते नरक तणो इक दडक, असुरादिक दस जाणजी। पाच थावर नै त्रिण विकलेंद्रि, उगणीस गिणती आण जी।
—ध. व. ग्र.

रू भे.—विकलिंदी, विगलिंदी, विगलिंद्रिय।

विकळो–वि. (स्त्री. विकळी) १ अविश्वास-पात्र।

२ बदचलन, दुश्चरित्र।

३ देखो 'विकळ' (अल्पा., रू भे)

विकल्प—देखो 'विकलप' (रू भे)

विकस–स पु [स विकस] चन्द्रमा, चान्द क कु. बो।

विकसणो, विकसबो–क्रि. अ [स विकाशन] १ विकसित होना।

उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी, लहलहै कुज कुज विकसै। —रसीलै राज रा गीत

२ खिलना, फूलना।

उ०—१ मुख दीसो विकसै कमळ, चदन वचन रसाळ। हियडै जाण कि करतरी, धूरत चिन्ह ए माल। —पचदडी री वारता

उ०—२ नाह विकसै घणो कमळ जिम भड निवेड। भड घणा पाडतो सोभियो महा भड। —हा झा.

३ वृद्धिमान होना, बढना।

उ०—नवली भली कुमदिनी विकसै, रवि ऊगमते जेण रे। भर योवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी विकसै एम रे। —वि. कु

४ आगे बढना, प्रगतिशील होना।

५ प्रफुल्लित होना, हर्षित होना, आल्हादित होना खुशी मे फूलना।

उ०—१ उत्तम न्रप मिलियो जई, बाप भणी धरि नेह। मन विकस्यो तन उल्लस्यो, रमाचित थयो देह। —वि कु

उ०—२ सखी अमीणो साहिबो, बाकम सू भरियोह। रण विकसै रितुराज मैं, ज्यूं तरवर हरियोह। —बा दा

उ०—३ प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ। जेणि दीठइ उत्तम ना मन विकसइ। —सभा

६ प्रकाशित होना।

विकसणहार, हारो (हारी), विकसणियो—वि०।

विकसिओडो, विकसियोडो, विकस्योडो—भू० का० कृ०।

विकसीजणो, विकसीजबो—भाव वा०।

विकसणो, विकसबो, विगसणो, विगसबो, वगसणो, वगसबो, विकस्सणो, विकस्सबो, विग्कसणो, विक्कसणो, विगसणो, विगसबो,
—रू० भे०

विकसाडणो, विकसाडबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू भे)

विकसाडणहार, हारो (हारी), विकसाडणियो—वि०।

विकसाडिग्रोडो, विकसाडियोडो, विकसाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विकसाडीजणो, विकसाड़ीजवो—कर्म वा० ।

विकसाडियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विकसाडियोडी)

विकसाणो, विकसावो—[राज. विकसणो क्रि का प्रे. रू] १ विकसित करना/करवाना ।

उ०—सूवा नै हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हे । —गी रा

२ वृद्धिमान करना, वढाना ।

३ आगे वढाना/वढवाना, प्रगतिशील करना/करवाना ।

४ प्रफुल्लित करना/करवाना, हर्षित करना/करवाना, आल्हादित करना/करवाना, खुशी मे फुलाना/फुलवाना ।

विकसाणहार, हारो (हारी), विकसाणियो—वि० ।

विकसायोडो—भू० का० कृ० ।

विकसाईजणो, विकसाईजवो—कर्म वा० ।

विकसाडणो, विकसाडवो, विकसाणो, विकसावो विकसावणो, विकसावबो, विगसाडणो' विगसाडवो, विगसाणो, विगसावो, विगसावणो, विगसाववो, विकसाडणो, विकसाडवो, विकसावणो, विकसाववो, विकस्साणो, विकस्सावो, विकस्सावणो, विकस्साववो, विगसाडणो, विगसाडवो, विगसाणो, विगसावो, विगसावणो, विगसाववो—रू भे ।

विकसायोडो–भू का कृ —१ विकसित करवाया हुग्रा २ आगे वढवाया हुग्रा, प्रगतिशील करवाया हुग्रा ३ प्रफुल्लित करवाया हुग्रा, हर्षित करवाया हुग्रा ४ आल्हादित करवाया हुग्रा, खुशी मे फुलवाया हुग्रा. ५ वृद्धिमान किया हुग्रा, वढाया हुग्रा.

(स्त्री. विकसायोडी)

विकसावण, विसावणो–वि.—१ विकसित करने वाला ।

२ खिलाने वाला, प्रस्फुटित कराने वाला ।

उ०—हिंदुस्थान का छत्र, जगत छाया वरतावण । हिंदुस्थान मे सूरज, कवि कमळ विकसावण । —रा रू

३ वृद्धिमान करने वाला, वढाने वाला ।

४ आगे बढाने वाला, प्रगतिशील करने वाला ।

५ प्रफुल्लित करने वाला, आल्हादित करने वाला, खुशी मे फुलाने वाला ।

विकसावणो, विकसावबो—देखो 'विकसाणो, विकसावो' (रू भे)

विकसावणहार, हारो (हारी), विकसावणियो—वि० ।

विकसाविग्रोड़ो, विकसावियोडो, विकसाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विकसावीजणो, विकसावीजवो—कर्म वा० ।

विकसावियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विकसावियोडी)

विकसियोडो–भू का कृ.—१ विकसित हुवा हुग्रा. २ खिला हुग्रा, फूला हुग्रा (फूल) ३ आगे वढा हुग्रा, प्रगतिशील हुवा हुग्रा. ४ प्रफुल्लित हुग्रा हुग्रा, हर्षित हुवा हुग्रा, आल्हादित हुवा हुग्रा, खुशीमे फूला हुग्रा.

(स्त्री विकसियोडी)

विकस्सणो विकस्सवो—देखो 'विकसणो, विकसवो' (रू. भे.)

उ०—मेडतिया 'हरियद,' सूर दळ राम विकस्सै । मानसिंघ जूझार, वेळ बोलिया विहस्सै । —रा. रू.

विकस्सणहार, हारो (हारी), विकस्सणियो—वि० ।

विकस्सिग्रोडो, विकस्सियोडो, विकस्स्योडो—भू० का० कृ० ।

विकस्सीजणो, विकस्सीजवो—भाव वा० ।

विकस्साणो, विकस्सावो—देखो 'विकसाणो, विकसावो (रू. भे.)

विकस्साणहार, हारो (हारी), विकस्साणियो—वि० ।

विकस्सायोडो—भू० का० कृ० ।

विकस्साईजणो विकस्साईजवो—कर्म वा० ।

विकस्सायोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विकस्सायोडी)

विकस्सावणो, विकस्साववो—देखो 'विकसाणो, विकसावो' (रू भे.)

विकस्सावणहार हारो (हारी), विकस्सावणियो—वि० ।

विकस्साविग्रोडो, विकस्सावियोडो, विकस्साव्योडो —भू० का० कृ०

विकस्सावीजणो, विकस्सावीजवो—कर्म वा० ।

विकस्सावियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू भे)

(स्त्री विकस्सावियोडी)

विकस्सियोडो—देखो 'विकसियोडो' (रू भे)

(स्त्री विकस्सियोडी)

विकहा—देखो विकथा' (रू भे)

विकाणो विकावो—देखो 'विकाणो, विकावो' (रू भे)

उ०—१ एकइ वनि वसतडा, एवड अंतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ । —म्र वचनिका

उ०—२ तू सरवर की माछळी, कौंण पिता कुण माय । अलप सनेही कारणै, हाटो हाट विकाय । —अनुभववाणी

विकाणहार, हारो (हारी), विकाणियो—वि० ।

विकायोडो—भू० का० कृ० ।

विकाईजणो, विकाईजवो—कर्म वा० ।

विकाथिनी-स स्त्री. [स] स्कन्द की एक अनुचरी, एक मातृका।

विकायोडो-भू० का० कृ०—देखो 'विकायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विकायोडी)

विकार-सं पु [स विकार'] १ प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होने वाला परिवर्तन।

उ०—१ वोधक वोध एकही कहिये, निस्चय योही हमारा। है सुखराम सदा सुद्ध केवळ, नहिं कोई माया विकारा।

—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ ब्रह्मांड इकीस ऊपरै आसन, ज्या पर अविगत योगी। नाद विंदका नही विकारा, ब्रह्म आनद का भोगी।

—स्री सुखरामजी महाराज

२ किसी वस्तु के आकार, गुण, रग-रूप, स्वभावादि मे होने वाला परिवर्तन जिससे वह काम देने योग्य न रहे।

३ उक्त प्रकार का परिवर्तन करने वाला तत्व।

४ क्रोधादि के कारण मुख पर हुई विकृति।

उ०—हुई दौड हैमरा, नरा ऊधरा करारा। सेख ज्वाळ सल्लळी, कना सिव चक्ख विकारा। —रा रू

५ बीमारी, रोग।

उ०—जं जळ मीकर, तैं उद्वेग कर। जस सीतळोपचार ते करइ विकार। इणि परि प्रज्वलित, स्नेह पटळ, विरहानळ नीपजइ।

—रा सा स

६ वेदान्त व साख्यदर्शनानुसार किसी पदार्थ के रूपादि का बदल जाना।

७ मनपरिवर्तन।

८ मनोवेग।

९ उद्वेग, विकलता।

१० दोप।

उ०—१ सीचे अभ्रत अग अति सजम, जोवन लगै विकार जरा जम। परमहस आणद मे प्राणी, ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वाणी।

—सू. प्र

उ०—२ दरसी जोत दिदार, तिरवेणारी ताक मैं। छूटा सकळ विकार, आयो मन माग मैं। —स्री सुखरामजी महाराज

उ०—३ सील सतोख सदा रहै सीतळ, आनद रूप रहै जाह ताही। पेम प्रवाह भयै तन भीतरि, और विकार लिपै नही काही।

—अनुभववाणी

११ वासना।

उ०—१ करम कचोडी वैस करि, निजर लगी चहु दिस। हरीया विखै विकार मैं, तन मन रहीयो फिस। —अनुभववाणी

उ०—२ परिया तणुं न चालै पैंडै, हाले कुपथ विकार हियै। दाना मिनख न राखै डेरै, दाना विन कुण सीख दियै।

—कविराज वाकीदासजी

१२ अवगुण, बुराई।

उ०—१ विखयानद मलीन विकारा, यह मान्या सो जुग जुग हारा। विखयानद जगत का भाखा, अब भजनानद की केहू साखा।

—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ आसि पासि त्रन करम का, फळ लागा सुख दुख। माया मोह विकार की, हरीया मिटै न भूख। —अनुभववाणी

१३ वैमनस्य, शत्रुता।

उ०—अठै रह कासू बफादारी लेयस्या। हाली घरा हाला। सो सूरी इसडी रग खीवै री दीसी, जं सगा सूं बिकार पैदा हो बिगाड हुवै। —सूरै खीवै काधळोत री वारता

१४ परिवर्तन।

उ०—स्वाति बूद आकास की, पासै पडी समद। हरीया पेम विकार का, निज कण खोया कद। —अनुभववाणी

१५ बदहजमी।

उ०—हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै। चावळ री चोथी हैंसी खावै। तत्रोल विना व्याधा अहारा विकार थावै। माडी मोडी कटारी री पडचली समावै। —रा. सा स

१६ स्वाद, जायका।

उ०—आव स थोहरि ईख वड, एकै धरि अवतार। साई जिभ्या लख कहै, जिभ्या लख बिकार। —सुरजनदास पूनियो

१७ जैन मतानुसार पाच ज्ञानेंद्रियो से होने वाले २४० विकारो मे से कोई एक।

रू भे —विकार, विकारु।

विकारी-वि [स. विकारिन्] १ जिसमे कुछ विकार हुआ हो, विकार युक्त।

२ जिसमे कुछ परिवर्तन हुआ हो या होता रहता हो, परिवर्तनशील

३ विकार उत्पन्न करने वाला।

उ०—सेली सीगी घालै नेमा, राम भगति का नाही पेमा। भरम करम वोह करै विकारी, साध नही औ वड ससारी

—अनुभववाणी

स पु—१ साठ सवत्सरो मे से तेंतीसवें सवत्सर का नाम जो विष्णु वीसी का तेरहवा सवत्सर होता है।

२ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी रचना मे विकार (परिवर्तन) हुआ हो।

रू. भे —विकारी।

विकाद—देखो 'विकार' (रू. भे)

उ०—बाहिर हेम राम का बाना, भीतरि भया भंगारु। या तन कुं कारी नहीं लागै, मनवा भरघा विकारु। —अनुभववाणी

विकाळ–स पु [सं विकाल] १ वह समय जब देवकार्य व पितृकार्य करने का समय बीत चुका हो।

२ देर, विलम्ब।

३ सन्ध्या का समय, शाम।

विकावणौ, विकावबौ—देखो 'विकाणौ, विकावौ' (रू. भे)

उ०—किसी सीख सायर सुतन, कोड विकावण एक कण (रा)। ताई सीख येही खरी, यौ दुरगा ग्रासकरण रा।

—सुरजनदास पूनियौ

विकावणहार, हारौ (हारी), विकावणियौ—वि०।

विकाविग्रोडो, विकावियोडो, विकाव्योडो—भू० का० कृ०।

विकावीजणौ, विकावीजबौ—कर्म वा०।

विकावियोडो—देखो 'विकायोडो' (रू भे)

(स्त्री विकावियोडी)

विकास–स पु [स विकाश:] १ प्रदर्शन, प्राकट्य, प्रकटन।

२ ग्राकाश।

३ विस्तार, फैलाव।

४ प्रकाश, रोशनी।

५ प्रस्फुटन, खिलन।

६ उन्नति, बढोतरी, तरक्की।

उ०—धरटी फेरता हरजस तौ बद व्हैग्या ग्रर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या-ग्रखिया मिलाकै-जिया भरमाकै-चलै नही जाना हो हो चले नही जाना। गाम में दो च्यार मुकद्मा इ चालू व्हैग्या, जिणसू लोग बाग कई दफा रा जाणकार व्हैगा। कैवण रौ मतलब ग्रो कै गाम री मोकळी सास्क्रतिक विकास व्हैगौ। —ग्रमर चूनडी

रू भे —विकास, विगास, विगास।

विकासणौ, विकासबौ–क्रि ग्र —१ विकसित होना।

२ प्रकटित होना, प्रदर्शित होना।

३ प्रस्फुटित होना, खिलना।

उ०—काळी भमरावळि फळी, भूहा वाकडियाह। कमळ प्रभात विकासिया, इसडी ग्राखडियाह। —ग्रज्ञात

४ उन्नत होना।

विकासणहार, हारौ (हारी), विकासणियौ—वि०।

विकासिग्रोडो, विकासियोडो, विकास्योडो—भू० का० कृ०।

विकासीजणौ, विकासीजबौ—भाव वा०।

विकासणौ, विकासबौ, विगासणौ, विगासबौ, विक्कासणौ, विक्कासबौ, विगासणौ, विगासबौ—रू० भे०।

विकासियोडो–भू. का कृ.—१ प्रकटित हुवा हुग्रा, प्रदर्शित हुवा हुग्रा

२ विकसित हुवा हुग्रा ३ प्रस्फुटित हुवा हुग्रा, खिला हुग्रा

४ उन्नत हुवा हुग्रा।

(स्त्री. विकासियोडी)

विकिर–स पु. [सं विकिर] १ पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारो ग्रोर फेंके जाने वाले चावल ग्रादि।

२ पक्षी।

३ कूप, कुग्रा।

४ पेड, वृक्ष।

विकीरण–वि [स विकीर्ण] १ जो चारों ग्रोर फैला या छितराया हुग्रा हो।

२ प्रसिद्ध, मशहूर।

विकुठ–वि [स] १ ग्रत्यधिक तीक्ष्ण या नुकीला।

२ ग्रत्यधिक, भुथरा।

३ रैवत मन्वन्तर का एक देवता-समूह जिसमे चौदह देव होते थे।

वि वि —इस देवता समूह मे निम्न लिखित देवता होते थे—१ ग्रजेय २ कृश ३ गौर ४ जय ५ भीम ६ दम ७ ध्रुव ८ नाथ ९ यश १० विद्वस ११ वृण १२ शुचि १३ भेतृ १४ दात।

४ देखो 'वैकुठ' (रू भे)

विकुठा–स स्त्री —एक देवी, जो रैवत मन्वन्तर मे उत्पन्न विकुठ नामक देवताओं की माता व शुभ्र की पत्नी मानी जाती है।

विकुडभांड–स पु [स] एक दानव का नाम। (पौराणिक)

विकुडळ–स पु —निषध नगर के एक धनी वैश्य के पुत्र का नाम।

वि वि.—यह बडा पापी पुरुष था। इसने यमुना तीर वासी एक ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के सग दो वार यमुना में माघ स्नान किया था जिससे इसकी मुक्ति हुई थी।

विकुभ–स. पु —एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रो में से एक था।

विकुक्ख, विकुक्खी, विकुक्षि, विकुछ, विकुखी–स पु. [स. विकुक्षी] १ ग्रयोध्यापति सूर्यवशोत्पन्न इक्ष्वाकु के १०० पुत्रो में से सर्वज्येष्ठ पुत्र जिसे शशाद नामान्तर भी प्राप्त था। यह ककुत्स्थ, जिसके नाम पुरञ्जय व इन्द्रवाह भी थे, का पिता था।

उ०—१ सुत कामिप सूरज तप ग्रसाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। वइवस्तु तणौ इस्वाकु वीर, सभ्रम इक्ष्वाकु विकुछ सधीर। —सू प्र.

उ०—२ सुत विकुख सक्रुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जे सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नदन विस्टरास। —सू प्र.

वि.—जिसकी तोद बढी हुई हो।

विकुट—स पु —राजस्थानी (डिंगल) में एक गीत छन्द विशेष।

वि. वि —इसमे प्रथम चरण मे १४-१४ मात्राओं पर यति से २८ मात्रा फिर दूसरे चरण मे २७ मात्रा, फिर ७-७ मात्राओ के २० चरण होते हैं।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, तिय सत वीसा सोइ। तिण थी मिळ दुव चवद वद, विकुट गीत इम होइ। —पिंगळ सिरोमणि

विकूरवी, विकूरवी—वि —वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न, कृत्रिम, बनावटी। (जैन)

उ०—तिहा वळी सबळी सिंह विकूरवी रे, तें कहे मैं दीठी इक सीह रे। माणस नी लेती वासना रे, आवे छे इण वार अबीह रे। —वि कु

विकेस—वि. [स विकेश] १ जिसके सिरके के बाल खुले हो।

२ जिसका सिर बालरहित हो, गजा।

स पु —१ एक प्रकार का प्रेत।

२ पुच्छल तारा।

विकेसी—सं स्त्री. [स विकेशी] सिर के खुले बालो वाली स्त्री।

२ वह स्त्री जिसके सिर मे बाल न हो, गजे सिर वाली स्त्री।

३ शिव की पत्नी का नाम।

४ अग्नि की एक पत्नी का नाम।

५ पूतना राक्षसी का एक नाम।

६ बालो की छोटी-छोटी लटो को मिलाकर बनाई हुई चोटी या वेणी।

विकोक—स. पु. [स] वृकासुर का पुत्र तथा कोक का छोटा भाई।

विकोदर—स. पु [स वृकोदर] देखो 'व्रिकोदर' (रू. भे)

उ०—१ अमरावत अजवसिंध अमर वोल काजै, जुद्ध आए जुधिस्ठिर बंधव सा राजै। योयद का सुदर विकोदर सा वाहा, ममर की मरजाद धरम कै राहा। —रा रू

उ०—२ पटहथ ऊचडतो भुज पाणै, वाहा प्रलम भेदियो वाणै। ईखै साह नयण आपाणै, जोधाहरो व्रिकोदर जाणै। —ईसरदास वीरमदेवोत राठौड री गीत

उ०—३ गाहेवा अजमेर गिरव्वर, सू सादूळ माडवा सम्मर। करग उपाडै 'भीम' किरम्मर, वधियो वामण जेम विकोदर। —गु रू ब

विकोस—वि. [स. विकोश, विकोष] १ म्यान से निकला हुआ, बिना म्यान का। (शस्त्र)

२ बिना छिलके या भूसी का, भूसी रहित।

३ खुला हुआ, अनाच्छादित।

विक्क—स पु [स विक्क] १ हाथी का बच्चा।

२ देखो 'विक्क' (रू भे)

विक्कटा—देखो 'विकटा' (रू भे.)

उ०—देवी भूनडा भम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजा। देवी राखस घोमरं रत्त रूती, देवी दुरजटा विक्कटा जम्म दूती। —देवि.

विक्कमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे)

उ०—१ अभयदाणु जिणि दिनु सयल सयह विक्कमपुरि। किय पमट्ठ जिण उसम भुवणि नहुविह उच्छवु भरि। —ऐ. जै का. स

उ०—२ विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ। गणहरु जेम सुहम सामि भवियण दिण बोहइ। —ऐ जै का स

विक्कय—देखो 'विक्रय' (रू. भे)

विक्कराळ, विक्कराल—देखो 'विकराल' (रू. भे)

उ०—१ जुट जम्म जाळ, वपं विक्कराळ। वाहूडड पिंड, वाणासै विखडं। —गु रू ब

उ०—२ ऊछळतं हाथ पाव, घट्ट सीस दाव धाव। मड ईस रूडमाळ, वीर न्रित्त विक्कराळ। —सू प्र

उ०—३ कलू काल रूपी महा विक्कराळं, फणा टोप रोपं महकोप जाल। वलक्कं वलातो चलतो कराल, जिणं फूंकि सूकै तरु माल डाल। —ध व ग्र

विक्करू—देखो 'विकराळ' (रू भे)

विक्कसणौ, विक्कसवौ —देखो 'विकसणौ, किरसवौ' (रू भे)

उ०—रिणमल्ल राव विसरामियो, कुंभा की मन विक्कसं। छळियो छदम तं कूड कर, जेम सीह आगै ससै। —नैणसी

विक्कसणहार, हारौ (हारी), विक्कसणियौ—वि०।

विक्कसिओडौ, विक्कसियोडौ, विक्कस्योडौ —भू० का० कृ०।

विक्कसीजणौ, विक्कसीजवौ—भाव वा०।

विक्कसियोडौ —देखो 'विकसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. विक्कसियोडी)

विक्कासणौ, विक्कासवौ—देखो 'विकासणौ, विकासणौ' (रू. भे)

उ०—विक्कासं हासं सीसं वध, मेलै मूछा भ्रू हारै। धारा लकाळे पाणं धूणं, अर्भं नभ्भ आधारै। —गु रू ब.

विक्कासणहार, हारौ (हारी), विक्कासणियौ—वि०।

विक्कासिग्रोडो, विक्कासियोडो, विक्कास्योडो—भू० का० कृ० ।
विक्कासीजणो विक्कासीजवो—कर्म वा० ।

विक्कासियोडो—देखो 'विकासियोडो' (रू भे)

(स्त्री विक्कासियोडी)

विक्खं, विक्ख—१ देखो 'विस' (रू. भे)

उ०—ग्रावै सघरा ग्रचीत, जेम वनि ग्रगनि सिळगगा। सरप विक्ख सोखवा, मत्र ग्रावै सुखमगा। —रा रू

२ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—चखा झाळ तूटै मुखा झाळ चढा, परस्सो फरस्सो ग्रमावै ग्रचढा। वदै रामहूं राम वायक विक्ख, तिकै राम रा बाण जाणै सतिक्ख। —सू प्र

३ देखो 'वीख' (रू भे)

उ०—ग्रति सूरिति ग्रावस जेती ऊफरिण, वामण रूप जिहीं वधियो। विढवा दळ साम्ही दीन्ही विक्खा, जाणै ग्रंतक जागवियो। —गु रू व

विक्खणी-स. स्त्री—सडक चलते समय घोडे के पैर की रगडक लगने से उत्पन्न ग्राग की चिनगारी।

उ०—खुरताळा विक्खणी, घरणीलग्गी ग्रायासा। नह सुणीजै नीसाण, वसू वाजी वरहासा।

—गु रू व

विक्खधर—देखो 'विसधर' (रू भे)

उ०—सहर ग्रजेपुर जोधपुर, सोवै राख जवन्न। पूठ ग्रकब्बर वाहरा, थयो विक्खधर मन्न। —रा. रू

विक्खम, विक्खमी, विक्खम्म, विक्खम्मी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—भारा ग्राकात हुवदी भूम्मी, वरतदी सुरवार विक्खम्मी। ग्रमरू कथ ग्रहमाण ग्रखम्मी, थदै उथ्थल थानूदा। —र ज प्र

विक्खहर—१ देखो 'विसधर' (रू भे)
२ देखो 'विसहर' (रू भे)

विक्खेव—देखो 'विक्षेप' (रू. भे) (जैन)

विक्टोरिया-स स्त्री [ग्र.] १ प्राय फिटन से मिलती-जुलती किन्तु उससे कुछ छोटी ग्रौर हल्की एक प्रकार की घोडा-गाडी।

२ एक छोटा ग्रह जिसकी खोज हैंड नामक पाश्चात्य ज्योतिषी ने सन् १८५० मे की थी।

विक्रतड—देखो 'वक्रतुड' (रू भे)

उ०—स्यान रो गोरख विक्रतड वुधान रो गणा, सिंघा वामदेव मानसीरा में समद। छोळा माधवान बळाकार गदाधार छाजै, न्रप भूपाळ ग्रसो उदीपियो नद।

—महाराज सनमानसिंघ हाडा रो गीत

विक्रत-वि. [स विकृत] १ जिसमे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो गया हो, विकारयुक्त।

२ जिसका ग्राकार, रूप ग्रादि मे परिवर्तन हो गया हो, कुरूप, भद्दा

उ०—वा दो तीन वेळा मासी रै मूंडा साम्ही जोयो तो उणनै ग्रैडो लखायो जाणै उणरी ग्राख्या होठा माथै चिप्योडी व्है ज्यूं, कान ग्रापरो ठायो छोड लिलाड माथै जुडग्या ग्रर नाक ठोडी रै हेटै लटूमै। इण भात मासी रो उणियारो विक्रत ग्रर विडरूप क्यूं व्हैगो ? —फुलवाडी

३ ग्रस्वभाविक।
४ ग्रधूरा, ग्रपूर्ण।
५ वीमार, रोगी।
६ ग्रगहीन, विकलाग।
७ उद्विग्न।
८ घृणाजनक।
९ ग्ररुचिकारक।
१० ग्रसाधारण।

स. पु.—१ दस लोककर्त्ताग्रों मे से दूसरे प्रजापति का नाम।

२ विष्णुवीसी मे चौथा व साठ सवत्सरो में से चौबीसवें सवत्सर का नाम।

३ परिवर्त्त राक्षस का नाम। (पुराण)

४ ब्राह्मण वेशधारी कामदेव, जिसने इसी वेश में ग्रयोध्यापति इक्ष्वाकु के साथ सवाद किया था।

रू भे —विक्रत, वक्रत, विक्रित।

विक्रतस्वर-सं पु [स विकृत+स्वर] ग्रपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियो पर जाकर ठहरने वाला स्वर। (सगीत)

विक्रता-स स्त्री [सं विकृता] एक योगिनी का नाम।

विक्रति-स स्त्री [स विकृति] १ विकृत होने की ग्रवस्था या भाव।

२ विकार या खरावी।
३ विकार के उपरान्त प्राप्त होने वाला रूप, विगडा हुग्रा रूप।
४ वीमारी, रोग।
५ परिवर्तन।
६ परिणाम।
७ मानसिक क्षोभ।
८ २३ वर्णों के छन्दो की सज्ञा। (पिंगल)
९ विकार ग्राने पर होने वाला मूल प्रकृति का रूप। (सांख्य)
१० मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होने वाला शब्द का रूप।
११ भागवत, विष्णु, एव वायु के ग्रनुसार एक यादव राजा जो भीमरथ का पिता व जीमूत राजा का पुत्र था।

रू. भे —दक्रति।

विक्रतुड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे.)

विक्रम–वि.—विना क्रम का, क्रमरहित।

स पु [स. विक्रम] १ विपरीत गति।

२ कदम, डग।

३ पराक्रम, वल, शौर्य।

४ बहादुरी, वीरता।

५ चाल गति।

६ गरुड पर सवारी करने वाले भगवान, विष्णु भगवान्।

७ ग्रह्मवीसी या साठ सवत्सरो मे से चौदवा सवत्सर।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से बलवर्धन नामक पुत्र।

९ योद्धा वीर। (श्र मा)

[स. विकर्म] १० दुष्कर्म, पाप-कर्म।

उ०—सुभ करमन का सुख फल स्वरगा, असुभ करै दुख भोगै नरका। परम विक्रम तणा यह साजा, कबहू रक कबू ही राजा।
—स्री सुखरामजी महाराज

११ तीन की सख्या।

१२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

उ०—स्रीराम कुळ राम अवतार, जैतवारू कै जैवार। भोज विक्रम करन तै सवाय, आचार की सोभा वरणी न जाय।
—रा. रू

१३ देखो 'विक्रमसवत्' (रू. भे.)

रू भे.—बिकरम, बिक्रम, बीकम, विकम, विकरम, वीकम, वीकम्म।

विक्रमक–स पु—स्वामीकार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

विक्रमगढ, विक्रमनगर, विक्रमनगरि, विक्रमनगरी, विक्रमपुर, विक्रमपुरी स पु–१ राजस्थान राज्यान्तर्गत बीकानेर नामक एक शहर।

उ०—अत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा स्री कल्याणमल विक्रमनगरि राज करै छै।
—द वि

२ जयसलमेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन नगर विक्रमपुर।

रू भे.—बीकपुर, बीकमपुर, बीकमपुरि, बीकमपुरी, विक्कमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी, वीकनेर, वीकपुर, वीकमपुर।

विक्रमसील–स. पु—एक राजा, जो कालिन्दी का पति और दुर्गम का पिता था।

विक्रमात–स पु [स विक्रम+अत] योद्धा, वीर। (श्र मा)

रू भे.—विक्रमात।

विक्रमाजीत, विक्रमादित, विक्रमादित्य, विक्रमादीत–स. पु. [स विक्रमादित्य] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनकी राजसभा मे कालिदास थे और विक्रमी-सवत् इन्ही का चलाया हुआ माना जाता है।

उ०—१ गया चौतीस वादेसाह, अौर केता भुंवाळ। विक्रमाजीत अर भोजराज, गयौ सो मूज वलाळ।
—ऊदो नैणा

उ०—२ भूप विक्रमादित था ऊजेण सहर का,सभ वाता समरत्थ था दुख काटण पर का। दाता भोज पवार था न्रप धार नगर का, लाख लाख द्रव देत था इक इक अखर का।
—दुरगादत्त बाहरठ

उ०—३ विक्रमादित्य जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी। पाच पडव जिम बलवत, सीह तणी परि साहसवत।
—ऐ. जै. का स

रू भे—विकरम, विकरमाजीत, विक्रमाजीत विक्रमारक, वीक, वीकम, बीको, विकमाईत, विकमायत, विकरमादित्य, विकरमादीत विक्रमारक, वीक, वीकम, वीकम्म।

विक्रमाब्द–स पु—विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमी सवत्।

उ०—धारि कठिनाई धीर गुरु की चराई धेनु, इस्ट वर पाय पुनि पूरनिधि पाई तै। विक्रमाब्द इदु नद द्वीप मानमोरी मारि चित्रकूट राजधानी जबर जमाई तै।
—कल्याणसिंह बारहठ

विक्रमारक–स पु [स. विक्रमार्क] देखो 'विक्रमादित्य'।

विक्रमि—देखो 'विक्रमी' (रू भे.)

विक्रमित्र–स पु.—वज्रमित्र शुग राजा का नाम।

विक्रमी–वि [स. विक्रमिन्] १ वीर, बहादुर, शूरवीर।

२ पराक्रम वाला, पराक्रमी।

३ विक्रम सम्बन्धी, विक्रम का।

स पु—१ सिंह, शेर।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

३ विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमीसवत्

रू भे—विकरमी, विक्रमी, विकरमी।

विक्रय–स पु [स विक्रय] बिक्री।

रू भे.—विक्रय, विक्रेय, विक्कय, विक्रेय।

विक्रात, विक्रा-श्रत–वि. [स विक्रान्त, विक्रान्त] १ शूरवीर, बहादुर, वीर। (ह ना मा)

उ०—क्रपा कटाच्छ गोल की, विलोल जाहि धा कर्मे। रजै विक्रांत सात मे, क्रतात श्रात मे रमै।
—ऊ का.

२ विजयी, प्रतापी, तेजस्वी।

स पु—१ सिंह, शेर।

२ एक प्रजापति जो वालेय गधर्वों का जनक माना जाता है।

३ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

४ एक प्रजाहित दक्ष राजा, जो दम राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम सुधृति था।

५ हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

६ राजा ऋतुध्वज (कुवलयाश्व) के उनकी पत्नी मदालसा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम। (पुराण)

[सं वैक्रान्त] ७ वैक्रान्तमणि।

रू भे—विकरात।

विक्रांति–स स्त्री [स विक्रान्ति] १ गति, चाल।

२ घोडे की सरपट चाल।

३ विक्रम, बल, शौर्य।

४ वीरता, बहादुरी।

रू भे—विकराति।

विक्रित—देखो 'विकृत' (रू भे)

विक्री—देखो 'विकरी' (रू. भे)

विक्रुष्ट–स पु—व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर ध्वनि मे बोलने की क्रिया या भाव। (संगीत)

विक्रेता–वि [स.] विक्रय करने वाला, वेचने वाला।

रू भे—विकरेता।

विक्रेय–वि—१ जो वेचने के लिए या वेचने के योग्य हो, विकाऊ।

२ देखो 'विक्रय' (रू भे)

रू भे—विक्रेय।

विक्रोस–स स्त्री [स विक्रोशन] १ गाली।

२ चीत्कार, चिल्लाहट।

विक्रौ—देखो 'विकरौ' (रू भे)

विक्लय, विक्लव–वि. [स. विक्लव] १ भीरु, डरपोक।

२ डराहुआ, भयभीत।

३ पीडित, दुखित।

४ विह्वल, वेचैन।

५ उद्विग्न, घवडाया हुआ।

विक्षत–वि [स] घायल।

विक्षम–स पु—कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार।

विक्षय–स. पु—अधिक मद्यपान के कारण होने वाला रोग।

रू. भे.—विखय।

विक्षर–स पु—१ भगवान् विष्णु।

२ कश्यप एवम् दनु का एक पुत्र जो वीर और प्रतापी दैत्य था और आगे चल कर वसुमित्र राजा के रूप मे अवतीर्ण हुआ था।

विक्षात, विक्षातमान, विक्षाति, विक्षातिमान–वि.—प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—१ समुदघात सग नर नै पण गरभय तिरि देव। नारक वायु नै च्यार सेम नै तीनु भेव। दिही दोय विगल में थावर नै मिथ्यात। सेम नै तीन दिहि जिम प्रवचन मे विक्षात। —वृस्त

उ०—२ कीरतिथभि करि, सारदा सरस्वती नदीए करी, देस-देसाउर वदीतू विक्षातमान छइ, एहवू एक अणहलपुर पाटण वरणवीतूं सोभइ, अहो मीग्रालक वोलि। —व. स.

उ०—३ अथ धरम्मप्रभाव, क्षीरसागर विस्तीरण निस्कलक कुल, लोकमहि विक्षाति विसुद्ध जाति, भवनोद्धारधार, सकललक्षण-प्रधान। —व. स

विक्षिप्त–वि [स.] १ घबराया हुआ, वेचैन, व्याकुल। २ खारीज किया हुआ, त्यागा हुआ ३ भेजा हुआ ४ खण्डन किया हुआ ५ बिखरा या फेंका हुआ।

६ पागल।

विक्षिप्तता–स. स्त्री. [स विक्षिप्त+ता] विक्षिप्त होने की अवस्था या भाव।

विक्षेप–स. पु. [स. विक्षेप] १ इधर उधर हिलाने डुलाने की क्रिया या भाव।

२ इधर उधर बिखेरने या छितराने की क्रिया या भाव।

३ झटका देने की क्रिया या भाव।

४ मन को इधर-उधर दौडाने या भटकाने की क्रिया या भाव।

उ०—माया में मिसरत मिल्या, चित्त नाम धराणी। स्वरूप भूल स्वप्ना भयो दीस विक्षेप दरसाणी। —श्री सुखरामजी महाराज

५ बाधा, विघ्न।

उ०—मल विक्षेप आवरण कर दूरा, वै सदा सुख से लेटै। सत चित आनद मिलै हजूरा, गुरु गोदी मे बैठे।

—साधु जगदीसराम

६ एक प्रकार का अस्त्र विशेष। (प्राचीन)

रू भे—विक्षेप, विक्खेव, विखेप।

विक्षोभ–स पु [स.] विशेष रूप से मन में होने वाला दुःख, उद्विग्नता।

विक्षोमण–स पु—कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक दानव पुत्र।

विखंड–वि—१ खड-खड, टुकडे-टुकडे।

उ०—१ खड-खड विखड बीजळा खिमता, हय गय दळा विहडता हाथ। हय वारा कूदेगा हळका, 'भारै' रौ रहियौ भाराथ।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ सो धनुधु नामइ किमु काटकि, धारणि धासकि धडहडी। बभड खड विखड थाइ धि स्रगि सयल वि रडवडी।

—सालिभद्र सूरि

२ नाश, सहार।

उ—१ जुटै जम्म जाळ वपै विक्कराळ। वाहूडड पिंड, वाणासै विखड। —गु रू व.

उ०—२ जिण मत्थै इसा भड न हुवै प्रचड, 'वाघ'उत रिम घडा करै खागा विखड। भझ भूझार भड 'राजसी' झल्लणो, एक अवनाड सीगाळ अवखल्लणो। —हा झा

३ मिटाने वाला, खत्म करने वाला।

उ०—भाऊ आणदराम तण, उर आणद प्रचड। दळ आणद प्रकासणा, खळ आणद विखड। —रा रू

रू. भे —विखड।

विखडण-वि —१ सहार करने वाला, सहारक, नाशक।

२ तोडने वाला।

विखडणो, विखडबो-क्रि अ.—१ मिट जाना, नष्ट हो जाना।

१ खण्ड-खण्ड होना, टुकडे टुकडे होना।
क्रि स —३ नाश करना, सहार करना, मारना।
४ खण्ड-खण्ड करना, टुकडे टुकडे करना।

उ०—धरि खबर जाणि वै वधवा, माल विवटा मडियो। आसुर तरीन राजा 'अभै', खग इण भात विखडियो। —रा रू

५ तोडना, मिटाना।

उ०—१ इणइ वचनि धरणी ढलिउ, धर धर धूजइ देह। 'अ्रै अ्रै अस मस हास तू, मुझ विखडइ नेह। —मा का. प्र

उ०—२ मित्र कलत्र स्यू नेह विखडिउ, तेह तणइ परभावइ। राजकुमरि परणीइ जि द्रेठि, जोई न सकइ भावि।

—हीराणद मूरि

विखडणहार, हारो (हारी), विखडणियो—वि०।
विखडिओडो, विखडियोडो, विखडचोडो—भू० का० कृ०।
विखडीजणो, विखडीजबो—भाव/कर्म वा०।
विखडणो, विखडबो—रू भे।

विखडा-वि स्त्री —नाश करने वाली, सहार करने वाली।

उ०—देवी कटका हाकणी वीर कवरी, देवी मात वागेसरी महागवरी। देवी दडणी देव वेरी उदडा, देवी वजया जया देता विखडा। —देवि

विखंडियोडो-भू का. कृ.—१ मिटा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ खण्ड खण्ड हुवा हुआ टुकडे-टुकडे हुवा हुआ. ३ नाश किया हुआ, सहार किया हुआ, मारा हुआ ४ खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकडे-टुकडे किया हुआ ५ तोडा हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री विखडियोडी)

विख-वि. [स विख, विख्य] १ जिसकी नाक कटी हुई हो, नाक रहित।

२ देखो 'विस' (रू भे) (अ. मा, डिं. ना मा, ह ना. मा)

उ०—झाग विख अरावा आगि मायै झडै, लडथडै अडै गैणागि लागो। झपेटा भाग किलमा करै झोवरै, नाग जिम राम रो खाग नागो। —राव भीमसिंघ हाडा रो गीत

उ०—२ हाथा री जहडी हिलोहळ, तहडी कहियो जिकै तिकै। "जैसा" हरी जायनै जोयो, विख अमरत हिक भाव थिकै।

—नवळजी लाळस

उ०—३ विख पीजै कुण कारणै, ता सेती मरि जाय। हरीया इम्रत पीव करि, कळि अजरामर थाय। —अनुभववाणी

उ०—४ साहिजिहान वराड अधप सरप, महि अजमेर दराड मडाण। विख वळ गुमण आसनी वमियो, रहियो तेण अडमीयो राण। —राव सत्रसाल हाडा रो गीत

उ०—५ अमिया गरुड दवार थी, ज्यों विस निर विख होय। विसन जपता पाप त्यो, वोहडि न करियो कोय। —वील्होजी

उ०—६ नेम कछू नही पेम, बक्यो पखवाद मैं। हरिहा दास कहै हरिराम, रच्यो विख स्वाद मैं। —अनुभववाणी

उ०—७ इम पतसाह सुणै अकुळायो, अहि जाणै जूवल तळ आयो। भिळिया जाण, सुरा विख भेळा, सोर अगन किर थया समेळा। —रा रू.

उ०—८ मिस्री लै अप्रमाण, सीचो घोळ घी सहित। विख मो नीम वखाण, मीठो होवै न मोतिया। —रायसिंह साढू

३ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—रातो रहै सदा विख रस मैं, पेम भगति नही भाय। लोक लाज काज कुळ माही, हरि पूज्यो न सुहाय। —अनुभव वाणी

विखअख-स. पु —सर्प, साप।

उ०—मेळ थया अगराज, हूत गजराज दहल्लै। गुरडपख गजिया, झाट विखअख न झल्लै। —रा रू

विखई-स स्त्री —१ इन्द्रिय। (अ. मा.)

२ देखो 'विसयी' (रू भे)

उ०—निज कुभ सिभ जुग वण अनोप, उत्तग सिखर घण सिखर ओप। कर लोल भुलत अति चपळ कान विखई मन जाणिक उकतिवान। —रा रू

विखउ—देखो 'विखो' (रू भे)

उ०—थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारु आसा लुब्ध। परदेसै घाघळ घणा, विखउ न जाणइ मुग्ध। —ढो मा

विखकन्या—देखो 'विसकन्या' (रू भे)

उ०—किलच किलमा चाढि घडा कणाकण किया, हुवै हूकल कळळ मैंगळ हुवै। विखकन्या वींदणी वींद भोजो विकट, जोजरो वरै मोटियार जोवै। —भोजराज खगारोत रो गीत

विखकर–स पु [स विषकिरि] मयूर, मोर। (ना. मा.)

विखकसेन–स पु [स. विष्वक्सेन] १ ईश्वर। (ना मा)

२ विष्णु।

३ श्री कृष्ण। (अ मा)

रू भे —विखुकसेन।

विखगामी–वि [स विषमगामी] (स्त्री विखगामण) विषम गति से चलने वाला।

विखणौ, विखवौ—देखो 'वीखणौ, वीखवौ' (रू भे)

विखणहार, हारौ (हारी), विखणियौ—वि०।

विखिओड़ौ, विखियोड़ौ, विख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विखीजणौ, विखीजवौ—कर्म वा०।

विखदाती–स. पु. [स विषदान्त] नाखून। (अ मा)

विखधर, विखधार, विखधारी—देखो 'विसधर' (रू भे)

(अ मा., ह ना मा)

उ०—च्यार मजळ अजमेर सू, दाखै 'अवरग' दुक्ख। ज्यौं विखधर छछूदर, गिळै न त्यागै मुक्ख। —रा रू

उ०—२ चूर त्रिण तर पसर वनचर, कना मेटण तिमण रवि कर। धूप चख हर ज्वाळ, विखधर धारि सुजहर। —रा रू

उ०—३ घर चलियौ भाळ 'ववर'हर विखधर, भर वावी अजमेर भर। नाग दवण सत्रसल नेडाणौ, डसै न राणौ तेण डर।

—राव सत्रसाळ हाडा रो गीत

उ०—४ प्रथी प्रणपार, घुजै विखधार। घुवै घर धोम, कसक्कत कोम। —सू प्र

विखनग–स पु —१ सीग या तेलिया नामक स्थावर विष।

२ वछनाग नामक विष।

विखनजर–स स्त्री —१ कुटिल निगाह, बुरी दृष्टी।

२ शिव, महादेव।

उ०—प्रहारै तिमर विखनजर छाका पिये, घूमरा सत्रा खग धजर धावै। दिवाकर अजर सगराम सम सुर दुहू, अवर छत्रधर नको नजर आवै। —कविराजा करणीदान

विखभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे)

विखभधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू भे) (अ मा)

विखभ्र—देखो 'व्रखभ' (रू भे)

उ०—भोळी नाथ भुतेस, सकर सिध दत रत सुरराणी। गज तुच विखभ्र चढेस, वामदेव तस्मै नम। —मा वचनिका

विखभ्रधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू. भे)

विखम—देखो 'विसम' (रू भे.) (अ मा)

उ०—१ जहर विखम जारग, भुजा धारग भुजगम। भाल तेज भारग जरा हारग लसै जम। —सू प्र.

उ०—२ झुकै नाग रा सीस आवाळ तासा झडै, पाटवी राग रा विखम हाका पडै। ओहि लागै गजव भुजा आभां अडै, 'जैत' मारु कटी कडा सिलहा जडै। —महादान महडू

उ०—३ लाल वदन अवर सिर लागी, विक्रमादित जवनाहू वागी। विखम धमक सावळ खग वाहे, मुनि छुडाय लीधा पल माहे।

—सू प्र.

उ०—४ ऊचा डूगर, विखम थळ, लागा फिर तारेहि। कूटघइ करहइ लधिया, धोडा म मारेहि। —ढो मा

उ०—५ काळ री विधेय करम करण पाळा ही चलाया अर विखम दुग्ग ओघट घाट रै कारण आपरा घोडा सिपाह पाळा ही भलाया। —व. भा

उ०—६ वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळ, उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम, विखम हिम द्रुम विज्जळ।

—रा. रू.

उ०—७ भवग मिळै मलीयागरी, लहरि विखम की मेट। साध सदा मिळ करत है, राम नाम सुख भेट। —अनुभववाणी

उ०—८ वाको कहै टळै दिन विखमा, धणियाणी नै धाया। लोवडियाळ ताप नह लागै, ओळै थारै आया। —बा दा

विखमगत, विखमगति—देखो 'विसमगति' (रू भे)

उ०—हियै धारिया खान जुवान छिवतो निहग अवर नर विसरै तणा अचभा। विखमगत देख 'जसराज' खग वाहतौ, रही रथ साह गज-गाह रभा। —गु रू बं.

विखमजुर, विखमज्वर—देखो विसमज्वर' (रू भे)

उ०—हरि जिणहू दाणव हण्यां, जिकण विखमजुर जाइ। विरह मिटावण वल्लहा, अव दो उहीज आइ। —र हमीर

विखमता – देखो 'विसमता' (रू भे)

विखमनयण, विखमनेत्र, विखमनैण—देखो 'विसमनयण' (रू भे)

विखमबाण—देखो 'विसमवाण' (रू भे)

विखमवाण—देखो 'विसमवाण' (रू भे.)

विखमरी—देखो 'विसमरी' (रू भे)

विखमवाण—देखो 'विसमवाण' (रू भे)

विखमाजुध' विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध—देखो 'विसमायुद्ध' (रू. भे.) (अ मा., ह. ना. मा)

विखमारिख—स. पु [स विषम+ऋक्ष] छोटे नक्षत्र ।

उ०—तिण वार वीरारस सगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विहगम । कळह का आगम सो विखमारिख, सार का काटा सचा पारिख ।
—रा. रू

विखमावरण—स पु [स. विषम+वर्ण] विषमवर्ण, दग्धाक्षर ।

उ०—किता हुआ दिग्गज कवी, समुझणहार असेस । घुर रूपक ज्याही धरे, विखमावरण विसेस ।
—र. रू.

विखमी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—१ छायो गयण रभ रथ छाजै, विखमी पाख पाखणी वाजै । बावन वीर नचण बहवहिया, डैरू जटी चड डहडहिया । —सू. प्र

उ०—२ विखमी मैं सादूळ लिखमीचद व्यास, मुरार का बाळकिसन साहस निवास । जहा जहा आप वणी बूझवै सरीखी, कमधा के साथ बात व्यास पास सीखी ।
—रा. रू

उ०—३ वचन सुणी राजा डरपियो, करमा री हो घणी विखमी बात । राय राणी दोनू कहै घर मांहै हो घडी अफली जात ।
—जयवाणी

उ०—४ विजउ विखमी चोरी पइठउ, मूक्यउ कुडल नाग जी । बज्रजघन नइ भेद जणाव्यउ, साचउ साहमी राग जी । —स कु

उ०—५ साची घणी विपत में सामी, तैड्या आवै तीजी ताळ । विखमी वाट तणी वोळऊ, साई तूं काळा तणी सुगाळ ।
—ओपो आढो

विखमीवार, विखमीवार—स. पु —१ दुर्दिन, बुरे दिन, दुख के दिन, कष्टमय समय ।

२ अन्तकाल, मृत्यु समय ।

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, विछटयो विखमीवार । कीधी नारायण कही, पुत्तर हेत पुकार ।
—ह र

रू. भे —विखम्मीवार, विखम्मीवार ।

विखमेखु—स पु [स विषम+ईषु] कामदेव ।

विखम्मी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—१ वगा खगां साह दळ, भाडेचा पण मड । वार विखम्मी झेलणा, आदू नेम प्रचड ।
—रा रू

विखम्मीवार, विखम्मीवार—देखो 'विखमीवार' (रू भे)

उ०—भड पडिया 'सादूळ' रा, वीस विखम्मीवार । चैत इग्यारस मानणी, असुरा सुणी पुकार ।
—रा. रू

विखयतप्रत—स पु [स विषयान्न कृत] शिव, महादेव । (अ मा)

विखय—१ देखो 'विक्षय' (रू भे)

२ देखो 'विसय' (रू. भे)   (अ मां, ह. ना मा.)

उ०—विखय विसहर डसिया, गारूडी सोगोव्यद । अति अग भाजई लहर वाजई, जीवीई जगदानद ।
—रुकमणी मगळ

विखयारस—स पु [स. विषयरस] विषयभोग, विलासिता ।

विखरणो, विखरबो—देखो 'विखरणो, विसरबो' (रू. भे)

उ०—१ हरसा म्हारा भाई रे, कुण बूझै मा विन मन री वात । ओदर रा रै साथी, कुण रे सवारै विखरथा केसडा ।
—जीणमाता री गीत

उ०—२ आगै नीली झाझ लीआ वधाईदार दोडिआ छै । नगर माहै ओछव वधावीजै छै । मगळ गावीजै छै । गळिआ गळिआ फूल विखरीजै छै ।
—रा सा. स

उ०—६ ना ना, ओ किसनू हरगिज न्ही व्है सकै । बाळ विखरयोडा हाथा-पगा पर मैल रा थारडा जम्योडा अर सरीर पर फगत एक मैलीसोक कुडतियो ।
—अमरचूनडी

विखरणहार, हारो (हारी), विखरणियो—वि० ।

विखरिओडो, विखरियोडो, विखरयोडो—भू० का० कृ० ।

विखरीजणो, विखरीजबो—भाव वा० ।

विखरतन—स. पु [स. विकर्त्तन] सूरज, सूर्य ।   (ना मा)

विखराडणो, विखराडबो—देखो 'विखराणो, विखरावो' (रू. भे.)

विखराडणहार, हारो (हारी), विखराडणियो—वि० ।

विखराडिओडो, विखराडियोडो, विखराडयोडो—भू० का० कृ० ।

विखराडीजणो, विखराडीजबो—कर्म वा० ।

विखराडियोडो—देखो 'विखरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विखराडियोडी)

विखराणो, विखरावो—देखो 'विखराणो, विखरावो' (रू भे)

विखराणहार, हारो (हारी), विखराणियो—वि० ।

विखरायोडो—भू० का० कृ० ।

विखराईजणो, विखराईजबो—कर्म वा० ।

विखरायोडो—देखो 'विखरायोडो' (रू भे)

(स्त्री विखरायोडी)

विखरावणो, विखरावबो—देखो 'विखराणो, विखराबो' (रू. भे)

विखरावणहार, हारो (हारी), विखरावणियो—वि० ।

विखराविओडो, विखरावियोडो, विखराव्योडो—भू० का० कृ० ।

विखरावीजणो, विखरावीजबो—कर्म वा० ।

विखरावियोडो—देखो 'विखरायोडो' (रू भे)

(स्त्री विखरावियोडी)

विखरियोडो—देखो 'विखरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विखरियोडी)

विखवान-वि. [स विषवान्] विषयुक्त, जहरीला ।

उ०—सुख सिंगार, मानि अगार । तिणइ अवळा (अतरगत) फूला कीधा वेगळा । चद तपइ पान, थया विखवान । विरहानळ प्रज्वळइ अगु, सखिजन सू विरगू । —रा सा स.

विखवाद-वि [स विषवाद] १ विष के समान, विषतुल्य ।

उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक आलोटइ आडी पडी । थ्यु विखवाद पान नइ फूलि, एक रोआवि मुहुगि मूलि । —का दे प्र.

स पु—१ दु:ख, पश्चाताप ।

उ०—१ अजी लगै छोडै नहीं मा मोरी रै, सायर अपणी मरजाद सुता हू तोरी रै । हरख विनोद हीयै घरा मा मोरी रै, परिहरि मन विखवाद सुता हू तोरी रै । —स्रीपाल रास

उ०—२ किस्या कहू गुण महाराजी, किस्या कहू, अपवाद । जेम जेम सभारू हीयै जी, तेम तेम वधै विखवाद । —वृत्त

उ०—३ लज्जाणो राजा घणु, मन धरतो विखवाद । नामता माहरी थयो, लोका विचै अपवाद । —स्रीपाल रास

२ कलह, झगडा ।

उ०—विखम वाणि विखवाद, विखयरस अगि न वावइ । वखत-वत वर विवुध, वान दिन प्रति वाधइ । —ऐ. जै. का स

३ विरोध ।

विखसुधार-स पु [स. विषसुधार] घृत, घी । (अ मा.)

विखहर-वि —विष का हरण करने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला ।

स पु—१ गरुड । (ना. मा)

२ विष का हरण करने वाली या विष का प्रभाव नष्ट करने वाली औषधी या मत्र ।

३ देखो 'विसधर' (रू भे)

उ०—' ..... फूल वणराय न लगै । विखहर चढै न विरख, जळण घ्रत होम न जगै । —चौथ वीठू

विखहा-स पु [स. विषहा] गरुड । (डि. को)

रू भे.—विखहा ।

विखांण—देखो 'विसाण' (रू भे)

विखाणण-स पु [सं विष+आनन] जिसके मुह मे विष हो, सर्प, साप ।

विखांणू -देखो 'वखाण' (रू भे)

उ०—स्रीहरि जं सागरि सूइ छि, सहीए सर नवि जाणू । नारायण आगलि नारदजी सू ए सर नथि विखांणू ? —नळाख्यान

विखातक-स पु [स विष+अन्तक] शिव, महादेव ।

विखान—देखो 'विसाण' (रू. भे.)

विखानस—देखो 'वैखानस' (रू. भे)

विखाइत—देखो 'विखायत' (रू. भे)

उ०—पछै रिणधीर रिडमल नूं कह्यो, समझायो—थे विखाइत हुवा काय फिरो, नै वाप री धरती री चींत करो नहीं, सु कुण वासतै ? तरै रिडमल कह्यो—मोनु राव चूडै सुस लीरायो थो । —नैणसी

विखाती—देखो 'विखायत' (रू भे)

विखाद—देखो 'विसाद' (रू भे)

उ०—अवतार अस 'अगजीत' ग्रह वस विखाद पलट्टियो । रिंदु एण उदय चहुवाण रै, सुत 'अभमाल' प्रगट्टियो । —रा रू.

उ०—२ सासा वरम विखाद वाद, विपरत विलूधा । —केसोदास गाडण

विखादी—देखो 'विसादी' (रू. भे.)

विखायत विखायती, विखायतो-स पु—१ किसी कारण विशेष से राज-सत्ता के विरुद्ध होकर बगावत करने वाला व्यक्ति, राजद्रोही, बागी ।

उ०—१ 'सूरो' 'केहर'सिंघ री, 'लखधीर' महेस । भाटी आइ विखायतां, चाड मुरद्धर देस । —रा रू

उ०—२ वात वळै असुरा विसतारी, घर दिस असट विलासा धारी । कितराई सुण अमिया काचा, मवळ विखायत रहिया साचा । —रा रू

२ सकटावस्था, विषम अवस्था ।

३ वह राजा, सामन्त या जागीरदार जिसका राज्य या जागीर किसी राजा या बादशाह द्वारा जब्त कर लिया गया हो ।

उ०—१ तरै या ठाकुरा राणाजी नु कह्यौ, "हाजीखान भलो मांणस छै, नै विखायत थको छै दीवाण वडो उपकार कीनो छै । सु हाजीखान नु आ वात कनाटिया री जुगत न छै । —नैणसी

उ०—२ इणै खरच घणो पूजवियो हुतो । सु पछै रावळ घडसी धरती वाळी, तरै सारा विखायता नू वधारिया । —नैणसी

उ०—३ एक कोई विखायत सूरवीर किण रै ही गढ में रहनै वानै काढ आप गढ अपणाय लियो गढ रा धणिया कयो जावो परा तरै कहै । —वी स टी

उ०—४ दुमना थया विखायती, मरता सामतसीह । थळ आयां वळ ओढणा, सोई धमळ अबीह । —रा. रू.

वि —१ सकटग्रस्त, सकट से पीडित, दु:खी ।

उ०—१ महि दाबरण मेवाड, राड चाढ अकबर रचै। विखै विखायत वाड, प्रथुळ पहाड प्रतापसी। —दुरसो आढो

उ०—२ गाडा ३०१ सीधा रा भर चलाया सु जाय गढ पोहता, सु वारहठ रतनू चद्रव माला री विखायत थकी महेवै रहचौ थो, तिण जाणियौ गढ माहरा ठाकुरा सु जाय। —नैणसी

२ लुटेरा, डाकू।

रू भे—वखायत, विखाइत, विखाई, विखाऊ, विखायत. वखाइत, वखात, वखायत, विखाइत विखातो।

विखारी—देखो 'भिखारी' (रू भे)

विखावण-वि [स विभ्वाण विश्वसनो भोजने इति पत्वम्] १ कष्ट पीडित।

२ भूखा।

स. पु—भोजन। (ह ना. मा.)

विखासइ-स. पु—दृढ विश्वास।

उ०-तउ राउ दुरयोधन ए विमासइ, हासउ हमीतु पडिउ विखासइ। 'ए नारिरूपि नर राउ कोई, कइ ईण रूपिइ इह पारथ होई। —सालिसूरि

विखिक—देखो 'विसिख' (रू भे)

विखिया—देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—१ दर स्तोक ईखद अलप, तुछ मदाक। ओछ तुछ रचक अणू, ओ सुख विखिया आख। —अ. मा

उ०—२ राम भजो विखिया तजो, घर माही घर एक। ता घर सूं लागा रहो, छाडो द्वार अनेक। —ह पु वा

उ०—३ सहजै जिणि विखिया तजी, पाचूं पसर मिटाय। सहज सोई सत्य जाणियै, सतगुर हुवै सहाय। —परमानदजी वणियाळ

विखियात—देखो 'विख्यात' (रू भे)

उ०—१ इतै सुणा सरब समराथ भड ऊठिया, वसु विखियात कीरत वदीती। घात भड सोरसा बात सह घेरिया, वात करता इतै रात बीती। —तिलोकदान बारहठ

उ०—२ ओपियो इखाग वम आससेण अग जात, वामा विखियात मात जात आवै ग्र द। एकीह अवीह सीह लोपै कुण लीह, एहो जाप धरै धरमसीह गौडीचो जिणद। —ध व ग्र.

विखीया—देखो 'विसय' रू भे)

उ०—१ जा घट पेम प्रगासीया, विखीया विकळप नाहि। हरीया छाना नां रहे, आया अतर माहि। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया भाठी पेम की, इदर दई जगाय। पेम पीयाला पीव करि, विखीया प्यास मिटाय। —अनुभववाणी

विखुफसेन—देखो 'विखकसेन' (रू भे)

विखुटणो, विखुटबो-क्रि. अ—बिछुडना।

विखुटणहार, हारो (हारी), विखुटणियो—वि०।

विखुटिओड़ो, विखुटियोड़ो, विखुटयोड़ो—भू० का० कृ०।

विखुटीजणो विखुटीजबो—भाव वा०।

विखुटियोड़ो-भू का कृ—बिछुडा हुआ।

(स्त्री. विखुटियोडी)

विखेप—देखो 'विक्षेप' (रू. भे)

विखेर-स स्त्री.—बिखेरने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'बिखेर' (रू भे)

विखेरणो, विखेरबो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबो' (रू. भे.)

उ०—१ दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळो न वहनोई सत्रुआ नै पूगा तठै बीद वणीयेडै हीज झगडा रै भूखै तरवारा आगै सरीर पुरजा कर विखेरियो —वी स टी

उ०—२ राजी झीटा विखेरचा ताचै माथै पकडयोडी बैठी है। दाता रै कोडी अर अलैवण चढ रैयी है। ठोडी लाळया अर थूक सू भीज गयी है। —दसदोख

उ०—३ हुकम लेर भड हालिया, साह करा समसेर। जेभ न कीधी जादवा, वाजत्र दिया विखेर। —वी स. टी.

उ०—४ घण चम्मर सीस गयद घटा, जड-धारक मेर विखेर जटा। गहडति गुडता मत्त-गयं, गरजतिक जाणय गोरमय। —गु. रू ब

विखेरणहार, हारो (हारी), विखेरणियो—वि०।

विखेरिओड़ो, विखेरियोडो, विखेरयोड़ो—भू० का० कृ०।

विखेरीजणो, विखेरीजबो—कर्म वा०।

विखेराणो, विखेराबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे)

विखेराणहार, हारो (हारो), विखेराणियो—वि०।

विखेरायोडो—कर्म वा०।

विखेराईजणो, विखेराईजबो—कर्म वा०।

विखेरायोडो—देखो बिखरायोडो' (रू भे)

(स्त्री विखेरायोडी)

विखेरावणो, विखेरावबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे)

विखेरावणहार, हारो (हारी), विखेरावणियो—वि०।

विखेराविओड़ो, विखेरावियोडो, विखेराव्योडो—भू० का० कृ०।

विखेरावीजणो, विखेरावीजबो—कर्म वा०।

विखेरावियोडो—देखो 'बिखरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विखेरावियोडी)

विखेरियोडो—देखो 'बिखेरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विखेरियोडी)

विखेरौ–स पु [स. विकीर्ण] १ बिखरे होने की अवस्था या स्थिति। २ बिखरी हुई सामग्री, अव्यवस्थित दशा मे पड़ा हुआ सामान या कचरा।

वि —फैला हुआ, व्याप्त।

रू भे —विखेरौ, विखोरौ।

विखै–क्रि. वि —१ समय में।

उ० – एक दिन रो समाजोग छै। रात रै विखै पोढिया छै। तरै राणी चावडी सुहणो लाधो—'जु नाहर १ आया छै। —नैणसी

२ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—१ श्रीपुर नाम नगर, तिणरै विखै राजा सालवाहन राज करै छै। यू ईम घणा दिन विता। तरै सालिवाहन देवगत हुवौ। —रीसालू री वारता

उ०—२ आय न्रपति पूछी विघ एही, सावघान हुय धरम सनेही। विखै अग्यान धरम वीसारौ, सूरजकुळ चौ धरम सभारौ। —सू प्र

उ०—३ पिलग पथरणा पोढणौ, सदा सहेली सग। हरीया होसी भगति विन, विखै विलासा भग। —अनुभववाणी

उ०—४ गुर सम्रथ गुर सुख की सीरा, गुर हुँ दवन विखै तन पीरा गुर अघहरण करन आनदा, गुर तें मिटै भरम भय फदा। —अनुभववाणी

उ०—५ करत केल वन वन विखै, मद उनमत्त गयद। ऊभा करै अकासिया, देख देख दिस चद। —गजउद्धार

विखैआगळ–वि. [स विप्+अर्गला] विपत्ति में साथ देने वाला, दुख का साथी।

विखोड–स स्त्री —अप्रशसा, निन्दा, हसी।

उ०—१ चारण पाछो वीसळदेजी पासै गयो। जाय नै कह्यो—'वाप! मूळू आवै नही। तद मूळू रा राजा विखोड किया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा विसोढी पाछो आयो। आयनै राजा नू कह्यो-वाप! मूळू कोट में किसी तरह आवै? म्हैं तो घणो ही कह्यो, पण आवै नही। ताहरा अठै गोरै वादळ मूळू रा विखोड किया-'जु जाहरै, भला रजपूत! आवणो हुतो। —नैणसी

विखोडणौ, विखोडबौ–क्रि स —अप्रशसा करना, निन्दा करना, हसी करना।

उ०—१ माळव देस विखोडिया, मारू किया वखाण। मारू सोहागिण थई, सुदरि सगुण सुजाण। —ढो मा

उ०—२ घघ घरै करि द्वेस, वात मे हेत वितोडै। आप कियौ तै अवळ, वलै पर किया विखोडै। —घ व ग्र

विखोडणहार, हारौ (हारी), विखोडणियौ—वि०।

विखोडिओडौ, विखोडियोडौ, विखोडचोडौ—भू० का० कृ०।

विखोडीजणौ, विखोडीजबौ—कर्म वा०।

विखोडियोडौ–भू का. कृ —अप्रशसा किया हुआ, निन्दा किया हुआ, हसी किया हुआ।

(स्त्री विखोडियोडी)

विखोरणौ, विखोरबौ—देखो 'विखेरणौ, विखेरबौ' (रू भे)

विखोरणहार, हारौ (हारी), विखोरणियौ—वि०।

विखोरिओडौ, विखोरियोडौ, विखोरचोडौ—भू० का० कृ०।

विखोरीजणौ, विखोरीजबौ—कर्म वा०।

विखोरियोडौ—देखो 'विखेरियोडौ (रू. भे)

(विखोरियोडी)

विखोरौ—देखो 'विखेरौ' (रू भे)

विखौ–स पु [स विप्=घेरना, मुठभेड होना] १ किसी राजा, सामन्त या जागीरदार जिसमे उसका राज्य या जागीर किसी अन्य राजा या बादशाह के द्वारा जब्त कर लिये जाने पर पडने वाला कष्ट, सकट या दुख।

उ०—१ राव चद्रसेन विखै माहे सीवाणा रै भाखरै रहतौ तद मीवेला देवत कायलांणै रहता जोधपुर तुरक रहता, इतरौ घणो विगाड करता। —राव चद्रसेण री वात

उ०—२ रावळ घडसी राणा रतनसी रौ बेटो मूळराज, रतनसी साको कर मुंवा तद कमालदी नू आपरो वीज उबारणनूं घडसी, ऊनड, कानड आंपरा छोरू नै एक देवडी भाणेज कमालदी नू सूंपिया था। कमालदी नै मूळराज इण विखा माहे भाएला हुवा था, पाघडी पलटी हुती। सु कमालदी री वैर इणा नूं छाना राखै। —नैणसी

उ०—३ छत्रपती छानो विखै, अनपत्ती हित जोड। दियै धरत्ती आप री, तै खत्री कुल खोड। —रा रू

२ उक्त कष्टावस्था मे, राज्य मे सकटग्रस्त राजाओं, सामन्तो या जागीरदारो द्वारा की जाने वाली लूटखसोट या राजद्रोह।

उ०—१ तद वादसाह ओरगजेव जोधपुर तुरकाणो कियो जद राठौड दुरगदास आस करणोत विखो कियो —सुंदरदास विकपुरी भाटी री वारता

उ०—२ सो तुरक सूवायत रो अमल नही होवणै दियो। वादसाही सहर मारिया लूटिया सो वडो विखो हुवो फौजा लारै लागी फिरै पण हाथ न आयो। —सुदरदास विकपुरी भाटी री वारता

उ०—३ ऐ तो पाच माणस छै मो सगळा ही महाराज रा चाकर छै आ हुवै तो विखो करा। —राठौड राजसिंह कूंपावत री वात

३ कष्ट, दु ख, विपत्ति, सकट ।

उ०—१ विखम विखो जिण वार, घोम घिखि हुवो मुरद्धर । दोडण लागा दुभ्भळ, वडा तरवार बहादर । —सू प्र

उ०—२ जुग धरम सू डिगणा रै कारण म्हैं खुद भ्रण् तो विखो भुगतियोडो हू, पण भ्रबै रोया काई साधो लागै । —फुलवाडी

उ०—३ जको विखो नानो, भटियाणीजी भ्रर थू भुगतियो वो म्हानै नी भुगतणो पडैला, विस्वास राख । भ्रन्याय रौ वदळो हाथो-हाथ लिरीजैला । —फुलवाडी

उ०–४ दळ तै वार किता दहकघ, वाघ्यो दधि देवा छोडण वघ । विखो तै व्रज पडेती वार, घरै नख बार किता गिर-वार । —ह र

४ भ्रशान्ति, क्षोभ ।

उ०—धरती माहे विखो थो । सगळा ठाकुरा रा गुढा भाद्राजण था । उठै राठोड तेजसी डूगरसियोत री ही गुढो थो । —राव मालदे री वात

५ सकट का समय, कष्ट का समय ।

उ०—१ या मघकर हर वजिया, भ्राद विखै भ्रणरेह । ज्या उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलट्टै देह । —रा. रू

उ०—२ इण नितनेम री भ्रो नतीजो निकह्यो के थोडा ई दिना में वादळ खुदोखुद नै किसन-भगवान री भ्रवतार ई मानण लागग्यो भ्रर काली मासी लारली विखो भूलनै साप्रत जसोदा मैया वणगी । —फुलवाडी

उ०—३ तासू भगवान कहै भार तुम कर्ध, पै भ्रालम सू जग काज तेग हम वघे । विखै के तुम नायक भ्रोर सब कै मुदायत, सो जग की ढील मैं वरस जैसी सायत । —रा रू

६ उपद्रव ।

उ०—भाटी पिण भ्राया दळ भेळा, माण घणै चहुवाण समेळा । सरसो जोर हुवो पतसाहे, मद विखो पडियो बर माहे । —रा. रू

७ निर्धनता ।

८ विछोह, वियोग ।

उ०—१ दुनिया मे उण रै नाव री कीरत भ्राप रै काना सुणू । वो दिन देखण वास्तै ई म्हैं भ्रो विखो कवूल करियो हू । सेठा रा बोल फळै । म्हारा वेटा नै लाठी मिनख वणियोडो देखू तो भ्राज रै विखा री दाभ ठरैला । —फुलवाडी ।

उ०—२ हथाळिया मसळी तो ई निवास नी भ्रायो । भ्रैडी वेजा रात तो वै कदेई नी विताई । रगमेल मे मिरक पथरणा रै माय नवी लुगाई रा कघळा कवळा बूकिया माथै माथो देय कैडा भ्राराम सू सूवता जै भ्रा पोहरा वाळी तूमत नीं व्हैती तो । दीवाणजी नै भ्राज ठा'पडी कै लुगाई रा निवास जैडो वासदो री ई नी व्है । लुगाई रा भ्रभाव मे वानै लुगाई री भ्रसली पिछाण व्ही । लाख मोहरा साटै ई भ्रैडो विखो कुण भ्रगेजै । —फुलवाडी

रू भे —वखो, विखही, व्रिखो, वखो, विखड ।

विख्ख —देखो 'विस' (रू. भे)

उ०—'''''''''''फूल वणराय न लगै । विसहर चढै न विख्ख, जळण घ्रत होम न जगै । —चौथ वीठू

विख्यात—स. पु [स] १ एक राक्षस जो तेरह सैहिकेयो मे से एक माना जाता है ।

२ कवि । (भ्र मा)

वि. [स.] (स्त्री. विख्याता) प्रसिद्ध, मशहूर ।

उ०—१ कमधजा छात जिग वात क्रत, लग विख्यात सकळप लियो । रिखि वयण भ्राद वासिस्ट भ्रग, कहिया तिम उद्यम कियो । —रा रू

उ०—२ थळ भाति गात निरतत थाळि, भ्रम जात भ्रतन तन रूप भाळि । जिण सक्ति परखि लजि तडिति जात, व्रत गवन पवन मन ज्यों विख्यात । —रा रू.

उ०—३ वानरपति विख्यात वर, वेघ्यु जाणी वालि । सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइ तिणि तालि । —मा का प्र.

उ०—४ गलसेन महीपति वस विभूमण दिनमणी । जुसु सुयसा माता, जगत विख्याता बहु गुणी । —वि कु.

रू. भे —विख्यात, वखात, विखियात ।

विख्याति–स स्त्री. [स] १ प्रसिद्धि, शोहरत ।

२ कीर्ति, सुयश ।

विगछावात–स पु —एक प्रकार का वात रोग विशेप ।

उ०—भ्रथ रोगा, कास स्वास ज्वर भगदर गुलमवात गल्लवात रक्तवात भस्मवात उस्णवात भ्रग्निवात लोहवात लूतिवात हरसावात भ्रामवात सोफवात विगछावात कफवात साकिनीवात . । —व स.

विगघ–वि [स वि+गन्ध] १ जिसमे किसी प्रकार की कोई गघ न हो

२ जिसमे विशेप प्रकार की सुगन्ध हो, सुगन्धदार ।

विगडणो, विगडवो—देखो 'बिगडणो, बिगडवो' (रू. भे)

उ०—१ रूपक कुकवी रसणसू, विगडै यू रसवत । ज्यू विसफोटक रोग वस, वप सोभा विगडत । —वा दा

उ०—२ राव नू सराप दियो । कह्यो—"थाहरो गढ जाजो । थारी मत भ्रस्ट हुई, गढ तुरका नू देईस । तू तुरका री (वहू) नू सेवीस, भ्रम्वत पढीस, घूड खातो फिरीस ।" भ्रो स्राप हुवो । राव री मूंहडो विगडियो । —नैणसी

उ०—३ खानो भोग करम छै रोग ना रै, विलसंता विगड़त। सुख थोडो नै दुख घणो ग्रछै रे, रीझै कुण मतिवंत। —जयवाणी

उ०—४ घणी खडा जव खेत मैं, विगडन कू कुछि नाहि। जन हरीया हरि सा धणी, वयू डरपै जुग माहि। —अनुभववाणी

विगडणहार, हारो (हारी), विगडणियो—वि०।

विगडिग्रोडो, विगडियोडो, विगडचोडो—भू० का० कृ०।

विगडीजणो, विगडीजवो—भाव वा०।

विगडाणो, विगडावो–क्रि स —विगडने के लिए प्रेरित करना।

विगडाणहार, हारो (हारी), विगडाणियो—वि०।

विगडायोडो—भू० का० कृ०।

विगडाईजणो, विगडाईजवो—कर्म वा०।

विगडायोड़ो–भू का कृ —विगडने के लिए प्रेरित किया हुग्रा।

(स्त्री विगड़ायोडी)

विगडायल—देखो 'विगडायल' (रू भे)

विगड़ियोड़ो—देखो 'विगडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विगडियोडी)

विगड़ी–स. स्त्री —दुरावस्था, बुरी ग्रवस्था।

उ०—सुघरी मे सौ वार, मदत करै मन मोडिया। विगडी में इक वार, कोइ न रै'वै, किसनिया। —अग्यात

विगड़ैल—देखो 'विगडायल' (रू. भे)

विगट—देखो 'विकट' (रू भे)

उ०—१ वाटि विगट वैराट की, पहुचैगा कोई सूर। हरीया कायर थकि रहया, दरगह रहीया दूर। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया घट में ग्रघट है वाकी ठौड विगट। विन गुर गम खूल्है नही, भरम करम का पट। —अनुभववाणी

विगड्ढ–वि —दृढ।

उ०—गिराव गड्ढ गड्ढ को विगड्ढ छड्डुतीं वहे, वकारि वैरि ब्र द को डकार डड्डुती वहे। वहै निसक वक की विवक कड्ढुनी वहे, रहेसु सक रक की विसक वढ्ढुती वहे। —ऊ का.

विगत–वि —१ अन्तिम या वीते हुवे से पहले का।

२ जो कही इधर उधर चला गया हो।

३ निष्प्रभ, कान्तिहीन।

४ रहित, विहीन।

स. स्त्री.—१ विवरण, व्योरा, वृत्तान्त, हाल।

उ०—१ ग्राया दूत खुम्याळी ग्राई, साह मरण ची विगत सुणाई। ताता घोडा हुई तयारी, ग्रघपति सुणत कीध ग्रसवारी। —रा रू

उ०—२ कहियो न्रप प्रज भय किणसूं, ज्वाळामुखी न पूजै जिणसू। भाणउदीप विगत सुण भारी, विपर्वत सकति पूजि विसतारी। —सू प्र.

उ०—३ चिंतातुरा दुचित, विगत सुख दाखी वाता। पुण इट करग जोडै पमण, कहर कळह किमणा किया। —मा. वचनिका

उ०—४ तं देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि। किह पीहर, किह सासरउ, विगतइ कहइ विचारि। —ढो. मा

२ हिसाव।

३ इतिहास।

४ परिचय, जानकारी।

उ०—सव सरीखी देखी रूपि, विगत न लही तेहनी भूपि। तं देखी चतुरपणउ ए इम्य, राजा हियडा भीतरि हस्य। —हीराणद सूरि

५ सूची, नामावली।

उ०—सवत १६१३ हाजीखान सू राजाजी रै ग्रदावदी हुई जद राव मालदेजी ग्रापरा उमराव हाजीखा री मदद मेलिया ज्यारी विगत–राठौड देवीदास जैतावत, रावळ मेहराज हाफावत ..। —वा दा ख्यात

६ वर्णनसूची, तफसील।

७ घटना।

८ सख्या, गिनती।

[स वि =विशेष+गति=मोक्ष] ९ विशेष मुक्ति या मोक्ष।

[स वि=रहित+गति=मोक्ष] १० वह प्राणी जिसकी मरणोपरान्त गति या मुक्ति नहीं हुई हो।

रू भे —विगत, विगति, विगती, विगत्त, विगत्ति, विगत्ती, विगय विगिति।

विगतरणो, विगतरवो–क्रि स —निंदा करना, अपकीर्ति करना।

विगतरणहार, हारो (हारी), विगतरणियो—वि०।

विगतरिग्रोडो, विगतरियोडो, विगतरचोडो—भू० का० कृ०।

विगतरीजणो, विगतरीजवो—कर्म वा०।

विगतरियोड़ो–भू का कृ —निंदा किया हुग्रा, ग्रपकीर्ति किया हुग्रा।

(स्त्री विगतरियोड़ी)

विगतवार–क्रि वि.—व्योरेवार।

उ०—या मर्म ग्राजानवाह जेतै मरदार, कवि जेतै जानै सो वखानै विगतवार। पहलै सोनग साह विवै के सहायक, जोडै दुरगसाह हम वम का जो नायक। —रा रू

वि —विस्तार के साथ, विस्तारपूर्वक, विस्तारयुक्त।

उ०—१ म्हैं पूछ्यो–वावा, वो जाट कीकर कुत्ता री कडिया भागी। म्हनै सावळ विगतवार वात माडनै वतावो। थारै मूंडै वात ग्रोपै घणी। —फुलवाडी

उ०—२ दीवाणजी तुरत जवाब नी दे सक्या तो राजाजी वानै पूरी वात विगतवार बताई। तद दीवाणजी कह्यौ—अंदाता, श्रै सगळी जूनी वाता अगै ई मिटावणा सू तौ राज मे रूळियौ मच जावैला। —फुलवाडी

३ क्रमश।

उ०—१ इण वास्तै म्हारा मूडा सूं थनै सगळी वाता विगतवार बताई। दूजा तौ सगळा म्हारो ई कसूर बतावै। श्रवै थू ई बता म्हैं काई वेजा काम करियौ। —फुलवाडी

उ०—२ इटरव्यू रा विगतवार समाचार तौ पछै सूरज रै मूडा सू इज सुण्या। बणानै इटरव्यू वास्तै जिकण कमरा में बुलायौ वौ एक छोटौ-सोक कमरौ हौ। —अमर चूनडी

रू भे—वगतवार, विगतवार, वगतवार।

विगताणो, विगतावौ—क्रि. स—१ सूचित करना, सूचना देना।

२ समझाना, सतर्क करना।

३ जानकारी देना, समझाना।

उ०—रगण जगण गण रगण रचाइ, वरै जगण गुर लुघ विगताइ आखर चउदह एण उपाइ, सुणिजौ रूप कह्या विधिसाइ। —ल. पिं

विगताणहार, हारौ (हारी), विगताणियौ—वि०।
विगतायोडौ—भू० का० कृ०।
विगताईजणौ, विगताईजवौ—कर्म वा०।
विगताणौ, विगतावौ, विगतावणौ, विगतावबो, विगतावणौ, विगतावबौ। —रू० भे०

विगतायोडौ—भू का कृ.—१ सूचित किया हुआ, सूचना दिया हुआ. २ समझाया हुआ, सतर्क किया हुआ ३ जानकारी दिया हुआ।

(स्त्री विगतायोडी)

विगताळ, विगताळू, विगताळौ, विगतालौ—वि (स्त्री. विगताळी)
१ चरित्र वाला, लीलाधारी।

उ०—१ किसन धवै कूकडा, बाट बाधै विगताळौ। दही तणी लै दांण, छाछि ढोळै छोगाळौ। —पी ग्र

उ०—२ ताढि नको नको जदि ताधड, ग्राभ न उडगण अरस न अनड। क्रम्म न ध्रम्म नको जदि काळी, ब्रह्मड रूप नमौ विगताळौ। —मा वचनिका

२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—तौ वारू राजा रै श्रहि डसीया, पछै माहरा साहिवा, अनगसेना इण नांम रै, वेस्या विगताळी। —वि कु

३ अपवित्र, अदोच।

उ०—अनि नर नारि पसू पखि वाळी, वप छाया न पडै विगताळी। करि सिनान अस्टम दिन काढै, चचळ सोळ मास मझि चाढै। —सू. प्र.

४ सुरुचिपूर्ण।

उ०—साहिवा काइ मउज करौ नई, साहिबा काइ मउज करउ। मउज करउ काइ अग सुहाता, सुणि सुणि नै विगताली बाता। —वि कु

५ शौर्यपूर्ण, वीरतायुक्त।

उ०—तौ 'केहर' कहिजै सताव, वाहक विगताळा। कूदि पडा गज कटहडा चढि गौख विचाळा। —सू प्र

६ प्रिय, प्यारा।

उ०—'बाकीदास' कळह विगताळौ, बाधै करा रिणम्मल वाळौ। सामावत खग चद सवायौ, दूजा श्रणी दिसौ दरसायौ। —रा रू

७ वीर, बहादुर।

उ०—हू पिरणासू हिंदवा, तुरका हर टाळं। सै कुण हिंदू हुम सुणा, जिसकू पिरणाळं। पिरणा सू सगपण करै, वीरम विगताळं। जद पाचौ कहियौ 'जसू' आगम अकलाळं। —वी मा

रू भे—विगताळ, विगताळू।

विगतावणौ, विगतावबौ—देखो 'विगताणौ, विगतावौ' (रू भे)
विगतावणहार, हारौ (हारी), विगतावणियौ—वि०।
विगताविश्रोडौ, विगतावियोडौ, विगताव्योडौ—भू० का० कृ०।
विगतावीजणौ, विगतावीजवौ—कर्म वा०।

विगतावळी—स. स्त्री.—सूचि।

विगतावियोडौ—देखो 'विगतायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विगतावियोडी)

विगति, विगती—स स्त्री—१ अवस्था व हालत।

उ०—कहा बसै मन उनमनी कहा, कहा क्रम वासौ करै।, ब्रह्मड पिंडि एका विगति, उपख्यान बेद किम उचरै? —सुरजनदास पूनियौ

२ फर्क अन्तर, भेद।

उ०—२ जो सोळह कला सू पूरण पूरणिमा को चद्रमा थौ। सु पणि आपणी उजळता करि आकास सो मिळि गयौ है। एती विगति नही लाभै छै। जु इह आकास छै कि चद्रमा छै। —वेलि टी

३ देखो 'विगत' (रू भे)

उ०—१ पच विगति सुत पच प्राण तुझ, पच तत्व अम्है दाखु। पंचमी ले नह जै क्रम करता, सिधि सव दई ईम माखु। —रुकमणी मगळ

उ०—४ आवी खवर अचित प्रगट चिंता भूपाळां। दळ असेस दुरवेस, सुणै विगतो अडसाळा। —रा रू

उ०—३ वेगि लिखीजै विगति, रवद जिम सर्फ दुरगा। एक उतन ऊपना, जुडा द्वापुर जिम जगा। —सू प्र

उ०—४ अति प्रकाम गति भेद अति, विगति एह विसतार। आदि आदि कहिया इता, सति प्रबध ततसार। —सू प्र

उ०—५ प्रगट गाम पुर घखै अप्रवळ, मार-लियौ वहता पुर मडळ। ओपत माथा मिळै अलेखै, लूट तणी विगति कुण लेखै। —रा रू

उ०—६ पखा पखी सबको मिलै, जहर भरया मुख नाग। जन हरिदास बोल्या विगति कहा कोयल कहा काग। —ह पु वा

उ०—७ मुहर विगति कीजै दस मात्र, पछै वळै दस दस कविपात्र। सुण चौपै फेरै कल मात्त, वदिव चरण पुलणा विख्यात। —पिं प्र

उ०—८ भणि तेरह सौ छामठि भेद, विगति मात्र मोळह प्रू वेद। आखर लुघू गुरु इगिग्रार, वर्दा सुभकर छद विचार। —ल पिं

उ०—९ विगति लहै विरहा तणी, विरही मागम तेह। 'लालचद' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रै। —प च चौ

उ०—१० अध्यातम मरम विसतार बावन अक्खर ससाक्रित सकत्ति विगति सूझै। पाडगति गीत सगीत समभण पौंहचि, वहतरी कळा खट भाव बूझै। —ल पिं

विगत्त, विगत्ति, विगत्ती—वि [स वि=विशेष+गति, चाल] १ तेज गति वाली, तीव्रगामी।

उ०—मतसागर उनमती, वीणा सुर मधुरै बावत्ती। वाहण हम विगत्ती, साय सुप्रसन हुग्री सरमत्ती। —गज उद्धार

२ देखो 'विगत' (रू भे.)

उ०—१ उल्लसै वेळ परसे अरस, ग्यान न लोक विगत्त री। जग करण लोप अतक जिसो, इसी कोप असपत्त री। —रा रू

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति, वाढेल कहाया इण विगत्ति। इम लीध मडळओखौ उदार, धर समद वीटि गढ सखोधार। —सू प्र

उ०—३ तइ हींदू किया तुरक, विप्र तो मूल विटाल्या। वणिकै गई विगत्ति, राक करि लगरि राल्या। —म कु

उ०—४ एक हस्ति आरुही, व्रखभ अस उस्ट्र विगत्ती। सरभ चील सादूळ, रीछ वदर तर रत्ती। —रा रू

विगन—'विघ्न' (रू भे.)

विगनान, विगन्यांन—देखो 'विग्यान' (रू भे)

उ०—विगन्यान ग्यान तु हिज विपति तु अछेद अभेद तन। अविगत नाथ केवळ अलख, पाप निहीं तूं कोइ पन। —पी ग्र

विगपति—देखो 'विग्पति' (रू भे.)

उ०—कारण कवण वयण लघु काया, महमा प्रवळ ईस्वरी माया। पुणै भडा विगपति धरि पौरस, जुध होसी तौ विजै हुसी जस। —सू प्र

विगय—देखो 'विगत' (रू भे.)

उ०—खेचर चरम रोमपखी चमचेड कपोत, मनुज लोक थी वाहिर समुग विगय पख होत। सरवै जळ थळ खचर समुच्छिम गम्भय दोय, कम्म अकम्म भूमि अतर दीव मणुजोय। —वृ. स्त

विगर—देखो 'वगैर' (रू. भे)

उ०—१ वाहा वाधै राठवड, विगर सनाहा अग। वागा केसर भारिया, हुयगा स्रोण सुरग। —रा रू.

उ०—२ कवण अखैवड विग्रर, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण विना सुखदेव, देव माया नह लोभै। —रा. रू

उ०—३ हिव कै गाढ घणी करै। जीमै मत ही। अर तूं जोर घातै, म्हारी वहू हु ले नै जाइम्यू। अर जै न मेल्है तौ लाकडी वहाडै। पिण वहू विगर लीया घरै मता आए। —कावळी जोइयो नै तीडी खरळ री वात

विगल—देखो 'विगुल' (रू भे)

विगलिदीय विग्रलिद्रिय—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू भे.)

विगलित—वि [सं.] १ जो चूकर या टपक कर निकल या गिर गया हो।

२ जो पिघल या घुल गया हो।

३ शिथिल।

४ विगडा हुआ।

५ म्लान।

उ०—पति पवन प्रारथित श्री तत्र निपतित, सुरत अत केहवी स्त्री। गजेंद्र क्रीडता सु विगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी। —वेलि

६ विसर्जित।

७ अस्तव्यस्त, विखरा हुआ।

विगवत—वि —लम्बी यात्रा करने में समर्थ।

उ०— घरणि ते जे सीलवति, छइल्ल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवति, वस्त्र ते जे पखालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवत, साधु ते जे क्षातिवत, करह [ते] जे विग्रवंत, तुरग ते जे वेगवत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मन्त्रि ते जे वुद्धिमंत, कर ते जे वीरयवंत, राय ते जे प्रसस्य जातिवत। —व स

विगसणौ, विगसवौ—देखो 'विकसणौ, विकसवौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुडाळ मिडिया आवि अडिया, सुहड अंगो अगि। नर सीस विहसई वदन, विगसई, सेल वाहई सगि। —रुकमणी मगळ

उ०—२ हस बोलै खेलै ससि हसि, विगसै कुमळ घणा चद्रवसी।

जोत वाग भळकै मिळ नदि जळ, चमकै मंगर उछळै चचळ।
—सू प्र

उ०—३ आवत मुख विगसै नही, जावत नहि कमळाइ। 'सम्मन' ग्रैसै नीचकै, नीच हुवै सो जाइ। —सम्मन

उ०—४ भाणजा नै देख्या, म्हा री कवळ विगसै, भतीजा ने देख्या म्हा री मन हसै, वीरै रै आगण आवो मोरियो। —लो गी.

उ०—५ पोह विगसी पगडी हुवी, कूकडै दीन्ही वाग। उठ बदा कर बदगी, क्यों साहिब पास्यो माग। —ऊदो नैण

उ०—६ घोक पूज मे दिन गया, आन देव कै नाय। जो' री देख' र विगसियो, जाय हमारै गाय। —अनुभववाणी

उ०—७ चगा रूप देख मत विगसो, मल मतर की देहा। जन-हरिराम भसम हुय जासी, नाव विना सब नेहा। —अनुभववाणी

विगसणहार, हारो (हारी), विगसणियो—वि०।
विगसिओडो, विगसियोडो, विगस्योडो—भू० का० कृ०।
विगसीजणो, विगसीजबो—भाव वा०।

विगसाडणो विगसाडबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू भे)

विगसाडणहार, हारो (हारी), विगसाडणियो—वि०।
विगसाडिओडो, विगसाडियोडो, विगसाडयोडो—भू० का० कृ०।
विगसाडीजणो, विगसाडीजबो—कर्म वा०।

विगसाडियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विगसाडियोडी)

विगसाणो, विगसाबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू भे)

उ०—घूंघट ओट सलाम गह, कवलि कवलि विगसाय। हसती लजति उमगति, ऊभी सनमुख आय। —पना

विगसाणहार, हारो (हारी), विगसाणियो—वि०।
विगसायोडो—भू० का० कृ०।
विगसाईजणो, विगसाइजबो—कर्म वा०।

विगसायोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विगसायोडी)

विगसावणो, विगसावबो—देखो 'विकसाणो, विकसाबो' (रू. भे)

विगसावणहार, हारो (हारी), विगसावणियो—वि०।
विगसाविओडो, विगसावियोडो' विगसाव्योडो—भू० का० कृ०।
विगसावीजणो, विगसावीजबो—कर्म वा०।

विगसावियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू भे.)

(स्त्री विगसावियोडी)

विगसियोडो—देखो 'विकसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विगसियोडी)

विगहा—देखो 'विकथा' (रू. भे.) (जैन)

विगांनो—देखो 'वेगानो' (रू भे

उ०—लैरा लैरा रै लै चल राफणा, लोक विगांना थारी मुल्क विगांना, अपना नही कोई साजणा। —रसीलै राज रा गीत

विगाड—देखो 'विगाड' (रू भे)

उ०—१ रावळ भोजदै नू कहाडियो, आगै आदमी मेल-म्है पवारा ऊपर आवू जावा छा, तू आगे खबर मत देई। म्है थारो विगाड क्यू नही करा, तू थारा लुद्रवा माहे बैठो रहै। —नैणसी

उ०—२ ऊदो ऊगमणावत ईंदो महेवै रावळ मलीनाथजी री चाकरी करै। तद वाघ एक गोयाणा रै भाखरा रहै सो देस माहे विगाड करै। ताहरा रावळ जी राजपूतानूं हुकम दियो-'चौकी द्यो'। —नैणसी

उ०—३ तद कुवरसी कही, "जो थाहरै दाय आवै, सो करो। वात छानी न रहिसी, जद विगाड हुसी। म्हारो तो जीव हमैं थाहरै हाथ छै। चित मे आवै त्यूं करो"। —कुवरसी साखला री वारता

विगाडणो, विगाडबो—देखो 'विगाडणो, विगाडबो' (रू भे)

उ०—१ मड अजमाल कमधरा, वळिया देस विगाड। खागै एता खडिया, जेता मडी राड। —रा रू

उ०—२ पाप वगै तिण हीण प्रवाडै. वळियो मुहकम वदन विगाडै। आलम खडिया दक्खण ऊपर, श्रामवगस ऊपर चढ कुंजर। —रा. रू.

उ०—३ विगाडो ठोड जब भिस्टी, अज हू मरै नही दुस्टी। टुको स्वान ज्यू देवै, दुख सुख खबर नही लेवै। —ऊदो नैण

उ०—४ सु उठै जागळू रा कोट नजीक गूढो छै तठै रहै छै, नै रूण रा विगाड नूं दौडै छै। नै अठै साखला री बेरा पाणी नै जाय, सु दहिया रा कवर ४० तथा ५० भेळा हुआ फिरै छै। —नैणसी

उ०—५ राम विना कुण राखसी, कुण खेती किरसाण। नही तो चिडै विगाडिसै, हरीया चेत अनाण। —अनुभववाणी

उ०—६ सो वा सुरग री वेस्या तिकण सोक री चार मईना कुसग रहसी ४ महीना क्यू कि पेट में आधान है सो च्यारा मइना जनमिया पछै सत कर सुरगा मे जाय पती नै पाछो लेसूं जितरै कुलटा आदत विगाड देसी। —वी. स टी.

विगाडणहार, हारो (हारी), विगाडणियो—वि०।
विगाडिओडो, विगाडियोड़ो, विगाडयोड़ो—भू० का० कृ०।
विगाडीजणो, विगाड़ीजबो—कर्म वा०।

विगाडियोडो—देखो विगाडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विगाडियोडी)

विगाड़ू–वि —१ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला, बिगाडने वाला।

उ०—कुळ त्यात हीरा फीटा कुटळ, जिकै विगाड़ू जात रा। मम सैंण वात सुणज्यो मती, रहण न दीज्यो रात रा। —ऊ का

२ विध्वस करने वाला, विध्वसक।

रू भे.—विगाड़ू विगारु, विगारू।

विगाडो —देखो 'विगाड' (अल्पा, रू भे)

विगाथा —देखो 'विगाहा' (रू भे)

विगार —देखो 'विगाड' (रू. भे)

उ०—जनहरीया मन मिरघ ज्यू, वरज्यो देनी वार। काया वारी बीच मैं, करि करि जाहि विगार। —अनुभववाणी

विगारणो, विगारबो—देखो 'विगाडणो, विगाडबो' (रू. भे.)

विगारणहार, हारो (हारी), विगारणियो—वि०।

विगारिओडो, विगारियोडो, विगारयोडो—भू० का० कृ०।

विगारीजणो विगारीजबो—कर्म वा०।

विगारियोडो —देखो 'विगाडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विगारियोडी)

विगारु, विगारू—देखो 'विगाड़ू' (रू भे)

उ०—रधू कै घमसाण जिमक् देत लजावै सुधाभुजू के विमाण, अवरही कारखानै तिस तिस कै ओधायत अपनी अपनी जिनसू ले आय, जिम मायत परदळ कै विगारू निज दळ के किवाड।
—र. रू

विगास—देखो 'विकास' (रू भे)

विगासणो, विगासबो—देखो 'विकासणो, विकासबो' (रू भे)

उ०—ओउ सर सोउ देख्या दोउ, पारब्रह्म परछदा है। ममाहुय पासैं कवळ विगासैं, अरध नाव आखदा है। —अनुभववाणी

विगासणहार, हारो (हारी), विगासणियो—वि०।

विगासिओडो, विगासियोडो, विगास्योडो—भू० का० कृ०।

विगासीजणो, विगासीजबो—भाव वा०।

विगासियोडो—देखो 'विकासियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विगासियोडी)

विगाह—देखो 'विगाहा' (रू भे.)

उ०—गाहा मात्र सतावन गावैं, गाहो उलट विगाह गिणावै। चौपन मत गाहू उचरीजै, उगाहो मत्त साठ अखीजै। —र ज. प्र.

विगाहन–स पु —मुकुटवश मे उत्पन्न एक कुलागार राजा, जिसने अपने दुर्व्यवहार के कारण अपने जाति बाधवो का एव स्वजनो का नाश किया था।

विगाहा–स. पु [सं विगाथा] आर्या छन्द का उद्गीति नामक एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण मे १२ मात्राऐं,द्वितीय चरण मे १५ मात्राऐं,तृतीय चरण में १२ मात्राऐं और चतुर्थ चरण में १८ मात्राऐं होती है।

उ०—प्रथम विगाहा अरध प्रति, वहिकल सत्तावीस। परदळ माहिं त्रीस परिण, तविजै मात्रा तीस। —पि. प्र

रू. भे —विगाथा, विगाह, विगाहा।

विगिति—देखो 'विगत' (रू. भे)

उ० पणा है मैं माया प्रसतार, विगिति विघोगति वैत विचार। धुर लै गुर हेठे लुघ धारि,आगळि हुवै तिसी अणुहारि। —ल. पिं.

विगुण–वि —गुणरहित, निर्गुण।

विगुल—देखो विगुण' (रू भे)

विगूचणो, विगूंचबो—देखो 'विगूचणो, विगूचबो' (रू. भे)

उ०—तम्हो वनमाहा विगूचु, हूँ करू पीहरि राज। कथ, तैं किम नीपजि, कुलवती थी ए काज। —नळाख्यान

विगू चणहार, हारो (हारी), विगू चणियो—वि०।

विगू चिओडो, विगू चियोडो, विगू च्योडो—भू० का० कृ०।

विगू चीजणो, विगू चीजबो—भाव वा०।

विगू चियोडो—देखो 'विगूचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विगू चियोडी)

विगूचणो, विगूचबो—देखो विगूचणो, विगूचबो' (रू भे)

विगूचणहार, हारो (हारी), विगूचणियो—वि०।

विगूचिओडो, विगूचियोडो, विगूच्योडो—भू० का० कृ०।

विगूचीजणो, विगूचीजबो—भाव वा०।

विगूचियोडो—देखो 'विगूचियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विगूचियोडी)

विगूत–वि [स विगुप्त] १ छुपा हुआ, गुप्त।

विगूतणो, विगूतबो–क्रि अ —१ कष्टमय होना, दु खित होना।

उ०—१ वैदरभी विरहि विगूती, वनमाहा बोलि वाली। 'आम एकली मूकी न जाइ, नैखध रा, तम टाळी। —नळाख्यान

उ०—२ मन ही सकळप विकळप है मन ही, मन जाग्रत मन सूता। मन ही त्याग चलै वोह माया, मन ही लाग विगूता।

—अनुभववाणी

२ निन्दित होना।

उ०—१ किया'धपाय पोखण के ताई, अपति कदै न सूता। लोकी लाज मरै जा वातैं, वोहळि वार विगूता। —वील्होजी

उ०—२ "गजवधी" सीह विरत्ता, दखणी दळ भाजि विगूता। वालापुर महिकफर छोडै दखणी दळ भागा होडै। —गु. रू ब

३ वर्बाद होना, नष्ट होना।

उ०—गावै राघो सोभणी पात गाढी, ग्रागै वाणी यू 'किसन्न' स' ग्राढी। तै भूला राघो, विगूतो भवि त्यारी, जाणसी पीछे चडो भाग ज्यारी। —र ज प्र

उ०—२ चद्र क्षयी, शुक्र कांणउ, मनीस्वर कूवडउ, ग्रादित्य तापकर, ग्ररुण पाकुलउ, मंगल वक्र, समुद्र खारु, रावण परस्त्री कारणि विगूतउ, श्रीराम रहइ वनवासु, सीता रहइ वियोग, पाडव कौरव विरोध । —व स

४ छुपना, लुकना।

५ कोसना।

उ०—विस्व मिलिउ विधि विधि तणउ, हुउ तै हाहाकार। विधि विगूती विलपती, नारि रही निरधार। —मा. का. प्र.

६ ढका हुवा होना (ग्रोढा हुवा होना)।

उ०—जिम नीद्र भरि हुई सुखि सूता, तेम कौरव ति नीद्र विगूता। करण मुख्य न्रप मौलि पटउला, वेगि उत्तरि लीया तिणि हेला। —सालिसूरि

विगूतणहार, हारौ (हारी), विगूतणियौ—वि०।

विगूतिग्रोड़ो, विगूतियोड़ो, विगूत्योड़ो—भू० का० कृ०।

विगूतीजणो, विगूतीजबो—भाव वा०।

वगूतणो, वगूतबो—रू० भे०।

विगूतियोड़ो—भू का कृ.—१ कष्टमय हुवा हुआ, दु खित हुवा हुआ २ निन्दित हुवा हुआ ३ वर्बाद हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. ४ छुपा हुआ, लुका हुआ. ५ कोसा हुआ. ६ ढका हुआ (ग्रोढा हुआ)।

(स्त्री विगूतियोड़ी)

विगूवणो, विगूवबो—देखो विगोणो, विगोबो' (रू भे)

उ०—विहि 'इ रहिइ वारी वली, मुझ सिउ मडि म ग्राडि। माघवनइ तूं नहीं गमइ, घणू विगूविसि धाडि। —मा का प्र

विगूवणहार, हारौ (हारी), विगूवणियौ—वि०।

विगूविग्रोड़ो, विगूवियोड़ो, विगूव्योड़ो—भू० का० कृ०।

विगूवीजणो, विगूवीजबो—कर्म वा०।

विगूवियोड़ो—देखो 'विगोयोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. विगूवियोड़ी)

विगै—स. पु.—भोजन के साथ खाये जाने वाले छ पदार्थ।

१ दूध २ दही ३ घृत ४ तेल ५ मिष्ठान ३ कड़ाई।

वि वि.—उपर्युक्त छ पदार्थों मे से एक-एक कर छुडाया जाने वाला पदार्थ।

उ०—२ जद स्वामीजी ग्राठ रोटी काढ दीधी। मयाराम जी साधा नें घामी पिण कोइ लै नही। जब बोल्यौ—परठ देवा रा भाव है। स्वामी बोल्या—परठ नें दूजै दिन विगै टालज्यो। —भि. द्र

उ०—२ वलि गुरा निखेध्यो, ग्रागै थांनै वरज्यो थो नी। जद वलै बोल्यो—महाराज ! उपयोग चूक गयो। जद गुरु बोल्या—ग्रवै पग लागै है तो सवेरै विगै रा त्याग है। थोडी वेला सूं फिरता फिरता वलै पग दे दियो। इम उपयोग चूक नें वार वार पग लागो तो तै कुणका उपर पग देवाथी नें विगै टालवा थी राजी नही। —भि द्र

विगोचणो, विगोचबो—देखो 'विगोचणो, विगोचबो' (रू भे.)

विगोचणहार, हारौ (हारी), विगोचणियौ—वि०।

विगोचिग्रोड़ो, विगोचियोड़ो, विगोच्योड़ो—भू० का० कृ०।

विगोचीजणो, विगोचीजबो—कर्म वा०।

विगोचियोड़ो—देखो 'विगोचियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. विगोचियोड़ी)

विगोणो, विगोबो—क्रि. स.—१ नष्ट करना, वरबाद करना।

उ०—किया रवाना दोलतो, वीसलनद विगोय। क्रपण हिय मंह कागसी, नहि फेरै नर-लोय। —बा. दा.

उ०—२ खोयो ग्रासुरी धरम ग्रापो विगोयो तै मीरखान, जोयो नही तारकी न ग्राग लो जवाब। "सवाईसीग" मारियो धागा सु घगाखोर सिंधु, नीत छाडै किता दीह जीवसी नीबाव। —नथळजी लाळस

२ नाश करना, विध्वस करना।

३ दु.ख देना, कष्ट देना।

उ०—१ मोटउ कुडउ मागासिरि, वली विचारी जोइ। दिन थोडिउ रयणी घणी वयरणी काइ विगोई। —मा का. प्र.

उ०—२ धान न भावै चोच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई। तो सो वान कहू मैं कैसी, मेरै मन मे वीचत जैसी। —कंवरसी साखला री वारता

४ वदनाम करना, निन्दा।

उ०—१ सपति सह लेई रही, वली विगैयु सेठी। सात खणइ सात जि दिवस राखी, नाखिउ हेठि। —मा का प्र

उ०—२ स्त्रीवयराट न्रप साहसू जोई, विप्ररूपि न्रप बोलई सोई। ताहरइ नयरि नासि न कोई, ए ग्रगाह नारि विगोई। —मालिसूरि

५ दुर्दशा करना।

६ छिपाना ।

७ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।

उ०—आखि पलव करसाख आगळी, उघरियौ तिणि सिर अनड व्रज राखियो विगोयौ वासव, वडौ अवर कुण विसन वड ।
—ह ना मा.

८ खराब करना, गन्दा करना ।

उ०—जीभ न जीभ विगोयनौ, दव का दाधा कुपळी मेल्ही । जीभ का दाधा नु पांगुरई, "नाल्ह" कहइ सुणजइ सब कोई ।
—बी दे.

विगोणहार, हारौ, (हारी), विगोणियौ—वि० ।

विगोयोडौ—भू० का० कृ० ।

विगोईजणौ, विगोईजबौ—कर्म वा० ।

विगोणौ, विगोबौ, विगोवणौ, विगोयवौ, विगूणौ, विगूबौ, विगोवणौ, विगोववौ—रू० भे० ।

विगोनौ—स. पु —१ कलह, टंटा-फिसाद ।

२ देखो 'वेगानौ' (रू भे)

विगोयोडौ—भू का कृ —१ नष्ट किया हुआ, बरबाद किया हुवा. २ नाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ ३ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ ४ बदनाम किया हुआ, निन्दा किया हुआ ५ दुर्दशा किया हुआ ६ छिपाया हुआ. ७ खराब किया हुआ, गन्दा किया हुआ. ८ लज्जित किया हुआ, शर्मिन्दा किया हुआ । (स्त्री विगोयोडी)

विगोरणौ, विगोरबौ—देखो 'वगोरणौ, वगोरबौ' (रू भे)

विगोरणहार, हारौ (हारी), विगोरणियौ—वि०

विगोरिश्रोडौ, विगोरियोड़ौ, विगोरयोडौ—भू० का० कृ० ।

विगोरीजणौ, विगोरीजबौ—कर्म वा० ।

विगोरियोडौ—देखो 'वगोरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. विगोरियोडी)

विगोवणौ, विगोववौ—देखो 'विगोणौ, विगोवौ' (रू भे)

उ०—१ आपणी लोग सगळी एक मतै छै सु मान नु इण आपरी मतना करी । पूत रजपूतो न विगोवै ।
—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ आ वडै घर री बहु हुवै तिसडी मीळवत छै सु मांन नु इण आपरी घाय मेल कहाडियौ "तू रावळ री घर धणीहा विगोवै छै । नै तू माणस छै तौ म्हारी नाम मत लेई" आ चकोर थकी रहै छै मान आधौ हुवौ वहै छ सु एक दिन सज नै इण रै घर माहै आयौ । इण दीठौ म्हारी धरम न रहै तद आ हाडी पेट मार मूई ।
—नैणसी

विगोवणहार, हारौ (हारी), विगोवणियौ—वि० ।

विगोविश्रोडौ, विगोवियोडौ, विगोव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विगोवीजणौ, विगोवीजबौ—कर्म वा० ।

विगोवावणौ, विगोवावबौ—क्रि. स [विगोणौ क्रि का प्रे रू] १ नष्ट कराना/करवाना, बरबाद कराना/करवाना ।

२ नाश करवाना, विध्वस करवाना ।

३ कष्ट दिलवाना, दुःख दिलवाना ।

४ बदनाम करवाना, निन्दा करवाना ।

उ०—सुणि, राजा ! राणी वदइ, 'राजकुमरि घरि आणि । वली विगोवावि घणु ब्राह्मण-केरइ पाणि । —मा का. प्र.

५ दुर्दशा करवाना ।

६ छिपवाना ।

७ लज्जित करवाना, शर्मिन्दा करवाना ।

८ खराब करवाना, गन्दा करवाना ।

विगोवावणहार, हारौ (हारी), विगोवावणियौ—वि. ।

विगोवाविश्रोडौ, विगोवावियोडौ, विगोवाव्योडौ—भू० का० कृ ।

विगोवावीजणौ, विगोवावीजबौ—कर्म वा० ।

विगोवावियोडौ—भू. का. कृ —१ नष्ट करवाया हुआ, बरबाद करवाया हुआ २ नाश करवाया हुआ, विध्वस करवाया हुआ ३ दुख दिलवाया हुआ, कष्ट दिलवाया हुआ. ४ बदनाम करवाया हुआ, निन्दा करवाया हुआ ५ दुर्दशा करवाया हुआ. ६ छिपवाया हुआ ७ लज्जित करवाया हुआ, शर्मिन्दा करवाया हुआ. ८ खराब करवाया हुआ, गन्दा करवाया हुआ

(स्त्री विगोवावियोडी)

विगोवियोडौ—देखो 'विगोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री. विगोवियोडी)

विगौ—देखो 'विगौ' (रू भे)

विग्गाहा—देखो 'विगाहा' (रू भे)

विग्घ—देखो 'विघ्न' (रू भे)

उ०—प्रसिद्ध वुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि व्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वदतं सनूर ए । विजोग सोग रोग विग्घ अग्घ सिग्घ घायक । प्रगट्ट देव नित्त सेव सेव पास नायक । —घ व ग्र.

विग्य—स पु [स. विज्ञ] ब्रह्मा ।

वि —१ वुद्धिमान, समझदार ।

२ विद्वान, पडित ।

३ विशेष जानकार ।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वक्रन ब्रह्मासू, नरवर हस देहनायक । —वेलि.

विग्यता—स. स्त्री. [स विज्ञता] १ वुद्धिमता, समझदारी ।

२ पांडित्य, विद्वता।
३ विशेष जानकार होने की अवस्था या भाव।

विग्यप्त–वि [स. विज्ञप्त] जो बतलाया या सूचित किया गया हो।

विग्यप्ति, विग्यप्ती–स. स्त्री. [स विज्ञप्ति] १ बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव।
२ इश्तहार, विज्ञापन।
रू भे —विगपति विग्याप्ति।

विग्यान–स पु [स विज्ञान] १ जानकारी, ज्ञान।
२ आविष्कृत सत्यो व प्राकृत नियमो पर आधारित क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान।
३ विशेषत भौतिक जगत् से सबधित उक्त प्रकार का ज्ञान।
उ०—धरम, विग्यान, इतियास, पुराण, राजनीति, आचार, विवहार, कळा, साहित, वेसभूसा, परव—त्यूहार' कारीगरी नै खेती-वाडी ग्रै संग परपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै। —फुलवाडी
४ किसी विशिष्ट विषय के तत्वो या सिद्धान्तो आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या सग्रहीत हो।
ज्यू—सरीरविग्यान, समाजविग्यान, राजनीतिविग्यांन।
५ आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। (बौद्ध)
६ आत्मा।
७ स्त्रियो की चौसठ कलाओ मे से एक। (व स)
८ कर्म।
९ कला। (व स)
१० विशेषतया ब्रह्मसाक्षात्कार से प्राप्त हुवा हुआ ज्ञान।
११ एक शास्त्र विशेष।
१२ निश्चयात्मिक बुद्धि।
उ०—परिपूरण प्रेम, निज न्याय नेम, विग्यान विग्य, पूरण प्रतिग्य गभीर ग्यान, विस्मय विग्यान उद्योग आस्य, एको उपास्य। —ऊ का
रू भे –विगनान, विगन्यान, विग्यान, विगनान, विगन्यान, विग्यानी।

विग्यानकोस—देखो विग्यानमयकोस'

विग्यानपाद–स पु [स विज्ञानपाद] वेदव्यास का एक नाम।

विग्यानमयकोस–स. पु [स. विज्ञानमयकोश] १ पाचज्ञानेन्द्रिय सहित बुद्धि। (वेद)
२ आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोश।

विग्यानवाद–स पु. [स विज्ञानवाद] १ ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करने वाला वाद या सिद्धान्त।
२ वह वाद या सिद्धान्त जिसमे केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो।

विग्यानवादी–स पु. [स विज्ञानवादिन्] १ योग के मार्ग का अनुसरण करने वाला योगी।
२ आधुनिक विज्ञानशास्त्र का समर्थक।

विग्यानी–स पु —वह देवी जो किसी विशेष ज्ञान से जानी जाती है।
वि. [स विज्ञानिन्] १ जिसे विज्ञान का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक।
२ जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, ज्ञानी।
३ देखो 'विग्यांन' (रू भे)
उ०—ग्यान विग्यानीय जानि मर्यै, त्रिघरूप तपो मन मोह घूतागै। दास कहै हरिराम विना हरि, होय नही नर को निमतागै। —अनुभववाणी

विग्यापक–वि० [स विज्ञापक] १ दूसरों को जानकारी करवाने या जानकारी देने वाला।
२ समाचार पत्रो आदि मे विज्ञापन निकलवाने वाला, विज्ञापन-दाता।

विग्यापन–स पु–[स. विज्ञापन] १ किसी को जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव।
२ वह पत्र या सूचना जिसके द्वारा किसी बात की सूचना दी जाय अथवा जानकारी कराई जाय, इश्तिहार।

विग्यापणी, विग्यापबौ–क्रि स. [स विज्ञापन] विज्ञप्त करना, बतलाना या सूचित करना।

विग्यापियोडौ–भू. का. कृ —विज्ञप्त किया हुआ, बतलाया हुआ या सूचित किया हुआ।

विग्याप्ति—देखो 'विग्यप्ति' (रू भे)

विग्रह–स पु [स विग्रहः] १ व्याकरण के अनुसार यौगिक शब्दो या समस्त पदो के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग या पृथक करने की क्रिया या भाव।
२ वैर-विरोध।
उ०—वस्यो लिलाट राह विग्रह तैं, सकर मयक न राखि सकेह। सरणाई 'खेता' सीसोदा, लाल केणी नह कीयो लेह। —लाला हाडा री गीत
३ लडाई, झगडा
उ०—जाइ नै आगली रजपूताणी नु तेडिनै कहची, मैं आ-रजपूताणी म्हारै माथै सटै आणी छै। ईयै सु वाद विग्रह मत करिज्जो। —कावळै जोईयै नै तीडो खरळ री वात
३ युद्ध, समर। (ह. ना मा)
उ०—१ करण तुच्छ केविया अभै कर मुछ उभारै, आरुहिवा नरइद पाव धारै पाधारै। चौख सगह अप्पतै सोभ विग्रह कवि सभरि, किसन डाणि हल्लियो जाण बाणासुर ऊपरि। —रा रू.

उ०—२ मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट घुजाई लंका। वाळ सुतण रचायौ विग्रह, श्रायौ राघव कनै असका। —र रू.

उ०—३ रावळ दूदौ तिलोकसी जसहडोत जेसळमेर गढ ऊपर छै। पातसाही फोज तळहटी छै। वरस १२ विग्रह नै हुवा छै। मामला घणा ही हुवा, पण गढ हाथ आवै नही। —नैणसी

उ०—४ अजमखा वासै लागौ आय गढ गिरनार घेरियौ। वरस ३ विग्रह हुवौ। अमीरखान गढरोहा माहे मौत मुवौ। —नैणसी

४ नीति के छः गुणो में से एक।

५ सेना, फौज।

६ किसी के प्रति किया जाने वाला हानिकारक उपाय का प्रत्यक्ष प्रयोग।

उ०—इम देखि अमल जळिया असह, घरा लिये इम वारियौ। जुध करण न व्है आसग जदि, विग्रह चूक विचारियौ। —सू प्र

७ शिव का एक नाम, शिव-लिंग।

८ प्रतिमा, मूर्ति।

९ कोई तत्व विशेष। (सांख्य)

१० शृंगार, सजावट।

११ समुद्र के द्वारा स्कद को दिये जाने वाले दो पार्षदो में से पहला पार्षद।

१२ कष्ट, पीडा, दुखी।

उ०—वीछडिया विग्रह घणा, मन अंतरा पडाहि। नदी विछुटा वाहळा, अवसर कही मिळाहि। —परमानदजी वणियाळ

रू. भे —विग्रह।

विग्रह-चारौ—स पु —टटा-फिसाद, लडाई-झगडा।

उ०—पाचमा आरा ना राजवी, होसी विग्रहचारौ रे। वचन कही फिर जावसी, एहवौ जाण विचारौ रे। —जयवाणी

विग्रहणौ, विग्रहवौ—क्रि स —१ युद्ध करना, लडाई करना।

उ०—कमधज्ज सकज्जा कारणा, कळा भुजा मापै कवण। विचिआण घणौ इम विग्रहै, गहियौ फिर पडतौ गयण। —रा रू.

२ सहार करना, मारना।

उ०—गह घरती रिणमल जिण गादी विग्रहिया, खागै समवादी। रिडमल पाट जोध रिखवसी, इळ रखवाळ थयौ प्रम असी। —रा. रू

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ षडयन्त्र करना।

५ शृंगार करना, सजावट करना।

६ घेरा डालना, घेरना।

उ०—कमालदी घोडा हजार अस्सी ले आयौ। गढ घेरियौ। दिहाडै ढोवा हुवा छै, सु परधान वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवौ थौ, सु गढ विग्रहियौ साभळ नै आयौ। —नैणसी

उ०—२ पछै मूळराज रावळ हुवौ। रतनसी नू राणाई रौ विरद। मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियौ। वरस १२ बा'रै गढ विग्रहियौ रह्यौ। —नैणसी

उ०—तरै तेजसी तौ गढ चढीया। पीरोजी लाख कोठार रावळा थी तेजसी रा हुजदारा नूं सुहला सा गिण दीया। सीवाणौ विग्रहियौ। —राव मालदे री बात

७ दूर करना, हटाना।

८ कलह करना, झगडा करना।

९ वीरगति प्राप्त होना।

विग्रहणहार, हारौ (हारी), विग्रहणियौ—वि०।

विग्रहिओडौ, विग्रहियोड़ौ, विग्रह्योडौ—भू० का० कृ०।

विग्रहीजणौ, विग्रहीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वग्रहणौ, वग्रहवौ, वीग्रहणौ, वीग्रहवौ—रू० भे०।

विग्रहियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लडाई किया हुआ. २ सहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ ४ षडयन्त्र किया हुआ ५ शृंगार किया हुआ, सजावट किया हुआ ६ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ७ दूर किया हुआ, हटाया हुआ. ८ कलह किया हुआ, झगडा किया हुआ वीर गति प्राप्त।

(स्त्री. विग्रहियोडी)

विग्रही—वि [स विग्रहिन्] १ लडाई-झगडा करने वाला, युद्ध करने वाला।

२ सहार करने वाला, मारने वाला।

३ नाश करने वाला, नष्ट करने वाला।

४ षडयन्त्र करने वाला।

५ शृंगार करने वाला, सजावट करने वाला।

६ घेरा डालने वाला।

७ दूर करने वाला, हटाने वाला।

विघटण, विघटन—स पु [स विघटन] १ सयोजक अगो को अलग अलग करने की क्रिया।

२ तोडने-फोडने की क्रिया या भाव।

विघटिका—स स्त्री [स] घडी का ६० वा अश, २४ सैकण्ड।

विघटित—वि [स] १ जिसके सयोजक अलग-अलग कर दिये गये हों।

२ तोडा-फोडा हुआ, नष्ट किया हुआ।

विघन—स. पु [स विघन] १ घन, हथौडा।

२ देखो 'विघ्न' (रू भे)

उ०—१ जग बीच जाग्रत ज्यास, अति विघन सुपन उदास। सब चीज रीझ असार, अत चीत मोत विचार। —रा. रू

उ०—२ रीत आद जदुवस घराणै, जगा विघन जिगन सम जाणै। 'जीवण' हरनाथोत सजोसो, आसुर व्याधि हरण किर ओसो। —रा रू.

उ०—३ जो मोनु घपाइस्यो तो भली करिस्यों, नहीं तो हूं सहर रा लोकां नु विघन करीस। ताहरा कह्यो, "कहो विघन न करै ही ? —स्यामसुदर री वात

उ०—४ वेलि पढता कोई न होइ। कोई विघन न रि सकै नही। थळि जळि आकासि कोई न कोई छळ छिद्र होण न पावै। —वेलि टी

उ०—५ गाडो वहीर व्हैतो वेळा ई उणरो सपनो उणी भात चालतो हो। अर नी बादळ रा सपना मे ई किणी वात री विघन पड्यो। —फुलवाडी

उ०—६ दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचंद्र चतुराई। सुणिज्यो आगलि कुमर कुतूहल, तजि मन विघन बुराई। —वि कु.

उ०—७ तपस्वी कही—दरसण रूप तो तुम ही हो। पण राजा रूप छोड कर एकला फिरो सो उचित नही। विघन आय पडै तो राज-देह दुरलभ है। —सिंघासण वत्तीसी

विघनक—देखो 'विघ्नक' (रू भे)

विघनकरण—देखो 'विघ्नकरण' (रू. भे) (अ मा, ह. ना. मा)

विघकारी—देखो 'विघ्नकारी' (रू भे)

उ०—तठै पडित बोलिया—स्रीमहाराज ! ओ बाळक करडा नक्षत्र मैं जनम्यौ छै नै कुडळी माहै ग्रह खोटा आया छै, वेळा पिण खोटी छै, सो माता पिता नै विघनकारी छै, मोत-घात ज्यू छै। —रिसाळू री वात

विघनजीत—देखो 'विघ्नजीत' (रू. भे)

विघननायक—देखो 'विघ्ननायक' (रू भे.)

विघननासक—देखो 'विघ्ननासक' (रू भे.)

विघनपत, विघनपति, विघनपती—देखो 'विघ्नपति' (रू. भे)

विघनप्राण—देखो 'विघ्नप्राण' (रू. भे) (ना मा)

विघनराज—देखो 'विघ्नराज' (रू भे.) (अ मा)

विघनविनायक—देखो 'विघ्नविनायक' (रू भे)

विघनहरण—देखो 'विघ्नहरण' (रू भे)

उ०—पूरण-पुनीत स्रीराम पद, विघनहरण त्रैलोक्य वर। परणाम सुकवि ईसर पुणै, तंत नाम भव-सिंधु तर। —ह. र

विघनेस—देखो 'विघ्नेस' (रू भे)

विघन्न—देखो 'विघ्न' (रू भे)

उ०—१ वळता तो दीपक भला, टळता भला विघन्न। गळता तो वैरी भला, वळता भला सुदिन्न। —अग्यात

उ०—२ फजरै विकराळ सरूप करै, किम व्याव विचाळ विघन्न करै। सव धाविय 'पाल' कनै सिधिया, पुणाया तुमनै नथि पारधियां।—पा प्र.

विघन्नणो, विघन्नबो—क्रि अ.—नष्ट होना, मिटना (मरना)

उ०—या दाखै तरवार उठाई मोरा प्रगटी पीड अमाई। वधियो दरद, सु देह विघन्नी, प्रस्ठ दुस्ट घादी ऊपन्नी। —रा रू

विघन्नणहार, हारो (हारी), विघन्नणियो—वि०।

विघन्निओडो, विघन्नियोडो, विघन्नयोडो—भू० का० कृ०।

विघन्नीजणो, विघन्नीजबो—कर्म वा०।

विघन्नियोडो—भू. का. कृ —नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री. विघन्नियोडी)

विघन्नी—वि —विघ्न उत्पन्न करने वाला, वाधा डालने वाला।

विघात—स पु [स विघात] १ नाश।

२ आघात, प्रहार, चोट।

३ वाधा, विघ्न

विघातक—वि —१ विघ्न डालने वाला, वाधक।

२ आघात करने वाला, प्रहार करने वाला।

३ नाश करने वाला।

विघातकारिणी—स स्त्री. [स] एक प्रकार की विद्या विशेष।

उ०—आकासगामिनी सोदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनस्तभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कोमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी अवलोकिनी । —व. स

विघातन—स स्त्री [स] १ नाश करने की क्रिया या भाव।

२ हत्या करने की क्रिया या भाव।

३ वाधा डालने की क्रिया या भाव।

४ प्रहार करने की क्रिया या भाव।

विघाती—देखो 'विघातक'

विघ्न—स. पु [स.] १ विघ्न, वाधा।

२ रोक रुकावट,।

३ समर।

४ अमगल, अशुभ।

५ नरमासभक्षक एक राक्षस, जो कालि एवं अयोमुखी नामक राक्षस का पुत्र था।

६ वध नामक राक्षस का पुत्र।

रू. भे —विघन, व्रिघ्न, विगन, विग्घ, विघन, विघन्न ।

घ्नक–वि [स] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू भे.—विघनक ।

घ्नकरण–वि. [स.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू भे.—विघनकरण ।

घ्नकारी–वि [स] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू भे —विघनकारी, विघ्नकारी, विघनकारी ।

वघ्नजित, विघ्नजीत–स पु. [स] श्रीगणेशजी ।

रू भे —विघनजित, विघनजीत ।

विघ्ननायक–स पु [स विघ्न+नायक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे —विघननायक ।

विघ्ननासक–स. पु [स. विघ्न +नाशक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे —विघननासक ।

विघ्नपत, विघ्नपति, विघ्नपती–स पु [स विघ्न +पति] श्रीगणेश जी ।

रू भे —विघनपत, विघनपति, विघनपती ।

विघ्नप्राण–स पु [स] कृष्ण के बडे भाई बलभद्र, हलधर ।

रू भे —विघनप्राण ।

विघ्नराज–स पु [स विघ्न +राज] श्रीविनायकजी ।

रू भे —विघनराज ।

विघ्नविनायक–स पु [स विघ्न +विनायक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे —विघनविनायक ।

विघ्नसतुस्ट–स पु [स विघ्नसतुष्ट] चौसट भैरवो मे से एक भैरव का नाम ।

विघ्नहरण–स पु [स विघ्न +हरण] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे —विघनहरण ।

विघ्नेस–स पु [स विघ्न +ईश] श्रीगणेशजी महाराज, ब्रह्माड में इसके इक्कावन नामान्तर दिये गये हैं ।

रू भे —विघनेस ।

विड़ग—१ देखो 'विडग' (रू. भे.)

उ०—१ सूरजमाल दुझाल, नेज गज ढाल निहारै । फळ सावळ फोरियौ, विडग ग्रोरियौ वधारै । —रा रू.

उ०—२ उमैं तरफ ऊपडी, वाग तिण वार विडगा । ग्रम्हो सम्हा सुर असुर, जुड़ै सर सभर जगा । —सू प्र.

उ०—३ विडगण केसर पाखर भीड भुजाळोय बाघव ग्रावध भीड । ग्रहै कर सावळ ग्रग गरीठ, 'पबौ' चढतौ जद केसर पीठ । —पा. प्र.

(स्त्री विडगण)

विडगि, विडगी—देखो 'विडग' (रू भे)

उ०—ग्रगराण न हालइ उवरि ग्रभ, वाहू ग्रमोस जिम तेवि बभ । जडलग्ग साहि खेतसी जगि, वइरा वराह चडियउ विडगि । —रा ज सी.

विड–स पु—१ बीहड, वन ।

उ०—१ वाटि वटाऊ सब चले, विड मैं वासा होय । जनहरीया साई विना, यार न अपणा कोय । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववाणी

२ विषय, काम, भोग ।

उ०—१ हरीया जुग विड नीदीयै, जा कू भगति न भाय । से रता रहमाण सू, ग्रौर न ग्रावै दाय । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववाणी

३ शत्रु, दुश्मन ।

वि [स विट] विषयी, कामी, भोगी ।

उ०—वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववाणी

रू भे —विड, विड ।

मह ,—विडाण ।

विडग्रोजा—देखो 'विड़ूजा' (रू भे)

विडग्रोजावाह—देखो 'विड़ूजावाह' (रू भे)

विडणो, विडवौ—देखो 'विढणो, विढवौ' (रू भे)

विडणहार, हारौ (हारी), विडणियौ—वि० ।

विडिग्रोडौ, विडियोडौ, विड्योडौ—भू० का० कृ० ।

विडीजणो, विडीजवौ—भाव वा० ।

विडद—१ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ मूळी री पापा रजवाडा मे रैवणियौ स्याणौ हाजरियौ, राजनीत सू रग्योडौ—सुधरयोडौ मिनख । रुयात ग्रर जात नै जाणै, विडद ग्रर बडाई वखाणै । —दसदोख

उ०—२ सरणागत सुख करन कु, तुमरो विडद, विराज। अपनो ही जन जान के, क्रपा करो महाराज। —अग्यात

उ०—३ निरवाह करत ज नारियरण, असरण मरण विडद सू। फोल कर जोडघा ओतरै, सहस कळा गुर जभ सू। —कोल्हजी चारण

उ०—४ विडद तमारो रामजी, लै वहीयै म्हाराज। हरीयै गुण ओगुण कीया, तोई तमा कू लाज। —अनुभववाणी

२ देखो 'विडद' (रू भे)

विडदडी-स स्त्री —१ वृद्धि, बढोतरी।

उ०—गढ रणतभवर सू आवो विनायक, करो नी अणचीती विडदडी। विडद-विनायक दोनू जी आया, आय तो उतरिया हुरियै वाग मे। —लो गी

२ वह स्त्री जिसके घर मे पुत्र या पुत्री के विवाह के मांगलिक कृत्य होते हो।

रू भे —विडदडी, विडदडी, विडदडी।

विडदवडी-स स्त्री. [स. वृद्धि-वटी] विवाहारभ मे मातृका पूजन के समय दी गई बडी, जो वर-वधू को सीख देते समय पका कर भोजन के साथ खिलाई जाती है।

रू भे —विडदवडी, विडदवडी, विडदवडी।

विडदविनायक-स पु [स वृद्धिविनायक] मागलिक अवसरो पर प्रथम पूजे जाने वाले विनायक, वृद्धिविनायक।

उ०—विडदविनायक दोनू जी आया, आय तो उतरिया हुरिया वाग मे। ढूढत ढूढत नगरी जी ढूढी, कोई घर तो बतावो लाडल रै बाप रो। —लो. गी

रू भे —विडदविनायक, विडदविनायक, विडदविनायक।

विडवाणो, विडदावो—देखो 'विरुदाणो, विरुदावो' (रू. भे)

विडदाणहार, हारो (हारी) विडदाणियो—वि०।
विडदायोडो—भू० का० कृ०।
विडदाईजणो, विडदाईजवो—कर्म वा०।

विडदायोडो—देखो 'विरुदायोडो' (रू भे)

(स्त्री विडदायोडी)

विडदावणो, विडदावबो—देखो 'विरुदाणो, विरुदावो' (रू भे)

उ०—वीरा वीरा भड दोळा विडदावै, धीरा धीरा पड घोळा मत धावै। वेळू वैतड री ताती वळवाळी, रेणा धोळी री राती कर राळी। —ऊ. का.

विडदाव—देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—तीन-रिवाव कर परा'र लिख्या मुजब, पाच नो जमा कर देवण रो हुकम दारौ, ब्याज न्यारो राखै है। सागै-सागै आपरी बात मान ज्याणी वेगी मारजा री तारीफ अर भरोसै रा ही विडदाव उडावै है। —दसदोख

विडलो-स पु —१ ढेर, समूह।

उ०—१ माता कै भवन मे जी ओ नारेळा रो विडलो, जी ओ नारेळा रो विडलो सुपारचा रे विडलै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो. गी

उ०—२ माता कै भवन मे जी ओ चावळिया रो विडलो, जी ओ चावळिया रो विडलो, मूगा रै विडलै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो गी

उ०—३ माता कै भवन मे जी ओ काजळिया रो विडलो, जी ओ काजळिया रो विडलो, रोळी रै विडलै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो गी,

उ०—४ माता कै भवन मे जी ओ मोळी रो विडलो, जी ओ मोळी रो विडलो, महदी रे विडलै म्हारी आद भवानी वस रही। —लो गी

२ देखो 'सुहागदार विडलो'।

विडाणो—देखो 'विडाणो' (रू भे)

उ०—१ राम नाम नही चेतीयो, करी विडाणी आस। जन हरीया घर गोरिवै, सरिखया सेती वास। —अनुभववाणी

उ०—२ दुनिया रोवै रोवणा, देख विडाणी खाल। नाव सनेही वाहिरो, हरीया होय विहाल। —अनुभववाणी

उ०—३ माया भई विडाणीयां, भार विडाणै लोग। जनहरीया नही आपना, विखै विलासा भोग। —अनुभववाणी

उ०—४ जाणि बूझि गहली भई, प्यारी पिव कै जोग। हरीया गुझि करतार सु भमो विडाणै लोग। —अनुभववाणी

उ०—५ वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड मैं वास। हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसो वेसास। —अनुभववाणी

(स्त्री विडाणी)

विडाळ, विडाल—देखो 'विडाळ' (रू भे)

विडाळद्रग—देखो 'विडाळद्रग' (रू. भे)

विडाळव्रतिक—देखो 'विडाळव्रतिक' (रू भे)

विडियोडो —देखो 'विढियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विडियोडी)

विडूजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे)

विडूजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू भे.)

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू भे)

उ०—तेज ताप मुनीपूर पाडिया पाथोध तास, नागेस झाडिया

ज्यूं खगेस वधै नेत। पक्खै पख विडोजै झाडिया वज्र वोम वाट, खळा थाट दूजै दळै विभाडिया खेत। —हुकमीचद खिडियो

विड़ोजावाह—देखो 'विड़ूजावाह' (रू भे)

विडो—स. पु—थोहर के नीचे का भाग।

उ०—घोडा दौड रह्या छै। होकारा हगामो हुय रह्यो छै। जितरै बीच थोहर झाडा रा विडा माहा खरगास उठिया छै।

—रा. सा स

रू भे—विडौ।

विचमा—क्रि वि—बीच मे, मध्य मे।

उ०—राय देह पधराय, वार तरण चेह विचमा। झळ अग्गी झूलिवा, करण लग्गी परकम्मा। —रा रू

विच, विचइ—देखो 'वीच' (रू भे)

उ०—१ धारण सलज चखा 'चद' धारै, आच उठाय वहिम उच्चारै। विच पुर धसै विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चदराजा। —सू प्र

उ०—२ पूछ्या बिना पयपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी। वदन मत दिखालै वस द्रोही वळै। —र रू

उ०—३ भाखि सतोगुण भलो, खरो कोई कहिजै खोटो। त्रिविध तणी विच तीन, त्रिविध तामस गुण ओटो। —पी ग्र

उ०—४ जउ साहिव तू नावियउ, मेहा पहलइ पूर। विचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरै दूर। —ढो मा

उ०—५ दिलीवै कहर पतसाह रा भाज दळा, सोहिया दळा विच वीर साजा। सदा जोरावरा तणा नव-साहसो, राह सिर ऊपरै हुआ राजा। —देवराज रतनू

विचकणो, विचकवो—देखो भिचकरणो, भिचकवो' (रू भे)

विचकणहार हारी (हारी), विचकणियो—वि०।

विचकिओडो, विचकियोडो, विचक्योडो—भू० का० कृ०।

विचकीजणो, विचकीजवो—भाव वा०।

विचकाडणो, विचकाडवो—देखो 'विचकाणो, विचकावो' (रू भे)

विचकाडणहार, हारो (हारी), विचकाडणियो—वि०।

विचकाडिओडो, विचकाडियोडो, विचकाडयोडो—भू० का० कृ०।

विचकाडीजणो, विचकाडीजवो—कर्म वा०।

विचकाडियोडो—देखो 'विचकायोडो' (रू भे)

(स्त्री विचकाडियोडी)

विचकाणो, विचकावो—क्रि स—१ चौंकाना।

उ०—वापडो छोरो रीवण-खारो हो'र लकडिया भेळी करण लागो। इत्ते मे गळी रै छोरा ताळिया वजा वजा'र साड नै विचकाय दी। साड नाठो। छोरा कणाई माड पासी दौडै कणाई लकडिया सामै। —वरसगाठ

२ विगाडना, विकृत करना। (मुख)

विचकाणहार, हारो (हारी), विचकाणियो—वि०।

विचकायोडो—भू० का० कृ०।

विचकाईजणो, विचकाईजवो—कर्म वा०।

विचकाडणो, विचकाडवो, विचकाणो, विचकावो, विचकावणो विचकाववो, विचकाडणो, विचकाडवो, विचकावणो, विचकाववो —रू० भे०

विचकायोडो—भू का कृ—१ चौंकाया हुआ २ विगाडा हुआ, विकृत किया हुआ (मुख)।

(स्त्री विचकायोडी)

विचकावणो, विचकाववो—देखो 'विचकाणो, विचकावो' (रू भे.)

विचकावणहार, हारो (हारी), विचकावणियो—वि०।

विचकाविओडो, विचकावियोडो, विचकाव्योडो—भू० का० कृ०।

विचकावीजणो, विचकावीजवो—कर्म वा०।

विचकावियोडो—देखो' विचकायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विचकावियोडी)

विचकाक्ष—स पु—एक राजा, जिसने मास-भक्षण त्याग किया था।

विचकियोडो—देखो 'भिचकियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विचकियोडी)

विचकिल—स पु—१ कुसुम विशेष २ सुगन्धी वृक्ष विशेष।(सभा)

(मि—'विचकल'।)

विचक्खण—स. पु.—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

विचक्र—स पु—एक दानव का नाम। (पुराण)

विचक्षण—वि. [स विचक्षण] [स्त्री. विचक्षणा] १ पारदर्शी।

२ सतर्क, सावधान।

३ बुद्धिमान, चतुर।

उ०—पट्टकूल पट्टणी देस भोगीघर दक्षण। कुजर कदळी खड विप्र तेरोतरी विचक्षण। —ढो. मा.

४ पडित, कवि।

५ निपुण, योग्य, काबिल।

६ अद्भुत, अपूर्व, विचित्र।

उ०—उत्तम कुलनी ऊपनी, मयण तणउ अवतार। वली विचक्षण परिण घणा, भरिया धन भडार। —मा कां. प्र.

७ पुरुष के बत्तीस लक्षणो में से तेरहवा शुभ लक्षण।

रू भे—विचच्छण, वचखण, वचिक्षण, विग्रक्खण, विग्रक्खणि, विग्रक्खणु, विचक्खण, विचक्षिण, विचखण, विचखणी, विचख्खण, विचख्यण, विवच्छण, विचछन, विच्चखण।

विचक्षणतांडव—स पु —एक आचार्य जो गर्दभी मुख शाडिल्यायन का शिष्य व शाकदास भाद्रितायन का गुरु था।

विचक्षणता—स स्त्री [स विचक्षण+ता प्र] १ निपुणता, दक्षता, चतुराई, विद्वत्ता।

२ विचित्रता, अद्भुतता।

विचक्षणा—स स्त्री —१ कुभा नामक ओषधि, नागदती।

२ चतुर स्त्री।

उ०—चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणं करी रभा रे। देवगुरु धरम दी पावती, व्रतधारी दृढवभा रे। —वृस्त.

विचक्षिण—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

उ०—पटकूळ पट्टणी, देस भोगी घुर दक्षिण। कुजर कदळी खड, विपरीत नीति विचक्षिण। —डो मा

विचक्नु—स पु —एक राजा, जो 'यज्ञकर्म में अहिंसाव्रत का पालन करना चाहिए' इस तत्व का प्रतिपादन कर इसी मत पर 'विचख्नु गीता' की रचना की जो भीष्म द्वारा युधिष्ठर को सुनाई गई थी।

रू भे.—विचख्नु।

विदक्षु।—स पु —वशिष्ठकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

विचखण—देखो 'विचक्षण' (रू भे) (अ मा, ह. ना मा)

विचखणी—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

विचख्खण—देखो 'विचक्षण' (रू भे.)

उ०—१ वसहृतरि वड पात विचख्खण, वीर कळोधर गरथ विचार। सिगळी सुजस लियो राइ मीघल, खट ग्रन कीया ' खगार। —खगार रायपाळोत री गीत

उ०—२ बुद्धिवत बळवत राज, सनमान विचख्खण। भोग जोग गुर भगत, भाग पग्माण मुजायण। —रा सा स

विचख्नु—देखो 'विचक्नु' (रू भे)

विचख्यण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

विचडण—देखो 'विछुडण' (रू भे)

उ०—मिळण भलो विचडण बुरो, मिळ विचडो मत कोय। —अग्यात

विचडणो, विचडबो—देखो 'विछुडणो, विछुडबो' (रू भे.)

विचडणहार, हारो (हारी), विचडणियो—वि०।

विचडिओडो, विचडियोडो, विचड्योडो—भू० का० कृ०।

विचडीजणो, विचडीजबो—भाव वा०।

विचडियोडो—देखो 'विछुडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचडियोडी)

विचच्छण, विचछण, विचछणी, विचछन—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

उ०—१ वरणी उपमा सार, विचारि विचच्छण। लिया सही अवतार, बतीसा लच्छण। —वा दा.

उ०—२ अथ कवरी रै पत्री सिद्धली लग्न री लडी जीव री जडी सजीली फबीली लजीली छबीली रमकीली लकीली कमककीली छकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लछणी चौसट कला विचछणी केल रस क्यारी प्राणप्यारी जिणसूं साहुरी निज नेह उरस भात राखजे देह। —र हमीर

विचत्र—देखो 'विचित्र' (रू भे)

उ०—१ खग झपट वे थपट छट खल खट, विकट अविग्रट विहै रिणिवट। पडे घट कटि उलट पालट गरट समरट पहट, गाहट विचत्र खड खट तणा दहवट। —ल पि

उ०—२ अप मोराय 'पाल' घडी कनरै, पससा हिय फौज सिवाण परै। रवदा वळ लूटत गाम रटै, विचत्रां दळ वेख लाख वटै। —पा प्र

उ०—३ केसरी सिंघ राव 'मालदे' कळोधर, चाइआ गुर सदा लग वडा चेळी। विचत्र साह आलमी जालमी विजुळा,मरण मिळियै कियो ताळ-मेळी। —माधोदास गाडण

उ०—४ विचत्रा देखेय सोच विराम, तरा हिक रावत बोल्यो ताम। उवारण राका चीत उदार, वसै श्री वीरम जूह विडार। —गो रू.

उ०—५ मच्छर और न सग्रहै, आ मछरीका आद। अडै कमधा अरगळी, विचत्रां हूता वाद। —रा. रू.

विचत्राण—देखो 'विचित्र' (मह, रू भे)

उ०—१ वधिया कराग खग वाहतै, रूक जाग चतुरगिणी। विचत्राण जुवाण वज्जियो, इद्रमाण पहलै अणी। —रा. रू

उ०—२ जुध जीप पति जोधाण, तड भाज भड विचत्राण। पाधारियो सिघ पाय, 'अभसाह' धाम अकाय। —रा रू

विचर्चिवसू—स पु —चाद, चन्द्रमा। (नां मा.)

विचर्मा—देखो 'बीच' (रू भे)

विचरण—स पु —१ पैर, चरण। (अ. मा)

स स्त्री —२ चलने की क्रिया या भाव।

३ पर्यटन करने की क्रिया या भाव।

रू भे —विचरन।

विचरणी, विचरबो—क्रि अ.—१ व्यापक होना।

उ०—१ हम से सरव मो व्यापक, मो मैं सरव विचरता। जो देखू सो दीसत मुझ मैं, हू सरव ब्रह्म सरवगता। —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ देवी जगत करतार भरता सहरता, देवी चराचर जग सब में विचरता। देवी चार धाम स्थल ग्रस्ट साठ। देवी पावियै एकसौ पीठ ग्राठं। —देवि

२ गमन करना, घूमना।

उ०—मरजीवा होय जग मैं विचरू, स्वाल करू नहि कीना। जिनकी कळा सकळ में वरतै, सो साहब हम लीना।

—स्रीहरिरामजी महाराज

३ गुजरना, गमन करना, जाना।

उ०—तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति ग्रतरा माहै पातसाह महमद मुसतफाखान रा चार दूत विचरिग्रा हुता त्या हकीगत राजान रा पातसाह ग्रागै पोहचाई। —रा. सा स

४ ग्रवलोकन करना, देखना।

उ०—माईत तौ पाछा ग्रापरै मसोवा मे रु धग्या ग्रर टाबर ग्रापरी ग्रबूझ बाळ-प्रीत मैं तारा रै सागै विचरता विचरता वानै ऊघ ग्रायगी। —फुलवाडी

५ जैन साधुग्रों का भिक्षा मागने हेतु जाना।

उ०—'राजग्रही' नगरी हो ग्रति रलियामणी 'गुणसिल' नामै वाग जिणेसर। 'विचरता' वीर जिणद समोसरचा, भव जीवा रै भाग जिणेसर। —जयवाणी

विचरणहार, हारौ (हारी), विचरणियौ—वि०।

विचरिग्रोडौ, विचरियोडौ, विचरचोडौ—भू० का० कृ०।

विचरीजणौ विचरीजवौ—भाव वा०।

विचरवणौ, विचरववौ, विछरणौ, विछरवौ—रू० भे०।

विचरन—देखो 'विचरण' (रू भे)

विचरवणौ, विचरववौ—देखो 'विचरणौ, विचरवौ' (रू भे)

उ०—सुत तू सुकमाल मगात, मत कहिजौ सजम वात। इणि गरुग्रइ सजम भारड, विचरेवउ खडडा धारड। —जिनराज सूरि

विचरवियोडौ—देखो 'विचरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विचरवियोडी)

विचरियोडौ—भू का कृ —१ व्यापक हुवा हुग्रा २ गमन किया हुग्रा, घुमा हुग्रा. ३ गुजरा हुग्रा, गमन किया हुग्रा, गया हुग्रा ४ ग्रवलोकन किया हुग्रा, देखा हुग्रा ५ जैन साधु का भिक्षा मागने हेतु गया हुग्रा

(स्त्री विचरियोडी)

विचळ, विचल—वि. [स विचल] १ जो स्थिर न हो, ग्रस्थिर, डिगा हुग्रा।

२ प्रतिज्ञा या सकल्प से हटा हुग्रा।

विचळकी—क्रि वि —बीच मे।

उ०—तेल विचळकै ग्राय रह्यौ, लूम्या री डोरी। नणदल कूल्हर खाय, वारी ऐ लूम्या री डोरी। —लो गी.

विचळणौ, विचळवौ—क्रि ग्र.—१ विचलित होना।

२ पदच्युत होना।

३ हिम्मत हारना, निरुत्साह होना।

४ कहकार इन्कार होना, मुकरना।

५ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख होना।

६ विकृत होना, खराब होना।

७ तितर-वितर होना, विखरना, भाग जाना।

उ०—१ तेथि कछवाहो भोपत राजा भारमल रो दीकरो काम ग्रायो। मिरजे इब्राहम री फोज विचळी। पीण मिरजै रै तरगसबधै कहियो पातिसाह थोडं साथ सेती छै। ग्राग्रो जिम मारिल्या। —द वि.

उ०—२ लोक सारो गोळा सु फूट गयो। सो साकडै घेर मे लागो। सो एकै-एकै सु दोय-दोय तीन-तीन फूट गया। बाण लागा, सो घोडा ग्रादमी फूट गया फोज विचळ गई। पग छूट गया। सो भाजता रै पूठै लोक लागो। —कुवरसी साखला री वारता

८ ग्रस्थिर होना, डिगना।

९ घबराना, भयभीत होना।

उ०—१ इयै समइयै हमाऊ पातिसाह काबिल हुता ग्रायो। ग्रापस मै समरेजसाह री फोज हुता वेढि हुई। फोज भागी। पठाण विचळिया। पजाव ली। हमाऊ पातिसाह सीहनद ग्रायो।

—द. वि.

उ०—२ वासा पठाणै चप की तीरा री। ताहरा मुगळै विचळतै ही ज मार की। तितरै बीजी फोज मुगळा री पठाणा ग्राडी ग्राई। —द. वि

उ०—३ इतरै माही मारवाड री धरती में कहत पडियो लोग सारो विचळियो। —नापै साखलै री वारता

उ०—४ ताहरा कोटवाळ पूछियो—क्योकर मोटियार, कासू कहै छै? ताहरा कुवर कह्यो—बेटो तौ थारा रो ही छू। तितरै साह कह्यो —रे कपूत, कासू कहै छै, के री बेटो छै? ताहरा फेर कह्यो—थाहरो बेटो छू। ताहरा कोटवाळ कह्यो—रे मोटियार, यूं विचळियौ क्यू बोलै छै। —पलक दरियाव री वात

विचळणहार, हारौ (हारी), विचळणियौ—वि०।

विचळिग्रोडौ, विचळियोडौ, विचळचोडौ—भू० का० कृ०।

विचळीजणौ, विचळीजवौ—भाव वा०।

विचळणौ, विचळवौ, विचलणौ, विचलवौ, विचळाणौ, विचळावौ, विचलाणौ विचलावौ विचळावणौ, विचळाववौ, विचलावणौ, विचलाववौ, विछ्ळणौ, विछळवौ—रू० भे०।

विचलणो, विचलवो—देखो 'विचळणो, विचळवो' (रू भे.)

उ०—हुकम कीयो हल्ला करी रे, विचल्यौ साह वचन्न। जूमारै जाइ झालियो रे, कपटइ राण रतन्न। —प. च चौ.

विचलणहार, हारो (हारी), विचलणियो—वि०।

विचलिम्रोडो, विचलियोडो, विचल्योडो—भू० का० कृ०

विचलीजणो विचलीजवो—भाव वा०।

विचळता, विचलता—स स्त्री —१ चचलता।

२ अस्थिरता।

३ घबराहट।

४ भयभीत होने की अवस्था या भाव।

विचलाडणो, विचलाडवो—देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू भे)

विचलाडणहार, हारो (हारी), विचलाडणियो—वि०।

विचलाडिम्रोडो, विचलाडियोडो, विचलाड्योडो—भू० का० कृ०।

विचलाडीजणो, विचलाडीजवो—कर्म वा०/भाव वा०।

विचलाडियोडो—देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलाडियोडी)

विचळाणो, विचळावो—१ देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू. भे.)

उ०—घननाद करै घमसाण घणो, विचळाय दियो दळ राम तणो। हनुमत निसाचर नाम किया, खल-ग्रद खपावण मे मुखिया। —गी रा.

२ देखो 'विचळणो, विचळवो' (रू भे)

विचळाणहार, हारो (हारी), विचळाणियो—वि०।

विचळायोडो—भू० का० कृ०।

विचळाईजणो, विचळाईजवो—कर्म/भाव वा०।

विचलाणो, विचलावो—क्रि स.—१ विचलित करना।

२ भयभीत करना।

३ तितर बितर करना बिखेरना।

४ देखो 'विचळणो, विचळवो' (रू भे)

उ०—१ धनु-भजन रो रव घोर घणो, विचलायो है मड ब्रह्माड तणो। हरि-नाभिय सू विधि जाय ढल्यो, रथ सूरज रो तज राह चल्यो। गी रा

उ०—२ अवरीस सुध्यायो, तज अपणायो, भजन सवायो, मन भायो। दुरवासा आयो श्राप डरायो, चकर चलायो, विचळायो। —भगतमाळ

उ०—३ भींव कल्याणदासोत लोहा पडतै उपडियो फौज विचळाई। —गोपालदास गौड री वारता

विचलाणहार, हारो (हारी), विचलाणियो—वि०।

विचलायोडो—भू० का० कृ०।

विचलाईजणो, विचलाईजवो—कर्म/भाव वा०।

विचलाणो, बिचलावो, बिचलावणो, विचलाववो, विचळाणो, विचळावो, विचलावणो, विचलाववो—रू० भे०।

विचळायोडो—१ देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचळायोडी)

विचलायोडो—भू का कृ —१ विचलित किया हुआ २ भयभीत किया हुआ ३ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ।

४ देखो विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलायोडी)

विचळावणो, विचळाववो—१ टकराना, आपस मे भिडना (वर्तन)।

उ०—कर करहू भाडा सासण किचळावै, वाजै भूंभाडा वासण विचळावै। चमकंता डागळ गोडा चिक चिकता, जतू जळ रिकता सिकता मे सिकता। —ऊ का.।

२ ध्वनि करना।

३ बीच मे आना।

४ देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू भे)

५ देखो विचळणो, विचळवो' (रू भे)

विचळावणहार, हारो (हारी), विचळावणियो—वि०।

विचळाविम्रोडो, विचळावियोडो, विचळाव्योडो—भू० का० कृ०।

विचळावीजणो, विचळावीजवो—कर्म/भाव वा०।

विचलावणो विचळाववो—रू० भे०।

विचलावणो विचलाववो—१ देखो 'विचलाणो, विचलावो (रू भे)

२ देखो 'विचळावणो, विचळाववो (रू भे)

३ देखो 'विचळणो, विचळवो (रू भे.)

विचलावणहार, हारो (हारी), विचलावणियो—वि०।

विचलाविम्रोडो, विचलावियोडो, विचलाव्योडो—भू० का० कृ०।

विचलावीजणो विचलावीजवो—कर्म/भाव वा०।

विचळावियोडो—भू का कृ —१ आपस मे टकराया हुआ २ ध्वनि किया हुआ ३ बीच में आया हुआ।

४ देखो 'विचळायोडो' (रू भे.)

५ देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचळावियोडी)

विचलावियोडो—१ देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विचळावियोडो' (रू भे)

३ देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलावियोडी)

विचळित, विचलित—वि [स विचलित] १ घबराया हुआ, भयभीत।

२ पदच्युत।

३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह।

४ कहकर इन्कार हुवा हुआ।

५ खराब हुवा हुआ, विकृत।

६ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ।

७ अस्थिर, डिगा हुआ, चचल।

८ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख।

विचळियोडो—भू का कृ—१ विचलित हुवा हुआ २ पदच्युत हुवा हुआ ३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह हुवा हुआ ४ कह कर इन्कार हुवा हुआ, मुकरा हुआ ५ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख हुवा हुआ ६ विकृत हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ ७ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ. ८ अस्थिर हुवा हुआ, डिगा हुआ ९ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ.

(स्त्री विचळियोडी)

विचलियोडो—देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलियोडी)

विचलौ—वि (स्त्री विचली) मध्य का, बीच का।

उ०—कितरेक भए इए दादकै, उतारी ही कायर तरणी खोल। विचलौ गिर काढी लियो, सरायो ही धणी करी किलोल। —जयवाणी

उ०—२ ओळंग थारै विचलै वीरै ने भेज, वारी घण वारी ओ हजा, चतर चोमासै, ओ राजन, घर वसो जी, म्हारा राज। विचलै वीरै के गोद झडला री जात, वारी घण वारी ओ हजा, गठजोडै से ओ जात उतारमी जी, म्हारा राज। —लो गी

उ०—३ हाली हाली मोत्या विचली लाल, कोई, काना केरा हाल्या वाळी-झटरणा, अै मोरी मइया। हाल्या हाल्या छाती परला-हार, कोई, पायलडी तौ खुडकी बिछिया वाजिया, अै मोरी मइया। —लो गी

उ०—४ विचली यात छै—देवडै विजै सूजा नै मारनै सूजा री वमी ऊपर साथ मेलियो, उठै मालो सूजा रो मरायो, वसो सारी लूटी। —नैणसी

विचलौ-वासौ—देखो 'विचलो-वासो' (रू भे)

उ० —भेला मिली सजन लै चाल्या, सीडी माय जोडी रै। विचली-वासो विचमैं लैरायो, गावड हुवै छै दोरी रै। —जयवाणी

विचवला, विचवल्ला—स स्त्री —मध्यस्यता।

उ०—वीरम तौ जोईया विचै, भ्यामै रिरणमल्ला, सावज जाणी साकडै घड कूजर घला। पला विधाता पालता-दिन कढता 'दला', वे दला अळगा रहा, करता विचवल्ला। —वी मा

विचवाळी—वि —बीच बचाव करने वाला।

उ०—इतै विचवाळी सूर अपाल, मिणधर आयो रावळ माल। सतोखै वाता वागा साय, जुदा दळ कीधा वेहू जाय। —गो रू

२ बीच का, मध्य का, मध्यस्थ।

सं पु—मध्यस्थता।

उ०—तरै भाटी कल्याणदासजी कयो थै महाराज रा कामदार छो नै भडारी रूपचदजी रा बेटा छो सो मेडतियो वदळै थानु कोइ मारा नही। इतरै बाघळ गोयदासजी आयनै कयो भडारी रतन चदजी विचवाळो करै छै ने स्रीजी री निसाण छै तरै भाटिया नुं लोथ मगाय दीनी। —रा व वि

विचा—देखो 'वीच' (रू भे)

उ०—'सैर' रा करारा वचन 'कुसलौ' सुणै, अवनीमौ 'पाल' वीरदा उजाळो। वादळा दळा नागोरा वीचा सु, अरक जीऊ भळकियो 'हरा' वाळो। —सैरसिंघ मेडतिया और कुसळसिंघ चापावत रो गीत

विचार—स पु [स विचार] १ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श करने, सोचने या सोच कर निश्चित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ पिंडत वेद पुरान कू, वाचै करै विचार। 'हरीया' औरा अकन्हि दे, आप न सुधि बुधि सार। —अनुभववाणी

उ०—२ राजा विचार करण लागी—आज धनतेरस है अर कालै रूपचवदस। आ सूनम (असाढ सुद नम) गई तौ उणनै परणिया नै पूरा तीन वरस व्हिया अर चौथौ वरस लागग्यौ।—अमरचूंनडी

उ०—३ गाम वाळा मिळनै विचार कियौ—मास्टर परदेसी पछी—आपणै गाम मे आयो है, कुण तौ इणरै पीसैला अर कुण इणरै पोवैला। —अमरचूंनडी

२ मन मे उठने वाली भावना, ख्याल, इरादा।

उ० —सावण जळहर गाज सुण, खीजै उर वर खार। जग सूं उलटा जाणणा, वाघा तणा विचार। —वा दा

मुहा —विचार मे पडणी=चिन्ता मे पडना, चिन्तायुक्त होना।

३ किसी मुकदमे की सुनवाई करने की क्रिया या सुनाई करने के बाद किया जाने वाला फैसला या निर्णय।

४ विचरने, घूमने या फिरने की क्रिया या भाव।

५ ज्ञान।

उ०—१ वहि वहि मूवा मानवी, करि करि लोकाचार। भेद न पायो भगति को हरीया विना विचार। —अनुभववाणी

उ०—२ मन तै ऊच न नीच गिन, तन तै लोकाचार। हरीया तन मन मिट गई, पाया ब्रम विचार। —अनुभववाणी

६ ध्यान देने की क्रिया या भाव, अमल करने की क्रिया या भाव।

उ०—भतीजो उण नै समझाई—इण में आप री की चूक कोनी।

भोळप मूं कीं भूल ई व्है जावै तौ भगवान इण साथै की विचार नी करै। —फुलवाडी

७ निर्माण बनावट, रचना।

उ०—· ··· राज लोक सिणगार। च्यारै प्रस्तावै चतुर, वणियौ भलौ विचार। —रा सा स

८ निर्णय, फैसला।

९ निश्चय, सकल्प।

उ०—जनवासा मे सुख सुविधा री पूरौ इतजाम हो। म्हैं स्नान ध्यान सू निपटनै कपडा पलटिया अर थोडी ताळ आराम करण री विचार कियौ। कारण कै लगन गोधूळिक हो अर उण वखत उठै म्हनै हाजर रैवणो हो। —अमरचूनडी

१० सन्देह, शका हिचकिचाहट।

रू भे—विचार, बिचारि, वीचार, वचार, विचारु, विचारौ, विच्चार।

विचारक-वि [स विचारक] १ विचार करने वाला।

२ विचरने वाला, घूमने वाला।

३ ध्यान देने वाला, अमल करने वाला।

उ०—कळा तिमगळ किता, वरण गुण दोस विचारक। पवै सिखर द्रम गुपत, किता गुण श्रोगुण कारक। —रा रू

४ निर्माण करने वाला, रचनाकर्त्ता।

५ निर्णय या फैसला करने वाला, न्यायकर्त्ता।

६ बुद्धिमान, विद्वान।

७ निश्चय या सकल्प करने वाला।

८ शका या हिचकिचाहट करने वाला, सन्देहकर्त्ता।

विचारकरता-वि [स विचारकर्त्ता] १ वह जो विचार करता हो, सोचने-विचारने वाला।

२ न्यायालय मे न्याय करने वाला, न्यायाधीश।

विचारग्य-वि [स विचारज्ञ] १ जो विचार करने मे निपुण हो।

२ अभियोग आदि की सुनवाई कर निपटारा करने वाला।

विचारचतुर-वि —जो विचार करने मे निपुण हो, बुद्धिमान।

उ०—१ प्रजानद सुखकारीउ, माइ पिता समान। विचारचतुर डाहु भलु ए, दिइ यथोचित दान। —नळदवदती रास

उ०—२ विचारचतुर डाह्या भला, डाह्या गुणवत रे। भवितव्यता तेहनइ नडइ, जे हुइ बलवन। —नळदवदती रास

विचारणीय-वि. [स] जो विचार करने योग्य हो।

विचारणो, विचारबो-क्रि स —१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार-विमर्श करना, सोचना या सोचकर निश्चित करना।

उ०—१ हियै होळी हुश्रै दीघ दुख हजारा, विचारै नित मुख सूं वाखाणै। सूरपण "जसा" महराज री जगत सिर, जिसौ है तिसौ अवरग जाणै। —नरहरदास बारहठ

उ०—२ वीर महाबळ घीर उर, सूरम सूरत घार। आवी आदर ऊठियौ, भावी सीस विचार। —रा. रू.

उ०—३ खारी मे सोगरा अर राब घरनै वो हाळिया सारू भातो ले जावण नै त्यार व्हियौ उण वगत दूजोडो कुत्तो खारी मे मूडो मारण सारू जुगत विचारण लागो। —फुलवाडी

उ०—४ ठकराणी तो आ इज चावती ही। ठाकर नै वत्ता खरावण सारू वळै पूछयौ—कौल दोरो है, राज सूं निभैला नी। पछै पलटणा विचै अवारू पाछो विचार कर लिरावौ। —फुलवाडी

२ किसी मुकदमे की सुनवाई करना या सुनवाई करने के बाद फैसला या निर्णय करना।

३ समझना, सोचना-समझना।

उ०—१ अकवर अगम अगाघ गह, तै रहिया अजतन्न। वाचे त्यूं ही विचारियौ, कमधै साचै मन्न। —रा. रू.

उ०—२ चिहु पखि दल माडी काइ ही राउ छाडी, हरखि हसीय नारी वोल बोलइ बिचारी। —सालिसूरि

४ ध्यान देना, अमल करना।

उ०—१ आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार। दादू मूळ विचारियै, तौ दूजा कौन गवार। —दादूबाणी

उ०—२ थें तो म्हारै दुख री परवा नी करो, पण म्हनै तो थारो भलो-भूडो विचारणो ई पडै। म्हारो कैणो मानो, गगाजी पाळा मत जावो, नामी बळदा री कोई गाडी भाडै करलो। —फुलवाडी

उ०—३ औरगमा पातसाह आलम कू चितारै, अकबर कै आस की चिंता ना विचारै। साह अवरग कै पास या समै आवै, सो तो मनसब रीझ इनाम मनवछ्या पावै। —रा रू

५ निर्माण करना, रचना करना।

६ निश्चय करना, सकल्प करना।

उ०—१ फज्जल सेख खुलती फज्जर, असुर घसै लागो अति आतुर। अस न खडै रिणछोड उताळो, चूरण खळा विचारै चाळो। —रा रू

उ०—२ थापना मन माहि विचारी, साघ रहै याकै पूजारी। अपणै पूजा फछुव न आवै, साध पथ कै गुरू कहावै। —मेहोजी गोदारौ थापन

७ सन्देह करना, शका करना।

उ०—राउ भणइ नइ किसउ पवारउ, हिव तुम्हि मइ सु घरि

पाउधारी। राजु तुम्हारु पूत्तू तुम्हारउ, अजीउ गयं किसु विचारउ
—सालिभद्र सूरि

८ चिन्तन करना, मनन करना।

उ०—जळ थळ महीयल पेखता, संसार सुधारैं, ब्रह्मग्यानी सो वडा, जो ब्रह्म विचारैं। कुदरती किरतार की करणी बळिहारैं, रिजक पाणी हयात मोत, उस अला सारैं। —कैसोदास गाडण

६ अनुसन्धान करना, खोज करना।

उ०—सतगुर का सिख जाणि, विचारैं ग्यान कु। तन मन सौंपे सीस, धरैं उर ध्यान कु —अनुभववाणी

१० सोचना।

उ०—१ हमैं कुंवरसी मोहला मे गयौ। सो मन न लागैं, रात दिन भरमल मैं जीव वसैं। तद वीठू रावजी नु कही, जो सावण री तीज री कोल कर आयौ छै, सो उठै गयौ रहसी। जिणसु जतन विचारणौ हुवै सु विचारौ।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ हु पण जाणू छू जो बीजो तो मैं सु पोहचा नाया। तद श्रौ धाट विचारीयौ छै, जो आवी छोहरी घर सु काडसा, उण नुं मारसा। सो हु सरब जाणू छू।—कुंवरसी साखला री वारता।

विचारणहार, हारौ (हारी), विचारणियौ—वि०।

विचारिश्रोडौ, विचारियोडौ, विचारयोडौ—भू० का० कृ०।

विचारीजणौ, विचारीजवौ—कर्म वा०।

विचारणौ, विचारवौ, वीचारणौ, वीचारवौ, वचारणौ, वचारवौ
—रू० भे०

विचारमान, विचारवान—वि [स विचारवान्] जिसमे सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो।

रू भे—विचारमान, विचारवान।

विचारसकति, विचारसकती, विचारसक्ति, विचारसगति, विचारसगती—स स्त्री. [स. विचारशक्ति] भला-बुरा पहचानने व सोचने-विचारने की शक्ति, बुद्धि।

विचारसासतर, विचारसास्त्र—स पु [स विचारशास्त्र] मीमासा शास्त्र या मीमासा दर्शन।

विचारसील—वि [स विचारशील] जिसमे सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो, विचारवान।

विचारसीलता—स स्त्री [स विचारशील+ता प्र.] विचारशील या विचारवान् होने का भाव, बुद्धिमता, अक्लमंदी।

विचारस्थळ—स पु. [सं विचारस्थल] १ वह स्थान जहा किसी विषय पर विचार किया जा रहा हो।

२ न्यायालय।

विचाराध्यक्ष—सं. पु. [स. विचार+अध्यक्ष] १ वह प्रमुख व्यक्ति जो किसी विषय पर विचार करता हो।

२ न्यायालय में किसी विषय पर विचार करने वाला प्रमुख व्यक्ति, न्यायाधीश।

विचारालय—स पु [स. विचार+आलय] १ विचार किया जाने वाला स्थान।

२ न्यायालय।

(मि —'विचारस्थळ'।)

विचारि—देखो 'विचार' (रू भे.)

उ०—१ निमुणि नारि विचारि ठा पयसियइ, प्रीय तणी तडि कडतिगि वयसियइ, सिरि पडिइ भड नइ धड धाउतइ, सुहड कोडि हणी तुम्ह राउतिइ। —सालिसूरि

उ०—२ पहिउलउ वेटउ करमदोमि बालपणि विवनउ, विभिन्न-वीरयू बीजउ कुमारु बहुगुणसपन्नउ। राउ पहूतउ सरगलोकि गगेयकुमारि, तउ लघु बधक ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि।
—सालिभद्र सूरि

विचारिका—स स्त्री —दासी, नौकरानी।

विचारित—वि —१ जिस पर विचार किया जा चुका हो।

२ जो अभी विचाराधीन हो।

विचारियोडौ—भू का कृ —१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श किया हुआ, सोचा हुआ या सोच कर निश्चित किया हुआ २ किसी मुकदमे की सुनवाई किया हुआ या सुनवाई करने के बाद फैसला या निर्णय किया हुआ. ३ समझा हुआ ४ ध्यान दिया हुआ, अमल किया हुआ. ५ निर्माण किया हुआ, रचना किया हुआ ६ निश्चय किया हुआ, सकल्प किया हुआ. ७ सन्देह किया हुआ, शका किया हुआ ८ अनुसन्धान किया हुआ, खोज किया हुआ. ९ सोचा हुआ १० चिन्तन किया हुआ, मनन किया हुआ.

(स्त्री विचारियोडी)

विचारी—स पु [स विचारिन्] १ कवध राक्षस का एक पुत्र।

स स्त्री —२ जिस पर चलने के लिए वडे वडे मार्ग वने हों, पृथ्वी।

३ देखो 'वेचारौ' (पु०)

विचारु—स पु [स] १ श्री कृष्ण और रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न दस पुत्रो मे से एक वासुदेव का पौत्र।

२ देखो 'विचार' (रू. भे)

उ०—पाचइ गाईय सुर सुरलोकि सुरवाट सिरु धूणाविया ए, महीयलै महिलीय करइ विचारु 'कवणु कीउ तपु द्रूपदिय'।
—सालिभद्र सूरि

बिचारो—१ देखो 'वेचारो' (रू. भे.)

उ०—१ नैनवा को चूक कन्हईया, मन बिचारो पाय रह्यो दुख। ग्मीलाराज करै सो पावै, रै यो तो अनोखो न्याव कन्हईया।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊवरै वचना हीण टाळो देर हुवो आधो, साघो सारी मेलगो सग्राम हेकै साथ। सोढो काज लपेटो भालाळै सतावी सूप्यो, बिचारी सु'दरा लोक वणी आ विख्यात।—बादरदांन दधवाडियो

उ०—३ हुरीया पीर परापती, तन तै दई लगाय। वेद विचारा क्या करै, बिन भुगत्या नही जाय। —अनुभववाणी

(स्त्री. बिचारी)

बिचाळ, बिचाल, बिचाळा, बिचाळि, बिचाळी, बिचाळ॰, बिचाळै, बिचाळं—देखो 'विचै' (रू. भे.)

उ०—१ चक्री बिचाळ, रघुवर बिसाळ, जपै जरूर, सुण भरथ सूर। हणमत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव किनी कपेस।
—र रू

उ०—२ बीजो निग्रह जुध जितू कोप करि नाखै, 'बीदा' ग्रास भरि घडा बिचाळ। इळ पुड तैण आकपै आहस, पनग कध रुळै पायाळ।
—गेहो मीसण

उ०—३ साथी छाडि गयो'सूजा' सुत,तिसियो लोह तरणि रिणताळ। दामणि चमकि झमकितै दुजडै, वणीयो गूजर घडा बिचाळ।
—खेतसी गाडण

उ०—४ चोथो प्रस्न रसाल रै, सुण 'केसी' स्वामी, भरी परिसदा बिचाल रै। —जयवाणी

उ०—५ परन्नैसै गया पाधरा रे साभल्यउ जेथ सुकाल। माणस सबल विण सूझा रे, मारग माहि बिचाल। —स कु

उ०—६ दावानल वलतो झलहल नीकलै झाल, बहु ग्रक्ष सघन वन बलै पसु पखी बाल। किण हीक कारण नर आयो अगि बिचाल, जिण नाम जलै अगि ओल्हायै तत्काल।
—ध. व ग्र

उ०—७ पतिसाह फउज फूटति पाळि, ग्रहमड 'जइत' गाजइ बिचाळि। अवहर जइत वरसइ अवार, धुड्‌कि़या मोर मुहि खग धार। —रा. ज. सी.

उ०—८ भागा सूर न भजई, भागा गुर नै गाळि। इणीया एकलमलडी, दोउ दळा बिचाळि। —अनुभववाणी

उ०—९ मछा मतै गुमान करि तम ही जळ का जीव। तम ऊगण हम आथवण, इती बिचाळी पीव। —अनुभववाणी

उ०—१० रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा, सीस भुजाळा सूंडाळा, घाले रत खाळा, तेण बिचाळा, पखणियाळा पोखतू।
— भगतमाळ

उ०—१० पदमणी दिलीयर होण प्रीत, साजादा फूटै रण सरीत। सूरमा लहै चवडै सभाळ, वेगमा घसै पडदा बिचाळ।
—वि ग

उ०—१२ 'मदू' ऊपर 'माधडै' वळ, मृच्छा वाळी, 'धीरम' आगळ वीरवर समसेर सभाळी। ऐकण घाव ऊडाडियो, अजडै ग्रिहॅनाळी, 'मदू' पौढै मारको, रिणखेत बिचाळी। —वी मा.

उ०—१३ अति घख क्रोध दुहू दळ आणै, जूटा ग्गा हठेहठ जाणै। घण खग गजरि जाण घडियाळा, वागी फजर कनोज बिचाळा। —सू प्र

उ०—१४ तो 'केहर' कहिजै सताव, वाइक विगताळा। कूदि पडा गज कटहडा, चढि गीत बिचाळा। —सू प्र

उ०—१५ वात बिचाळै आवियो, आसत ग्यान दिवाण। फिर अजमेर अजीमदी, तिण विच दयो कुराण। —ग रू.

उ०—१६ भूम 'वहतो' को जण भाळै, वाटवाग निक्र समद बिचाळै। कमध खडा आगै दस कोसा, दाखै कथ निरदोगा दोसा।
—रा रू

उ०—१७ हुरीया नीको ना हरू, वदी खरी हराय। दोय बिचाळै जीवडो, करणी काय न आय। —अनुभववाणी

उ०—१८ तद कुवर कही, म्हे खरळा परणीगा पछै तीज दोय बिचाळै गई। जितरै सारो साथ आण पूहतो। तद फुरमावण लागा, म्हा खरळा परणिया पछै आ तीसरी तीज छै।
— कुवरसी साखला री वारता

उ०—१९ ते ऊपरि पातिसाह अकबर वासो कियो। वि फोजा किया। मिरजै रै वासै आप पातिसाह पधारिहा। मिरजो बिहू फोजा बिचाळा अर पातिसाह रा गोडा होइ नीसरियो। —द वि.

बिचाळो—वि —१ मध्यस्थ।

स स्त्री—२ मध्यस्थता।

क्रि. वि'—बीच में से।

बिचि—स स्त्री [स] १ तरग, लहर।

२ कटि, कमर।

उ०—चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचग बिचि हीण। मदिर बोली मारुवी, जाणि भणक्की वीण —ढो. मा

३ देखो 'बीच' (रू. भे)

उ०—१ करि घड वेहड गरा केविया, हाथू कै गळवाह हिचि। हस वप हुत विछूटि हालियो, वाटियो सुरा विमाण बिचि।
—तीकमदास खिड़ियो।

उ०—उपजै प्रेम मन उलसै, वाला लागै लछिवर। माहरै रिदै बिचि मिंडिया, चरण तुहारा चक्रधर। —पी ग्रं.

उ०—३ माहव एक मरद, देव कोई ग्रौर न दीसै । लाख चौरासी जीव, परम दाढा विचि पीसै । —पी ग्र.

उ०—४ तुम मूं विचि ग्रंतर घणउ, किम करू तोरी सेव । देव न दीधि पाखडी, पणि दिल मइं तु इक देव । —स कु

उ०—५ निग्र वस चाढै नूर, करै महाजुध कूमउत । वगडी धणी विराजिग्रो, सूर सभा विचि सूर । —र. वचनिका

उ०—६ ऊभी सहु सखिए प्रससिता ग्रति, किनारथी ग्री मिळण क्रत । ग्रटत सेज द्वार विचि ग्राहुटि, स्तुति दे हरि घरि समाश्रित । —वेलि

रू भे —विचि, वीचि, विची ।

विचित, विचित्त–वि [स] १ ग्रचेत, वेहोश ।

२ ग्रानन्द-मग्न ।

उ०—राम नाम सुख सागर भरीया, चाख्या चित विचित हुय रहीया । चाखि चाखि मैं भया निहाला, पायु जै कोई पीयै पीयाला । —ग्रनुभववाणी

३ देखो 'विचत्र' (रू. भे)

उ०—वाका विचित्त पाघोर वक, ताणइ कमाण पइतीसटक । ग्रायासि पखि पाडइ ग्रमुल्ल, माकडामुख मुडा मुगुल्ल । —रा ज सी

विचित्र–वि [स] १ कई प्रकार के रगो या वर्णों वाला ।

२ ग्रद्भुत, ग्रनोखा, विलक्षण, विस्मयकारक ।

उ०—१ दूत तिहा एक ग्राविग्रो, जास वचन सुपवित्र । कर जोडी नृप ग्रागलै, मेल्हो लेख विचित्र । —वि कु

उ०—२ जिनवर दीधी देसना, विचित्र प्रकार ना भावी जी । ग्रागार नै ग्रणगार नो, चतुरा सुण्यो धरि चावी जी ।—जयवाणी

३ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—१ प्रजक ग्रोप तै ग्रनोप रूप चूंप पार मे, हुए विछात सूळि लूव झूल फूल हार में । ग्रनूप ताक गोख लोयविचित्र चित्र सूं ग्रटा, घणू उतग ग्रग जाणि स्रग मेघ की घटा । —रा रू

उ०—२ तठा उपराति राजान सिलामति तिण राजान कुंग्रर राजाउत माल्ह ठाकर रै च्यार पटराणी छै । नाम मिणगार सुदरी सोभाग सुदरी, सरूप सुदरी, मदन सुदरी। मात्यात देवागना पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गगा सरसती री ग्रवतार वारह ग्राभूखन विराजमान हुग्रा छै । —रा सा स

४ चतुर, वुद्धिमान, होशियार ।

उ०—मदिरतरि किया खिणतरि, मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत । कीधै तिणि वीरग्ह ससक्रित, करण सु तणु रति समक्रत । —वेलि

स. पु —१ रौच्य मुनि के कई पुत्रों में से एक पुत्र का नाम । (पुराण)

२ देवसार्वाणि मनु के पुत्रो में से एक पुत्र ।

३ महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष का एक राजा, जो क्रोधवश नामक दैत्य के ग्रग से उत्पन्न हुग्रा था ।

४ धर्मराज (यम) का एक लेखक ।

५ एक प्रकार का ग्रर्थालकार, जिसके द्वारा किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है ।

६ मुसलमान, यवन ।

उ०—१ सेना सितर हजार सू, विचित्र ग्रमित्र बळवान । कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखान । —रा रू.

उ०—२ इण पर तहवर खान ग्रछायो, विचित्र हुवो लडता रस वायो । सिर हिंदवाण तणौ रीसायो, 'ग्रोरग' पीठ लगे हिज ग्रायो । —रा. रू

उ०—३ वात हुई ग्रीखम वोळाई, ऊपर धुर वरखा रुत ग्राई । ग्रसतखान उर थयो ग्रचीतो, विचित्रा तणो सोच सुण वीतो । —रा रू

उ०—४ विचित्रा ग्रादर दाख वमेक, ग्रापै दोय तेग ग्रनै ग्रस एक ईखै ग्रस सुद्रव चीज ग्रथाळ, 'मालावत' लोभ धरै जगमाल । —गो रू

उ०—५ वेसै विचित्र सिंदूर ग्रग्र, कूडी कपाळ के छाज कग्र । कही करगि वाचइ कुराण, मुसकीण मुला के मुसळमाण । —रा. ज. सी

रू भे –विचित्र, वचत, वचत्र, विचत्र, विचित, विचित्त, विचित्राण, विचित्रायळ, विच्यत्रि ।

विचित्रता–स स्त्री [स. विचित्र+ता, प्र] विचित्र होने की ग्रवस्था या भाव ।

उ० —मित्रता मिळापी मेळ प्रीति की पवित्रता ज्यौं, विविध विचित्रता विधान वडप्पन कै । रहन ग्रनोखी रीति सहन स्वभाव सीधो, कहण सुणण कथा यथा तौर तन कै । —ऊ का.

रू भे —विचित्रता ।

विचित्रवीरज, विचित्रवीरय, विचित्रवीरयु, विचित्रवीरय्य–स. पु. [स. विचित्रवीर्य] १ चद्रवशी राजा शातनु का सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र जिसका विवाह काशीराज की राजकुमारिया ग्रविका एव ग्रवालिका के साथ हुग्रा था । (महाभारत)

उ०—१ पहिलउ वेटउ करमदोसि वालप्पणि विवनउ, विचित्रविरयु वीजउ कुमारु वहुगुणसपन्नउ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अत्रानदणु विदुरु नामु नामि जि सरीखउ, खइ खीणइ पुणु विचित्रविरयु पट्टु राजि प्रतीठिउ। —सालिभद्र सूरि

वि वि —यह चित्रागद का कनिष्ठ भ्राता था। चित्रांगद गधर्व युद्ध मे मारा गया, इसलिए भीष्म ने इसे राजगद्दी पर बैठाया। भीष्म ने काशीराज की कन्याएँ अबा, अबिका एव अबालिका को स्वयवर में जीत लिया एव उनका विवाह इससे करना चाहा। किन्तु उनमे से अबा ने इससे विवाह करने से इन्कार कर दिया। शेष दोनो राज- कुमारियो अबिका एव अबालिका के साथ इसका विवाह हो गया। असयमपूर्ण जीवन के कारण, यह राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, एव अल्पवय मे ही अनपत्य अवस्था मे इसकी मृत्यु हुई। इसकी मृत्यूपरान्त भीष्म ने अबिका एव अबालिका को नियोग-पद्धति से सतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी। तदनुसार सत्यवती के कौमार्यावस्था के पुत्र कृष्णद्वैपायन (व्यास) से अबिका एव अबालिका के क्रमश धृतराष्ट्र एव पाण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुए और अबिका की दासी से विदुर उत्पन्न हुआ। धृतराष्ट्र जन्माध एव पाण्डु का रग पीला था।

२ एक शिव भक्त, जो शिव की उपासना के कारण जीवनमुक्त हुआ था।

३ वीर भद्र नामक एक शिवगण, जिसने दक्षयज्ञ का विध्वसन किया था।

वि वि —यह चित्रागद(गधर्व)का पुत्र था जो पूर्वजन्म मे एक विधवा ब्राह्मणी तथा चाडाल का पुत्र था, पर अनायास शिवरात्रि व्रत के करने से चित्रागद का पुत्र हुआ। जन्मान्तर मे शिवसायुज्य को प्राप्त हो कर यही शिवगण वीरभद्र हुआ। (यह शातनु के पहले की बात है।)

विचित्रसाळा—स स्त्री [स विचित्रशाला] जहां अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थो का सग्रह हो, अजायबघर।

विचित्राण—देखो 'विचित्र' (६) (रू भे)

उ०—कमधज्ज सकज्जा कारणा, कळा भुजा मापै कवण। विचित्राण धणी इम विग्रहै, गहियो किर पडतो गयण।

—रा रू

उ०—२ विचित्रांण निवड घड महण वेळ, मुरधरां हुय नजर मेळ। —रा रू

विचित्रा—स. स्त्री —भैरव राग की एक रागिनी। (सगीत)

विचित्रायळ—देखो 'विचित्र' (६) (रू भे)

उ०—कलमी अस देवळ देण कीयू, लोवडी प्रतपाळ यूं रावै लियूं। विचित्रायळ लूटत धार वळा, रन माभळ म्है धन वाळ रुळा।

—पा. प्र

विचित्रित—वि [स] १ विभिन्न प्रकार के रगो से वचित्रित, रग-विरगा।

२ अनोखा, अद्भुत।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य, आरण्य-रुदन वत भी अयोग्य। प्रिय जाट पुत्रि यत प्रस्नपेस, पितु कति पपीलिका बिल प्रवेस। —ऊ का

रू भे—विचित्रित

विची—१ देखो 'विचि' (रू भे.)

२ देखो 'बीच' (रू भे)

विचेत—देखो 'वेचेत' (रू भे)

विचेतन—वि [स] १ जिसमे चेतना न हो, विवेकहीन, बेहोश।

२ जिसमे जीव न हो, जीवरहित, मृत।

विचेटियौ—देखो 'बिचेटियौ' (रू. भे)

विचेतस—स पु [स] भव्य देवो मे से एक

विचेरण—क्रि वि —मध्य मे, बीच मे।

उ०—क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर। जनहरिया माळा फिरै, विना विचेरण मेर —अनुभववाणी

विचेस्ट—वि [स विचेष्ट] जो किसी प्रकार की चेष्टा न करता हो, निश्चेष्ट।

विचै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ अवखास विचै वाणास आछटै, कहर 'पदम' धमजगर करि। 'मोहण'-मरण किया मारहथ, अेकण घाय छ-ट्रूक अरि।

—पदमसिघ करणसिघोत राठोड री गीत

उ०—२ दिन ३ गढ नू ढोवो हुवो। पछै गढ माहिला रा प्राण छूटा। पछै रा गोपाळदास, रा. वीठळदास, रा. नाहरखान विचै रावळ सवळसिघ, भाटी रामसिंघ पचाइणोत फेर नै बात कीवी।

—नैणसी

उ०—३ खगार पण मोटो हुवो। वरस २० तथा २२ माहे हुवो। साहबी समाही। तरै साथ करनै रावळ नै या विचै सीव नदी छै, तठै आयो। पैली कानी सूं रावळ माणस हजार सात-आठ सूं आयो। —नैणसी

उ०—४ सवार हुवै वळै वेढ हुवै। यूं वारै वरस वेढ कीवी। आसापुरा देवी विचै दी नै लोपी, तिण सू दिन दिन रावळ नू हार आवती जाइ। —नैणसी

उ०—५ विचत्रा रज धू धर विचै, ऊला कीध प्रमाण। बहुरगी चीया लखी, 'अवरगी' नीसाण। —रा रू.

उ०—६ गावड जाणे खरादी खराद रतारी छै। कमळ नाळसी वाहा लाल चूडो वणिग्रो छै। विचै सोव्रन चूडो विराज रही छै। —रा सा स.

मुहा —विचै देणौ=(१) शपथ लेना, सोगन लेना।

(२) मध्यस्थ करना।

विच्चखण—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

उ०—वीर विच्चखण कीत तणौ वर, ढाहण खाग ग्ररिंदा ढूको। 'नाथ' तणौ सुरतेस नमै नर, चित ठीक नही कुळ रीत न चूको। —सूरतसिंह चहुवाण रो गीत

विच्चार—देखो 'विचार' (रू. भे)

उ०—पातसाह ग्राळोज, मन्न विच्चार विमासै। बळ छळ दळ दक्खवै, पाण विन्नाण कळासै। —गु रू व

विच्छवान—देखो 'विछियो' (रू. भे)

उ०—सुरंग रंगभोमि में तरग है न तान की, ढमक ढोलकी न त्यू घमक घुग्घरान की। छमक विच्छवान की दमक ना दरीन की, झमक जेहुरान की चमक ना चुरीन की। —ऊ का

विच्छाय, विच्छाया—स. पु [स वि+छाया] १ पक्षियो की छाया।

[स वि.=विगत+छाया] २ वह जिसकी छाया नही पडती हो, भूत, प्रेत, देवता, दानव ग्रादि।

वि [स वि=रहित+छाया=कान्ति] कान्तिहीन, चमकरहित।

विच्छिग्र—स पु [स वृश्चिक] विच्छू।

विच्छिण, विच्छिण्ण—वि [स. विस्तीर्ण] १ फैला हुग्रा, विस्तृत।

२ देखो 'विच्छिन्न' (रू भे)

विच्छित्ति, विच्छित्ति—स स्त्री [स विच्छित्ति] १ काट कर ग्रलग करने की क्रिया या भाव, टुकडे करने की क्रिया या भाव।

२ कविता में या वेशभूषा ग्रादि में होने वाली लापरवाही या बेढंगापन।

३ स्त्री द्वारा थोडे शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा का साहित्य में एक भाव।

४ साहित्य का चमत्कार।

५ एक स्वाभाविक ग्रलकार विशेष जिसके ग्रनुसार माला, वस्त्रा-भूषणादि के ग्रस्तव्यस्त धारण करने से सौन्दर्यवृद्धि ग्रौर मतान्तर मे कान्ति के पोषक किंचित् रचना-कलाप।

रू भे.—विच्छिति, विच्छित्ति।

विच्छिन, विच्छिन्न—वि. [स विच्छिन्न] १ जुदा, पृथक, ग्रलग।

२ जिसका विच्छेद हुग्रा हो।

३ समाप्त किया हुग्रा।

विच्छु—१ देखो 'विच्छू' (रू भे)

२ देखो 'विछू' (रू भे)

विच्छुडणौ, विच्छुडवौ—देखो 'विछूटणौ, विछूटवौ' (रू. भे)

उ०—पडी विच्छुडी दाडमी जाणि पक्की, दिपै ग्रारपारा हजारा दरक्की। वधै ग्रग्र सूरा 'ग्रभौ' खग्ग वाहै, सुतो वाह सी वाह चडी सराहै। —रा रू.

विच्छुडणहार, हारौ (हारी), विच्छुडणियौ—वि०।

विच्छुडिग्रोडौ, विच्छुडियोडौ, विच्छुडयोडौ—भू० का० कृ०।

विच्छुडीजणौ, विच्छुडीजवौ—भाव वा०।

विच्छुडियोडौ—देखो 'विछूटियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छुडियोडी)

विच्छुडी—देखो 'विच्छुडी' (रू भे)

विच्छुडौ—देखो 'विच्छू' (ग्रल्पा, रू. भे.)

(स्त्री. विच्छुडी)

विच्छू—देखो 'विच्छू' (रू भे)

विच्छूडौ—देखो 'विच्छू' (ग्रल्पा, रू भे)

(स्त्री विच्छूडी)

विच्छेद—स पु [स विच्छेद] १ छेद कर या काट कर ग्रलग करने की क्रिया।

२ बीच मे ही किसी क्रम के टूट जाने की क्रिया या भाव।

३ नाते या रिश्तों को तोडने की क्रिया।

४ किसी प्रकार ग्रलग या टुकडे टुकडे करने की क्रिया।

५ ग्रध्याय, परिच्छेद या कविता मे यति।

रू. भे.—विच्छेद, विछेद, विछेद।

विच्छेदक—वि [स] १ काट कर ग्रलग करने वाला।

२ नाते-रिश्ते तोडने वाला।

३ विभाग करने वाला।

विच्छेदण—स पु [स.] काट कर या छेद कर ग्रलग करने की क्रिया।

रू भे—विच्छेदन।

विच्छेदणौ, विच्छेदवौ—क्रि स —१ छेद कर या काट कर ग्रलग करना।

२ नाते-रिश्ते तोडना।

३ किसी प्रकार ग्रलग-ग्रलग या टुकडे टुकडे करना, विभक्त करना।

४ छोडना, मुक्त करना।

५ खोलना।

६ बीच मे ही किसी क्रम को तोड देना।

विच्छेदणहार, हारौ (हारी), विच्छेदणियौ—वि०।

विच्छेदिग्रोडौ, विच्छेदियोडौ, विच्छेदयोडौ—भू० का० कृ०।

विच्छेदीजणौ, विच्छेदीजवौ—कर्म वा०।

विच्छेदणौ, बिच्छेदवौ, विछेदणौ, विछेदवौ, वच्छेदणौ, वच्छेदवौ, वछेदणौ, वछेदवौ, विछेदणौ, विछेदवौ—रू० भे०।

विच्छेदन—देखो 'विच्छेदण' (रू भे)

विच्छेदियोडौ—भू. का. कृ —१ छेद कर या काट कर ग्रलग किया

हुआ. २ नाते-रिश्ते तोडा हुआ ३ किसी प्रकार अलग-अलग या टुकडे-टुकडे किया हुआ, विभक्त किया हुआ. ४ छोडा हुआ, मुक्त किया हुआ. ५ खोला हुआ. ६ बीच मे ही किसी क्रम को तोडा हुआ।

(स्त्री. विच्छेदियोडी)

विच्छेदी-वि. [स विच्छेदिन्] छेद कर या काट कर अलग करने वाला।

विच्छोडणो, विच्छोडबो—देखो विछोडणो, विछोडबो' (रू. भे)

विच्छोडणहार, हारो (हारी), विच्छोडणियो—वि०।
विच्छोडिग्रोडो, विच्छोडियोडो, विच्छोड्योडो—भू० का० कृ०।
विच्छोडीजणो, विच्छोडीजबो—कर्म वा०।

विच्छोडियोडो—देखो 'विछोडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विच्छोडियोडी)

विच्छोटणो, विच्छोटबो—देखो विछोडणो, विछोडबो' (रू भे)

विच्छोटणहार, हारो (हारी), विच्छोटणियो—वि०।
विच्छोटिग्रोडो, विच्छोटियोडो, विच्छोट्योडो—भू० का० कृ०।
विच्छोटीजणो, विच्छोटीजबो—कर्म वा०।

विच्छोटियोडो—देखो 'विछोडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छोटियोडी)

विच्छोह—देखो 'विछोह' (रू भे.)

उ०—मित्र अनइ मित्रह नी घरणी हुतउ अधिकउ मोह। कुणहि कु बोलइ माहोमाहि कीधउ वाग विच्छोह। —हीराणद सूरि

विच्छोहणो, विच्छोहबो—देखो 'विछोहणो, विछोहबो' (रू. भे)

उ०—घरा मोर खेगा खुरा जोर धूजे, मरे वग्ग विच्छोहिया ग्रग मूजे। हमल्लां ग्रसा सेस चा सीस हल्ले, दिसा अग्र वाजू सकाजू दहल्ले। —रा रू.

विच्छोहणहार, हारो (हारी), विच्छोहणियो—वि०।
विच्छोहिग्रोडो, विच्छोहियोडो, विच्छोह्योडो—भू० का० कृ०।
विच्छोहीजणो, विच्छोहीजबो—कर्म वा०।

विच्छोहियोडो—देखो विछोहियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विच्छोहियोडी)

विच्यत्रि—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—ग्रम्हारी सासू तणु सणगार वरणवू, पणि कसिउ एक छि जे सासू तणु सणगार? करि ककण सोवरणमि चूडी, रूपइ रभा ग्रनि रूग्रडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउलिहार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणा तणु झमकार, ' । —व. स

विछडणो, विछडबो-क्रि स —१ मारना, सहार करना।

उ०—जद जावे रे जद जावे, झठ सेस गयो समझावे। रे मीत नचित हुवो कपराजिद, याद हरी नह आवे। तोरो वीर विछडे तीरा, या गत सो हिव थावे।—र० रू०

२—देखो 'विछोडणो, विछोडबो'—रू. भे.

विछडणहार, हारो (हारी), विछडणियो—वि०।
विछडिग्रोडो, विछडियोडो, विछड्योडो—भू० का० कृ०।
विछडीजणो, विछडीजबो—कर्म वा०।

विछडियोडो—भू का कृ.—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ।

२ देखो 'विछोडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विछडियोडी)

विछड़णो, विछडबो—देखो 'विछुडणो, विछुडबो' (रू भे.)

उ०—१ सतगुरु मिल्या सहज घर पाया, विछड्या हस मिळाया। उलटा सहज आपमें मिळग्या, पद निरवाणी पाया।

—लोहरिरामजी महाराज

उ०—२ तठा उपरात करिने राजान सिलामति सिकारी ठौड पहाडा री पालती वना रा झगार मिळिने रहिया छै, जांणे घणा दिना रा विछडी मीत मिळै तिण भाति रा रूख मिळि नै रहिया छै —रा. सा स.

उ०—३ सुंदर ग्राठै मुळकती, झभी महला रै माह। इण उणियारै लोयणा, निरख्यो नवला नाह। रहो रहो वलहा विछडो मत इण वार। —जयवाणी

विछडणहार, हारो (हारी), विछडणियो—वि०।

विछडिग्रोडो, विछडियोडो, विछड्योडो—भू० का० कृ०।

विछडीजणो, विछडीजबो —भाव वा०।

विछडाणो, विछडाबो—देखो 'विछुडाणो, विछुडाबो' (रू भे)

विछडाणहार, हारो (हारी), विछडाणियो—वि०।

विछडायोडो—भू० का० कृ०।

विछडाजईणो, विछडाईजबो—कर्म वा०।

विछडायोडो—देखो 'विछुडायोडो' (रू भे)

(स्त्री विछडायोडी)

विछडावणो, विछडावबो—देखो 'विछुडाणो, विछुडाबो' (रू भे)

विछडावणहार, हारो (हारी), विछडावणियो—वि०।
विछडाविग्रोडो, विछडावियोडो, विछडाव्योडो—भू० का० कृ०।
विछडावीजणो, विछडावीजबो—कर्म वा०।

विछडावियोडो—देखो 'विछुडायोडो' (रू भे.)

(स्त्री विछडावियोडी)

विछडियोडो—देखो 'विछुडियोडो' (रू भे)

(स्त्री बिछड़ियोडी)

बिछटणो, बिछटबो—१ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू. भे)

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, बिछट्यौ बिखमी वार। कोधी नारायण कहै, पुत्तर हेत पुकार। —ह र.

२ देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो (रू. भे.)

उ०—अैसै छाया बिरख सु, हरीया रही लपटि। जैसे माया ब्रह्म सु, कैसे जाय बिछटि। —अनुभववाणी

बिछटणहार, हारौ (हारी), बिछटणियौ—वि०।

बिछटिओडौ, बिछटियोडौ, बिछट्योडौ—भू० का० कृ०।

बिछटीजणो, बिछटीजबो—भाव वा०।

बिछटियोडौ—१ देखो 'बिछूटियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बिछटियोडी)

बिछट्टणो, बिछट्टबो—१ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू भे.)

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडा भालोड करत भभार। एकूकी मूठ बिछट्ट असख, परै सर फूटे कोरी पख। —गु रू. ब.

२ देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो' (रू भे)

बिछट्टणहार, हारौ (हारी), बिछट्टणियौ—वि०।

बिछट्टिओडौ, बिछट्टियोडौ, बिछट्टयोडौ—भू० का० कृ०।

बिछट्टीजणो, बिछट्टीजबो—भाव वा०।

बिछट्टियोडौ—१ देखो 'बिछूटियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बिछट्टियोडी)

बिछण-स. पु—दूध दूहते समय, दूध देने वाले पशु के स्तनो को धोने के लिए, दूध दूहने के बर्तन में, ले जाया जाने वाला पानी।

रू भे—निछण।

बिछणो, बिछबो—देखो 'बिछणो, बिछबो' (रू. भे)

उ०—हाथ पग मिटी सू उजळा कीजै छै। कुरळा कीजै छै। सिझ्यावादण री वखत हुवो छै, वनाती आसण बिछै छै। पीतळ रा भरत रा धूपिया आगै आण मेलजै छै। —रा सा स

बिछणहार, हारौ (हारी), बिछणियौ—वि०।

बिछिओड़ौ, बिछियोडौ, बिछयोडौ—भू० का० कृ०।

बिछीजणो, बिछीजबो—भाव वा०।

बिछरणो, बिछरबो—१ देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो' (रू. भे)

उ०—१ सखि आरति चिंता अपहरइ, बिछरचा वाल्हेसर मेलइ रे। रोग सोग गमाडइ कीनर, दुसमण नइ ठेलइ रे। —स. कु.

उ०—२ काहे कू अखिया लगाई नटनायक। समज मिजाल रूप मन मोह्यो, मिळी बिछरै दुखदायक। —रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'विचरणो, विचरबो' (रू भे)

३ गमन करना, चलना-फिरना।

उ०—३ जम गुरु जग देव भेव कोई विरळा पावै, रहै सरण जो जीव बहुर भव जळ नहीं आवै। विस्णु रूप अवतार परगट पोहमी मे आए, सतजुग बिछरै जीव उनकूं ग्यान चिताए। —कोल्हजी चारण

बिछरणहार, हारौ (हारी), बिछरणियौ—वि०।

बिछरिओडौ, बिछरियोड़ौ, बिछरयोडौ—भू० का० कृ०।

बिछरीजणो, बिछरीजबो—भाव वा०।

बिछरियोडौ—१ देखो 'बिछुड़ियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'विचरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बिछरियोडी)

बिछळणो, बिछळबो—क्रि स—१ साफ करना, धोना।

२ देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू. भे)

बिछळणहार, हारौ (हारी), बिछळणियौ—वि०।

बिछळियोड़ौ, बिछळियोडौ, बिछळयोडौ—भू० का० कृ०।

बिछळीजणो, बिछळीजबो—कर्म वा०/भाव वा०।

बिछळाणो, बिछळाबो—१ देखो 'विचलाणो, विचलाबो' (रू भे)

उ०—नार घर की दे रही तानो, राज नै लिखती परवानो। जावता समझाया थानै, फेर मन बिछळाया क्यानै। —लो. गी

२ देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू भे.)

बिछळाणहार, हारौ (हारी) बिछळाणियौ—वि०।

बिछळायोडौ—भू० का० कृ०।

बिछळाईजणो, बिछळाईजबो—कर्म/भाव वा०।

बिछळायोडौ—१ देखो 'विचलायोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'विचळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बिछळायळोडी)

बिछळियोडौ-भू का कृ—१ साफ किया हुआ, धोया हुआ।

२ देखो 'विचळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिछळियोडी)

बिछवाणो, बिछवाबो-क्रि स. [बिछाणो, बिछाबो क्रि का प्रे रू] बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाना।

उ०—तब दूसरे रोज रघुनाथसिंघ नै दरीखाना बणाया, रजवाड़ का मुरतब और दस्तूर सब जणाया। पुराणीसी बिछायत गादी बिछवाई, फाटोसी मसनद रखी पिछवाई। —दुरगादत्त बारहठ

बिछवाणहार, हारौ (हारी), बिछवाणियौ—वि०।

बिछवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछवाईजणौ, बिछवाईजवौ—कर्म वा० ।

बिछवायोडो–भू का कृ.—बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाया हुआ ।
(स्त्री बिछवायोडी)

बिछवावणौ, बिछवाववौ–क्रि स (बिछाणौ, बिछावौ क्रि का प्रे रू) किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराना ।

उ०—उपवन करि अति ग्रेह उसीरा, नोख गुलाब छड़क घण नीरा । जळ गुलाब वेळ्का जमावै, विमळ पटी सीतळ बिछवावै ।
—सू प्र

बिछवावणहार, हारो (हारी), बिछवावणियौ—वि० ।

बिछवाविग्रोडो, बिछवावियोडो, बिछवाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बिछवावीजणौ, बिछवावीजवौ—कर्म वा० ।

बिछवावियोडो–भू का. कृ —किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराया हुआ ।
(स्त्री. बिछवावियोडी)

बिछवौ—१ देखो 'बिछवौ' (रू भे)
२ देखो 'बिछोह' (रू भे)

उ०—मरजो रै राईका, थारोडी जी नार, सैणा री बिछवौ दुसमी पाडियो, जी म्हारा राज । —लो गी

बिछहो—देखो 'बिछोह' (रू भे)

बिछाणौ, बिछांनो—देखो 'बिछाणौ' (रू भे)

उ०—इळा पिंगळा नाडी मिळकर, सुखमनि किया बिछांनो । अरस परस पीया सु खेली, मगना भई दिवानी । —अनुभववाणी

बिछाइत—देखो 'बिछायत' (रू भे)

उ०—१ तठा उपराति करिनें राजान सिलामति उवा हमामा महला बाहरि बाग-बगीचा रा रसता लागा छै । चोकीए बिछाइत वणी छै । पाखती जळ कूल छूटि नै रही छै । —रा सा स.

उ०—२ घणं मगाय पान तावोल रा रस लीजै छै । ऊजळी सपेत बिछाइत ऊपरे ऊजळै वणाव किया ऊजळी रुसनाई लाग रही छै । इण भाति स हेमत रित माहि रात रा सुख विलास माणीजै छै । —रा सा स

बिछाणौ, बिछावौ—देखो 'बिछाणौ, बिछावौ' (रू. भे)

उ०—१ चौकी रूप पिलग चढाए, विमळ पुहप घण सेज बिछाए । सेझ पहुप प्रफुलित इम सोहै, मदन वसत इद्र मन मोहै । —सू प्र

उ०—२ जनहरीया चढि ग्यान गज, जाजम अधर बिछाय । जगत सरूपी कूकरा, भुसळि मरो भसि जाय । —अनुभववाणी

उ०—३ हरीया अपनै पीव सु, सूती सेझ बिछाय । जो राखै मन ग्रौर सु, तो बिभचार कहाय । —अनुभववाणी

उ०—४ एक बोलै करडा बोल ए, सेद उपजाय सटकै दे गोल ए । मार्ग दूजा कनै जाय ए, तरै गिदरो देवै बिछाय ए ।
—जयवाणी

उ०—५ जिकै दिगपाळ रजपूत सामत अजानबाह ठाकुर अडाबीड दरवारै आइ खडा रहिया छै । दरबार दुलीचा बिछाइजै छै । —रा. सा. स.

बिछाणहार, हारो (हारी), बिछाणियौ—वि० ।

बिछायोडो—भू० का० कृ० ।

बिछाइजणौ, बिछाइजवौ—कर्म वा० ।

बिछात, बिछाति, बिछायत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ अजक ओप तें अनोप रूप धूप पार मे, हुए बिछात झूलि लूब-झूल फूल हार मे । अनूप ताक गोख स्री-विचित्र चित्र सू अटा, घणू उतग अग जाणि स्याम मेघ की घटा । —रा रू

उ०—२ सह बैठत जान बिछात सरै, वकियो सुत सारग पूरव रै । विप सोध जडा वसु वासव मैं, वरतै मुख वायक आसव मैं ।
—पा प्र.

उ०—३ जिकै दिगपाळ रजपूत सामत अजानबाह ठाकुर अडाबीड दरवारै आइ खडा रहिया छै । दरवार दुलीचा बिछाइजै छै । बिछात वणि नै रही छै । दरबार वणियो छै । —रा. सा स.

उ०—४ तठै विलाइत री गथी घटाइ अमोलक बिछाइ रही छै । तिण ऊपरि वैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरै ढोलिया गिलमा री बिछाति वणिनै रही छै । —रा. सा स

उ०—५ बिछायत पर बैठै, सरव ही कवीसर, अवरी का केद, जिसकूं सरस्वती का वर । जिस बिछायत पर, थटाव चरचा कै थहै । और भी कवीसुरा नै, क्या क्या ग्रथ कहै । —वा दा.

उ०—६ अवदुल्ला उर मडळ आयत, वणी मिळण कज सौज बिछायत । सैदा मिळण लिया दळ साजा, रीझै गयो [अजो] महाराजा । —रा रू

बिछायतु–स पु —बिछाने का वस्त्र ।

बिछायोडो—देखो 'बिछायोडो' (रू भे)
(स्त्री बिछायोडी)

बिछाळ, बिछाल—देखो 'बिसाल' (रू भे)

उ०—छाड्यो नयर बिछाल छो, छाडचा साभरि का रिणवास । येक वलावै वाहुड्या, नाह उतरीगो नदीय बनास । —बी दे

बिछावण, बिछावणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे)

उ०—२ वसत रै विखै स्रीकस्ण रै घर पुहुप ही का छै । ओढणा बिछावणा परिण पुहपा ही का छै । पुहपांहि कै हीडोळै स्रीकस्ण हीडद छै । सखी छै सो भी सव पुहपा माहै छै । —वेलि टी.

उ०—२ विधि सूं करी विछावणा, विच मैं मेल्यो थाल । भोजन की वेला हुई, ग्राय वैठो भूपाल । —जयवाणी

उ०—३ तठा उपरायत जाजमा गिलमा रा विछावणा हुयनै रह्या छै। ऊपरा गदरा चादरणी विछायजै छै। —रा. सा स.

उ०—४ ज्या रै खाख विछावणो, ग्रोढण नूं ग्राकास । ब्रह्म पोख सतोख वित, पूरण सुख त्या पास । —बा दा.

विछावणो, विछावबो—देखो 'विछाणो, विछावो' (रू भे.)

उ०—१ हिवकै गाढ घणो करै। जीमै मत ही । ग्रर तू जोर घातै, म्हारी वहू हु लेनै जाइस्यु। ग्रर जै न मेल्है तो लाकडी वहाडै। पिण वहू विगर लीया घर मता ग्राए। ग्राच विछाई ग्रर कहु छु। —कावळी जोईयो नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ एक दिन रजपूत राजा री कुवर वरस ५६ री हुतो, तिकै नु रामति लगाईनै डेरै लायो। ग्राणि कुंवर नुं नै ढोलियो विछाई विछावणा करि कुंवर नु वैमाणियो। —वाप री सीख री वात

उ०—३ देव तेरी वाटडिया वलि जाय, जाह म्हारो साई सतगुर ग्राविये । पगि पगि घरू तवोल, वाटडिया म्हारै गुर कै फूल विछाविये। —ऊदोजी नैण

विछावणहार, हारो (हारी), विछावणियो—वि० ।

विछाविग्रोडो, विछावियोडो, विछाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विछावीजणो, विछावीजवो—कर्म वा० ।

विछावियोडो—देखो 'विछायोडो' (रू भे)

(स्त्री विछावियोडी)

विछिग्रो—देखो 'विछियो' (रू भे)

उ०—पग री राती पींडी।खालिमी कूतरा री जीभ सारिखी, लाल कमळ चरण जावक महिदि रग सूं विराज रहिग्रा छै। पग ग्रगुळी राईवेलि री कळी हीरा सा नख ग्रारीसा ज्यों भाखि रहिग्रा छै। ऊपरै ग्रणोट पोल पावटा विछिग्रा री वणाव वणि नै रहिग्रो छै। —रा सा स

विछियोडो—देखो 'बिछियोडो' (रू भे)

(स्त्री विछियोडी)

विछियो, विछीयो—देखो 'विछियो' (रू भे)

उ०—१ वाजन लागे ग्राज मनमोहनी, मधुर धुन नूंपर विछिया किंकनी। चमकन लागे चीर जरी कै, सीसफूल नथ सोहनी । —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ छुद्रघटा विछियों का छूटै छणछणाव, ज्यो हस वच्चो की वाणी का वणाव। जाभरू का भणकार व्है जोरे पर जोर, सावण कै मौसम ज्यों भिल्ल्या का सोर —रा सा. स

उ०—३ सती माता, तेरा विछिया रागी, घडिया छै मगळ वारा जी। ग्रेक ज वार ज पैरिया, राणी, लीना छै वामण्या उतार जी । —लो गी

उ०—४ चोहटै माहे नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहण-हार मोळैं मिगगार ठविया थका फूला रा चोस पैहरिया थका टोय ग्रणियाळा काजळ ठासिया थका वाका नैणा री भोक नाग्ती पायलै रै ठमकै सूं घूघरै रै घमकै मूं विछीया रै छमकै सूं रमभोळ करती ग्रगूठा मोडती नखरा करती वाजारि चाली जाए छै । —रा सा म

उ०—५ भूखण जाणि भुजग सा, चउकी चाक समान । वीछु सम ए विछिया, सिज्या ग्रगनि समानो रे। —प. च चौ

विछुडणो, विछुटवो—देखो 'विछुडणो विछुडवो' (रू भे)

विछुडणहार, हारो (हारी), विछुडणियो—वि० ।

विछुडिग्रोडो, विछुडियोडो विछुडयोडो—भू० का० कृ० ।

विछुडीजणो, विछुडीजवो—भाव वा० ।

विछुडाडणो, विछुडाडवो—देखो विछुडाणो, विछुडावो' (रू भे)

विछुडाडणहार, हारो (हारी), विछुडाडणियो—वि० ।

विछुडाडिग्रोडो, विछुडाडियोडो, विछुडाडयोडो—भू० का० कृ० ।

विछुडाडीजणो, विछुडाडीजवो—कर्म वा० ।

विछुडाड़ियोडो—देखो 'विछुडायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विछुडाडियोडी)

विछुडाणो, विछुडावो—देखो 'विछुडाणो, विछुडावो' (रू भे.)

विछुडाणहार हारो (हारी), विछुडाणियो—वि० ।

विछुडायोडो—भू० का० कृ० ।

विछुडाईजणो, विछुडाईजवो—कर्म वा० ।

विछुडायोड़ो—देखो विछुडायोडो' (रू भे)

(स्त्री विछुडायोडी)

विछुडावणो, विछुडाववो—देखो 'विछुडाणो, विछुडावो' (रू भे)

विछुडावणहार, हारो (हारी), विछुडावणियो—वि० ।

विछुडाविग्रोडो, विछुडावियोडो विछुडाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विछुडावीजणो, विछुडावीजवो—कर्म वा० ।

विछुडावियोड़ो—देखो 'विछुडायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री विछुड़ावियोडी)

विछुडी—देखो 'विच्छुडी' (रू भे)

विछुडो—देखो 'विच्छू' (ग्रल्पा, रू भे) (स्त्री विछुडी)

विछुटणो, विछुटवो—देखो 'विछूटणो, विछूटवो' (रू. भे)

विछुटणहार, हारो (हारी), विछुटणियो—वि० ।

विछुटिग्रोडो, विछुटियोडो, विछुट्योडो—भू० का० कृ० ।
विछुटीजणो, विछुटीजवो—भाव वा० ।

विछुटाणो, विछूटावो—१ देखो 'विछूटाणो, विछूटावो' (रू. भे)
२ देखो 'विछुडाणो, विछुडावो' (रू भे)
विछुटाणहार, हारो (हारी), विछुटाणियो—वि० ।
विछुटायोडो—भू० का० कृ० ।
विछुटाईजणो, विछुटाईजवो—कर्म वा० ।

विछुटायोडो—१ देखो 'विछूटायोडो (रू भे)
२ देखो 'विछुडायोडो' (रू भे)
(स्त्री. विछुटायोडी)

विछुटियोडो—देखो 'विछूटियोडो' (रू भे)
(स्त्री. विछुटियोडी)

विछुट्टणो, विछुट्टवो—देखो 'विछूटणो, विछूटवो' (रू भे)

उ०—१ राव राय राणं सहित, सको थया स्वाधीन । या छूटा जग जाळ ज्यों, जाळ विछुट्टा मीन । —रा रू

उ०—२ आजम दखरण हूत उलट्टी, विकट धनुख सर जाण विछुट्टी । उत्तर धरा सु आलम आयो, सौंज नीज दळ तेज सवायो । —रा रू.

उ०—३ प्रोहित केसरसिंघ, सिंघ फिर सकळ छुट्टी । अरि सिर अखमालीत, जाणि रिख गोत विछुट्टी । —रा रू.

विछुट्टणहार, हारो (हारी), विछुट्टणियो—वि० ।
विछुट्टिग्रोडो, विछुट्टियोडो, विछुट्टयोडो—भू० का० कृ० ।
विछुट्टीजणो, विछुट्टीजवो—भाव वा० ।

विछुट्टियोडो—देखो 'विछूटियोडो' (रू भे.)
(स्त्री विछुट्टियोडी)

विछ्ळणो, विछ्ळवो—क्रि स —धुलाई करना, धोना ।

उ०—तरै सरव ठाकुर आरोगै छै–श्री ठाकुर हाथ नीचो करै तो वाज नही । तरै श्री बोलियो—ठाकुरे ! अजु वाज ही नही आयी छै, काहू आरोगा ? तरै परिहार बोलिया-राज ! बाज उरै है, ठाकुर पण विछुळता हुता सू अपूठा फिरिया नही । —प्रतापमल देवडा री वात

विछुळणहार, हारो (हारी), विछुळणियो वि० ।
विछुळिग्रोडो, विछुळियोडो, विछुळयोडो—भू० का० कृ० ।
विछुळीजणो, विछुळीजवो—कर्म वा० ।

विछुळाणो, विछुळावो—क्रि स —धुलाई करवाना, धुलवाना ।
विछुळाणहार, हारो (हारी), विछुळाणियो—वि० ।
विछुळायोडो—भू० का० कृ० ।
विछुळाईजणो, विछुळाईजवो—कर्म वा० ।

विछुळावणो, विछुळाववो—रू. भे.० ।

विछुळायोडो—भू० का० कृ०—धुलाई कराया हुआ, धुलाया हुआ ।
(स्त्री विछुळायोडी)

विछुळावणो, विछुळाववो—देखो विछुळाणो, विछुळावो' (रू. भे.)
विछुळावणहार, हारो (हारी), विछुळावणियो—वि० ।
विछुळाविग्रोडो, विछुळावियोडो, विछुळाव्योडो—भू० का० कृ० ।
विछुळावीजणो, विछुळावीजवो—कर्म वा० ।

विछुळावियोडो—देखो 'विछुळायोडो' (रू भे)
(स्त्री विछुळावियोडी)

विछुळियोडो—भू का कृ —धुलाई किया हुआ, धोया हुआ ।
(स्त्री विछुळियोडी)

विछुवो, विछुहो—देखो 'विछोह' (रू भे)

विछू—स. पु —१ विशाखा नक्षत्र का एक नाम ।
२ एक प्रकार का घोडा जिसकी पूंछ का अग्र भाग वक्र होता है । (शा हो.)
अल्पा.—विछूडो ।
३ देखो 'विच्छू' (रू. भे.)

विछूडो—१ देखो 'विच्छू' (अल्पा, रू भे.)
२ देखो 'विछू' (अल्पा, रू भे)
(स्त्री विछूडी)

विछूट—स स्त्री —छूटने की क्रिया या भाव ।

विछूटणो, विछूटवो—१ देखो 'विछुडणो, विछुडवो' (रू भे)

उ०—१ हरीया हुसन की कहै, जोड विछूटि जाणि । सायर का सासा पडघ, छीलर वसीयो आणि । —अनुभववाणी

उ०—२ मछ विछूटो टोळीया, ताहि न घाती घात । आप मतो मरि जावसी, तळफ तळफ जीव जात । —अनुभववाणी

२ देखो 'विछूटणो, विछूटवो' (रू भे.)

उ०—१ को लाहे लोभियां, मौत चाहे अणखूटी । कमण पाण पाकडै, बीज असमाण विछूटी । —रा रू

उ०—२ जमदूता री जमात उठीया छै, जांणे सांकळा हूती सीह विछूटिया छै । घोडा राड छटा लीजै छै । अमल पीजै छै —पना

उ०—३ कुटुंबी लोक माचइ, महात्मा वैठा पुस्तक वाचइ । परवत तउ नीझरण विछूटइ, भरिया सरोवर फूटइ । इसिइ वरसा कालि । —रा सा. स.

उ०—४ जठै जादव राम रै सवधी भ्राता जादव देव रा किवाण करि चालुक्य राज रा गज री सुंडादड वाहिरथ देस सू विछूटि कढियो । —व. भा

उ०—५ जाणूं तिलहि न विछूटू रे, जनि पछतावा होई । गुण तेरै रसना जपू, सुणसी साई सोई रे । —दादूवाणी

उ०—६ समय घणउ स्रम स्नात थ्या, सयरि विछूटि स्वेद । अडप घणी अळगा थया, सासइ पडिया दुभेद । —मा का प्र.

उ०—७ असमान विछूटै सर असख । धकारव गाजै गुण घनस । सूरज्ज वोम छायौ सरेय, किरि जाण काळ छाया करेय । —गु रू व

उ०—८ कुदरत्त विछूटा कुहकवाण, आकप इळा पुड आसमाण । गोळिया ताड विपरीत गत्त, ओग्रडै गडै किरि मेह अत्त । —गु रू. व

उ०—९ पूठिली परि तैं गलगलै, पिण नही कोई उपाय । सगलै जी कहै जल नै बिना, जीव विछूटो जाय । —वि कु

उ०—१० मुख साह मुहा मुहि हुकम विछूटा, खूटा पडियाळा खजर । समकै गजा साकळा तूटा, जूटा 'अरजण' अनै 'अमर' । —अरजण गौड वीठळदासोत री गीत

विछूटणहार, हारौ (हारी), विछूटणियौ—वि० ।
विछूटिओडौ, विछूटियोडौ, विछूव्योडौ—भू० का० कृ० ।
विछूटीजणौ, विछूटीजवौ—भाव वा० ।

विछूटाणौ, विछूटावौ—१ देखो विछूटाणौ, विछूटावौ' (रू भे)
२ देखो 'विछुडाणौ विछुडावौ' (रू भे)
विछूटाणहार, हारौ (हारी), विछूटाणियौ—वि० ।
विछूटायोडौ—भू० का० कृ० ।
विछूटाईजणौ, विछूटाईजवौ—कर्म वा० ।

विछूटायोडौ—१ देखो 'विछूटायोडौ' (रू भे.)
२ देखो 'विछुडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री विछूटायोडी)

विछूटियोड़ौ—देखो 'विछूटियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री विछूटियोडी)

विछूटणौ, विछूटबौ—देखो 'विछूटणौ, विछूटवौ' (रू भे)
उ०—हुए मीर सधार, सोक सर पूर विछूट्टै । प्रळै-काळ आवत, फौज फौजा मुहि जुट्टै । —गु रू व.
विछूट्टणहार, हारौ (हारी), विछूट्टणियौ—वि० ।
विछूट्टिओड़ौ, विछूट्टियोडौ, विछूट्टयोडौ—भू० का० कृ० ।
विछूट्टीजणौ, विछूट्टीजवौ—भाव वा० ।

विछूट्टियोडौ—देखो 'विछूटियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री विछूट्टियोडी)

विछेडौ—स पु —विछोह, वियोग, जुदाई ।

विछेद—स. पु —१ विछोह, वियोग, जुदाई ।
२ देखो 'विच्छेद' (रू. भे.)
उ०—सुरमो लूण जात ए, पुढवी काय विछेद । भूमि आकास ओस हिय, करग आऊ ना भेद । —वृ. स्त

विछेदौ—स पु —भग होने की क्रिया, नाश ।
उ०—'देव विमाण वल्यौ' छठै, तिणरी सुणो राय भेदो रे । जघा विद्या चारणी, जामी लब्धि विछेदो रे । —जयवाणी

विछेरियौ—देखो 'वछेरौ' (अल्पा, रू भे)

विछेरौ—देखो 'वछेरौ' (रू. भे)
उ०—सिखरै-री घोडी अर ऊदै री घोडी वेळ अेक छान मैं वर्फ़ी । सू उवा घोडी री उवा विछेरी मास इग्यारह री । सू घोडै ही आगै चरै । सिखरौ चढि अर नीसरियौ ताहरा विछेरी घोडै रै लार हुयी । —ऊदै उगमणावत री वात
(स्त्री विछेरी)

विछोई—वि.—वियोगी ।
रू भे —विछोई ।

विछोडणौ, विछोडवौ—क्रि स.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियो या प्राणियों को एक दूसरे से पृथक कर देना ।
उ०—मा थी विछोडया वाछडा, नीरी नही चारि । कनालै तिरस्या मूआ, कीधी नही सारि । —स कु.
२ वियोग में डालना ।
३ साथी से अलग कर देना ।
४ काटना ।
उ०—पडै रीठ पाहोसा गरीठ धज्ज भाला पूर, घोठ सूर जडै वज्र आवधा ओधार । ऊधडै वरम्मा कडा नओठा विछोडै अगा, जठै आकारीठ 'दूदो आहुडै जोधार । —ठाकर जवानीसिंघ पालडी री गीत
विछोडणहार, हारौ (हारी), विछोडणियौ—वि० ।
विछोडिओडौ, विछोडियोडौ, विछोडयोडौ—भू० का० कृ० ।
विछोडीजणौ, विछोडीजवौ—कर्म वा० ।
विछोडणौ, विछोडवौ—रू० भे० ।

विछोडियोडौ—भू का कृ —१ साथ रहने वाले व्यक्तियो या प्राणियो को एक दूसरे से पृथक किया हुआ २ वियोग मे डाला हुआ. ३ साथी से अलग किया हुआ. ४ काटा हुआ.
(स्त्री विछोडियोडी)

विछोटौ—स पु.—छुटकारा, मुक्ति ।
उ०—दीर्यं कोरडा देह दोला दबोटा, वदै वोल वाका भर्फ़ै मत्त मोटा । पड्या वदिखानै महा दुक्ख मोटा, प्रभू नाम थी वेग थायै विछोटा । —घ व ग्र

विछोडणौ, विछोडवौ—देखो 'विछोडणौ, विछोटवौ' (रू भे)

उ०—उण वेळा 'अभसाह' दुगम वळ वाह दरस्से, चक्र गाह चूरिवा ति किर चत्रवाह तरस्से। अथग पियण अजळी जाणि अगस्त घरै पण, कना 'पत्थ' कोपियौ मत्थ 'जंदत्थ' विछोडण। —रा रू

विछोडणहार, हारौ (हारी), विछोडणियौ—वि०।

विछोडिअोडौ, विछोडियोडौ, विछोड्योडौ—भू० का० कृ०।

विछोडीजणौ विछोडीजवौ—कर्म वा०।

विछोडियोडौ—देखो विछोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विछोडियोडी)

विछोणौ—देखो विछोणौ' (रू भे.)

विछोणौ, विछोवौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू भे)

विछोणहार, हारौ (हारी), विछोणियौ—वि०।

विछोयोडौ—भू० का० कृ०।

विछोईजणौ, विछोईजवौ—कर्म वा०।

विछोयोडौ—देखो 'विछायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विछोयोडी)

विछोव—देखो विछोह' (रू भे)

विछोवणौ, विछोववौ—देखो 'विछाणौ, विछाणौ' (रू भे)

विछोवणहार, हारौ (हारी), विछोवणियौ—वि०।

विछोविअोडौ, विछोवियोडौ विछोव्योडौ—भू० का० कृ०।

विछोवीजणौ, विछोवीजवौ—कर्म वा०।

विछोवियोडौ—देखो 'विछायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विछोवियोडी)

विछोवौ—देखो 'विछोह' (रू भे)

उ०—१ नागजी, भली निभायी प्रीत, रे वैरी, रैण विछोवौ कर चल्यौ ओ नागजी। —लो गी.

उ०—२ प्रीतम दुखिया कर गया, सुख कूं लेग्या साथ। रैण विछोवा कर गया, मळती रह गई हाथ। —अग्यात

विछोह-स पु—१ जुदाई, वियोग, विरह।

उ०—१ रजीनि भान खक्कयौ, मनु अधकार मुक्कयौ। विछोह चक्क चक्कय, अनेक वीर वक्कय। —ला रा

उ०—२ दिण इक जउ तुझ नइ तजु रे जि० तउ उपजै अदोह। धरती पिण फाटइ हियौ रे जि० पाणी तणय विछोह। —वि कु.

उ०—३ झूरई सहोवर राव का, कुली छतीसइ झूरइ सोही। धार झूरई राजा भोज सूं, सामरया राव सो पड्यौ विछोह। —बी दे

उ०—४ फटि रै हिया। नीवालूवा, पाथरी घडियो, कै अौघट लोह। झरचझजीयौ फूटइ नहीं, मगुणां प्रीतम तणौ विछोह। —बी. दे

२ वियोग का समय।

रू. भे—विछवो, विछाओ, विछेत्रौ, विछेवौ, विछोडौ, विछोय, विछोवौ, विछोह, विछोहौ, विच्छोह, विछवौ, विछहौ, विछुओ, विछुहौ, विछोव, विछोवौ, विछोहौ।

विछोहणौ, विछोहवौ-क्रि अ—बिछुडना, दूर होना, जुदा होना।

उ०—१ टोळी सूं टळियाह, वाना हर ज्यूं विछोहिया। थोरी हाथ थयाह, सा किम जीवै जेठवा। —जेठवा

उ०—२ पनरह वरस विछोहउ हुऔ घणइ कष्टि मेळावउ। थयउ। वळै विछोही जउ करतारि, तउ इण भणि मुझ एह ज नारि। —ढो मा.

उ०—३ वली मत पडिज्यौ एहवौ दुकाल, जिणै विछोहया मा बाप बाल, जिणै भागा सबल भूपाल। —स. कु

उ०—४ राम विछोही विरहनी, फिर मिलन न पावै। दादू तलफै मीन ज्यौं, तुझ दया न आवै। —दादूवाणी

विछोहणहार, हारौ (हारी), विछोहणियौ—वि०।

विछोहिअोडौ, विछोहियोडौ विछोह्योडौ—भू० का० कृ०।

विछोहीजणौ, विछोहीजवौ—भाव वा०।

विछोहणौ, विछोहवौ, वछोहणौ, वछोहवौ—रू० भे०।

विछोहियोडौ-भू का कृ—बिछुडा हुआ, दूर हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ।

(स्त्री विछोहियोडी)

विछोही-वि—वियोगी, विरही।

उ०—टोला विछोही यम अगली तिम करि आक्रंद, वन वन जोता कष न देखि दीन वामणी मद। —नळाख्यान

विछोहौ—देखो विछोह' (रू भे.)

उ०—१ इक चलै सूड अदोळता अघ ऊरध सावळ अविळ। तम सुभट विछोहौ जाणि तिम दिवस वहै करि डग वळि। —रा. रू.

उ०—२ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हू लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मतिहि विछोहउ होइ। —ढो मा.

उ०—३ पनरह वरस विछोहउ हुऔ, घणइ कष्टि मेळावउ थयउ। वळै विछोहौ जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एह ज नारि। —ढो. मा.

उ०—४ केसर काढ्‌ कुकडा, बोल्यौ मुझ अभाग, सेंजा थारा सजन रे, सूति छी गळ लाग। मोताहळ सीतळ हुवा रैण गळती दीठ, प्रात विछोहौ सजना ऊठी विरह अगीठ। —पनां

उ०—५ वाली वाली रै मेरा इलाही तुं, रसराज एक राझै दा विछोहा, दूजी वेस मतवाळी रे। —रसीलै राज रा गीत

उ०—६ जाण देस्या जी नही थानै आलीजा जी मैलो विछोहो मारु म्हासू नही नीसरै। —लो. गी.

विछोनौ—देखो 'विछाणौ' (रू. भे.)

उ०—हरिसौं सकेत करी राधिकै विलोकै मग, असैं आई बैठी सखी एक ही विछौन है। राधै बोली सुनि खेल मोमुं नैन वाद जोवैं, अनिमेष दौ मैं हारी साई दासी होन है। —घ व ग्र.

विज—१ देखो 'वीजळी' (रू भे)

उ०—गडि गडि गोळा नाळि, विज खडु किरि अवर। अगन वाण ऊछळै, धोम धूहा रव डम्भर। —गु रू. व

२ देखो 'वीजळा' (मह, रू भे)

विजई - देखो 'विजयी' (रू भे)

विजउरौ—देखो 'विजोरौ' (रू भे)

उ०—करहा, नीरू सोइ चर, वाट चलतउ पूर। द्राख विजउरा नीरती, सो घण रही स दूर। —ढो मा

विजकणौ, विजकबौ—देखो 'मिचकणौ, मिचकवौ' (रू भे)

उ०—साधू सगति क्या करै, जो मन बिजक्यौ होय। ज्यूं हरीया हरीवधण, वाग न झालै कोय। —अनुभववाणी

विजकणहार, हारौ (हारी), विजकणियौ—वि०।

विजकिओडौ, विजकियोडौ, विजक्योडौ—भू० का० कृ०।

विजकीजणौ, विजकीजबौ—भाव वा०।

विजकाणौ, विजकाबौ—देखो 'मिचकाणौ, मिचकावौ' (रू भे)

विजकाणहार, हारौ (हारी), विजकाणियौ—वि०।

विजकायोडौ—भू० का० कृ०।

जिकाईजणौ, विजकाईजबौ—कर्म वा०।

विजकायोडौ—देखो 'मिचकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विजकायोडी)

विजकावणौ, विजकावबौ—देखो 'मिचकाणौ, मिचकावौ' (रू भे.)

विजकावणहार, हारौ (हारी) विजकावणियौ—वि०।

विजकाविओडौ, विजकावियोडौ विजकाव्योडौ—भू० का० कृ०।

विजकावीजणौ, विजकावीजबौ—कर्म वा०।

विजकावियोडौ—देखो 'मिचकावोडौ' (रू भे)

(स्त्री विजकावियोडी)

विजकियोडौ—देखो 'मिचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. विजकियोडी)

विजड़—१ देखो 'वीजळा' (ना डिं को, ह ना मा.)

उ०—पाच कलै परवार सू, रावळ आलोचेह। आपै मर गढ आपस्या, विजडा वार करेह। —नैणसी

२ देखो 'वीजळी' (मह., रू भे)

विजडली—१ देखो 'वीजळा' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'वीजळी' (अल्पा, रू भे)

विजडहत, विजडहती, विजडहतौ, विजडहत्य, विजडहत्थी, विजडहत्थौ, विजडहथ, विजडहथी, विजडहथौ—देखो 'वीजळाहथ' (रू भे)

उ०—१ घूणै भुज खगा धोड पाण दयं मूछों परै। रण जूझो राठोड विजडहथौ फिर बोलियौ। —पा प्र

उ०—वीक विदेसज चालियौ, विजटहथौ वळ वाघ। मूळै तोडी मुण सुगुर, साहि आलम सू साध। —नैणसी

विजडाहत, विजडाहती, विजडाहतौ, विजडाहत्य, विजडाहत्थी, विजडाहत्थौ, विजडाहथ, विजडाहथी, विजडाहथौ, विजडाहथ्थ, विजडाहथ्थी, विजडाहथ्थौ—देखो 'वीजळाहथ' (रू भे.)

उ०—विजडाहत्त घाघळ पूत वर्क, सत्र कोण धकै पग माड सकै। घट सूर ढहै विप खड घणा, तत चक्र वहै नव लाख तणा। —पा प्र

विजडी—१ देखो 'वीजळा' (रू भे)

उ०—हव वेरन कीजिय वेग हकै घुणियाळ मिळी भड 'पाल' धकै। विजडी जड भाथल वाघ विनै, कड भीड कठठ्ठत 'पाल' कनै। —पा प्र

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

विजडोहथ—देखो 'वीजळाहथ' (रू भे)

उ०—लखियौ हथळेव प्रमाण लघौ, विजडोहथ घाघल मोडवघौ, विघना अक मेटण की वरणै, पह 'पाळ' जतिंद्र जको परणै। —पा प्र

विजड—१ देखो 'वीजळा' (रू भे) (अ मा, ना डिं. को)

उ०—१ सूर धीर सम्मत, विजड छूटण वगाळा। राणा हाथळ टोप, पैहरि जरदा छकडाळा। —गु रू व.

उ०—२ तात वैरि ततकाळ, लियौ जिण चालुक लोहे। जिण 'मोहण' मारियौ, विजड वूदी घड डोहै। —गु रू व

उ०—३ घाया घाव आहाडा घायै, विजडा वाढै चाढ धज-वध। लेगो सुरग वरै रभ लारा, कमधज सारा करै कवध। —अमरो वारहठ

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

विजडी—देखो 'वीजळा' (रू. भे)

उ०—१ पायका झिलंमा पर तेग पडै, झलहो दुरिया जड मूल गडै। दुलहो फरको चम दूति फिरै, विजडी रत चाकिय 'पाल' वरै। —पा प्र

उ०—२ लेय वावत घेर नवै लखरी, सावळां पर रूप वधै सखरी। विजडी हुय खापाय चीह वकी, भिडजा चढ टोप कढे भभकी।
—पा. प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे)

विजति-वि —जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

उ०—छली विजति तत्तिकी, सुछत्ति छोलती वहै। विजेत नत रेत पे, सजेत वोलती वहै।
—ऊ का.

विजन-वि [स] एकान्त, जनशून्य।

[स व्यजन] १ हवा करने का पखा, वीजन।
२ देखो 'व्यजन' (रू भे)
रू. भे. —विजन।

विजनस-स. पु. [अ बिजिनिस] १ व्यवसाय, व्यापार।

२ व्यापारिक सगठन, व्यावसायिक सगठन।
३ दृढ निश्चय।

उ०-कवराणी सझियो किलो,विजनस मरण विचार। किलो रह्या रहमी कलम, लाज किला रै लार।
—लिखमीदान बारहठ

वि —वास्तविक, बिल्कुल।
(क्रि वि)—निश्चय ही, अवश्य ही।

उ०—१ नैण हूं आई निरख, जिण री तो हू जीव। ऊतो विजनस आव ही, प्रीतम प्यारो पीव।
—र० हमीर

उ० —२ कळजुग री मानै कहर, विजनस लागै वाव। रिखा कह्यो अण देह री, परत करा पलटाव।
—मयाराम दरजी री वात

उ०-३ इतरै एक चारण बोलियो, तीज तो पुगळ री देखीजै। अह लोक आय नै सुरलोक रीझीजै। जद कवर बोलियो, इसीछै तो विजनस देखवा चालसा। एक वार पूगळ रा वागा मे मालसा। फजर पुगळ मे चालसा इतरी कह नै महिला पधारिया।
—पना

रू भे.—विजनस, विजनिस, विजनेस, विजिनस विजिनिस, विजनेस, विजनिस, विजनेस, विजिनस, विजिनिस, विजिनेस।

विजनाळियो-स पु —एक प्रकार का नकुल की जाति का जानवर।

विजनिस, विजनेस—देखो 'विजनस' (रू भे.)

उ०—वरखीं चढ किरगाठ बिराजै, स्याह सफेत लालरग साजै। विजनिस वाव सूरियो बाजै, घडी पलक माय मेहा गाजै।
—वरसा विग्यान

विजपजर—देखो 'विजयपजर' (रू भे.)

उ०—थरहरिय प्रजा जिम नीर थाळ, भाखरै भाजि चडिया भुवाळ आगळी प्रजा आई अबीह, सरणइ विजपंजर 'जइतसीह'।
—रा ज सी

विजय-स. पु [सं विजय] १ पराजय का विपरीत, जय, जीत।

उ०—फतेसाह साह आए वाह गैण धारै, विजावत विजय रूप पराजय निवारै। 'मधकर' 'दयाल' का सो साह भै न धारै, अधकार जात जैसे भाण के उजारै।
—रा. रू

२ विवाद, युद्धादि मे जीत।
३ विष्णु के जय-विजय नामक दो पार्षदो(द्वारपालो)में से दूसरा।
४ कुंति-पुत्र अर्जुन के दस नामो में से एक, जो उसने अज्ञातवास के समय धारण किया था।
५ यमराज।
६ देवरथ, स्वर्गीय रथ।
७ वृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष।
८ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।
९ मगध निवासी एक ब्राह्मण, जिसने महीसागर-सगम तीर्थ मे अनेको सिद्धिया प्राप्त की थी और बाद में सिद्धसेन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
१० राजा रोमपाद के वशज जयद्रथ और धम्भूति के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो धृति का पिता था।
११ महाराज दशरथ के एक मन्त्री का नाम।
१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
१३ एक राजा, जो पुरुरवस एव उर्वशी का पुत्र एव भीम या कांचन का पिता था।
१४ शिवजी के त्रिशूल का एक नाम।
१५ एक दिव्य धनुष जो परशुरामजी द्वारा कर्ण को दिया गया था
१६ हरिश्चन्द्र के वशज सुदेव के पुत्र एवं भुरुक का पिता।
१७ एक राजा, जो वृहन्मनस एव सत्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
१८ भागवतानुसार जय राजा का पुत्र एव ऋतु का पिता।
१९ भागवतानुसार सृजय का पुत्र और वायु के अनुसार सृजय का पौत्र, और जय राजा का पुत्र था।
२० एक यादव राजा, जो वसुदेव एव उपदेवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
२१ एक क्षत्रिय विजेता सम्राट, जो भागवतानुसार चप राजा का एव वायु तथा विष्णु के अनुसार चचु राजा का पुत्र था।
२२ कृष्ण एव जाववती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।
२३ यज्ञश्री राजा का पुत्र एव चद्रविज्ञ का पिता एक आन्ध्रवशीय राजा।
२४ पृथुक देवो मे से एक।
२५ मणिवर एव देवजनी का पुत्र एक यक्ष।
२६ लोकाक्षि नामक शिवावतार का एक शिष्य।
२७ भैरववश में उत्पन्न एक वाराणसी नगरी का राजा, जो

उपरिचर का पिता था और जिसने खाण्डवी को नष्ट कर खांडव वन का निर्माण किया था।

२८ छप्पय छंद का द्वितीय भेद जिसमे ६६ गुरु १४ लघु से ८३ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। मतान्तर से १४८ मात्राएं होती हैं। (र ज प्र)

वि वि —जिस छप्पय मे उल्लाला के दो पद २६, २६ मात्राओ के होते हैं, उसमे १४८ मात्राएँ होती हैं। अर्थात २४×४=९६+२६×२=५२ कुल १४८ और जिस छप्पय मे उल्लाला के दो पद २८, २८ मात्राओ के होते हैं, उसमें १५२ मात्राएँ होती हैं अर्थात २४×४=९६+२८×२=५६ कुल १५२ मात्राएँ।

रू भे —विजय विजै, विजयु विजै, विज्जै।

विजयएकादसी—देखो 'विजयाएकादसी' (रू भे)

विजयक–वि [स विजय+क्कन] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयकुजर–स पु.—१ राजा की सवारी के काम आने वाला हाथी। २ युद्ध मे काम आने वाला हाथी।

विजयकेतु–स पु [स] विजयपताका।

विजयखार—देखो 'विजयसार' (रू भे)

विजयघट–स पु.—१ मन्दिरो में लटकाया जाने वाला घण्टा। २ हाथी की झूल के साथ बधा रहने वाला घटा।

विजयछद–स पु [स विजय+छन्द] पाच सौ लड़ियों का हार।

विजयजात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे)

विजयडिडिम–स पु. [स] युद्ध के समय युद्ध क्षेत्र में बजाया जाने वाला एक ढोल।

रू भे —विजयदुदुम विजयदुदुभि।

विजयतीरथ–स पु [स विजयतीर्थ] एक तीर्थ विशेष। (पुराण।

विजयदड–स पु [स. विजयदण्ड] सैनिकों का एक विभाग विशेष जो हमेशा विजयी रहता है।

विजयदसम, विजयदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू भे)

उ०—१ सन विजयदसम वधियो सग्राम घिखियो अहमदपुर धाम धाम। सजियो क्रोधानळ वियो 'सीह,' दावानळ दमगळ तीन दीह। —वि स

उ०—२ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगिजीत सरव विद्या जिनै। विजयहरस विद्यमान सिस्य तिनकै सही, परिहा कवि धरमसी उपगारै दभ क्रिया कही। —ध. व. ग्र

विजयदुंदुम, विजयदुदुभि—देखो 'विजयडिडिम' (रू भे)

विजयनंदन–सं पु. [सं.] भागवतानुसार, अयोध्यापति इक्ष्वाकु के वश में उत्पन्न राजा जय का नामान्तर।

विजयपजर–स पु. [स. विजय.+पञ्जर] विजय प्राप्ति हेतु पढा जाने वाला स्तोत्र।

रू. भे —विजपजर, विजयपजर, विजैपजर, विजपजर, विजैपजर।

विजयपताका–स स्त्री [स] विजय की सूचक फहराई जाने वाली ध्वजा या इसी का सूचक कोई चिन्ह।

विजयपरपटी–स स्त्री [स विजयपर्पटी] वैद्यक में, सग्रहणी रोग के लिए दी जाने वाली एक प्रकार की औषधि विशेष

विजयपूनम, विजयपूरणिमा–सं. स्त्री [सं विजयपूर्णिमा] विजयादशमी के बाद आने वाली पहली पूर्णिमा, जिस दिन बगाल में लक्ष्मी का पूजन होता है। (पुराण)

विजयभैरव–स पु —वैद्यक में, सब प्रकार के रोगों और दुर्बलता को दूर करने वाला एक प्रकार का रस।

विजयभैरवतेल–स पु —वैद्यक में, मालकगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को पेर कर निकाला जाने वाला एक प्रकार का तेल विशेष, जो सब प्रकार के वायु रोगो का नाशक माना जाता है।

विजयमड—देखो 'विजैमड' (रू भे)

विजयमरदल–स पु [स विजय.+मर्द्दल] प्राचीन काल में होने वाला एक प्रकार का ढोल।

विजयमाळा, विजयमाला–स स्त्री [स. विजयमाला] विजय प्राप्त करने वाले को पहनाई जाने वाली माला।

रू. भे —विजयमाळा, विजैमाळा, विजैमाळा।

विजयमेरु–स पु [स] सुमेरु पर्वत का एक नाम।

उ०—पूरव पच्छिम घात की, खड गिणीजै दोइ। विजयमेरु पूरव दिसैं, पच्छि अचलमेरु जोइ। —ध व. ग्र.

विजययात्रा–स स्त्री [स] किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा।

उ० ...नीली रहरही इक्षुआडमडली, फूलिइ उज्ज्वल कास, दीसइ सप्तच्छद पुस्फविकास, करइ नरेंद्र विजययात्रा रभ। —व स.

रू. भे —विजययात्रा, विजैयात्रा, विजयजात्रा विजैजात्रा, विजैयात्रा।

विजयरत्नाकरि–स स्त्री [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयरस–स पु [स] वैद्यक मे एक प्रकार का रस विशेष जो पारे,

गधक और सीसे के योग से बनता है और प्राय अजीर्ण रोग मे दिया जाता है।

विजयरूपपदम-स पु [स विजयरूपपद्म] एक प्रकार का घोडा जिसके दो पैर सफेद व शिर मे तिलक होता है। (शा हो)

विजयलक्ष्मी, विजयलखमी, विजयलछमी विजयलिखमी, विजयलिछमी-स स्त्री [स विजयलक्ष्मी] एक देवी जो विजय की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

रू भे-विजयलक्ष्मी, विजयलखमी, विजयलछमी, विजयलिखमी, विजयलिछमी, बिजलक्ष्मी, बिजैलखमी, बिजैलछमी, बिजैलिखमी, बिजैलिछमी, विजैलक्ष्मी, विजैलखमी, विजैलछमी, विजैलिखमी, विजैलिछमी।

विजयवसत-स पु [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनि विशेप (सगीत)

विजयसप्तमी—देखो 'विजयासप्तमी' (रू भे)

विजयसरसती, विजयसरस्वती-स. स्त्री [स विजयसरस्वती] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

विजयसातम—देखो 'विजयासप्तमी' (रू भे.)

विजयसामत, विजयसारग-स पु [स] कर्नाटकी पद्धति का एक राग विशेप। (सगीत)

विजयसार-स पु [स] १ एक प्रकार का अत्युत्तम लोहा, जिससे तलवारें बनती है।

२ एक वृक्ष विशेष, जिसकी लकडी इमारत के काम आती है।

रू भे—बिजयसार, बिजैसार, विजयखार, बिजैखार, विजैसार।

विजयसाही-स पु—मारवाड राज्यान्तर्गत चलने वाला जोधपुर के राजा विजयसिंह के द्वारा प्रचलित एक चादी का सिक्का विशेप। (मा म)

रू भे-विजयसाही, बिजैसाही, वीजैसाही, विजैसाहई, विजैसाही।

विजयसिद्धि-स स्त्री [स विजय+सिद्धी] विजय, जीत, सफलता।

विजयसील-स पु [स विजयशील] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयसूर-स पु [स] एक सूर्यवशी राजा, जो चचु का प्रथम पुत्र था। (पुराण)

उ०—रोहितास तणैं ह्नित चचुराय, तप सुत सुदेव तपभाण ताय। सप्तम सुदेव न्रप विजयसूर, पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर।
—सू प्र

विजयस्री-स स्त्री [स विजयश्री] १ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेप। (सगीत)

२ देखो 'विजयलक्ष्मी'

विजयहरि, विजयहरी, विजयहारी-स पु—सुदृढ एव सुरक्षित मोर्चा, शत्रुओ के लिए दुर्गम्य मोर्चा।

उ०—गढ कैलास जिम ऊचउ, गुरूई पोलि, सधर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, यत्र तणी सेणि, ढीकली तणी परपरा, खाई गढ, '। —व स.

रू भे—बिजाहरी, बिजहारी।

विजया-स स्त्री [स] १ गौतम की एक कन्या का नाम।

२ पार्वती की एक सखी, जिसे पार्वती का मानसपुत्र वीरक को लाने हेतु भेजा गया था। (पुराण)

३ दुर्गादेवी का एक नाम।

उ०—स कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा श्रनया, ओह सोह अखया अभया, आई अजया विजया उमया। —देवि.

४ यम की पत्नी का नाम।

५ हरडे, हर्रे।

६ सात प्रकार की हरडे मे से एक प्रकार की हरडे।

७ एक योगिनी।

८ दक्ष की एक कन्या का नाम।

९ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत् की माता का नाम।

१० श्रीकृष्ण के पहनने की एक माला।

११ भाग।

१२ दुर्गा देवी की एक सहचरी।

१३ एक विद्या विशेप, जो श्रीरामचन्द्र जी को महर्षि विश्वामित्र ने सिखाई थी।

१४ शल्य राजा की कन्या का नाम, जो पाण्डु पुत्र सहदेव की पत्नी और सुहोत्र की माता थी।

वि० वि०-इसके लिए मतैक्य नही है महाभारत के अनुसार यह मद्रदेश के द्युतिमत् राजा की कन्या थी और भागवत के अनुसार यह पर्वत राजा की कन्या थी।

१५ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

१६ सम्राट भुमन्यु की पत्नी और सुहोत्र की माता, जो दशार्ह राजा की कन्या थी।

१७ श्रीकृष्ण की एक माता का नाम।

१८ कश्मीर मे स्थित एक पवित्र तीर्थ का नाम।

१९ एक शुभ मुहूर्त विशेष।

२० एक प्रकार का शमी वृक्ष।

२१ आठ वर्ण का एक वर्णिक वृत्त विशेप, जिसके अन्त मे लघु और गुरु या नगण भी होते हैं।

२२ एक सम-मात्रिक छन्द विशेप, जिसके प्रत्येक चरण मे १०-१०

की यति पर ४० मात्राएं होती हैं और अंत में रगण भी होता है। मतान्तर से प्रत्येक चरण में १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राए होती हैं।

२३ देखो 'विजयादसमी'

२४ देखो 'विजयाएकादसी'

रू भे —विजया, विजिया, वज्जया

विजयाएकादसी–स स्त्री. [स. विजयाएकादशी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

२ फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

रू भे —विजयएकादसी।

विजयाणद–स पु [स विजयानन्द] संगीत के मुख्य साठ तालों मे से एक ताल विशेष।

रू भे.—विजयानद।

विजयादसम, विजयादसमी—स. स्त्री [स विजयादशमी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।

२ उक्त दशमी को मनाया जाने वाला पर्व जिसकी गणना हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौंहारो मे की जाती है।

वि० वि०—आश्विन शुक्ला दशमी को श्रवण का सहयोग होने से विजयादशमी होती है। यह पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध तथा श्रवणयुक्त सूर्योदय व्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। यह हिन्दुओं, विशेषकर क्षत्रियो का बडा त्यौंहार है। इसे नवरात्री या दशहरा के नाम से भी पुकारा जाता है और आश्विन शुक्ला प्रथमा से दशमी तक मनाया जाता है। इन दिनो देवी, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा होती है। क्षत्रिय इस दिन देवी घोडे हाथी खड्ग, आदि की पूजा करते हैं और नीलकठ पक्षी के दर्शन करते है और हिन्दू,दुर्गा आदि देवी के साथ अपने कुलदेवता की पूजा करते हैं और कही कहीं पर शमी वृक्ष की पूजा भी करते हैं। कहते है इस दिन श्री रामचद्र ने लकापति रावण को मार कर लका- विजय की थी इसी लिए इसे विजयादशमी कहते हैं। और इसी दिन दुर्गा ने महिपासुर का वध कर विजय प्राप्त की थी इस लिए भी यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन को एक शुभमुहूर्त भी मानते हैं और इस दिन प्रारम्भ किया हुआ हर कार्य सिद्ध होता है। नवरात्रि के प्रथम दिन जौ या गेहूँ घरो मे बो दिये जाते हैं। और इस तिथि को जयती मगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।' यह मत्र पढ कर कान पर रखते हैं। इस दिन दश महाविद्याओ की पूजा होती है।—घोडी, शमी, पुस्तक, लेखनी, अस्त्र, शस्त्र, आदि की भी पूजा करते हैं।

रू. भे —बिजयदसम, विजयदसमी, विजयादसम, विजयादसमी, विजैंदसम, विजैंदसमी, विजयदसम, विजयदममी, विजैंदसम, विजैंदसमी, विजैंदसम्मी विजैंदसम, विजैंदसमी।

विजयानद—देखो 'विजयाणद' (रू भे.)

विजयाभखी—देखो 'विजियाभखी' (रू भे.)

विजयाभरणी–स. स्त्री [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

विजयारध–स. पु [स विजयार्ध] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

विजयासप्तमी,विजयासातम–सं.स्त्री [स विजयासप्तमी] फलित ज्योतिष के अनुसार, किसी मास की, रविवार के दिन पडने वाली शुक्ल पक्षकी सप्तमी। इस दिन श्रीरामचन्द्र की पूजा की जाती है। (पुराण)

रू भे —विजयसप्तमी, बिजयसातम, विजयासप्तमी, विजयासातम, विजैंसप्तमी, विजैंसातम, बिजयसप्तमी, विजयसातम, विजैंसप्तमी, विजैंसातम।

विजयी–वि०—जिसने विजय प्राप्त की हो, विजय प्राप्त करने वाला।

विजयु—देखो विजय' (रू भे)

उ०—एतल ए पडु नरिंदो जूठिलो पाटि प्रतिठिउ ए। वंधवि ए विजयु करेवि राय सवें वसि आणिया ए। —सालिभद्र सूरि

विजयेस–स. पु [स विजय+ईश] १ शिव, महादेव।

२ विजय के अधिष्ठाता देवता।

विजयोत्सव–स पु [स विजय+उत्सव] आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाने वाला उत्सव।

विजर–स पु—अनायुषा नामक राक्षसी का पुत्र और खर एव कालक नामक राक्षसो का पिता, एक राक्षस।

रू भे –विज्वर।

विजरा–सं स्त्री. [स] ब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्मलोक की एक नदी।

विजराज–देखो 'व्रजराज' (रू भे)

उ०—१ तूं हीज अकाज काज भगता री लाज तना, विसरियो केम परो विजराज वाज। आविस्यै अनत आज गजराज उधारिवा, निध माथैं गाज करै निपाइयो नाज। —पी प्र.

उ०—२ भूनिज्यो मति कदेई भूवर, जोड लेखैं राखैं विजराज। तूझ तणो निसदीह त्रीकमा, मुजरो पीर करै महाराज। —पी. प्र.

विजळ—१ देखो 'वीजळा' (मह,. रू भे)

२ देखो 'वीजळी' (मह,. रू भे.)

विजळडी—१ देखो 'वीजळा' (अल्पा,. रू. रू)

२ देखो 'वीजळी' (अल्पा, रू भे)

विजळी—देखो 'बीजळी' (रू भे) (अ मा)

उ०—दरवाजौ तूटण सू किला मे खळबळी माचगी। जेज व्हिया नाकाबदी होवण री भो हौ सो भीमडौ बिजळी रै पळाका रै ज्यू किलारै मायनै वळियो। पण सिरै ड्योढी पूगता पूगता चाफेर सू घेरीजग्यो। —अमर चूनडी

विजहारी—देखो 'विजयहरी' (रू. भे)

उ०—गढ गरुउ अनइ विसमी जीह तणी पाय पातालि पइठउ, परवतनइ स्र ग वइठउ, उच्चतर पोलि लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणी, ढीकुली तणी परपरा, ' '। —व स.

विजांनु—स पु [स विजानु] तलवार चलाने के ३२ हाथो मे से एक।

विजा—स स्त्री—विद्या।

विजाई स. पु [स विजात] १ वशज।

उ०—१ सग्रामा सभावै बीजुजला फसा भ्राय सामै, रेण अेक थोडा नामै थावै असी रीत। न भावै फिरगी हिंदूथान कीधो पायनामै, आपनामै नाज खाधो विजाई 'अजीत —नवलजी लालस

उ०—२ मिळै दताळा फवजा जोडै नेजाळा घटा ज्यूं मेघ, नेजाला सपोडो हलै तेण धुपयाल। सचाळा छडाळा आभ छाजतो 'सवाईसीघ', गाजतां अबाला रूठो विजाई 'गोपाळ' —नवलजी लाळस

वि —विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

रू भे —बिजाई, वजाई।

विजात—वि [स] १ जिसके माता पिता की जाति अलग २ हो, वर्णसकर, दोगला।

२ जन्म लिया हुआ।

३ प्रत्येक चरण मे ५, ५, ४ के विश्राम से १४ मात्राओ का; सखी छन्द का एक भेद विशेष जिसके अत में मगण या यगण होता है और पहली और आठवी मात्राएँ लघु होती हैं।

विजाता—स स्त्री [सं] १ वह युवती जिसने हाल ही मे बच्चे या बच्ची को जन्म दिया हो।

२ वर्णसकर या दोगला की स्त्री।

विजाति—स स्त्री [स.] १ भिन्न या दूसरी जाति।

उ०—१ नाही है के मध है सोई, ज्या को आदि अत नहि कोई। जाति विजाति न भेदाभेद, कहा ग्यान अग्यान की खेदा खेद। —स्रीसुखरामजी महाराज

२ देखो 'विजातीय'।

विजातीय—वि. [स] १ जो भिन्न या दूसरी जाति का हो।

२ पौष्टिक पदार्थो का अधिक सेवन करने पर शरीर मे अधिक वढ़ने वाला चर्बी आदि पदार्थ।

विजावत—सं पु.—राठोडो की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

विजासण, विजासणी—देखो 'मावलिया'।

उ०—जठै गुवाळ री माउ भ्रणी नै घणी ई समजावै पण यो गुवाळ घर माहै आवै नही। कहै सो आपणा तो घर माहै विजासण बैठी रहै है सो हू घर माहै आवू तो मोनै खाय जाय। —गाम रा धणी री वात

विजिट—स स्त्री [अ] १ भेंट, मुलाकात।

२ किसी चिकित्सक द्वारा किसी रोगी को देखने जाने का कार्य।

३ उक्त कार्य हेतु दी जाने वाली फीस।

विजिटरसबुक—स. स्त्री [अ विजिटर्स बुक] किसी सस्था की वह पुस्तक जिसमे वहा आने जाने वाले अपना नाम अथवा सम्मति लिख सकें।

विजिटिंगकारड—स पु [अ विजिटिंग कार्ड] किसी से मिलने जाने पर अपने आगमन की सूचना देने या परिचय देने का एक कार्ड जिस पर अपना नाम, पता, पद आदि छपे होते हैं।

विजिताश्व—स पु [स विजिताश्व] राजा पृथु के पाच पुत्रो में से ज्येष्ठ पुत्र।

वि. वि —राजा पृथु और अर्चि के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जिसके शिखण्डिनी एव नभस्वती नामक दो पत्निया थी और शिखण्डिनी से पावक, पवमान और शुचि नामक तीन पुत्र और नभस्वती के गर्भ से हविर्धानि और मारीच नामक दो पुत्र हुवे थे। मतान्तर से हविर्धानि शिखण्डिनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ बताते हैं। इसने सौ अश्वमेघ यज्ञ करने का निश्चय किया और निन्यानवे अश्वमेघ यज्ञ पूरे कर लिये। इससे इन्द्र को अपने पद की चिन्ता हुई और उसने अश्वमेधीय अश्व चुरा लिया। तब इसने इन्द्र से युद्ध कर उसे परास्त कर अश्व वापिस ले आया। ऐसा कई बार करने से इसे 'विजिताश्व' नाम प्राप्त हुआ। इन युद्धो से इन्द्र ने प्रसन्न हो कर इसे अन्तर्धान होने की विद्या सिखायी इससे इसे 'अन्तर्धान' नाम प्राप्त हुआ। इन्हे अग्नि देवता मानते हैं और वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लिया ऐसा मानते हैं।

विजिश्वरा—स. स्त्री [स] भगवती का एक नाम विशेष।

विजिनस, विजिनिस, विजिनेस—देखो 'विजनस' (रू भे.)

विजियाभखी—स पु —शिव, महादेव।

रू भे —विजयाभखी।

विजुजळ, विजुजळा, विजुझळ, विजुझळा—१ देखो 'वीजूझळ' (रू. भे)

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

विजुळा—देखो 'वीजळा' (रू. भे)

उ०—केसरी सिंघ राव 'मालदै' कळोधर, चाडग्रा गुर सदा लग वडा चेळो। विचत्रसाह ग्रालमी जालमी विजुळा, मरण मिळियै कियौ ताळ मेळो। —मायोदास गाडण

विजुळी-स. स्त्री.—१ एक देवी का नाम। (पौराणिक)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

विजू—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

उ०—कोडा ग्रतज काढिया, पिंड थाकी ग्रापाण। दूरसी विजू डकियौ, बैठ गयौ सुरताण। —रगरेळो वीठू

विजूजळ, विजूजळा, विजूझळ, विजूझळा—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

उ०—१ रत खाळ रळ-सळ पालर प्रग्घळ, हो हु हूकळ थट्ट हुवै। वळकत विजूजळ बीजक वद्दळ, ढोल त्रिमगळ बोम चुवै। —गु. रू. ब.

उ०—२ सामठी धाक पड सावळाह, वळवळै धार विजूजळाह। गजवाज गहो-थळ भड गुडंत, निरलग ग्रग धड नीजुडत। —गु. रू. ब.

उ०—३ करै करिमाळ झटा पति काम, जळाहळ 'राम'तणौ 'जगराम' विजूजळ झाट करै जिण वार, सुरी 'ग्रणदेस' तणौ सिरदार। —सू. प्र.

उ०—४ वाजै ग्रवाळ सिंधू विखम दुमग हाक वाजै दळा। वाजिया 'ग्रभौ' सिर विलदळा, जळाबोळ विजूजळा। —वखतो खिडियो

विजूवूहौ-स. पु.—दूहै-छन्द का एक भेद विशेष, जिसमे ३ गुरु और ४२ लघु होते हैं।

उ०—विजू नेत्रा सिव वदौ, मास दिवस ग्रर मास। इण विधि छदौ ग्राखियै, भणौ महा बुध भास। —पिंगळ सिरोमणि

वि. वि.—देखो 'त्रिडाळ'।

विजेत, विजेता-वि.—विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

उ०—१ छळी विजति तत्तिकी, सुछत्ति छोलती वहै। विजेत नेत रेत पै, सजेत बोलती वहै। —ऊ. का.

उ०—२ रिपुग्ग देत्य कस सी, ग्रजेत सुल्लती रहै। विजेत वीर वश की, विजेत घल्लती वहै। —ऊ. का.

उ०—३ ग्रौ तौ सदा सियावर रौ सगी, ग्रौ तौ विस्व विजेता बजरगी। इण रौ किण ही पार न पायौ रे, हनुमत हरि मन भायौ रे। —गी. रा.

विजै—देखो 'विजय' (रू. भे.)

विजैउच्छव, विजैउच्छ्व, विजैउछव, विजैउछव—देखो 'विजयोत्सव'।

विजैकारी-वि.—विजय कराने वाला।

उ०—देवी कौमारी चामुंडा विजैकारी, देवी कुवेरी भैरवी क्षेमकारी। देवी ग्रगस ग्रस्ख हस्ती मयखै, देवी पख केकी गरुड धिरट पखै। —देवि.

विजैखार-स. पु. [स. विजय+क्षार] १ विजयसार का क्षार निकाल कर बनाई गई ग्रौषधि।

२ देखो विजयसार' (रू. भे.) (ग्रमरत)

विजैजात्रा—देखो विजययात्रा' (रू. भे.)

विजैदसम विजैदसमी, विजैदसम्मी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—ग्राहनपुर दसरावौ थप्पै, जोसी तिलक मुहूरत ग्रप्पै। विजैदसम्मी होम करावै, विप्रा कन्ना वेद वचावै। —गु. रू. ब.

विजैमंड-स. स्त्री. [स. विजय+मण्ड] विजय की शोभा।

रू. भे.—विजयमड, विजैमड, विजयमड।

विजैमाळा—देखो 'विजयमाळा' (रू. भे.)

विजैयात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

विजैलक्ष्मी, विजैलखमी, विजैलछमी, विजैलिखमी, विजैलिछमी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रू. भे.)

विजैसप्तमी—देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

विजैसाई—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

उ०—जैडी खुराक व्हैडा ई करार। जाणौ ईंज ही छिमटी सू विजैसाई रिपिया रा ग्राकर मिटाय देता। —फुलवाडी

विजैसातम—देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

विजैसार—देखो विजयसार (रू. भे.)

विजैसाही—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

विजोग-स. पु.—१ तप्त, गरम। (डिं. को.)

२ देखो 'विजोग' (रू. भे.)

उ०—ग्राठू दिस पुर ऊजडै, चडै तडै सब लोग। सभियौ गढ वर्क मडै प्रज ग्रामडै विजोग। —रा. रू.

३ देखो 'वियोग' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ थारी वच्छ वाछु नहीं रे, खिण मात्र नौ विजोग तिण कारण माहरा डीकरा रे, विलस काम नै भोग रै। —जयवाणी

उ०—२ प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि ग्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वद्धतै सनूर ए। विजोग सोग रोग विग्घ ग्रग्घ सिग्घ घायक, प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक। —ध. व. ग्र.

उ०—३ हू सेवक वी साहिबो हो, सदा रह्यो सजोग । कोइक म्हारा पाप सू हो, उपज्यो विसम विजोग ।
—मी रा

उ०—४ ढलता आधी रातडी, जागै और न लोग । कै तो जागै सत जन, कै तिय पियै विजोग । —अग्यात

उ०—५ कवर रै साम्ही मूंडी करनै रूखा सुर मे बोली—हकनाक बापडा जीव री देह री ठायो छुडायो, भोळा भाचरिया नै मा री विजोग दियो अर सूवर नै इण विध लोह सू पूर करियो ।
—फुलवाडी

उ०—६ कामी तै कूकर भलो, रुति बिन रहै विजोग । कामी नर कै काम को, हरीया सदा सजोग । —अनुभववाणी

उ०—७ साची धणी व्हैतो तो बिग्राज रा लोभ मे लुगाई री आ माया छोडतो भळा । काई ग्रो विजोग देवण सारू ई वौ चवरी मे हाथ झाल आपरै लारै लायो । —फुलवाडी

विजोगडै—क्रि वि —निमित्त, लिए ।

विजोगण, विजोगणी —देखो 'वियोगणी' (रू भे)

उ०—१ जोवन पिराघट घट भर दोय, विजोगण ऊभी आ पिणिहार डुबोवै घर सूरज घट ग्रेक, सभाळै किम घण दूणो भार ।
—साभ

उ०—२ जरै मनसा मथणी मथ जाण, करै कथणी कथ कै गुजराण । कुजीव कुसग कहा कुसळात, विजोगण पीव सजोगण बात । —ऊ का

उ०—३ उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि । सजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अग दाधि । —ढो. मा

विजोगात—देखो 'वियोगात' (रू भे)

विजोगिण, विजोगिणी, विजोगिन, विजोगिनी—देखो 'बियोगणी' (रू.भे.)

विजोगी—देखो वियोगी' (रू भे)

विजोरी—स स्त्री —खजूर का फल या वृक्ष ।

उ०—सत्तम प्रहरं दिवस कं, धण जु वाडिया जाइ । आणि द्राख-विजोरियां, घण छोलइ, प्रिउ खाइ । —ढो मा

विजोरो—देखो 'विजोरी' (रू भे.)

उ०—रसं माधुरं पी जभीरी विजोरा, झुकं साख फूला भारि झोरा । सनी सी मधु दाख अनार सेवा, दियो आणि लचै सुधा जाणि देवा । —रा रू.

विजोळियो—देखो 'वीजोळियो' (रू भे.)

विजोहा—स पु [स विमोहा] प्रत्येक चरण मे दो रगण सहित छ वर्णों का एक छद विशेष । (र. ज. प्र)

रू. भे.—विझोहा ।

विज्ज—१ देखो 'वीजळी' (मह., रू भे.)

२ देखो 'बीजळा' (मह., रू भे.)

विज्जइ—देखो 'वीजळा' (मह , रू. भे)

विज्जमाल, विज्जमाळा, विज्जमालि, विज्जमाली—देखो 'विद्युन्माली' (रू भे.)

उ०—इद्र अच्छइ रहतु पुर राउ, विज्जमालि तै सहूद्र भाउ । चपलु भणी नई काढिउ राइ, रोसि चडिउ राउसपुरि जाइ ।
—सालिभद्र सूरि

विज्जळ, विज्जल—१ देखो 'बीजळा' (मह., (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—१ वपि असह जळ मुख उसण वल्लभ, सूर कर हुइ सीतळ । उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम, विराम हिम द्रुम विज्जळ ।
—रा. रू.

उ०—२ प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टं, इत तल थल उदवट्टं । झलहल विज्जल खडग झपट्टं, छुट्टा वाण आछुट्टइ हो । —वि. कु.

विज्जा—देखो 'विद्या' (रू भे)

उ०—१ गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर । परिहरवि आवि विहि पयड कइ, पुहुवि पससिजइ सुपरपरि ।
—ऐ. जै. का स.

उ०—२ ग्रहै क्रमि आगम वेद छद, नाटक गण लक्खण । पच वरिस विज्जा विचार, भणि हुग्र वियक्खण ।
—ऐ जै. का. स

विज्जादोस—स पु —१ विद्या या सिद्धि द्वारा प्राप्त किये जाने वाले आहार पर लगने वाला दोप । (जैन)

२ विद्या या सिद्धि द्वारा रूप बदल लेने पर लगने वाला दोप ।
(जैन)

विज्जाहर—देखो 'विद्याधर' (रू भे)

उ०—१ नमिर सुरासुर खयर राय किन्नर विज्जाहर, महुय राइ विराय माण पय पकय सुदर । महिअल महिमामेय भण वछिग्र दायक, जय जय थभण पासनाह भुवणत्तय नायग । —स. कु

उ०—२ दुरयोधन चित्रगदह, मेल्हावी ठहि परिय । विज्जाहर रायह नमइ, दुरयोधनु लेउ सत्थि । —सालिभद्र सूरि

विज्जु, विज्जू—१ देखो विज्जु' (रू भे)

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

विज्जूमाली—स पु [स विद्युन्माली] १ पश्चिम मे स्थित एक पर्वत विशेष ।

उ०—आर्ध पुस्कर मे पूरव दिसं, मदर नामै मेरु तिहा वसं । पच्छिम विज्जूमाली मेरु ए, इहा किण इतरो नाम फेर ए ।
—ध. व. ग्र

विज्जूर–स पु —खजूर का पेड। (सभा)

विज्जै—देखो 'विजय' (रू भे)

उ०—राठोड कुग्रर पक्खर रवद, कवरण (फ) समवड करै। जम-दाढ छोड विज्जै लई, कना राउ ग्ररवह रै। —गु रू व

विज्जैदसम, विज्जैदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू भे)

उ०—देवी मनाई विज्जैदसम, चतुरग दळा चढियौ भरणि। कह ताज मेर माभी, 'कमौ, गयौ माजि मेरा सरणि। —गु रू. व

विज्या–स स्त्री.—ग्रार्या या गाहा छद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम चरण में २३ दीर्घ वर्ण सहित ४६ मात्रायें ग्रोर ११ ह्रस्व वर्ण सहित ११ मात्राएँ इस प्रकार कुल ५७ मात्राएँ होती हैं। —ल पिं

विझगिर, विझगिरि–स पु —विंध्याचल पर्वत।

उ०—घरि वीह मन्न जन्न चित धारगि, कर इलाज देवी वर कारणि। चव द्रम सुणी दियै वर चाहै, माला-देवी विझगिर माहै। —सू प्र.

विझासणि, विझासणी—१ देखो 'मावलिया'

२ देखो 'ग्रावड'

विझोहा—देखो 'विजोहा' (रू भे)

उ०—दोइ रगण गण देखिजै, पाय जैण मैग्रत्त। विझोहा एही विगत्ति, तवा रामगुण तत। —पिं प्र.

विटव—देखो 'विटव' (रू भे)

उ०—१ जे कवहु ग्रतक चलै, तो वीचि विटव कोई ग्रोर। जन हरिदास मूवा पछै, नही कुटुंव मे ठोर। —ह पु वा.

उ०—२ मया करीनइ मूहनइ, दीवउ देस नीकाल। तिणि क्षणिथी क्षीणु थयु, विरह विटवइ व्याल। —मा का प्र

विटवण, विटवणा, विटवन विटवना–स स्त्री —१ कष्ट, दु ख, पीडा।

उ०—१ विरह विटवन विधि घणी, सो मइ सहीय न जाय। मुझ मरवानुं सोहिलुं, वाडव म मारै, माय। —मा का प्र

उ०—२ मयण सरीखइ माधवइ, चिंति लगाडी चाम्व। वली विटवनतू करइ, वारु भई वैसाख। —मा का प्र

२ देखो 'विडवना' (रू भे)

उ०—१ ग्राणी सीत ज मृग्र ग्रनेसौ, कीध विटवण कारण केसौ। कहती कोय कुवैण केहेसौ, रोह मदोवरि कांय रहे सौ। —सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ प्रियु मोरा ग्रचरिज पाम्यउ राम, प्रियु मोरा ग्रहो ग्रहो काम विटवणा हो। प्रियु मोरा द्रिव हु सारू काम, प्रियु मोरा ध्यान सुकल हियडइ घरयउ हो। —स कु

उ०—३ चचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप। काम विटवन सी कहूजी, तै तू जाणइ सरूप। —स. कु

विटवौ–वि —१ दु खी, पीडित।

उ०—विरह विटवी वीनवउ, सुणि किरणागर क्रूर। मेखिइ रासि बाघयु, तु किम चालइ सू ? —मा. कां. प्र.

२ लपट।

विट–वि [स विट] १ ग्रधिक काम वासना रखने वाला, कामुक।

२ वेश्याग्रो से सम्बन्ध रखने या उन्ही के साथ रहने वाला, लपट।

उ०—वाणिजा वधू गो वाछ ग्रसइ विट, चोर चकव विप्र तीरथ वेळ। सूर प्रगटि एतला समापिया, मिळिया विरह विरहिया मेळ। —वेलि

३ बहुत बडा धूर्त या चालाक।

उ०—मोटा छोटा माछळा, ग्राप भखै ग्रणपार। विट वाची वांकम घणी, ग्राप घरै ग्रहकार। —गजउद्धार

४ वह जो मैथुन करवाने का ग्रादि हो।

स पु—१ साहित्य मे एक प्रकार के नाटक का नायक,जो विषयभोग में ग्रपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर किसी भोगविलासी राजा या घनवान व्यक्ति के साथ रह कर ग्रपनी वासना भी मिटाता हो।

२ नारगी का पेड।

३ मल, विष्ठा।

४ एक प्रकार का वर्ग विशेष।

उ०—१ नट विट नाडी ग्रोडणा, ति ग्रावइ तु म वारि। धूती जाइ धूत कौ, उत्तिमनी उगारी। —मा कां. प्र

उ०—२ नाचकर, भोजकर, कवीग्रर, करीग्र वेस्यादि वत, योगि, भोगि, विरागी, नट, विट, खुट, खरट, लाट, मीठा, जूगनू सिगार, वातहडा, रसिक। —सभा

रू भे —विंट, विट, विड।

विटक–स पु [स] १ ग्रार्यावर्त्त के दक्षिण में स्थित नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश। (पुराण)

२ उक्त प्रदेश मे रहने वाली एक जाति विशेष।

विटचर–स. पु [स विट=विष्ठा+चर=खाने वाला] गडसूरि, ग्रामशूकर।

रू भे —विटचार।

विटणौ, विटवौ–क्रि ग्र.—ग्रावेष्टित होना।

उ०—तितरै चोर ग्राया। सो तीन तो तरवार सु पाडीया नै इण भात लोह वायो, ग्रागलै जाणीयौ नहीं। पछै चौथो पेई वाळो नाठो, तिण नुं छूटी गेडी वाही सु फडियां माहै भागी। गेडी दोळी विटाणी। —राव मालदे री वात

विटणहार, हारौ (हारी), विटणियौ—वि० ।
विटिग्रोड़ौ, विटियोड़ौ, विट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विटीजणौ, विटीजबौ—कर्म वा० ।

विटप-स पु [स विटप] १ वृक्ष, पेड । (ग्र. मा, ना. मा)

उ०—सिल विकट फरस सुखेण रै, तिरसूल ग्वायख तेण रै । भिडपाल गजगव विटप भड, धिख गदा वभीखण उवरघर । —र. रू

२ पेड या लता की शाखा ।

उ०—विस्णु रूप ग्रवतार परगट पोहमी मे ग्राए, सतजुग विछरै जीव उनकूं ग्रान चिताए। विस्णु धरम परगट कियौ ग्रान धरम विटप विहडन, सभरथळ परगट सही जोत रूप जग मडन । —कोल्हजी चारण

३ अण्डकोष का मध्यस्थ परदा ।
रू भे —बिटप ।

विटपतटी-स स्त्री.—कुज गली । (ग्र मा)

विटपी-स. पु. [स. विटपिन्] १ जिस वृक्ष मे नई शाखायें या कोंपलें निकली हो ।

२ पेड, वृक्ष । (ह ना. मा)

उ०—छिति रजपूतन छाइ रचै, घर घर बितरल रन । जिनमें बहु रान जिम, बढत बहु जिम विटपी वन । —व. भा.

३ वन, जगल ।
४ वट वृक्ष ।
५ अजीर का वृक्ष ।
रू. भे.—बिटपी ।

विटब-स पु —प्रपच, झफडा ।

उ०—घरीया भेख भगति सु भागा, ग्रौर भरम ग्रघकेरा लागा । पेम भगति का कठण पेंडा, विटब न कोई मावै फंडा । —ग्रनुभववाणी

विटमूल-स. पु [स] वरुण की सभा मे रहकर उनकी उपासना करने वाले एक असुर का नाम ।

विटळ, विटल-वि.—१ विगडा हुग्रा, विकार युक्त ।

२ पतित, पथ भ्रष्ट, भ्रष्ट ।

उ०-१ भक्त सन्यासी सेवडा ए, लग्या परिग्रह री लार के । विटल हुवा घणा ए, गया जमारौ हार कै । —जयवाणी

उ०—२ अकबर कुटिळ ग्रनीत, ग्रौर विटळ सिर ग्रादरै । रघुकुळ उत्तम रीत, पाळै राण 'प्रतापसी' । —दुरसौ ग्राढौ

३ व्यभिचारी ।

उ०—ते राम्रेचर ग्रति विटल, विकाल वदन विकराल । विखम वचन मुख बोलतौ, रूठौ जाणि कराल । —वि. कु.

४ दुष्ट ।

उ०—वेलि विहूणां पत्र परि, हू हुइ छउ हीण । विटल रहि रे वेगलु, ग्रागलि थिका ग्रमीण । —मा. का प्र

५ विगडा हुग्रा, विगडैल ।

उ०—१ ग्रवै लोक हससि कंहसी सौ ठकुराणी विटळ है सो ख्याल तमासौ देखता थका ठाकुर नै माहै बुलाय लीयो है ग्राप पधारजै । —राजा रा गुर रा बेटा री वात

उ०-२ परभाता हरि पैल, वगडावत गावै विटळ । चूंथै काती छैल, मैल जगत रौ मोतिया । —रायसिंह सादू

रू. भे —बिटळ ।
ग्रल्पा.—विटळौ, विटळियौ, विटलौ, वियटल ।

विटळणौ, विटळबौ-क्रि. ग्र.—१ विचलित होना, ग्रस्थिर होना ।

उ०—ग्रर उठीनै मगरै ढळता ई ग्रसवार री मन विटळियौ । सोच्यौ केंडी ग्रबूझपणौ करियौ । हाथै ग्रायोडी सपत नै ठुकराय दी । वापडी डोकरी तौ नावधाव की नी पूछ्या । —फुलवाडी

२ मर्यादा रहित होना, कुनीतिपूर्ण होना ।

उ०—ग्रर वात नै सावळ समझता ई राजाजी घाटी री लटकी करता कैवण लागा—तो यूं बता, सावळ समझाया बिना कीकर समझ मे ग्रावै । देवौ जमानौ विटळियौ । मगो बेटौ ई मा रै साथै घोखौ करग्यौ । —फुलवाडी

३ पथ भ्रष्ट होना, धर्मच्युत होना ।

विटळणहार, हारौ (हारी), विटळणियौ—वि० ।
विटळिग्रोडौ, विटळियोडौ, विटळ्योडौ—भू० का० कृ० ।
विटळीजणौ, विटळीजबौ—भाव वा० ।
बटळणौ, बटळबौ, बिटळणौ, बिटळबौ, वटळणौ, वटळबौ, विटलणौ, विटलबौ—रू० भे० ।

विटलणौ, विटलबौ—देखो 'विटळणौ, विटळबौ' (रू भे)

विटलणहार, हारौ (हारी) विटलणियौ—वि० ।
विटलिग्रोडौ, विटलियोडौ, विटल्योडौ—भू० का० कृ० ।
विटलीजणौ, विटलीजबौ—भाव वा० ।

विटळाणौ, विटळाबौ-क्रि स (विटळणौ, विटळबौ क्रिया का प्रे रू)

१ विचलित करना या कराना, ग्रस्थिर करना या कराना ।

२ मर्यादारहित होने को प्रेरित करना या कराना, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित करना या कराना ।

३ पथ भ्रष्ट होने को प्रेरित करना या कराना, धर्मच्युत होने को प्रेरित करना या करना ।

विटळाणहार, हारो (हारी), विटळाणियो—वि० ।
विटळायोडो—भू० का० कृ० ।
विटळाईजणो, विटळाइजवो—कर्म वा० ।
विटळाणो, विटळावो, विटळावणो, विटळाववो, विटळोवणो, विटळाववो—रू० भे० ।

विटळायोडो–भू का कृ —१ विचलित किया या कराया हुआ, अस्थिर किया या कराया हुआ २ मर्यादारहित होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित किया या कराया हुआ. ३ पथभ्रष्ट होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, धर्मच्युत होने को प्रेरित किया या कराया हुआ ।
(स्त्री विटळायोडी)

विटळावणो, विटळाववो—देखो विटळाणो, विटळावो' (रू भे)
विटळावणहार, हारो (हारी), विटळावणियो—वि० ।
विटळाविश्रोडो, विटळावियोडो, विटळाव्योडो—भू० का० कृ० ।
विटळावीजणो, विटळावीजवो—कर्म वा० ।

विटळावियोडो—देखो विटळायोडो' (रू भे)
(स्त्री विटळावियोडी)

विटळियोडो–भू का कृ —१ विचलित हुवा हुआ, अस्थिर हुवा हुआ २ मर्यादारहित हुवा हुआ, कुनीतिपूर्ण हुवा हुआ ३ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, धर्मच्युत हुवा हुआ ।
(स्त्री विटळियोडी)

विटलियोडो –देखो 'विटळियोडो' (रू. भे)
(स्त्री विटलियोडी)

विटळियो, विटळो—देखो 'विटळ' (रू भे)

विटाणो, विटावो–क्रि अ —सिकुडना ।
उ०–तेह पुरस जरजर हुवो जी, सिथिल पडी छै जी काय । लीलरी पडै सरीर में जी, चामडी हाड विटाय । —जयवाणी
विटाणहार हारो (हारी) विटाणियो—वि० ।
विटायोडो—भू० का० कृ० ।
विटाईजणो, विटाईजवो—भाव वा० ।

विटायोड़ो–भू का कृ —सिकुडा हुआ ।
(स्त्री विटायोडी)

विटाळण, विटाळणो–वि —१ लज्जित करने वाला, कलंकित करने वाला ।
उ०—सीहणि हेकौ सीह जणि, छापरि मंडै आळि । दूध विटाळण कापुरस, वोहळा जणै सियाळि । —हा भा.
२ भ्रष्ट करने वाला ।

विटाळणो, विटाळबो–क्रि. स —१ विचलित करना, अस्थिर करना ।
उ०—वीरम चित विटाळियो, उलटी मत आणी । सात हजारह साढिया, दिन हेक दगाणी । आवै उण री ओठिया, कळ कूक कराणी । धींगा धींगा ढोलकी, सहवाण वजाणी । —वी मा
२ पथ भ्रष्ट करना, धर्मच्युत करना ।
उ०—लाजइ राजगोत्र अहिठाण, लाजइ चाचिगदे चहूआण । हू ता नही विटाळ आप, हिव लाजइ कान्हडदे बाप । —का दे प्र
३ कलंकित करना ।
४ बदनाम करना, निन्दित करना ।
विटाळणहार, हारो (हारी), विटाळणियो—वि० ।
विटाळिओडो, विटाळियोडो, विटाळयोडो—भू० का० कृ० ।
विटाळीजणो, वीटाळीजवो—कर्म वा० ।
वटाळणो, वटाळवो, विटाळणो, विटाळवो, वटाळणो, वटाळवो, विटालणो, विटालवो, भ्रिट्टालणो, भ्रिट्टालवो—रू० भे० ।

विटालणो विटालवो—देखो 'विटाळणो विटाळवो' (रू भे)
उ०—१ तइ हिंदू किया तुरक, विप्र तो मूल विटाल्या । वणिकै गइ विगति, राक करि लगरि राल्या । —स कु
उ०—२ पिण हु सीलवती सती रे हा, केम विटालुं देह । जिम तिम करी ए भोलवी रे हा, राख्यो सील अभग । —वि कु
उ०—३ दिवस कित लेकै गयै, गोखै वेठी भूर । मल भूखित कृसकाय मुनि, दीठो एहवो रूप । सीन वयण गयो वीसरी, सेवक नै कहै राय नगर विटाल्यो ढूंवडे, काढौ परो धकाय ।—स्रीपालरास
विटालणहार, हारो (हारी) विटालणियो—वि० ।
विटालिओडो, विटालियोडो, विटाल्योडो—भू० का० कृ० ।
विटालीजणो, विटालीजवो—कर्म वा० ।

विटाळियोड़ो–भू का कृ —१ विचलित किया हुआ, अस्थिर किया हुआ २ पथभ्रष्ट किया हुआ, धर्मच्युत किया हुआ ३ कलंकित किया हुआ ४ बदनाम किया हुआ, निन्दित किया हुआ ।
(स्त्री विटाळियोडी)

विटालियोडो—देखो 'विटाळियोडो' (रू भे)
(स्त्री विटालियोडी)

विटाळी–वि —देखो 'वटाळो' (रू भे)
(स्त्री विटाळी)

विटियोडो–भू का कृ.—आवेष्टित हुवा हुआ ।
(स्त्री विटियोडी)

विटोप–स पु —रण क्षेत्र मे सिर पर धारण किया जाने वाला लोह का टोप ।
उ०—जिणसाल जुग्राण करत जगदी, जुसण वाधै जम्मजडा ।

हृद ग्रोप विटोप रगावळि हाथळ, सूमाग्रा करि सिद्ध मडा ।
—गु रू व

विट्टाळणो, विट्टाळवो—देखो 'विटाळणो, विटाळवो' (रू भे) (उ. र)

विट्टाळणहार, हारो (हारी), विट्टाळणियो—वि० ।
विट्टाळिग्रोडो, विट्टाळियोडो, विट्टाळयोडो—भू० का० कृ० ।
विट्टाळीजणो, विट्टाळीजवो—कर्म वा० ।

विट्टाळियोडो—देखो 'विटाळियोडो' (रू भे)
(स्त्री विट्टाळियोडी)

विट्ठळ–स पु—१ विष्णु की एक मूर्ति का नाम जो दक्षिणी भारत मे स्थित है ।
२ ईश्वर, परमेश्वर ।
३ श्री कृष्ण ।
रू भे - विट्ठळ, बीठळ, बीट्ठळ, विठळ ।
ग्रल्पा —विट्ठळो, विट्ठलो ।
मह —विठळेसवर, विठळेस्वर ।

विट्ठलनाथ, विट्ठलनाथ–स पु—१ भगवान श्री विष्णु का नाम ।
२ पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी एव 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के रचयिता, प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य बल्लभाचार्य के पुत्र ।
रू. भे —बीठळनाथ, वीठळनाथ।

विट्ठळो, विट्ठलो—देखो 'विट्ठळ' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—वद्दरी माहारा विट्ठला ! का सिर कापिउ राहु ? इदु गलिउ रहितु उदरि, तु मुझ देत न दाहु । —मा. का प्र.

विठळ—देखो 'विट्ठळ' (रू भे)
उ०—ए जो पाडव थया ग्रमेळा, विठळ धाव तो जिसी वेळा ।
—सिवदान बारहठ

विठळेसवर, विठळेस्वर—देखो 'विट्ठळ' (मह, रू भे) (ग्र. मा)

विठायत–स पु—वैठने का स्थान, बैठक ।
उ०—हुवै चारमगळा, नाद सुर हुवै नवाळा, हरख विठायत हुवै हुवै दरवार भूजाळा । हुय हूक लजागडा, हुवै ग्रोछाह ग्रमला, हुवै वांण रूपगा, हुवै सिणगार महला । —बखतो खिडियो

विडग, विडगक–स पु [स वितुण्ड] १ ग्रश्व, घोडा ।
(ग्र मा, ना डिं को)
उ०—१ घोळै दिन वागा घर्कं, तोलै कूंत खडग्ग । ग्राम्हा साम्हा ग्राहुडे, विडग उपाडै वग्ग । —रा रू
उ०—२ पाच सोबायता गिळै ऊभौ सुपह, विरोळै घोंकळै करै वाहा । विडग ग्रादेसियो दळै बहळायता, सार ग्रादेसियो पातसाहा ।
—ठाकर हरनाथसिंघ करमसोत रो गीत
उ०—३ गई घरि क्रोध भळाहळ जागि, उभै चग छूटि भळाहळ ग्रागि । विडगक भ्राळि पवन्निय वाग, भळाहळ सेल ग्रहै मध्य भाग । —सू प्र.
उ०—४ छछग्रा मद रा छाकिया, रहो ग्राघा सिरदार । विडगां चढीया वीर वळ, लडगा ग्राया लार । —पर्ना
२ ऊट । (ह ना मा)
उ०—तुरत ग्रेक खरचै रतन, लगस तोड लडग । ग्रभग भूप उबारा, वड गज वाज विडग ।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात
३ वायविडग नामक एक जडी विशेष ।
वि—१ मस्त, उन्मत्त ।
२ वेपरवाह निशक ।
३ ग्राजाद, स्वतत्र ।
४ उदासीन ।
५ वीर, बहादुर ।
रू भे —वडगी, विडग, विडगि, विड्गी, विडगि, विडगी, विणग ।
मह —बडग, विडगाळ ।
ग्रल्पा —विडगो ।

विडगळी–स स्त्री—गाडी के अग्र भाग (ऊध) से लगे ग्रौर लटकते हुए वे दो लम्बे लकडी के डडो मे से एक जो जमीन पर लगकर गाडी को जमीन से ऊची रखते हैं ।

विडगाळ–स. स्त्री—१ घोडी ।
उ०—घर्णं फेट ग्री खोण सू सेल घोवै, जठी वाग वाळै तठी 'पाल' जोवै । विडगाळ,फाळं करै ग्राठ वाटां,चलै वायरै दोट स मेघ छाटां ।
—पा प्र.
२ देखो 'विडग' (मह, रू भे)

विडगि, विडगी - देखो 'विडग' (रू. भे)

विडगो—देखो 'विडग' (ग्रल्पा., रू भे)
उ०—ग्रला विडगो तिण फोजा वणावो, ग्रला ग्रादमा दळ मुसा ग्रणावो । ग्रला चंचळा ऊपरा मोर चाढो, ग्रला दाणवा दिसै वागा उपाडो । —पी ग्र

विडब–स पु [स विडव, विडम्ब] १ नकल ।
२ कष्ट, पीडा, सन्ताप ।
३ हसी, उडाने की क्रिया ।
रू भे—विडव ।

विडबक–वि [स] १ समान ग्रनुकरण करने वाला, नकल करने वाला ।

२ अपमानित करने या निन्दा करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने वाला।

३ हंसी उडाने वाला।

४ कष्ट देने वाला, सन्ताप देने वाला।

रू. भे —विडवक।

विडवणो, विडबवो—क्रि स —१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारना।

२ चिढाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारना।

३ उपहास करना हंसी-मजाक करना।

४ प्रपच या जाल फैलाना।

५ उद्वेग या दु ख उत्पन्न करना।

६ वेष बदलना।

उ०—१ मत्स्यदेसि जाई नइ रमउ, ए तेरमउ वरसु निगमउ। ग्या वइराटह राय ग्रमथानि, वेस विडव्या नीय अभिमानी।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राइ बोलावि वहू हिडव, अम्हि वसीसइ वेस विडवि। तुम्हि सिघावउ तायह राजि, समरी आवे अम्हउ काजि।

—सालिभद्र सूरि

विडवणहार, हारौ (हारी), विडवणियौ—वि०।

विडविम्रोडौ, विडवियोडौ विडव्योडौ—भू० का० कृ०।

विडवीजणौ, विडवीजवौ—कर्म वा०।

विडंवन, विडवना—स. स्त्री [स० विडवन, विडम्वनम्, विडम्वना]-

१ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने की क्रिया।

२ चिढाने या अपमानित करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने की क्रिया।

३ उपहास, हसी-मजाक।

४ प्रपच, जजाल।

५ उद्वेग, दु ख।

रू भे —विडवना, विटवण, विटवणा, विटवन, विटवना।

विडवियोडौ—भू का कृ —१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारा हुआ २ चिढाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारा हुआ ३ उपहास किया हुआ, हंसी-मजाक किया हुआ ४ प्रपच या जाल फैलाया हुआ ५ उद्वेग या दु ख सपन्न किया हुआ, ६ वेष बदला हुआ।

(स्त्री विडवियोडी)

विडवी—वि [स विडम्विन्] १ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने वाला।

चिढाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल करने वाला।

३ हसी उडाने वाला, उपहास करने वाला।

विढ—देखो 'भिड' (रू भे) (अ मा, ह. ना मा)

उ०—१ खसम विसारचा विढ भज्या, विचार न जोया।

—केसोदास गाडण

उ०—२ जठै पना बोली अे तौ पान को वीडो छै, रखावस्यो ही। मन का मनोरथ हुवां थका, वधाइ पानसो हीज। खवास आय कवर नै हकीकत कही। बावना चनण कै विढै, अेहै रूप मिलजै तौ सही।

—पमा

विडओजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे) (ह ना. मा)

विडणौ, विडवौ—देखो 'विढणौ, विढवौ' (रू भे.)

विडणहार, हारौ (हारी), विडणियौ—वि०।

विडिग्रोडौ, विडियोडौ, विड्योडौ—भू० का० कृ०।

विडीजणौ, विडीजवौ—भाव वा०।

विडद—देखो 'विरुद' (रू भे.)

उ०—होइ लोह गोला मुगल, दोला जोर जुडिया जग। हैवरा गलि गज गाह वाधै रह्या विडद अभग।

—प व. चौ

विडदडी—देखो 'विडदडी' (रू भे)

विडदवडी—देखो 'विडदवडी' (रू. भे)

विडदविनायक—देखो 'विडदविनायक' (रू भे.)

विडदाव—देखो 'विरुद' (रू भे.)

विडदावळ, विडदावळी—देखो 'विरुदावळी' (रू भे)

विडरणौ, विडरवौ—क्रि अ.—१ क्रोध होना, गुस्सा होना।

२ नाश होना, नष्ट होना।

३ डरना, भयभीत होना।

उ०—विडरी असज 'विजो' थियो वासै, वाजै हाक थई विकरोळ। चाला चालणहार न चूको, खत्रवट खगवाहौ खेसोल।

—नैणसी

विडरणहार, हारौ (हारी), विडरणियौ—वि०।

विडरिग्रोडौ, विडरियोडौ विडरयोडौ—भू० का० कृ०।

विडरीजणौ, विडरीजवौ—भाव वा०।

विडरणौ, विडरवौ—रू० भे०।

विडराणौ, विडरावौ—क्रि स —डराना, भयभीत करना।

उ०—१ रोवत-कूकत धूजी माताजी रै गेया, माता लै धूजी नै कठ लगाया। काई काई रे धूजी तनै कण रुसायो, थाई काई रे धूजी तनै कण विडरायो।

—लो गी

उ०—२ मनै म्हारा पिताजी गोद खेलायो, मनै म्हारी माई-मा विडरायो। तूं नहिं भजियो वाला मैं नहिं भजियो, भजियां विना सुख काय सू होवै।

—लो गी

विडराणहार, हारौ (हारी), विडराणियौ—वि०।

विडरायोडौ—भू० का० कृ०।

विडराईजणौ, विडराईजवौ—कर्म वा० ।

विडराणौ, विडरावौ, विडरावणौ, विडरावबौ, विडरायणौ, विडरावबौ—रू० भे० ।

विडरायोडो—भू का. कृ—डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री विडरायोडी)

विडरावणौ, विडरावबौ—देखो 'विडराणौ, विडरावौ' (रू भे)

विडरावणहार हारौ (हारी), विडरावणियौ—वि ।

विडराविश्रोडो, विडरावियोडो विडराव्योडो—भू का कृ ।

विडरावीजणौ, विडरावीजबौ—कर्म वा ।

विडरावियोडो—देखो 'विडरायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री विडरावियोडी)

विडरियोडो—भू का कृ—१ क्रुद्ध हुवा हुआ, गुस्सा हुवा हुआ. २ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ. ३ नष्ट हुवा हुआ ।

(स्त्री विडरियोडी)

विडरी—वि—१ कायर, डरपोक ।

२ दुखी, व्याकुल ।

रू भे.—बिडरी

विडरूप—वि—१ कुरूप, बदसूरत, सुन्दरता-रहित ।

उ०—१ बादळ सरस्‌ पै'ला सूवटा रा पींजरा रै गोडै गियौ । सूवटा उणनै कागला सू ई वत्ता विडरूप निगै आया । आगी गवाडी रौ भळाकौ दियौ । की चीज दाय नी आई ।

—फुलवाडी

उ०—२ उण ठेलमठेल मेळा रै मांगै बादळ राज-दरबार मे पूगौ जणा राजाजी फोजी अर विडरूप लुगाया री परख करण मे मगन हा । हेड री हेड ऊभी ही । —फुलवाडी

उ०—३ वानै खुद हाथा तगतगाय बारै काढी । पछै डावडियां नै कह्यौ कै सगळी विडरूप लुगाया नै राज-मैल सू बारै तगड दे ।

—फुलवाडी

२ भयकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ वा दो तीन वेळा मासी रै मूडा साम्ही जोयौ तौ उणनै श्रैडो लखायौ जाणै उणरी आख्या होठा माथै चिप्योडी व्है ज्यू, कान आपरी ठायो छोड लिलाड माथै जुडग्या अर नाक ठोडी रै हेटै लटूगै । इण भात मासी रौ उणियारो विकृत अर विडरूप क्यू व्हैगो ? —फुलवाडी

उ०—२ विडरूप चलै असि चढि कुराणि, जागिया प्रेत रणखेत जाणि । दरयाव रूप हू कोस दोय, जगमुकट कीध हेरास जोय ।

—सू. प्र.

रू भे—विडरूप, बिडरूपी, वीरूप, वडरूप, विडरूपी, ।

विडरूपता—स स्त्री—१ कुरूपता, बदसूरती ।

उ०—तद बाली मासी हुमनै कैवण लागी—बेटी, श्रो कुदरत रो नेम के भाटो ई रूपाळी चीज मूं मोह करै अर विडरूपता सू घिमकै ।

—फुलवाडी

२ भयानकता, भयकरता ।

उ०— निपट अबूझ अर अग्यानी व्हैता थका ई वेटा नै थारै रूप री परख है अर वो म्हारी विडरूपता सू डरपै । —फुलवाडी

विडरूपी—देखो 'विडरूप' (रू. भे.)

विडलूण, विडलूण—स पु [स विडलवण] एक प्रकार का सावर नामक नमक । (अमरत) (उ. र)

विडलौ—देखो 'विडलौ' (रू भे.)

विडस—स पु [स वडिश] मछली फसाने का यत्र विशेष । (अ. मा)

रू भे.—वडस ।

विडाण—देखो 'विड' (१) (रू. भे)

उ०—चित बाल डरचौ तरु देख सही, मिळियौ सिधराव विडांण मही, श्रण लेसिय जोगिय मास भगा, पडियौ झरडौ दर दौड पगा । —पा प्र

विडाणौ—वि. (स्त्री विडाणी) १ भयकर, भयावह ।

२ पराया, दूसरो का ।

उ०—१ आखडिया डबर हुई, नयण गमाया रोय । सै साजण परदेसमइ, रह्या विडाणा होय । —ढो मा

उ०—२ सारा विडाणा हिव हुवा, जामी हमारा सीम वै । सीस घणारा हूँचीया, अब आया मूझ चोर वै । —रीसालू री बात

उ०—३ राम नाम निस दिन भजै, तजो विडांणी तात । जनहरिया नर देह को, औसर वीतो जात । —अनुभववाणी

२ नासवान ।

उ०—गाफल मूढ न चेतिया, आ देह विडाणी ।

—केसोदास गाडण

३ अन्य ।

उ०—फता फिरज्यो एकला, किसा विडाणा साथि । थारी माथी तीन जण हियो कटारि हाथि । —जखडा मुखडा भाटी री वात

४ दुस्मन की, शत्रु की ।

उ०—१ सादूलो आपा समो, बियो न कोय गिणत । हाक विडाणी किम सहै, घण गाजियै मरत । —हा झा

उ०—२ खहर गमै व्रत दुज्जडा, सहर करै दहवाट । आया थांणा 'अजन' रा, लूट विडाणा राट । —रा रू

रू भे—बिडाणौ, विडाणौ, विराणौ ।

विडामण—वि—भयकर भयावह ।

उ०—रेवता वाजिया पोड रडक, धराधर धुजीय कोम धडक। विडामण डब्बर दीह विचाळ, मिळे निस माद्रव नी मेघमाळ।

—गो. रू.

विडार-स पु —नाश, सहार।

वि —नाश करने वाला, सहार करने वाला।

उ०—अेकण पसर तखत वै ऊपर, हीसल मला मनावी हार। पगी तणा वाजिया प्रघळा, वडे दुरंग सिर राय विडार।—द. दा

विडारक-स पु —बिल्ली, विडाल। (व भा)

वि —नाश करने वाला, सहार करने वाला।

विडारणौ, विडारवौ-क्रि स —१ चीरना, फाडना।

उ०—करके तरवार ग्रहै हिरणाकुस, मूढ निरोस निवारमुडै। सुत के बळ एक मुरार तणौ सज, थभ विडार गिलार थडै। —भगतमाळ

२ नाश करना, ध्वस करना, मिटाना।

उ०—१ तौ पिण आपणी उकति सार, असुरा विडार, धूमर सधार, चड मुड चगाळ, रगतवीज, खंगाळ सभ निसभ सहारण, भारथ खग खेरण, तिण रौ वखाण देवी दीवाण, सुकवि कहै सुणावै, परम मन वछित पावै। —मा वचनिक

उ०—२ जैमल कारण मड जुध, वड सेन विडारै। गिनका कीर पठावगी, वैकुठ दवारै। —भगतमळ

उ०—३ निय निय तेज मुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर। अप्रम सुज तेज प्रगट धुर आणण, विसन तेज भुज दैयत विडारण। —मा वचनिका

उ०—४ रिणमालौत कहै रिण रुधा, अचड तियागी बोल इसौ, जूह विडार किसौ जीव-रखौ, केहर रुधा साथ किसौ। —द दा

उ०—५ प्रति दिन मगळ गीत, देवता तणा गुवावै। विघन विडारण काज, विनायक नूत बुलावै। — दसदेव

ऊ०—६ एकलड गुरुड पन्नग खाइ, सीह एक गज ना सइ घाइ। पारथ एक दल कोडि विडारइ, ईणहि सिउ को नवि मलइ अखाडइ।

—सालिसूरि

३ निवारण करना, मिटाना।

उ०—१ हरीया हसती दत सु। तोडै कोट किवार। साध विडारै सवद सु, भरम करम का डार। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया भाजै बयार कू। हमती मातौ मद्। साध विडारै भरम कु सो रातो अनहद। —अनुभववाणी

४ बर्बाद करना, बिगाडना।

उ०—मीरा नै राणाजी बरजै, मतना जन्म विडारै। थे सगत साध की सीख्या, मत आवो म्हैल हमारै। —मीरा

५ मारना।

उ०—१ काठ काण करवत्त, वट किय दत विहारै। पछट वीर भुज पाण, चीर जुरसंध विडारै। —रा रू.

उ०—२ देवी दसरथ रुप स्रवण विडारी, देवी स्रव्वण रुप पितु मात तारी। देवी केकयी रूप तै कूड कीधा, देवी राम रै रुप वनवास लीधा। —देवि

उ०—३ सिहमल सिलकिया करमट कूदिया, कटका हुई ज हालीहाल। सेखा दुरजनसाल समोभरम, रोपी पग विडारण माल।

—अमरसिह राठौड री बात

६ तोडना।

उ०—१ करीउ प्रतिग्या चडीउ भूझि जयद्रथु रणि पाडइ। भूरिस्रवा नउ तौण समइ सरि बाहु विडारइ —सालिभद्रसूरि

उ०—२ वीर कोहि चिहु पाडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि विडारी। तु विराटन्रप भीमि ऊहालिउ, दाउ देविणु विलेच्छु सुवालिउ। —सालिसूरि

६ किसी समूह या दल को बीच मे से पृथक करना, दूर हटाना, दूर करना, चीर देना, विभक्त करना।

उ०—वन वाहर नाहर वसै, वाहर थाट विडार। तरवर गुलम समीर विण, न को नमावणहार। —बा दा.

८ कुपित करना, क्रोधित करना।

९ तितर-बितर करना, बिखेरना।

१० त्याग करना, छोडना।

उ०—१ करिस्या भरम करम कु कानै, भरिस्या भगति भडारी। खरचत खावत सहज खजीना, लालच लोभ विडारी।

—अनुभववाणी

उ०—२ जामण रा रै जाया, किस विध विडारी रै छोटी भाण नै। —जीण माता री गीत

उ०—३ हरसा वीर मेरा रै, जै मेरी होती जुग तै माय। जामण का रै जाया, अब्बन कवारी नै नाय विडारती।

—जीण माता री गीत

११ उजड करना, निरावाद करना।

उ०—चुण्या सतारघा ढह पडे, ढहिया सवारै, भरिया सरवर रीतवै, रीता जळ भारै। सूना देस वसावही, वसिया विडारै, सीत रखदा जळ कवळ, थळ आक सघारै। —केसोदास गाडण

विडारणहार हारौ (हारी), विडारणियौ—वि०।

विडारिग्रोडौ, विडारियोडौ, विडारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विडारीजणौ, विडारीजवौ—कर्म वा०।

विडारणौ, विड़ारवौ, विडारणौ, विडारवौ, विहारणौ, विहारवौ

—रू० भे०।

विडारियोडो–भू का कृ—१ चीरा हुआ, फाडा हुआ. २ नाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ, मिटाया हुआ ३ निवारण किया हुआ, मिटाया हुआ ४ बर्बाद किया हुआ, बिगाडा हुआ. ५ मारा हुआ. ६ किसी समूह या दल को बीच मे से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, दूर किया हुआ, चीरा हुआ ७ कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ ८ तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ९ त्याग किया हुआ, छोडा हुआ, १० निराबाद किया हुआ, उजड किया हुआ ।

(स्त्री विडारियोडी)

विडाळ, विडाल—देखो 'विडाळ' (रू. भे)

उ०—१ चख चोळ भाल विकराळ चूंच, कळ चाल प्रकट दाढाळ कूंच । रोसाळ मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता विडाळ नाहर चसम्म ।
—वि. स

उ०—२ वद विडाळ वदि सुणाइ वलि, सह इकवीस सुणाइ । हार घटै हुइ लुघ हुम्रै, तिम तिम नाम वत्ताइ । —पिं. प्र

विडाळद्रग–वि —बिल्ली के समान आखो वाला ।

स पु —यवन, मुसलमान ।

उ०—असला चढि भाळ कराळ तकै, धडकै नह चित्त लकाळ धकै विकसै रणताळ अमाळ वगा, दमकै खिजि ज्वाळ विडाल–द्रगा ।
—मे म

रू भे.—विडालद्रग, विडाळद्रग

विडालव्रतिक–वि.—बिल्ली के समान वृत्ति वाला ।

रू. भे.—विडाळव्रतिक, विडाळव्रत्तिक

विडालाक्ष–स पु [स] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे उपस्थित एक राजा ।

विडाळी—देखो 'विडाळ' (अल्पा , रू भे)

विडाव–स पु —विशेप प्रकार का दाव ।

उ०—मैं इम जाणियो महाराज, कोइक डाव–विडाव करू । मार महंबै बदकी मीरजै, मीरजो मार'र पछै मरू ।
—वगती खिडियो

विडावणो–वि —जो सुहावना न हो, अप्रिय, अरुचिकर ।

उ०—भावै नही ज भात, लागै विणज विडावणो । रीरावै दिन-रात, रोट्या कारण, राजिया । —किरपाराम

विडियोडो—देखो 'विढियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विडियोडी)

विडुव—देखो 'विरुद' (रू भे)

विडूजा–स पु [स. विडोजस्] इन्द्र । (अ. मा., ना. मा.,)

रू भे —वडूजा, बिडोजा, विडूजा, वडूजा, विडग्रोजा, विड्ज्जा, विडोजा, विडग्रोजा, विडोजा, विडौजा ।

विडूजावाह–स पु [सं. विडोजस्+वाहन] इन्द्र का वाहन, हाथी, एरावत ।

रू भे —वडूजावाह, बिडोजावाह, विडूजावाह, वडूजावाह, विड-ग्रोजावाह, विड्जावाह, विडोजावाह, विडग्रोजावाह, विडोजावाह, विडौजावाह ।

विडूरथ–स पु —१ एक यादववशी जो श्वफल्क के भाई तथा चित्ररथ के पुत्र थे ।

२ दन्तवक्त्र का भाई जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

३ एक पुरुवशीय सम्राट्, जिसे उसकी माता ने, जब परशुरामजी पृथ्वी नि क्षत्रिय कर रहे थे, उस समय ऋक्ष्वत् पर्वत पर एक ऋषि के आश्रम में छिपा कर रखा था ।

४ अनश्वन का पिता, मधुकुल मे उत्पन्न सप्रिया का पति और कुरु राजा एव दाशार्ही शुभागी के ससर्ग से उत्पन्न, एक राजा ।

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू भे) (ना डि. को)

विडोळ–वि.—आकार रहित, विना आकार का ।

विडोळणो, विडोळवो–क्रि स —कम्पायमान करना, कम्पित करना, भय-भीत करना ।

उ०—अमोल तोल मोल कै, प्रचोळ चोळ अख कै । अडोळ डोळ कध कै, विडोळ नै असरु कै । —ऊ का.

विडोळणहार, हारो (हारी), विडोळणियो—वि ।

विडोळिग्रोडो, विडोळियोडो, विडोळयोडो—भू का कृ. ।

विडोळीजणो, विडोळीजवो—कर्म वा ।

विडोळियोडो–भू का. कृ.—कम्पायमान किया हुआ, कम्पित किया हुआ भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री विडोळियोडी)

विडौ—देखो 'विडो' (रू. भे)

विडौजा—देखो 'विडूजा' (रू भे)

विडौजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू भे)

विड्डारणो, विड्डारवो—देखो 'विडारणो विडारवो' (रू भे)

उ०—१ राव राय रखपाळ, राव रहडण रिम राहा । राव कुरूप हराय, राव वैरी पतसाहा । राव रोर विड्डार, राव ससार उधारै । राव ध्रम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै । —नैणसी

उ०—२ सळखहर राउ सिरि वधी सेस, दळपत्ति हुग्रउ सिरि दसा देस । मडोवर लियउ मल्लेछ मारि, विड्डारि सत्र मिरिया वहारि ।
—रा ज. सी.

विड्डारणहार, हारो (हारी), विड्डारणियो—वि० ।

विड्डारिग्रोडो, विड्डारियोडो, विड्डारयोडो—भू० का० कृ० ।

विड्डारीजणो, विड्डारीजवो—कम वा० ।

विड्डारियोडो—देखो 'विडारियोडो' (रू भे)
(स्त्री विड्डारियोडी)

विड्डणी, विड्डवो—देखो 'विढणी, विढवो' (रू भे.)

उ०—मुडिया पिंड मेगळ असिस उछछळ, रावत विम्मळ लडि पडिय। दुजडा दूनै दळ विड्डै सब्बळ, कदळ पेखै रवि खडिय। —गु. रू व

विड्डणहार, हारौ (हारी), विड्डणियौ—वि०।
विड्डिग्रोडो, विड्डियोडो, विड्डयोडो—भू० का० कृ०।
विड्डीजणौ, विड्डीजवौ—भाव वा०।

विड्डियोडो—देखो 'विढियोडो (रू भे)
(स्त्री विड्डियोडी)

विढ, विढक, विढण, विढणि-स पु—देखो 'वेढ' (रू. भे)

उ०—१ छिळ वहत धक धक अछक छक, अतराळ गरळक कुळ इधक। फीफरडक नद फरक, हुय विढक हक हक, वीरहक। —र रू

उ०—२ थर थक्का वलवार विढण क्यूं वीमरै, लग्ग लोह लकीर नमता नीसरै। वाव फरूकै वेढ वळै नह वापरै, पाणा चढिया किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोरदान बारहठ

उ०—३ असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडंचै वाही करि खीज सुकरि आकास हूत सेलारा, वीजुल विढण क वुही वीज। —केसोदास गाडण

उ०—४ इम कहि विढण दीध न्रप आयस, दळ हालिया वाग पद-मणि दिस। रोस चढै विढिया रखवाळा, अठ छ हजार तेजमिण वाळा। —सू प्र.

उ०—५ वडो सूर सुदतार रायसिंघ विमरामिया, विढण कुण कवारी घडा वरसी। कूंजरा तणी मोहताद करसी कवण, कवण कोडा तणी मोज करसी। —दुरसो आढो

उ०—६ आलम तइ आयाह विग्रह हुवइ कीधइ विढणि। अचळेसर गढ अवछडे जिव लै मोकळि जाह। —अ. वचनिका

उ०—७ वूर पडि जवूर विहु घड, भुरज वीछडि पडे खडभड। विढण घरि अड सुहड समवड, वडवडे पिंड चार। —रा रू

विढणौ, विढवो-क्रि अ—१ युद्ध करना, सग्राम करना।

उ०—१आठुग्रा चाढता घकै साबळ अणी,खेलता घसळ खत्रवाट आमेट। विढता सेस मणगयण लागः वर्ध, नग भिडज करग राजा तणा नेट। —नाथो सादू

उ०—२ परठि पाच पोरिस तणी भणाणियो पाधरै, चमरवध करण नमि वति चेजो। विधूसै सेंद फुलवादि रूका विढण, त्रविध घड वाग विचि भमर 'तेजो'। —तेजसिंघ सेग्गावत री गीत

उ०—३ आया साहू अलावदी, विढ फटका सू वीर। मामी रिणथभर मुम्रो, हठ निरवाह हमीर। —वा दा.

उ०—४ सहे खग सभ्रम 'सामतसाह', विढै अनपाळ' करै हृथ-वाह। सफै करिमाळ झटा समरेस, विढै 'करनेस' तणो 'वखतेस'। —सू प्र

२ लडना, झगडना।

उ०—एकदा प्रस्ताव। जोईयौ दलो गुजरात चाकरी गयो हुतो भाईया सू विढनै। उठै गुजरात घणा दिन रह्यो। ओथ वीमाह कियो, घणा दिन रह्यो। —नैणसी

३ भिडना, टक्कर लेना।

उ०—रे राखस मुझ आगलि वाल, मारिसि तउ तू पूगउ कालु। रूख ऊपाडी वेई विढई, दह दिसि गाजइ डूगर रढइ। —सालिभद्र सूरि

४ युद्ध क्षेत्र मे लडते हुवे मारा जाना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ धसै वरियाम वहै खग-धार, विढति सुवप्प पडन विहार। लडै हिक सामा लोह लियत, दियै हिक पाव चडे गज-दत। —गु रू ब.

उ०—२ कोटा ओट घणा जुध कीया, फौजा घणा किया पग-फेर। राउ राठोड जिही सूं रोद्रां, अध-रत विढियो न को अनेर। —केसोदास गाडण

उ०—३ केती वार हुई कछवाहा, धाय मचता घमसाणा। दाग्रै परी हरी-चद दूजा, विढ पोढ़ो आव विवाणा। —जैसिंघ नरूका कछवाहा री गीत

उ०—४ भागा साथि न भागो अणभग, आप विढै भाजिया अरि। केहरि सरगि पहूतो अणकळ, 'करन' हरो अखियात करि। —नाहरखान चौहाण री गीत

५ फटना।
६ कटना।

उ०—भुहा भिडि मूछ चत्रा विकराळ, काळै असि ओरवियो कळिचाळ। दियै खग झाट 'गिरद्धरदास', विढै असवार सहेत अहास। —सू प्र

विढणहार, हारो (हारी), विढणियौ—वि०।
विढिओडो, विढियोडो, विढ्योडो—भू० का० कृ०।
विढीजणौ, विढीजवौ—भाव वा०।

विढणो, विढवो, विढवणौ, विढववो, विदणो, विटवो, विडणौ विडवो, विड्डणो, विड्डवो - रू० भे०।

विढाळ-स पु—योद्धा।

उ०—झड ग्रनड झाड ग्राएँ उपाड, दळ मिळैं दूठ रिए मिढे रूढ, तेगा ग्रताळ वागी विढाळ, तिए वखत तात भड लखए भ्रात, घल सगत चोट लग पडै लोट, '' ' । —र. रू.

विढियोडो—भू. का कृ.—१ युद्ध किया हुग्रा, सग्राम किया हुग्रा. २ लडा हुग्रा, झगडा हुग्रा ३ भिडा हुग्रा, टक्कर लिया हुग्रा ४ युद्ध क्षेत्र मे लडते हुवे मरा हुग्रा, वीरगति प्राप्त हुवा हुग्रा ५ फटा हुग्रा ६ कटा हुग्रा ।

(स्त्री विढियोडी)

विएग—देखो 'विडग' (१) (रू भे)

उ०—लै ऊडळिया 'पाल' नैं, भूप तएौ तप भाळ । विएग चढै ग्रीखविया, कोळू दिस ततकाळ । —पा प्र.

विएगणौ—देखो 'विएगएौ' (रू. भे)

विएंठणौ, विएठवौ—देखो 'विएठुएौ, विएठुवौ' (रू. भे.)

उ०—राम नाम विए जाणिया, वात विएंठी मूळ । हरीया जब होसी कहा, ग्रत भयौ ग्रसथूळ । —ग्रनुभववाणी

विएठएहार, हारौ (हारी), विएठिएयौ—वि० ।

विएठिग्रोडो, विएठयोडौ, विएठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विएठीजणौ, विएठीजवौ—भाव वा० ।

विएठियोड़ौ—देखो 'विएठुियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विएठियोडी)

विण—१ देखो 'विना' (रू भे)

उ०—१ कंध वसन रए हाथ लग, घोडा ऊपर गेह । घर रखाळी विण घरए, गिएौ न ग्रए सम देह । —जैतदान बारहठ

उ०—घट तेज ग्रनोपम वेग घएू, विण कारज तुज्ज विहग वएू । रखसू कर मोद घएौ रळिया, उए नू ग्रसमान री ऊडळिया । —पा प्र.

उ०—३ कोकिल सोर मोर तडवि फ्रत, नटवर गान सगीत करै ग्रत । गान पांन इम्रत सम गावै, ईस्वर विण दुतिया नह ग्रावै । —सू प्र

उ०—४ दीपक विण मदिर किसो, यौवन विण सिणगार । नेह विना सी प्रीति जिम, तिम कता विण नार । —वि. कु

उ०—५ ग्रसुर वोलियो कुवोल पतसाह मुह ग्रागळी, राज विण खत्री घरम कमए राखै । दूसरा 'माल' वरदांन तोनूं दिवू, 'ग्रमर' मो काढ जम-दाढ ग्राखै । —केसोदास गाडए

२ देखो 'वए' (रू भे.)

उ०—१ रज वटधर कट रज मिल्या, विण रज भरियो बट्ट । रज उछाळ गजराज घए, रए वांटे रजवट्ट । —रैवतसिह भाटी

उ०—२ देवीदास स्री ठाकुरा तै परएाम कियो । तद भीतर सू ग्रावाज हुई-पलक दरियाव तमासो दीठो ? कुवर कहै-ग्रापरी किरपा सू । फेर ग्रवाज हुई-तै ग्रा भगवान री वात किएी नै कही तो विण-सायत थाहरी देह छूटसी, तैसूं खबरदार रहै । —पलक दरियाव री वात

उ०—३ कुळ हाडा कूरमां, किया विण ग्राडा कारए । ज्या ग्रागै ग्रगराज, घरै गजराज न घारए । —रा रू.

विणग—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—कारिज कीधू जोईइ, [विक्रम करइ विचार] । विणग विचक्षए मोकलू, साथइ सपति सार । —मा. का. प्र

विएज—स. पु —१ पकाए हुए मीठे चावल ।

२ मिष्ठान, मिठाई । (बीकानेर का उत्तरी पूर्वी भाग)

३ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—१ ठकुरौ साह सरसै माहै रहै । सु इय रै मताह री छेह कोइ नही । ग्रर ईयै रै वीजो विणज कोई जिकै समुद्र माहै जिहाज ठेलै तिका री जोखम ग्रो लेवै । इए भात रहै । —ठकुरै साह री वात

उ०—२ दान भोग विन धन ज सच्यौ, खेती विणज में पाई रे ग्रतकाल मे कुटुब कबीलो, लगा झगड नै जोई,रे । —जयवाणी

उ०—३ गुर सिख मिळीया क्या हुवै, मिळ ग्रर पाडी वाटि । हरीया खोटा विएज कै, ठग मिळ ल्यावै खाटि । —ग्रनुभववाणी

उ०—४ लख चौरासी हाट मैं, वसत ग्रमोलिक एक । हरीया खोटा जाएौ विएज कै, लीया लाभ ग्रनेक । —ग्रनुभव वाणी

रू भे.—वएाज, बनज, विएाज, बिनज, विरज, वएाज, विएाज, ।

विएजणौ, विएजवौ—क्रि. स.—१ व्यापार करना, व्यवसाय करना ।

उ०—१ विएजै सासू ग्रर बहू, घघै ततपर घूत । ठग नह जो गणिका ठगै, वणियाएी रा पूत । —बा. दा

उ०—२ ग्रएहूत भाठै सूं काठी हुवै । विरिया देख' र विणजै नी सौ वाणियो ही गिवार । छाती काठी करी है । जै जिसो दिन नही ग्रावै । —दसदोख

उ० —३ एक ग्रमोलिक वसत का, विरळा विएजणहार । जनह-रीया सो विएजसी, लाहै ग्रत न पार । —ग्रनुभव वाणी

उ०—४ तन तोला मन ताकडी, विएजणहार वचन । राम रतन कु छाडि कै, साच न सचै धन । —ग्रनुभववाणी

२ रुपये कर्ज देना, उधार देना ।

३ रुपये का व्यापार मे या ग्रन्य कही विनियोग करना ।

उ०— विणजै व्यापार वलि विवहार, लक्ष्मी ग्राप वहै लार । परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोलै बहु जस बाजारं । —वं. व. ग्र.

विणजणहार, हारौ (हारी), विणजणियौ—वि. ।
विणजिश्रोडौ, विणजियोडौ, विणज्योडौ—भू का क्र. ।
विणजीजणौ, विणजीजवौ,—कर्म वा ।
वणजणौ, वणजवौ, विणजणौ, विरणजवौ, वणजणौ वणजवौ, वन्निजणौ, वन्निजवौ —रू भे. ।

विणजार—१ देखो 'विरणजार' (रू भे.)
२ देखो 'विरणजारौ' (मह, रू भे.)

विणजारडौ—देखो 'विरणजारौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—अला हम विरणजारा पूरे साहू का, विरणज करण वोपारौ। हम विरणजारडिया। —दीन सुदरदी
(स्त्री विरणजारडी)

विणजारण-स स्त्री—१ एक प्रकार की भैंस विशेष ।
उ०—सूघी सीघरिणया च्यारु थरण सोधँ, विमनी बिणजारण कारण परवोधँ । वाल्ही वेगड नँ थेगड दे बाळँ, भोळी माळी नँ भीडी नँ भाळँ । —ऊ का
२ देखो 'विरणजारौ' (स्त्री)
रू. भे —वरणजारण, विरणजारण, वरणजारण ।

बिणजारा—देखो 'विरणजारा' (रू भे)

विणजारियौ-स. पु—१ देखो 'विरणजारौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ च्यार पहरदा काम है विणाजरिया, तेरा जागरण दा छक एहवँ । सोवरण दी विरिया नही विणजारिया, तु नाव निरजन लेहवँ। —रैदास धत्तरवाळ
उ०—२ तीजँ पहर रँण कै विरणजारिया, तेरा ढीला पडया पुराण वँ । काया लीवोनी क्या करँ विरणजारिया, गढ भीतरि वस्यौ अजाण वँ । —दीन सुदरदी
२ देखो 'विरणजार' (अल्पा, रू भे.)

विणजारौ-स पु—१ कमजोर जीवात्मा ।
उ०—१ रे विणजारा चूको तू, फिर फिर क्यू दे कूको । वस्तु भरी पर देस न रँ, वेला विन लद जाय । दुरमत डाणी आगँ खडौ, लेसी माल लुटाय । —श्रीहरिरामजी महाराज
२ देखो 'विरणजारौ' (रू भे)
उ०-१ पीछोलो राणा लाखा री वार माहै किण ही विणजारँ वधवायो, पाणी कोम च्यार रँ फेर मे छँ। —नैणसी
उ०-२ कालो मासी रँ पछी जिनावरा रा इण लाठा कङूवा मे फगत इण घोडा री इज खामी ही। मारग वेवता विणजारा कना सूं मासी केई कुत्ता वपराय लिया हा। —फुलवाडी
उ०—३ घुर तो जावै वोहरा रे, मिलिया ठोडा ठोडा रे । हाकम लटारा रे, विणजारा सोदारा रे । —जयवाणी

उ०—४ विणजारण श्रै लोभण, श्रोरा के पल्लै छै दाम । म्हा रै तो पल्लै कोय नही, विणजारी श्रै । —लो गी.
(स्त्री विरणजारण, विरणजारी)

विरणज्ज—१ देखो 'विरणज' (रू भे)
२ देखो 'वारिणज्य' (रू भे)
उ०—ऋखी विणज्ज श्राकराणि, पसू चौपदी घणी। श्रनेक सपदा उपाउ, लाछि चतुरगणि । —गु. रू ब.

विणट्टणौ विरणट्टवौ—देखो 'विरणट्टणौ, विरणट्टवौ' (रू. भे.)
उ०—१ जीव विरणट्टा विणास हुवा पछै गढ बारै नीकळै जिका रा नेक नाम वै है, अरथात जीव रै तन है ज्यूं रजपूता रै गढ है सो मरिया गढ छोडै । —वी. स. टी
उ०—२ जेहा सज्जरण काल्ह था, तेहा नांही अज्ज । माथि त्रिसूलउ, नाक सळ, कोढ विणट्टा कज्ज । —ढो मा
विरणट्टणहार, हारौ (हारी), विणट्टरिणयौ—वि० ।
विणट्टिश्रोडौ, विरणट्टियोडौ, विरणट्टयोडौ—भू० का० क्र० ।
विरणट्टीजणौ, विरणट्टीजवौ—भाव वा० ।

विरणट्टियोडौ—देखो 'विरणट्टियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. विरणट्टियोडी)

विरणट्ठौ—देखो 'विरणठौ' (रू. भे.)
उ०—है सवळी श्राखिया कवळी जाण मत्त खायँ कारण कै म्हारै पती सूं प्रण (वचन) करीयोडौ हो के—श्रापनै एकला छोडू नही श्राप जुद्ध मे मारीज सो तो हू लारै सत करसूं सो आज श्रो मोको है तू श्राख खायजासी तो नैण श्राख विरणट्ठौ विना म्हारौ प्रण कीकर देखैला इण सारू श्राखिया नही खाण री कहै है । —वी. स. टी.
(स्त्री विरणट्ठी)

विरणठणौ, विरणठवौ—देखो 'विणट्टणौ, विरणट्टवौ' (रू भे)
उ०-रजा साधवी रोग ऊपनौ, विरणठो कोढ सरीर जी । भव श्रनत भमी दुख सहती, दोख दिखाडयउ नीरि जी। —स कु
विणठणहार, हारौ (हारी), विरणठरिणयौ—वि० ।
विरणठिश्रोडौ, विरणठियोडौ विरणठ्योडौ—भू० का० क्र० ।
विरणठीजणौ, विरणठीजवौ —भाव वा० ।

विरणठियोडौ—देखो 'विरणट्टियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. विरणठियोडी)

विरणठौ—वि (स्त्री विरणठी)—१ खराब, बुरा ।
उ०—वलि विरणठौ वार साफ सवार, दडाकार कातार । सात्रव सिरकार, सिंह सिकार, दावोदार दरबार । गिरण वैठि वेगार कारागार, जय सहु ठामैं जयकार । —घ व ग्र

२ विनष्ट, नाश हुवा हुआ।

रू भे—विणट्ठो।

विणणो, विणवो—१ देखो 'विणणो, विणवो' (रू भे)

२ देखो 'बुणणो, बुणवो' (रू भे)

३ देखो 'वणणो, वणवो' (रू भे)

उ०—१ अजपा जाप ओकार एक, ओळखै कमण विणयो अनेक। अजपा जाप आतम उद्यास, सुर-भुवण माहि सव भूत मास।
—पी प्र

उ०—२ असल वाव रिखि आप रिखि, धोम रिखा घनघन। मेघ रिखा रै माडहे, विणियो वीद विसन। —पी प्र

उ०—३ सरसती हुति विद्या मिरै, विमळ अकळ कहिजै विसन। सूर सा तेज विणियो सरस, कोडि कोडि वधतो किसन। —पी प्र

विणणहार, हारो (हारी), विणणियो—वि.।

विणिओडो, विणियोडो, विण्योडो—भू का कृ।

विणीजणो, विणीजवो—कर्म वा।

विणति, विणती—देखो 'वीणती (रू भे)

विणपक्ष्य-स पु [स वेणु-पक्ष]—बाण, तीर। (डिं नां मा)

विण-मणा-वि—जिसमे किसी प्रकार की कमी न हो, पूर्ण।

उ०—तवो राघो राघो करम अघ दाघो तन तणा, महाराजा सीता-वलभ कुळ-मीता विण-मणा। यरा जैसा जगा अडर यक-रगा जग अखै, सको गावो जीहा अवस निस-दीहा अज सखै।
—र ज प्र

विणय—देखो 'विनय' (रू भे)

उ०—इकु अरजुन आगलउ अनइ करणु हीयइ हरालउ, गुर कूवइ विणयहु लगइ धणुहवेदु दीधउ सरालउ। —सालिभद्र सूरि

विणयाणी—देखो 'वणियाणी' (रू भे)

उ०—ताहरा वळद उपर सखरा बीछावणा, तिण उपर विणयाणी नूं सोहरी बैसाणी। चालीया जावै छै। चालता-चालता आगै मजल जाय डेरो कीयो। —रळै गढवे री वात

विणवाट, विणवाठ-वि—मूर्ख। (अ मा)

विणसणकाळ—देखो विणसिणकाळ' (रू भे.)

उ०—अकवर लेख प्रमाणै, तहवर सहत राज लोभाणै। आवी चित अचीती, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीत। —रा रू

विणसणो, विणसवो-क्रि अ—१ नाश होना, नष्ट होना, मिटना।

उ०—जिमि विलब विणसइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज। कुसगति विणसइ सतान, स्वर पाखइ विणसइ गान।
—रा सा स.

उ०—२ दीयो नी व्है जित्तै तो अधारो रै'वै, पण दीया रै चानणै अधारा नै विणसतां कोई जेज थोड़ी ई लागै। चानणा रै समचै ई अधारो विणस जावै। फगत इत्ती जेज ई वेटी नै समझणा मे लागी। —फुलवाड़ी

उ०—जीहो काया माया कारमी, जीहो मानो सतगुरु वेण। जीहो जेसो सुपणो रेण। जीहो विणसतां देर लागै नही। —जयवाणी

उ०—४ जग मोई रग पतग है, विणसत लगै न वार। नाम रूप जड जाणीयै, न्यारो मजर मार धार। —श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—५ जाग्रत मे स्वप्न नहीं पावै, स्वप्न मे जाग्रत विसरैरी। स्वप्न मे जावै न जाग्रत मे विणसै, अनुभव सता करैरी।
—श्रीसुखरामजी महाराज

२ बिगडना, खराब होना।

उ०—१ जिमि विलब विणसइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज। कुसगति विणसइ सतान, स्वर पाखइ विणसइ गान।
—रा सा स.

उ०—२ जो मत पाछै सचरै, सो मत पहली होय। काज न विणसै आपणो, दुरजण हसै न कोय। —अग्यात

३ मरना, खत्म होना।

उ०—सो दीसै सो विणससी, ऊगै आथमि जाय। जनहरीया सो जनमसी, जम लै जासी आय। —अनुभववाणी

क्रि स—४ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—१ तम विणसण व्है वी त्वरित, तेज किरण वण ताप। त्या वरसण पातल तणै, सबै हरण सताप। —जैतदान बारहठ

उ०—२ च्यार जणा नै सुणि चतुर, सोहै जरा सिंगार। राजा मुहतो वैद रिखि, गरढ पणै गुणकार। गरढ पणै गुणकार, मार बहु बुद्धि रसायण। विणसै मल्ल वेसीया, गिणी तिम चाकर गायन। करै घणी जो कला, मन्न तोइ किणै न मानै। कहै धरमसी यु करै जरा आइ च्यार जणा नै। —ध. व ग्र

उ०—३ दैवज घणु विणासियो, कियो ज पाप अपार। मारू तन विणसियो, कत रह्यो निरधार। —ढो मा.

५ मारना, सहार करना।

उ०—विणसतां जीव न गिनर न करै जिको, चौथो उद्दीग्रा दोख ऊपजै तिको। अनुक्रमै च्यार ए अधिक इक एकथी, दोस धरि प्राय-चित लेइ विवेक थी। —ध व ग्र

६ बिगाडना, खराब करना।

विणसणहार, हारो (हारी), विणसणियो—वि.।

विणसिओडो, विणसियोडो, विणस्योडो—भू का कृ।

विणसीजणो, विणसीजवो—भाव वा, कर्म वा।

विणसणो, विणसवो, वीणसणो, वीणसवो, वणसणो, वणसवो, —रू भे ।

विणसाडणो, विणसाडवो देखो 'विणसाणो, विणसावो' (रू भे)

विणसाडणहार, हारो (हारी), विणसाडणियो—वि ।

विणसाडिग्रोडो, विणसाडियोडो, विणसाड्योडो—भू का कृ ।

विणसाडीजणो, विणसाडीजवो—कर्म वा ।

विणसाडियोडो—देखो 'विणसायोडो' (रू भे)

(स्त्री विणसाडियोडी)

विणसाडणो, विणसाडवो—देखो 'विणसाणो विणसावो' (रू भे)

उ०—१ हीरादेवि भणइ चडाळ, सु मुख देखाडइ तु काळ । जेह पसाइ कीधा राज्ञ तेह तणउ विणसाडिउ काज । —का दे प्र

उ०—२ छक देखि खेलीजे एम कहो छ छै, पछतावो जिण काज सही न हुवै पछे । ग्राखर जै धरमसीह हुवै उतावला, परिहा विणसाडै निज काज सही तै बाउला । —ध. व ग्र

विणसाडणहार, हारो (हारी), विणसाडणियो—वि० ।

विणसाडिग्रोडो, विणसाडियोडो विणसाड्योडो—भू० का० कृ० ।

विणसाडीजणो, विणसाडीजवो—कर्म वा० ।

विणसाडियोडो—देखो 'विणसायोडो' (रू भे)

(स्त्री विणसाडियोडी)

विणसाणो, विणसावो-क्रि स —१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना । ३ बिगाड करना, खराब करना । ३ मारना, खत्म करना ।

विणसाणहार, हारो (हारी), विणसाणियो—वि ।

विणसायोडो—भू का कृ ।

विणसाईजणो, विणसाईजवो—कर्म वा ।

विणसाणो, विणसावो, विणसावणो, विणसाववो, वीणसाणो, वीणसावो, विणसाडणो, विणसाडवो विणसाडणो, विणसाडवो, विणसावणो, विणसाववो, विसणाडणो, विसणाडवो विसणाडणो, विसणाडवो —रू भे ।

विणसायोडो—भू का कृ.—१ नष्ट किया हुग्रा, नाश किया हुग्रा, मिटाया हुग्रा २ बिगाड किया हुग्रा, खराब किया हुग्रा ३ मारा हुग्रा, खत्म किया हुग्रा ।

(स्त्री विणसायोडी)

विणसावणो, विणसाववो—देखो 'विणसाणो, विणसावो' (रू भे)

विणसावणहार हारो (हारी), विणसावणियो—वि ।

विणसाविग्रोडो, विणसावियोडो, विणसाव्योडो—भू का कृ ।

विणसावीजणो, विणसावीजवो—कर्म वा. ।

विणसावियोडो—देखो विणसायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विणसावियोडी)

विणसिणकाळ—स पु [स विनाशकाल]—बुरा समय, विनाशकाल ।

उ०—कुरु पिंड वेध वसुधा, अपणा मभेण कुञ्भयो उभए । कुरखेत जुद्ध समयो, विणसिणकाळ बुद्ध विपरीती । —गु रू बं.

रू भे —विणसणकाळ ।

विणसियोडो—भू का कृ —१ नाश हुवा हुग्रा, नष्ट हुवा हुग्रा, मिटा हुग्रा २ बिगडा हुग्रा, खराब हुवा हुग्रा. ३ मरा हुग्रा, खत्म हुवा हुग्रा ४ नाश किया हुग्रा, नष्ट किया हुग्रा, मिटाया हुग्रा, ५ मारा हुग्रा, सहार किया हुग्रा ६ बिगाडा हुग्रा, खराब किया हुग्रा ।

(स्त्री विणसियोडी)

विणा—देखो 'बिना' (रू भे)

विणाठणो, विणाठवो—देखो 'विणट्ठणो, विणट्ठवो' (रू. भे)

उ०—खडिय न खाटी देह विणाठि थिरि न पवरण पारू । ग्रहुनिस ग्रावा जाय घटती, तेरी सास ही ग्रसवारू । —ग्रग्यात

विणाठणहार, हारो (हारी), विणाठणियो—वि० ।

विणाठिग्रोडो, विणाठियोडो, विणाठ्योडो—भू० का० कृ० ।

विणाठीजणो, विणाठीजवो—भाव वा० ।

विणाठियोडो- देखो 'विणट्ठियोडो' (रू भे)

(स्त्री विणाठियोडी)

विणायक—देखो 'विनायक' (रू भे)

उ०— चमन दिइ, जीमूत रिखि छोरु खेलावइ, कामदेव कटारु बधावइ, वैस्वानर वस्त्र पखालइ, कार्त्तिकेय तलारु करइ, चामुंडा चाउरि सचारि, विणायक गादह चारि, ग्रनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ, इसिउ ग्रिभुव [न] मल्ल महामल्ल रखण । —व. स

विणावट, विणावटी—देखो बनावटी' (रू भे)

उ०—पीछै गोपाळदास ग्रसवार बूंदी रा वा ग्रापरा हजार च्यार लेय नै मुगळा री फोज मैं गया । ग्रण वा पूछियो तद कयो मामलत रा रुपिया लाया छा घोडा पर विणावट थैली दिखायी । तरा मुगळा रै तवू ताईं गया । —द. दा

विणास—देखो 'विनास' (रू भे)

उ० —१ गोत्र द्रोह थी जस नही, नृपद्रोह नीति विणास । बाल द्रोह थी गति नही, त्रिण्हे करधा ग्रभ्यास । —श्रीपालरास

उ०—२ सामी सिर दावा किसा, दावै माहि विणास । जुग निरदावै जाणीयै, सोई हरि रा दास । —ग्रनुभववाणी

उ०— ३ पाछा नि घरो ठाकुरं, घिरीया हुवै विणास । घिरीया वेढू काढिया, दूदो देवीदास । —जैतमाल पुमार री वात

उ०—४ कै तो डर अर लोभ रै कारण पेटा री वात होठा चढै कोनीं अर कै मायलो अतस ई अेक-मेक व्हैगो । मिनखीचारा री सिरै भावनावा रो विणास व्हैगो । —फुलवाडी

उ०—५ डोकरी वानै आडै हाथा लेवती धकै केवण लागी लुगाया रो विणास करिया तो था मिनखा री पै'ला विणास व्है जावै इण वास्तै खुद रो स्वारथ पूरण सारू थै वानै जोवती राखो, खुदरै मन रो आणद पोखण सारू वानै सिणगारियोडी राखो । —फुलवाडी

विणासणो, विणासवो–क्रि स.—१ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ लोक आछो कहै नही, लडता लिछमी नासै रे । दुख दारिद्र घर म घसै, गुण रा पूर विणासै रे । —जयवाणी

उ०—२ चितइ चतुर स चिततउ, धरतउ अरति अपार । विराय विणोदि विणासिइ, हासइ जीव गमारु । —जयसेखर सूरि

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ बल थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल । वानर वाघ विणासियौ, एकलडइ सीयाल ।

—प च चौ

उ०—२ खिण इक मा तै पकडि विणास्यौ, तीखण कठिन कुहाडै । याद्रस आचरणादिक ताद्रस, फल तेहनै न गमाडै ।

—वि. कु

उ०—३ इतरा भे पुळसत रिख रो कुळोधर, उतराध रो वजीर, लिछमी रो निवास, माभी दिगपाळ, कुमेर वीलियो—आगै ही लकापति रावण सीता री चोरी करी ले गयो । तरै आप चत्रभुज मानवी देह धार नै विणासियो । —मा वचनिका

उ०—४ असुर विणासी किउ उपगारु, इद्रि लोकि हूउ जयजय-कारु । इद्र तणु ए कीधु काजु, असुर विणासी लीधउ राजु ।

—सालिभद्र सूरि

३ विगाड करना, नुकसान करना ।

उ०—ताहरा राजाजी भोपत ऊपरि चढण लागा । ताहरा राणीजी जसवतदेजी राजि नूं वीनमियो । राजि दोहरा की हुवो, हू जाइ अर भोपति नूं ले आविस । ताहरा राणीजी चढि खडिया । चढि नै नागोर पधारिया । आगै देखै तो भोपतिजी किण ही रो विणासियो क्यूं नही उजाडियो बैठा छै । —द वि

४ बुरा करना ।

उ०—देवज धणु विणासियौ, कियौ ज पाप अपार । मारु तन विणासियो, कत रह्यौ निरधार । —ढो मा

विणासणहार, हारो (हारी), विणासणियो—वि० ।

विणासिओडो, विणासियोडो, विणास्योडो—भू० का० कृ० ।

विणासीजणो, विणासीजवो—कर्म वा० ।

विणासणो, विणासवो—रू० भे० ।

विणासियोडो–भू का कृ —१ नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ. २ मारा हुआ ३ बिगाड किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ ।

(स्त्री विणासियोडी)

विणासी—देखो 'विनासी' (रू भे.)

विणासु—देखो 'विनास' (रू भे)

उ०—पढव तणउ चरीतु जो पढए, जो गुणइ गभलए । पाप तणउ त्रिणासु तसु रहइ, ए हेला हाडसि ए । —सालिभद्र सूरि

विणि—१ देखो विना' (रू भे)

उ०—१ विणि रोटी विणि लाकडी, विणि पाणी विणि पाळ । परची पसु परेरवा, थल्य बैठो प्रतपाळ । —सुरजन जी

उ०—२ नल राजा विणि, सरजि विख्यात मा [हारि] पिता अनि ता भ्रात । मद हास्य करी रा उच्चरि 'नारी, सूरतता आदरि ।

—नळाख्यान

उ०—३ किणि ठौडि रहै जायो कठै, धणी पहुचि दातार घण । विणि रूप रेख किणि दिसि वसै, निमो निमो तु नारीयण ।

—पी प्र

उ०—४ हेतम दान कवि मलन कहि, अमर बुद्धि वे वमत गनि । दीठौ न कोइ रवि चक्र लगि, अलावदी सुलतान विणि ।

—प च चौ

रू भे—वणी, विणी ।

विणियाणी—देखो 'वणियाणी' (रू भे.)

उ०—मारू इण मनवार मैं, रग बीतै रात । परतानै दारु पीवसा, मैं विणियाणी जात । —पना

विणियोडो—१ देखो 'वणियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'चिणियोडो' (रू भे)

३ देखो 'बुणियोडो' (रू भे)

(स्त्री विणियोडी)

विणी—देखो 'वणी' (१) (रू भे)

उ०—छेवट री लार म्हैं तो खुणिया सूधा हाथ जोडनै कह्यो थायी थारै वेस सूं विणियां रै खेत वारै काढ । —फुलवाडी

२ देखो 'विणि' (रू भे)

विणीयांणी—देखो 'वणियाणी' (रू. भे.)

उ०—वाणियो तो सुय रह्यो । सूता भाख फाटी । तद उठिया । तणे सारा सु पैहली रळो उठि नै पोठियो एकलै हीज लादियो ।

पछे वाणिया ही लादियो। हमैं विणीयाणी कही,वेटा, पोठियै चाढो।
—रळे गढवै री वात

विणु, विणू—देखो 'विना' (रू भे)

उ०—१ निहसै वूठौ घण विणु नीळाणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधै किरि ग्रहणा लसइ।
—वेलि

उ०—२ जिण दीघ जनम जगि मुखि दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, स्रम कीधा विणु केम सरै।
—वेलि

उ०—३ विरह वियापी रयण भरि, प्रीतम विणु तन खीण। वीण अलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही वीण। —ढो मा.

उ०—४ कुंती अनु द्रोपदी अ कधि करीउ मारगि चलावइ, कुती जल विणू तृछीइ तेहि हिडव जलु लेउ आवइ। —सालिभद्र सूरि

विणोकड़ी, विणोखडी—स स्त्री [स वाणियष्टि] कपास का पौधा।

रू भे—विणोकडी, विणोखडी।

विणोद, विणोदि—सं पु—१ एक छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ रगण होते हैं।

उ०—आठ रगण आवै उचित, पायै एह प्रमाण। गुण विणोद इणि भाति, गणि वदि लखपति वखाण। —ल पि

२ देखो 'विनोद' (रू भे)

उ०—१ फाग गाइजै छै। फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै। हास विणोद कीजै छै। हास रस हुइ नै रहीयो छै। फागोटा रा मुख सवाद लीजै छै। घरि घरि वसत राग हुलरावीजै छै।
—रा सा स

उ०—२ रग राग विणोद विसातरय वहुय, चडि चाडति सुंदर मिंदरयं सहुय। मिण माणक कुंदण ककणम दिपत, मोताहळ हार विभूखणय वणित। —गु रू व

उ०—३ राग छतीस तरग अनग, रूप अनूप अनोपम रग। बोलीजै सुख निस-वासर, आणद गीत विणोद अवस्सर।
—गु रू व

उ०—४ चितइ चतुर म चिततउ, धरतउ अरति अपार। विखय विणोदि विणासिइ, हासइ जीव गमारु। —जयसेखर सूरि

वितड—स पु [म] १ हस्ती, हाथी।

२ घोडा, अश्व। (अ मा, डिं को, ह ना मा)

उ०—तेजी वितड ऊडड तेव, विख्यात वाग अख्यात वेव। परवत पख पक्खर प्रचड, एराकी पिठ खुरसाण खड। —गु रू व

३ सूरज, सूर्य।

४ चटखनी।

वि.—१ जबरदस्त, जोरावर।

२ मनमौजी, मस्त।

३ मूर्ख।

४ पागल।

५ उद्दण्ड, झगडालू।

उ०—वसू प्रवड दडतै प्रचड दडतै वहैं, वितंड चड दड दे अदड छडतै वहैं। विमोह मोह मोह मैं विद्रोह द्रोहिपै वढै, क्रतात भात कोह मैं कुकोह कोहिकी कढै। —ऊ का

रू भे—वयड, वितड, वितुड, वेतड, वेतुड, वइड, वयड, वितुंड।

वितडमुख—स पु [स वितण्ड+मुख] गजानन, विनायक।

रू भे—मुखवयड, वयडमुख।

वितडा—स. स्त्री [स वितण्डा] १ अपने मत की स्थापना करने हेतु दूसरे पक्ष को दबाने की क्रिया।

२ व्यर्थ का झगडा या कहा सुनी।

यौ—वितडावाद।

वितडावाद—स पु. [स वितण्डा+वाद] १ स्त्रियो की चौसठ कलाओ मे से एक। (व स)

२ दूसरो के पक्ष को दबा कर अपने मत की स्थापना करने की क्रिया।

३ व्यर्थ का झगडा या कहा सुनी।

रू भे—वितुंडावाद।

वितंती—देखो 'वितत' (रू भे)

उ०—सुराचार घटारव तार साजै, वणै नौवती सोभती रीत वाजै। विराजै मुखाघाय तती वितती, वदै आरती राग वाणी वणती।
—रा. रू.

वित—वि [स] चतुर, निपुण ज्ञाता।

स पु [स. वित्त] १ मवेशी, पशुधन।

उ०—१ ओजी हु आज चूकू अवसाण, वकै नह वेद मुखा ब्रह-माण। जावै वित ऊभा मुझ जीवार थरा नह छोळ दियै इद्रधार।
—गो रू

उ०—२ स १७५३ रा वरसाद काळ पडीयो। घास चारो नही मेह थोडो वूठो। वित घणो मुवो। पड रा गावा मे तथा थळ मे मिनख गोळ कर नै ढोर चारवा नै नई पड रा घास चार मे आवै, उणा ऊनाळू रा गावा मे कोसीटा, नै साख बाजरी।
—मारवाड री ख्यात

उ०—३ रावळ भीम जेसळमेर पाट छै। ऊहड गोपाळदास रै वेटै उरजन, भोपत, माडण, पोकरण रा गाव घणा मारनै वित लै नीसरिया।
—नैणसी

उ०—४ अठै जैत सिकार रमतो आयो, वास छोडीया थका । सु जैत रै नीजर असवार आया, साढीया घोडा लीया । ताहरा चाकर नू बोलीयो, "साढीयों कैरीया ?" ताहरा रैवारी १ साथ हुतो । तिहारण तोड चढीयो पसवाडै लागो आवै छै । वाहरू सू रैवारी कहीयो, "भाढीयो राजवीया छै। सु तोड नू धाडवी जोंणे छै, जु रैवारी मार नै तोड लेवा । सु तोड मैह रै चीखल रै कैड री, हृथ विहृथी कवडी, नवहृथी झोकणी । चीखल करहो झेकतो तहा झेकी । तोड विहारण तो काम आयो । देढो जैत नूं सुखपाल माहे घातीयो, पूरै लोह पडीयो, सु लोहा री छाक माहे गम नही । अचेत थको नू हजूर ल्यायो । सु अचेत थको जाहरा बोलै, ताहरा कहै, "राजा रो वित जावण न पावै। —जैतमाल पुमार री वात

२ धन, दौलत, द्रव्य, सम्पत्ति ।

उ०—१ तद दोई बेटा तो मोटा हता, सु तिकै तो जाय कही देस रै राजा रै चाकर रह्या । अर छोटो बेटो रजपूत पासै । ऊ पण मोटो हूवो । अर वित कन्है हूतो सो सरव खाधो ।

—बूढी ठग राजा री वात

उ०—२ वारवधू ही हरण वित, नेह जणावै नैण । यू सिर लेवा ऊपरै, वैरी मीठा वैण । —बा दा.

उ०—३ सुजन वित दैणो लैणो, क्रीत गाथ सधीर है । हरण दुख व्है सता, मात-पिता रघुबीर है । —र ज प्र

उ०—हरीया सुत वित वोह भया, मिमता अजू अघाय । कीडा होसी करम का, चुडिख चुडिख तन खाय । —अनुभववाणी

रू भे —वित वित्त, बीत, वत, वितु, वित्त ।

अल्पा,—वितडी, वितडो ।

वितकर–स पु —कपट, धोखा । (अ मा)

वितडणो, वितडबो–क्रि. अ.—विकारयुक्त होना, विकृत होना । (दूध,-दही आदि)

वितडणहार, हारो (हारी), वितडणियो—वि० ।

वितडिओडो, वितडियोडो, वितड्योडो —भू० का० कृ० ।

वितडीजणो, वितडीजबो—भाव वा० ।

वितडियोडो–भू का कृ —विकारयुक्त हुवा हुआ, विकृत हुवा हुआ । (दूध-दही आदि)

(स्त्री वितडियोडी)

वितडी–स स्त्री.—देखो 'वित' (अल्पा, रू भे)

उ०—दादू कहै ज्यौं आवै त्यौं जाइ विचारी । विलसी वितडी न माथै मारी । —दादूवाणी

वितडो—देखो वित' (अल्पा, रू भे)

उ०—सतगुरु दीया राम धन, रहै सु बुद्धि वताइ । मनसा वाचा करमणा, विलसै वितडै खाय । —दादूवाणी

वितणो, वितबो—देखो 'वीतणो, बीतबो' (रू. भे)

उ०—वितए आसोज मिळै नभि वादळ, प्रथी पक जळि गुडळपण । जिम सतगरु कळि कलुख तणा जण, दीपति ग्यान प्रगटै दहण । —वेलि

वितणहार, हारो (हारी), वितणियो—वि० ।

वितिओडो, वितियोडो, वित्योडो—भू० का० कृ० ।

वितीजणो, वितीजबो—भाव वा० ।

वितियोडो—देखो 'वीतियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वितियोडी)

वितत–स. पु [स वितत] १ तात अथवा तार वाद्य ।

२ मृदग व ढोल आदि वाद्यो से उत्पन्न होने वाला शब्द ।

रू. भे —वितती ।

विततपक्ष–स. पु —१ एक पक्षी विशेष । (सभा)

वितत्य–स. पु [स] गृत्समदवशीय विहव्य ऋषि का पुत्र और सत्य का पिता, एक ऋषि ।

वि वि —इसे कहीं-कही राजा भी कहा गया है ।

वितथ–स पु [स.] १ मिथ्या, झूठ, असत्य । (ह ना मा)

२ भरद्वाज ऋषि का एक नाम । ये दुष्यन्त के गोद गये हुए थे और इनके पुत्र का नाम मन्यु था ।

वि वि —कही-कही ऐसा लिखा भी मिलता है कि ये दुष्यन्त-पुत्र भरत राजा के गोद गये थे । ये बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण थे किन्तु बाद में क्षत्रिय हो जाने के कारण इन्हें "ब्रह्मक्षत्रिय" भी कहते हैं । अनेक पुराणानुसार, भरत राजा ने भरद्वाज ऋषि को गोद नही लिया था बल्कि उनके वितथ नामक पुत्र को गोद लिया था और इसे भरत राजा के गोद देने के बाद भरद्वाज ऋषि स्वय वन चले गये थे ।

रू भे —वितथ, विथत ।

वितदाता–स पु —पिता । (अ मा.)

वि —धन देने वाला, दातार ।

वितद्रु–स. पु [स.] १ पजाब की झेलम नदी का एक नाम ।

२ एक यादव, जो यादवो के सात प्रधानमन्त्रियो मे से एक गिना जाता है ।

वितपन्न–वि [स व्युत्पन्न] शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता । (मा म)

वितरक–वि [स]वितरण करने वाला ।

स पु. [स वितर्क] १ एक तर्क के बाद दिया जाने वाला दूसरा तर्क ।

उ०— तरक न अतरक्य कपि करत वितरक यामे, धरक गिरि अरक उर थरक अमरेस कै। दलित पहार हलमलित सुमेरुधार, दिग्घस-पतस्व अस्वचलित दिनेस कै। —ना द.

२ सदेह, शक।

३ एक राजा जो कुरुवशीय धृतराष्ट्र का पुत्र था।

वितरण–स पु [स]—१ दान। (ह ना मा.)

२ अर्पण करने की क्रिया।

३ बाटने की क्रिया।

४ दान देने की क्रिया।

रू. भे —वितरण, वितरन।

वितरणदान, वितरणदानी–स पु —दातार, दानी। (अ. मा.)

वितरणौ, वितरबौ–क्रि स —१ अर्पण करना।

३ बाटना, वितरण करना।

४ दान देना।

५ पुण्य करना।

वितरणहार, हारौ (हारी), वितरणियौ—वि०।

वितरिओडो, वितरियोडो, वितरयोडो—भू० का० कृ०।

वितरीजणो, वितरीजबौ—कर्म वा०।

वितरणौ, वितरबौ, वित्तरणौ, वित्तरबौ—रू० भे०।

वितरदन–स पु [स वितर्दन]—रावणपक्षीय एक राक्षस।

वितरन—देखो 'वितरण' (रू भे)

वितरा–क्रि वि —इतने मे।

उ०—वितरां माहे मारवणीजी विलब करता पान वीडो आरोगता सहेलीया सघातै आवण लागी। —ढो मा

वितरित–वि [स] १ बाटा हुआ।

२ दान दिया हुआ।

३ अर्पण किया हुआ अर्पित।

वितरेक–स. पु —एक उपमालकार विशेष जिसमें उपमेय मे (उपमान की अपेक्षा) उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाने के द्वारा उपमेय की उत्कृष्टता (विशेषता) का वर्णन हो।

क्रि वि [स. व्यतिरिक्त]—छोड कर, सिवा, अतिरिक्त।

वितरेकजथा–स पु स्त्री —डिंगल में गीत रचना का वह नियम जिसमे व्यतिरेक अलंकार हो। (क. कु बो)

वितळ, वितल–स पु [स वितल]—१ सात पातालो मे से तीसरा पाताल। (पौराणिक)

उ०—१ सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठ नि पिट्ठि भर। धर धुजिज तळातळ तळ वितळ सेस सलस्सल छड्डि धर। —ला. रा

वि वि.—उक्त पाताल मे शिवजी को हाटकेश्वर कहते हैं। इन्ही की शक्ति से हाटकी नदी निकलती है जिसे वहा की वायु से उत्पन्न अग्नि देव पीते हैं और पुन फुफकारने से हाटक (सोना) निकलता है।

२ पाताल।

उ०—वहळ ससियळ धमक सावळ, वहे कळकळ प्रवळ वीजळ। वहे चक्ळ इळतळ थितळ चळचळ,, मगळ भळ धमळ मगळ। विढै सूर अजागि। —सू प्र.

वि —नीच, अध, पतित। (अ मा)

वितसारू–अव्य – यथाशक्ति।

उ०—अवनी मे जिकै भलाई आया, करै सदा सुकरत रा काम दान सदा वितसारू देवै, नित रसणा लेवै हरिनाम। —र. रू.

वितस्ता–स स्त्री [स] पजाव की झेलम नदी का एक नाम।

वितान वितानक–सं पु [स वितान या वितान] १ विस्तार, फैलाव।

उ०—१ उठै वै दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा। कहि गगा तन मजन कीधा, दान वितान मान करि दीधा। —रा रू

उ०—२ चीखलि चालता सकट स्खलइ, लोक तणा मन धरम ऊपरि वलइ। नदी महा पूरि आवइ, प्रथ्वी पीठ प्लावइ नवा किसलय गहगहइ, वल्ली वितान लहलहइ। —रा सा स.

२ बडा चन्दोवा।

उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमान वितान वणाए। चिग पडदासू पाल चमकै, दामण जाण सिळाउ दमकै। —सू प्र.

उ०—२ मिळ थाट लुटै अमीर हिम जडित भूखण हीर। तारख सरखत वितान, मूकेस जरियसि मान। —सू प्र

३ यज्ञ, हवन। (अ मा, ह नां मा)

४ सूर्य, सूरज। (ना मा) (क कु बो)

वितानां–स स्त्री [स वितानां] भौत्य मन्वन्तर के वृहद्भानु अवतार की माता।

बिताणौ, वितावौ—देखो 'वितारणौ, वितावौ' (रू भे)

उ०—अरण आग्याकरी मूझ नायक अवध, अवध वितानै वेग आवा जानकी! रहोला अठै मो जनक रै, जनक रै कना पोहचाय जावा। —र रू

विताणहार, हारौ (हारी), विताणियौ—वि०।

वितायोडो—भू० का० कृ०।

विताईजणो, विताईजबौ—कर्म वा०।

वितायोडौ—देखो 'वितायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वितायोडी)

वितांव–वि [स. वि+ताव]—मंद, ठंडा, नम्र, जोश या क्रोध रहित ।

उ०—अति सोचै पतसाह अछानै, खिण सज्या खिण तारतखानै उड रहियौ मन लाग अलगै, गुड्डी जाण अमं गयणगै । ऊभा वास खिजमती अग्गी, ताव विताव लखै टगटग्गी । —रा. रू

वितावणौ, वितावबौ—देखो 'बिताणौ, बितावौ' (रू. भे.)

वितावणहार, हारौ (हारी), वितावणियौ—वि० ।

वितावित्रोडौ, वितावियोडौ, वितव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वितावीजणौ, वितावीजबौ—कर्म वा० ।

वितावियोडौ—देखो 'बितायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वितावियोडी)

विति-स पु [स] १ तुषित अथवा साध्य देवो मे से एक ।

उ०—समुद्र भुजादंडि तरीइ, तीक्ष्ण खङ्गधारा सचरीइ, निरास्वाद वालुकापिंड कवलीइ, पचमेरु पचागुलि तोलीइ, लोहमय चिणा दात विति चावीइ, वघ्रानलज्वाला मुखि पीजइ, आकास निरालब चडेवउ, . । ‵ —व. स

वितिक्रम—देखो 'व्यतिक्रम' (रू. भे)

उ०—अस्टचत्वारिस लच्छ अच्छ मे कलित भई, रिन विच राजधानी मानी मन मापी कौ । करम्मचारी वितिक्रमी करम्मसब वितिक्रम थिराथब थबन वितिक्रम ऊथापी कौं । —ऊ का

वितिक्रमी—देखो 'व्यतिक्रमी' (रू भे)

उ० —अस्टचत्वारिस लच्छ अच्छ मे कलित भई, रिन विच राजधानी मानी मन मापी कौं । करम्मचारी वितिक्रमी करम्म सब वितिक्रम, थिराथब थबन वितिक्रम ऊथापी कौं । —ऊ का.

वितिपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे)

वितिहोतर, वितिहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू भे.)

वितीत, वितोति—देखो 'व्यतीत' (रू भे.)

उ०—१ तद दिन तौ वितीत हुवो, रात पडी । तठै ठकुरै रै बेटै नू सूतै नूं जानीया उठाय नाखीयो समुद्र । तिको ईयै नु एकै मछी गिलीयो । —ठकुरै साह री वात

उ०—२ सैसव सु जु सिसिर वितीत थायो सहु, गुण गति मति अति एह गिणि । आप तणो परिग्रह लै आयो, तरुणापो रितुराउ तिणि । —वेलि

उ०—३ प्रभा कहता जोति सो चद्रमा की गई । जब राति वितीत होण लागी । तब चद्रमा किसो दीसै छै । जिसो भरतार असमाध्या थका सती को मुख देखिज्यै । —वेलि टी

उ०-४ म्हारो सुजस अमर, 'करणावत', वासुर जग वहु हुवै वितीत नाधारियौ पाघडो विढतै, चैराडियो नहीं बडचीत । —द दा

उ०—५ यौं वहता मग आवतां, ग्रीसम हुवौ वितीत । मिटिया सुत महराव रा, आयौ घरा 'अजीत' । —रा. रू.

वितीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे)

उ० —साचरै मेल सिसपालना सांमटा, अपसकुन अनै अयजोग थया एकटा । दसासूळ भद्रा वितीपात महूरत दीयो, क्रमियो काळ चद्रकाल सनमुख कीयो । —रुक्मणी हरण

वितीपाती—देखो 'व्यतीपाती' (रू भे.)

वितुड—देखो 'वितड' (रू भे)

उ०—प्रचड लोट पिंट कै धकै प्रचड कै परै, वितुड तुड लौं भगै अभड व्है भरै । अजोघ कुप्पि कै प्रधात्र धप्पि देपरै, महा मरूरपूर सूर दूर दूर तैं मरै । —ऊ का.

वितुडावाद—देखो 'वितडावाद' (रू. भे)

वितु—देखो 'वित' (रू. भे)

उ०—वाहण पखारि आपणी, ऊतरिनां तै सेठि । आवि देवाद आगणइ, वितु करता वेठि । —मा. का. प्र

वितोडणौ, वितोडबौ–क्रि स.—तोडना ।

उ०—घघ घरै करि द्वेस, वात मे हेत वितोडै । आप कियौ तै अबल, वलै पर किया विरोडै । —घ व ग्र

वितोडणहार, हारौ (हारी), वितोडणियौ—वि० ।

वितोडिओडौ वितोडियोडौ, वितोड्योडौ—भू० का० कृ० ।

वितोडीजणौ, वितोडीजबौ—कर्म वा० ।

वितोडियोडौ–भू का कृ —तोडा हुआ ।

(स्त्री वितोडियोडी)

वितोल–वि [स वि+तुल्]अतुल्य, बलशाली ।

उ०—घुमाव लोल गोल की अघत्त गोलती घलै, हरोळ गोल घोलदै चदोळ चोलती हलै । विथ्थ जनेच्छनी अचोळ गोळ चोलही बहैं, सतोल तोल तोल सैं वितोल तोलती वहै । —ऊ का

वित्त–स पु [स] १ कुशुमि नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य ।

२ प्रतर्दन देवो मे से एक ।

३ सुख देवो मे से एक ।

४ देखो 'वित' (रू भे)

उ०—१ क्याही कर वोहरो हुवै, क्याही कर व्है मित्त । क्याही कर चाकर हुवै, वणिक हरेवा वित्त । —बा दा

उ०—२ तिण समय माहे तेजसी उठै गयो । तरै उण तीनै हो उमरावे आपथा हीज विचार नै उण वित्त रा च्यार हिस्सा कीया । एक हिस्सो लै तेजसी नु दीयो । —राव मालदे री वात

उ०—३ खित जासिय ऊमर पाय सही, नभ सूरज चद भुगोळ नही । जिंदराव लेजासिय वित्त जठै, कह 'पाल' वत्तासिय मूह कठै । —पा प्र

उ०—४ परभात चढिया सो गाव दूजो वळै जाय मारियौ । पछै बीजा गावा नू पासरणा छूटा सो वित्त सारौ घेर ले आया । गाव दोय री तो जमा ऊठण दीवी । —अमरसिंह राठौड री वात

उ०—५ खेधै लाग राव खीची चारणा वित्त नू खच्यौ, सच्यौ मना चायौ इसौ आयौ यू औसाण । पूकारौ देवळा अवै आपरा पखेत पावू, पाणा जोस हू तो आथ लै जाऊ अमाण । —बादरदान दधवाडियौ

उ०— डोकरी कह्यौ—गूजरा रै घरै आयोडा नै दूध पाया आपै ई वित्त अर दूध रौ वधापौ व्है । म्हारी बेटी नै घरै आयोडा री सरवरा रौ ध्यान है इज घणौ। —फुलवाडी

वित्तगोप्ता–सं पु [स] कुवेर के भण्डारी का नाम ।

वित्तग्यान–स पु [स. वित्त+ज्ञान] ७२ कलाओ मे से एक ।

वित्तणौ, वित्तवौ—देखो 'वीतणौ, वीतवौ' (रू भे)

उ०—लगी हाम विलास, वित्ती अग्यात प्रात मध्यान । सायकाळ निसीत, रत भूप चूप मदनाय । —रा रू

वित्तणहार, हारौ (हारी), वित्तणियौ —वि० ।

वित्तिओडौ, वित्तियोडौ, वित्योडौ—भू० का० कृ० ।

वित्तीजणौ, वित्तीजवौ—भाव वा० ।

वित्तदा–स स्त्री [स] स्वामी कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका ।

वित्तनाथ–स पु [स वित्त+नाथ]—कुवेर ।

वित्तप, वित्तपत, वित्तपति, वित्तपती–स पु [स वित्तप, वित्तपति] धन की रक्षा करने वाला, कुवेर, धनपति । (डिं को)

वित्तपाळ, वित्तपाल–स पु [स. वित्त+रा पाळ] कुवेर का एक नाम ।

वित्तपुरी–स स्त्री [स] कुवेर की अलकापुरी ।

वित्तरणौ, वित्तरवौ—१ देखो 'विस्तरणौ, विस्तरवौ' (रू. भे.)

उ०—इदवधू अणपार, क वसुधा वित्तरी । मनु तूटी मणिमाळ, मदन महिपत्त री । —कविवर सिववक्स पाल्हावत

२ देखो 'वितरणौ, वितरवौ' (रू भे.)

वित्तरणहार, हारौ (हारी), वित्तरणियौ –वि० ।

वित्तरिओडौ, वित्तरियोडौ, वित्तरयोडौ —भू० का० कृ० ।

वित्तरीजणौ, वित्तरीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

वित्तरियोडौ—१ देखो 'विस्तरियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वितरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वित्तरियोडी)

वित्तहीण, वित्तहीन–वि [स वित्तहीन] दरिद्र, निर्धन, गरीव ।

वित्ति—देखो 'वीति' (रू भे)

वित्तिकरु–वि. [स] वृत्ति कर्ता ।

उ०—अभयदेव नव अग वित्तिकरु, पासु पसायणु, पउमएवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु । —ऐ. जै. का. स

वित्तेस–सं पु. [स. वित्त+ईश] धन का पति, कुवेर ।

वित्तेसर, वित्तेसुर, वित्तेस्वर–[स वित्त+ईश्वर] कुवेर ।

वित्तौ–सर्व.—उतना ।

उ०—बस केवळ नाम सही है, वो मोटो राम सही है । जित्तौ तप में म्हैं तपस्या, वित्तौ ही काम सही है । —करणीदान वारहठ

वित्थर, वित्थरि—देखो 'विस्तार' (रू भे)

उ०—गगतडा तडि अछइ ओयणु वित्थरि दीरघि बारह जोयणु । पासहरा वागुरीय बहूय, पइठा वणि कोलाहलू हूय । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्तर' (रू भे)

वित्थरणौ, वित्थरवौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरवौ' (रू भे)

उ०—१ दत कुळी अगुळी, करी कोपरी कपाळा । वीच खेत वित्थरी फरी विहरी किरमाळा । —रा. रू.

उ०—२ पाना मुख वाजित्र हिलै वाना वैरक्का, मेघ रग मातग वीढ ऊढग कटक्का । पली जेभ सादळा हिली फौजा घमसाणा, व्योम रजी वित्थरी घमस वज्जी केकाणा । —रा. रू

उ०—३ सेर खान भर समर कहर परखै घर कदळ, लोथ लोथ ऊपरा गरा भिडजा गज तडळ । दत कुळी अगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा, अत तत्र वित्थरी, हुत दाढाळ हठाळा । —रा. रू

वित्थरणहार, हारौ (हारी), वित्थरणियौ —वि० ।

वित्थरिओडौ, वित्थरियोडौ, वित्थरयोडौ—भू० का० कृ० ।

वित्थरीजणौ, वित्थरीजवौ —भाव वा० ।

वित्थरियोडौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वित्थरियोडी)

वित्थार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वित्थारणौ, वित्थारवौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारवौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाहोर नयर उच्छव हुया, चिहु खडि जस वित्थारिया । कर जोडि समयसुंदर भणइ, स्रीपूज्य भलइ पधारिया । —स कु.

उ०—२ पण सग वेय मयक वरसि माहह छण वासरि, माणुसल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मदिरि । नंदी ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिद्धि किद्धु मगलु विवहु प्परि । —ऐ जै का. स

वित्थारणहार, हारौ (हारी), वित्थारणियौ—वि० ।

वित्थारिओडौ, वित्थारियोडौ, वित्थारयोडौ—भू० का० कृ० ।

वित्थारीजणौ, वित्थारीजवौ —कर्म वा० ।

वित्थारियोडौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वित्थारियोडी)

वित्थुरणौ, वित्थुरवौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरवौ' (रू. भे)

उ०—धसी अकास धूसरी, कि वान सेन वित्थुरी। निमाण पाण नद्दय, सुघोर जोर सद्दय। —रा. रू.

उ०—वसुधा स्रोण सुरगी, तुरिया धसळ वित्थुरी रैणा। आदू चपळ सहावौ, हुइ रत्ती हुइ अणरतह। —गु रू व.

उ०—३ विसाळ भाल तोप की विसाळ जाळ वित्थुरै, धमक भ्रू धुजावणी धमक मेघ लौ धुरै। महान रज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथै कवीर नैं कही चिराव की चही चही। —क का

वित्थुरणहार, हारौ (हारी), वित्थुरणियौ—वि०।

वित्थुरिओड़ौ, वित्थुरियोड़ौ, वित्थुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वित्थुरीजणौ, वित्थुरीजवौ—भाव वा०।

वित्थुरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वित्थुरियोड़ी)

वित्रप्त–वि [स वितृप्त] जो तृप्त न हुआ हो, असन्तुष्ट।

वित्रभव–स स्त्री—पूर्व और ईशान दिशा के मध्य की दिशा जिस ओर कृत्तिका नक्षत्र उदय होता है। इसका दूसरा नाम 'लाणी' भी हैं।

वित्रस–वि [स. वितृष] जिसमे किसी प्रकार की तृषा न रह गई हो, तृप्त।

वित्रसण–वि [स. वितृष्ण] १ जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न हो, तृप्त २ निष्पृह, उदासीन।

वित्रहोत, वित्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू भे) (अ. मा)

वित्रा, वित्रासुर—देखो 'अत्रासुर' (रू भे)

उ०—गुमर तजै वित्रा गळिए, हुलसै जोड़ै हथ्थ। घेठौ असुरा ची घणी, कहै सुणाई कथ्थ। —मा वचनिका

विथ—देखो 'व्यथा' (रू भे)

विथक–वि—थका हुआ।

विथकणौ, विथकवौ–क्रि अ—थकना, थकावट महसूस करना।

उ०—भ्रैळ पख चद जही अनैंकारा, हेळ कळा छाडै चित हेत। विथकै नही उगता अवसा, रत कासिव नर रयण सुवैत। —बीरमदे राठौड री गीत

विथकणहार, हारौ (हारी), विथकणियौ—वि०।

विथकिओड़ौ, विथकियोड़ौ, विथक्योड़ौ—भू० का कृ०।

विथकीजणौ, विथकीजवौ—भाव वा०।

विथकियोड़ौ–भू का कृ—थकावट महसूस किया हुआ, थका हुआ। (स्त्री विथकियोड़ी)

विथत—देखो 'वितथ' (रू. भे) (अ. मा.)

विथरणौ, विथरवौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरवौ' (रू. भे)

उ०—१ फळि मचइ असात उठै मेजक फुहर, रेण भैचक संक व्है राच राणौं। विथरतौ तेण दिन जाप 'सूजा' विया, जग दुढिद तणै प्रताप जाणै। —ऊमेद सिंघ सिसोदिया री गीत

उ०—२ दताळा दहकाय, मोताहळ विथरै मही। स्याळां मती सताय, लकाळां गज भख 'लछा'। —भगवानजी रतनू

विथरणहार, हारौ (हारी), विथरणियौ—वि०।

विथरिओड़ौ, विथरियोड़ौ विथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथरीजणौ, विथरीजवौ—भाव वा०।

विथराणौ, विथरावौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारवौ' (रू भे.)

विथराणहार, हारौ (हारी), विथराणियौ—वि०।

विथरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथराईजणौ, विथराईजवौ—कर्म वा०।

विथरायोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विथरायोड़ी)

विथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथरियोड़ी)

विथा—देखो 'व्यथा' (रू भे)

उ०—१ जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मउसरि साह। तिण दिन थी पदमिणि मन वसिउ तुम्ह माहो रे। सुण आलिम धणी, विरह विथा न खमायो रे, बात किसी धणी। —प च चौ

उ०—२ हरि सुमरण हिरदै धरो, विथा न पहुँचै वीर। कायर टळि कानै चल्या, लग्या न सुख की भीर। —ह पु वा

उ०—३ जैसे अगनि काष्ट मे रहै काटि फाटै न फाटै दहै जन हरिदास अब ऐसी भई, भजता राम विथा सब गई। —ह पु वा

उ०—४ पग परसै पावन हुवौ, गई विथा सब भाज। राज वडै ही रांमजी, गहर गरीबनिवाज। —गजउद्धार

उ०—५ करता करण सदा सगि जाकै, चितवनि कहो कहा धूं ताकै। करम कुठार विथा हरि कापै, जन हरिदास नरहरि जापै।

—ह पु वा

विथार—देखो 'विस्तार' (रू भे)

विथारण–वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

विथारणौ, विथारवौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारवौ' (रू. भे)

विथारणहार, हारौ (हारी), विथारणियौ—वि०।

विथारिओड़ौ, विथारियोड़ौ, विथारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथारीजणौ, विथारीजवौ—कर्म वा०।

विथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विथारियोडी)

विथित—देखो 'व्यथित' (रू भे)

विथुरणौ, विथुरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तेल सिंदूर विथुरिय, सुनही असवार मसत अंराक। चामुंड सुत उघरिय, खेत्राधीसर तुभ्यो नमः। —मा वचनिका

उ०—२ प्यारी के चिहुर विथुरे मानो मानो घाराघर की स्याम घटा उनई, ता मध्य पहुप छूटि परे तें सें बडी बडी बूंदे। लाल सारी पहिरें हरी कोर मघायनिसी घूंघट करि चली, पीठ पाछें तें तरकं कचुकी तनीकी फूंदें। —मीरा

उ०—३ दूनौं तटा जु नदी उपरि वही छै सु जाणें चोटी विथुरी छै। विथुरी कहै तें। प्रथो जु स्त्री स्यें नें धाराहर मेघ जब भरतार मिळीयो छै। तब चोटी विथुरी। —वेलि टी

उ०—४ पाका दाडिमा का बीज। यु छिटकि पडचा छै। एही वसंत पाट वैठें नें निवछावळि कीया छै। सु ए मांनूं नग जवाहर विथुरे छै। ओर चु भाति भाति का फळ ब्रखा के विखे लागा छै। —वेलि टी

विथुरणहार, हारौ (हारी), विथुरणियौ—वि०।

विथुरिओडौ, विथुरियोडौ, विथुरचोडौ—भू० का० कृ०।

विथुरीजणौ, विथुरीजवौ—भाव वा०।

विथुरियोडौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री विथुरियोडी)

विथ्य—सं पु [स वीथि] पथ, मार्ग, रास्ता।

उ०—घुमाव लोल गोळकी प्रघत्त बोलती घलें, हगोळ गोल घोल दे चडोल चोलती हलें। विथ्य जनेच्छनी प्रचोळ गोळ घोलही वहैं, सतोल तोल तोल सें वितोल तोलती वहैं। —ऊ. का

विदंड—स पु—द्रौपदी स्वयवर मे अपने पुत्र दण्ड के साथ उपस्थित एक राजा।

विद—स स्त्री [स विद] १ जानकार, पडित, कवि। (अ मा.)

२ वेंद ऋषि के पिता, एक प्राचीन ऋषि।

३ देखो 'विघ' (रू भे)

विदकणौ, विदकवौ—क्रि. अ—चौंकना, चमकना।

उ०—मूळी कोबी, कटरूप, ओगणा री खाण। जावें जठीनें ही रात मिळें। हुसें जद चीढ सो चीरें। चालें तो खोलो सो माजें, दडबडाट ऊपडे। बोलें तो गधा विदक जावें। —दसदोख

विदकणहार, हारौ (हारी), विदकणियौ—वि०।

विदकिओडौ, विदकियोडौ, विदक्योडौ—भू० का० कृ०।

विदकीजणौ विदकीजवौ—भाव वा०।

विदकाउ—देखो 'विदकौ' (रू भे)

विदकियोडौ—भू का कृ.—चौंका हुआ, चमका हुआ।

(स्त्री विदकियोडी)

विदकौ—वि. (स्त्री विदकी) बढिया, उत्तम, श्रेष्ठ।

रू भे.—विदकाउ।

विदग, विदग्घ—देखो 'वीदग' (रू. भे)

विदग्घछपय, विदग्घछप्पय—स. पु—पयोधर छप्पय का दूसरा नाम, जो ४४ गुरु और ६४ लघु अर्थात् १५२ मात्राओ का होता है। (पि. सि.)

विदग्घता—स स्त्री [स. विदग्घ+ता प्र] पांडित्य, विद्वता।

विदग्घशाकल्य—स पु [स. विदग्घशाकल्य] १ विदेह जनक की राजसभा मे, याज्ञवल्क्य के साथ वाद-विवाद करने वाला एक आचार्य, जो पूर्व नियोजित शर्तानुसार, वाद-विवाद में पराजित होने के कारण, मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

२ एक आचार्य, जो वायु के अनुसार व्यास की यजु:शिष्य परपर। मे से याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य था।

विदग्धा—स स्त्री [स] १ होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली परकीया नायिका।

२ चातुर्य से युक्त देवी।

विदग्घाजीरण—स पु [सं विदग्घाजीर्ण] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

विदण—स पु [स विदग्घ] १ कवि।

उ०—जै जया सबद विदण भणें, वयणे राजा वांमहा। लाखीक खडे अकवर लिया, 'दुरसै' दखवण सामहा। —रा रू.

२ पडित।

रू भे—विंदण

विदत—१ देखो 'विद्युत' (रू भे.)

२ देखो 'विदित' (रू भे)

विददसव, विददस्व—सं. पु—तरत एव पुरमीढ नामक राजाओं का पिता, एक राजा।

विदमान—१ देखो 'विद्यमान' (रू भे.)

२ देखो 'विद्वान' (रू भे)

उ०—मोटोडो माखो ई नाक मे गुणगुणाववो—क्यूं नी सा इंग-रेजी बोलणो काई बडी बात है, मास्तर बडा विदमांन है। कितरा तो इणा नें फलमी गाणा आवें अर कितरा इणा नें नाच आवे। —अमरचूंनडी

विदरग—देखो 'वदरग' (रू भे)

उ०—मत कर, मत कर विदरग थारी भेस, खुलें रे केसां ना फिरै।

आय मिळेगो थारो स्याम, दिन दसनें, झूरझुर ना मरे।
—लो. गी.

विदर—१ देखो 'विदरी' (रू. भे)

२ देखो 'विदुर' (रू भे)

उ०—१ बोला में ओछा विदर, मोला मे नह मोट। पोला मे 'परताप' रै, गोला वाळो गोट। —ऊ का

उ०—२ ग्रह्या जो न करत विदर, जग माहे जगजीत। असल नसल रो ऊघडत, रूडापो किण रीत। —बां दा

उ०—३ विदर बहादर बाजवा, कड बांधे केवाण। कर जोडण लटका करण, विदर न छोडै वाण। —बा दा

उ०—४ प्रथम विदर पूजिया, मात केकइ मना मैं, पीव मरण पामिया, पूत चालिया वनां मे। पछै विदर पूजिया पडव कैरवा सदाइ, माह माह कट मुवा, दिली जीवता न पाइ। विदर नूं पूज वगडावता,जैचद 'पीथल' जूंझीया, 'मोकमा' कमध मोटा मिनख, जिके विदर तै पूजिया। —अरजुनजी बारहठ

उ०—५ पै'ला पेट वधाय पछै विदरी परणीजे, दुलहो नावै दाय फेर फस जावै बीजे। दुल चूहै दोवडे कदै नह लागो काय, नाकारो नह करै जेण कुळ पद जी जाय। —अरजुनजी वारहठ

(स्त्री विदराणी, विदरी)

विदरण—देखो 'विदीरण' (रू. भे)

विदरणो, विदरबो—देखो 'विदीरणो, विदीरबो' (रू भे)

विदरणहार, हारो (हारी), विदरणियो—वि०।

विदरिओडो, विदरियोडो, विदरयोडो—भू० का० कृ०।

विदरीजणो, विदरीजबो—भाव,कर्म वा०।

विदरभ—स पु [स. विदर्भ] १ नौखडाधिपति ऋषभदेव के नौ पुत्रो में से एक, जो राजा भरत के भाई और निमि के पिता थे। अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा को इसी की कन्या मानते हैं।

२ आधुनिक बरार प्रदेश का एक प्राचीन नाम। (सभा)

उ०—दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति अति कंदणपुर। राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर असुर सुर। —वेलि

वि वि—यहा के राजा भीष्मक थे। रुक्मिणी उनकी पुत्री थी। जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी। राजा नल की पत्नी दमयन्ती का पिता भी इसी प्रदेश का राजा था।

३ एक राजा, जो यदुवशीय ज्यामघ राजा का पुत्र था।

वि वि.—नारदपुराणानुसार इसका पैतृक नाम 'काश्यप' था और इसकी माता का नाम 'शैव्या' या 'चैत्रा' औशिनरी था। इसका विवाह भोजराज कन्या उपदानवी या भोज्या से हुवा था, इसी से इसे कुश, क्रथ, रोमपाद आदि पुत्र और कौशिनि एव सुमति नामक दो पुत्रिया प्राप्त हुई थी जो सगर राजा को व्याही गई थी।

४ कार्तवीर्य अर्जुन का मित्र एक राजा, जो परशुराम द्वारा मारा गया था।

५ एक ऋषि का नाम। (पुराण)

रू भे—विदर, विदरभ, विदरभति, विद्रभ, विद्रभ।

विदरभजा—स स्त्री [स विदर्भजा] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का एक नाम।

२ विदर्भ नरेश भीष्म की पुत्री और निषधदेश के राजा वीरसेन के पुत्र नल की पत्नी दमयती का एक नाम।

३ श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणि का एक नाम।

विदरभति—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

विदरभराजतनया—स स्त्री [स विदर्भराजतनया] दमयन्ती और रुक्मणी का एक नाम।

विदरभा—स स्त्री [स. विदर्भा] विदर्भ देश की राजधानी।

उ०—निमख रो विलब रो नाथ अवसर नथी, स्रीक्रस्ण मागीओ आण रथ सारथी। स्रीकिसन ब्राह्मण तीसरो सारही, विदरभा नगर ततकाळ आया वही। —रुक्मणी हरण

रू. भे—वइद्रभा।

विदरभि—स. स्त्री [स विदर्भि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विदरभि कौंडिन्य—स. पु [स विदर्भिन्+कौंडिन्य] वत्सनपात बाभ्रव्य का शिष्य और गालव का गुरु, एक आचार्य।

विदराणी—स. स्त्री —दासी, सेविका।

उ०—रजपूताणी रहै रिजक विन, धरम पतिव्रत धारी रै। विदराणी पडदा मे बैठी, किसब कमावै भारी रै। —ऊ का

विदरियोडो—देखो 'विदीरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विदरियोडी)

विदरी—स स्त्री.—१ हुक्का।

उ०—तठा उपरायत हुका री होस कीजे छै। चाकरा नै हुकम हुवो छै। हुका तयार कीजै छै। किण भातरा हुका छै? सोनै रा, रूपै रा, विदरी, खासोळ ठाढा पाणी सूं भरजे छै। नीचे सुथरा विछायजै छै। ऊपर हुका मेल्हजै छै। नगधा सरद कीजै छै।
—रा सा स.

२ देखो 'विदुर' (स्त्री) (ग मा)

विदरोह—देखो 'विद्रोह' (रू भे)

विदरोही—देखो 'विद्रोही' (रू भे)

विदळ, विदल—स. पु [स. वि.+दल] १ पेशेवर हीजडा।

२ शत्रु-सेना ।

उ०—धाडं पुकार पड लाखि धाड, रवि उदय ग्रस्त लग पच राड सालुळं विदळ कदळ ससत्र, रग सेल खगं न मिटं रगत्र ।
—रा रू

३ एक राक्षस, जो काशीनगर मे पार्वती द्वारा गेंद प्रहार से मारा गया था ।

[स] लाल रग का सोना ।

विदळणौ, विवळबौ—क्रि, स —दलित करना, नष्ट करना ।

विदळणहार, हारौ (हारी), विदळणियौ—वि० ।

विदळिग्रोडौ, विदळियोडौ, विदळयोडौ—भू० का० कृ० ।

विदळीजणौ, विदळीजवौ—कर्म वा० ।

विदळियोडौ–भू का कृ —दलित किया हुग्रा, नष्ट किया हुग्रा ।

(स्त्री विदळियोडी)

विदल्ल–स. पु —ध्रुवसन्धि नामक राजा का मन्त्री ।

विदवता – देखो 'विद्वता' (रू भे)

विदवान—देखो विद्वान' (रू भे) (ग्र मा, ह ना मा.)

विदवीं–वि —सुन्दर, मनोहर ।

उ०—जगळ जाला माथ, छा रची विदवीं वेला । फूला चिया फळीज, फिळोरा फिलवं केला । गूदी रग गिलोय, पिलूंदी पसरं चढणं । ऊट फोग जड ऊग, पगोठा देवं वढणं । —दसदेव

रू भे —विदवी ।

विदवेस—देखो 'विद्वेस' (रू भे.)

विदवेसक—देखो 'विद्वेसक (रू भे)

विदवेसणी, विदवेसिणी—देखो 'विद्वेसिणी' (रू भे)

विदवेसी - देखो 'विद्वेसी' (रू भे)

विदांत, विदांतौ—देखो 'वेदात' (रू भे)

उ०—दिगता लौं दोरं मचन्न मन मोरं मुदमुदी, विदांतौ भम्भोरं विसय विप वोरं बुदबुदी । पछारं पापा को त्रितप भव तापा श्रुटि तलं, मिळावं मेवा को विधि विधि निसेधा फत मलं । —ऊ का

विदांम–स पु —१ मारवाडी (महाजनी) का एक छोटा सिक्का ।

२ देखो 'विदाम' (रू भे)

३ देखो 'वादाम' (रू भे)

उ०—साग साल मलियागरी, वळि नाळेर विदांम । सोपारी खिरणी सरस, हेम हवा तिहि ठाम । —गजउद्धार

विदांमी—देखो 'वादामी' (रू भे.)

विदा, विदाई, विदायी–स स्त्री. [ग्र वदाग्र] १ प्रस्थान, रवानगी, रुखसत ।

उ०—१ ग्ररि पालण राखण ग्रवनि, विध सुण सरव विचार । भीम सुनण भर भार भळ, विदा हुग्रो तिण वार । —रा रू.

उ०—२ ताहरा पातसाहजी सू सिवं ग्ररज कीवी—'ग्रामद देस मे ग्रातरी रो परगनौ छं सु माहरौ उतन छं ।' तिण उपर सिवा नू उतन रो पटो कराय दियो । घोडो सिरपाव वियो । घणी दिलासा देनं देस न विदा कियो । —नैणसी

उ०—३ तठा उपराति करि नं राजान सिलामति उणि भात सू राजान री वात सुण नं ग्रजमेर रं थाणं री हकीकत साभळ नै ग्रादि वैर उगराह नूं ग्रसुराण तुरकाण रा दळ राजान ऊपरै विदा हुग्रा सो किण भात रा कहीजं छं । —रा सा स.

क्रि प्र —करणी, दंणी होणी ।

२ कही से रवाना होने या प्रस्थान करने को ग्रनुमति ।

उ०—१ ताहरा पाबूजी गोगोजी भेळा हुयनं घोडा नू गया । ग्रागै देखं तो कासूं ? ऊभा छूटा चरं छं । तद ग्रै घोडा लेय लगांमा देनं ग्रसवार हुयनै गोगोजी री कोटडी ग्राया । पछै पाबूजी नूं भगत जीमाय नें विदा दीवी । —नैणसी

उ०—२ उठा जोधपुर हुता राव कल्याणमल जी कन्हा विदा करि नं कुंवर पदवी थका महाराजाधिराज महाराजा स्रीराय-सिंघजी मिरजै इब्राहम री वासो कियौ । —द वि.

उ०—३ साथै मुधरी पवन वहता मन विलमावै, डावा चातक बोल सुरगा मोद जतावै । गरभीजण ग्रसमान बुगलिया मिळवा ग्राई, इदका हुवा सुगन लेवता मेघ विदाई । —मेघ

क्रि प्र —करणी, लेंणी, दंणी ।

३ कही से प्रस्थान करने की क्रिया ।

उ०—१ ताहरा पातिसाह उमरावा सगळा नूं विदा करण लागा सु उमराव को बीडो भाले नही । ताहरा महाराजाधिराज महाराजा स्रीरायसिघजी बीडो भालयो । राजि विदा हुग्रा । —द वि

उ०—२ दुहाग वाळो उण रात तो कवराणी नं नीद ग्रायगी ही, पण ग्राज इण विदाई री रात उणनै नीद नी ग्राई । ढोलिया माथै सूती सूनी पसवाडा पलटती री पण उणगी नीद तो जाणं तारा रं माय ई चापळगी ही । —फुलवाडी

४ विदा करने या होने पर, दिया जाने या प्राप्त होने वाला, धन पुरस्कार, रुपया ग्रादि ।

उ०—नारेळ नरसघ रो हुतो नरसध रं हाथ दीयो । वडो हरख हुवो । प्रोहित साहो पूछियो । प्रोहित साहो लिख दीनो । प्रोहित न वडो विदा दीवी, घोडो सिरपाव । तूटा तो पण ग्रजमेर रा

धणी । घणी मनोहार कर प्रोहित नू वडी विदा दे सीख दीवी ।
—राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—लेंणी, देंणी ।

५ भेजने या रवाने करने की क्रिया ।

उ०—१ वात अकब्बर आगली, अक्खी हाथ मिळाय । दूत विदा फरके लियो, मारू 'दुरग' बुलाय । —रा रू.

उ०—२ आसतखा सुण कमध अमामा सुत सिर विदा कियो घर सामा । हलिया जवन अजेगढ हूता, दारुण सहस वीस जमदूता । —रा रू.

उ०—३ राजान राजावत । मारू घरै पधारिआ छै । चोकि कळळ फूटि नै रही छै । माया रा ऊबराव बहोडावीजै छै । कवि राजाना विदा कीजै छै । —रा सा. स

रू भे —बिदा, बिदाई, बीदा, विद्, विद्दा, विद्या, विघा ।

विदारक–वि —१ विदीर्ण करने वाला, फाडने वाला ।

२ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

रू. भे —विदारक ।

विदारण–स पु. [स विदारण] १ अधर्मियो को नष्ट करने वाले भगवान विष्णु ।

२ सिंधुनरेश जयद्रथ राजा के भाइयो मे से एक ।

३ युद्ध सग्राम ।

विदारणौ, विदारबौ–क्रि स [स विदारण] १ मारना, सहार करना ।

उ०—केहर कुंभ विदारियौ, गजमोती खिरियाह । जाणै काळा जळद सूं, ग्रोळा ग्रोसरियाह । —बा दा

२ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—रिवि पत्नी पर किरपा कीन्ही, विप्र सुदामा की विपति विदारण । मीरा के प्रभु मो बदी परि, एती वेरि भई किण कारण । —मीरा

३ चीरना, फाडना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ द्रुपदसुता को चीर वढायो, दूसासन को मान-मद-मारण । प्रह्लाद की प्रतिग्या राखी, हिरणाकुस नख उदर विदारण । —मीरा

उ०—मगर गलतो काठो आयो धीवर पायो, काढयो पेट विदारी रै लो । तुम पुत्रि घर देवि नीपजनो आयो चलतो, परणायो तिण वारी रै लो । —वि कु

विदारणहार, हारो (हारी), विदारणियो—वि० ।

विदारिओडो, विदारियोडो, विदारयोडो—भू० का० कृ० ।

विदारीजणौ, विदारीजबौ—कर्म वा० ।

विदारणौ, विदारबौ—रू० भे० ।

विदारिकद—देखो 'विदारीकद' (रू भे)

विदारिक–स. पु —बगल, जघा आदि के सधि स्थान पर होने वाला फोडा विशेष । (अमरत)

विदारिगधा —देखो 'विदारीगधा' (रू भे)

विदारियोडौ–भू. का कृ —१ मारा हुआ, सहार किया हुआ. २ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ ३ चीरा हुआ, फाडा हुआ, विदीर्ण किया हुआ ।

(स्त्री विदारियोडी)

विदारीकद–स स्त्री. [स] एक प्रकार की लता और उक्त लता का कद, जो औषधि के काम आता है, भुंईकुम्हडा ।

रू भे.—विदारीकद, विदारिकद ।

विदारीगधा–स स्त्री [स] शालपर्णी नामक एक क्षुप विशेष, जिसके फलिया लगती है ।

रू भे —विदारिगधा ।

विदारुण–स पु —चपकनगरी का एक दुष्ट राजा ।

वि वि —इसने ब्राह्मणो व वेदो की निंदा की थी इस कारण से इसके शरीर मे कोढ उत्पन्न हुआ था, जो वेत्रवती नदी मे स्नान करने के कारण नष्ट हुआ ।

विदावत–स पु —१ कुटिल युक्ति, पेच, कपट, छल, गुप्त रहस्य ।

उ०–'अरजन' प्रज्ञ मिळै उमरावा, दाव विदावत घणा दरियावा । वाता 'मुहकम' तणी वणावै, साहृ दियो अति कुरब सुणावै । —रा रू

२ गठोड वश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति ।

विदाह–स पु [स] १ पित्त के प्रकोप से शरीर मे उत्पन्न जलन ।

२ किसी अन्य कारण से हाथ पैर मे होने वाली जलन ।

३ उत्सर्ग, दान । (डि को)

विदाहक–वि [स] विदाह उत्पन्न करने वाला ।

विदाही–स पु [सं विदाहिन्] वह पदार्थ जिसम जलन उत्पन्न हो, दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ ।

विदित–स पु [स] अवगत, ज्ञात ।

उ०—१ विप्र वलतु वोलियु, 'वैदरभ देस विसाल । धरमात्मा एक भीम नामि, विदित ता भूपाल । —नळाख्यान

उ०—२ सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, झीनातिझीन चित विदित

चीन। पद परम पून्य सकल्प सून्य, निरवाण नित्य ग्रतर ग्रनित्य।
—ऊ का

वि.—१ सूचित किया हुग्रा।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

उ०—पैंतीस जुध लै जय प्रकट, हत्थी सत्तरि रीझ हत्ति। सासण पचास दीधा सहज, वगसरिया कीधा विदित। —व भा

३ इकरार किया हुग्रा।

रू भे —वदीत, विदित, वदीत, वदीतउ, वदीतै, विदत।

विदिया—देखो 'विद्या' (रू भे)

उ०—भूपति पूंजतणौ दुति ग्रद्भुत, सजणविनोद नाम पचम सुत। उग्रबोधि पितरै ग्रहिनाणौ, जोध जोध विदिया सव जाणौ।
—सू प्र

विदियाधर—देखो विद्याधर' (रू. भे)

उ०—पूछै मोपा बाभणा, विरमोटी वीरतत। विदियाधर वीरोटिया, चेला होय चालत। —ग्रग्यात

विदिस—१ देखो विदिसा' (रू. भे)

२ देखो 'विदेस' (रू भे)

विदिसा, विदिसि—स स्त्री [स विदिशा] १ मालवा मे स्थित परियात्र पर्वत से निकली एक नदी। (पौराणिक)

२ दशार्णव देश की राजधानी।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसी प्रीत जताता। वेत्रवती जळ पीय लहरतो घण गरजता, ज्यूं मुख भौंह विलास ग्रधर घण पान करता। —मेघ

३ दो दिशाग्रो के बीच की दिशा, उपदिशा।

उ०—१ पहिलो जबू द्वीप ममइ विचि थाल ग्राकार, लावउ पिहुलउ इक लख जोइण नै विस्तार। मोटी तेहनै मध्य सुदरसण नामै मेर, तिण थी दस विदिसानी गिणती च्यारै फेर।
—ध व ग्र

उ०—२ कठव्यो घमसाण प्रमाण किसा, दहल्यो हिंदवाण दिसा विदिसा। त्रिदसालय चाव चढ्या तरुण्या, समचार थळी छत्रधार सुण्या। —मे म

उ०—३ ग्रण चपळ नैण लघु जोर्म ग्रति, सगि ग्रहू विदिसि चेतन सकत्ति। दीपत जुगळ फळ ग्रमळ दत, मुत ग्ररक पाणि लखि जाणि सत। —रा रू.

रू भे —विदिस, विदिसा, विदिस।

विदीया—देखो 'विद्या' (रू भे) (व भा)

विदीरण—वि [स विदीर्ण] १ बीच से चीरा हुग्रा, फाडा हुग्रा २ तोडा हुग्रा, नाश किया हुग्रा ३ मारा हुग्रा, सहार किया.

रू भे —ब्रिदीरण, विदरण।

विदीरणौ, विदीरबौ—क्रि स [स. विदीर्णम्] १ फाडना, चीरना।

२ मारना, सहार करना।

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ मिटाना।

उ०—पर पीर विदीरन पीर प्रपा, तुलसी तसवीर कबीर क्रपा। मुधि नानक बानक सी सरसी, दुति दादुदयाळ समी दरसी।
—ऊ का.

विदीरणहार, हारो (हारी), विदीरणियौ—वि०।

विदीरिग्रोडौ, विदीरियोडौ, विदीरचोडौ—भू० का० क्र०।

विदीरीजणौ, विदीरीजबौ —कर्म वा०।

विदरणौ, विदरबौ, वीदरणौ, वीदरबौ, विदरणौ, विदरबौ
—रू. भे।

विदीरियोडौ—भू का क्र —१ फाडा हुग्रा, चीरा हुग्रा। २ मारा हुग्रा, सहार किया हुग्रा ३ नाश किया हुग्रा, नष्ट किया हुग्रा.

४ मिटाया हुग्रा।

(स्त्री विदीरियोडी)

विदु—स पु [सं] १ घोडे के कान के नीचे का हिस्सा।

२ हाथी के मस्तक के बीच का भाग।

वि.—विद्वान, पडित।

उ०—ग्रतवार वहे ग्रावै ग्रनत, सह विदु हुय जावै सगा। तक विट नाम स्त्रीराम रो, जग समद तिर तूं 'जगा'। —जगो खिडियो

विदुख—देखो 'विदुस' (रू भे) (ग्र मा, ह ना मा)

उ०—१ उचारै वेद विदुख ग्रनेक। —रामरासो

उ०—२ दूसरा द्रस्टात जिसउ कैलि कौ पेड होय। विपरीत रुख कहता उलटउ कीयउ। ग्रागइ पीडी कहसी जैसो केळि को गरभ। विदुख कहता पडित सुवचना करि वखाणै। वेलि टी

उ०—३ श्री ग्रसपत दसमै ग्रह ग्रायौ, विदुख तिका दुण लाभ वतायौ। कुळ न्रप उग्र थयौ वहै कोई, मुतन प्रताप चौगुणो सोई।
—रा रू

(स्त्री विदुखी)

विदुत, विदुति—देखो 'विद्युत' (रू भे) (ह ना मा)

विदुत्तम—स पु —विष्णु भगवान का एक नाम।

वि —सब बातो का जानकार, सर्वज्ञाता।

विदुर, विदुरु—स पु [स विदुर] १ कौरवो व पाडवों के प्रसिद्ध मत्री, जो राजनीति, ग्रर्थनीति व धर्मनीति में निपुण थे ग्रौर महाराज धृतराष्ट्र के भाई थे।

वि. वि —इन्हे धर्मराज का अवतार मानते हैं। इनका जन्म विचित्रवीर्य की पत्नी की दासी और व्यास ऋषी के ससर्ग द्वारा हुआ था। ये श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त और निष्पक्षी थे। इन्होने भीम से शस्त्रास्त्र, आयुधाभ्यास, धनुर्विद्या और वेदाभ्यास किया था। पाण्डवो के द्वारा सही नीति का मार्ग अपनाने के कारण इन्होंने उनकी रक्षा करने के अनेक बार प्रयत्न किये। चन्द्रवश की रक्षार्थ दुर्योधन की कुटिलताओ का उल्लेख धृतराष्ट्र के सामने करते हुए उसे अपने पुत्रों (दुर्योधन आदि) का त्याग करने को कहा था इसी कारण धृतराष्ट्र ने इन्हें देश से निष्कासित किया था। भीष्म की मृत्यु और श्रीकृष्ण बलराम के स्वर्गारोहण के पहले ही ये धृतराष्ट्र, सजय व गान्धारी के साथ तपस्या करने वन में चले गये और वही यदुवश के नाश की बात सुनकर पार्थिव शरीर छोड कर धर्मदेव का रूप धारण किया।

उ०—१ आइस विदुरह दीधउ राइ. दह दिसि जणवइ जोवा धाइं। सोवनमर्म मंच चडावइ, राणी राणि तै सहू य आवइ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राखिउ ए राउ जूंठिलु विदुरह वयणु न मानीउ ए। हारीयां ए हाथिय थाट भाईय हारीय राजि सउ ए।
—सालिभद्र सूरि

उ०—३ अबानदणु विदुर नामु नामि खजि सरीखउ। इ खीणइ पुणु विचित्रवीरघु पडु राजि प्रतीठिउ। —सालिभद्र सूरि

२ बहुला नामक स्त्री का पति एक वेश्यागामी ब्राह्मण, जिसने अपनी पत्नी के द्वारा किये गये पुण्यकर्मों के कारण मुक्ति प्राप्त की थी।

३ सोमवती अमावस्या के दिन प्रयाग के गंगासगम में स्नान करने से ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हुआ, पांचाल देश का एक क्षत्रिय।

४ पडित या ज्ञानी पुरुष।

५ दासी-पुत्र, सेवक।

६ स्वाग बनाने वाला विदूषक।

उ०—विधि पाठक सुक सारम रस वद्धक, कोविद खजरीट गतिकार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।
—वेलि

रू भे.—विदर, विद्दर, विदर।

धिवुला—स. स्त्री. [स] सौवीर देश के राजा की पत्नी और सजय की माता।

वि. वि —यह बडी ही वीर स्त्री थी। इसका पति, इसके पुत्र की बाल्यावस्था मे ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसी कारण से सिन्धु-नरेश ने सौवीर देश पर चढाई की थी और सजय को रणभूमि से भागना पडा था। मगर इसने अपने पुत्र सजय को घर में नही घुसने दिया और कडी फटकार सुना कर पुनः युद्धार्थ प्रोत्साहित किया था।

विदुस—वि [स विदुष] (स्त्री विदुसी) १ विद्वान, पंडित। (डिं को.)

२ कवि। (अ मा.)

३ चतुर, होशियार।

४ अगराज वशीय एक राजा।

५ मत्स्यानुसार, धृत राजा का पुत्र, एक राजा।

६ ज्योतिषी।

रू भे.—विदुख, विद्‌स।

विदुसणो, धिवुसवो —देखो 'विदूसणो, विदूसबो (रू. भे)

विदुसणहार, हारो (हारी), विदुसणियो—वि०।

विदुसिओडो, विदुसियोडो, विदुस्योडो — भू० का० कृ०।

विदुसीजणो, विदुसीजबो — कर्म वा०।

विदुसियोडो—देखो 'विदूसियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विदुसियोडी)

विदूण—स. पु —रावण के छोटे भाई विभीषण का एक मंत्री।

विदूर—वि [स] बहुत दूर।

स पु —१ पुरु राजा विदूरथ का एक नामान्तर।

२ महाराज कुरु द्वारा दशार्ह कुलोत्पन्न कन्या शुभागी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो मधुवशीय कन्या सप्रिया का पति था, जिसके गर्भ से अनश्वा नामक पुत्र हुआ था।

३ एक पर्वत, जहा वैदूर्य्य मणि मिलती है।

विदूरथ—स पु [स] १ यदुवशीय श्वफल्क के भाई चित्ररथ का पुत्र, जिसके पुत्र का नाम शूर था।

२ पुरुवश का एक राजा, जिसके पुत्रो का पालन-पोषण ऋक्षवान नामक पर्वत पर रीछो द्वारा किया गया था।

३ भजमान राजा का पुत्र एक यदुवशीय राजा।

४ सावर्णि मनु के पुत्रो मे से एक।

५ सुरथ राजा का पुत्र व सार्वभौम राजा का पिता एक राजा।

६ नपक नगरी के हसध्वज राजा का भाई।

७ दक्षिण भारत का एक राजा जिसने अपनी कन्या का विवाह दिष्टवशीय राज्यवर्धन राजा के साथ किया था।

८ उपदर्व व दाशार्ह नामक एक यादव राजा, जो लोमपादवशीय विधृति राजा का पुत्र था।

वि वि —मत्स्यानुसार ये निर्वृत्ति राजा का पुत्र तथा दशार्ह राजा का पिता था।

९ रुक्मिणी व द्रौपदी स्वयवर मे उपस्थित एक वृष्णिवशीय

क्षत्रिय, जो वृद्धशर्मन व वसुदेव भगिनि श्रुतदेवा का पुत्र एव दन्तवक्र का भाई था।

वि वि.—इसके भाई दन्तवक्र, शाल्व, शिशुपाल आदि का वध श्रीकृष्ण द्वारा किये जाने पर इसने अपने भाईयो का बदला लेने हेतु श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया था मगर श्रीकृष्ण ने इसका वध कर दिया था।

१०—भलदन ऋषि का मित्र एक राजा, जिसके सुनीति एव सुमति नामक दो पुत्र थे, एव मुदावती नामक एक कन्या थी।

वि वि —कुजृभ राक्षस का वध करने हेतु, इसके दोनो पुत्र निकले थे मगर कुजृभ राक्षस ने उन्हे कैदी बना लिया और इसकी पुत्री का हरण भी कर लिया था। इसके दोनो पुत्रो व पुत्री मुदावती को, इसके मित्र भलदन ऋषि के पुत्र वत्सप्रि ने कुजृभ राक्षस का वध करके मुक्त कराया था। इसी कारण से इसने अपनी पुत्री मुदावती का विवाह वत्सप्रि के साथ कर दिया था।

११ राम-रावण युद्ध के समय राम की सेना का एक बन्दर।

विदूसक–स पु [स विदूषक] (स्त्री विदूसिका) १ दूसरो के दोष बतला कर हसी उड़ाने वाला व्यक्ति।

२ विभिन्न प्रकार की नकलें, वेशभूषा बनाकर अथवा बातचीत द्वारा लोगो को हसाने वाला व्यक्ति, मसखरा।

३ साहित्य मे चार प्रकार के नायको मे से एक प्रकार का नायक, जो अपने कौतुक और परिहास आदि के द्वारा कामकेलि मे अधिक आनन्द उत्पन्न कर देता है।

४ कामुक या विषयी व्यक्ति।

विदूसन–स पु [स विदूषण] विशेष रूप से किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव।

विदूसणौ, विदूसबौ–क्रि स —१ कलकित करना, दोष लगाना।

२ कष्ट देना, दुख देना, सताना।

विदूसणहार, हारौ (हारी), विदूसणियौ—वि०।

विदूसिओडौ, विदूसियोडौ विदूस्योडौ—भू० का० कृ०।

विदूसीजणौ, विदूसीजबौ—कर्म वा०।

विदूखणौ, विदूखबौ विदूसणौ, विदूसबौ, वदूसणौ, वदूसबौ, विदुसणौ, विदुसबौ विदोखणौ, विदोखबौ, विदोसणौ, विदोसबौ —रू० भे०।

विदूसियोडौ–भू का कृ —१ कलकित किया हुआ, दोष लगाया हुआ. २ कष्ट दिया हुआ, दुख दिया हुआ, सताया हुआ।

विदेघ–सं पु [स] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विदेघमाथव–स पु —विदेघ लोगो का प्रमुख मधुवशीय एक राजा। विदेघ लोग भी आगे चलकर विदेह कहलाये।

वि वि.—इसने अपने मुख मे अग्नि को बधकर रखा था और इस भय से कि बोलने से अग्नि बाहर आयेगी, यह किसी से बात भी नही करता था। इसके पुरोहित रहूगण गौतम ने अनेक प्रकार से अग्नि स्तुति करके इस अग्नि को बाहर निकालने का प्रयत्न किया मगर कुछ असर नही हुआ।

एक बार गौतम के मुँह से 'घृत' शब्द का उच्चारण हो गया और इसके मुख मे बध अग्नि अपनी अनेक जिव्हायें फैलाकर बाहर निकला और सारे ससार के साथ २ विदेघ एव गौतम को जलाने लगा। साथ ही साथ सृष्टि की नदियो को भी जलाने लगा। अग्नि के इस दाह से मुक्ति कराने के लिए विदेघ राजा ने अपने राज्य की सीमा पर बहने वाली नदी मे कूद गया यहा आकर अग्नि का दाह शान्त हुवा।

विदेस–स पु [स. विदेश] अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश, परदेश। (अ मा)

उ०—१ वूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेस नी वाट भागी। जळ भरिया निवाण, प्रथ्वी प्रवरती मेह नी आण। आदि। —रा सा. स

उ०—२ देवी निरझरै तरवरै नगै नेसै, देवी दिसै अवदिसै देसै विदेसै। देवी सागर वेटडै आप सगै, देवी देहरै घरै देसी दुरगै। —देवि

रू भे.—विदेस, विदिस, विदेसि, विदेसी।

विदेसि, विदेसी–वि —परदेश का, परदेश सम्बधी।

स पु —१ परदेश का निवासी व्यक्ति, परदेशी।

२ देखो 'विदेस' (रू. भे)

उ०—१ लोभी ठाकुर, आवि घरि, काई करइ विदेसि। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि। —ढो मा.

उ०—२ राम लक्ष्मण मही दुखि पाड्या, पाच पाडव विदेसि भमाड्या। डूब नइ घरि जल वहिउ हरचदिइ, भालडी मरण लाघ मुकुदिइ। —सालिसूरि

अल्पा.—विदेसीडो।

विदेसीडौ—देखो 'विदेसी' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ घरा नै पधारो विदेसीडा, छोटी सी नाजक धण रा पीव। यो सावणियो उमड रह्यो छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव। —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ विदेसीडा वेटा राव हो, ऊतरधा कोठै सूं आय। चुकल्या सात सीस पर म्हारै, छुटतो दे गजरो बाध।

—रसीलै राज रा गीत

विदेह–स पु [स] १ मिथिलानरेश सीरध्वज जनक का एक नाम।

उ०—१ मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजगेस देवेस सव्वेस मेळा । विदेह प्रतग्या कहे एम वाक, पुत्री जो वरै सो ज तांणै पिनाक । —सू प्र.

उ०—२ ब्रह्मानद नै विसरयौ विदेह हो रघुवरजी, कोई प्रेमानद पूरण छायो, छक रह्यो हो राज । मुनिवरजी नै बूझै विदेह हो मुनिवरजी, कांई ए कुण प्राणां रा प्यारा पावणा हो राज ।
—गी. रा.

२ मिथिला नरेश निमि का नाम ।

३ विदेह नगरी, जनकपुरी, मिथिलापुरी । (सभा)

उ०—१ मगध कोसल अग वग कलिग कासी कुरु देस, सोरठ कच्छ विदेह जांगल कुसावरत्त कहेस । अग सोवीर वैराट मलय साडिल सूरसेन । वरण पचाल दसारण कुंणाल देस मे चैन । —वृस्त.

उ०—२ मगध मडल अग वग कलिग कासी [कोसल कुरु] कुसट्ट पचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह संडिल्ल मलय ' '।
—व स

४ विदेहवशीय राजाओं द्वारा प्रशासित एक लोक समूह जिसे पाण्डु राजा ने दिग्विजय के समय अपने अधीन कर लिया था । इसी विदेह वश में हयग्रीव व कुलागार नामक राजा उत्पन्न हुवे थे ।

५ मिथिला-निवासी, विदेह देश के नागरिक ।

६ देह-परिवर्तन, दूसरी देह ।

उ०—इतरो कहतां तुरत दोनू भाई गदगद कठ होय सिलाम करण लागा, फिस पडिया । देवीदास पण ऊभो-ऊभो देखी अर ऊळखिया । देह रो विदेह होय गयो पण नाक री टीसी सं ओळख लियो । ताहरै देवीदास कह्यो—आंख्यां आगळ देह री विदेह होय गयी । ओळखणी आयै नही, ताहरा आख्या सू ही सलाम कीवी ।
—पलक दरियाव री वात

वि.—१ देह-रहित, शरीर-रहित ।

२ अचेत, बेहोश, चेतना-रहित ।

३ शारिरिक चिंताओं से मुक्त ।

४ मरा हुआ, मृत ।

विदेहक—स. पु [स.] एक पर्वत का नाम । (पुराण)

विदेहकुमारी—स. स्त्री [स. विदेह+कुमारी] राजा जनक की पुत्री सीता ।

विदेहधी—स स्त्री [स. विदेह +धीता] जनकसुता, जानकी, सीता । (डि. को)

विदेहपुर, विदेहपुरी—स. स्त्री [स विदेह +पुर या पुरी] जनकपुर, मिथिलापुरी ।

विदेहा, विदेही,—स स्त्री. [स] १ जनकपुरी, मिथिलापुरी ।

उ०—विदेही तणौ दिवांण, ईस चाप धरै आंण । तोडवा अनेक तांण, ऊठिया करै अपाण । —र. रू

२ जानकी, सीता ।

उ०—आली रग भूमि पै विदेही को अनूप रूप, आज अविलोक्यो देवदृगतें अलज मे । नयन निकाइ सो जुन्हाइ कै कुरगमेन, सज मैं 'हमीर' झवकेतु कै न झज मे । —हमीरदांन मोतीसर

[स. विदेहिन्] ३ ब्रह्म ।

रू. भे —विदेही ।

विदेहेस—स. पु. [स. विदेह+ईश] राजा जनक ।

उ०—अवद्धेस राजेस जानेस आया, विदेहेस साम्हैस आंणै वधाया । कुंवारा विन्है आय जुहार कीधा, लगै प्रीत छाती पिता भीडि लीधा । —सू. प्र.

विदैवत—स. पु —हरिवीर नामक क्षत्रिय जो अगले जन्म मे पिशाच बना क्यो कि वह नास्तिक था ।

विदोखणौ, विदोखबौ—क्रि. स —अवलोकन करना, देखना ।

उ०—ओलह वान देसी कवण, कवण नेणां विदोखियै । हय हय सरीर छूटो नही, रायसिंघ आपरोखियै । —नैणसी

२ देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू भे.)

उ०—सूरज री मूठी दीठा विना जीमण री आखडी । मूहडा सूं किरणनै गाळ काढण री आखडी । चारण भाट नै विना कांम विदोखण री आखडी । लुगाइ नै विना खुंन मारवा री आखडी ।
—रा सा स.

विदोखणहार हारो (हारी), विदोखणियो—वि० ।

विदोखिओड़ो, विदोखियोड़ो, विदोख्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विदोखीजणौ, विदोखीजबौ—कर्म वा० ।

विदोखियोड़ो—भू का कृ —१ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ ।

२ देखो 'विदूसियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री विदोखियोड़ी)

विदोगत, विदोगति—देखो 'वेदोक्त' (रू भे)

उ०—पछै वरस चवदै रो हुवो जदी राजा रा गुरु रा बेटा नै परणायो । जठै सारी विदोगत करै नै बेटा वहू नैं घरै लै आयो ।
—राजा रा गुर रा बेटा री वात

विदोसणौ, विदोसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू भे.)

विदोसणहार, हारो (हारी), विदोसणियो—वि० ।

विदोसिओड़ो, विदोसियोड़ो, विदोस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विदोसीजणौ, विदोसीजबौ—कर्म वा० ।

विदोसियोड़ो—देखो 'विदूसियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. विदोसियोड़ी)

बिद्द—१ देखो 'बिदा' (रू भे.)

२ देखो 'बिद्ध' (रू भे)

उ०—नराक कोप मल्ल रा, कोटिक्क भीत काकरा। रजी अरक्क बिद्द ऐं, पूरण (मा) के चद एं। —गु. रू. ब

बिद्दत-स. पु [अ वहदत] अद्वैत-भाव।

उ०—महदी री औलाद सू आल बहोत है। महदी रै वश रा पीर-जादा कनै महदविया रा दीन री किताब है। पठाण महदवी विसेस है। कुराण रा हदीस रा सरा री बिद्दत मेटण महदी जनमियौ मह दवी कहे। —वा दा ख्यात

बिद्दमांन—देखो 'विद्यमान' (रू भे)

बिद्दा—देखो 'बिदा' (रू. भे)

उ०—सत्तोल बोल मुक्खं दक्खं, सेलेवा खग्गं-घोड। साहिजादं माथं बिद्दा हुयौ, हिंदू-पत्ती राठोड। —गु रू ब

बिद्दस-वि.—१ जो कठिनता से सहा जा सके।

२ देखो 'विदुस' (रू. भे.)

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति वाध अपारण। वेळ निजर बिद्दसा, असह कवि भ्रमर अकारण। —रा रू

बिद्धस—देखो 'विध्वस' (रू भे)

बिद्धसण—देखो 'विधूसण' (रू भे)

बिद्ध-स पु—१ कलह, झगडा।

उ०—'सेख' तजो दळ समर, रैण वट कहिक रखावौ। तजै बिद्ध कुळ तणौ, मिळो चित खत मिटावौ। —सू. प्र.

२ युद्ध, समर।

उ०—गया राव राठौड, बिद्ध देखै परपूरण। प्रेत सिला भरि पिंड, पीर रिण हुहुइ करण। —गु. रू ब

वि. [स.]—१ बीच मे से छेद किया हुआ।

२ जिसमें बाधा पडी हो, बाधाग्रस्त।

३ जिसको चोट लगी हो।

४ देखो 'विध' (रू भे)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जळद बिद्धति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति भ्रमित बिद्ध। पदमणिय हस किंरि गुर प्रसिद्ध। —रा रू

बिद्धि—१ देखो 'विध' (रू भे)

उ०—करि अठ जगण बत्रीस कल, वरण वीस चत्र बिद्धि। गति इणि मोतीमाळ गुण पणि लखपत्ति प्रसिद्ध। —ल पिं

२ देखो 'विधि' (रू. भे)

विद्यमान—वि. [स. विद्यमान] उपस्थित, मौजूद।

उ०—१ सतरै चालीस विजयदसमी दिनैं, गच्छ खरतर जगि जीत सरव विद्या जिनै। विजयहरख विद्यमान सिस्य तिनकै सही, परिहा कवि धरमसी उपगारै दभ क्रिया कही। —ध. व ग्र.

उ०—२ कल्याणमल पुत्र महाराजधिराज स्रीरायसिंघजी विद्यमान, तत्पट्टाभिसेक महाराकुमार चिरजीवी कुवर'स्रीदळपतजी विजयराज्यै तत्स्यात्मज सभास्ग गारहार कुवर स्रीउदयसिंघ, कुवर स्रीसवळसिंघ, कुवर तुळसीदास सहित सरवे चिरजीयात्। —द. वि

रू भे.—विदमान, विदमान, विद्दमांन।

विद्यमानता—स स्त्री [स विद्यमानता] विद्यमान होने का भाव, उप-स्थिति, मौजूदगी।

विद्य—स पु—१ महर्षि विश्वामित्र के कुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार,

२ देखो 'विद्या' (रू भे.)

उ०—द्रुपदी नु नचावणहार, ए वृहन्नट कलासिणगार। अस्त्रवध एह वीर नकीजइ, अस्त्र विद्य सघली हरइ हुईइ। —सालिसूरि

विद्या—स स्त्री [स] १ शिक्षा आदि के द्वारा मिलने वाला ज्ञान।

२ मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि दिलाने वाला ज्ञान।

३ दुर्गा देवी का नामान्तर।

४ दुर्गा देवी का मत्र।

५ सीता की एक सखी का नाम।

६ वैदिक साहित्यानुमार तीन वेदो के ज्ञान का एक देवता।

७ चौदह की सख्या।

८ इल्म, हुनर, कला।

उ०—च्यारू सिरदार उण सू धीजग्या हा। पूछ्यौ, केस गुरडणा तौ था री पीढ्या री अेलम, पछै उठै काई नवी विद्या सीखण सारू गियौ। ऊधा पाचण सूं मूडण री सीखनै आयौ दीसै। —फुलवाडी

८ जादू, मत्र।

उ०—१ हिवै थे राज भली भात राखीया। ठाम ठाम आपो आप री खिजमत मैं सावधान रह्या। धरती रजपूता नुं भळाई छै। म्हा मैं विद्या छै म्हे खवरि करि आवा। लोका कह्यौ भला, म्हे वासली जावता करिस्या उवै विन्है सावळचा हुइ नै उडीया उडत्या उडत्या ऊवै गाम आया जेथ स्यामसुंदर परणीज नै रह्यो तौ, तेथ तीयै घर ऊपरि आय बैठ्या। —स्यामसुंदर री वात

उ०—२ जतर-मतर टाणा टूणा, कामण टूमण जाणै। वीर मूठ विद्या बोहतेरी, आतम देव अजाणै। —अनुभववाणी

९ किसी विशेष व गम्भीर विषय का विभाग या शाखा।

१० किसी विषय का व्यवस्थि ज्ञान।

११ व्यापार या विशेष कार्य को सचालन करने का ज्ञान ।

१२ आर्यं छन्द का भेद विशेष, जिसमे २३ गुरु और ११ लघु अर्थात ३४ वर्णं या ५७ मात्राऐं होती हैं ।

१३ निसाणी छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें प्रत्येक चरण मे ३ गुरु और १७ लघु अर्थात २० वर्णं या २३ मात्राऐं होती हैं ।

उ०—फीला, लीला, थिरा, कुंआरी, वीणा, रगी, चगी, वारि । विद्या, माळा, वाळा, वाम, नीसाणी रा बारा नाम । —पिं प्र.

रू. भे.—विद्या, विजा, विदिया, विदीया, विघा, विध्या ।

१४ देखो 'विदा' (रू भे.)

उ०—१ तद बीकैजी वा काधळजी मुजरी कर जोधपुर सूं विद्या हुवण री त्यारी करी । तारा मडळजी अरु वीदेजी वा कामदारा आय रावजी नू कयो, "महरबान, म्हारे तौ आपरी ठौड कवर बीकौ है, सू म्हे तौ वीकै सागै रहस्या । —द दा

उ०—२ गाव ४१ वरसळपुर लारै रया । गाव ८४ वीकूपुर लारै राखिया । पीछै या च्याराई ठाकरा नूं सीख रा सिरपाव देयनै विद्या कीया । च्यार घोडा दिया । —द. दा

उ०—३ वडारण उदास सी जाय भीतर भरमल नु कह्यो, जो प्रोहित अरज कराई छै-हलाणी कोई करै नही । मनै विद्या हुई छै, सो कागद लिखावज्यो । इत री सुण भरमल अति उदास हुई । —कुंवरसी साखला री वारता

विद्यागाथा—देखो 'विद्या' (१२)

विद्याघर—स पु [स. विद्या+गृह] विद्या पढाने का स्थान, पाठशाला ।

विद्याचड—स. पु [स. विद्याचण्ड] सुदरिद्र नामक ब्राह्मण के एक पुत्र का नाम ।

विद्याचारण—सं. स्त्री —२८ प्रकार की लब्धियो मे से दसवी लब्धी का नाम ।

उ०—१ जिण लवधि प्रभावै उडी जाय आकास, तै जघा विद्याचारण लवधि प्रकास । जसु वचन सरापै खिण में खेरु थाय, ए लब्धि इग्यारमीं आसी विखय कहाय । —वृस्त

उ०—२ ··· सभिन्न स्रोतो लब्धि, जघाचारण विद्याचारण लब्धि अक्षीणमहांणसी लब्धि, क्षीरास्रव लब्धि, मध्वास्रव लब्धि, जीव-बुद्धि, कोस्टबुद्धि, पादानुसारिणी लब्धि । —व स

विद्याता—देखो विधाता' (रू. भे)

विद्यातानाथ—देखो विधाता' (रू भे)

उ०—वस सपतास छव गात दीठा वणां, वयानै जगत गज लाख वाता । अरोहक दुवो भाराथ नीली ऊडछ, हद घडै विद्यातानाथ हाथां । —माधोसिंह सिसोदिया री गीत

विद्यातीरथ—स. पु. [स] वह प्राचीन तीर्थस्थान जहा स्नान करने से विद्या की प्राप्ति होती है ।

विद्यादान—स पुं. [स विद्यादान] विद्या पढाने का कार्य ।

विद्यादाता—स पु [स विद्यादातृ] विद्या पढाने वाला, शिक्षक ।

विद्यादेवी—स स्त्री [स] १ सरस्वती ।

२ सोलह जिन देवियो मे से एक । (जैन)

विद्याधन—स पु [स] १ विद्या रूपी धन ।

२ अपनी विद्या द्वारा उपार्जित धन ।

विद्याधर—स पु [स.] १ एक देवयोनि विशेष । (अ मा , ना. मा)

उ०—१ जिण सभा रै माहे ब्रह्मादिक सिवादिक इद्रादिक आद तेंतीस क्रोड देवता इठ्यासी हजार रिख विद्याधर अप्सप जक्ष आद देस देस रा राजा वैठा है तिण वखत स्रीरघुनाथजी लिखमणजी रा बखाण स्रीमुख सूं किया । —र रू

उ०—२ धरत ध्यान चारन विद्याधर, करत गान गुन अप्सर किन्नर । गुह्यक यक्ष रक्ष गधरबह, सिद्ध पिसाच भजत तब सरवह । —मे म

२ कवि, पडित । (अ मा)

उ०—१ विद्याधर वड वखतावरु, महियल मैं हो महिमा महिमाय । राउ राणा मोटा राजीया, पुहवीपति हो लागै जसु पाय । —ध व ग्र

उ०—२ गुण गजवध तणा कव गावै, दुरस परायण श्री दरसावै । आस धरै विद्याधर आया; कवि सुज हसतीवध कहाया । —रा. रू.

उ०—३ दान कै प्रमाण दुहूं राजा नू कै पाण, मेघ कै मडाण कहा सातूं मेहराण देस देस के विद्याधर सूत मागध बदीजण, आसा धर आए सो भए पूरण । —रा रू

३ एक रसोषधि विशेष । (वैद्यक)

४ काम शास्त्रानुसार एक आसन, रति-बन्ध ।

५ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे चार मगण होते हैं और कुल बारह अक्षर होते है ।

उ०—मगण च्यारि पायं मही, बूझव आखर बार । सेस कहै रूपक सरस, विद्याधर विसतार । —पिं प्र

रू. भे —विज्जाहर, विदियाधर, विद्याधरु, विद्याधारी ।

विद्याधररस—स. पु यौ. [स.] वैद्यक मे एक प्रकार का रस विशेष, जो कि पारे, गधक, तावे, सोठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि के सम्मिश्रण से बनता है ।

विद्याधरराज–वि —विद्वान, पंडित, चतुर ।

उ०—कामेति करै सब राज काज, धुन कायथ बड विद्याधरराज । सला रै काम श्रेहा सधीर, बुधवत वीरबळ सा वजीर । —पे रू

विद्याधरेंद्र–स पु [स विद्याधरेन्द्र] जाम्बवान् नामक रीछ, जो सुग्रीव का मत्री तथा रीछो का राजा था ।

वि वि.—इसे ब्रह्मा का पुत्र मानते हैं तथा भागवतानुमार इसकी पुत्री जाम्बवती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ किया गया था । राम-रावण युद्ध मे इसने राम की सहायता की थी ।

विद्याधरेसुर, विद्याधरेस्वर–स. पु [स विद्याधर+ईश्वर] शिव की एक मूर्ति का नाम । (पुराण)

विद्याधरु—देखो 'विद्याधर' (रू भे)

उ०—विद्याधरु वनि कुणिहिं एकु मेल्हिउ छइ वाघी । छोडिउ पदुकुमारि पासि तसु मुद्रा लाधी । —सालिभद्र सूरि

विद्याधारी—देखो विद्याधर' (रू भे)

विद्याधिदेवता–स स्त्री [स.] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती ।

विद्याधीस–स. पु [स विद्याधीश] सौराष्ट्र नरेश के प्रधान का नाम ।

विद्यानुवाद–स स्त्री. [स] ७२ कलाओ मे से एक ।

विद्यापति–स पु —१ गुरु, शिक्षक ।

विद्यापात्र–वि —विद्वान, पण्डित ।

उ०—१ राणा री पुरोहित पालीवाळ १ नै सिवड पुरोहित श्रठी सू श्रीर ४ ब्राह्मण जूना विद्यापात्र वेद पढै छै । लागवाग दीजै छै । —राव रिणमल री बात

उ०—२ ' ' 'पचोली डवगर वावर फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया भोई कदोई देसाली व लाली गोल्ही गवाल पमूयाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र । —व स

विद्यापुरी–स. पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—हुवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडीश्रा, सणीश्रा, कस्तूरीश्रा, चपकदुर्गीश्रा, विद्यापुरीश्रा, देकापाटकीश्रा, कास्मीरीश्रा, धूमराई, खीरोक • —व. स

विद्यापीठ–स पु [स] १ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र ।

२ महाविद्यालय ।

विद्यामदिर–स पु [स] विद्यालय, पाठशाला ।

विद्यामय–वि —विद्वान, पडित ।

विद्यामहेसुर, विद्यामहेस्वर–स पु [स विद्यामहेश्वर] शिव, महादेव ।

विद्यारभ–स पु [स विद्यारम्भ] विद्या पढाना प्रारम्भ करने के पूर्व किया जाने वाला एक प्रकार का सस्कार ।

विद्याराज–स. पु [स.] भगवान विष्णु की मूर्ति ।

विद्यारथी–स पु [स विद्यार्थिन्] विद्या का अध्ययन करने वाला, शिष्य ।

उ०—१ सुखारथी स्वारथी जै स्वमुख दुख प्रारथी वच सदै, बढै जो विद्यारथी विसद परमारथी वच वदै । प्रचड ब्रह्माड प्रचुर भुविमड प्रद विभो, वितड प्रोदड प्रनत दुख खड प्रद विभो । —ऊ का

उ०—२ सूरजमल लिछमी रा लाडका सेठ फूलचद री एकाएक वेटो हो अर म्हारा छाकटा सू छाकटा विद्यारथिया मे सू एक टाळमी रकम । जरूरत सूं ज्यादा हुसियार । कारण कै चढती जवानी अर पैसो पल्लै रामजी चलावै तो इज गेलै चलै । —अमर चूंनडी

विद्यारासि–स पु [स विद्याराशि] शिवलिंग ।

विद्यालय–स पु [स] वह स्थान जहा पर विद्या पढाई जाती है, पाठशाला ।

विद्यावान–वि [स विद्यवान्] विद्वान, पडित ।

उ०—१ महाराज सामोरा री जात सूं ऊदावत हुवा । महेसदास री भतीजो हेमो गणेसदास री वेटो जोधनेर जाळपादेवी री क्रिपा सू विद्यावान हुवो । भाखा- चत्र-रूपग महाराज री वणायो । —वा दा ख्यात

उ०—२ तद उण री लुगाई कयो पदमसिंघजी जिसा हुमार री वखत मैं दातार अरु आपा भूखा मरा । तद गोगादान लुगाई नैं कयो के मा'राज तो विद्यावान नूं देवै है सू हू तो भणियो नही ।

—द. दा

विद्याविलास–वि —विद्यारसिक ।

उ०—विद्याविलास नरिंद पवाडउ, हीयडाभितारि जाणी । अतराय विणु पुण्य करउ, तुम्हि भाव घणेरउ आणी ।

—हीराणदसूरि

विद्यावेता–वि [स विद्या+वेता] विद्वान, पण्डित ।

उ०—निंदा नेता री भवभव मे भूडी, विद्यावेत्ता विण अवगत गत ऊडी । वसुधा बीजाकुर विध विध विसतारै, न्याईसुर आसुर विध विध निसतारै । —ऊ का.

विद्याव्रत–स पु [स] १ विद्या अध्ययन के उद्देश्य से, गुरु के घर रह कर, किया जाने वाला व्रत या तपस्या ।

२ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाने वाला व्रत विशेष ।

वि वि —यह १२ महीने तक प्रत्येक शुक्ल पक्ष की एकम को किया जाता है और इस दिन गो-दान भी किया जाता है । इसके

बाद १२ वर्ष तक अध्ययन किया जाता है। इस व्रत को करने से महाविद्वान बन जाता है।

विद्यासजीवन–स. पु [स विद्या+सञ्जीवन] दैत्य-गुरु, शुक्र। (अ मा)

विद्यासिद्धि, विद्यासिद्धी–स. स्त्री [स] विद्या का निष्पादन करने की क्रिया।

उ०—वइया सामलि बाभणु भणइ, ए विवहारु नयरि अम्ह तणी। विद्यासिद्धी रावसु हूउ, बकनामि छइ जम नउ दूउ। —सालिभद्र सूरि

विद्युजिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू भे)

विद्युजिव्हा—देखो विद्युज्जिव्हा' (रू भे)

विद्युज्जिव्ह–स पु [स] १ लका राक्षसी का पुत्र और रावण की बहन सुर्पणखा का पति जो पूर्वजन्म में कालकेंद्र नामक दानव था और राम के द्वारा मारा गया था।

२ रावण का एक प्रधान, जिसने अपनी माया-जाल से राम का टूटा हुआ मस्तक व धनुष सीता के सामने प्रस्तुत कर रावण को पति स्वीकार करने का अनुरोध किया।

३ एक यक्ष का नाम।

४ महातल नामक पाताललोक में स्थित अर्वक्तलम् नामक नगर का निवासी एक राक्षस जो विश्रवस् व माका के पुत्रो मे से एक था।

५ भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का साथी एक राक्षस जिसका वध दुर्योधन ने किया था। मतान्तर से यह घटोत्कच का पुत्र था।

६ विद्युत के समान जिव्हा वाले, अमृत की रक्षा करने वाले, दो सर्प।

रू भे—विद्यु जिव्ह, विद्युतजिव्ह, विद्युग्जिव्ह, विद्युरजिव्ह, विद्युत्जिव्ह।

विद्युज्जिव्हा–स स्त्री. [स] १ स्कद की अनुचरी एक मातृका।

रू भे.—विद्यु जिव्हा, विद्यु तज्जिव्हा, विद्यु त्जिव्हा, विद्यु रजिव्हा,

विद्युच्छत्रु–स. पु—मार्गशीर्ष माह मे सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक राक्षस।

विद्युत–स. स्त्री [स विद्युत्] १ बिजली।

उ०–१ बारद विद्युत वरण, पीत अर धरण नीलपट। तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट। —र रू

उ०—२ आसन स्यघ घटा तन स्याम, पटवर पीत सु विद्युत है। चाप सिलीमुख पांन विमोह सु, वाम विभाग सिया जुत है। —र ज प्र

२ एक प्रकार की वीणा।

३ वज्र।

४ सहिष्णु नामक शिवावतार का एक शिष्य।

५ यातुधान नामक राक्षस का पुत्र व रसन नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

६ एक छद विशेष, जिसमें दो नगण, दो तगण व अन्त मे एक गुरु होता है तथा सात व छ वर्णों पर यति होती है।
वि वि.—इसको चद्रिका, उत्पलिनी, व कुटिलगति भी कहते हैं।

वि —जिसमे बहुत अधिक दीप्ति हो।

रू भे—विदत, विदुत, विदुति, विद्युता, विद्योत, विद्योता, विद्वति, विधुत।

विद्युतकुमार–स पु—दस भुवनपतियो में से एक भुवनपति। (जैन)
वि वि—इनके शरीर का वर्ण लाल और वस्त्र का वर्ण हरा तथा मुकट का चिन्ह वज्र का होता है।

विद्युतकेस—देखो 'विद्युत्केस' (रू भे)

विद्युतजिव्ह, विद्युतज्जिव्ह—'देखो विद्युजिव्ह' (रू. भे.)

विद्युतजिव्हा, विद्युतज्जिव्हा—देखो 'विद्युजिव्हा' (रू. भे)

विद्युतपताक—देखो 'विद्युत्पताक' (रू भे)

विद्युतपरणा—देखो 'विद्युत्पर्णा' (रू. भे.)

विद्युतप्रभ—देखो 'विद्युत्प्रभ' (रू भे)

विद्युतप्रभा—देखो 'विद्युत्प्रभा' (रू भे)

विद्युतलता—देखो 'विद्युल्लता' (रू भे)

विद्युता–स· स्त्री [स] १ कुबेर की सभा मे नृत्य करने वाली एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनि के स्वागत समारोह अवसर पर नृत्य किया था।

२ देखो 'विद्युत' (रू भे) (ना मा)
रू भे—विद्योता।

विद्युताक्ष–स पु [स] कुमार कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

विद्युति—देखो 'विद्युत' (रू भे) (ना मा)

विद्युत्केस–स. पु [सं विद्युत्केश] १ हेति नामक राक्षस जो मयासुर की पुत्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
वि. वि.—सन्ध्या की सालकटकटा इसकी पत्नी थी। इससे उत्पन्न गर्भ मंदर-पर्वत पर छोड दिया गया था जिसका पालन-पोषण शिव ने किया था। कही २ इसकी पत्नी का नाम पौलोमी भी मिलता है।

२ सुकेशी नामक राक्षस का पिता, एक राक्षस राजा।

रू. भे—विद्युतकेस।

विद्युत्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू भे)

विद्युत्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू भे.)

विद्युत्ज्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू भे)

विद्युत्ज्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे)

विद्युत्पताक–स पु. [स.] प्रलय-काल के सात मेघो मे से एक मेघ का नाम।

रू भे—विद्युतपताक।

विद्युत्परणा–स. स्त्री [स. विद्युत्पर्णा] कश्यप ऋषि व प्राधा के गर्भ से उत्पन्न एक अप्सरा, जिसने अर्जुन के जन्ममहोत्सव पर नृत्य किया था।

रू भे.—विद्युतपरणा।

विद्युत्पात–स पु [स] वज्रपात होने की क्रिया, विजली गिरने की क्रिया।

विद्युत्प्रभ–स.पु [सं] १ एक दानव, जिसे रुद्रदेव से वरदान स्वरूप, एक वर्ष तक तीनो लोको का आधिपत्य, शिव का नित्यपार्षदपद, एक करोड पुत्र एव कुशद्वीप का राज्य आदि मिले थे।

२ 'पापमोचन' एव "सूक्ष्म-धर्म" के सम्बन्ध मे इन्द्र से चर्चा करने वाला एक ऋषि।

रू भे—विद्युतप्रभ।

विद्युत्प्रभा–स स्त्री [स] १ उत्तर दिशा मे रहने वाली दस अप्सराओ का गण।

२ दैत्यराज बलि की एक पोती का नाम।

रू भे—विद्युनप्रभा।

विद्युत्प्रिय–स पु [स] १ कासा नामक धातु।

२ उक्त धातु का बना कोई बर्तन।

वि वि.—उक्त कासा या उक्त धातु से बना हुआ कोई बर्तन बीजली को अपनी ओर जल्दी खीचता है।

विद्युत्माळा—देखो 'विद्युन्माळा' (रू भे)

विद्युत्माळी—देखो 'विद्युन्माळी' (रू भे)

विद्युत्लता–स स्त्री [स] विजली की क्रौंध या चमक।

रू भे—विद्युतलता।

विद्युदगौरी–स स्त्री [स विद्युद्गौरी] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युदध्वज–स पु [स. विद्युद्ध्वज] एक असुर का नाम।

विद्युदक्ष–स पु [स] स्कन्द का एक सैनिक।

विद्युदाक्ष–स पु [स] एक राक्षस का नाम। (पुराण)

विद्युद्दंष्ट्र–स पु [स. विद्युद्दंष्ट्र] राम-रावण युद्ध मे राम की सेना का एक वानर।

विद्युद्रुप, विद्युद्रूप–स. पु [स. विद्युद्रूप] १ लका का एक राक्षस।

२ कुवेर का सेवक, एक यक्ष।

वि. वि—मेनका की पुत्री मदनिका इसकी पत्नी थी। यह एक वार अपनी पत्नी के साथ कैलास पर्वत पर मद्यपान कर रहा था। वहा कक नामक गरुड वशीय पक्षी से इसका झगडा हुआ और इसने उसे मार दिया। कक के भाई कदर ने आकर इससे युद्ध किया और इसका वध किया। इसके वध कर दिये जाने के कारण इसकी पत्नी ने कदर के साथ विवाह कर लिया।

विद्युद्वरचस–स पु. [स विद्युद्वर्चस्] एक सनातन विश्वदेव।

विद्युन्माळ–स पु—राम-रावण युद्ध के समय राम के पक्ष का एक वन्दर।

विद्युन्माळा–स स्त्री [स] १ एक छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ गुरु वर्ण अथवा दो मगण और दो गुरु होते हैं तथा चार-चार वर्णो पर यति होती है।

२ विजली की कौन्ध या चमक।

रू भे—बिज्जूमाळा, बीजूमाळा, वादूमाळा, विद्युत्माळा।

विद्युन्मालि, विद्युन्माळी–स पु. [स विद्युन्मालिन्] १ तारकासुर राक्षस के तीन पुत्रो मे से मझला पुत्र। (पुराण)

वि वि—इसके अन्य दोनो भाईयो का नाम ताराक्ष एवम् कमलाक्ष था। इसने भगवान् शकर की आराधना कर एक सोने का विमान प्राप्त किया था जिस पर चढ कर यह रोजाना सूर्य के पीछे पीछे घूमता रहता था। इसलिए उस विमान मे कभी अन्धेरा नही होता था। सूर्य ने उस विमान को अपने तेज से गला दिया। इसने धर्म के पुत्र सुषेण से भी युद्ध किया था।

इसने अपने दोनो भाइयो के साथ ब्रह्मा को तपस्या कर सन्तुष्ट किया और यह वर प्राप्त किया कि सोने, चादी व लोहे के तीन नगर मे हम तीनो एक वार पास-पास और हजार साल अलग-अलग रहेंगे तथा हमारा वध उसी समय किया जा सकेगा जब कि हम तीनो पास-पास हो। मगर वध के लिए इन्होने मागा कि हम तीनो का एक साथ वध एक ही वार मे हो। इस वर प्राप्ति के बाद इन्होने देवताओ व मनुष्को को बहुत सताया। इस लिए देवताओ ने शिव की स्तुति की और इनका वध करने हेतु कहा। शिव ने अपने त्रिशूल से इनके तीनो नगरो को छिद्रित कर दिया और विष्णु वाण, जिसकी नोक पर अग्नि और पीछे वायु थी और मन्दर पर्वत धनुष से, जब ये तीनो एक साथ थे, इनके नगरो सहित इन्हे भस्म कर दिया।

२ राम-रावण युद्ध मे रावण-पक्षीय राक्षस जिसे राम-पक्षीय सुषेण नामक वानर ने मारा था।

३ एक राजा (प्राचीन)

४ तारका-मय युद्ध मे मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पार्षद नन्दिन के द्वारा हुआ था।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल मे रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था।

रू भे—विद्युत्माळी, विजमाळ, विजमाळा, विजमाळि, विजमाळी।

विद्योत—स पु [स] १ धर्मऋषि एव दक्षकन्या लबा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि।

२ एक अप्सरा का नाम।

३ देखो 'विद्युत' (रू भे)

विद्योतन—स पु [स] सूर्य्य, सूरज। (ना मा)

विद्योता—१ देखो 'विद्युत' (रू भे)

२ देखो 'विद्युता' (रू भे)

विद्योपरिचर—स पु [स] वायु के अनुसार, कृत नामक वसु का पुत्र।

विद्रधि, विद्रधी—स पु [स विद्रधि] १ एक प्रकार का फोडा।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घातक फोडा। (अमरत)

विद्रभ—देखो 'विदरभ' (रू भे.)

विद्रम—देखो 'विद्रुम' (रू. भे.)

उ०—१ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति। अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति। —रुकमणी मगळ

उ०—२ गति गयद, जघ केळिग्रभ केहरि जिम कटि लक। हीर डसण, विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयक। —ढो मा

उ०—३ (जाणे) मोती लड पोई घरघारै, अधर विद्रम विचिदत रे। चमकै चूनी सारिखा रे, दाडिम फूलीय दीपत रे।—प च. चौ

विद्रमान—देखो 'विद्यमान' (रू भे.)

विद्रमी—देखो 'विद्रुमी' (रू भे)

विद्रय—देखो 'विदरग' (रू भे)

उ०—मिळै कोडि तेत्रीस सुर भीम रै माडहो, अधिकि आण कना अधकि ओछाह। जानि उग्रसेन वळिभद्र जिसा जानिया, विद्रवा तणो घर हुओ वीमाह। —पी. ग्र

विद्रवण-वि.—देने वाला।

उ०—अपणी खाटी सपति जगत कूं लुटावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै। वडै जगूं मे विरद बोल लोह बाहू को जोम चढि लडावै। आप सबसे आगू वीजूजळ वाहै। —सू. प्र

विद्रवणो विद्रवबो—क्रि स —१ दान देना, धन लुटाना।

उ०—उदर दर खण मरै पंस भोगवै भुयगह, हल वहि मरै वहिल्ल हूरी जव चरै तुरगह। सूंब धन सच मरै वीर विद्रवै विवह पर, पडित पढ गुण मरै मूढ भूच रायाहर। —नैणसी

२ बाटना, देना।

उ०—जोगी तेल माहे पडीयो। सोनै री पोरसो हुवो। हिवै ईया पोरसो घर मैं आणि राखियो। सोनो वेचीजै। खाईजै वीद्रवीजै। हिवै दारु काढीजै। भठ्या राति दिन तपल्या रहै। —देवजी बगडावता री वात

क्रि अ.—३ द्रविभूत होना।

४ दौडना, भगना।

विद्रवणहार, हारौ (हारी), विद्रवणियौ—वि०।

विद्रविओडौ, विद्रवियोडौ, विद्रव्योडौ—भू० का० कृ०।

विद्रवीजणौ, विद्रवीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विद्रवियोडौ—भू का कृ—१ दान दिया हुआ, धन लुटाया हुआ. २ बाटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुवा हुआ. ४ दौडा हुआ, भागा हुआ।

(स्त्री. विद्रवियोडी)

विद्रावण—स. पु—कश्यप एव दनु के पुत्रो मे एक।

विद्रावी—स पु. [स विद्राविन्] १ भागने वाला।

२ फाडने वाला।

विद्रुत—स पु.—ययाति वशीय एक राजा।

विद्रुम—स पु [स विद्रुमः] १ नव रत्नो मे से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल। (अ मा)

उ०—१ पाका बिंब मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे। मामोल्या जिम रातडा रे, अधर सुधारस खाण रे। —प च चौ.

उ०—२ फिटक-रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीहाल। सेढी बन्नी अरणेटी पलेवो पाखाण, भोडल तुरी ओस भूमि पाहण जे खाण। —वृस्त.

२ मूंगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष।

३ कोंपल।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

रू भे—विद्रम।

विद्रुमलता—स स्त्री [स विद्रुम+लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य।

२ मूगा।

विद्रुमाभा—स स्त्री [स,] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी।

२ ज्ञान रूपी देवी।

विद्रुमी—वि.—१ मूगे का, प्रवाल का।

२ लाल रग का।

रू भे.—विद्रमी, विद्रुमी, विद्रमी।

विद्रोह-स पु [स] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुचाने के उद्देश्य से किया जाता है।

उ०—वसू प्रचंड दडते प्रचड दडतें वहैं, वितड चड दड दें अदड छडतें वहै। विमोह मोह मोह मे विद्रोह द्रोहि पै बढे, क्रतात भात कोह मैं कुकोह कोहि को कढे। —ऊ का.

२ वह आचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जाता है।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव।

रू भे —विदरोह।

विद्रोही-वि —१ विद्रोह से सम्बन्धित।

२ विद्रोह करने वाला।

रू भे —विदरोही।

विद्वता-स स्त्री [स.] १ विद्वान या पडित होने का भाव।

२ जानकारी, ज्ञान।

रू भे —विदवता, विद्वत्ता।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू भे)

उ०—तंनि ओप करण कवि वरण तासु, प्रति नवळ जळद विद्वति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा रू

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू भे)

विद्वस-वि [स विद्वस] १ पडित, विद्वान।

२ कवि।

३ चतुर, होशियार।

विद्वान, विद्वास-स पु [स विद्वान, विद्वस] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला।

२ बहुत अधिक विद्या पढा हुआ, सर्वज्ञ।

उ०— छपन लिपि तणी अलवि करइ, पात्रीस महाकाव्य तणा सुभासित भणइ, स्वदरसन परदरसन तण भाव प्रकासइ, आगमारथ ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्स्यायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुरवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नसागर करचालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वास। —व स.

३ पडित।

उ०—टावर आगै नी तो मोट्यार रै डील री करार काम आवै, नीं किणी चकवा राजा री जोर हालै अर नी किणी विद्वांन री समझ के अकल ई काम देवै। अबूझ बाळक सू दुनिया री कोई ताकत जीत नी सकै अर जै कोई अकलहीण उण सू जीतणरो थोथो गुमान ई करै तो हारणिया नै आपरी हार री अगै ई वेरो नी व्है। —फुलवाडी

रू भे.—विदमान, विदमान, विदवान।

विद्विस-स पु [स. विद्विष, विद्विष] शत्रु, रिपु।

विद्वेस-स पु [स विद्वेष] शत्रुता, दुश्मनी, वैर।

रू भे —विदवेस।

विद्वेसक-स पु [स विद्वेषक] शत्रुता करने वाला, शत्रु।

रू भे —विदवेसक।

विद्वेसणी, विद्वेसिणी-स. स्त्री [स विद्वेषिणी] दु सह नामक यक्ष की निर्म्मार्ष्टि के गर्भ से उत्पन्न आठवी और अन्तिम कन्या। (पौराणिक)

वि —विद्वेस करने वाली या रखने वाली।

रू भे —विदवेसणी, विदवेसिणी।

विद्वेसी-वि [स विद्वेषिन्] विद्वेष करने वाला, शत्रु।

रू भे —विदवेसी।

विधस—देखो 'विध्वस' (रू भे)

उ०—जाणों बादळा माहै बीजळिया रा सिला ऊपडिया पाखरा ऊपरै सारधारा फूलधारा वाजी सु ठणणणणण जाणै परभात री झालर ठणकी, नर बगतर विधस हुआ। —रा सा स

विधसक—देखो 'विध्वसक' (रू भे)

विधसण-वि —नाश होने वाला, नाशवान्।

उ०—सडण पडण विधसण देहणी, तिण री किसडी रे आस। खिण एक माही रे जासी विगडी, जिम पाणी माहै पतास। —जयवाणी

२ देखो 'विधूसण' (रू भे)

विधसणो-वि — नाश करने वाला, विध्वस करने वाला।

विधसणो, विधसवो—देखो 'विधूमणो, विधूंसवो' (रू भे.)

विधसणहार, हारो (हारी), विधसणियो—वि०।

विधसिओडो, विधसियोडो, विधस्योडो—भू० का० कृ०।

विधसीजणो, विधसीजवो—कर्म वा०।

विधसियोडो—देखो 'विधूंसियोडो' (रू भे)
(स्त्री विधसियोडी)

विध-स पु [स विध] १ तरह, प्रकार, भाति।

उ०—१ अटकाई नह आय बळ, आई जरा अगूढ। आसी जद तू अटकसी, मान किसी विध मूढ। —वा दा

उ०—२ भडा वात सभळै, एण विध हूंत अकारा। वहसि 'गजण' बोलियो, वधै पौरस जिण वारा। —सू. प्र.

४ तारका-मय युद्ध मे मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पार्षद नन्दिन के द्वारा हुआ था ।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल मे रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था ।

रू भे –विद्युत्माळी, विजमाळ, विजमाळा, विजमाळि, विजमाळी ।

विद्योत–स पु [स.] १ धर्मऋषि एव दक्षकन्या लबा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

३ देखो विद्युत' (रू भे)

विद्योतन–स पु [स] सूर्य्य, सूरज । (ना मा)

विद्योता—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे)

२ देखो 'विद्युता' (रू भे)

विद्योपरिचर–स पु [स] वायु के अनुमार, कृत नामक वसु का पुत्र ।

विद्रधि, विद्रधी–स पु [स विद्रधि] १ एक प्रकार का फोडा ।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घ तक फोडा । (अमरत)

विद्रभ—देखो 'विदरभ' (रू भे.)

विद्रम --देखो 'विद्रुम' (रू. भे)

उ०—१ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति । —रुकमणी मगळ

उ०—२ गति गयद, जघ केळिप्रभ केहरि जिम कटि लक । हीर डसण, विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयक । —ढो मा.

उ०—३ (जाणे) मोती लड पोई वरधारै, अधर विद्रम विचिदत रे । चमकं चूनी सारिखा रे, दाडिम कूलीय दीपत रे ।—प च. चौ

विद्रमान—देखो 'विद्यमान' (रू भे.)

विद्रमी—देखो 'विद्रुमी' (रू भे)

विद्रव—देखो 'विदरभ' (रू भे)

उ०—मिळे कोडि तेत्रीस सुर भीम रै माडहो, अधिकि आण कना अधकि ओछाह । जानि उग्रसेन वळिभद्र जिसा जानिया, विद्रवा तणी घर हुओ वीमाह । —पी ग्र

विद्रवण–वि.—देने वाला ।

उ०—अपणी खाटी सपति जगत कूं खुलावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै । वडै जगूं मे विरद बोल लोह बाहू की जोम चढि लडावै । आप सवसै आगू वीजूजळ वाहै । —सू. प्र

विद्रवणौ विद्रववौ–क्रि स —१ दान देना, धन लुटाना ।

उ०—उदर दर खण मरै पैस भोगवै भुयगह, हल वहि मरै वहिल्ल हरी जव मरै तुरगह । सूंब धन्न सच मरै वीर विद्रवै विवह पर, पडित पढ गुण मरै मूढ भूच रायाहर । —नैणसी

२ बाटना, देना ।

उ०—जोगी तेल माहै पडीयौ । सोनै रौ पोरसौ हुवौ । हिवै ईया । पोरसौ घर मैं आणि राखियौ । सोनौ वेचीजै । खाईजै वीद्रवीजै । हिवै दारु काढीजै । भठ्या राति दिन तपत्या रहै ।

—देवजी वगडावता री वात

क्रि अ —३ द्रविभूत होना ।

४ दौडना, भगना ।

विद्रवणहार, हारौ (हारी), विद्रवणियौ—वि० ।

विद्रविओडौ, विद्रवियोडौ, विद्रव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विद्रवीजणौ, विद्रवीजबौ—कर्म, भाव वा० ।

विद्रवियोडौ–भू का कृ.—१ दान दिया हुआ, धन लुटाया हुआ. २ बाटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुवा हुआ. ४ दौडा हुआ, भागा हुआ ।

(स्त्री विद्रवियोडी)

विद्रावण–स पु —कश्यप एव दनु के पुत्रो मे एक ।

विद्रावी–स पु [स विद्राविन्] १ भागने वाला ।

२ फाडने वाला ।

विद्रुत–स पु.—ययाति वशीय एक राजा ।

विद्रुम–स पु [स विद्रुमः] १ नव रत्नो मे से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल । (अ मा)

उ०—१ पाका बिब मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे । मामोल्या जिम रातडा रे, अधर सुधारस खाण रे । —प च चौ.

उ०—२ फिटक-रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल ,मणसिल पारी सुवरण आदि धातु नीहाल । सेढी बन्नी अरणेटी पलेवौ पाखाण, भोडल तुरी ओस भूमि पाहण जै खाण । —वृस्त.

२ मूगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष ।

३ कोपल ।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।

रू भे —विद्रम ।

विद्रुमलता–स स्त्री [स विद्रुम+लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य ।

२ मूगा ।

विद्रुमाभा–सं स्त्री. [स,] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी ।

२ ज्ञान रूपी देवी ।

विद्रुमी–वि —१ मूगे का, प्रवाल का ।

२ लाल रग का ।

रू भे.—विद्रमी, विद्रुमी, विद्रमी ।

विद्रोह-स. पु [स] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुचाने के उद्देश्य से किया जाता है ।

उ०—वसू प्रचंड दडतै प्रचड दडतै वहैं, वितड चड दड दै अदड छुडतै वहै । विमोह मोह मोह मे विद्रोह द्रोहि पै वढै, कृतात भात कोह मैं कुकोह कोहि को कढै । —ऊ का

२ वह आचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जाता है ।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव ।

रू भे —विदरोह ।

विद्रोही-वि —१ विद्रोह से सम्बन्धित ।

२ विद्रोह करने वाला ।

रू भे —विदरोही ।

विद्वता-स स्त्री [स.] १ विद्वान या पडित होने का भाव ।

२ जानकारी, ज्ञान ।

रू. भे —विदवता, विद्वत्ता ।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू भे)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तासु, प्रति नवळ जळद विद्वति प्रकास । व्रति चलति सुगति दुति अमित निद्ध, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध । —रा रू

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू भे)

विद्वस-वि [स विद्वस] १ पडित, विद्वान ।

२ कवि ।

३ चतुर, होशियार ।

विद्वान, विद्वास-स पु [स विद्वान, विद्वन] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला ।

२ वहुत अधिक विद्या पढा हुआ, सर्वज्ञ ।

उ०— छपन लिपि तणी अलवि करइ, पात्रीस महाकाव्य तणा सुभासित भणइ, स्वदरसन परदरसन तणा भाव प्रकासइ, आगमारथ ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्स्यायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुरवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नसागर करवालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसइ विद्वांस । —व स

३ पडित ।

उ०—टावर आगै नी तो मोट्यार रै डील रो करार काम आवै, नी किणी चकवा राजा री जोर हालै अर नी किणी विद्वान री समझ के अकल ई काम देवै । अबूझ बाळक सू दुनिया री कोई ताकत जीत नी सकै अर जै कोई अकलहीण उण सू जीतणरो थोथो गुमान ई करै तो हारणिया नै आपरी हार री अगै ई वेरो नी व्है । —फुलवाडी

रू. भे.—विदमान, विदमान, विदवान ।

विद्विस-स पु [स विद्विष, विद्विप] शत्रु, रिपु ।

विद्वेस-स पु [स विद्वेष] शत्रुता, दुश्मनी, वैर ।

रू. भे —विदवेस ।

विद्वेसक-स पु [स विद्वेषक] शत्रुता करने वाला, शत्रु ।

रू भे —विदवेसक ।

विद्वेसणी, विद्वेसिणी-स. स्त्री. [स विद्वेषिणी] दु सह नामक यक्ष की निर्म्माष्टि के गर्भ से उत्पन्न आठवी और अन्तिम कन्या । (पौराणिक)

वि —विद्वेस करने वाली या रखने वाली ।

रू भे —विदवेसणी, विदवेसिणी ।

विद्वेसी-वि [स विद्वेषिन्] विद्वेष करने वाला, शत्रु ।

रू भे —विदवेसी ।

विधस—देखो 'विध्वस' (रू भे)

उ०—जाणीं वादळा माहै वीजळिआ रा सिला ऊपडिया पाखरा ऊपरै सारधारा फूलधारा वाजी सु ठणणणणण जाणीं परभात री झालर ठणकी, नर वगतर विधस हुआ । —रा सा स

विधसक—देखो 'विध्वसक' (रू भे)

विधसण-वि —नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सडण पडण विधसण देहणी, तिण री किमडी रे आस । खिण एक माही रे जासी विगडी, जिम पाणी माहै पतास । —जयवाणी

२ देखो 'विधूसण' (रू भे)

विधसणी-वि — नाश करने वाला, विध्वस करने वाला ।

विधसणी, विधसवो—देखो 'विधूसणी, विधूंसवो' (रू भे.)

विधसणहार, हारो (हारी), विधसणियो—वि० ।

विधसिओडो, विधसियोडो, विधस्योडो—भू० का० कृ० ।

विधसीजणो, विधसीजवो—कर्म वा० ।

विधसियोडो—देखो 'विधूंसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विधसियोडी)

विध-स पु [स विध] १ तरह, प्रकार, भाति ।

उ०—१ अटकाई नह आय वळ, आई जरा अगूढ । आसी जद तू अटकसी, मान किमी विध मूढ । —वा दा

उ०—२ भडा वात समळै, एण विध हूंत अकारा । वहसि 'गजण' वोलियो, ववै पौरस जिण वारा । —सू. प्र

उ०—३ अगसत जेम नेम बळ ओडा, छात दिली दळ जळ विण छोडा। 'लखो' 'महेस' कहै विघ लाखा, रवद अवघ बंघ जिम राखां। —रा. रू

उ०—४ असपत राव ओलीभियो, विघ जिण वाकम होइ। कुमति पग ऊपर कहै कहो सुमती कोइ। —गु रू व

२ ढग, तरीका, प्रकार।

उ०—१ नारि न को पुरखा, चतर न मूरखा, वेद न च्यारि वचदा है। अणभै पद बोल्या, अन्तर खोल्या, विघ विरळा वूभंदा है। —अनुभववाणी

उ०—२ वार विकरार सिरदार विघ वाहियो, समर भर भार घर भार सूरै। सार सेलार ऊभार भभार सर, पार चोघार कर पार पूरै। —नाथो सांदू

उ०—३ हिवै ईयै एक कोट करायो। साथ सरव लोक हुता, सु अठै ही ज रहया। ईयै री साहिबी हुई। साढ्या रा वरग कीया। सु साढ्यां रै प्रिथीराज री दाग दीयो। साढ्या रा वरग घणा हूवा इयैं विघ एथ रहै। —जागळू री वात

३ वृतान्त, हकीकत।

उ०—१ आखी 'गोदै' 'इद्र' सू, विघ सारी वचणोर। तुरत विचारी कूच री, सोच न घारी ओर। —रा. रू.

उ०—२ सो वाचिया सुणी विघ सारी, भाई लिखी अवस्था भारी। साह मुगळ पूछे सरसावै, अवर 'सवाई' वेघ उठावै। —रा. रू.

४ कारण।

उ०—सुणी हास्य विघ कहै नरेसुर, गनिका ग्रेह आसण जोगेसुर। वनखड गिर भगर नह वसियो, हू ओ देख कतूहळ हसियो। —सू प्र.

५ शाख। (अ. मा)

६ समूह, व्यूह। (अ. मा)

७ देखो 'विधि' (रू भे.) (ना. मा)

उ०—१ कहे ताम कमधज, सुणै साहिब छत्रपत्ती। विघ विचार घारियो, सको तिण आर सुमत्ती। —रा. रू.

उ०—२ अवनी रोग अनेक, ज्यारा विघ कीना जतन। इण प्रकृति री अेक, रची न ओखद राजिया। —किरपाराम

उ०—३ कवि प्रोहित मत्री प्रघान, विघ अत्र विचारै। रहो मात चहुवांण, अरज हत वात उचारै। —रा. रू.

उ०—४ विघ रा जाण गाथ रा वीकम, पारिख वाण हाथ रा पाथ। जुघ रा भीम खळा रा गजण, 'नाथ' रा बुघ गणनाथ। —आईदान पाल्हावत

८ देखो 'विघु' (रू भे) (अ मा)

रू. भे.—बिद्ध, विघ, विधि, विद, विद्ध, विद्धि।

विघअक—स पु —देखो 'विधिअक' (रू भे.) (अ मा)

विघकर—देखो 'विधिकर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

विघचूड, विघचूड—स पु. [स-विघाचुण्ट] कपट, धोखा। (अ. मा)

विघत—देखो 'विघाता' (रू भे)

उ०—वप व्रहम विघत री सरव वुसुत री तुं गगा गावतरी। पारवती निमी हेम री पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी ग्र

विघनयण—देखो विधिनयण' (रू भे) (क कु वो.)

विघना—स पु [स विधि] व्रह्मा, विघाता। (डिं. को.)

उ०—१ नहचै होय निसक, चित नह कीजै चळ-विचळ। ॐ विघना रा अक, राई घटै न राजिया। —किरपाराम

उ०—२ सुदर बदन नयन अग मानी, विघना आप सवारी। मीरां कै प्रभु गिरघरनागर, तुम जीतै हम हारी। —मीरा

उ०—३ अब तौ जिय ऐसी बनि आई, विघना रची सोइ होय री। अरी जै मेरो यह लोक जात हैं, वह परलोक जिन जाव री। —मीरा

उ०—४ कै आ पटकी ऊपर पडगी कैंआ भावी रच्ची राम। कै आ विघना लेख लिखायो, कं आ सन्नै जच्ची राम। —करणीदान बारहठ

रू. भे —बिघना।

विघरम—देखो 'विघरम्म' (रू भे)

विघरमी—देखो 'विघरम्मी (रू भे)

विघरम्म—स पु [स. विघर्म्म] पराया या दूसरा घर्म।

वि.—१ जो घर्मशास्त्र मे निन्दित हो।

२ जिसका कोई घर्म न हो।

रू. भे —वेघरम, विघरम, विध्रम, विध्रम्म।

विघरम्मी—वि. [स. विघर्म्मिन्] १ अपने घर्म के विपरीत आचरण करने वाला।

२ पराये घर्म का अनुयायी, घर्मभ्रष्ट।

रू. भे —विघरमी, विध्रमी, विध्रम्मी।

विघरेख, विघरेखा—सं स्त्री. [स. विधि+रेखा] भाग्य मे लिखा हुआ लेख, विघाता की रेखा, कर्मरेख।

उ०—पिण भावी अति प्रवळ, सकळ बस प्राण असेखा। हुअणहार सिघ करै, वार न घरै विघरेखा। —रा रू.

विघवत—देखो 'विधिवत' (रू. भे)

उ०—१ कहियो न्रप प्रज भय किण सू, ज्वाळामुखी न पूजै जिण सू। भाणउदीप विगत सुण भारी, विधवत सकति पूजि विसतारी।
—सू. प्र

उ०—२ नाखिग्र सूर ससि ग्रर मुनिंद्र, ग्रावियां वरुण कुम्मेर इंद्र। विप्र वेद मंत्र विधवत विचार, ग्राहूत वेद सुरमुख ग्रपार।—सू प्र

विधवा—स स्त्री [स] वह स्त्री, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया हो, पतिहीना स्त्री।

उ०—१ वारी ग्रेक विधवा भूवा ग्रणूती धनवती ही। वै उण माथै ठगाई री पासो फेंकणी चायो। ग्रेक भाई मोको देखनै छानै भूवा रै पाखती गियो। भूवा री हाजरी मे ग्रेक पग रै पाण ऊभो रै'तो।
—फुलवाडी

उ०—२ उण विधवा बामणी री गळाई कळजुग री धरम निभाया ई ग्रापारो जमारो सुधरैला ग्रर सतजुग रै मरियोडा ढोर री पूछ झालिया धन ग्रर बेटा दोना सूं हाथ धोणा पडैला। — फुलवाडी

उ०—३ सयळा मिनख ग्रर बस्ती री तूमार जोया पछै ई म्हैं फगत धन माथै ग्रास गडाय राखी ही। बेटी! विधवा री सासरो, पीवर, माईत ग्रर भगवान फगत धन इज है।
—फुलवाडी

उ०—४ बापडी भोळी- ढाळी किन्यावा नै कुडकै में नाख'र वेगीसी विधवा बणा देवै। सुवाग री नी रडापै री चवरी चाढै।
—दसदोख

रू भे —बधवा, बिदवा, बिधवा।

विधवापन, विधवापणू, विधवापणो—स पु —विधवा होने की अवस्था वैधव्य।

उ०—१ ग्राप एकली मरनै फकत म्हनै हीज विधवापणो नही देसी धणी जणिया विधवा हुसी तद म्हारो ही चूडो ले जासी। चूडा री दूसरी प्रयोजन लेजावणी सो हू सती होवसूं सो चूडा सहत साथै ले जासी।
—वी स टी.

उ०—२ गाढै विधवापण ग्रह, हू न करूं तन हाण। पींह जिण लाजै ग्रमरपुर सूरजमल सुरताण।
—पा प्र.

रू. भे —विधवापण, विधवापणू, विधवापणो।

विधवा-वियां, विधवाविवाह—स. पु —पुनर्विवाह।

उ०—"तो कोई परणीजियोडी ई परणीजै है क्या! धरम डूब को जावैं नी?" "थोनै धरम री टाग पूछ री तो ठा ई कोयनी, पराया धर ऊनै पाणी-सू वाळता फिरो हो।" "तो थे कराय दिया विधवा-वियां? हू ग्री देखूला?"
—वरसगाठ

विधवासरम, विधवाश्रम—स पु [स विधवा+ग्राश्रम] वह स्थान, जहा विधवा स्त्रियो के पालन-पोषण एव शिक्षा ग्रादि की व्यवस्था हो।

विधविधांन—वि —विधिपूर्वक, विधिवत्।

उ०—वाणातरा साह नै परणायो। जठै सारो विध-विधांन करनै सगा डायचो दीधो।
—साहूकार री वात

विधव्रख—स. पु [स. विधि-वृक्ष या वृक्ष-विधि] पलास नामक वृक्ष।
(ग्र मा)

विधसरवा, विधस्रवा—स पु [स वृद्धश्रवस्, वृद्धश्रवा] इन्द्र।
(ग्र. मा, ना मा, ह ना मा)

विधाण, विधान—स पु. [स विधान] किसी कार्य का ग्रायोजन।

२ कार्य करने की रीति, व्यवस्था व सम्पादन।

३ ढग, तरीका।

उ०—मालती सेवती केतकी प्रफुलमान। फूलूं की सोभा ग्रसमान के तारू का विधांन। केवडू की वाडी सिरू का विकास। नाफरमा हजारा ग्रौरै गुलहूवास।
—सू. प्र.

४ तरकीव, उपाय।

५ धर्मशास्त्र की ग्राज्ञा।

उ०—छत्रप्पती उछाह मे, धनेस माल ऊढमैं। वेदोगत विधांनयं, दुजा ग्रनेक दानय।
—सू प्र.

उ०—२ तपवत भूप निज धाम तत्र, छज कनक सिंघासण चमर छत्र। दुतिवत करै सन्नान दान, विध राज रीत सासत्र विधान।
—सू प्र.

६ हाथी को मस्ती मे लाने हेतु खिलाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

७ धन, सम्पत्ति।

८ पूजा, ग्रर्चन।

उ०—विदा हुए पाधारियो, पुहकर मुरधर-पत्त। दान सिनान विधांन दिन, पुनि मनि इद्र प्रकृत्त।
—रा. रू.

९ ग्राज्ञा, ग्रादेश।

१० किसी देश के सर्वोच्च कानूनो का सग्रह।

११ वाद्य।

१२ रचना बनावट।

१३ सुख देवो मे से एक।

१४ नियम, कानून।

१५ कारण।

उ०—ग्राहार माहै ग्रावता हो, जीव दता दिन ज्यान। कीडी तो निरबुद्धि करै, वलि माखी वमन विधान।
—ध व ग्र

उ०—विन्है पख क्रस्ण सुकल विधान, विन्है वपु ग्रग सुदक्षिण वाम। ब्रह्मा दक्षण ग्रग वदीत, निपायो दक्ष प्रजापति मीत।
—रा. व

१६ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (ना द)

वि —१ समान, तुल्य।

२ रचनाकर्त्ता, रचयिता।

उ०—म्हे अवळ सकळ जगती प्राणी, तूं सबळ सख है सक्तिराण।
म्हे दास सदा तेरा स्वांमी, आखै जग रो है तूं विधान।
—फरणीदांन बारहठ

रू भे—विधान, विध्यांन, विहाण।

विधानसपतमी, विधानसप्तमी, विधानसातम—स पु [सं विधानसप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी से आरभ करके अगले वर्ष की पौष शुक्ल सप्तमी तक पूरे एक वर्ष तक किया जाने वाला सूर्यदेव का व्रत विशेष।

विधानीक—स पु—डिंगल गीतो की रचना का ढग विशेष जिसमे क्रम-क्रम से प्रथम द्वाले के तीन चरण मे जो बात कही जाती है उसका स्पष्टीकरण चतुर्थ चरण मे किया जाता है।

उ०—तुक तुक मे क्रम सो तवै, अवर अवर विध जांण। सभ चौथी तुक नाम सो विधानीक वाखाण। —रा. रू

विधासणौ, विधासबौ—देखो विधूंसणौ, विधूंसबौ' (रू. भे)

उ०—१ तठा उपरात करि नै राजान सिलामति माखिरा नकासिग्रा सूग्रर भाखरा रा मोढा फाड फाडनै निकळिया छै। सूग्ररैं रातै खून किग्रो छै। सूरै गुलवाडि विधासिया छै। —रा सा स

उ०—२ भूधर तू भाइयो भगता रै, तू दातार नही डिंगता रो। व्रिज रै देस वजाडी वासी, वडै भगत कजि वाधि विधासी।
—पी. ग्र

उ०—३ वडो वड आरभु ज कुळ भार, धरा सिणगार इसो लख-धीर। वहे सम-वाट नमावण नाट, विधासण थाट सम्रा वर वीर।
—ल. पि

उ०—४ विधासइ रेसइ राकस वस, कीयो तैं कस। दहकध कियो घडै सुरलोक तणौ सहि थट, वडो कोइ डील नमो वैराट।
—पी ग्र

विधासणहार, हारो (हारी), विधासणियो—वि०।

विधासिग्रोडो, विधासियोडो, विधास्योडो भू० का कृ०।

विधासीजणौ, विधासीजबौ—कर्म वा०।

विधासियोडो—देखो विधूंसियोडो' (रू भे)
(स्त्री विधासियोडी)

विधा—स स्त्री [स] १ ढग, तरीका।
२ तरह, प्रकार, भाति। (सभा)
३ किस्म, जाति।
४ धन, सम्पत्ति।
५ हाथी या घोडे का चारा।
६ किराया, भाडा।
७ मजदूरी।
८ रचना।

उ०—नारी, सोवै है अपणै घर, साईं रै साथ सुहाणी है। नारी है विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहाणी है।
—फरणीदांन बारहठ

९ देखो 'विद्या' (रू भे)
१० देखो 'विदा' (रू भे)

उ०—अरि साम्हे हरि पग्गा आवै, जोध विधा अकबर दळ जाण। बिहू चौतीस भुळा क्रम वधण, भागा भाण-हरै भुळ भांण।
—गोपाळ मीसण

विधातनताका—स पु [स विद्योतन+ताका या विधा+तन+ताका] चन्द्रमा। (डि को)

विधाता—वि [स विधातृ] १ रचना करने वाला, सृष्टिकर्त्ता।

उ०—पैं'ली परमेसर याद करयो, 'हुं जगत पिता है जगदीसर। तू अग जग भाग विधाता है, तू ही बाहर तू ही भीतर।
—फरणीदान बारहठ

२ देने वाला, दाता।

उ०—गुर दयाळ दीन गुर दाता, गुर मवहुन कै ध्यान विधाता। गुर हैं दया पाल गुर देवा, या गुर की मिळ करीयै सेवा।
—अनुभववाणी

३ प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला।

स पु—१ ब्रह्मा। (ना मा, ह ना. मा)

उ०—१ अजसै कनक भूखण पहर अम्बर, कनक में विधाता मुकुट कीधो। लहर हिक सरण हित भभीखण रक लख, दान गढ लक अणसक दीधो। —र-ज प्र.

उ०—२ इण भात नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूखण विराजिया छै। जाणै इन्द्र-लोक री अपछरा, रूप री रभा, आसमान री ऊतरी पडी। चित्राम री पूतळी, विधाता हाथ सू समारी। —रा. सा. सं.

उ०—३ देवी मयख्खा माइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवींद सम्भु विधाता। देवी सिध्धि रै रूप नव-नाथ साथैं, देवी रिध्धि रै रूप धनराज हाथैं। —देवि

उ०—४ दसकधर आता बुध के दाता, वचन विधाता कैवाता। सो नाह सुहाता, परजळ गाता, उरले, लाता, मुरझाता।
—भगतमाळ

२ विष्णु।
३ शिव, शकर।
४ कामदेव।
५ विश्वकर्मा।
६ भृगु एव ख्याति के ससर्ग से उत्पन्न पुत्र।

वि वि—इसके दूसरे भाई का नाम धाता था। इन दोनो ने

नियति और आयति नामक मेरु पुत्रियो से विवाह किया था। विधाता व नियति के गर्भ से मृकण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। कमलो मे निवास करने वाली विष्णु पत्नी लक्ष्मी इनकी बहिन थी। मतान्तर से विधाता व नियति के गर्भ से प्राण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

७ प्रारब्ध, भाग्य।

८ पचचित नामक अग्नि का पिता व क्रिया का पति एक आदित्य, जो आपाढ या मार्गशीर्ष मास मे प्रकाशित होता है।

स स्त्री [स विधातृ] ९ मदिरा, शराब।

१० ब्रह्मा की पत्नी सरस्वतीरूपा।

रू भे —विधाता, वेहा, विद्याता, विद्यातानाथ, विधत, विधाता-नाथ, विधात्र, विधात्रा, विधात्री, विध्याता वेह वेहा।

विधातानाथ—देखो 'विधाता' (रू भे)

उ०—विधातानाथ वण लेख अवरी वरी, विया राघव करी अचळ वाता। हार ग्रीवा तणा देख झाला हियैं, हार वारग लिया रही हाता। —कल्याणसिंह झाला री गीत

विधात्र, विधात्रा, विधात्री—२ देखो 'विधाता' (रू भे)

उ०—१ श्रेणी न्याति नारद हवउ, उत्तम अपर विधात्र। जिह्वा जिमतु तिहा ऊळतु, भाजी भोजनन्पात्र। —मा का प्र.

उ०—कुंअरी कारण हीयडइ घरइ, थई ऊपराठी आंसू भरइ। कुंअरी तणउ अग खळभळइ, लिख्यउ विधात्रा तै किम टळइ। —का दे प्र

विधायक-वि [स विधाक] १ कानून बनाने वाला।

२ व्यवस्था करने वाला।

३ रचना करने वाला सृष्टि कर्त्ता।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हस देहनायक। —वेलि

स पु—विधान सभा का सदस्य।

रू भे—वधायक।

विधारा-सं स्त्री—दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलने वाली एक प्रकार की लता।

विधि-स. पु. [स विधि] १ काम करने की रीति, क्रिया या व्यवस्था।

उ०—१ आगळि पित मात रमती अगणि, काम विराम छिपाडण काज। लाजवती अगि एह लाज विधि, लाज करती आवै लाज। —वेलि

उ०—२ प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज फळ। —मे म

२ तरह, प्रकार भांति।

उ०—१ दिनो सेत वरदान तु, परमेसरि प्रस्ताव। राजान री रस कथा, विधि कहि वात वणाव। —रा सा स

उ०—२ दुविधि अन पल त्रिधा, साग पच मास धारण। गौ रस जुग विधि गिणित, मिस्ट गति ए कवि चारण। —रा सा स

उ०—३ आप इमी हित चित इकतारी, न्रपती कही आण सुजि नारी। देता द्रव करता जुध दावै, आणौ जेण तेणि विधि आवै। —सू प्र

३ आज्ञा, आदेश।

४ कार्यक्रम, प्रणाली, ढग, नियम, कायदा।

उ०—१ मिळि मत्री परधान मैं, विधि दक्खै विच्चार। जळ र-खण गढ जोधपुर, कै रक्खो जोवार। —गु. रू. व

उ०—२ तब रुक्मणीजी डावै पासै वैसाण्या। ज्यौं विधि छै त्यौं बोल वाचा लै। ज्यौं कही छै त्यौं करि नै विवाह पूरण कीयो। तिहि वेळा वेद का पठणहारा। मुंहमागी सु नवही निधि पाई। —वेलि टी

उ०—विधि सहित वधावै वाजिन्न वाजै, भिन भिन अभिन वाणि मुख भाखि। करै भगति राजान क्रिसन ची, र.जरमणि रुखमिणि ग्रह राखि।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा।

६ ढग।

उ०—सहिजि उल्लवइ सुर सरी, नीकन नेडी थाइ। वज्र तणी विधि अगमइ, कुसुम सरीखी काय। —मा कां प्र

७ धार्मिक विधान।

८ भेद, रहस्य।

उ०—ताहरा आ बोली, "न हु सासरै बहू, ना पीहर बेटी, अब विचाळै ऊभी छू। ताहरा औ बोलियो, 'ईयै री जाव कीसू ? यूं क्यु ऊभा ? मोनु थाहरै मन री विधि कहो।" —कावळो जोईयो नै तीडो खरळ री वात

९ सृष्टि, रचना।

१० सृष्टिकर्त्ता, विधाता, ब्रह्मा। (ह ना मा)

उ०—१ बोल नवाव सरस द्रढ वधं, सुत पितु हुत महा छळ सधं। यूं रिम सूरत मून प्रवधं, नेम लियौ विधि जेम निमधं। —रा रू

उ०—२ जोग नीद वस भये निरजन, गज्जै असुर पितामह गजन। आकृति विकट निकट चलि आयै, काढि दसन विधि ग्रसन धिकायै। —मे म.

उ०—३ नारी सोवै है अपणै घर, साईं रै साथ सुहाणी है। नारी है विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहाणी है।
—करणीदान बारहठ

११ भाग्य, प्रारब्ध।
१२ वैद्य, हकीम।
१३ विष्णु का नामान्तर।
१४ विधान, नियम।

उ०—१ उरदेव समरथ एक, इतपात पेख अनेक। असहाय थान आपार, विधि भरम क्रम विसतार। —रा रू

उ०—२ करता अरु अकरता तिरगुण, खग ब्रह्म माई सगुणनिरगुण। विधि निखेध ग्वगम होई, सब्द ब्रह्म द्रस्टा निज सोई।
—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ विधि निखेध करम नहिं क्रिया, बुद्धि उगत थकाणी। संत सुखराम परम प्रकासी, आपी कू आप पिछाणी।
—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ मयणा कहै कर जोडि नै,भगवत्! पूछू तुझ, ऊजमणा नी विधि कह्यौ, समझावीनैं मुझ। मुनि कहै सांभळ स्नाविका, एह नी विधि छै भुरि,नाम मात्र तुझ नै कहू,पामिस सुख भरपूरि।
—स्रीपाल रास

१५ कानून, कायदा।
१६ साहित्य मे एक अर्थलंकार।
१७ व्याकरण में किसी को कुछ करने के लिए दी गई आज्ञा का स्वरूप।
१८ पीला।* (डिं को)
१९ श्वेत।* (डिं को)
२० देखो विध' (रू भे)
२१ देखो 'विधु' (रू भे)

रू भे —विद्ध, विध, विधि, विहि, अघी, विद्धि, विध्य विह।

विधिअक–स पु. [स. विधि+अक] प्रारब्ध, भाग्य।
रू भे —विधअक।

विधिकर–स. पु.—चाकर, नौकर, सेवक। (अ मा, ह ना मा.)
रू भे —विधकर।

विधिग, विधिग्य–स पु [स. विधिज्ञ] शास्त्रोक्त एव विधि के विधान को जानने वाला, पडित। (ह ना मा)

विधिनयण–स पु [स विधिनयन] सूरज, सूर्य। (ह. ना मा)
रू भे. –विधनयण।

विधिपाट–स पु [स] मृदंग के चार वर्णों मे से एक।
वि वि.—इसके चारो वर्णों के नाम-पाट, विधिपाट, कूटपाट, और खडपाट है।

विधिपाठक–स पु [स]शास्त्ररीति का पाठ करने वाला या बताने वाला।
उ०—विधिपाठक सुक सारस रस वध्यक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार। —वेलि
२ आधुनिक कानून का अध्ययन करने वाला या कानून बताने वाला, वकील।

विधिपुत्र–स पु [स विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि।

विधिपुर, विधिपुरी–स पु. [स विधि+पुरी] ब्रह्मलोक।

विधिपूजा–स. स्त्री [सं] धन प्राप्ति हेतु पौष मास की शुक्ल पक्ष की द्वितिया को की जाने वाली ब्रह्मा की पूजा, नक्त व्रत।

विधिभेद–स. पु [स विधि+भेद] साहित्य मे उपमा-अलकार का एक दोष विशेष जो उपमेय और उपमान के धर्म, गुण आदि का मेल ठीक नही बैठने पर माना जाता है।

विधिरांणी, विधिरांनी–स. स्त्री [स. विधिरानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिलोक–स. पु. [स विधि+लोक] ब्रह्मलोक, मत्यलोक।

विधिवत–क्रि वि. [स विधिवत्] उचित पद्धति के अनुसार, विधिपूर्वक।
रू भे.—विधवित।

विधिवदन–स पु [स] चार की सख्या।*

विधिवधू–स. स्त्री [स. विधि+वधू] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवाहन–स. पु [स विधि+वाहनम्] ब्रह्मा की सवारी, हस।

विधिसार–स पु —बिन्दुमार नामक राजा, जो क्षेत्रज राजा और मतान्तर से क्षत्रोजस् राजा का पुत्र था।

विधी—१ देखो 'विधि' (रू भे.)
२ देखो 'विधु' (रू. भे) (अ मा)

विधुसणी, विधुसवौ—देखो 'विधसणी, विधूंसवौ' (रू भे.)
विधुंसणहार, हारौ (हारी), विधुंसणियौ—वि०।
विधु सिओडौ, विधु सियोडौ, विधु स्योडौ—भू० का० कृ०।
विधु सीजणौ, विधु सीजवौ—कर्म वा०।

विधु सियोडौ—देखो 'विधू सियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. विधु सियोडी)

विधु–स. पु [स] १ चन्द्र, चन्द्रमा। (नां. मा, ना डिं. को)
उ०—१ अमरत दध नह तिम अधर, विधु यिमरत न वखाण। कै जन अजरामर करण, जस हर यिमरत जांण। —र ज प्र.

उ०—२ विधु झळमळ मणि वास, त्रिय त्रिपुरारि तुभ्यौनम।
—रामरासो

२ ब्रह्मा।
३ विष्णु।
४ ब्राह्मण।
५ एक राक्षस का नाम।
स स्त्री. [स वधु] ६ नवविवाहित दुल्हन।
रू भे—विधु विध, विधि, विधी, विधू।

विधुक्रांत—स पु [स.] सगीत का एक ताल।

विधुत—देखो 'विद्युत' (रू भे) (अ. मा)

विधुतुद—सं पु [स] राहु का एक नामान्तर।

विधुप्रिया—स स्त्री [स] चन्द्रमा की स्त्री, रोहिणी।

विधुम—स पु [स] अष्टवसुओ मे से एक वसु जो अलवुसा का पति था।

विधुर—स पु [स] कष्ट, दुख। (अ मा.)
वि.—१ व्याकुल, दुखी।
२ वह जिसकी पत्नी का देहान्त हो गया हो।
रू भे—विधुर।

विधुरा—स स्त्री [स] कानो के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि।

विधुवदनी—स स्त्री यौ. [स विधु+वदनी] चद्रमुखी, सुन्दर-मुख वाली स्त्री।

विधूस—देखो 'विध्वस' (रू भे)

उ०—१ चावदतदीह अगा दीह समा जूझ लाग वाळै, नरा ताळै सामध्रमी तणी साची नेम। क्रोध वाळै रूप गनीमाण री विधूस कीधौ, 'जोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम। —बद्रीदास खिड़ियौ
उ०—२ वारधीस-गात जौम गाळिया त्रिकूट वासी, राजचीळ जाळिया तारखी तेज रूस। कोपखी फुलेसा इद्र ढाळिया पहाड काळा, वीर 'सिवा' वाळै सत्रा राळिया विधूस। —हुकमीचद खिड़ियौ

विधूसण—स पु [स विध्वसन] नाश, सहार।
उ०—ज्या प्रतपाळण हात निज, वहा रुखवाळण आप। कवण विधूसण कर सकै, तौ जै सरण 'प्रताप'।
—जैतदान बारहठ
रू भे—विधूसण, विधूसण, विद्धसण, विधसण, विध्वसण।

विधूसणौ, विधूसबौ—क्रि स [स विध्वसनम्] १ नाश करना, विध्वस करना।
उ०—१ वासठि हजार फौजा रा भाजणहार। छ खड खुरसाण रा विधूसणहार। मैंमत हाथिआ रा मारणहार। पातिसाहा रा विभाडणहार। पातिसाहा रा पडिगाहण। —र. वचनिका

उ०—२ सू मघ जेठ कळाधर सारी, आयौ रवि ज्यौ किरण प्रकारी। पड कोपियौ किना धार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूसण। —रा. रू
२ मारना, सहार करना।
उ०—१ सारा मोहर दुजौ 'सवळावत', रिण गज घडा विधूसण रावत। सुत 'जालम' दोनू अडसाळा, 'सूजौ' 'अनौ' 'विनौ' 'सिव' ज्वाळा। —रा. रू
उ०—२ पातल घड पतसाह री, प्रेम विधूंसी प्राण। जाण चढी कर वदरा, पोथी वेद पुराण। —महाराज मानसिंह
उ०—३ ओपम तिका भमता अच्छर, पमगा जाण फेर आई पर। जग छत्रदळा विधूंसै 'चद' जुडि, महिपुडि भार गया अहि फुण मुडि। —सू प्र.
३ तोडना, भग करना।
उ०—सगै केहर राम रै, मिळियौ जगै भीम। 'सवळाणी' सोवा तणी, सार विधूसै सीम। —रा. रू
४ लूट-खसोट करना।
उ०—विधूस्यौ देस किया सहि चक्कि, कमध्ध न दिट्ठा मेच्छ कटक्कि। महम्मद मारण मोटिममल्ल, ढढोलण ढिल्लिड श्रेकम-ढल्ल। —राउ जैतसी री रासौ
५ वर्बाद करना, तहस-नहस करना।
उ०—पान विधूंस्या रसपियौ, सुख पायौ इण डाळ। तुम जळौ'र हम उड चलै, जीणौ कितेक काळ। —अग्यात
६ रति क्रीडा करना, मैथुन करना।
विधूसणहार, हारौ (हारी), विधूंसणियौ—वि०।
विधूंसिश्रोडौ, विधूसियोडौ, विधूंस्योडौ—भू० का० कृ०।
विधूंसीजणौ, विधूंसीजबौ—कर्म वा०।
विधसणौ, विधसबौ, विधूसणौ, विधूंसबौ, विधूसणौ, विधूसबौ, बीधूसणौ, बीधूसबौ, बीधूसणौ, बीधूसबौ, विधसणौ, विधसबौ, विधासणौ, विधासबौ, विधुसणौ, विधुंसबौ, विधूसणौ, विधूसबौ, विध्वसणौ, विध्वसबौ—रू० भे०।

विधूंसियोडौ—भू का कृ—१ नाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ. २ मारा हुआ, सहार किया हुआ २ तोडा हुआ, भग किया हुआ ४ लूट-खसोट किया हुआ, ५ बरबाद किया हुआ, तहस-नहस किया हुआ ६ सभोग किया हुआ।
(स्त्री विधूसियोडी)

विधू—१ देखो 'विधु' (रू. भे) (ह ना मा.)
२ देखो 'वधु' (रू भे)
उ०—१ मन भाव स गारग्र वीर मढै, कमधा गुर ताम रिकाम

चढै। वरवावर पाबुग्र राज विधू सिणगारित सूरजमाल तिधू।
—पा प्र

विधूसणौ, विधूसबौ—देखो 'विधू सणौ, विधू सबौ' (रू भे)

उ०—१ जिम धायो जोगेस, वसुह दिख ज्याग विधूसण। जिम धायो ग्रह बाण, पत्थ गो ग्रह छाडावण। —गु. रू व

उ०—२ बाजे बकी रोड कै भ्रखाडै हथो खासगाड़ा, जगी होदां सूधा कै पनागा पाडै जूथ। जोम भ्राडे लागो चोडै घाडै भाडै विजूजळा, विधूसै बिभाडै ताडै गनीमा विरूथ। —हुकमीचद खिडियो

उ०—३ दिली साहा भजणी गजणौ दिलो लाग दावै, टाळै न को जीव लागा बादोवाद टेक। केका घडा विधूसै कवाणा चिलै ग्रहै केवां, भ्रासगै भ्रनेका भ्रेहो भूरी वाघ हेक।
—किरपाराम कवियो

उ०—४ लोयणा पळाका नग्गा सावळा भळाका लेती, सुढगा भ्रोयणा बाजा पाखरा सानैत। चोर भ्रगा पीन भ्रगा नीसांण मेघ घडा चगी, विधूसै पिलगा चा भ्रगा 'चद' रो वानैत।
—राव देवीसिंघ सेखावत री गीत

उ० — ५ रीभ रीभ हूरा बरा वारगा रम्माडै रगा, जोगणी भ्रम्माडै जगा जम्माडै स जूथ। तेग भ्राडै लागो चोडै घाडै खळा भाडै तू ही, बीभाडै विधूसै पाडै पट्ठाणा बरूथ। —हुकमीचद खिडियो

विधूसणहार, हारौ (हारी), विधूसणियौ—वि०।
विधूसिग्रोडौ, विधूसियोडौ विधूस्योडौ—भू० का० कृ०।
विधूसीजणौ विधूसीजबौ —कर्म वा०।

विधूसियोडौ—देखो 'विधू सियोडौ' (रू भे)
(स्त्री विधूसियोडी)

विधेय—वि [स] १ जिसका करना उचित हो, विधान के योग्य, कर्त्तव्य।
२ जिसे जानने का विधान हो।
३ भ्राज्ञा के वशीभूत, भ्राज्ञापालक।
४ व्याकरणानुसार वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध मे कुछ कहा जाय।
५ योग्य। (व भा.)
६ प्रेयसी के द्वारा प्रिय के मान-मोचनार्थ किये जाने वाले दो उपचार विशेष, जिसमे उपेक्षा, धृष्टता, भय, हर्ष भ्रादि दिखला कर प्रकारान्तर से भ्रनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है। (साहित्य)
रू भे —विधेय।

विधेयक—स. पु [स विधेय+कन्] विधान बनाने वाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला विधान या कानून का प्रस्तावित रूप।
रू. भे —वधायक।

विधेयकरम—स पु [स विधेय+कर्म] १ उचित कार्य, कर्त्तव्य।
२ नियमपूर्वक कार्य, वैधानिक कार्य।
३ शास्त्रोक्त नियमानुसार कर्म।
उ०—दोही सहोदरा एक नदी रै नीर उचित जळ देगि सायकाळ रो विधियकरम करण पाळा ही चलाया। —व भा.

विधेयाविमरस—स पु [स विधेय+अविमर्श] साहित्य मे, विधेय अंश को अप्रधान अंग प्राप्त होने पर उत्पन्न होने वाला वाक्य दोष।

विधोगत, विधोगति—स पु —१ ढग, तरह, प्रकार।
उ०—याचिग्रा जिकै इतरा विचार, समझै लगरत्ति समझदार। प्रतातार कहां साहा प्रकार, हुवि सुणौ विधोगति सुणणहार।
—स पि.

२ विधिपूर्वक, नियमपूर्वक।
उ० —१ पुत्र जिणिइ जे जे हूइ, ते परि सघली कीद्ध। कोडि भरित कुरगदत्त, दान विधोगति दीद्ध। —मा. कां प्र
उ० —२ प्रद्धपणउ गणि व्यासनु माधव महीपति वासि। कथा विनोद विधोगति रीझवितु गुण-रासि। —मा कां प्र.
उ० —३ कभित घित भ्रादर करी, भूप करइ भ्रभिवाद। वलतु दीइ विधोगतिइ, माधव भ्रासीरवाद। —मा. कां प्र.
उ० —४ वैध विधोगति जे लहइ, ते ते करइ उपाय। काचा सोना कापीइ, रजवीइ रस राय। —मा कां प्र.

विधोरणौ, विधोरबौ—क्रि भ्र —मिट जाना, मिटना।
उ०—भ्रातर पिय रै नाम कै, लिग्गे कळेजा माहि। हरती पाणी ना पिळ, मतहि विधोरा जाहि। —जलाल-बूबना री बात
विधोरणहार, हारौ (हारी), विधोरणियौ—वि०।
विधोरिग्रोडौ, विधोरियोडौ, विधोरयोडौ—भू० का० कृ०।
विधोरीजणौ, विधोरीजबौ—भाव वा०।

विधोरियोडौ—भू का कृ —मिटा हुआ।
(स्त्री विधोरियोडी)

विधोविध, विधौविध—क्रि वि.—१ विविध प्रकार से, भिन्न-भिन्न प्रकार से।
उ०—१ राखू नह भ्राद खत्री ध्रमरीत, सतीसत छोड मे कूंता, सीत। विधोविध धूहड दाख वचन, मेलै नह चाल राणी वडमन।
—गो. रू.
उ०—२ विधोविध दीठो माय विभूत, घुताई छोड परी सब धूत। माहिलो ठाकुर लाग्रो माय, पुजावै भ्रापोभ्राप ही पांय। —ह. र.
२ यथाविधि, विधिवत्।

३ यथार्थ ।

रू भे —विधोविध ।

विध्य—देखो 'विधि' (रू भे)

उ०—तेहनूं रूप तें तुह ज खरू, जु थाइ तुम्ह पटराणी । ब्रह्मा विध्य नु स्रम थाइ साचु, चतुरपणि रहि पाणी । —नळल्यान

विध्यान—देखो 'विधान' (रू भे)

उ०—खट भासा नव व्याकरन, विद्या वेद विध्यान । हरीया अच्छर एक विन, सब ही थोथा ग्यान । —अनुभववाणी

विध्या—देखो 'विद्या' (रू भे.)

उ०—भाण तेजगीरा हीरा विध्या मेघा जैं भाखर, जाण मछन्द्राणी जोग मत्ती री बोधाण जो भार । जम्मीरा जोखीरा वीरा वीरभद्र जेम, जोयजो हम्मीरा ग्रेम 'खेम' री जोधार । —हुकमीचद खिड़ियो

विध्याता—देखो विधाता' (रू भे)

उ०—नैसध नर नि जु तूं नारी, सरखी सरखी जोड । नही तरि विध्यातानि लागि, रूप रच्यानी खोड । —नळाख्यान

विध्रत, विध्रति–स पु [स विधृति] एक सूर्यवंशीय राजा, जो खगन का पुत्र और हरिण्यनाभ का पिता था ।

उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तैं सुत विध्रत नरेसं उग्र तप । सुत जय हरिणनाभ सुभियाणं, पुन्न न्रप जैं सुत इद्र प्रमाणं । —सू प्र

२ अभूतरजस् देवों मे से एक देवता ।

स स्त्री.—३ वैधृति नामक देवता समूह की माता ।

विध्रम—देखो 'विधरम्म (रू भे)

विध्रमी—देखो 'विधरम्मी (रू भे)

विध्रम्म—देखो विधरम्म' (रू भे)

विध्रम्मी—देखो 'विधरम्मी (रू भे.)

विध्वस–स पु [स [१ विनाश, नाश ।

उ०—वहै जु वाट वाट मे पिता पिता महा वदं, सुखी सुवाट तैं सदा दुखी दुवाट मैं दहं सरीर समकार सार वीर छीर सैं सनैं, विध्वस वेरि वस को प्रससनीय तैं यनैं । —ऊ का

२ तहस-नहस, बर्बाद ।

३ सहार, नाश ।

रू भे —विध्वम, भस विद्धस, विधस, विधूंस ।

विध्वसक–वि. [स] १ विनाश करने वाला, नाश करने वाला ।

२ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

३ सहार करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला ।

रू. भे —विधसक ।

विध्वसण—देखो 'विधूसण' (रू. भे)

विध्वसणो–वि — (स्त्री विध्वसणी) १ नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सदन पडन विध्वसणीए, जतन करता जाय । कुण जाणें पेहली पछे ए, दो अनुमत सुख दाय । —जयवाणी

२ मरने वाला ।

३ तहस-नहस होने वाला, बर्बाद होने वाला ।

४ नाश करने वाला, सहार करने वाला, मारने वाला ।

५ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

विध्वसणो विध्वसबौ—देखो 'विधूसणौ, विधूंसबौ' (रू भे)

उ०—१ माहो माही नगर विध्वंस्या, पाडव दवदत राय जी । मुनि दवदत इटालै मारयो, कौरव न तज्यो व रवाय जी । —स कु

उ०—२ ताहरा वडी फोज कर मालदेजी आया हीज । गाम गगा-रडै आय डेग किया । फोज च्यारू ही तरफ दोडी छै । मेहतै री रैत लोग खसीजै छै । देस मारीजै छै । देस विध्वसीजै छै । —नैणसी

विध्वसणहार, हारौ (हारी), विध्वसणियौ—वि० ।

विध्वसिओडो, विध्वसियोडो, विध्वस्योडो—भू० का० कृ० ।

विध्वसीजणो, विध्वसीजबौ—कर्म वा० ।

विध्वसियोडो—देखो 'विधूसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विध्वसियोडी)

विध्वस्त–वि [स] १ नाश हुवा या किया हुआ ।

२ सहार हुवा या किया हुआ, मरा या मारा हुआ ।

३ तहस-नहस हुवा या किया हुआ, बर्बाद हुवा या किया हुआ ।

विनत—देखो 'वनिता' (रू भे)

उ०—भणीजे र जसोमति माता, बलिभ्भद्र भाई भुजाळो । विनत सिया जाणिजै, नद पिता धणी ब्रम्ह वाळो । —पिं प्र

विन—देखो 'विना' (रू भे)

उ०—जन हरीदास हरि सू कहै, तुम विन तन छीजै । 'प्रेम' पियाला पाय करि, अपणा करि लीजै । —ह. पु वा.

उ०—२ जोवनिया री जोरी छै जी म्हारा राज, नैण भळक्यो नेहरी तोरी । यारै मिळण विन जी म्हारी दोरी, रसराज थैं मत म्हा सु दिल मत चोरी । —रसीलैराज रा गीत

उ०—३ प्रथम सेव गुरुदेव की, पीछै हरि की सेव । जनहरीया गुरुदेव विन, भगति न उपजै भेव । —अनुभववाणी

उ०—४ नाव लीया गुण ना मिट्या, तिवर न भागा तेज। हरीया ग्यान विचार विन, रही जेज की जेज। —अनुभववाणी

विनउ—देखो 'विनय' (रू. भे)

उ०—कूझा, घउ नइ पग्वडो, थाकउ विनउ वहेति। सायर लघी प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि। —ढो मा.

विनडणौ, विनडबौ–क्रि अ.—१ विनम्र होना।

उ०—विरचै नही पदम विनडतां, घणी वात जस भोम घणी। दे सासण पूठेचा देवै, घर जगळ जागळू-धणी। —द. दा.

२ देखो 'विन्नडणौ, विन्नडबौ' (रू. भे.)

विनडणहार, हारौ (हारी), विनडणियौ—वि०।

विनडिग्रोडौ, विनडियोडौ, विनडयोडौ—भू० का० कृ०।

विनडीजणौ, विनडीजबौ—भाव वा०।

विनडणौ, विनडबौ, विनडणौ, विनडबौ—रू० भे०।

विनडियोडौ-भू का कृ—१ विनम्र हुवा हुवा।

२ देखो विन्नडियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विनडियोडी)

विनडणौ, विनडबौ–क्रि अ—१ दुख देना, कष्ट देना।

उ०—१ बालउ ज माय सुझ वयु कह्यउ, अवर राय रखउ जीउ। सुलताण सेन विनडउ नही, तब रै माय फूटइ हीउ। —प. च चौ.

उ०—२ अनेकि परिछइ तै विनडत, दीणवयण जीव विलवत। नरग तणां दुक्ख अनी निहालि, तै मेल्हइ करवत कपालि।

—वस्तिग

२ वेप बदलना।

उ०—कवण तउ कवण भूपति राउ, कवण नामु कवण भूपति जाउ। कवण काजि विनडिउ तइ सयर, कवण भूपति सिउ तुझ वयर। —सालिसूरि

३ देखो विनडणौ विनडबौ' (रू भे)

४ देखो 'विन्नडणौ, विन्नडबौ' (रू भे)

विनडणहार, हारौ (हारी), विनडणियौ—वि०।

विनडिग्रोडौ, विनडियोडौ, विनड्योडौ—भू० का० कृ०।

विनडीजणौ, विनडीजबौ—भाव वा०।

विनडियोडौ-भू का कृ—१ दुख दिया हुग्रा, कष्ट दिया हुग्रा

२ वेप बदला हुग्रा।

३ देखो 'विनडियोडौ' (रू भे)

४ देखो विन्नडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विनडियोडी)

विनत-स. पु [स] १ एक बन्दर का नाम, जो सुग्रीव की सेना मे सेनापति था।

वि. वि.—यह सीता की खोज हेतु पूर्व दिशा की ओर गया था। इसके पिता का नाम श्वेत था। यह स्वय पर्वताकार था। इसकी गर्जना मेघ गर्जना के तुल्य थी और इसकी सेना मे साठ लाख वानर थे।

२ वैवस्त मनुपुत्र इल का पुत्र।

३ पुलह एव श्वेता के पुत्रो में से एक दिग्गज।

४ देखो 'विनीत' (रू. भे)

विनतक-स पु. [स] एक पर्वत का नाम।

विनतडी—देखो 'विनती' (अल्पा., रू भे.)

विनतवत-वि [स] विनय से युक्त, विनयवान्।

उ०—कहिज्यो अरथ हियाली केरउ, यहिलउ हियइ विमासी। विनतवत गुणवत तुम्हारी, नहि तउ थास्यइ हासी रे। —स कु

विनता-स स्त्री. [स] १ व्याधि लाने वाली एक राक्षसी।

२ अशोक वाटिका मे, रावण द्वारा, सीता को समझाने हेतु नियुक्त एक राक्षसी।

३ प्राचेतस दक्ष प्रजापति व उसकी पत्नी असिक्नी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्री जो अरिष्टनेमी कश्यप ऋषि की पत्नी थी और पक्षियों की माता थी।

वि वि—कश्यऋषि ने इसे वरदान दिया था कि तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होगे जो तुम्हारी सौत कद्रु के नाग पुत्रो से भी बलशाली होगे। इसी वरदान के फलस्वरूप इस के गरुड व अरुण नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। ये दोनों पुत्र अण्डो से उत्पन्न हुए थे। एक अण्डा समय से पूर्व फूट जाने के कारण आधे शरीर का पुत्र उत्पन्न हुग्रा था जो अरुण था। इसी कारण से अरुण ने इसे अपनी सौत की पाच सौ वर्षों तक दासी रहने का शाप दिया। इस शाप से गरुड स्वर्ग से अमृत लाकर मुक्त किया था। गरुड व अरुण के सिवा इसके अरिष्टनेमि तार्क्ष्य व आरुणि नाम दो पुत्र व छत्तीस पुत्रियां थी।

[स वनिता] ४ स्त्री, औरत। (डि. को, ह ना मा)

उ०—१ वचन विनता उच्चरि रै, विहग तूं विरी थयु। गुण कह्यां नलराय निभावमनउ ताहा गयु। —नळाख्यान

५ स्त्री, पत्नी।

६ प्रेमपात्री, स्त्री।

रू. भे.—विनिता, विनिया, विनीता।

विनताक, विनताग–स पु [स' वृन्ताकि] एक प्रकार का शाक, बैंगन।

रू भे—बिनताक, बिनताग।

विनतासुत, विनतासुतु–स. पु [स.] विनता के पुत्र गरुड व अरुण।

रू भे—विनतासुत, विनितासुत।

विनतस्व—देखो विनत' (रू. भे) (२)

विनति, विनती– स स्त्री [स विनति] १ अनुनय विनय, प्रार्थना।

उ०—सत्तनाराण सिवरियै, मिवरा सदा सहाय। ब्रह्म सुता सुं विनती, अक्षर द्यो समझाय। —अग्यात

२ नम्रता, विनम्रता।

रू. भे —विनती, वीणती, वीनती।

अल्पा —विनतडी

विनम्र–वि. [स] नम्रता से युक्त, नम्र।

विनय–स स्त्री. [स. विनय] १ नम्रता, विनम्रता।

२ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

३ ७२ कलाओं में से एक कला। ४ शील, सतीत्व। ५ शिष्टोचित व्यवहार। ६ जितेन्द्रिय पुरुष।

७ गुरु आदि पूज्य पुरुषों का भक्ति से अभ्युत्थानादि के द्वारा आदर-सत्कार देने की क्रिया। (जैन)

रू भे —वीन, विणय, विनउ, विना, विनै।

विनयवत–वि [स] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।

उ०–१ जग माहे सुभद्रा सती रे, मती रे सिरोमणि जाण। विनयवत स्रावक सुणउ जी, सील रयण गुण खाण। —स कु

उ०—२ तास सीस प्रति दीपता रे, विनयवत जसवत। आचारिज चडती कला रे, स्री जिनसिंघ सूरि महतो रे। —स कु

उ०—३ तसु बधव डुंगरसी तै पण दीपतउ रे, भागचद कुल भाण। विनयवत गुणवत सुभागी सेहरउ रे, वड दाता गुण जाण। —प च चौ

विनयवान-वि [स विनयवान] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।

विनयशील–वि [स विनयशील] विनयवान, विनम्रता से युक्त, विनीत।

विनयी–वि [सं विनयिन्] विनम्रता से युक्त विनयशील, विनीत।

विनयोक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू भे)

विनरावन, विनराविन—देखो 'व्र दावन' (रू भे)

विनवणी, विनववौ–क्रि. स —विनय करना, प्रार्थना करना।

विनवणहार, हारौ (हारी), विनवणियौ—वि०।

विनविश्रोडो, विनवियोडो, विनव्योडो—भू० का० कृ०।

विनवीजणौ, विनवीजवौ—कर्म वा०।

विनवणौ, विनववौ, वीनवणौ, वीनववौ—रू० भे०।

विनवियोडो–भू. का कृ.—विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ। (स्त्री विनवियोडी)

विनस–स पु —सरस्वती के अदृश्य रहने का स्थान, जो पुण्य तीर्थ माना जाता है।

विनसण–स पु [स] १ विनाश वर्बादी।

२ सहार।

विनसणौ–वि.—विनष्ट होने वाला, बर्बाद होने वाला, नाशवान्।

विनसणौ, विनसवौ–क्रि. अ —१ विनाश होना, नष्ट होना, मिट जाना।

उ०—१ जै उपज्या सो विनस है, जै दीसै सो जाइ। दादू निरगुण राम जप, निस्चल चित्त लगाइ। —दादूवाणी

उ०—२ तन तौ राख्यौ ना रहै, जतन करता जाय। यु हरीया पाणी ओस का, विनसत वार न लाय। —अनुभववाणी

उ०—३ सबद संत का आगिला, हसती का सा दत। ताग न टूटै भरम का, मै देही विनसत। —अनुभववाणी

२ सहार होना, मरना।

३ तहस-नहस होना, बर्बाद होना।

विनसणहार, हारौ (हारी) विनसणियौ—वि०।

विनसिओडो, विनसियोडो, विनस्योडो—भू० का० कृ०।

विनसीजणौ, विनसीजवौ—भाव वा०।

विनसणौ, विनसवौ—रू० भे०।

विनसति, विनसती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे)

उ०—जनहरीया उन देसडै, बारै मास बसत। सदा फळंगी विनसती विलव्या जीव निचत। —अनुभववाणी

विनसाडणौ, विनसाडबौ—देखो 'विनसाणौ, विनसावौ' (रू भे)

विनसाडणहार, हारौ (हारी), विनसाडणियौ—वि०।

विनसाडिओडो, विनसाडियोडो, विनसाड्योडो—भू० का० कृ०।

विनसाडीजणौ, विनसाडीजवौ—कर्म वा०।

विनसाडियोडो—देखो 'विनसायोडो' (रू भे)

(स्त्री विनसाडियोडी)

विनसाणौ, विनसावौ–क्रि स —१ नाश करना, नष्ट करना।

२ सहार करना, मारना।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

विनसाणहार, हारौ (हारी), विनसाणियौ—वि०।

विनसायोडो—भू० का० कृ०।

विनसाईजणौ, विनसाईजवौ—कर्म वा०।

विनसाडणौ, विनसाडवौ, विनसाणौ, विनसावौ, विनसावणौ, विनसावबौ विनसाडणौ, विनसाडवौ, विनसावणौ, विनसावणौ—रू० भे०।

विनसायोडो–भू. का कृ —१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगाडा हुआ। २ सहार किया हुआ, मारा हुआ। ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ।

(स्त्री विनसायोडी)

विनसावणौ, विनसाववौ—देखो 'विनसाणौ, विनसावौ' (रू भे)

विनसावणहार, हारौ (हारी) विनसावणियौ—वि०।

विनसाविओडो, विनसावियोडो, विनसाव्योडो—भू० का० कृ०।

विनसावीजणौ, विनसावीजवौ—कर्म वा०।

विनसावियोडो—देखो 'विनसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विनसावियोडी)

विनसियोडो–भू का कृ —१ विनाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ सहार हुवा हुआ, मरा हुआ । ३ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

(स्त्री. विनसियोडी)

विनस्ट–वि [सं विनष्ट] १ जो नाश को प्राप्त हो गया हो, नष्ट हुवा हुआ ।

२ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

३ मरा हुआ, मृत ।

४ विगडा हुआ, खराब हुवा हुआ ।

विनस्वर–वि [स विनश्वर] १ नष्ट होने वाला, नाशवान् ।

२ जो बहुत दिनों तक न रह सके, अनित्य ।

विनस्वरता–स स्त्री [स विनश्वरता] १ नाशवान् होने की अवस्था ।

२ अनित्यता, अचिरस्थायित्व ।

विना—देखो 'बिना' (रू भे)

उ०—१ जनहरीया साई बिनां, खाली खलक न कोय । एक घरे ताह एक है, दूज करै तांह दोय । —अनुभववाणी

उ०–२ कवण अखँवड विगर, प्रऊं सागर सिर सोभै । कवण विना सुनदेव, देव माया नह लोभै । —रा रू

उ०—३ अब तो मेरी बळ घट्यो, हट्यो मग को साथ । रावण-हारी को नही, राज विना रघनाथ । —गजउद्धार

उ०—४ सुर-तरवरा रूखा रा ओला ताकै छै । तरवरा रा पान झडिया छै । सु जाणै वस्त्र विना नागा डिगम्बरा सरीका नजर आवै छै । निवाण रा पाणी नीटिआ छै । —रा सा स.

विनाण, विनाणि, विनांणी—स पु —१ विचार ।

३ तरकीब, उपाय ।

४ चिह्न लक्षण ।

५ रूपक ।

६ व्याख्या, विवेचन ।

उ०—अकाळ ग्यान दरसी निज ब्रम कूं पहिचानै । भूत, भवस्त, वरतमान जुगति सौं जाणै । च्यार वेद नौ व्याकरण खट सासत्र के विनाण । पिंडत विद्या मैं पारावार जाणै नवदूण पुराण । —सू प्र.

७ विध्वम, नाश ।

उ०—धन लूट कीधी धाण, वधि नारनोळ विनाण । चडनयर रा परचड, दो नगर अै भुजदड । —सू प्र

८ रहस्य, भेद ।

उ०—परव्मोम घुसै जिकै आप प्राण, वडा जुद्ध रा बध जाणै विनाण । हणै मारि पाडै पखी वोम हूता, साहै चाळि सूं जागवै काळ सूता । —र. वचनिका

[स. विज्ञान] ६ ज्ञान, जानकारी ।

उ०—मछतुव जळमा तरै जी, वूडै काग पाहाण । पल जाजि गयणे फिरैजी, इण परै सहिज विनाण । —वृस्त

६ भेद, प्रकार ।

उ०—मुहरि अति लुघयि गुर मझि, वार चिम्रार विनांण । पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनाण । —ल पिं.

१० तरह, प्रकार ।

उ०—१ अग्रा खग झाट निराट अलग्ग, पडै वि वि जव पडै झडि पग्ग । पडै रिणि उच्छळि ग्रेम प्रवग, कुडा चढि जाणि विनांणि कुरग । —र. वचनिका

उ०—२ जिम जिम गुरु घटतौ जाइ, तिम तिम दोइ वधै लुघताइ । नाम जूजूयो एण विनांणि, ववतो अैसौं जि वखाणि । —ल पिं

वि —१ समान तुल्य ।

उ०—भुजा दुय च्यारि भुजा वळ भूप, रचै गजग्राह त्रियावर रूप । वहै खग सावण तात विनाण, कटै जरदाण जुवाण केकाण । —सू प्र

२ अद्‌भुत, अनोखा ।

[स वैज्ञानिक] ३ ज्ञानी, जानकार ।

उ०—सो सुख सुणिया सत विनाणी, विजळी चमकै बादळ गरजै, चढया अपूठा पाणी । —ह पु वा.

५ देखो 'वैनाणी' (रू भे)

उ०—१ रहमाण विनांणी हत्थ तै, भजण घडण ससार जग । सुरताण हुओ खुरसाण सिरि, खेडपती हुआ खडग । —गु रू व

उ०—२ कुण तेजमहाढ अणी काढावै, वाढाळा मुहि वाढ पडै । जिणसाल तियार करत जरादी, घाय विनांणिय लोह घडै ।

—गु. रू व

रू भे —बिनाण, विनाणी, बीनाण, बीनाणी, विनान, विन्नाण, विन्नाणी ।

विनान—देखो 'विनाण' (रू भे)

उ०—मैं जाण्यो मन एक था, मन का बोहत विनान । हरीया मन छिनछिन फिरै, डाळी डाळी पान । —अनुभववाणी

विनानी—देखो 'विन्यानी' (रू भे)

विनाम–वि.—जिसका कोई नाम न हो, विना नाम का ।

विना—१ देखो 'विना' (रू. भे)

उ०—पूछ्या विना पयपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी । वदन मत दिखाळै वस द्रोही वळै । —र. रू.

उ०—२ सरस तणी पसाव सोधिया, वयण विना बाखागण वग। "चूड" हरा आकास चित्रणी, खेडेचा तहरी खग।
—केसोदास गाडण

उ०—३ हिंदवाराव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा। गई स्रुग विवाणा वैस इद्र आगळी, वुही वारगना विना वींदा।
—महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—४ हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै। चावळ री चोथो हूँसो खावै। तवोळ विना खाधा आहारा विकार थावै। माडी मोडी कटारी री पडदडी समावै।
—रा सा. स

उ०—५ जसवत विना जिहान, पान चळ जाणै पवनै, कना केतु साकप, थया मन हिंदसथानै। घटै क्रिया वामणा, मिटै झालर परसादा, ईत प्रभा ऊपजै, निरख दुर रीत निसादा।
—रा रू

२ देखो 'विनय' (रू भे.)

उ०—तरा जगमाल दीठी, "हू उजर करू, गणो वासै साथ चाढै, वै कठै ही उतरिया होय तो काई कावाइत होय, "तरै जगमाल घणा विना सूं बोलियो "मानसिंघ दीवाण री चाकर छै म्हानु किसी उजर छै, जाणै सु धरती दीधाण नै, जाणै सु मानसिंघ नु दे। —नैणसी

विनाइक—देखो 'विनायक' (रू भे.)

उ०—१ लील विलास सुरा मा लाइकि, नियो पुलदर देव विनाइकि। सकर ना पिणि करा सलामा, गोविंद रा आदेस गुलामा।
—पी ग्र

उ०—२ हू मागा देवी हुयो, अविरळ वाणि उकत्ति। वळै विनाइक वीनवू, सिद्ध बुद्ध द्यो सुमत्ति। वहू विनाइक देवता, नमो विनाइक नाथ। तू सिद्धदायक रूप सुभ, तूं सतगुर ससिमाथ।
—पी ग्र

विनाई—देखो 'विना' (रू. भे)

उ०—राजी राव रक भूप, नारि ही पुरख राजी, भूठ सी विनाई वाजी, खुमी आप खाल मैं। सिन्यासी दुहा दत, जोगी आदिनाथ जानै, जती ही वखानै जैन, रता मता व्हाल मैं। —अनुभववाणी

विनाथ—वि [स] जिसका कोई रक्षक न हो, अनाथ।

स पु—वह बैल, जिसके नाथ न डाली गई हो।

विनादी—क्रि वि—आदि काल से।

उ०—वादमाह हूँत कहचो छोड जै इणानै वेधा, ऐ न छडै हिंदू धरम विनादी आफेकै। कहचो साज भाण नद पातवा छुडावो किसा। एक एक प्रती चहा माथो एक-एक।
—गोकळदास सक्तावत री गीत

विनायक—स पु [स विनायक] १ गणो के ईश व विघ्नविनाशक गणेश जी। (अ मा, ह ना. मा)

उ०—एक दतो महाबुद्धि सरव गुणो गणनायक। सरव सिद्धि करो देव, गवरी पुत्र विनायक। —अग्यात

वि वि—पुराणानुसार, विनायक चार प्रकार के होते हैं (१) दवढि विनायक, (२) कोण विनायक (३) हस्ती विनायक (४)सिन्दूर विनायक।

२ गरुड।

३ सिह, शेर आदि के समान मुखाकृति वाले शिवगणो का समूह जिसमें कुष्माड गजतुड, जयत और रुद्रगण समाविष्ट हैं।

४ कपडा बुनने का एक औजार। (जुलाहा)

५ सुथार, वढई।

६ विवाह अवसर पर कुम्भकार द्वारा लाई गई मिट्टी की बनी गणेश की मूर्ति।

७ विवाह आदि मागलिक शुभ अवसरो पर गणेश जी को सम्बोधित कर गाये जाने वाले गीत।

८ यज्ञोपवीत अथवा विवाह सस्कार के शुभ अवसर पर गृह शान्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ एव इस दिन किया जाने वाला भोज। (मा म)

उ०—विरध वधाई नाव समूरथ माख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा-पाठ निराठ, वरै ग्रनमाळा मोखी। जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोखी। —दसदेव

९ बौद्ध, आचार्य।

रू भे.—वणाक, विनाइक, बिनायक, विन्नायक, वणाक, विणायक, विनाइक, विन्यायक।

विनायकचतुरथी विनायकचोथ—स स्त्री [सं विनायकचतुर्थी] १ माघ मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, जिस दिन गणेशजी की पूजा की जाती है।

२ भादो मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

३ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

विनायकण—स स्त्री.—वढई जाति की स्त्री।

विनायकथाटियो, विनायकथाटो—देखो 'थाटियो' (जैतारण)

विनायकहेतु—स पु यौ [स] गरुडध्वज, श्रीकृष्ण।

विनायकियो—स पु—१ विवाह के समय दुल्हा के साथ रहने वाला दुल्हे का छोटा भाई।

२ देखो 'विनायक' (अल्पा, रू भे)

विनायिका—स स्त्री. [स] १ विनायक की पत्नी।

२ गरुड की पत्नी का नामान्तर।

विनास—स. पु [स विनाश] १ नाश, ध्वस।

२ विगाडने का भाव, विगाड।

३ हानि, नुकसान ।

४ कलह, झगडा ।

५ एक असुर, जो कश्यप एवं उसकी पत्नी काला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था एवं यह अपने अन्य भाईयो की तरह अस्त्र-शस्त्र विद्या मे यम के समान था ।

रू भे —वनाम, विणास, विनास, वणास, विरणास, विणासु ।

विनासक–वि. [स॰ विनाशक] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला । (प्रथा)

३ हानि, नुकसान या बिगाड करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासकारी–वि. [स विनाश+कारिन्] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, बिगाड करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासणो–वि [स विनाशनम्] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, या बिगाड करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासणौ, विनासबौ–क्रि स [विनाशनम्] १ नष्ट करना, ध्वस । करना, २ मारना, सहार करना ।

उ०–१ देस बिगाडयो राव री, फेर विनासी फौज । डर बैठा कासू हुवै, राजा लाग्या मोज । डाढाळा सूर री वात

उ०–२ आगै देखै तो छपरै हेठै पालणो राखीयो तीसु सीहणी आय सूंघावण लागी । ताहरा माता सादू दीठो । ताहरा कहै है सीहणी तै म्हारो बाळक विनासीयो । ताहरा सीहणी अळगी हुई ऊभी रही । ईय जाय टावर उरहो लीयो । पालणो भीला रै कांधै दीयो । आधा हालिया । पीछर गई उथ सुख सु रहे ।

—देवजी बगडवतां री वात

३ बिगाड करना, नुकसान करना ।

४ बुरा करना ।

५ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

विणासणहार, हारो (हारी), विणासणियौ—वि० ।

विणासिओडो विणासियोडो, विणास्योडो—भू० का० कृ० ।

विणासीजणौ, विणासीजबौ—कर्म वा० ।

विणासणौ, विणासबौ, विनासणौ, विनासबौ, वणासणौ, वणासबौ —रू० भे० ।

विनासियोडो–भू का कृ.—१ नष्ट किया हुआ, ध्वस किया हुआ २ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ नुकसान किया हुआ, बिगाड किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ, ५ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ

(स्त्री विनासियोडी)

विनासी–वि. [स विनाशिन्] १ नष्ट होने या करने वाला, विध्वस होने या करने वाला ।

२ मारने वाला, सहार करने वाला ।

३ बुरा करने वाला ।

४ बिगाड करने वाला, नुकसान करने वाला ।

५ मरने वाला, मिटने वाला, नाशवान् ।

६ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

७ मिटाने वाला, हटाने वाला ।

रू भे —विणासी ।

विनाह–स पु. [स.] कुए के मुख का ढकना ।

विनिग्रह–स पु [स] १ सयम, दमन प्रतिबध ।

२ बाधा, अवरोध ।

३ परस्पर-ईर्ष्या ।

विनिता—देखो 'विनता' (रू भे)

विनितासुत—देखो 'विनतासुत' (रू भे)

विनिद्र–स पु. [स.] १ वह व्यक्ति जिसे निंद्रा नही आती हो ।

२ निद्रित या मूर्छित व्यक्ति की निंद्रा या मूर्छा को दूर करने का एक अस्त्र विशेष ।

विनिपात–स पु [स] १ विनाश, ध्वस ।

२ अपमान, अनादर ।

३ मृत्यु ।

४ नाश, बर्बादी ।

५ नरक ।

६ कष्ट, पीडा ।

७ बडा कष्ट, या सकट पैदा करने वाली स्थिति ।

८ गर्भपात ।

विनिपातक–वि. [स] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

२ अपमान करने वाला, अनादर करने वाला ।

३ कष्ट उत्पन्न करने वाला ।

विनिमय–स पु [स] १ किसी एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेने का व्यवहार, दो वस्तुओ का एक दूसरी के बदले अदल-बदल ।

विनिया—देखो 'विनता (रू भे)

उ०—विडदसिंह उण देस विच, रीतविया राजद । सात सलामा नित सजै, विनिया अग्गा विंद । —जतीरासो

विनियुक्त–वि [स] १ लगा हुआ, नियुक्त ।

२ आदेशित ।

विनियोग–स पु [स] १ किसी वैदिक कृत्य मे मन्त्र का प्रयोग ।

२ व्यापार आदि मे पूंजी लगाना ।

३ त्याग ।

४ भक्त द्वारा इष्टदेव का ध्यान कर दायें हाथ मे लेकर मन्त्र बोल कर जमीन पर छोडा जाने वाला पानी जो पूजा करने हेतु बैठने के बाद सबसे पहले छोडा जाता है ।

विनियोजन–स पु [स] १ विनियोग करने की क्रिया ।

२ अर्पित करने की क्रिया, अर्पण ।

३ नियुक्ति ।

विनिहत, विनिहीत–स. पु [स विनिहत] १ देवप्रेरित या भाग्यदोष से आया हुआ कष्ट, या सकट ।

२ अपशकुन, बुरे शकुन ।

विनीत–वि [स.] १ जिसमे शिष्टता व नम्रता हो, शिष्ट, नम्र ।

२ जितेन्द्रिय, सयमी ।

३ प्रिय, मनोहर ।

४ गहण किया हुआ ।

स पु—१ उत्तम मनु का एक पुत्र ।

२ पुलस्त्य का प्रीति के गर्भ से उत्पन्न तीन पुत्रो मे से एक पुत्र ।

रू भे—विनीत, विनत ।

विनीतता–स स्त्री—विनीत होने का भाव, नम्रता ।

विनीता—देखो विनता' (रू भे)

विनूर–वि—कायर, भीरू ।

उ०– धारा रति घरहर, दळपळ डाल्हर, झटकै पै कर सीस झडै । वडडै घाइ वगतर, फाटै वडफर, रुकै विनूर रीठ पडै । —गु रू व

विनेत–स पु [स विनेतृ] १ आज्ञा, आदेश, हुक्म ।

२ सिखाने वाला, शिक्षक ।

३ दण्डविधान का निर्माण करने वाला ।

[स विज्ञप्ति] ४ सूचना ।

विनै–स स्त्री [स विनय] १ कृपा महरबानी ।

उ०—तीन लक्ष द्रब रोकडा, चचल उच्च पचीस । निपट विनै धारी निजर, नृपति निवारी रीस । —रा. रू

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—या साहिजादै आखियौ, सहित विनै हित संध । मेरै काज निवाह की, लाज कमधा कध । —रा रू

३ देखो विना' (रू भे)

उ०—विकट करो तीरथ वरत, धरा भेख कै धार । विनै नाम रघुवीर रै, परत न उतरै पार । —र् रू.

४ देखो 'विनै' (रू भे)

उ०—१ अठी राम रा सुभड नै सुभड रावण उठी, लक रै जोर-वर खेत लडवा । तीर सेना छूरा झीक तरवारिया, वाजिया विनै ही रम वरवा । —र रू

उ०—२ समघो ओरगसाह री, विनै मुगळ विसतार । महाराजा उण सू मिळै, आदर कियौ अपार । —रा. रू

विनैनी–स. स्त्री—विनम्रता, नम्रता ।

उ०—साख्यात देवागना पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गगा सरसती री अवतार बारह आभूखन विराजमान हुआ छै । आठै पोहर सोळ सिणगार किया रहै छै । —रा मा स

विनोक्त, विनोक्ति–सं पु [सं विनोक्ति] एक अलकार विशेष, जिसमे, किसी वस्तु के विना अशोभन या किसी के बिना शोभन कहा जाय यानि किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता का वर्णन किया जाय ।

रू. भे—विनयोक्ति, विन्योक्ति ।

विनोद–स पु [स विनोद] १ ऐसा कार्य जिसका प्रमुख उद्देश्य मन-बहलाव करना होता है ।

२ उक्त कार्य से होने वाला, मनबहलाव, आनन्द ।

३ हसी-मजाक ।

उ०—प्रधान मनोहर परिखत, सुभट स्रेणि, विनोदीया भा विनोद साहस सो बोलाना समूह, उचितवोलानी ओलि, कलावत नी क्रीडा-भूमि, कूबडानी कोडि, । —व. स

४ आनन्द, आल्हाद हर्ष, प्रसन्नता । (अ मा, ह. ना मा)

उ०—१ जळ जाळ माळ विमाळ नभ जुत, उरड झड अणपार ए । मिटि जळण धरणि विनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए । —रा रू

उ०—वहै वीजूजळ हद्द-विहद्द, नचत विनोद करत नारद्द । तमासै भाण हुओ रथ ताण, कहक्कह वीर हमै कतियाण । —गु रू व

उ०—कवितु विनोदिहि सिरिजय, सिरिजय सेहरसूरि जं । खेलइ तै अरह पद, सपद पामइ पूरि । —जयसेखर सूरि

५ उत्सुकता, उत्कण्ठा ।

६ खेल-क्रीडा, आमोद-प्रमोद ।

उ०—१ किही रै कांधै चढै, किही रा हाथ खेंचै, चपळता आसग-गिरी करवौ करै । सो लोग राजूखा री खुसामद रा पगा सहवौ करै । टावर नै किही कहै-सुणै नही । सगळा हाथा ऊपर विनोद करावौ करै । टावर लाड सूं वडौ अनीतौ ।

—सूरै-खीवै काधळौत री वात

उ०—२ उचित वोलानी ओलि, कलावतनी क्रीडाभूमि, कूवडानी कोडि, वामणाना विनोद, पुण्यवत रहइ प्रमोद, वयरीह विखाद, कविना कल्लोल, वादीनउ विवाद, वैदेसिक विलास । —व स

७ सोलह प्रकार के शृ गारो मे से एक प्रकार का शृ गार विशेष ।

(रा. सा स.)

८ एक प्रकार की राग विशेष । (सगीत)

उ०—भणत स्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । सभायची पटगय, वगंसरी विहुगय । —रा. रू.

९ गायन, संगीत ।

उ०—विनोद गीत नाद भेद, सद् घट झालरी, प्रसाद देव पुंजिहत, अविका हरीहरी । निसा जळत दीपजोत, मिंदर उजाळ ए । सदा सरव्वदा हुवन्त, जाण दीपमाळ ए । —गु. रू. व.

१० रतिक्रिया का एक आलिंगन विशेष । (कामशास्त्र)

रू. भे.—वणोद, वनोद, विणोद, विणोदि, विनोदन, विन्नोद ।

विनोदक-वि [स] विनोद करने वाला, खेल-क्रीडा करने वाला ।

विनोदन—देखो 'विनोद' (रू. भे)

विनोदित-वि [स] १ हर्षित, खुश, आल्हादयुक्त ।

२ हसी-मजाक किया हुआ ।

३ ऐसा कार्य किया हुआ, जिससे आनन्द उत्पन्न हो ।

४ विनोद शृगार से युक्त ।

विनोदी-वि० [स विनोदिन्] १ खुद का व दूसरो का मनवहलाव करने वाला ।

२ हसी-मजाक करने वाला ।

३ विनोद सम्बन्धी ।

४ आनन्द व हर्ष उत्पन्न करने वाला ।

५ खेल-क्रीडा करने वाला ।

६ विनोद शृगार करने वाला ।

७ गाने वाला, गायक ।

अल्पा —विनोदीयो ।

विनोदीयो—देखो 'विनोदी' (अल्पा , रू भे.)

उ०—प्रधान मनोहर परिजन, सुभट स्रेणि, विनोदीया ना विनोद, साहस सो वोन ना समूह, उचित वोलानी ओलि, कलावतनी क्रीडाभूमि, कूवडानी कोडि, वामणाना विनोद, पुण्यवन रहइ प्रमोद,······। —व स.

विन्नक-स पु [स. विन्नक] अगस्त्य का एक नामान्तर ।

विन्नडियोडौ-भू. का. कृ.—कष्ट दिया हुआ ।

विन्नवणा-स. स्त्री [स. विज्ञापना] काम वासना पूर्ण करने हेतु कामी पुरुष के सम्मुख अपना अभिप्राय प्रकट करने वाली स्त्री ।

वि. वि.—कामी पुरुष जिसके प्रति वह अपना अभिप्राय प्रकट करती है "विन्नवणा" कहलाता है । (जैन)

विन्नाण, विन्नाणि विन्नाणी—देखो 'विनाण' (रू भे)

उ०—१ पातसाह आळोज, मन्न विच्चार विमासै । बळ छळ दळ दक्खवै, पाण विन्नाण कळासै । —गु रू व

उ०—२ महिकर घेरौ सवळ, कियौ दखणाधि कटक्का । गढ दुरंग घेरियौ, प्रजा भागी परिचक्का । नकौ प्राण विन्नाण, नेस फीका खुरसाणी । गयणगण डोलियौ, सीम चपी सुरताणी । —गु रू. व.

उ०—३ लसण्णाण विन्नाण सन्नाण मेंह, कलाभि कलाभिरयुतान्‍स्मीय देह । मणुण्ण कला केलि रुवाणुगार, स्तुवै पारस्वनाथं गुण स्रेणि सार । —स कु.

उ०—४ "हरीया मन लागौ" एहनौ कन्या दोइ भणावियै, भणि वा अवसर एह रै । दोइ कन्या (भणावीयै) भणै, वालपणै सहु आवडै, नाण विन्नाण अछेह रै । —स्रीपाळ रास

उ०—५ पखी जिम विण पखडी, फोरी न सकै प्राण । प्रीतम दरीया मे पडयो, कीजै किसो विन्नाण । —स्रीपाळ रास

उ०—६ हिवे नाण विन्नान न सूजै, छाती धहडहड इम धूजै । अम्ह थी दादुर गुण जाण, पाणी सरिसा जसु प्राण ।

—स्रीपाळ रास

उ०—७ गरुउ गणइ न नात्र कुपात्र ज पात्र न जाण, स घरइ ए भक्ति न लीजइ ए भीजइ ए भक्ति विन्नाणि । —जयसेखर सूरि

विन्नोद - देखो 'विनोद' (रू भे)

उ०—किसा दीह आणद विन्नोद कीधा, लहै भूय आग्या वनोवास लीधा । जती राम साथै सिया वाम जोडै, तिका नाम लेता अघा ओघ तोडै । —सू प्र.

विन्यानी-वि. [स वैज्ञानिक] जानकार, ज्ञानी .(उ. र)

रू भे —विनानी ।

विन्यायक—देखो 'विनायक' (रू. भे)

उ०—तद घणा हरख कर नै ईया नूं नाळेर झलाया । सात दिन

रौ विन्यायक वैठौ। परणीया, घणा हरख-कोड कीया। दिन १५ राखीया। विदा किया। —पीठवै चारण री वात

विन्यायकौ—देखो 'विनायक' (अल्पा., रू भे)

विन्यास—स पु [स] १ स्थापित करने की क्रिया।

२ समूह, सग्रह।

३ यथास्थान रखने की क्रिया, सजावट।

४ जडने की क्रिया।

विन्योक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू भे)

विन्ह, विन्हइ, विन्है—१ देखो विनै' (रू भे)

उ०—१ माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हा सीख करेह। ऊन्हाळउ, वरखा विन्है, रहिया तुझ्झ सनेह। —ढो. मा

उ०—२ प्रेमौ 'अणद' अमायै पाणी अघवत सुद्धळि विन्है 'अमराणी'। 'माहव' तणौ 'विजौ' रण मोटा, कळहै ढाल थकौ नवकोटा। —रा. रू

उ०—सुतन 'सुजाण' 'अनौ' 'प्रिय' सभ्रम, 'अखौ' विन्है आया जम ओपम। 'अनै' तणौ करि कोप अकारौ, 'गजन' आवियौ चाळा-गारौ। —रा रू

उ०—४ 'ऊदौ' 'अनौ' विकट ऊदावत, जोड मोड दळ विन्है 'जगावत। 'रतन' जगावत वाकिम रातौ, 'राम' 'सुभावत' मेळ अरातौ। —रा रू

उ०—५ रिणमल 'कुभा विन्है रायगरिण घणौ चीतवै द्रोह घणा। फूटा लोह पछा फिटकारा, ताइवा राघव देव तणा।

—हरीसूर बारहठ

उ०—६ विन्है पख क्रस्ण सुकळ विधान, विन्है वपु अंग सुदक्षिण वाम। ब्रह्मा दक्षण अग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।

—राठौड वशावळी

२ देखो 'विना' (रू भे.)

विपचिका, विपची—स स्त्री [स] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो वीणा की तरह का होता है।

२ क्रीडा-खेल, आमोद-प्रमोद।

विप—देखो 'वपु' (रू. भे)

उ०—१ सेवगा दुखिया री कूक सुणी, काळवी असवार गौ दीपकणी। राखौ जद खावद लाज रहै, विप हुवा ऊपर वास वहै। —पा प्र

उ०—२ किलमापति भेंटै कारीगर, कारौ घाव निहाव कर। वाळ वाळ जुडियौ थारौ विप, पंवद आइस तणी पर।

—जगतसिंघ सिसोदिया रौ गीत

२ देखो 'विप्र' (रू भे.)

विपक्क—वि [स] १ पूर्ण रूप मे पका हुआ, परिपक्व।

२ पूर्ण उबला हुआ, रधा हुआ।

३ उन्नति की चर्मसीमा तक पहुँचा हुआ।

४ देखो 'विपक्ष' (रू. भे)

विपक्ख—देखो 'विपक्ष' (रू. भे)

विपक्खी—देखो 'विपक्षी' (रू भे.)

विपक्व—वि [स.] १ अच्छी तरह या पूर्ण रूप से पका हुआ।

२ अवपका या कच्चा।

स पु—एक देवता, जो मरीचिगर्भ देवताओ मे से गिने जाते हैं।

विपक्ष—वि. [स.] १ विरुद्ध, खिलाप प्रतिकूल।

२ उलटा, विपरीत।

स पु.—१ दूसरा पक्ष। २ विरोधी पक्ष।

रू भे.—विपक्ख, विपख, विपच्छ, विपक्क, विपक्ख, विपख, विपच्छ।

विपक्षी—स पु [स] १ दुश्मन, शत्रु।

२ दूसरे पक्ष का, विरोधी या प्रतिपक्षी व्यक्ति।

उ०—बलिस्ट धूम्र अक्ष की तुहीं विपक्ष नी, मई तुही महिख रक्त-बीज भक्षनी। निसुंभ शुभ चड मुड तू निकदनी,नमामि मात 'इंदरा' 'समद' नदनी। —मे. म.

वि—दूसरे पक्ष का, विरोधी पक्ष का।

रू भे—विपक्खी, विपच्छी, विपक्खी, विपख, विपखी, विपच्छ विपच्छी।

विपख—१ देखो 'विपक्ष' (रू भे)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

विपखी—स पु—१ अश्व, घोडा। (डिं ना मा.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे)

विपखणी—स स्त्री.—विरोधी की स्त्री।

वि—विरोधी पक्ष की, प्रतिद्वदिनी।

विपच्छ—१ देखो 'विपक्ष' (रू भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे.)

उ०—गनीम गड्ढ गव्वतीय गब्भ को गमावनी, जहान आन मान जोर सोर तें जमावनी। रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-वनी, लगे विपच्छ लच्छ पे भुजाग वच्छ भच्छनी। —ऊ का.

विपच्छी—देखो 'विपक्षी' (रू भे)

विपण—स पु [स. विपण] १ छोटा व्यापार।

२ विक्री।

विपणक—वि [स] क्रय-विक्रय करने वाला, व्यापार करने वाला, व्यापारी।

रू. भे.—विपराक ।

विपणन—स. स्त्री [स विपणनम्] क्रय-विक्रय करने की क्रिया, व्यापार करने की क्रिया ।

रू भे —बिपणन ।

विपणी—स स्त्री. [स [विपणी , विपणी] १ बाजार २ हाट, दुकान ।

३ व्यापार हेतु रखा हुआ माल ।

स पु॰ [स विपणिन्] ४ व्यापार करने वाला, व्यपारी ।

रू भे —बिपणी, वपणी ।

विपत, बिपता, विपति, विपती, विपत्त, विपत्ता, विपत्ति विपत्ती—स. स्त्री [स. विपत्ति] १ आपत्ति, सकट । (डि को)

उ०—१ सगा सनेही और नर, सुख में मिळै अनेक । विपत पड्या दुख वाटलै, सो लाखन मे अेक । —अग्यात

उ०—२ आगळ सुरग कपाट अघ, दोजग अगुओ देख । सपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेख । —वा. दा.

उ०—३ दूधा न्हासी, पुतरा फळसी, विपता वढसी, सुखडै रळसी । थारी काळी जीभ नै थोडी चाको, मूंढै सू सगा थोडो थूक नाखो । भळै इसो नावो कदै ही मूंढै सू मती काढचा । म्हानै की ही ना देया । बीन रै वाप कंयो । —दसदोख

उ०—४ नदी पार सपजै, पोत अठ खेवट पाया । विपति विलै हुय जाय, जेम घर सपत आया । —रा रू.

उ०—५ दिसा दिसान मान तोप माननीय की दगै, अडोळ चक्र नक्र मक्र माननीय व्है अगै । विपत्थ पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, खिजै समत्थ मत्थ पें समत्थ अत्थ खावनी । —ऊ का

उ०—६ प्रहलाद की प्रतिग्या राखी,हिरणाकुस नख उदर विदारण । रिखि पत्नी पर किरपा कीन्ही, विप्र सुदामा की विपति विदारण । —मीरा

उ०—७ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख सपति, व्यापत नाहि विपत्ती । —मे म.

मुहा —१ विपत्ति आणी=आपत्ति आना, सकट आना । २ विपत्ति उठाणी=सकट या दु:ख सहना । ३ विपत्ति काटणी= सकट मिटाना, सकट मे समय व्यतीत करना । ४ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति उठाणी' । ५ विपत्ति टळणी=सकट या आपत्ति टलना । ६ विपत्ति ढाणी=देखो 'विपत्ति आणी' । ७ विपत्ति पडणी=देखो 'विपति आणी' । ८ विपत्ति मोल लेणी= 'आपत्ति मोल लेना । ९ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी ।

२ कष्ट, पीडा ।

मुहा —१ विपत्ति भुगतणी=कष्ट और पीडा सहन करना । २ विपत्ति सहणी=कष्ट और पीडा सहन करना । ३ विपत्ति होणी=कष्ट व पीडा होना ।

३ झझट, बखेडा ।

उ०—जाव खड सख्याता किया ए, पिण अग्नि देसाला ना दिया ए । कहे फाटोफिटो होय ए, आ किसी विपत सूपी मोय ए । —जयवाणी

मुहा.—१ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी' । २ विपत्ति मोल लेणी=व्यर्थ मे झझट या आफत मोल लेना । ३ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी' ।

४ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन ।

उ०—१ लोक चुगळ कानै लगै, घू घू बोल्यो गेह । भाया सूं भेळप नही, विपत लिखी त्याव वेह । —वा दा.

उ०—२ मिनख मौत आवै है, जकी घडी ऊमर भर री आछीमाडी लारली सारी वाता काच दाई साफ होय जाया करै है । दुख अर विपती मे भी । आपरै भला-बुरा कामा री ठा पडै बिना नी रैवै । —दसदोख

मुहा —१ विपत्ति आणी=बुरे दिन आना । २ विपत्ति काटणी=बुरे दिन काटना या बिताना । ३ विपत्ति टळणी= बुरे दिन खत्म होना । ४ विपत्ति भुगतणी या भोगणी=देखो 'विपत्ती काटणी' ।

५ मृत्यु, मौत ।

उ०—सवळा खळ सूं साधिया, निवळ जाय खळ नास । मूसो मेळ मजार कर, वचियो विपत विलास । —वा. दा

मुहा —१ विपत्ति आणी=मौत आना । २ विपत्ति टळणी= मौत से बचना, मौत टलना ।

६ थकान से उत्पन्न पीडा, थकान ।

उ०—जाळ खेजडा झाडखा झट, खनै बुला स्वागत करै । मरु दातार देव वना विच, छाय सुला विपता हरै । —दसदेव

रू भे —वपत, बपता, बिपत, विपता, बिपनि, विपती, बिपत्त, बिपत्ता, विपत्ति, बिपत्ती, बिपद, बिपदा, बीपत, बीपता, बीपति बीपती, वीपत्त, बीपत्ता, बीपत्ति, बीपत्ती, ।

विपत्थ, विपथ—स पु —१ भयकर मार्ग ।

उ०—दिसा दिसान मान तोप माननीय की दगै, अडोल चक्र नक्र मक्र माननीय व्है अगै । विपत्थ पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, खिजै समत्थ मत्थ मे समत्थ अत्थ खावनी । —ऊ का.

२ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

विपद, विपदा, विपदि, विपदी—स. स्त्री [स विपद्, विपदा] १ आपत्ति, सकट, कष्ट ।

उ०—१ अर पछै ठकराणी ठाकर माथै आयोडी विपदा री सगळी

घरामूळ सू माडनें सुणाय दी। वात री गमीरता नें समझ नें उणा ईं ठकराणी नें अरज करी—आप म्हानें इण जोग समझिया श्रो आपरो वडपणो है। —अमरचूनडी

उ०—२ सियावर नें तू वन मे निकार मती, म्हारा जिवडा नें विपदा मे डार मती। राज तिलक री म्है साज सजायो, वणती वात विगार मती। —गी रा.

२ मानसिक दुख या सन्ताप।

उ०—१ मानखा देही मायं इमी आफत आय जावं तो इण आफत री काई माप? इण विपदा री काई थाग? कोई री एकाएक मोट्यार वेटो भूडापा मे दगो देय जावं तो उण जामण री काई हवाळ? उण वावल री काई भवस? मायड रा उण दुख नें कुण माप सकै। वाप री उण विपदा नें कुण जाण सकै? —अमरचूनडी

उ०—२ घरवाळा घणा ई रोया,घणा ई कळपिया। पण होणहार रै कान कठै, नैंण कठै! जीयो जितरै वेटो, मरिया पछै माटी। वाप थका वेटो जावै, इण विपदा री पार कुण पावै। —फुलवाडी

३ कष्ट, पीडा।
४ झंझट, वखेडा।
५ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन।
६ मृत्यु, मौत।
७ थकान से उत्पन्न, पीडा, थकान।
रू भे —वपत, वपता, विपद, बिपदा।

विपदेस—स पु. [स व्यपदेश] कपट, छल, धोखा। (ह ना मा)

विपन—देखो 'विपिन' (रू भे.) (अ मा, ह ना. मा)

उ०—१ घर चौडै सरवर विपन, विंधाचळ दिस एक। च्यार महूरत उत्तरं, धारस मत्र विवेक। —रा रू

उ०—२ अब आद अख जात अपारा, आप रूप किर भार अठारा। सुपह ममेत भडा मिळ सारा, राज विपन जोयो राजा रां। —रा. रू

उ०—३ मदार पारजाती कलप, हरिचदन सतान तर परसियो 'अभै' अ दा विपन, कुज पुज तरवर निकर। —रा रू

उ०—४ की सरमावै फिर लुक ज्यावै,पग थाम पट साम जप ज्यावै। जै दिल ज्याव् तो हस ज्यावं, जद विपन गुदगुदी विखरावै। —करणीदान वारहठ

विपनतिलका—देखो 'विपिनतिलका' (रू. भे)

विपनविहारी—वि —वन मे घूमने वाला, वन-विहार करने वाला।

उ०—हेमाणी मरु हाट, नरम तनडो उपकारी। ऊपर चढ देखै, दूर तक विपनविहारी। ना ऊभळणं जोग, वाळका न्रत कर खेलै। हिवडे सेवै चोट, कदै ना पाछी मेलै। —दसदेव

स. पु.—श्रीकृष्ण का एक नाम।

रू. भे —विपिनविहारी।

विपर—देखो 'विप्र' (रू भे)

उ०—१ पातुर नाचए घरम दुवार, मेरी माय भलो ए राजन पार उतार। विपर पोथी वाचिया-तेरं भवन विच होय पूजा वार.... । —लो गी

उ०—२ सूद्र वैस्य क्षत्री विपर, कहु मछली कहु नीर। कहू निरभै निर वैरता, कहु जाळी कहु नीर। —ह. पु. वा

उ०—३ जद हरियाळी वनडो फेरा पधारयो श्रै, फेरा मे विपरां सरायो, श्रै वाई जी म्हारा राज। —लो गी.

विपरजय—देखो विपरय्य' (रू भे)

उ०—सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारात विहु जाण। सत्य विपरजय संस्य थळ, उलट पच्छ लघु श्राण। —र ज. प्र.

विपरत—देखो 'विपरीत' (रू भे)

विपरव—स पु. [स विपर्व] बुरा दिन।

उ०—काम क्रोध लोभ मोह पास मे परयो, आसको विनास कै निरास ना अरयो। गरब मे अखरव खरव गरब ना गरयौ, परव में बिपरब परव वासना भरयो। —ऊ. का

विपरयय, विपरय्य, विपरय्यय—सं पु. [स विपर्यय] १ व्यतिक्रम।

२ उलट-पलट, हेर-फेर।
३ विरुद्धता, प्रतिकूलता।
४ भूल, गल्ती, अशुद्धि।
५ अव्यवस्था, गडबडी।
६ वैमनस्य, शत्रुता।
७ भ्रम, सन्देह।
८ सन्देह के कारण विचार बदलने की क्रिया।
रू भे.—विपरजय।

विपराणी, विपरावो - देखो 'वपराणी, वपरावो' (रू भे)

विपराणहार, हारो (हारी), विपराणियो—वि०।
विपरायोडो—भू० का० कृ०।
विपराईजणो, विपराईजवो—कर्म वा०।

विपरायोडो—देखो 'वपरायोडो' (रू भे) (स्त्री. विपरायोडी)

विपरावणो, विपराववो—देखो 'वपराणो, वपरावो' (रू. भे)

विपरावणहार, हारो (हारी), विपरावणियो—वि०।
विपराविश्रोडो, विपरावियोड़ो, विपराव्योडो—भू० का० कृ०।
विपरावीजणो, विपरावीजवो—कर्म वा०।

विपराविपोडी—देखो 'वपरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विपराविपोडी)

विपरित, विपरिती, विपरीत–वि [स विपरीत] १ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध ।

उ०—१ राग रग हुवै छै, छडवडा खिलबत रा साथ सु बैठा छै। तिण समै चाचोमेरी श्रापरी साथ लै साजबाज सु चढीया । राणाजी दिसा ऊनाळी, ऊभी माहे चालीया । तरै राणै मोकलजी देख कह्यौ—आज खातण वाळा विपरीत दीसै, मेळ मे तो नही ।

—राव रिणमल री वात

उ०—२ श्रोईड श्रथन्नण भाद्रव स्रावण, कस्सस कोरण कठळिय। विपरीत करस्सण कट्टक कोम्रण, सेन महाघण सम्मळिय।

—गु. रू ब.

उ०—३ घड मोर नवी परि नाचियौ, दक्खण फोजा श्राइयां। 'गजबध" मेह विपरीत गति, वूठो सिरि वैराइया। —गु रू ब.

उ०—४ पातिसाह पासि कागळ गए, सुणी वात विपरीत परि। सुरताण सेर वहा खुरम, कासमीर श्राई खबरि। —गु रू. ब

२ उलटा, विलोम, विपरीत।

उ०—१ जेथि दीप दीपता तेथि प्रजळै हुत्तासण। जेथि हसति गूजता, तेथि गुजै पचाइण। जेथि रग-श्रामास, तेथि क्रीडति कुर गह। जेथि न्रपति बैसता, तेथि उडु त विहगह। त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भुश्रण तेथि भरिया भसम। खेडपति कीध खिडकी-तखत, वसुह रीत विपरीत इम। —गु रू ब.

उ०—२ कूदरत्त विछूटा आकप कुहकवाण, इळा पुड श्रासमाण। गोळिया ताड विपरीत गत्त, श्रोभठै गडै फिरि मेह श्रत्त।

—गु. रू ब.

३ श्रनिष्ट साधन मे तत्पर, रुष्ट।
४ जो उपयुक्त न हो, श्रनुपयुक्त।
५ उल्टा, कुटिल।

उ०—हियै तहव्वर खान रै, व्यापी यो विपरीत। दाह श्रकव्वर भोगयो, 'नौरग' साह नचीत। —रा रू.

६ असत्य, झूठा, मिथ्या।

उ०—जेह एकात नय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकात मिथ्यामती तै कहै। ग्रथ ऊथापि थापै कुमति श्रापणी, कहै विपरीत मिथ्यामती तै भणी। —ध व. ग्र

७ अप्रिय, अशुभ।

८ भयकर, भयावह।

उ०—ताहरा भोटिंग भैसै री रूप कर श्रायो। श्रो ठाकुर बोलियो होज नहीं। सिखरो पाछो श्रायनै तरवार लै नाकरी मारियो। बाकरी मारिया पछै भोटिंग एक विपरीत रूप करनै श्रायो। श्रकास सीस, पग धरती, इसो भूत श्रावतो दीठो। —नैणसी

९ नियम-विरुद्ध, परम्परा के विरुद्ध।

उ०—१ निकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तो। विपरीत कुळह व्रती, इजगूर या डिंभ गिळ ए। —गु रू ब

उ०—२ जद स्वामीजी कह्यौ—सासरै श्राणी लेवा जमाई जावै जद स्त्री तो रोवै। पिण उण रै देखा देख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक मे भूडी लागै। ज्यू साधपणौ लेवै जरै उण रा न्यातीला रोवै तै तो श्रापरै स्वारथ पिण उण री देखा देख दीक्षा लेण वाळो रोवा लाग जावै तो वात विपरीत। —भि. द्र.

उ०—३ कोढी पति छोडी करी, श्रवर पुरुष सु प्रीत। तजि श्राचार सतीतणो, कीधो इण विपरीत। —श्रीपाल रास

१० चित, सीधा।

उ०—स्रोण भील कमकमै, कियै करिमरा चडाए। रचै सेज रिणभोम, कुमम श्ररि कमळ विछाए। नखत तिक्ख सर कूत, सहै श्रन-मघ श्रचरगळ। पाण पयोहर कठण मथै मैंगळ कुंभा-थळ। विपरीत रहसि वीरारसहि, रिण दूभळ इइ रट्टवड। सूती सग्राम करि स्रोण-हर, भूप मारा सग्राम घड। —गु रू. ब.

रू भे.—विपरीत, वपरीत, विपरत, विपरीति, विपरीती, विपरूत।

विपरीत-रति–स स्त्री. [विपरीत + रति] रति-क्रीडा का एक ढग विशेष, जिसमे सभोग करते समय पुरुष चित्त लेटकर स्त्री को अपने ऊपर उल्टी लेटाता है।

विपरीत लक्षण–स. स्त्री —ऐसी व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति, जिसमे परस्पर विरोधी गुणो, लक्षणो आदि का उल्लेख हो।

विपरीता–स स्त्री [स] दुश्चरित्रा स्त्री, बदचलन स्त्री।

विपरीति, विपरीती—देखो 'विपरीत' (रू भे)

उ०—१ श्रकवर लेख प्रमाणै, तहवर सहत राज लोभाणै। श्रावी चित श्रचीती, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीती। —रा रू.

उ०—२ किण परि रासै मुख चीत रे, भय मरण तणो विपरीति रे। तिहा दूरि रही तै प्रीति रे, पछै सहु को नी रीति रे। —वि कु

विपरूत—देखो 'विपरीत' (रू भे)

उ०—पग्ग जंग कूत केता धरम पालटै, हटै विपरूत गत सूं तग हीयो। कळह विच मजबूत श्रडिग रोकै कदम। राह रजपूत साबूत रहियो। —रावत सग्रामसिंह सक्तावत री गीत

विपळ, विपल–स पु. [स विपल] १ एक पल के साठवें अश के बराबर समय का एक बहुत छोटा विभाग।

स. स्त्री —२ समय की गणना की एक इकाई।

विपळव, विपलव—देखो 'विप्लव' (रू भे.)

विपळा, विपला —देखो 'विपुला' (रू. भे.)

(श्र मा., ना. मा , ह. ना. मा.)

विपळो, विपलो–वि —जिसका विश्वास न किया जाय, अविश्वास पात्र।

स पु [स. विप्लव] १ भूत-प्रेत आदि के उपद्रव।
२ भूत-प्रेत।

उ०—पळा भरतै गळा वामणी प्रजाळी, रुदन करतो छळा वयण रहटो। कैइ विकळा कळा वळवळा करतो, छळा विपळा जोउहो आरण चैंटो। —भैंरुदान वारहठ

विपसचित, विपसचि–स पु [स. विपश्चित] कवि, पडित। (अ मा, ह ना. मा)

विपरुचित, विपस्चित–स पु [स पश्चित] १ स्वारोचिष मन्वन्तर का इन्द्र।

२ एक राजा, जो अपनी पत्नी के साथ पापकर्म किये जाने के कारण नरक मे गया था। इसकी पत्नी का नाम पीवरी था जो विदर्भराज की कन्या थी।

३ दक्षजयन्त लौहिल का वशज एव शिष्य, जो स्वय आचार्य था।

४ आपाढ उत्तर पाराशर्य नामक आचार्य का वशज एव शिष्य, जो एक आचार्य था।

विपाडु, विपाडुर–वि [स] पीला, पीत।

विपाक–स पु [स विपाक] १ किये हुए कर्मों का फल, परिणाम, नतीजा।

उ०—१ सूत्र सिद्धात वखाणंता जी, सुणता करम विपाक। खिण इक मन माहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग। —स. कु.

उ०—२ काम, भोग सयोग सगला, जाण फल किंपाक रे। दीसता रमणीक दीसइ, अति कटुक विपाक रे। —स. कु

२ स्वाद, जायका।

३ कठिनाई, तकलीफ।

४ परिपक्व होना, पकना।

५ पूर्ण दशा को पहुचने की क्रिया, चरम उत्कर्ष।

विपाकसूत्र–स पु —एक सूत्र ग्रन्थ का नाम। (जैन)

वि. वि —ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों के शुभ-अशुभ परिणामो को विपाक कहते हैं और ऐसे कर्मविपाक का वर्णन जिस सूत्र मे किया जाता है वह विपाक सूत्र कहलाता है। यह ग्यारवा अगसूत्र है।

विपाट–स पु [स विपाट] १ एक प्रकार का लबा तीर या बाण विशेष।

२ कर्ण के एक भाई का नाम जो महाभारत-युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया था।

रू भे —विपाठ।

विपाटल–वि.—गहरा लाल।

विपाठ—देखो 'विपाट' (रू भे)

विपाठा स. स्त्री —दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

विपाद–स पु —१ कश्यप एव दनु के पुत्रों मे से एक पुत्र, दानव।

२ एक पिशाचगण।

विपादिका–स स्त्री [स] एक प्रकार का कुष्ठ रोग। (अमरत)

विपाप–स पु —शिवावतार के एक शिष्य का नाम जिसको दमन के नाम से भी पुकारा जाता है।

विपापनन, विपाप्मन–स पु [सं विपाप्मन] १ अग्नि का एक पुत्र, जिसका एक नाम जिश्वजन भी था। यह वास्तुकार्य में अधिष्ठाता देवता माना जाता है।

२ मत्स्यानुसार, आयु राजा का एक पुत्र।

विपास, विपासा–स स्त्री [स विपाश] पजाब में बहने वाली व्यास (आधुनिक शतलज) नदी का एक नामान्तर।

वि वि.—इस नदी को विपास या विपासा नाम प्राप्त होने का कारण है कि एक बार वशिष्ठ ऋषि आत्महत्या के उद्देश्य से अपने हाथ-पैर बाध कर उक्त नदी मे गिर गये। नदी ने उन्हे पाशमुक्त कर किनारे पर फेंक दिया।

विपिन, विपुन–स. पु [स. विपिन] १ वन, जगल। (ना. मा)

उ०—१ अत असतुत घर परस अधारै, चलै विपिन तप चाहै। इम थट सहित सुवेस उमाहै, पुर अवधेस पधारै। —र रू

उ०—२ ग्रीखम गिर लास्या जरत, सरवर निकट पुलीन। बूझैगो कैसै विपिन, परस्या विना प्रवीण। —प्रवीणसागर

२ उपवन, वाटिका।

उ०—विरचइ विपिनि विचक्षण तक्षण दस वि दसार, नव नव निरमल भूखण दूखण रहिय सु गार। —जयसेखर सूरि

रू भे —विपन।

विपिनचर–वि [स] वन में रहने वाला या विचरण करने वाला, जगली।

विपिनतिलका–स स्त्री —१ प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण वाली वर्णवृत्ति।

२ एक प्रकार का मात्रिक छद विशेष जिसमे १०, १० मात्रा पर यति हो और अत मे रगण हो।

रू. भे.—विपनतिलका।

विपिनपत, विपिनपति, विपिनपती–स पु [स विपिन+पति] वन का राजा, सिंह।

बिपिनविहारी—देखो 'विपनविहारी' (रू भे)

विपुळ, विपुल–वि [स] १ बहुत बडा, विशाल।

२ अधिक, प्रचुर।

उ०—सीत काळ ऊतरै, अव मवरै रित आगम। रस आयो तरवरै, भयो भमरै सुर सगम। द्रुम्म चरम मधु भरै, पत्र अकुरै विपुल वन। फाग राग माधुरै, सुरै नर नारि हरै मन। —रा. रू.

३ अगाध, गहरा।

४ रोमाचित।

स पु—१ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग।

२ महाभारत युद्ध मे अर्जुन द्वारा मारा गया, सोवीर देश का एक राजा, जिसे देत्तमित्र व सुमित्र नाम भी प्राप्त थे।

३ रोहिणी एव वसुदेव के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, वलराम व कृष्ण का भाई।

४ एक पर्वत, जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला है।

५ देवशर्मन ऋषि का शिष्य एक भृगुवशीय ऋषि।

वि वि.—इसकी गुरुपत्नी 'रुचि' पर इद्र आसक्त हुआ, उस समय इसने रुचि की इन्द्र से रक्षा की थी। इसी कारण प्रसन्न होकर देवशर्मन ने इसे अनेक वर प्रदान किये।

६ एक पर्वत विशेष, जो मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास है।

रू. भे.—विउल।

विपुळता, विपुलता–स. स्त्री —२ प्रचुरता, बहुतायत।

२ महानता, विशालता।

विपुलमति, विपुलमती–स. स्त्री —२८ प्रकार की लब्धियों मे से नवमी लब्धि का नाम।

उ०—सूंपरण मानुखक्षेत्रै सय्यावत, पचेंद्रिय जे छै तसु मनवाता तत। सूखमपरजायै जाणै सहु परिणाम,ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम। —वृ स्त

विपुळस्वांन–स पु —सुरूप एव तुवुरु के पिता, एक ऋषि।

विपुळा, विपुला–स स्त्री [स विपुला] १ जमीन, पृथ्वी, भूमि। (डि नां मा)

२ विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी।

३ एक प्रसिद्ध बहुला सती का नामान्तर।

४ विपुला देवी का सिद्ध पीठस्थान।

५ एक प्रकार का छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, रगण और दो लघु होते है।

६ आर्याछन्द का एक भेद विशेष, जिसके चारो चरणों मे १८, १२ १४ और १३ के क्रम से ५७ मात्रायें होती हैं।

रू. भे.—विपुला, विपळा, विपला।

विपोहणो, विपोहवो–क्रि. स [स. वि=विगत, रहित+पोषण]

१ मिटाना, नाश करना, समाप्त करना।

उ०—समोसरण सामी दयइ देसण, भविक जीव पडियोहइ। केवलग्यानी धरम प्रकासइ, वयर विरोध विपोहइ। —स. कु.

२ दूर करना, हटाना।

विपोहणहार, हारो (हारी), विपोहणियो—वि०।

विपोहिओडो, विपोहियोडो, विपोहयोडो—भू० का० कृ०।

विपोहीजणो, विपोहीजवो—कर्म वा०।

विपोहियोडो–भू. का कृ—१ मिटाया हुआ, नाश किया हुआ, समाप्त किया हुआ २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ.

(स्त्री विपोहियोडी)

विप्प—१ देखो 'विप्र' (रू भे)

२ देखो विप्पळो।

उ०—विप्पळा पळा आवळा वाढ, ग्रीधळां खळा सावळा गाढ। सावळा हुळा मंगळा सरल, ढँचळा ढळा तूलाइ ढळन। —गु रू वं

विप्पोसहि, विप्पोसही–स. स्त्री —२८ प्रकार की लब्धियो में से दूसरी लब्धी।

उ०—१ आमोसहि विप्पोसहि खेलोसहि जल्लोसहि सव्वोसहि लब्धि वैक्रिय लब्धि, पुलाक लब्धि, तेजोलेस्या लब्धि, आसीविख लब्धि, सभिन्नस्रोतो लब्धि। —व स.

उ०—२ जासु मळमूत्र उगध समा जाणीयै, वीय विप्पोसही लबधि वखाणियै। स्लेसम उखधि सारिखो जेहनो, तीजी खेलोसही नाम तेहनो ठवै। —वृ स्त.

विफ्फरणो, विप्फरवो—देखो विफरणो, विफरवो' (रू. भे)

विफ्फरणहार, हारो (हारी) विप्फरणियो - वि०।

विफ्फरिओडो, विप्फरियोडो, विप्फरयोडो—भू० का० कृ०।

विप्फरीजणो, विप्फरीजवो—भाव वा०।

विप्फरियोडो – देखो 'विफरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विप्फरियोडी)

विप्फुरणो, विप्फुरवो—देखो 'विफरणो, विफरवो' (रू भे)

उ०—जासु सुजसु जगि झिगमिगै ए, चदुज्जल निकलक। प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ, हरइ डमर अरि सक। —पुण्यसागर

विप्फुरणहार, हारो (हारी), विप्फुरणियो—वि०।

विप्फुरिओडो, विप्फुरियोडो, विप्फुरयोडो—भू० का० कृ०।

विप्फुरीजणो, विप्फुरीजवो—भाव वा०।

विप्फुरियोडो–भू का कृ—देखो 'विफरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विप्फुरियोडी)

विप्र–स पु [स] १ ब्राह्मण।

उ०—१ नही तूँ विप्र नही तू बैंस, नही तू खत्रिय सूद्र न खैस। नही तू मूल नही तू डाळ, नहीं तू पत्र नही जु पराळ। —ह. र

उ०—२ चित माहि इम चिंतवैजी, निरदय विप्र चडाल। करै परीसौ साधनै जी, दे मुख सू घणी गाल। —जयवाणी

उ०—३ ब्राहनपुर दसरावौ थप्पै, जोसी तिलक मुहूरत अप्पै। विजे दसम्मी होम करावै, विप्रा कन्ना वेद वचावै। —गु रू. व.

उ०—४ तिलक दुग्रा-दस वसत्र वखवर, करै सदा खट करम निर। तर।राजा वदन कीध उभै कर, शास्त्री-वाच विप्रां इम उच्चार —गु रू व

२ ब्राह्मण या पुरोहित जाति।

३ उक्त जाति का पुरुष।

४ कर्मनिष्ठ पुरुष।

५ पीपल, सिरस ग्रादि पेडो का नामान्तर।

६ ध्रुव वशीय एक राजा।

७ मगध नरेश सृन्ञ्जय के पुत्र व शुचि के पिता एक राजा।

८ डगण के पाचवे भेद का नाम।

९ विद्वान या मेघावी व्यक्ति।

रू भे —विपर, विप्र, विप, विपर विप्प।

विप्रक–स पु [स] नीच या धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण।

विप्रकार–स पु [स] १ हार, पराजय।

२ ग्रनादर, तिरस्कार।

३ ग्रपकार।

विप्रचरण–स पु [स] भगवान् विष्णु के हृदय पर ग्रकित भृगु मुनि की लात का चिन्ह। (पुराण)

विप्रचित्त, विप्रचित्ति विप्रजित्त, विप्रजित्ति–स पु [स. विप्रचित्ति]

१ व्यष्टि नामक ग्राचार्य का एक शिष्य।

२ हिरण्यकशिपु का सेवक एक राक्षस।

३ एक दानव राजा।

वि वि.—यह कश्यप एव दक्षपुत्री दनु के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र था। इसका विवाह हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका से हुग्रा था। सिंहिका के गर्भ से इसे सौ पुत्र प्राप्त हुऐ थे जिनमे राहु ज्येष्ठ-पुत्र था जो कि ग्राजकल ग्रह माना जाता है। कही-कही इसके पुत्रो की सख्या चौंतीस या तेरह भी दी जाती है। इसने ग्रसुर-इन्द्र युद्ध व ग्रमृतमन्थन ग्रादि मे भाग लिया था। इसके पुत्रो का सैंहिकेय नामक समूह था जिसमे एक सौ राक्षस थे जो सभी इसके पुत्र थे। उक्त समूह मे एक राहु एव सौ केतु थे।

४ राहुग्रह। (डिं को)

विप्रणी—देखो 'विप्री' (रू भे)

उ०—पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी स्याम वसन गण। गोरे वरण विप्रणी गाहा, चपक वरण खित्रणी चाहा। —र. ज प्र.

विप्रता–स स्त्री —ब्राह्मण होने की ग्रवस्था, ब्राह्मणत्व।

उ०—जै छद गहन विचार रै सुकनै पूछीजै, निस्चय ए कीजै। सूँ विप्रता रै ग्रम्हनै सूवटा, जेहवौ छै तेहवौ दाखि रै। —वि कु.

विप्रविसार, विप्रतीसार–स पु [स] १ रोष, क्रोध, गुस्सा।

२ दुष्टता।

विप्रपद—देखो 'विप्रचरण'।

विप्रबधु–स पु [स] १ धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण।

२ मत्रद्रष्टा मुनि।

विप्रबुद्ध, विप्रबुध—वि. [सं] ज्ञानी, जानकार।

विप्रराम–स पु [स] परशुराम का एक नामान्तर।

विप्रलभ–स. पु [स विप्रलम्भ] १ धोखा, कपट।

२ विछोह, वियोग।

३ प्रेमी, प्रेमिकाग्रो का विछोह।

४ साहित्य मे एक प्रकार का ग्रलकार विशेष जिसमे प्रेमी प्रेमिकाग्रों के विरह का वर्णन होता है।

वि वि —यह शृगार रस का एक भेद है, जिसमें ग्रनुराग तो ग्रति-उत्कंट होता है किन्तु नायक नायिका का समागम नही होता है। पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, ग्रादि इसके चार भेद हैं। इसमें ग्रभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जडता ग्रोर मृति (मरण) ग्रादि दश काम दशायें होती हैं ग्रोर इन सारी काम दशाग्रो के लक्षण भिन्न भिन्न होते हैं।

विप्रलब्ध–वि [स] १ धोखा दिया हुग्रा, छला हुग्रा।

२ हताश, निराश।

विप्रलब्धा–स स्त्री. [स] वह नायिका जो ग्रपने प्रेमी द्वारा बताये सकेत स्थान पर प्रेमी के न पहुचने पर निराश या दु खी हुई हो।

विप्रलाप, विप्रवाद–स पु [स] १ व्यर्थ की बकवास।

२ विवाद, झगडा।

विप्रस्ट–स. पु [स विप्रष्ट] वसुदेव एव घृतदेवी के पुत्रो में से एक पुत्र, वलराम का छोटा भाई।

विप्रस्न–स पु [स विप्रश्न] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रि, विप्री–स स्त्री —ग्रार्याछन्द मे एक गाथा जिसमे १३ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—१ विप्री तेरह लघुत्र दीर्जं, लघु यकवीस खिप्रणी लीजे सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।—र ज. प्र

उ०—२ भीनै रग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी न्याम रग लायक। मुगता भूवण विप्री मोहत, सुज खित्रिणि हिम भूखण सोहत।
—र ज प्र

रू भे —विप्रणी।

विप्लव—स. पु. [स] १ उपद्रव, बलवा, हगामा, विद्रोह।

२ युद्धकाल मे उत्पन्न अशाति, उथल-पुथल।

३ आपत्ति, विपत्ति।

४ घोडे की अत्यधिक तेज चाल।

५ सीमोल्लघन, अतिक्रमण।

रू. भे —विपळव, विपलव।

विप्लुत—वि [स.] जिसके उच्चारण मे प्लुत से भी अधिक समय लगे।

उ०—गुरु लघु प्लुत विप्लुत करी, व्यजन वरण विसेख। धूया माठा पडमठा ताल-तणा तिहा लेख। —मा. का प्र.

विप्सा—देखो 'वीपसा' (रू भे)

विफद, विफदौ—स पु —जाल, पाश, फन्दा, फास।

उ०—राज के विहीन सत्यसिंधु ते रह्यो। भाज के अधीन दीन-बधु के भयो। छद व्है सुछद श्री अनद को कह्यो, मदमती "ऊमरी" विफद मे फयो। —ऊ. का.

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू भे)

विफरणौ, विफरबौ—क्रि अ. [स. विस्फुरणम्] १ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, विगडना।

उ०—विफरै जैमाळ तड बनै वड बावळा, सुधारै जायळा बेल सारा। ऊपटै ऋठी रूपाण थड आवळा, भडण उतावळा हुति भारा। —प्रतापसिंघ री गीत

२ गरजना, दहाडना।

३ फैलना, विखरना।

४ प्रगट होना, स्फुटित होना।

विफरणहार, हारौ (हारी), विफरणियौ—वि०।

विफरिओडौ, विफरियोडौ, विफरयोडौ—भू० का० कृ०।

विफरीजणौ, विफरीजबौ—भाव वा०।

विप्फरणौ, विप्फरबौ, विफरणौ, विफरबौ, बीफरणौ, बीफरबौ, बीमरणौ, बीमरबौ, भीफरणौ, भीफरबौ, विप्फरणौ, विप्फरबौ, विप्फुरणौ, विप्फुरबौ, बीफरणौ, वीफरबौ—रू० भे०।

विफरियोडौ—भू का कृ —१ क्रोधित हुवा हुआ, गुस्से मे युक्त हुवा हुआ, विगडा हुआ. २ गरजा हुआ, दहाडा हुआ ३ फैला बिखरा हुआ हुआ, ४ प्रगट हुवा हुआ, स्फुटित हुवा हुआ
(स्त्री विफरियोडी)

विफलरे, विफरैळ—वि.—क्रोधित, क्रुद्ध, गुस्से से युक्त।

रू भे —बिफरेल, विफरैल, बीफरेल बीफरैल।

विफळ, विफल—वि. [स. विफल] (स्त्री. विफळा, विफला) १ जिसके फल न लगते हो।

२ व्यर्थ, निरर्थक।

३ असफल, नाकामयाब।

४ हताश, निराश।

५ परिणाम रहित।

स पु —पान, ताम्बूल। (अ मा.)

रू भे —बिफळ।

विफळणौ, विफळबौ—क्रि अ —१ हताश होना, निराश होना।

उ०—तद कुंवरसी कह्यो, जो मोनु फेर वरजियो तो हू पेट में मार कटारी मरीस, का रावा घात सामी हुय जाईस। तद बीदू रग देख विफळियो, पाछो खीवसीजी नुं कह्यो, मानै कोई नही।
—कुंवरसी साखला री वारता

२ घबराना, भयभीत होना।

विफळणहार हारौ (हारी), विफळणियौ—वि०।

विफळिओडौ, विफळियोडौ, विफळयोडौ—भू० का० कृ०।

विफळीजणौ, विफळीजबौ—भाव वा०।

विफळता, विफलता—स. स्त्री [स विफलता] १ व्यर्थता, निरर्थकता।

२ असफलता, नाकामयाबी।

३ हताश, या निराश होने की अवस्था या भाव।

विफळियोडौ—भू का कृ —१ हताश, निराश। २ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ।
(स्त्री विफळियोडी)

विबक—स पु —१ वीरता, बहादुरी, बाकापन।

उ०—गिराव गड्ढ गड्ड को विगड्ड छड्डतो वहै, वकारि बैरि अद को डकार डड्ढती वहै। बहे निसक वक की विबक कढ्ढती वहै, रहेसु सक रक की विसक वढ्ढती वहै। —ऊ का.

२ कुटिलता।

३ टेढापन, तिरछाई, वक्रता।

४ वीर, बहादुर।

विबध—स पु [स] १ कब्जी होने की अवस्था, कब्जी, मलावरोध।

२ अवरोध, रुकावट।

३ बन्धन, हथकडी।

विबधवरत्ति—स स्त्री [स विबधवर्त्ति] घोडों का रोग विशेष जिसके कारण उनका पेशाब बद हो जाता है।

विबरजित—देखो 'विवरजित' (रू भे)

विवरण—देखो 'विवरण' (रू भे)

विवळ, विवल–वि [स. विवल] १ अशक्त, शक्तिहीन, बलहीन।
२ विशेष बलवान, शक्तिशाली।
रू भे —विवळ।

विवहयरणौ, विवहयरवौ–क्रि अ —लहराना, फहराना।
उ०—पसरि पख हूँ पाई इळा उडुं आधतरि। जरद लाल इक स्याह, वरन वाना विवहथरि। —गु रू व
विवहयरणहार, हारो (हारी), विवहयरणियौ —वि०।
विवहयरिओडौ, विवहयरियोडौ, विवहयरयोडौ —भू० का० कृ०।
विवहयरीजणौ, विवहयरीजवौ भाव वा०।
विवहयरणौ, विवहयरवौ —रू० भे०।

विवहयरियोडौ–भू का कृ —लहराया हुआ, फहराया हुआ।
(स्त्री विवहयरियोडी)

विवाई, विवाही—देखो 'विवाई' (रू भे)

विविखण, विविसण, विवीखण, विवीसण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

विबुद्ध, विबुध–वि [स विबुद्ध] १ जाग्रत, सचेत।
२ ज्ञानप्राप्त, जानकार।
३ चतुर होशियार।
स. पु [स विबुध] १ चन्द्रमा, चाद।
२ देवता।
उ०—तिथ चतुरदसी सनवार तत्र, रयण पहर वीता अरध। 'अग-जीत' ग्रेह जनम्यो 'अभौ', वाणा वेद हरखं विबुध। —रा. रू
३ विद्वान पुरुष, बुद्धिमान जन, पडित।
उ०—पूरण ग्यान दसा मन आणी, वेधक वाणी वखाणीजी। विबुध भणी अवबोध समाणी, मूरख मति मूभाणीजी।—वि कु
४ कृति राजा का मतान्तर से देवमीढ राजा का, विसृत मतान्तर से विश्रुत नामक पुत्र, एक राजा।
५ शिव, महादेव।
रू. भे —विबुध, विवध, विवधा, विवह, विवुध, विवुह।

विवुधतटणी, विवुधतटनी, विवुधतटिणी, विवुधतटिनी–स स्त्री [स विवुध+तटिनी] १ देवताओ की नदी, आकाश गगा। २ गगा नदी।

विवुधतर, विवुधतरु–स पु [स विवुधतरु] कल्प-वृक्ष का एक नाम।

विवुधधेन, विवुधधेनु–स स्त्री. [स विवुधधेनु] काम-धेनु।

विवुधनद विवुधनदी–स स्त्री [स विवुधनदी] १ आकाश-गगा।
२ गगा।
उ०—जिण री मे 'मा जोय, नर मूरख नावै नही। हाड पड्या गत होय, विवुधनदी मे 'वसतिया'। —समेळजी बारहठ

विवुधपत, विवुधपति, विवुधपती, विवुधपत्त, विवुधपत्ति विवुधपत्ती–स पु [स विवुधपति] सुरपति, देवराज इन्द्र।

विवुधप्रिय विवुधप्रिया–स स्त्री. [स. विवुधप्रिया] चचरी या चर्चरी नामक छद का नामान्तर।
रू. भे —विवुधप्रिय, विवुधप्रिया।

विवुधवन—देखो 'विवुधवन' (रू भे)

विवुधलता–स. स्त्री [स] कल्प-लता।

विवुधवेल, विवुधवेलि, विवुधवेली—देखो 'विवुधवेलि' (रू भे.)

विवुधवन–सं पु. [स] देवराज इन्द्र का वन।
रू भे.—विवुधवन, विवुधवन विवुधवन।

विवुधविलासण, विवुधविलासणि, विवुधविलासणी विवुधविलासिणि, विवुधविलासिणी– स. स्त्री [स. विवुधविलासिनी] १ देवता की स्त्री, देवागना।
२ अप्सरा।

विवुधवेल, विवुधवेलि –स स्त्री. [स विवुधवेलि] कल्प- लता।
रू भे —विवुधवेल, विवुधवेलि, विवुधवेली।

विबुधवैद्य–स. पु [स.] देवताओ के वैद्य, अश्विनी कुमार।

विवुधान–स पु [स विवुधान] १ देवता।
उ०—धानखी स्याम धार मेर विवुधान पाणा, किन्नरा अम्मरा नरा धरा ओपवै सुधाक। अग रज्जै राजवै सुपाट धाम येण पाणा, जटीस वसु स्याम धाम 'छत्तारो' जोधाक।
—भगतराम हाडा री गीत
२ पडित, विद्वान।

विवुधाचारय, विवुधाचारिय–स पु [स विवुध+आचार्य] देवताओं के आचार्य, वृहस्पति।

विवुधाधिप, विवुधापत, विवुधापति, विवुधापती–स पु [स विवुध+अधिप, पति] देवराज इन्द्र।

विवुधापगा–स स्त्री [सं] १ आकाश-गगा। २ गगा नदी।

विवुधालय–स पु [स विवुध+आलय] देवता का मन्दिर।
२ स्वर्ग।
रू भे —विवुधालय, विवुधालय, विवुधालय,।

विवुधावास–सं पु [स विवुध+आवास] १ देवताओ का निवास स्थान स्वर्ग।
२ मन्दिर।

विवुधेंद्र–स पु. [स विवुध+इन्द्र] देवराज इन्द्र का नामान्तर।

विवुधेस–स पु [स विवुध+ईश] १ देवताओ के स्वामी भगवान्

विष्णु ।

उ०—विमळानन विबुधेस-विहारी, संत चक्र धारी सुमण । भव तारण भूधर भय-भजण, हिरणगरभ अय-ताप हुण ।

—र. ज. प्र.

२ देवराज इन्द्र ।

रू भे.—विबुधेस, विबुधेस ।

विबोध–स पु [स विबोध] १ जागृति, जागरण ।

२ चेतना, होश ।

३ अलकार साहित्य के अनुसार व्यभिचारी भाव ।

४ चैतन्यलाभ जो निद्रा दूर करने वाले कारणो से उत्पन्न होता है।

५ निर्वहणसन्धि के चौदह अगो मे से एक ।

६ कार्य का अन्वेषण करने की क्रिया ।

विबोधन–स स्त्री. [स विबोधन्] १ जागृति या जागरण पैदा करने की क्रिया ।

२ चेतना या होश में लाने की क्रिया या भाव ।

३ व्यभिचार करने की क्रिया ।

विब्भाडणी, विब्भाडवौ—देखो 'विभाडणी, विभाडवौ' (रू भे)

उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर । आण किति नव खड, अदल कीधी दुनीयप्पर । मल वीनल विब्भाडि उदधि कर पाउ पखालिय । अतेउर रति रभ, रूप रभा सुर टालीय । हेतम दान कवि मल्ल कहि, अमर घुम्रि वे वखत गनि । दोठो न कोइ रवि चषक लगि, अलावदी सुलतान विणि ।

—प च वी

विब्भाडणहार, हारौ (हारी), विब्भाडणियौ—वि०— ।

विब्भाडिओडौ, विब्भाडियोडौ, विब्भाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

विब्भाडीजणौ, विब्भाडीजवौ—कर्म वा. ।

विब्भाडियोडौ—देखो 'विभाडियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री विब्भाडियोडी)

विब्भाडणौ, विब्भाडवौ—देखो विभाडणी, विभाडवौ (रू. भे.)

उ०—पछिम देस पारभ, लियो लोहा उप्पाडै । पूरब दिस पतिसाह, लियो खग दळ विब्भाडै —गु. रू ब.

विब्भाडणहार, हारौ (हारी), विब्भाडणियौ—वि० ।

विब्भाडिओडौ, विब्भाडियोडौ, विब्भाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

विब्भाडीजणौ, विब्भाडीजवौ—कर्म वा० ।

विब्भाडियोडौ—देखो 'विभाडियोडौ (रू भे.)

(स्त्री विब्भाडियोडी)

विब्भाणौ, विब्भावौ—देखो 'विभाणौ, विभावौ' (रू. भे.)

विब्भाणहार, हारौ (हारी), विब्भाणियौ—वि० ।

विब्भायोड़ौ—भू० का० कृ०— ।

विब्भाईजणौ, विब्भाईजवौ—कर्म वा० ।

विब्भायोडौ—देखो 'विभायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भायोडी)

विभग–स पु [स] १ भौंहो द्वारा की जाने वाली चेष्टा, भ्रू-भग ।

२ किसी चीज को यथास्थान रखने की क्रिया, विन्यास ।

३ खडित होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

विभज, विभजण–स. पु [स वि+भज्] १ नाश, विनाश ।

२ सहार, नाश ।

रू भे —विभजण ।

विभजणौ, विभजवौ–क्रि स [स. विभजनम्] १ नाश करना, विनाश करना ।

२ सहार करना ।

३ मारना, वध करना ।

उ०—१ रघुराज सिहायक सत रहै, कथ भेद जिको अज वेद कहै । दसमाथ विभज भराथ दख, पहनाथ समाथ अनाथ पख ।

—र ज प्र

उ०—२ दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणा खळ घायक सेवग-पाळ । वढै दसमाथ विभजण वक, लछीवर देण भभीखण लंक ।

—र ज प्र

४ मिटाना ।

उ०—धर सुकर सायक धानुख, लड समर ग्हचण लख । दुजराज गरब विभज दस्सत, सरब जग सरण । —र. ज प्र.

विभजणहार, हारौ (हारी), विभजणियौ— वि० ।

विभजिओडौ, विभजियोडौ विभज्योडौ—भू० का० कृ० ।

विभजीजणौ, विभजीजवौ—कर्म वा० ।

विभजणौ, विभजवौ—रू० भे० ।

विभजियोडौ–भू का कृ —१ नाश किया हुआ, विनाश किया हुआ ।

२ सहार किया हुआ ३ मारा हुआ, वध किया हुआ । ४ मिटाया हुआ ।

(स्त्री विभजियोडी)

विभ —देखो 'वैभव' (रू भे.)

उ०—भड राम दससिर भजिया, दत लक सरणागत दिया । विभ अवध सिय लै आविया, कळ चदनाम किया । —र ज प्र

विभकर–स. पु —एक प्रकार का रत्न विशेष । (व स)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकात चद्रकांत, नील, महानील, इद्रलील, सबकर विभकर ज्वरहर रोगहर

लेलहर, विखहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हसगरब्भ पुलक अक अजन अरिस्ट चितामणि । —व स.

विभक्त–वि. [स]अलग-अलग किया या हुवा हुआ; बटा या बाटा हुआ ।
स॰पु [स॰ विभक्त] स्वामी कार्तिकेय का नामान्तर ।
रू भे —विभगत ।

विभक्ति–स स्त्री. [स.] १ विभक्त करने या होने की क्रिया या भाव, पार्थक्य, अलगाव ।
२ व्याकरण के अनुसार शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिन्ह जिससे उस शब्द का क्रिया पद के सम्बन्ध का पता चलता है ।
रू भे —विभगति ।

विभगत—देखो 'विभक्त' (रू भे.)

विभगति—देखो 'विभक्ति' (रू. भे.)

विभगन, विभग्न–वि [स विभग्न] १ टूटा फूटा हुआ ।

विभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू भे.)
उ॰—१ विभचारी विभचार कर, कुळ-ध्रम खोय कुमोज । खूट गया इण खळक मे, खुडको हुवो न खोज । —ऊ. का
उ॰ —२ चपळ मती दुरचारणी, चित्त भाव विभचार । सीघ्र त्याग कर सुर सभा, कर नर अगीकार । —पा. प्र
उ॰—३ भाग जागे कहे किसी भात सू दामोदर माय चित राख दीधा ।रुकमणी आदि तो पतिवरत सूं ऊधरी, कूवडी आदि विभचार कीधा । —भगतमाळ
उ॰—४ हरीया अपनै पीव सु, सूती सेभ विछाय । जो राखै मन और सु, तो विभचार कहाय । —अनुभववाणी

विभचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू. भे)
उ॰—१ विभचारी विभचार कर, कुळ-ध्रम खोय कुमोज । खूट गया इण खळक में खुडको हुवो न खोज । —ऊ का
उ॰—२ चाद किरण सकुडी थी सु पसरी । कुलटा कहता विभचारिणी की द्रस्टि सकुडी थी सु पसरी । निसाचर कहतां राति कै विखै जु विचरै छै । त्याह की द्रस्टि पसरी । अभिसारिका कहता जिह नै सहेट वदी थी । त्याह की द्रस्टि पसरी । —वेलि टी
उ॰—३ पतिवरता विभचारिणी, सगति सुख नहि कोय । तैल नीर सूं ना मिळै, ल्हसण चदन भी दोय । —ह्. पु. रा.
उ॰–४ पतिवरता विभचारिणी, दोऊ अनत न वैसै एकै साथी । फटकिमणि तव लग भली, जव लग हीरा आवै न हाथी । —ह पु वा.
उ॰—५ होय दिसावर एक वर, कहो कोण दिस जाय । जनहरीया विभचारणी, पति विन गोता खाय । —अनुभववाणी
(स्त्री.—विभचारण, विभचारणी, विभचारिणी)

विभच्छ, विभछ विभत्स—देखो 'वीभत्स' (रू भे.) (ह्. ना मा)

विभत्सरस—देखो 'वीभत्स' (१) (रू भे)

विभत्सु—१ देखो 'वीभत्सु' (रू भे)
२ देखो 'वीभत्स' (रू भे.)

विभनो, विमनो, विभन्नो, विमन्नो–[स. वि+भज] मरा हुआ मृत ।
उ॰—१ विभनौ तू गज गाम बरीसण, हुई तेण खट बरण हाण । अणमिळण मौ हुवौ एम तौ, मिटसी किम मोजा महराण । —वा. दा
उ॰—२ घमळ विभन्नौ धुर तजै, देख दुमन्नौ साथ । उण वेळा ताडै 'अजौ' मूछा घालै हाथ । —रा. रू.
उ॰—३ 'अजवै' वीठळदास रै, देख विभन्नौ वघ । भुजडडै वळ झल्लियौ, तिण धुर ओडै कध । —रा. रू
उ॰—४ यूं कमधा सुण अखियौ, माडेचौ अर मोड । राम विभन्नौ की कहै, जा ऊभौ रिणछोड । —रा. रू.
उ॰—५ कमध अगजी विभन्नौ कहियौ, वड दाता कीरत चौ वीद । वाक तुआळी करडी-वाळी, काळी झूवाळं कासीद । —ओपो आढौ

विभरणौ, विभरवौ–क्रि अ.—१ चमकना, चौंकना ।
२ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगडना ।
३ भ्रम में पडना, भ्रमित होना ।
विभरणहार, हारौ (हारी) विभरणियौ—वि॰ ।
विभरिओडौ, विभरियोडौ, विभरयोडौ—भू॰ का॰ कृ॰ ।
विभरीजणौ, विभरीजवौ—भाव वा॰ ।

विभरियोडौ–भू का कृ —१ चमका हुआ, चौंका हुआ . २ क्रोधित हुवा हुआ, विगडा हुआ . ३ भ्रम में पडा हुआ, भ्रमित हुवा हुआ .
(स्त्री विभरियोडी)

विभळ, विभळी–स स्त्री —१ विल, गुफा ।
१ आख, नयन, नेत्र । (ना डि को)
वि —१ निर्मल, साफ, स्वच्छ ।
२ सुन्दर, मनोहर ।
रू भे.—विभळ, विभळी, भिभळ, भीभळ, भीभळी, वीभळ, वीभळी, वीभळ, वीभळी ।

विभव–स पु. [स] १ छत्तीसवें सवत्सर का नामान्तर ।
२ देखो 'वैभव' (रू भे) (ना मा., ह्. ना मा)
उ॰—१ वरस दोय होता छता सारी विभव खिच गई ।
—साह रामदत्त री वारता

उ०—२ रूप हुइ तू चतुर नुहि, अथवा नही उदार । तै हुइ तु विभव नुहि, कै लपट हुइ अपार । —नळाख्यान

विभवता—देखो 'वैभवता' (रू भे.)

विभववान—देखो 'वैभववान' (रू भे)

विभवसाळी विभसाली—देखो 'वैभवसाळी' (रू भे)

विभाड-स पु [स] सरशय्या पर लेटे हुए भीष्म से मिलने हेतु उपस्थित जनो मे से एक ऋषि ।

विभाडक-स. पु [स] एक ऋषि का नाम जो कश्यप का पुत्र तथा ऋष्यश्रृंग ऋषि का पिता था ।

वि वि —इसके पुत्र ऋष्यश्रृंग ऋषि के जन्म एव अग देशाधिपति चित्ररथ की कन्या शान्ता से उसके विवाह के सम्बन्ध मे अनेक चमत्कारपूर्ण कथाऐं मिलती हैं । कश्यप के पुत्र के नेत्र-पीले रग के थे एव इसे ब्रह्मज्ञान की शिक्षा हिमालयवासी सनत्कुमार ने दी थी ।

विभाडक कास्यप-स पु [स विभाडक काश्यप] ऋष्यश्रृंग ऋषि का पुत्र एव शिष्य ।

विभांत, विभांति,-स स्त्री. [स विभाति] १ प्रकार, भेद, किस्म ।

वि —अनेक प्रकार का ।

विभा-स स्त्री [स.] १ दीप्ती, प्रभा, कान्ति ।

२ छवि, शोभा, सौदर्य ।

३ किरण, रश्मि । (अ मा, ना. मा., ह ना मा.)

४ अग्नि, आग । (अ मा)

५ कावेरी की पुत्री एव दुर्गम राजा की अनेक पत्नियो मे से एक पत्नी का नाम ।

रू. भे —विभा ।

विभाकर-स पु [स विभा+कर] १ सूरज, सूर्य । (ह. ना मा, क. कु. बो)

२ चान्द, चन्द्रमा ।

३ राजा ।

४ अर्क, मदार ।

५ अग्नि, आग ।

वि —प्रकाश करने वाला, अन्धेरा मिटाने वाला ।

रू. भे —विभाकर ।

विभाग-स. पु [स विभाग] १ बटवार, अश, हिस्सा ।

२ अश, प्रकरण ।

३ कार्यक्षेत्र ।

४ कार्यालय, महकमा ।

५ परिच्छेद, खण्ड ।

रू. भे —विभाग, व्यभाग ।

विभागात्मकनक्षत्र, विभागात्मकनखत्र-स. पु. [विभगात्मकनक्षत्र] प्रकाशमय आठों नक्षत्रो का नाम।

वि. वि.—उक्त आठो प्रकाशमय नक्षत्रो के नाम निम्नलिखित हैं —१ रोहिणी, २ आर्द्रा, ३ पुनर्वसु, ४ मघा, ५ चित्रा, ६ स्वाती, ७ ज्येष्ठा और ८ श्रवण ।

विभागी-स. पु. [स विभागिन्] हिस्सेदार, भागीदार ।

वि.—विभाग करने वाला ।

रू भे.—विभागी ।

विभाड-स. पु.—१ नाश, ध्वस ।

२ बिगाड, हानि ।

३ कळह, झगडा ।

४ मारने की क्रिया, सहार ।

५ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया ।

वि —१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—हणू जिसा किंकरा पधोर के वकरा हल्लां, जूधा जीत अनंक रा रोडणा जोधार, । रोळें लंगा लक रा निसंक रा विभाड राम, हाथा झोक रक रा लंक रा देणहार । —र ज. प्र.

२ विनाश करने वाला ध्वस करने वाला ।

३ चीरने वाला, फाडने वाला, विदीर्ण करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

उ०—१ नाळेरत आपड श्रिणी नक्ख, सूरत सतेज सूरिज्ज सक्ख । पाखरि पलाणि काळत पहाड, वरिजाग चडिय वडरा विभाड ।

—रा, ज सी

उ०—२ जुडे खग गेंद जहीं तळजोड, 'अनावत' सीघतमेद अरोड । वहे धज सावळ रोद विभाड, 'अजावत' साह वखा अघनाड ।

—सू. प्र

उ०—३ तुजी-अठार असली तुरस, दीप धूप आगळ दिया । सात्रव विभाड रछक सुवप, कर खवास हाजर किया ।

—वखतो खिडियो

५ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला ।

६ कळह करने वाला, झगडा करने वाला ।

७ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

८ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

९ मारने वाला, वध करने वाला ।

१० तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला ।

११ त्यागने वाला, छोडने वाला ।

रू. भे.—बिभाड, वभाड, विभाड ।

अल्पा —विभाडो, विभाडो

विभाडण, विभाड़णि विभाडणी विभाडणो–वि —१ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ हानि करने वाला, बिगाड करने वाला।

३ कलह करने वाला, झगडा करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ सहार करने वाला, मारने वाला।

उ०–'सुरतो' 'अनै' तणो पण साचै, जुध कजि सदा सकतिवर जाचै। 'किरतावत' वुधसिंघ करारो, गजा विभाडणि राढी (डी) गारो। —रा रू

६ चीरने वाला, फाडने वाला, विदीर्ण करने वाला।

७ पराजित करने वाला, लूटने वाला।

९ तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला।

१० त्यागने वाला, छोडने वाला।

रू भे —विभाडण, विभाडणि, विभाडणी, विभाडणो।

विभाड़णो, विभाड़बो–क्रि स —नाश करना, ध्वस, करना नष्ट करना।

उ०—वडवीर सधीर रेणपुर राजिंद, धोम उजागर धाडि। पहाड ओनाड विभाड पधोरै, राहा चक्कर राडि। —मा. वचनिका

२ सहार करना, (मारना)।

उ०—१ उठै रिणछोड सुजाव अरोड, घडा खळ वेधत सेल धमोड। विभाड़त रोद घडा 'हळवाह', सराहत राह दुहू दळ साह।—सू प्र.

उ०—२ मतिवाळा घूमै नही, नह घायल वरडाय, वाळू सखी ऊ ध्रगडो, भड वापडा कहाय। वाळू ऊ ध्रगडो, बसै भड, वापडा घाव अग सहै नह विभाडै अरि घडा। घणा जसवत रा, जोध विहसै घणा, माडिसी सही, मतिवाळा वेढीमणा। —हा झा

उ०—३ ऊगमण धराहू एम आय, जुध कीध आथमण धरा जाय। वाहे खग गोहिल दळ विभाड इम लीध खेड धर मारवाड।

—सू प्र

उ०—५ वत्तीस आखडी री निवाहणहार, वैरिया विभाडणहार, परभोम पचायण, धण दियण, जस लियण, कळायरो मोर, सूघे भीनै गात, केसरिया पौसाख किया, पाच हथियारा वाधा आण घोडै असवार हुवै छै। —रा सा स

३ तहस-नहस करना, वर्वाद करना।

५ हानि करना, बिगाड करना।

५ चीरना, विदीर्ण करना।

उ०—१ चोधारा लाखीक चाडतो, किलम पचाहर कीया कर। राड विभाड सोहियो राजा, अरक ज्यूई दळ फाड अर।

—चावडदान बारहठ

उ०—२ जेज न कीध ऊतावळ जूटो, वावळ फोजा ही थाट विभाडै। आयो काम महि थट ऊपर, चावळ वस चुहाणा चाडै।

—ठाकुर सूरतसिंह चहुवाण रो गीत

६ टुकडे टुकडे करना, काटना।

उ०—लोहा झट वाढत रोद लगस्स, 'वहादर' 'पीथळऊत' वंगस्स। 'राघावत' आणदसिंघ दुवाह, विभाडत मुग्गळ वीजळ वाह।

—सू प्र.

७ तितर-बितर करना, बिखेरना।

उ०—सूर वाहर चढै चारणा सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आवू। विहड खळ खीचिया तणा दळ विभाडै, पोढियों सेज रण भोम "पावू"। —वा दा

८ मारना, वध करना।

उ०—१ जळ माहै जगदीस विढै मधकीट विभाडै। वतळावै वेसासि, पछै दाणवा पछाडै। —पी. ग्र

उ०—२ भगत थारा जिकै तिका दरसण भयो, जमदगन तणा जगदीस तैना जयो। विभाडी रेणका वडो कीधो विधन, जमदगिनि तणो परमेस माडै जिगिन। —पी. ग्र.

उ०—३ विभाड पचदृणमाथ आथ देण वेस रे, मझार ध्यान कज सो वसै रदा महेस रै। सदा नमत ओधराय पाय घू सुरेस रै, वदा नरेस आन कूण जोड राघवेस रै। —र ज. प्र.

९ युद्ध के सम्वन्ध मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीत कर अधिकार मे लेना।

उ०—विभाडै जादवा-कोट घरकीध वस, सवळ अद खाटिया भवा सारू। तप-वळी अमनमा "भाल" "गंगेव" तो, ममारक पोकरण राव मारू। —गु. रू बं

१० मिटाना।

११ विजय करना, जीतना।

उ०—आवै दाव कळहण दुनियान सोह ऊवरै, बडी धर राव रूका विभाडी। उधारी राडि रजपूत आवेरि धरि, पहाडी कामा लै भोग पाडी। —राव राजा फतैसिंघ नरूका कछवाहा रो गीत

१२ त्याग करना, छोडना।

उ०—गिणै न जळ थळ विकट गिर, आयो रयण उजाड। भय विभाड 'पातल' वहै, पमगा वगा उपाड। —जैतदान बारहठ

१३ सजा देना, दण्डित करना।

१४ पराजित करना, हराना।

उ०—वासठि हजार फोजा रा भाजणहार। छत्रड खुरसाण रा विधूंसणहार। मैमत हाथिआ रा मारणहार। पतिसाहा रा विभाडणहार। पतिसाहा रा पडिगाहण। —र वचनिका

विभाडणहार, हारौ (हारी), विभाडणियौ—वि० ।
विभाडिग्रोडो, विभाडियोडो, विभाड्योडो—भू० का० कृ० ।
विभाडीजणो, विभाडीजवो—कर्म वा० ।
विभाड़णो, विभाडवो, वीभाडणो, वीभाड़वो, वभाडणो, वभाडवो, विब्भाडणो, विब्भाडवो, विव्भाडणो, विव्भाडवो, विभाडणी विभाड्यो—रू० भे० ।

विभाडियोडो–भू का कृ —१ नाश किया हुआ, ध्वस किया हुआ, नष्ट किया हुआ २ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ४ हानि किया हुआ, बिगाड किया हुआ. ५ विदीर्ण किया हुआ ६ टुकडे-टुकडे किया हुआ, काटा हुआ ७ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ८ मारा हुआ, वध किया हुआ ९ युद्ध के सम्बन्ध मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीत कर अधिकार मे लिया हुआ १० मिटाया हुआ ११ त्याग किया हुआ, छोडा हुआ १२ दण्डित किया हुआ, सजा दिया हुआ. १३ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १४ विजय किया हुआ, जीता हुआ
(स्त्री विभाडियोडी)

विभाडो—देखो 'विभाड' (अल्पा , रू भे)
उ०—घट्टा घूम जोयणा अमदा वेण जोम घट्टं, थट्टं थाट सोयणा समदा लैण थाह । भलै धाडो गाहणी जला री ज्यूं लोयणा भीनो, दोयणा विभाडो हल्लं दळा री दाह । —र हमीर

विभाजक–वि [स] विभाजन करने वाला, बाटने वाला ।
स. पु —वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या को विभाजित किया जाता है, भाजक । (गणित)

विभाजण—देखो 'विभाजन' (रू भे)

विभाजणो, विभाजवो–क्रि. स —१ अलग-अलग करना ।
२ बटवारा करना, हिस्से करना ।
विभाजणहार, हारौ (हारी), विभाजणियौ - वि० ।
विभाजिग्रोडो, विभाजियोडो, विभाज्योड़ो—भू० का० कृ० ।
विभाजीजणो, विभाजीजवो—कर्म वा० ।

विभाजन–स. पु [स] १ विभाग या हिस्से करने की क्रिया या भाव ।
२ पात्र, बरतन ।
रू भे.—विभाजण ।

विभाजित–वि [स] जिसके विभाग, हिस्से या खण्ड किये गये हों ।

विभाजियोडो–भू का कृ —१ अलग-अलग किया हुआ २ बटवारा किया हुआ, हिस्से किया हुआ ।
(स्त्री. विभाजियोडी)

विभाज्य–वि. [सं] जिसका विभाजन करना हो या कर दिया गया हो, विभाजन करने योग्य ।

विभाडण, विभाडणि, विभाडणी, विभाडणो—देखो 'विभाडण' (रू भे.)
उ०—कन्हराय कुळ तिलक, जोध जग जेठी 'जाल्हव', 'छाडों' 'तीडो' 'सलख', वीर वैरी विभाडण । —गु रू व.

विभाडणो, विभाडवो—देखो 'विभाडवो, विभाडवो' (रू भे.)
उ०—१ विभाड गयद मयद विध, महि सामद इधकै मच्छरि । 'सूरउत' प्रगट नवनद सिर, गढप्रति मेर गिरद सिरि ।
—गु रू व
उ०—२ जिम धायो हणमत, द्रोण पव्वै उप्पाडण । जिम धायो भीमेण, दैत लक मीर विभाडण । —गु रू व.
उ०—३ रूठो सीस विहारियां, दिल्लीपति सुरतांण । खान पहाड विभाडियो, बैठा फिरै पठाण । —गु रू व.
उ०—४ इग्यारै खोहणी, खान बारैह विभाडै । अरि उलाळ रिणताळ, गज्ज गयणाग अमाडै । —गु रू. व
विभाडणहार, हारौ (हारी), विभाडणियौ—वि० ।
विभाडिग्रोडो, विभाडियोडो, विभाड्योडो—भू० का० कृ ।
विभाडीजणो, विभाडीजवो—कर्म वा० ।

विभाडियोडो—देखो 'विभाडियोडो' (रू भे.)
(स्त्री विभाडियोडी)

विभाणो, विभाबो–क्रि. अ —१ चमकना, झलकना ।
२ शोभा युक्त होना, शोभा पाना ।
विभाणहार, हारौ (हारी), विभाणियौ —वि० ।
विभायोडो—भू० का० कृ० ।
विभाईजणो, विभाईजवो—भाव वा० ।
विब्भाणो विब्भावो—रू० भे० ।

विभाभांनु, विभाभानू–स पु [स विभा+भानु] अग्नि, आग ।
(अ मा.)

विभायोडो–भू का कृ —१ चमका हुआ, झलका हुआ. २ शोभा-युक्त हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ ।
(स्त्री विभायोडी)

विभाव–स स्त्री [स विभाव] १ रति या रस-विधान (साहित्य) में भावो का शरीर या मन को किसी विशेष परिस्थिति मे पहुचाने वाली अवस्था विशेष ।
वि. वि.—आलबन और उद्दीपन इसके दो भेद हैं ।
२ देखो 'वैभव' (रू भे)

विभावन–स. पु [स] १ विवेक, विचार ।
२ वाद विवाद ।
३ साहित्य मे वह अवस्था जिसके कारण पात्र मे प्रदर्शित भाव पाठक या दर्शक अनुभव करता है ।

विभावना–स स्त्री [स.] साहित्य में एक अर्थालंकार विशेष इसमें कारण के विना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबंध होने से भी कार्य की सिद्धि प्रदर्शित की जाती है।

वि वि–इसके छ भेद कहे गये हैं—(१) जिसमें कारण के अभाव मे भी कार्योत्पत्ति हो २ जिसमें कारण की अपूर्णता मे भी कार्योत्पत्ति हो, ३ जिसमे प्रतिबंधक तत्व के उपस्थित होते हुए भी कार्योत्पत्ति हो (४) जिसमे कारणातर से जिस कार्य का जो कारण हो, उसके अभाव मे किसी अन्य कारण के द्वारा कार्योत्पत्ति हो। (५) जिसमें विपरीत कारण से कार्योत्पत्ति हो। (६) जिसमे कार्य से कारण की उत्पत्ति हो।

विभावरि, विभावरी–सं स्त्री [स विभावरी] १ रात, रात्रि। (अ मा., ना मा, ह ना मा.)

उ०—रज उब्बर अवर मग्ग चढै, भ्रम कोक विभावरि सोक बढै। नभ देव विमान न की अवली, उडि गिद्धनि के गन सग चली। —ला रा

२ वेश्या। ३ चतुर व मुखरा स्त्री। ४ कुटनी, दूती स्त्री
५ पतिता स्त्री, पथभ्रस्ट स्त्री। ६ व्यभिचारिणी स्त्री।
७ पहली पत्नी के जिन्दावस्था मे लाई गई दूसरी स्त्री, रखैल।
रू भे—विभावरी।

विभावरिस, विभावरीस–स पु [स विभावरी+ईश] १ चन्द्रमा, चान्द। २ उल्लु घुग्घु।

विभावसु विभावसू–स पु [स विभा+वसु] १ वह वस्तु जो अधिक प्रकाशमय हो।

२ सूरज, सूर्य। (ना, मा, ह ना मा, क कु बो)
३ चान्द, चन्द्रमा।
४ अग्नि, आग। (ह ना मा)
५ गले का आभूषण, हार।

६ आठ वसुओ मे से एक वसु, जो दक्षपुत्री वसु तथा धर्म के आठ पुत्रो मे से अन्यतम थे। ये व्युष्ट रोचि, आतप आदि के पिता व उषा के पति थे।

७ विवस्व का एक पुत्र।
८ युधिष्ठर को विशेषादर देने वाला एक ऋषि।
९ मुर नामक दैत्य का पुत्र, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।
१० नरकासुर के सात पुत्रो मे से एक।

११ सुप्रतीक ऋषि का एक भाई जो स्वभाव से क्रोधी था उक्त महर्षि के शाप के कारण कछुआ हुए थे, और इसी अवस्था मे गरुड ने इसका भक्षण किया था।

१२ एक गधर्व, जिसने गायत्री से देवताओ का सोम छीन लिया था।

१३ वृत्र–इन्द्रयुद्ध के समय वृत्र–पक्ष का एक दानव जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था।

१४ द्युति का पति एक वसु। सोम से प्रीति के कारण द्युति ने इसका त्याग किया था।

१५ एक वैश्य, जिसे पूजापाठ के समय अभद्र घटा का निनाद करने के कारण मृत्युपरान्त घटा के आकार का मुख प्राप्त हुआ था।

रू भे—विभावसु, विभावसू, विभोवस, विभोवसु।

विभास स. पु [स]–१ चमक तेज, प्रकाश, दीप्ति।

२ सवेरे के समय गाया जाने वाला एक राग विशेष। (सगीत)

उ०–१ छत्तीस राग छाजती, निहाव धाव नोवती। भजे विभास भैरवी, रळी कळी कळी रव। —रा. रू

उ०—२ दोय घडी रात लारली रहै सो ब्रह्म मुहूर्त्त। इण वेळा विभास वेळावळ में लाखो-फूलाणी गवीजै—अह लाखी सु विहाण। —बा दा. ख्यात

उ०—३ रात तौ इण रग मैं विदित हुई। इतरै परभात हुवो। भैरु विभास। विलावलि को वखत आयो। गुणीजना राग झिलायो। —पना

३ एक देवयोनि विशेष।

विभासक–वि [स] १ चमकने वाला, प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्।
२ चमकाने वाला, प्रकाश युक्त करने वाला।

विभासणौ, विभासबौ–क्रि अ—१ चमकना, झलकना।

क्रि स—२ चमकाना, झलकाना।

विभासणहार, हारौ (हारी), विभासणियौ—वि०।
विभासिओडौ, विभासियोडौ, विभास्योडौ—भू० का० कृ०।
विभासीजणौ, विभासीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभासा–स स्त्री [स] चमक, आभा, कान्ति, दीप्ति।

विभासियोडौ–भू. का कृ—१ चमका हुआ, झलका हुआ २ चमकाया हुआ, झलकाया हुआ।
(स्त्री विभासियोडी)

विभिंदु, विभिंदुक–स पु [स] एक दानशूर राजा, जिसने मेधातिथि काण्व नामक आचार्य को ४८ हजार गायें दान मे दी थी।

विभिखण—देखो 'विभीखण' (रू भे)

विभिन्न–वि [स] १ तोडा या टूटा हुवा, छिदा या छेदा हुआ।
२ पृथक जुदा।
३ घायल, विधा हुआ, विद्ध।
४ उद्विग्न, विकल, हताश।
५ अनेक प्रकार का, कई प्रकार का।

विभिसण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

विभीखण—देखो 'विभीसण' (रू भे.)

उ०—१ धरी दधि पाज पहाडा धार, पदम्म अढार उतारे पार। पडे तद आंण विभीखण पाय, लियौ जद राघव कठ लगाय। —ह र.

उ०—२ नमो रण रावण-मारण-राम, नमो किय सिद्ध विभीखण काम। नमो कन्ह रूप निकदण कस, नमो व्रजराज नमो जदुवस। —ह र

विभीत-वि (स्त्री विभीता) डरा हुआ, भयभीत।

स पु.—बहेडा या बहेडे का वृक्ष।

विभीतक-स पु-[म. विभीतकी, विभीता] बहेडा या बहेडे का वृक्ष।

विभीसण-वि [स विभीषण] डरावना, भयावह।

स. पु.—१ एक यक्ष।

२ रावण का कनिष्ठ भाई, जो ब्रह्मा के महामति विद्वान पुलस्त्य ऋषि का पुत्र विश्रवस् ऋषि एव सुमालि राक्षस की लक्ष्मी देवी के समान रूपवती पुत्री कैकसी के तीन पुत्रो मे से एक पुत्र।

वि वि —यह धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार एव जितेन्द्रिय था। इसने अपने बडे भाई रावण को राम की पत्नी सीता को वापिस लौटाने का अनुग्रह करने पर रावण ने क्रुद्ध हो कर इसे अपमानित किया था। इसीलिए यह अपने अनल, सपाति,पनस और प्रमाति नामक राक्षस मित्रो के साथ राम की शरण मे आगया था। इसने राम को रावण का वध करने के लिए अनेक परामर्श दिये एव रावण के कार्यों व गुप्त सूचनाओ का परिचय राम को देकर युद्ध मे सहायता प्रदान की थी। इसने ब्रह्मा की अनन्य भक्ति की थी। शैलूष गन्धर्व की पुत्री सरमा इसकी पत्नी थी जिसके गर्भ से कला नामक पुत्री उत्पन्न हुई थी। रावण वध के बाद राम ने इसे ही लका का राजतिलक किया था।

३ विभीषणवशीय राजा का एक नरेश जिसे पाण्डवो ने अपने दक्षिण दिग्विजय के समय परास्त किया था।

रू भे —बभीखण, बभीछण, बभीसण, बभीख, बभीखण बभीसण बम्भीखण, बम्भीछण, बम्भीसण, बिभीखण, बिभीसण, बीभीछन, भभीखण, भभीसण, भम्भीखण, भम्भीसण, वभीखण, वभीसण, वभीखण, वभीसण, विबिखण, विबिसण, विबीखण, विबीसण, विभिखण, विभिसण।

अल्पा.,—बभीखणौ।

विभीसणा-स. स्त्री [स विभीषणा] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

विभीसिका-स स्त्री. [स. विभीषिका] १ भय प्रदर्शन।

२ भयकर बात या भयानक काड।

विभु, विभू-वि. [सं. विभु] १ जो सर्वगत एव सर्वव्यापक हो।

२ बहुत बडा, महान्।

३ अटल, दृढ।

४ बलवान्, शक्तिशाली।

५ आत्मसयमी, जितेन्द्रिय।

स. पु [स विभु] १ उड़ायी तरल पदार्थ विशेष।

२ आकाश, व्योम।

३ ब्रह्मा।

४ भगवान् श्रीविष्णु।

५ शिव, महादेव।

६ प्रभु, ईश्वर, स्वामी।

उ०—नमो अग्राह्यचाह स्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा-श्रत विजयलक्ष्या पत नमो। नमो विस्वाधारी अनल अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वभर नमो। —क का

७ नौकर, सेवक।

८ काल, समय।

९ सौवीर देश के राजा शकुनि का भाई जो अपने चार भाइयों सहित भीम के साथ हुए रात्रि युद्ध मे मारा गया था।

१० रैवत मन्वन्तर का इन्द्र।

११ स्वायभुव मन्वन्तर मे हुआ भगवान् श्रीविष्णु-अवतार।

१२ स्वायभुव मन्वन्तर के तुषित देवो मे से एक।

१३ साध्य देवो मे से एक।

१४ ऋषभदेव के पुत्र भरत के वशज प्रस्ताव और नियुत्सा के पुत्रो में से एक जिसकी पत्नी का नाम रति और पृथुसेन का पिता था।

१५ यज्ञदेव एव दक्षिणा के पुत्रो मे से एक देव।

१६ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक दानव।

१७ एक राजा जो सुविभु का पिता एव सत्यकेतु का पुत्र था।

१८ वरेण्य नामक ऋषि, जो भृगु वारुणि का पुत्र था।

१९ भग एव सिद्धि के पुत्रो मे से एक भव देव।

२० जिताजित देवो मे से एक देव।

२१ अभिताप देवो मे से एक देव।

२२ मगधवशीय महाबाहु राजा का नामान्तर।

२३ स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम जिसे कहीं-कहीं पर स्वय-भुव मनु का पौत्र भी मानते है।

२५ नृप, राजा। (ह ना. मा)

रू भे.—विभु, विभ्रू।

विभूखण— देखो 'विभूसण' (रू. भे)

उ०—१ कापड माल असंख हेम मिण रयण विभूखण। परिमळ चदन अगर, पान कप्पूरह अस्सण। —गु रू व

उ०—२ रग राग विणोद विसातरय वहुय, चडि चाडति सुदर मिंदरय सहुय। मिण माणक कुंदण ककणम दिपत, मोताहळ हार विभूखणय वणित। —गु रू व

विभूखणौ, विभूखबौ—देखो 'विभूसणौ, विभूसबौ' (रू. भे)

विभूखणहार, हारौ (हारी), विभूखणियौ—वि०।

विभूखिश्रोड़ौ, विभूखियोड़ौ, विभूख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभूखीजणौ, विभूखीजबौ—कर्म वा०।

विभूखा—देखो 'विभूसा' (रू भे) (अ. मा, ना मा, ह. ना मा)

विभूखित—देखो 'विभूसित' (रू भे)

विभूखिश्रोड़ौ—देखो 'विभूसियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री विभूखियोड़ी)

विभूत—देखो 'विभूति (रू भे)

उ०—असटग विभूत सनाह उपावै, लोह छतीस सिंघार लिय। सिध बारह पथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप किय। —गु. रू बं

विभूतसिद्ध, विभूतसिध, विभूतासिद्ध, विभूतासिध—स पु [स. विभूति+सिद्ध] १ शिव, महादेव।

२ सिद्धिप्राप्त महात्मा।

३ एक लोक देवता विशेष।

वि. वि —यह विभूतासिद्ध पश्चिमी राजस्थान के चारणवासी नामक गाव का निवासी सोलकी राजपूत था। यह जगल मे रेवड (भेड व वकरियो का झुण्ड) चराया करता था एक बार जगल मे इसे 'पंणी' सर्पने डस लिया। जिससे यह मर गया। मरने के बाद इसने अपनी बहन को ससुराल से पीहर पहुचाई थी और भी कई चमत्कार बताये थे। इस कारण इसे देवता मान कर पूजा जाने लगा। बीकानेर डिवीजन के नोहर सरदार शहर और महाजन के क्षेत्र मे इसकी बडी मान्यता है। साप के काटे जाने पर घायल को इसके स्थान पर ला कर ढोल वादन के साथ उसकी मनोती मनाते है व रात्रि जागरण देते है जिसमे इसका मिरलोका गाते हैं। रेवड के ग्वाले एक गीत भी गाते हैं जिसमे अकाल मृत्यु और चमत्कारो का वर्णन एव प्रशसा है।

रू भे —वभूतसिद्ध, वभूतसिध, वभूतासिद्ध, वभूतासिध, भभूतासिद्ध भभूतासिध, वभूतासिद्ध, वभूतासिध।

विभूति—स स्त्री. [स विभूति] १ बडा होने की अवस्था, बडप्पन।

२ स्वस्थ होने की अवस्था,।

३ समवृद्धि, बढोतरी।

४ वैभव, ऐश्वर्य।

५ धन, दौलत, सम्पत्ति।

६ अधिकार, प्रभुत्व।

७ कान्ति, दीप्ति, चमक।

८ भगवान् श्रीविष्णु का नित्य और स्थायी माना जाने वाला ऐश्वर्य।

९ दिव्य या अलौकिक शक्तिया, जिसके अन्तर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व, आदि आठ सिद्धिया मानी जाती है।

उ०—निमो निमो नाराइण, भगवत निमो विभूति। तुझ तणी वसदेव तण, कुण जाणं करतूति। —पी ग्र.

१० शिव और शैव आदि लोगो के शिर व शरीर पर लगाई जाने वाली वह राख या भस्म जो यज्ञादि के बाद बचती है।

उ०—कानैं मुद्रा कनक की, आसण चीता चरम। लगाय विभूति तप जप करे, तैं साधै सिव धरम। —प च चौ

११ भस्मी या राख।

उ०—१ जगत विदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल। अग विभूति मळै अगछाळा, तू जन गुढिया खोल। —मीरा

उ०—२ वदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊ कपोळ। सेली-नाद विभूति न बटवा, अजु मुनी मुख खोल। —मीरा

१२ सिद्ध पुरुषो के अग्निकुण्ड (धूणी) की वह भस्मी जो रोग निवारणार्थ शरीर पर लगाई जाती है।

१३ राम का एक दिव्य अस्त्र जो विश्वामित्र ने दिया था।

१४ चमत्कार युक्त पुरुष।

१५ मूर्खों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक व्यग्य एव सम्बोधन सूचक शब्द।

१६ एक प्रकार का शारीरिक क्षुद्र रोग जिसमे शरीर पर हलके भूरे-भूरे दाग या चिन्ह बन जाते है। (शुभ-अशुभ)

१७ विश्वामित्र का एक ब्रह्मवादी पुत्र।

रू भे.—वभूत, वभूति, वभूती, विभूत, विभूति, विभूती, भवूत, भवूति, भवूती, भभूत, भभूति, भभूती, वभुत, वभूत, वभूति, वभूती, विभूत, विभूती।

विभूतिद्वादस, विभूतिद्वादसी—स स्त्री [स विभूति+द्वादशी] प्रत्येक शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष।

विभूतिमान, विभूतिवांन—वि [स विभूतिमान] १ शक्तिशाली, बलवान।

२ वैभवशाली, ऐश्वर्ययुक्त।

३ धनी, सम्पत्तिशाली।

४ कान्तियुक्त, चमकीला।

विभुतिसिद्ध, विभुतिसिध—देखो 'विभूतासिद्ध' (रू भे)

विभूती—देखो विभूति' (रू. भे)

उ०—पीनाकी चक्रधारिया ज्यूं प्रेम ओपै तेगा पाणा, गणा मध्य देवा वीचा राजवै उपेग । विभूति अंग पीतपट सुधारै जेही बनौं, सभूनाथ माधव ज्यूं दुवौ इद तेग ।

—महाराज भगतराम हाडा री गीत

विभूतौ–वि —१ राख या भस्मी लगाया हुआ ।

२ देखो 'विभूतासिद्ध' ।

रू भे —भभूतो ।

विभूवस, विभूवसु–सं. पु —जिन ऋषि के पिता, एक ऋषि ।

विभूसरण–स. पु [स. विभूषणम्] १ अलकार आभूषण, जेवर ।

२ अलकृत, या आभूषित करने की क्रिया ।

विभूषणकरता, विभूसणकार–स पु. [स. विभूषण+कर्ता] १ आभूषण जेवर आदि बनाने वाला, स्वर्णकार ।

उ० ' 'पाडकार तुडिकार आरामकार सास्त्रकार मंत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षीरकार शस्यकार वस्त्रकार विभूसणकार पूंतार अस्वसिक्षाकार रथकार साव्यकार । —व स

वि —अलकृत या आभूषित करने वाला ।

विभूसणौ, विभूसवौ–क्रि अ —१ अलकृत होना, शोभित होना ।

क्रि. स —२ अलकृत करना, शोभित करना ।

विभूसणहार, हारौ (हारी), विभूसणियौ—वि० ।

विभूसिग्रोडौ, विभूसियोडौ, विभूस्योडौ—भू० का० कृ० ।

विभूसीजणौ, विभूसीजवौ—कर्म, भाव वा० ।

विभूखणौ विभूखवौ—रू० भे० ।

विभूसा–स स्त्री [स विभूषा] १ शोभा, सुन्दरता ।

२ शोभित होने वाली स्त्री, सुन्दरी ।

रू भे —विभूसा, विभूखा ।

विभूसित–वि [स विभूषित] (स्त्री विभूसिता)१ अलकृत, सुशोभित ।

२ सजाया हुआ, सुसज्जित ।

३ कान्ति युक्त, आभा युक्त ।

उ०—महाराय स्रीकल्याणमल जी जन्म महोच्छव मागळीक वधावणा कराया । महाराजकुमार स्रो दळपतिजी दिन-दिन स्वेत पक्ष चद्रमा री ज्यूं परिवधवत होता पूर्णिमा रे चद्रमा री परिसकळ कळा भरित विभूषित गात्र नीपना छै । —द. वि

रू भे.—विभूखित ।

विभूसियोडौ–भू का कृ १—अलकृत हुवा हुआ २ अलकृत किया हुआ, शोभित किया हुआ ।

(स्त्री विभूसियोडी)

विभेद–स पु [स.] १ विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला तत्व, अन्तर, फर्क ।

२ अनेक भेद-प्रभेद ।

३ अश, खण्ड, विभाग ।

४ काटने की क्रिया, छेदने या तोडने की क्रिया ।

विभेदक–वि. [स] १ खण्डन, छेदन या भेदन करने वाला ।

२ अन्तर, फर्क, विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला ।

विभेदण–स पु. [स विभेदन] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने की क्रिया ।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने की क्रिया ।

३ अश, खण्ड या विभाग करने की क्रिया ।

४ काटने छेदने या तोडने की क्रिया ।

वि (स्त्री विभेदणी, विभेदिणी) १ अन्तर, फर्क या विभन्नता प्रकट करने वाला ।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने वाला ।

३ खण्डन या विभाजन करने वाला ।

४ काटने वाला, छेदने वाला, तोडने वाला ।

रू. भे.—विभेदण, बिभेदन ।

विभेदणौ, विभेदवौ–क्रि स [स विभेदनम्] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करना ।

२ अनेक भेद-प्रभेद करना ।

३ खण्डन या विभाजन करना ।

४ काटना, छेदना, तोडना ।

५ घुसाना, धसाना ।

६ ईर्ष्या उत्पन्न करना ।

विभेदणहार, हारौ (हारी), विभेदणियौ—वि० ।

विभेदिग्रोडौ, विभेदियोडौ, विभेदयोडौ—भू० का० कृ० ।

विभेदीजणौ, विभेदीजवौ —कर्म वा० ।

विभेदियोडौ–भू का कृ —१ अन्तर फर्क या विभिन्नता प्रकट किया हुआ १ अनेक भेद-प्रभेद किया हुआ ३ खण्डन या विभाजन किया हुआ. ४ काटा हुआ, छेदा हुआ, तोडा हुआ. ५ घुसाया हुआ, धसाया हुआ. ६ ईर्ष्या उत्पन्न किया हुआ ।

(स्त्री विभेदियोडी)

विभेदी—देखो 'विभेदक' ।

विभोग–स. पु —१ राज्य कर ।

२ जागीरदारो द्वारा कर स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अंश, हिस्सा, हासिल ।

३ प्रेमपूर्ण आमोदप्रमोद, विलास ।

उ०—राति दिवस रगै रमै, नवरस भोग विभोग । सारीखी जोडी मिळी देव तणै सजोग । —ढो मा.

रू भे —वीभोग ।

अल्पा —विभोगो ।

विभोगो—देखो 'विभोग' (अल्पा , रू भे)

उ०—देलवाडो विभोगो लेतो सु नही लै, दाए लेतो सु लेसी ।

—नैरासी

विभोर–वि [स] १ आनन्द मग्न, लीन ।

२ मदमस्त, मत्त ।

३ विकल, विह्वल, व्याकुल ।

विभोवस, विभोवसु—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

विभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे)

उ०—१ जर जवहर घर जोखवा, लूटाणी सम लाज । मेछा नीमडियो विभौ, सुए चढ़ियो महाराज । —रा रू.

उ०—२ हिंदुवै छात लायो हियै, वडो जतन पायो विभै । नवकोट सोच मिटियो नरा, इसी भात मिळता 'अभै' । —रा रू.

३ परसी कमधा मधुपुरी, जमए किया सिनान । वूठा भड मडै विभै करै उमडै दान । —रा. रू.

उ०—४ दसरत्थ विभै इम नजर दीध, कामना पुत्र धरि जिगन कीध । आविया नाग नर सुर अमाप, आविया ब्रहम सिव विसन आप । —सू. प्र

उ०—५ विभचार माय पायो विभौ, जाता जुगा न जावसी । नित स्वाद लियो पर नार में, याद घरणा दिन आवसी । —ऊ. का

उ०—६ दोजे जोड किसौ न्रप दौलत, राज विभौ अवरेख । सात सुखा भुगतै दिन साजा, वासव हूत विसेख । —र. रू

उ०—७ इद्र प्रभत इद्रह विभौ, इद्र छभा अैनाण । इद्र समीवड रट्टुवड, हिंदूवै सुरताण । —गु रू व

उ०—८ हीर चीर हेम तार घडी मैं विराए होसी, लाखा द्रव्य विभौ सवै हाथी घोडा लाठ । गाम धाम झूठा जाएँ घर्य झूठा लागा नरा, गार रा मिरग रै पड़ी वायरा री गाठ ।—ओपो आढो

विभ्रस–स पु [स विभ्रश] १ अवनति, पतन ।

२ विनाश, विध्वस ।

३ हानि, नुकसान ।

४ ऊचा कगार ।

५ पहाड के शिखर पर का चोरस मैदान ।

विभ्रंसण–स. पु [स. विभ्रंशन्] १ विनाश करने की क्रिया, विध्वस करने की क्रिया ।

२ हानि करने की क्रिया, नुकसान करने की क्रिया ।

३ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया ।

विभ्रसणो, विभ्रंसबो–क्रि स [स. विभ्रश] १ विनाश करना, विध्वस करना ।

२ हानि करना, नुकसान करना ।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

४ सहार करना, मारना ।

विभ्रंसणहार, हारो (हारी), विभ्रसणियो —वि० ।

विभ्रसिओडो, विभ्रसियोडो, विभ्रस्योडो—भू० का० कृ० ।

विभ्रसीजणो, विभ्रसीजबो—कर्म वा० ।

विभ्रसियोडो–भू. का. कृ —१ विनाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ २ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ४ सहार किया हुआ, मारा हुआ ।

(स्त्री. विभ्रसियोडी)

विभ्रम–सं. पु [स. विभ्रम] १ घूमने की क्रिया, भ्रमण, चक्कर ।

२ भूल, गलती ।

३ उतावलापन, उद्विग्नता ।

४ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह ।

उ०—१ उमा कह्यौ इम ईस नै, उपज्यो विभ्रम एह । किंकरि ऊपर महर कर, सकर ! मेट सदेह । —र. रू.

उ०—२ भूपति हसै देखि सिघभेसा, असि कसि वाग कीध आदेसा हसतो न्रप देखे मिध हसियो, विभ्रम ताम न्रपति उर वसियो ।

—सू प्र.

उ०—३ करि सनान भ्रम करै, घरै प्रमध्यान स्यामध्रम । काया जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम । —सू प्र.

५ वह क्रिया जिससे काम वासना उत्प्रेरित हो, प्रीतिद्योतक हाव-भाव ।

६ आश्चर्ययुक्त, चकित ।

उ०—१ गज कोटि राज द्वारो, मिंदर उतग महल अटाळा । सपेख धाम धाम, विसक्रमा विभ्रम भवेत । —गु रू व

उ०—२ विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सविता । वासर विसाळ लहिय, चक-वाएँ मगळ भवए । —गु रू व

७ सयोग शृगार के प्रसग मे स्त्रियो का एक हाव-भाव जिसमें वह कभी क्रोध, कभी हर्ष प्रकट करती है और उत्सुकतावश उलटे-पुलटे वस्त्राभूषण पहन लेती है (साहित्य)

उ०—चित्रसालि चउमास रहै लहै गुरु आदेसा, कोसि कामिनी न्रत्य करइ सुर सुदरी जैसा । हाव भाव विभ्रम करइ कु भयै निठुर निटोल, पूरव प्रेम सभाल प्रियु तू मान हमारो बोल कै ।

—स. कु.

रू भे —विभ्रम्म ।

विभ्रमणी, विभ्रमवौ–क्रि. अ [स. विभ्रमण] १ घूमना, चक्कर लगाना।

२ चितातुर होना, चिंतित होना।

उ०—भूपति आयौ पुर विभ्रमियं, सारगविजै मिळे तिण समियं आसीवाद करै इम अक्खै, राजा किण कारण भ्रम रक्खै।

—सू प्र.

३ भूल या गलती में आना।

४ भ्रमित होना, शकायुक्त होना।

५ आश्चर्ययुक्त होना, चकित होना।

६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित होना।

७ उतावला या उद्विग्न होना।

क्रि. स.—८ भ्रमित करना, शकित करना।

९ आश्चर्यान्वित करना, चकित करना।

१० चितातुर करना, चिंतित करना।

११ गलती करना, भूल करना।

विभ्रमणहार, हारौ (हारी), विभ्रमणियौ—वि०।

विभ्रमिश्रोडौ, विभ्रमियोडौ, विभ्रम्योडौ—भू० का० कृ०।

विभ्रमीजणौ, विभ्रमीजवौ—कर्म, भाव वा०।

विभ्रम्मणौ, विभ्रम्मवौ—रू भे.।

विभ्रमा–स स्त्री.—१ आभा, कान्ति, शोभा, सुन्दरता। (अ. मा, ना-मा, ह. ना. मा)

२ बुढापा, वृद्धावस्था।

विभ्रमियोडौ–भू का कृ—१ घूमा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. २ चितातुर हुवा हुआ, चिंतित हुवा हुआ ३ भूल या गलती में आया हुआ ४ भ्रमित हुवा हुआ, शकायुक्त हुवा हुआ ५ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ, चकित हुवा हुआ ६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित हुवा हुआ ७ उतावला या उद्विग्न हुवा हुआ ८ भ्रमित किया हुआ, शकित किया हुआ. ९ आश्चर्यान्वित किया हुआ, चकित किया हुआ १० कामवासना की ओर उत्प्रेरित किया हुआ ११ चितातुर किया हुआ, चिंतित किया हुआ १२ गलती किया हुआ, भूल किया हुआ।

(स्त्री विभ्रमियोडी)

विभ्रम्म—देखो 'विभ्रम' (रू भे)

उ०–पडै पूर लोह महा जुद्ध मोह। घोर धार तम्म, सवित्ता विभ्रम्म। —गु रू ब

विभ्रम्मणौ, विभ्रम्मवौ—देखो 'विभ्रमणौ, विभ्रमवौ' (रू भे)

विभ्रम्मणहार हारौ (हारी), विभ्रम्मणियौ—वि०।

विभ्रम्मिश्रोडौ, विभ्रम्मियोडौ, विभ्रम्योडौ—भू० का० कृ०।

विभ्रम्मीजणौ, विभ्रम्मीजवौ—कर्म, भाव वा०।

विभ्रम्मियोडौ—देखो 'विभ्रमियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विभ्रम्मियोडी)

विभ्रस्ट–वि. [स विभ्रष्ट] १ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, पतित।

२ नष्ट किया हुआ, ध्वस्त।

विभ्रांत–वि. [स] १ घूमाहुआ, चक्कर खाया हुआ।

२ भ्रमित हुवा हुआ, शकित।

३ चितातुर, चिंतित।

४ आश्चर्यान्वित, चकित।

५ उद्विग्न।

विभ्रांतसील–वि [स. विभ्रान्त+शील] १ चितातुर, खिन्नचित्त व्याकुल।

२ नशे मे चूर।

स. पु [स. विभ्रान्त+शील.] १ बन्दर, बानर।

२ सूर्य मण्डल।

३ चन्द्रमण्डल।

विभ्रांति–स स्त्री [स विभ्रान्ति] १ भ्रमण, चक्कर।

२ भूल, गलती।

३ सौन्दर्य, शोभा।

४ शका, शक, सन्देह।

५ भ्रान्ति, धोखा।

६ घबराहट, उद्विग्नता।

विभ्राज–स. पु. [स.] १ ययाति वशज एक राजा।

२ सुकृत या सुकृति राजा का पुत्र एक राजा।

३ अनघ नामक पाचाल देश का राजा, जो ब्रह्मदत्त राजा का पिता था।

विभ्राजसौरय–स. पु [स विभ्राजसौर्य] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नामान्तर।

विमत्री–स पु–आर्या गीति या खधाण (स्कंधक) का एक भेद विशेष।

उ०—नद भइ भणि नाम सेस सारग सिव बभह, वारण वरण वखाणि नील मदनह ताटकह। सेखर सरपिणि सोइ गगन गिरिण सरभ विमत्री, खीर नयर नर सिधि भाखि निहल इण भती।

—पिं प्र

विमगौ–वि —१ अद्भुत, अनोखा।

२ बिना मागा हुआ।

उ०—सुणा नाग नर देव सकोई, विमगौ दान अछूनी वात। कीत्री किणी न कोई करसी, 'पदम' जिसी लैणायत पात।

—पदमसिंघजी री गीत

विमची-स स्त्री —एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष ।

रू भे —विवची ।

विमणउ, विमणौ-स. पु —१ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष विशेष ।

२ देखो 'दू णौ' (रू. भे)

३ देखो 'विमन' (रू भे)

उ०—पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ । रवि ऊगइ विहसइ कमळ, खिण इक विमणउ थाइ । —ढो मा.

विमता-स स्त्री —१ आपत्ति, विपत्ति ।

२ नम्रता, धैर्य ।

[स. वि=रहित+रा मता=धन, दौलत] ३ कगाली, गरीबी, निर्धनता ।

उ०—विमता का बाग, भूतू का भडार, सिकोतरियु का सहायक, डाकणिया का दार । रोग का रजवाडा, सोग की सिरकार कायरा की कुटी, चोरू का आधार । —दुरगादत्त बारहठ

विमति-वि [स] बुद्धीरहित, मूर्ख ।

विमद-वि [स] जो मतवाला न हो, मद-रहित ।

स पु —सत्यसन्ध राजा ।

विमधु-स पु. [स वि=विशेष+मधु=मीठा] अमृत पियूष ।

उ०—लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानतर । वेद चद्र मिण किया, भूम रभा वळ कुजर । धेन पूज सुरधेन, विमधु चरणाम्रत वदा । धनुख माण न्रप कळप, सख जस मद्द विरदा । —रा रू

वि.—१ विशेप मीठा ।

[स वि रहित+मधु=मीठा] २ कडवा ।

[स विमुग्ध] ३ अज्ञानी, मूर्ख ।

४ विशेप मोहित, उन्मत्त ।

५ विकल, व्याकुल ।

[स विमुद] ६ उदासीन, खिन्न ।

विमन-वि.—१ उदासीन, खिन्नचित ।

२ व्याकुल, उद्विग्न ।

३ चिंतित, दु खी ।

४ क्रूर, क्रुद्ध, निर्दयी ।

रू भे —विमन, बिमनौ, विमन्न, विमन्नौ, विमणउ, विमणौ, विमनौ, विमन्न, विमन्नौ ।

विमनुस्या-स स्त्री [स विमनुष्या] कश्यप एव दनु की कन्याओं में से एक कन्या, अप्सरा ।

विमनौ, विमन्न, विमन्नौ—देखो 'विमन' (रू भे)

विमर—१ देखो 'विवर' (रू भे)

उ०—१ पछै देवी सैणी चारणी दिल्ली आई तरै मालदे ही देवी साथै दिल्ली आयो, पछै देवी सैणी विमर माहे पैठी तठै मालदे ही विमर माहे साथै पैठो । —नैणसी

उ०—२ पक्खै गोरखनाथ, कमण जाइ पैसे विमर । पखै राम दहकध, कमण वेधै एकै सर । —गु रू व.

उ०—३ उतराधो वाउ वाजियो । हेमत रा बरफ ऊपडिया टाढो टमकियो, प्राळो पडण लागो । जिकै धरती रा धणी पताळ वासी भुयंग नै घण रा धणी दौलतवत ओ विन्है एकै वग हूता सु धरती री पुड भेद नै विमरै पैठा । उठै रहण लागा । —रा सा स.

उ०—४ तै 'भाण' तणी अवसाण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण विमर । जोधार पखर लक्ख जिसो, निरो एक पक्खर निडर ।

—गु रू व

उ०—५ 'अमरसी' विमर' पैठो अरांण, 'रासाउत' साधक रूक पाण । साहिब्ब-खान 'नाहर' सुजाव, घण भूंभो वाहै सत्रा धाव ।

—गु रू व

उ०—६ वैरी हुओ विमर मे बैठो, पल लागी सूतो सुख पोढ । थाको गुरड डोकरो थू थयो, ऊपर लीवी रजाई ओढ ।

—टीकमदास

२ देखो 'विमळ' (रू. भे)

उ०—रुववसी राठौड हर, तेरह साख कमध । विमर सकत्ती वरणवा, वधै रूपक वध । —गु रू व.

विमरद-स पु [स विमर्द] १ अच्छी तरह मलने, मसलने की क्रिया, उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने की क्रिया, स्पर्श ।

३ रगडने या रौंदने की क्रिया ।

४ युद्ध, सग्राम ।

५ नाश या बरबादी ।

६ मारने, सहार करने की क्रिया ।

७ कष्ट देने की क्रिया, दु'ख देने की क्रिया ।

८ खग्रास नामक ग्रहण का नामान्तर ।

९ वह व्यक्ति जिसकी मूत्रेन्द्रिय वेकार हो या नही भी हो, नपुसक हिंजडा ।

१० सामर्थ्यहीन व्यक्ति ।

११ किरात राजा ।

१२ सूर्य-चन्द्र समागम ।

रू. भे —विमरद्द ।

विमरदक-वि [स. विमर्दक] १ मर्दन करने वाला, मसलने वाला, उबटन करने वाला ।

२ रगडने या रौंदने वाला, कुचलने वाला ।

३ नाश या बरबाद करने वाला ।

४ मारने वाला, सहार करने वाला ।

५ युद्ध करने वाला , सग्राम करने वाला ।

स पु —चन्द्र सूर्य ग्रहण या समागम ।

विमरदण–स पु [स विमर्दन] १ मलने, मसलने या उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने या स्पर्श करने की क्रिया ।

३ रगडने, रौंदने या कुचलने की क्रिया ।

४ युद्ध, सग्राम ।

५ नाश, बरबादी ।

६ मारने या सहारने की क्रिया ।

७ दु ख या कष्ट देने की क्रिया ।

विमरदित–वि [स विमर्दित] १ मला हुग्रा, उबटन किया हुग्रा ।

२ छूग्रा हुग्रा, स्पर्श किया हुग्रा ।

३ कुचला या रौंदा हुग्रा ।

४ युद्ध किया हुग्रा, सग्राम किया ।

५ नाश किया हुग्रा, बरबाद किया हुग्रा ।

६ मारा हुग्रा, सहार किया हुग्रा, मृत्त ।

७ पीडित, दु खी ।

देखो 'विमरद' (रू भे)

विमरस–स पु. [स विमर्श] नाटक की पाच सन्धियो मे से एक सन्धि विशेष, मुख्यफल का उपाय गर्भसन्धि की अपेक्षा अधिक उद्भिन्न होता है किन्तु शापादि के कारण अन्तराय युक्त होती है ।

वि वि —इस सन्धि के तेरह अग अर्थात भेद होते हैं जो निम्न-लिखित है—अपवाद, सकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसग, खेद प्रतिपेध, विरोध, प्ररोचना, आदान, और छादन ।

विमरीर–वि.—जबरदस्त, महान्, शक्तिशाली ।

उ०—१ गाजै घण वाजै अवागळ, दुगम रूप विमरीर सर्भ दळ । हरख सनेह करै अम हित नूं, पट्टण राज दीव प्रोहित नू —सू प्र

उ०—२ अति भूळ गहमह आवळा, विमरीर भड रिण वावळा । खग धार आछट है खुरा, धर भोगवता मुरधरा । —सू प्र

उ०—३ इम कहे पौरस ऊफणॅ, विमरीर झळहळ दळ वणै । चढि तुरग थाट चलाविया, इम कही गढ पुर आविया । —सू प्र

उ०—४ वह मडै गजा मेघाडवर, कठठै आराबा सकळ । तन ससत्र कसै चढिया तुरा, दुगम सूर विमरीर दळ । —सू. प्र.

विमळ, विमल–वि [स विमल] १ मल रहित, निमल ।

२ सफेद, साफ, स्वच्छ, चमकीला, उज्जवल ।

उ०—जिण हिज वार तेजमणि जादव, घर बुगलाण पुरी नव लाघव । इम निसि सुकळ वाग त्रप गाए, विमळ छद्रका साज वणाए । —सू प्र

३ जिसमे आर-पार देखा जा सकता हो, पारदर्शक ।

४ जिसमे कोई दोष न हो, दोष रहित, निर्दोष ।

५ सुन्दर, मनोहर, शोभायुक्त ।

उ०—१ अधरा हसणी सूं उदं, विमळ हास दुतिवत । जो सध्या सू चद्रिका, फैली आण फबत । —बा. दा.

उ०—२ मूंछा जाय फुहफिया. रसण भरूके दत । मूतो मैंना घोकर्जे हूं बळिहारी कत । कत बळिहारी लै मनाविय कामणी । धरै मन धू-धड साधि सकळा धणी । पाढि सत्र लोहडा घोकरै पोढियो, विमळ मूछा मिळै फरूकै वाढियो । —हा झा

६ पावन, पवित्र ।

उ०—१ ओमामंडळ विमळ थळ, जळ आग्रत जगवद । धुत्र उज्जळ देवळ अमळ, निरख नमै नरयद । —रा रू.

उ०—२ पेखै कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मगळ ग्रह एक वगि । एणि करण सुभ क्रम आचरता, जाणियै वेलि जपति जगि —वेलि

उ०—३ नाथ अनाथ निराळव तु नारीयण सदा सिवि तू हीज तु भगत कीधो मधण । चक्रधर निमो चक्रभुज तु हीज, चिदानद, विमळ अहाग्यान अत्र ध्यान तु गोपि त्रिदि । —पी प्र

उ०—४ छत्रपति प्रेम भाव सुख छाजै, विमळ इसा मुनि तठै विराजै । थिर करि पाइ मिस्ट जळ थाटै चदणादि लै पर बह चाटै । —सू प्र.

उ०—५ लोहित चदण देव वलभा धरकाळेय कहै कवि धीर । केसर तणो तिलक नित कीजै, विमळ भजन कीजै बळिवीर ।

—ह ना मा

७ स्वच्छ, साफ ।

उ०—१ अपति होइ मुख विमळ करै तदि, जुत मुखवास अप धारै जदि । मिरच सीत एळच मधि पावै, छितपति पान कपूर खुवावै । —सू प्र.

उ०—२ आनन विमळ मुखोप अपारा, तांबूलादि दियै तिण वारा । एहिज सदन सिसर हिमवतां, आसण पखी पसम अनता ।

—सू प्र

८ शुद्ध । (वाणी)

उ०—ऐसी विध पडतराज चातुरय कळा प्रवीण त्रिलोकू का प्रवध अनेक विध विमळ वाणी सै उच्चरै जिनूं सै रीझ स्रीमहाराज कनक जग्योपवीत चढाया । —सू प्र

स पु —१ चादी ।

२ सेंधा नमक ।

३ मणिवर एव पुण्यजनी के पुत्रो मे से एक यक्ष ।

४ जीमूत राजा का पुत्र एव भीमरथ राजा का पिता, एक राजा।

५ इल राजा का पुत्र, जो दक्षिणापथ का राजा था।

६ राम के अश्वमेधीय यज्ञ के समय शत्रुघ्न का सहायक रत्नातट नगरी का एक राजा।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे छत्तीस मात्राएँ होती हैं।

उ०—ताइ सातसौ छेनालीस, वदिग्रा रूप वरणवा बीस। मात्रा छत्रीस एह अनमाल, विमळ छद सुणिजो गुणवान। —ल पि

८ देखो 'विमलनाथ'

उ०—१ विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनडो विलूधो रे ताहरैं रूप, जेम विलूधो रे कमल मधूप।—वि कु

उ०—२ केवलग्यानी नइ निरवाणी, सागर महायस विमल वर वाणी। सरवानुभूति स्रीधर दत्त नामी, दामोदर स्री सुतेज स्वामी। —स कु.

उ०—३ रिसहु थप्पिउ जेण सु निरम्मलो, विमल नामु वहइ गुणि उज्जलो। ठविउ नेमि जिणिइ जगवल्लहउ, परमतेजिहिं तेजलु तं कहउ। —जयसेवर सूरि

रू भे.—विमळ, विमल, विमळा, विमर, विम्मळ, विम्मल।

विमलक—स पु एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, नग।

विमलकथ—वि.—सुयशधारी, कीर्त्तिवान।

विमलगिरिंद, विमलगिरि—शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम।

उ०—१ तासु दुरगति न व्हैं नरक त्रियच री, सुगति सुर नर लहै सुगति सारी। विमल आतम तिको विमलगिरि निरखसी, धनौ धन स्रीधरमसील धारी। —ध. व. ग्र

उ०—२ सघ अनेक तिहा आविया, भेटण विमलगिरिंद। लोकतणी सख्या नहीं, साथि गुरु जिणचद। —ऐ जै का स

विमलजिन—देखो 'विमलनाथ'।

उ०—दिव्य नाद सुर दुदुभि वाजइ, पुस्प व्रस्टि सुर विरचीजइ री। समयसुदर कहइ तेरैं विमलजिन, प्रातीहारज पेखीजइ री। —स कु

विमळता, विमलता—स स्त्री [स विमल+रा प्र ता] १ निर्मलता स्वच्छता, उज्जवलता।

२ पावनता, पवित्रता।

३ सुन्दरता, मनोहरता।

४ मधुरता, मीठापन।

विमलतीरथ—स पु [स विमलतीर्थ] एक पवित्र तीर्थ स्थान, जहा तालावो मे स्वर्ण एव रजत वर्ण की मछलिया पाई जाती हैं। उक्त तालावो मे स्नान आदि करने से इन्द्रलोक की प्राप्ति होती है।

विमलदान—स. पु. [विमल+दान] १ देवताओ का चढावा, प्रसाद।

२ नित्य नैमैत्तिक के अतिरिक्त केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाने वाला दान। (पुराण)

विमळध्वनि—स. पु [स] १ सिंहावलोकित रीति से रखे हुए दोहे और समान सवैये से मिलकर बनने वाला एक छन्द, जिसमें छः चरण होते हैं।

स स्त्री —२ मधुर आवाज, सुरीली आवाज।

विमलनाथ—स पु—एक तीर्थंकर, जो उत्सर्पिणी के पाचवे व अवसर्पिणी के तेहरवें अर्हत् माने जाते हैं।

वि वि—इनका जन्म कम्पिलपुर नगर मे हुआ था। इनके पिता का नाम कृतवर्म राजा था तथा माता का नाम श्यामा देवी रानी था।

विमलपिंड, विमलपिंडक—स पु [स] कश्यप एव कद्रू के नाग पुत्रो मे से एक नाग पुत्र।

विमळरूप—स पु.—हस। (ना मा)

विमळा, विमला—स स्त्री [स विमला] १ वासुदेव की नायिका एक देवी।

२ सुरभि की पुत्री रोहिणी की दो कन्याओ मे से एक कन्या, गाय।

वि वि—दूसरी कन्या का नाम अनला था जिससे पिण्डाकार फल देने वाले सात वृक्ष हुए।

३ देवी का एक विशेषण।

उ०—धवा धवळागर धव धू धवळा, क्रसना कुवजा कचग्री कमळा चळाचळा चामुडा चपळा, विकट चिकट भ्रू वाळा विमळा। —देवि

४ पुरोत्तम नामक तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी।

५ सरस्वती देवी का नामान्तर।

६ एक ग्रह का नाम।

वि स्त्री.—निर्मल, साफ, स्वच्छ।

विमळाचळ, विमलाचळ, विमलाचल—स. पु. [स. विमलाचल] शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम। (डि को)

उ०—हा रे मोरा लाल गिरि तत्न सेत्रुजी नदी, जोवौ आणि विवेक। इणि परि विमलाचल तणी, तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल। —वि कु

विमलात्मा—वि. [स विमल+आत्मा] जिसकी शुद्ध आत्मा हो।

स पु—चन्द्रमा, चाद।

विमलादरी, विमलाद्रि, विमलाद्री—देखो 'विमळाचळ'।

विमळापत, विमळापति, विमळापती विमलापत, विमलापति,-विमलापती—स पु. [स विमलापति] १ ब्रह्मा।

२ स्वायंभुव मनु।

३ दधीचि ऋषि।

४ आदित्य।

५ रन्ति राजा।

विमली—स स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

विमलेसर, विमलेसुर, विमलेस्वर—स पु [स विमलेश्वर] एक पवित्र तीर्थ का नाम विशेष।

उ०—पुस्कर पेखि प्रभास पण, कालिंजर कास्मीर। विमलेस्वर वरजा वली, गंगा-सागरतीर। —मा. का प्र

विमांण—स. पु [स. विमान्] १ देवताओ अप्सराओ आदि का वह यान, रथ या उडनखटोला जो आकाशमार्ग से चलता है।

उ०—१ चम्मरा ढुळता चोजा अम्मरा विमांणां चढे, वढे क्रीत प्रथी सारी करता वाखाण। इंद्र रा आवास सुरा लोक मे आणंद आयो, पायो देव असी सारा देवा मे प्रमाण। —वादरदान दधवाडियो

उ०—२ च्यार घडी वाजी सुजड, झड मत्तौ सर वाण। पडिया हिंदू धार मुह, चडिया अच्छर विमांण। —रा रू.

उ०—३ देवा रथ्य रेवत सारंग राजै, देवी विमाण पालखी पीठ आजै। देवी प्रेत आरूढ आरूढ पथ, देवी सागर सुमेरू गूढ सथ। —देवि

उ०—४ सुंडाला सुमेर सा सजिया अमर विमांण सी असवारी रे। चचळ हय चित चाल चुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे। —गी रा.

उ०—५ जूसरा धवळ अप्रमाण जब, की विमाण पवमाण कथ। सुलताण मुगल माथै सज्या, राजथान वीकाण रथ। —मे म.

२ आधुनिक वायुयान जो आकाश मे उडते हैं और पेट्रोल से चलते हैं।

३ मृत व्यक्ति के शव की वह अरथी जो फूलमाला आदि से सुसज्जित होती है।

४ सोने, चादी या झोल की लकडी से बना हुआ पालकीनुमा वाहन जिसमे प्राय' भगवान् की सवारी निकाली जाती है।

५ ऐसा मकान जिसमे सात खण्ड हो।

६ वह देव मदिर जिसका ऊपरी भाग वहुत ऊचा व लम्बोतरा हो।

७ वाहन और सवारी।

उ०—अऊत री धन लेवा री आखडी खटवन री माल लेवा री आखडी। गाव फिलसी देवा री आखडी । सीव माह सुं वळद गाव मे लावा री आखडी। विखे विमाण गाव छाडवा री आखडी। —रा. सा. स.

रू भे.—वमाण, विवाण, विमाण, विमाणग, विमाणगी, विमांणण, विमांन, बिवाण, वीमाण, वेवाण, ववाण, विमाणग, विमाणी, विमान विवाण, विवाणि, विवाणी, विव्वाण, विव्वाणी।

विमाणग—देखो 'विमांण' (रू भे)

उ०—वारंगा उमगा रंगा विमाणगा सोक वाज, रारगा अभगा भडा दमगा री सार। पनगा विहगा ढंगा नारगा अभीच पडा, सारगा खतगा अगा मातगा दू सार। —जदीदाम खिडियो

विमाणवी—स स्त्री —एक लोक देवी जिसके प्रकोप से वातरोग होना माना जाता है। (अमरत)

विमाणिक—देखो 'वैमानिक' (रू भे.)

उ० —'भवनपति' 'व्यतर' नै जोतिसी, 'भेद' विमाणिक पावै। सुर वर तै मिलनै सगला, नाम 'निनाणू' आवै। —जयवाणी

विमांणी, विमाणीक, विमांणीय—देखो 'वैमानिक' (रू. भे)

उ०—१ भवनपती इद्र वीसै भिल्या जी, सोल दू वितर सार। जोइस दु दस विमाणी जुड्या जी, चउसट्ठि इद्र सुविचार। —ध व ग्र.

उ० —२ त्रिहु तणा पति वायु कूण मे जाण ए, सुर विमांणीय नर नारि ईसाण ए। बार परिखद मद मच्छर छोड ए, भूख त्रिख वीसरे सुणे कर जोड ए। —ध व. ग्र

उ०—३ प्रदिक्षणा रूप थी अगनि कूणे करी, गणधर साधवी तिम विमाणी सुरी। ज्योतिखी लुवणिनी वितरी त्री पणें, नैरित कूण जिण वाणि ऊभी सुणे। —ध. व ग्र

विमांणौ—देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०—१ सुर भणी सुरलोक म्यु, ऊतरे अमर विमाणो रे। अपछर आरतीया करइ, कामणि कचन वानी रे। —प च. चौ.

उ०—२ जासी सवारथ सिद्ध विमाणो, चवि महाविदेह वखाणी जी। मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणी, दढपइण्णा नौ परिमाणी जी। —जयवाणी

विमान—देखो 'विमाण' (रू. भे)

उ०—१ निजर परक्खै राठवड, अकबर तेज दिणद। जाणे व्योम विमान सम, भोम प्रगटयो इद। —रा. रू.

उ०—२ साभलउ सोधरमेद्र तणी स्थिति, सोधरमी रत्नमय भूमि सिक्र सिंहासन सूरय जम झलकतउ तिहा वसइ सक्र इसि नामिइ सोधरमेद्र दक्षिण लोकारद्धस्वामी, एरावणवाहन, बत्रीस लाख निमानणउ आधिपत्य पालइ लीला लगइ ••••। —व स.

उ०—३ * दिसदिसइ वहकइ कस्तागर, इसिउ विमांन, माहि सुवरणमय स्तभ, ऊपरि रत्नमय पूतलीना सरभ, असख्य गवाक्ष मत्तवारण मगरमुहा ··· ,। —व स

विमानिकदेव—देखो 'वैमानिकदेव' (रू. भे)

विमांस—स. पु [स.] वह माप जो खाने योग्य न हो, अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित मास।

विमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपराति राजान सिलामति रितिराज वसत वैसाख मास रा मगळाचार विमाह रा सुख विलास करता सरद रित आई छै। आसोज मास आइ सप्रापति हूआे छै। —रा सा स

विमात, विमाता, विमात्र, विमात्री—स. स्त्री [स. विमातृ] जन्म देने वाली माता के जीवित अवस्था मे या मृत्युपरान्त अपने पिता द्वारा परणीता दूसरी नारी, सौतेली मा।

विमारग—स पु [स विमार्ग] १ बुरा रास्ता, कुमार्ग।

२ बुरे आचरण, कुआचरण।

विमाळ, विमाल—स. स्त्री.—देरी, विलम्ब।

उ०—चडिया कटक्क आवक्क चाळ, वेढिसी 'जइत' न करइ विमाळ। असराळा ताजी ऊमगेहि, पन्नगा नेस धूजइ पगेहि। —रा ज. सी

सं पु—विचार।

वि.—चुप, शान्त।

उ०—मिरजं खबर निवाब नूं पहुचाई ततकाळ। आयो फिर महमदअली, सुण नह रह्यो विमाळ। —रा रू.

रू भे.—विमाळो।

विमाळणौ, विमाळवौ—क्रि स—विचार करना।

उ०—उण वात विमाळै अखिलया, चाळै कज हूल चल्लिला। भूपाळ भलै मोटा भुजा, नवकोटै छळ झल्लिया। —रा रू

विमाळणहार, हारौ (हारी), विमाळणियौ—वि०।

विमाळिअोड़ौ, विमाळियोड़ौ, विमाळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विमाळीजणौ, वीमाळीजवौ—कर्म वा०।

विमाळियोड़ौ—भू का कृ.—विचार किया हुआ।

(स्त्री विमाळियोड़ी)

विमाळौ—देखो 'विमाळ' (रू भे)

उ०—१ दुस्सह माण भला जूघ देखै, पाली गौ थाणं गिर पेखै। विढवा नह कौ ताळ विमाळै, चाळो खग मातौ गुणचाळै। —रा रू

उ०—२ माहव मान तणौ पट मोटै, कियो सवाय अमैं' नवकोटै। भगवत 'मुहकम' तणौ भुजाळौ, विढता न धरै ताळ विमाळौ। —रा. रू

विमास, विमासण—स पु.—विचार।

उ०—१ जोरइ पिण हिव ताहरइ सखी, गलि माहि घालिस वाह। जे मिलवा नै उल्हसै सखी, किसी विमासण ताहिरै। —वि कु.

उ०—२ कहता वै हाथै करि नाखियो रे, वानर ऊडि गयो आकास रे। सीह अरूपी लागो मारगे रे, रहीयो मन मा विमास रे। —वि कु.

उ०—३ भारत खेतर मे सामठा, किण मा वेटा जाया रे। तीन सघाडे आविया, मैं हाथा सू वेहराया रे। करै विमासण देवकी। —जयवाणी

उ०—४ कुण कहिम्यं मुज मायडी जी, घडी घडी नै छेह। कहसू केहनै नानडीजी, सवल विमासण एह-रे जाया। —जयवाणी

उ०—५ विरत्तौ वेग न काइ विमास, विढेवा राउ खडे वरहास खुरा रवि फीण उमट्ट्यो खाणि, लगोडै लागै लाल लगाणि। —राव जैतसी री रासौ

विमासणौ, विमासवौ—क्रि स—१ विचार करना।

उ०—१ तैं ऊपरि ए पदमणी, आई आपा पासि। स्यु करिवौ सूधो मतो, वेगो कहो विमासि। —प. च चौ

उ०—२ सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार। राणी राय विमासियउ, तेडइ साल्हकुमार। —ढो मा

उ०—३ ढोलइ मनह विमासियउ, एक करीजइ एम। करहइ चढि आपा खडा, नरवर पहुचा जेम। —ढो मा

उ०—४ विद्या हीणा विप्र, तुं हीइ विमासी जोइ। तुरका-केरइ बोलडै, चिण न वूंटइ कोइ। —मा का प्र.

उ०—५ पाताळ जाती सेस राखी, मनि विमास्यु आहि। देवता नी दया आणी, मूकी ई माहि माहि। —रूकमणी मगळ

२ समझाना।

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखै वीस वसाळ। ऊचै थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ। —ढो मा.

विमासणहार, हारौ (हारी), विमासणियौ—वि०।

विमासिअोड़ौ, विमासियोड़ौ, विमास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विमासीजणौ, विमासीजवौ—कर्म वा०।

विमासियोड़ौ—भू का कृ.—१ विचार किया हुआ २ समझाया हुआ।

(स्त्री. विमासियोड़ी)

विमाह—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—१ ईख रस्स अहिफेणा, अरथ आगम डर ठाहे। पाना चग, मजीठ रग, उछरग विमाहे। —ह र.

उ०—२ इळ धुकि लचक सीस अहिवाळा, चद फटक खडिया फळ चाळा। जगत छत्रदिस लिखै जवावा, सफो विमाह कि समर सताया। —सू प्र

उ०—३ जाइ राजा सुं मुजरो कीयो। कहियो महाराज घरा री ख्वर आई छै। वेटी री विमाह छै। राजा सिरपाव दे विदा दी उवै चोर कन्है गया कह्यो ईंडो विह्यो। —चौवोली

उ०—४ महाराज विमाह रै आगम मगळ घमळ खमाइचो कीजै। पिण ओ महाभारथ री आगम। अेक वार सूरा पूरा अवसाणसिघ सिरिआ रा वडा राग माहे वडा दूहा गवाडो। —र वचनिका

विमाहणो, विमाहवो—देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू. भे.)

विमाहणहार, हारो (हारी), विमाहणियो—वि०।

विमाहिओडो, विमाहियोडो, विमाह्योडो—भू० का० कृ०।

विमाहीजणो, विमाहीजवो—कर्म वा०।

विमाहियोडो—देखो 'विवाहियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विमाहियोडी')

विमाहो—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—वसतपचमी करी विमाहो, सुध निरदोख वेद विध साहो। इम ठहराय महल त्रप आए, पदमणि ताम महासुख पाए। —सू. प्र.

विमुंहो—२ देखो 'विमुख' (रू. भे)

विमुक्त-वि. [स] १ छूटा हुआ, मुक्त। २ आजाद, स्वतत्र। ३ त्यागा हुआ, छोडा हुआ. ४ फेंका हुआ. छोडा हुआ. ५ दायित्व या कार्यभारादि से मुक्त।

रू भे.—विमुगत।

विमुक्ति-स. स्त्री. [स] १ छूटने या मुक्त होने की अवस्था, छुटकारा।

२ आजादी या स्वतत्रता।

३ अलगाव, विछोह।

४ मूक्ति, मोक्ष।

रू भे —विमुगति।

विमुख-वि [स] १ जो किसी कार्य, विपय या बात आदि पर दत्त-चित्त न हो।

उ०—मैं लख चोरासी धारि जोनि, का वोलत का गहत मोनि। जनम जनम दुख वोहत पाय, जव राम नाम तें विमुख थाय। —अनुभववाणी

२ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध।

उ०—१ हरीया गुर तें विमुख नर, पाछा दरस माहि। अेसे भागा गूरवा, दफतर चढिसी नांहि। —अनुभववाणी

उ०—२ आप गुरदेव का दसत राखै नही, और कुं ग्यान उपदेस देवै। आठ ही पोहर हरिनाव कुं उचरै, साच नही जाणि गुर विमुख सेवै। —अनुभववाणी

उ०—३ रामजी री माळा रै वासदी लगाय धणी सूं छानै वचायोडी गूजी हाथ में राखती तो म्हनै अें दिन नी देखणा पडता। आज म्हारा बेटा ई म्हारा सुं विमुख व्हैगा। मा रै विना कोई इण दरद नै समझ नी सकै। —फुलवाडी

उ०—४ जिसा स्वामीजी कहता था जिसाइ निकळिया। पछै सिवरामदासजो सतोकचदजी दोनूं सुलभ पणें रह्या। उवै दोनूइ विमुख रह्या तो पिण स्वामीजी उणांरी गिणत राखी नही। —भि द्र

३ उल्टा, विपरीत।

४ पुनरावर्तन, प्रत्यावर्तन।

५ उलटा, औंधा।

६ रहित, विना।

७ जिसके मुह न हो, मुख-रहित।

स पु —दक्षिणी भारत का एक ऋषि। (प्राचीन)

रू भे —वमुख, वमुह, वेमुख, वमुख, वमुह, विमूहो विमुह, विमुहि।

अल्पा —विमहो, विमुहो, वेमुहो, वमुहो, विमुखो, विमुहो, विमूहो, विमूही।

विमुखता-स स्त्री [स] १ विरोध, प्रतिकूलता।

२ अप्रसन्नता।

३ विरति।

विमुखो—देखो 'विमुख' (अल्पा रू भे.)

उ०—क्रपणा जस भावै कठै, विधि विमुखा नूं वेद। 'वाका' भोजन नह रुचै, ज्यारै वप ज्वर खेद। —वा दा

विमुगत—देखो 'विमुक्त' (रू. भे)

विमुगति—देखो 'विमुक्ति (रू. भे)

विमुग्ध-वि [स] १ मोहित हुवा हुआ, आसक्त।

२ भ्रम में पडा हुआ, भ्रमित, भ्रान्त।

३ उन्मत्त, मत्त, मस्त, मनवाला।

४ घबराया हुआ, विकल. परेशान।

५ पागल हुवा हुआ, वावला।

विमुग्धकारी-वि [स] १ मोहित करने वाला।

२ पागल वनाने वाला।

३ उन्मत्त या मस्त करने वाला।

४ डराने वाला, परेशान करने वाला।

५ भ्रम मे डालने वाला।

विमुदर, विमुद्र-वि [स विमुद्र] खिला हुआ, विकसित।

रू भे —विमुद्र ।

विमुह—देखो 'विमुख' (रू भे.)

उ०—१ विमुह करण रण साह दळ, 'मुहकम' का 'हरियद'। सोच निमेडण निय दळा, खळा उखेलण कद । —रा रू.

उ०—२ सूरा नूर दरस्सिया, तोलै सेल करग्ग । वायर ज्यौं लग्गा विमुह, कायर आठूं मग्ग । —रा रू

विमुहाळ-वि —औंधा, उल्टे मुख ।

उ०—विमुहाळ काघाळ विचाळ विपे, उवचाळ वगाळ सिगाळ अप । घड घाव वडाळ ओलाळ घडै, पड नाळ प्रनाळ चणाळ पडै । —पा प्र

विमुहि—देखो 'विमुख' (रू भे)

उ०—कळि चालि लंकाळ कहै इम 'केहरि', विढिवा कजि ऊछजि केवाण । चलियै दळै विमुहि क्यू चालू, चालियौ विमुहि नकी चहुवाण । —नाहरखान चोहान किसनदासोत री गीत

विमुहो—देखो 'विमुख' (अल्पा रू भे)

उ०—१ ऊससै आभ लगा आवता, राव तणी रज देख रथ । रैवत रोक न रहियौ राणो, पुळिया विमुहा पाटपत । —चानण खिडियौ

उ०—२ सामो 'जोध' तणै सै जूतै, साकी सलह सजतै सैण । थय कुजर विमुहा कुभाथळ कागमुहा दीठा "कुभेण" । —गेहौ खिडियौ

उ०—३ रहियौ पण सावत जेतरती, जुध घात विमा सत 'पाल' जती । किम जावत 'बूडाय' राव कहै, विमुहौ रण मारग 'पाल' वहै । —पा. प्र

उ०—४ औरगसाहि पातिसाहि रा तपतेज अपरवळ दईवार अवतार जिण आगै जमराणो विमुहा खडै । तिण सू तीन पोहर हाथू कै महाराज जसराज ही लडै । —र वचनिका

उ०—५ एक घडी वग्गी सुजड, घड धड लग्गी धार । पिसण थया विमुहा पगा, गहि वग्गा तोखार । —रा रू

उ० - ६ 'करन' 'प्रताप' तणी जुध कारण, विमुहा करै जिसो अरि वारण । 'अजवावत' जोधौ' दळ आगळ, केवी गळै जेम जळ कागळ । —रा. रू

विमूंहो—देखो 'विमुख' (अल्पा रू भे.

उ०—आभ विमूंहा माणसा है घर मेलण हार । धरणीधर घर छडिया, अच्छै तू आधार । —ह र

विमूढ-वि [स विमूढ] १ मूर्ख, नासमझ ।

२ विशेष रूप से मोहित, अत्यन्त मुग्ध ।

३ भ्रमित, भ्रान्त ।

४ चेतना-रहित, चेतना-शून्य ।

विमूढगरभ-स पु यौ [स विमूढगर्भ] वह गर्भ जिस मे बच्चा मर गया हो और प्रसव बहुत कठिनाई से होता हो ।

विमूळ-वि [स विमूल] १ मूल रहित, विना जड का, निर्मूल ।

२ बरबाद, नष्ट ।

विमूळण-सं पु [स. विमूलन] १ समूल उखाड फेंकने की क्रिया, उन्मूलन ।

२ नाश करने की क्रिया, ध्वस करने की क्रिया ।

विमूहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा , रू भे.)

विमेक, विमेख—देखो 'विवेक' (रू भे)

उ० —१ तिलोई न जाणै ताहरा, ब्रह्मा जिसा विमेख । काइम तूं सबखो करै, अबखो मारग एक । —पी ग्र.

उ० —२ विसव कियौ तैं वीस हथ, कियौ विमेख विचार । इम्या व्रिदि लीधौ इसौ, कीधौ लै करतार । —पी ग्रं.

उ०—३ उचारै वेद विदुख अनेक, विचारै जिण सू विधि विमेक । —रामरासौ

उ०—४ पिंगळ भरह पुराण पराक्रत, विध विध जाणण सयळ विमेक । 'जैसा' हरी न भगवट जाणै, ऊनर करै न जाणै अेक । —ईसरदास बारहट

विमोक्ख, विमोक्ष, विमोख-स. पु. [स विमोक्ष] १ बन्धनमुक्त करने की क्रिया, मुक्तिदेने की क्रिया ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष ।

३ सूर्य एव चन्द्र का ग्रहण से मुक्त होना ।

४ सुमेरु पर्वत ।

विमोखण-स. स्त्री.—१ बधन मुक्त करने की क्रिया, रिहा करने की क्रिया ।

२ तीर आदि छोडने की क्रिया ।

वि.—१ बधन मुक्त या रिहा करने वाला ।

२ तीर आदि छोडने वाला ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाने वाला ।

विमोखणो, विमोखबो-क्रि स. [स. विमोक्षणम्] १ बधन मुक्त करना, रिहा करना ।

२ तीर, गोली आदि छोडना ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाना ।

विमोखणहार, हारो (हारी), विमोखणियो—वि० ।

विमोखिओडो, विमोखियोडो, विमोख्योडो—भू० का० कृ० ।

विमोखीजणो, विमोखीजबो—कर्म वा० ।

विमोचियोड़ो—भू. का. कृ.—१ बन्धन मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ २ तीर, गोली आदि छोड़ा हुआ ३ जन्म मरण से मुक्ति दिलाया हुआ।
(स्त्री विमोचियोड़ी)

विमोचक—वि —१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति दिलाने वाला।

विमोचण—सं पु [सं विमोचन] १ बन्धन-मुक्त करने की क्रिया, रिहा करने की क्रिया।
२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष।
३ एक तीर्थ का नाम जो कुरुक्षेत्र में है, जिसमें स्नान करने से क्रोध एवं इन्द्रियों के वशवर्ती न होने वाले पुरुष को प्रतिग्रहजन्य पाप से मुक्ति मिल जाती है।
४ नाश करने की क्रिया, नष्ट करने की क्रिया।
वि —१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति दिलाने वाला।
३ नाश करने वाला।
रू भे —विमोचन।

विमोचणो, विमोचबो—क्रि स —१ बन्धन-मुक्त करना, रिहा करना।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करना।
विमोचणहार, हारो (हारी), विमोचणियो—वि०।
विमोचिग्रोड़ो, विमोचियोड़ो, विमोच्योड़ो—भू० का० कृ०।
विमोचीजणो, विमोचीजबो—कर्म वा०।

विमोचियोड़ो—भू. का कृ —१ बन्धन-मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ। २ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त किया हुआ।
(स्त्री. विमोचियोड़ी)

विमोद—स पु [स. वि=विशेष+मोद=प्रसन्नता] १ अत्यन्त हर्ष, मोद, प्रसन्नता।
उ०—गिरतै सिर जग गयी गहियो, रवि मोर विमोद ढकै रहियो। असवार विनां बग जूंझ वही, नपताग कियौ न मोद नही। —पा. प्र
वि [स. वि =रहित+मोद=प्रसन्नता] हर्ष रहित, मोद रहित, प्रसन्नता रहित।

विमोह—स पु [स वि =विशेष+मोह] १ अत्यन्त मोह।
उ०—विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग तांणिय सविना। वासर विसाळ लहिय, चक वांणं मगळ भवण। —सू क व
२ मोह, अज्ञान, भ्रान्ति।
उ०—१ अईयौ ईस अनत नांम कल्यांण निरजण, देव किसन दीपान ध्यान दईना भ्रम भजण। अलख नील न्नील विसव विमोह [illegible] —गी. ग्रं
उ०—२ [illegible]
उ०—३ [illegible] —रा क,
३ एक छन्द का नाम।
वि —१ [illegible]।
[स वि =रहित+मोह] २ मोह रहित।
उ०—[illegible] विमोह।
—[illegible]

विमोहक—वि [स] १ मोह उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, आकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ अचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह-रहित या भ्रम रहित करने वाला।

विमोहन—स. पु [सं विमोहन] १ मोहित करने की क्रिया, आकर्षित करने की क्रिया।
२ लोभ उत्पन्न करने की क्रिया, ललचाने की क्रिया।
३ अचेत या बेसुध करने की क्रिया।
४ कामदेव के पांच बाणों में से एक बाण।
५ एक नरक का नाम।
६ मोह रहित करने की क्रिया।
वि —१ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ अचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह रहित करने वाला।

विमोहणो—वि (स्त्री विमोहणी) १ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला।
उ०—देखी मोर रूपा [illegible] देखी [illegible] गिरि। देखी [illegible] विमोहणी [illegible], देखी [illegible] वांणी। —देवि
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला
३ भ्रमित या भ्रान्त करने वाला।
४ अचेत या बेसुध करने वाला।
५ मोह रहित करने वाला।

विमोहणौ, विमोहबौ–क्रि अ [स विमोहनम्] १ मोहित होना, मुग्ध होना।

उ०—१ अवा आदि तरण आभासै, परम कवर लखि हरख प्रकासै। सुदर चख मुख कर पद मोहै, मजु रूप लख कज विमोहै।
—रा रू

उ०—२ मन हरखै तन उच्छव मोटै, कियौ वणाव 'अभै' नव-कोटै। सुरग वसन सुदर तन मोहै, वेखि रूप रति भूप विमोहै।
—रा. रू

उ०—३ सुदर पाघ मोड सिर सोहै, मुगति पति लख जगत विमोहै। वचन सहास हुलास विहारै, नयण हरखजुत भिरत निहारै।
—रा. रू

२ आकर्पित होना।

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुखघर न पत उदत सवाई। सरवर अचळ निमळ जळ सोहै, मघ पूरन विधु रसमि विमोहै।
—रा रू.

३ लालायित होना, ललचाना।

उ०—१ फल कदळी स्रोय स्वादं अफारा, छ्यं स्रोय बादाम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारगिया रम सोहै, महादेव देवेस मेनै विमोहै।
—रा रू

उ०—२ अनेकं फळं भारिया वक्ख ओपै, लियै चाहि सेवा न को जाय लोपै। सुगधकर सुदर फूल सोहै, महाथभ सौरभ सिभू विमोहै।
—रा रू

४ भ्रमित या भ्रान्त होना।

५ अचेत होना, वेसुध होना।

६ मोह रहित होना।

क्रि स —७ मोहित करना, मुग्ध करना।

उ०—१ सूर धीर साखंत नीर तें मोहै, कायर नर कपं साध कूं विमोहै। स्रीमहाराज कौ रूप अैसौ निजर आयौ, जाणं रोहिणी कौ संग विरोचन पायौ।
—रा रू

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयद कुरग नह जूटै। मझि जळ क्रीड न सहल विमोहै, अस सिवका गज रथ न अरोहै।
—सू प्र

उ०—३ ग्वसै तें साहि विनाकध सेव, वचाडिय देवा आदू वेध। जटाधर अध दइत्त जळाय, विमोहै रूप अनूप वणाय।
—हू र

उ०—४ हर पवन आवं छै। कवळ करा मैं। नवरतन की पोचा सोहै छै। मनरग लोभ पराग विमोहै छै। आय ऊभी जीसी देव रभा। उरवसी लजाय। सुर राज अचभा।
—पना

८ लालायित करना, ललचाना।

९ भ्रमित या भ्रान्त करना।

१० अचेन करना, वेसुध करना।

११ मोहरहित करना।

विमोहणहार, हारौ (हारी), विमोहणियौ - वि०।

विमोहिओडौ, विमोहियोडौ, विमोहयोडौ —भू० का० कृ०।

विमोहीजणौ, विमोहीजवौ —कर्म, भाव वा०।

विमोहणौ, विमोहबौ—रू भे.।

विमोहा–स पु —प्रत्येक चरण मे दो रगण वाला एक छद विशेष जिसमे ६ वर्ण होते है। (रूपदीप पिंगळ)

विमोहित-वि. [स] १ मोहित, आकर्पित।

२ ललचाया हुआ, लालायित।

३ भ्रमित, भ्रान्त।

४ अचेन, वेसुध।

विमोहियोडौ–भू का. कृ —१ मोहित हुवा हुआ, मुग्ध हुवा हुआ. २ आकर्षित हुवा हुआ ३ लालायित हुवा हुआ, ललचाया हुआ. ४ भ्रमित हुवा हुआ, भ्रान्त ५ चेतना रहित हुवा हुआ, वेसुध हुवा हुआ. ६ मोह रहित हुवा हुआ ७ मोहित या आकर्पित किया हुआ ८ लालायित किया हुआ, ललचाया हुआ ९ भ्रमित या भ्रान्त किया हुआ १० अचेत किया हुआ, वेसुध किया हुआ. ११ मोह रहित किया हुआ।

(स्त्री विमोहियोडी)

विमोही–वि [सं विमोहिन्] १ मोहित या आकर्पित होने या करने वाला।

२ लालायित होने या करने वाला, ललचाने वाला।

३ भ्रमित या भ्रान्त होने या करने वाला।

४ चेतनारहित या वेसुध होने या करने वाला।

५ मोह रहित होने या करने वाला।

विमोद्गल–स पु [स विमोद्गल] अगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार।

विम्मर—देखो 'विवर' (रू भे)

उ०—झगरा गिरा सहरा थका झाटकै, विम्मरा गिरा हूता विचाळै। नव नवा प्रसण नवकुळ जही नीवडै, किया आहूत धख-पख काळै।
—राजा अनिरुद्धसिंघ गोड रौ गीत

विम्मळ, विम्मल—देखो 'विमळ' (रू भे)

उ०—१ मुडिया पिंडमैगळ असि्स उछळळ रावत विम्मल लडि पडिय। दुजडा दूनै दळ विहूडै रज्जळ, कदळ पेखै रिव गडिय।
—गु रू व

उ०—२ पूजै पग विम्मळ वेद पुराण, अलीयळ नाथ लियै अग्राण। रमै पग-छाह मधुकर रिक्ख, तवै पग नाग सरीसा तक्ख
—हू र

विय—देखो 'विय' (रू भे)

वियग्मणि—स पु. [स. वियद्मणि] सूरज, सूर्य।

वियटल—देखो 'विटळ' (रू भे)

उ०—वाय वियटल वैसाखना, आहा थी अलगु वाय। पागरणा परनारिना, ऊडा डितु आय। —मा का प्र

वियत—स. पु. [स. वियत्] आकाश, व्योम, गगन। (अ मा)

उ०—जग सीत प्रगटत पंथ चख जग, अगनि दिसि अनुक्रमं। अगि जगत जरण प्रति सुखद, अबर वियत जळधर वेस मैं। —रा रू.

रू. भे—वियत, वयद वयद, वियद।

वियतमणि, वियतमणी—स पु [स वियत्+मणि] १ सूरज, सूर्य।

२ चान्द, चन्द्रमा।

वियति—स पु [स] नहुष राजा का एक पुत्र।

वियद—देखो 'वियत' (रू भे)

वियदगगा—स स्त्री [स] आकाशगगा।

वियाण—देखो व्याण' (रू भे)

वियाणी—वि स्त्री—जन्म देने वाली।

वियान—१ देखो व्यान' (रू भे)

२ देखो 'वियान' (रू भे)

उ०—विमान आसमान मे निसान सैं रहैं नही, वसुधरा वियान सी वगीलगी वहै नही। छलग वाछरु धरु न उच्छरं चरे चिरे फलग भैंचकी थकी न नैंचकी चकी फिरै। —ऊ का

वियाई—देखो व्याई' (रू भे)

वियाज—देखो व्याज' (रू भे)

उ०—आगै जाइ आलि केलि ग्रह अतरि, करि अगण मारजण करेण। सेज वियाज खीरसागर सजि, फूल वियाज सजै तसु फेण। —वेलि

वियाणी, वियावो—देखो 'व्याणी, व्यावो' (रू. भे)

उ०—१ दादू वभ वियाई आतमा, उपज्या आनद भाव। सहज सील सतोख सत, प्रेम मगन मन राव। —दादूवाणी

उ०—२ तेणि पातिसाहि आया सातरि कुण सहइ? कुणइ सहिजइ? कुण की जुवनी, कुण की प्रासी? कुण माइ वियाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी? —अ. वचनिका

वियापणो, वियापवो—देखो 'व्यापणो, व्यापवो' (रू भे.)

उ०—१ चौथं पहरं रैणिदं, वणिजारिया तू पक्का हूवा पीर वे। जोवन गया जरा वियापी, नाही सुधि सरीर वे। —दादूवाणी

उ०—२ आखय ऊमा देवडी, सभळि पिंगळ राइ। विरह-वियापी मारुई, नहिं राखण कउ दाइ। —ढो. मा.

वियापणहार, हारो (हारी), वियापणियो—वि०।

वियापिओडो, वियापियोडो, वियाप्योडो—भू० का० कृ०।

वियापीजणो, वियापीजवो—भाव वा०।

वियापियोडो—देखो 'व्यापियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वियापियोडी)

वियापि, वियापी—देखो 'व्यापी' (रू भे.)

उ०—१ सकल वियापी सगि वसै, हरि सत्रथ सिरजणहार। साहिब ही तैं पाइए, साहब का दीदार। —ह पु वा

उ०—२ त्रिविध ताप सासो न सूळ, परमभेद आनदमूळ। उदै अस्त आवै न जाय, सकळ वियापि सहजभाव। —ह पु वा

उ०—३ मनसा अटी मिटी सब दौर, गहि गुर ग्यान वसै निज ठौर। जन हरिदास गोविंद गुसाई, सकळ वियापी राम सहाई। —ह पु वा

वियायोडी—देखो 'व्यायोडी' (रू भे)

वियार—१ देखो 'विकार'।

२ देखो विचार'।

वियाळू—देखो 'व्याळू' (रू भे)

वियाव—देखो 'विवाह' (रू भे)

वियास—देखो 'व्यास' (रू भे)

उ०—वियास भट्ट कै महत, जोनिकी प्रहामण। कथा पुराण भागवत, भारथ रामाइण। —गु रू व

वियासियो—देखो 'बयासियो' (रू भे)

उ०—रतन पाट बैठो रघू, देखो साईदास। समत पनर वियाभियै भेसरोड चद्रभाम। —साईदास री गीत

वियासी—देखो बयासी' (रू भे)

वियोग—स पु [स.] १ सयोग का अभाव। (डि को)

उ०—१ कोडक पुरब भव सबध म रे आइ मिल्यौ सजोग। भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यौ रे, वणियौ एम वियोग। —प च चौ

उ०—२ रहै नही नामं कोई रोग, वली सहु जायं सोग वियोग। सदा हुवं भोग सयोग सवेव, दीयं सुख वछित रीखभदेव। —ध व, ग्र.

२ विच्छेद, अलगाव।

उ०—१ स्वामीजी नवी दिक्षा लीधा पछै केतलैएक वरसै तीन जणिया दिक्षा लेवा त्यारी थइ। जद स्वामीजी बोल्या थे तीन जणिया माथै दिक्षा लेवो अनै कदाचित एकण रो वियोग पड जावै तो दोयां नै कल्पै नही सो पछै सलेखणा करणी पडै। —भि द्र

उ०—२ जकै व्यापार करै छै। त्याह् की स्त्री, गाय अर वछडा। विभचार ही करणहारी स्त्री अर लंपट। ये तीन्यो रात्रि कै समै मेळा हुता त्याह नै वियोग हुग्रो। —वेलि टी

उ०—३ नाह वियोगै दुखणी तेह, भूरि क्रस कीधो छै देह। रहै एकातै लेइ ग्रावास घरम घ्यान मन माहै जास। —वि कु

३ ग्रवसर, मौका।

४ विरह जुदाई।

उ०—१ दसरथ राय दियो देसवटउ,रहघउ वनवास जी। वलि त्रियोग पडघउ सीतानउ, ग्राठं पहर उदास जी। —स कु

उ०—२ खसत्रोय लगाई। ग्राप ढोलियै पोढियो। भरमल पवन करै छै। वडारण पगं हाथ देवै छै। वाता करै छै। खुस-वखत छै हसै छै। घणा दिना रो वियोग भागो, सौ दोनूं परम राजी छै। —कुवरसी साखला री वारता

५ साहित्य में एक प्रकार का ग्रलकार विशेप जिसमे प्रेमी प्रेमिकाग्रो के विरह का वर्णन होता है।

वि —विना, रहित।

क्रि वि —ग्रलग, वियोग मे।

रू भे —विग्रोग, विजोग, वियोग, विवोग, वजोग, विग्रोग, विजोग।

ग्रल्पा ,—विजोगी, वियोगो।

वियोगण, वियोगणी–स स्त्री [स वियोगिनी] वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम उससे ग्रलग या दूर हो, विरहणी।

रू भे —विजोगण, विजोगणी, विजोगिण, विजोगिणि, विजोगिणी विजोगिन, विजोगिनि, वियोगिण वियोगिणि, वियोगिणी, गिणी, विवोगण, विवोगणि विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी।

वियोगात–वि [स.] जिसकी कथा का ग्रत दु खपूर्ण हो।

रू भे —विजोगात।

वियोगिण, वियोगिणि, वियोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू भे)

उ०—सीलवती नै ही एहिज जोगता, घरम पणै द्रढ थाय। वलि विसेख ही जेह वियोगिणी धरम करइ मन लाय। —वि कु

वियोगी–वि [स] जो ग्रपनी स्त्री या प्रिया से ग्रलग या दूर हुग्रा हो, विरही।

स पु —वह नायक जो प्रिया के वियोग के कारण दु खी हो।

रू भे —विग्रोगी, विजोगिय, विजोगी, वियोगन, बियोगी, विजोगी।

वियोगो—देखो 'वियोग' (ग्रल्पा., रू भे)

उ०—राणी माळ्या ढपला नै सोगो रै, म्हारै व्हाला पडै वियोगी। हा हा करू हिवै कासूं रै, माहरो हिवडो फटै मा सू। —जयवाणी

वियोजक–वि [स] १ वियोग उत्पन्न करने वाला।

२ दो सयुक्त वस्तुग्रो को ग्रलग करने वाला।

वियोजण–स स्त्री. [स वियोजन] १ दो सयुक्त वस्तुग्रो को ग्रलग करने की क्रिया, पृथक करने की क्रिया।

२ गणित मे किसी वडी सख्या मे से छोटी घटाने की क्रिया, बाकी।

वियोजित–वि [स.] ग्रलग किया हुग्रा, पृथक किया हुग्रा।

स स्त्री —किसी वडी सख्या मे से छोटी सख्या के घटाने के वाद ग्राई हुई सख्या।

वियो—देखो 'दूजो' (रू भे)

उ०—१ चहुव रग कुळ चल्लणी, वियो न चल्लै कोय। चाड न घट्टं बूंद की, सीस पलट्टं तोय। —रा. रू

उ०—२ ग्रनि गढा विलम भ्रम ऊपजै, खळ त्या उद्यम खभियो। 'गजसाह' वियो गुज्जर सिरै, 'ग्रभैसाह' ग्रारभियो। —रा. रू.

उ०—३ क्रत सोभति रेसम लूब करै, घुरवा किर फूलिय सभ्र घरै। ग्रत उग्र तुरगम ग्रग वियै, क्रम सोभत ग्रावत ढोर कियै। —रा. रू

वियोवन–स पु —१ युवा-ग्रवस्था के वीच का समय।

२ युवा ग्रवस्था के वाद का समय।

विरग, विरगू, विरगोडो विरगो–वि [स विरग] (स्त्री विरगी)

१ ग्रप्रिय, ग्रसुहावना।

उ०—१ ततखण माळवणी कहइ, साभळि कत सुरग। सगळा देस सुहामणा, मारु देस विरग। —ढो मा.

उ०—२ सेभ्र ग्रावौ सुदरी, ज्यौं सोभा दै सेभ्र। तौ विन सेभ्र विरगियां, कही न लागै जेह। —कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ छूटो नीर चखा सतराम ऊवरता छेला, सरूपदास री छाती उभेला ममद जामी ग्राज म्हानै छोड ग्रकेला कठीनै जावो, कोयला विरगा हेला दे रही कमघ। —स्वरूपदास

२ जो समय के प्रतिकूल हो।

३ कडवा, वेस्वाद।

४ वदशक्ल, वदरूप, कुरूप।

५ वदरग, वुरे रग का।

६ ग्रनेक रगो वाला, ग्रनेक रगो का।

उ०—कंपू मार तेगा तीजी ताळी सी फुरगी कीधी, जका बाद नौरगी प्रजाळी भुजा जोम । मानू तारफी विरंगी काळी घटा माथै, भूप 'डूगै' विधंसी फिरगी वाळी भोम । —गिरवरदान कवियो

७ भयकर, भयावना, भयावह, डरावना ।

उ०—घटा टोप मेघा गडड़ु त गाजै, द्रुववकं तरंगा विरगांह वाजे । लिचापिच्च लागी घडी ताल भाजे, ग्रहो कोइ राते ग्रठै ग्रम्ह काजे । —घ व ग्र

८ उदासीन, खिन्न ।

उ०—१ नाह मिळियो सही विरग रग नीसरै, क्रमतां ग्रयी सिर जेज नह को वरै, रीसियै 'जसै' भड रिमा घड रोळिया, फूटि ग्रस ग्रसमरा रुधिर भ्रकवोळिया । —हा भा.

उ०—२ नयणह ग्रागलि गयड कुरगू, राय चीति जां हुयउ विरगू । जोइ वामु दाहिणउ । —सालिभद्र सूरि

९ ग्रशुभरग (वर्ण) ।

१० फीका, नीरस, ग्रानन्दरहित ।

उ०—वडां लिया भड ग्रनड कस तुरग सजतै विखो, ग्रभग जग जीत ग्रद भुजां ग्रोपै । सूर वड सुरग रग चढियो ग्रसमरां, किया नवरग विरग दुरग कोपै । —सबळो सांदू

११ ग्रनुराग या इश्क रहित ।

१२ दु'खपूर्ण, पीडायुक्त, सन्तापयुक्त ।

उ०—वरसण लागा वैण विरगा, तरसण लागा तीठा । परसण लागा पाव दुहेला, दरसण छेला दीठा । —ऊ. का

१३ प्रभावरहित, रौवरहित ।

१४ प्रतिष्ठा रहित वेइज्जत ।

१५ जोश रहित, ग्रावेशरहित ।

१६ शोकसूचक, शोकजनक ।

१७ भद्दा, बुरा ।

उ०—१ मुरधर छोड परधरा वसै, लगै ग्रधांणा ग्रोपरा । वासडा रै सारै विरगा, जाणै दरखत तोप रा । —दसदेव

उ०—२ वे विरगोडा रूख, जठै सूखी छाहडली । हाण फांग सी घास, काय काया री ढिगली । —सक्तिदान कवियो

१८ शुष्क, सूखा, निर्जल ।

उ०—देस विरगउ ढोलणा, दुवी हुया इहा ग्राइ । मन गमता पाम्या नहीं, ऊट कटाळा खाइ । —ढो मा

१९ कडवा, कर्णकटु ।

२० विकट ।

उ०—ताय सुरग वात कहिवै तणी, दोग विरगी दहन री । उर जेज घरी म करो उरड, ऊनी तेज ग्रगन्न री । —रा रू

२१ जिसका रग बदल गया हो, परिवर्तित रग का ।

उ०—दव लग्गां वन ग्रतरै, छूटै पवन ग्रछेह । धूम दिसा तिम धुधळै, व्योम विरगं गेह । —रा रू

रू भे—विरग, विरगौ ।

विरच-स स्त्री.—१ एक ग्रौषधि का नाम ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान मिलामति गोळी, घूरगा, ग्रासण कवळ, कुटी, नागामिणी विरच, मुफर, तांवेसर, मदा कांमेसर, जिता मारिग्रा ग्रोराध फेरीजै छै । —रा. सा. स

२ देखो 'विरचि' (रू. भे) (डिं नां मा.)

उ०—१ वांचै जत्रवेद विरच वगाण, प्रकासै व्यास ग्रठार पुराण । सत्री दुज वैस गया सुद्र सोज, हुतो ज हुतो ज हुतो ज हुतो ज । —ह र.

उ०—२ महा मनोहर महल छवि, ग्रति ऊचा ग्रावास । रतन-जटत राजत ग्रधिक, तहा विरच निवास । —गज उद्धार

उ०—३ ग्रेमी पुरी विरच की, का पै वरणी जाय । मत परवांण वखाणियै, ग्रपणी ग्रपणी भाय । —गज-उद्धार

उ०—४ जमी सहाया नागेंद्र लोक उपाया विरच जांणै, धूरजटी तावां ऊच मावा मेर धोग । ग्रावा लोम रिगी रोम लम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सामवेद वेदागा धीरावी संभू सींग । —हुकमीचद खिडियो

विरचनाथ—देखो विरचि' (रू. भे.)

विरंचसुत—देखो 'विरचिसुत' (रू भे)

विरचि-स पु [स विरच विरचि] ब्रह्मा का नाम, विधाता ।

उ०—सकनकूर साखात सराहै सहचरी, काम विरचि विमास क खी हय सू करी । जेहरि घूघरमाळ पगा झुणकं जिया, कूजै वारिज पुंड्र वचा कलहसिया । —बा. दा.

रू भे—विरच, विरचनाथ, विरचि, विरचिय, विरची, वरच, विरच, विरचनाथ, विरचिनाथ, विरज, विरजौ ।

विरंचिनाथ देखो 'विरचि' (रू. भे.)

विरचिसुत-स पु [स विरचि+सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद का एक नाम ।

रू. भे.—विरचसुत ।

विरज, विरजौ-स पु.—१ चावल के साथ बनाया जाने वाला मास विशेष ।

उ०—तठा उपरायत सीरो-पूडी वर्ण छै । सोहितै सारु देवजीभि जोयजै छै । विरजै सारु चोखा मगायजै छै । पुलाव सारु कमोद वीणजै छै । काठां गोहुवा री ग्राटी मंगायजै छै । सू नाळेर-गरा गोळवा रोटा वणायजै छै । —रा सा स.

२ चावल का बनाया जाने वाला, मीठा व्यजन विशेष ।

३ देखो 'विरचि' (रू भे) (ना. मा)

विरंडी—१ देखो 'भ्राडी' (रू भे)

२ देखो 'भिंडी' (रू भे)

विरउ–वि —हल्का, तुच्छ ।

उ०—अम्हे किसा छा ? मिच्छत्रास मिथ्यात्वनउ सस्कार तिणि करी निकृस्ट विरउ भाव तेहतउ गलिउ गुरु गुरुउ विवेक तत्वातत्वविचार जेहनउ छइ । —षष्ठीशतक

विरक–स पु, [स वृक] भेडिया ।

उ०—सीकोतरि सवकणी,प्रेत डचकणी अपारा । विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारा । गिरध चील गोमायु, विरक जवू रसवाया । काक कक की गिणँ, ग्रास पळ सभळ आया । —रा रू.

रू. भे —वरक ।

विरकत—देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—१ नदी ताळ जहा नही जहा वापी सर कुवा । सवही उजड देस देख मन विरकत हुवा । —दूलची जोइयँ री वारता

उ०—२ अेसै नटवा वास चढि, उलटा खेलै दाव । जनहरीया यूं जगत मैं विरकत मेलै पाव । —अनुभववाणी

उ०—३ रीती देख न विरचियै, भरी न धरीयै चित्त । हरीया रीती अर भरी, दोऊ सु विरक्त्त । —अनुभववाणी

उ०—४ वैरागी विरकत भली, जुग सु न्यारा मन । हरीया गिरही सो भली, सव सु दासा तन । —अनुभववाणी

उ०—५ हरीया हिरमच लायकँ, वैठै विरकत होय । विरकत सोई जाणियै, विखै विरता सोय । —अनुभववाणी

विरक्ख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे)

उ०—नमौ हयग्रीव निगम्म निखात, वडा कवि ब्रह्म वदै वड रमात । नमौ प्रथु राजा आदि पुरक्ख, नमौ वर लच्छि परम्म विरक्ख । —ह र.

विरक्त–स पु [स] १ रामस्नेही साधुओं का एक भेद विशेष, जिसके साधु नगे वदन, नगे शिर और नगे पाव रहते हैं । (मा म)

२ केवल ताल देने के काम आने वाले वाजे ।

वि [स] १ अत्यन्त लाल, गहरा लाल ।

२ सासारिक प्रपचो आदि से दूर रहने वाला, सासारिक वन्धनों से मुक्त ।

३ उत्तेजनायुक्त, उत्तेजित ।

४ भोग विलास से दूर रहने वाला, जिसे कामवासना न हो ।

५ वदले हुए रग का, वदरग ।

६ अनुराग या आसक्ति रहित ।

७ कर्मानुष्ठान के फल की आशा न रखने वाला, त्यागी ।

उ०—१ मिथ्यादृस्टि तणी उत्थापक, व्यक्त गुणे सुविलासी । वलि विरक्त मोहादिक भावैं, एक युक्ति अभ्यासी । —वि कु.

उ०—२ पण राजा को दान लेऊ नही विरक्त नृ अण वरावर छौ । —पचदडी री वारता

८ खिन्न, उदासीन ।

रू भे.—विरकत, विरक्त, विरगत, विरकत, विरगत, विरत, विरता, विरत्त, विरिकत, विरिक्त, विरित ।

विरक्तता, विरक्ति–स. स्त्री, [स] १ उत्तेजना ।

२ खिन्नता, उदासीनता ।

३ अनुराग या आसक्ति का अभाव, विमुखता ।

४ भोग विलास आदि से परे रहने की अवस्था या भाव ।

रू. भे —विरगता, विरगति विरता, विरति, विरती, विरत्ति, विरत्ती ।

विरख—देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

उ०-१ तरवर सदा पुराणा पाता, थाया नवा पखै विण थात । सव जाणग सु विरख नव सहसी, पूजै नवा पुराणा पात । —हरीराम ऊहड री गीत

उ०—२ वट तमाल पीपल विरख, अरजन समी अपार । ईढ तजै पत्र एक री, सुगन पाचेइ सार । —रा रू.

उ०—३ विना पेड जाह विरख है, विन फूला फळ लाय । विना पख जाह भवर है, अधर विलवै भाय । —अनुभववाणी

उ०—४ हरीया चदण वावनो, वाकै पासि विरख । सोई चदण दूसरा, कीया आप सिरख । —अनुभववाणी

विरखभाण, विरखभांणु, विरखभान, विरखभांनु—देखो 'व्रसभानु' (रू भे)

उ०—मेरै गोपाळजी कूं रोटी वनाय देऊ, एक छोटी दूजी मोटी । मेरै गोपाळजी का व्याह करूगी, विरखभांन की वेटी । —मीरा

विरखा—देखो 'वरसा' (रू भे)

उ०—१ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहग घरि वीच मावै नही, सुरै विवाण सवाहिया । —पी ग्र.

उ०—२ रुड मुड से खड, गुडै गज माणकडडह । अगनि वाण आरिक्ख, वीज विरखा व्रहभडह । —गु रू व.

उ०—३ विना नीर जाह कवळ है, विन विरखा वरसाळ । विना मास जाह रुत है । मात पिता विन वाळ । —अनुभववाणी

उ०—४ उलटिया पेम चहु ओर विरखा लगी, गिगन घनघोर विन इद गाजै । खळकिया नीर तन तठ नाडा भरघा, व्रह्म परफूळ खट कवल छाजै । —अनुभववाणी

उ० —५ रसीद भाई कह्यो —जद तो वाभा थें घणा फोडा भुगतिया ग्रैडी ठा'व्हेती तो म्हैं सफाम्याने गाडी लियातो । घणी ई वाट जोई । सेवट विरखा देखनै रवाना व्हैणो ई पड्यो ।

—फुलवाडी

विरखाकरण—देखो 'वरसाकरण' (रू भे)

विरगत—देखो 'विरक्त' (रू भे)

विरगता, विरगति—देखो 'विरक्तता, विरक्ति' (रू भे.)

विरगरावणो, विरगरावबो—क्रि म —दीनता दिखाते हुए दीन वचन बोलना; गिडगिडाना ।

उ०—ऊजळो सुभाव, चड्‌ड चल्लो, गाय री वेटी पण मगळा सूं गूघटी पल्ली । सूघी गळ रा ऊपरला दात । विरगरावती सी बोलै लीलडी सी काढै । कीसू ही लेडै नी ग्रावै मिनखा नै हुस'र दात दिखाळै ।

—दसदोख

विरगरावणहार, हारो (हारी), विरगरावणियो—वि० ।

विरगराविग्रोडो, विरगरावियोडो, विरगराव्योड़ो—भू० का० कृ ।

विरगरावीजणो, विरगरावीजवो—भाव वा० ।

विरगारावियोडो—दीन वचन बोला हुग्रा, गिडगिडाया हुग्रा ।

(स्त्री विरगरावियोडी)

विरडक—स पु —१ बाधा, विघ्न, रोक, रुकावट ।

२ कुएं से पानी खीचने मे कोई रोक ।

विरडणो, विरडबो—क्रि. ग्र —१ घुसना, धसना ।

उ०—विरड ऊरड मुरड वड वड हूर हड हड रभ हड हड, बीजट ग्रोभड कघ वड वड दडड रतपड मूंड दड दड । —जगो खिडियो

२ कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ०—वारण विरडियो दरवार विचाळै, कायरा हुई करारी । 'वाघा' हूरै ग्रागरै वाई, कुंवरपणैं कटारी ।

—रतनसिंह राठौड री गीत

३ लडना, झगड़ना ।

४ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोही होना ।

उ०—कवर विरडियो मुरड ग्रमराव फिरिया सको, ग्रैरसी वार बिखमी बणी ग्रांण । पाट चीत्तोड री हुवो ऊथळपथळ, 'दुरग' नूं सिमरियो तई दीवाण । —दुरगादास ग्रासकरणोत री गीत

विरडणहार, हारो (हारी), विरडणियो—वि०— ।

विरडिग्रोडो, विरडियोडो, विरड्योडो—भू० का० कृ० ।

विरडीजणो विरडीजबो—भाव वा० ।

विरडणो, विरडबो—रू भे. ।

विरडियोडो—भू का. कृ —१ घुसा हुग्रा, धसा हुग्रा २ कुपित हुवा हुग्रा, क्रोधित हुवा हुग्रा. ३ लडा हुग्रा, झगडा हुग्रा । ४ राजसत्ता के विरुद्ध हुवा हुग्रा, विद्रोही हुवा हुग्रा ।

(स्त्री विरडियोडी)

विरचणो, विरचबो—क्रि ग्र —१ पलटना, बदलना, विमुख होना ।

उ०—१ स्वारथ नी सगाइया, जोइजो इण ससार । किण विधि विरचै सू, कत सू 'सूरिकंता' नार । —जयवाणी

उ० —२ साजनिया ससार, जै कीजै तो जोइनै । नेह निवाहणहार, 'जसा' न विरचै जीवता । —जसराज

उ०—३ करै वणिक कुल कसब कर, हित मांहै वित हाण । वणिक दगो दै विरचियो, उर इचरज मत ग्राण । —बां दा.

उ०—पासी 'बोका ! पाट, करनादै श्रीमुख कह्यो । थारो रहसी थाट, म्हारा सू विरचै मती । —ग्रग्यात

२ पीछे हटना ।

उ०—हरीया ग्रैसा हुय रहो, परवत कैसे भाय । धका धूंम केता सहै, विरच कदु नहीं जाय । —ग्रनुभववाणी

३ विरुद्ध होना, प्रतिकूल होना ।

उ०—कुळ ऊच मईजन मेम कियो दिल चेतन सूघ विखै न दियो । ग्रजडी धकधूण तकी तरछी, बुरचीतोय देवळ ना विरची ।

—पा. प्र.

४ क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—१ मेटण परजापत जिगन मद्द, भव हुकम विरचियो वीरभद्द । जुरसिंघ भीम तजि बाहुजुद्ध, फिर सेन वघि जूटा सक्रुद्ध ।

—रा. रू

उ०—२ विरचि राव सत्रसाल 'ग्रोरग' पडै वाथिया, जाथिया ग्रनचळै बदन जरदै । राळियो साथिया लोक ग्रय लोक रै, हेम री हाथिया बीच हरदै । —हरदैनारायण हाडा री गीत

५ रचना, बनाना ।

उ०—ततखिण तिहा मिलिया चलियासण सुर कोडि, प्रभुना पद पकज प्रणमइ वेकर जोडि । वेकर जोडी मछर छोडी समवसरण विरचति, माणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय झलकति ।

—स कु

६ ग्रायोजन करना, मनाना ।

७ विरक्त होना, उदासीन होना ।

उ०—रीती देख न विरचीयै, भरी न धरीयै चित । हरीया रीती ग्रर भरी, दोऊ सू विरकत । —ग्रनुभववाणी

८ कम होना, घटना ।

उ०—माया खरची खूब है, जो कुछि खरची जाय । हरीया खरचत खावता, विरच कदु नहीं जाय । —ग्रनुभववाणी

९ त्यागना, छोडना ।

उ०—साजन अैसा कीजियै, जामैं लखण बतीस । मीड पड्या विरचै नही, सीस करै बगसीस । —अग्यात

१० धोखा देना, छलना ।

उ०—म्याराजी, विरचौ मती, प्याराजी कर प्रीत । न्याराजी रहता नमख, यो वैराजी चीत । —मयाराम दरजी री वात

विरचणहार, हारौ (हारी), विरचणियौ—वि० ।

विरचिग्रोडौ, विरचियोडौ, विरच्योडौ—भू० का० कृ० ।

विरचीजणौ, विरचीजबौ—भाव वा० ।

विरचणौ, विरचबौ विरच्चणौ विरच्चबौ विरछणौ, विरछबौ वरचणौ, वरचबौ, वरच्चणौ, वरच्चबौ, वरछणौ, वरछबौ —रू० भे० ।

विरचयिता–वि [स] बनाने वाला, रचना करने वाला ।

रू भे —विरचियता ।

विरचित–वि [स] रचित, निर्मित ।

विरचियता—देखो 'विरचयिता' (रू भे.)

विरचियोडौ–भू का कृ —१ पलटा हुआ, बदला हुआ विमुख हुवा हुआ २ पीछे हटा हुआ ३ विरुद्ध हुवा हुआ, प्रतिकूल हुवा हुआ ४ क्रुद्ध हुवा हुआ कुपित हुवा हुआ ५ रचा हुआ, बनाया हुआ ६ आयोजन किया हुआ, मनाया हुआ, ७ विरक्त हुवा हुआ, उदासीन हुवा हुआ ८ कम हुवा हुआ, घटा हुआ, ९ त्यागा हुआ छोडा हुआ १० धोखा दिया हुआ, छला हुआ ।

(स्त्री विरचियोडी)

विरछ—देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

उ०—१ विरछां लूंबी वेलियां, फूलीफली फबेह । सीतल छाह सुहावणी, दिणियर किरण दबेह । —र हमीर

उ०—२ सेली पविश्रा सीम, किता रेसम सुवरणी । फल क्यारी री भणी, खवा दोनू उपरणी । चौसर चोघड गूथ वणी फूला री गहणौ, । विरछ वसत री वणी, निजर तिरछी सूं वहणौ । —अरजुणजी वारहठ

उ०—३ सीस सरग सातमे परग सातमे पयाळै । अरणव सातै उदर, विरछ रोमाच विचाळै । —र. रू

उ०—४ विरछा वेला पर चढणै बुधि चाही, उर में अलवेलां वेलण सुध आई । आणा लेवण नै अंधूळा आया, दरसण देवण नै मोभी मुळकाया । —ऊ का.

विरछौ–स पु —ववूल की फली ।

विरज–स पु [स विरज] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर ।

२ शिव, महादेव ।

३ वीर्य वीज ।

४ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम ।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण ।

६ त्वष्ट एव विरोचना के पुत्रो मे एक एक पुत्र राजा, जो विशुचि का पति और शतजित् का पिता था ।

७ पूर्णिमत राजा का एक पुत्र ।

[स विरजस्] ८ भगवान् नारायण का एक मानसपुत्र, जो कीर्तिमत का पिता था ।

९ शिवावतार का एक शिष्य ।

१० वसिष्ठ एव ऊर्जा के सात पुत्रो मे से एक पुत्र ऋषि ।

११ कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक नाग पुत्र ।

१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

१३ वारुणि कवि ऋषि के आठ पुत्रो में से एक पुत्र, प्रजापति ।

१४ कला (कर्दम प्रजापति की पुत्री) एव मरीचि महर्षि पूर्णिमा नामक पुत्र का पहला पुत्र । दूसरे पुत्र का नाम विश्वग था ।

वि.—१ जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो । (स्त्री)

२ धूल, गर्द से रहित, निर्मल, स्वच्छ ।

३ सुखवासना से मुक्त, अनुराग रहित ।

विरजमडळ—देखो 'व्रजमडळ' (रू भे)

विरजस्क–स पु. [स] सावर्णिमनु के एक पुत्र का नाम ।

विरजा–स पु [स वीर्य+ज] १ पिता । (ह. ना. मा.)

२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

३ बीसवें कल्प में उत्पन्न श्री ब्रह्मा का रक्त नामक एक मानस पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ वसिष्ठ एव ऊर्जा के आठ पुत्रो मे से एक ।

६ भगवान् नारायण का एक पुत्र ।

स स्त्री —७ शुभ्र पुत्र ऋक्ष वानर की पत्नी जो विरजस् नामक प्रजापति की कन्या थी ।

वि वि —बाली एव सुग्रीव क्रमश इन्द्र व सूर्य से इसे पुत्र प्राप्त हुए थे ।

८ श्रीकृष्ण की एक प्रिय सखी जो राधा के भय के कारण नदी बन गई । कही २ पर राधा के शाप से भी इसका नदी बनना स्वीकार्य है ।

९ नहुष की पत्नी एव ययाति की माता, जो सुस्वधा पितरो की कन्या थी ।

१० अदितिपुत्र महोत्कट का वेशधारी श्रीगणेशजी का भक्षण

करने वाली राक्षसी, जिसका उदर विदीर्ण कर श्रीगणेशजी बाहर आ गये थे।

विरजाक्ष-स पु [स.] मेरु पर्वत के पास उत्तर मे स्थित एक पर्वत।

विरजाक्षेत्र, विरजाखेत, विरजाखेत्र-स पु [स विरजाक्षेत्र] उडीसा मे जाजपुर के पास माना जाने वाला एक पवित्र तीर्थ।

विरजामित्र-स पु [स विरजस+मित्र] वसिष्ठ के पुत्र विरजस् का नामान्तर।

विरडणौ, विरडबौ—देखो 'विरडणौ, विरडबौ' (रू भे)

उ०—१ बळि भरियौ विरडियौ, खुरम माझी गहवतौ। अंह चडै चख त्रिडै, रोस हूं मुंह हुइ रातौ। —गु रू ब

उ०—२ ब्राह्मण पूतळी देखि नै मन मैं विचारियौ। आगलै साथियै पूतळी तैयार कीवी। हिवै स्रीपरमेस्वर रो भजन करू ज्यूं जीव पडै। ताहरा पूतळी फिरण लागी। तद उवै च्यारै ही विरडीया। ऊ कहै म्हारी बाहर, ऊ कहै म्हारी बाहर। —चौबोली

उ०—३ हूकळ पोळ विरडियौ हाथी, नीछट भीळ निराळी। 'रतन' पहाड तणौ सिर रोपी, धूहडियै धाराळी। —रतनसिंह राठौड रो गीत

विरडणहार, हारौ (हारी), विरडणियौ—वि०।
विरडिग्रोडौ, विरडियोडौ, विरड्योडौ—भू० का० कृ०।
विरडीजणौ, विरडीजबौ—भाव वा०।

विरडियोडौ—देखो 'विरडियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री विरडियोडी)

विरणियौ-वि.—वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—घाव घणा थटा अत पिसण दळ घालणौ, पाच सै पाखरया हेकलौ पालणौ। राव जसवत सो राखिया विरणिया, हाक वागी तै कूदिगा हिरणिया। —हा झा

विरतत, विरतति—देखो 'व्रतात' (रू भे)

उ०—१ ढोलइ मनि आरति हुई, साभळि ए विरतत। जे दिन मारू विण गया, दई न ग्यान गिणत। —ढो मा.

उ०—२ ताहरा राणी पुछियौ-जु महाराज, कुण वास्तै हसीया। राजा नटियौ। राणी बहुत गाढ करि पूछण लागा। जु महाराज, मोनु हसीया रो विरतत कहीजै। —चौबोली

उ०—३ हिव विरतन सुणौ सहु, आदरवत अचूक। सेठ तिहा ठगनी परै, पडियौ पाडै कूक। —वि कु.

उ०—४ पूछ्यौ भूपै कुण परदेसी, इण ठामै क्यू आयौ। तिण अपणा घर देव नियानौ, सहु विरतत सुणायौ। —ध व. ग्र

उ०—५ तेहनै कह्यौ निमित्तियै जी, वाल पणै निमत। जणसी पुत्र मुवा थका जी, करम तणौ विरतत। —जयवाणी

विरत-स पु—१ झूठ, असत्य। (अ. मा)

२ यति, विश्राम। (पिंगल शास्त्र)

३ देखो 'व्रती' (रू. भे)

उ०—१ डूम-डल्ला कीरत गावै, मगता-भिखारी विरत चावै कोड्यौ, कोइयौ आयो चाद रै चानणै मे बुहार झाड'र खायग्या, लेग्या अर केई मागता ही गया। —दसदोख

उ०—२ स्रवण वयण सभळै, नयण विळकुळै निरमळ, । जोत वदन झळहळै, लाज भुजि भळै स उज्जळ। सूर विरत सल्लळै, ज्वाळ झळहळै फुणधर। कना प्रळै क्रति करण, किरण परजळै दिणकर। —रा रू.

५ देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—१ वूढा तै किम बाल कहीजइ, विरत नही जाणइ कोई। एक रुपइयउ खोटउ वाध्यउ, दौडयउ करैय दगाई रे। —स कु

उ०—२ रात्रि भोजन करता थका ए, मन मानै खाय कै। विरत काई नही ए, मरने दुरगति जाय कै। —जयवाणी

६ देखो 'व्रत' (रू भे)

रू भे.—विरत, वरत।

विरतात—देखो 'व्रतात' (रू भे)

उ०—१ सोना ना दीठा दात रे, जाण्यउ पूरव विरतात रे। अणसण लीधउ एकात रे, बाधण पण थइ उपसात रे। —स कु.

उ०—२ राजा स्यामसुदर सारो विरतात दीठो। उवै उडीया पछै आ वोली, 'हिमै खबरि पडी ? ताहरा राजा कह्यो 'खबरि पडी।' फेरि कहण लगी, 'सवारै ऐ आविसी'। —स्यामसुंदर री वारता

उ०—३ झाली नु कहो श्रो कासु विरतात ? तद झाली डर मा री वात सागी खीवसीजी नु कहि दीवी—जिण तरै मा कामण कराया, इण नदी मे नाखिया, सो सरब मालम कीवी। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ कुंवरसी रथ सु उतर घोडै असवार हुवौ। घोडै नुं गजदा सुवाई, सो हाथ चाळीस-पचास उपर जाय खडो। वरछी सिलार छै, सो खरल सारा देखता रह्या—जो श्रो कासु विरतात ? कुण छै ?' —कुवरसी साखला री वारता

विरता—१ देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—भील ही भगत थारै भला, कैयै नां मोजा करै। हमां सत कूकि विरता हुयै, येरै काजि अवतरै। —पी ग्र.

२ देखो 'विरक्तता' (रू. भे)

उ०—१ हरीया हिरमच लायकै, बैठे विरकत होय। विरकत

सोई जाणियै, विखै विरता सोय। —अनुभववाणी

उ०—२ ऊपनु केवलनाणु सामीय ए नेमि जिणेसरह ए, सामली सामि वखाणु विरता ए सावयव्रतु घरइ ए। —सालिभद्र सूरि

विरति, विरती—स स्त्री. [स विरति] १ अन्तिम अवस्था, अवसान, समाप्ति।

उ०—अवे त्वरथी अस्थी वकत नह व्यरथी अति यही, अयोनी योनी की विरति चित होनी रचि यही। —ऊ का

२ अन्तिम छोर, शिरा।

३ देखो 'विरक्ति' (रू भे)

उ०—१ विरति नही नही आखडी, नही पोहो सो नही आदरी दीख। तै पिण सेंणि करायने, तै कीघो हो स्वामी आप सरीख। —वृ स्त

उ०—२ केइ उपाय करी मेलण करू, परिग्रह विविध प्रकार। विरति करु पिण मन न रहै वलि, तो किम हुवै भव पार (निस्तार) —ध व ग्र

४ देखो 'व्रति' (रू भे)

उ०—नयतै निय सेन तणी नागद्रह, भारत भू भड विरती भीर। पग किम रावत परठै पाछा, जडिया परिया तणा जजीर। —रावत रत्नसिंह सिसोदिया री गीत

वि—५ क्रोधपूर्ण।

उ०—जोधपुरी जुध जीपवा, गढ लेवा 'गजसाह'। विरती कोडी विळकुळै, रीसाणो रिमराह। —गु रू व

विरतीचख, विरतीचखु, विरतीचख—स पु—मत्री। (डि. ना मा)

वि [स विरत्त+चक्षु] लाल आखो वाला, क्रोधपूर्ण आखो वाला।

विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी—देखो 'व्रतेस्वरी' (रू भे)

विरतौ—देखो 'विरत्तौ' (रू भे)

उ०—घर मे मत खा फिरतो घिरतो, न कहै मरम बोलीजै निरतो। तारु सुं मत तोडै तिरतो वडा रै काम म थाए विरतो। —ध. व ग्र.

विरत्त—१ देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—एक एक मुनिवर एहवाजी, सूत्र में कहियै निरत्त। सकल्प आयमिया पछै जी, ऊगिया पछै विरत्त। —जयवाणी

२ देखो 'व्रति' (रू भे.)

विरत्तणौ, विरत्तबौ—क्रि अ—१ कुपित होना, क्रुद्ध होना।

उ०—दिल्ली साह विरत्तै, रण अगाध जम्मण उपकठै। रैणायर' रण मडै, गो दीवाण राम खळ खडै —रा रू

२ पीडित होना, दुखी होना।

३ उदासीन, होना, खिन्नचित्त होना।

उ०—'इंदो परव परव आभाळो, भोज सुतन अनसाह भुजाळो। जैत सुजाव जोत जगपत्ती, वधै खीज फिर वीज विरत्ती। —रा. रू.

विरत्तणहार, हारौ (हारी), विरत्तणियौ—वि०।

विरत्तिओडौ, विरत्तियोडौ, विरत्त्योडौ—भू० का० कृ०।

विरत्तीजणौ, विरत्तीजबौ—भाव वा०।

विरत्ति—देखो 'विरक्ति' (रू भे)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे)

३ देखो 'वीरता' (रू भे.)

उ०—जै कहै तो कीरत्ति, त्या वधै वसुं विरत्ति। निवाज सु रथन्नि पत्ति, अस गज दिया पुरबर अत्ति। —मा वचनिका

विरत्तियोडौ—भू. का कृ—१ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हवा हुआ

२ कष्टमय हुवा हुआ, पीडित हुवा हुआ, दु'खी हुवा हुआ ३ उदासीन हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ।

(स्त्री विरत्तियोडी)

विरत्ती—१ देखो 'विरक्ति' (रू भे)

२ देखो व्रति' (रू भे)

३ देखो 'वीरता' (रू भे)

विरत्तौ—वि. [स विरक्त] (स्त्री विरत्ती) १ कष्टमय, पीडित, दुखी।

उ०—चढि वेगो चक्र धरि, करै काई ढील करत्ता। गळो वढै गाय री, वळै ब्राह्मण विरत्ता। —पी ग्र.

२ क्रोधयुक्त, क्रुद्ध, कुपित।

उ०—१ "गजवधी" सीह विरत्ता, दखणी दळ भाजि विगूता। वालापुर महिक्कर छोडै, दखणी दळ भागा होडै। —गु रू व

उ०—२ साह विरत्तौ मारवा, ग्राह जही गज वार। जठै सुदरसण चक्र ज्या, रिणमल्ना पणधार। —रा रू

उ०—३ वस वखाणै झल्लणौ, चहुवाणै 'चुतरेस'। रत्तो साहा जग कज, जाण विरत्तो सेस। —रा रू

उ०—४ जोस भुजा दक्खवै रोस वीरा रस रत्तो। गजराजा ऊपरा जाणि म्रगराज विरत्तो। —रा रू

उ०—५ विरत्तौ वेग न काइ विमास, विढेवा राउ खडै वरहास। खुरा रवि फीण उमटटचो खाणि लगोडै लागै लाल लगाणि। —राव जैतसी री रासो

३ उदासीन, खिन्नचित।

रू भे—विरतौ, विरत्त, विरुत्तौ, विरुत्थ, विरुद्धौ, विरुथौ।

विरथ–वि. [स] १ विना रथ का या रथ से गिरा हुआ।

२ नृपजय के पुत्र वहुरथ का नाम।

३ देखो 'व्यरथ' (रू भे)

रू. भे —विरथ।

विरथा—देखो व्रथा' (रू. भे)

उ०—पदमरण वोली पीवता, विरथा कीदौ वाद। छकिया मद री छाक रौ, समजि नही सवाद। हरख जलालौ चित हुवै, पीदा प्यालो नेम। पीव विलालो पिलग परि, वालौ लागै वेस। —पना

विरद—१ देखो 'विडद' (रू भे)

२ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ दळ-थभ तुझ दुवारि झूंझारि धवळ तणा, धणा विरदा लहण आविया अरि घणा। घणा नीदाळवा नींद वारो घणी, तूंग नह छै भली हीस घोडा तणी। —हा झा.

उ०—२ ऐराक छाक दुरवल आधार, पावणा हूत सामा पधार। प्रति विरद वहादर तव अवूज, तरवार वहादुर विरद तूज।

—वि स

उ०—३ पाछै यै ही नाहरू का नाहर दरसावै, 'भीमाजळ' हाथू रुघनाथ सा कहावै। जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के ककण सा विरद जिण पाया। —रा रू.

उ०—४ उभै फाबिया विरद 'जसराज' खगि ऊजळा, भुजा मारथ दिली भार भळियौ। वाळियौ श्राक 'ओरग' सरिस वाजतै, वळै ही मुरडतै आफ-वळियौ। —नरहरदास वारहठ

उ०—५ गढ वरियावर विरद अथागा, वरियावर कमधज इम वागा। बारमौ सुत पूंज महावळ, क्रपासिंधु जिण नाम अणकळ।

—सू प्र

विरदघण, विरदझल, विरदझलू–वि —१ विरुदधारी, यशस्वी।

उ०—यह कामंतया जी हुकम सहकार रवाना होय, अवर जनेतिया जी साजत कीजियौ सहकोय। सहकोय साजत करो सुमडा विरदझल वरियाम, कुळ जनक कुमरी व्याह करसी रिघू वरमी रांम। —र रू

२ वीर, वहादुर, योद्धा।

उ०—आय हुई सव एकठी, कथ जेम कहाणी, विरदझलू जगमाल री, कमरा कमवांणी। वेली वापूकारनै, कथ ऐम कहाणी, ऐ तीजणिया स ऐकठी, आई आपाणी। —वी मा.

रू. भे —विरदघण, विरदझल, विरदझलू विरदाझलो, विरदाझल, विरदाझलो।

विरदधार, विरदधारी, विरदधारू—देखो 'विरुदधारी' (रू भे)

उ०—१ लग अरद कूप मज तूटियै लाव, आ धात सुणत उन छूटियै आव। कर बूंब तिन कीनी पुकार, धाइयौ मा करनल विरदधार। —रामदान लाळस।

उ०—२ गाव दुधोड हुवौ राव छोरिडमलजो रै पुत्र वेरोजी हुवा, वेराजी रै पुत्र रामदासजी हुवा। गाव दुधोड रै खेडे थापना कीनी। वडो एक आखाढसिध रजपूत हुवौ। विरदधारी रजपूत हुवौ। —रा. सा स.

विरदपगार–वि [स. विरुद+रा. प्र पगार=रक्षक] विरुद की रक्षा करने वाला, यशस्वी।

उ०—जिम रावण झूझार, कमधज रामाइण करै। 'पाल' तणो वाहा प्रळ व, पडिश्रो विरदपगार। —र. वचनिका

विरदपत, विरदपति, विरदपती—देखो 'विरुदपति' (रू भे)

उ०—१ 'पतौ' 'जगा' रौ विरदपत, 'वीरम' रौ 'जैमाल'। केल पुरो कमधज हुइ, हुआ चीत गढ ढाल। —वा दा

उ०—२ पुडरीक नभ पाटि विरदपति, सुज पुत्र खेमधन्व वायक सति। देवानीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार अनीक तास सुत।

—सू प्र.

विरदांझलो—देखो 'विरदझल' (रू भे)

विरदाणी–वि —विरुदधारी, यशस्वी।

विरदाई—देखो 'वरदाई' (रू भे.)

विरदाझल, विरदाझलो – देखो 'विरदझल' (रू भे)

विरदाणो, विरदावौ—देखो 'विरुदाणो, विरुदावौ' (रू. भे)

उ०—१ भड थका अवर न भावै भूपत, कवि विरदावै बोहोत कथ। काढै कुण तो विन 'केहरिया', रावत कवि खूचियौ रथ।

—चतुरभुज बारहठ

उ०—२ चोपड रमता इसा समाचार मीया रै नै महेची रै हुवा। तरै महेची चारण घर री बुलायनै रामदासजी रै कनै मेलियौ नै कयौ, इसी तरै-विरदायनै कहेजो वाह लाडु रै मीया वुढण रै चोपड रमता इसी वतळावण हुइ छै, सो जाणसु। —रा सा स

विरदाणहार, हारौ (हारी), विरदाणियौ—वि०।

विरदायोडो—भू० का० कृ०।

विरदाईजणो, विरदाईजवौ—कर्म वा०।

विरदाधिप, विरदाधेपत, विरदाधिपति, विरदाधिपती—देखो 'विरुदपति'।

उ०—हसी राघव वळ हाथ, ग्राह तणै माथै दियौ। सदा रहो निज साथ, तार लियौ विरदाधिपत। —गजउद्धार

विरदायक—१ देखो 'वरदायक' (रू भे)

उ०—धानख मुख जिकै रसण गुण धारणा, पाण बचन तीखा

अप्रमाण। रामकरण महड्ड रा रूपक, विरदायक अरजुण रा वाण।
—रामकरण महड्डू री गीत

२ देखो 'विरुदायक' (रू भे)

उ०—नायका पाठडा हूत आवै नही, लायका छ्दा री अतर लाहा। कोइक विरदायका माय जाणं सुकव, वायका सायका तणी वाहा।
—नवळजी लाळस

विरदायोडो—देखो 'विरुदायोडो' (रू भे)

(स्त्री विरदायोडी)

विरदाळ, विरदाळो—देखो 'विरुदाळो' (रू भे)

उ०—१ भगतवछळ विरदाळ तुम, जानू दीन्हो खोय। मो बाहर धावो नही वैठ रहै चुप होय। —गजउद्धार

उ०—२ सूरिजि चद्रमा मारिखा, बैठा छै विरदाळ। खेतपाळ हणमत खरा, कोटवाळ किरणाळ। —पी प्र

उ०—३ वै भाई विरदाळ, औरगसाहि मुराद वै। हैवैपति भेळा हुआ, जुध मडण जमजाळ। —र वचनिका

उ०—४ फैल क्रोध चसमा कराळा आग झाळा फुणा, ताळा दे भूजाळा ज्यूँ गुपाळा तीरवान। विरदाळा सिंघाळा अडाळा जोध चाळावध, जूटा विहु काळा नै विचाळा जोरवान। —र ज प्र

उ०—५ बिहू कूरमा साथ विरदाळा, जोध हजार वीस जरदाळा। त्रिहू रावळ गहलोत भाण तड, भीम हुठी उग्रमेन महाभड।
—सू प्र

उ०—६ पाध तिहारा पाव मैं, रिडमल आ भट राळी। कियो छत्रपति रक नै, दियो राज विरदाळी। —हिंगळाजदान बारहठ

(स्त्री विरदाळी)

विरदावणौ, विरदाववौ—देखो विरुदाणौ, विरुदावौ' (रू भे)

उ०—१ ईहगा घणो विरदावियो, मारू अमलीमाण नू। आपरो करे दीधो वतन, तरै राव सुरताण नू। —सू प्र.

उ०—२ जो घण दीहो सागडी, हूं विरदावणहार। सीगाळी बळ सोगुणो, जाणावै जिण वार। —वा दा

उ०—३ धूंणै सिर पकडै धरा, असह सहै जै आर। वोहळिया विरदाविया, गरज सरै नह तार। —वा दा

उ०—४ रात्र रै हाथ लाहोरी क्वाण री छै। वडी खपरिया रा तीर च्यार तो मूठ मे छै और तरकस दोय होदा मे छै। राव राजपूता नूं विरदावै छै, ललकारै छै, सो घोडा रा सवार हाथी सू पावडा बीस तीस अगल वगल ऊभा छै। —डाढाळा सूर री वात

उ०—५ रट्ठौड रूप राए दीनो, सुरताण नाम दळथभण। हिंदुवै मुसळमाणो, विरदावियँ जोध विरदैता। —गु रू व

विरदावणहार, हारो (हारी), विरदावणियो—वि०।

विरदाविओडो, विरदावियोडो, विरदाव्योडो—भू० का० कृ०।

विरदावीजणो, विरदावीजवो—कर्म वा०।

विरदावळी—देखो 'विरुदाळी' (रू भे)

विरदावियोडो—देखो 'विरुदायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विरदावियोडी)

विरदू—देखो विरुद' (रू भे)

उ०—दानार सूरू राजू का पुत्र जैसै प्यारै। सूंबूं कायर राजू को विख जैसै खारै। राजसभा के भूखण दिल कै उदार। विरदूं कै भारै समसेर बहादरू कै समसेरू के चितारै। —सू. प्र.

विरदेत—देखो 'विरुदैत' (रू. भे)

उ०—दिपै चढ भूपत ताम दुबाह, रिडम्मल ताम चढै अरिगाह। 'दुधो' चढ ताम दळां विरदेत, 'सरूप' चढै अरि भाज सचेत।
—सि सु रू

उ०—२ कायरा चेत उड प्रेत जोगण किलक, उप्रवट भूभट विरदेत अडिया। 'जेत' हर जीत पाई समर जीतियो, पाच अर असी जुधखेत पडिया। —तिलोकदान बारहठ

विरदै—देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—इद्रसिंघ दक्खण थी आयो, साथ लियो कर तोल सवायो। राणसुतण विरदै समराथै, सग थयो पहुचावण साथै। —रा रू

विरदैत,—देखो 'विरुदैत' (रू भे)

उ०—१ वेताळ वीर आगै वधै, चालै भूचर खेचरा। विरदैत पेखि वदण भणै, जैत जैत जोधाहरा। —रा रू

उ०—२ चूगाळ फूलत खेलत चोधार, प्रह फट्टिय चड मुंडा पधार। विरदैत कोडि करमेत वेस,, साखैत जैत जू वीर सेस।
—मा. वचनिका

उ०—३ 'अमावत' क्रोध सझै अणथाह, सिघा घरि साधक व्है सिघ साह। दळा निजहूत वधे विरदैत, खळा मझि हाकळियो पखरैत। —सू प्र

उ०—४ बाप इता विरदैत छळि, घरि कुळी छतीस सहि। चाल्या स्वामि समाणसा, सउ माणस साखैत। —अ. वचनिका

उ०—५ साखेता सुहडा सामता, विरदैता जोधा वळवता। 'गाजीसाह' सिरै गैमता राणी-राण मिळै रावता। —गु. रू व

विरद्द—देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ घेन पूज सुर घेन, विप्रधु चरणाम्रत वदा। धनुख माण न्रप कळप, सख जस मद्द विरद्दा। —रा रू

उ०—२ सुकवि देख सभरै, कोड उच्चरै विरद्दा। रीत 'अजन' राठौड, जोड लखि हद्द समदां। —रा. रू

उ०—३ सुत घायळ ढाल वरग्र सही, नटबा राय तुज विरद्द नहीं। भुगतूं दुख वाद थयो भाइयां विरदावीय 'पाल' वनो वाइया।
—पा. प्र

उ०—४ जोधा गकसै जरद्द मूंगळा उतारै मद्द बाहाळी खाटै विरद्द मरद्दा मरद्द। रिमा खागं करै रद्द, बहू लियै सु सवद्द, हीद्द ऐहद विहद्द जद जद जद्द।
—ल पिं

विरघ—१ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ विरघ वधाई नाव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा पाठ निराठ, वरै वन्नमाळा मोखी। जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोखी।
—दसदेव

उ०—२ ग्राला-गीला बास कटा र चवरी रा गीत गा दिया। वी दिन ही विरघ अर बी दिन ही बनोरी, बी दिन ही भात अर सागी दिन ही अमोरी।
—दसदोख

उ०—३ भैरव काळा ग्रोर भैरव गोरा ग्रो वेगंरो ग्राव। तो बिन ग्रो भैरव तो बिन विरघ न होवसी। जो तो बिन ग्रो भैरव तो बिन जनोईं न होय।
—लो गी.

२ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ ग्राखी दुनिया म्हारी वाता सुणनै माथो धूणै, रीझै। जणी जणी म्हारी विरघ बखाणै। सुण-सुणनै कायो व्हैगी। नामून सूं ग्रोक्या वैठगी। पण ग्रबै जावता वाना रा सिरै मरम नै सावळ समझ्यो।
—फुलवाडी

उ०—२ एक फिरत उचकै उरघ, मति जग विरघ विमोह। नटपट्टी दीसै निपट, घटी पलट्टी सोह।
—रा रू

३ देखो विरुद्ध' (रू भे)
४ देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

उ०—१ विरघ पिता उहा दारण वन, तहा रिखी रूग तपोघन तन।
—रामरासो

उ०—२ जु धनो घणो विरघ छै इण रै सेवा करण वाळो कोइ नहीं छै।
—पचदडी री वारता

उ०—३ फेर कुवर री राणी नै फुरमायो—जे राज री काम कुण चलावसी, राजा तो विरघ हुवा। कुवरजी री य हुई दंपाळदे वाळक छै। राज राखणो छै तो ग्रापनै विराजणो छै।
—पलक दरियाव री वात

विरघा—देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

उ०—वालपणैं नही चेतियो, तन तरणापो थाय। जनहरिया विरधा भयो, ग्रजू न गोविंद गाय।
—ग्रनुभववाणी

विरधापण, विरधापणो—देखो व्रद्धता'।

उ०—सरधा घटगी सँग, वेग विरधापण वळियो। निकळण रो रथ नही, कळण ऊडी मे कळियो।
—ऊ का.

विरधि, विरधी—देखो 'व्रद्धि' (रू भे)

उ०—१ कनक दान कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सतसग ग्यान गुर वाणि उजागर।
—रा रू

उ०—२ म्हैं तो ग्रागण गार गिलोवस्या, म्हारी विरधी रा कोडा। चोखो रै मादळ घुळ रह्यो, रग रातो रै मादळियो, थारो रै सबद सुहावणो।
—लो. गी.

विरबोर—देखो 'बराबर' (रू भे.)

विरम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

२ देखो 'वरम' (रू. भे.)

विरमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे)

बिरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

विरमणो, विरमवो—देखो 'विलमणो, विलमबो' (रू. भे.)

विरमणहार, हारो (हारी), विरमणियो—वि०।
विरमिग्रोडो, विरमियोडो, विरम्योडो—भू० का० कृ०।
विरमीजणो, विरमीजवो—भाव वा०।

विरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू भे)

उ०—वाणिया रो धरम वधावै ग्रर विरमपुरी सराध खावै है। ग्रा वात ग्रातरै ताई जावै, ज्यू बाहरला बामण ग्रठैरा टाबरा वेटा नै ग्रापरी वेटी देवण ग्रावै है। जाणै मीठो पाणी ग्रर मोकळी विरमपुरी, ग्राटो मागै जकारै ही हजार धूवा री वसती है, भातै नै सेर सात पक्को घरा लेय र बडै है।
—दसदोख

२ देखो 'ब्रह्मभोज' (रू भे)

उ०—दोनू मिळ' र वात करै, वेगराजजी रा बेटा-पोता सुणै है। वेगराजजी बाजतो हो! साल मे एक विरमपुरी गिया करतो, सेठ नाव धरावतो, ग्राया गया जिमावतो।
—दसदोख

विरमाड—देखो 'ब्रह्माड' (रू भे)

विरमाणी—देखो 'ब्रह्माणी' (रू भे)

उ०—पीलूडा पुरसाद देवै, भाडो लेवै वाळका। विरमाणी धिराणी जाणी, जाळा जूनी काळका।
—दसदेव

विरमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ ग्रो तो गहरो गहरो विरमाजी रो छावो वालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाव रो। ग्रो तो गहरो गहरो नणदळ बाई री वीरो वालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाव रो।
—लो गी.

उ०—२ उण कुमार नै ग्रापरै खामचीपणा रो तो ग्रणूतो मोद हो। वो ग्रापरी घरवाळी नै केई वेळा कैवतो के विरमाजी नै ग्रेकर इण दुनिया रा जीव जिनावर, पछी ग्रर मिनख घडता देखलू तो वो

दूजै दिन ई वारौ हूवोहूव साचो उतार दै। —फुलवाड़ी

उ०—३ डड कमडळ विरमा दीनी, सदासिव दीनी झारी। भगवा वसतर विसनु दीना, विचरौ विरमाचारी। —अग्यात

विरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे.)

उ०—डड कमडळ विरमा दीनी, सदासिव दीनी झारी। भगवा वसतर विसनु दीना, विचरौ विरमाचारी। —अग्यात

विरमाणौ, विरमावौ—देखो 'विलमाणौ, विलमावौ' (रू. भे)

विरमाणहार, हारौ (हारी), विरमाणियौ—वि०।
विरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।
विरमाईजणौ, विरमाईजवौ—कर्म वा०।

विरमायोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री विरमायोड़ी)

विरमावणौ, विरमाववौ—देखो' विलमाणौ, विलमावौ' (रू. भे.)

विरमावणहार, हारौ (हारी), विरमावणियौ—वि०।
विरमाविओड़ौ, विरमावियोड़ौ, विरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विरमावीजणौ, विरमावीजवौ—कर्म वा०।

विरमावियोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री विरमावियोड़ी)

विरमियोड़ौ—देखो 'विलमियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री विरमियोड़ी)

विरमौ—स पु —१ एक प्रकार का ओढने का वस्त्र, दुसाला।

उ०—भारत, रै नै वीरा, भावज ओढाया, म्हानै घणमोला री चूनड़ी जै। सुसराजी नै, वीरा, विरमौ ओढाय, सासूजी नै साड़ी सापड जै। —लो. गी

२ देखो 'वरमौ' (रू भे)

३ देखो 'वरम' (रू. भे)

विरम्म—देखो 'वरम' (रू भे)

उ०—घरारी बाहर कोप घियान, विरम्मा वेढि तणौ वरदान। भमाडै रुडा मारथि भल्ल, राया राउ जोध अनै रिणमल्ल। —राव जैतसी री रासौ

२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

विरयां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे)

२ देखो 'विरिया' (रू भे)

विरळ, विरल, विरलउ—स पु —१ सूर्य, सूरज। (ना. डिं. को)

२ देखो 'विरळौ' (रू. भे)

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अधकार फोटउ। गाय तणा गाला छूटा, तारागण विरल हुउ, चद्रमा विछाय थिउ। कूकडा तणी उलि लवइ देव तणा बार ऊघडिया, प्राभातिक तूरय वाजिया। —रा सा सं.

उ०—२ को विरलउ तुझ आदरइ, छाडइ सहु ससार। एक आपनु भाजतउ, बीजा भाजइ च्यार। —स. कु

उ०—३ विरलउ पुण्यवत कोइ साहु वेटा, रिद्धि तणउ समदाय। धरमवत विनयवत होइ, भविय कुडवउ भणीइ सोइ। —वस्तिग

विरळणौ, विरळवौ—क्रि. स —१ तहस-नहस करना, नष्ट करना।

२ आकर्षित करना।

३ पथभ्रष्ट करना, गुमराह करना।

४ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अग कभी ऊपर और कभी नीचे करना।

५ चीरना, फाडना।

६ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर और ऊपर वाला भाग नीचे करना, नीचे ऊपर या ऊपर-नीचे करना।

७ अस्त-व्यस्त करना, इधर-उधर करना, बिखेरना।

क्रि अ —१ तहस-नहस होना, नष्ट होना।

२ आकर्षित होना, मोहित होना।

३ पथभ्रष्ट होना, गुमराह होना।

विरळणहार, हारौ (हारी), विरळणियौ—वि०।
विरळिओड़ौ, विरळियोड़ौ, विरळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विरळीजणौ, विरळीजवौ—कर्म/भाव वा०।
विरळणौ, विरळवौ, वरळणौ; वरळवौ—रू. भे।

विरळाणौ, विरळावौ—क्रि स —दिखाना।

उ०—भाये भळहळिया भुरटा रा भारा, अध अग ऊलळिया उरगा रा आरा। विरळा दाता री पाता विरळाती, चोडै चाचर री चोडै चिरळाती। —ऊ. का

विरळाणहार, हारौ (हारी), विरळाणियौ—वि०।
विरळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विरळाईजणौ, विरळाईजवौ—कर्म वा०।

विरळाणौ, विरळावौ, विरळावणौ, विरळाववौ, वरळाणौ, वरळावौ, वरळावणौ, वरळाववौ, विरळावणौ, विरळाववौ—रू० भे०।

विरळायोड़ौ—भू का कृ.—दिखाया हुआ।

(स्त्री, विरळायोड़ी)

विरळावणौ, विरळाववौ—देखो 'विरळाणौ, विरळावौ' (रू भे.)

विरळावणहार, हारौ (हारी), विरळावणियौ—वि०।

विरळाविओड़ौ, विरळावियोड़ौ, विरळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरळावीजणौ विरळावीजवौ—कर्म वा०।

विरळावियोडौ—देखो 'विरळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विरळावियोडी)

विरळियोडौ-भू. का कृ —१ तहस-नहस हुआ या किया हुआ, नष्ट किया या हुवा हुआ २ आकंपित किया या हुवा हुआ ३ पथ-भ्रष्ट किया या हुवा हुआ. ४ गुमराह किया या हुवा हुआ. ५ चीरा या फाडा हुआ ६ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अग कभी ऊपर और कभी नीचे किया हुआ ७ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर व ऊपर वाला भाग नीचे किया हुआ ८ अस्त व्यस्त किया हुआ, इधर-उधर किया हुआ, बिखेरा हुआ ।

(स्त्री विरळियोडी)

विरळ, विरलु, विरळौ, विरलौ—वि [स. विरल] १ जो बहुतायत से नहीं मिलता हो, थोडा, कम, दुर्लभ ।

२ जिसके अग आदि पास-पास न हो, घना न हो, सघन का विपर्याय ।

उ०—भायै भळहळिया भुरटा रा भारा, अघ अग ऊलळिया उरगा रा आरा । विरळा दाता री पाता विरळाती, चोडै चाचर री चोडै चिर ळाती । —ऊ का

३ गाढा का विपर्याय, पतला ।

४ जहा कोई नही हो, निर्जन, शून्य ।

५ जहा कुछ भी नही हो, खाली, रिक्त ।

६ सैकडों हजारो या लाखो मे से एक, कोई एक, अद्वितीय ।

उ०—१ जैसे सरपणी करत कुडाळा, बचीया जण जण खाई । आटा बार पडचा सोई जीता, यूं विरळा बच जाई । —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ काछ दिढा कर बरसणा, पर कजु मुंहा-मिठ्ठ । रिण-सूरा जग वल्लभा, सो मैं विरळा दिठ । —कूंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दादू पख पखी संसार सब, निरपख विरळा कोइ । सोई निरपख होइगा, जाकै नाम निरजन होइ । —दादूवांणी

उ०—४ जाडजी रे समकित नी परगम्यौ रे, जिन मारग नै चाढी सोभ रे । इसडी समता केई विरला करै रे, जीत्या छै मोह अस्णा नै लोभ रे । —जयवांणी

उ०—५ अरघ उरघ मैं कीया पयाणा, जाणै विरला जोगू । मन पवना पछिम की घाटी, आपा नाव तगेगूं । —अनुभववाणी

उ०—६ सोकइ नवि मपति मिलइ, हरख घरइ नवि जाइ । हरख-सोक-समचित तै, विरला जाया माई । —मा. का प्र

रू भे —विरळौ, वरळ, वरलु, विरळ, विरल, विरलउ ।

विरवड, विरवडौ—देखो 'वरवडौ' (रू. भे)

उ०—१ विरवड भात रमत बाया मे, चरवड भात चढाई । धणीं खमा राजा नोघण री, जाती फौज जिमाई । —मे म.

उ०—२ आवड विरवड चाहणा चाळक, सारी सकति सहाय । अमरा व्र द सदा प्रतपाळै, मेहाई महमाय । —राघवदास भादो

विरस—वि [स] १ जिसमे रस न हो, स्वाद या जायके रहित, रसर-हित ।

उ०—१ जिन मारग मे अनुरताजी, अरस नै विरस आहार । तक तक घर जावै नही जी, तप कियो न करै जहार —जयवाणी

उ०—२ अरस विरस अत पत लुह, ए चाल्या पच आहार । ए जीमी जीवै मुनि, धन मोटा अणगार । —जयवाणी

२ कष्ट, पीडा, सन्ताप ।

३ प्रेम या प्रीति रहित, अनुराग रहित ।

उ०—पातर वाळी प्रीत, मीठी लागै प्रथम मन । मद हुआ धन मीत, हुए विरस कडवी हुवै । —बा दा

४ रति-क्रीडा से विरक्त, काम-केलि से दूर या विषय-वासना रहित ।

५ उमग रहित, जोश या उत्साह रहित, मनोवेग का अभाव ।

६ मीठास का अभाव, कडवाहट ।

७ रक्त हीन, रुधिररहित ।

८ तरलता रहित, आर्द्रता रहित, शुष्क ।

९ गुणो का अभाव या तत्वरहित, सार रहित ।

१० नाराज ।

उ०—प्रकृत एकण भातगी छै, सु राणाजी नूं कहाडिया, राजा मान-सिंह सू मत मिळो, औ एकण भात रो आदमी छै । राणी वरजियो रयो नही । आय मिळियो । मैहमानी करी । जीमण पगा विरस हुवो तद मानसिंह दरगाह गयो । —नैणसी

११ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—समत १६९२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैसिंघ वाघोतरै दावै हमीर भाटिया ऊपर दोडिया हुता । तिण दिन राव सूरजसिंघ नै कवर बलू विरस हुवो थो, सु बलू विकूपुर सूं छाडनै कैरडूगर री पाखती आयो थो । —नैणसी

१२ कळह, झगडा ।

१३ जो अच्छा न लगे, अरुचिकर ।

१४ चिन्तातुर, चिन्तामग्न, उदास ।

उ०—पाधारै न्रप जोधपुर, गढ चाढिया कमध । आप विरस हुए चीतियो, धरा चहू दिस धघ । —रा रू

१५ जो दयालु न हो, निर्दय ।

१६ निष्ठुर हृदयहीन ।

१७ पीडाकारक, कष्टप्रद ।

स पु.—रीस, क्रोध ।

उ०—रामसिंघजी गाडा नवहर लै जाइ राखिया । कुंवर रिणी सिधाया । तिसडै सैं वांसैं सीरोही राजाजी कन्हा सुरताण प्रिथीराज पणि विरस करि घरे आया । घरै आइ रहिया । —द वि

रू. भे —विरस, विरसाळी, विरसालौ ।

विरसपत, विरसपति, विरसपती – देखो 'ब्रहस्पति' (रू भे)

विरसाळौ, विरसालौ–वि.—१ श्रेष्ठ उत्तम ।

उ०—ओप साह ऊहड अभग, कमधज करिणाळा । हाथ जोड हूरजी हसै, साहिब विरसाळा । —पी ग्र.

२ देखो 'विरस (रू भे)

उ०—सभाली ल्ये वडा सोह, सुचाली कलत्त सुत्त, क्या करै ककाली नाली अनाली कपूत । वाणी कै रसाली वदै विरसाली एका वात, कली कालि उजवालि आपरी करतूत । —घ व ग्र

(स्त्री विरसाळी विरसाली)

विरस्पत, विरस्पति, विरस्पती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू भे)

विरह–स. पु. [स] १ सयोग का अभाव, वियोग ।

२ विच्छेद, अलगाव ।

३ दो प्रेमियो के अलग-अलग होने की अवस्था, जुदाई ।

उ०—१ मैं कीधौ साचै मतै, नायक तोसूं नेह । वण आवै सो देह वित, दाह विरह मत देह । —बा दा

उ०—२ विरह पीर तन भीतरै, पलक न विसरी जाय । जनहरिया हरी कारणै, नैणा नीझर लाय । —अनुभववाणी

उ०—३ रोम रोम मैं विरह की विथा वियापी एक । जनहरिया कैसैं कटै, ओखदहार अनेक । —अनुभववाणी

४ उक्त वियोग या जुदाई से उत्पन्न मानसिक कष्ट, दुःख या पीडा ।

उ०—१ काळ रा नेवर पन्नरिया केळिग्रभ चदण री छूंडी रतना री रासि, अधारै री आदीत, अरस री अभरी सरग री झाप, विरह री समूह रूप री निधान, थाका हस री टोळी, निवायै गी होळी, घणां हाट नै चीरमा लपेटी थकी विराज्मान होइ नै रही छै । —रा. सा स

उ०—२ वैर मही तोटो वसै, वसै नफो नह 'बक' । सिया विरह राघव सह्चो रावण पलटी लक । —बा दा

उ०—३ जद सुध आवत पीव की, विरह उठत, तन जाग । ज्यूं चूनै की काकरी, जद छिडकौ तद आग । —अग्यात

उ०—४ वडारण कन्है वैठी थी, सो दिलासा दीवी । सो भरमल नूं तौ सारी वात वीसर गई । जीव तौ कुंवरजी कन्हैं गयौ, देह पडी छै । सो इसौ विरह ऊठीयौ, सो राखीयौ न रहै । —कुंवरसी साखला री वारता

५ अनुपस्थिति, गैरहाजरी ।

६ छोडने की क्रिया या त्याग ।

वि.—१ तप्त, गर्म ।# (डिं. को)

२ बिना, रहित, हीन ।

देखो 'ब्रिरहौ' (रू भे) (ना मा)

रू भे —बिरह, ब्रह, वरह, वरहू, विरहि, ब्रिह ।

विरहण, विरहणि, विरहणी–स. स्त्री —वह स्त्री या प्रेयसी, जो अपने पति या प्रियतम मे अलग या दूर हो ।

उ०—१ पाजै पाणी न थाहरै, थरहर कपै देह । हाथ सुहाळी मारवण, विरहण, पाडै वेह । —ढो. मा

उ०—२ सहिया सोइ विदेस पिव, तनहिं न जावै ताप । बावहिया असाढ जिय, विरहण करै विलाप । —अग्यात

उ०—३ कबहू नैन निरख नहिं देखै, मारग चितवत तोर । दादू ऐसै आतु विरहणि, जैसैं चद चकोर । —दादू वाणी

उ०—४ माती खेती पाती नीपनी काती मास, कातीय विरहणि छाती मैं काती वहैं नही जास । दीप दीवालीय वलिय सुहालिय नै पकवान, खलक रुचै पिण मुझ नैं न रुचै खान नैं पान । —घ व. ग्र.

उ०—५ बावहियउ नइ विरहणी, दुहुवा एक सहाव । जब ही वरसइ घण घणउ, तब ही कहइ प्रियाव । —ढो मा

उ०—६ तिणि वाउ कमळ था सु वाळि इसा कीया जु । जिसौ विरहणी को मुख । आव था सु इसा कीया जिसौ सजोगिणी को उरस्थळ । —वेलि टी

वि.—जो अपने प्रिय या पति से अलग या दूर हो ।

रू भे.—वरहण, बरिहण, बिरहण, विरहणी, बिरहन, बिरहनी, वरहण, विरहन, विरहनि, विरहनी, विरहिण, विरहिणि, विरहिणी, विरहग विरहणि, विरहणी, विरुहण, विरुहणि, विरूहण, विरूहणि, विरूहणी ।

विरहणौ, विरहवौ–क्रि अ [स] १ चीरा जाना, विदीर्ण किया जाना ।

उ०—मैं कामी कपटी क्रोध काया मे, कूप परत नहिं डरतै । करवत काम सीस धर अपनैं, आपहि आप बिरह्तै । —दादूवाणी

२ सयोग का अभाव होना, वियोग होना ।

३ विच्छेद होना, अलग होना ।

४ दो प्रेमियो का अलग-अलग होना ।

५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट होना ।

६ छोडना, त्यागना ।

विरहणहार, हारौ (हारी) विरहणियौ—वि० ।

विरहिओडौ, विरहियोडौ, विरहयोडौ—भू० का० कृ० ।

विरहीजणौ, विरहीजवौ—भाव वा० ।

बिरहन, बिरहनि, बिरहनी —देखो 'बिरहण' (रू. भे)

उ०—१ नैणा नीझर लाविया, छह रुत बारै मास । हरिया बिरहन राम कू, एक न विसरै सास । —अनुभववाणी

उ०—२ उल्लसित हीयरी करि पपीयरी, करत प्रियु प्रियु सोर । विरह सइं पीरी अति अधीरी, डरत बिरहनि जोर । —वि. कु

उ०—३ बिरहनि तेरी प्रांण झुरत है, दाधी वेलि सिंचाई । मीरां को प्रभु दरसन दीजै, प्रांण रखो सरणाई । —मीरां

उ०—४ बिरहनी ऊभी दरद सूं, अवला सू मया मांण । कै मिळिहो कै तन तजूं, सुणिहो कंत सुजाण । —ह पु वां.

उ०—५ दिन को जाग्रत हुय रही, निसा नहीं भरि सोय । राम बिसूरै बिरहनी, आंसु कर सूं धोय । —अनुभववाणी

बिरहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—चोपदार की मारफत रुघनाथसिंह से मिळने का इरादा किया, उसने साल भर पहलै औरत के मरने की मातमी का बहाना लिया । नेक वखत एक बिरहमण नै स्याम की अरज गुजराई, है तो मिळण कै लायक अेक चारण मुजराई । —दुरगादत्त बारहठ

बिरहमांण, बिरमांन—देखो 'विहरमांण' (रू भे)

बिरहांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

बिरहाग, बिरहागन, बिरहागनि, बिरहागिन—स. स्त्री [स विरह+अग्नि] विरहानल ।

उ०—१ व्यथा बिरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग सयोग सुहाय । अनाग्रह भुल्लित आन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय । —ऊ का.

उ०—२ त्रिलोचना कुमरी तिण वार, दुख सपूरित ह्रिदय मझार दुलणी दुस भरि करै विलाप, प्रीय बिरहागनि तन सताप । —वि कु

उ०—३ पीहर तो परतटै रहिया, प्रीतम बिरहागनि दहिया । प्रमदा इणि परि विलवती, दुख रोईं राति गलती । —श्रीपाळरास

बिरहानळ बिरहानल, बिरहानलि—स स्त्री [स विरह+अनल] बिरहाग्नि ।

उ०—१ काळी कांठळ मे दामणिया दमकी, चित मैं कामणिया बिरहानळ चमकी । छूटी आसारा कासारा छिलती, पडती परनाळा पहुवी पिलपिलती । —ऊ का

उ०—२ जेठ दीहाडा जेठ ना, लागइ ताप अथाहो जी । बिरहानल तपइ दियउ, प्रियु तुम चदन बाहो जी । —वि कु

उ०—३ दिल सुद्ध प्रणमु नेमि जिनेसर परमदयाल । रोक्या जीव ते मूक्या तोरण थी रथ वाल । राजिमति सती नेह वस किय विविध विलाप, तो पिण तसु तणु नाइ समयो बिरहानल ताप ।

उ०—४ जे जळ सीकर, ते उद्वेग कर । जउ सीतलोपचार, तं करइ विकार । इयि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, बिरहाळ नीपजइ । —रा सा. स.

उ०—५ दवदति बिरहानलि हा नलि नडिय अपार । प्रिय मेलउ केतै वासरै, वासरै वडिय ससारि । —जयसेखर सूरि

रू. भे.—बिरहानळ, बिरहानल ।

बिरहाळी, बिरहाली—सं. स्त्री.—सौंफ, दातपुष्पा ।

उ०—१ जायफळ लांग इळायची मिरच बिरहाळी अजू नागकेसर भगरटटी तज तमालपत्र तबोळ प्रत सयी । और ही मसाला मगायजे छै । —रा. सा स

उ०—२ लाभइ खांड तेल नइ मिरी, करइ सालणां लाभइ सुरी । अजमा जीरां लाभइ बहू, वेसण बिरहाळी लइ सहू । —कां. दे. प्र

बिरहि—देखो 'विरह' (रू भे.)

उ०—१ त्यांहां जई तेहनि बिरहि लगाडू प्रीत करि यम नारि । गुण चोरीकल बायि नहीं, राईं, धिक तेहनु अवतार । —नळाख्यान

उ०—२ वीणा डफ महुयरि वस वजाए, गोरी करि मुख पचम राग । तरुणी तरुण बिरहि जण दुत्तरणि, फागुण घरि घरि सेलै फाग । —वेलि

उ०—३ बिरहि बिरागीय वरण मझारि, जाईउ मणि ध्यायइ । लवणिय जुवणु रूपरेह तां आलिहिं जाइ । —सालिभद्र सूरि

बिरहिण, बिरहिणि, बिरहिणी—देखो 'बिरहणी' (रू भे)

उ०—१ रूप सुरगा सावरो, मुख निरखण जावां । मीरां व्याकुळ बिरहिणी, अपनी कर ल्यावां । —मीरां

उ०—२ आरति तेरी अतरी मेरै, आवो अपनी जांण । मीरां व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्राण । —मीरां

उ०—३ भाव अमोडा-माहि वरु, ईस तणइ जिम गग । हू विलपती बिरहिणी, स्वामि ! म छहिसि सग । —मा. का प्र.

उ०—४ 'को विलपती बिरहिणी, धाणी मन्मथ धाय । ससिहर मइ साहमु लिखी, सिंह देखाडइ काय । —मा का. प्र.

बिरहियोडो—भू का. कृ —१ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. २ सयोग का अभाव हुवा हुआ, वियोग हुवा हुआ ३ विच्छेद हुवा हुआ, अलगाव हुवा हुआ ४ दो प्रेमियो का अलग-अलग हुवा हुआ ५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट हुवा हुआ. ६ छोडा हुआ, त्यागा हुआ ।

(स्त्री बिरहियोडी)

बिरही—वि [स] १ जो अपनी पत्नी या प्रियतमा से अलग या दूर हो या अलग या दूर होने के कारण दु खी हो ।

उ०—१ तास थयौ प्रारभ रै, थभ जिसा रे तरुवर पालवै रे। दुखिया नै दुरलभ रे, विरही लोका रै हीयडै सालवै रे। —वि कु

उ०—२ सूरज ना किरन पच्छिम ढळचा। पथी सगा नइ मिल्या। विरही ना हीया वळचा, गोवाळ घरै वळचा। चौपूं लाव्या, श्राप श्रापना घरै श्राव्या। —रा सा स

उ०—३ हाथै न लेवइ वस्त्र। श्राधा श्रोढै वस्त्र। लोक सीसिम्राट करइ, चौपूं उच्छरइ, ताढइ न चरइ। धूजै वाळगोपाळ, विरही मा पडइ हवाल, सहु बैठा चौसाळ, साचव्या देहरा नइ पोसाळ, एहवौ सीतकाळ। —रा. सा स

२ कठोर।* (डिं को)

३ देखो 'बरही' (रू भे) (ना मा)

रू. भे —विरही।

विरहीवीर-वि —वीरो मे वीर, महावीर।

स. पु —श्रीकृष्ण के बडे भाई, बलराम। (ना मा)

विरहुण, विरहुणि, विरहुणी—देखो 'विरहणी' (रू भे)

उ०—गिरि गिरि वाधइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास। मडइ मोर कला घणी, विरहुणिया तन त्रास। —मा का प्र.

विरहोत्कठिता-स स्त्री [स विरह+उत्कठिता] विरह से व्याकुल वह नायिका जिसे अपने नायक के आने का पूरा-पूरा विश्वास हो किन्तु वह किसी कारणवश न आ सके।

विरहौ—देखो विरह' (रू भे)

उ०—१ प्रायै छोरू न लहै सार, मावीत्रा नी किण ही वार। पिण मावीत्र तपै दिन-राति, पाणी वल विरहौ न खमात। —वि. कु.

उ०—२ अधिकौ विरहौ अग मे रे लाल, तै किम दूरै थाय है सहेली। जमवारौ जल मैं वसै रे लाल, चकमावि अगन उल्हाय है सहेली। —ध व ग्र

उ०—३ सजोग रौ विजोग पड जावै। सारीरिक मानसिक दुख ऊपजै। जठै भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुभा रौ कदेइ विरहौ पडै ईज नही। ए स्वामीजी रा वचन सुणनै सतोख आय गयौ। —भि. द्र

उ०—४ विरहौ मौ दाहै सदा, कासू करु पुकार। प्रीतम अब कीजै क्रपा, लीजै हाथ पसार। —कुंवरसी साखला री वारता

विरांण—१ देखो 'वीराण' (रू. भे)

उ०—१ उण घूमर क्रोध भळा ऊभळी, श्रडिया असुराण उचार श्रळी। सयदाण जुवाण विरांण सज, गुमराण उफाण अरोह गज। —सू प्र

उ०—२ विरांण मीर धीठा विलद, नीसाण फील दीठा नरिंद। धरहडै क्रोध परचड धूप, भुज डड श्रडै वहमड भूप। —वि स

२ देखो 'वीरान' (रू भे)

विराणी—१ देखो 'वणियाणी' (रू भे)

२ देखो 'विडाणौ' (स्त्री) (रू. भे)

उ०—सुणवाला, इक रंग पोढती कठ लगाणी, जागी जजका नैण बिलखता नीर भराणी। पूछता,मुळकाय कह्या थें वोल सयाणी। छळिया! पेख्यो तूझ विलमणी नार विरांणी। —मेघ

विराणौ—देखो 'विडाणौ (रू भे)

उ०—१ हीर चीर हेम तार धडी मैं विराणा होसी, लाखा द्रव्य विभौ सबै हावी घोडा लाठ। गाम धाम झूठा जाणै धंधै झूठा लागा नरा, गार रा मिरग रै पडी वायरा री गाठ। —श्रोपो आढौ

उ०—२ खाणा पीणा खरचणा, श्रौर न चालै सथ। जसवत धर पोढाविया, माल विराणा हथ। —महाराजा जसवतसिंह

उ०—३ वपु माया नै जाण विरांणी, पाव न धर खोटी दिस प्राणी। रघुवर साचौ दास रसाणी,वोल 'वकसिया' श्रमरत वाणी। —वक्सीराम लाळस

(स्त्री विराणी)

विरांन—१ देखो 'वीराण' (रू भे)

२ देखो 'वीरान' (रू भे)

उ०—मूळी दाभै, रूसै अर रीस रळै। पेमजी जूभै, कुढै अर गुग मे गळै। गठजोडौ तौ जुडचौ पण मन-मेळू जोडौ मिल्यौ नही। मूळी लावी अर जुवान। पेमजी ओछौ, गटमीगणियौ वूढौ विरांन। दो-दो दुख सागै रळग्या। —दसदोख

विरांम-स स्त्री [स विराम] १ क्रिया, गति, चाल आदि में होने वाला ठहराव, अटकाव।

२ अन्तिम अवस्था, समाप्ति।

३ आराम, विश्राम।

४ कार्य, सेवा आदि से मिलने वाला अवकाश, निवृत्ति।

५ वाक्य व छन्द में वह स्थान जहा बोलते या पढते समय कुछ समय के लिए रुकना पडता है।

६ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—हरि है दाता देह का तातै भया सकाम। गुर है दाता ग्यान का, मन का मेट विरांम। —अनुभववाणी

७ विराम चिन्ह।

८ चिन्ह, लक्षण।

उ०—माता पिता के आगे खेलता। काम रा जु विराम छै। सु छिपाया चाहिजै। सु काम रा विराम कुण। ज ऐक तउ कुच प्रगट हुया। नेत्रा चचलता हुई। नितब भारी दीसै लागा। ए काम का विराम। —वेलि टी

६ घबराहट, क्षोभ, खलबली, अशान्ति।

उ०—कमधा पत दरकूच कर, धरि मेडतै मुकाम। धर दिल्ली धूजै उरै, पुर आगरै विराम। —रा रू.

१० उत्पात, उपद्रव।

उ०—माया मोह न कीजियै, माया वडी हुरांम जनहरिया तिह् लोक मैं, केता करै विराम।

११ कष्ट, पीडा, सकट।

उ०—१ दूहो दुपटो दाम, जोडघा सो ही जाणसी। ब्यावर लगा विराम, वाभ न जाणै वीभरा। —वीभरै अहीर री वात

उ०—२ अभिखा अक आहुवय अविधा, नामधेय सग्या हरि नाम। आठई पहर राखि उर अतर, वेग टळै दुख दळिद्र विराम। —ह ना. मा

उ०—३ भगवत्ति आवो माई, मुझ मदत स्रीमहामाई। नित पढै प्रहस मे नाम, त्या रोरि भजि विराम। —मा वचनिका

१२ निवास-स्थान।

१३ अग्यान।

उ०—मैं मन कु नही जाणिया, मन का बोहत विराम। हरीया इनकु उलटि कै सदा सिवरियै राम। —अनुभववाणी

रू. भे.—विराम।

विरामण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—१ वळधा सुळधा रजपूत, विरामण मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ ग्ळगा सिटळा। घोडै धाडै चोर ठग विन ठेढस ठेढी। जिकै नही किण जोग मिळचा घर घर रा मेढी। —ऊ. का.

उ०—२ हिमैं विरामण जीवण जसावत री नै मनोहर रामावत छै। जाट रजपूत बाभण बाणिया बसै। —नैणसी

(स्त्री विरामणी)

विरामणी-स. स्त्री —१ ब्रह्मचारणी देवी, ब्राह्मणी।

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री) (रू भे)

विरामणो, विरामबो-क्रि. स —१ शर्मिन्दा करना, लज्जित करना।

उ०—सुनि झरस सभार सदन घणा क्रपणा तणो विरांमियो। कर भू पर कीरत करमसी, रायसिंघ विसरामियो। —नैणसी

२ विश्राम देना, विश्राम करना, आराम करना।

३ कष्ट देना, दुख देना, पीडित करना।

४ रोकना, ठहराना।

क्रि. अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

२ पीडित होना, दुखी होना।

३ रुकना, ठहरना।

४ मरना, अवसान।

उ०—पतळा नसीब पाता मुग, गरज करमफळ पावियो। प्रतपाळ 'सिवो' माता पिता, वड दातार विरांमियो।

—साहबदान मुरताणियो

५ छूटना।

उ०—चितामणि पारस पौरसो, सुधा सरोवर कामगा। सपजै तांम सुत सपनै, ग्रह सुर धाम विरांमगा। —रा रू

विरांमणहार, हारो (हारी), विरांमणियो—वि०।

विरांमिप्रोडो, विरांमियोडो, विराम्योडो—भू० का० कृ०।

विरामीजणो, वीरांमीजबो—कर्म, भाव वा०।

विरांमब्रह्म-स पु. [स विराम-ब्रह्म] ब्रह्म ताल का एक भेद विशेष। (संगीत)

विरामियोडो-भू का कृ – १ शर्मिन्दा किया या हुवा हुआ, लज्जित किया या हुवा हुआ २ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ ३ पीडित किया या हुवा हुआ, दुखी किया या हुवा हुआ ४ रोका हुआ, ठहराया हुआ ५ रुका हुआ, ठहरा हुआ ६ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ७ छूटा हुआ। (स्त्री विरामियोडी)

विरामो-वि [स विराम] १ विश्राम करने वाला, आराम करने वाला।

२ व्याकुल बेचैन।

३ शर्मिन्दा करने या होने वाला।

४ पीडित होने या करने वाला, दुखी होने या करने वाला।

५ रुकने या रोकने वाला।

६ मरने वाला।

७ छूटने वाला।

विराग-स पु —१ एक मे मिला हुआ दूसरा राग। (सगीत)

२ देखो 'वैराग्य' (रू. भे)

विरागणो, विरागबो-क्रि स —१ वैराग्य ले लेना, संन्यास ले लेना।

उ०—तितरै राणैजी री दीकरी रामसिंघजी री बहू नाम आबा राम कहियो। तिण ऊपरि रामसिंघजी विरागिया। दाढी न सुवराडै। कपडा न धोवाडै। वागो न पहिरै। आरासि न करै। —द वि

२ त्यागना छोडना।

विरागणहार, हारो (हारी), विरागणियो —वि०।

विरागिग्रोडौ, विरागियोडो, विराग्योडौ—भू० का० कृ० ।
विरागीजणौ, विरागीजवौ—कर्म वा० ।

विरागियोडौ–भू का कृ —१ वैराग्य लिया हुआ, सन्यास लिया हुआ. २ त्यागा हुआ. छोडा हुआ ।
(स्त्री विरागियोडी)

विरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे) (सभा)

विरागीय—देखो 'वैराग्य' (रू. भे)
उ०—विरहि विरागीय वण मझारि जाईउ मणि झायइ । लवणिम जूवणु रूपरेह ता ग्रालिहि जाइ । —सालिभद्रसूरि

विरागौ—देखो 'वैराग्य' (रू भे)
उ०—साचउ जाणइ जिणधरममागो, तउ मनि जूवण लगइ विरागो । गंगानवगु वणि वसार । —सालिभद्र सूरि

विराड–स. पु —१ हिस्सा बट । (मा म.)
२ देखो 'वराड' (रू भे)

विराज–स स्त्री —१ शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य ।
उ०—डोहत सूड सिघळी, घटा विराज सामळी । घमकि घट घुघर, सिंदूर सीस चम्मर । —गु रू. व
स पु —२ राजा, नृप ।
३ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।
४ क्षत्रिय जाति का व्यक्ति ।
५ स्वयभुव मनु का नामान्तर ।
६ नर राजा का पुत्र एक राजा ।
७ एक वैदिक छन्द विशेष ।
८ कुरुवशीय राजा ग्रविक्षित के पुत्र ।

विराजणौ, विराजवौ–क्रि ग्र. [स. विराजनम्] १ शोभित होना, शोभायमान होना ।
उ०—१ ग्रौर ही ग्रनेक भात रा फूला री माळा किलगी छडी सेहरा गूंथिया छै । सू सारै साथ नै बकसजै छै । फूला रा चौसरा घातजै छै । छडी हाथा मे विराज रही छै । —रा सा स
उ०—२ बाको मुकट काछनी सुंदर, ऊपर जरद किनारी । गळ मूतियन की माळ विराजै, कुडळ की छवि न्यारी । —मीरा
उ०—३ समपै ग्रनड दाढाळ सहट्टा, दैता दहण करण दहवट्टा । रातवर तन रोम विराजै, भळकत तेज सुरा मझि ग्राजै ।
—मा वचनिका
उ०—४ बिंदली सीस विराजही, माग ज भरी सिंदूर । नथ विराजै नासिका, रही सोभ भरपूर ।
—कुवरसी साखला री वारता

२ निवास करना, रहना ।
उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत विराजणौ ग्राप । वोहि बगळी ग्रणखावणी, तौ विण घणौ 'प्रताप' । —जैतदान बारहठ
उ०—२ दूर दिसावर जेहनो पिऊ वसै जी, तै नार सुहागण कहाय । महाविदेह मे धणिय विराजियाजी, तिकै निरधणिया किम थाय । —जयवाणी
उ०—३ सोजत रा बजार मे छत्री त्या स्वामीजी विराज्या ।
—भि. द्र.
उ०—४ ग्रजमेर मे ग्रानासागर ऊपर बाग मे मेल रैवास रा कराया, ऊठै विराजता जद । —मारवाड री ख्यात

३ बैठना । (ग्रादर-सूचक, सम्मान सूचक)
उ०—१ कसतूरी केसर ग्ररगजी, चदन तिलक लिलाटि । करै स्रीपति री ग्रारती, किसन विराज्या पाटि । —पदम भगत
उ०—२ ग्रेकदा प्रस्ताव राव जोधोजी दरबार किया विराजै है नै सारा भाई वा ग्रमराव वा कवर हाजर है । —द दा.
उ०—३ ताहरा गोगैजी कह्यौ—घोडा हू ले ग्राऊ छू, ज्यूं ग्रापा घरै हाला । ताहरा पाबूजी कह्यौ—राज ! ग्राप बिराजौ । हू लै ग्राईस । —नैणसी
उ०—४ उन्हाळै चोमासै सिरया री पक्की हाटै स्वामीजी वखाण देता, भीखणजी स्वामी भारमलजी ग्रागै ग्रोडै विराजता, पाखती कठ मिलावण वाला भाया बेठता, बीजा साध माहै बेसता ।
—भि द्र.
उ०—५ पौळि पौळि उच्छव प्रबळ, वेदोकति विसतार । राजा तखत विराजियौ, सुभ चौकी स्रणगार । —रा. रू.
उ०—६ डोढी रै बारणै वैहळ सु उतर भीतर नु चाली, सो ग्रागै राणोजी मूढै ऊपर विराजिया छै ।
—कुंवरसी साखला री वारता

४ होना ।
उ०—१ चक्रवरती दस हुग्रा, धरम तणै परताप । ग्रारभ परिग्रहो त्यागनै, मोख विराज्या ग्राप । —जयवाणी
उ०—२ ग्रादेसरजी' एडी कही, 'भरतादिक' सौ भाय । धरम तणै परभाव सूं, मुगत विराज्या जाय । —जयवाणी

५ उमडना, छाना, ग्राच्छादित होना ।
उ०—चिहु ग्रोर घोर घटा विराजत, गुहिर गाजत गद्दन । धरि ग्रधिक गाढ ग्रखाढ उलस्यउ, धस्यउ, चित सै चद्दन । —वि कु

६ रहना ।

उ०—१ गाम रे वास्तै भार ई काई है। गामसाऊ रुपिया आपरै खनै इज है। आप जोधपुर जाय ने रेडियो ले पधारो। अठै विराजो जितरै खूब धूधावो अर वदळी व्हैनै पधारो जद रेडियो आपरो ने आपरै बाप रो। —अमरचूंनडी

उ०—२ राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह सुपारिस साभळै, की फत्ते सरहद्द। —गु. रू. व.

७ जीवित रहना। (सम्मान, आदर)

उ०—१ ताहरा सरब हजूरी, पासवान, खवास तेरू हुता तिकै सरब तळाव ढूढियो। घणी ही जोयो पण हाथ न आयो। इतरै मे कुवर री अतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तो देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सबद हुवो। साथ सारो ही रोवण-कूकण लागो। राजा नै जाय खबर हुई सो सुण नै मुरछा-गति हो गई, विवहल होय ग्यो। कुंवर सुंदरदास दीठो कै कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटै तो राज जाय छै। ताहरा कुवर दैपाळदे नै उठाय छाती सूं लगायो। नाक भीच सावचेत कियो। राजा सावचेत हुवो। फेर कूकण-पुकारण लागा। तद महतै अरज कीवी-जै कूवरजी री आ दसा हुई। दैपाळ निराठ दिलगीर हुवो। धूकारोळ सूं कुळराइज गयो, कह्यो-महाराज दिलासा करो। इण ऊपर जीव टेको अर परमेस्वरजी आईज की तो किण रो ही दोख नही। यूं कहि दूहो कह्यो-

सुख मे दुख सचारवो, दुखिया सुख दयाल।
देवज रूठो दाणवै, हरि रूठा वेहाल॥

यूं कहि राजा नूं समझायो। सावचेत कियो अर कह्यो-महाराज, थाहरै सारी दौलत छै, कुटब छै। इण तरह राजा नूं धीरज बधाय जनानी डोढी गयो। जनानै सारै ही मे धीरज दीवी। कुंवर री मा अर महळ दोनूं ही हठ झालियो-कुंवर री मुंहडो देखा। ताहरा कुंवर री मा नै तो कह्यो-थै तो सुग्यानी छो। इनरा सास्तर सुणिया छै। कथा सुणी तै मैं इतरो ही हठ सुणियो छै? यूं कहि राणी रो हठ छुडायो। फेर कुवर री राणी नै फुरमायो-जै राज रो काम कुण चलावसी, राजा तो विरध हुवा। कुंवरजी री यूं हुई। दैपाळदे बाळक छै। राज राखणो छै तो आपनै विराजणो छै। परमेस्वरजी निमित्त धरम पुन करो। घणो सोच करणो तो असमझ री काम छै। हठ छोड अर लारै रहि कर राज करो।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ इयै भूतळ पर आप ५३ वरस रे अडेंगडै विराजिया अर सवत् १९५१ मे सिवलोक सिधारिया।

—सत सेठ स्रीरामरतन डागा री वात

८ ठहरना, रुकना।

उ०—१ गुणसठै रा साल चवदै साधा सू तथा चवदै आरया सूं देवगढ में भीखणजी स्वामी विराज्या हुता, तिहा तीन आय बोल्या—भीखणजी म्हैं तीन जणा त्यानेइ पूरो आहार नही मिल्यो तो थानै इतरा ठाणा नै आहार किण रीतै मिलै। —भि द्र.

उ०—२ अतरपट कर सहेल्या हथवोळणै री कसार मुह आगै आण धरियो। ताहरा भरमल अरज होळै सै कीवी, जो आज रात चाकर ऊपर किरपा कर विराजै तो मोटी करै।

—कुंवरसी साखलै री वारता

९ निवास करना।

उ०—औघड एक न पायो औघड, आक धतूरा खाय हुवो तड। बुरा भला खावै किम काजै, तेरै भीतरि राम विराजै।

—अनुभववाणी

१० स्थित होना।

उ०—वलि तेहनै चौ पाखती, विकट दुरग विराजै रे। घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे। —वि. कु.

११ उपस्थित होना, विद्यमान होना।

विराजणहार, हारौ (हारी), विराजणियौ—वि०।
विराजिओडो, विराजियोडो, विराज्योडो—भू० का० कृ०।
विराजीजणो, विराजीजवो—भाव वा०।
वराजणो, वराजवो, विराजणौ, विराजवो—रू० भे०।

विराजमान-वि [स विराजमान] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—१ नारद तुबर सपत सुर सगीत किया। अपछरा मिळ ग्रधप ग्यान किया। हूरा पौहप वरखा कीधी। तिण विरिया बारै आदीत मुखा कमळ विराजमान हुवा। —मा वचनिका

उ०—२ तठा उपरायत देमौत राजान आपरा टोळी भजल रा जुवान लिया विराजमान हुवा छै। कमरा खोलजै छै वरछी रा झूला कीजै छै। —रा सा स.

२ उपस्थित, विद्यमान।

उ०—तिण वेळा आदरी सगति। जोति री धणियाणी। सुरा री सहाय। सुक्रित री वाहरू। खळ री खैगाळ। चवदै भवणा री प्रतिपाळ। प्रगट विराजमान हुवा। इद्रलोक मे उछाह हुवा।

—मा वचनिका

३ बैठा हुआ। (सम्मान सूचक, आदर-सूचक।

उ०—वागा बणाउ करि। सख चक्र गदा पदम धारि। वैजयंती माळ मोर मुगट कुंडळ विसाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर विराजमान हुआ छ। मणिमाणिक जडित छत्रपाट सिंघासण विराजमान दीसै छै। भळळाट करि जगाजोति जागी छै।

—र वचनिका

४ स्थित।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति मुखमली जरबाफती,

मखतूल रेसम री कलावतू जरकस लपेटिआ लूवा समेत गादी तकिआ विराजमांन कीजै छै। —रा सा स

स पु—१ बैठाने की क्रिया, बैठाना। (सम्मान सूचक, आदर सूचक)

उ०—नठा उपराति राजान सिलामति तोरण बाधीजै छै। घणा गज डवर पेमाख करि मडोवर महलें पधराया छै। सुभ दिन सुभ घडी सुभ मूहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा माहि आखि पाट सिंघासण विराजमान किया छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर दुळै छै। —रा सा स

२ बैठने की क्रिया, बैठना। (सम्मान-सूचक)

उ०—१ दोय-दोय वाकरा री सिल्हाडनै ठरका हुवै छै। तरवारा रा छणकार हुयनै रह्या छै। चौरगा री खाटक्कड हुयनै रही छै। कटोरा माहै फूल लीजै छै। वाकरा होसनाका वसू कीजै छै। देसौत रवा घोय हाथ ऊजळा कर विसायता ऊपर विराजमान हुवा छै। —रा सा स

उ०—२ त्या उमरावा रा वखाण। लोह री लाठ। चालता कोट। आवर चो था। अनेक भारथ किया। भाति भाति रा लोह चाखिया नै चखाया। ईसा दुवाह। आण विराजमान हुवा। —मा वचनिका

उ०—३ ब्रहमा विसन महेस इद्र सुर साथै विराजमान हुआ छै। आप विसन चत्रभुज रूप धारि। वागा वणाव करि। सख चक्र गदा पदम धारि। वैजयतीमाळ मोरमुगट कुंडळ विसाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर विराजमान हुआ छै। —र वचनिका

३ पत्रो आदि मे अपने से बडो के लिए लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द।

उ० सरब ओपमा विराजमान अनेक ओपमा लायक भावीसा दुरगजी नै लिखी तेजा री जय सीरघुनाथजी री वचावसी। घणा मान सूं करनै उपरच समाचार एक वाचसी कै उतराद में झगडौ चेतग्यो है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण री हुकम मिळचौ है। आप कोई वात री चिंता फिकर करसी नी वूजी नै म्हारा पाव धोक अरज करसी अर टावरा माथै हाथ फेरसी। म्हारी कानी सू अमला री मनवार मनासी। —अमर-चूनडी

रू भे—विराजमान, वैराजमान।

विराजित—देखो 'विराजियोड़ौ'

उ०—१ वर तुरग उत्तग, कणै साकति विराजित। मदोमत्त मातग, जाण जळ वादळ गरजित। —गु. रू व

उ०—२ पूठि भिडज्जा आरुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसै त्रिज्जड। सत्तरि खान बहुत्तरि ऊमर, सीस विराजित मेघाडवर। —गु रू व

विराजियोडौ–भू का कृ—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभित हुवा हुआ २ निवास किया हुआ, रहा हुआ. ३ बैठा हुआ (आदर सूचक) ४ हुवा हुआ. ५ उमडा हुआ, छाया हुआ, आच्छादित हुवा हुआ ६ रहा हुआ. ७ जीवित रहा हुआ (आदर-सूचक) ८ ठहराहुआ, रुका हुआ. ९ निवास किया हुआ १० स्थित हुवा हुआ.
(स्त्री विराजियोडी)

विराजी—देखो 'वेराजी' (रू. भे)

उ०—१ ती सूं वादसाह घणी महरवानगी राखै और जवरदस्त घणा ती सू पण भय राखै जै विराजी हुवो तो फौजा धावै। —महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

उ०—२ स १५३५ तळाव ऊपर कोट घातण री तजवीज करी। तद राव सेखै कहायौ, "गढ अठै मती घाल्ज्यो, परै जागळू री हद में घातो। सू या मानी नही। पीछै राव सेखो मनमें विराजी तो हुवो पण यानै क्यू ई कयो नही। —द दा

उ०—३ ता पछै पातसाहजी भला माणस मेल दळपतसिंघजी नू दिली बुलाया सू गया नही। हजरत रा माणस पाछा गया। तठै पातसाहजी घडा विराजी हुवा। पण दळपतसिंघजी इण वात नै थापी नही। —द दा

विराट-स. पु [स विराट] १ महाभारत के एक पर्व का नाम।

२ एक प्रदेश जो जयपुर, अलवर व भरतपुर के बीच है। जहा पाडवो ने अज्ञातवास का समय (एक वर्ष) बिताया था।

उ०—वळी न्रप जैन करा वळिहार, पत्री अणभीज परा खळ पार। वाणा थट कैरव राण विराट, ब्रहन्नट जाण करै द्रहवाट।—मे म

३ उक्त प्रदेश का राजा।

वि वि—इसकी पुत्री उत्तरा का विवाह पाडव-पुत्र अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था। इसके पुत्र उत्तर व इसकी स्वय की मृत्यु महाभारत युद्ध मे पाडवपक्ष की ओर से लडते हुए हुई थी। इसके साले व सेना का सेनापति कीचक का वध पाण्डव पुत्र भीम ने उनके अज्ञात वास के समय द्रोपदी पर कुदृष्टि डालने के विरोध मे किया था।

४ स्वयभू मनु का नामान्तर।

५ महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को कृष्ण द्वारा दिखाया गया विश्व स्वरूप।

६ वलि को छलने हेतु विष्णु द्वारा किया गया त्रिविक्रम रूप।

७ विश्वशरीर मयी अनन्त पुरुष।

८ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।

९ एक देवयोनि, सुतप ।

१० प्रतवर्दन देवो मे से एक ।

११ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, सगण, जगण और अन्त मे लघु होता है ।

१२ देखो 'वैराट' (रू भे) (ह. ना मा)

रू. भे.—वराट, बिराट, वैराट. वइराट, वयराट, वैराट ।

विराटक–स पु [स] विराट नगर में निकलने वाला एक प्रकार का निम्नकोटि का हीरा या नग ।

विराटपरव–स पु [स विराट+पर्वन्] महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटरूप—देखो 'विस्वरूप'

विराड—देखो 'वैराट' (रू भे)

उ०—इयै विछावणा कीया आइ बैठा । देखिनै कह्यौ इडो बाटो । खीवों बोलियौ बाटणो कासू । विराड भाग ह्र करिस्या । ताहरा नाचिण वाळो बोलियो ना जी था कहियो हुतो । ईयै नु इतरी भूइ थाहरै कहियै आणी । —चौबोली

विराडप–स. पु —अगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ।

विराडणो, विराडबो–क्रि. अ —डरना, भयभीत होना ।

उ०—विउड भिउड ताडिउ तु चपेटा ऊपाडिउ । कूंयरि मनि विराडिउ बोल बोलइ सु ताडिउ । —सालिसूरि

विरादर—देखो 'ब्रिरादर' (रू भे)

उ०—१ यम लिखि दोलउजोरनै, पुरजा पहुचाया । खान विरादर नोकरों, सबको बुलवाया । सबके बीच मसूरखा, पुरजा बचवाया । फिर कासीद जबानदा, समचार सुनाया । —ला रा.

उ०—२ आगेंही वडे महाराज 'अजमाल' सें समर के खेत हमारे विरादर हसनखा गिरदखा हुसैनखानें जग कर सच्चें दिल सें सिर दिया । जिन्हुन के मरणें सें तारीफ के सवाल सब आलम परि जिया । —सू. प्र.

विरादरी—देखो 'बिरादरी' (रू भे.)

उ०—सात हजारी सामतो, जाको नाम 'अजीत' । दाखो फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत । —रा. रू

विराध–स पु [स] १ विरोध, प्रतिकूलता ।

२ अनादर, अपमान ।

३ कष्ट, पीडा, तकलीफ ।

४ दण्डकारण्य मे राम या लक्ष्मण के द्वारा मारा जाने वाला एक बलवान राक्षस जिसे रंभा पर अत्याचार करने के कारण गधर्व मे राक्षस योनि प्राप्त हुई थी ।

५ कश्यप एव दनु के दानव पुत्रो मे से वितल नामक पाताललोक मे रहने वाला एक पुत्र दानव ।

वि. [स विरुद्ध] १ विरोधी, प्रतिपक्षी ।

२ अपमानित, तिरस्कृत ।

३ कष्टमय, पीडित, दुखी ।

रू. भे —बिराध ।

विराधक–वि —१ विरोध करने वाला, विरोधी, प्रतिपक्षी ।

उ०—उदायन दीधउ केसी नइ, भाणेजा तइ राजभार जी । वैर वहतउ थयउ विराधक, अपीचि असुर कुमार जी । —स. कु

२ अनादर करने वाला, अपमान करने वाला ।

३ कष्ट देने वाला, दु ख देने वाला ।

विराधणो, विराधबो–क्रि स —१ विरोध करना, विरुद्ध कार्यवाही करना ।

२ अनादर करना, अपमान करना ।

३ रोकना, अवरुद्ध करना ।

उ०—तै मुझ मिच्छामि दुक्कड, अरिहत नी साख । जे मइ जीव विराधिया, चउरासी लाख । —स कु.

४ कष्ट देवा, दु ख देना ।

५ नाश करना, नष्ट करना ।

उ०—सीसु सिखडी तणउ तामु छेदीउ छलु साधीउ, पाप पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ । —सालिभद्र सूरि

विराधणहार, हारो (हारी), विराधणियो—वि० ।

विराधियोडो, विराधियोडो, विराध्योडो—भू० का० कृ० ।

विराधीजणो, विराधीजबो—कर्म वा० ।

विराधियोडो–भू. का. कृ —१ विरोध किया हुआ, विरुद्ध कार्यवाही किया हुआ. २ अनादर किया हुआ, अपमान किया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ, दु ख दिया हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री. विराधियोडी)

विराधी—देखो 'विराधक'

उ०—इत्यादिक वहूला हुवा, समकित धरम विराधी रे । मरनै केई नरकै गया, केई नीची गती पिण लाधी रे । —जयवाणी

विराळ, विराल–स. स्त्री —उष्णता, वाष्प ।

उ०—डूंगर तणा सिखर डगमगइ, थयूं अजूआलूं सायर लगइ । दिग्गज आठ रहया अवलोकि, धूम विराल गई सुरलोकि । —का दे प्र.

विराळी—देखो 'बिराळी' (रू भे)

विराव–स. पु. [स] १ हल्ला गुल्ला, शोरगुल ।

२ ध्वनि, शब्द ।

३ अमिताभ नामक देवयोनि ।

रू. भे —विराव ।

विरावणौ, विरावबौ–क्रि. स —१ हल्ला-गुल्ला करना, शोर करना ।

२ ध्वनि या शब्द करना, बोलना ।

विरावणहार, हारौ (हारी), विरावणियौ—वि० ।

विराविग्रोडौ, विरावियोडौ, विराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विरावीजणौ, विरावीजबौ—कर्म वा० ।

विरावणौ, विराववौ—रू० भे० ।

विराविन–स पु [स विराविन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

विरावियोडौ–भू का. कृ —१ हल्ला-गुल्ला किया हुआ, शोर-गुल किया हुआ २ ध्वनि या शब्द किया हुआ, बोला हुआ ।

(स्त्री विरावियोडी)

विराह–स पु [स वि+फा राह] १ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

२ बिना रास्ता, रास्ता विहीन । ३ उल्टे रास्ते ।

उ०—कै भागा अजमेर नूं, रिम दळ राह विराह । कै छिपिया 'किरतेस' रै, कै पुर घर घर माह । —रा रू

३ देखो 'वराह' (रू भे)

विरिंच, विरिंचन, विरिंचि–स पु [स विरञ्च, विरञ्चि] १ ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

३ महेश ।

विरिकत, विरिक्त— देखो 'विरक्त' (रू भे.)

विरिक्ष, विरिख, विरिखि—१ देखो 'व्रक्ष (रू भे)

२ देखो 'वरस' (रू भे)

विरित–स पु [स व्रतिन्, व्रत्ति] १ श्वान, कुत्ता । (ह ना मा)

२ देखो 'विरक्त' (रू. भे)

विरिद, विरिदि—देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ वळिभद्र वुध तूं ना विरद, सवळा चडिसै सेस । परी उधारै प्राणियौ, 'पीर' कहै परमेस । —पी ग्र

उ०—२ चौरी बैठे चक्रधर, वळि सुहिद्रा रो वीर । वावै ना सवळा विरिद, पुरौ कवेसर' पीर' । —पी ग्र.

उ०—३ अरण गुरड ग्रोळगै, दियै परिकरमा दिणीश्वर । सिनिका-दिखि समग, विरिद दै वारट ईसर । —पी. ग्र

उ०—४ वावा तू वाळा विरिदि, ग्रइग्रौ पुरिखि ग्रलाह । सहसा-बाहु सारिखा, गिळिया कितरा ग्राह । —पी ग्र.

विरिध—देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

विरिधि—१ देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

२ देखो 'व्रद्धि' (रू भे)

विरिया—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ एक विरियां मुख वोलौ रे, धुता रा जोगी । कानन कुडळ गळ विच सेली, अब तेरौ मुख खोलौ रे । रास रच्यौ वसी-वट जमुना, ता दिन कोनौ कोलौ रे । —मीरा

उ०—२ उण विरिया 'अभसाह' रौ, नरपति पेखै नूर । सर सोखिम करिवा सम्रा, ग्रीखम सूर करूर । —रा. रू.

उ०—३ पर उपगारी परम करुणा पर, सेवक अपणौ सभारौ । भगत अनेक भवोदधि तारै, हम विरिया क्यूं विचारौ । —स. कु

उ०—४ लोक व्यवहार राखण भणी, वीर समीपै जाय । पूछण री विरिया हुई, तरै लाज आई मन माय । —जयवाणी

उ०—५ अणहूत भाठै सू काठी हुवै । विरियां देख'र विणजै नी सौ वाणियौ ही गिंवार । छाती काठी करी है । जै जिसौ दिन नहीं आवै । —दसदोख

उ० —६ फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणै माथै हथफेरी करणी पैलाई । पाच-सात विरियां, छुट्टी विसराम रै वखत, करणै नै जमी पर सूंवौ सुवाण्यौ, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायौ । —दसदोख

विरिस, विरिसि—१ देखो 'वरस' (रू भे.)

२ देखो 'वरीस' (रू भे)

विरी—१ देखो 'विना' (रू भे)

उ०—सदा मद स्रवसै तना ग्रावइ सकति, भाग हुइ सै जिका जुडिसै भगति । भागइ विरी करौ कनां इद री भलौ, टळि गयौ परौ जमराउ वाळौ टलौ । —पी. ग्रं.

२ देखो वीडौ' (रू भे.)

३ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—वचन विनता उच्चरि रे, विहग, तू विरी थयु । गुण कह्या नळरायना नि भाव मनन् तांहां गयु । —नळाख्यांत

विरुग्रौ—देखो 'विरुग्रौ' (रू भे)

उ०—१ विरुग्रौ दुरमुख ऊपरै होजी, पिण जिन धरम करत । रयण दिवस रही, समकित सुद्ध सुमति ग्रही होजी, भजै सदा भग-वत । —वि. कु

उ० — २ मान गहेली मांननी, विरुग्रउ वोल्यो वयण । विण ग्रादर न रहै वदै, सिंह सूर नै सयण । —प. च चौ

उ०—३ पाणी तिहां नवि नीकळै रे, सोकातुर सहु जात । चित-वणा एहवी करै रे, एतौ विरुइ वात । —वि. कु.

(स्त्री विरुई)

विरुझणी, विरुझवो-क्रि. अ —उलझना, फसना ।

विरुझणहार, हारौ (हारी), विरुझणियौ—वि० ।

विरुझिओडौ विरुझियोडौ, विरुझ्योडौ—भू० का० कृ० ।

विरुझीजणौ, विरुझीजवौ—भाव वा० ।

विरूझणौ, विरूझवौ—रू० भे० ।

विरुझियोडौ—उलझा हुआ, फसा हुआ ।

(स्त्री विरुझियोडी)

विरुत्त, विरुत्तौ—देखो 'विरत्तौ' (रू. भे)

उ०—आयौ खुरम विलागै अवरि, पूरै पारभ हे गै पक्खरि । उपा-डेह छुरा आघतरि, जाणे सीह विरुत्तौ छत्तरि । —गु रू व.

विरुत्थ, विरुत्थौ, विरुथ—देखो 'वरूथ' (रू भे)

उ०—दावै लागा जमी घणा हियै दूखिया दोयणा दूठ, प्रवाडा अचूकिया लै भूडडा पाडीस । जुवारी' 'भोपाळ' 'डूगो' दुहुत्थां भूखिया जगा, सेखा चाळै लूकिया विरुत्थां गोरा सीस ।

—सकरदान सामोर

२ देखो 'विरत्तौ' (रू. भे)

विरुथण, विरुथणी, विरुथनी—देखो 'वरूथणी' (रू भे)

विरुद—स पु [स.] १ किसी के गुण, यश, प्रताप आदि का वर्णन ।

उ०—अमर मत्र उर धरै, विरुद ऊचरै महावत, सक साह सपणै, वयण न भणै असुहावत । भाय दाय भ्रमि भरै, पाय लगर खरळ-क्कै । ऍड बंड अडियल्ल नीठ दोय पेंड सरक्कै । —रा. रू

२ राजा लोगो द्वारा प्राचीन काल में धारण की जाने वाली यश या प्रशसासूचक पदवी ।

उ०—वेराजी रै पुत्र रामदासजी हुवा गाव दुघोड रै खेडै थापना कीनी । बडो एक आखाढसिघ रजपूत हुवो । विरदधारी रजपूत हुवो । रामदास वेरावत नै उगणीस विरुद हुवा । तिकै विरदा रा नाव-प्रथम पाखरिया विना रहणो नही । दूजो सवळा उथापण । तीजो निवळां थापण । चोथो जाचक जण तरवर । पाचमो परनारी सहोदर । छठो चरुसुगाळ । सातमो सुखी '' ' । —रा सा स.

३ यश, कीर्ति, गुण ।

उ०—१ गोपाळ व्रिज रा वाळ गोवाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच । जादवा उजाळ नमो विरुवा विसाळ जूना, डाग धारी काळ माथै ससिपाळ डाच । —पी ग्र

उ०—२ छत्र, चामर, नीसाण, कुकमानगर री राज दीधो । कागरू देसनो राजा मारचो । लक्ष हाथी, नवलख अस्व पायगा हुई । अनेक विरुद विराजमान राठोड कमधजवस री थापना कीधी ।

—रा व वि

उ०—३ हाडा घर गहमह हुई, जाडा विरुद लुभाण । गाडा भरि जाडा गळा, खाडा तुरक खपाण । —व. भा.

४ यशस्वी या यशपूर्ण कार्य, कीर्ति के कार्य ।

उ०—वाप जिम वडा ही वडा वणिया विरुद, "सूर" हर आभरण मत्रा सारू । महाराजा जु सैं माट कीधो विग्रह, मडोवर ग्रंजसै राव मारू । —गु रू. व

५ कर्त्तव्य ।

उ०—१ तुवर दाटण मेलिया, अभै करै 'अभसाह' । सांभरि सिर आयो सगह, नरपति विरुद निवाह । —रा रू

उ०—प्रवहण तारचा कष्ट निवारचा, अटवी माहि उबारचा राज । विरुद सभारचा धरमसी धारचा, सेवक काज सुधारचा राज ।

ध व ग्र.

७ देखो 'विडद' (रू. भे)

रू भे.—वडद, वरद, विडद, बिडद, बिरद, बिरद्द बिरिद, बिरिदि, बिरुद, बीडद, ब्रद, ब्रिद, ब्रिदि, विडद, विडदाव, विडद, विडदाव, विदुद, विरद, विरद्द, विरदै, विरद्द, विरध, विरिद, विरिदि, विरुद्द, व्रिरुद, व्रद ।

विरुदधार, विरुदधारी—वि [स विरुद+धारिन्] विरुद धारण करने वाला, विरुदपति ।

उ०—अराना किसन नंद छहु विध हू अधक, चोजबान विरुदधार चढता । कहर ससमाथ दस पाट लाधै कवण, पथ उतराद गुण ग्रथ पढता । —हुकमीचद खिडियो

रू भे —विरदधार विरदधारन विरदधारी ।

विरुदपत, विरुदपति, विरुदपती—वि [स विरुद+पति] विरुद धारण करने वाला, विरुदधारी ।

रू भे —वडदपत, वडदपति, वडदपती, वरदपत, वरदपति, वरदपती, बिडदपत, बिडदपति, विडदपती, बिरदपत, बिरदपति, बिरदपती, बिरिदपत, बिरिदपति, बिरिदपती, बिरुदपत, बिरुदपति, बिरुदपती, बिरदाधिप, बिरदाधिपत, बिरदाधिपति, बिरदाधिपती, बिरधाधि-पत, बिरधाधिपति, बिरधाधिपती, वरदपत, वरदपति, वरदपती, वरदाधिपत, वरदाधिपति, वरदाधिपती, विरदपत, विरदपती, विरद-पती, विरदाधिप, विरदाधिपति, विरदाधिपती ।

विरुदाणी, विरुदावो—क्रि. स.—१ जोश दिलाना, उत्साहित करना ।

२ कीर्तिगान करना, यशगान करना, गुणगान करना ।

३ ललकारना ।

विरुदाणहार, हारौ (हारी), विरुदाणियौ—वि० ।

विरुदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरुदाईजणौ, विरुदाईजबौ—कर्म वा० ।

बडदाणो, बडदावो, बडदावणो, बड़दाववो, बरदाणो; बरदाणो, बरदावणो, बरदाववो, बिडदाणो, बिड़दावो, बिड़दावणो, बिडदाववो बिडदाणो, बिडदावो, बिडदावणो, बिडदाववो, बिरदाणो, बिरदावो बिरदावणो, बिरदाववो, बिरुदाणो, बिरुदावो, बिरुदावणो, बिरुदाववो, वरदाणो, वरदावो, वरदावणो, वरदाववो, विडदाणो, विडदावो, विडदावणो, विड़दाववो, विडदाणो, विडदावो, विडदावणो विडदाववो, विरदाणो विरदावो, विरदावणो, विरदाववो, विरुदावणो, विरुदाववो—रू० भे०।

विरुदायक–वि —१ कीर्तिगान, यश गान या गुणकथन करने वाला।

२ जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला।

रू भे —बरदायक, बिडदायक, बिरदायक, बिरुदायक, वरदायक, विरदायक।

विरुदायोडो–भू का कृ.—१ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ २ कीर्तिगान किया हुआ यशगान किया हुआ ३ ललकारा हुआ ४ गुणगान किया हुआ।

(स्त्री विरुदायोडी)

विरुदाळ —देखो 'विरुदाळो' (मह , रू भे)

विरुदाळी–स स्त्री —देवी दुर्गा।

रू भे —बरदाळी, बिरदाळी, बिरद्दाळी, बिरिदाळी, बिरुदाळी, विरदाळी ब्रदाळी, ।

विरुदाळो–वि (स्त्री विरुदाळी) १ विरुदधारी, यशस्वी।

२ वीर, बहादुर।

३ श्रेष्ठ, उत्तम।

रू भे —बरदाळो, बिरदाळो, बिरद्दाळो बिरिदाळ, ब्रिरिदाळो, बिरुदाळ, विरुदाळो, ब्रदाळो, विरदाळो।

मह.,—ब्रदाळ, बिरदाळ, ब्रिरद्दाळ, ब्रिरिदाळ, बिरुदाळ, ब्रदाळ, विरदाळ।

विरुदावणो, विरुदाववो—देखो 'विरुदाणो, विरुदावो' (रू. भे)

विरुदावणहार, हारो (हारी), विरुदावणियो—वि०।

विरुदाविम्रोडो, विरुदावियोडो, विरुदाव्योडो—भू० का० कृ०।

विरुदावीजणो, विरुदावीजवो—कर्म वा०।

विरुदावळो, विरुदावली–स स्त्री [स.] १ कीर्तिगान, यशवर्णन, प्रशसा।

उ०—१ राजविया नै ओळखै रे, जाणै देस विदेम रे। वस तणी विरुदावळी, सभळावै सुविसेस रे। —श्रीपाळरास

उ०—२ देवकी माता आदै राणिया, साथै सहू परिवार। बोलै विरुदावलिया, चारण सुजव सब, जय जय शब्द अपार।

—जयवाणी

उ०—३ रथ बेठी नै सचरी, हुवो खाडेती भ्रात। भाटण देवै विरुदावली, आरीसो लेई हाथ। —जयवाणी

२ विरुदो या गुणों का सग्रह, गुणावली।

उ०—विरुदावळी हसती वरीस अवनीस, लाख सासण कोडि वरीस अडड डडण अगजी गजण, अनमी असूत ताहि नमी भूत करण। सवळ रायथान उथापण, निरजोर राय सहाय करि थापण। खड खड खुरासाण को माण हीण करण, वेद मुजाद की अजाद असरण के सरण। —रा रू.

रू भे.—विरदावळी, बिरुदावळी, ब्रदाळी, बिडदावळ, बिडदावळी, विरदावळी।

विरुदावियोडो—देखो 'विरुदायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विरुदावियोडी)

विरुदेत, विरुदैत–वि —१ विरुदधारी, विरुदपति, विरुदवान, यशस्वी।

उ०—पाचै रतन तणै वलै, जिहा तिहा पामै जैत। बीजा तै सहु वापडा, कुमर वडो विरुदैत। —वि कु.

२ विरुद या यश का वर्णन करने वाला।

रू भे –बरदेत, बिरदेत, बिरदैत, बिरुदेत, बिरुदैत, वरदेत, वरदैत, विरदेत, विरदैत।

विरुद्द—देखो विरुद' (रू भे.)

उ०—१ वैडा जुधा गयदा ढाळवै खेत वेढीगारो, चाळवै समत्रा पजा विरूथौं सचाळ। लूथवस्था अगरेजा सू, सूर काळ रूपी लडै, उनागा खडग्गा सीह विरुद्दा उजाळ। —बुधसिंह सिंढायच

उ०—२ इसा कमधज्ज विरुद्द अधार, महारिण मेछा मारणहार। ढढोळण ढिल्ली है-वै ढाण, सकोडिम जेह वडा सुरताण।

—राव जैतसी रो रासो

२ देखो विरुद्ध' (रू भे)

उ०—नाथिया उनत्था नत्था विरुद्दां बठोठ नाथ। सिंघ टोळा साथिया सबोळा लीवा सग। धासाहरा दीधा घेर बिभाडै हाथिया घडा, वेध लागा फीवा घू विलातिया वरग।

—डूगजी जवारजी री गीत

विरुद्ध–वि [स] १ जो प्रतिकूल हो, वैरी दुश्मन। (ह, ना. मा)

उ०—मिळ थाट कमधा दळ अनमधा, वधक सधा ऊवधा। अति वेध विरुद्धा परस उरद्धा, किलब दगधा अबुकदा। —रा. रू.

२ विपरीत, उल्टा।

उ०—१ तिण री सद्धा-हिंसा में धरम। सम्यक्त्वी नै पाप न लागै। सरव जगत रा जीव मारघा एक समो ससार वधै नही। सरव

जीव नी दया पाल्या एक सभी ससार घटै नही। होणहार हुवै ज्यु हुवै। करणी रो नाम नही केवली देख्यो जद मोक्ष परही जासी। इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामीजी कनैं कहे। —भि. द्र

उ०—२ साजी नावा समान तो साधु आप तिरै औरा नै तारै। फूटी नावा समान भेखधारी, आप डूबै भोला नै डबोवै। पत्थर की नावा समान तीन सो तेसठ पाखडी तै प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसै। —भि. द्र.

३ अवरुद्ध, अटका हुआ।

४ घेरा हुआ, बन्द किया हुआ।

५ जो मेल नही खाता हो, बेमेल, असगत।

६ जो विरोध करे, विरोधी।

७ अशुभ, बुरा।

८ अनुचित, बुरा।

उ०—परउपगारी रे सहुनो, हु हतो, निस्टाचार न चोर रे। केहनै दुख नवि दीधो काई विरुद्ध न कीधो, हा हा जाण्यो रे मैं इणहीज भवै। कीधो पातक घोर रे, न रह्यो हु सीधो मैं सुजस न लीधो। —वि कु.

९ जो वर्जित हो, निषिद्ध।

स पु —१ दसवें मन्वन्तर ब्रह्मसावर्णि का एक देवगण।

२ युद्ध।

रू भे—बिरुद, बिरुद्ध, बिरुध, बिरूद, बिरूद्द, विरध, विरुद्द, विरुध, विरूड, विरूध।

विरुद्धकरमा—वि [स. विरुद्ध+कर्म या कर्मन्] विपरीत आचरण वाला, बुरे चाल-चलन वाला।

स पु —उक्त प्रकार का व्यक्ति।

विरुद्धता—स स्त्री.—विरुद्ध होने की अवस्था या भाव, विपरीतता, प्रतिकूलता।

विरुध, विरुधि—देखो 'विरुद्ध' (रू भे.)

उ०—१ वाक्य दोख प्रतिकूल वरण वद, प्रगट वरण जिण रस प्रतिकूल। सुध लछण मति अरुच हुए सुण, मति विरुध रस व्रतहत मूळ। —बा दा.

उ०—२ सरिखा सू बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति तो इज भजिया, जरासेन सिसुपाल जुधि।—वेलि

विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि—देखो 'विरूपाक्ष' (रू. भे)
(क कु. बो, नां मा.)

विरुयउ, विरुयो—देखो 'विरूओ' (रू भे)

उ०—१ सघ गिरुयउ रे, स्रीसघ गुणे करि गिरुयउ रे। मात पिता सरिखउ हित वल्लभ, किम ही करई नही विरुयउ, रे। —स. कु.

उ०—२ मन मा कुमर इम चितवै, ए थई तीजी वार। पीडा करै छै वापियो, विरुयो कोई वेकार। —वि. कु

उ०—३ ' ' दव अखाधउ, आगणइ कुउ अनइ कुटउ आघउ, बानर अनइ वीछी खाधउ, काणी अनइ रिसाणी, साप अनइ पखालउ, कादम अनइ कटालउ, बाझ अनइ विरुया वोली, सरडी अनइ स्लेश्माणी। —व स.

विरुहण, विरुहणि, विरुहणी—देखो 'विरहणी' (रू भे)

उ०—वीज खवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेउ। विरुहणिआ तनि वेदना, स्रावण सरइ विसेअ। —मा का. प्र.

उ०—२ सरद-निसाकर समसमइ, अमइ जाणिउ भेउ। उहा सरी तिहा अमीअ जिमइ, विरुहणियां विस देय। —मा का. प्र

विरूअउ, विरूउ विरूओ—वि [स, विरूपक] (स्त्री विरूई) १ बुरा, खराब, भद्दा।

उ०—१ आज इस्या तु का लवइ, विरूआ विरूआ वाक्य? हसहणी, वायस भणी, जाणि म जावा ताकि! —मा. का, प्र

उ०—२ लोक सहू लापा लवइ, चित्त न राखि ठाहि। फागुण ना गुण स्या कहु? विरूआ वसुधा माहि। —मा का प्र

उ०—३ जउ अै विरूउ आचरइ, तउपण ब्रह्म पवित्र। परमेस्वर अै पूजीइ, अै निकळंक चरित्र। —मा का प्र.

उ०—४ नवि मानिउ तुम्हि हु एह वात अति हुई विरूई। अनु मुझ घरि आविया पहु पुज इह वात गरूई। —सालिभद्र सूरि

२ बुरा, अहित।

उ०—जा देव दुरयोधन बाहु वाही, नहीत तइ लेसिइ पारथ साही। किमई विरूअउ करिसिइ न पारथ, ए उधि पूगी हिव इह क्रतारथ। —सालिसूरि

३ बद शक्ल, कुरूप।

४ बद जबान।

रू. भे—विरुओ, विरुउ, विरुयउ, विरुयो।

विरूउ—देखो 'विरूओ' (रू भे)

उ०—जउ अै विरूउ आचरइ, तउ पण ब्रह्म पवित्र। परमेस्वर अै पूजीइ, अै नीकळक चरित्र। —मा. का. प्र

विरूढक—स पु. [स] १ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा।

२ एक लोकपाल।

विरूड—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे)

उ०—भिडियो रुघनाथ भूपाळ समोभ्रम, चार पहार विरूड घडै। पहला वरियाम इता पडिया, ता पाछै गोइददास पडै।—गु रू. ब.

विरुणा–वि —वीरो का, वीर-रस से सम्बन्धित ।

उ०—जोधा रगा बारगा विरुणा नाद मामाजतौ, जटी-रू ग्रजोणा नाद साभतौ जगेव । बाजता विढोणा नाद बाजियो राणौ-स बाबो, गुणा नाद ग्रग्राजतौ गाजियौ गगेव । —हुकमीचद खिडियो

विरुथ—देखो वरूथ' (रू भे)

विरुथणी, विरूथनी, विरूथिनी —१ वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

२ देखो 'वरूथणी' (रू भे) (ह नाँ मा)

विरुथौ—१ देखो 'वरूथौ' (रू भे)

उ०—झुकै झूल बारगा थरक्क गजा पीठ झडा, 'केहरी' हुबक्कै उठै ऊबक्कै क्रोधार । सामध्रमी केम चूकै जेण ग्राटै चूकै सूरो, 'जगाणी' न रुकै भूरी विरुथौ जोधार । —किरपाराम कवियो

२ देखो 'वरूथ' (ग्रल्पा, रू भे)

विरुद—१ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—सकट माहे समरता, दादोजी करे दुख दूर रे लाल । वेडी राखी वूडती, परसिद्ध ए विरुद पडूर रे लाल । —घ व ग्र

विरुध –१ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे)

उ०—दुद विरुधा मदचळ, रोहा लग्गा राह । या जाळघर ग्राविया ग्रासुर ग्रालमसाह । —रा रू.

विरूप–वि [स] १ बदशक्ल, बदसूरत, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ तेहनै रमणी चार सरूप जो, लखमी तो लाखे गानै गेह मारे लो । कितलै दिवसै थयो विरूप जो, कवडी नो वित्त मिलै नही जेहमा रे लो । —वि कु

उ०—२ सोना को नाम छै रुखमइयी निराउध कीयो । ग्रावध काटि नाख्या । पकड्यो पकडि केस उतारया । तब विरूप दीसै लागो । ग्रापणौ जीव खिज्यो थका जु रुखमइया को जीव छोड्यो सु रुखमणीजी को ग्रतकरण जाणि कै । —वेलि टी.

२ जिसके ग्रनेक रूप हो, बहुरूपी ।

३ ग्रप्राकृतिक, ग्रद्भुत ।

४ कान्ति, ग्राभा, शोभा, ग्रादि से रहित ।

५ जिसका रूप बदल गया हो, बदले हुए रूप का ।

६ दूसरे या भिन्न प्रकार का ।

७ भयकर, भयावह, डरावना ।

स पु —१ श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया एक ग्रसुर ।

२ क्रोध का मानवी रूप, जिसमे उसने इक्ष्वाकु राजा से तत्त्वज्ञान पर सवाद किया था ।

३ श्रीकृष्ण का एक महारथी पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ ग्रबरीख राजा का एक पुत्र जो पृपदश्व राजा का पिता था ।

६ बिगडी हुई या बदली हुई सूरत ।

रू. भे —वीरूप ।

विरूपग्रागिरस–स पु. [स विरूप+ग्रागिरस] ऋग्वेद मे वर्णित एक वैदिक सूक्तद्रष्टा, जो ग्रगिराकुलोत्पन्न एक मत्रकार था ।

वि. वि —यह ग्रगिरस् ऋषि के ग्राठ पुत्रो मे से एक था । इसके सात भाइयों के नाम—बृहस्पति, उतथ्य, पयस्य, शान्ति, घोर, सवर्त्त एव सुधन्वन् थे ।

विरूपक–स पु —१ पृथ्वी का शासक एक दानव । (प्राचीन)

२ ग्रालवेय राक्षसो का ग्रधिपति, जो नीलकन्या विकचा का पति व दष्ट्राकराल ग्रादि का पिता था ।

विरूपचक्ष, विरूपचक्षु, विरूपचख–स. पु [स. विरूप+चक्षुस्] शिवजी का नाम ।

विरूपता–स स्त्री —१ विरूप होने की ग्रवस्था ।

२ भयकरता, भयावहता ।

विरूपपरिणाम–स. पु —एक रूपता से ग्रनेक रूपता की ग्रोर परिवर्तन । (दर्शन)

विरूपरूप–वि [स विरूप+रूप] भद्दा, बेडौल, बदसूरत ।

उ०—उरध केस बिरूपरूप, भुज निसा समाण । भ्रूह वका विकराळ है, द्रढ दत केवाण । —गज-उद्धार

विरूपा–वि स्त्री [स] बदसूरत, बेडौल, भद्दी ।

स स्त्री —यम की एक पत्नी ।

विरूपाक्ष, विरूपाख, विरूपाखि–वि. [स. विरूप+ग्रक्ष] बेढगे या डरावने नेत्र वाला ।

स पु —१ शिव, शकर । (ग्र. मा)

२ शिव का एक गण ।

३ एकादश रुद्रों मे से एक ।

४ चौसठ भैरवो मे से एक भैरव का नाम ।

५ राम-रावण युद्ध मे रावण का सेनापति जिसका वध सुग्रीव ने किया था ।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

७ महिषासुर का ग्रमात्य, एक राक्षस ।

८ महाभारत युद्ध में घटोत्कच का सारथि जो कर्ण-घटोत्कच युद्ध में कर्ण द्वारा मारा गया था ।

९ नरकासुर का सेनापति एक राक्षस, जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

१० एक दिग्गज । (पुराण)

११ इन्द्र-वृत्र युद्ध मे वृत्र पक्षीय एक दानव जो कश्यप एव दनु के चौतीस पुत्रों मे से एक था ।

१२ एक राक्षस जो हनुमान द्वारा प्रमदावन उजाडते समय मारा गया था।

१३ एक नाग।

स स्त्री.—१४ एक देवी का नाम।

रू भे —विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि।

विरूपाक्षपूजन-स. पु [सं विरूपाक्ष+पूजन] पौष शुक्ला १४ को किया जाने वाला विरूपाक्ष देवी का पूजन।

वि वि —उक्त पूजन के बाद उपकरण सहित महोक्ष का दान किया जाता है। इस प्रकार वर्षभर प्रत्येक शुक्ल, १४ को पूजन किया जाता है। इसके करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है और राक्षसादि का भय नही रहता है।

विरूपिक, विरूपी-वि (स्त्री विरूपिका) बदसूरत, बदशक्ल का।

स पु —कुरूप व्यक्ति।

विरूहण, विरूहरिण, विरूहणी—देखो 'विरहणी' (रू भे)

उ०—१ माठी थाइ मालती, कमल तणा कुल नास। विरूहणियां दुख दाखविइ, मरि तूं मारगमास। —मा का. प्र

उ०—२ थणहर मज्झइ कारस्यू. विरूहणिया मुखि जेह। माधव मनि आलोच करि, करवी अधिकी तेह। —मा का प्र

विरेक, विरेचक, विरेचण, विरेचन-स पु [स विरेक, विरेचक, व विरेचन] दस्त लाने वाला पदार्थ या औषधि, जुलाब।

विरेफ-स पु [स] १ जल की धारा, जलश्रोत, नदी।

२ 'र' वर्ण।

विरोगी-वि —रुग्ण, बीमार।

उ०—विरह विरोगिण हुय रही, रोग न जाणै कोय। जनहरिया हरि कारणैं, झुरि झुरि पजर होय। —अनुभववाणी

(स्त्री विरोगण, विरोगणी, विरोगिण, विरोगिनी)

विरोचण, विरोचन-स पु [स विरोचन] १ सूरज, सूर्य।
(क. कु बो, डिं को, ना मा, ना. डिं को.)

२ चन्द्रमा, चाद।

उ० —सूर धीर साखैत नीर तैं सोहै कायर नर कपै साध कू विमोहै। स्रीमहाराज को रूप श्रैसो निजर आयो, जाणै रोहिणी को सग विरोचन पायो। —रा रू

३ आग, अग्नि। (अ. मा., ह ना मा)

४ अरक, आक, मदार।

५ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो महाभारत युद्ध मे भीम के द्वारा मारा गया था।

६ हिरण्यकश्यप के पुत्र भक्त प्रह्लाद का पुत्र व अर्वाकतलम् नामक पाचवें पाताल लोक के अधिपति बलि का पिता।

वि. वि —पृथ्वीरूपी गौ को दूहते समय यह बछड़ा बना था। यह ब्रह्मा के पास देवराज इन्द्र के साथ असुरों की ओर से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु गया था। यह 'तारकामय युद्ध' में असुरो की सेना का सेनापति था एव इसी युद्ध मे मारा गया था। इसके विशालाक्षी एव देवी नामक दो पत्निया थी। यह यशोधरा का पिता व विरोचना का भाई था। इस के कुंभ, निकुंभ, आयुष्मत, शिवि एव वाष्कलि नामक पाच भाई थे।

रू भे.— बिरोचन, वीरोचन, वैरोचन, वीरोचद, वीरोचन।

विरोचनसुत-स पु [स. विरोचन+सुत] १ प्रह्लाद पुत्र विरोचन का पुत्र राजा बलि।

२ सूर्य पुत्र राजा कर्ण।

रू भे.—वीरोचदसुत, वीरोचनसुत।

विरोचना-स. स्त्री —१ भक्त प्रह्लाद की कन्या और विरोचन दैत्य की बहन, जो त्वष्टृ को ब्याही गई थी जिससे इसे विरज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

२ स्कद की एक अनुचरी का नामान्तर।

विरोटियौ —देखो 'वीरोटियौ' (रू भे.)

(स्त्री विरोटण, विरोटणी)

विरोणौ, विरोवौ-क्रि. स —पिरोना।

उ०—लक्ष्मीवतनइ ग्रहि एकि स्त्री अच्छइ, हार अरद्धहार पिरोती, एकि सूंडै सूंडै विरोती, देखीइ आमलक प्रमाण मोती विसाल, सुवर्णमय थाल, तेहना अपार झमाल, रूपानी कचोली, देखीइ वहीमाहि भवोली' •। —व स

विरोद, विरोध-स पु. [स विरोध] १ बेमेल होने की अवस्था, बेमेलपन।

उ०—साहमी सु सतोख करीजइ, वयर विरोध निवार जी। सगपण तै जे साहमी केरउ, चतुर सुणौ सुविचार जी। —स कु

२ शत्रुता दुश्मनी, वैर।

उ०-१ साका विगर नाम न रहै सु एक साको कीजै। तरै मूळराज, रतनसी नै दूदै साकै री निसचै करी, नै पातसाह सू विरोध वधावण री करै। पिण वीकममी करण न दै। —नैणसी

उ०—२ वळीवळी वीरहक नौपता नगारा वागी, सेना पीठ लागी जोस धारिया सकोध। उवत्ररा आसमाण भुजाटां सेल री अण्या, वेखी कस वस माथै तडिता विरोध। —बादरदांन दधवाडियौ

उ०—३ आगला जाळधर महाजोधार सारिखा रा वैर कळिया काढा। भसमासुर रा विरोध माहै इद्रादिक देवता वाढा।
—मा. वचनिका

३ लडाई, झगडा, युद्ध।

उ०—१ आदर विरोध अवरग सूं, थिरस बोध सुर थप्पियौ।

ऊधरा भडा 'अजमाल' रा, असुरा डर ऊथप्पियौ। —रा रू.

उ०—२ य कमधज धरै घू अवर, ज्यूं गगा मेळै जोगेसर। आदर जोध विरोध असका, बट रतन्नं ज्या सुर वका। —रा .रू

४ वह प्रयत्न जो किसी कार्य आदि को रोकने हेतु किया जाता है।

उ०—वरसाळै री मोको, ऊट री असवारी, सा'वनै समैरी भेंट दाय आयगी। इं रै सागे चुनाव रै विरोध हाळी दरखास्त जकी म्हैं अगरवाळा रै कै'णै सूं फाड दी जकै री ही जिकर करघो अर मनै दोसी सावत कर दियो। —दसदोख

५ अनबनी, वैमनस्यता।

६ बाधा, रुकावट।

७ भिन्न-भिन्न तथ्यो मे पाया जाने वाला तत्व जो स्वभाविक रूप से एक दूसरे के विपरीत हो। ज्यूं-दूध अर नीबू

८ विपरीत स्थिति।

९ नियत्रण, दमन।

१० विपरीतता, प्रतिकूलता।

११ मुकाबला, सामना।

१२ एक अर्थालकार, जिसमे, जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी के साथ विरोध पाया जाता हो।

१३ अनान्तक का पिता व वात नामक राक्षस का पुत्र।

रू भे.—वरोद, वरोध, व्रिरोध।

विरोधक-वि.—विरोध करने वाला, विरोधी।

उ०—है नह 'पाबु' हाथ ताव अवध 'जींदै' तणी। वेध विरोधक वात कर, कोय विघन करावसी। —पा प्र

विरोधणौ, विरोधबौ-क्रि स [स विरोधनम्] १ बेमेल करना, असगत करना।

२ शत्रुता करना, दुश्मनी करना, वैर करना।

३ लडाई करना, झगडा करना, युद्ध करना।

४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न करना।

५ अनबनी करना, वैमनस्य करना।

६ बाधा डालना, रुकावट डालना।

७ नियत्रण करना, दमन करना।

८ मुकाबला करना, सामना करना।

उ०—माडव खुरम अडप्पियौ, हालाविया हमल्ल। साह विरोधण कळि मथण, इळ करिवा ऊथल्ल। —गु. रू. ब

९ खण्डन करना।

विरोधणहार, हारौ (हारी), विरोधणियौ—वि०।

विरोधिओडौ, विरोधियोडौ, विरोध्योडौ—भू० का० कृ०।

विरोधीजणौ, विरोधीजबौ—कर्म वा०।

विरोधणौ, विरोधबौ—रू० भे०।

विरोधाचरण-स पु. [स विरुद्ध+आचरण] १ हित के प्रतिकूल आचरण।

२ शत्रुता का व्यवहार।

३ सामान्य आचरण के विरुद्ध आचरण।

विरोधाभास—देखो 'विरोध' (१२)

विरोधिता-स स्त्री —१ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैर।

२ नक्षत्रो की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)

विरोधियोडौ-भू. का. कृ —१ बेमेल किया हुआ, असगत किया हुआ. २ शत्रुता किया हुआ, दुश्मनी किया हुआ, वैर किया हुआ. ३ लडाई किया हुआ, झगडा किया हुआ, युद्ध किया हुआ ४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न किया हुआ ५ अनबनी किया हुआ, वैमनस्य किया हुआ. ६ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ ७ नियत्रण किया हुआ, दमन किया हुआ. ८ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ. ९ खण्डन किया हुआ।

(स्त्री विरोधियोडी)

विरोधी-वि [स विरोधिन्] १ विरोध करने वाले पक्ष का, विपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी।

उ० —माहोमांहि विरोधिया, सीला ऊपरि सूर। भवसिद्धि भीखारी थया, भूय तलि हारी भूर। —मा. का प्र.

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ बाधा डालने वाला, बाधक।

४ शत्रु, दुश्मन, वैरी। (अ मा, ह. ना मा)

५ दमन करने वाला, नियत्रक।

६ युद्ध करने वाला, झगडा करने वाला।

७ खिलाफ, प्रतिकूल।

उ०—क्रस्णजी का जुदा जुदा रूप देखण लागा। कामिनी कहइ काम आयो। सत्रु कहण लागा काळ आयो। और जिकेइ विरोधी न था त्याह स्रीनारायण को सरूप जाण्यो। —वेलि टी.

स पु —साठ सवत्सरो मे से २३ वां और विस्णुवीसी में से तीसरे सवत्सर का नाम।

रू भे —विरोधी।

विरोधोपमा-स स्त्री [स] उपमा अलकार का एक भेद विशेष, जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती हो।

विरोळ-स पु —१ भ्रम, भ्रान्ति।

२ नाश, समाप्ति।

३ विघ्न, बाधा।

४ अव्यवस्था, गडबडी।

५ युद्ध, झगड़ा।

उ०—ऊगा सूर समो ऊदावत, वढे वसू छळ बोल विरोळ। चलुग्रल ग्ररी तणां चीतोडा, चद्रप्रहास रहै नत चोळ।
—प्रथ्वीराज राठौड़

६ मथने की क्रिया, मन्थन।

उ०—दोळा दळ दिल्ली वाळा, पचरूप करि प्रब्वत-माळा। सामद विरोळ सकज्जं, घमचक्क रिया कमधज्जं। —गु रू व.

वि —नाश करने वाला, ध्वस करने वाला।

उ०—हाले ग्राप समावा उडणी प्रथीनाथ हींदू, बाज सीधू ग्रैराक में छ खडा विरोळ। मदा लागो खीजियो खूमाण खगा खळा माथै, छदा लागो रीझियो पुरद्र वाळी छोळ।
—भीमसिंह सीसोदियो रो गीत

रू. मे —वरोळ।

विरोळण-वि —१ तहस-नहस करने वाला।

२ ग्रस्त-व्यस्त करने वाला।

३ मारने वाला, सहार करने वाला।

४ मथने वाला, विलोडित करने वाला।

विरोळणौ, विरोळबौ-क्रि स [स विलोडन] १ तहस-नहस करना, बरबाद करना, ध्वस करना।

उ०—सज दळ सबळ सीस पतसाहा, दिली विरोळण 'करण' दुवो। पोढापै तरवार पाकडै, हीमत करै जवान हुवो।
—वीर दुरगादास राठौड़ रो गीत

२ ग्रस्त-व्यस्त करना, ग्रव्यवस्थित करना।

३ सहार करना, नाश करना, मारना।

उ०—१ विभाडे गौळ फिरगाण रा द्रहवटा, गैघडा विरोळण जोम गाढै। स्रोण मे खाग झकबोळ नवसाहसी, चौळ गरकाब रग दघा चाढै। —सिवनाथसिंह कूंपावत रो गीत

उ०—२ ग्राठ सै खळा नै हेक ढाबडै विरोळघा ग्राचा दरोळघा देयता दैवा मथायो खीरोध। ग्रचायो दिखायो तोर सारंगा खगेस ग्रायो, सिखायो पिनाकी वीरभद्र सो विरोध।
—बादरदान दधवाडियो

उ०—३ पाच सोवायता गिळै 'ऊमो' सुपह, विरोळै घौंकळै करै वाहा। विडग ग्रादेसियो दळै वहळायता, सार ग्रादेसियो पातसाहा। —हरनाथसिंह करमसोत रो गीत

उ०—४ घडा सिर जोम, ताजै घडा घमाघम, कागुरा तरफ वाजै कुहाडा। किलो गिरधरण ग्रोळै रयण वघ कडा, विरोळै चोवडा फिरग वाळा। —कविराजा बाकीदास

४ मथन करना, मथना, विलोडित करना।

उ०—१ रिण रोहिड दघि मथांण, विरोळै लीधा रतन लाल। रत रढ सुपाण विमाण, विडारै हूरा कीधा हाल। —मा. वचनिका

उ०—२ समहर गजबोळ रोळिग्रै सावळ, बैसर बैसर तोलतौ बळ। दिली सहायत 'ग्रचळ' दूसरौ, 'दूद' विरोळै दिखण दळ।
—दूदा नगराजोत रो गीत

५ उपभोग करना।

६ बिखेरना, छितराना।

७ समाप्त करना, मिटाना।

उ०—तउ वीस हुथि विरोळि, तइ वीस हुथि विरोळियइ। भावठि भागइ तू तणइ हिज्यउ सु काइ हिंगोळि। —ग्र वचनिका

८ गुजरना, पार करना।

उ०—करहा, चरि चरि म चरि चरि, चरि चरि म चरि म क्रूर। जं वन काल्हि विरोळियउ, तं वन मेल्है दूर। —ढो. मा

९ पराजित करना, हराना।

उ०—जतराव जणी पुल वाग झलै, हय थाट विरोळण भील हलै। फळ चाल रोसाळ वुहा कडचै, यण ताळ चेनाळ लयां ग्रडचै।
—पा. प्र

१०—रस लेना।

उ०—भमरि मालति जेम विरोलियइ, तिम न केतकि केलि घघोलियइ। ग्रणह काजि न डूगर ढोलियइ, जडह कालु करी कुल बोलियइ। —सालिसूरि

विरोळणहार, हारो (हारी), विरोळणियो—वि०।

विरोळिग्रोडो, विरोळियोडो, विरोळघोडो—भू० का० कृ०।

विरोळीजणो, विरोळीजबो—कर्म वा०।

वरोळणो, वरोळबो, विरोळणो, विरोळबो, बिरोळणो, बिरोळबो, बरोळणो, बरोळबो, वीरोळणो, वीरोळबो—रू० भे०।

विरोळियोडो-भू का कृ —तहस-नहस किया हुग्रा, बरबाद किया हुग्रा, ध्वस किया हुग्रा २ ग्रस्त-व्यस्त किया हुग्रा, ग्रव्यवस्थित किया हुग्रा ३ सहार किया हुग्रा, नाश किया हुग्रा, मारा हुग्रा ४ मथन किया हुग्रा मथा हुग्रा, विलोडित किया हुग्रा ५ उपभोग किया हुग्रा ६ बिखेरा हुग्रा, छितराया हुग्रा ७ समाप्त किया हुग्रा, मिटाया हुग्रा ८ गुजरा हुग्रा, पार किया हुग्रा ९ पराजित किया हुग्रा, हराया हुग्रा १० रस लिया हुग्रा

(स्त्री विरोळियोडी)

विरोहण—स पु —१ एक नाग विशेष जो तक्षक कुल में उत्पन्न हुग्रा था।

२ वह सन्तान जिसकी माता का वर्ण पिता की ग्रपेक्षा उच्च हो।

विलद-स. पु.—१ बालिश्त।

उ०—सुइया साकळी रूपै रा चमकनै रहृया छै । सात-सात विलदां री लाबी खोळी मेरा कपड री सूं बाहर काढजै छै । वादळ माह वीज नीसरी आकास री, कना तीज रै तमासै मारु पातळी कामरणी पोसाख कर नीसरी, इरण भात री वंदूका मोटयार तिरता-तिरता लेय उरण धडनावा आया छै । —रा. सा स

२ देखो 'बुलद' (रू भे)

उ०—१ विराण मीर धीठा विलद, नीसाण फौल दीठा नरिंद । घरहडै क्रोध परचड घूप, भुज डड अडै वहमड भूप । —वि. स.

उ०—२ वडवडे भी वडवडै, वड पुरख विलदै, जाण पिछाण जाहरा, दिल अदर दर्दै । सीधा आगम च्यार वेद, कतेव कहदै, पुतलिया नट हृदिया, क्या आदम गदै । —केसोदास गाडण

रू भे—विलद बुलद ।

विलब-स पु [स विलम्ब] १ आवश्यक, उचित या सामान्य समय से अधिक समय लगने की स्थिति ।

उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया, गेम गमाया गुण गाया । धिरणीयारणी धाया विलब न लाया, आराधा ना सुणि आया । —पी ग्र.

२ आवश्यक उचित या सामान्य समय से अधिक लगने वाला समय, देर, अति काल ।

उ०—घरिये भोग विलब न करियै, मेरी मान पियारी । जीमै म्हारो प्यारो गिरधर, साधा नै वेग बुला री । —मीरा

३ आलस्य, दीर्घसूत्रता ।

रू भे—विलब, विलम, विलभ, विलम ।

विलबरण, विलबन-स स्त्री [स. विलम्बन] १ देर करने की क्रिया, विलव करने की क्रिया ।

२ लटकने की क्रिया ।

३ आश्रय लेने की क्रिया, आश्रित होने की क्रिया ।

विलवणौ, विलववौ-क्रि. स [स विलम्बनम्] १ देर करना, विलम्ब करना ।

उ०—गढ थी माउ सेना लगं जी, करयौ हारा डोर । वार घणी विलवयौ जी, जतन करेयौ जोर । —प च. चौ

२ आलिंगन करना ।

उ०—सावण आयउ साहिवा, पगइ विलवी गार । अच्छ विलवी वेल्लडया,, नरा विलवी नार । —ढो मा

२ स्पर्श करना, छूना ।

उ०—१ पवन जु चाल्यो छै । सु नदि नदि कै विखै तिरतौ आवै छै । रूख छै त्या कै विखै विलवतौ आवै छै । वेल्या सौं लपटातो आवै छै । दक्षण हुता जु उत्तर दिसा नै चाल्यो छै । —वेलि टी

उ०—२ हरीया असा हरि भया, तैसा भया न कोय । वाकै पाय विलवियै, पारि उतारै सोय । —अनुभववाणी

३ पकडना, ग्रहण करना ।

उ०—१ गाडर पूछ विलव कर, कोइ पार लंघावै, रंक रुलदा मार कर, कोइ मल कहावै । वेतर भुन आराध कर,कोइ देव मनावै, डाकरण का मत्र सीख कर, कोइ साध कहावै । —केसोदास गाडरण

उ०—२ केईक पाना फूलडा, केईक विलव्या डाल । हरीया मूल विलविया, फल पाया असराल । —अनुभववाणी

क्रि अ—१ देर होना, विलम्ब होना ।

२ फसना, धसना ।

उ०—माया को कादो विन्यो, अंध विलव्या आय । हरीया नर आधा घसै, ज्यु ज्यु कळता जाय । —अनुभववाणी

३ आश्रित होना, सहारा लेना ।

उ०—सज्जरण, गुणै समुद्द तू, तर तर थक्की तेरण । अवगुरण एक न सामरइ, रहू विलवी जेरण । —ढो. मा.

४ मग्न होना, लीन होना ।

५ रत्त होना, आसक्त होना ।

उ०—दादू खाटा मीठा खाइ कर, स्वाद चित्त दीया । इनमे जीव विलविया, हरि नाम न लीया । —दादूवाणी

६ लगना, लिपटना ।

उ०—सावरण आयउ साहिवा, पगइ विळवी गार । अच्छ विलवी वेलडघा नरा विलवी नार । —ढो मा.

७ उलझना, फसना ।

८ सहारा लेना, लटकना ।

९ रुकना, अवरुद्ध होना ।

१०—चिपकना ।

उ०—१ सावरण आयउ साहिवा, पगइ विलवी गार । अच्छ विलवी वेलडघा, नरा विलवी नार । —ढो मा.

उ०—२ पावस मास प्रगट्टियउ, पगइ विलवइ गारि । धरण की आही वीनती, पावस पथ निवारि । —ढो मा.

११ हर्पित होना, खुश होना ।

१२ भ्रमित होना, भूलना ।

उ०—हरीया मिरघ विलवियो, हरया देख वन घास । जीवरण का सासा पडया, इरण आजूरणै वास । —अनुभववाणी

१३ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त होना, लगना ।

उ०—साई सौं सहजै रमु रे, और नही आन देव । तहा मन विल-विया, जहा अलख अभेव रे । —दादूवाणी

१४ देखो 'विलवणी, विलूववी' (रू. भे)

विलवणहार, हारो (हारी), विलवणियो—वि० ।

विलवियोडो, विलवियोडो, विलव्योडो—भू० का० कृ० ।

विलवीजणो विलवीजवो—कर्म, भाव वा० ।

विलवणो, विलववो, विलमणो, विलमवो—रू० भे० ।

विलंबिका-स पु —एक प्रकार का अजीर्ण रोग । (अमरत)

विलंबित-वि [स. विलम्बित] १ लटका हुआ, झूलता हुआ ।

२ जिसमे देर हुई हो ।

३ देर करने वाला ।

४ सुस्त या धीरे चलने वाला ।

विलंबियोडो-भू का. कृ —१ देर किया हुआ, विलम्ब किया हुआ. २ आलिंगन किया हुआ ३ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. ४ पकडा हुआ, ग्रहण किया हुआ. ५ देर हुवा हुआ, विलम्ब हुवा हुआ ६ आश्रित हुवा हुआ, सहारा लिया हुआ. ७ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ८ लगा हुआ, लिपटा हुआ ९ उलझा हुआ, फसा हुआ १० सहारा लिया हुआ, लटका हुआ. ११ रुका अवरुद्ध हुवा हुआ. १२ चिपका हुआ १३ रत्त हुवा हुआ, आसक्त हुवा हुआ. १४ हर्षित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ १५ भ्रमित हुवा हुआ १६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, लगा हुआ ।

१७ देखो विलूबियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विलबियोडी)

विलभ—देखो 'विलब' (रू भे)

उ०—वीरभाण विचारइ रे, मन वैर सभारइ रे, इण सोहाग उतारयौ मुझ माता तणौ रे, जो परही दीज्यै रे, सहिजइ छूटीज्यै रे, कीज्यै न विलम इण वात घणौ रे । —प. च चौ

विळ, विल—१ देखो 'बिल' (रू भे)

२ देखो 'वळ' (रू भे)

विलउ—देखो 'विलय' (रू भे.)

उ०—किसू पहूतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि विलउ । अरजुन बोलइ रे अकुलीन, अरजुन झूझिसि मइ सू हीन ।

—सालिभद्र सूरि

विलकणो, विलकवो—देखो 'विलखणी, विलखवो' (रू. भे)

उ०—ग्रहन डोलै विलकती, कर कर छूटा केस । भसम लगाऊ अग पर, ऊपर बरसै मेस । —स्री हरिरामजी महाराज

विलकणहार, हारो (हारी), विलकणियो—वि० ।

विलकिग्रोडो, विलकियोडो, विलक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विलकीजणो, विलकीजवो—भाव वा० ।

विलकल—देखो 'वल्कल' (रू भे.)

विळकळणो, विळकळवो—देखो 'विळकुटणो, विळकुटवो' (रू. भे)

उ०—अवम्बर घरै माया घनंग, विळै मास पिंग विळकळै । पड़ती हूति कोपी क्रिपा, माइच अगतौ गा मिळै । —पी ग्र.

विळकळणहार, हारो (हारी), विळकळणियो—वि० ।

विळकळियोड़ो, विळकळियोडो, विळकळयोडो—भू० का० कृ० ।

विळकळीजणो, विळकळीजवो—भाव वा० ।

विळकळियोडो—देखो 'विळकुळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विळकळियोडी)

विलकियोडो—देखो 'विलखियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विलखियोडी)

विलकुल—देखो 'बिलकुल' (रू भे)

विळकुळणो, विळकुळवो-क्रि. अ —१ व्याकुल होना, विह्वल होना ।

उ०—हुय दूर निरखणहार, डोलो पीढ़ोह्नी विळकुळै । —डो मा.

२ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

उ०—१ विळकुळै रामरमणी वदन, निरखै कर नरवद री । जाणै विकास पामै जळज, देखि प्रकास दुहिद री । —रा रू.

उ०—२ धरापति आज अणघीर रज घणौ, घणौ मुद जास जस-वास रिधि घणी । कवौ निति देखि मन माहि विळकुळै, भली विधि तेज रवि जेम भळहळै । —ल पि.

उ०—३ गळां रा मोल महाहद में पेस कीजै । दुस्ट मरै मरगा-पुर रो दुख टळै । द्वारै मांगळ, विळकुळनै वदन पुरंदर बोलियो—जांणै कर उजळा, अमोलक मोताह्ळ मा वचन झडै ।

—मा. वचनिका

उ०—४ मळहळा मत मळहळा म्यापर, मीमहय भर विळकुळो । मह वळा चव रघुनाथ अमलां, मइ सुमयद मळलो । —र. ज प्र.

उ०—५ मन मैं तो देगियां ने घणी विळकुळी । मोहै सोच की सूरत कीदी । जवै सामण्या नै कह्यो, अबै हू मांड करू । मनै तो देवि सीयो । पवन बो बैरी हुवो । —पनो

३ आतुर होना, उतावला होना ।

उ०—१ भड मोख छला मर मैं मरियो घो 'गोगो' लहुसर उत-रियो । सवणे सत्र नैडोय सभरियो,फळ चालण 'धोर' विळकुळियो ।

—गो रू.

उ०-२ वीररत्ति विहेवा विळकुळेय, मुख राग मुछ भ्रूहा मिळेय । चख लाल कोध मुख कोध चोळ, फळकळै तेज विकसै कपोल ।

—गु. रू. ब.

उ०—३ विळकुळै वधाईदार वधि, आणद उछब अथाह सु ।

आगम्म खवर अभसाह' री, जाय कहे 'जैसाह' सूं। —सू प्र

४ प्रफुल्लित होना, फूलना।

उ०—१ हणमत द्रोण हिल्लोळवा, वीरा-तन किरि विळकुळै। दळ-थभ विढण दखणाधि सू, ऐम ऊठियो भुज आमळै।
—गु रू व.

उ०—२ विळकुळियो वदन जेम वाकारचो, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि वधि। —वेलि

५ दैदिप्यमान होना, चमकना।

उ०—१ वीरति मुख सूरति विळकुळिय, कमघज तेज कमळ कळमळय। किसन वरण माझिल कठलिय, सूरज किरण जाण भळहळिय। —गु रू व

उ०—२ स्रवण वयण सभळै, नयण विळकुळै निरमळ, जोत वदन भळहळै, लाज भुजि भळै स उज्जळ। सूर विरत सल्लळै, ज्वाळ भळहळै फुणवर, फना प्रळैकति करण, किरण परजळै दिणकर।
—रा रू

६ चुनौती देना, ललकारना।

७ उत्साहित होना, जोश मे आना।

उ०—१ सुज आप सपड वसभ लीय, वप वाधय जोस विळकुलिय। कध थापळ रजत दूर कियौ, दाखै मुख अदळ गाम दियौ।
—गो रू

उ०—२ जोगावत 'पेमौ' तिण जामळ, दिल विळकुळै मिळै जद कदळ। 'वछराजोत' 'अखो' वरदाई, पाया कळह जाणि रिव पाई।
—रा रू

उ०—३ जोधपुरी जुध जीपवा, गढ लेवा 'गजसाह। विरती कोडी विळकुळै, रीसाणो रिमराह। —गु रू व

८ चचलता के साथ हिलना-डोलना।

९ निकलना।

उ०—मारवणी मुख-ससि तणउ, कमतूरी महकाइ। पावस पन्नग पीवणउ, विळकुळियउ तिणि ठाइ। —ढो मा

विळकुळणहार, हारौ (हारी), विळकुळणियौ—वि०।
विळकुळिओडो, विळकुळियोडो, विळकुळ्योडो—भू० का० कृ०।
विळकुळीजणौ, विळकुळीजवौ—भाव वा०।
विळकुळणौ, विळकुळवौ, विल्कुळणौ, विल्कुळवौ—रू० भे०।

विळकुळियोडो–भू का कृ —१ व्याकुल हुवा हुआ, विह्वल हुवा हुआ २ प्रसन्न हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ. ३ आतुर हुवा हुआ, उतावला हुवा हुआ ४ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ ५ दैदिप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ ६ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ. ७ उत्साहित हुवा हुआ, जोश मे आया हुआ ८ चचलता के साथ हिला-डुला हुआ।
(स्त्री विळकुळियोडी)

विलक्खणौ, विलक्खवौ—देखो 'विलखणौ, विलखवौ' (रू. भे)

उ०—१ कर मूठ धनख छूट विसक्ख, लेवा पक्ख सर नक्ख। वव सूर हरक्ख और विलक्ख, चाव परक्ख रवि चक्ख। —रा रू

उ०—२ स्वजन वेवाहिय धूरइ भूरइ निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपा डिय माडिय आंणीय गेहि। भूतलि भभरभोलिय डोलिय जिम न चडत, विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय तैं व्रत्तात।
—जयसेखर सूरि

विलक्खणहार, हारौ (हारी), विलक्खणियौ—वि०।
विलक्खिओडो, विलक्खियोडो, विलक्ख्योडो—भू० का० कृ०।
विलक्खीजणौ, विलक्खीजवौ—भाव वा०।

विलक्खियोडो—देखो 'विलखियोडो' (रू भे)
(स्त्री विलक्खियोडी)

विलक्खौ—देखो 'विलखौ' (रू भे)

उ०—सालूरा पाणी विना, रहइ विलक्खा जेम। ढाढी साहिब सू कहइ, मौ मन तौ विण एम। —ढो मा

विलक्ष–वि [स] १ विशेष चिन्हो या लक्षणो रहित, लक्षणहीन।
२ जिसका कोई लक्ष्य न हो, लक्ष्य रहित।
३ विकल, व्याकुल।
४ अद्भुत, अनोखा, अनूठा, असाधारण।
५ लज्जा से युक्त, लज्जित।
६ आश्चर्ययुक्त चकित, विस्मित।
रू भे—विलक्षि।

विलक्षण–वि [सं] १ चिन्हो या लक्षणो से रहित, लक्षणहीन।
२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र।

उ०—वीर पणो पती रो दिखाण सारू कहे छै-थें जिका रा वधावा गावो छो तिका रा सुभाव सु म्हारा पती रो सुभाव विलक्षण छै-किसो कि दमगळ (जुद्ध) विना दुचितो रहै अनै जुद्ध मैं कगळ बगतर रा जत कडिया ही नही जडै इसा वीरपणा रा सुभाव है।
—वी स. टी

३ अशुभ लक्षणो वाला।
४ विशेष लक्षणो वाला।

रू भे—विलच्छण, विलच्छन, विलख, विलखण, विलखणो, विलच्छण, विलच्छन।

विलक्षणता–स स्त्री—विलक्षण होने की अवस्था या भाव।

विलक्षि—देखो 'विलक्ष' (रू भे.)

उ०—गोरी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम व्रक्षि । विनय करीनइ विलपती, विधि विधि थई विलक्षि । —मा. का प्र.

विलख, बिलखण–वि —खिन्न, उदास, विकल, व्याकुल ।

उ०—नमामी सरवेसा विलख लयसेखाक्षर नमो, नमो सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमो । नमो स्रस्टा त्वस्टा ग्रगम ऊतक्रस्टा ग्रह नमो, नमो स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमो । —ऊ का

रू. भे —विलख, विलखण ।

विलखणो–वि [स्त्री विलखणी] १ व्याकुल, वेचैन ।

२ रोने वाला ।

३ व्यथित, दु खी ।

४ मुरझाने वाला ।

५ भयभीत, घबराया हुआ ।

रू भे,—विलखणो ।

विलखणो, विलखबो–क्रि ग्र —१ व्याकुल होना, वेचैन होना ।

उ०—साळूडो साळूडो गोरी काई विलखै, मेह बिना धरती तरसै, मेहडो हुवण दै । —लो गी

२ व्यथित होना, दु खी होना ।

उ०—थारा जीव ग्रर म्हारा जीव रो मन मिळग्यो, पछै घरवास मे काई खामी । मानै तो थारी मरजी, नीतर म्हैं थनै जावण तो नी दू । म्हारै हिवडा री नागण थारै विना तडफै, विलखै । —फुलवाडी

३ ग्रभाव की स्थिति मे प्रत्याशा से ताकना ।

४ मुरझाना, कुम्हलाना ।

उ०—मेरे साम सुहाग का, छाना न रहै नूर । विलखै वदन दुहागिनी, हरीया ऊगै सूर । —ग्रनुभववाणी

५ विलाप करना, रोना ।

६ भयभीत होना, घबराना ।

उ०—विलखीजै रिणतूर वाजिया, ग्रदग वाजिया हरख मचै । धाग तीरथ चढै, धूजणी, प्यारा तीरथ करण पचै । —कविराजा वाकीदास

विलखणहार, हारौ (हारी), विलखणियो—वि० ।

विलखिग्रोडो, विलखियोडो, विलख्योडो—भू० का० कृ० ।

विलखीजणो, विलखीजवो—भाव वा० ।

विलखणो, विलखवो, विलखाणो, विलखावो, विलखाणो, विलखावो, विलखावणो, विलखाववो—रू० भे० ।

विलखाणो, विलखावो—देखो 'विलखणो, विलखवो' (रू भे)

विलखाणहार, हारौ (हारी), विलखाणियो—वि० ।

विलखायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विलखाईजणो, विलखाईजवो—भाव वा० ।

विलखायोडो—देखो 'विलखियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलखायोडी)

विलखावणो, विलखाववो—देखो 'विलखणो, विलखवो' (रू भे)

उ०—महा माडियो जाग उज्जैण मागा मवै, रुदन विलखावती रही रोती । हेळवी "ग्रमर" री हीय करती हरख, "जसा" ग्रपछर रही वाट जोती । —नरहरदास बारहठ

विलखावणहार, हारौ (हारी), विलखावणियो—वि० ।

विलखाविग्रोडो, विलखावियोडो, विलखाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विलखावीजणो, विलखावीजवो—भाव वा० ।

विलखावियोडो—देखो 'विलखियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विलखावियोडी)

विलखियोडो–भू का कृ —१ व्याकुल हुवा हुग्रा, वेचैन हुवा हुग्रा २ व्यथित हुवा हुग्रा, दु खी हुवा हुग्रा ३ ग्रभाव की स्थिति मे प्रत्याशा से ताका हुग्रा ४ मुरझाया हुग्रा, कुम्हलाया हुग्रा ५ विलाप किया हुग्रा, रोया हुग्रा. ६ भयभीत हुवा हुग्रा, घबराया हुग्रा ।

(स्त्री विलखियोडी)

विलखू—देखो 'विलखो' (रू भे)

उ०—कोलाहल साभल्यउ ग्रपार, फटक माहि बूठउ ग्रगार । कटक माहि सहू दखोऊ हूऊ, घोडूं माणस विलखू थयूं । —का दे प्र

विलखोडो—देखो 'विलखो' (ग्रल्पा , रू. भे)

विलखो विलख्यो–वि. (स्त्री. विलखी) १ उदास, खिन्नचित, व्याकुल ।

उ०—१ वहिलउ ग्राए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण । तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमाण । —ढो. मा.

उ०—२ निरखै ग्रवासा भर निजर, नह देखै दसरथ न्रप निजर । निज देखै नह ववव निजर, नर दीठा विलख्या सह निजर ।

—र रू

उ०—३ ग्राव हमारै ग्रागणै, 'ग्रह' त्रिभुवन राइ । तुम्ह विन मैं विलखी फिरौं, ग्रब रह्यो न जाइ । —ह पु. वा

उ०—४ मन जाणै कीकर ई व्हैग्यो । मूडो उतरग्यो ग्रर कठ जाणै चैठग्यो । घरै ग्राया ठाम उतरावता जेठाणी पूछ्यो—विनणी ग्राज विलखा किया ? —ग्रमरचूनडी

२ दु खी, व्यथित ।

उ०—१ प्रभू सो काय उपावियो, किम ग्रेह कराण । ग्रत ही चित ग्रातुर हुवो, विलखो न्रहाण । —गजउद्धार

उ०—२ मा रै मूंडा सूं बाप रै चेता री वात सुणनै राजी व्है जाती अर वारै सीत री वात सुणनै अणूंतो विलखो व्है जाती। इण सू आगै उण री समझ नी ही। —फुलवाडी

३ मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

उ०—१ प्यारी चितियो पीव दिस, वदन विलखो देख। अव कैसे अतर परयौ, कौन हमारो लेख। —गजउद्धार

उ०—२ काळी तौ कोयल भई, काळा जिसका रग। हरीया हरि विन विरहनी, वदन विलखै अग। —अनुभववाणी

४ घवराया हुआ, भयभीत।

५ वीरान, रिक्त, शून्य।

उ०—अमराणै में घोर अधार हा रे म्हारा सोढा राणा, अमराणै मे ही घोर अवार हो जी हो। विलखा नै लागै रै मेहल माळिया हो, म्हारा रतन राणा एकर तो अमराणै पाछो आव। —लो गी.

६ कान्तिहीन, तेज रहित, चमक रहित।

उ०—१ भूखा मास अहारी भालै, विलखै रग ऊचारै वाणी। वाकी चालण फोज वहडण, ओख वडग गयो 'अमराणी'।

—सुखजी खिडियो

उ०—२ कुदरत ई साव अलूणी कै बाडी लागती। चाद पीळिया रै रोगी ज्यूं विलखो लागतो। ऊगता अर आथमता सूरज री गुलाल उणनै काळस सूं ई सवायो माडो लागतो। —फुलवाडी

७ निराश, उदास।

उ०—१ ऊमर मन विलखउ हुयउ, चारण वचन सुणेह। उणि हिज पथ पाछउ वळयउ, साल्ह निचत करेह। —ढो मा.

उ०—२ लोग पूजारीजी नै सागैडो जीमायो। थड्डा देय घर सू वारै काढियो। वो घणो ई कूकियो पण की सुणवाई व्ही नी। विलखो होय टुळक-टुळक वगेची ताई नीठ पूगो। —फुलवाडी

उ०—३ भाई सा तौ रोज कैवे कै अवै उणनै सफाखाना सू छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मामोसा उणनै लेयनै आवेला। वो अठी-उठी देखनै विलखो पडग्यो अर म्हनै जवाव देवणो भारी पडग्यो।

—अमरचू नडी

रू. भे —विलको, विलक्खो, विलखो, विलख्यो, विलक्खो, विलखू। अल्पा.,—विलखोडो।

विलग-वि.—अलग, पृथक।

रू भे.—विलग।

विलगणो, विलगवो—क्रि. अ.—१ लगना, लिपटना।

उ०—मन विसहर तन ववही, ऊठि विलगै पाय। जनहरिया तिह लोक मे, जाह जाउ ताह खाय। —अनुभववाणी

२ अलग होना, पृथक होना, जुदा होना।

उ०—हरीया अंसा को मिळै, सहजा रहै समाय। वाहरि वाजा वचन बौह, चित न विलगै जाय। —अनुभववाणी

३ छूना, स्पर्श होना।

४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडना।

५ चिपकना, लगना, जुडना।

उ०—१ फल तर तै तूटा पछै वधै न विलगै जाय। गुर वेमुख नही नीपजै, भावै गोविंद गाय। —अनुभववाणी

उ०—२ तन ऊतरिया ना चडै, करिहौ कोडि विचार। ज्यु तरवर फळ ऊतरयो, फेर न विलगै डार। —अनुभववाणी

६ लगना, होना।

उ०—जाहर किस सू झगडियै, घर झोड विलगा।

—केसोदास गाडण

७ आवेष्टित होना, लिपटना।

उ०—ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ केळि। जाणे चदन-रूखडइ, विळगी नागर वेलि। —ढो. मा

८ कार्यारंभ होना।

९ पकडना, ग्रहण करना।

१० किसी अनिष्ट या कष्टदायक वात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना, लगना।

११ आलिंगन होना, लिपटना।

उ०—१ वेस्या वेस विलूण-समी, वोलि सोस-मझारि। नेह विना विलगइ गलइ, मूरख, । अव म म हारि। —मा का प्र.

उ०—२ पडखतउ हुसि मू नइ स्वामी, मेलिहसी कवण स्त्री नइ नामी। कत कठि विलगी तनु वालउ, आपणा कुल कह अजूयालउ। —सालिसूरि

विलगणहार, हारो (हारी), विलगणियो—वि०।

विलगियोडो, विलगियोडो, विलग्योडो—भू० का० कृ०।

विलगीजणो, विलगीजवो—भाव वा०।

विलगणो, विलगवो विलग्गणो, विलग्गवो, विल्लगणो, विल्लगवो, विलगाणो, विलगावो, विलगावणो, विलगाववो, विलग्गणो, विलग्गवो, विल्लगणो, विल्लगवो—रू० भे०।

विलगाणो, विलगावो–क्रि स —१ लगाना, लिपटाना।

२ अलग करना, पृथक करना, जुदा करना।

३ छूना, स्पर्श करना।

४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडाना।

५ चिपकाना, लगाना, जोडना।

६ लगाना, करना।

७ आवेष्टित कराना, घेरना, लिपटाना।

८ कार्यारंभ कराना ।

९ पकडाना, ग्रहण कराना ।

उ०—आंगणियै न करावी थिरी, कन्हैया । आगुळिया विलगाय रे । हाऊ बेठौ छै तिहा, कन्हैया, अलगौ तू मति जाय रे ।

—जयवाणी

१० देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू भे)

विलगाणहार, हारौ, (हारी), विलगाणियौ—वि० ।

विलगायोडौ—भू० का० कृ० ।

विलगाईजणौ, विलगाईजबौ—कर्म वा., भाव वा० ।

विलगाणौ, विलगाबौ, विलगावणौ, विलगावबौ—रू० भे० ।

विलगायोडौ–भू का कृ—१ लगाया हुआ, लिपटाया हुआ २ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ, जुदा किया हुआ ३ छूआ हुआ, स्पर्श किया हुआ ४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडाया हुआ ५ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ, जोडा हुआ ६ लगाया हुआ, किया हुआ ७ आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ, लिपटाया हुआ. ८ कार्यारम्भ किया हुआ. ९ पकडाया हुआ, ग्रहण किया हुआ

१० देखो 'विलगियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. विलगायोडी)

विलगाव–स. पु—१ लगाव, लिपटाव ।

२ अलगाव, पृथकता ।

३ किसी अन्य स्त्री के साथ जुडा हुआ, अनैतिक सम्बन्ध ।

४ घेराव ।

५ कार्यारम्भ ।

६ पकडाव, पकड ।

विलगावणौ, विलगावबौ—१ देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विलगाणौ, विलगाबौ' (रू. भे)

विलगावणहार, हारौ (हारी), विलगावणियौ—वि० ।

विलगाविओडौ, विलगावियोडौ, विलगाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विलगावीजणौ, विलगावीजबौ—भाव वा कर्म वा० ।

विलगावियोडौ—१ देखो 'विलगियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'विलगायोडौ' (रू भे.)

विलगियोडौ–भू का. कृ—१ लगा हुआ, लिपटा हुआ. २ अलग हुवा हुआ, पृथक हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ ३ छूआ हुआ, स्पर्श हुवा हुआ. ४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडा हुआ ५ चिपका हुआ लगा हुआ, जुडा हुआ. ६ लगा हुआ हुवा हुआ ७ आवेष्टित हुवा हुआ, लिपटा हुआ. ८ कार्यारम्भ हुवा हुआ. ९ पकडा हुआ, ग्रहण किया हुआ. १० किसी अनिष्ट या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध हुवा हुआ या उसके सम्पर्क में आया हुआ, लगा हुआ

(स्त्री. विलगियोडी)

विलग्गणौ, विलग्गबौ—देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू भे.)

उ०—१ जढ पयाळ पै जुम्रल, सीस ब्रह्मंड विलग्गं । कळूवाउ डहूळ, डिगै नह डोलै जुग्गै ।

—गु. रू. ब

उ०—२ 'गजपती' दिस मेल्हियो, असपती फुरमाण । मुरम विलग्गौ राह हुई, तो छूटै खुरसाण ।

—गु. रू ब

उ०—३ 'दूद' मेडतियो राव, आय गुर पाय विलग्गौ । रावळ जैसलमेर, परचता सासौ भग्गौ ।

—बीठ्ठोजी

उ०—४ इक कर वयस विलग्गियै, इक कर लग्गिय लाज । थय कह जोगनिपुर चलहु, लाज कहै भिडराज ।

—महाराजा मानसिंहजी

उ०—५ हर हर करतो हरख कर, आळस म कर अयाण । जिण पाणी सू पिंड रच, पवन विलग्गौ प्राण ।

—ह र

उ०—६ सुणि सुंदरि, सच्चउ चवा, भाजइ मन चौ भ्रंति । मो मारू मिळिवा तणी, खरी विलग्गी खति ।

—ढो. मा.

उ०—७ कठ विलग्गी मारवी, करि कंचूवा दूर । चकवी मनि आणद हुवउ, किरण पसारचा सूर ।

—ढो मा

विलग्गणहार, हारौ (हारी), विलग्गणियौ—वि० ।

विलग्गिओडौ, विलग्गियोडौ, विलग्ग्योडौ—भू० का० कृ० ।

विलग्गीजणौ, विलग्गीजबौ—भाव वा० ।

विलच्छण, विलच्छन—देखो 'विलक्षण' (रू भे)

विलछणौ, विलछबौ—देखो 'विलसणौ, विलसबौ' (रू. भे.)

उ०—वार न लायौ विलछतां, म्लेछां मन रत्ता । ईस्वर रूप अलावदीन, जिण आलम जित्ता ।

—लूणकरण कवियौ

विलछणहार, हारौ (हारी), विलछणियौ—वि० ।

विलछिओडौ, विलछिओयोडौ, विलछ्योडौ—भू० का० कृ० ।

विलछीजणौ, विलछीजबौ – भाव वा० ।

विलछियोडौ—देखो 'विलसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विलछियोडी)

विलणौ, विलबौ–क्रि स—आवेष्टित करना, घेरना ।

उ०—दल सभळै सुरताण, आय चित्रकोट विलिज्जइ, भेजउ वेगि विसेट, बात मिलणै की कीजइ ।

—प च चौ

विलघणौ, विलघबौ—देखो 'विलूंघणौ, विलूंघबौ' (रू. भे)

उ०—मन-मध्या सोई इद्रिया, सो स्वाद विलघा ।

—केसौदास गाडण

विलधणहार, हारौ (हारी), विलघरिणयौ—वि० ।
विलघिग्रोडो, विलघियोडो, विलघ्योडो—भू० का० कृ० ।
विलघीजणो, विलघीजवौ—भाव वा० ।

विलधियोडो—देखो 'विलूधियोडो' (रू भे)
(स्त्री. विलधियोडी)

विलपणौ, विलपबौ–क्रि अ—१ उदास होना, खिन्नचित्त होना, बेचैन होना ।
२ व्याकुल होना, दुःखी होना, व्यथित होना ।
उ०—१ दातण मिळवौ दुलभ, सघन वन वनै ज्यिं महू । विलपर जळ विन बाळ, भरै सर नळ उफळत वहू ।
—जैतदान बारहठ
उ०—२ नगर माहि नर नारि नड, अतिघण अणि उचाट । विलपइ बभण वाणीया, वली विसेगिं भाट । —मा का प्र
३ विलाप करना, रोना ।
उ०—१ विनिता विधिविधि विलपती, टोलै टोलै जाय । आगलि थाता ग्रेकनइ बीजी वहग्ग धाय । —मा का प्र
उ०—२ ग्राव, अमोडा माहि धरु, ईम तणइ जिम मग । हुं विलपती विरहिणी, स्वामि ! म छडिसि मग । —मा का प्र
उ०—३ इम विलपती देखि नै, ग्रावै सेठ निलज्ज । सुवचन कहै सतोखनै, एहवी करै ग्ररज । —वि कु
विलपणहार, हारौ (हारी), विलपणियौ—वि० ।
विलपिग्रोडो, विलपियोडो, विलप्योडो—भू० का० कृ० ।
विलपीजणो, विलपीजवौ—भाव वा० ।

विलपाणौ, विलपावौ–क्रि स—१ व्याकुल करना, दुःखी करना, व्यथित करना ।
२ विलाप करने के लिए प्रवृत्त करना, रुलाना ।
विलपाणहार, हारौ (हारी), विलपाणियौ—वि० ।
विलपायोडो—भू० का० कृ० ।
विलपाईजणो, विलपाईजवौ—कर्म वा० ।
विलपावणौ विलपाववौ—रू० भे० ।

विलपायोडो–भू. का. कृ.—१ व्याकुल किया हुआ, दुःखी किया हुआ व्यथित किया हुआ २ विलाप करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, रुलाया हुआ ।
(स्त्री विलपायोडी)

विलपावणौ, विलपाववौ—देखो 'विलपाणौ, विलपावौ' (रू भे)
विलपावणहार, हारौ (हारी), विलपावणियौ—वि० ।
विलपाविग्रोडो, विलपावियोडो, विलपाव्योडो—भू० का० कृ० ।
विलपावीजणो, विलपावीजवौ—कर्म वा० ।

विलपावियोडो—देखो 'विलपायोडो' (रू भे)
(स्त्री विलपावियोडी)

विलपियोडो–भू का कृ.—१ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।
(स्त्री विलपियोडी)

विलब्ध–वि [स] १ पाया हुआ, प्राप्त किया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

विलब्धणौ, विलब्धवौ–क्रि स [स विलब्धनम्] १ प्राप्त करना, पाना २ अलग करना, पृथक करना ।
विलब्धणहार, हारौ (हारी), विलब्धणियौ—वि० ।
विलब्धिग्रोडो, विलब्धियोडो विलब्ध्योडो—भू० का० कृ० ।
विलब्धीजणौ विलब्धीजवौ—कर्म वा० ।
विलभणौ, विलभवौ—रू० भे० ।

विलब्धियोडो–भू का कृ—१ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।
(स्त्री विलब्धियोडी)

विलभणौ, विलभवौ—देखो 'विलब्धणौ, विलब्धवौ' (रू भे)
विलभणहार, हारौ (हारी), विलभणियौ—वि० ।
विलभिग्रोडो, विलभियोडो, विलभ्योडो—भू० का० कृ० ।
विलभीजणौ, विलभीजवौ—कर्म वा० ।

विलभियोडो—देखो 'विलब्धियोडो' (रू भे)
(स्त्री विलभियोडी)

विलम–स पु—१ मनबहलाव की क्रियाएँ ।
२ देखो विलब' (रू भे)
उ०—१ राई वेगई चढि ग्रावो, विलम न करो वार । सोल सइयर रूकमणी सारीखी लेज्यो साथ । —रुकमणी मगळ
उ०—२ विलम विना विलुत्री मेरी, नही अधर नहिं धरता । ग्राद रु ग्रत मध्य नही मेरै, नहिं उरै परै मेरी सुरता ।
—श्री हरिरामजी महाराज
३ देखो 'वल्लभ' (रू भे)
उ०—भवरा घेर र भुवन मैं, राख्यो विना रहू न । वाडी म्हारी रो विलम, खूनी कर गयो खून । —ग्रग्यात
४ देखो 'विलोम' (रू भे)
उ०—महण वन दहण 'केसर' गहण मडियो, तेण खग वहण

घण सघण तणियो । मह तम विलमा उडावण मारत्री, वहखत्री तरण चै रूप वणियो । —किसोरदान बारहठ

विलमणो–वि —१ प्रेमासक्त।

उ०—सुण वाला, इक रैण पोढती कठ लगांणी, जागी जजका, नैण विलखता नीर भरांणी । पूछता, मुळकाय कह्या थें वोल सयाणी, 'छळिया ! पेख्यौ तूझ विलमणो नार विराणी ।' —मेघ

२ भोग-विलास मे रत्त ।

३ कार्य मे लग कर भूलने वाला ।

४ मग्न, लीन ।

५ कार्य मे लीन ।

विलमणो, विलमबो–क्रि अ —१ प्रेमासक्त होना ।

२ भोगविलास मे रत्त होना ।

३ कार्य में लीन होना ।

४ कार्य मे लग कर भूलना ।

५ मग्न होना, लीन होना ।

६ ठहरना, रुकना ।

७ देखो 'विलूंबणो, विलूंबबो' (रू. भे)

उ०—म्हारा चगा मारू चालै छै विदेस, जिण रुत केसू फूलै आली । कळिया सूं भवर विलम रया छै, सूवटा आवा डाळी आली । —रसीलै राज रा गीत

८ देखो 'विलबणो, विलबबो' (रू. भे.)

विलमणहार, हारो (हारी), विलमणियो — वि० ।

विलमिग्रोड़ो, विलमियोड़ो, विलम्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विलमीजणो, विलमीजबो—भाव वा० ।

विरमणो, विरमबो, बिलमणो, बिलमबो, बिरमणो, बिरमबो, विलम्मणो, विलम्मबो—रू० भे० ।

विलमाणो, विलमावो–क्रि स.—१ बातें करने हेतु प्रवृत्त करना, बातो मे लगाना, बहलाना ।

उ०—'मद्' आखें मारको, अत वेढ अघाया, पुड घर धूज पडाईयें, 'दलजी' चढ आया । वाता सू विलमायनै, ज्या नै जजमाया, 'सीहै' कहिया भेद सो, नाही मन भाया । —वी मा

२ मोहित करना, लुभाना, मोहना ।

उ०—१ मद मागणि मो सारसी, राज छैलै लीराय । कोइक पुर की कामणी, रखं ली विलमाय । —पनां

उ०—२ पलका रै ऊपर पग धर आजो, तो हिवडा रै आसण आप विराजो । कहो जी ! प्रभूजी ! थानैं किण विलमाया, तो दासी रै महला विलब सूं आया । —गी. रा

उ०—३ वागां में घूमण गयो म्हारो रावतियो सरदार, बागा मायली कोयल म्हारो लियो छै भवर विलमाय, दासी, कण विलमायो मैं, रावत नही आयो अब तक वारणैं । —लो गी

३ धैर्य देना, धीरज बधवाना ।

४ फुसलाना, बहकाना ।

उ०—मालवणी ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पिण ढोलोजी रहै नही । ताहरां मालवणी कहै । —ढो मा

५ देरी लगाना, विलम्ब करना ।

६ रोकना, ठहराना ।

उ०—१ तद ओळंगुवा बोलिया—भुजनगर रो राजा रावळ जालम, बडो पातसाह तिण राणी रा चाकर छा घरा तो काई कमाण न छै, पण दातारा नै देखण नै मुलकगिरी करता फिरा छा । सो वरस अेक हुवौ, महाराज विलमाय राखिया ।
—पलक दरियाव री वात

उ०—तद खीवो ऊठ घोडै सवार हुवो । सूरेजी नूं कहियो – थें काढो, साथ माफक छै, हू इहा नू विलमायस्यू । तद सूरेजी कही–हमे काढिया किसी गत छै । —सूरे खीवै कांधळोत री वात

उ०—३ ओठक नू वित सापियो सो भगायो और कही जै हू बाहर नू विलमाऊ छू ।
—सुन्दरदास भाटी बीकपुरी री वारता

विलमाणहार, हारो (हारी), विलमाणियो—वि० ।

विलमायोड़ो - भू० का० कृ० ।

विलमाईजणो, विलमाईजबो—कर्म वा० ।

विरमाणो, विरमावो, विरमावणो, विरमाववो, बिलमाणो, बिलमावो, बिलमावणो बिलमाववो, बिरमाणो, बिरमावो, बिरमावणो, बिरमाववो, विलमावणो, विलमाववो, विलम्माणो, विलम्मावो, विलम्मावणो, विलम्माववो—रू० भे० ।

विलमायोड़ो–भू का. कृ —१ बातें करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, बातो मे लगाया हुआ २ मोहित किया हुआ, लुभाया हुआ, मोहा हुआ. ३ धैर्य दिया हुआ, धीरज बधाया हुआ ४ फुसलाया, हुआ बहकाया हुआ ५ देरी लगाया हुआ, विलम्ब किया हुआ ६ रोका हुआ, ठहराया हुआ
(स्त्री विलमायोडी)

विलमावणो, विलमावबो—देखो 'विलमाणो, विलमावो' (रू. भे)

उ०—१ पाणी पी-पी जापो काढ्यो, हियै दूध री सूखी धार । टाबर रोयो भूखा मरतो, मन विलमावण लागी नार ।
—चेतमानखो

उ०—२ "मेह-मामो म्हानै काई देसी, दादी ।"
"लाडू ।"

भळ ?"
"दूध, दही, रमतिया, गैणा।"
"साचै ई, दादी।"
"हा, बेटा।"
"नही तू बिलमावै है।" —वरसगाठ

उ०—३ तद बहूवा सारी मुजरो कर बोहडी, डेरै आई। आय सारी जणी एकठी बैस कहण लागी—"आपा कुवरजी नु किण भात विलमावस्या, वात विसारै घातस्या ?"
—कुवरमी साखला री वारता

विलमावणहार, हारो (हारी), विलमावणियो—वि०।
विलमाविप्रोडो, विलमावियोडो, विलमाव्योडो—भू० का० कृ०।
मिलमावीजणो, विलमावीजवो—कर्म वा०।

विलमावियोडो—देखो 'विलमायोडो' (रू भे)
(स्त्री. विलमावियोडी)

विलमियोडो–भू का कृ—१ प्रेमाशक्त हुवा हुआ २ भोग-विलास मे रत्त हुवा हुआ ३ कार्य मे लीन हुवा हुआ ४ कार्य मे लग कर भूला हुआ ५ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ ६ ठहरा हुआ, रुका हुआ।
७ देखो 'विलूबियोडो' (रू भे)
८ देखो 'विलबियोडो' (रू भे)
(स्त्री विलमियोडी)

विलम्मणो, विलम्मबो—देखो 'विलमणो, विलमबो' (रू भे)
उ०—सोरा भू मे खळाकै कसू वा माट फूटा सा-क, उठै सूरा गैदता बिलम्मै केक आए। घणा वावा वीच घूमै कलाळी हाट ज्यू गोरा, अेंह रोसवाई उभै रचायो आराण। —जसो आढो
विलम्मणहार, हारो (हारी), विलम्मणियो—वि०।
विलम्मिम्रोडो, विलम्मियोडो, विलम्म्योडो—भू० का० कृ०।
विलम्मीजणो, विलम्मीजवो—भाव वा०।

मिलम्माणो, विलम्मावो—देखो 'विलमाणो, विलमावो' (रू भे.)
विलम्माणहार हारो (हारी), विलम्माणियो—वि०।
विलम्मायोडो—भू० का० कृ०।
विलम्माईजणो, विलम्माईजवो—कर्म वा०।

विलम्मायोडो—देखो 'विलमायोडो' (रू भे)
(स्त्री विलम्मायोडी)

विलम्मावणो, विलम्मावबो—देखो 'विलमाणो, विलमाबो' (रू भे)
विलम्मावणहार, हारो (हारी), विलम्मावणियो—वि०।
विलम्माविप्रोडो, विलम्मावियोडो, विलम्माव्योडो— भू० का० कृ०।
विलम्मावीजणो, विलम्मावीजवो—कर्म वा०।

विलम्मावियोडो—देखो 'विलमायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री विलम्मावियोडी)

विलम्मियोडो—देखो 'विलमियोडो' (रू भे)
(स्त्री विलम्मियोडी)

विलय, विलयन–स पु [स. विलयनम्] १ पानी मे पदार्थ के घुलने की क्रिया।
२ पदार्थ के परिवर्तित रूप मे दूसरे पदार्थ मे मिलने की क्रिया।
३ आत्मा का परमात्मा से मिलन।
४ सृष्टि का अन्त, प्रलय।
५ मौत, मृत्यु।
६ दो राज्यो का आपसी विलयन।
७ नाश, समाप्ती।
उ०—आप तो धरम करण नै लागा, करो काया री निस्तारी रे। म्हारै मागणे पगल्या करता पाप विलय जावै म्हारो रे।
—जयवाणी
रू भे—विलउ, विलै।

विलळणो, विलळबो–क्रि अ [स विलपनम्] १ उदास होना, खिन्न होना, बेचैन होना।
२ व्याकुल होना, दुःखी होना।
३ विलाप करना, रोना।
उ०—पथी हाथ सदेसडउ, धण विलळंती देह। पग सूं काढइ लीहटी, उर आसुआ भरेह। —ढो मा.
विलळणहार, हारो (हारी), विलळणियो—वि०।
विलळिप्रोडो, विलळियोडो, विलळ्योडो—भू० का० कृ०।
विलळीजणो, विलळीजवो—भाव वा०।

विलळाणो, विलळावो–क्रि अ [स विलापनम्] १ उदास होना, व्याकुल होना, खिन्न होना।
२ व्यथित होना, दुःखी होना।
३ विलाप करना, रोना।
उ०—छाटो पाणी कुमकुमइ, वीभण वीझ्या वाइ। हुई सचेती मारवी, प्री आगळि विलळाइ। —ढो मा.
४ समाप्त होना, नाश होना, मिटना।
विलळाणहार, हारो (हारी), विलळाणियो—वि०।
विलळायोडो—भू० का० कृ०।
विलळाईजणो, विलळाईजवो—भाव वा०।
विलळाणो, विलळोवो, विलळावणो, विलळावबो, विललाणो, विललावो, विलळावणो, विलळावबो, विललावणो, विललावबो
—रू० भे०।

विललाणो, विललावो—देखो 'विलळाणो, विलळावो' (रू. भे)

उ०—१ तोरणथी रथ फेरि चलै रथ फेरि चलै दोय पगु दै जात। ग्यारउ लेहु मनाई, मुगति वधू मन गढ वसी, मन मद्द वगी हमहि रहे विललात। —स कु

उ०—२ जोड जादवा तणी सोहती मूल ए, देखतां देखतां हुय गई धूल ए। गाढ नै जोम हु तो घट माय ए, गिरि थोडा मे गई विललाय हे। —जयवाणी

विललाणहार, हारो (हारी), विललाणियो—वि०।

विललायोडो—भू० का० कृ०।

विललाईजणो, विललाईजवो—भाव वा०।

विललाप—देखो 'विलाप' (रू भे)

विलळापणो विलळापवो—देखो 'विलापणो, विलापवो' (रू भे)

विलळापणहार हारो (हारी), विलळापणियो—वि०।

विलळापिश्रोडो विलळापियोडो विलळाप्योडो—भू० का० कृ०।

विलळापीजणो, विलळापीजवो—भाव वा०।

विलळापियोडो—देखो 'विलापियोडो' (रू भे)

(स्त्री विलळापियोडी)

विलळायोडो—भू का कृ.—१ उदास हुवा हुआ, व्याकुल हुवा हुआ, खिन्न हुवा हुआ २ व्यथित हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ४ समाप्त हुवा हुआ, नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री विलळायोडी)

विललायोडो—देखो 'विलळायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विललायोडी)

विलळावणो, विलळाववो—देखो 'विलळाणो, विलळावो' (रू भे)

उ०—बाळ रहे विलळायता, 'पातल' धाक प्रताप। मन जरमना कमध री, आठ पोहर अलाप। —किसोरदान बारहठ

विलळावणहार, हारो (हारी), विलळावणियो—वि०।

विलळाविश्रोडो, विलळावियोडो, विलळाव्योडो—भू० का० कृ०।

विलळावीजणो, विलळावीजवो—भाव वा०।

विललावणो, विललाववो—देखो 'विलळाणो, विलळावो' (रू. भे)

उ०—मैं तो जाणी ए काची माया, विललावै जिम बादल छाया। ऐसी जाणी कहो कुण रीझै, मोनै धरम तणी आगै प्रेमो। —जयवाणी

विललावणहार, हारो (हारी), विललावणियो —वि०।

विललाविश्रोडो, विललावियोडो, विललाव्योडो—भू० का० कृ०।

विललावीजणो, विललावीजवो—भाव वा०।

विलळावियोडो—देखो 'विलळायोडो' (रू भे)

(स्त्री विलळावियोडी)

विललावियोडो—देखो 'विलळायोडो' (रू भे)

(स्त्री विललावियोडी)

विलळो—देखो 'विमळो' (रू भे)

उ०—१ हमेसां री भात श्रेक दिन भळै दोना मे नाट पडगी। माव विलळो राख। बिणियाणी कयो—थाट बिना म्हारो म्हो अरोठो लागै, थे मोनार नै घरै जाय दाणु बोटी री थाट गढायलो। —फुलवाडी

उ०—२ थारै पैंगा मुजब कतन री दात तो होगो गाम घर जवान घर हादरी बात होगी कुड। किणी रमा रै मूंडागै इंडो विलळो बात करज्यो मती, नोग हुसैला। —फुलवाडी

उ०—३ गोपणियो मुंनावतो या मोटा गुर मे थोनी भाटिया सू हाथ थाको पानो नो पटियो दीसै, इणी खातर ओडो विलळो बात करी। —फुलवाडी

उ०—४ सेठा रै मूंडा मांग्ही देख गैंघला नागा—सेठा, इता समझदार होय थै ऐडो विलळो बात गोगर करी। थारै भी नी बच्यो तो काई व्है, राज रो खजानो तो हाल भरयो है। —फुलवाडी

(स्त्री विलळी)

विलवणो, विलवबो—क्रि अ —१ उदास होना, खिन्नचित होना, बेचैन होना।

२ व्याकुल होना, दुखी होना, व्यथित होना।

उ०—१ पीहर तो परत है रहिया, प्रीतम विरहागनि दहिया। प्रमदा इणिपरि विलवती, दुख रोई गति गलंती। —स्रीपाल रास

उ०—२ इम विलवती सुंदरी, रोयती न रहाय। पयल अघरमी तिण समै, भासै पासै श्राय। —स्रीपाल रास

३ विलाप करना, रोना।

उ०—१ करि मन धीर करार, विलवै काइ विरही थयो। सयणे न लहो सार, जावण दे परहा 'जसा'। —जसराज

उ०—२ विलवइ वै सती कीजइ ककण भग। उछइ नीरि जिम माछली तिम विरह दहइ श्रम्ह श्रग। विलवई वै सती। —कां दे. प्र.

उ०—३ अन्न दिवसि वभणु सकुटव, रल जिम विलवई पाडइ बुब। पूछइ भीमु करी। एकतु, भाविउ दूखु किसुं श्रचितु। —सालिभद्र सूरि

४ निर्भर होना, आश्रित होना ।

उ०—४ जनहरिया उ न देसडं, वारै मास वसत । सदा फलंगी विनसती, विलव्या जीव निचत । —अनुभववाणी

५ पकडना, ग्रहण करना ।

उ०—केईक पाना फूलडा, केईक विलव्या डाळ । हरिया मूळ विलविया, फळ पाया असराळ —अनुभववाणी

विलवणहार, हारौ (हारी), विलवणियौ—वि० ।

विलविग्रोडौ, विलवियोडौ, विलव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विलवीजणौ, विलवीजवौ—भाव वा० ।

विळवळणो, विळवळवो—देखो 'विलविलणौ, विलविलवौ (रू भे)

उ०—खिण रोवै खिण विळवळै, मारु' ····मिट । वळि घण दीसै नाह विण, घण विण नाह म दिठ । —ढो मा

विळवळणहार, हारौ (हारी), विळवळणियौ—वि० ।

विळवळीग्रोड़ौ, वळवळीयोडौ, विळवळयोडौ—भू० का० कृ० ।

विळवळीजणौ, विळवळीजवौ—भाव वा० ।

विलवलणौ, विलवलवौ—देखो विलविलणौ, विलविलवौ' (रू भे)

उ०—जाण्यु आडउ माडम्यइ जी रे जी वीरजी 'गौतम लेस्यइ केवल भाग रे । विलवलता, मूंको गयउ जी, रे जी, वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे । —स कु.

विलवलणहार, हारौ (हारी), विलवलणियौ—वि० ।

विलवलिग्रोडौ, विलवलियोडौ, विलवल्योडौ—भू० का० कृ० ।

विलवलीजणौ, विलवलीजवौ—भाव वा० ।

विलवळियोडौ—देखो 'बिलबिलियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विलवळियोडी)

विलवलियोडौ—देखो विलविलियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विलवलियोडी)

विलवावणी—स स्त्री —छिपकली की जाति का एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष ।

रू भे —विलवामणी ।

विलवियोडौ—भू का कृ.—१ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ २ व्याकुल हुवा हुआ, दु'खी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री विलवियोडी)

विल-विल—देखो 'विल विल' (रू. भे)

उ०—१ माता पिता झुरता रहघा, वलि बाघवा नी जोड रे । वाल त्रिया विलविल करै, तै तो गयोज ऊमा छोड् रे । —जयवाणी

उ०—२ अचेतन थई देवकीजी कुरडै सा असराल । हीन दीन विलविल करै जी, दोहली पेट री झाल । —जयवाणी

विलविळणौ, विलविळवौ—देखो 'विलविलणौ, विलविलवौ' (रू. भे)

उ०—१ वउळावू सगळा विलविळइ, ढोलउ किउही पाछउ वळइ । साथी मारू दागण-भगी, घणू कहइ परिण न रहइ घणी । —ढो. मा

उ०—२ भाई सुत राणी विलविळइ, हाथ झाली कहइ तेह गहिला राजा । एक पारेवइ नइ कारणइ, स्यू कापउ छंड देह गहिला राजा । —स. कु

उ०—३ स्रावण मास मे विरहणि जामनी जांम न जात, सजि आडवर जवर दामिणी मिलै वरसात । मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दीघ निरास, विलविळै राजुल आखीय भरि भरि नाखी निरास । —ध. व. ग्र

उ०—४ मात पिता पाल्या घणा रे लाल, एतो रह्या नी लीगार हो, भविक जन । नारघा विलविलती रही रे लाल, नही आण्यो मोह ति वार हो, भविक जन । —जयवाणी

विलविळणहार, हारौ (हारी), विलविळणियौ—वि० ।

विलविळिग्रोडौ, विलविळियोडौ, विलविळयोडौ—भू० का० कृ० ।

विलविळीजणौ, विलविळीजवौ—भाव वा० ।

विळविलाट, विलविलाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू भे.)

विलविलाणौ, विलविलावौ—१ देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलावौ' (रू भे)

२ देखो 'विलविलणौ, विलजिलवौ' (रू. भे)

विलविलाणहार, हारौ (हारी), विलविलाणियौ—वि० ।

विलविलायोडौ—भू० का० कृ०।

विलविलाईजणौ, विलविलाईजवौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलविलायोडौ—१ देखो 'बिलबिलायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बिलबिलियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विलविलायोडी)

विलविलावणौ, मिलविलावयौ – देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलावौ' (रू भे)

२ देखो विलविलणौ, विलविलवौ' (रू भे)

विलविलावणहार, हारौ (हारी), विलविलावणियौ—वि० ।

विलविलाविग्रोडौ, विलविलावियोडौ, विलविलाव्योडौ —भू० का० कृ० ।

विलविलावीजणौ, विलविलावीजवौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलविलावियोडौ—१ देखो विलविलायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बिलबिलियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बिलबिलायोडी)

बिलबिलियोडो—देखो 'बिलबिलियोडो (रू. भे)

(स्त्री. बिलबिलियोडी)

बिलम्रामणो—देखो 'बिलवावणो' (रू. भे.)

बिलसण, बिलसणो–वि.—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता।

२ आमोद-प्रमोद करने वाला।

३ भोग-विलास करने वाला।

४ दान देने वाला, दातार।

उ०—१ वड पह वडुआर भुजि कुळि भार, घर सिणगार तपै लखधीर। बिलसण गज वाज कुअर सकाज, वसधा राज करै धर वीर। —ल. पिं

उ०—२ बिलसण गज वाजि निवाजण खट ग्र न, काइम राज अजाद सकाज। घर ओपम प्रतपै पाटोधर 'लखपति' कुअर भुजै कुळ लाज। —ल. पिं.

स पु—दान। (अ मा, ह. नां. मा)

बिलसणो, बिलसबो–क्रि अ.—१ शोभा पाना, शोभित होना।

उ०—म्हारै पती जाणै कोई आळस खुद देह धारी एं समै सुभावी फो हीज बिलसतो सोभतो होवै जिसो है पण सिंधूराग जुद्ध री राग सुणताई तो सो गुणो अग फूल पोरस वध जाय अनै सरीर बगतर में ही मावै नहीं। —वी स टी.

२ कलकित होना, कलक लगना।

क्रि. स —१ विलास करना, आनन्द मनाना।

उ०—१ राति दिवस रमइ रमइ, बिलसइ नवरस भोग। जोडी सारीखी जुडी, केसव तणइ सजोग। —ढो. मा.

उ०—२ प्रति दिन विलास नवकोटपति, 'अभैसाह' बिलसै इसा। चाहे घनेख निरखै चरस, इद्र सराहै एरसा। —रा. रू.

उ०—३ कवी कहै है कि—नाग हाथी सोभागवाना नै दाम रुपिय्या देण सूं मुसकळ हाथै आवै वे हाथी वीर पुरख विना दामा विना रुपिया दीधा दुसमणा सु खोस लेहै नै बिलसै सुख लेवै है। —वी स. टी

उ०—४ मुगति माहै वेहु मिल्या रे लाल, बिलसै सुख वरदाय है सहेली। प्रणमैं पडित धरमसी रे लाल, नमता नव निधि थाय है सहेली। —ध व. ग्र

२ उपभोग करना, भोगना।

उ०—१ अन्न भोजन राम रस, काहे न बिलसै खाइ। काळ विचारा क्या करै, रम रम राम समाइ। —दादूबाणी

उ०—२ वित बिलसण री वार, नर सठ वित बिलसै नहीं। जावै बीत जियार, जेहल पछतावै जिकै। —बा. दा.

उ०—३ बिलसी धन कोडी तै वात टली, तजी नारी तणी सगति सगली। परभव दुरगति वेदन दुहिली, बोलइ मत फोसा तै वात यलि। —स. कु.

३ आमोद-प्रमोद करना।

उ०—घाइ घसइ ति उघसइ, बिलसइ हमइं प्रवाहु। खधि चडइ लघागली आकली न सरुइ नाहु। —जयसेखर सूरि

४ दान देना।

उ०—वास सीया बिलसत न विरचं, सुग्तर सुपह बिन्है सारीक। सोरमतरि अहि वस सुखी सहि, मागण सुखी कन्ही मछरीक। —नादण बारहठ

५ भोग करना, सभोग करना, मैथुन करना।

उ०—१ लावण हास्य रसड करी, बिलसड प्रीतम प्रेमइ जी। योगी भोगी नइ घरै, आवण लागा केमइ जी। —वि .कु.

उ०—२ मत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक रजण सुलक्खण, पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिण्णि, नारि बिलसइ विअक्खणि। —हीराणद सूरि

उ०—३ पदमणी परिमल पाम नै, भोगी भ्रमर नाह! मुख बिलसो मोसु बालहा! लीजै-जोवन-लाह। —जयबांणी

उ०—४ वर बिलसइ अलवेसर केसर हेठि सुवेस, अध पूगइं ऊन-रायणि रायणि फलिय अनेम। —जयसेखर सूरि

६ उत्सव मनाना।

उ०—१ जिणि जगि जीतउ ममरमि अमर सिरोमणि कांमु, बिलसइ सिद्ध सयवर सवरगुणि अभिरामु। निरुपम निपुण निरजन रजन जनमन चारु, पामीय सुह गुरु आइसु गाइसु नेमि कुमारु। —जयसेखर सूरि

उ०—२ दोरइ बद्धइ सूयडउ छूटइ महतउ होइ इण परि बिलसइ विवह परि सुद्धि न जांणइ कोइ। —हीराणद सूरि

बिलसणहार, हारो (हारी), बिलसणियो – वि०।

बिलसिओडो, बिलसियोडो, बिलस्योडो—भू० का० कृ०।

बिलसीजणो, बिलसीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

बलसणो, बलसबो, विलसणो, विलसबो, बेलसणो, बेलसबो, बळसणो, बळसबो, बीलसणो, बीलसबो—रू० भे०।

बिलसाणो, बिलसावो–क्रि स [बिलसणो क्रिया का प्रे रू] १ शोभित करना, शोभायमान करना।

२ कलकित करना, कलक लगाना।

३ विलास करना, आनन्दित करना।

उ०—पैंसठ भोम पोला ऊपरै, तेतीस नै भोम नै माय हु-भवियण।
सिंहासन सक्र इंद्र नो, जीव सुख विलसाय हो-भवियण।
—जयवाणी

४ उपभोग या भोग कराना।
५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित करना।
६ दान दिलाना।
७ सभोग करने के लिए प्रेरित करना, मैथुन करने के लिए प्रेरित करना।

विलसाणहार, हारौ (हारी), विलसाणियौ—वि०।
विलसायोडौ—भू० का० कृ०।
विलसाईजणौ, विलसाईजवौ—कर्म वा०।
विलसाणौ, विलसावौ, वलसाडणौ वलसाडवौ, वलसाणौ,वलसावौ, वलसावणौ, वलसावबौ—रू० भे०।

विलसायोडौ-भू का कृ.—१ शोभित किया हुआ, शोभायमान किया हुआ २ कलकित किया हुआ, कलक लगाया हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्दित किया हुआ. ४ उपभोग या भोग कराया हुआ ५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित किया हुआ ६ दान दिलाया हुआ ७ सभोग करने के लिए प्रेरित किया हुआ, मैथुन करने के लिए प्रेरित किया हुआ।
(स्त्री विलसायोडी)

विलसियोडौ-भू का कृ—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ. २ कलकित हुवा हुआ ३ विलास किया हुआ, आनन्द मनाया हुआ ४ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ. ५ दान दिया हुआ ६ भोग किया हुआ, सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ ७ आमोद-प्रमोद किया हुआ।
(स्त्री विलसियोडी)

विला-अव्य. [अ विला] बिना।

विलाइत—देखो 'विलायत' (रू भे)

उ०—घणौं सीतळ पाणी सू सीचिआ थका वीभणा वाइ भापा सू हीफा खाइ रहीआ छै। तठै विलाइत री गूंथी चटाई अमोलक विछाइ रही छै। तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरै ढोलिआ गिलमा री विछाति वाणि नै रही छै। —रा सा. स.

विलाइति, विलाइती—देखो 'विलायती' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उण बागाइत माहे ग्रीखम रित रा विलाइती वालेरा खस खाना, ऊंची ठौड रा बगळा, रावटी वालाबध रा ठासा रा गूथिआ भाति भाति खसखाना वणाया छै। —रा. सा स

विलाउ—देखो 'बिडाळ' (रू. भे)

उ०—जिहा सिव,तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घुरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट। लाघता दोहली छद, चीत्रा बुरकइ, वेडि विलाउ घुरकइ। —सभा

विलाग-वि.—१ पृथक, अलग, भिन्न।
२ संलग्न, लगा हुआ।

विलागणौ, विलागवौ-क्रि. अ—१ चिपकना, लिपटना।
२ पहूचना।
३ स्पर्श होना छूना।

उ०—१ आयौ खुरम विलागै अवरि, पूरै पारभ है गै पक्खरि। ऊपाटेह छरा आधतरि, जाणै सीह विरुत्तौ छप्परि।
—गु. रू ब.

उ०—२ वाघा लै वाधियौ, वडौ ब्रह्मंड बिलागौ। चलण हेक हरि चापियौ, भलौ भूगोळ सभागौ —पी. ग्र.

४ देखो 'लागणौ, लागवौ' (रू. भे)
विलागणहार, हारौ (हारी), विलागणियौ—वि०।
विलागिओडौ, विलागियोडौ, विलाग्योडौ—भू० का० कृ०।
विलागीजणौ, विलागीजवौ—भाव वा०।
विलागणौ, विलागवौ—कर्म वा०।

विलगियोडौ-भू का कृ—१ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. २ पहुचा हुआ ३ स्पर्श हुवा हुआ, छूपा हुआ।
४ देखो 'लागियोडौ' (रू भे)
(स्त्री विलागियोडी)

विलाणौ, विलावौ-क्रि. अ—१ विलीन होना, विलय होना।
२ लोप होना, लुप्त होना।

उ०—विलावलि कौ वखत आयौ। गुणी जना राग भिलायौ। चकवा चकवी को मिळाप। कुकडा बोलिया। जवार सीतल हवा। हरक वाल फूलिया। रातवर प्रगासियौ। तारा विलाया चिडया चहकि। —पना

३ नाश होना, मिटना।

उ०—१ काम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खडग लै सबी सघारा। जड अरु असत् क्लेस विलाया, सत् चेतन आनद पद पाया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ जड चेतन कू जोय, हस निरभै थया। तन मन गया बिलाय, ब्रह्म केवल रया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ गुरु का सब्द सुणत ही जाग्या, माया मोह विलाय गया। स्वप्ना माथै अनत भरम देख्या, जागत हो निज स्वरूप लया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ उत्पति थिति लय नही ज्यामैं, कारण कारज विलाणी।

सत् सुखराम ग्रातमारांमी, निरालब निरवांणी ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

४ व्यतीत होना, वीतना ।

विलाणहार, हारो (हारी), विलाणियो—वि० ।
विलायोडो—भू० का० कृ० ।
विलाईजणो, विलाईजबो—भाव वा० ।
विलावणो, विलावबो, वीलाणो, वीलाबो, वीलावणो, वीलावबो रू० भे० ।

विलात—देखो 'विलायत' (रू. भे)

उ०—काबल फतल करीह, कायम चीण विलात कै । भाळै क्रोध भरीह, न्रपत 'पता' किण सिर निजर । —पाबूदान ग्रासियो

विलाति, विलाती—देखो 'विलायती' (रू. भे)

उ०—१ मामी मीर बलवकी मल्ल, मीर सैद पठ्ठाण मुगल्ल । ग्वारी ग्रोर सजोर बुखारी, घर काबली विलाति खधारी ।
—रा. रू

उ०—२ परचड गात कच्छिय प्रगट, रेवत थट्ट विलाती रा । नव साजि किया हाजर नरा, भिडज नवल्ली भाति रा ।
—रा. रू

उ०—३ तुरकी ताजी तुरग, विलाती देसी विडग । धूना चित्तागिया धंग, खेड रा नीपना खंग । —गु रू. ब.

उ०—४ विडग तुरक्की ऐराकी विलाती, मचै पाखरा रोळि है-हीस माती । सिणगारिया पीलवाणै सुडाळा, ग्रसमान साम्हा दियता उलाळा । —गु रू ब

विलाप-स पु. [स] १ उदास, व्याकुल या व्यथित होने की क्रिया ।
२ कष्ट, दुख, पीडा ।

उ०—१ तिण सगतसिंह जी मार राणाजी नै हेलो पाड कयो घोडो तीना पगा है तद देख जीण उतारता ही घोडो छूटो । रांणोजी महा विलाप कियो । सत्तू (सक्तिसिंह) भाई उपकार कर ग्रापरो घोडो दियो । —वी स. टी

३ रुदन क्रदन ।

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या — यू न करणो । रोगादिक ऊपना गाढो रहणो । ज्यूं किण हि रै माथै देणो हो । देग्रारा परिणाम नही हुता । पिण पैलं जबरी सू लिया । जद मुग्ख तो विलाप करै । —भि द्र.

वि —तप्त, गर्म । (डि को)

रू भे —विलाप, विलालाप, विलापात, विलोपात ।

ग्रल्पा ,—विलापातो ।

विलापणो, विलापबो—क्रि. ग्र —१ उदास होना, बेचैन होना, खिन्न-चित्त होना ।
२ व्याकुल होना, व्यथित होना, दुःखी होना ।
३ रुदन करना, रोना ।

विलापणहार, हारो (हारी), विलापणियो—वि० ।
विलापियोडो, विलापियोडो, विलाप्योडो—भू० का० कृ० ।
विलापीजणो, विलापीजबो—भाव वा० ।
विलापणो, विलापबो—रू० भे० ।

विलापात—देखो 'विलाप' (रू. भे)

उ०—१ इतरा विलापात करण लागी तद महेल्या बोली—इक म्हा मन ग्रचरिज भयो, सामळ बात म प्रेम । त्या ग्रण दीठा सज्जणा, मयूकर लागी प्रेम । —ढो मा

उ०—२ मारवणी वासै इण भांत विलापात करै छै ढाढी उहट सोलखी नखा चालिया हुता सो कितरा हेक दिना मैं नळवरगढ जाय पहुता । —ढो मा

उ०—३ केतलं एक कालं प्रदेश मे भरतार काल कीधो । सुगनै घरम मे न समझै तै तो रोवै विलापात करै । समझै तै रोवै नहीं समता धारनै बैठी । —भि द्र

विलापातो—देखो 'विलाप' (ग्रल्पा., रू भे)

उ०—कुण वीरो कुण बहनडी रे, जोयजो मोहरी बात । इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै विलापातो रे । —जयवाणी

विलापियोडो-भू का कृ.—१ उदास हुवा हुग्रा बेचैन हुवा हुग्रा, खिन्नचित हुवा हुग्रा २ व्याकुल हुवा हुग्रा, व्यथित हुवा हुग्रा, दुःखी हुवा हुग्रा. ३ रुदन किया हुग्रा, रोया हुग्रा ।
(स्त्री. विलापियोडी)

विलायत-स पु [ग्र.] १ दूसरा या पराया देश, विदेश ।

उ०—हू किसी विलायत वसै हो ? जको थै ग्रोजू ताई ठा ही नही करघो । हू किसा हाथी-घोडा थोडा ही मागै हो ? ग्रर जै मागू तो ही किसो बदै सू ग्राछो हुवै । —दसदोख

२ इग्लैण्ड ।

उ०—१ नाव किसनजी, कोटै धणी रे ग्रागै रैवै । एडीकप ग्रर पराईवेट वाजे । देस रा दौरा पूरा करावै, ग्रावू ग्रर विलायत सागै जावै । हरखा-कोडा हुसै-कढै, गाळघा खा-खा ऊचा चढै ।
—दसदोख

उ०—२ ग्रज दुरग खिसारा तवळ सारा गोरा बजै, दहल पुड रसा रा हल हमल दुद । लक दिस प्रभजण सारा वेग लागा, विलायत दिसा रा उडै घणा व्रद । —चैनकरण सांदू

उ०—३ उतन विलायत किलकता कानपुर ग्राविया, ममोई लक मदरास मेळा । यलम घुर वहण ग्रगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा । —कविराजा बाकीदास

उ०—४ सज दूजा 'अभमाह', महि रज मडळ माचता। रूडा लीधा राह, विकटा दूर विलायतां। —पावूदान आसियौ

३ दूरस्त यूरोपीय देश।

४ ईरान, तुर्किस्तान।

रू भे —वलायत, विलायत, विल्लायत, वलायत, विलाइत, विलात, विल्यायत, विल्लायत।

विलायति, विलायती–वि —दूसरे देश का, विदेशी।

२ इगलैण्ड का।

३ यूरोप का, यूरोपीय।

उ०—१ सू छुरी किण भात री छै ? पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्याना माहा काढजै छै। —रा सा स

उ०—२ सू तरवारघा किण भात री छै ? सीरोही री नीपनी, वै आगळ बाढ भेरिया थका जनैव मगरेव पुडनकाळ नेफ विलायती भुजरी विराणपुरी हवसानी फिरगी। —रा सा स

४ ईरान का, तुर्किस्तान का।

उ०—अटक पार मो अगै, इळा नहि नर्मं विलायति। जवन वसै जिण माहि, आठ मगरूरा असपति। —सू प्र

रू भे —विलातिय, विलायती, विलाइति, विलाइती, विलाति, विलाती।

विलायतीकद्दू–स. पु —तरकारी के काम आने वाला एक विशेष प्रकार का कद्दू।

विलायतीकासनी–स स्त्री —एक प्रकार की कासनी, जिसकी पत्तिया दवा के काम आती है।

विलायतीकीकर–स पु —हिमालय मे पाच हजार फुट की ऊचाई तक पाया जाने वाला पहाडी कीकर।

विलायतीछछूदर–स पु —इग्लैण्ड के पश्चिमी प्रदेशो मे बहुतायत से पाया जाने वाला एक प्रकार का छछूदर।

विलायतीनील–स पु —चीन से आने वाला एक विशेष प्रकार का नीला रग।

विलायतीप्याज–स पु —बिना गाठ का एक प्रकार का प्याज जिसमे केवल गूदेदार जड होती है।

विलायतीबैंगन–स पु —१ एक प्रकार का बेंगन विशेष जिसका पौधा यूरोप से आया हुआ कहा जाता है।

२ टमाटर।

विलायतीमेहदी–स. स्त्री —मेहदी की जाति का एक प्रकार का पौधा विशेष।

विलायतीलसन, विलायतीलसुन, विलायतीलहसन, विलायतीलहसुन–स पु —मसाले के काम आने वाला एक प्रकार का लहसुन।

विलायतीसिरिस–स. पु —विदेश मे आया हुआ एक प्रकार का सिरिस आजकल यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है।

विलायतीसेम–स स्त्री.—एक प्रकार की सेम जिसकी फलिया साधारण सेम से कुछ बडी होती है।

विलायन–स पु [स] प्राचीन भारत मे पाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

वि वि.—उक्त अस्त्र के प्रयोग से शत्रु सेना को विश्राम करने हेतु प्रवृत्त किया जाता था।

विलायोडो–भू का. कृ —१ विलीन हुवा हुआ, विलय हुवा हुआ २ लोप हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ ३ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ४ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ।
(स्त्री विलायोडी)

विलालौ–वि [स्त्री विलाली] १ रसिक, रसिया।

उ०—१ पदमण बोली पीवता, विरथा कीदौ वाद। छकिया मद री छाक रो समझी नही सवाद। हरख जलालो चित हुवै, पीदा प्यालौ नेम। पीव विलालौ पिलग परि, वालौ लागै वेस। —पना

उ०—२ दारू री प्यालो भलो दुपट्टै री झालो। मारवण तो पतळी भली, मारू बडो विलालो। पीग्रोनी दारुडी। —लो गी

२ उदार, दातार, दानशील।

उ०—१ ताकवा निसाला खुलै भेटिया विलद ताळा, विलाला नरिंद इद सा रूप वाखाण। पाणा थारा 'अमरेस' नचीतो चीतोड-पती, खाडे थारै दुचीतो छ खडी खुरसाण। —अमरसिंघ सिसोदिया री गीत

उ०—२ प्रगट धूपटे दरब अठ पहर अणपार रे, वडम कुळ भार रे भुजा लीधा। विलाला खडै नित तुरग इण वार रे, माग आचार हुवा 'माधा'। —मेघजी महडू

३ अद्भुत, विचित्र, विलक्षण।

उ०—करु वखाण धणा हू कासूं, जीव कियौ सपतास जिसौ। लाखवरीस विलालो लाखो. आयस कीधो रीझ इसौ। —नवलजी लाळस

४ छैल-छबीला।

उ०—खेलण दो गणगोर भवर म्हानै पूजण दो गणगोर। हो म्हारी सइया जोवै वाट, विलाला म्हानै खेलण दो गणगोर। —लो. गी.

५ युद्धोन्मत्त, मस्त।

उ०—१ कमरा कस आयो रण काळी, वाघण माथै मोड

विलालो। भुजडड पकड ऊठियो भालो, लेबा भचक रुठियो लालो। —बरजूबाई

उ०—२ भाला हुया जोध भीमाणी, वाल्हा सुरपुरवासी। पात विराज विलाला पाता, प्याला मद कुण पासी।
—महाराणा जवानसिंहजी री गीत

रू. भे —विलालो, वलालो।

विलाव—देखो 'बिडाळ' (रू भे)

उ०—तिको तळाव किण भातरो छै। राती बरडी री। पाडरो नीर। पवन री मारियो फीण आछटतो थको झोला खाय रह्यो छै। लहरा लियै छै। अथग डोव छै। कहिया सुंवै पाणी मे पंठा पगारा नख झागै छै। दूध रै भोळावै विलाव वासीजै छै।
—रा सा स

विलावणो, विलायवो—देखो 'विलाणो, विलावो' (रू भे)

उ०—१ वनवासी चवदै वरसा रो, वामा मग विलावै। रीतै पलही कलप बराबर जिकै दिवस किमि जावै। रे सुध आवै, रे सुध आवै, किण विध कीजिये। —र रू.

उ०—२ दिया 'सूजा' तणै पैड तोपा विसा, सफीला तणा नह लिया सरणा। बीजला रीठ पावै सफा विलावै, विजा फरपुर करपूर वरणा। —कविराजा बांकीदास

विलावणहार, हारो (हारी), विलावणियो—वि०।

विलाविओडो, विलावियोडो, विलाव्योडो—भू० का० कृ०।

विलावीजणो, विलावीजवो—भाव वा०।

विलावळ, विलावळि, विलावळी—स पु —१ एक राग विशेष जो केदार और कल्याण के योग से बनता है यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है। यह सवेरे के समय गाया जाता है [सगीत]

उ०—१ नचत केक रत राग, विम्मळ विलावळ। करत गोख जोग केक, हेम मैं झळाहळ। —सू प्र

उ०—२ रात तो इण रग मे विदित्त हुई। इतरै परभात हुवो। भैरु विभास। विलावळि को वखत आयो। गुणी जना राग भिलायो। —पना

२ हिंडोल राग की स्त्री एक रागिनी। (सगीत)

रू भे —विलावळ, वेळावळ वेळावळ।

विलाविआ, विलाविया—स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—पाटवर नीलबर जरकसी रा वणाव कीजै छै। आडिआ फणिआ मुखमली खासा विलाविआ थका जालोरी साठै, खुरासाणी भळकै सातिअै ऊठ सौदागर रै घोडै चालविअै पठाण अरडै आयै चीचडिअै रुठै, गाम घणी सा लोचना किआ, वाळि वाळि मोतिआ ठविआ थका,"। —रा. सा. स.

विलावियोडो—देखो 'विलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलावियोडी)

विलास—स पु. [स. विलास] १ क्रीडा, खेल।

उ०—१ नृप सुख ग्रीखम निरमला, वधि वरसात विलास। माती कादव मेदनी, आयो भाद्रव मास। —रा रू

उ०—२ मवळा मळ सूं माधिया, निवळ जाय मळ नास। मूंगी मेळ मजार मर, वचियो विपत विलास —वा दा

२ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा, आमोद-प्रमोद।

उ०—१ यों नरपति पुर आपरै, निज प्रति महल निवास। सुख अनुराग छ राग सुख, बाग तडाग विलास। —रा, रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजान सिलामति रितिराज वसत चैमास भाग रा भगळाचार विमाह रा सुख विलास करता मन्दरिन आई छै। आसोज मास आउ सम्प्राप्ती हुयै छै। —रा सा स

उ०—३ इण भात सुख-सेजै पोढिया। राति विहाणी। प्रभात हुवो छै। राती का काम उजागर नैण घुळि नै रहिया छै। कपोळै काम सुहाग री छाप लागी छै। घुळि नै रही छै। इण भात सुख विलास करता छै रिति वारै मास माणीजै छै।
—रा. सा स.

३ शोभा, सुन्दरता, मनोहरता।

उ०—वळवळ कठ विलास, हार भुजग गग सिर खळहळ।
—र ज. प्र

४ स्त्रियोचित हाव-भाव नाज-नखरा आदि जो काम-वासना को उत्तेजित करने वाली होती है।

उ०—वर नारि नेत्र निज वदन विलासा, जाणियो अतहकरण जई। हसि हसि भ्रूहे हेक हेक हुइ, ग्रह बाहरि सहचरी गई।
—वेलि

५ आनन्द प्रसन्नता, हर्ष।

६ कौंध, चमक।

७ मनोरजन, मनोविनोद।

उ०—१ सु आगलो सखिआ नू जावती लखै नही छै। लखाव नही पडतो छै। तिणि सौंधैरे डोरै लगी जाए छै। ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतम सु जाइ जाइ मिळै छै। इण भाति सरद चादणी रग विलास माणीजै छै। —रा सा स

८ सयोग शृ गार का एक भाव विशेष, जिसमे नायक के सामने नायिका उसके मन मे अपने प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न करने की क्रियाए या चेस्टाए करती है। (साहित्य)

९ भोग विलास, विषय भोग, मैथुन।

उ०—१ बोलै बधव रूपसी, बोलै मोकमदास । तज ग्रवसाण विलास पद को मानै भ्रम जास । —रा रू

उ०—२ निस वसियो सुख ग्रेह निज, ग्राघै रमणि विलास । ग्ररज करै मुख ग्रोग्ता, हित रिति गरम हुलास । —रा रू

उ०—३ कुसमित कहता फूली । कुसमायुध कहता काम देवतै कै उदै करि केलि विलास खेल तै कै ग्ररथि जाहका भरतार घरै छै । सु तौ वसत विखै फूली छै । —वेलि टी

१० सुख भोग, ग्रानन्द भोग ।

उ०–१ स्रीनरनाथ विलास सू पूरण कियो वसत । देखेवा दिल्ली नयर, ग्रायौ कूच निभ्र त । —रा रू

उ०—२ ध्ररम वभ लघु भ्रात हेत धरि कासीराज तेणि दीधौ करि । हित देखै नृप राग हुलासी, करै विलास इद्र जिम कासी । —सू प्र.

उ०—३ सोरभा सोघा सरस, राग रग ग्रति हास । ब्रह्मा ब्रह्माणी महत, निज पुर करत विलास । —गज-उद्वार

उ०—४ राजपाट सुत वित सबै, सूंदरि महल विलास । हरिया हरि सुख वाहिरो, ज्यू जंगळ का घास । —ग्रनुभववाणी

११ महक, सुगध ।

१२ एक तपस्वी जिसकी मुक्ति'विमल ज्ञान' की प्राप्ति से हुई थी ।

१३ प्रिय वस्तु के दर्शनादि से गति, स्थिति ग्रासन ग्रादि की तथा मुख, नेत्रग्रादि के व्यापारों की विशेपता या विलक्षणता ।

१४ शिल्प के सत्ताईस ग्रगो मे से एक ।

रू. भे —विलास, वेलस, वेळास, विलासा ।

ग्रल्पा,—विलासो, विलासु ।

विलासक–वि —१ इघर उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विपय भोग करने वाला, मैथुन करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, ग्रानन्द भोग लूटने वाला ।

५ क्रीडा-खेल करने वाला ।

६ ग्रनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा करन वाला, ग्रामोद प्रमोद करने वाला ।

७ मनोरजन करने वाला, मनोविनोद करने वाला ।

क्रि वि. [ग्र बिला+शक] विना शंक, वेशक, निस्सदेह ।

उ०-जै तूं ग्ररब जा हर भात कर हातिम नू मारचावैतो तोनूं मौटो करूं इण पापी कही बिलासक मार ग्रास्यू । —नी प्र

विलासण–वि —१ इधर-उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विपय भोग करने वाला, भोग विलास करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, ग्रानन्द भोग करने वाला, उपभोग करने वाला ।

उ०—रूप भूप रतिराज, प्राण ग्रगराज प्रकासण । कौरवराज घन करण, विमळ सुरराज विलासण । —सू प्र

५ क्रीडा-खेल करने वाला ।

६ ग्रनुराग या प्रेमपूर्ण क्रीडा करने वाला ।

७ मनोरजन या मनोविनोद करने वाला ।

८ देखो 'विलासी' (रू भे.)

विलासणो, विलासवो–क्रि स [विलासनम्] १ क्रीडा करना, खेल करना ।

२ ग्रनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा करना, ग्रामोद-प्रमोद करना ।

३ काम वासना को उत्तेजित करने हेतु स्त्रियोचित हाव-भाव, नाज-नखरे करना ।

४ मनोरजन करना, मनोविनोद करना ।

५ भोग-विलास करना, विपय भोग करना, मैथुन करना ।

उ०—तिलोतमा मेणका सची उरवसी सरोतरि, सुरपत्ती सेवता ईढ न वरै तिण ग्रोरारि । कता सहित कुवेर वरण निज तरणि विलासत, सरस लेख 'ग्रमसाह' पेखि साराह प्रकासत । —रा रू

६ सुख भोग करना, ग्रानन्द भोग करना ।

क्रि ग्र —७ ग्रनुरक्त होना, लीन होना ।

उ०—पाठ प्रवध किताक प्रकासत, वेद पुराण विचार विलासत । पडत द्वीत ग्रद्वीत प्रकासत, भासत देव जिसा दुज भासत । —जैपुर नगर री तारीफ री गीत

८ शोभित होना, सुन्दर लगना ।

९ ग्रानन्दित होना, हर्पित होना ।

विलासणहार, हारौ (हारी), विलासणियौ—वि० ।

विलासिग्रोडो, विलासियोडो, विलास्योडो —भू० का० कृ० ।

विलासीजणो, विलासीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलासणो, विलासबो —रू० भे० ।

विलासनी—देखो 'विलासिणी' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति ग्रतेउरी ग्रागै चार वडारणा सहेलिग्रा रहै छै । ग्रनगमजरी, मदनमजरी, रतनमजरी, पदुमजरी । ताह वडारणा सहेलिग्रा ग्रागै चार पात्रा सिगारणी खवास्या रहै । गुणमाळा, फूलमाळा, विजैमाळा,दीपमाळा । तिका सिगारणी खवास्या ग्रागै चार विलासनी दासी रहै छै । —रा. सा सं.

विलासा–स स्त्री —१ ग्रभिलापा, इच्छा ।

उ०—पेम पियाला पीजियै, मावा करि भरिपूर । जनहरिया पीया पछै, विखै विलासा दूर । —ग्रनुभववाणी

२ देखो 'विलास' (रू. भे.)

उ०—१ सखी री मन धारै बारै मासा, श्रांणो वैराग उलासा। गुरु विजयहरख जस वासा, धर्वं घरमनील विलासा हो लाल।
—घ व ग्र

उ०—२ माया भई विडाणिया, भए विडांणा लोग। जन हरीया नही श्रापना, विरं विलासा भोग। —श्रनुभववाणी

उ०—३ विलग पथरणा पोढणां, सदा महेली संग। हरीया होसी भगति विन, विरं विलासा भग। —श्रनुभववाणी

उ०—४ वर नारि नेत्र निज वदन विलासा, जाणिथी श्रतहकरण जई। हसि हसि भ्रू हेक हेक हुई, सहू बाहरि सहचरी गई।
—वेलि

विलासि—देखो 'विलासी' (रू भे.)

उ०—वैकठ विलासि श्रपुन्य प्रकासि श्रपार श्रपार श्रप्रम पर, निरकार नर मधुकटक मारण विधन विडारण केवल रूप वराह कर। घर दाठ घर करि दैत वरण कण रे पण रामण लक लई दधि लोप लज, श्रविगति श्रज हमीर गमरि हरत्ता सि निरतर, ग्राह वेठ ऊग्राहि गजघज पत्र धज। —पि प्र

विलासिणी, विलासिनी—स स्त्री. [स विलासिनी] १ विलास करने वाली, कामुक, भोग विलास मे श्रनुरक्त या लीन स्त्री।

२ देवी का विशेषण।

३ वेश्या, गनिका।

४ विशेष शक्ति से युक्त।

५ सुदरी, युवा स्त्री।

६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ज, र, ज, ग, ग होता है।

रू भे.—विलासनी।

विलासी—वि [स. विलासिन्] (स्त्री विलासण) १ दानी, दातार।

२ सुखभोग या श्रानन्द भोग करने वाला।

३ क्रीडा-खेल करने वाला।

४ प्रेमपूर्ण क्रीडा करने वाला, श्रामोद-प्रमोद करने वाला।

५ मनोरजन या मनोविनोद करने वाला।

उ०—सोभत (न) जोग मिले सुखकारी नरपति तिकण प्रसोभा न्यारी। रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणो विलासी। —रा. रू

६ विषय भोग, भोग विलास या मैथुन करने वाला।

७ कामी, रसिक।

रू भे—विलासण, विलासि।

स पु—१ श्राग, श्रग्नि।

२ श्री कृष्ण का नामान्तर।

३ भगवान श्रीविष्णु।

४ चान्द, चन्द्रमा।

५ साप, सर्प।

६ शिव शकर, महादेव।

७ कामदेव।

८ वरुण वृक्ष।

९ एक प्रकार का वर्णिक छद विशेष जिसमे सगण तगण फिर दो मगण और अन्त मे गुरु होता है तथा पाच, तीन व पाच पर यति होती है।

विलासु—देखो 'विलास' (श्रल्पा., रू भे)

उ०—समुद्रविजय सिवानदन मदन मथन विलासु नेमि जिणेसर जितु जिणु उपत महिम निवासु। —जयसेखर सूरि

विलासो—देखो 'विलास' (रू. भे)

उ०—१ जांणे तैं चोसठि कला, निरमल वचन विलासो रे। चद्रवदन सगलोयणी, गय गजराज वल्हासो रे। —जि सु

उ०—२ चाकर चोकीदार ज्युं, बहुला रांगे पासो रे। काम करावै नै वल्हा, विलसे श्राप विलासो रे। —घ व. ग्र

विलास्य—स पु—तार लगा हुश्रा प्राचीन काल का एक बाजा।

विलि—देखो 'वळी' (रू. भे)

उ०—हिवइ वडा श्रावइ तै कहया ! विलि मरिचना वडा, माजी ना वडा, घोल वडा, उडदनी दालि ना वडा मुगनी दालिना वडा फुलधीनी दालिना वडा. घणां पोलणां भीनां, पणि तेलै मीना चमत्कारिया श्रत्यत, मुहडि घाल्या तुरत गलइ, घणू स्युं कहीइ स्वरग ना देव देवता पणि खावा नइ टलवलि। —व. स

विलिखित—वि. [स.] १ लिखा हुश्रा।

२ खोदकर श्रकित किया हुश्रा।

विलिप्त—वि —पुता हुश्रा, लिपा हुश्रा।

विलिया—देखो 'वेळा' (रू भे.)

उ०—देखण लागो यक्ष श्राउठी श्रासूं भरिया, चीतै मन कुम्हलाय श्राज श्रा किसडी विळियां। निरख्यां श्रेहा मेघ सजोगी चचळ होवै, वारा काई हवाल, कामणी कठ न होवै? —मेघ

विलियोडो—भू का कृ—श्रावेष्टित किया हुश्रा, घेरा हुश्रा।

(स्त्री विलियोडी)

विलिविलियो—स पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—श्रथ वस्त्र, देवदूष्य चीनमुक गोजी चउडसी नीलनेत्र सचोपा पाटणिया हीरपट्ट साउला विलिविलिया नरम्म रमी उभयखरम्म वामखरम्म वागसऊश्रा मुगवना मांगलिश्रा वयराग

रा हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट घोतपट्ट ।
—व. स.

बिलीजणो, विलीजवो–क्रि अ.—खुर वाले पशुओ का 'मुहाडा' रोग ग्रस्त होना।

विलीजियोड़ो–भू का कृ—खुर वाले पशुओं का 'मुहाडा' रोग ग्रस्त हुवा हुआ।
(स्त्री विलीजियोडी)

विली—देखो 'वळं' (रू. भे)

उ०—अथ प्रव [ह] ठाभगावसर जलकल्लोल गगनमडल व्यापिवा लागा अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रस्य थई, विली वाउ वाइवा लागा, तलानी माटी ऊपरि आणइ, दुर्गंध ऊछलिउ क्षार जलनउ छूड द्रु न लागइ, जलचर जीव आवी प्रवहणि वाजइ ।
—व. स

विलीन–वि [स.] १ आपस में घुले-मिले हुए, जो वापस अलग २ नही किये जा सकें ।

२ जो गायब लुप्त, अदृष्य या ओझल हो गया हो

३ नष्ट हुवा हुआ, नष्ट ।

४ मरा हुआ, मृत ।

विलुद्ध–वि [स. वि.+लुब्ध] १ मोहित, आकर्पित ।

२ लालायित ।

३ उलझा हुआ, फसा हुआ ।

वलुद्धणो, विलुद्धवो—देखो 'विलूंधणी, विलूधवौ' (रू. भे)

उ०—सुंदर मदिर मालिया, मुलकती नेह विलुद्ध । पूरै हाथै पूजियो, परमेस्वर मन-सुद्ध । —जयवाणी

विलुद्धणहार, हारो (हारी), विलुद्धणियो—वि० ।

विलुद्धिओडो, विलुद्धियोडो, विलुद्धयोडो—भू० का० कृ० ।

विलुद्धीजणो, विलुद्धीजवो—भाव वा० ।

विलुद्धियोडो—देखो' विलूधियोडो' (रू भे.)
(स्त्री विलुद्धियोडी)

विलुप्त–वि [स] १ जिसका नाश हो गया हो, नष्ट ।

२ जो लोप या अदृश्य हो गया हो

३ जो टूट फूट गया हो, नष्ट, बरबाद ।

विलुप्तायोनि–स पु [स] स्त्रियो का एक प्रकार का रोग विशेष जो कि वायुदोप के कारण होता है ।

वलूधणो, विलूधवौ–क्रि अ —१ झझटों में उलझना, फसना ।

उ०—वडो दुगमी देस जोवै विलूंधो, सुवै अंगदं अतरानेर सूधो । तरै खेद होता अवा देह ताणी, प्रळ वेस लाधी नही पाख पाणी ।
—सू प्र.

२ मोह मे फसना, मोहित होना, आकर्पित होना ।

उ०—१ सुरा सोरै झकोळियै, भवर न जागै काय । प्रेम विलूंधो भवरो, सखि मरती जाय । —अग्यात

उ०—२ विखियारस विखलेर विलूंधी, सेवै फ़पण धेनुगत सूंधी ।
—अग्यात

३ लालायित होना, लालच में फसना ।

विलूंधणहार, हारो (हारी), विलूंधणियो—वि० ।

विलूधिओडो, विलूधियोडो, विलूंध्योडो—भू० का० कृ० ।

विलूधीजणो, विलूधीजवो—भाव वा० ।

विलूघणो, विलूघवौ, विलुद्धणो, विलुद्धवो, विलूघणो, विलूधवो
—रू० भे० ।

विलूधियोडो–भू का. कृ.—१ झझटो व तकलीफो मे उलझा हुआ, फसा हुआ २ मोह मे फसा हुवा, मोहित हुवा हुआ, आकर्पित हुवा हुआ ३ लालच में फसा हुआ, लालायित हुवा हुआ ।
(स्त्री. विलूधियोडी)

विलूधौ–वि.—१ झझटो व तकलीफो मे फसा हुआ ।

२ मोह में फसा हुआ, मोहित ।

३ लालच में फसा हुआ, लालायित ।

विलूबणो, विलूबवो–क्रि अ —१ लटकना ।

उ०—१ खीवा थू खुरसाण, धरण तेगी तरवार री । मुखमल हदै म्यान, खंवै विलूबूं खीवजी । —खीवजी री वात

उ०—२ करहो काचौं ना चरै, पाकी दिसा न जाय । अघर विलूबी वेलडी, तिण नै घणी झुराय । —अग्यात

२ मेघ या घनघटा आदि मडराना, छाना, झुकना ।

उ०—कुण थानै चाळा चाळिया, हो पनामारू जी हो, किण थानै दीवी, रे ढोला, सीख । सीख, हो पिया प्यारो रा ढोलाजी हो, हा रे, सांवणियो विलूब्यो रै वीकानेर । —लो गी

३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित होना ।

४ छूना, स्पर्श होना ।

५ लिपटना, चिपकना ।

६ लत्थोवत्थ होना ।

क्रि. स.—७ आलिंग करना, गले लगना या लगाना ।

उ०—यू करता हलरा मे तो हुइ फजर । कूकडा वोलिया । वाजी गजर । तद कवर वाग नू सीख कीवी । तो पिण रतना आखिया भरी चाळा लूंवी, गळै विलूंबी । वोलणी न आयी, गळो गहरायो । —र हमीर

८ रोकना, अवरुद्ध करना ।

९ देखो 'विलवणो, विलबवो' (रू भे)

विलूंबणहार, हारो (हारी), विलूंबणियो—वि० ।

विलूंबिग्रोडो, विलूंबियोड़ो विलूंब्योडो—भू० का० कृ० ।

विलूंबीजणो, विलूंबीजवो—कर्म वा० भाव वा० ।

वलूंबणो, वलूंबबो, बिनूंबणो, विलुंबवो, विलूंबणो, विलूंबवो, विलूमणो विलूमवो, विलमणो, विलमवो, विलूमणो, विलूंववो —रू० भे० ।

विलूंबियोडो–भू का कृ —१ लटका हुआ. २ मेघ या घनघटा आदि मडराया हुआ, छाया हुआ, झुका हुआ ३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित हुवा हुआ ४ छूआ हुआ, स्पर्श हुआ हुआ. ५ लिपटा हुआ, चिपका हुआ, ६ लतोवत्‌ हुवा हुआ ७ आलिंगन किया हुआ, गले लगा या लगाया हुआ ८ रोका हुआ, अवरुद्ध किया हुआ ।

९ देखो 'वलबियोडो' (रू भे) (स्त्री विलबियोडी)

विलूमणो, विलूंमवो—देखो 'विलूंबणो, विलूंबवो' (रू भे)

उ०—विरछां विलूंमी पिया वेलडी, नरां विलूंबी विलूंबी नार, होजी ढोला नार, अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ।

—लो गी

विलूमणहार, हारो (हारी) विलूंमणियो—वि० ।

विलू मिम्रोडो, विलू मियोडो, विलू म्योडो—भू० का० कृ० ।

विलू मीजणो, विलू मीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलू मियोडो—देखो 'विलू बियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलू मियोडी)

विळू—देखो 'वळू' (रू. भे.)

उ०—१ ढालू बाळा धणी रै पछै नी बर्ष तो वास रै है जठै ई भूंचो लाग जावै । सगळा आणंद रो मठ मर जावै । इण आणंद री साव लेवण सारू मतै ई जणो जणो ढालू बाळा मोत्यार रै विळू वधग्यो । —फुलवाडी

उ०—२ बस्ती रा सगळा मिनख वळिया रै बिळू रह्या । घर वो हाकांधाका गर्यु घर खाखला री आधी पाती पटकायली ।

—फुलवाडी

उ०—३ ओ तो साचाणी दूध ई निकळियो । जे कोई लफगो व्हैतो तो केडोक माहेरो सजतो ! आज तो भगवान नांमो बिळू रह्यो । दोयती रा भाग है । —फुलवाडी

उ०—४ उतरतां ई पैसा तो बेटी सूं खम्माधणी करी । पछै मोहरी भाल वागोळता ऊंट री गळाई बगळ बगळ फंवण लागा-भाग बिळू व्है जद यूं व्हिया करै । —फुलवाडी

विलूधणो, विलूधवो—देखो 'विलूंधणो, विलूंधवो' (रू. भे.)

उ०—१ सांमाधरम विग्रादवाद, विपरीत विलूधा ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप । मनडो विलूधो रे ताहरै रूप, जेम विलूधो रे कमल मधूप ।

—वि. कु.

उ०—३ सेठ तणं मन मांहि उदधि मां कुमरी वस निसदीस, विरह विलूधो रे विसवावीस । नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस । —वि. कु.

उ०—४ तीणा नोयण, कटि करळ, उर उतंग अिबीह । ढोला, थाकी मारुई, जांणि विलूधउ मीह । —ढो मा

विलूधणहार, हारो (हारी), विलूधणियो—वि० ।

विलूधिम्रोडो, विलूधियोड़ो, विलूध्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विलूधीजणो, विलूधीजवो—भाव वा० ।

विलूधियोडो—देखो 'विलूंधियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विलूधियोडी)

विलूरणो, विलूरवो–क्रि. स —१ नोचना ।

उ०—गुरु पूछी रे मन मांहि गयउ, काउसग्ग रहउ ममसानो रे जी । स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही ग्रसमांनो जी ।

—स. कु.

२ छीनना, झपटना ।

विलूरणहार हारो (हारी), विलूरणियो—वि० ।

विलूरिम्रोडो, विलूरियोडो, विलूरयोडो—भू० का० कृ० ।

विलूरीजणो, विलूरीजवो—कर्म वा० ।

विलूरियोडो–भू का. कृ —१ नोचा हुआ. २ छीना हुआ, झपटा हुआ ।

(स्त्री विलूरियोडी)

विलेच्छ, विलेच्छु—देखो 'म्लेच्छ'

उ०—वीर कोडि चिहु पाडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भोमि विडारी । तु विराटनप भीमि ऊदालिउ, दाउ देविगु विलेच्छु सु वालिउ । —सालिसूरि

विळै—देखो वळै' (रू भे)

उ०—१ अला बुध अवतार तू बाप बाबा, निमो धरम ना कीध निरवळ नियाबा । जुध धिणी जगत केणि भांति जीतो, विळै खाफर जिसो दइत वीतो । —पी. प्र

उ०—२ सीत परणियो सांम, गरब दुजराम गमायो । हुम्रो अयोध्या हरख, विळै कोसल्या वधायो । —पी प्र

उ०—३ अक्रूर घरै आया अनत, विळै मात पिति विळकुळै। कूवडी हुति कीधी क्रिपा, माहव भगता सा मिळै। —पी ग्रं

विलेप, विलेपरण, विलेपन—स. पु [स. विलेप, विलेपन] १ लेप आदि करने की क्रिया।

उ०—१ कचरण ककरण केउर नेउर पइ भुयदडि, चदनि देह विलेपनु लेप न लागइ पिंडि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ वेरणी पवित्र करिस लिखमीवर, मसतग चाढै तुलसी-मजरं। तुच इम पवित्र करिस दसरथ-तरण, चरच विलेप करै हर चदरण। —ह र

२ शरीर आदि पर चुपडने या लगाने की वस्तु चन्दन, केसर या अन्य सुगन्धी द्रव्य आदि।

विलेपनग्रह—स पु [स. विलेपन+गृह] वह स्थान जहा चन्दन आदि का लेपन किया जाता है।

उ०—मज्जनग्रह विलेपनग्रह प्रसाधनग्रह अलकारग्रह आदरसग्रह अत पुरग्रह क्रीडाग्रह रसवतीग्रह भोजनग्रह आस्थानग्रह कोसचैत्य प्राय मदिरपरिकरित विसाली प्रणाली चित्रसाली। —व. स.

विलेसय—देखो 'विलेसय' (रू भे) (ह. ना मा)

उ०—अर अणिहल पुर ववी मैं पाघरो हो जाय पैठण री सकल्प घरतो नहीं परतु इसडा राग रा रिझवार अलगरद विलेसय तो कठै न जाणिया। —व भा.

विळै, विलै—१ देखो 'वळै' (रू भे)

उ०—१ विमळ करेसर विलै, साधु सुखदेव सरीखा। वालमीक जैदेव, नाम नरहर कवि नीका। —पी ग्र.

उ०—२ विहो केम घरणनाम, हेक हैग्रीव विलै हस। सेत वाराह, आप विणि रूप तरणी अम। —पी ग्र

२ देखो 'विलय' (रू भे)

उ०—१ फेर रावजी सूं कही कुवर घरणा कही विलै लगावो। भाई परण विलै लगावो। —नापे साखले री वारता

उ०—२ केसव गुण गावण करू स्री गुरुदेव सहाय। ऊजेळ घट बुघ ऊपजै, विघन विलै हुय जाय। —भगतमाळ

उ०—३ दादू देखि देखि सुमिरण करै, देखि देखि लै लीन। देखि देखि तन मन विलै, देखि देखि चित दीन। —दादूवाणी

उ०—४ तन मन विलै यों कीजियै, ज्यों पाणी मे लौण। जीव ब्रह्म एकै भया, तव दूजा कहियै कौण। —दादूवाणी

उ०—५ नदी पार सपजै, पोत द्रढ खेवट पायो। विपति विलै हुय जाय, जेम घर सपत आया। —रा रू

विलोक—वि [वि=रहित+लोक] १ जन रहित, निर्जन, शून्य।

२ दृष्टि, नजर।

विलोकरण—स स्त्री [स विलोकन] १ देखने की क्रिया, या भाव।

२ जाचने की क्रिया, परीक्षण।

३ तलाश करने की क्रिया, तलाशी।

रू भे—विलोकन।

विलोकरिण—स. स्त्री.—दृष्टि, नजर।

उ०—सत कै सोनागिर वांचा हरिचद, साच कै अजातसत्र गात रति विंद। क्रपा की द्रस्टि अम्रित कै भाय, कोप की विलोकरिण काळ तें सवाय। —रा रू.

विलोकणौ, विलोकवौ—१ अवलोकन करना, देखना।

उ०—१ नरा अही अमरा उछडै थडै थाळ नीर, मही रसा तळा घोर थडै आसमाण। महावीर देवासाल विलोकै रोस मे मडै, पुळै कपी भाळ छडै पछाडी पीठाण। —र रू.

उ०—२ रवि रथ थाभि विलोकै राजा री आपरा जोध सिर-ताजा। दै दै पाव गजा दांतूसळ, वाघा जेम चढा वीजूजळ।

—सू प्र.

उ०—३ जिण विलोकि कहियौ जगजामी, सिव छै सुखी सिवा तो स्वामी। कहि इम प्रभु आतिथ-अम कीधो, दखि प्रमाण आसण अरण दीधो। —सू प्र.

२ निरीक्षण या परीक्षण करना, जाचना।

३ ढूंढना, तलाश करना।

४ विचार करना, विचारना।

विलोकणहार, हारो, (हारी), विलोकणियो—वि०।

विलोकिग्रोडो, विलोकियोडो, विलोक्योडो—भू० का० कृ०।

विलोकीजणो, विलोकीजवो—कर्म वा०।

विलोकणो, विलोकवो, विलोकवणो, विलोकववो—रू० भे०।

विलोकन—देखो 'विलोकरण' (रू भे)

विलोकवणो, विलोकववो—देखो 'विलोकणो, विलोकवो' (रू. भे)

उ०—सव तमस मिटयो प्रगटयो सराह, वरत्यो सुभ ग्यान प्रकास वाह। चित कोक विलोकवै करत चाह, सव सुर नर जिनकी करत सराह। —घ व ग्र.

विलोकवणहार, हारो (हारी), विलोकवणियो—वि०।

विलोकविग्रोडो, विलोकवियोडो, विलकव्योडो—भू० का० कृ०।

विलोकवीजणो, विलोकवीजवो—कर्म वा०।

विलोकवियोडो—देखो 'विलोकियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विलोकवियोडी)

विलोकियोडो—भू का. कृ—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ।

२ निरीक्षण या परीक्षण किया हुआ; जाचा हुआ। ३ ढूढा

हुआ, तलाश किया हुआ ४ विचार किया हुआ, विचारा हुआ।
(स्त्री विलोकियोडी)

विलोडणी, विलोडवौ—देखो 'विलोडणी, विलोडवौ' (रू. भे.)

विलोडणहार, हारौ (हारी), विलोड़णियौ—वि०।
विलोडिओडौ, विलोडियोडौ, विलोडयोडौ—भू० का० कृ०।
विलोडीजणौ, विलोडीजवौ—कर्म वा०।

विलोडियोडौ—देखो 'विलोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री विलोडियोडी)

विलोचण, विलोचन—स पु. [स. विलोचन] १ आंख, नेत्र।
(अ मा, ह ना. मा)

२ एक नरक जहा जाने से प्राणी अन्धा हो जाता है।

वि—बिना आखो का, अन्धा।

विलोचनअबु—स पु. [स विलोचन+अम्बु] आखो का पानी, आसू।

विलोडणौ, विलोडवौ—क्रि स.—१ विलोडित करना, मथना।

उ०— 'वल्लिगहन ओडतउ, पाखाण रोडतउ सुडादडि आच्छोडतउ गिरिनदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ, साहास्सिक तणा मन खोहतउ, तुरगम आसवतउ, पवन जिम चालतउ।' —व. स.

२ हिलाना, डुलाना।
३ युद्ध आदि में शत्रु सैन्य को तितर-बितर करना।
४ उथल-पुथल करना।

विलोडणहार, हारौ (हारी), विलोडणियौ—वि०।
विलोडिओडौ, विलोडियोडौ, विलोडयोडौ—भू० का० कृ०।
विलोडीजणौ, विलोडीजवौ—कर्म वा०।

विलोडणौ, विलोडवौ, विलोडणौ, विलोडवौ, विलोणौ, विलोवौ विलोवणौ, विलोववौ, वीलोणौ, वीलोवौ विलोडणौ, विलोडवौ विलोणौ, विलोवौ, विलोवणौ, विलोववौ, वीलोणौ, वीलोवौ।
—रू भे.

विलोडियोडौ—भू. का कृ.—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ २ हिलाया-डुलाया हुआ ३ युद्ध आदि मे शत्रु सैन्य को तितर-बितर किया हुआ, हताश किया हुआ, ४ उथल-पुथल किया हुआ।
(स्त्री विलोडियोडी)

विलोणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे)

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका उपजइ, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणैं घरि वेद ध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा. सा. स.

विलोणौ, विलोवौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडवौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुओ हस रौ रूप ओ राम हुओ, वडौ कछ अवतार दरिया विलोओ। दिवैं दान रतना तणौ सरिसि देवा, जरू दुख दे दांणवा राह जेवा —पी. ग्र.

उ०—२ विलोआ वार वळिराव, वहि सुरा जैत सीता वरै। रुघनाथ तिकै दिन राह रौ, घडसा सिर अळगौ घरै।
—पी ग्र.

उ०—३ दूहिजै उद्यम दूध जतन करि दही जमावै। वलि परभात विलोइ, उदिम सेती घ्रत आवै —ध. व ग्र.

उ०—४ मिळ मथाण धाराळ तणैं मुह, जग्र कग्र सग्र होयै जणो जण। वार वार दध जेम विलोअै, ताईया दळ नगराज तण।
—दूदा नगराजोत रौ गीत

विलोणहार, हारौ (हारी), विलोणियौ—वि०।
विलोयोडौ—भू० का० कृ०।
विलोईजणौ, विलोईजवौ—कर्म वा०।

विलोप—स पु. [स.] १ बाधा, रोक, रुकावट।
२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागने की क्रिया।
३ हानि, नुकसान।
४ नाश, सहार।

उ०—आयौ सकोप दळ ऊपरा, प्रबळ तोप गोळै सु पर। कारण विलोप जग चौ करण, धायौ काळक कोप धर।
—रा रू.

५ उल्लघन करने की क्रिया।
६ अदृश्य या आखो से ओझल होने की क्रिया।

वि—गवाने वाला, खोने वाला।

उ०—औरग कोप विलोप भू, गिणैं अकब्बर साह। साम्हा चढिया वावसू, खडिया पिच्छम राह। —रा रू.

विलोपक—वि—१ बाधा डालने वाला, रुकावट डालने वाला।
२ चोरी से या बलात वस्तु लेकर भागने वाला।
३ हानि या नुकसान करने वाला।
४ नाश करने वाला।
५ अदृश्य या विलुप्त होने वाला।
६ गवाने वाला, खोने वाला।
७ उल्लघन करने वाला।

विलोपणौ, विलोपवौ—क्रि स.—१ बाधा डालना, रुकावट डालना।
२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागना।
३ हानि करना, नुकसान करना।
४ उल्लघन करना।
५ नाश करना, मिटाना।

६ नाश करना, सहार करना।

क्रि अ —७ नाश होना, मिटना।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुदर, अमळ अबर ओपय। किरि सुबुधि वधि सतसग कारण, लुबुध होत विलोपयं। —रा रू

८ सहार होना।

९ अदृश्य होना, विलुप्त होना।

१० गवाना, खोना।

११ विमुख होना, पलटना।

विलोपणहार, हारो (हारी), विलोपणियौ—वि०।

विलोपिग्रोडो, विलोपियोडो, विलोप्योडो—भू० का० कृ०।

विलोपीजणो, विलोपीजबो—कर्म वा, भाव वा०।

विलोपात—देखो 'विलाप' (रू भे)

उ०—ऊपरा साम्ही राति आई। ताहरा मन मैं विचार कियो, हु केथी जाऊं ? मैं आगै कदे सासरो आखे दीठो नही। हिवै म्हारी कौंण गति हुसी ? आ मन मैं विलोपात करणै लागी। —कावळी जोईयै नै तीडी खरळ री बात

विलोपियोडो-भू का कृ.—१ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ २ चोरी से या बलात् वस्तुऐं लेकर भागा हुआ ३ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ ४ उल्लघन किया हुआ ५ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ सहार किया हुआ. ७ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ८ सहार हुवा हुआ ९ अदृश्य हुवा हुआ, विलुप्त हुवा हुआ १० गवाया हुवा, खोया हुआ. ११ विमुख हुवा हुआ, पलटा हुआ।

विलोपी-वि —विलोप करने वाला।

विलोभ, विलोभन-वि. [स] १ जिसमें लोभ का अभाव हो, लोभ से रहित।

२ मोहित, आकर्पित, लालायित।

उ०—सिणगार गज असि सोभ, लखि हुवै इदर विलोभ। मिळ मत्रि सुभड समाज, साजत निज रस साज। —सू प्र.

सं पु —१ मन को ललचाने वाला, लालच।

२ आकर्पण।

३ बहकावा, फुसलाहट।

४ गुणकथन।

विलोम-वि [स] १ जिसके वाल न हो, लोम रहित।

२ सामान्य रीति, नियम, स्वभाव आदि के विपरीत क्रम में होने वाला।

३ विपरीत क्रम यानी ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला।

४ विपरीत, उल्टा।

उ०—घनै उतग अग कै मतग घूमतै नही, पलत सै विलोम लोम व्योम चूमतै नही। झपेट देत झडकै ब्रह्मा ड व्यापतै नही, छलग देत छोनि है, मलग मानतै नही। —ऊ का.

५ शत्रु, दुश्मन।

उ०—सबळ कळ आरिट्या विलोमा साभता, वाजता त्रबागळ कहर वेळा। 'पतो' ईडरपती ढिलीवै पलायत, हुवी दळ छत्रिया छत्र हेळा। —किसोरदान बारहठ

सं पु —१ स्वान, कुत्ता।

२ सर्प, साप।

३ वरुण का एक नामान्तर।

४ कुए से पानी निकालने का एक प्रकार का साधन, रहट।

५ स्वरो का अवरोहात्मक साधन।

६ सगीत में ऊचे स्वर से नीचे स्वर की ओर उतार, ऊचे स्वर की ओर से नीचे स्वर की ओर आने की क्रिया।

७ पर्दे के वाद्यो सतार आदि मे एक प्रकार का मीड विशेष।

वि वि —इसमे "सा" के पर्दे पर ही बिना तार बजाए तार को अदाज से खीच कर 'रे" के स्थान तक ले जा कर मिजराब से प्रहार किया जाता है तथा फिर तार को वापस "सा" पर ले जाया जाता है।

८ कपोतरोमा राजा का एक पुत्र।

रू. भे.—विलम,।

विलोमसोमायन-स पु [स] एक प्रकार का व्रत विशेष, जिसके करने से व्रतीसोमलोक प्राप्त होता है।

वि वि —यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से आरम्भ कर, ३ दिन चार स्तनो का, ३ दिन दो स्तनो का, ३ दिन एक स्तन का दूध पीये फिर ३ दिन १ स्तन का, ३ दिन २ स्तनो का, ३ दिन तीन स्तनो का, और तीन दिन चार स्तन का दूध पी कर कुल चौवीस दिन तक यह व्रत किया जाता है।

विलोयोडो—देखो 'विलोडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विलोयोडी)

विलोळ, विलोल-वि [स विलोल] १ हिलने-डुलने वाला, लहराने वाला।

२ चचल सुन्दर।

३ ढीला, शिथिल।

उ०—भवि भवसउ तै बोलइ बोलइ गिरिसिर टोल, सहजिइ परभव भेदन वेदन वदन विलोल। —जयसेखर सूरि

४ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ।

स पु —ऐश-आराम ।

उ०—विलसै दरब विलोळ, हरामखोर जो नर हुवै । पावै जम री पोळ, भूरदक्षिणा 'भंरिया' । —महाराजा बलवतसिह रतलाम

विलोळणो, विलोळबौ—देखो 'विलोलणो, विलोलबौ' (रू. भे)

विलोळणहार, हारो (हारी), विलोळणियो—वि० ।
विलोळिग्रोडो विलोळियोडो, विलोळयोडो—भू० का० कृ० ।
विलोळीजणो, विलोळीजबौ—कर्म वा० ।

विलोलणो, विलोलबौ—क्रि. स —१ ऐश-आराम करना ।

२ हिलाना-डुलाना ।

३ हवा करना, हवा डालना ।

उ०—वनिता समइ न वेदना, करता कोडि उपाय। वाउ विलोलइ वीजणइ, को चदन घसी लाय । —मा. का प्र

विलोलणहार, हारो (हारी), विलोलणियो—वि० ।
विलोलिग्रोडो, विलोलियोडो, विलोल्योडो—भू० का० कृ० ।
विलोलीजणो, विलोलीजबौ—कर्म वा० ।
विलोळणो, विलोळबौ—रू० भे० ।

विलोळियोडो, विलोलियोडो—भू का कृ —१ ऐश-आराम किया हुआ.

२ हिलाया डुलाया हुआ ३ हवा किया हुआ, हवा डाला हुआ ।
(स्त्री विलोळियोडी, विलोलियोडी)

विलोवणउ—देखो 'विलोवणो' (रू. भे)

उ०—दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे । जिम विलोवणउ विलोवता थका, सरीर नउ सस्थान रे। —स कु

विलोवणी—स स्त्री.—१ मिट्टी का बना वह छोटा पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

२ दही मथने वाली स्त्री ।

रू भे —बिलोवण, बिलोवणी ।

विलोवणू, विलोवणो—स पु.—१ मिट्टी का बना वह बडा पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

उ०—मूघा पडया रे विलोवणा, रीतो रै'वै जाय छाछियार । वारी, म्हारा गूगा, भल रही वो । —लो गी.

२ दही आदि मथने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ माय विलोवै विलोवणू, बहून रसोई कै माय । सोदागर महूदी राचणी । —लो गी

उ०—२ हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीदली डोल्या । नीदई झकोल्या, मूकी सभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या । आवइ मारि, वारि उघारि, राति अधारि । दही समाल्यूं, विलोवणो घाल्यू । —रा सा स

उ०—३ जाभरकै नानी-मा रै ई साथै ऊठग्यो । जोडै बैठ दुवारी करी । थोडी ताळ विलोवणो ई घमोड्यो । पछै सूरज दो ग्रेक बासडा ऊचो चढ्यो जणा खाखरा माथै माखण मिसरी लेय कलेवो करण लागो । —फुलवाडी

उ०—४ थू ई घणा रै मूंडै सुणियो व्हैला कै पुन्न री जड सदा हरी रै'वै । ग्रै काला मिनखां री काली वाता है । थारी मासी तो पिचियासी वरसा मे विद्या री विलोवणो करनै फगत इण ग्यान री माखण निकाळियो कै धन री जड सदा हरी रैवै ।

—फुलवाडी

क्रि. प्र —करणो, घमोडणो, घालणो, होणो ।

रू भे —बिलोवणो, विलोणो, विलोवणउ, विलोहणो ।

विलोवणो, विलोवबौ—देखो विलोडणो, विलोडबौ' (रू. भे)

उ०—१ माय विलोवै विलोवणू, बहून रसोई कै माय । सोदागर महूदी राचणी । —लो गी.

उ०—२ दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे। जिम विलोवणउ विलोवतां थकां, सरीर नउ सस्थान रे ।

—स. कु.

उ०—३ एक बाई कह्यो स्वामीजो म्हारै भैंस व्यावै जद पधारो तो लाहो लेवूं । तै किम भैंस व्याया एक महिना नाइ दूध दही वावर देवै, पिण विलोवै नही । तै देवी रै टाणै पधारज्यो ।

—भि. द्र

उ०—४ पीसण खाडण प्रसिद्ध, वलै गो दूहि विलोवै । जीमण राधि जिमाव, लाज सु जिमै लुकोवै । —ध. व. ग्र.

विलोवणहार, हारो (हारी), विलोवणियो—वि० ।
विलोविग्रोडो, विलोवियोडो, विलोव्योडो—भू० का० कृ० ।
विलोवीजणो, वीलोवीजबौ—कर्म वा० ।

विलोवियोडो—देखो 'विलोडियोडो' (रू भे)
(स्त्री. विलोवियोडी)

विलोहणो—देखो 'विलोवणो' (रू भे)

उ०—कमळा किया करतार, भर वुडी तग भार । लेह देह छोडीजे लास, विलोहणै वरहास । —गु रू व

विलोहित—स पु [स] १ तीन सिर, तीन पैर एव तीन हाथो वाला एक राक्षस जो कश्यप एव खशा का पुत्र था ।

२ कश्यप एव सुरभि के पुत्रो मे से एक रुद्र ।

विलो—सं पु —१ वर्षा ऋतु मे हरे घास या पानी मे होने वाला कीडा विशेष ।

२ उक्त कीडे के पेट मे चले जाने से गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं को होने वाला रोग विशेष ।

वि. वि.—इस रोग से पशु का अग अकड जाता है । अगर कीडा नाक मे चला जाये तो पशु मर भी जाता है ।

विल्कुल—देखो 'बिलकुल' (रू भे.)

विल्कुळणौ, विल्कुळवौ—देखो 'विळकुळणौ, विळकुळवौ' (रू भे.)

विल्कुळणहार, हारौ (हारी), विल्कुळणियौ—वि० ।
विल्कुळिग्रोडौ, विल्कुळियोडौ विल्कुळचोडौ—भू० का० कृ० ।
विल्कुळीजणौ, विल्कुळीजवौ—भाव वा० ।

विल्कुळियोडौ—देखो 'विळकुळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. विल्कुळियोडी)

विळया—देखो 'वेळा' (रू भे.)

उ०—कोट किला करताह, विखरतां लागं विळया। मानव नै मरताह, वार न लगे वसतिया। —समेळजी वारहठ

विल्यायत - देखो 'विलायत' (रू भे)

विल्यौ—देखो 'विल्यौ' (रू भे)

विल्लगणौ, विल्लगवौ—देखो विलगणौ, विलगवौ' (रू भे)

विल्लगणहार, हारौ (हारी), विल्लगणियौ—वि० ।
विल्लगिग्रोडौ, विल्लगियोडौ, विल्लग्योडौ—भू० का० कृ० ।
विल्लगीजणौ, विल्लगीजवौ—भाव वा० ।

विल्लगियोडौ—देखो विलगियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री विल्लगियोडी)

विल्लभ—देखो 'वल्लभ' (रू भे)

विल्लल-स पु—एक देश का नाम ।

उ०—सगवरण गज्जरण सबर बरबरकाय चिलाय तुरड गुंड उडकुड पक्करण चुक्करण कुडक्क तोसल सिहल दमिल ग्रज्जल विल्लल पारस खस लउस हारो समोसहिम रोम-मरुग । —व स.

विल्लायत—देखो 'विलायत' (रू भे)

उ०—जुदा मिसल जग हूत, ग्रमल विल्लायत वाळा । इसडा वार हजार, चूव चढिया कळिचाळा —सू प्र

विल्लौ—देखो 'विल्लौ' (रू भे)

विल्वपत्र-स पु [स] वह वेल का पत्ता जो प्राय शिवजी की पूजा मे चढाने के काम मे आता है ।

विल्वमगळ-स पु [स विल्वमगल] श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त एक ब्राह्मण पुत्र ।

वि. वि—इसके पिता कृष्णवेणी नदी के तट पर रहते थे । यह पहले तो शात व शिष्ट स्वभाव के थे । मगर पिता की मृत्युपरात दुराचारी हो गये व एक वेश्या के पास भी जाने लगे । पिता के श्राद्ध के दिन भी चिंतामणि नामक वेश्या के पास रात को गये । नदी मे किसी मृत स्त्री के शव को लकडी समझ कर उसी से नदी पार की तथा वेश्या के द्वार वद होने पर एक साप को रस्सी समझ कर उसी से दीवार फाद कर अन्दर गये । उसी दिन वेश्या के फटकार भरे उपदेश को मान कर उसी को अपना गुरु बनाया तथा अपनी आखें फोड ली और कृष्ण की भक्ति मे लीन हो गये । इसीने 'श्रीकृष्ण कर्णामृत जिसे" "लीला गुरु" भी कहते हैं, की रचना की थी ।

विवत-स—१ स्थिति, हालत ।

उ०—जो नरसघजी की वाजी सावूत रहसी, थें सावत लोका नू लै नीसरसी तो। थळं पठाण नू वेंगो ग्रको देसा । विवत देख दुसमण कन्है नीसरै, विवत देख लडै, तिका धरती रहै। ग्रर ग्राखता हुय नै कावू विना लड मरै तिका री धरती जाहि। —राजा नरसिंघ री वात

विवक्षु-स पु [स.] कौरव वशीय निमिचिक राजा का नामान्तर जो अधिसोमकृष्ण का पुत्र था ।

विवची—देखो 'विमची' (रू भे) (ग्रमरत)

विवत्स-वि. [स] सन्तान हीन, जिसके सन्तान न हो ।

विवध—१ देखो 'विवुध' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—विवध घणमाळ नभचक्र माझल वसी, रवि ससी न दीसै दिवस रजनी । मनोभव लगाडै वाण मोहण मदन, सहस वाता सजन ग्राण सजनी । —वा. दा.

२ देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—१ जग ईंस स्वाद पी ऊखरस, जिम ग्रवर चार ग्रनारयं । सुख परम दिनपति न्रपति सेवत, विविध भोग विहारय । —रा रू

उ०—२ विविध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा सी ब्रह्माजी वनै सिधाई जै दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै ग्रसुर विहडीजै, क्रीत कानै सुणीजै । —मा वचनिका

उ०—३ कही घरा पूर धुर कथा, विसवामित्र विवध । —रामरासौ

विवधा—१ देखो 'विवुध' (रू. भे)

२ देखो 'विविधता, (रू भे)

विवधाजाण—देखो विविधजाण' (रू भे) (ग्र. मा)

विवधि—देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—ग्रागम ग्रावण हरख उमडै, माडहि कोड नरूका मडै। छत्रपति हित मारग छडकाया, विवधि राज मगि फूल विछाया। —रा रू

विवनउ—देखो विवनौ' (रू भे.)

उ०—१ घण याटि लियइ ग्रायउ घरेहि, छागिया मेछ घर घाति छेहि । जणियार जोध विवनउ जियार, ताडिया वच्छ वथाणि तियार । —रा. ज. सी

विवनणौ, विवनबौ—क्रि अ.—मरना, अवसान होना ।

उ०—१ नर विवनै वा नंह रहै, जग में आ रह जाय । फुळवती सू कीत री, नलटी गति इण भाय । —वा दा

उ०—२ विवनै 'बाघ' घरै मूछा बळ, बैठौ गादी 'गग' महाबळ । 'गाल' 'गग' गादी राव मारू, सबळा किया आपरै सारू । —रा. रू

उ०—३ तण जास पास नय कुळ तणौ, सीचै भोर आचा सही । अभिनमौ 'क्रन्न' दांनेसवर रायसिंघ विवनौ म कही ।

—करमसी आसियौ

उ०—४ मारग जिकण गयौ राव मारू, पाछौ नह देखा परत । तौ विवनै बापा वड त्यागी, अन खट री तूटी वरत ।

—सकरदांन दधवाडियौ

विवनणहार, हारौ (हारी), विवनणियौ—वि० ।

विवनिओडौ, विवनियोडौ, विवन्योडौ—भू० का० कृ० ।

विवनीजणौ, विवनीजबौ—भाव वा० ।

विवन्नणौ, विवन्नबौ, विविनणौ, विविनबौ विविन्नणौ, विविन्नबौ —रू० भे० ।

विवनियोडौ—भू का. कृ —मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ ।

(स्त्री विवनियोडी)

विवनौ—वि (स्त्री. विवनी) १ जिसका अवसान हो गया हो, मरा हुआ, मृत ।

उ०—जोडै नाणौ जगत मे, कर कर करडा काम । विवनौ जीवै वाणियौ, नाणा री सुण नाम । —वा. दा

उ०—२ गिणजै मत दामण चोळ गनौ, मुझ वधव साचेय भाव मनौ । विवनौ घर जीवत रूप मणै, चारण कुळ सकट 'पाल' सुणै । —पा प्र

उ०—३ सुण बाधव विवनौ समर, राव विया कर रेठ । दन हूतौ नभ दुघडी, जूझ रह्यौ पिड जेठ । —पा. प्र

उ०—४ अेकलौ बाय अतीत, जती काय अकेलौ जासी । घण विवनौ री घणी, गरढ जासी अभवासी । —अरजुणजी वारहठ

२ उदास, खिन्नचित्त ।

३ विपत्तिग्रस्त, सकटापन्न ।

रू भे—विवनउ, विवन्नउ, विवन्नौ, विविनौ, विविन्नौ, वीवनौ, वीवन्नौ ।

विवन्नउ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

उ०—सीगिळ, उत्थेडणु सत्रा, जोध विवन्नउ जाणि । आंकलु आडिउ ऊठियउ, विक्रमाइतु वखाणि । —रा ज सी.

विवन्नणौ, विवन्नबौ—देखो 'विवनणौ, विवनबौ' (रू. भे)

उ०—वेगडउ साढ 'वीकउ' विवन्न, कुळभाण तेथि उदियउ 'करन्न' । ऊधरिय छत्र फेराडि आण, तांई मंडोवर मूलतांण ।

—रा. ज. सी

विवन्नणहार, हारौ (हारी), विवन्नणियौ—वि० ।

विवन्निओडौ विवन्नियोडौ, विवन्न्योडौ—भू० का० कृ० ।

विवन्नीजणौ, विवन्नीजबौ - भाव वा० ।

विवन्नियोडौ—देखो 'विवनियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विवन्नियोडी)

विवन्नौ—देखो 'विवनौ' (रू भे)

उ०-महाराजा 'अजमाल', घडी अरिसाल विवन्नौ । गयौ राम सुर लोक, इसौ इक जोग उपन्नौ । हिंदू धम्म निबाह, मरम गजं मेछाण । चक्रवती चालियो, प्रगट वैकुंठ पयाण । —रा. रू.

(स्त्री विवन्नी)

विवर—स पु. [स] १ सर्प, चूहो व चीटियों के रहने का स्थान, छिद्र बिल ।

उ०—१ इक कहै चीटी एह, छिन लखौ सुख अणछेह । वस रही संग परवार, घर विवर घर निरधार । —रा. रू

उ०—२ सीह जिम अहर डर अनमि 'सिवनाह' हर, रिमां विख-धर जिहि समर गाहै । तेज खग-ईंम री टक्कर लागी तिका, रहै नह वारधर विवर माहै । —राव देवीसिंघ सेखावत री गीत

२ कन्दरा, गुफा ।

उ०—१ च्यार घडी तलक च्यारूं रेढा घणा मवारा लडिया । आदमी घणौ घायल हुवो । सारा थाप रहिया अर आबू रा विवर पण भूंडण व रेढा री नजर आया । तद सारौ साथ उठै ऊभौ रहियौ । कुमर नूं सभाळ घोडै सवार कियौ छै । इतरै भूंडण-रेढौ । विवर जा वडिया । —डाढाळा सूर री वात

उ०—२ विसम घाट गोरख परै, कयण पैसै विवर । चीत कुण रुदर वण जहर चाढै, असक दैता वचै जोधपुर 'ऊदला', कहर दरीया वसु तुह-झ काढै । —मालौ सादू

३ छेद, छिद्र ।

उ०—नाभि-विवर अति रुमहु, घण नलीआरइ पेटि । उन्नत उर विसाल, पण भल तइ सकइ न भेटि । —मा का प्र.

४ गर्त, गड्ढा ।

उ०—१ अव विवर तनसीत मुतो सव तीरथ न्हावै । कासी छाडै देह हेम बसि हाड गमावै । —ह. पु. वा

उ०—२ कनिया भोमि विवर लघु काया, आयस जेम दास घरि आया । वदियो वळि घर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय । —सू प्र.

५ दरार, खाई ।

६ पाताल। (डि ना मा)
७ त्रुटि, गल्ती।
८ किसी ठोस पदार्थ मे होने वाला खोखला स्थान।
९ घाव।
१० मूर्ख, नासमझ, विवेकहीन व्यक्ति। (ह. ना. मा)
११ भूगर्भ, तहखाना।

उ०—अर उहि रिति कै आवरणै भुजग जु सरप था। अर धनवत मनुस्य था त्या अथी का पुड विवरण करि ऊडी ठोडा सवारि तहा ए दून्यों वरग विवर कहता भुंहिरा निवात ठोड तहा जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी

१२ समुद्र, सागर। (डि. ना. मा)
१३ ब्योरा, हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—१ आली जग तणी कथ एती, सारी विवर अवव्वर सेती। औ राठोड हुवै ज्या आगै, भिडता ऊला पैला भागे —रा रू

उ०—२ वाकौ ग्यो अजमेर सू, साह हजूर सताव। पत्र परम्वि (ठि) या साह डर, लिखिया विवर नवाव। —रा रू.

उ०—३ विगत सुणी सारी विवर, आया हितू हजूर। अरि भमराणी आवियो, दळा न वं था दूर। —रा रू

उ०—४ कुवजा नारद विदर री, विवरां सजुत वात। हरि रा दामा ज्यूं हुए, दासा नूं सुख दात। —वा दा

१४ धोखेबाज, कपटी व्यक्ति।

१५ दूत, खबरनवीस।

उ०—अवदुल्ला सुण वधु अवाजा, रीत कही सुणता महाराजा। पत्र दिया हित दूत पठाया, समाचार सहि विवर सुणाया। —रा रू

१६ नौ की सख्या।

रू भे —विवर, विभर, विवर, विव्वर, विमर, विम्मर, वमर, ववर, विमर विम्मर, विवरण।

अल्पा —वम्मरौ।

विवरजत विवरजित, विवरजिति—वि० [स विवर्जित] १ वर्जित, निषिद्ध, मना किया हुआ।

उ०—वह राणा राव विवाद विवरजित, "जोध" कळह कथ जिका जुई। वैरायता तौ वाळी भगवट, हव जाणै कुळवाट हुई। —महम्मदजी वारहठ

२ अपेक्षित, वचित।

३ रहित, विना।

उ०—१ भाई नाऊ वळद पियारी, तिह के गळै करद क्यौं सा' री? विणि चीन्ह खुदाई तरम विवरजत, केहा मुसलमाणी? —अग्यात

उ०—२ उदै अस्त आवै न जाय, सकल वियापि सहज भाय। मोह दोह आसा न पास, वरण विवरजित सु प्रकास। —ह पु वा

उ०—३ सकल रूप रस रूप विवरजित, सकल रूप तैं कीया। सकल रूप करि सवनै न्यारा, साधां कू सुख दीया। —ह पु वा.

उ०—४ सतगुरु सरणि गई सब दुवध्या, एक निरंजन पाया। करम विवरजिति सकल वियापी, सौ मेरै मन भाया। —ह पु वा

४ रुका हुआ, अवरुद्ध।
५ वर्णन किया हुआ, कहा हुआ, वर्णित।
रू भे —विवरजित, विवरजित।

विवरजितदे, विवरजितदेह—स पु [स विवर्जित+देह] निराकार, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—अनाथा-नाथ अनत अछेह, दयाळ मूरत्ति विवरजितदेह। बिना वपु रूप अनत विथार, अमूळ विरक्ख सु विस्वाधार। —ह र

रू भे —विवरजितदेह।

विवरण—स पु [स विवरण] १ प्रकट करने की क्रिया, प्रकटन, प्रदर्शन।

२ सविस्तार वर्णन, विवेचना, व्याख्याभाष्य, टीका।

उ०—विवरण जो वेलि रसिक रस वछो करौ करणि तो सूझ कथ। पूरै इतै प्रामिन्य पूरौ, इम्र ओछै ओछौ अरथ। —वेलि.

३ छेदने की क्रिया छेदन।

उ०—तव सुहव जु नायिका ताह का उरस्थळ वैकुंठ प्राय हुई रहीग्रा छै। अर उहि रिति कै आवरणै भुजग 'सु सरप था। अर धनवत मनुष्य था त्या अथी का पुड विवरण करि ऊडी ठोडा सवारि एहा ए दून्यों वरग विवर कहता भुंहिरा निवात थोड तहा जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी

[स. विवर्ण] ४ जातिच्युत या जाति मे बहिष्कृत व्यक्ति।

५ मन्तव्य, स्पष्टीकरण।

६ साहित्य मे एक भाव जिसमें नायक या नायिका के मुख का रग भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण बदल जाता है।

वि [स विवर्ण] १ नीच, कमीना, निम्न जाति या कुजाति का।

२ बुरे या बेमेल रंग का, बदरंग ।

उ०—विवरण वरण स्तनवरण लवकरण व्है विलै, मही न धरन चरन मरन उत्तमरन कै मिलै । गती रती न ग्यान की गद विग्यान की गमी, स्रुती परी करी सदा स्रुती जनस्रुती सभी ।
—ऊ का

३ मूर्ख, नासमझ । (अ मा)

४ कांतिहीन, शोभा व चमक रहित ।

५ अनेक रंगो का, रंग-विरंगा ।

६ देखो 'विवर' (रू भे)

रू. भे—विवरण, बिवरण, विवरण, विवरण ।

विवरत–स. पु [स विवर्त] १ चक्कर, फेरा, घुमाव ।

२ वापिस लौटने की क्रिया, प्रत्यावर्तन ।

३ भ्रम, भ्रान्ति ।

४ नृत्य, नाच ।

५ परिवर्तन ।

६ समुदाय, समूह ।

विवरतकलप, विवरतकल्प–स पु [स. विवर्तकल्प] एक कल्प विशेष जिसमे लोक क्रमश उन्नति की ओर से अवनति की ओर अग्रसित होते हैं । (जैन)

विवरतवाद–स पु. [स विवर्त+वाद] वेदान्तियो के अनुसार वह सिद्धात विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म ही सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति स्थान है व ससार माया व मिथ्या है ।

विवरतस्थायीकलप, विवरतस्थायीकल्प–स पु [स विवर्तकस्थायीकल्प] वह समय जब लोक अवनति को प्राप्त कर शून्य दशा मे भ्रमण करता है, कल्पान्त, प्रलय ।

विवरधन–स पु [स विवर्धन] १ मणिवर एव देवजनी का एक पुत्र, यक्ष ।

२ युधिष्ठर की सभा का एक राजा ।

विवराणौ, विवरावौ–क्रि स.—उच्चरित करवाना ।

विवराणहार, हारौ (हारी), विवराणियौ—वि० ।

विवरायोडौ—भू० का० कृ० ।

विवराईजणौ, विवराईजवौ—कर्म वा० ।

विवरावणौ, विवरावबौ—रू० भे० ।

विवरायोडौ—भू का कृ.—उच्चरित करवाया हुआ ।

(स्त्री विवरायोडी)

विवरावणौ, विवरावबौ—देखो 'विवराणौ, विवरावौ (रू. भे)

उ०—सखिया राणी सू सकळ, विवरावै सह वाणि । साल्हकुवर सपनै मिळै, पदमण अग कुमलाणि । —ढो मा.

विवरावणहार, हारौ (हारी), विवरावणियौ—वि० ।

विवरावियोडौ, विवरावियोडौ, विवराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विवरावीजणौ, विवरावीजबौ—कर्म वा० ।

विवरावियोडौ—देखो 'विवरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विवरावियोडी)

विवरि, विवरी–स पु—सन्देश व सूचना लाने व ले जाने वाला, सन्देशवाहक, दूत ।

उ०—'सेर' अरज मानै सुख पायौ, 'अमर' पास निज मत्री आयौ । सेर विलद तणी विध सारी, 'अमरै' सू तिण विवरि उचारी ।
—रा रू.

वि.—वर्णन करने वाला ।

विवरौ–स पु—१ भेद, रहस्य ।

उ०—१ नव दिन नाभी ध्यान को, विवरौ देह बताय । जन हरीया ररकार सु, सहजा ताळी लाय । —अनुभववाणी

उ०—२ कहन सुनन की बात का, हरिया विवरा थाय । कोई महरम हुय दाखवै, को कहै वात बनाय । —अनुभववाणी

उ०—३ पण परभात रै पोहर राज दरबार करो छो, ताहरा रावळी मुह उतरियो लागै सु कामूं जाणीजै ? ताहरा लाखेंजी कह्यो घडा भाणेज ! तोनू कहीस, पण एकात कहीस इण वात रो विवरो छै । —नैणसी

२ कारण ।

३ विवरण, ब्योरा, वृतात, हाल ।

उ०—१ उर प्रगटै सुख ऊपरौ, सुणि विवरौ 'अभैसाह' । ज्यौं जिग काम तपोवनां, राम कियौ ओछाह । —रा. रू

उ०—२ न्रपत सभेळ पधारिया, विवरौ थयौ विख्यात । आवी अरज उकील री, आ मत मानो वात । —रा. रू

उ०—३ तिसै चौकी पोहरै उमराव था, त्याने कह्यो, चौकी किण किण री छै । जिकै उमराव था तिण रा नाम लै लै नै कह्यो । तरै राजा कह्यो, देखो ऊगुण दिसि नै कोई गावै छै, कोई रोवै छै । तिणरौ विवरौ ल्यावो । —जगदेव पवार री वात

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ अन्तर, फर्क ।

उ०—१ सूर लडै जब कध सिर, कमध लडै विण सीस । हरिया सूर कमध विच, विवरौ विसवा वीस । —अनुभववाणी

उ०—२ घडी कूलडी तावणी, घडिया घाट अनेक । कुल करमा विवरौ कियौ, हरीया माटी हेक । —अनुभववाणी

उ०—३ जस न हुवै धन जोडिया, धन दीधा जस होय । बीसलदै वीकम तणौ, जग मे विवरौ जोय । —बा. दा.

उ०—४ जाति पाति विवरौ करै, भाखै आखै भिन। हरिया इन परसाद मैं, पाप न कोइ पिन। —अनुभववाणी

उ०—५ दमडी चमडी वीच मैं, हरिया विवरौ होय। दमडी सु दावा किसा, चमडी मा करि जोय। अनुभववाणी

६ व्याख्या, टीका।

७ संक्षिप्त जानकारी, परिचय।

उ०—कोडीधज साहरी कवर, माहरी नाव पनीज। आईछु उदमाद सु तरै खेलवा तीज। किण घर सो आया कहो, जास्यौ सिध जोधार। म्हारी विवरौ म्है दियो, कुण छो राज कवार। —पना

७ बयान।

रू भे—विवरौ, वीवरौ, बीवरौ।

विवस—वि [सं विवश] १ जिसका कोई वस नही चलता हो, वेवस, लाचार।

उ०—लुटेही लेत विवेक का डेरा, बुद्धिवळ यदपि करू वहुतेरा। हाय राम नहिं कछु बस मेरा, मरत हू विवस प्रभु धावउ सबेरा। —मीरा

२ जो अपने या किसी के काबू मे न हो, वेकाबू।

३ जिसे होश न हो, वेहोश।

४ मरा हुआ, मृत।

५ कारण।

उ०—आदर कियौ मिळै असुरेसुर, दियो नाम न्रप तेग वहादुर। भावी विवस जोधपुर भायौ, चगथै खा महराव चलायौ। —रा रू

रू भे—विवम, वेवस, विवसि।

विवसता—स स्त्री [स विवशता] विवश होने की अवस्था या भाव।

विवसवत—स पु [स विवस्वत्] १ एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम।

२ चौदह सौ किरणो वाला एक सूर्य जो ज्येष्ठ माह मे प्रकाशित होता है।

३ मनु एव यम का पिता, प्रथम यज्ञकर्त्ता।

४ चाक्षुप मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक।

५ गरुड के द्वारा मारा गया एक असुर।

६ उदित होने वाले सूर्य का प्रतिनिधित्वकर्त्ता एक देवता।

७ देखो 'विवसवान' (रू भे)

रू. भे—विवस्वत।

विवसवान, विवसाण, विवसान—स पु [स विवस्वत्] १ सूरज, सूर्य। (अ मा, क कु बो, ना मा, ह ना मा)

वि वि—यह वारह आदित्यो मे से एक है, जो कश्यप प्रजापति व दक्षकन्या अदिती के वारह पुत्रो मे से एक है। वारह पुत्रो के नाम निम्न है—विवस्वान्, अर्यमा, पूपा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, मित्र, वरुण, शक्र व वामन या उरुक्रम।

२ अरुण।

३ अर्क, मदार।

४ पद्रहवा प्रजापति।

५ एक सनातन विश्वदेव का नाम।

रू भे—विवसवत, विवस्वान।

विवसाइ, विवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू भे)

उ०—कारू नारू नइ विवसाईं, आवइ वरण अढार। पाए.लागी-नइ कामा सारइ, आयस करइ जुहार। —का दे प्र.

विवसाइयौ, विवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा. रू भे)

उ०—गाछा छीपा नइ तेरमा, विवसाईया वसइ। नगरमा आपापणि काजि सहू मिलइ, चहुटइ हईइ हईउ दलइ। —का दे प्र

विवसाय—देखो 'व्यवसाय' (रू. भे)

उ०—१ च्यारि वरण उत्तम जाणिया, विवहारिया वसइ वाणिया। कुहरइ वीकइ चालइ न्याय, देसाउरि करइ विवसाय। —का. दे प्र

उ०—२ पुरसोतम चितवै स्रन्टि, व्यापार रचीजै। इम चितवता आप, सयन निद्रावसि सूजै। किता जुग विवसाय, परम निद्रा भर पोढ्यौ। जोगनिद्रा जोगेस, आठ क्रम पवनह उळ्यौ। —रा. वसावळी

विवसायौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा रू भे)

उ०—हाटा तणउ पार नवि लहइ, घणा लोक विवसाया वहइ। खाडा तरकस तीर कमाण, जरहजीण पूरइ दीवाण। —का दे प्र.

विवसि—देखो 'विवस' (रू भे)

उ०—१ विण वेल तर आछादि गिर तन, अवनि पथ अगम ए। मन जाणि तापसि विवसि थाया, भ्रमत फिर पडि भ्रम ए। —रा रू.

उ०—२ विवसि हुऔ मुनि वेस्या वसि। —रामरासौ

विवस्था—देखो 'व्यवस्था' (रू भे) (अमरत)

उ०—१ राइ नट तेडाविया, कहौ विवस्था वत। वाडव कौ वेस्या जपइ, टालि पहु तै रत्त। —मा. का. प्र

उ०—२ विवस्था विखाद वादा वादको विवाद वाढ्यौ, मेटन फिसाद याद कीनौं जस जापी को। प्रवळ प्रधानपणौ देन जसवत प्रभु, जैपुर तै लीनौं टेर 'पातल' प्रतापी को। —ऊ का

विवस्वत—देखो 'विवसवत' (रू भे.)

विवस्वान—देखो 'विवसवान' (रू भे.)

विवह-स पु—१ देवराज इन्द्र। (ना डिं को)

२ अत्यन्त वेगवान् वायु, तुफान।

३ देखो 'विवुध' (रू भे)

४ देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—दीसइ विवह चरीय, जाणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो। अप्पाण च कलिज्जइ, हुडिज्जइ तेण पुहवीए। —ढो मा

उ०—२ केता भडा निवाजस कीजै, दान प्रसन मन पाता दीजै। अतरै दूत खबर लै आया, समाचार सह विवह सुणाया। —रा रू

उ०—३ स्रीमडळ रबाब सार वद्दवीणा झणकार, तत मझि घोर तार ग्रामा ग्रिहणै। ताळ कसाळ झालरी अघोटी कच्छिवी एक, आगळी वाजै अनेक, विवह वणै। —गु रू. व

उ०—४ अनि अबीर जबाधि, विवह अनेक परिम्मळ, चपक दळ केतकी कुसम सेवती सुपडुळ। नौसाण सद्द सुणियै नहो, भेर नाद मरदग घण, आघ्राण महल्लै अग रहण, इम अलिअर गुंजार-वण। —गु रू व

उ०—५ विवह वरन्ना कप्पडा, विवह वरन्नी पाग। फगर हुवदी फूलिया, जाण मलूका वाग। —गु रू. व

विवहथरणौ, विवहथरवौ—देखो 'विवहथरणौ, विवहथरबौ' (रू भे.)

विवहथरणहार, हारौ (हारी), विवहथरणियौ—वि०।

विवहथरिओड़ौ, विवहथरियोड़ौ, विवहथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विवहथरीजणौ, विवहथरीजबौ—भाव वा०।

विवहथरियोड़ौ—देखो 'विवहथरियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री विवहथरियोड़ी)

विवहपरि विवहपरी, विवहप्परि—क्रि वि—विविध प्रकार से।

उ०—१ ता ? उन्हउ सीयलु जयह जलु, फासुय थप्पिय विवह-प्परि। निज्जिणिउ विजयाणद ति (लि) हि, अभयतिलकि चउ-पट्टि धारि। —ऐ जैं का स

उ०—२ दोरड़ वद्धइ सूयडउ, छूटइ महतउ होइ। इण परि विलसइ विवहपरि, सुद्धि न जाणइ कोइ। —हीराणद सूरि

विवहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे)

उ०—१ हू रावळो चाकर, यू चूक पडि, तकसीर माफ करणी। यू करता घडी अेक हुई। रुदन करण लागो। देही परसीज गई। विवहल होय गयो, ज्यों प्राण छूटै। ताहरा लक्ष्मीजी स्रीभगवान सूं अरज करी—जै साहूकार वहोत दीन छै, विवहल हुयो छै इण रा प्राण छूटै छै। इण री पइसो लीजै। —पलक दरियाव री वात

उ०—२ इतरै मे कुवर री अतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरव लोग देखण लागा। देखै तो देही निरजीव देखी। तद हाहा-कार सवद हुओ। साथ सारो ही रोवण कूकण लागो। राजा नै जाय खबर हुई सो सुणनै मुरछागति हो गई, विवहल होय गयो। —पलक दरियाव री वात

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—१ धरम, विग्यान, इतियास पुराण, राजनीति, आचार, विवहार, कळा, साहित, वेसभूसा, परब-त्यूहार, कारीगरी नै खेतीवाडी अै सँग परपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै। —फुलवाडी

उ०—२ हुन्नर करो हजार, स्याणप चतराई सहित। हेत कपट विवहार, रहै न छानो, राजिया। —किरपाराम

उ०—३ वरतीजै विवहार, कदै निज रुढि न कीजै। सदाचार धरमसीह, लीह कहो केम लघीजै। —ध. व. ग्र

उ०—४ विणजै व्यापार वलि विवहार, लक्ष्मी आप वहै लार। परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोलै वह्व जस बाजार। —ध व ग्र

उ०—५ अबै रिणमलजी मोकळ री विवहार वाघ चाचामेरा नै प्रधानगी सूंप पाछा मडोवर आया। अठै मोकळ रै आगै चाचोमेरो चलावै छै। —राव रिणमल री बात

उ०—६ कत घणा है सातरा' जाणै जग विवहार। मत समझी मोटा घणा, करै न जग सरकार। —करणीदान बारहठ

विवहारिउ विवहारिओ, विवहारियौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे)

उ०—राजग्रहि नउ विवहारिउ रे, गोभद्र तणउ रै मल्हार। भद्रा माता कूंअरु रे, सालिभद्र गुण भडार। —स. कु

विवहारी—देखो 'व्यवहारी' (रू भे.)

उ०—त्रिणि दिहाडा वरखा वरसीउ, विवहारी चालिउ परदेसि। नारी एकली वली रे तिहा थई, छई तै योवन वेसि। —नळदवदती रास

विवहारीउ, विवहारीओ, विवहारीयौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारू थई विवहारीउ, वाहणि घोडा साथ। पूरण पुहुचा लगि भरिउ, वेढि वाकडा हाथि। —मा का प्र

उ०—२ सपरिकरि सध्या समइ, रथि वइसीनइ राय। वेख धरी विवहारिया, वेस्यानइ घरि जाय। —मा का प्र

उ०—३ प्रधान लोक विवहारिया, राजलोक सहुअै सुखी।

च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनि नही कोय दुखी ।
—प च चौ.

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

विवहालु, विवहालौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू भे)

उ०—वडुया सांभलि बाभणु भणइ, ए विवहारु नयरि अम्ह तणी। विद्यासिद्धो राखसु हूउ, वकनामि छइ जम नउ दूउ ।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो विवाह' (अल्पा., रू भे.)

विवहु—देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—पण सग वेय मयक वरसि माहह छण वासरि, भाणुमल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मदिरि। नदि ठविय विरथारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिद्ध किद्ध मगलु विवहु प्परी ।
—अभय यतिक यती

विवाण—देखो 'विमाण' (रू भे) (अ मा, ना मा)

उ०—१ सोठ सुहावै जायजे, चढजे गुध विवाण। रजी न लागै लूगडा, पथ तूठै असाण। —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ सातमै पाताल वासग नाग रै माथै टपूकडा खाईनै रहिया छै। त्यारी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू हुलस नै उतरै देवासुरा रा विवांण हिलोरव खाइ नै रहिया छै ।
—रा सा स

उ०—३ झळहळ खेडि विवाणा झोका, सुर हुय इम जाऊ सुर-लोका। इम बोलै मेडतिया अहुर, धुर जोधार पुछै पाटोवर ।
—सू प्र.

उ०—४ दुरत गत डाण उसराण सिर दियतौ, लियतौ फुरलवौ थाट लाहौ। सुतन 'गजबंध' सुर कामणी सपेखं, विवांणा ठाभियौ खाग-वाहौ।
—अग्यात

उ०—५ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहग घरि बीच मावै नहो, सुरै विवाण सवाहिया। —पी ग्र

उ०—६ इळ वाज वजावै ऊपडता, रिणतूर नसा भिळनै रुडता। डाणा किरि पाउ पलत्र डहै, वाजिद्रक वेग विवाण वहै ।
—गु रू व

विवाणणौ, विवाणवौ–क्रि स—प्रसव करना।

उ०—इसउ हिंदू राजा उपकठि कउण जिकइ मनि पातिसाह को रीस वसी, कउण का माथा तइ खिसी ? कउण हइ दई रूठउ ? कउण की माई विवांणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ?
—अ वचनिका

विवांणियोडौ–भू. का. कृ—प्रसव किया हुआ।

विवांण, विवाणी–स. स्त्री.—१ अप्सरा।

उ०—विवाणी झप उरध्धी काळ, विहगम रभ मिळी वेताळ । दिली खुरसाण विभाडचौ ढाल, मनाव्यौ मोटौ रावळ 'मोल'।
—राऊ जैतसी रौ रासौ

२ देखो 'विमाण' (रू भे)

उ०—चीत्राग दमूडी छोहि चक्कि, फरहरइ फउरि फिरियउ फरक्कि। वाधुलउ वाघ वाणी वखांणि, वाजिन्नि चडिय चडिसइ विवांणी। —रा ज सी.

विवाई—देखो 'विवाई (रू भे)

विवाद–स पु [स] १ किसी बात या विषय हेतु किया जाने वाला तर्क, वाद, झगडा।

उ०—१ विवस्था विखाद वाद वाद को विवाद वाढचौं, मेटन फिसाद याद कीनौं जस जापी को। प्रबळ प्रधान पणौ दैण जसवत प्रभू, जैपुर तै लीनौं टेर 'पातल' प्रतापी को । —ऊं. का

उ०—२ बली दोय साधा रै आपस मे अडवी लागी अनै ऊ कहै तू लोलपी। ऊ कहै तू लोलपी। इम परस्पर विवाद करता करता स्वामी जी कनै आया तो पिण विवाद छोडै नही ।
—भि. द्र

क्रि प्र—करणौ, होणौ।

२ शास्त्रार्थ।

उ०—१ द्वादश गुरु, द्वादस सिस्य, जुमलै चोवीस कापालिक हुवा है। उगर भैरव कपालिक रै नै सकराचारच रै विवाद हुवो है ।
—वा दा ख्यात

उ०—२ साधन काव्य कळा सुर साधत, वाद-विवाद करै मत बाधत। देह अनेह किता तप दाधत, विद्ध हरि गुण वाधत वाधत।
—जैपुर नगर री वरणण

क्रि प्र—करणौ, होणौ।

३ सोच-विचार।

उ०—थारा दिन धकै पडचा है, म्हे घणी दुनिया दीठी, फगत थारो उणियारो निरखण सारू जीवण री साध पूरता हा। पण इण साध री आज माठ आयगी दीसै । आ विवाद री वेला नी है।
—फुलवाडी

क्रि प्र—करणौ, होणौ।

४ जिद्द, आग्रह।

उ०—श्री सिरदार डाकी नही है परत अरिया नै खावण वाळी है और डाकी होवै सो तौ केवळ फकत वीर आया अरथात सनेसर नैं ही ज मारै नै श्री सिरदार तो सदेव ही मारै और डाकी आपरा री रिछा करै नै दूजा नै मारै पण श्री डाकी सिरदार वंदावदी विवाद कर निज आपरा रजपूत भाई बेटा तिका नै जुद्ध मे माराय

नाखे इण वासतै डाकी डाकी नही डाकी श्री सिरदार है सारा नै युद्ध मे मारावण वाळो । —वी स टी.

क्रि प्र.—करणौ ।

५ युद्ध, झगडा, लडाई ।

उ०—१ ओपमा 'कमा' हरनाथ आद, वरवीर खळा मेटण विवाद । मछरीक फतौ गज घड मरोड, 'अजवेस' 'लाल' पातल अनोड । —रा. रू

उ०—२ 'दोलौ' गोयद हरा दुवाहो, सुत जैसिंघ विवाद मगाहो । 'सूरौ' 'खान' तणौ ध्वज सूरा,आहव न वदै जिसौ अधूरा —रा रू

क्रि प्र —करणौ, चालणौ, होणौ ।

६ न्यायालय मे चलने वाला वाद, मुकदमा ।

७ प्रतिस्पर्धा, होड ।

उ०—एक करइ रथ वाडिय, वाडिय माहि विवेकि । कुसुम विवादइ, चूंटइ, खूंटइ पल्लवि एकि । —जयसेखरसूरि

क्रि. प्र.—करणौ, चालणौ, होणौ ।

रू. भे —विवाद, विवादु, विवादौ ।

विवादक—देखो 'विवादी'

विवादी —वि [स. विवादिन्] १ किसी बात या विषय पर तर्क, वाद या झगडा करने वाला ।

२ शास्त्रार्थ करने वाला ।

३ सोच-विचार करने वाला ।

४ जिद्द करने वाला, जिद्दी ।

५ युद्ध करने वाला, झगडा करने वाला ।

उ०—सेखा कामखानी कूम दोनू एम रूठा, दोनूं ही विवादी यौ विवादौ धारि ऊठा । —शि व

६ न्यायालय मे वाद चलाने वाला ।

७ राग के स्वरूप को बिगाडने वाला वर्ज्य या वर्जित नामक स्वर । (सगीत)

८ संगीत का वह पक्ष जिसका किसी राग मे बहुत कम व्यवहार होता है ।

रू भे.—विवादौ ।

विवादु—१ देखो 'विवाद' (रू भे)

२ देखो 'विवादी' (रू. भे)

विवादौ—१ देखो 'विवाद' (रू भे)

उ०—सेखा कामखानी कूम दोनू एम रूठा, दोनूं ही विवादी यौं विवादौ धारि ऊठा । —शि व

रू. भे.—विवादु ।

विवार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—लाडणू वसै महाजन लोक चौपडा पडै बाजार चौक । है दरब जहू लक्ख हजार, वाणिया तणा चालै विवार —पे रू.

विवाह—स. पु [स विवाह] १ हिन्दू धर्म के सोलह सस्कारो मे से वह सस्कार जिसमे वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते हैं ।

वि. वि.—ये विवाह निम्न आठ प्रकार के माने गये है—

(१) ब्राह्म विवाह—वह विवाह, जिसमे शीलवान् और वेदाभ्यासी वर को बुलाकर कपडे व अलकारो मे वर-वधू का पूजन कर कन्या का विवाह किया जाता है ।

(२) दैव विवाह—वह विवाह जिसमे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ में ऋत्विज (यज्ञ का कार्य कराने वाले) को विधि-पूर्वक अलकारादि से सत्कार कर कन्या का दान किया जाता है ।

३ आर्ष विवाह—वह विवाह जिसमे कन्या का पिता वर से गाय व साड का एक या दो जोडे अपनी लडकी को देने हेतु धार्मिक भाव से (लडकी के मूल्य के रूप मे नही) लेकर कन्या का दान करता था ।

४ प्राजापत्य विवाह — वह विवाह जिसमे कन्या का पिता पहले से ही सकल्प कर लेता है कि अमुक वर के साथ अपनी पुत्री का विवाह करूगा तथा कन्यादान करते समय वर-वधू का पूजन कर अपने मुह से कहता है कि तुम दोनो साथ रहकर धर्माचरण करो ।

५ आसुर विवाह — वह विवाह जिसमे वर की ओर से कन्या व कन्या के पिता को धन देकर स्वच्छन्दनापूर्वक कन्या को ग्रहण किया जाता है ।

६ गन्धर्व विवाह—वह विवाह जिसमे वर व कन्या कामासक्त हो कर स्वेच्छा से (माता पिता के विना दान किये) एक दूसरे के साथ सयोग कर लेते हैं ।

७ राक्षस विवाह — बल पूर्वक कन्या का हरण करके किये गये विवाह को राक्षस विवाह कहते हैं ।

८ पैशाच या पैशाच्य विवाह—वह विवाह जिसमे एकान्त स्थान व समय पाकर बेखबर, नीद मे या नशे मे बेहोश कन्या के साथ सभोग कर लिया जाता है । इसे अधम विवाह मानते हैं ।

राजस्थान मे विशेषतः राजपूतो व चारणो मे एक विशेष प्रकार का विवाह किया जाता है । जिसमे वर को कन्या पक्ष वाले धोखे से पकड कर ले जाते हैं, और घर लेजाकर विवाह कर देते हैं ।

२ उक्त सस्कार के अवसर पर मनाया जाने वाला उत्सव ।

३ वह उत्सव जिसमें पुरुष व स्त्री वैवाहिक बन्धन में बन्धते है ।

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या— किण ही सहर में च्यार बजाज री हाटा हुती। तिण मे तीन तो विवाह गया। पाछै कपडादिक ना ग्राहक घणा आया। हिवैं एक बजाज रहियौ तै राजी हुवै कै वेराजी। —भि. द्र.

उ०—२ हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वामीजी नें कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू री व्यसन है। जद स्वामीजी बोल्या—काचरिया री अटक्यौ किसौ विवाह रहे है। —सू. प्र

४ उक्त उत्सव के अवसर पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।

५ बीसवें कल्प मे उत्पन्न ब्रह्मा का रक्त नामक पुत्र।

रू० भे०—विवाह, बिमा, बिमाह, बिया, बियाव, बियाह बिवाह, बीया, बीवाह, बीमा, बीमाह, बीयाव, ब्याव, ब्याव ब्याह, भियाव, भ्याव, विमाह, विमाह, विमाहौ, वियाव, विहा, विहा, विहाव, वीमा, वीमाह, वीमाह, वीवा, वीवाह, वीहा वीहाव, व्याह, व्याव।

अल्पा,—विवहालु, विवहालो, विवाहलु, विवाहलो, विवाहिलु, विवाहिलौ, व्यावडौ।

विवाहणौ, विवाहवौ–क्रि स [स. विवाहनम्] १ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करना।

२ उक्त अवसर पर उत्सव मनाना।

३ पुरुष व स्त्री का वैवाहिक बधन मे बधना।

उ०—१ तव घणौ आणदित होई ससिपाल विवाहण चाल्यौ। ज्यौं ग्रथि विखै गायौ छै। जितनौ एक परिगह कह्यौ छै। तिहिं भाति होय चाल्यौ। —वेलि टी.

उ०—२ जिम धारी खूनी जिकौ, किर बळभद्र कवध। अठै विवाहण आणियौ, सरणै मे बळसंध। —व भा

४ उक्त अवसर पर धार्मिक कृत्य करना।

विवाहणहार, हारौ (हारी), विवाहणियौ—वि०।

विवाहिओडौ विवाहियोडौ, विवाह्योडौ—भू० का० कृ०।

विवाहीजणौ, विवाहीजवौ—कर्म वा०।

बिआणौ, बिआवौ, बिवाहणौ, बिवाहवौ, बियाणौ, बियावौ, बिहांमणौ, बिहामवौ, बिहाणौ, बिहावौ, बिहावणौ, बिहाववौ ब्याणौ, ब्यावौ, ब्यावणौ, ब्याववौ विमाहणौ, विमाहवौ, विहाणौ, विहावौ, विहावणौ, विहाववौ, वीवाहणौ, वीवाहवौ वीहाणौ, वीहावौ, वीहावणौ, वीहाववौ—रू० भे०।

विवाहलु, विवाहलौ–स पु [विवाह+लाप] १ किसी व्यक्ति विशेष के विवाह से सम्बन्धित काव्य।

वि. वि.—कई उक्त काव्यो मे जीवन से सम्बन्धित लीलाएं भी दी हुई होती हैं।

उ०—सामनदेव तै मत घरिए, चउवीस जिन पय अनुसरीए। गोयस्वामी पसायलुए, अमे गा (इ) सि स्रीगुरुणी विवा ्लु ए। —ऐ. जै का स

रू. भे —वियावलौ, ब्यावलौ, विवहालु, विवहालौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, वीवाहलै, वीवाहिलु, वीवाहिलौ, व्यावलौ।

२ देखो 'विवाह' (अल्पा, रू भे.)

विवाहित–वि. [सं. विवाहिता] वह जिसकी शादी हो गई हो।

रू. भे —व्याहत।

विवाहियोडौ–भू. का. कृ—१ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार किया हुआ। २ उक्त अवसर पर उत्सव मनाया हुआ। ३ स्त्री व पुरुष का वैवाहिक बन्धन में बन्धा हुआ। ४ उक्त अवसर पर धार्मिक कृत्य किया हुआ।

(स्त्री विवाहियोडी)

विवाहिलु विवाहिलौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे)

२ देखो 'विवाह' (अल्पा, रू भे)

विविंध्य–स पु [स] श्री कृष्ण के पुत्र चारुदेष्ण द्वारा मारा गया एक दानव।

विविंस–स पु [स विविंश] १ विदर्भ राजकुमारी नदिनी व वीर राजा का पुत्र तथा सुप व प्रथमा का पौत्र एक सूर्यवंशी राजा, जो खनीनेत्र आदि पद्रह लडको का पिता था।

विविंसति–स पु [स विविंशति] धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भारतीय युद्ध मे महारथी था और भीम के द्वारा मारा गया था।

२ चाक्षुप राजा का पुत्र एक राजा जो रभ राजा का पिता था।

विविक्त, विविक्तनांमा–स पु [स विविक्तनामा] हिरण्यरेतस के सात पुत्रो मे से एक, जो कुशद्वीप का राजा था।

विविक्षु–स पु [स] अधिसोमकृष्ण का एक पुत्र जो शतानीक का पौत्र था।

विवित्त–स पु [स] वह स्थान जहा पर स्त्री, पशु और नपंसक नही हो। (जैन)

विवित्ताहार–स. पु [स विवित्त+आहार] विकृति रहित आहार। (जैन)

विवित्स, विवित्सु–स. पु [स] धृतराष्ट्र के शतपुत्रो में से एक, जो भीम के द्वारा मारा गया था।

विविद, विविध–स पु [स विविद] कश का अनुचर एक राक्षस।

वि [स विविध] तरह-तरह का, अनेक प्रकार का, भाति-भाति का। (सभा)

उ०—१ आदि अगम अविकार, एक ईश्वर अविणासी। पछै प्रकति तत पच, विविध सुर इळजवासी। —रा. रू.

उ०—२ सुभ चित्र मंदिर चौक सुंदर, ओपि रुचि राय अगणे । तन सदन सोभित करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणे ।
—रा रू.

उ०—३ आपणा घरि कादम फेडइ, बोजा काज मेडई । पार पार न लीइ, साध विहार न करीइ । अनेक जीव नीपजे, विविध धान्य ऊपजै । लोकनी आस पूजै, गाय भैंस दूजै । इत्यादि ।
—रा सा. स.

उ०—४ ग्यान ब्रह्म 'जसराज' गुण, उग्र तप करि पाविया । सार जसवत आदि स्तुतिवर, विविध ग्रंथ वणाविया । —सू प्र.

उ०—५ वरणाव करू सुमेर को, सब ही कंचन सार । रतन स्त्रृग राजत विविध, लख जोजन विस्तार । —गज-उद्धार

रू भे —विविध, बीवध, विवध, विवधि, विवह, विवहु, विविधि, विविह ।

विविधजाण-वि. [स विविध+ज्ञान] १ कवि, पडित । (अ मा)

२ जिसने बहुत बातें सुन ली हो, बहुश्रुत ।

रू. भे.—विवधाजाण ।

विविधता-स स्त्री [स विविध+ता प्रत्यय] विविध होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे —विविधा ।

विविधविस्नाम-स स्त्री [स विविध=विबुध+विश्राम] स्वर्ग । (अ. मा)

विविधि—देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—इंद्र कहि 'वरदान थी, देखसि नहीं प्रतिहार । ईछाइ तूं दरसन देज्यै, देखो विविधि विहिवार । —नळाख्यांन

विविधेस, विविधेसर, विविधेसुर, विविधेस्वर-स. पु. [स. विबुध+ईश, विबुध+ईश्वर] १ कवि, पडित, विद्वान ।

उ०—विरही वरहण घणमुड व्यापी, केकी सुकळापग कळापी । रथकुमार प्रक विखर चाया, विविधेसुर खग नाम बताया । —ना मा.

२ ईश्वर ।

विविनणो, विविनवो—देखो 'विवनणो, विवनवो' (रू. भे)

विविनणहार, हारो (हारी), विविनणियो—वि० ।
विविनिओडो, विविनियोडो, विविन्योडो—भू० का० कृ० ।
विविनीजणो, विविनीजबो—भाव वा० ।

विविनियोडो—देखो 'विवनियोडो' (रू भे)
(स्त्री विविनियोडी)

विविनो—देखो विवनो' (रू भे)
(स्त्री. विविनी)

विविन्नणो, विविन्नवो—देखो 'विवनणो, विवनवो' (रू भे)

उ०—'सूरजम' (ळ) गो सरणि, साह निज्राज विविन्नो । मन तुरका हिंदुवा, ताम वैराग उपन्नो —गु रू व

विविन्नणहार, हारो (हारी), विविन्नणियो—वि० ।
विविन्निओडो, विविन्नियोडो, विविन्योडो—भू० का० कृ० ।
विविन्नीजणो, विविन्नीजवो—भाव वा० ।

विविन्नियोडो—देखो 'विवनियोडो' (रू भे)
(स्त्री विविन्नियोडी)

विविन्नो—देखो 'विवनो' (रू भे)

विविह—देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—१ वारभट्टुतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ, जिणेसर सूरि पइसरइ संघु सयलु विवह सज्जइ । सूरिमतु सिरि सव्वएवसूरिहि जसु दिनउ, जालउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव कीनउ, —ऐ जै. का स.

उ०—२ इण परि विहू तीरथकराए, चिरपालीराज विविह पराए । जाणी अवसर सार ए, विहु लीधो सजम भारए । —वृ. स्त.

विवुध—देखो 'विबुध' (रू भे)(अ मा., डिं. ना. मा., ह नां मा.)

विबुधपुर-स. पु. [स. विबुधपुर] स्वर्ग ।

विबुधप्रिय, विबुधप्रिया-स. स्त्री [स विबुधप्रिय] १ अप्सरा, देवांगना ।

२ देखो 'विबुधप्रिया' (रू भे.)

विबुधवन, विबुधवन—देखो 'विबुधवन' (रू. भे.)

विबुधबंद्य-स पु. [स. विबुधवैद्य] देवताओ के वैद्य, अश्विनिकुमार ।

विबुधालय—देखो 'विबुधालय' (रू भे)

विबुधेस—देखो 'विबुधेस' (रू भे)

विबुह—देखो 'विबुध' (रू भे.)

विवेक-स पु [स] १ भले-बुरे या सत-असत का ज्ञान ।

२ भले-बुरे या गुण अवगुण को पहिचानने की शक्ति ।

उ०—जै भगी री भींटी तो न खादी नै भगी री कीधी खाधी तिण सू उणनै विवेक री विकल जाणै । ज्यूं ग्रहस्थ कमाड खोलनै देवै ते तो लेवे नही अनै अंधारी रात्रि मे हाथ सूं कमाड जडै उघाडै तिण री सक आणै नही । —भि द्र

३ समझ, ज्ञान, बुद्धि ।

उ०—१ भव सह हरै निजर भर, कर कर गहर विवेक । सर 'प्रताप' नर तो समो, अवर आज नह एक ।
—जैतदान बारहठ

उ०—२ लूटेहि लेत विवेक का डेरा, बुद्धिवळ यदपि करू बहु-

तेरा । हाय राम नहिं कछु बस मेरा, मरत हू विवस प्रभु धावड सवेरा । —मीरा

उस—३ धर चौडै सरवर विपन, विंधाचळ दिस एक । च्यार महूरत उत्तरै, धारस मंत्र विवेक । —रा. रू.

उ०—४ आठू ई मिसल कै कमध महाबाह, जाको सुण मानी वानी विखै की सलाह । चाळै मे अग्रकारी अनेक सा एक, राम दळा मेळ जाणै नील को विवेक । —रा रू.

४ सत्यज्ञान।

क्रि प्र —करणौ, धरणौ, धारणौ, राखणौ, होणौ।

रू भे —अवेक, वमेक, बवेक, विवेक, बिमेक, व्रिवेक, वमेक विमेक, विमेख ।

अल्पा —विवेकौ।

विवेकजोग, विवेकजोग्ग–स पु —स्त्री पशु व नपुसक अर्थात मन मे विकृति पैदा करने वाले किसी पदार्थ का ससर्ग न होने की अवस्था या भाव ।

रू भे —विवेगजोग, विवेगजोग्ग।

विवेकता–स स्त्री. [स विवेक+ता प्र०] विवेक की अवस्था या भाव ।

विवेकनारायण–वि —विवेकशील ।

उ०—तीणि नगरि, सामत मडलेस्वर मंत्रि महामंत्रि स्रेस्ठि सारथवाहपुत्र दडाधिपति ग्रहकप्रमुख लोक सेव्यमान अनीति निरनासन गतव्यारभ परनारीसहोदर बुद्धिमयरहर विवेकनारायण दानै कव्यसन''' । —व स

उ०—२ ''एर अनेक रूप नरेंद्र, सच्चवाचा हरिस्चद्र, निरभय भीम, आपन्न जीमूतवाहन, वाग्देवी विलास कास्मीर, विवेकनारायण, औदार्य वलि, सेवकजन कल्पतरु चतुरग वाहिनी सेनासमुद्र, इसिउ राजा । —व स

विवेकवान–वि. [स. विवेक+वान्] जिसमे विवेक हो, अच्छे-बुरे को पहिचानने वाला, बुद्धिमान ।

विवेकी–वि [स. विवेकिन्] १ विवेकधारी, भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला ।

उ०—कहु सुखराम सुणो भाई साधो, भेख भेख सब एक । त्याग वैराग गुरु गम गाढा, सोई जांण विसेख । भेद विवेकी रे, '' . . —श्रीसुखरामजी महाराज

२ बुद्धिमान, ज्ञानी ।

३ न्यायप्रिय, न्यायशील ।

रू भे —विवेकी ।

विवैकौ—देखो 'विवेक' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेकी जी । मिच्छामि दुक्कड दीजियइ, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येकी जी । —स. कु.

विवेग—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

विवेगजोग, विवेगजोग्ग—देखो 'विवेकजोग' (रू. भे)

विवेचक–वि.—विवेचना करने वाला, विवेचनकर्त्ता ।

विवेचन—देखो 'विवेचना' (रू. भे.)

विवेचना–स. स्त्री [स.] १ भली-बुरी, सत्-असत् आदि का ज्ञान, विवेक ।

२ तर्क-वितर्क, वाद-विवाद ।

३ निर्णय, फैसला ।

४ मीमासा ।

५ अनुसन्धान, अन्वेषण ।

६ परीक्षण, निरीक्षण ।

रू. भे —विवेचन ।

विवोगण, विवोगणि, विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू भे)

उ०—विरहणि विरह विवोगणी, दरसन कारणि पीव । विकळ भई विलवै कहा, ताला वेली जी । —ह पु. वा.

विवोढ–स पु [स. विवोढ्] १ पति, खाविंद, भरतार ।
(अ. मा., ह. ना मा.)

२ दुल्हा ।

विव्वडा—देखो 'वरवडी' (रू भे)

विव्वांण, विव्वाणी—देखो 'विमाण' (रू. भे)

उ०—वाज पख सीचाण, वाज विव्वांण उडाया । पवन आतुर पेरियै, जळद जाणै फिरि धाया । —गु रू. ब.

विव्वोक–स पु [स] स्त्रियो के द्वारा सयोग के समय प्रिय का अनादर हेतु किया गया हाव । (साहित्य)

विव्हार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—१ लगती लहगो पहरि सुहागण, बीतो जाइ विव्हार । धन जोवन दिन च्यार का, जात न लागै वार । —मीरा

विसंठुल–वि [स विसटुल] १ चचल । (उ र)

२ विषम, विकट ।

विसट–स पु —गणो के ईश, गणेश, गजानन । (क. कु बो)

विसदरी—देखो 'विसूदरी' (रू. भे.)

उ०—जळ अनळग वन वन गहन जाय, डाकणी पसु प्रेत न डराय । खेंचरी चोर नाहर न खेद, विसदरा वैरी दवी विवाद । —रामदान लाळस

विसन—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—१ कमळी भगत जीतौ कळह, त्रिपुरासुर जिसतान तन । इमिरित वावि सोसी अलखि, विसभ रूप वणियौ विसन ।
—पी ग्र.

उ०—२ बखाणं जाणं एक विसन, कहै मति कूरम मच्छ किसन । कहै दत देव कपिल कल्याण, तवै दसरथ तणं तुडिताण ।
—पी ग्र

उ०—३ वडो सहि थोका हुति विसन, प्रमेसर मूझ समापो पुन । प्रमेसर पार अपार अपार, नारायण नेह निमो निरकार ।
—पी ग्र

२ देखो 'व्यसन (रू भे)

विसभ—स पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ समाणी तूझ मही घणस्याम, राघव्व अम्हीणो आतमराम । सेवग पयपै तेजस मोह, विसभ रखै हिव थाय विछोह ।
—ह र

उ०—२ विसभ तूझ ना निमो लीला विलास, केहर तूझ वाल्हो धणी कविलास । निगुण नाथ आवेस वलिराम नागु, त्रिगुण किसन रा वीर तू सरव त्यागु । |पी ग्र.

२ श्रीकृष्ण ।

३ ऋषभावतार ।

उ०—१ पछि फरसरांम लखमण कपिलि, रिदै मुझ बळिराम रहि । नारीयण विसभ अवतार निजि, क्रिसन बुधि निकलक कहि ।
—पी ग्र

उ० —२ कमळी भगत जीतौ कळह, त्रिपुरासुर जिसतान तन । इमिरित वावि सोसी अलखि, विसभ रूप वणियौ विसन ।
—पी ग्र.

वि.—भयकर, डरावना ।

उ०—फोडा विसभ फाड ए, तुरग कोमड ताड ए । कटूक फोज कठळा, अणी खिवंत सावळा ।
—गु रू ब

रू भे.—विखभ, विसभ ।

विसभर—देखो 'विस्वभर' (रू भे)   (अ मा , ह ना मा)

उ०—१ अखभ कपिळ हैग्रीव विसभर, दत्तात्रेय हस दामोदर । राव बैंकुठ धनतर रिखभ, गरुडारूढ विसन प्रसणीग्रभ । —ह र.

उ०–२ भीर म्है जका भीरी विसभर, गाज कुण सकै जसराज रा गाव । राव एक थाप ऊथापिया रिडमल्ला, रिडमला पुडदडी राखिया राव ।
—दुरगादास राठोड री गीत

उ०—३ भ्रम रहसै, रहसै धरा, खिस जासै खुरसांण । 'अमर' विसभर ऊपरै, राख नहच्चो, राण ।
—रहीम

उ०—४ स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण । व्रज नायक विसवेस विसभर, घणनामी आरणदघण । —र जे प्र.

उ०—५ या औसर हरि का होय गहियं, भवर रच्या सो भूधर कहिए । नाव विसभर विसपति रावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा ।
—ह पु. वा.

विसभरा—देखो 'विस्वभरा' (रू भे)   (ना मा , ह ना मा)

विसवाद–स पु. [स] वाद-विवाद, बहस ।

उ०—प्रीति परस्पर अतिघणी, एक जीव तनु दोइ । विण निज निज मत नै विसै, विसवाद नित होइ ।
—स्रीपालरास

विस–स पु [स विष] १ शरीर में पहुँचने पर प्राण लेने या हानि पहुचाने वाला पदार्थ, जहर, गरल ।   (ह ना मा)

उ० —१ इयं भात रहिता दो एक दिन नायण चलै कही कुवर नू एक गोली बणाया छा तेसुं थें राजी हुसो । तद कुवर कह्यो गोली बणाय । तद नायण विस गोली बणाय हर कुवर नूं दीधी ।
—चौबोली

उ०—२ रावळ वुधसिंघ जगतसिंघ री पाट बैठो । पछै बुधसिंघ नै कहै छै सीतळा नीसरी थी, तिण मे विस हुवो । तठा पछै रावळ तेजसिंघ जसवतसिंघ रो पाट बैठो ।
— नैणसी

उ०—३ घर रा वेटा रै सिवाय दूजो कुण चाटतो । बाप री डील चाट्या पछै दोनू वेटा रै डील मे विस फूटग्यो, सेवट मरिया लार छूटी ।
—फुलवाडी

उ०—४ ऊमड घटा अधियावणी, बीज छटा खिव वाह । विस जिसडी लागै बुरी, नित पावस विण नाह ।
—र हमीर

२ सुख शाति मे बाधा पहुचाने वाला तत्व या वात ।

उ०—१ पथी एक सदेसडइ, लग ढोलइ पोहच्याइ । विरह महा विस तन विसइ, ओखद दियइ न आइ ।
—ढो मा.

उ०—२ चिडण अर कूटणा विचै ई बेटी नै बाप री इण सुभराज अर कुरब कायदा रो घणो दुख व्हियो । मिनख री आ गुलामी तो हवा अर उजास मे ई विस घोळ देवैला ।
—फुलवाडी

३ कुटिलता ।

उ०—१ तो ई जीवूंला जितै गुण मानूंला कै थारी प्रीत रै कारण म्हारै हिवडा री विस इमरत मे बदळग्यो । लुगाई रै रूप री अर पुरख रै प्रेम री आ इज तो छेहली मरजादा ।
—फुलवाडी

उ०—२ तद वो अळगो भाम जायनै अेक दूजा गांव मे आपरा डेरा-डडा जमाया । नवा गाव मे पेठ जमावण सारू वो मिसरी सूं ई मीठो बोलण लागो तो ई उण रै अतस री विस लोगा सू छानो नी रहयो ।
—फुलवाडी

उ०—३ ग्रा कालाई तौ वरसा ताई जूता मारिया ई ठाणै नी ग्रावै, इण वास्ते म्हैं तौ मुळगी ई माठ झालली । ग्रबारू ई ग्रा सोचनै मूंन धारी कै देखूं ग्राप लोगा री जीभ मे कित्तोक विस भरयौ है । —फुलवाडी

४ वैश्य, बनिया ।

५ दनायुष नामक ग्रसुर का पुत्र ।

६ एक प्रकार के देवगण ।

७ नकुलि देवी के द्वारा मारा गया एक ग्रसुर ।

८ कमल की नाल ।

९ जल, पानी ।

१० घी, घृत ।

११ सर्प, साप ।

१२ ग्रमृत ।

१३ सात उपधातुग्रो मे से एक ।

१४ कडवा या तीक्ष्ण तत्व या वात ।

क्रि. प्र.—उगटणौ, करणौ, खाणौ, घोळणौ, झरणौ, टपकणौ, देणौ, मारणौ, लेणौ, होणौ ।

रू भे —वख, वखम, बिख, बिस, बिसिया, विस्न, वख, वस वसव, विक्ख, विख, विसिया, विसु, वेख ।

१५ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—विस सुख माहि रम रहै, माया हित चित लाइ । सोइ सत जन ऊबरै, स्वाद छाड गुण गाइ । —दादूवाणी

विसइ, विसई—१ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—भला वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरौ ग्रामवातीड, कालो तो कवाडि, का वेचि तो खात्रपाडउ, न वेचइ तो भडग, विसइ तो सद्धरम बहिस्क्रत, विसइ हीन तो नपुंसक । —व. स

२ देखो विसयी' (रू भे.)

उ०—१ थोडु जमइ तो भूंडउ ऊणाटउ, भला वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरौ ग्रामवातीस, कालो तो कवाडि, का वेचि तो खात्रपाडउ, न वेचइ तो भडग विसइ तो सद्धरम वहिस्क्रत, विसइ हीन तो नपुंसक । —व स

विसकठ—स पु. [स. विषकठ] १ शिव, महादेव ।

२ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

मि०—"नीलकठ" ।

विसकभक—देखो 'विस्कभ' (रू भे)

विसक—देखो'विसिख' (रू भे)

उ०—पेख जण पोखता ग्रगन झाळा पडै, छछाळा सीत मद सुगध छूपै, कपै नवजोवना इसक चाळा करै, फूलवाळा विसक पार फूटै । —लच्छीराम बारहठ

विसकन्या—सं. स्त्री [स विषकन्या] १ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ सभोग करने से सभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर मे एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

२ नाग कन्या ।

उ०—१ दळपति कोई न दूजौ वरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियौ, राव तणै घरि लहीस वर । —दूदौ विसराळ

उ०—२ मैं परणती परखियौ, सूरति पाक सनाह । धडि लडिसी गुडिसी गयद, नीठि पडेसी नाह । नाह नीठि पडिसी खेत माझी निवड, गयद पडिस गहर करड घड भड गहड । ।विढतौ 'जसौ' विसकन्या वाखाणियौ, परणती कथ घो मुरड पहचाणियौ । —हा झा.

रू भे.—विसकन्या, विखकन्या ।

विसकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे)

उ०—राजमहलूं कै ग्रडाव ग्ररस सेती ग्रडै, मनू धवळागिर विसकरमा जडाव सू जडै । जिस नगरी का राव दिल का दरयाव जिसकै भडार परवरदिगार । —र रू

विसकामणि; विसकामणी—स स्त्री. [स. विषकामिनी] नाग कन्या ।

उ०—१ सिणगारी सन्नाह सूं, विसकामणि वरियाम । वरि ग्राई हाला वरण, करण महा जुध काम । काम सग्राम री हाम जुध कामणी, घणा नर जोवती भोमि ग्राई घणी । महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तू, सबळ धड कडतळा घणा सन्नाह सू । —हा झा.

उ०—तूटै हार ग्रयार तुरगम, पहूटति माग ग्रनग पडी । कमधज 'रतनै' स्यूं विसकामणि, चाचरि चवरग पलगि चढि । —दूदौ विसराळ

२ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ सभोग करने से सभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर में एक विशेष प्रकार का विप प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

रू. भे,—विसकामणि, विसकामणी ।

विसकुभ—स पु [स विपकुम्भ] फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से प्रथम योग का नाम ।

विसकुट, विसकूट, विसकूठ—देखो 'विस्कुट' (रू भे)

विसक्ख—१ देखो 'विसिख' (रू भे)

उ०—उभै दळै उचारय, मचै सु मार मारय । विसक्ख पारवारयै, भडा सनाह भारयै । —रा रू.

उ०—२ कर मूठ वनख छूट विसक्खं, लेखा पक्ख मर लक्ख । वध सूर हरक्ख, ग्रोर विलक्ख चाव परक्ख रवि चक्ख ।—रा. रू.

२ देखो 'विसेस' (रू भे)

उ०—१ आठ गुरु पद छद, जिण विद्युन्माळा अक्ख । गुरु लघु क्रम अठ वरग पद, सौ मल्लिक विसक्ख । —र. ज प्र.

उ०—२ भेद च्यार जिण रा भणौ, आद वेलियौ अक्ख । कवी सोहणौ खुडद कह, वळ जागडौ विसक्ख । —र ज प्र

विसक्रमा–स. पु. [स विश्व+कर्मिनि] १ सूर्य, सूरज, भानु । (क कु वो, ना मा)

२ देखो 'विश्वकरमा' (रू भे)

उ०—१ इणि जांइगा बारह दिना रो मुकाम कीजै । ज्यूं इतरा माहे अगनि सिनान करी सति ही आवै । महाराज मानी । हाजी दुलह वधू चालै विगर जाती । वैकुंठनाथ विसक्रमा कूं हुकम किया । —र वचनिका

उ०—२ गज कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतग महल अटाळा । सपेख धाम वाम, विसक्रमा विभ्रम भवेत । —गु रू व.

विसख—देखो 'विसिख' (रू भे)

उ०—१ वहि सुबाह एकरणि बिसख, मारीचै मुरझाय ।
—रामरासो

उ०—२ दिस किरण पूरव अरक दरसै, दिखण कमधज दरसिया । असुराण दळ सिर असख अणगम, विसख घण जिम बरसिया । —रा. रू

उ०—३ आगै सेर विलद सेन सनमुक्ख चलायौ,दळ जादव ऊपरा जाण नाळब दरसायौ । कुहक बाण हथनाळ विसख वरखै तिण वारा, अति सामण वहळा जाण घण मत्तौ धारा —रा रू)

उ०—४ तौ करू अरियण तेण कण कण, हरख मारू विसख हण हण । विकट पुहं मनावछत, गहर गुण गाजै । —र रू

विसखधाम–स पु [स. विशिख धाम] १ तरकश । (अ मा)

विसखपर, विसखपरौ, विसखप्पर–स पु [स. विषकर्पर] १ कीचक के लिये प्रयुक्त विशेषण सूचक शब्द ।

उ०—विसखप्पर कीचका बकु, हिडवु कमीरू मारिउ । लहु बधवि अरजुनि दुन्नि, वार तुहु जीउ ऊगारिउ । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विसखपरौ (रू भे)

विसखुट, विसखूट—देखो 'बिस्कुट' (रू भे.)

विसघातक, विसघाती–वि [स विष+घातक] जिससे विष का प्रभाव दूर हो जाय ।

विसटर –देखो 'विस्टर' (रू भे)

विसदाळ विसटाळु, विसटालु, विसटाळू, विसटाळौ—देखो 'विस्टाळौ' (रू. भे)

उ०—१ केय कहै मिळ आयौ कंठीर । विस्टाळ कहै फोय वहो वीर । जिण वार तमक पावु जवान, विसताळ भडै खंग रीठ वान —पा प्र

उ०—२ जगपत जोय जहाज, कुळ जोड्या कतळत करत । ए विसटाळु आज । दाखै कुण मेलत 'दला' । —गो रू

उ०—३ विसनसिंघ जद भेजिया, विसटाळू उणवार । कमध हूत कहावियां, चोकस सम्माचार । —पे रू

उ०—४ विसटाळू आया वहै, जीद कनै सब जाण । कहियां बूढे रा कथन , बकियौ जायल राण । —पा. प्र

उ०—५ आलोची रातै रे, कहस्या परभातै रे, जातै रहवातै सुख हम तुम सही रे । पाडधारैंड डेरै रे, आलिम पति हेरै रे, विसटाळु घर पाछा फिरै इम कही रे । —प च. चौ.

उ०—६ धरा सहरि ऊधमै, जोध खिजिया जमजाळा । कूभराण औदकै, बीच फेरै विसटाळा , —सू. प्र-

उ०—७ विढै एम वेखियौ, इता एकण घर वाळा । वड वड भडा विचारि, बीच फेरै विसटाळा । —सू. प्र

उ०—८ 'सूर' पान लै साह रा, भयौ करण अखियात । घर मुदफर सिर छत्र धर, विसटाळा री वात । —सू प्र

उ०—९ अम्ह विसटाळै आवियौ, लग ज्या हिज लारै । कटक सुणि अगद कहै, पित तूझ प्रकारै । —सू प्र.

विसटियौ—देखो 'बिसटी' (अल्पा रू. भे)

उ० –वित ले जावै विसटिया, पाण चकारा पाड । मारी ज्यानै मोटवी, सगत असूला चाड । —पा प्र.

विसटी–स पु [स. विष्टि] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणो मे से सातवें करण का नाम ।

२ पुरस्कारहीन या बिना पारिश्रमिक का कार्य, बेगार ।

वि —१ दुष्ट आततायी ।

२ देशद्रोही, उपद्रवी ।

३ डाकू, लुटेरा ।

रू भे.—बिसटी ।

अल्पा ,—विसटियौ ।

विसटौ—देखो विस्ठौ' (रू. भे.)

उ०—कागा केरी चाच ज्यूं, चुगलां केरी जीह । विसटा ज्यू परची बुरी, चूंथै सबही दीह । —वा दा.

विसठ–स. पु [स विषठ] बलराज एव रेवती के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

विसठौ –देखो 'विस्ठौ' (रू भे)

विसण—देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—ब्रह्मा विसण महेसवर तो सेव कराही । गत ग्रमामी ताहरी, को जाणें नाही । —गज उद्धार

विसणाडणौ, विसणाडवौ—देखो 'विणसाणौ, विणसावौ' (रू भे)

विसणाडणहार, हारौ (हारी), विसणाडणियौ—वि० ।
विसणाडिग्रोडौ, विसणाडियोडौ, विसणाडयोडौ—भू० का० कृ० ।
विसणाडीजणौ, विसणाडीजवौ—कर्म वा० ।

विसणाडियोडौ—देखो 'विणसायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री विसणाडियोडी)

विसणाडणौ, विसणाडवौ—देखो 'विणसाणौ, विणसावौ' (रू. भे)

उ०—ग्रलूखानि विसणाडिउ काज, कटक मरावी ग्राव्यउ ग्राज । करइ वात इम सारू राज, ग्रलूखानि जो ग्राणी लाज ।

—का दे. प्र

विसणाडणहार, हारौ (हारी), विसणाडणियौ—वि० ।
विसणाडिग्रोडौ, विसणाडियोडौ, विसणाडयोडौ—भू० का० कृ० ।
विसणाडीजणौ, विसणाडीजवौ—कर्म वा० ।

विसणाडियोडौ—देखो 'विणसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विसणाडियोडी)

विसणु—देखो 'विस्णु' (रू भे)

विसतत्र—स पु [स विपतत्र] साप ग्रादि विषैले जानवर के विष को दूर करने की क्रिया । (वैद्यक)

विसत—देखो 'वहिस्त' (रू. भे)

उ०—ग्रपने काज करै गउ विसमल, जीव सरै पुहचावै । काजी विसत हाथि है तेरे, तो कुल दोजख क्यू जावै । —ग्रनुभववाणी

विसतर—देखो 'विस्तर' (रू भे)

२ देखो 'विस्तार' (रू भे.)

उ०—लाखा भाटी की ग्रजं साखा विसतर का, काटै मोती पोविया वन हैम वर का जल्ला गहाणी जिसा जग कीरत कर का, गावै जिस दा गीतडा ग्रव ही घर घर का ।

—दुरगादत्त बारहठ

विसतरणौ, विसतरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे)

उ०—१ रसना नाम सवद सचरिया, तन मन वचन सहज विसतरिया, उलटि ग्रछर ग्रणग्रछर होई,सुरता बकता लहै न कोई।

—ग्रनुभववाणी

उ०—२ विसतरी वात सारी विसव, ग्रणकारी उतपात सी । ग्रजमेर कान ग्रवरग नै, सुण लग्गी ग्रत घात सी । —रा रू

उ०—३ महा ढहोलो मेदनी, विसतरियौ तिण वार । साह तपस्या ग्रागलो, ग्रकब्बर सेन ग्रपार । —रा रू.

उ०—४ गम पडै एम इण गीत री, इम पिंगळ कवि उचरै । हेक गुर घटै दुइ लुघ दुई तिम तिम नाम विसतरै । —पिं प्र.

उ०—५ कमधज्ज तजै मनमोह कायाचो वीर तिसोह विसतरिय तत लै निरवाण क राज तियाग, गोपीचद भरत्थरिय ।

—गु रू. ब

उ०—६ दाडिमी बीज विसतरिया दीसै, निउछावरि नाखिया नग । चरणे लुचित खग फळ चुबित, मधु मुंचति सीचति मग ।

—वेलि

विसतरणहार, हारौ (हारी), विसतरणियौ—वि० ।
विसतरिग्रोडौ, विसतरियोडौ, विसतरयोडौ—भू० का० कृ० ।
विसतरीजणौ, विसतरीजवौ—कर्म, भाव वा० ।

विसतरवद—देखो 'विस्तरवद' (रू भे)

विसतरियोडौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विसतरियोडी)

विसतरियौ, विसतरौ—देखो 'बिस्तर' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—पाछो पडउथलो मिल्यो—कदै ही नही ! कदै ही नही ! तो म्हे ग्रठै क्यू हू ? दूजी दुनिया बळगी के ? एक दिन री बात थोडी ही है ? जिंदडी रो सवाल है । भूली बोरिया-विसतरा उठाया, वाध्या ग्रर चढी, रातरै पल्लै ! पेमजी ग्रापरै तल्लै-बल्लै ।

—दसदोख

विसतार—स पु—१ समूह, झुण्ड । (ग्र मा)

उ०—सीकोतरि सवकणी प्रेत डवकणी ग्रपारा, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारां । गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कक को गिणै, ग्रास पळ सभळ ग्राया । —रा रू

२ देखो 'विस्तार' (रू भे)

उ०—१ सु वसत ग्राइ हित देने दुख दूरि कीयो । वेली थी सु व्याई । साखा व्रख्या की पसरी छै । सु जाणा वाहा की ग्रोलादि वैसाख हुई । वैसाख मासि साखा को विसतार हुग्रो । —वेलि टी

उ०—२ राम नाम निज मूळ है, ग्रोर सकळ विसतार । जन-हरिया फल मुगति कु, लीजै सार सभार । —ग्रनुभववाणी

उ०—३ तीन लोक मडप विसतारा, जा विच ग्राय जाय ससारा । वाकै परै ग्रभगीराया, ग्रासण एक ग्रटल मट छाया ।

—ग्रनुभववाणी

उ०—४ ग्रोरगसा पातसा ग्रासुर ग्रवतार, तपस्या कै तेजपुज एक से विसतार । माप का विहाई सा प्रताप का निदान, मारतड ग्रागै जिसी जोतसी जिहान । —रा रू

उ०—५ पौळि पौळि उच्छव प्रबळ, वेदोकति विसतार। राजा सखत विराजियौ, सुभ चौकीस गार। —रा रू

उ०—६ वडी रिधि तणै विसतारै, पुर बाहिर हिव पधारै। आवै घरता आणद, जिहा त्रिगडै स्रीवीर जिणद। —ध व ग.

उ०—७ आठ गायत्री ब्रह्मा नै दीवी, रजोगुण विसतारा। चार वेद पिछाडी दीना, कर उतपत्ति ससारा।

—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—८ दमिटै चोर मारग्ग, जोर प्रगटै व्यापारां, वधि वसती रन, वनै वेळ वरती ऊदारा। वढै क्रोध विसतार,रीछ सावर घर रोणा। जठै सिंघ सद्ता, तठै गरजंत विलोणा। —रा रू

उ०—९ आगै जाइ गुजराति री वेढि की। वेढि जीपि अर पातिसाहजी सीकरी फतेहपुर पधारिया। इण वात री विसतार आगै कहीजसी। —द. वि

विसतारक—देखो 'विस्तारक' (रू भे)

विसतारण—देखो 'विस्तारण' (रू भे)

उ०—१ कुळ देवी ग्रह पूज सकारण,विजन नव नेवज विसतारण। धूप अगर दीपक सुभ धारण, अन देवा घन सेव अपारण।

—रा रू

उ०—२ घर अवर ढकियण, वेद ब्रह्मा विसतारण। त्रिभुवन तारण-तरण, सरण असरण साधारण। —ह र

विसतारणौ, विसतारबौ—देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू भे)

उ०—१ चुगली विसतारत चुगल, साप्रत होय सचेत। सौ मुरदार सरीर री, लट मुख मांझल लेत। —बा दा

उ०—२ वात वळै असुरा विसतारी, घर दिस असट दिलासा धारी। कितराई सुण अमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा। —रा रू

उ०—३ पर हूता जिम पसर, धरा फणधर उर धारै। पवन जोर पेरियौ, वहै वद्दळ विसतारै। नाग राग पेरियौ, प्राण पैला वलि थप्पै। दास हुकम पेरियौ, जास पति धरै सजप्पै। —रा रू

उ०—४ भार उतारै भोमि, अवधि संदेह उधारै। वसै राम वैकुंठ, विमळ जग जस विसतारै। —सू प्र

उ०—५ हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकता नवि हारै। सुडादड सबल विसतारै, मद उनमत्ता मारै हो। —वि कु

विसतारणहार, हारौ (हारी), विसतारणियौ—वि०।

विसतारिग्रोडौ, विसतारियोडौ, विसतारयोडौ—भू० का० कृ०।

विसतारीजणौ, विसतारीजबौ—कर्म वा०।

विसतारियोडौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विसतारियोडी)

विसतारौ—देखो 'विस्तारौ' (रू. भे)

विसतारौ—देखो 'विस्तार' (रू. भे)

उ०—चारित्र ऊपर चाव हमारौ, वचन न लोप्यौ एकज थारौ। तिण सु एह हुवौ विसतारौ, पिण विरक्त नै कुण राखणहारौ।

—जयवाणी

विसत्तरणौ, विसत्तरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—करि थान छठै प्राकृत कहू, विधि आ घणी विसत्तरू। सर रचि प्रताप 'अभमाल सह,' इम खटभाखा उच्चरू।

—सू प्र.

विसत्तरणहार, हारौ, (हारी), विसत्तरणियौ—वि०।

विसत्तरिग्रोडौ, विसत्तरियोडौ, बिसत्तरयोडौ—भू० का० कृ०।

विसत्तरीजणौ, विसत्तरीजबौ—भाव वा०।

विसत्तरियोडौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विसत्तरियोडी)

विसथरणौ, विसथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू भे)

उ०—मरदिया जेम जगमल्लमल्ल, ढढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, सभळइ सत्त विसथरई वत्त।

—रा ज सी

विसथरणहार, हारौ (हारी), विसथरणियौ—वि०।

विसथरिग्रोडौ, विसथरियोडौ, विसथरयोडौ—भू० का० कृ०।

विसथरीजणौ, विसथरीजबौ—भाव वा०।

विसथरियोडौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विसथरियोडी)

विसथार—देखो 'विस्तार' (रू भे)

उ०—१ नमौ नर सुरा नाथ निरगुण नरेसं, नमौ मेरु धारै हुग्रौ नाग सेसु। नमौ विसन विसथार अधिकौ वणायौ, निमौ जोनि ब्रह्मा जिसौ पुरख जायौ। —पी ग्र

उ०—२ करतार मेह करति, ब्रम चिहु रसा वरसति। परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार। —पी. ग्र

विसथारणौ, विसथारबौ—देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू भे)

विसथारणहार, हारौ (हारी), विसथारणियौ—वि०।

विसथारिग्रोडौ विसथारियोडौ, विसथारयोडौ—भू० का० कृ०।

विसथारीजणौ, विसथारीजबौ—कर्म वा०।

विसथारियोडौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विसथारियोडी)

विसद–वि. [स विशद] १ निर्मल, साफ, स्वच्छ, पवित्र।

उ०—कह कारखाना गिणत कुण कुण, सभमैं तिहूलोक सुण सुण। विसद जग उजवाळ विरदा, सत्रा साफ़ण सूर।
—र. रू

२ सफेद रंग का, चमकीला, उज्जवल (अ मा., ना. मा, ह. ना. मा)

३ स्पष्ट।

४ शान्त, स्थिर, निश्चिन्त।

उ०—सुखारथी स्वारथी जे स्वसुख दुख प्रारथी वच सदैं, वडै जी विद्यारथी विसद परमारथी वच सदैं। प्रचड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमंड प्रद प्रभौ, वितड प्रोदृड प्रनत दुख खड प्रद विभौ —ऊ. का

५ सुन्दर, मनोहर।

स पु—१ सफेद रंग।

२ शब्द। (अ. मा)

३ जयद्रथ राजा का पुत्र एव सेनजित राजा का पिता एक राजा।

रू भे—विसद।

विसदता-स स्त्री [स विशद+ता प्रत्य] विशद होने की अवस्था या भाव।

विसदसरीर-स पु [स विशद+शरीर] चन्द्रमा, चान्द। (ना. मा)

विसधर-स पु [स विष+धर] १ सर्प, साप।

उ०—हुण विसधर विसधर बचो, आग बुझाय अगार। पिसण मार सुत पिसण रो, असमझ लियो उवार। —बा. दा

२ गोह।

३ शेपनाग।

४ महादेव, शिव, शंकर।

रू भे—व्रखधर, वखधारी, विक्खधर, विग्वधर, विखहर, विसधर, विसहर, विक्खहर, विखधर, विखधार, विगधारी, विखहर, विसधार, विसधारी।

विसधात्री-स स्त्री.—मनसादेवी जो जरत्कारु ऋषि की स्त्री थी।

विसन-स. पु [स. वैश्वानर] १ आग, अग्नि।

उ०—मैं तो प्रीत करी परमातम, पावक देख पतगा। परमातम पर दुख निवारै, उ जळत विसन कै सगा। —अनुभववाणी

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे) (ना मा, ह ना मा)

उ०-१ राम नाम सब ही कुं भाख्यो, ब्रह्मा विसन महेसुर भाख्यो। सोई नाव कह्यो पारबती, आयो भेद रिख नारद ती।
—अनुभववाणी

उ०—२ भगवत सुतण हुओ अहुँ भुवण, घण दीहा लग नाम घणो। ब्रह्मा विसन महेस थदीतो, तप तुगिम जस तूझ तणो।
—गोपाळ मीसण

उ०—३ ताण मूछ तोलै तिजड, विसन सकति कर वद। कूच नगारा हुय कटक, चवै हुकम जयचंद। —सू. प्र.

उ०—४ सुणै पोकार विसन सळसळिया, रत चखि भ्रकट कोट घोम रळिया। प्रळै काळ रो धिखतो पावक, प्रगटै जोति पिंड प्रम भावक। —मा वचनिका

उ०—५ ब्रह्मा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वप्प किय। रिदय निलाट अरि नाभि हू, ब्रह्मा विसन महेस थिय।
—रा. वसावळी

३ देखो व्यसन' (रू. भे)

उ०—१ कइ अम्हे सत विसन आचरिया, कइ परनदा कीधी। कइ अम्है दीनदया नवि पाली, लाच अयुगती लीधी।—का. दे प्र.

उ०—२ एक सहर, तै माहे वडो राजा। पिण राजा नू सिकार रो घणो विसन। नित्य सिकार चढै। मारै तो हेक हिरण पिण सारी ही रोटी रा हिरण येचै, चरण देवै नहीं।
—बूढी ठग राजा री वात

उ०—३ माफी खिणक मिजाज, वै अदवी सातू विसन। लोभ घणो कम लाज, पैला घर वांछै पिसण। —बा. दा.

उ०—४ जग माफ़ल चुगली जिसो; हींण विसन अन है न। विण चुगली भुगतै विया, चुगली कीधा चैन। —बा. दा.

विसनदेव - देखो विस्णु'

उ०—नागै हुय असनान कराया, विसनदेव का नाव धराया। तुं तो आस पास कु नाळै, अलख रह्यो आखि दै ठाळै।
—अनुभववाणी

विसननाथ—देखो 'विस्णु'।

उ०—नरा नाथ वाजता नगारा, आयो पुहकर वळा अपारा। विसननाथ आया दिन वळिया, पुहकर गुरा तणा दुख पुळिया।
—रा. रू.

विसनपथ - देखो 'विस्णुपथ' (रू भे)

विसनपद—देखो विस्णुपद' (रू भे.) (अ मा, ह ना मा)

विसनपरी—देखो विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

विसनपरो—देखो 'विस्णुपुरो' (रू भे.)

उ०—भूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का कांम। हरीया सुवचन साचका, विसनपरा विसराम। —अनुभववाणी

विसनपुर—देखो विस्णुपुरो' (रू भे)

विसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू भे)

विसनपुरो—देखो 'विस्णुपुरो (रू. भे.)

विसनप्रिया—देखो 'विस्णुप्रिया' (रू. भे)

विसनर, विसनरु—१ देखो 'वैस्वानर' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ दूखणिया गदबडै, घाव डूगा घळ जावै। विसनर सू जळ जाय, लाल लोई कढ आवै। जळ मे पान उकाळ, धपटवा घाव कुवावै। कीडा पडै न कोय, पीड आखी झड जावै।
—दसदेव

उ०—२ विहगै हुवो न चीनो विसनर, भव ही तणै न आयो भागि। घड 'धमळोत' तणी खग-धारा, लिगि लिगि गयो अगारा लागि। —ईसरदास बारहठ

उ०—३ राति चालइ राउ मागि सुरगह कुणवि सउ, दियउ पुरोहितु दाउ लाखहरइ विसनरु ठवइ। —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—सिव ब्रह्मा विसनर कहै, सत भरै सब साखि। राम नाम एको भला, हरीया हिरदै राखि। —अनुभववाणी

विसनसामी—स. पु—वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी।

उ०—१ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला तो खान कटणा सु हुयो थो नै पछै मोती धाई करायो तिण मे बेरी १८६६ मे विसनसामियां सार, सामल होय नै कराई। —मारवाड री ख्यात

विसनासन—स पु. [स. विस्णु+आसन] १ गरुड।

२ शेषनाग।

वि. पु [स विष+नाशन्] विष का नाश करने वाला।

विसनिर, विसनिरु—देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

विसनी, विसनीउ—देखो 'व्यसनी' (रू भे)

उ०—१ विसन बिना दस बीस बरस, विच मरणो सूरग सिधाणो। विसनी नर सौ वरख जियै वपु, पूगै नरक पयाणो।
—ऊ का

उ०—२ गबची धाइ गालडा, अनइ करमाइ काय। आगलि ऊभउ विसनीउ, थूंकत थूकत जाइ। —मा. का प्र

विसनु—देखो 'विस्णु' (रू भे.) (अ मा)

विसनुकवच—देखो 'विसनुपजर'।

विसनुपजन, विसनुपजर—स पु [स विष्णु+पजर] १ विष्णुस्तोत्र जो रक्षार्थ पढा जाता है।

२ विष्णुस्तोत्र जो तावीज के रूप मे भुजा पर धारण किया जाता है।

रू भे.—पजरविसन, पजरविसनु।

विसनोई—स. पु—१ एक सम्प्रदाय विशेष, जिसके प्रवर्त्तक जाभोजी थे।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे—विसनोई, विस्नोई।

विसनौ—देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—विन भजन कहे तूं विसनौ, वडौ थूळ सरिखौ छा। पीरदास कूड बोलै प्रभु, दास नही कहै दास छा। —पी. ग्र.

विसन्न—१ देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—१ क्रपाळ विसाळ सिंघाळ किमन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस। —ह र.

उ०—२ वदै पग लच्छि सहेत विसन्न, समीपमुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तूझ तणौ अत भाग। —सू प्र.

उ०—३ उदोत तपोनिध त्रैगुण ईम, अजीत जरा अत जोग अघीस। विसन्न विमोह विसव्व विग्यान, रतीपति तात प्रकत्त राजान। —ह. र.

२ देखो 'व्यसन' (रू भे)

उ०—जावै साहस जाणियो, ईखै आकत तन्न। वाघ डरै नह वैर सूं, वाघा वैर विसन्न। —बा दा

विसन्नर—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे)

२ देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

उ०—फौजां गजडवर लीण लसक्कर दक्खण उत्तर आहूडियं। वहै बाण विसन्नर धिक्खियो धोमर ताळ भयकर तावडियं।
—गु रू ब

विसन्नु—देखो 'विस्णु' (रू भे)

विसपत, विसपति विसपती—१ देखो विस्वपति' (रू. भे)

उ०—या ओसर हरि का होय रहियै भवर रच्या सो भूधर वहिए। नाव विसभर विसपति रावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा। —ह. पु वा

२ देखो 'ब्रहस्पति' (रू भे.)

विसपाळ—देखो 'विस्वपाळ' (रू भे)

उ०—१ चद्र सूर किया दोय दीपक, करि तारामडळ करितार। अनत लोक विसपाळ विसभर, सकळ सछाया तो सार।
—ह पु. वा.

उ०—२ अरि भजन अनरथ हरन गरब हरन गोपाळ। जन हरिदास अकरन करन हरि अकळ सकळ विसपाळ। हरि अकळ सकळ विसपाळ नाथ निरभै निरधार। निराकार निरलेप वार नहिं लाभै पार। —ह पु वा.

विसप्रसून—स. पु. [स. विषप्रसून] कमल। (ह ना. मा.)

रू भे.—विसप्रसून।

विसप्रस्थ—स. पु [स. विषप्रस्थ] एक पर्वत का नाम ।

विसफळ—स पु [स. विष+फल] १ वह जहरीला फल जिसके सेवन करने पर सेवनकर्त्ता की मृत्यु हो जाती है ।

रू भे.—विसफळ ।

विसफोटक—देखो 'विस्फोटक' (रू. भे)

विसव, विसव्व—देखो 'विस्व' (रू. भे)

उ०—उदोत तपोनिध ग्रेगुण ईस, अजीत जराभ्रत जोग अघीस । विसव्र विमोह विसव्व विग्यान, रती पति तात प्रकत्त राजान । —ह र

विसवावीस—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

उ०—ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि । बुद्धि ग्रहा विसवावीस, अतकरण कहीजै ईस । —पी. ग्र.

विसमत्र—स. पु [स. विष+मत्र] १ विष उतारने वाला मत्र ।

२ उक्त मत्र को जानने वाला व्यक्ति ।

विसम—वि [स विषम] १ जो समान न हो, असमान ।

२ जिसमे दो का भाग देने पर एक शेष बचे ।

३ जो सरल न हो, कठिन, रहस्यमय ।

उ०—ग्रव वार गग तोइ धोई ग्रग करि स्रीक्रसन नणा कँवार । उत्तम होई जनम क्रम ग्रातम, ग्रगम तरै दधि विसम ससार । —ह. ना मा.

४ जो व्यवस्थित न हो ग्रव्यवस्थित ।

५ जहा कोई नही जा सके, दुर्गम्य ।

उ०—वदइ इसी करी ग्ररदास इणि गढि राउलनउ छइ वास । विसमउ गढ विसमा झूझार, ऊपरि विसमा पोलिपगार । —का दे प्र.

६ भयकर, भीषण ।

उ०—१ उलकापात हूउ विकराळ, विसम धूम धूधूइ विराळ । वलिउ कटक छाडिउ मेल्हाण, ढीली भणी च ल्यउ सुरताण । —का दे प्र

उ०—२ सत्य कू छेदिउ वलिहिं, सीसु तसु दिणी चऊदमइ, रातिहिं झूझइ विसम, झूंझ गुरु पडइ कीमइ । —सालिभद्रसूरि

उ०—३ विसम ढाक स ढूकस ढमढमी भरहरी भर भेरि विहामणी । उच्चरि तुररी कुरुरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्धमी । —सालिसूरि

७ कष्ट देने वाला, कष्टप्रद ।

८ टेढा, तिरछा, वाका ।

९ प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत ।

१० ग्रद्भुत, ग्रनोखा ।

११ वुद्धिमान, चतुर, चालाक ।

१२ तीव्र, तेज ।

१३ वीर, वहादुर ।

१४ जवरदस्त, जोरदार ।

उ०—वदइ इसी करी ग्ररदास, इणि गढि राउलनउ छइ वास । विसमउ गढ विसमा झूझार, ऊपरि विसमा पोलिपगार । —का. दे. प्र.

१५ ऊवड-खावड, ग्रसमतल ।

उ०—सुगुरू साथिय हीण घणु भमिया, विसम वाट किहाइ न वीसमिया । वसइ जे जिनमदिरि सीयलइ, विहु परै तीहु तापु सही टलइ । —जयसेखर सूरि

१६ दृढ, मजवूत ।

१७ उल्टा, विपरीत ।

उ०—तै जाणी हु ताहरी, थई रही छू धीर । ग्रक्षर सहू कीजै समा, विसमा टाली वीर । —मा का प्र.

१८ टेढा, ग्रनुचित, वुरा, कर्ण कटु ।

उ०—पातिसाह मूछइ वळ घाली, विसमा वोल्या वोल । जे को माहरी ग्राण न मानइ, चूकइ ठाम निठोल । —का. दे. प्र.

स पु—१ वह सख्या जो दो से वरावर-वरावर नही वटे ।

२ तकलीफ, मुसीवत, विपत्ति, सकट ।

३ फौज, सेना ।

४ ग्रग्नि, ग्राग ।

५ वायु, पवन, हवा ।

६ शिव, शकर, महादेव ।

७ वह वर्णवृत्त जिसके चारो चरणो मे समान वर्ण न होकर किसी चरण मे ग्रधिक व किसी चरण मे कम हो ।

८ दो परस्पर विरोधी वस्तुग्रो या दोनो की विषमताग्रो का वर्णन करने वाला एक प्रकार ग्रर्थालकार विशेष । (साहित्य)

९ एक प्रकार का ताल विशेष । (सगीत)

१० वायु प्रकोप के कारण उत्पन्न होने वाली चार प्रकार की जठराग्नियो मे से एक ।

[स. विषम] ११ भगवान श्रीविष्णु का एक नामान्तर ।

रू भे —ग्रखम, विखम, विखमी, विस, विसम, वीसम, वखम, वखमी, विखत, विक्ख, विक्खम, विक्खमी, विक्खम्म, विक्खम्मी, विखम, विखमी, विख्म्म, विखम्मी, विसमउ, विसमिउ, विसमी, विसमु, विसमै, विसमो, विसम्म, विसम्मी, विसम्य, विस्सम, वीसम, वीसमउ, वीसमी, वीसमै वीसमो ।

विसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ गढ गिरुउ ग्रनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ महागज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसा, गरूई पोलि, निविड

कमाड, लोहमोगल, विजाहरि तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि, ''।
—व. स

उ०—२ वदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउळनउ छइ वास।
विसमउ गढ विसमा झूझार, ऊपरि विसमा पोळिपगार।
—का. दे प्र

विसमगत, विसमगति, विसमगती, विसमगत्त, विसमगत्ति, विसमगत्ती—स. स्त्री —विकटस्थिति।

उ०—हलवळ दळ अकळ 'जसा' हीलोहळ, झळहळ कूंत हद बीज भत्त। झळहळ खाग दोयण स झाडण, गढ अरियण घरा विसमगत्त। —सादूळजी खिडियो

रू. भे —वसमगत, वसमगति, विखमगत, विखमगति।

विसमजुर, विसमज्वर—स पु. [स विषम+ज्वर] प्राय वर्षा ऋतु मे होने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमे यकृत और तिल्ली बढ जाती है।

रू. भे —विखमजुर, विखमज्वर, विखमजुर, विखमज्वर।

विसमत—स स्त्री [स विष+मति] दुर्बुद्धि, खराब बुद्धि।

वि.—१ ऊबड खाबड, असमतल।
२ कठिन या दुर्गम्य।
३ सकुचित, सिकुडा हुआ।
देखो 'विस्मित' (रू भे)
रू भे —विसमत, विसममत।

विसमता—स स्त्री [स विषम+ता प्रत्य] विषम होने की अवस्था या भाव।

उ०—अठै असिथपाल रा अन्वय मैं 'गभीर' थी दसमी पीढी राजकुमार देवसिंह हुवो जिकण चालुक वस मैं भोलाराय भीम थी तेवीसमी पीढी गोइदराज टोडा री अधीस हुवो जिकण रा अढारह अगजा मैं बडा ही बडा कुंभराज कन्हड दो ही वधवा नू आपरा सगोत्र गोळवाळ जसराज री दो ही पुत्रिया विवाही इण कारण मागध लोका रा घणा ग्रथा मैं एक ही लेख जाणि सोहो प्रमाण इण ग्रथ मे राखियो परंतु पीढिया री विसेस ही विसमता हू विरोध आवै। —व भा

रू भे —विखमता।

विसमनयण, विसमनयन—स. पु [स. विषमनयन] शिव, महादेव।

रू भे —विखमनयण, विखमनैण, विखमनयण, विसमनैण।

विसमनेतर, विसमनेत्र, विसमनैण—स पु [स विषमनेत्र] शिव, महादेव।

रू भे.—विखमनेत्र, विखमनेत्र।

विसमपण, विसमपणौ—स पु [स विषम+रा प्र पण, पणो] विषम होने की अवस्था या भाव, विषमता। (अमरत)

विसमबाण—स. पु. [स विसम+बाण] कामदेव के पाच बाणो मे से एक बाण।

रू. भे —विखमबाण, विखमवाण, विसमवाण।

विसममत—देखो 'विसमत' (रू भे)

विसमय—स पु [स. वि =बुरा+समय] बुरा समय, खराब समय।

वि.—[स. विष+मय] १ विषयुक्त, जहरयुक्त।

रू. भे —विसमय, विसमै, विस्मय।

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे)

उ०—कमनै तीरन तानिकै पखरैत बेधत पानि कै 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुम अभय अतिमय विसय चय भुव वलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अजय सयकर अखय जय अय उभय सय'पय ह्रदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार। —व. भा

विसमर—देखो 'विसमरी' (रू भे)

विसमरण, विसमरमण—देखो 'विस्मरण' (रू भे)

विसमरणौ, विसमरबौ—देखो 'विस्मरणौ, विस्मरबौ' (रू भे)

विसमरणहार, हारौ (हारी), विसमरणियौ—वि०।
विसमरिओड़ौ, विसमरियोड़ौ, विसमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विसमरीजणौ, विसमरीजबौ—कर्म वा०।

विसमरियोड़ौ—देखो 'विस्मरियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री विसमरियोड़ी)

विसमरौ—स पु. [स विषमर] विषैला जन्तु, छिपकली। (अमरत)

रू भे.—विसमर, विखमरी, विसमर।

विसमल, विसमला, विसमल्ला, विसमल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू भे)

उ०—१ मूला सूंनित तै, करी तै कीया विसमल। ग्वलडी गला कटाय कै, क्या कीया वेकल। —अनुभववाणी
उ०—२ काया विसमल क्या करै, मन कु विसमल कीन। हरीया मन विसमल विना आतम सधै न चीन। —अनुभववाणी
उ०—३ अपनै काज करै गउ विसमल, जीव सरै पुंहचावै। काजी विसत हाथि है तेरै, तौ कुल दोजख क्यु जावै।
—अनुभववाणी

उ०—४ अपनै हाथि कीया मन मानी, हरि का कीया दाय नही आनी। मारै गऊ कहैं विसमला, यु तौ खुसी खुदाय न अला।
—अनुभववाणी

विसमवाण—देखो 'विसमबाण' (रू भे)

विसमविसिख—स. पु [स विषम+विशिख] कामदेव का एक नाम।

विसमव्रत–स पु [स विषम+वृत्त] एक प्रकार का वृत्त विशेष जिसके चारो चरणो मे पद असमान हों।

विसमसि–स. पु [स.] आलम्बन सहारा।

उ०—तं मिच्छदिट्ठी मिथ्यात्वी द्रस्टि जाणिज्ज जाणिवउ, जे पतित धरम हुता भ्रस्ट हूया तेहना आलम्बन ओठम लिइ, भ्रस्टनो विसमसि करइ। —षष्ठीशतक

विसमागनी, विसमाग्नि–स स्त्री [स. विषम+ अग्नि] वैद्यक मे चार प्रकार की जठराग्नियो में से एक जठराग्नि।

विसमाजुद्ध, विसमाजुध, विसमाजुध्ध विसमायुद्ध, विसमायुध–स पु [स विषमायुद्ध] कामदेव का नामान्तर।

रू भे —विखमाजुध, विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध।

विसमासन–स पु [स विषमाशन] ठीक समय पर भोजन न करके थोडा पहले या थोडा पीछे भोजन करना जिससे शरीर मे आलस्य उत्पन्न होता है। (वैद्यक)

विसमिउ—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—विसमिउ कटक कौरव केरउ, दैव चक्र किम काइ फेरिउ। नारि सडरि सर सप्रति आवइ, कइ अगास पडतां एउ भावइ। —सालिसूरि

विसमिल, विसमिला, विसमिल्ला, विसमिल्लाह—देखो 'विस्मिल्लाह' (रू भे)

विसमित—देखो 'विस्मित' (रू भे)

विसमी—देखो विसम' (रू भे)

उ०—१ रतनसेन साथै हुओ, विसमी विसमी ठोड। देखाणो सुलतान नै, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड। —प च चौ

उ०—२ चमरी जिम चल लखमीय, विसमीय विसय नी वात। नारीय नेह विण दीवियं, जीविय बहु उपघात। —जयसेखर सूरि

विसमु—देखो 'विसम' (रू. भे)

उ०—१ दैव जिहां विसमु थयु, तव नही काई बलप्राण। वली वेला सरव साचूं, जाणनें निरवाणि। —नळाख्यान

उ०—२ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमरो, करणिहिं सरिसउ माडइ वयरो। बै माथा जिह्व खर्व वहेई, करयलि विसमु घणुहु धरेई। —सालिसूरि

विसमै—१ देखो 'विस्मय' (रू भे.)

उ०—१ आवी खबर अचोतिया, विसमै जैसी वत्त। तद राठौड़ बूझियो, 'दुरगै' आसावत्त। —रा रू

उ०—२ मेडतिया 'मधकर' हर मेडतै सहायक, साहस के सादूळ वस के नायक। जाकी रीत को प्रमाण हापुर दरसावै, कहनै मैं विसमै सी देखैं वन आवै। —रा. रू

२ देखो 'विस्मित' (रू. भे)

उ०—रात घडी दोय गया थाळी मे सेर च्यार वस्त घात, रुमाल सू ढक राजा री हजूर गयो। जाय मुजरो कियो। थाळी मुंहडै आगै मेल्ही। राजा साम्हो देख विसमै रह्यो। —राजा भोज अर खापरै चोर री वात

३ देखो 'विसम' (रू भे)

उ० –१ सांम धरम रत्ता पण साचै, वयण दूठ मुख झूठ न वाचै। पडतौ वयण ग्रहै निज पाणी, विसमै समै एक रस वाणी। —रा. रू

उ०—२ 'सोनागिर' चापावत हाथ खग तोलै, विसमै मैं द्रढ देण कोप वैण बोलै। समै पाए सूर सोई वीरता विचारै, समै के निदान आए आसमान धारै। —रा. रू.

विसमौ—१ देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—गढ गरुड अनइ विसमौ जीह तणी पाय पातालि पइठउ, परवतनइ स ग, बइठउ उच्चस्तर पोलि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पद्धति,' । —व स

२ देखो 'विस्मय' (रू भे.)

विसम्म, विसम्मौ—देखो 'विसम' (रू भे.)

विसम्य—१ देखो 'विसम (रू भे.)

उ०—दसा विसम्य सम्य हा अगम्य गम्य है नहीं, रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नही। गवाक्ष तें अगाक्ष की कटाक्ष तें गिरै नही, थिराभ चद्रसाल चद्रसाल पै थिरै नही। —ऊ का.

२ देखो विस्मय' (रू भे)

विसय–स पु [स. विषय] १ कोई तत्व या बात जो विचारणीय, विवेचनीय या अध्ययन करने योग्य हो।

२ स्त्री के साथ किया जाने वाला सभोग या मैथुन।

उ०—१ धुरतै सील फरसधर धारघो, विसय विकार विहाई। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार इकीस बनाई। —ऊ- का

उ०—२ वैरागी विसया रस त्यागै, रागी कर आसक्ती लागै। दोई तजै सो निरदावै, सम द्रस्टि थावै। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ बिलार विसया लालची रे, ताहि भोजन देत। दीन हीन व्है छुधा रत सै, रांम नाम न लेत। —मीरा

उ०—४ परदारा सु पापियउ, भोगवइ काम भोग। विसया रस लुब्धउ थकउ, न वीहइ पर लोग। —स कु.

३ बडा प्रदेश या राज्य।

उ०—कमनैत तीरन तानिकै पखरैत वेधत पानि के 'बुध' तनय

हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुम प्रभय अतिसय विसय चय भुव वलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय, उदय रवि नय-निलय प्रतिरय अजय खयकर प्रखय जय भय उभय सय पय हृदय प्रपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार ।
—व. भा.

४ भोग-विलास व मैथुन से प्राप्त आनन्द ।
५ पचज्ञानेन्द्रियो से प्राप्त आनन्द या सुख ।
६ जगह, स्थान ।
७ वीर्य, बीज ।
८ प्रियतम या पति ।
९ सम्पत्ति ।
१० सर्प, साप ।
११ सल्तनत, बादशाहत ।
१२ सासारिक पदार्थ ।
क्रि वि —१ लिए, प्रति ।
२ मध्य, अन्दर, मे ।
रू भे.—विखै, विखइ, विसई, विसिया, वखै, विख, विखय, विखिया, विखै, विस, विसइ, विसई, विसिया, विसै ।

विसयक–वि [स विषयक] विषय का, विषय से सम्बन्धित ।
रू. भे.—विसयक ।

विसया–स. स्त्री. [स विषया] चन्दनावती नगरी के दुष्ट वुद्धिप्रधान की कन्या का नाम ।

विसयी–स. पु [स. विषयिन्] १ कामदेव ।
२ भोग-विलास मे बहुत अधिक आसक्त व्यक्ति, कामी व्यक्ति ।
३ बहुत अधिक विषय या धन सम्पत्ति वाला व्यक्ति, धनवान ।
रू. भे.—विसई, विसइ, विसई ।

विसर–स. पु —१ अपशब्द, कटु शब्द, अपमान सूचक शब्द ।
उ०—असुर बोलियौ विसर पतसाह मुह आगळी, राज विण खत्री ध्रम कवण राखै । दूसरा 'माल' वरदान तोना देळ, अमर' मौ काढ जमदाढ भाखै ।
—अमरसिंघराठौड री गीत
२ अप्रशसासूचक कविता, निन्दा सूचक या दुत्कारयुक्त कविता ।
उ०—१ सुकव आविया नजर मेळाय भटकै सदा, कसर सूं चलै मछरा कराता । अदावा विसर विण लागै नह आमटी, तुरी विण चांमटी न वहै ताता ।
—पीरदान आढौ
उ०—२ पराणी विसर वाजै घणा ऊतरा, पैड चालै नही पैल पूरा । रीत वळ झाडै थाका सको रामणा, भांमणा लेऊ धुर जूप भूरा ।
—हरनाथसिंह चापावत री गीत
३ एक प्रकार का विषैला जन्तु विशेष ।
४ युद्ध, समर ।

५ एक प्रकार का घोडे का चारजामा ।
[स. वि. सर] ६ समूह, झुण्ड । (अ मा)
वि.—भयकर, भयावह ।
उ०—१ विहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर । थरर लका जिसा थाहर, विसर अवक वाज ।
—र ज. प्र
उ०—२ विसरि गडगडै तूर सूरा चढै वीर रसि, अछर वरिवा करै चित उमेखा । सामि छळ देस छळ वेस छळ सामठा, सापना साहरै भागि सेखा ।
—सेखा दुर्जनसालोत पातावत राठौड री गीत
रू भे.—विसर, वसर, विस्वर, वीसर ।

विसरग–स पु. [स विसर्ग] १ व्याकरण के अनुसार ऊपर नीचे अर्थात खडे दो बिन्दुओ वाला वह वर्ण जिनका उच्चारण अर्द्ध 'ह' के समान होता है ।
२ दान ।
३ सहार, नाश ।

विसरण, विसरन–स पु [सं. विसर्जन] १ परित्याग, त्याग ।
२ दान या भेंट । (अ मा, ह नां. मा.)
३ प्रस्थान, विदा ।
४ मल का परित्याग करने की क्रिया ।
५ पूजन मे अतिम उपचार, षोडशोपचार ।
६ सभा आदि की अन्तिम कार्यवाही के बाद सभा के विसरजन की क्रिया ।
७ उक्त के आधार पर पूजनोपरान्त देव मूर्ति का जलाशय मे किया जाने वाला प्रवाह ।
८ विस्मरण, भूल ।
९ समूह, व्यूह । (अ मा)
वि. [स. विशरण] आश्रयहीन, अनाथ ।

विसरणौ, विसरबौ–क्रि अ —१ गल्ती होना ।
२ फैलना ।
उ०—एक आवाहिया देवराए, गाजि अहमद घाए निहाए । खीजिया जोध वाहे खडग, विसरि किरि जीह वासिग्ग नग्ग ।
—गु रू ब.
३ कुपित होना, क्रोधयुक्त होना ।
उ०—वाही गजसिंघोत विसरिग्रै, असुरा फुटा अफर अणी । मुगळा तणी पडी किर माथै, त्रिजडी तडित अकाळ तणी ।
—केसोदास गाडण
४ विस्मरण होना, भूलना ।
उ०—१ वर उपदेस करै विन पूछ्या, निगमा उगत उचरना ।

हमा होय चुगो मुक्तावळ, विसया रस विसरला।
—श्रीसुजगमजी महाराज

उ०—२ सघण, श्रेद, वायव न मुणावी, लाखावत श्रागळी लहेइ। तू विसरिस तइया जइया तिण ढिग हुइसै रज तणो धिलेइ।
—ईसरदास बारहठ

उ०—३ हियै धारिया खान जुवान छिवतो निहग, श्रवर नर विसरै तणा अचभा। विखम गत देत 'जमराज' खग वाहतो, रही रथ साह गजगाह रभा।
—गु रू व

उ०—४ पीया निसदिन तोकू ध्याउ, उनमुन ताळी लाउ, तो विसरयाँ दुख पाउ।
—अनुभववाणी

उ०—५ मास्टरिणया नै इबारत बोलै, बाचणिया रै दूहा रा भरथाव खोलै है। विलम्या बैठ्या है। घरनै सफा विसर रैया है।
—दसदोख

उ०—६ वरज्या मतगुर माम्य, कुमल कुकरणी करता। मद माम पोमती, भाग ग्राहि विसरंदा।
—श्रग्यात

विसरणहार, हारो (हारी), विसरणियो—वि०।

विसरिश्रोड़ो, विसरियोड़ो, विसरयोड़ो—भू० का० कृ०।

विसरीजणो, विसरीजबो—कर्म वा०।

विसरणो, विसरबो, वीसरणो, वीसरबो, बीसरणो, बीसरबो, वीसूरणो, बीसूरबो—रू० भे०।

विसरप-स पु [स विसर्प] १ रेंगने, फिसलने या सरकने की क्रिया।
२ अनिष्ट फलदायक प्रारब्ध कर्म।
३ एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमे एक साथ बहुतसी छोटी-छोटी फुन्सियो के साथ बुखार भी आता है, शीतला, चेचक। (अमरत)

विसरमों-वि [स वि.=रहित+शर्म=लज्जा] जिसे शर्म नही आती हो, बेशर्म, लज्जाहीन।

उ०—कामू व्है बहु कह्या बदै नही बदै विसरमा। सुगुरु तणी धरम सीख करै नही भारी करमा।
—ध व ग्र.

विसरात-स पु—मथुरा का विश्राम घाट।

उ०—तद प्रथीराजजी कयो, "महाराज माम छठै मथुराजी मैं विसरात घाट ऊपर होवैगी। जहा धोळा काग श्रावैगा।—द दा

विसरांम-स पु [सं विश्राम] १ सहारा, आश्रय, पनाह।

उ०—१ सावरिया! तू भूला री वाट है, राम प्यारा रे! हारया रो विसराम।
—गी रा.

उ०—२ देस मालम सुतण देसल नर सघर दुह पखै निरमल, अतुलवल श्रति कमल ऊज्जल वरन छट विसराम।
—ल. पिं.

उ०—३ मछळी नै जळ कोई मिळावै, कै कोयलडी नै आम। श्रव तो वेग मिळै उवो सावळ, हारया रो विसरांम।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ वांह कोई ऊच न नीच है, नाम न कोई ठाम। हरीया हेको ब्रह्म है, सबहन कै विसराम।
—अनुभववाणी

उ०—५ सतगुरु सोई जाणियै, कहै कहावै राम। हरीया गुर गोविंद सा, और न को विसराम।
—अनुभववाणी

उ०—६ जिण अरवद ऊपर अठारह भार वनस्पती भुक रही छै। घणी ही चपो, चमेली, मोगरो, जुही फूल रहिया छै। फेर अडसठ तीरथ आय विसराम लियो छै।
—डाढाळै सूर री बात

२ आराम, चैन।

उ०—१ अर इतो उस्ताद रामूजी! थानै ई करणो पडैला, कोई समाधमा आळी आवै तो कै दिया—अबार तबियत ठीक को रै वै नी, डागदर विसराम लेवण री कयी है।
—वरसगाठ

उ०—२ नारी बयारी काम की, सीच्या करै विराम। जनहरीया तन मन धरै, ताहि नही विसरांम।
—अनुभववाणी

उ०—३ लख चौरासी जोनि मैं, मातो मोह सकाम। हरीया ऐसै जीव कू, कहा नही विसराम।
—अनुभववाणी

उ०—४ गजराज सूका सरोवर ढूढता फिरै छै। सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ अगनी सूं बळता थका वीभा वनरा हाथिया री पेट री छाया सूता विसराम करै छै।
—रा सा स.

उ०—५ हा रै राज इद्र घडूकै हो, हा रै राज, श्रो तो इंदर घडूकै हो, हा हो म्हारा घडी नै, घडी रा विसराम मजरजी इंद्र घडूकै हो।
—लो गी.

३ सुख-शान्ति, आनन्द।

उ०—१ जनहरिया है मुगति कू, नीसरणी निज नाम। चढि आपरि सु सिवरियै, जो चाहै विसराम।
—अनुभववाणी

उ०—२ राम नाम कु सिवरता, पाया मन विसराम। जनहरिया तै नाव का, मैं हू सदा गुलाम।
—अनुभववाणी

उ०—३ जे कोई चीन्है सहज कु, सहजा आतम राम। जनहरिया सहजा भया, मन इद्री विसराम।
—अनुभववाणी

४ आश्रमव्यवस्था में चौथा आश्रम, सन्यासाश्रम।

उ०—हरीया श्रेसा को मिळै, चित चौथै विसरांम। ताप त्रिगुण सुं रहत है, निज भगता निहकाम।
—अनुभववाणी

५ अवसान, मौत, मृत्यु।

६ कार्य-काल के बीच आराम एव जलपान हेतु मिलने वाला अवकाश।

उ०—फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणै माथै हथफेरी

करणी पैलाई। पांच-सात विरिया, छुट्टी विसरांम रै वखत, करणी नै जमी पर सूंवो सुवांण्यो, ऊपर चादर उढाई तथा मिंतर पढायो। —दसदोख

७ ठहरने का स्थान, विश्रामस्थल।

उ०—१ हरिया हसो जीव है, सुन्य सागर विसरांम। सुरति हमारो सीपडी, निज कण मोती नाम। —अनुभववाणी

उ०—२ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा विसरांम। हरीया जग लै जावसी, वेग सिवरियै राम। —अनुभववाणी

उ०—३ झूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का काम। हरिया सुवचन साच का, बिसनपरा विसराम। —अनुभववाणी

उ०—४ हरि वसती हरि वन है, हरि हैं ठामो ठाम। हरिया हरि हिरदै गया, ताहि नहीं विसरांम। —अनुभववाणी

८ ठहराव।

उ०—१ सहजा सुख दे वस्य किया, मन मोहादिक काम। जनहरिया गोरख जती, सहज किया विसरांम। —अनुभववाणी

उ०—२ राम राम रसना लिया, मास दोय विसरांम। हरिया हिरदै कठ मैं, सागर वरस मुकांम। —अनुभववाणी

उ०—३ गामा दाम उग्राहजै, कै मारीजै ग्राम। डेरा दीधा रांणपुर निस कीधा विसराम। —रा. रू.

उ०—४ म्हनै वडो अचूंभो आवतो हो कै बबोई जिसी मोटी नगरी मे जठै कै आभा सू वाता करता मेल माळिया ऊभा हा पण दो मिनटा नै विसरांम करण जोग छ हाथ जमीन मिळणी कठण व्हैगी ही। —रातवासो

क्रि प्र—करणो, पाणो, मिळणो, लैणो।

९ अध्याय, प्रकाश।

१० वाक्य के अंत मे लगाई जाने वाली बिन्दु या खड़ी रेखा।

११ छन्द शास्त्रानुसार कविता, पद्य आदि के चरणो मे वह स्थान जहा पढते समय लय ठीक रखने हेतु थोडा विराम या ठहराव किया जाता है, यति।

उ०—१ दस दस पर विसराम चव, मत च.ळीस हुवत। गुरु लघु अखिर नियम नहि, उद्धत छद अखत। —र. ज. प्र

उ०—२ चळ दस धुर फिर आठ सकाम, मझ तुक विखम दोय विसरांम। सम अठ अत रगण जोकार, चतुर गीत लैहचाळ उचार। —र. ज. प्र.

उ०—३ छै निसाणी छद रै, मत तेवीस मुकाम। माझ अेक तुक अदस दस, वदै दोय विसराम। —र. ज. प्र

रू. भे.—बिसराम, विस्राम, विस्रामु, विस्सराम, विस्सांम, वीसाम, वीसांमउ।

मह—विसरांमो, विस्सरांमो, वीसामो।

अल्पा.—बिसरांमी, विसरामी, विस्सरामी।

विसरांमणो–वि—१ विश्राम करने वाला।

२ विश्राम देने वाला।

३ सहारा देने वाला, सहायक।

रू. भे.—विसरावणो।

विसरांमणो, विसरांमवो–क्रि अ [स. विश्रमण] १ आराम लेना, विश्राम लेना।

२ मरना, अवसान होना।

उ०—१ सुनिझरस समारसदन घणा, कपणां तणो विरांमियो। कर भू पर कीरत करममी, रायसिंघ विसरांमियो। —नैणसी

उ०—२ यु मरता राव सूजोजी कितरे हेकै दिनै विसरांमियो। ताहरां टीकै री तयारी हुई। ताहरा ईयां ठाकुरां वीरमदे नू पकड़ बाह अर गढ सू हेठो उतारियो, नै गागै नू टीको दियो —नैणसी

उ०—३ लाखो देसवटै फिरै छै। फूल री चोथी दसा हुनी। तै वासतै लाखैजी आ वात कही हुनी, फूलजी री मोनूं मत कोई सुणाया। सु फूलजी बिसरांमिया। लाखै नु कोई कहै नही। —लाखै फूलाणी री बात

३ युद्ध मे वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ रण सारग विसरांमियो, नह बूडो नमियोह। गोल तणो कहियो गुणो, सपूरण समियोह। —पा प्र

उ०—२ आहुई वडो राठोड विसरामिया, तज गया दूसरा न सायस टेक। हुसत नित वरीसण न को इळ रायहर, हुसत बध कवि नही जगत मे हेक। —द दा.

४ ठहरना, रुकना।

५ सहारा देना, आश्रय देना।

विसरांमणहार, हारो (हारी), विसरांमणियो—वि०।

विसरांमिओडो, विसरांमियोडो, विसरांम्योडो—भू० का० कृ०।

विसरांमीजणो, विसरामीजवो—भाव वा०।

बसरामणो, बसरांमवो, विसरामणो, विसरामवो, वसरामणो, वसरांमवो, विस्रामणो, विस्रांमवो, वीसांमणो, वीसांमवो —रू० भे०।

विसरांमियोडो–भू का. कृ—१ आराम लिया हुआ, विश्राम लिया हुआ। २ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ। ३ रुका हुआ, ठहरा हुआ। ४ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ५ युद्धक्षेत्र मे वीरगति प्राप्त हुवा हुआ।

(स्त्री० विसरामियोडी)

विसरांमी-वि —१ विश्राम करने वाला।

उ०—सुखदाइ सीतल स्वामी रे, प्रभु सुमता रस विसरांमी रे। उपकारी गुण अभिरामी रे, नमियें एह नें सिर नामी रे। —ध व ग्र.

२ विश्राम देने वाला।
३ देखो 'विसराम' (अल्पा, रू भे.)
रू भे.—विसरामी, विस्रामी।

विसरामौ—देखो 'विसरांम' (मह, रू भे)

उ०—उतिम सिवरन हिरद सयानु, माहीमाहि भया घर ध्यानु। रसना लीया राम का नामा, उर भीतरि पाया विसरामा। —अनुभववाणी

उ०—२ दुख पाऊं छु आप, पापा रे परताप। तौ तू जाणदै ए, विसरांमौ खाणदै ए। —जयवाणी

विसराडणौ, विसराडबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू भे)
विसराडणहार, हारौ (हारी), विसराड़णियौ—वि०।
विसराडियोड़ो, विसराडियोड़ो, विसराडयोड़ो—भू० का० कृ०।
विसराडीजणौ, विसराड़ीजबौ—कर्म वा०।

विसराडियोडौ—देखो 'विसरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री विसराडियोडी)

विसरायाण-स पु—दान। (अ मा)

विसराणौ, विसराबौ-क्रि.स.—१ विस्मरण करना, भूलना।

उ०—१ सीख सुनत ही सुधि भई, तन आपौ विसराय। जन-हरिया मन गरक हुय, तरक फरक नहीं थाय। —अनुभववाणी

उ०—२ वेटै वाप विसराया, भाई वीसारेह। सूरा पूरा गल्लडी, चारण चीतारेह। —रा. सा स.

उ०—३ वीठू कवल न चूकजे, लगी जीव के लार। विसराई नही वीसरै, केवळ प्राण अधार। —कुंवरसी साखला री वारता

२ गल्ती करना।
३ त्यागना, छोडना।
विसराणहार, हारौ (हारी), विसराणियौ—वि०।
विसरायोड़ो—भू० का० कृ०।
विसराईजणौ, विसराईजबौ—भाव वा०।

वसरामणौ, वसरांमबौ, विसराडणौ, विसराडबौ, विसराणौ, विसराबौ, विसरावणौ विसरावबौ, वीसराणौ, वीसराबौ, वीस-रावणौ, वीसरावबौ, बोसराणौ, बोसराबौ, बोसरावणौ, बोसरावबौ विसराड़णौ, विसराड़बौ, विसरावणौ, विसरावबौ, विसराहणौ, विसराहबौ, वीसराणौ, वीसराबौ, वीसरावणौ, वीसरावबौ —रू० भे०।

विसरायण-स. पु—दान। (अ मा.)

विसरायोडौ-भू का कृ—१ विस्मरण किया हुआ, भूला हुआ. २ गल्ती की हुई, त्यागा हुआ, छोडा हुआ।
(स्त्री विसरायोडी)

विसरारण—देखो 'विसरायण' (रू भे.) (ह ना मा)

विसराळ, विसराळी विसराळौ-वि. [स. विष+रा. प्र. राळौ] १ विषैला, जहरीला।

२ क्रोधी, क्रोधयुक्त।
३ रसहीन, कडवा, नीरस।
४ जोशपूर्ण, जोशयुक्त, जोशीला।

उ०—तीधसिया विसराळ न धोखै, दळ पड धोकै तीरमदाज। झटका वह सामुहा झोकै, रोकै कुण एकल गिड राज। —महादान मेहडू

५ भयंकर, भयावह।

उ०—विसराळ अंबाळ घुरै रवि वीहस, लाह आखेट लकाळ। अजेरा जेरण घेर असगा, फेर दुहाई फाळ। —मा अचनिका

६ निन्दाजनक काव्य की रचनाएँ करने वाला।
७ कर्णकटु कडवा।

उ०—वायक विसराळाह, सुणिया थै मामी मनै। वे धावळ वालाह, केवा में सह काढिया। —पा. प्र

स. पु—निन्दायुक्त कविता।

रू. भे—विसराळ, वसराळ, विस्राळ, विस्राल, विस्राळी, विस्राली, विसाळी, विस्रालौ।

विसरावणी—देखो 'विसरामणी' (रू भे)

विसरावणौ, विसरावबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू भे)

उ०—१ पुसपां री माळा पहराया, जनम मरण मेटै विन जाप। विध विध रा भोजन विसरावै, वधवौ जाय खाय मा-बाप। —भगतमाळ

उ०—२ गाव में ही पी'र, गांव मे ही सासरौ। फूटरी आवै-जावै अर आणद सू ओपै है। कुसोभ्या री काम नी, आछौ नाव-नामून कर राख्यौ है। सासू सुसरौ सरावै, वास रा माणस वडाई करै। कोई ही विसरावै नही सगळा सोभ्या करै। —दसदोख

उ०—३ सुणी वात सुविहाण, पूछ खुरसाण अप्रवळ। दरद जीव मौ दहै, करद जिम सहै विना कळ। असपत्ती ऊचरै, वेध छत्री विसरावौ। छडि ढेस महि छोड, भेख अहि मक्कै जावौ। —रा रू.

उ०—४ मारो मार मचाया मनवौ, आप अेक घर आवै। अेक ठोड आया सूं अनुभव, बस सुध बुध विसरावै। —ऊ. का.

विसरावणहार हारो (हारी), विसरावणियो—वि० ।

विरावियोडो, विसरावियोडो, विसराव्योडो—भू० का० कृ० ।

विसरावीजणो, विसरावीजवो—भाव वा० ।

विसरावियोडो—देखो 'विसरायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विसरावियोडी)

विसराहणो, विसराहबो—देखो 'विसराणो, विसरावो' (रू भे.)

विसराहणहार, हारो (हारी), विसराहणियो—वि० ।

विसराहिग्रोडो विसराहियोडो विसराह्योडो—भू० का० कृ० ।

विसराहीजणो, विसराहीजबो—कर्म वा० ।

विसराहियोड़ो—देखो 'विसरायोडो' (रू भे)

(स्त्री विसराहियोडी)

विसरियोडो—भू का. कृ —१ गलती हुवा हुग्रा २ कुपित हुवा हुग्रा, क्रोधयुक्त हुवा हुग्रा ३ फैला हुग्रा ४ विस्मरण हुवा हुग्रा, भूला हुग्रा ।

(स्त्री. विसरियोडी)

विसलूमो—स पु —एक प्रकार का हिंदवाना से मिलता-जुलता कडवा फल । (शेखावाटी)

विसल्या—स पु [स विशल्या] १ रामानुज लक्षमण की पत्नी ।

२ एक नदी जो वरुण की सभा मे रह कर वरुण की उपासना करती थी ।

३ एक ग्रोपधि का नाम जो शरीर मे लगे बाणो को निकालने के लिए लगाई जाती है ।

विसव—स पु. [स. विश्व] १ पृथ्वी, धरती, भूमि ।

(ग्र. मा., ना मा)

२ स्वभाव, ग्रादत, प्रकृति । (ह ना. मा.)

३ देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—१ विसतरी वात मारी विसव, ग्रणकारी उतपात सी । ग्रज-मेर कान 'ग्रवरग' नै, सुण लग्गी ग्रत घात सी । —रा. रू.

उ०—२ पातसाह दक्खण रहै, जाळघर महाराज । विसव ग्रवर जवना वसू, करै सको मिळ काज । —रा रू

उ०—३ ध्रू ग्रह ग्रास वाळपण धारै, साई त्या ततकाळ सभारै । ग्रो पतसाह तिसो ग्रन्याई, विसव ग्रनीत जीत वरताई । —रा रू.

उ०—४ निरख छठै रिपु ग्रह ससिनदण, कुळ मातुळ सुख ग्ररी-निकदण । राजभवन सुरगुर सुभ राजै, विसव एक छत्र ग्राण विराजै । —रा रू.

उ०—५ ग्रालस वाळी मगणा, उर मगणा उदार । बक उदारा दिसव मैं, बाळी जस विसतार । —वा दा.

उ०—६ तूं करता तू भोगता, रहै ग्रकिरिता राम । विसव घडै भाजै विसव, विसव तणो विसराम । —पी. ग्र.

विसवकसेन—देखो 'विस्वकसेन' (रू. भे.)

विसवक्रमा —देखो 'विस्वकरमा' (रू भे.) (ग्र. मा)

विसवजूण, विसवजोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे.)

विसवतरेखा—स स्त्री [सं. विषुवरेखा] पृथ्वी के ठीक मध्य मे पूर्व या पश्चिम की ग्रोर चारो ग्रोर मानी जाने वाली एक कल्पित रेखा । (भूगोल, ज्योतिष)

रू भे'—विसुवरेखा ।

विसवनाथ—देखो 'विस्वनाथ' (रू. भे.)

उ०—१ भिरजो पंठो डेरा माहै, सुज कर ग्ररज घणा पग साहै । वाघै तेम नोवता वाजे, विसवनाथ निज तखत विराजै । —रा रू

उ०—२ वीठुल विसवनाथ घन जदपत्त केसव स्त्रीवर, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरघर नरहर । ग्रविगत ग्रादि जुगाद उपावण ग्रकळ ग्रपपर, समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसरं । —पि प्र

विसवयोनि —देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे)

विसवाद—स पु [स. विषवाद] ७२ कलाग्रो मे से एक ।

२ देखो 'विखवाद' (रू. भे)

उ०—१ जनहरिया हरि कारनै, सो परमारथ स्वाद । ग्राप सुवारथ हरि विना, सो स्वारथ विसवाद । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सह्र नर मादा राज'। टलइ ग्रल्हादा सहु विसवादा कुसल कुसल परसादा ।—ध. व ग्र

उ०—३ दुसम काल तणै परभावै, हुइ माहो मा विसवाद जी । तो पणि तुरत खमावी लीजइ, पडित गुरु परसाद जी । —स कु

उ०—४ विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पच प्रमाद । इस्ट वियोग पड्या किया, रोदन विसवाद । —स कु

विसवावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

उ०—तन मन सौंज सवार सव, राखै विसवावीस । सो साहिब सुमिरै नही, दादू मान हदीस । —दादूवाणी

विसवामत्र, विसवामित, विसवामितर, विसवामिति, विसवामित्र,विसवा-मित्रि—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे)

उ०—१ किसन री सुरै दरसण कियो, कर जोडै कीरति कहै । करतार काजि दसरथ कन्है, विसवामिति ग्राया वहै । —पी ग्र.

उ०—२ विसवामित्रि कारणै, प्रभु चडियो जिगि पालण । जा मारै ता मुगति, ग्राज ताडका उधारण । —पी ग्रं

विसवावीस—ग्रव्यय —१ निश्चय ही, ग्रवश्य ही, जरूर ।

उ०—सूर लडै जब कध सिर, कमंध लडै विण सीस । हरिया सूर कमध विच, विवरो विसवावीस । —अनुभववाणी

उ०—२ चलणा है, रहणा नही, चलणा विसवावीस । ग्रैसै सहज सुहाग पर, कुंण गु थावै सीस । —अग्यात

उ०—३ रीझ खडिवा तीज री, पदमण वचन प्रमाण । ग्रास्या विसवागीस में, सिव सगत री प्राण । —पना

२ सत्य, ठीक ।

उ०—१ ग्राह पकडे खाच गाढो, सलल फिरगो सीस । तज गरुड गजराज तारै, बात विसवावीस । तो जगदीस जी जगदीस, जन काज दोडणा जगदीस । —भगतमाळ

उ०—२ राजा ग्रति ग्रातुर थयो, तेहनै कीधी रीस । उत्तम तिहा किण ग्राविनै, बोलै विसवावीस । —वि कु

३ निस्सन्देह ।

उ०—कहियो न्रप कारिज सिध कीजै, दत वर मूझ पदमणी दीजै । वदं सिद्ध न्रप विसवावीसां, पदमण ग्राणू दीह पचीसा । —सू प्र

४ निश्चयपूर्वक, यकीनन ।

वि. वि —किसी बात के ग्रौचित्य को मान लेने के लिये जिस प्रकार यह कहा जाता है कि "यह बात सोलह ग्राने खरी है।' या यह शत-प्रतिशत सही है । "बीस-विसवा" ठीक इन्ही ग्रर्थों में बोलचाल की भाषा मे प्रयुक्त होता है । कभी-कभी बीस विसवा के स्थान पर 'सौ विसवा' भी बोला जाता है । पर दोनो का ग्राशय एक ही है ।

५ पूर्णरूप से ।

उ०—सेठ तणै मन माहि उदधि मा कुमरी वसै निसदीस, विरह विलूधो रे विसवावीस । नलिनी देखि भमर जिम ग्रटकै, तिम तसु मिलण जगीस । —वि. कु

रू भे—विसवावीस, विस्वावीस बीसवसा, बीसविसवा, बीस-विस्वा, बीसवावीस, बीसविसा, बीसावीसै, बीसावीस, बीसुवसा, विसवावीस, विसवावीस, विसवाहीवीस, विसव्वावीस, विसहवीस, बीसविसवा, वीसविसा, वीसवीसा, वीसवीस्वा ।

विसवावीसइ—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—पटणी पारिख सूरजी सघ सु, जात्र करी लाभ सुजगीसइ । समयसु दर कहइ साचउ मइ जाण्यउ, वीतराग देव विदा विसवा-वीसइ । —स कु

विसवास—देखो 'विस्वास' (रू. भे)

उ०—१ जा जीतो सारी सगत, त्या सब ग्राई रास । भाग जिन्हा दा जाणियै, जै राखै विसवास । —गजउद्धार

उ०—२ ग्रैसै नर ग्रस्त्री भयो, ग्रग सिघ की मोह । हेत विसवास न होत है, वाता करत विमोह । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ स्याणप सूं सोदो पटायो, बेटै री बाप नाव-नामून मे ग्रायो । डागै री विसवास जम्यो ग्रर दायजै टीकै री मोल माग्यो न थम्यो । सगै-सगै री रळग्यो जी मीठा हुया ज्यू सक्कर घी । —दसदोख

उ०—४ मा'रजा नै ग्रापरी मितर वता-वता मार नाख्यो । पण ग्रोजू बात री विसवास करै साच कूड री बेरो पट जावै तो किसो नदलाल नै माडो वता देवे । —दसदोख

उ०—५ लाधूराम राजदरबार रो इतो वडो निधडक चोधरी होवता थका भी भूत-पलीत, डोरा-डाडा, देई-देवता ग्रर डाकण-स्यारी नै कदै ही कूड नी वतावै । ग्राधो विसवास राखतो थको हिड्दै मूं मानतो रै'वै । —दसदोख

उ०—६ पूरणदस प्रामिया, जनम होसी जोधाहर । वधै वस विसवास, ग्रास तै ग्रास मुरद्धर । —रा. रू.

उ०—७ सुत 'गोयद' धाव्वळ सकज, दुभल विहारीदास । राजा निज पुर रक्खियो, वचन जिकै विसवास । —रा. रू

विसवासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे)

विसवासणो, विसवासवो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासवो' (रू. भे.)

विसवासणहार, हारो (हारी), विसवासणियो—वि० ।
विसवासिग्रोडो, विसवासियोडो, विसवास्योडो—भू० का० कृ० ।
विसवासीजणो, विसवासीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

विसवासिग्रा-स स्त्री—ग्रार्या या गाहा छद का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे मिलाकर ९ गुरु ग्रौर ३९ लघु वर्ण सहित ५७ मात्राएँ हो ।

विसवासियोडो—देखो विस्वासियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विसवासियोडी)

विसवासी-स पु [स. विश्वाची] एक प्रकार का वात रोग विशेष जिसमे कधे से लेकर ग्रगुलियो तक सारा ही हाथ न तो सिकोडा जा सकता है ग्रौर न ही फैलाया जा सकता है । (ग्रमरत)

२ देखो 'विस्वासी' (रू भे)

उ०—ग्रब विसवासो मिनख, हरेक ग्रादमी री कैयोडी वात नै साची मानण खातर ही वण्यो है । नटणै खातर हरगिज नही । चावै कोई ग्रफड करो तथा जाळ । —दसदोख

विसवाहीवीस—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

उ०—दिल ग्रतर एह विचारी दसरथ, घर पदवी जुवराज सधीर । सो देणी विसवाहीवीसं, राज जोग दीसै रघुवीर । —र रू

विसवि—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—१ वीठुल वरदाई बडी बडाई, विसवि सपाई व्रजवासी। मेरग्गिर ग्रामी सुर नर सामी, ग्रतरजामी अविणासी। —पि. ग्र.

उ०—२ वडा ही वडा ग्राचार दीर्घ विसवि, वहै सवळा खळा खेनि वागै। जग हथै वधियै 'गजण' रौ जैत-हथ, जग हथा वधपण विरद जागै। —केसोदास गाडण

विसवेस—देखो 'विस्वेस' (रू भे)

उ०—स्रीधर स्रीरग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण। व्रज नायक विसवेस विसभर, घणनामी आणदघण। —र. ज प्र

विसवौ—स पु —१ जमीन को नापने का एक नाप विशेष जो एक एकड के पचासवें भाग के बराबर होता है।

उ०—चावै कोई ग्रफड करो तथा जाळ। बीरै वास्तै तौ वीघै भूत ग्रर विसवै साप झाली कैवत साची है। खेजडी-खेजडी गोगा ग्रर खेतरपाळ खड्या दीसै। —दसदोख

२ अगुली की गाठ या जोड जहा से वह मुड सकती है।

३ अगुली के जोड के स्थान पर पडी रेखा।

४ पूर्णता के माप का निश्चित अश।

उ०—हिवै वीरमजो जाय जोइयै रह्यौ, जोईयां घणो आदर दियो, घणा हीडा किया कह्यौ वीरमजी थिखै मे आया छौ, वेखरच छौ। ताहरा दाण माहे विसवौ कर दियो। —नैणसी

५ अन्न पदार्थ आदि यत्किंचित्।

६ पिंगल प्रकाश के अनुसार एक वर्णिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम नगण फिर सगण फिर यगण होता है।

७ सार्वजनिक पशु (आकल) के लिए गेहू आदि की हरी फसल मे से लाया गया चारा जो कि प्रत्येक दिन अलग २ कुए से लाया जाता है।

रू भे.—विस्वौ, विसोवा, विसोवा, विस्वौ।

विसव्वावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

उ०—धन सूरातन धन ग्रडप, धन राठौडा ईस। मुणि सुरताण कबूल की, वात विसव्वावीस। —गु रू. व

विससन—स. पु [स विशसन] एक नरक का नाम।

विसहर—स पु [स विषधर] सर्प, साप।

उ०—१ तन ववही मन विसहर माही, डस्य डस्य जाहि सकळ जुग ताही। विसम लहरि ऊठै ग्रग ग्रगा, ता तै होय सकळ जुग भगा। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ मैलौ ग्रत ग्रदतार मन, रुच जस तणौ रहै न। तन काळो विसहर तणी, कचुक सेत सहै न। —वा दा०

उ०—३ सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह निसाण। पालखी विसहर भई, मदिर भयउ मसाण। —ढो मा.

उ०—४ मूल मत्र जाणै कुछ नाही, बिसहर ले मेलै गल मांही। जैसा फुनि गति सी है माया, जै खाया तै वहोडि न आया। —ह. पु. वा

वि. [स] विष के प्रभाव को दूर करने वाला, विष के प्रभाव को हरण करने वाला।

रू भे—विखहर, विसहर, विक्खहर, विसहरि।

विसहरतिथ, विसहरतिथि—स स्त्री—नागपचमी।

रू. भे—विसहरतिथ, विसहरतिथि।

विसहरा—स. स्त्री. [स विषहरा] मनसा देवी का नामान्तर।

विसहरि—देखो 'विसहर' (रू. भे)

उ०—सब जीव भुवगम कूप में, साधू काढै आइ। दादू विसहरि विस भरै, फिर ताही को खाइ। —दादूवांणी

विसहरी—स स्त्री. [स विषहरा] मनसादेवी का नामान्तर।

विसहविसा, विसहवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे.)

विसाई—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

उ०—ग्रेक पेड रै तळै विसाई ली। गगलो लकडिया चुग लायो डोकरी रोटिया पोवण लागी। —वरसगांठ

विसांगणा, विसागना-स स्त्री. [स. विष+ अगना] १ विषकन्या।

२ नाग कन्या।

विसांण—स पु. [स. विषाण] १ हाथी दात।

२ पशु का सीग।

३ सूग्रर का दात।

रू भे.—विसाण, विखांण, विसान।

विसाणण, विसांणन—स. पु. [स विष+आनन] सर्प, साप।

विसाणिन—स पु [स. विषाणिन्] एक जातिसमूह, जो दाशराज युद्ध मे सदासराजा के पक्ष में था।

विसाणी—देखो 'विस्रांति' (रू भे)

विसांणी—स पु [स विषाण] विवाह के लिए खरीदा गया हाथीदात का चूडा।

उ०—सोमसी साखलै सारी सभाई कीधी। वरी विसाणी रावजी लेनै आया गोधूळक समै परणिया। रातिवासै पोढिया। प्रभातै सुखपाल मै बैसाण नै गढ जालोर लै आया। —वीरमदे सोनिगरा री बात

रू भे.—विसाणी।

विसातक—वि [स विष+अतक] १ विष को नष्ट करने वाला, विष के प्रभाव को दूर हटाने वाला।

स. पु —शिव, महादेव ।

बिसानी-स स्त्री.—शरपुंखा ।

रू भे —बिसानी, बिसूनी बिहाणी, बिहानी, बिहूणी, बिहूणी, बिहूनी ।

बिसाइत —देखो 'बिसात' (रू भे)

उ०—प्रथम तो द्रव्य हुवै तो देवं, म्हारै घर में पाच लाख री बिसाइत छै गढ गिरनार रो धणी तियं रै पाच लाख री माया तो बीजा राजा रै कठा द्रव्य ? —सयणी री बात

बिसाइति, बिसाइती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे)

२ देखो 'बिसाती'

बिसाऊ-वि.—खरीदने वाला, क्रेता, खरीददार ।

उ०—१ कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवदा । बिणज बिसाऊ कुण वेस, कुण सुद्र कहदा । —केसोदास गाडण

उ०—२ महि मातो मैंगळा, बिडग ताता कारखाना । किसतूरी कुमकुमा, अतर गाधिया दुकाना । केसर चनण कपूर, अग अरगचा अबीरा और बिहद अवास, सुगध चोल पर समीरा । बादळा तास थिरमा बसत्र, बासता ऊच बजाज रा । बिसाऊ 'सेर' महगी बुसत, गौ गाहिक सौदागरा । —पहाडखा आढो

बिसाख-स पु [सं बिशाख] १ स्वामीकार्त्तिकेय ।

(अ मा , ना. मा , ह ना मा)

२ शिव, महादेव ।

३ इद्र-सभा का एक महर्षि ।

४ स्वामी कार्तिकेय का छोटा भाई ।

५ आयु राजा का एक पुत्र, एक राजा ।

बिसाखा-स. पु [स बिशाखा] सत्ताईस नक्षत्रो मे से सोलहवा नक्षत्र, जिसमें चार तारे होते हैं ।

उ०—१ नखत बिसाखा तिथी चवद्दस, घडी च्यार पळ वीस गया निस । मिथुन लगन सोभन मिळ जागै, सकुन करण दुख हरण सजोगै । —रा रू.

उ०—२ तदि निसा च्यार घटिका वितीम, ऊपरा वळै पळ सताईस । वणि नखित्र, बिसाखा जेणि वार, 'अभमाल' जनम लीधो उदार । —सू प्र

रू. भे.—बिसाख, बिसाखा ।

बिसाग—देखो 'बिसाद' (रू. भे)

उ०—बिहू रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सभै जग बिस्वामित्र सहाय । जनक तणी वळि जोयौ ज्याग, मागै धनुख कट्टण सीय बिसाग । —ह र.

बिसाड़णी, बिसाड़बौ—देखो 'बिसाणौ, बिसावौ' (रू. भे.)

बिसाडणहार, हारौ (हारी), बिसाडणियौ—वि० ।

बिसाडिओड़ौ, बिसाड़ियोडौ, बिसाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

बिसाडीजणौ, बिसाडीजबौ—कर्म वा० ।

बिसाडियोडौ—देखो बिसायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बिसाडियोडी)

बिसाजुद्ध, बिसाजुध—देखो 'बिसायुद्ध' (रू. भे.)

बिसाणौ, बिसावौ—क्रि स.—१ छितराना, फैलाना, बिखेरना ।

२ खरीदना, मोल लेना ।

उ०—१ काच कथीर बिसाय कर, कोई कनक घडावै ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ खुरासाण उतपन्न, सोभ ऐराक बिसाया । कर दरियावा पथ, जिकै नावा सिर आया । —रा. रू.

उ०—३ काछी करह बियूंभिया, घडियउ जोइण जाइ । हरणाखी जउ हसि कहइ, आणिसि एथि बिसाइ । —ढो मा.

३ निवास कराना, ठहराना ।

उ०—छाडि गयो अब कहा बिसासी, प्रेम की बाती बराय । बिरह समुद्र मे छाडि गयो पिव, नेहकी नाव चलाय । —मीरा

४ बेचना, बिक्री करना ।

उ०—१ तठा उपरात करि राजान सिलामति तिण सहिर माहै छत्रीस पवन जाति रहै छै । तिण सहिर माहे बाजार चौहटा मंडिया छै । सोना रूपा जवहर जडाव कपडा पटकूल रेसम पसमरा बाव भाति भात्ति बिसाईजै छै । —रा सा सं

उ०—२ किरचा फाक्या री कोथळी, बीडी सिगरेटा री डबी अर बेटरी, बाजा री पेटी रासभिया रै पेटा माथै लटकाया खोड में धिसायत खानो सो बिसाया फिरै है । —दसदोख

५ स्थापित करना ।

बिसाणहार, हारौ (हारी), बिसाणियौ—वि० ।

बिसायोडौ—भू० का० कृ० ।

बिसाईजणौ, बिसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिसाणौ, बिसावौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ, बिसाडणौ, बिसाडबौ, बिसावणौ, बिसावबौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ—रू० भे० ।

बिसात —१ देखो 'बिसात' (रू भे.)

उ०—आधेग्रेक देस मैं रावजी रो अमल छै । थाणा सू हमेसा राडा हुवै छै । जिणा दिना वीरमदै दूदावत सू मेडतो छूटो सू बिसात थका राव कल्याणमलजी कना आयो सू आ वात इण तरह छै । —द दा

२ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

विसाति, विसाती–स. पु.—१ व्यापार करने वाला व्यापारी।

उ०—'सूज' हर मिळै अधियामणा साज सू, जैतखम आज रो किला जेरै। वारणा लियरा हेरै नह विसाती, हैयडा हूकळा खळा हेरै। —उम्मेदसिंघ सीसोदिया री गीत

२ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

विसाद–स. पु. [स. विषाद] १ दुःख, शोक।

उ०—तुरत देय अम्रत कळस, मेट्यौ सत्रु विसाद। इसो उदार विक्रम न्रपति, सुणो भोज सवाद। —सिंघासण बत्तीसी

२ निराश या हताश होने की अवस्था या भाव।

३ दुर्बलता, कमजोरी।

४ मूर्खता, अज्ञानता।

५ उपायों के अभाव में पुरुषार्थहीनता।

रू. भे.—विखाद, विसाद, विखाद, विसाग।

विसादी–वि. [स. विषादिन्] जिसे विषाद हो, विषादयुक्त, विषादग्रस्त।

रू. भे.—विखादी।

विसावीसं—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसायत–स. पु.—१ देखो 'विसाती'

२ देखो 'विसात' (रू. भे.)

उ०—१ सो रावजी रै नानाणै दिसा सौ साख हुतो, सु रावजी जुहार कहायो। त्या स्रीरावजी नै भीतर बोलाया निछरावळा कीवी। अर कह्यो—बाबा! रिजक, विसायत दीसै छै सु थाहरी छै। भोजन करो। —नैणसी

उ०—२ राम सरीखा नाव न कळि मैं, गाया पातिग जात। पूरी एक विसायत पाई, खूटै कबुयन खात। —अनुभववाणी

उ०—३ साह रै एक बेटो हुतो। तठै ओ आदमी आयो हुतो, तिको ठकुरै रै माळियै विसायत देख राजी हुवो। इयै मन माहै विचारी, जु साह तो वडो साह दीसै छै। —ठकुरै साह री वात

३ देखो 'विछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायत पाछलै पोहर री ढळती छाया री विसायत कीजै छै। देसोत सिरदार जाजलमा पधारै छै। केस सुवारै छै। —रा. सा. स.

उ०—२ चौरगा री खाटखड हुयनै रही छै। कटोरा माहै फूल लीजै छै। बाकरा होसनाका वसू कीजै छै। देसोत रवा घोय हाथ ऊजळा कर विसायता ऊपर विराजमान हुवा छै। —रा. सा. स.

विसायति, विसायती—१ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'विसाती'

विसायुद्ध, विसायुध–स. पु. [स. विषायुद्ध] १ सर्प, साप।

२ विष मे बुझाया हुआ अस्त्र।

वि.—विष मे बुझाया हुआ, विषैला।

रू. भे.—विखाजुद्ध, विखाजुध, विखायुद्ध, विखायुध, विसाजुद्ध, विसाजुध।

विसायोडो–भू. का. कृ.—१ छितराया हुआ, फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ २ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ। ३ निवास कराया हुआ, ठहराया हुआ ४ विक्री किया हुआ, बेचा हुआ। ५ स्थापित किया हुआ।

(स्त्री. विसायोडी)

विसार–स. स्त्री [स.] १ मछली। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

विसारण, विसारणो–वि. (स्त्री. विसारणी) विस्मरण कराने वाला, भुलाने वाला।

रू. भे.—वीसारण, वीसारणो।

विसारणो, विसारबो–क्रि. स.—१ विस्मरण करना, भुलना।

उ०—१ सो सपूत जै पीछो राखै, दुरजन हीण कदे ना भाखै। वैरा तिणा विसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा। —डाढाळै सूर री वात

उ०—२ थै तौ नाभि नरिंद कुल चदा, राजि थानइ सेवै सुर नर इदा। थारो ध्यान हिया विच धारू, राजि थानइ निसि दिन कही न विसारू। —वि. कु.

उ०—३ ढोला, ढीली हुर किया, मूंक्या मनह विसारि। सदेसउ नह पाठवइ, जीवा किसइ अधारि। —ढो. मा.

उ०—४ भाम गाम धाम ठाम ठहाम नकू भ्राम, तमाम निहार साम लै अराम ताम। दाम दाम विसार निकाम भोड ह्वं उदाम, नरा जाम जाम मैं उचार राम नाम। —र. ज. प्र.

२ परित्याग करना, त्यागना।

३ गल्ती करना।

४ आरम्भ करना, शुरू करना।

उ०—सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारा, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारा। गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कक को गिणै ग्रास पळ सभळ आया। अछरा स्रगार धरि ऊमही, हुरा हरखि उचारियो। महि गयण सग खेला मिळै, आगम जंग विसारियो। —रा. रू.

विसारणहार, हारो (हारी), विसारणियो—वि०।

विसारिओडो, विसारियोडो, विसारयोडो—भू० का० कृ०।

विसारीजणौ, विसारीजबौ—कर्म वा० ।

वइसारणौ, वइसारबौ, बिसारणौ, बिसारबौ, वीसारणौ, वीसारबौ, वीसारणौ, वीसारबौ—रू० भे० ।

विसारद-वि [स विशारद] १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, विशेषज्ञ ।

२ विद्वान, पडित, कवि । (अ मा., ह. नां मा.)

३ चतुर, होशियार, कुशल, निपुण ।

उ०—सारद ससि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध । अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध । —रा रू

४ प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर ।

५ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू भे —विसारद ।

विसारियोडौ-भू का कृ—१ विस्मरण किया हुआ, भुलाया हुआ . २ परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ ३ गल्ती किया हुआ ।

(स्त्री. विसारियोडी)

विसारौ-स पु —विस्मृति, भुलावा ।

उ०—१ तद वहुवा सारी मुजरौ कर बोहडी, डेरै आई । सो आप एकठी वैस कहण लागी—"आपा कुंवरजी नु किण भात बिलमास्या, वात विसारै घातस्या । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ उण दिन सू सारा मोहल इसी हीज तवज्या लोक-लोक री करण लागी अर कुंवरजी नु इसा खुस कीया, जैसू रच रह्या । नेट दिन आडा पडता गया, ज्यु ज्यु वात विसारै पडती गई । आदमी पण कदै ही कोई खरळा दिसली वात काढै नही । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ नदलाल रो नाव आवै जद स्यामजी सफा सीतळ पड ज्यावै । मूंछ सवारै, ओला खावै, गैं'र्ण हाळी बात नै विसारै घालणी चावै । —दसदोख

विसाळ, विसाल-वि [स विशाल] १ दीर्घ, बडा । (अ मा)

उ०—१ विसाल भाल तोप को विसाल जाळ वित्थुरै, धमक भू धुजावनी धमक मेघलौं धुरै । महान रज दव्वुनी अरीन दव्वुनी मही, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही । —ऊ का.

उ०—२ चिहुर अलक्का ऊघरी, विकसै वदन विसाळ । चोळ वरन्न कपोळ किय, रत्ता लोचन भाळ । —गु रू. व

उ०—३ चडियै गयण गज चीधाह, गुड्डी जाण फव्वि गिराह । वाजै वीरघट विसाळ, पक्खर पूठि घूघर-माळ । —गु रू. व

उ०—४ सोल कला सुदरि, ससिवयणी चपकवन्नी बाल । काजल सामल लह कह, वेणी चचलनयण विसाल । —हीराणद सूरि

२ विस्तृत, लम्बा-चौडा ।

उ०—१ विसाल भाल तोप को विसाल जाल वित्थुरै, धमंक भूं धुजावनी धमक मेघलौं धुरै । म्हान रज दव्वुनी अरीन दव्वुनी मही, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही । —ऊ. का.

उ०—२ एक चित्त ऊजळा, चलै सुभ नीत रसत्तै । एक खूंन छलवान,वहै कोळाहळ मत्तै । एक सोर सारत्ति, घोर घूंवा रवि डंवर । ज्यौं वावळि वादळ, विसाळ ओपै मग अवर । —रा. रू.

३ ऊचा ।

४ प्रसिद्ध, मशहूर ।

५ महान् ।

उ०—१ कृपाळ विसाळ सिंघाळ किसन्न, वडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न । मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस । —ह र.

६ समय की निश्चित सीमा से अधिक, लम्बा ।

उ०—विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सविता । वासर विसाळ लहियं, चक वाणी मगळ भवण । —गु रू व.

७ वहुत, अधिक ।

उ०—१ अन्नदिणतरि रामलि करतउ,जमण तडा तडि राउ पहूतउ । जलखेलती दीठी बाल, वेडी वइठी रूप विसाल । —सालिभद्रसूरि

उ०—२ देवी सुनी रै दूध तै खीर राधी, देवी मारकड रूप तै भात वाधी । देवी मत्र मूळ देवी वीज वाळा, देवी धापणी सव्व लीला विसाला । —देवि.

८ लम्वा ।

उ०—१ मद मसत हळवळ, हालि मेंगळ, विमळ स्यामळ घटा वद्दळ । जाणि रद वग पत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ । —महाराव हणूतसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ कवुकठ भुज विसाळ, ग्रीव तीन रेखा । नटवर को भेस मानु, सकळ गुण विसेखा । —मीरा

९ मात्रा की दृष्टि से अधिक ।

उ०—वग्गी हाक वहादरा, वीछडि पडै विसाळ । नाराजा ऊवाणिया खुरसाणिया कपाळ । —रा रू

स पु —१ एक पर्वत का नाम । (पुराण)

२ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र ।

३ एक प्रकार का हरिण ।

४ लंका नगरी का एक राक्षस ।

५ परिक्षित राजा की पत्नी वैशालिनी का पिता एक राजा ।

६ कृष्ण का वालमित्र ।

७ विश्रवस व अलवुषा अप्सरा का पुत्र ।

रू भे.—विसाळ, विसाल, विछाळ विछाल, विसाळू, विसाळू ।

विसालक—सं पु [स विशालक] १ एक यक्ष जो कुबेर की सभा में रहता है।
२ वसुदेव पत्नी भद्रा का पिता।

विसाळता—स स्त्री [स. विशालता] विशाल होने की अवस्था या भाव।

विसाळदृग—स पु [स विशाल+दृग] शिव, महादेव। (अ. मा.)

विसाळनैन, विसाळनेतर, विसाळनेत्र—स. पु [स. विशाल+नेत्र] शिव, महादेव। (ह गु वो)

विसाळपुरी—देखो विसाळापुरी' (रू भे.)

विसाला—स स्त्री [सं. विशाला] १ एक तीर्थ का नाम। (पुराण)
२ उज्जैन नगर का नाम।
३ सोमवंशीय राजा अजमीढ की पत्नी।
४ गय राजा के यज्ञ से प्रकट हुई सरस्वती।
५ दक्ष प्रजापति की एक पुत्री।
६ औशिक राजा की पत्नी।
७ सार्वभौमपुत्र भीम राजा की पत्नी।

विसालाक्ष—स पु. [स विशाल+अक्ष] (स्त्री. विसालाक्षी) १ शिव का नामान्तर।
२ वास्तुशास्त्रविषयक अठारह प्रमुख ग्रंथकारों में से एक।
३ भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।
५ विराट का छोटा भाई व सेनापति।
६ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित मिथिलादेश का राजा।
७ भगवान् विष्णु का वाहन, गरुड़।
८ गरुड़ का एक पुत्र।
९ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम।
वि.—बड़ी व सुन्दर आंखों वाला।

विसालाक्षी—स. स्त्री [स विशाल+अक्षी] १ बड़ी एवं सुन्दर आंखों वाली स्त्री।
२ पार्वती देवी का नाम व उनकी एक मूर्ति।
३ चौसठ योगिनियों में से एक योगिनी।

विसालाक्षीजात्रा, विसालाक्षीयात्रा—स पु [स विशालाक्षीयात्रा] भाद्रपद कृष्णा तृतीया को किया जाने वाला व्रत विशेष।
वि वि.—इसमें तिथि मध्याह्नव्यापिनी होना आवश्यक है। इस दिन पुष्कर व गंगा स्नान व भाद्रपद कृष्णा तृतीया को गौरी का पूजन कर दूध से पूजा नैवेद्य में दिये जाते हैं।

विसालापुरी—स स्त्री [स विशालापुरी] उज्जैन नगरी का नाम।
रू भे—विसाळपुरी, विसाळपुरी।

विसाळ, विसाळू—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—वडा सामि तै विसव किमि करि वणायो, सरग सात पाताळ मुख मा समायो। वडो ताहरो मुख उरळो विसाळूं, किसन तूझ ना निमो तुझ काळ-काळू। —पी ग्र.

विसावणौ, विसाववौ—१ उपार्जन करना, कमाना।

उ०—'जोधा' हरा मिळै जोधारा, समहर रीठ वजायो सारा। एक पोहर लडियो नळ ग्रोडै, कमधा माम विसावण कोडै। —रा. रू.

२ उत्पन्न करना, नया पैदा करना।

उ०—१ वैर हमेस विसावणा, वाड विना वसणोह। वाघा रै क्यूं कर वणै, धारण ग्राळसणोह। —बा. दा.

उ०—२ वैर विसावै वाघ सूं, वन माभळ कर वास। जतन न राखै जाणजै, वेगो जास विणास। —बा दा.

उ०—३ वाता वैर विसावणा, सैणा तोडै नेह। हासै विख पीणा हरख, भाखा काम न एह। —बा. दा.

३ प्राप्त करना, पाना।

उ०—एका लाभ विसाविया, एक मूळ ठगांणा। —केसोदास गाडण

४ एकत्र करना, इकट्ठा करना, सग्रह करना।

उ०—दो ग्रसाढ, दो भादवा, दो ग्रासोज कै माय, सोना-चादी वेच कै, नाज विसावो साय। —वरसा विग्यान

५ देखो 'विसाणौ, विसावौ' (रू. भे)

विसावणहार, हारौ (हारी), विसावणियौ—वि०।

विसाविग्रोडौ, विसावियोडौ, विसाव्योडौ—भू० का० कृ०।

विसावीजणौ, विसावीजवौ—कर्म वा०।

विसावियोडौ—भू का कृ—१ उपार्जन किया हुआ, कमाया हुआ. २ नया पैदा किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ ३ एकत्र किया हुआ, सग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ४ प्राप्त किया हुआ। ५ देखो विसायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विसावियोडी)

विसावीस, विसावीसै—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

उ०—१ गजा रन पोट, पढ़ै थोट तवागळां, यचाग भरि ग्रोट लै विसावीसं। धजवडा गहै मन-मोट ज्यां गिर धसै, दयाळा कोट मैगेट दीसं। —ग्रनोपसिंघ सांदू

उ०—२ पदनीक पाय रा गाय रा दूजां विसावीस,ग्रासुरां नजणा ग्राडै पाय रा समाय। ग्रडोट पाय रा सीह गुमाय रा ग्रागतीक, सिहाय रा जनां ग्रोग्रणाय रा गुमाय। —र. ज. प्र.

उ०—३ हणु थाप गाम विथार भार अठार वन कर भेद । उगणीस वरसै भोम जोवन विसावीस अखेद । —र ज. प्र.

विसास—देखो 'विस्वास' (रू भे.)

उ०—१ भड समेळा जाह कन्है, तुरी अमेळा जास । रावत माफी इक मना, जाह री किसो विसास । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ यौं करता कितरा दिन वितीत हूवा सो गुवाळ पण विसास कीधी जाणै सो मोनै खाय तौ नही ।

—गाम रा धणी री वात

उ०—३ चद सूरिज हुई दीया साख, पानी पवन अरि धूर अकासि । हु नवि जाणु य ईम करै, मुसी है ! नणद हू ईणी विसास ।

—वी दे.

उ०—४ राम भरोसै ऊकळै, आदण ईसरदास । ऊकळता मे ओर दै, बंदा राख विसास । —ह र

विसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू भे)

उ०—१ विसासघात गोहला, निपात डामिया वुरी । करै कमध चूक जोम, भोम आपरी करी । —पा प्र

उ०—२ भुजा धारियो न खाग तै वाकारियो न बाघ भूरो, करग्गा प्रहारियो ढगा सू आणै कूत । एकाएक लाखा वाता हारियो धरम्म 'अजा', हिंदूनाथ मारियो विसासघात हूत ।

—जोवोजी आढो

विसासणौ, विसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू भे)

उ०—कद थै नाग विसासिया, नैण लिया अग-झल्ल । मान सरोवर कद गया हसां सीखण हल्ल । —अग्यात

विसासणहार, हारौ (हारी), विसासणियौ—वि० ।
विसासिग्रोडो, विसासियोडो, विसास्योडो—भू० का० कृ० ।
विसासीजणौ, विसासीजबौ—कर्म वा० ।

विसासियोड़ो—देखो 'विस्वासियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विसासियोडी)

विसास्त्र—स पु [स विष+अस्त्र] १ विष में बुझा हुआ अस्त्र ।

२ साप, सर्प ।

विसाहणौ, विसाहबौ—क्रि स —१ स्वीकार करना ।

२ ग्रहण करना, पकडना ।

उ०—सव जीव विसाहैं काळ कौ, कर कर कोटि उपाइ । साहिव को समझै नही, यौं परळै ह्वै जाइ । —दादूबाणी

उ०—२ दादू कारण काळ कै, सकळ सवारै आप । मीच विसाहै मरण कौ, दादु सोक सताप । —दादूवाणी

३ देखो 'विसाणौ, विसावौ' (रू भे)

उ०—१ करि उच्छव सूरजकवर, कीध विदा 'अभसाह' । रिध सोव्रन मोती रतन, वसन अमोल्य विसाह । —रा रू

उ०—२ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल सोभण मुख मूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप । —वेलि

विसाहणहार, हारौ (हारी), विसाहणियौ—वि० ।
विसाहिग्रोडो, विसाहियोडो, विसाह्योडो—भू० का० कृ० ।
विसाहीजणौ, विसाहीजबौ—कर्म वा० ।
विसाहणौ, बिसाहबौ—रू० भे० ।

विसाहियोडो—भू का कृ —१ स्वीकार किया हुआ २ ग्रहण किया हुआ, पकडा हुआ ।

३ देखो 'विसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री विसाहियोडी)

विसिसयल, विसिस्यल—स पु [स विशिस्थल] कटिस्थल ।

उ०—करमायु भर कुसुमचु, वेणि विसिस्थल थाय । ऊडती जाणै ग्रही, सीचाणइ दुरगाय । —मा. का प्र.

विसिख, विसिख—स पु [स विशिख] १ बाण, तीर ।

(अ मा., डिं. ना. मा.)

उ०—जैसे वाउ थंभै तो मेह वरसै । त्यौं अठै विसिख कहता तीर चलावणौ रहि गयौ । धडा उपरि ऊजळी धारा तरवारया की चमकण लागी । —वेलि टी.

२ एक पक्षीराज, जो गरुड एव शुकी के पुत्रो मे से एक था ।

रू भे —विसिख, वसक्कि, वसख, विखिक, विसक, विसक्ख, विसख, विसिखि, विसिख्ख, विसेक, विसेख ।

विसिखा—स पु [स विशिखा] १ फावडा ।

२ तकुआ ।

३ बाण, तीर ।

४ सुई या आलपिन ।

५ राजमार्ग, आम रास्ता ।

रू भे —विसिखा ।

विसिखि, विसिख्ख—देखो 'विसिख' (रू भे) (अ. मा)

विसिन—१ देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—ब्रहमि जगायो विसिन, परम कोपियो ईसर परि । महा कोप मन माहि, कध कंकाण जिसौ करि । —पी ग्र.

२ देखो व्यसन' (रू. भे)

विसिनि, विसिनी—१ देखो 'विस्णु' (रू भे.)

उ०—१ चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस । ग्यान करीमो हुइ गियो, विसिनि किसो कोइ वेस । —पी. ग्र.

उ०—२ इद अनत अणपार, विसिनि लै रोम वसाया। रोमि रोमि ब्रह्मड, असख ब्रह्मड उपाया। रोम रोम ऊपरी रहै सायर जळ सारा, एकरिए रोम अनत वसै कविलास विचारा। —पी ग्र

२ देखो 'व्यसनी' (रू भे.)

विसिमिसि–स पु. [स] १ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, होड। (उ र)

२ गर्व, अहमता। (उ र.)

विसिया—१ देखो 'बिसिया' (रू. भे)

२ देखो 'विस' (रू भे.)

३ देखो 'विसय' (रू भे.)

उ०—जन हरिदास विसिया तजे, गोविन्द गुण गावै। छाजे वैसे ध्यान कै, तव ही सच पावै। —ह पु. वा.

विसियारस–सं. पु. [स विषय+रस] १ कामवासना, कामेच्छा।

२ भोगविलास, मैथुन।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाळ तरै, भल भोग नितव नितव भरै। कसिया तन घोट लगोट कसी, विसियारस अंतर बीच वसी। —ऊ का.

विसिरस्क–स पु [स विशिरस्क]सुमेरु के पास का एक पर्वत। (पुराण)

विसिरा–स स्त्री. [सं. विशिरा] स्कद की एक अनुचरी, एक मातृका।

विसिस्ट–स. पु [स. विशिष्ट] वह व्यक्ति या वस्तु जिसमें कोई विशेषता पाई जाती हो, अद्भुत वस्तु या व्यक्ति।

वि.—१ प्रसिद्ध, मशहूर, कीर्तिवान।

२ शिष्ट, सभ्य।

३ देखो 'वसिस्ठ' (रू भे)

रू. भे—विसीठ।

विसिस्टाद्वैत–स. पु. [स विशिष्ट+अद्वैत] श्री रामानुजाचार्य का वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमे, जीवात्मा और जगत दोनो को ब्रह्म से भिन्न माना गया है यद्यपि ये दोनो भिन्न नही है।

विसिस्टाद्वैतवाद—देखो 'विसिस्टाद्वैत'।

विसिस्टी, विसिस्ठी–स. पु [स विशिष्ठी] १ सदेशवाहक, खबरनवीस, दूत।

स. स्त्री—२ शंकराचार्य की माता का नाम।

विसीखमूरति—देखो विसीसमूरति' (रू. भे)

विसीठ—१ देखो 'वसीठ' (रू. भे.)

उ०—राजा री सेना पूछियो, लडाई अब हुइसी पिण पूछो पैला कुण छै विसीठा लोग पूछियो। —पचदडी री वारता

२ देखो 'वसिस्ठ' (रू भे)

३ देखो 'विसिस्ट' (रू भे)

विसीठगारी–स. पु.—१ सदेशवाहक या दूत का कार्य।

२ अपशब्द, कटुशब्द, गाली।

उ०—गोगादे वीरमोत मारियो, तद राव राणगदे विसीठगारी गोगादेजी सू कीवी थी, तद गोगादेजी कह्यौ हुतो—म्हारो दावो जोईया सू को नही, म्हारा तीन सरदार पडिया, जोईया रा सात सिरदार पडिया, म्हारो कोई राठोड़ वैर मागै तो राव राणगदे कनै मागज्यो। —नैणसी

विसीसमूरति–स पु. [स विशीषमूर्ति] कामदेव का नामान्तर।

विसुडी–स. पु [स विशुडी] कश्यप ऋषि का पुत्र एक नाग।

विसुदरी—देखो 'विसूंदरी' (रू. भे)

(स्त्री विसुदरी)

विसुंधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

उ०—विस्वामित्रेस एण वात, कोपियो भयकरा। गिरा तरा सरा गभीर, धुज्जवै विसुंधरा। —सू. प्र

विसु—१ देखो 'वसु' (रू. भे)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—विसु दीवउ दुरयोधननिहिं, भीमह भोजन माहि। अमतु हुई नइ परिणमिउ, पुन्निहि दुरित पुलाइ। —सालिभद्र सूरि

विसुआवीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

उ०—सुणी रगण त्रिणि रूप सहि, सो नै सत तालीस। प्रगट छद कहि एण परि, वात विसुआवीस। —ल. पिं

विसुक्र–स. पु [स विशुक्र] देवी के द्वारा मारा गया एक भण्डासुर।

विसुणी—देखो 'विसाति'।

उ०—मोसा, ओळमा वगै कवै, छाक पूत सिर छावडी। लेण विसुणी बैठ सभाळै, रळग्या बाळक रावडी। —दसदेव

विसुद्ध–वि [स विशुद्ध] १ बिलकुल शुद्ध, खरा।

२ बिना पाप का, पाप रहित।

३ कलकरहित, कलंकशून्य।

४ सच्चा, ठीक।

५ पवित्र।

उ०—१ विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पातरै नही, विसुद्ध सुद्ध सघ तैं असुद्ध आतरै नही। प्रचड पडितान की वितड मडळी नही, महा अबोध सोधनी सुबोध मडळी नही। —ऊ का.

उ०—२ कटै कडियाळ वहै करमाळ, कुटक्कै कोपर कध कपाळ। बगत्तर जोध हुवति विसुद्ध, जुटत बहादर बाहुअ जुद्ध। —गु. रू व.

स पु—योग या तंत्र के अनुसार राजस्थानी में शरीर के भीतर माने गये आठ कमल या चक्रो मे से पाचवा चक्र।

वि. वि.—इसका स्थान कंठ माना गया है । जप १०००, रंग नीला (हलका आसमानी), दल १६ होते हैं । इसके देव कही चंद्र और कही शिव माने जाते हैं । इसके १६ अक्षर और १६ दल होते हैं ।

उ०—चक्र विसुद्ध कंठ में उद्‌मुख जाणियै,धूम्र वरण सोडस दळ, कमळ पिछानियै । एक एक कर सोडस स्वर हैं दळन पर, यंत्र पूरण चंद्राकृति, भासत सुक्लतर । —साधक-सुधा

रू. भे.—विसुद्ध विसुध विसुद्धचक्र, विसुद्धिचक्र, विसुध ।

विसुद्धचक्र-स. पु —देखो 'विसुद्ध' (सं पु.) (रू भे)

विसुद्धचारी-स पु [स. विशुद्ध+चारिन्] बिलकुल शुद्ध चरित्र वाला व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति ।

विसुद्धता-स पु. [स. विशुद्ध+ता] विशुद्ध होने की अवस्था या भाव ।

विसुद्धात्मा-स. पु [स विशुद्ध+आत्मा] परम शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप भगवान ।

विसुद्धि-सं स्त्री [सं विशुद्धि] विशुद्ध होने की क्रिया या भाव, शुद्धता ।

रू भे —विसुद्धि विसुद्धी, विसुद्धी ।

विसुद्धिचक्र—देखो 'विसुद्ध' (स. पु) (रू भे)

विसुध—१ देखो 'विसुद्ध' (रू भे)

उ०—किंहि रिति सध्या कै विखै रस पाईजै छै । कवि यौ कहि गया छै । विहु पखा । विसुध । विहु मासा । विहुं राति दिन । वसति सारीखौ रस निरवाह छै । —वेलि टी

२ देखो 'वेसुध' (रू. भे)

विसुन—देखो 'विस्णु' (रू भे)

विसुनपुर—देखो विस्णुपुरी' (रू भे)

विसुनपुरी—देख 'विस्णुपुरी' (अल्पा , रू भे)

उ०—असीय सइहस सजे करि मैमत्ता, पच छोहण जं कद्द मिळइ नरिंद । कर जोडे नरपति कहई, विसुनपुरी जाणें वसइही गोव्यद । —वी दे.

विसुरण, विसुरणौ—देखो विसूरणौ' (रू भे)

उ०—हजार कोस मे सारो लोक दुखी छै । म्हानें तो छोडिया नै वरस छ' हुवा छै, पण चाळीस दिन आपणी सीम मे हुवा, सारो लोक रोवै था । माथो टेकिय विसुरण करै था । —पलक दरियाव री वात

विसुरणौ, विसुरवौ—देखो 'विसूरणौ, विसूरवौ' (रू. भे)

विसुरणहार, हारो (हारी), विसुरणियौ—वि० ।

विसुरिओडौ, विसुरियोडौ, विसुरयोडौ—भू० का० कृ० ।

विसुरीजणौ, विरीजवौ—कर्म वा० ।

विसुरियोडौ—देखो 'विसूरियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री विसुरियोडी)

विसुव-स पु. [सं विषुव] दिन और रात दोनो बराबर होने का वह समय जब सूर्य विषुवत्‌रेखा पर पहुचता है । (ज्योतिष)

विसुवरेखा—देखो 'विसवतरेखा' (रू. भे)

विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति विसुवामित्र,—देखो 'विस्वामित्र' (रू भे)

विसुविसा, विसुवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

विसूंणौ—देखो 'विस्राति' ।

विसूंदरो-स. पु (स्त्री. विसूंदरी) विषैला जन्तु विशेष, छिपकली ।

उ०—१ नाई बोल्यौ—हा बापजी, वात तो आपरी साव साची । म्हारी निजरा देख्योडी है । अेकर विसूदरा री पूछ वाढी तो वा निरी ताळ आगणा में लटपट लटपट करती री । —फुलवाडी

उ०—२ सेठ कह्यौ—पाळियोडी मिन्नी री काई सबूत ! म्हैं किसी उणनै मोल लायो हो । थे तो कंवोला के ऊदरा ई म्हारै पाळियोडा है, घर री माखिया, माछर अर विसूदरा ई म्हारै पाळियोडा है । —फुलवाडी

रू भे.—विसादरो, विसुदरो, विसूंदरो, विसदरो, विसुदरो ।

मह —वसदर ।

विसू—देखो 'वसु' (रू भे.)

उ०—१ विसू रखण सुजस वाता, इंद्र कौसळ आखियाता, देव वछित दान दाता, दुभ्रल दीन दयाळ । गाव दससिर बाण गजै, प्रगट खळ जन भूप भजै, जनक पण रख चाप भजै भलै अवध भुवाळ । —र ज प्र

उ०—२ देण सेवग लक दाता, घल्ल व्याध कवध घाता । विसू रखण कीत वाता, हद्द हाता हद्द हाता । —र ज प्र

उ०—३ वडा भाग ज्यारी विसू, लछवर चरणा लाग । पाव राम गुण प्रीत सूं, आठ पहर अनुराग । —र ज प्र

विसूइया—देखो 'विसूचिका' (रू भे) (जैन)

विसूकणौ, विसूकवौ—क्रि अ —१ रसहीन होना, सूखना ।

उ०—वन मामळ अघवात सु, दुरद विसूकै डाण । जेठ लुवा सूकत जिम, निरजळ देख निवाण । —वा दा.

२ नष्ट होना ।

३ दुर्बल होना, कमजोर होना ।

४ सुस्त होना ।

५ दुधारु पशु के दूध आना बन्द होना ।

विसूकणहार, हारो (हारी), विसूकणियो—वि० ।

विसूकिअोडो, विसूकियोडो, विसूक्योडो—भू० का० कृ० ।

विसूकीजणो, विसूकीजवो—भाव वा० ।

विसूकणो, विसूकवो, वेहुगणो, वेहुगवो, विसूगणो, विसूगवो—रू०भे०

विसूकियोडी—स. पु.—वह गाय, भैंस, या अन्य दुधारु पशु जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो ।

रू भे —विसूगियोडी ।

विसूकियोडो—भू का. कृ.—१ रसहीन हुवा हुआ, सूखा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ ३ दुर्बल हुवा हुआ, कमजोर हुवा हुआ. ४ सुप्त हुवा हुआ ।

(स्त्री विसूकियोडी)

विसूगणो, विसूगवो—देखो 'विसूकणो, विसूकबो' (रू. भे.)

विसूगणहार, हारो (हारी), विसूगणियो—वि० ।

विसूगिअोडो, विसूगियोडो, विसूग्योडो—भू० का० कृ० ।

विसूगीजणो, विसूगीजवो—भाव वा० ।

विसूगियोडी—देखो विसूकियोडी' (रू भे)

विसूगियोडो—देखो 'विसूकियोडो (रू भे)

(स्त्री विसूगियोडी)

विसूचिका—स. स्त्री [स] वमन और विरेचन को साथ लिए हुए हैजा नामक रोग विशेष, जो अजीर्ण की वृद्धि के कारण होता है ।

विसूची—स स्त्री. [स. विषूची] १ विरजू नामक राक्षस की पत्नी,जिससे इसे सो पुत्र एव एक कन्या उत्पन्न हुई थी ।

२ देखो 'विसूचिका' (रू. भे)

विसूणी—देखो 'विस्राति' ।

उ०—जो'ड खनै जिराण, जठै नर अतक जळावै । सीढी धोरै मे'ल, बिसूणी बीच लरावै । जळ री कर छिडकाव, नगलियो फटकै फोडै, हाडी पावक हेत, दागवै पाळा जो'डै । —दसदेव

विसूर—स पु—रुदन करने या सुबकने की क्रिया या भाव ।

विसूरण, विसूरणो—स पु [स विसूरण] १ दुख, रज, शोक, पश्चाताप ।

उ०—इण भात झालो ठाकुर सिंह ऊभो-ऊभो विसूरणा करै छै । हाथ मसळै छै । घोडलो आपरी सवारी री सुन्हली साखत सू खेत माही पडियो छै । —ढाढाळा सूर री वात

२ चिन्ता ।

३ रुदन ।

४ किसी मृत व्यक्ति के शोक मे बनाया हुआ पद्य, मरसिया ।

रू भे —विसूरणो, विसुरण, विसुरणो, वीसूरण, वीसूरणो ।

विसूरणो, विसूरवो—क्रि. स.—१ सुबक-सुबक कर रोना ।

उ०—१ निमखातर सहता नही, दीखण लागा दूर । भाखै इण विध भामणी, वचन विसूर-विसूर । —र. हमीर

उ०—२ एक घडी आधी घडी तुम सौं रहू ज दूर । वरस बराबर एक पळ, रहू विसूर-विसूर । —कुंवरसी साखला री वारता

२ —चिन्ता करना, शोक करना ।

उ०—माया विसरी वेलडी,हरीया पसरी दूरि । केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि-विसूरि । —अनुभववाणी

३ रुदन करना, रोना ।

उ०—१ भिरै भटालि भाल मे भिखार भूर-भूर व्है, छिता अफड छड कै प्रचड ज्वाळ तै चिपै । भगै कनूर भूरि भैस तूर तूर व्है भजो, मरै विसूर सूर कै गकूर कन्न लै मजो । —ऊ. का.

उ०—२ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नही भरि सोय । राम विसूरै विरहनी, आसु कर सु धोय । —अनुभववाणी

४ पश्चाताप करना, दुख करना ।

उ०—तर ऊचो असमान फळ, पयी रह्या विसूरि । जनहरिया फळ ऊजळा, हाथ न पहुचै दूरि । —अनुभववाणी

विसूरणहार, हारो (हारी) ,विसूरणियो—वि० ।

विसूरिअोडो, विसूरियोडो, विसूरयोडो—भू० का० कृ० ।

विसूरीजणो, विसूरीजवो कर्म वा० ।

विसूरणो, विसूरवो, विसुरणो, विसुरबो—रू० भे० ।

विसूरियोडो—भू का कृ —१ सुबक-सुबक कर रोया हुआ २ चिन्ता किया हुआ, शोक किया हुआ ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. ४ पश्चाताप किया हुआ, दुख किया हुआ ।

(स्त्री विसूरियोडी)

विसूविसा, विसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

विसेक, विसेख—स स्त्री —यश, कीर्ति, प्रसिद्धी ।

(अ मा., ह ना मा)

वि —१ भयकर, भयावह ।

उ०—१ आसाढऊ सुद नवमि, गुण आगै रिख (१७३७) लेख । जिकै समत्सर जोधपुर, समहर थयो विसेख । —रा. रू

उ०—२ यौं नभ रवि अचरज्जियो, प्रवळ कळह गह पेखि । एक प्रहर गोळा उरड, व्रत झडहूत विसेख । —रा रू

[स वि =विशेष+सेक=शोक] २ विशेष दुखी, खिन्नचित्त, उदास, पीडित ।

उ०—राम निचत आप हुय रहिया, सुध म्हारी वीसरिया साम । लेखा सकळ विसेक विलोकै, बोलै जद राघव वरियाम । —र. रू

३ देखो 'विसिख' (रू. भे)

४ देखो 'विसेस' (रू भे.)

उ०—पछै अबु समझायो, कह्यो—अै इण तरफ वडा आदमी फैमदार छै। इणा सु आपणो काम आखर कर देसी । तठा पछै इणा री आदर भाव विसेक कीयो। —नैणसी

उ०—२ मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक । सारदूळ विक्रीडतह, वरणो छंद विसेक। —र. ज. प्र.

उ०—३ वासवाहलो ठोड थापी दोय रावळ हुवा दोय सारीखी राजधानी हुई तरवार सामै वासवाहला रा धणिया री विसेख हुई। —नैणसी

उ०—उर पतसाह उचाट अत, वाट अटक्की देख। मिरच हुतासण होमिया, मत्र कतेव विसेख। —रा. रू.

उ०—५ साथ रै लोक नूं कहण लागो, 'जो वीहा कुवरजी रै आगे ही घणा छै पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखो कोई नहीं—वडो सिरदार जाणियो विसेख।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—६ तिण रुपिया री जायगा लेयनै लकडा री खटकड कीधी। आरभ थोडो। जद स्वामीजी ने किणही कह्यो—इनमें कोई आरभ है ? विसेख आरभ नही। —भि द्र.

उ०—७ दस कूप समो वापी, दस वापी समो सर। दसा सरवरा समो किन्या, अन-दान विसेखत। —रा. सा स

उ०—८ प्रथीराज रै हाथ रावत भीव रहियो। वीजो ही घणो विसेख हुओ। पाछा कुसळं-खेमं रावजी कनै साथ आयो। तरै सिकै राती वरछी कीया रावजी री हजूर आया। —नैणसी

रू भे —विसेखि।

अल्पा —विसेखियो, विसेखो।

विसेखकच्छेद्य-स. पु —६४ कलाओ मे से एक कला का नाम।

विसेखणो, विसेखवो-क्रि स —१ देखना, जाच करना।

२ अवलोकन करना, समझना।

उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि, दळ प्रवळ उच्छव पेखियो। सब धरण नव सुख नवल सोभा, विमळ रूप विसेखियो।

—रा. रू

३ कहना, पुकारना।

उ०—व्यदु दोय सुनयणा विसेखो, बहु अनुमार मनहरा वेखो। विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत।

—र ज. प्र.

विसेखणहार, हारो (हारी), विसेखणियो—वि०।

विसेखिओडो, विसेखियोडो, विसेख्योडो—भू० का० कृ०।

विसेखीजणो, विसेखीजवो—कर्म वा०।

विसेखणो, विसेखवो—रू० भे०।

विसेखापुद्गल-स. पु [स विशेषापुद्गल] वे पुद्गल जिनका आत्म सम्बन्ध नही हुआ है।

विसेखि-स पु —१ कारण।

उ०—पातिसाह दिली माहे हुयो दिन अढाई। तिण पातिसाह रो मामो ममरेजखान निणि एदल नूं मारि अर टीको लियो दिली रो । वरस एक राज कियो। पातिसाह सेती लूणहराम कियो। तिणि विसेखि ममरेजखान आप गहिलो हुयो। —द. वि

२ देखो 'विसेख' (रू. भे.)

३ देखो 'विसेस' (रू. भे)

उ०—१ सहस लाख स्रावक भणी, भोजन पुण्य विसेखि। सेत्रुज साध पडिलाभता, अधिकउ तेह थी देखि। —स. कु

उ०—२ ऊठिया जगतपति अतरजामी, दूरतरी आवतो देखि। करि वदण आतिथ स्रम कीधौ, वेदं कहियौ तेणि विसेखि।

—वेलि

विसेखियो, विसेखी, विसेखो—१ देखो 'विसेख' (अल्पा., रू. भे)

२ देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ कोधी कपटी कूर, भूंडो दीसै नूर। धरम रो द्वेसियो ए, मच्छर विसेखियो ए। —जयवाणी

उ०—२ हिम वाधि हिम रित निसा हरणै, दिवस क्रिस गुणि देखियै। चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर विसेखियै।

—रा रू

उ०—३ तिणि मा गुर इकत्रीस, दोइ लुघ भेळा देखो। मूहर नाम सो महण, बळै गुणत्रीस विसेखो। —पिं. प्र

उ०—४ कबु कठ भुज विसाळ ग्रीव तीन रेखा, नटवर का भेख मानो सकळ गुण विसेखा। छुद्रघटिका अधर अनूप किंकिनी धुन सवाई, उस गिरधर कै अग अग मीरा बळि जाई। —मीरा

उ०—५ इद्र वोल्या वेऊ कस्ण नै हो, लाया थे जान विसेखो। नेम ककर परणै जिकै ही, मैं पिण लेस्या लेखो। —जयवाणी

विसेट, विसेठ—देखो 'वसीठ' (रू भे)

उ०—१ दळ सझवै सुरताण, आय चित्रकोट विलिज्जइ। भेजउ वेगि विसेट, वात मिलणै की कीजइ। —प च चौ.

उ०—वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार सभा सहित राय भेटीयउ, वोलइ वयण विचार। —प च चौ

विसेरियो—स पु —१ आधिपत्य या प्रशासन मे रहने वाला व्यक्ति।

उ०—तरै कवर करन कह्यो—"थानु, दीवाणजी बुलाया छै, थै आवो तो हू जीमूं" तरै मेघ कह्यो—"म्हे थारा विसेरिया चाकर छा, ज्यू थे कहस्यो, त्यु करस्या पिण हू पातसाहजी सौं सीख कर आवसो।

—नैणसी

२ देखो 'वसीरो' (अल्पा , रू. भे)

विसेल, विसेलो—वि [सं. विषैला] १ जहरीला, विषयुक्त । (अमरत)

२ व्यसनी, विषयी ।

विसेविसा —देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसेस—वि. [स विशेष] १ अधिक, विशेष, ज्यादा ।

उ०—१ पनगेस घरेस सुरेस तेस सर्भ पेस, भूतेस विसेस चिंतवेस ध्यान भेस, जीतेस, अरेस बध सेस क्रीत जपो जेस, 'किसनेस' कवेस नरेस कोसळेस । —र ज. प्र

उ०—२ खरळां रा आदमियां री जावतो आप रा मुख सूं करावै छै। दारु रा घडा बीच मे पडिया छै । सारै साथ नुं पायजै छै। फेर उहां नु विसेस जावतो देय पावै छै ।

—कु वरसी साखला री वारता

उ०—३ 'सोमल' ब्राह्मण नीधिया, 'सोमा' नामै एक । प्रत्यक्ष जाणै अपछरा, चतुराई रूप विसेस । —जयवाणी

२ मुख्य, खास, प्रधान ।

उ०—१ विसेस बात श्रेलची रा मे, जिकी जीभ बादसाहा री छै अर हाल, समझ, बादसाहा रा तौर श्रेलची उण रा सू मालम होय । —नी प्र

उ०—२ पूत पिता एकै थया, थै चढ जावो देस । बोला कोला बोलिया, बीतो वयण विसेस । —रा रू

३ साधारण से परे, अतिरिक्त या अधिक ।

स पु —१ अन्तर भेद ।

२ हर्ष, खुशी ।

३ पदार्थ वस्तु ।

४ अधिकता, उत्तमता विशेषता ।

५ विचित्रता, अद्भुतता, अनोखापन ।

६ सार, तत्व ।

७ प्रकार, किस्म ।

८ दमन नामक शिवावतार का शिष्य ।

९ सात प्रकार के पदार्थों मे से एक प्रकार का पदार्थ । (वैशेषिक दर्शन ।

१० एक प्रकार का पद्य विशेष, जिसमे तीन श्लोको या पदो मे एक ही क्रिया रहती है । (साहित्य)

११ एक प्रकार का अर्थालकार विशेष, जिसमे आश्चर्योत्पादक अर्थ (घटना) का वर्णन होता है । इसके तीन भेद होते हैं ।

रू भे —वसेस, बिसेस, वछेक, वसेक, वसेख, वसेस, व्रिसक्ख, विसेक, विसेख ।

अल्पा .—वसेखो, विसेखि, विसेखियो, विसेखी, विसेखो, विसेसि, विसेसो ।

विसेसउक्ति—देखो विसेसोक्ति' (रू. भे)

विसेसक—वि [स विशेषक] १ विशेषता उत्पन्न करने वाला ।

स पु —१ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में पाच भगण व एक गुरु होता है ।

वि. वि.—इसके अश्वगीत, नील, व लीला भी नाम हैं ।

२ एक प्रकार का अर्थालकार विशेष, जिसमे प्रस्तुत-अप्रस्तुत में गुण सादृश्य होने पर भी किसी कारणवश विशेषता की स्फुरणा होती है । (साहित्य)

विसेसग्य—वि [स विशेषज्ञ] किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला ।

विसेसण—स पु [स विशेषण] व्याकरण मे वह विकारी शब्द, जिससे किसी सज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो ।

वि.—विशेषता बताने वाला ।

विसेसता—स. स्त्री [स विशेषता] विशेष होने की अवस्था या भाव ।

रू भे.—विसेखता, विसेसता ।

विसेसन्न्—वि —विशेषज्ञ । (जैन)

विसेसालकार—देखो 'विसेस' (११)

विसेसि—देखो विसेस' (रू भे)

उ०—पूगळ देस दुकाळ थियु किणही काळ विसेसि । पिंगळ कचाळउ कियउ, नळ नरवर चढ देसि । —ढो. मा

विसेसोक्ति—स स्त्री [स विशेषोक्ति] एक प्रकार का अलकार विशेष जिसमे पूर्ण कारण के होने पर भी कार्य का अभाव वर्णित होता है ।

वि वि.—इसके तीन भेद कहे गये हैं—

(१) उक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त कहा जाय ।

(२) अनुक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त नही कहा जाय ।

(३) अचिंत्यनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त समझ मे नही आने वाला हो ।

रू भे —विसेसउक्ति ।

विसेसो—देखो 'विसेस' (अल्पा , रू भे)

विसेस्य—स पु [स विशेष्य] व्याकरण की वह पद या शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगा कर सूचित की जाय ।\

विसँ—देखो 'विसय' (रू भे.)

उ०—१ कुती नगरी नै विसैं, हुवौ हाहाकार । देखो राय मरावियो, विना गुनै अणगार । —जयवाणी

उ०—२ हसण बोलण चालण विसैं, घणू होसी हो अवसर नो

जाण। युद्ध करी अपराभवी, नवाग सुदर ही, सोभै स गार वखाण।
—जयवाणी

उ०—३ आयै साध भयै प्रहलाद, जिनकै नही विसै रसवाद। उनका कहा वरनौ विसतार, रामसनेही मेरै प्राण अधार।
—ह. पु वा

विसोक-स. पु [स. विशोक] १ अशोक नामक वृक्ष।

२ ईश्वर, परमात्मा।

३ भारतीय युद्ध मे पाण्डव पक्षीय राजा जो केकय राजकुमार था और कर्ण के द्वारा मारा गया था।

४ भीमसेन का सारथि।

५ ब्रह्मा का मानसपुत्र। (पुराण)

६ दमन शिवावतार का एक शिष्य।

७ कृष्ण एवं त्रिवक्रा के एक पुत्र का नाम जो नारद का शिष्य था।

वि —१ जिसे शोक न हो, शोकरहित।

२ जिसे शोक हो, शोक युक्त।

रू. भे —विसोग।

विसोकद्वादसीव्रत-सं पु [स. विशोकद्वादशीव्रत] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत विशेष।

वि वि —इस दिन सिर्फ अल्पाहार किया जाता है और लक्ष्मी-पूजन किया जाता है इसके करने से प्रियवियोग नही होता है तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है।

विसोका-स स्त्री. [स. विशोका] १ कृष्ण की सोलह हजार पत्नियो में से एक पत्नी का नाम।

२ स्कद की एक अनुचरी मातृका।

विसोग—देखो 'विसोक' (रू भे)

विसोतर-स. पु —एक सौ बीस की सख्या।

रू. भे —विसोतर, विमोत्तर, विसोत्तर।

विसोतरि, विसोतरी—देखो 'विंसोत्तरी' (रू भे)

विसोत्तर—देखो 'विसोतर' (रू भे)

विसोत्तरि, विसोत्तरी—देखो 'विंसोत्तरी' (रू भे)

विसोधन-स पु [सं विशोधन] पापो का नाश करने वाले भगवान्।

विसोधनी-स स्त्री [स विशोधनी] ब्रह्मपुरी का नाम।

विसोनी-स. स्त्री —एक प्रकार का वर्षात मे पैदा होने वाला पौधा, शरपुखा।

रू. भे —विसूनी, विसोनी, वीओनी, वीफनी, वीसूनी, वीसोनी, वेहोनी।

विसोबा—देखो 'विसवौ' (रू भे.)

विसोभित-वि [स वि =रहित+शोभित] १ शोभारहित, भद्दा।

उ०—जब राति वितीत होण लागी। तब चद्रमा किसौ दीसै छै। जिसौ भरतार असमाध्या थका सती को मुख देखिज्यै। जब पिउ वै माहि सक्त छै। चद्रमा माहि ज्योति छै। औ दुख का मारया अर यै दिन की जोति नजीक आया। दून्यौ विसोभित सा देखीजै छै।
—वेलि टी

[सं वि =विशेष+शोभित] २ विशेष शोभित, शोभायुक्त।

विसोवम-वि [सं विषोपम] विष के समान जहर के सदृश्य।

विसोवा—देखो 'विसवौ' (रू भे)

विसोवावीस, विसोहावीस—देखो 'विसवावीस' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

उ०—१ राजा नीयत सामळै, वहै विसोवावीस। असमै धारै बुद्धि बळ, समै, विचारै रीस।
—रा. रू.

उ०—२ आभ थोभै भुजै "माल" हर आभरण, वधै आधक छत्रा विसोवावीस। दुचित दिल्लेस तद खळा माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस।
—केसोदास गाडण

विसोही-वि. [स विशोही] १ आत्मा को विशेष प्रकार से शोधन करने वाला। (जैन)

स स्त्री —विशुद्धी।

विसौ-वि. [स्त्री विसी] वैसा, जैसा, समान।

उ०—१ अै दोनू सरदार जनाना रै बाहर जाय ऊभा रहिया। इहा नू माहीं बडणै नहीं दिया राजूखा री बीवी बाहर आय कही—बाबा थारो वैर थां लेय ही लियो। साबास छै, बडी रजपूती राखी! जसा पुरसा रा यै लडका था विसी ही कीवी। जनानी मरजाद मता भांजो।
—सूरै खीवै काधलोत री वारता

उ०—२ सेठ तीन दिना ताई कलकत्ता री सडका नापी जरै कठै ई जावता चौथोडै दिन ठीक विसौ री विसी इज हीरो एक देसी फरम मे निगै आयो।
—अमरचूनडी

उ०—३ दिनुगा री टेम ही अर भूलेसर री भीड आपरी पूरी जवानी पर आयोडी ही। जवानी ई इसी-विसी नही पण टल्ला देवती।
—रातवासो

विस्कभ, विस्कभक-स. पु [स विष्कभ, विष्कभक] १ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगो मे से एक योग का नाम।

वि. वि —इसमे किसी शुभ कार्य करने मे विष्कुभ योग की प्रथम पाच घटि (दडो) को अशुभ व शेष को शुभ माना जाता है।

२ योगियो का एक प्रकार का वध।

३ भूत एव भविष्यत् कथाओं का सूचक, एव कथा का सक्षेप करने वाला अक।

रू. भे —विसकभक, विसकभक।

विस्कभी–स. पु [स विष्कम्भिन्] शिवजी का एक नामान्तर।

विस्क–स पु [स विष्क] बीस वर्ष की आयु का हाथी। (डि. को)

विस्कर–स पु. [स विष्कर] १ पक्षी, चिड़िया।

२ पूर्वकालिक एक राक्षस जो सम्पूर्ण पृथ्वी का शासक था।

विस्कल–स पु [स विष्कल] सुअर, शूकर।

विस्किर–स पु [स विष्किर] १ पक्षी चिड़िया।

२ सर्प, साप।

विस्कुट—देखो 'विस्कुट' (रू. भे)

विस्टइ–स पु [स. विष्टि] सदेशवाहक, दूत।

उ०—१ विस्टइ ! तू वलि वेगिसूं, विक्रम कहिजे वात। वेस देउ अे विप्रनइ, तु अेह ज माहरु तात। —मा का प्र

उ०—२ अम्हो वलूं इम विस्टइ, काहवी करणावतो। क्षिति मडन क्षोजइ नही, क्षिमा-खडग सोभति। —मा का. प्र

विस्टकार–स. पु —१ दूत, सन्देशवाहक।

२ अपशब्द कहने वाला व्यक्ति।

रू. भे —विस्टिवार।

विस्टकारी–स पु.—१ दूत या सन्देशवाहक का कार्य।

२ अपशब्द, गाली, कटु शब्द।

उ०—पसू बांधनै धाव कियो। इसो घाव जो राव राणगदे नूं अथवा मादे कुंवर नू करै तो जाणू धाव कियो। मोनूं भाटी खटकै छै। इया गोगादेजी नूं विस्टकारी दी हुती, सु मोनू दूखै छै। —नैणसी

रू. भे.—विस्टाकारी, विस्टिकारी।

विस्टप–स पु [स विष्टप] ससार, जगत।

विस्टर–स पु. [स. विष्टर] १ आसन, बैठक।

२ यज्ञ में ब्रह्मासन।

३ पेड़, वृक्ष। (ह ना मा)

४ देखो विस्तर' (रू. भे)

रू. भे —विसटर, विस्टर, विसटर।

विस्टरास, विस्टरास्व–स पु [स. विष्टराश्व] सूर्यवंशी राजा पृथु के उत्तराधिकारी राजा का नाम।

उ०—सुत विकुख सकुनिज सुत स्वाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जै सुत अनन अथु पुत्र जास, राजै अथु नदन विस्टरास। —सू. प्र,

विस्टाकारी—देखो 'विस्टकारी' (रू. भे)

उ०—ताहरा गोगादेजी अोलिया—जै कोई मुणतो हुवै तो साभळज्यो, गोगादे कहे छै, राठोडै अर जोईयै वैर बराबर हुवो छै। जे कोई जीवतो हुवै तो महेवै जायनै कहज्यो। राव राणगदे विस्टाकारी दीनी छै। ज्यो वैर भाटिया कना लेज्यो। —नैणसी

विस्टाळ, विस्टाळु, विस्टाळु, विस्टाळू, विस्टालू, विस्टाळो, विस्टालो–वि. [स. विप+टालनम्] बीच बचाव करने वाला, मध्यस्थता करने वाला।

स. पु —१ कलह या झगडे की अवस्था मे शान्ति कराने वाला मध्यस्थ व्यक्ति।

२ सुलह कराने की क्रिया, मध्यस्थता।

३ समझौता।

उ०—सहर रै दरवाजै चिठी बाधी—नव चोर मारया तिण रा इग्यारा गुणा निनाणवै मनुस्य मारया पछै विस्टाळो कर सू। —भि. द्र.

रू भे —बसीटाळू, बसीटाळो, बिसटाळू, विसटाळो, बसीटाळू, बसीटाळो, विसटाळो।

विस्टि–स पु [स विष्टि] १ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

स स्त्री [स. विष्टि] २ विष्टिभद्रा नामक ज्योतिष के ग्यारह करणो मे से सातवा करण। ३ नरकगामी जीव का नरकवास।

३ विवस्वत् एव छाया की एक भयकर कुरूपा कन्या जिसका विवाह त्वष्ट पुत्र विश्वरूप राक्षस से हुआ था।

विस्टिकार—देखो 'विस्टकार' (रू भे)

विस्टिकारी—देखो 'विस्टकारी' (रू भे)

विस्टिव्रत–स पु [स विष्टिव्रत] एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमे मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थी को इसका सकल्प कर विद्वान ब्राह्मण का पूजन करे तथा लोह, पाषाण या काष्ठ की मुद्रा बनवा कर अष्टदल आसन पर प्रतिष्ठित कर पूजन करे। इस व्रत को इन्द्र ने वृत्रासुर मारने हेतु, शिव ने त्रिपुरासुर का वध करने हेतु विष्णु ने पाचजन्य शखार्थ एव वरुण ने विमानार्थ किया था।

विस्टो–स पु [स विष्ठा] पाखाना, मैला, मल, टट्टी, गू। (अमरत)

उ०—१ पग ऊचा माथो तलै जीवा, आखा ऊपर हाथ। जाल जजाल विस्टा मध्यै जीवा, तू वसियो कही जगनाथ। —जयवाणी

उ०—२ विस्टा नै वलीमातरो ए, नाक तणो मल खेल। वाय पित्त सलेसमाए, सुक्र लोही राध चेल। —जयवाणी

रू भे —विसटो, विस्टो भिसटो भिसठो, भिस्टो, भिस्ठो, विसटो, विसठो, विस्ठो।

विस्ठाघर–स पु [स. विष्ठा+गृह] पाखाना, टारत, शोचालय।

उ० --सुणी नृप स्नान करि तू नीसरधउ, देहरा भणी सुपवित्तो

जी। विस्ठाघर माहि बइठउ आदमी, तेडइ तु आबि तुरती जी।
—स. कु.

विस्ठामुक, विस्ठामुख–स पु [स विस्ठामुख] सूअर।

विस्ठी—देखो 'विस्टी' (रू भे)

विस्ण—देखो 'विस्णु' (रू भे.)

उ०—१ ब्रह्मा विस्ण महेस, सेस मानै फुरमाण।
—केसोदास गाडण

उ०—विस्णु नाम कुळ विस्ण, विस्णु सुत मित्र अपस वद। कच अहिमुख ससि लक, स्यघ कुच को ॥ नाळ छिद। —र. ज प्र

विस्णतर–स. पु—सुदर्शन चक्र। (ना मा)

विस्णु–स. पु [स विष्णु] १ सृष्टि का भरण-पोषण व पालन करने वाले देवता, जो हिन्दुओ के प्रधान देवता माने जाते हैं, ईश्वर, परब्रह्म।

वि. वि.—इन्ही की नाभि से कमल द्वारा ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है।

उ०—१ ब्रह्मा विस्णु नही सिव सक्ती, नही गुरु नहि चेला। नारी पुरुस एक नहीं होता, हरि तो आपोई आप अकेला।
—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ विस्णु नाम कुळ विस्ण, विस्णु सुत मित्र अपस वद। कच अहिमुख ससि लक, स्यघ कुच कोक नाळ छिद।—र ज प्र.

उ०—३ देवी नाभ रै कमळ ब्रह्मा निपाया, देवी ब्रह्म रै रूप मधुकीट जाया। देवी रूप मधुकीट ब्रह्मा डरायँ, देवी ब्रह्म रै रूप विस्णु जगायँ।
—देवि

उ०—४ पगि तणि हूती चोटलइ, चौद लोक नु वास। ब्रह्मा विस्णु महेस पणि, पजरि श्रेणि प्रकास। —मा का प्र

२ अग्निदेवता।

३ बारह आदित्यो मे से पहले आदित्य का नाम।

४ विष्णुस्मृति की रचना करने वाले प्राचीन ऋषि।

५ श्रीकृष्ण का नामान्तर।

६ चौसठ भैरवो मे से एक भैरव का नाम।

७ श्वेत वर्ण।॥ (डि को)

८ कृष्ण वर्ण।॥ (डि को)

९ कार्तिक मास में अश्वतर नाग, रभा अप्सरा, गधर्व एव यक्षो के साथ घूमने वाला सूर्य।

१० भृगु वश मे उत्पन्न एक गोत्रकार।

११ महाभारत युद्ध मे पाण्डव पक्ष का एक राजा, जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

१२ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

१३ भौत्य मनु के पुत्र का नाम।

१४ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तऋषियो मे से एक।

१५ अठारह पुराणो में से एक पुराण।

रू भे.—विसन, विसन्न, विसन, विसनु, विसघ्न, विस्णु, विस्नु, विस्नुक, वीसन, वसन, विरणु, विसन, विसण, विसणु, विसन, विसनर, विसनु, विसनो, विसन्न, विसन्नु, विस्ण, विस्णू, विस्न, वीसणु, वीसन, वीसनु।

विस्णुकांची–स. पु [स. विष्णुकाची] दक्षिण मे श्रीशकराचार्य द्वारा स्थापित एक तीर्थ का नाम।

विस्णुकाता–स स्त्री. [स] एक जडी विशेष, जो औषध मे काम आती है। (अमरत)

विस्णुक्रम–स पु [स विष्णुक्रम] विष्णु भगवान् का पाद या पग।

विस्णुक्रात–स स्त्री. [स विष्णुक्रात] सगीत मे एक प्रकार का ताल विशेष।

विस्णुक्राता–[विष्णुकान्ता] नील अपराजिता।

विस्णुक्राति–[स विष्णुक्रान्ता] श्वेत कोयल नाम की एक लता विशेष। (अमरत)

विस्णुगग, विस्णुगगा–स स्त्री [स विष्णुगगा] एक प्राचीन नदी।

विस्णुगुपत, विस्णुगुप्त–स पु [स विष्णुगुप्त] कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम। (ऐतिहासिक)

विस्णुचकर, विस्णुचक्र–स पु [सं विष्णुचक्र] सदैव भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला सुदर्शन चक्र।

विस्णुज्वर–स पु [स विष्णुज्वर] शत्रुओ का नाशक एक ज्वर जिसके अधीश विष्णु है।

विस्णुतरपण–स पु. [स. विष्णुतर्पण] किसी बालक के मर जाने पर उसके तीसरे दिन दूध, जल, तिल आदि से की जाने वाली तर्पण विधि। (मा म)

विस्णुतिथ, विस्णुतिथि–स. स्त्री. [सं विष्णुतिथि] एकादशी और द्वादशी दोनो तिथियों का नामान्तर।

विस्णुतैल–स पु [स विष्णुतैल] समस्त वात रोगो को मिटाने वाला तैल विशेष। (वैद्यक)

विस्णुदास–स पु [स विष्णुदास] श्रीविष्णु का एक अनन्य भक्त।

विस्णुदैवत, विस्णुदैवत्या–स पु [स विष्णुदैवत्या] १ योगतत्र मे २७ नक्षत्रो मे से श्रवण नामक नक्षत्र विशेष, जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

२ चान्द्रमास के दोनों पक्षो की एकादशी व द्वादशी तिथिया।

विस्णुद्वीप–स पु [स विष्णुद्वीप] एक द्वीप विशेष। (पुराण)

विस्णुधरमा-स. पु. [स. विष्णुधर्मा] गरुड की प्रमुख संतान ।

विस्णुधरमोतर-स. पु [स. विष्णुधर्मोतर] विष्णुपुराण का उपपुराण या एक ग्रंथ ।

विस्णुधारा-स. स्त्री. [स. विष्णुधारा] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।
२ एक नदी का नाम । (पुराण)

विस्णुपजर-स पु [स. विष्णुपजर] १ विष्णु का एक कवच विशेष, जिसके धारण करने से सब भय दूर हो जाते हैं । (पुराण)
२ एक मंत्र जो शिव द्वारा देवी को बताया गया था ।
रू भे.—विस्णुपजर ।

विस्णुपथ-स. पु. [स. विष्णुपथ] १ आकाश, व्योम ।
रू भे.—बिसनपथ, बिसनपथ, विसनपथ ।

विस्णुपद-सं. पु. [स विष्णुपद] १ आकाश, व्योम ।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
३ क्षीरसागर ।
४ कमल ।
५ विष्णु के पैर ।
६ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे १६ व १० पर यति और अन्त मे गुरु होता है ।
७ एक तीर्थ का नाम, जो विपाशा नदी के तट पर स्थित है ।
रू भे —बिसनपद विसनपद, विसनपद ।

विस्णुपदी-स स्त्री [स विष्णुपदी] १ भगवान् श्रीविष्णु के पैर के नाखून में से निकली हुई गंगा, श्रीभागीरथी गंगा ।
२ द्वारिकापुरी ।
३ वृष, वृश्चिक, कुंभ व सिंह आदि की संक्रांति ।

विस्णुपुरांण—देखो 'विस्णु' (१५) ।

विस्णुपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा, रू भे.)

विस्णुपुरो-स पु. [स विष्णु+पुर] स्वर्ग लोक, वैकुण्ठ ।
रू. भे —बिसनपरो, बिसनपुर, बिसनपुरी, बिसुनपुर, बिसुनपुरी ।
अल्पा.,—बिसनपरी, बिसनपुरी, बिसुनपुरी, विस्णुपुरी ।

विस्णुप्रयाग-स पु. [स. विष्णुप्रयाग] एक तीर्थ स्थान, जो पाण्डुकेश्वर के निकट है । इसके निकट ही विष्णुगंगा अलकनंदा मे मिलती है, इसके पास ही हाथी पर्वत है ।

विस्णुप्रिया-स. स्त्री [स. विष्णुप्रिया] १ भगवान् श्री विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी ।
२ तुलसी का पौधा ।
रू. भे.—बिसनप्रिया ।

विस्णुप्रीति-स. स्त्री. [स विष्णुप्रीति] भगवान श्रीविष्णु की सेवा पूजा करने के लिए किसी पूजा करने वाले व्यक्ति को बिना लगान दी गई भूमि ।

विस्णुमती-स. स्त्री. [स विष्णुमती] शतानीक की पत्नी ।

विस्णुयसा-स पु [स विष्णुयशा] ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता, जो सुमति का पति था । (पुराण)

विस्णुरथ-स पु [स. विष्णुरथ] विष्णु का वाहन, गरुड ।

विस्णुरात-स. पु [स. विष्णुरात] अर्जुन-सुभद्रात्मज अभिमन्यु व उत्तरा का पुत्र महाराज परीक्षित जिसकी हत्या अश्वथामा द्वारा गर्भ मे ही कर दी गई थी मगर श्रीकृष्ण ने पुनर्जिवित किया था ।

विस्णुलोक-स. पु. [स. विष्णुलोक] विष्णु का निवास स्थान, स्वर्ग वैकुण्ठ ।

विस्णुवल्लभा-स स्त्री [स विष्णुवल्लभा] १ तुलसी का पौधा ।
२ लक्ष्मी ।

विस्णुवाहन-स. पु [स. विष्णुवाहन] गरुड ।

विष्णुवाहण-स पु [स विष्णुवाहन] गरुड ।

विस्णुविवाह-स. पु [स. विष्णुविवाह] एक प्रकार का वैधव्यहर, जिसमे कन्या का विवाह पहले विष्णु से कर देते हैं ।

विष्णुव्रत-स. पु. [स. विष्णुव्रत] पौष शुक्ला द्वितीया से चार दिन तक रखा जाने वाला विष्णु का व्रत विशेष ।

विस्णुसकति, विस्णुसक्ति, विस्णुसगति-स. स्त्री. [सं विष्णुशक्ति] लक्ष्मी ।

विस्णुसप्तमी-स स्त्री. [स. विष्णुसप्तमी] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को की जाने वाली विष्णु की पूजा जो अभीष्ट सिद्धि हेतु की जाती है ।
वि. वि.—इसी मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को ही प्रियसप्तमी और विष्णु सप्तमी भी मनायी जाती है ।

विस्णुसरमन-स पु [स विष्णुशर्मन] इन्द्र को भी शरण देने वाला एक राजा, जो शिवशर्मन राजा का पुत्र था ।

विस्णुसावरणि-स. पु. [स विष्णुसावर्णि] भौत्य मनु का नाम ।

विस्णुसिद्धि-स पु [स विष्णुसिद्धि] अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

विस्णुहरि-स पु. [स. विष्णुहरि] विष्णु के एक अनन्य भक्त का नाम ।

विस्णुसिल, विस्णुसिला-स स्त्री. [स विष्णुशिला] सालि-ग्राम ।

विस्णुस्रखळ, विस्णुस्रखळा-सं स्त्री [स विष्णुश्रृंखला] श्रवण नक्षत्र मे आने वाली द्वादशी ।

विस्णुस्म्रति-स. स्त्री [स. विष्णुस्मृति] एक धर्मशास्त्र, स्मृति विशेष ।

विस्णुस्वामी-स पु [स विष्णुस्वामी] १ वैष्णव सम्प्रदाय या रामावत साधुओ की एक शाखा। (मा. म)

विस्णू—देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—क्रतध्वसी विस्णू कमळभव जिस्णू स्तुति करै, हिमासू उम्णासू पदम-पद पासू सिग्धरै। इणामा हमेसा वजंत त्रिदवेसा नववती, अई इद्रू अवा जयति जगदवा भगवती। —मे म

विस्तर—१ देखो 'विस्तर' (रू भे)

२ देखो 'विस्तार' (रू भे.)

उ०—१ नव वाडि सेती सील पालउ, पामउ जिम भव पार रे। भगवत विस्तर पणइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। —स. कु.

उ० —२ उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमै, सूत्र टीका सुविचार। रिखमडल वलि प्रकरण थी, रच्यौ ए विस्तर अधिकार।

—ध व. ग्र

उ०—३ सूत्र वाची नइ सगलुं समझज्यो, तिहा विस्तर सवधोजी। केसी प्रदेशी राजा तणउ, समयसुदर कहइ प्रवधो जी। —स कु.

विस्तरण-वि —विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

उ०—नमो वेद विस्तरण, नमो निसचर बोह नामण। नमो सेससायत, नमो हव कव्व हुतासण। —ह र.

विस्तरणौ, विस्तरवौ-क्रि अ.—१ उच्चरित होना, ध्वनित होना, गूजना।

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोवणा तणा झरडका उपजइ, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणैं घरि वेद ध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा सा स.

२ विस्तार पाना, व्याप्त होना, फैलना।

उ०—१ सुर प्रगट मिटि अटकाव सरिता व्याह मगळ विस्तरै। सोचति पुर वाजार सोभा, मोन सुदर मदिरै। —रा रू.

उ०—२ मीठापणा जाणिया मीठो, कमधज धिनो तुहारा क्रत। बोका'हरा वाण विस्तरियो, अत भवणै माहो इम्रत। —द. दा

३ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

४ बिखरना, छितरना, फैलना।

उ०—माग माही मोती सू भरिया छै जाणै आकास रै आंगण तारा विस्तरिया छै। सरवणा री ओर ओपमा न वणसी। सीप मानू स्वाति वूंद झेली छै। जको मोती जणसी। —पना

५ हरा भरा होना, लहलहाना।

६ गमन करना, जाना।

उ०—वइरागी थिउ विस्तरइ रामा सूपि राग। कातर काटै काकरि, पुलतू अणूहांणि पाग। —मा का प्र

७ तितर-बितर होना, फैलना।

उ०—वेताल किलकिलइ, दावानळ प्रज्वळइ। रीछ साचरइ, वीरूतणा यूथ विस्तरइ। वेडी रा साड आहूकइ, ठामि ठामि वन रा भइसा ढूकइ। —सभा

विस्तरणहार, हारो (हारी), विस्तरणियो—वि०।

विस्तरिग्रोडो, विस्तरियोडो, विस्तरयोडो—भू० का० कृ०।

विस्तरीजणो, विस्तरीजवो—भाव वा०।

वित्थरणो, वित्थरवो, विथरणो, विथरवो, विथुरणो, विथुरवो, विसतरणो, बिसतरवो, बिस्तरणो, बिस्तरवो, वीथरणो, वीथरवो, वित्तरणो, वित्तरवो, बिथरणो, बिथरवो, बिथुरणो, बिथुरवो, विसतरणो, विसतरवो, विसत्तरणो, विसत्तरवो, बिसथरणो, बिसथरवो —रू० भे०।

विस्तरता-स स्त्री [स] बहुत या अधिक होने की अवस्था या भाव।

विस्तरवंद—देखो 'विस्तरवद' (रू भे)

विस्तरियोडो-भू का कृ—१ उच्चरित हुवा हुआ, ध्वनित हुवा हुआ, गूंजा हुआ २ विस्तार पाया हुआ, व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, आनन्दिव हुवा हुआ. ४ बिखरा हुआ, छितरा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ५ हरा भरा हुवा हुआ, लहलहाया हुआ।
(स्त्री विस्तरियोडी)

विस्तरियो—देखो 'विस्तर' (अल्पा., रू भे)

विस्तार-स पु [स.] १ प्रसार, फैलाव।

उ०—सिव सक्ती का सव विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इनमे ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ अकास लील नगर गधरव का, इद्रजाळ आकार। जाग्रत झवकायूं जोय र जोगुण, मन कल्पित विस्तारा।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ वधवाणी तू ऐक्र ब्र म. ओकंकार अपार। किमि करि कीधो काळिका, विसव तणो विस्तार। —पी. ग्र

उ०—४ केतेक दिन तपस्या करि आराम लगाया। तिस काकरिख कै नाम कागा कहाया। तिस वगीचू के दरम्यान वरणै जेतै फळ फूलू का विस्तार। सव्रू कै सिर पोस आनारू का अधिकार।

—सू प्र.

उ०—५ मैला मिनख वचन रै मार्थं, वात वणाय करै विस्तार। बैठ सभा विच मूंडा वारै, वचन काढणो वहुत विचार।

—वा. दा.

२ वृक्ष की शाखाएं।

३ अधिकता, वाहुल्यता।

उ०—तठै केसरियै साह ठकुरै साह नू पूछी कही, "जी साहजी, इतरो थाहरै माया रो विस्तार हुतौ, सु किसी भांति गयौ, सु मनै कहो। —ठकुरै साह री वात

४ वृतान्त, विवरण।

उ०—१ तिण समय दिली पातिसाह स्रीसेरसाह राज करै छै। तिण रै पुत्र सलेमसाह साहिजादो वडो अदली हुयो। तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै। विस्तार आगै लिखीजसो। —द वि

उ०—२ तिण अनुसारै मंडाय कोई सक्षेप हुतौ तिण नें उनमान न्याय जाण नै वधारचौ। विस्तार जाण नै सकोच्यौ। तिण में कोई विरुद्ध आयौ हुवै। —भि. द्र

उ०—३ स्वामीजी फेर कह्यो आपै करा। पछै चद्रभाण तिलोकचद दोनूं जणा मान अहकार रै बस टोला बारै निकल्या। तै सहु विस्तार तो स्वामीजी कृत रास थी जाणवो। —भि द्र

उ०—४ पाच पाच सो दीधा दात, सोनो रूपो ग्रहण सघात। राछ पीछ वडारण गाय, विस्तार सूत्र भगवती माय।

—जयवाणी

रू. भे—विथार, विसतार, विस्तर, विस्तार, विस्थर, विस्थार, विथार, विसतर, विसतार, विसतारी, विसयार, विसार, विस्तर, विस्तारि, वीसार।

विस्तारक-वि.—विस्तार करने वाला।

रू भे—विसतारक।

विस्तारण-स स्त्री.—विस्तार या प्रसार करने की क्रिया या भाव।

रू भे—विसतारण।

विस्तारणौ, विस्तारबौ-क्रि स—विस्तार करना, फैलाना।

उ०—१ जब परीसदा वादण नीकली, सुण आयी 'सुबाहु' कुमारी' रे। बादे बैठी छै मुग आगलै, वीर वाणी कही विस्तारी रे।

—जयवाणी

उ०—२ साधवा मुक्तिका वास बदा सहू, भिक्खम स्वाम सिद्धंत है भारी। स्वामी पर भाव कै साधन साच है, वाचै है सूत्रकला विस्तारी। —भि द्र.

उ०—३ 'एकि चद्र सूरधनी प्रभा आपणी काती करी पराभवइ एकि स्त्री पुरुख योग्य दिव्योपभोग्य आभरण विस्तारइ एक चक्रवरत्रिनी रसोई पाहिइ अनत गुण सुस्वाद अठ्ठोत्तरसउ खाद्य''।

—व स.

२ बिखेरना, छितराना।

३ ध्वनित करना, उच्चरित करना।

४ बढोतरी करना, बढाना।

५ हिलाना-डुलाना।

६ प्रचार करना।

उ०—धरमकथा अनुयोगमेजी, धरमकथा द्रस्टात। ए चारो विस्तारिया जी, पैंतालिस सिद्धात। —वृस्त

विस्तारणहार, हारो, (हारी), विस्तारणियो—वि०।

विस्तारिओड़ो, विस्तारियोड़ो, विस्तारयोड़ो—भू० का० कृ०।

विस्तारीजणो, विस्तारीजबो—कर्म वा०।

विथारणौ, विथारबौ, विसतारणौ, विसतारबौ, बिस्तारणौ, विस्तारबौ, विस्थारणौ, विस्थारबौ, विथराणौ, विथराबौ, वियारणो, वियारबौ, विसतारणो, बिसतारबौ, विसथारणौ, विसथारबौ—रू० भे०।

विस्तारि—देखो 'विस्तार' (रू. भे)

उ०—चऊद राज ऊपरि विस्तारि, सिद्धसिला छइ छत्राकारि। अनेक सुख छइ सिद्ध विलसत, सुखह तणउ तै पार न लहति।

—वस्तिग

विस्तारियोड़ो-भू. का कृ—१ विस्तार किया हुवा, प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ. २ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ ३ ध्वनित किया हुआ, उच्चरित किया हुआ। ४ बढोतरी किया हुआ, बढाया हुआ. ५ हिलाया-डुलाया हुआ ६ प्रचार किया हुआ। (स्त्री. विस्तारियोड़ी)

विस्तारी-वि [स. विस्तारिन्] जिसका विस्तार अधिक हो।

विस्तीरण-वि. विस्तीर्ण] १ विस्तृत, फैला हुआ।

२ बहुत लम्बा-चौडा।

रू. भे.—विस्थीरण।

विस्त्रत, विस्त्रित-वि. [स. विस्तृत] १ फैला हुआ, विस्तरित, व्याप्त।

२ लम्बा-चौडा।

३ विपुल, परिव्याप्त।

४ जिसका विवरण यथेष्ट हो।

विस्न—१ देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—१ दुख सुख गोटा ऊछळै, माया मद पीया। ब्रह्मा विस्न महेस लो, वाजी वसि कीया। —ह. पु वा

उ०—२ गवगीय नदन वीनव् जी, स्रीहरि सुरतरु आणि। विस्न तणी वीवाहिलो जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण।

—रुकमणी मगळ

उ०—३ रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण करी नइ, विस्न तणौ वीवाह। सुंडा डवर करि धर फरसी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मगळ

२ देखो 'व्यसन' (रू भे)

विस्नी—देखो 'व्यसनी' (रू भे)

विस्पला-सं स्त्री. [स विश्पला] एक बहुत ही वीर स्त्री जो खेल नामक राजा की पत्नी थी।

वि वि —कहते हैं कि युद्ध मे इसके एक पैर के टूटने पर अश्विनो ने इसे लोहे का पैर प्रदान कर युद्ध करने योग्य बनाया था।

विस्फार-स. पु [स] १ धनुष की टकार।

२ धनुष की डोरी।

३ कम्पन, सिसकन।

विस्फारित-वि [स] १ टनारा हुआ, खेंचा हुआ।

२ कम्पायमान किया हुआ, थरथराता हुआ।

विस्फुरणौ, विस्फुरबौ-क्रि अ —१ कापना, कम्पित होना।

२ डरना, भयभीत होना।

३ हिलना डुलना।

विस्फुरणहार, हारौ (हारी), विस्फुरणियौ—वि०।

विस्फुरिग्रोडौ, विस्फुरियोडौ, विस्फुरयोडौ—भू० का० कृ।

विस्फुरीजणौ, विस्फुरीजबौ—भाव वा०।

विस्फुराणौ, विस्फुराबौ-क्रि. स —१ कम्पित करना, कम्पाना।

२ भयभीत करना, डराना, हिलाना-डुलाना।

विस्फुराणहार, हारौ, (हारी), विस्फुराणियौ—वि०।

विस्फुरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विस्फुराईजणौ, विस्फुराईजबौ—कर्म वा०।

विस्फुरायोडौ-भू. का. कृ.—१ कम्पित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ ३ हिलाया-डुलाया हुआ।
(स्त्री विस्फुरायोडी)

विस्फुरियोडौ-भू का. कृ.—१ कांपा हुआ, कम्पित हुवा हुआ. २ हिला-डुला हुआ ३ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ।
(स्त्री. विस्फुरियोडी)

विस्फोट-स. पु [सं] १ भूमि के अन्दर की भरी हुई आग, गर्मी आदि के फूट कर बाहर निकलने की क्रिया।

२ उक्त क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाला शब्द।

३ एकत्र गैस, बारूद आदि के अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलने की क्रिया।

४ उक्त क्रिया के कारण उत्पन्न शब्द।

क्रि. प्र —करणौ, होणौ।

५ जहरीला या खराब फोडा।

६ एक प्रकार का कोढ नामक रोग।(अमरत)

विस्फोटक-स पु [स.] १ गर्मी या आघात से भभकने वाला पदार्थ।

२ जहरीला फोडा।

३ शीतला रोग, चेचक।

४ छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रो मे से एक।

उ० ···· मुरवि अर्द्धमुरवि परसु पास पट्टिस दूस लागूल मुसल मुखढि मुग्दर लगुड गदा दड भिडपाल गाजीव विस्फोटक वज्र तरवारि प्रमुख ३६ खट खटत्रिस दडा युधानि। —व. स

रू भे —बिसफोटक, बिस्फोटक, विसफोटक।

विस्फोटणौ, विस्फोटबौ-क्रि अ.—१ भूमि के अन्दर की आग, गर्मी आदि का फूट कर बाहर निकलना।

२ एकत्र गैस, बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलना।

३ जहरीला फोडा होना।

क्रि स —४ एकत्र गैस, बारूद आदि को अग्नि, ताप या आघात आदि से बाहर निकालना।

विस्फोटणहार, हारौ (हारी), विस्फोटणियौ—वि०।

विस्फोटिग्रोडौ, बिस्फोटियोडौ, विस्फोट्योडौ—भू० का० कृ०।

विस्फोटीजणौ, विस्फोटीजबौ—भाव, कर्म वा०।

विस्फोटता-स स्त्री – अग को आलस्य आदि के कारण मोडने की क्रिया।

उ०—समस्त सेना दिसि द्रस्टि करि देख्यौ। पाछै क्यो थोडो सो हुल्या। पछै क्यौं थोडो सो आळस कीयौ। अग विस्फोटता कीयौ। जभाई आई पाछै क्यो थोडा-थोडा चाल्या गति दिखाई। पाछै क्यो एक संकुच्या। ए पाचौं बाण सेना नै लागा। —वेलि टी.

विस्फोटियोडौ-भू.का कृ.—१ भूमि के अन्दर की आग का, गर्मी आदि के कारण फूटकर बाहर निकला हुआ। २ एकत्र गैस बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकला हुआ. ३ जहरीला, फोडा हुवा हुआ। ४ एकत्र गैस बारूद आदि को अग्नि या आघात आदि से बाहर निकाला हुआ।
(स्त्री. विस्फोटियोडी)

विस्मय-स. पु [सं] १ आश्चर्य, ताज्जुब।

उ०—१ तद वखतसिंह जी विस्मय मे पड अग्रोला सा रहिया।
—मारवाड रा अमरावां री वारता

उ०—२ बादल लै आदेस गोरा रावत तणौ, सुभट मिल्या तिहां जाय साहस मन मे घणौ। देखि सभा सगली मनमई विस्मय थई आवइ नहि दरबार कदै क्यो आवई। —प. प चौ.

२ अद्भुत रस का स्थायी भाव। (साहित्य)

३ अभिमान, अहकार, गर्व।

रू. भे.—बिसमउ, बिसमय, बिसमै, बिस्मय, विसमय, विसमै, विसमौ, विसम्य विस्मि, विस्मिय।

विस्मयकारी-वि. [स. विस्मयकारिन्] आश्चर्यान्वित करने वाला, ताज्जुब में डालने वाला।

उ०—हे सकळगुणी सिरमोर ! माया रा चित्र बडा विचित्र, विस्मयकारी, बहुगुण भरिया हुवा जाणौ। बाहरी ससार माही

जिसा नदी परवत बन अर नगर दीसै है जिका सगळा ही था अतरजगत काया माही जाणी। —सिंघासण बत्तीसी

विस्मरण–स पु [स] भूल जाने या याद न रहने की अवस्था या भाव
रू भे —विसमरण, विस्मरण, विसमरण, विसमरमण।

विस्मरणी–वि —भूलने वाला, जिसे याद न रहता हो।

विस्मरणौ, विस्मरबौ–क्रि स —भूल जाना, याद न रहना।

विस्मरणहार, हारौ, (हारी), विस्मरणियौ—वि०।
विस्मरिग्रोडौ, विस्मरियोडौ, विस्मरयोडौ—भू० का० कृ०।
विस्मरीजणौ, विस्मरीजबौ—भाव वा०।

विसमरणौ, विसमरबौ, विस्मरणौ, विस्मरबौ, विसमरणौ, विसमरबौ—रू० भे०।

विस्मरियोडौ–भू का. कृ —भूला हुआ, याद न रहा हुआ।
(स्त्री विस्मरियोडी)

विस्मल्ला, विस्मल्लाह—देखो 'विस्मिल्लाह' (रू भे.)

विस्मारक–वि [स.] भूला देने वाला, विस्मरण करा देने वाला।

विस्मि—देखो 'विस्मय' (रू भे)

उ०—गिणता राइ 'दस' कस्यू, तव दसु भूपति नाग। करूप प्रति राजा थयु विस्मि तै जोई लाग। —नळाख्यान

विस्मित–वि. [स]—आश्चर्ययुक्त, आश्चर्यान्वित, चकित।

उ०—ती राणी विस्मित होय नापै नू बुलायी, एकात मे ले जाय कही जै राठोड मडोवर कद आया। —नापै साखलै री वारता
रू. भे —बिसमत, बिसमित, विसमत विसमित, विसमै।

विस्मिता–स. पु —एक प्रकार का वर्णिक छद विशेष जिसमे यगण, मगण, नगण, सगण, दो रगण एव अन्त मे गुरु होता है। तथा छ छ तथा सात पर यति होती है।

विस्मिय—देखो विस्मय' (रू. भे.)

उ०—दीठु जाणे प्रत्यक्ष काम, मानी देव, को करि प्रणाम।
विस्मिय पामी गजगामिनी, सघली रूप जोई कामिनी।—नळाख्यान

विस्मिल—देखो 'बिस्मिल' (रू भे)

विस्मिल्ला, विस्मिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू भे)

विस्रखल, विस्रखला–वि [स. विश्रृखल] १ जिसमे शृखला नही हो, शृखलारहित।
२ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके।
३ दुराचारी, लपट।

विस्रभ–स पु. [स विश्रम्भ] १ दृढ विश्वास।
२ प्यार, प्रेम, मुहब्बत।
३ विश्राम।
४ मैथुन के समय होने वाला प्रेमी-प्रेमिका का झगडा।

विस्रभी–वि [स विश्रम्भी] १ विश्वास करने वाला।
२ प्रेम या मुहब्बत सम्बन्धी।

विस्र–स. पु —खून, रक्त। (डिं. को)
रू भे —विस्र।

विस्रब्ध–वि [सं. विश्रब्ध] १ जिसका विश्वास किया जाय।
२ जो विश्वास करे।
३ निर्भय, निडर।
४ जो उद्धत न हो, सुशील।

विस्रव, विस्रवा–सं. पु. [स विश्रवस्] १ पुलस्त्य ऋषि एव हविर्भू के पुत्र और कुबेर, रावण आदि के पिता का नाम।
वि. वि —इसके करीब नौ पत्निया थी। इसकी इडविडा नामक पत्नी से कुवेर, दूसरी पत्नी केकसी के गर्भ से रावण कुम्भकरण, विभीषण, नामक तीन पुत्र एव शुर्पणखा नामक एक कन्या, तीसरी पत्नी राका के दूषण आदि तीन पुत्र एवं चौथी पत्नी पुष्पोत्करा से खर आदि चार पुत्रो का जन्म हुआ था।
२ लकापति रावण।

उ०—सख वडो तु सख, सख आवध सवाहै।
गदा पदम चक्र ग्यान, विस्रव ऊपरि लै वाहै। —पी. ग्र.

३ पुलस्त्य ऋषि के वशज।
४ तृणविन्दु का पुत्र एक राजा।
५ ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति।
६ विशाल राजा का पुत्र एक राजा।
[स. विश्रव] ७ आश्रय।

विस्रांत–वि [स विश्रान्त] १ जिसने आराम किया हो।
२ शान्त, सुशील।
३ पीछे रहा हुआ, रहित।
४ देखो 'विस्राति' (रू. भे.)

विस्रांति–स स्त्री [स. विश्रान्ति] १ विश्राम, आराम।
२ अवसान, मौत मृत्यु।
३ एक तीर्थ का नाम। (पुराण)
रू भे —बिसाई, बिसाई, बिसाणी, विहाणी, बिहामी. विसाई, विसाणी, विहाणी।

विस्राम—देखो 'विसराम' (रू. भे.)

उ०—१ निरद्वद नाथ, आस्रम अनाथ, वह स्रस्टीवार, प्रळयात पार। विस्राम व्यूढ, गोतीत गूढ, निरगुण निरीह, आधार ईह। —ऊ. का.

उ०—२ तठै आगवो खाग हु छाग तोडै, चडी कालिका मात रै स्रोण चोडे। लगावै सबै सेस विंदी ललाटा, करै फेर विस्रांम पाखै कपाटा। —मे म

उ०—३ कनक महल रतनन जटत सबै पुरी कै धाम। कनक कोटी पोरी कनक, वाय तणो विस्रांम। —गज उद्धार

उ०—४ एहवा पालखा में राव नै बेसाण हुवा खावा निकल्या। माथै मनुख आगे पाछै घणा गाम वारै आया। जद खेत कनै रूख री छाया विस्रांम लियो। जद करसणी बोल्या—अठै मा बालो रे। मा बालो। छोहरा छोहरो बोहेला। —भि द्र

विस्रांमणौ, विस्रांमवौ—देखो 'विसरामणौ, विसरामवौ' (रू भे)

उ०—१ जिसडै मोटी राजडवाळै गयौ तिसडै परिया रामसिघजी पधारिया। ओथि आरोगण लागा दाढी समराडी। बहू विस्रांमी पछै तिण दिन दाढी समराडी। —द वि.

उ०—२ राजाजी भोपतजी थका कुवर दळपतजी नू उचो करि, झालियो हुतो अर भोपतजी विस्रामियै पछै ज्यू भोपति नूं कसता तिम दळपतजी नूं कसणी माहे कियो —द वि.

विस्रामणहार, हारौ (हारी) विस्रामणियौ—वि०।
विस्रांमिओडौ, विस्रामियोडौ, विस्रांम्योडौ—भू० का० कृ०।
विस्रांमीजणौ, विस्रांमीजवौ—भाव वा०।

विस्रामियोडौ—देखो 'विसरामियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री विस्रामियोडी)

विस्रांमी—देखो विसरामी' (रू भे)

वस्रांमु—देखो 'विसराम' (रू भे)

उ०—दव जिम दीठइ करुणए करणइ ए हियु निकामु। मरुत वरुऊ दमनकी मन किंहि नही य विस्रांमु। —जयसेखरसूरि

विस्राळ, विस्राल, विस्राळी, विस्राली, विस्राळो, विस्रालो—देखो 'विसराळ' (रू भे.)

उ०—नारी चीतवइ एहवूं, जु नल हुइ मक्त चित्ति। सती प्रमाविइ ए हुज्यो, विस्राल थाज्यो झत्ति। —नळदवदती रास

विस्रुत—स पु [स. विश्रुत] १ वसुदेव एव सहदेवी के पुत्रो मे से एक यादव राजकुमार।

२ अमिताभ देवो में से एक।

३ पारावत देवो मे से एक।

४ जनकवश के देवमीढ के पुत्र और महाघृति के पिता का नाम।

वि—१ जाना या सुना हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

३ प्रसन्न, हर्षित।

विस्रुतवत—स पु [स विश्रुतवत] सरस्वत राजा का पुत्र एव बृहद्दल राजा का पिता एक राजा।

विस्रुतात्मा—स पु [स. विश्रुतात्मन्] भगवान श्रीविष्णु।

विस्रुति—स स्त्री. [स विश्रुति] प्रसिद्धि, ख्याति।

विस्रेय—वि [स. वि.=विशेष श्रेयम्] १ विशेष श्रेष्ठता वाला, उत्तम, श्रेष्ठ।

[स. वि.=रहित+श्रेयस्] २ श्रेष्ठता रहित, बुरा, नीच।

उ०—घेय को विधान साधि ध्यान ना धरयौं, गेय कौ अग्यान तें प्रमान ना परयौं। क्रेय औ विक्रेय कथा काजतें करयौं। स्रेय को विस्रेय साज लाज ना मरयौ। —ऊ. का

विस्लथ—वि. [स विश्लथ] १ शिथिल ढीला।

२ सुस्त, थका हुआ।

विस्लेस—स. पु. [स विश्लेष] १ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव।

२ प्रेमियो या पति-पत्नी का विछोह, वियोग।

३ थकावट सुस्ती।

४ शिथिलता, ढीलापन।

विस्लेसण—स पु [स विश्लेषण] १ किसी पदार्थ आदि के संयोजक द्रव्यो को अलग-अलग करने की क्रिया।

२ वायु के प्रकोप से फोडे या घाव मे होने वाली एक प्रकार की वेदना।

विस्लेसणात्मक—वि. [स विश्लेषणात्मक] जिसका विश्लेषण किया जा सकता हो।

विस्लोक—स पु. [स विश्लोक] एक मात्रिक छद विशेष जिसमें १६ मात्राएँ होती हैं और पाचवी व आठवी मात्रा लघु होती है और यहीं पर यति होती है।

विस्वतर—स. पु [स विश्वतर] भगवान बुद्ध।

विस्वभर—स. पु [स विश्वभर] १ समस्त ससार का पालन-पोषण करने वाले, भगवान विष्णु का नामान्तर।

उ०—नमो अग्राहधाह स्रवन पुट सार सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा भ्रत विजय लछ्या पत नमो। नमो विस्वाधारी अनळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वभर नमो। —ऊ का

२ देवराज इन्द्र।

३ अग्नि देवता।

४ एक उपनिषद्।

रू. भे —विसभर, विस्वभर, वसंभर, विसभर, विसभर, वीसभर।

विस्वभरा—स स्त्री [स विश्वभरा] पृथ्वी, भूमि। (डिं को)

२ दुर्गा, देवी, शक्ति ।

विस्वनत—स. पु [स विश्वनत] जनकवंशीय एक राजा ।

विस्वनद—स पु [स विश्वनद] ब्रह्मा के एक परम तेजस्वी शिष्य का नाम ।

विस्वनाथ—स पु [स. विश्वनाथ] १ काशी का एक ज्योतिर्लिंग ।

२ शिव, महादेव । (अ. मा)

उ०—भो मेटि उभै ससार भव, इम कुण मूळ उद्धारसी । परसियो राय जोधहपुरै, विस्वनाथ वाणारसी । —गु रू. व

३ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

रू भे —विसवनाथ ।

विस्वनाभ—स पु [स विश्वनाभ] १ भगवान् श्रीविष्णु ।

२ देखो 'विस्वनाभि' (रू. भे)

विस्वनाभि—स पु. [स विश्वनाभि] १ भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र ।

२ देखो 'विस्वनाभ' (रू भे)

विस्वपत, विस्वपति, विस्वपती—स. पु. [स विश्वपति] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

३ मनु नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम

रू भे.—विसपत, विसपति, विसपती ।

विस्वपा—स पु [स विश्वपा] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चन्द्रमा, चाद ।

४ आग, अग्नि ।

विस्वपातरी विस्वपात्री—स पु [स विश्वपातृ] पितरो में से एक ।

विस्वपाळ—स पु [स विश्वपाल] १ ससार का भरण-पोषण कर्ता, ईश्वर, विष्णु ।

२ हिरण्यनाभ कौशल्य का पिता एव व्युत्थिताश्व का पुत्र एक राजा ।

रू भे.—विसपाळ ।

विस्वपावन, विस्वपाविनी—स स्त्री [स विश्वपावन] १ तुलसी ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आग, अग्नि ।

विस्वपूजिता—स स्त्री [स विश्वपूजिता] तुलसी ।

विस्वप्रकासक—स पु [स विश्वप्रकाशक] सूरज, सूर्य ।

विस्वप्रबोध—स पु [स. विश्वप्रबोध] भगवान विष्णु ।

विस्वासन—स. पु [स विश्वासन्] १ देवता ।

२ सूरज, सूर्य ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ अग्नि, आग ।

विस्वबधु—स पु [स विश्वबधु] शिव महादेव ।

विस्वबाहु—स. पु. [स विश्वबाहु] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

विस्वभरता, विस्वभरत्ता—स पु [स विश्वभर्तृ] ईश्वर, परमात्मा ।

विस्वभावन—स पु [स. विश्वभावन] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ रक्त नामक बीसवें कल्प मे उत्पन्न ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।

विस्वभुज, विस्वभुजा—स स्त्री [स विश्वभुज्] १ एक देवी का नाम । (पुराण)

स पु —२ ईश्वर, परमात्मा ।

३ देवराज इन्द्र ।

४ पाकयज्ञ का अग्निदेवता जो ब्रहस्पति के चार पुत्रो में से चौथा पुत्र था और गोमती नदी का पति था ।

५ पितरो मे से एक ।

वि —सब का उपभोगकर्त्ता, सर्वभक्षी ।

विस्वभूखण, विस्वभूसण—स. पु [स विश्वभूषण] एक सूर्यवशी राजा (रा. वसावली)

विस्वमया—स. स्त्री [स विश्वमया] अग्नि की सात जिव्हाओ मे से एक जिव्हा का नाम ।

विस्वमहेस्वर—स पु. [स. विश्वमहेश्वर] १ शिव, महादेव ।

विस्वमाता—स स्त्री [स विश्वमाता] विश्व की माता, दुर्गा ।

विस्वमित, विस्वमितर, विस्वमित्र, विस्वमीत—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे)

उ०—पेडा री छाया बैठ्यो हो, विस्वमित्र तप ग्यानी । चिंतन घणोमगन हो, हो परम लोक रो ध्यानी । —करणीदान बारहठ

विस्वमुखी—स. स्त्री [स विश्वमुखी] पार्वती ।

विस्वमूरति, विस्वमूरती, विस्वमूरत्ति—स स्त्री [स विश्वमूर्ति] सर्वव्यापी भगवान विष्णु ।

विस्वमोहन—स पु. [स. विश्वमोहनम्] विष्णु का नामान्तर ।

विस्वयोनि, विस्वयोनी—स. पु. [स. विश्वयोनि] ससार के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

रू. भे.—विसवजूण, विसवजोनि, विसवयोनि, विस्वजूण, विस्वजोनि।

विस्वरधी—स पु. [स विश्वरधि] इक्ष्वाकुवशीय एक राजा का नाम ।

विस्वर—देखो 'विसर' (रू. भे)

उ०—नाडोलाई रो सोभाचद सेवग वावेचा कह्या—भीखणजी खेरवै है सो त्यारा अवरणवाद विस्वर जोड । सतरै प्रकार नी पूजा रचै है तिण माही सूं तोनै दस बीस रुपया देस्या । जद सोभाचद बोल्यो—भीखणजी सू वात करनै पछै विस्वर जोडसू —भि. द्र

विस्वरथ—देखो 'विस्वमित्र'

विस्वराजा—स. पु —एक सूर्यवशी राजा का नाम । (रा वसावळी)

विस्वरुचि, विस्वरुची—स. पु. [स. विश्वरुचि] १ एक देव योनि। [स विश्वरुची] २ अग्नि की सात जिव्हाओ मे से एक जिव्हा का नाम ।

विस्वरूप—स पु [सं विश्वरूप] १ श्रीकृष्ण । (ना. मा.)

२ श्रीविष्णु ।

३ शिव, महादेव ।

४ चौसट भैरवो में से एक भैरव का नाम ।

५ शिवकल्प के पश्चात् प्रारभ हुए एक कल्प का नाम ।

६ गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखाया गया भगवान श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जिसके अनुसार उन्होंने समझाया कि ब्रह्माड मे सूर्य, चन्द्रमा, तारे ग्रह आदि जो कुछ है वे सब मेरा ही स्वरूप है।

८ एक प्राचीन तीर्थ ।

९ त्वष्टा का एक त्रिमुखी पुत्र जिसे इन्द्र ने मारा था ।

विस्वरूपविस्तार—स पु —श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

विस्वरूपा—स स्त्री. [स विश्वरूपा] १ एक देवी ।

२ धर्म ऋषि की पत्नी, जिसकी कन्या का नाम धर्मव्रता था ।

विस्वरूपी—स पु [स. विश्वरूपिन्] भगवान श्रीविष्णु।

विस्वरेतस—देखो 'विस्वरेतस' (रू. भे.)

विस्वलोचण, विस्वलोचन—स पु [स विश्वलोचन] १ सूरज, सूर्य ।

२ चाद, चन्द्रमा।

विस्वलोप—स पु [स. विश्वलोप] एक वैदिक ऋषि का नामान्तर।

विस्ववसु—स पु. [स विश्ववसु] जमदग्नि एव रेणुका एक पुत्र ।

विस्ववारा—स स्त्री. [स विश्ववारा] एक अत्रिगोत्र की स्त्री, जो ऋग्वेद के पाचवें मडल की ऋचाओ की ऋषि थी ।

विस्वविद्यालय—स पु. [स विश्वविद्यालय] सभी प्रकार के विषयो की ऊच कोटि की शिक्षा देने व उपाधिया प्रदान करने वाली शैक्षणिक सस्था विशेष ।

विस्वसनीय—वि [स. विश्वसनीय] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य ।

विस्वसहा—स स्त्री. [स विश्वसहा] १ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम।

२ भूमि, पृथ्वी, (डि को)

विस्वसाखी, विस्वसाखी—स पु [स विश्वसाक्षी] ईश्वर, परमात्मा ।

विस्वसित—देखो 'विस्वस्त' (रू. भे.)

विस्वसेन—स पु [स विश्वसेन] १ शान्तिनाथजी के पिता एक राजा । (जैन)

उ०—विस्वसेन पिता अचिरा माया, जेणं चउदं सुपना मोटा पाया । जनम्या तीरथकर अमिय झरी, सोसाति जिनेस्वर साति करी । —जयवाणी

२ एक सूर्यवशी राजा का नाम। (रा. वसावळी)

विस्वस्त—वि [स विश्वस्त] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वसनीय ।

विस्वस्ता—स स्त्री. [स विश्वस्ता] वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो विधवा।

विस्वस्रवा—स पु. [सं विश्वश्रवा] कुबेर एव लकापति रावण के पिता एक मुनि ।

उ०—ब्रहस्पति पुत्र पुलहक्रत (भारया मनभवा) तस्य पुत्र भारद्वाज । पुलहस्त भारया साति, तस्य पुत्र विस्वस्रवा । विस्वस्रवा पुत्र कुबेर । कुबेर पुत्र नलकुबर । —रा. वसावळी

विस्वहरता, विस्वहरत्ता—स पु [स विश्वहर्तृ] शिव, महादेव।

विस्वहेतु—स पु [स विश्वहेतु] भगवान, श्रीविष्णु।

विस्वा—स. स्त्री [स विश्वा] १ राजा दक्ष की कन्या, जो धर्म को व्याही गई थी।

२ भारतवर्ष की एक महा नदी ।

३ सोंठ। (ना मा.)

विस्वागाथा—स. स्त्री. [स विश्वागाथा] गाहा छद का एक भेद विशेष, जिसमें ९ गुरु और ३९ लघु अर्थात ४८ वर्ण या ५७ मात्राए होती हैं।

विस्वाघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—राजाजी चिमकनै बोल्या—हैं, अै तो दीवाणजी ! अवै ठा पडी ! तो आ सगळी कुचमाद आ दीवाणजी री ही । इत्तो

बिस्याघात ! साच पूछो तो म्हानै श्रा दीवाणजी माथै कदे ई पूरो भरोसो नी व्हियो । —फुलवाडो

बिस्वाची-स. स्त्री [सं. विश्वाची] १ एक वैदिक अप्सरा ।

२ वायु के कारण होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमे कधे मे अगुलियो तक सारा हाथ न तो फैलाया जा सकता है और न ही सिकोडा जा सकता है। (वैद्यक)

बिस्वात्मा-स. पु [स. विश्वात्मा] १ विष्णु, भगवान ।

२ ससार के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा ।

३ शिव, महादेव ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

बिस्वाधार-स पु [स. विश्वाधार] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—अनाथा-नाथ अनत अछेह, दयाळ-मूरति विवर्जित-देह । विना-वपु-रूप अनत विथार, अमूळ-विरक्ख सु बिस्वाधार ।
—ह. र

२ मेधातिथि के पुत्र का नाम ।

रू. भे —बिस्वाधारी ।

बिस्वाधारी—देखो 'बिस्वाधार' (रू. भे)

उ०—नमो अग्राहधारु सुवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्ष अत विजय लक्ष्या पत नमो, नमो बिस्वाधारी अनळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व अवन सुत विस्वभर नमो। —ऊ का.

बिस्वाधिप, बिस्वाधिपत, बिस्वाधिपति, बिस्वाधिपती—स पु [स विश्वाधिपति] विश्व का अधिपति, ईश्वर, परमेश्वर ।

बिस्वानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ बावन्ना चदन ठवी, सुरहा तेल नी धार रै। अत बिस्वानर तर पिनह, कीधउ तनु सस्कार रै। —ए जै. का स

उ०—२ उतर आज स उजमी, सकै तो पडसी सीय। कै बिस्वानर सेवियै, कै सासू री धीय । —ढो. मा.

उ०—३ तेरा पक्का न खावसी, रै बिस्वानर रङ्ख। मह दीठइ तइ जाळिया, सज्जन केरा हड्ड। —प्रथ्वीराज राठोड

बिस्वाबीस—देखो 'बिसवाबीस' (रू. भे)

बिस्वामित्र, बिस्वामित्तर, बिस्वामित, बिस्वामितर, बिस्वामित्र, बिस्वामित्रेस,

बिस्वामीत—स पु [स. विश्वामित्र] कान्यकुब्ज के पुरुवशीय महाराज गाधि के पुत्र एक महर्षि जो क्षत्रियकुल मे जन्म लेने पर भी अपने तपोबल से ब्रह्मर्षियो मे परिगणित हुए ।

उ०—१ बिस्वामित्रेस एण वात, कोपियौ भयकरा । गिरा तरा सरा गभीर, घुज्जवै विसुधरा । —सू प्र

उ०—२ बिस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूत गोतम्म तारी । पति स्रापहू देह पाई परांणौं, जिका दिव्य देहा हुई स्रव्व जाणौं । —सू प्र.

उ०—३ विहू रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सझै जग बिस्वामित्र सहाय । जनक तणौ वळि जोयौ ज्याग, मागै धनु क ट्र सीय विभाग । —ह. र.

वि. वि—इनका जन्म का नाम विश्वरथ था किन्तु ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर ये विश्वामित्र के नाम से विख्यात हुए । गाधि की सत्यवती नामक पुत्री ऋचीक ऋषि को ब्याही गई थी। ऋचीक ने अपनी पत्नी व सास के लिए दो अलग-अलग चरु बनाये पर दोनो ने गलती से एक दूसरी का चरु खा लिया । परिणामत सत्यवती से जमदग्नि हुए जो ब्राह्मण होते हुवे भी क्षत्रिय गुण सम्पन्न थे और महाराज गाधि की पत्नी के गर्भ मे विश्वामित्र हुवे, जो क्षत्रिय होते हुवे भी ब्राह्मणत्व से परिपूर्ण थे। ये बडे प्रतापी राजा थे। एक बार ये शिकार करते-करते ससैन्य वसिष्ठाश्रम में पहुचे । वहा वसिष्ठ महर्षि ने अपने तपबल एव कामधेनु नन्दिनी की सहायता से राजा का राजोचित सत्कार किया। नन्दिनी से प्रभावित होकर उसे इन्होंने अपने साथ ले जाना चाहा और वसिष्ठ के इन्कार करने पर इन्होंने जबरदस्ती की। वसिष्ठ का इगित जान कर नन्दिनी क्रुद्ध होकर अपने शरीर से सैनिक व म्लेच्छ निकाले जिन्होने राजकीय सैनिको को पराजित किया । उक्त घटना से इन्हें अनुभव हुआ कि राजबल से तपोबल अधिक है । परिणामत इन्होंने भी राज्य को त्याग कर घोर तपस्या की और तपस्वी, राजर्षि व ब्रह्मर्षि बने । इनकी तपस्या मे मेनका ने विघ्न डाला और उससे शकुन्तला का जन्म हुआ । मतान्तर से उर्वशी या रम्भा नामक अप्सरा ने तपस्या भग की थी और तपस्या भग करने वाली अप्सरा से ही शकुन्तला का जन्म हुआ था जो दुष्यन्त राजा की पत्नी बनी थी और भरत की माता बनी थी । इन्होने दशरथ सुत राम-लक्ष्मण को अपने साथ यज्ञ की रक्षार्थ ले जाकर ताडका, सुबाहु आदि का वध करवाया था। वहा से राम-लक्ष्मण को अपने साथ मिथिलापुरी सीता स्वयवर मे ले गये थे। इन्होने त्रिशकु को सदेह स्वर्ग पहुचाया था । इनके शुन, शेफ, मधुच्छन्द, धनजय, कृतदेव, अष्टक, कच्छप, हारीतक, हिरण्याक्ष, आदि सौ पुत्र हुए थे। सती, रेणु, शालावति, साकृति, माधवी आदि इनकी पत्नियां थी। इनका आश्रम कौशिकी नदी के तट पर था ।

२ अर्वावसु एव परावसु ऋषियो के पितामह एव रैभ्य नामक ऋषि का पिता, एक ऋषि ।

३ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित वैवस्त मन्वन्तर का एक ऋषि ।

४ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ रहने वाला एक ऋषि ।

५ रात्रि राक्षसो के चार समूहो में से एक राक्षस समूह ।

रू. भे.—विसबामत्र, विस्वामत्र, विसवामत्र, विसवामित, विसवा मितर, विसवामिति, विसवामित्र, विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति, विसुवामित्र, विस्वमित, विस्वमितर, विस्वमित्र, विस्वमीत।

विस्वामित्रा-स स्त्री. [स.विश्वामित्रा] भारत में बहने वाली एक नदी।

विस्वायु-सं पु. [सं विश्वायु] पुरुरवस् राजा के छ पुत्रों में से एक जो राजा था।

विस्वावसु-सं पु [स विश्वावसु] १ एक गन्धर्व का नाम जो कश्यप एव प्राधा के पुत्र थे। (पुराण)

वि वि.—इनके दो पुत्रिया थी। पहली पुत्री महासती मदालसा थी, जिसे पातालकेतु विवाहार्थ हर ले गया था किन्तु शत्रुजित् के पुत्र ऋतध्वज ने पातालकेतु को मारकर इससे विवाह किया था और दूसरी पुत्री का नाम प्रमद्वरा था जो मेनका नामक अप्सरा से उत्पन्न हुई थी। पृथु महाराज के द्वारा पृथ्वी को गाय रूप मे दूहते समय गन्धर्वों व अप्सराओं ने इन्हें बछड़ा बनाकर कमल पात्र में गन्धर्व विद्या (सगीत) व सौंदर्य दुह लिया था।

२ श्रावण माह के सूर्य के साथ भ्रमण कर्त्ता एक गन्धर्व।

३ विष्णु का नामान्तर।

४ जमदग्नि ऋषि के पाच पुत्रों में से एक जो महान ऋषि था।

५ साठ सवत्सरों मे से ३९ वा और विष्णु वीसी के उन्नीसवें सवत्सर का नाम।

६ धर्म एव सुदेवी के पुत्रों में से एक, वसु।

७ मधु राक्षस की पत्नी कुम्भीनसी का पिता एव माल्यवत राक्षस की कन्या का पति, एक राक्षस।

८ पुरुरवस एव उर्वशी के पुत्रों में से एक, गन्धर्व।

विस्वावीस—देखो 'विसवावीम' (रू भे)

उ०—१ ये सहु नै सुख ए जगदीस, वाणी तेहनी, विस्वावीस। प्ररूप्या आगम पेंतालीस, सम्या नाम कहुं सुजगीस।
—ध व. ग्र.

उ०—२ घणा जोवे नित राजरी, वाटा विस्वावीस। किण दिन आय करावस्यो, घर लीला री हीस?
—अग्यात

विस्वास-स. पु [स विश्वास] १ मन में किसी व्यक्ति, बात या वस्तु के कारण उत्पन्न होने वाला भाव, भरोसा, ऐतबार, यकीन,।

उ०—१ देवता पाण सेठ रो जीव राजी व्हियो। उण री निजरा आगै सा'व अर मेंमडी रा हमतोडा उणियारा फिरण लाग्या। सेठ नैं पक्कायत विस्वास व्हैग्यो कै हीरो वानैं सोळू आना दाय आवेला।
—अमर चूंनडी

उ०—२ तथा लोका नै साधा सू भिडकावै। जद स्वामीजी बोल्या—आगै भृगु पुरोहित पिण वेटा नैं भिडकाया। कह्यो साधा रो विस्वास कीज्यो मती।
—भि द्र.

२ किसी विषय, सिद्धात आदि की सत्यता का पूरे प्रमाण के अभाव मे उसकी सत्यता के सम्बन्ध में होने वाली मन की धारणा।

उ०—लुगाई मे अकल अर हीमत व्है तो ई वा काम में नीं वरती-जै। वरतीजण रो कीं मारग ई कोनी। पूतळी री पूजा करता भगत नै तो ओ विस्वास रेवै के भगवान विना कह्या ई उण रै मन री सै वाता जाणतो व्हैला।
—फुलवाडी

३ मन में होने वाला वह दृढ निश्चय जो केवल अनुमान पर आधारित हो।

उ०—इतरा नैं तो एक लट्ठ म्हारी खोपडी पर पडियो अर म्हू पडतो पडतो बच्यो। अबै म्हने पक्को विस्वास व्हैग्यो हो के आ कोई प्रेत लीला नही पण मानखा लीला ही।
—रातवासो

४ यकीन एतबार, भरोसा।

उ०—१ घात व्हैणी व्हैती तो कदेई व्है जाती। धनजी-भीमजी माथै आपरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण काई ए दो आदमी दरवार सू ई वत्ता सामरथ है? दरवार तो आप रै माथै पूरा मेहरवान है।
—अमर चूनडी

उ०—२ अवकी महाराणी फेर मासी रै पगा हाथ लगाय कह्यो—यू ओ विस्वास राख कै थारी काली भाणजी कदे ई थारै दूण सत माथै अभरोसो नी करैला।
—फुलवाडी

उ०—३ म्हारी जीभ मे कीडा पडै म्हैं थनै काले कैडी ऊधी पाटी पढाई। म्हारी काली बाता माथै घणो विस्वास करियो तो सगळी ऊमर रोवैला।
—फुलवाडी

५ आत्मवल।

उ०—१ इण परमेस्वर रै करार री कूती आक लियो वेटी! म्हैं थनै म्हारी ओ इज ग्यान सूंपणी चावती। अबै तो ओ ग्यान ई म्हारी सुहाग अर थारो विस्वास है।
—फुलवाडी

उ०—२ उण रा डील नै पतवाणिया म्हने प्रैडो लखायो कै ओ वावो धान, पाणी अर हवा रै पाण नीं जीवै, आपरा विस्वास रै आपै जीवै है।
—फुलवाडी

उ०—३ पण विस्वास रा वळ आगै उणरा अखूट विखा नै ई हार मानणी पडी। विस्वास रा वळ रै सामी वापडा दुख, क्लेस अर सताप री काई गाढ।
—फुलवाडी

६ दृढ निश्चय।

उ०—ठाकर आडिया रा अरथ बतावण मे प्रवीण हा वानै पूरो विस्वास हो। अर जवान सूं कौल व्हैगो जको तो व्हैगो।

—फुलवाड़ी

७ धैर्य, तसल्ली।

८ आत्म-सन्तोष।

उ०—१ म्हू अबै उण भोळा कमेडा नै काई जवाब देवतो। उण रा विस्वास नै किया खडत करतो। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै ही उणनै किया तोडतो। —अमरचूनडी

उ०—२ गुमेज भरया सुर में बोल्या—मूंडो है, धरटी रो गाळो कोनी। निकळया बोल पाछा नी उराइजे। म्हनै पूरो विस्वास है कै किणी आडी रो अरथ म्हारा सूं छानो कोनी। —फुलवाडी

९ धैर्य।

उ०—तिण सूं गगदेव री आगम जाणि पहिली सूचना करि मोनू बुलाइ गेमारा नूं म्हारी सहायक भाव दिखावणो। जरै खीची री भय टळियां विस्वास पाइ धीजिया नूं रजपूत करण रै काज मीणा री चाल छोडण री पत्र कपट कर लिखावणो। —व भा.

उ०— ......जे हसै तो एक लाख अर जे प्रसन्न होय नो विक्रम करोड रुपिया देय। सो हे राजा! महाराज विक्रम सा गुण जै तो माही होय तो सिंघासण बैठ नातर विस्वास कर बैठ रहै। —सिंघासण बत्तीसी

क्रि प्र.—करणो, जमणो, देणो, बैठणो, होणो।

रू भे—बसास, विसबास, बिसवास, बिसास, बिस्वास, बेसास, बैसास, विसवास, विसास, वीसास।

अल्पा.—बेसासडउ, वीसासो।

विस्वासकारक–वि [स विश्वासकारक] १ विश्वास करने वाला, जो विश्वास करे।

२ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास योग्य, विश्वसनीय।

विस्वासघात–स पु [स विश्वासघात] विश्वास देने के बाद विश्वास करने वाले के विरुद्ध, उसके विश्वास के विरुद्ध किया जाने वाला कार्य।

उ०—१ इतरी सुण कुमार चट बादर नूं डाळ सू धकेलियो सो पडता बार सचेत होय डाळ ऊपर चढ गयो। कुमार रै माथै मृत की धार मार कही—नीच तो नूं धिक्कार! तू वचनहार, मित्रद्रोही विस्वासघात कीन्हो। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ इसी बात सुण कुमार एक आक छोडियो। वीसारामा करै लागियो, तद पडदा माही सूं फेर पिंडत कही—ब्रह्महत्यादिक पाप गगा नहाया छूट जाय पर मित्र सू कियो विस्वासघात नही छूटै।—
—सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ कइ विस्वासघात अम्है कीधा, कइ अवगुणियां पात्र। कइ धन प्राणि पियारा भूठी, पामर पोख्यां गात्र। —का दे प्र

रू. भे—बिसवासघात, विस्वाघात, विस्वासघात, विसवासघात, विसासघात, वीसासघात।

विस्वासघातक, विस्वासघाती–वि. [स विश्वासघातक, विश्वासघातिन्] विश्वासघात करने वाला।

उ०—१ इतरी वात सुण कुमार एक आक ओर छोडियो। वीसरामा करै लागियो। पडदा सूं पिंडत कही—जै मित्रद्रोही, विस्वासघाती अर कृतघ्नी हो सो चाद, सूरज रहै तो लौं नरक भोगै। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सेठजी म्हनै पै'ला आ बात क्यू नी बताई म्हैं आ सेठा नै अैडा विस्वासघाती तो नी जाण्या हा। म्हारै सागै ई कुचमाद करण मे नी चूक्या। —फुलवाडी

उ०—३ राज-दरबार में मानखो मावतो नीं हो। राजाजी सिंघासण माथै विराज्या रीस मे उफणता हा। तो आ सगळी कुचमाद इण विस्वासघाती दीवाण री। —फुलवाडी

विस्वासणो, विस्वासबो–क्रि. स.—१ सन्तोष करना।

२ विश्वास या भरोसा देना, विश्वास कराना।

३ दृढ निश्चय करना।

क्रि. अ—४ सन्तोष होना।

५ विश्वास होना, भरोसा होना।

६ दृढ निश्चय होना।

विस्वासणहार, हारो (हारी), विस्वासणियो—वि०।

विस्वासिओडो, विस्वासियोडो, विस्वास्योडो—भू० का० कृ०।

विस्वासीजणो, विस्वासीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

बिसवासणो, बिसबासबो, बिसासणो, बिसासबो, बिस्वासणो, बिस्वासबो, बेसासणो, बेसासबो, बैसासणो, बैसासबो, विसवासणो, विसवासबो, वीसासणो, वीसासबो—रू० भे०।

विस्वासपातर, विस्वासपात्र–वि [स. विश्वासपात्र] जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय।

रू भे—विस्वासपात्र।

विस्वासा–स पु. [स विश्वासा] एक सूर्यवंशी राजा, विश्रुतवान। (पुराण)

उ०—जे सुत हुवो सधि हत दूजण, मरखण सधिसुतण कुळ मडण। मरखण सुत सिहसान भूप भणि, भूप विस्वासा ह्वै तै सुत भणि। —सू प्र.

विस्वासियोडो–भू का कृ.—१ सन्तोष किया हुआ. २ विश्वास या भरोसा दिया हुआ, विश्वास किया हुआ ३ दृढ निश्चय किया हुआ ४ सन्तोष हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ. ५ विश्वास हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ ६ दृढ निश्चय हुवा हुआ। (स्त्री विस्वासियोडी)

विस्वासी–वि [स विश्वासी] १ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य।

उ०—१ दीखरण मे तो ग्रेकलो दीसूंला, परण ग्रेकलो व्हूला कोनी। म्हारी मरजी रा खास विस्वासी ग्रसवारा नै पाच-पाच, सात-सात री टोळिया बणाय नाके रै नाके ठौड ठौड लुकाय नै बैठाण दू ला।
—फुलवाडी

उ०—२ जद स्वामी जी खिमाकर विस्वासी ग्राहार ग्रवेरनै बोल्या—ग्रा थारै सका है तो चरचा करला। इम कही उण वेला इज तावडै मैं विहार कीधो।
—भि. द्र

उ०—३ मतीरौं री रुत में मतीरौं रा ऊठ रा ऊठ नाखीजता। विस्वासी ग्रादमी वा रै टाक्या लगाय' र कई मे मोहर ग्रर कई मे रुपिया घाल' र पाछोई मूडो बद कर देंवता।
—सत सेठ स्रीरामरतन डागा री वात

२ विश्वास करने वाला।

रू भे—विसवासी, विसवासी।

विस्वेदेव-स पु. [स विश्वेदेव] १ वेदानुसार नौ देवताग्रो का एक समूह विशेष।

वि वि.—ग्रग्निपुराणानुसार इस समूह मे दस देवता माने गये हैं—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, ग्रार्द्रक ग्रौर पुरुरवा। इनमे से पाच देवो का जन्म विश्वामित्र के शाप के कारण द्रोपदी के गर्भ से हुग्रा था जो बाल्यकाल मे ही ग्रश्वत्थामा के द्वारा मारे गये थे। श्राद्ध ग्रादि मे इनका पूजन किया जाता है।

२ दस की सख्या॥।

विस्वेदेवपूजन-स पु [स विश्वेदेव पूजन] ग्रापाढ शुक्ला पूर्णिमा को पूर्वापाढा होने पर विश्वेदेवो का किया जाने वाला पूजन।

विस्वेस-स पु. [स. विश्वेस] १ शिव, महादेव।

२ भगवानन् श्रीविष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ सत्ताईस नक्षत्रों मे से उत्तरापाढा नामक नक्षत्र विशेष।

रू भे.—विसवेस, विस्वईस।

विस्वेसर, विस्वेसुर, विस्वेस्वर-स पु [स विश्वेश्वर] १ शिव की एक मूर्ति।

२ विष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ ग्यारह रुद्रो में से एक रुद्र का नाम।

रू भे—विसेसर, विस्वईसर, विस्वईसुर, विस्वईस्वर।

विस्वेकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू भे)

विस्वैकसार-स. पु [स. विश्वेकसार] एक प्राचीन तीर्थ, जो काश्मीर मे है।

विस्वैक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू भे)

उ०—ग्रह नाम सोय प्रभा धाम एता, जिकै तात विस्वैक्रमा कीध जेता। हिमानी सखा माहरै एक हुती, ग्रठाहूत सो उद्धरी भागवती
—सू प्र.

विस्वौ—देखो विसवौ' (रू भे)

उ०—तरै जैतसीजी बोल्या, बाई, म्हानै पण छै बामण, चारण भाट सवासणी—इतरा रौ बिस्वौ खाण री पण छै सो पण भाज्यो थारा दाखीण सूं।
—जैतसी ऊदावत री वात

विस्सरांम—देखो विसराम' (रू भे)

उ०—पडिहार भीम भुज दान भत्त, प्रिथमी दीप जाणै सपत्त। थाकै सति साहस विस्सराम, नाद' उत कियौ रवि चद-नाम।
—गु. रू ब.

विस्सरांमी—देखो 'विसराम' (रू. भे)

विस्सरामौ—देखो 'विसराम' (रू. भे)

विस्सम—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—विपरीत विस्सम घात, किरि बाण वज्रहे पात। वरजाग वूग वहति, किरि ग्रगि द्रस्टि हुवति।
—गु रू. व.

विस्सहरपुर-स पु. [स विषधरपुर] नागौर नगर का नाम।

उ०—विस्सहरपुर फतै वहइ वाणि, पह दियइ भेट पूजइ न प्राणि। खेसइ खडग्गि नाणउ खरोह, करिमाळ भाल ऊभइ न कोइ।
—र ज सी

विस्साम—देखो विसराम' (रू. भे)

विस्सा-स पु [स विश्रसा] पुदगल, धूप छाया, ग्रादि।

उ०—विस्सा हाथ ग्रावै नही, मिस्सा जीव-रहत। जीव सहित तै योगसा, स्री जिन वाणी तहत्त।
—जयवाणी

विहग-स. पु [स] १ पक्षी, चिडिया।

उ०—१ प्रीतइ भला पारेवडा, केता ग्रवर विहंग। वात न लहइ वियोगनी, सदा निरतर सग।
—मा का प्र.

उ०—२ सर सूकं नह सचरै, बाका पही विहग। किण रै चालै सग कुण, सब स्वारथ रै सग।
—बा. दा.

उ०—३ जेथि रग-ग्रामास, तेथि क्रीडति कुरगह। जेथि न्रपति बैसता, तेथि उड्डु त विहगह।
—गु. रू. ब

उ०—४ कुदरत्ती कोमड ताण करै, छेदत विहग दुहग सरै। रज धूधळ समूह मिळै रयण, ग्रहपति प्रछन्न थयौ गयण।—गु रू. व.

२ मासाहारी पक्षी।

उ०—१ पनग लडो कीडा पडो, सडो झडो दुख सग । जग चुगला री जीभडी, वायस भलो विहग । —बा दा.

उ०—२ मिल ग्रछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत । खग गिलत गूदा तत ग्रखत, वरण ग्रसत परवत मेरवत । सह ग्रिपत विहग विसेख । —र रू.

३ सूरज, सूर्य ।

४ चान्द, चन्द्रमा ।

५ बादल, मेघ ।

६ बाण, तीर ।

७ घोडा, ग्रश्व । (ना डिं. को.)

उ०—१ जोइवा जगत ग्रावत जात, गिरवर विहंग उतग गात । दीपक्क चक्ख सोभा दिवस्सि, ग्रसराळ तेज कोडीक ग्रस्सि । —गु रू बं.

उ०—२ ताहरा चूडासामा, "राज री खरी परधान ग्रायो । घोडा ग्रसवारा सो पोहतो । परमेसर दीनो । मार नै घोडा उरा लेवो ।" इतरो कहि नै ग्रसवार ५० वडा विहग पाछा घेरिया । घेर नै नरै ऊपर नाखिया । —जैतमाल पुमार री वात

८ ग्राकास, गगन । (ना मा)

९ सत्ताईस नक्षत्रो में से एक नक्षत्र ।

१० जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध, ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग का नाम ।

११ हंस ।

उ०—करिसु कथा जिम कुमुदिनी, रमिवा भोगी भ्रग । मति मुत्ताहल वीखरिसु, चिणवा चतुर विहग । —मा का. प्र.

१२ देखो 'विहगमारग' (रू भे)

उ०—भक्त जोग परै हठ जोग है, साख्य जोग ता ग्रागी । मीन पपील विहग पुनि कहियै तीहू राह चीन बडभागी । —स्रीहरिरामजी महाराज

१३ देखो 'विहाग' (रू भे)

उ०—भणत स्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खभायची पटमयं, वगैसरी विहगय । —रा रू

रू. भे —वहग, बिहग, बिहगम, विहगी, विहग, वहग, विहग, विहगम, विहग, विहाग, वीहग ।

ग्रल्पा.,—विहगडो, विहगडो, विहांगडो, वीहगडो ।

विहगडो—देखो 'विहग' (ग्रल्पा, रू. भे)

विहगजेठी—स. पु —१ सूरज, सूर्य ।

उ०—भड खगा छछोहा मीच छेटी भने, विहग-जेठी समर खाचियो बाज नै । गजा घेटी तरह फाडता कुलगनै, करोठी सूर सुरताण जेठी कनै । —ठाकुर सुरताणसिंहजी रो गीत

२ गरुड ।

विहगनाथ—स पु [स. विहग+नाथ] १ पक्षिराज गरुड ।

उ०—वज्र छूटो इद्र कै, विछूटो रामचद्र बाण, कूदवा सामद्र बाण टूटो हणू क्रोध । काळी नाग घडा हू विहंगनाथ जूटो कना, जटी की जटा सु छूटो भद्र जोध । —हुकमीचद खिडियो

२ देवराज इन्द्र ।

३ देखो 'विहगपत'

रू भे —विहगानाथ ।

विहगपत, विहगपति, विहंगपती,—स. पु [सं विहगपति] १ पक्षिराज गरुड ।

२ देवराज इन्द्र ।

३ सूर्य सूरज ।

४ चन्द्रमा, चाद ।

रू. भे —वहगपत, वहगपति ।

विहगम—वि [स.] ग्राकाश मे गमन करने वाला ।

उ०—१ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति ग्रीखम रित माहै पवन पावक समान वाजियो छै । प्रथी ग्रप नैं वायू ग्रकास ज्यारि तत पाचमै ग्रगनी तेज तत भेला मिळ नै रहिग्रा छै । प्रिथी रा लोक विहगम पखी छै । —रा. ज. स.

स. पु —१ सूरज, सूर्य ।

२ ग्रश्व, घोडा ।

३ ग्राकाश, गगन ।

४ मासाहारी पक्षी ।

उ०—१ तिण वार वीरारस सगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विहगम । कळह का ग्रागम सो विखमारिख, सार का काठा सचा पारिख । —रा. रू

५ पक्षी ।

उ०—१ तन दुख नीर तडाग, रोज विहंगम रूखडो । विसन सलीमुख बाग, जरा बरक ऊतर जवल । —बां दा.

उ०—२ साथै हिंदू मुस्सलमांण, हिंदुसथान खिडै खुरसाण । मुळ गळ ग्रप्पक्कि खुरसाणी, बोलैं जेम विहंगम वाणी । —गु रू. व

उ०—३ सुडाळा ग्रालम ढल्ल सिरै, नन्नावधि वसक नदगिरै । घटा-रव घूघर सद्द हुवै, बोलत विहगम जाण धुवै । —गु रू व.

उ०—४ ऊचासो इद्र रै, राम रै गुरड विहगम । सूरज रो सिलह "जै" जिसो सपतास तुरगम । —गु रू. व

६ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण ।

७ खर राक्षस का एक ग्रामात्य ।

८ देखो 'विहगमारग' (रू भे.)

रू भे —विहंगम ।

विहगमग-स पु [स] १ आकाश, आसमान, गगन, (ना मा.)

२ देखो 'विहगमारग' (रू भे.)

विहगमपथ—देखो 'विहगमारग' ।

उ०—वदति लोक वाक्या, पपीलिका मारग पयणै । सिघति सूर पथ, विहगमपथ पणयह । —गु रू व

विहगममारग—देखो 'विहगमारग' (रू भे)

विहगमा-स स्त्री. [स] सूर्य की किरण ।

विहगमारग-स पु [स. विहगमार्ग] योग साधना के तीन मार्गों मे से एक मार्ग विशेष, जिसके द्वारा साधक काया को अधिक क्लेश दिये बिना शीघ्र व सहज में पक्षी की तरह उडकर अपने प्राण ब्रह्मांड तक ले जाता है ।

रू भे.—विहग, विहगम, विहगमग, विहगममारग, विहगराह ।

विहगराज, विहगराजा-स पु [स विहगराज] १ पक्षिराज गरुड ।

२ इन्द्र का नामान्तर ।

रू भे —वहगराज, वहगराजा ।

विहगराह—देखो 'विहगमारग' ।

उ०—साख्य जोग निज ग्यान कहीजै, सार असार पिछाणै । मिथ्या त्याग सतकी सग्रह, श्री विहगराह निरवाणै ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

विहगानाथ—देखो 'विहगनाथ' (रू भे)

उ०—तूटो बोम वाट निराताळ सो विछूटो तारो, केता छूटो पीराण आळखा ताकै कूप । कोप रुद्र-माळका विहगानाथ जूटो कना, ऊठी गौरा माथै प्रळै काळ को सो रूप ।

—गिरवरदान कवियो

विहगेस-स पु [स विहग+ईश] १ गरुड ।

२ इन्द्र ।

रू भे —विहगेस, विहगेस ।

विहगौ—देखो 'विहग' (अल्पा , रू भे)

उ०—गरु मेरै दीया सवद विहगा, पकरि लीया अैसें मन पगा । यौं मन भवग वसै तन वबी, गवन करै कब छोटीय लवी ।

—अनुभववाणी

विहड-स पु —१ टुकडा, खण्ड ।

उ०—लडै पडै रिण खेत मे, तन तै होय विहड । सूरा तन को क्या मूवो, हरिया दरगह मड । —अनुभववाणी

२ नाश, सहार ।

उ०—अतुळ पौरस घर चडमुड वोलिया-हसा गमण री हाम पूरां । वडो प्रम उवारा । दोखिया रा काघ भिरडा । एक वार घणा रा तन विहड करा । —मा वचनिका

३ मारने की क्रिया ।

रू भे — विहड ।

विहडखंड—देखो 'खड-विहड' (रू. भे)

उ०—मिळै असुरांण वीर भाग री समदा मथै, खेलै होळी फाग री अथाग री खतग । झडै पंडा खाग री विहड-खडा वगै जूझ, पीठाण 'गभीरो' पड़ै आग री पतग ।

—ठाकुर गंभीरसिंघ सोलकी री गीत

विहडण-स पु —१ नाश, सहार ।

२ मारने की क्रिया ।

वि —१ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

उ०—धर गई सरव धर धूंहडा, तै दावी तोता त नै । वैरिया विहडण वेगडा, मुरां किसू हव मात नै । —पा प्र

२ मारने वाला ।

उ०—श्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ विहंडण । जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मडण ।

—र. ज. प्र.

३ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—१ खलक तारण तरण खला खडण खतम । रोर जण विहडण सुखद सरसै । सियावर तूझसो तुही दाखै सको, दूसरो समोवड न को दरसै । —र. रू.

उ०—२ दुख दावानल सलिलवाह ! दोहग्ग विहडण । जय जय 'पास' जिणद ! देव ! थभणपुर मडण । —स. कु

विहडणौ-वि.—१ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—इम थुण्यउ जिणवर सति दिणयर, भरिय तिमिर विहडणो । अणहिल्ल पाटण मांहि सो, श्र वाड वाडा मडणो । —स. कु.

२ मारने वाला ।

३ नाश करने वाला, सहार करने वाला, विध्वसक ।

विहडणौ, विहडवौ-क्रि म —१ नाश करना ।

उ०—१ स्याम छळ करा जुध साहसा, धार समद झूलण धसा । किरमरा विहड असुरा कटक, वरां रभ सुरपुर वसां —सू प्र.

उ०—२ पिंड विहड होय चुख चुख पडू, ताय वरू रभ हित तिको । सुलभ ही जिको पाऊ सुरग, जगत घणो दुल्लभ जिको ।

—सू प्र.

उ०—३ जीता लाखा जुद्ध विहडे जूजूवाह हाजिर वदा देव सको किंकर हूवाह । प्रगटी पेस अमोल दिये नित सुरपती, हरिहा

गुमिर कितौ इक तूझ कहीजै जगजगती। —मा. वचनिका

उ०—४ वहै विपरीत वेळा करारी, कूत किरमाळ नेजा कटारी। धजवडा धार रुळ रुड मुंड, विहड पड वाढ खडह विहड। —गु रू व

२ मिटाना, खत्म करना।

३ नाश करना, मिटाना।

उ०—१ गिरिजा-नदन गुण गुहिर, गाजइ गिर गभीर। अघारि आदित्य तिम, विधन विहडइ वीर। —मा. का प्र

उ०—२ घोर गाभ्र ठरट्टिम कइ चालइ, सिरि सेवग्रा भार। गवरीय नदन विघन विहडण, दुख खडण सुख सार। —रुकमणि मगळ

४ मारना, सहार करना।

उ०—१ भाखरसी आपणै पण लोह गोळो। भर पठांण धाया हुता, तिका नू मार विहड कर नाखिया, भर अठै भाखरसी री तौ फतै हुई, मोरचौ कायम राखियौ। —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ भोमिया डड पेसां भरै, मैंणै करसण माडिया। गवपती पेसायौ मालगढ, विढ अवदाळ विहडिया। —रा. रू.

उ०—३ विहडत गज वाज, सामि तणै छळि साहणौ। देखि कहै पैला दळा, धिन हाथा धनराज। —र वचनिका

उ०—४ इक बाधौ सहसा अजणि, जळ क्रीडा मझारै। बांमणि गदा विहडिया, दूजौ बळि द्वारै। —सू. प्र.

उ०—५ "सूर" तणौ सुरसरी तणै सर, मानव विहडिया वजावै मार। रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार। —किसनो आढो

उ०—६ सीह हुवा मेहासदू, अडिया भुज अबर। बिजौ अरज्जन विहडिया, लाधा भर खप्पर। —ठाकुर जूझारसिंह मेडतियौ

५ टुकडे टुकडे करना, काटना, छेदना।

उ०—१ रूक पिग्राला पीग्रस्या पाइस्या। चाचर विहडिस्या विहडाइस्या। रिणखेत रै विखै रगिग्रै बाणासि मतवाळा ज्यूं घूमता थका हाथिग्रा सू टला खाइस्या। —र वचनिका

उ०—२ वाहै सग्रा सिरि खाग विहडै, मार लियै थाणा बळ मडै। पाल्हासणौ असुर बळ पूरै, साथ अमांमै गात सनूरै। —रा. रू

उ०—३ भाज करू आराण, निकसता तवल निसाणा। वीस भुजा दस बदन, विहड रालू तज वांणा। —र. रू.

उ०—४ ओरि तुरग असुर रा, जगी हवदां लगि जाऊ। सिर विहडू घण सग्रा, विखम निज सिर विहडाऊ। —सू प्र

क्रि अ—६ नाश होना, सहार होना।

७ टुकडे-कटुडे होना, कटना।

उ०—१ भड खळिया अभर वेहक वज्जर, वढिया पग्गर विहड वपै पळ खडिया पजर पडै पचाहर, जै जै सकर मकति जपै। —गु. रू व

उ०—२ तूटै भड निवड त्रिजड झड तिमछै, वाढ अतेवड विहड वपै छूटती रुहिर नडड दड वड छिळि, धारा धजवड सुहड धपै। —गु. रू. व.

उ०—३ वपि विहड पळ खड, तेग तिमछा मुहि तुटौ। धारा मुहि धडछियौ, कुंभ किरि काळो फूटौ। —गु रू. व.

८ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना।

९ घटना।

१० मिटना, खत्म होना।

विहडणहार, हारौ (हारी), विहडणियौ—वि०।

विहडिग्रोडौ, विहडियोडौ, विहड्योडौ—भू० का० कृ०।

विहडीजणौ, विहडीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

विहडणौ, विहडबौ, विहडणौ, विहडबौ, बीहडणौ, बीहडबौ, वहडणौ, वहडबौ, विहडणौ, विहडवौ—रू० भे०।

विहडाणौ, विहडाबौ—क्रि स [विहडणौ, विहडबौ का प्रे. रू.]

१ सहार कराना।

उ०—१ वीजळां मोहरि खळ दळ विहडि, वप विहंडाय परी वरां। त्रग करै वास अजस सरब, कुळ सौ वीस कवेसरा। —सू प्र.

उ०—२ अभमाल आप छळि करि अचड, वप विहडाय रभा वरू। जग करण महाभारत ज्यूं ही 'करण' नाम साचौ करूं। —सू प्र.

२ नाश करवाना, मिटवाना।

३ सहार करवाना, मराना।

४ मिटवाना, खत्म करवाना।

५ टुकडे-टुकडे कराना, फटवाना, छिदवाना।

उ०—१ ओरि तुरग असुर रा, जगी हवदा लगि जाऊ। सिर विहडू घण सग्रा, विखम निज सिर विहडाऊं। —सू प्र

उ०—२ रूक पिग्राला पीग्रस्या पाइस्या। चाचर विहडिस्या विहडाइस्या। रिण खेत रै विखै रगिग्रै बाणासि मतवाळा ज्यू घूमता थका हाथिग्रां सूं टला खाइस्या। —र. वचनिका

विहडाणहार, हारौ (हारी), विहडाणियौ वि०।

विहंडायोडौ—भू० का० कृ०।

विहडाईजणौ, विहडाईजबौ—कर्म वा०।

विहडायोडौ—भू का कृ.—१ सहार कराया हुग्रा २ नाश करवाया हुग्रा, मिटवाया हुग्रा ३ सहार करवाया हुग्रा, मरवाया हुग्रा ४ टुकडे-टुकडे करवाया हुग्रा, छिदवाया हुग्रा, कटवाया हुग्रा. ५ मिटाया हुग्रा, खत्म किया हुग्रा।

(स्त्री विहडायोडी)

विहडियोडो-भू का कृ —१ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, ध्वस किया हुआ २ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ ३ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ टुकडे-टुकडे किया हुआ, काटा हुआ, छेदा हुआ. ५ मिटा हुआ, खत्म हुवा हुआ ६ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ।

(स्त्री विहडियोडी)

विहणै, विहणौ—देखो 'विहूणौ, (रू. भे)

विहसक—देखो 'विध्वसक' (रू भे)

उ०—विरहणि वस विह सक, किंसुक नहिं ए भ ति। विलवइ विरह करालियउ, वालिय इम एकति। —जयसेखर सूरि

विह सणौ, विह सबौ—देखो 'विहसणौ, विहसबौ' (रू भे.)

विह सणहार, हारौ (हारी), विह सणियौ—वि०।

विह सिओडो, विह सियोडो, विह स्योडो—भू० का० कृ०।

विह सीजणौ, विह सीजबौ—भाव वा०।

विह सियोडो—देखो 'विहसियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विहसियोडी)

विह—देखो 'विधि' (रू. भे)

उ०—१ बारस विह गणिपिटक तणी, सख्या कही हो लाल। सासता अरथ अनत कि छइ, एहना सही हो लाल। —वि कु

उ०—२ आरोहत गिर सिखर, समुद्र लंघ जात कपाळ। विह अक्षर लिखिया भाल, फलत कपाळ हि भूपाल। —ठकुरै साह री वात

उ०—३ लिखियो लाभै लोय, पर लिखियो लाभै नही। पर सिर पदम हि जोय, जै विह विहवै अप्पियो। —नैणसी

उ०—४ लगन कळह दिली विह लिखियौ, आलम धड देखै असमान। बीदपणौ अजमेर बिसारै, खिसियो लसियो हाजीखान। —राठौड रतनसिंह री वेलि

उ०—५ विह आणै विह मेळवै, विह मडै उपचार। अळगी ही नैडी करै, विह तणौ विचार। —राव रिणमल री वात

विहग—देखो 'विहग' (रू भे)

विहड-स पु—बीहड, जगल, वन।

उ०—इसै में भागेसुर मगायजै छै सु किण भात छै। केसर री क्यारी दोलळी, वासग माथा री। थोहर रा बिडा री, आखर रा खुडारी भूरै मोर री, काळै पान री, आबू रा विहडा री, भमरमार भिरधमाळ लरियाळ चिडियाळ, चोटडियाळ। —रा. सा स

रू भे—विहड, विहडु।

अल्पा,—विहडो, विहडो।

विहडणौ, विहडबौ—देखो विहडणौ, विहडबौ' (रू भे)

उ०—नेह अकत्रिम मड कियउ रे, कदै न विहडइ तेह। दिन दिन अधिकउ उलटइ रे, जिम आसाढी मेह। —वि. कु

विहडणहार, हारौ (हारी), विहडणियौ—वि०।

विहडिओडो, विहडियोडो, विहड्योडो-भू० का० कृ०।

विहडीजणौ, विहडीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

विहडियोडो—देखो 'विहडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विहडियोडी)

विहडो—देखो 'विहड' (अल्पा, रू. भे)

विहचणौ, विहचबौ—देखो 'वंचणौ, वंचबौ' (रू भे.)

उ०—१ सिर नासा कान दसन आखें, नख गाल वपुस ना मल नाखें। मिलणौ लेखौ करइ मतरणौ, विहचण अपणौ करि धन धरणौ। —ध व. ग्र.

उ०—२ जाइ राजा सू मुजरौ कीयो। कहीयो महाराज घरा री खबर आई छै। बेटी री विमाह छै। राजा सिरपाव दे विदा दी उवै चोर कन्है गया कह्यो इंडो विहचौ। कह्यो विहचौ। ताहरा खीवौ बोलियो एथ वहिचस्या नही मारवाड माहि नै जाइ नै उथ वहिचस्या। ताहरा ऊ चोर बोलियो कितरा हैसा करिस्यौ कह्यो तीन हेसा करिस्या। —चौबोली

उ०—३ तद पाछा घरै पधारनै जै भात जोगी कह्यो हुतो तै भात राणिया नूं बभूत री गोटी, सोपारिया विहच दीवी। पछै कितरै कै दिने पुत्र हुवो —नैणसी

विहचणहार, हारौ (हारी), विहचणियौ—वि०।

विहचिओडो, विहचियोडो, विहच्योडो—भू० का० कृ०।

विहचीजणौ, विहचीजबौ—कर्म वा०।

विहचियोडो—देखो 'वाटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विहचियोडी)

विहड—देखो 'विहड' (रू भे.)

उ०—तिकै चीता कठारा छै ? मरोट रा, अघीरा, देरावर रा, रोहरा, थटैरो, पहाडा रा, ईडर रा डूंगरा रा, जाळोर रा, पहाडा रा, पावर रा, थळा रा, पारकर रा विहडा रा। इसा चीता साथ लीजै छै। —रा. सा. स

विहडो—देखो 'विहड' (अल्पा, रू. भे.)

विहडु—१ देखो 'बेहद'।

उ०—नेहली नीर भरिया नयड्ड, वाकउ दुरग पाखी विहड्ड। सारीख 'जइत' सुरिताण साज, रामावतार राठउड राज। —रा ज. सी

२ देखो 'विहड' (रू भे)

विहण-वि. [स] १ नाश करने वाला, संहार करने वाला।

२ सहार करने वाला, मारने वाला ।
३ देखो 'वहन' (रू भे)
रू. भे —विहण, विहन, विह्न ।

विहत, विहति–क्रि. वि. [स विहीतम्] निवारण करने के लिए ।

उ०—उळझाया तन मन आप आप में, विहत सीत रुखुमिणी वरि । वांणि अरथ जिम सकति सकतिवत, पुहपगध गुण गुंणी परि । —वेलि

देखो 'वेहद' (रू. भे)

उ०—अगमद अबर सारघण, गधसार अगरेल । कुम कुमादि केसर अतर, विहति सुगधी रेल । —रा. रू.

विहत्तर—देखो 'वेहतर' (रू भे)

उ०—वाग ताम वरियाम, दहू आए चढि डबर । कारजा चादरा नीर धरहरै विहत्तर । —सू. प्र.

विहथी–वि.—दो हाथ के बराबर नाप की ।

उ०—सु तोड नूं धाडवी जोर्णी छै, जु रैंबारी मार नै तोड लेवा । सु तोड मेह रै चीखळ रै कैड री, हथ विहथी कवडी, नवहथी फोकणी । चीखळ करहो भेकतो तहा मेकी । —जैतमाल पुमार री वात

विहद–स पु.—१ ध्वनि, आवाज ।
२ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—विहद हृदि रहम देख जमदूत दहलै । —केसोदास गाडण

३ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे बीस मात्राए होती हैं ।

उ०—पायै एकणि परठि जै, बीस मात्र विसतार । समझै लाखो भड सुघड, विहद छद वहुभार । —ल पि.

वि.—बडा या महान ।

उ०—ता में अेक गयद है, मेर समोवड गात । रिण वेळा रावत विहद, गिणै अरि तिलमात । —गजउद्धार

५ देखो 'वेहद' (रू. भे.)

उ०—१ हरनेत्र जळै ज्वाळा विहद, स्रोकजि अमरख समिळै । अजमल्ल वळै दीठौ 'अभो', देस ढाळ मारू दळै । —रा. रू

उ०—२ विहद लीध जिण वार, रैंण अथ भूप जही रस । जस भ्रम कजि जगजीत, दिया तबपत्र दवादस । —सू प्र.

उ०—३ विहद कोर गोटा वर्णा, पातर रै पोसाक । परणी फाटा पूंगरण, वैठी फाडै वाक । —बां. दा.

उ०—४ देवी दै वरदान, ग्यान रीजै गुण गावां । भाखा सहि भागिवत, विहद हथ अरथ वणावा । —पी. ग्र

उ०—५ लागो ग्यान धरा पर लोटै, सुध बुध भूला भोम सिळै । विहद कपाळ हुवा परवरती, मुगती पोहरां मांय मिळै । —बांकीदास बीठू

रू. भे.—विहद्द ।

विहदमांनु, विहदमांनू–स. पु [स वृहद्भानु] अग्नि, आग । (अ. मा.)

विहद्द—१ देखो 'विहद' (रू. भे.)
२ देखो 'वेहद' (रू भे.)

उ०—१ विराण सब्द सुणिया विहद्द, नीसाण तूर अनहद्द नद्द । जोयणा सरीरा जोत जाग, लोयणा पार रा ध्यान लाग । —वि. स.

उ०—२ त्यारी करै तमाम, जलूसा साजिया, अवागळ रिणतूर, विहद्दां वाजिया । —र रू.

उ०—३ हुकम हुवौ तन सुख हुवा, हुवा नगारा सद्द । कूच हुवौ जैपुर दिसा, हुवौ हुलास विहद्द । —रा रू.

उ०—४ वनस्पती पाखर वणी, वणिया टूक विहद्द । पटा विछूटा नीझरण, आयो मद अरबद्द । —ढाढाळै सूर री वात

उ०—५ फौजा डेरा फाबिया, दीसै हद्द विहद्द । सबज वरना स्याह अन, लाल सपेत जरद्द । —गु रू ब

उ०—६ वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द । मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख, जंबक्क रींछ वट्टाक जक्ख । —गु. रू बं

विहन—१ देखो 'वहन' (रू. भे.)

उ०—बांमण चरण प्रतापविधि, हिम पित गौरि विहन । —रामरासो

२ देखो 'विहण' (रू भे)

विहबळ—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—साह बळ वडौ विहबळ हुवै, त्रिखावत जळ मोकळै । कळि मूळ आइ पैठो, कमो', मूझ कंठै भाखर बळै । —गु. रू ब.

विहमड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

विहर–स पु —१ संहार, नाश ।
२ घोडा, अश्व ।
३ विचरण करने की क्रिया । (जैन)
४ साधुओ आदि द्वारा मांगने पर दिया जाने वाला आहार आदि, भिक्षा ।

क्रि. वि.—१ भांति, तरह, प्रकार ।
२ बहुत, अपार ।
३ बडा, विशाल ।

४ बड़ा, महान् ।

विहरखो-स. पु —एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । (शा हो.)

विहरण-स. पु [सं] १ विहार करने की क्रिया ।

२ विछोह, वियोग ।

३ विस्तार, फैलाव ।

विहरणौ, विहरबौ-क्रि. अ —१ विहार करना, घूमना, टहलना ।

उ०—१ महाभैरव सूकर घुरकइ, चित्रक बटकइ, वेताल किलकलइ, दावानल प्रज्वलइ, रिंछ साचरइ विरू बूरकार करता विहरइ, इसी अटवी,.... ....। —व स.

उ०—२ पुलिग्ग रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ । कान कवार विहरि गळी व्रज कुजरी, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ । —वा दा

उ०—३ विहरत बाग विलास, किरि सभ ग्रह कयलास । दिन उदय सुख दरसाव, चित होत अग्रगा चाव । —रा. रू.

२ अलग-अलग होना, जुदा होना ।

३ बिखरना, तितर-बितर होना ।

४ भिक्षा देना ।

उ०—वेकर जोडी सालिभद्र बोलइ, प्रस्न करू स्वामी तुझ नइ रे । विहरण बात तौ दूरी रही परिण, मा ओलख्यउ नही मुझनइ रे । —स कु.

५ गमन करना, जाना ।

उ०—धन ते गाम नयर पुर मदिर, जिहा विहरइ जिनराइ रे । विहरमाण सीमधर स्वामी, सुर नर सेवइ पाय रे । —स कु

६ भिक्षा मागना, भिक्षा लेना ।

उ०—१ वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ, सालिभद्र मन सतोखी रे । आयउ घरि ओलख्यउ नही माता, तप करि काया सोखी रे । —स कु

उ०—२ नदिसेण विहरण गयउ, गरिएका कीधु हास हो । अस्टि करी सोना तणी, मइ तसु पूरी आस हो । —स कु

उ०—३ विन विहरयइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन माहि सदेह आयउ रे । मारग माहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ रे । —स कु.

उ०—४ आपण पइ जाऊ विहरवा, सूझतउ लूं आहार । ऊच नीच कुल गोचरी, लेऊ नगर मझार । —स कु.

क्रि. स.—७ सहार करना, मारना ।

उ०—१ सबळ बोलियौ 'प्राग' समोभ्रम अरिग्रण विहर करा खग उत्तम । 'तेजल' अमर खाग भुज तोले, बहसै खान नरायण बोलै । —रा. रू.

उ०—२ वढ पड विहर थाटा विळ द, भुजळग झट सेळा भचडि । सूग वसू कहै 'हटमल' सुतन, 'अभूनि' जिम खाटै अचडि । —सू प्र

उ०—३ व्हा अमर काय सिभजीत व्हा, विखम 'विलद' फौजा विहरि । करमाळ रगै मुजरौ करू, केसरिया झकबोळ करि । —सू. प्र.

८ काटना ।

उ०—१ भड भिडज्ज गजभार, धार विहरै पाडै धड । ढहिया सिर पौढियौ, बोळ झकबोळ वहादर । —सू. प्र.

उ०—२ उडती झाळा लोपि अराबा, वह गजघड खगि हणू निबाबा । कूंभाथळा विहरि घण काळां,मारि गजा लोपूं मछराळा । —सू प्र.

उ०—३ पाडवा जही किता पळ खडिया, विहरै हाड विजूजळ वाह । सहस्रा सिर 'मुहम्रौ' सूरजमल, मेल्ही मेछ तणै दळ माह । —महाराजा सूरसिंह री गीत

९ टुकडे करना, विच्छेदन करना ।

उ०—एकण हीरौ विहरिया, दूजौ हीरौ थाय । हीराबेधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय । —र. ज. प्र.

१० चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ दातूसळ वजर अजर जम दाढा, वाढा ऊगाढा विहर । असपति नजर भली आफळियौ, कुजर नै नाहर कवर । —लिखमीदास गाडण

उ०—२ फाट फरि उर पारि फीफरि, वजरि असमरि विहर वाखरि । कुवरि नरि कटि कचर कोपरि, चार चरि धरि ढचरि पळचरि । जोध जुट थट जग । —जगौ खिडियौ

११ तोडना ।

उ०—जो न्रप पूती नह दियै, दासी दूध अहार । तौ विहरै गिरि वज्र जिम, खत्री खग्ग पहार । —गु रू व.

१२ इन्तजारी करना, प्रतीक्षा करना ।

उ०—गात महाबळ गाळिया, भड सारिखा भीम । सत विहरौ सयणी कहै, हिव जाणीस्यै हीम । —सयणी री वात

१३ युद्ध क्रीडा करना ।

उ०—असुर हजारा सहरै, हरै अमीरा लज्ज । आयौ रण विहरै अभो', करै फतै कमधज्ज । —रा रू

विहरणहार, हारौ (हारी), विहरणियौ—वि० ।

विहरिओडौ, विहरियोडौ, विहरयोडौ—भू० का० कृ० ।

विहरीजणौ, विहरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

विहरणौ, विहरवौ, वी'रणौ, वी'रवौ,' वीहरणौ, वीहरवौ ।
—रू० भे० ।

विहरमाण विहरमान—स पु —पाचो विदेह क्षेत्रो मे विचरण करने वाले तीर्थंकर ।

वि वि —जम्बू द्वीप के विदेह क्षेत्र के मध्य में स्थित मेरुपर्वत के पूर्व एव पश्चिम मे सीता एव सीतोदा महानदिया हैं। उक्त नदियो के उत्तर-दक्षिण मे आठ-आठ विजय हैं। इस प्रकार वहा आठ-आठ की पक्ति में बत्तीस तीर्थंकर रहते हैं।

धातकी खण्ड व अर्द्धपुष्कर द्वीप के चारो विदेह क्षेत्रो मे भी ऊपर लिखे अनुसार ही जघन्य चार एव बत्तीस उत्कृष्ट तीर्थंकर सदा रहते है कुल पाच विदेह क्षेत्रो मे १६० विजय एव प्रत्येक विजय में जघन्य बीस एव उत्कृष्ट १६० तीर्थंकर रहते हैं।

वर्तमानकाल में पाच विदेह क्षेत्रो मे बीस तीर्थंकर विद्यमान हैं। जिनके नाम नीचे लिखे हैं। घूमते रहने के कारण ये विहरमान कहलाये ।

(१) श्रीसीमधर स्वामी (२) श्रीयुगमधर स्वामी (३) श्रीबाहु स्वामी (४) श्रीसुबाहु स्वामी (५) श्रीसुजात स्वामी (श्रीसयातक स्वामी) (६) श्रीस्वयप्रभ स्वामी (७) श्रीऋषभानन स्वामी (८) श्रीअनतवीर्य स्वामी (९) श्रीसूरप्रभ स्वामी (१०) श्रीविशालधर स्वामी (विशाल कीर्ति स्वामी) (११) श्री वज्रधर स्वामी (१२) श्रीचद्रानन स्वामी (१३) श्रीचन्द्रबाहु स्वामी (१४) श्रीभुजग स्वामी (भुजगप्रभ स्वामी) (१५) श्रीईश्वरस्वामी (१६) श्रीनेमिप्रभ स्वामी (नेमीश्वर स्वामी) (१७) श्रीवीरसेन स्वामी (१८) श्रीमहाभद्र स्वामी (१९) श्रीदेवयश स्वामी (२०) श्रीअजीतवीर्य स्वामी ।

बीस विहरमानो के चिन्ह लाछन क्रमश निम्न हैं—
(१) वृपभ (२) हस्ती (३) मृग (४) कपि (५) सूर्य (६) चन्द्र (७) सिंह (८) हस्ती (९) चन्द्र (१०) सूर्य (११) शख (१२) वृपभ (१३) कमल (१४) कमल (१५) चन्द्र (१६) सूर्य (१७) वृपभ (१८) हस्ती (१९) चन्द्र (२०) स्वस्तिक ।

उ०—१ सम्प्रति वीस जिनेस्वर वदउ, विहरमान जिणराया जी। विचरता भविजन मन मोहैं, सुर नर प्रणमइ पायाजी। —वि कु

उ०—२ बिहू भमती विंबावली कोरणी अति स्रीकारी रे। समोसरण सोहामणी, विहरमान विस्तारी जी। —स कु

उ०—३ धन तैं गाम नयर पुर मदिर, जिहा विहरइ जिनराय रे। विहरमाण सीमधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे। —स कु.

रू भे —वहरतमाण वइहरमाण। विरहमाण, विरहमान ।

विहराणौ, विहरावौ—देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू भे)

उ०—विन विहरघइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन माहि सदेह आयउ रे। मारग माहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ रे। —स. कु.

विहराणहार, हारौ (हारी), विहराणियौ—वि० ।

विहरायोडौ—भू० का० कृ० ।

विहराईजणौ, विहराईजवौ—कर्म वा० ।

विहरायोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. विहरायोडी)

विहरावणौ, विहरावबौ—देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू भे)

उ०—१ प्रतिदिन पडिकमणु करइ गति पामइ जी, सामायिक एकत देव गति पामइ जी। आहार विहरावइ सूझतउ गति पामइ जी, साभलइ सूत्र सिद्धात देवगति पामइ जी । —स कु

उ०—२ विण विहराव्या आप जिमइ नहीं दाखीजइ दान सूरो जी। आहार पाणी विहरावइ सूझतउ, वस्त्र पात्र भरपूरो जी। —स. कु

उ०—३ आज तो तपसीएहवो, पूंजा रिख सरीखो न दीसइ रे। तेहनैं वदता विहरावता, हरखै करि हियडो हीसइ रे। —स. कु.

विहरावणहार, हारौ (हारी), विहरावणियौ—वि० ।

विहराविओडौ, विहरावियोडौ, विहराव्योडौ - भू० का० कृ० ।

विहरावीजणौ, विहरावीजवौ—कर्म वा० ।

विहरावियोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री विहरावियोडी)

विहरियोडौ—भू का कृ—१ विहार किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ अलग अलग हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ ३ भिक्षा दिया हुआ ४ बिखरा हुवा, तितर बितर हुवा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ ६ भिक्षा मागा हुआ, भिक्षा लिया हुआ. ७ सहार किया हुवा, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ८ काटा हुआ ९ टुकडे-टुकडे किया हुआ, विच्छेदन किया हुआ १० चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ ११ तोडा हुआ. १२ इन्तजारी किया हुआ, प्रतीक्षा किया हुआ. १३ क्रीडा किया हुआ।
(स्त्री. विहरियोडी)

विहळ, विहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे)

उ०—भाग तणा भामणा ल्या भूधर दुख भजण । विहला ना वीठला, मुगिति सारूप समपण। —पी ग्र

उ०—२ रास निमो रहमाण, मुगति दीन्ही महिला ना । गोकळ मा गोविंदो, वळै मिळियो बिहला ना। —पी ग्र

उ०—३ राक सरिस दे रीझ, अखिल काढ खोज करै अति । वडो विहळ हु बुरो, पीर सा रीस किसी पति। —पी ग्र.

विहलौ—देखो 'वहिलौ' (रू भे)

उ०—रहि चौमासौ रग सु, विहलो करै विहार। माती घरा महेवची, वदावौ तिण वार। —ऐ. जे. का. स

रू भे —विहिल, विहिलु विहिलौ।

विहव—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—लिखियो लाभै लोय, पर लिखियो लाभै नही । पर सिर पदम हि जोय, जै विह विहवै ग्रप्पियो । —नैणसी

विहवल—देखो 'विह्वल' (रू. भे)

उ०—कुंवरसी री मा तो सुण ग्रचेत हुई । सो वडारणा नीठ सचेत कीधी । ग्रर बहुवा सुण विहवली हुइ गई । नेत्रा माह प्रवाह छूट पडिया । —कुंवरसी साखला री वारता

(स्त्री विहवली)

विहव्य—स पु [स.] वितथ्य का पिता एव गृत्समदवशीय वर्चस् ऋषि का एक पुत्र, एक ऋषि ।

विहव्यग्रागिरस—स पु [स] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

विहसणौ' विहसवौ—क्रि ग्र —१ हसना, प्रफुल्लित होना, हर्षित होना ।

उ०—१ उरध रोम उल्लसै जोम ग्ररि करण रसातळ, भजि त्रिसळी निज भाळ कळा सोखण सत्र कम्मळ । उर उछाह ऊपजै धाह पैला ग्रहि घारण, वदन हास विहसत रुदन पर वस वधारण । —रा रू.

उ०—२ सुहाळ भिडिया ग्रावी ग्रडिया, सुहड ग्रगोग्रगि । नर सीस विहसई वदन विगसई, सेल वाहई सगि । —रुकमणीमगळ

२ खिलना, विकसित होना ।

उ०—१ पहिली होय दयामणउ, रवि ग्राथमणउ जाइ । रवि ऊगइ विहसइ कमळ, विण इक विमणउ थाइ । —ढो मा

उ०—२ हिव हूउ प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ ग्रधकार ग्रात, ग्रद्रम्य नक्षत्र पट,लगगन उज्जवल,नि सबद घूक कुल,निरमल दिग्मडल, ग्रास्रित पूर्ववाचल, हूउ रविमडळ, विहसइ कमळ, विस्तरइ परिमळ, वायु वाइं सीतळ, प्रसन्न महीतळ, जिस्या राता पारेवा तणा चरण, तिस्या विस्तरइ सूरय तणा किरण । —रा सा. स

३ प्रफुल्लित होना, फूलना ।

उ०—१ तुकमा रूप खतम फतै रा फब्बिया, देखता उर दम ग्ररंदा दब्बिया । विहसतौ निज वदन वीरा रस वंस रो, दीपायो हद दौर मुरद्धर देस रो । —किसोरदान बारहठ

उ०—२ मतिवाळा घूमै नही नह घायल कणणाय, बाळूं सखी ऊ द्रगडो भड वापडा कहाय । वाळि ऊ द्रगडो वसै भड वापडा, घाव ग्रग सहे नह विभाडै ग्ररि घडा । घणा जसवत रा जोध विहसै घणा, माडिसी सही मतिवाळा वेढीमणा । —हा झा

उ०—३ बैनाणी ढीली घडै मो कथ तणो सनाह, विकसै पोइण फूल जिम, पर दळ दीठा नाह, । विकसै घणो कमळ जिम भड निवड,भड घणा पाडतो सोभियो महा भड । विहसतै सहस वळ कडी जाय उवडै, घाट घड कथ रै जरद ढीली घडै । —हा झा.

४ लहलहाना, लहराना ।

उ०—तिसिह ग्राविउ वसत, हूउ सीत तणउ ग्रंत । दक्षिण दिसि तणउ सीतळ वाउ, वाइ विहसइ वणराइ । —रा सा स.

५ प्रभात होना ।

उ०—१ मुझ रहइ पहिलउ दिउ ग्रगेवाणु पडव कन्ह दलउ जिम माणु । ई ह्या सेनानी गगेउ, ग्रह विहसी जुडिया दल वेउ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ पवनह वेगिइ चालता, पुहवी घणी गयाइ । ग्रहि विहसी रवि ऊगीउ, नीद्र गई नयणाह । —हीराणद सूरि

विहसणहार, हारो (हारी), विहसणियौ—वि० ।

विहसिग्रोडो, विहसियोडो, विहस्योडौ—भू० का० कृ० ।

विहसीजणौ, विहसीजवौ—भाव वा० ।

विहसणी, विहसवो, विहसणौ, विहसवौ, वीहसणौ, वीहसवौ, वीहसणौ, वीहसवो, विहसणो, विहसवौ—रू० भे० ।

विहसियोडौ—भू का कृ.—१ हसा हुग्रा, प्रफुल्लित हुवा हुग्रा, हर्षित हुवा हुग्रा २ विकसित हुवा हुग्रा, खिला हुग्रा. ३ प्रफुल्लित हुवा हुग्रा, फूला हुग्रा ४ लहलहाया हुवा, लहराया हुग्रा ।

(स्त्री. विहसियोडी)

विहा—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—तद खीवसीजी बीहू नुं बुलाय कह्यो, 'जो कुंवर नुं कहि, थारै विहा तो घणा छै । फेर जोख छै तो एक-दोय फेर सखरी जायगा करि । इण रो नाळै'र फेर दै । ग्रापा सु इहा रो किसो सूत छै ? —कुंवरसी साखला री वारता

विहाग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

विहांगडो—देखो 'विहग' (रू भे)

उ०—विहागडै ज उडाध्धया, सर ज्यउ पद्दुरियाह । कालर काझा कमळ ज्यउ, ढळि ढळि ढेर थियाह । —ढो. मा

विहाण, विहाणइ—स पु [स विभानु] १ प्रात काल, सवेरा ।

उ०—१ विहाणे नवै नाथ जागो वहेला, हुवा दोडिवा धेन गोवाळ हेला । जगाडे जसोदा जदूनाथ जागो, महीमाट घूमै नवै नद्धि मागो । —ना. द

उ०—२ उतर ग्राज स उजमी, पाळो पडै विहाण । भाजे गात्र कुमारिग्रा, देखै मुगळ पठाण । —ढो. मा.

उ०—३ तिणि दिवसि हूउसुपनतर, हूतइ प्रगट विहाणइ । पघारिया गगा नइ गोरी, कान्हडदे इम जाणइ । —का. दे. प्र.

उ०—४ घण थट्टा गढ घेरिया, वणि रिण ऊग विहाण । निस जाएं चख जगाणौ, दिन पायै घमसाण । —रा रू

उ०—५ ग्रर ग्रचळो रायमलोत कहै छै—'जु जैमलजी मोनूं बोलावै

छै, पिण हू विहाण री दिन अठै वैठो छू अर जैमलजी घणो गाढ करै छै। —नैणसी

२ देखो 'विधान' (रू भे)

रू भे—बहाण, विहाण, बिहान, बीहांण, बीहाणू, बीहान, विहाणु, विहाणू, वीहाण, वीहाणू।

अल्पा—बहाणो, बिहाणो, विहाणो, विहान, वीहाणो।

विहांणा—देखो 'विहाणा' (रू भे)

विहाणी-वि—१ नाश हुवी हुई, नष्ट।

उ०—घात छात सव दिल्लो जाणी, सपत श्रोपत थई विहाणी। पुर चळ चळ मुख अन्न न पाणी, रिधी सोष लीधी रजधाणी। —रा रू

२ हीन, तुच्छ, निम्न।

३ बीती हुई, गत, विगत।

उ०—२ एतै पर डाकदार वाव सू आया, पातसाह की ठीक कर तहकीकत लाया। हाजर बुलाए साह सुण दूत वांणी, देखत ही फुरमाया कही सो विहांणी। —रा रू.

४ विना, रहित।

स स्त्री—१ वृद्धावस्था।

२ विध्वस, नाश।

३ वार्ता, बात-चीत।

४ देखो 'विस्राति' (रू. भे)

रू. भे—विहाणी, बिहानी, वीहाणी।

विहांणु, विहांणू-वि—१ रहित, विहीन, बिना।

२ देखो 'विहांण' (रू भे.)

उ०—तेहिं न. रोगी दोहगु तहु, तह मगल कल्लाणु। जे जिण-वल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि सभ्र सु विहाणु। —ऐ जै का स

३ देखो 'विहाणी' (रू भे)

विहाणी-अव्य—१ कल।

उ०—१ मारु नै तेडिया, कहण सदेसा कज। कही कव थे चालस्यो, कै विहांणै कै अज। —ढो मा

उ०—२ जोबन कारमो रे विहाणै उठ जासी, आदर भजन तणो अभियास। प्राणिया कदे न आवै पाछो, वळै न वीजो वागड वास। —ओपो आढो

उ०—३ इतै विहाणी उगीयो, चिड़िया चैंचाइ। सायव कदै पधारस्यो, कहु जावो काइ। —पना

उ०—४ हेम सिसर रित मेहतै, रहियो कमधा राव। सझ विहाणै ऊगणै, दिन दिन दूणो चाव। —रा रू.

उ०—५ कूच विहाणै ऊगणै, अरि घर सोच अथाह। घास उजाडा नीमडै, पडै पहाडा राह। —रा. रू.

वि.—१ बीता हुआ, विगत।

२ विना, रहित।

३ नष्ट।

२ देखो 'विहाण' (अल्पा, रू भे)

उ-१ हीदूए मार्गीथल कीधउ, पग मेल्हणउ न जाइ। लोही तणा प्रवाह ऊलटीया, दीसइ विहांणा माहि। —का. दे. प्र.

उ०—२ वार वार रतनलाल कहु बतळावी जी विहाणा राजा राम का, मुख धोवो कुरळा करो थारै कवरा नै द्यो ना दूध पिलाय विहाणा राजा राम का। —लो गी.

उ०—३ विहाणा केरी वादली, नीच मरीसु नेह। तिम योवन थिरता नही, पवन चढी जिम खेह। —मा का प्र.

३ देखो 'विहाणा' (रू. भे)

रू भे—विभाणी, विहाणी, वहणै, विहाणु, विहाणू, वीहाण, वीहाणू, वीहाणो।

विहान—देखो 'विहाण' (रू भे)

उ०—१ थान की कुथान थान मान नीसरयौ, हीयसो सुथान हा विहान वीसरयौ। हू जहा अरामखोर तू जहा तरयौ, तूहि पार तार मार पाव में परयौ। —ऊ का.

उ०—२ ए कैसे हैं—वडे सु विहान हैं वडे महिरवान हैं, वडे सिरदार हैं। वडे वूझदार हैं, वडे दातार हैं, जमी आसमान वीच सभू अवतार हैं। —रा सा. स

उ०—३ सुधार सस्त्र अस्त्र कै जुधार जागतै नहीं, लखौं विहान सान पै भमान लागतै नही। कमान वान तान कै निसान वेधतै नही, रसा उजास मे धतै नसा निसेधतै नही। —ऊ का.

विहा—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—१ सो खीवसी हळोद झालै परणीया। वडो विहा हुवो। बडो गूडो खरच जस अचल कीयो, वडो नाव कियो। झाली बडी ठाकुराणी, जिसी ही रूप, जिसो ही सहुर, जिसी ही सारी वात में सुघड। सो खीवसी घणो राजी।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ आगै सहर मे अेकै साह रै विहा थो, तै रै महीनै री तयारी करावै छै, भठी कढाय कढा, चरु, खुरपा, डहोला सारा वासण आण हाजर किया, खाड रा कापा भेळा कर वेकी कर राखी, मैदो घिरत सारो काढ तयार कर राखियो।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

विहाई—देखो 'विहायस' (रू भे)

विहइति–स. पु [स विहापित] दान । (ह ना मा)

विहाई—१ देखो 'विहायस' (रू भे)

उ०—ओरगसा पातसा आसुर अवतार, तपस्या के तेजपुंज एक सै विसतार । माप का विहाई सा प्रताप का निदान, मारतड आगै जिसी जोतसी जिहान । —रा रू

देखो 'विहाईमाता'

विहाईमाता—देखो 'वे'माता'

उ०—म्हारी नई अै विहाई, टोक-टोडै सै आए । तू तो आव विहाईमाता, भलडै सै ओसर आए । —लो. गी.

विहाग—देखो 'विहाग' (रू भे) (मोरा)

विहाड, विहाडो–वि.—भयकर, भयानक, भयावह, डरावना ।

उ०—ऊपाडियै तूट आधतर, जण जण पूगौ जुवो जुवौ । खीवर हाकलियौ खीमावत, होकर जाउ विहाडौ हुवौ । —दुरसो आढौ

विहाणौ, विहावौ-क्रि अ —१ व्यतीत होना, गुजरना, बीतना ।

उ०—१ न क्यू विहांणी निसा इण वखत दूजा नरा, छता वहु दीसवै वड-वडा छात । 'पदम' विन न को प्रथमाद दाता पणा, 'पदम' विन न को प्रथमाद गजपात । —द्वारकादास दघवाडियौ

उ०—२ राति विहाणी एण रसि, प्रात हुवो असवार । मेछ अभग महाबळी, आवहि सग अपार । —रा रू.

उ०—३ दिवस दुहेला कस्टै जाय, रयणी तो किमही न विहाय । जिम जळधर नै समरै मोर, तिम तुझ नै समरू छू जोर । —वि. कु.

उ०—४ मोतिया री माळ तूटी । जाणै सुख री लका लूटी । इण भात सुख-सेजै पौढिया । राति विहाणी । प्रभात हुवौ छै । रातो का काम—ऊजागर नैण घुळि नै रहिया छै । कपोलै काम सुहाग री छाप लागी छै । —रा सा स

२ छोडना, त्यागना, गमाना ।

उ० —वय वाळ विहाय युवा वरणी, कटिवद्ध भयो करनी करनी । विमना अनुराग विराग वह्यो, चितव्रत्तिय जोग प्रयोग चह्यो । —ऊ का

३ रवाना होना ।

उ०—वीतवियउ वहवाणि, जउहर की माडउ जुगति । हव हुइ-स्या हर-पुर दिसा, वेगावेगि विहांणि । —अ वचनिका

४ प्रात काल होना, सुवह होना ।

५ देखो 'विवाहणो विवाहवौ' (रू भे)

विहाणहार, हारौ (हारी), विहाणियौ—वि० ।

विहायोडौ—भू० का० कृ ।

विहाईजणौ, विहाईजबौ—भाव वा० ।

विहाइणौ, विहाइबौ, विहाणौ, विहावौ, विहावणौ, विहाववौ, विहावणौ, विहाववौ—रू० भे० ।

विहापन–स पु [स. विहापन] दातार, दानी ।

विहायस–स. पु. [स] १ आकाश, गगन ।

२ पक्षी ।

रू भे—विहाइ, विहाई ।

विहायोडौ–भू का कृ —१ व्यतीत हुवा हुआ, गुजरा हुआ, बीता हुआ २ छोडा हुआ, गमाया हुआ त्यागा हुआ. ३ रवाना हुवा हुआ ४ प्रात काल हुवा हुआ, सुवह हुवा हुआ ।

५ देखो 'विवाहियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विहायोडी)

विहार–स पु [स] १ मैथुन, रतिक्रीडा ।

२ वह स्थान जहा रतिक्रीडा या मैथुन किया जाय ।

३ बौद्धो का मठ ।

४ देवालय, मन्दिर । (ह. ना मा.)

५ गति, चाल, वेग ।

उ०—१ भरै नफेरी अव को, डका सोर अपार । हुकम पिता चै हल्लियौ, नीर क तीर विहार । —रा रू

उ०—२ खतग वाज वेखता, विडग चोवडी विहारा । अगोअग आफळै, हुवा निरलग हजारा । ढग मतग चाचरा, वरगना रग वधाळा, सरग मग सूरमा, सग वारग सुचाळा । —वखतो खिडियौ

६ प्रस्थान, गमन ।

उ०–१ स्री अकवर आग्रह करी, कास्मीर कियौ रै विहार । स्रीपुर नगर सोहामणु, तिहा वरतावी अमार । —स कु.

उ०—२ जद भारमलजी स्वामी नै रुघनाथजी कनै मेल्या थारा स्रावक चरचा री कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करो । जद रघुनाथजी वोल्या किणरै चरचा करणी है रे ? पछै घणी उपकार कर घणा नै समझाय स्वामीजी विहार कीधो । —भि. द्र

उ० —३ जो वीर जिणद विहार करि, इण नगर ना बाग मे आवै रे । तो घर छोडी अणगार हू थऊ, एहवी भावना भावै रे । —जयवाणी

उ०—४ पखी तडफडइ, वडा माणस लडथडइ, काठ सडइ, छाली हळ खडइ । आपणा घरि कादम फेडइ, वीजा काज मेडइ । पार पार न लीइ, साध विहार न करीइ । —रा सा स.

७ जैन साधुओं का भिक्षा मागने हेतु जाने की क्रिया ।

स स्त्री —८ पक्ति, कतार ।

रू भे.—विहार, वीहार, वेहार ।

विहारजत्र-स पु —विहार यात्रा । (जैन)

विहारण-स पु [स विहारनम्] १ सहार, नाश ।
२ घूमने की क्रिया, टहलने की क्रिया ।
३ प्रस्थान करने की क्रिया, गमन ।
वि १ सहार या नाश करने वाला ।
२ गमन करने वाला ।

विहारणौ, विहारबौ-क्रि. स.—१ चहल कदमी करना, घूमना, फिरना टहलना ।
२ मडराना, उडना ।

उ०—ग्रापरा पाम्हणा (दुसमण) तो पथ निहारै, झगडा री वाट जोवै, ग्रनै रिण खेत मे मास रुधिर भखणा भाळी ग्रीधा गैण ग्राकास में विहारै उड रही है । —वी स. टी

३ सहार करना, मारना ।

उ०—ग्रहि छळ 'ग्ररजण' गौड, परठि मनवार ग्रपारा । नजर टाळि नाराज, वहै घट हुवौ विहारा । —सू. प्र.

४ चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—उभै मिसल ग्रवखास, पडै धडहड ग्रणपारा । राव जाणि नरसिंघ, हलै करि दयत विहारा । —सू प्र.

५ तहस-नहस करना, नष्ट करना ।
६ क्रीडा करना, खेल करना ।

उ०—१ खेडधणी सिरि खीजिया, हुई मुगलला हेल । ज्यौं गज वारि विहारतां, वीचै वारिज वेल । —रा. रू.

उ०—२ परणीजै मधुपुरी 'ग्रभो' व्रदावन ग्रायो । पेखि धाम सुख परम भडा तीरथ मन भायो । परखि निगम द्रुम पुज हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै हेक जळ जमण विहारै ।

—रा रू.

७ गमन करना, प्रस्थान करना ।
८ उपभोग करना, खाना ।

उ०—जग ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम ग्रवर चार ग्रनारय । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग विहारय ।

—रा. रू

६—शोभा देना ।
१० रति क्रीडा करना, मैथुन करना, सभोग करना ।
११ देखो 'वैराणौ, वैरावौ' (रू. भे.)

विहारणहार, हारो (हारी), विहारणियौ—वि० ।
विहारिग्रोड़ौ, विहारियोड़ौ, विहारयोडौ—भू० का० कृ० ।
विहारीजणौ, विहारीजबौ—कर्म वा० ।

विहारणौ, विहारबौ—रू० भे० ।

विहारियोडौ-भू का. कृ.—१ चहलकदमी किया हुग्रा, घूमा हुग्रा, टहला हुग्रा २ मडराया हुग्रा, उडा हुग्रा. ३ नाश किया हुग्रा ४ सहार किया हुवा मारा हुग्रा. ५ चीरा हुग्रा, विदीर्ण किया हुग्रा ६ तहस-नहस किया हुग्रा, नष्ट किया हुग्रा. ७ क्रीडा किया हुवा, खेल किया हुग्रा ८ गमन किया हुवा, प्रस्थान किया हुग्रा. ९ उपभोग किया हुग्रा, खाया हुग्रा १० शोभा दिया हुग्रा ११ रति क्रीडा वा सभोग किया हुग्रा, मैथुन किया हुग्रा
१२ देखो 'वैरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री विहारियोडी)

विहारियौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—बरस बावीस को बाली-वेस, दत कवाडधा, सिर किलकिला केस । हाट विहारधा कइ जोवज्यो, कइ जोवज्यो राज-दुवारि ।

—वी. दे

विहारी-वि.—१ विहार करने वाला, विचरण करने वाला ।
२ गमन करने वाला, प्रस्थान करने वाला ।
३ नाश करने वाला ।
४ सहार करने वाला, मारने वाला ।
५ रतिक्रीडा या मैथुन करने वाला ।
स. पु [स] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

उ०—१ मीरा के गिरधारी मुरारी, राखौ लाज प्रभुजी हमारी । मैं हू दासी सदा तुमारी, तुम हो भलै विहारी, चीर छोडो ।

—मीरा

उ०—२ हसं सारी नाग नारी उचारी विहारी हूत, सवारी पधारी वळै लेतौ ग्राजै सूक । कठै थारी वेस ग्रसी जुद्धकारी बाता करै, फणाधारी दीठौ न छै ग्रागकारी फूंक । —मुरारीदास बारहठ

उ०—३ विमळानन विबुधेस विहारी, सख चक्र धारी सुमण । भव तारण भूधर भय भजण, हिरणागरभ त्रय ताप हण ।

—र. ज प्र

उ०—४ गोकळ ग्रामी, सुर नर सामी । ए ग्रवत्तारी, वाचि विहारी । —पिं. प्र

२ शिव, महादेव ।
३ ईश्वर, परमेश्वर ।
४ एक प्रकार का नींबू विशेष ।

उ०—बिहारी, गूदडियौ, कागदी तीन जात रा नींबू ।

—बा. दा. ख्यात

५ देखो 'व्यवहारी' (रू. भे)

रू भे—वहारु, बिहारी, वेहारी ।

विहारीकद–स पु [स] एक प्रकार का जमीकद विशेष जो औषधि के प्रयोग मे लिया जाता है ।

विहारीदासौत–स. पु —१ राठोडो की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

२ भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
—बा दा. ख्यात

विहाल, विहालौ—देखो 'वेहाल' (रू भे)

उ०—१ भाग विना नही पाईयं, माणिक मोती लाल । दुनिया कोडी हाथि लं, हरीया भई विहाल । —अनुभववाणी

उ०—२ दुनिया रोवं रोवणा, देख विडाणी खाल । नाव सनेही बाहिरो, हरिया होय विहाल । —अनुभववाणी

उ०—३ सबळ दळा कर 'थानसी', आयौ फेर अचीत । फळ पायौ झाला घणी, थयौ विहाला चीत । —रा. रू

विहाव—देखो 'विवाह' (रू भे)

विहावणौ, विहाववौ—१ देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू भे.)

२ देखो 'विहाणौ, विहावौ' (रू भे)

उ०—१ आवौ प्रीतम सेझ मे, हस हस पूछू वात । गळ मैं घाता बाहडी, सुखा विहावं रात । —कुवरसी साखला री वारता

उ०–२ रायसिंघ नूं कह्यौ "मोनू थासू अळगो करस्यौ तो राव था ऊपर आवसी'" तरं राठौडं ठाकुरं कह्यौ 'जिण गात्र कूकडो न हुवं छै तठै पिण रात विहावं छै" —नैणसी

उ०—३ ताहरा कोडीधज री फरडकी सुणियौ ताहरा राव सीवो बोलियौ—'भाई' कोडीधज घोडं रा फरडका सुणीजं छ, कोट पण एकलो छै वाभणियौ पण मास ५–६ हुवा आयौ बैठो छै, उपद्रव दीसं छै । आजं कुसळ विहावं । —नैणसी

उ०—४ कुसळ विहावउ सज्जणा, पर मडळं थयाह । जउ विह हिया न हारिस्यइ वळं मिळं वउ त्याह । —ढो मा

विहावणहार, हारौ (हारी), विहावणियौ—वि० ।
विहाविओडौ, विहावियोडौ विहाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
विहावीजणौ, विहावीजवौ—कर्म, भाव वा० ।

विहावियोडौ—१ देखो 'विवाहियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'विहायोडौ' (रू भे)
(स्त्री विहावियोडी)

विहिंसिक, विहिंसिग–वि —अनेक प्रकार की हिंसाए करने वाला । (जैन)

विहि—१ देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ हो वलण वेगी करं वालहा रे हो वा रे, हूं रालीसि सील रतन्न । हो लेख मिटइ नही विहि लिख्या, हो रे, हो झूठा कीजइ तं जतन्न । —स. कु.

उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ मही—माहि । विहि—तणा पणि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्याहि ।
—मा का. प्र

२ देखो 'वे'माता' ।

उ०—विहि अम्हारी वैरणी, पेला भवनी होय । सज्जन सिउ सुख माणीइ, निलवटि निलख्या जोय । —मा का प्र

विहिचणौ, विहिचवौ–क्रि. स —१ विभक्त करना, तोडना ।

उ०—विहिचौ मेरु माहागिरी नाप्यु, पात्र तणि ता पाणि । तू मू दान करयू मि महीमाहा, मनि मोटी ए काणि । —नळाख्यान

२ देखो 'वाटणौ, वाटबौ' (रू भे)

विहिचणहार, हारौ (हारी), विहिचणियौ—वि० ।
विहिचिओडौ, विहिचियोडौ, विहिच्योडौ—भू० का० कृ० ।
विहिचीजणौ, विहिचीजवौ—कर्म वा० ।

विहिचियोडौ–भू का कृ —१ विभक्त किया हुवा, तोडा हुआ ।
२ देखो 'वाटियोडौ' (रू भे]
(स्त्री विहिचियोडी)

विहित, विहिति–वि [स विहित] १ बनाया हुआ, अनुष्ठान किया हुआ, अनुष्ठित ।
२ निश्चित, नियुक्त या सुव्यवस्थित ।
३ निर्मांणित, रचित ।
४ स्थापित ।
५ बांटा हुवा, विभक्त ।
६ शास्त्रसम्मत ठीक, उचित, उपयुक्त ।

उ०—१ विहित सुणै अत वाणि एम चहुवाण उचारै । सको काळ संघरै, न को रहियौ वीसारै । प्रगट मात पाडवा, सु तौ न गई वर सत्यै, औ अत हथ आपरी हरी दीनो पर हत्थै । —रा. रू.

उ०—२ आकुळ थ्या लोक केहवौ अचिरज, वछिन छाया ए विहित । सरण हेम दीसि लोधौ सूरिज सूरिज ही त्रिख आसरित ।
—वेलि

स पु [स विहित] १ विधि विधान, कानून ।
२ आदेश, आज्ञा ।
[स. विहित] ३ कृति, रचना ।
रू भे —विहित, विहितु ।

विहिमग्ग, विहिमारग–स. पु [स विधिमार्ग] विधिमार्ग ।

उ०—सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ । भविय जण मग विमल कमल रवि जेम पयासइ । —ए जे का. स.

विहिरु–स. पु —१ दूषित, आचार। (जैन)

२ अपराध, दोष, गलती।

उ०—विधाताइ करघु विहिरु सरसव नि यम मेर। एक याचक, एक दाता, घणु दीसि फेर। —नळाख्यान

३ फरक, अंतर, भेद।

उ०—पचायण जंबुक यथा, विहिरु वायस हंस। तिम माधव नइ अवर नर, दासि ! न जाणउ दस। —मा का प्र.

विहिल, विहिलौ, विहिलु, विहिलौ, विहिल्ल, विहिल्लौ, विहिल्य–वि.—काफी, बहुत, अधिक, पर्याप्त।

उ०—व्यास भणइ मंत्रनइ उपाय, विहिलौ अस्टि हुसइ गढ माहि। गढ ऊपरि गढरोहा समइ, वूठा देव दिवस चउदमइ। —का दे प्र.

२ दुःखी, पीडित।

उ०—लक्ष्मीपुंज आस्रितवत्सल प्रकृतिप्रांजल, विहिल्यां साधार, परोपकारैकव्यसन नीतिबांधव परनारी सहोदर स्निग्धालाप सज्जन चूडामणि अरथजनचिंतामणि इति स्रेस्ठि। —व स.

३ देखो 'वहिलौ' (रू. भे.)

उ०–१ गाई वाई गुण करी, रीझवि जाणउ राय। अवला ! चालि ऊतावली, वेगि विहिल्या पाय। —मा .का प्र.

उ०–२ पवग पवग पलाण पलाण, विहिल्ला रूढ हुआ वापाण। सुभट्ट सजोडा त्रिण्ह सहस्स, संग्रामि जिकै सवि दीस सकस्स। —राउ जैतसी रौ रासौ

उ०—३ वीर, विहिलु आवजे, कुसल माग तुंहनि करै कारज मन वांछित, समइ सभारै मूहनि। —नळाख्यान

विहिवा—देखो विवाह' (रू भे)

उ०—भीम राइ सवर्ण सुणू रे पुत्रीनि पीडा तन। विहिवा नु समय थयु रे, अवला थई यौवन। —नळाख्यान

विहिवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—इंद्र कहि—'वरदान थी, देखसि नही प्रतिहार। ईछाइ तूं दरसन देज्यै, देखी विविध विहिवार। —नळाख्यान

विहिस्त–स पु. [फा विहिश्त] स्वर्ग।

उ०—दीन दुनी सदकै करू, टुक देखण दे दीदार। तन मन भी छिन-छिन करू, विहिस्त दोजख वार। —दादूवाणी

विहोण, विहोणौ—देखो 'विहीन' (रू भे)

उ०—१ विदर गपा रा वादळा, विदर विवेक विहीण। विदर छाह निरखै वहै, अलवेला अकुलीण। —वा दा.

उ०—२ गिनका री जे नर ग्रहै, कवरी डंड करेण। खाग ग्रहै किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण। —वा दा.

उ०—३ 'भगवन' सुतन सत्रा दळ भागा, निरदळिया त्रितलोक नर। कूरम चै न घाळियौ किण ही, काळ विहीणां घाळ कर। —राजा मानसिंघ भगवतदासोत कछवाहा रौ गीत

विहीन–वि [स.] १ बिना, रहित, वगैर।

२ त्यागा हुआ, छोडा हुआ।

३ नीच, निम्न, कमीना।

रू. भे —बिहिन, विहीण, बिहीन, वहीण, विहीण, विंहीणौ।

विहुंड–स. पु. [स] हुण्ड राक्षस का पुत्र, एक राक्षस।

वि वि —नहुप ने इसके पिता हुण्ड का वध किया था अत इसने नहुपवध हेतु शिव की तपस्या की थी किन्तु विष्णु ने मनमोहिनी स्त्री का रूप धारण कर इसकी तपस्या भग की थी। अन्त मे यह पार्वती के द्वारा मारा गया था।

विहुडन–स. पु. [स] शिव का अनुचर विशेष।

विहुंण, विहुंणौ, विहुण, विहुणौ–वि —१ तुच्छ, निम्न।

२ निर्बल, कमजोर।

उ०—तठ वीठू अरज कीवी, "घरा पधार परभात असवार हुयजे, जाय पुहचस्या। आपा सु कजीयौ कर कासु लेसी ! आपा कै विहुणा छा। —कुवरसी साखला री वारता

३ देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ हेम वरनी हेम गिर बाळी लहुवै - वेस, कथ विहुंणी कामणी, साचौ कहि सदेस। साचो कहूँ सदेस वेण मीठा करू, राज मुदै पट हृदय रग महिला घरू। —मा वचनिका

उ०—२ पग विहुणो पिण परदेसे भमै, आवै तुरतउ जाय। बैठो वहै अपणै घरि बापडो, तौ पिण चपल कहाय। —ध व प्र.

(स्त्री विहुणी, विहुणी)

विहुव–क्रि वि —चारो ओर, हर तरफ।

उ०—घूघरी रोळ घटा सवद्द, मोखत्त पटै तळ जोड मद्द। गुडिया गयद विहुव गमेय, पाहाड जाण हालै पगेय। —गु रू व

विहू—देखो 'बेऊ' (रू. भे.)

उ०—१ रिण सोहा रिण सूरमा 'वीको' 'सोम' वखाणि, नायक पायक भड निवड अरि भजण आराणि। राण अराणि अरि भाजिता रूक-हथ, सूर साराहिया 'सोम' 'वीको' समथ। खड पडतीस सो विहू उडै खरा, राय गुर वखांणै वधव रायसिंघ रा। —द्वा. झा.

उ०—२ दूजै पौहरै रयण कै, मिळियत गुपफागुध्ध। धण पाळी, पिव पाखरयौ; विहू भला भड जुध्ध। —ढो. मा.

विहूण, विहूणौ—देखो 'विहूणौ' (रू भे.)

उ०—१ है कानै मोताहळ, कर पूंची कठमाळ पै सकळ । राघो नाम विहूण अनखाणौ ढोर आदम्मी । —र. ज. प्र

उ०—२ मूळ व्याज दोऊ गया रे, घुर वीरै नहिं मेळ । साह विहूणौ सहर मे, कूडी करेज केळ । —श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—३ ग्यान विहूणा गुर मिल्या, सुरति विहूणा सिख । जन हरिया गुर सिख का, ससा मिटया न चिख । —अनुभववाणी

उ०—४ घणी विहूणा धौंळहर, ढहि ढहि ढेर थियाह । हरिया पाछा आय कै, वास न को वसियाह । —अनुभववाणी

(स्त्री. विहूणी)

विहू, विहूंण, विहूणडो, विहूणडौ, विहूणौ—देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नितु नितु जोसी पूछोइ, नितु नितु सुकन सुभाव । नित नित निरति विहूणडां, आविइ वली वधाव । —मा. का. प्र.

उ०—२ इम अहनिसि आलोचती, मन सिघि मन परिणाम । तेल विहूणा दीप परि, क्षणि क्षणि थाती क्षाम । —मा का. प्र.

उ०—३ ज्योति जिसी छइ दीवडइ, तिम माधवि मुझ जाणि । नवपल्लव नेह-जि-थकी, नेह विहूणइ हाणि । —मा. का. प्र.

उ०—४ जलाल तौ विन कोटडी चद विहूणी रैण । तौ आया चानण हुवै, दीसै भलास सैण । —जलाल बूवना री वात

उ०—५ प्रेम विहूणी प्रीति जोमै मन न ठरै 'जसा' । रस विण पाना रीति, रग न आवै राचणी । —जसराज

उ०—६ दादू भाव हीन जे प्रथ्वी, दया विहूणा देस । भक्ति नही भगवत की, तह कैसा परवेस । —दादूवाणी

उ०—७ राम वसै जिण जगळां हे सखी ! सौ हिज सुरग निवास । राम विहूणौ सुरग ही सखी, तन उपजावै त्रास । —गी. रा.

(स्त्री. विहूणडी, विहूणडी, विहूणी)

विहून—देखो विहूणौ' (रू. भे.)

विहूवल—देखो विह्वल' (रू भे)

उ०—गगा देखी विहूवल थयो, काम बाण पीड्यो ईस । —धरम पत्र

विहेठ, विहेड–स. पु —विनाश, सहार । (जैन)

विहृत–स. पु [स विहृतम्] स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलकारो मे से एक जिसमे लज्जा के कारण कहने के समय भी बात नही कही जाती है । (साहित्य)

विहृति–स स्त्री. [स विहृति] १ विहार, आमोद, प्रमोद क्रीडा ।

२ हटाने या छीनने की क्रिया ।

विह्वल–वि [स] १ भय, चिन्ता आदि के कारण घबराया हुआ, व्याकुल, वेचेन ।

उ०—१ रूप अनुपम रभ सम, उवा पदमी कहै याह । वार वार विह्वल थको, जपै आलिम माहि । —प च. चौ

उ०—२ सिबिका वइसी सचरइ, घरि थी राउलि जाइ । वाटि-वली विलोकती, विनता विह्वल थाइ । —मा का प्र

२ खराब विकृत । (अमरत)

३ चकित, विस्मित ।

४ भयभीत, डरा हुआ ।

उ०—पीली चोली पहिरणइ, काली फाली सेत्र । निरखी निरखी नाहु नइ, विह्वल विकसित नेत्र । —मा का प्र

५ पीडित, सन्तप्त ।

६ कुटिलतायुक्त । (मति)

उ०—लघु वइ लक्षण लाछिना, सामुद्रिक गुण सार । वेस्या मति विह्वल थइ, चितइ चूक विचार । —मा. का प्र

७ चिन्तित, उदास ।

उ०—वलवलती विह्वल वदनि, वलती वदइ उदार । राजा रुठउ मनाविसूं, सुपी सपति सार । —मा का प्र

रू. भे —बिभल, बिम्भल, बिहवळ, बिहवळ, बिह्वल, भिंभल, भिंभळ, भीभळ, भीभल, विवहल, विहवळ, विहळ, विहल, विहवल, विहूवल, वीहळ, विहल ।

अल्पा.—विहवली, विह्वली, वीहली, वीहली ।

विह्वलता–स स्त्री [स.] विह्वल होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

वीं—१ देखो 'वी' (रू भे)

उ०—१ पहर एक गोळी वही पण वाहरला जाणै उथा सो उवै लगाव री जायगा जाणी था सो वीं ठावं सूं वड गया । —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ भरमल अहडी कामणी, जहडो चद प्रकास । काया लै घर कूं चल्या, रह्यो जीव वीं पास । —कुंभरसी साखला री वारता

उ०—३ सौ दलकरण रै डेढ सौ घोडा पायगा माहे बाकी पटायता रा घोडा सौ इण तरइ सू घोडा अढाई सौ वीं कन्है रहै । —सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

उ०—४ योगी कही—वन माही म्हारै साथ एक कारज सिद्ध करस्या । राजा कही–हालो । तद योगी राजा नू वन माहीं लेय गयौ । वी ठाव एक सीसम रो व्रख । तो पर एक मुरदौ वधियो छै । —सिंघासण बत्तीसी

२ देखो 'भी' (रू भे.)
३ देखो 'वी' (रू. भे)

वींकणो, वींकवो–क्रि स [स वीक्षण] १ ऊन, रुई आदि को हाथ से साफ करना।
२ देखो 'वीखणो, वीमवो' (रू भे.)

वींकणहार, हारो (हारी), वींकणियो—वि०।
वींकिम्रोडो, वींकियोडो, वींक्योडो—भू० का० कृ०।
वींकीजणो, वींकीजवो—कर्म वा०।
वींखणो, वींखवो, वींखणो, वींखवो —रू० भे०।

वींकियोडो–भू का कृ—१ हाथ से साफ की हुई ऊन, रुई आदि।
२ देखो 'वीखियोडो' (रू भे)
(स्त्री वींकियोडी)

वींख—देखो 'वीख' (रू. भे)
उ०—"इतला दिन हू जाणती रे हा" एहनी हिवै तो सोहग सुदरी रे हा, पुत्री नै दीयै सीख, बाई ! सामळो। सासरीया सतोखिजै रे हा, हलवै भरजै वींख, बाई ! सामळो। —स्रीपाळरास

वींखणो, वींखवो—१ देखो 'वींकणो, वींकवो' (रू. भे)
२ देखो 'वीखणो, वीखवो' (रू. भे)

वींखणहार, हारो (हारी), वींखणियो—वि०।
वींखिम्रोडो, वींखियोडो, वींख्योडो—भू० का० कृ०।
वींखीजणो, वींखीजवो—कर्म वा०।

वींखियोडो—१ देखो 'वींकियोडो (रू भे.)
२ देखो 'वीखियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. वींखियोडी)

वींची–स. स्त्री.—१ विचर्चिका नामक कुष्ट रोग। (अमरत)
२ एक प्रकार का रक्त विकार का रोग (अमरत)

वींछयो, वींछियो, वींछीओ, वींछीयो—देखो 'विछियो' (रू भे.) (व. स.)
उ०—१ पाय पीरोजी वांणही, अगूठि भणवट्ट। ठीक जडित ठाहरि रहिया, वली वींछीम्रा खट्ट। —मा. का प्र.
उ०—२ अणोट वींछिया उदार, पाय पख पकज। अनग ह्वै छनंग भ्रग, रग रग मे रज। —सू. प्र.

वींजण—१ देखो 'वीजण' (रू भे)
२ देखो 'वीजणो' (रू. भे)
उ०—१ वीनता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय। वाउ विलोलइ वींजणइ, को चदन घसी लाय। —मा का प्र
उ०—२ सघण सूकडि सइरि सु सीचीइ, पवण पूरिहिं वींजण वीजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ। —सालिसूरि

वींजणि, वींजणी—१ देखो 'वीजणो' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—माधव जिहा पगला भरि, तिहा पड्यो मुझ राख। पवन वसइ तिणि वींजणि, साबद सारेज लाख। —मा. का प्र.
२ देखो 'वीजणी' (रू. भे.)

वींजणो—देखो 'वींजणो' (रू भे)
उ०—जलंद्रा सरीरि लगाडीयइ, गुलाब तणा अभ्यग कीजइ, बावन खीखड घसीयइ। चउदिसि वींजणा फिरइ द्राक्षा आंबिली पान कीजइ। कलम सालि तणा साधउ रा करवा कीजइ। —रा सा स
उ०—२ न लेवै वींजणै वाय, स्निग्ध वासी न रखाय। भोजन ग्रही थको ए, जीम्या होवै व्रत-धको ए। —जयवाणी
उ०—३ गुखै वैठी गोरडी रे वींजणै ढोलति वाय। पेट नै काजै पदमणी रे, जाचै घर घर जाय। —स. कु

वींजणो, वींजवो—देखो 'वीजणो, वीजवो' (रू भे)
उ०—मस्तकि छत्र धरावतउ, चामर वींजता सार रे। आज तउ मस्तकइ रवि तपइ, डास मसक भणकार रे। —स. कु.
उ०–२ "सेवत्री तणा ताड वेढ भमिया, अगर प्रतिबोधिउ, कस्तूगार ऊखेविउ, पंचवरण्ण पाट्ट तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरी मोतीसरी लबावी राजा आस्थान देउ बइठउ छइ, मोर पीछ तणी वीजीणै वाउ वींजइ"। —व. स.
उ०—३ सघण सूकडि सइरि सु सीचीइ, पवण पूरिहिं वींजण वींजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ। —सालिसूरि

वींजणहार, हारो (हारी), वींजणियो—वि०।
वींजिम्रोडो, वींजियोड़ो, वींज्योडो—भू० का० कृ०।
वींजीजणो, वींजीजवो—कर्म वा०।

वींजाचळ, वींजाचळो, वींजाचाळ, वींजाचाळो—देखो 'विंध्याचळ' (रू भे)
उ०—१ मल्हपै मैंगळा, सूड लल्लवळा, आगळी ऊजळा, सेत दातूसळा। सोहिया सामळा वप्पि वींजाचळा, स्र ग कूभाथळा, वोम किरि वद्दळा। —गु रू व.
उ०—२ कुजरा ढूहरी ढाळ कुभायळै, बादळा जांण फाबत्त वींजाचळै। धम्मळी पीयळी लाल नीली धज, गाजता जाण गोरभ दीसै गज। —गु. रू व.

वींजाणो, वींजावो—देखो 'बीजाणो, वीजावो' (रू भे.)

उ०—' अनइ इक सुवरणमय रूपमय रसित विविध प्रकारि जे छद्र पालखी, चकडोल, अनइ तरुआरि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवं पायकं परिवारिउ, छत्र धरातइ, चमर वींजातइ, नफेरी सरणाइ बरगा ढोल झालर डुडि दमामा दडदडी अदग नीसाण प्रमुख वाजित्र वाजइ। —व. स.

वींजाणहार, हारो (हारी), वींजाणियो—वि०।

वींजायोडो—भू० का० कृ०।

वींजाईजणो, वींजाईजवो—कर्म वा०।

वींजायोडो—देखो 'वीजायोडो' (रू भे)
(स्त्री. वीजायोडी)

वींजासणिया—स स्त्री —एक लोक देवियो का समूह विशेष, जिनके प्रकोप से वात रोग होते हैं। (ग्रमरत)
वि. वि.—देखो मावलिया

वींजियोडो—देखो 'वीजियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वीजियोडी)

वींजीणो —देखो 'बीजणो' (रू. भे.)

उ०— सेवत्री तणा ताड वेढ भमिया,अगर प्रतिबोधिउ,कस्णागर ऊसेविउ पचरण्ण पाट्ट तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरि मोतीसरी लबावी, राजा ग्रास्थान देउ वइठउ छइ, मोरवीछ तणे वींजीणे वाउ वींजइ''' । —व स

वींझ—देखो 'विंध्य' (रू भे)

उ०—१ इहा सु पजर मन उहा, जय जाणइला लोइ। नयण ग्राडा वींझ वन, मनह न ग्राडउ कोइ। —ढो मा

उ०—२ प्रीति ग्रलियळ केतकी नइ, प्रीति वींझ गयद। तिय रुखमणी सु नेह धरज्यो, प्रीति परमाणद। —रुकमणी मंगळ

वींझगिर, वींझगिरी—देखो 'विंध्यगिरि' (रू भे)

वींझणो—देखो 'वीजणो' (रू भे)

वींझणो, वींझवो—देखो 'वीजणो, वीजवो' (रू भे)

उ०—१ भाजी निसही जिनग्रह पेसे, घरे छत्र ने मडप मे वेसे। पहिरे वस्त्र ग्रने पनही, चामर वींझे मनठाम नही। —वृस्त

उ०—२ जिनजी कु देखि मेरउ मन रीझइ री। तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, ग्राप इद्र चामर वींझइ री। —स. कु

वींझणहार, हारो (हारी), वींझणियो—वि०।

वींझिग्रोडो, वींझियोडो, वींझ्योडो—भू० का० कृ०।

वींझीजणो, वींझीजवो—कर्म वा०।

वींझवन—स पु—एक वन विशेष जहा हाथी बहुत पाए जाते हैं, सुदर वन।
रू. भे —वीझवण, वीझवन, वीझावण, वीझावन।

वींझाचल, वींझाचल—देखो 'विंध्याचळ' (रू भे.)

उ०—मयण काम मूरत्ति, गात गिरवर वींझाचळ। वडो वीर वीराधि, सिंघ रूपी सहस बळ। —गु रू ब

वींझाजळ, वींझाजल, वींझाझळ, वींझाझल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे)

उ०—१ वींझाजळ रूप गयद चढि मेघाडवर विराजे। नौवतूं के निहाव वीरारस वाजे। जिस वखत जळावोळ हालोहळ से फोज हल्ली। नाळूं के निहाव सेती धरती थरसली। —सू. प्र.

उ०—२ धुवै राग सिंधुवा, गजे नाळिया ग्रबागळ। मेळा भड गहमहै, वहै गोळा वींझाझळ। —सू प्र

वींट—स पु [स विष्टा] १ पक्षियो की बीट या विष्टा।

उ०—राजा कह्यो—थूं ई वता उडता पछिया नै वींट करता म्हैं कीकर पाल सकूं। कोई मिनख री जायो की भूल करै तो म्हैं उण री सात पीढिया नै उकळता कडावा में भूज न्हाकू पण ग्रा ग्रबूझ पछिया माथै खीज करणी नी विरथा है। —फुलवाडी

उ०—२ राजा कह्यो—थू तो नित सौ वार मरिया करै थारै मरण री काई। पण एक मामूली सी वींट वास्तै म्हैं ग्रणगिण पछिया नै मार नी सकू। लुगाया री कैणो मानै उणनै तो राजा वणणो ई नी चाहिजै। —फुलवाडी

२ ग्रावेष्टन, घेरा।

३ टापू, द्वीप।

उ०—मांझि समदा वींट घर, जळ सू जामोपत्त। किणही ग्रवगुण कुभडी, कुरळी माझिम रत्त। —ढो मा

४ देखो 'वींटो' (मह, रू. भे.)

रू भे —विंट, बिट, बीट, बीठ, वीट, विंट।

वींटण—स पु. [स. वेष्टन] १ पुस्तक ग्रादि लपेटने का वस्त्र।

२ विस्तर ग्रादि बाधने की रस्सी।

रू भे —वीटण।

वींटणी—देखो 'वीटणी' (रू भे.)

वींटणो—देखो 'वीटो' (रू. भे.)

उ०—कोटवाळ राजी हुवो, कह्यो, देखो गाठडो माहै कासू छै। जदै पयादा उतावळा मुजरायता खोलणी माडी। जठै तीजो घट खोलै तिठै लोही लागो दीठो। सगळा चमक्या नै वींटणो उघाडै तो माटी मारघो निजर पडियो। —जगदेव पवार री वात

वींटणो, वींटवो—क्रि. सं.—१ किसी शहर, दुर्ग ग्रादि को ग्रधिकार मे करने हेतु उसे ग्रावेष्ठित करना, घेरना।

उ०—१ रामा री पटो लीयो नै राव चद्रसेन नै मुगळा नु लगाय दीया। जेठ सुद १२ रामो मुगळ रामवावडी उतरीया। दिन १८ नगर वींट रह्या। —राव चद्रसेन री वात।

उ०—२ पातिसाह गुजराति ल्यो। हू हिंदुग देस जाइ करि लेइसि।

उठा हुती मिरजो सोभति सिरियारि माहै होइ नै नागोर म्राइ वींटियो। —द वि

उ०—३ त्रिण कण कापड जल माहे लीध, गढरोहो मालव पति कीध। सायर वींटी लका जेम, उज्जेणी वींटी रह्यो तेम। —सीपालरास

उ०—४ कमधर्ज वींट नागोर कोट, चळ दळ अरि कीधा एक चोट। 'इद्रसिघ' देख दळ बळ अपार, दे कोट जिण लियो धरम द्वार। —रा रू

२ गोल करना, लपेटना, समेटना। (विस्तर आदि)

३ चारो ओर से आक्रमण करना।

४ आच्छादित करना, ढकना।

५ लपेटना।

उ०—१ अन्न अदक पय परिहारी, आभरणा ऊवेखि। वकुल त्वचा वींटी करि, तरुणी तापस-वेखि। —मा का प्र

उ०—२ चावडी उण नै अमला माहे बेखबर देखि, तरे उणरी ही तलवार काढि गळो कीधो। हाथ जुदा जुदा काटिया पगा रा जांघा रा जुदा जुदा तखता कीधा करनै चादणी माहे घड देनै बाधियो। ऊपरा पिलिग-पोस वींटियो। तिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिकी वीटी। गाठ गाढी सेठी बाधी। —जगदेव पवार री वात

६ बाहुपाश मे लेना, अकमाल मे लेना।

उ०—रहै उमा भुज वींटियो, नव कोपळ रै रग। आदर पावै कठ उण, सूर तणो उतमग। —बा दा

७ वस्त्र, कवच आदि को पहनना, धारण करना।

८ वस्त्र, कवच, आदि पहनाना, धारण कराना।

९ मढना, आच्छादित करना।

उ०—तठा उपरायत पताखा सू बादळा छोडजे छै। सू किण भात रा बादळा छै? हळवद रा, मोरवी रा अजार रा, भरवछ रा, हालोर रा छै। रूपै टूटी साकळी लागी छै। घणी सिलेहटी अटा-यण मैं वींटिया थका, ऊपरा वेवडी-तेवडी भालरी मैं गरकाव किया थका छै। —रा सा. स

क्रि. अ—१० चारो ओर हो जाना, चारो ओर फैल जाना।

उ०—१ सिधा माळ सू वींटियो ज्यू हेमाळ सदा लहे सोभा, वहे चद्र माळतारा वींटियो वखाण। वींटियो अमरामाळ मेर वदं कहै वातां, रहै पातामाळ सूं वींटियो 'भीमो राण। —कविराजा बाकीदास

उ०—२ क्षणि नान्हा क्षणि मोटा दीसइ, माहोमाहि खुसइ बेउ गीसइ। बर्धवि वींटीउ राउ दुजोहणु चिहु पडवि वींटीउ द्रोणु। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ तव जादव अणरागिय लागिय रहिया पागि। वींटीउ प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मागि। —जयसेखर सूरि

११ आवेष्टित होना, घिरना।

उ०—वारागना वसत्रं वींटाणी, घाइ घाइ तरण करै घणी। 'ऊदा' हरै नांखिया अळगा, पोति अनै अयतार पणी। —पूरणमल भाणावत री गीत

१२ जडना।

वींटणहार, हारो (हारी), वींटणियो—वि०।

वींटिओडो, वींटियोडो, वींट्योडो—भू० का० कृ०।

वींटीजणो, वींटीजवो - कर्म वा०, भाव वा०।

विंटणो, विंटवो, विंट्टणो, विंट्टवो, विंटणो, विंटवो, वींटणो वींटबो, विंटणो, विंटबो, विंट्टणो, विंट्टवो, वीटणो, वीटबो—रू० भे०।

वींटळी, वींटली—स स्त्री—१ पगडी, साफा।

उ०—वीग री चिलकी वींटली, भावजा की चिलकयो जी चीर। उठ गोरी उठ सावळी, थाई सोदरा वाहर आय। —लो गी

रू भे.—वीटली, वीटली, वींटुली, वीटुली, वीठली।

२ देखो 'वींटळी' (रू भे:)

उ०—ताहरा रोमै मुहूर्त नू कह्यो—'जायां छा गोठ जीमण। राव नूं वींटळी मता चढण देज्यो। ताहरा वींटळी चढसी ताहरा रेया री डूगरी देखसी, ताहरा सहसौ चीता आवसी। —नैणसी

३ देखो 'वींटी' (अल्पा रू भे)

उ०—कर कगीय ठोसी वाकुडी, वींटली विविध प्रकारि। मुद्रडी हीरै जडी नई, कनक ककण सार। —रुकमणी मगळ

४ देखो 'वींटणी'

वींटाणो, वींटावो—क्रि स [वींटणो क्रिया का प्रे रू] १ किसी शहर दुर्ग आदि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित कराना घिराना।

२ गोल कराना, लपेटाना, समेटाना। (बिस्तर आदि)

३ चारो ओर से आक्रमण कराना।

४ आच्छादित कराना, ढकाना।

५ लपेटाना।

६ बाहु पाश में लेने को प्रवृत्त कराना, अकमाल मे लिवाना।

७ वस्त्र, कवचादि पहनाना. धारण कराना।

८ मढाना, आच्छादित कराना।

९ चारो ओर कर देना या फैला देना।

१० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त करना, घिरने के लिए प्रेरित करना।

वींटाणहार, हारो (हारी), वींटाणियो—वि०।

वींटायोडो—भू० का० कृ०।

वींटाईजणो, वींटाईजवो—कर्म वा०।

वींटाणौ, वींटावौ, वीटाणौ, वीटावौ, विंटाणौ, विंटावौ —रू० भे०।

वींटायोडो–भू का कृ —१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित कराया हुआ, घिराया हुआ २ गोल कराया हुआ, लपेटाया हुआ, समेटाया हुआ। (विस्तरादि) ३ चारो ओर से आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया आच्छादित करवाया हुआ, ढकाया हुआ ५ लपेटाया हुआ ६ बाहु पाश मे लेने के लिए प्रेरित किया हुआ, अकमाल मे लिवाया हुआ ७ वस्त्र, कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ. ८ मढाया हुआ, आच्छादित कराया हुआ ९ चारों ओर किया हुआ, फैलाया हुआ १० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, घिरने के लिए प्रेरित किया हुआ।

वींटियोडो–भू का कृ —१ किसी शहर, दुर्गादि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ २ गोल किया हुआ, लपेटा हुआ, समेटा हुआ ३ चारो ओर से आक्रमण किया हुआ. ४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ ५ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ, ६ बाहुपाश मे लिया हुआ, अक- माल मे लिया हुआ ७ वस्त्र कवच आदि पहना हुआ, धारण किया हुआ ८ वस्त्र कवच आदि पहनाया हुवा, धारण कराया हुआ ९ चारो ओर हुवा हुआ, चारो ओर फैला हुआ १० आवेष्टित हुवा हुआ, घिरा हुआ ११ जडा हुआ।
(स्त्री. वींटियोडी)

वींटी—देखो 'वीटी' (रू भे)

उ०—१ छुरी रै हसती मुहरै री थी सो वोहत वस थी। सो रुपोटै माहे खोळियो। वींटी हाथ में मोहरै री थी, सो खोली। पछै आप री आख खोळ वडारण री आख खोळाय आप रै हाथ सु भरमल नै दी। —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ मोतिया री हार चीढ पच-लडी विराज रह्या छै। जडाव रा बाजूबध कागण रतन-चोक आरसी वींटी विराज रही छै। वळै चूडी सोनेरी वगडीदार विराजै छै। जाणै काळी घटा में वीज चमकै छै। —रा. सा स.

उ०—३ जीमणा हाथ री चिट्टूडी आगळी घकै करनै कंवण लागा आ छोटी सी वींटी दस हजार रिपिया री है, म्हारी अै पगरखिया हजार रिपिया री है अर थानै की इदकाई नी दीसै। आपरी आख्या में कठैई जाळो तो नी है। —फुलवाडी

वींटोरो—देखो 'भीटोरो' (रू भे)

वींटो–स. पु —दरी आदि मे लपेट के साथ बाधा हुआ कपडे आदि का गोल विस्तर।

२ देखो 'वींटो' (रू भे)

मह,—वीट, बिट, वीटौ।

वींठी—देखो 'वींटी' (रू भे.)

उ०—जे सीख दिया रै दूजै दिन कै वरस दोय वरस पछै वाई री अणचींती मौत व्हैगी तौ सगळी वींठी, दत्त–दायजो अैळो नी जावैला! कमाई करण वाळा नै हजारू वाता री ध्यान राखणो पडै। —फुलवाडी

वींडो–स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०— 'गढगजी सवागजी चुगजी पटणी पटपाटू, पचवरण छीट, नीलवटा चकवटा धोतवटा मुहिवटा नाटी दोटी घटी कठपीठ पागडी वींडो रेट चूनडी पातलसाडी, नदरवारी पाघडो, पामडी लोवडी, वाहणवहो लोवडी'। —व. स.

२ देखो 'भिंडी' (रू भे)

वींडी—देखो 'भिंडी' (अल्पा, रू भे)

वींण—१ देखो वीणा' (रू भे)

२ देखो 'बिना' (रू भे)

वींणणौ, वींणवौ–क्रि स —छाटना, टालना।

उ०—प्रतापसिंह माथै निजर पडताई वो तारा री गळाई उण कानी तूटो. इतरै लारनी भीड माथै आय पडी छता पण नैडा आयोडा तीन ज्यारा नै वींणनै वीर री डाळाळी वुई सौ प्रतापसिंह री माथी जमी माथै लुटतो निजर आयो। —अमर चूनडी

२ देखो 'विणणौ, विणवौ' (रू भे)

३ देखो 'बुणणौ, बुणवौ' (रू. भे)

वींणणहार, हारौ (हारी), वींणणियो—वि०।

वींणिओडो, वींणियोडो, वींण्योडो—भू० का० कृ०।

वींणीजवौ, वींणीजवौ—कर्म वा०।

वींणती—देखो 'विनती '(रू भे)

उ०—कठै अगन, जळ, पवन, धुंवै री मेघ अदेसो? कठैक पाटक पुरख लिजावण जोग सदेसो? भूल्यौ इतरा भेद वींणती मेघ करतौ न चेत अचेतण ग्यान काम-कवाण चढतो। —मेघ

वींणियोडो–भू का कृ —१ छाटा हुआ, टाला हुआ।

२ देखो 'विणियोडो' (रू भे)

३ देखो 'बुणियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वींणियोडी)

वींद—देखो 'वींद' (रू भे)

उ०–१ कोई वीर पुरख परणीजियो नै दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळो नै बहनोई सत्रुआ नै पूगा तठै वींद वणियोडै हीज झगडा रै भूखै तरवारा आगै सरीर पुरजा पुरज कर विखेरियो। —वी स टी

उ०—२ हिंदवा राव हुथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा। गई स्रु ग विवाणा वैस इद्र आगळी, वुही वारगना विना वींदा। —महाराजा जसवर्तसिंह री गीत

उ०—३ आसक्रम्न वडो एकाधपति, 'नौबउत' नमौ आतम सकत्ति। ओपमा करन्नं अण-नीद, वरियाम कुमारी घडा वींद।
—गु. रू व

उ०—४ 'जैतमाल' अण-पाल, वी द मेवाड तणी घड। सिविधाणै सोभति, 'भाण' रोळिया भडा घड। —गु रू व.

उ०—५ रुद्रमाळ रचावा। पहाडा नै जळ चाढ़ा। इतरी सामळी नै संभ नै निसभ वेऊ दावाई भाई बोलिया—उवाह उवाह। अणी रा वी द। रिण मे बावळा। वाकी मूंछाळा। —मा वचनिका

(स्त्री वींदणी)

वींदड़—१ देखो 'वींद' (अल्पा, रू भे)

उ०—वी दड जेडी वीदडी, जोडी तुली है जोर। गळ कठी भुज भुजवद, माथा ऊपर मोड। —सातिलाल

२ देखो 'वीदळ (रू. भे)

उ०—जप सखी! म्हारा जणणि, भवर करै भडभाळ। वीं दड़ वजाय विग्रहा, वीजड हूं बीवाळ। —रैवतसिंह भाटी

वी दडली—देखो 'वीदडी' (अल्पा, रू भे.)

वीं दडी—स स्त्री—१ विवाह आदि के लिये निमन्त्रण पत्र, कुकुम-पत्रिका।

२ देखो 'वीदडी' (रू भे)

३ देखो 'वीदणी' (रू. भे)

उ०—वीदड जेडी वी दडी, जोडी तुली है जोर। गळ कठी भुज भुजवद, माथा ऊपर मोड। —सातिलाल

वी दडौ—१ देखो 'वीदडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वींद' (अल्पा, रू भे.)

वी दणी—देखो 'वीदणी' (रू. भे.)

उ०-१ सुरति करि आरती निरत नेता लीया, साम समेहळे मिळै सारा। ब्रह्म वर वी दणी खैरवटी खरी, इद ज्यूं ओवडै इमी धारा।
—अनुभववाणी

उ०—२ मन ई मन सोचण लागा कै आ कोई डाकण, भूतणी कै स्यारी तो किणी भाव नी व्है सकै। देवता री पूजा सारु घर सूं निकळी। किणी धनवती री नवी वीं दणी दीसै।
—फुलवाडी

उ०—३ वीं दणी अपूठी होय मूंडो ऊघाड बैठगी। ऊवो जोयो। पतळी पतळी लीली चेर लडाझूम सागरिया ई सांगरिया देखता ई कोया मे ठाडोळाई वापरगी। —फुलवाडी

उ०—४ तद पदमावती वर देख राजी हुई। उठै वींद नु तोरण वादाय चवरी लै आया। अर वी दणी आण हथळेवो जोड अर परणाया। —ठकुरै साह री वात

वी दणी, वीं दवौ—देखो 'बीधणी, बीधवौ' (रू. भे.)

वीं दणहार, हारौ (हारी), वी दणियौ—वि०।

वी दिओडो, वी दियोडो, वी दोडौ—भू० का० कृ०।

वी दीजणो, वी दीजवौ—कर्म वा०।

वी दराजा—देखो 'वींद' (रू. भे.)

उ०—फेरा रै पं'ली हथळेवा मे वीं दराजा री हाथ काई झिलियो, जाणै गिगन रा नवलख तारा वीदणी री हथाळी मे आय ज्रिरिया उण री नस नस मे वीजळिया खिवण लागी। —फुलवाडी

वी दळ—स पु.—नपुंसक, हिजडा।

उ०—१ दुझल दुरगा दहण, वद वद सह खग वार। की वी दळ विग्रह करै, हथ ताळघा हथियार। —रैवतसिंह भाटी

उ०—२ वी दळ वीस हजार, हैमाळे गळिया हता। करम लिखी करतार, राका नै राजा किया। —अग्यात

रू. भे.—वीदड़।

वी दावन—देखो 'ब्र दावन' (रू भे.)

वी दियोडो—देखो 'वीधियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीदियोडी)

वी दोळी, वींदोली—१ देखो 'वीदोली' (रू. भे.)

२ देखो 'वदोळी' (रू भे)

वी दोळो, वी दोलौ—स पु—१ दूल्हे या दुल्हन का जूता।

२ देखो 'वदोळो' (रू. भे.)

रू भे—वीनोळो।

वी ध—देखो 'वींद' (रू भे)

उ०—वहण वी ध कुंरद सपक्र दाळिद वहण, तप पड ग अगभाव अवतार। कोक सिख जडळ जोगेसरा कविंदा, सूर सक्र अथग 'सिव' थियो सिरदार। —महाराजा छत्रसिंघ हाडा री गीत

वीं धणो, वी धवौ—क्रि अ स. १ आर-पार होना, आर-पार निकलना।

२ दबना, विवश होना।

उ०—जीव सताप्या मद घणा, पर आसायें वींध। वलि रात्रि भोजन करया, काज अकारज कीध। —वि. कु.

३ आर-पार करना।

४ दबोचना।

५ देखो 'वींधणी, बीधवौ' (रू. भे.)

उ०—१ जाणता बूझता हाथा करने धोखो खायो। पण अवै व्है

काई। सपाडी करघोडा ऊघाडा डील। पोह री ठारी हाडका नै वीं धती ही। माथा ठफसनै भरभड। व्हेगा। —फुलवाडी

उ०—२ ताहरा रायसिंघ बोलियो—कूभा ! क्यूं उतरै ? म्हारा हाथ देख। सिगळा ही नू कबूतर दाई वींधू। ताहरा कूंभो बोलियो—रावळ मलीनाथजी री आण छै, बोलो तो। —नैणसी

उ०—३ जउ सूकी तुहइ वुलसिरी, जउ वीं धी तुहइ मोतिसिरी। जउ डुहलूं तुहइ गगाजल जाणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वाणि। —नळदवदती रास

६ देखो 'विंधणो, विंधबो' (रू. भे)

उ०—१ लगी सबद की चोट, वीं ध गई विच काळिजो। हरिया ओर न ओट, सतगुर वाह्या मूठ भरि। —अनुभववाणी

उ०—२ सबद तणी ताह मार, ऊठै सूळ सरीर मे। हरिया हणो न धार, नख चख सारा वी धग्या। —अनुभववाणी

उ०—३ सैर में सीवळ री रौंळाटी फैलियो। घर-घर में छोटा वडा रै सीवळ निकळै। कमळा रै ई करम री आय वाजी। घणी दोरी सीवळ निकळी, रू रू वी धीजग्यो। —वरसगाठ

वी धणहार, हारो (हारी), वीं धणियो—वि०।

वीं धिओडो, वी धियोडो, वी ध्योडो—भू० का० कृ०।

वी धीजणो, वी धीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

वी धाणो वी धाबो—देखो विंधाणो, विंधाबो' (रू भे)

वी धाणहार, हारो (हारी), वी धाणियो—वि०।

वी धायोडो—भू० का० कृ०।

वी धाईजणो, वी धाईजबो—कर्म वा०।

वी धायोडो—देखो 'विंधायोडो' (रू भे)

(स्त्री वीधायोडी)

वी धावणो, वी धावबो—देखो 'विंधाणो, विंधाबो' (रू. भे.)

वी धावणहार, हारो (हारी), वी धावणियो—वि०।

वी धाविओडो, वीं धावियोडो, वी धाव्योडो—भू० का० कृ०।

वी धावीजणो, वी धावीजबो—कर्म वा०।

वी धावियोडो—देखो 'विंधायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वीधावियोडी)

वी धियोडो—१ आर पार हुवा हुआ, आर पार निकला हुआ. २ दवा हुआ, विवश हुवा हुआ. ३ आर पार किया हुआ। ४ दवोचा हुआ।

५ देखो 'विंधियोडो' (रू भे)

६ देखो 'वीधियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीधियोडी)

वी न—१ देखो 'वीणा' (रू भे)

२ देखो 'विना' (रू भे)

३ देखो 'वींद' (रू भे)

वी नणी—देखो 'वींदणी' (रू भे)

वीं नोळी—१ देखो बदोळी' (रू भे)

२ देखो 'वींदोली' (रू भे)

वी नोळी—१ देखो 'वींदोली' (रू भे)

२ देखो 'वदोळी' (रू भे)

वीं फरणो, वी फरबो—देखो 'विफरणो, विफरबो' (रू भे)

उ०—धारण सलाह चित नह धरै, आरण करण उतावळो। वावळा गयद मसता विधी, वी फरियो रिण वावळो। —सू प्र.

वी फरणहार, हारो (हारी), वीं फरणियो—वि०।

वीं फरिओडो, वीं फरियोडो, वी फरघोडो—भू० का० कृ०।

वी फरीजणो, वी फरीजबो—भाव वा०।

वीं फरियोडो—देखो 'विफरियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीफरियोडी)

वी भर—देखो 'भींभर' (रू भे)

वीं भरणो, वीं भरबो—देखो 'भींभरणो, भींभरबो' (रू भे)

उ०—१ जुडै हिक वी भरता जम दूत, कढै हिक मारि अणी सर कूत। वहै हिक धाउ वदै विख वाण, रिखै हिक गोळिया रिण-ढाण। —गु रू. बं.

उ०—भाग री धणी सोभाग री भुकीयो, खाग री खाटियो खाट खावै। वेहू राहा वीचै नित वाहै 'वलु', वींभरै खैत नीसाण वावै। —वलुजी चापावत री गीत

२ देखो 'विभरणो, विभरबो' (रू भे)

वींभरणहार, हारो (हारी), वींभरणियो—वि०।

वींभरिओडो, वींभरियोडो, वींभरघोडो—भू० का० कृ०।

वींभरीजणो, वींभरीजबो—भाव वा०।

वींभरियोडो—१ देखो 'भींभरियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'विभरियोडो (रू. भे)

(स्त्री वींभरियोडी)

वींभरियो—देखो 'भींभर' (अल्पा, रू भे.)

वींभळ, वींभळी—देखो 'विभळ, विभळी' (रू भे.)

उ०—वाहू चळी निरम्मळी, चख वींभळी सुरत्त। आजै करनल अक्कळी (तू) सवळी रूप सगत्त। —राव मेखो

वींही–सर्व.—उस, उसी।

उ०—सो विधना रै लेख सू भूडण प्रात काळ घडी दोय रै तडकै ऊठ सूरजकुड मे स्नान करणं नू गई। वींही समै देवजोग सूं डाढाळो वीही सूरजकुड माही स्नान करणं आयो, सो देखै तो भूडण स्नान कर रही छै। —डाढाळा सूर री वात

वी–स पु —१ शास्त्र। (एका)

२ विष्णु। („)

३ योद्धा, सुभट। („)

स स्त्री.—४ वेल। („)

५ गगा। („)

रू भे —वी।

६ देखो 'बी' (रू भे)

उ०—इतरै कवर वीरमदे घोडा खड आघो आयो। जठै गण-गोरघा आगै चढीया ऊभा छा ज्यां वूजायो—ग्रै सिरदार कुण छे। जठै या कयो—म्है तो गैलारयु छा। पारवती को दरसण करस्या। इतरै गणगोरघा गाव नै वावडी। अै वी गैला उपरै छै। —पना

७ देखो 'भी' (रू भे)

उ०—सावठा असवारा की वागा उठी। जिकै फागा जाणिजै, गुलाला री मुठी। जठै सै वाहर पोती। जठै कवर वीरमदे गैलै असवार ऊभा राख्या था जिकै वी उण वेळा आय सामिल हुवा। —पना

वीअ—देखो 'वी' (रू भे)

वीआनी—देखो 'विसानी' (रू भे)

वीआळ, वीआल—देखो 'व्याळ' (रू भे)

उ०—जेवडउ अतर हाथि अनइ ऊट, जेवडउ अंतर पाधरसी अनइ खुंट, जेवडउ अतर सीह नइ सीआल, जेवडउ अतर गोल अनइ वीआल, जेवडउ अतर राणी अनइं दासी,' '। —व स.

वीआळको—देखो 'वीयाळको' (रू भे)

वीआपक—देखो 'व्यापक' (रू. भे)

वीआपणौ, वीआपबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

वीआपणहार, हारौ (हारी), वीआपणियौ—वि०।

वीआपिग्रोडौ, वीआपियोडौ, वीआप्योडौ—भू० का० कृ०।

वीआपीजणौ, वीआपीजबौ—भाव वा०।

वीआपियोडौ—देखो 'व्यापियोडौ (रू भे)

(स्त्री वीआपियोडी)

वींक—१ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

२ देखो 'वीख' (रू भे)

वीकणौ, वीकबौ–क्रि. स —१ वेचना, विक्रय करना।

उ०—१ लाख लूण तिल वुहरघा वीकया, कन्या विक्रय कीधा। सोम सूर कइ राहु गिलतइ, महादान को लीधा। —का. दे. प्र.

उ०—२ दोसी वूहरइ ग्रतिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र। एक वइठा कहइ कथा कल्लोल, एक वइठा वीकइ मजीठ चोल।' —नळदवदती रास

उ०—३ सरस्वती आगलि कुण पढीयइ, अम्रत कउणि कढीइ, मांणिकु कउणि वीकीइ, मोती कउणि छडीइ, निरगुण कउणि वदीइ, वाउ कउणि-वाधीइ''। —व. स.

२ देखो 'विकणौ, विकबौ' (रू. भे)

वीकणहार, हारौ (हारी), वीकणियौ—वि०।

वीकिओडौ, वीकियोडौ, वीक्योडौ—भू० का० कृ०।

वीकीजणौ, वीकीजबौ—कर्म वा०।

वीकधर–स पु —वीकानेर का एक नाम।

वीकनेर, वीकपुर, वीकपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू भे)

उ०—१ जस विरद सुणि दुरग जेरा, नजर भेजी वीकनेरा। एह सुणि वीकाण अक्खै, रावळा वह निजर रक्खै। —सू. प्र

उ०—२ गढ जेसाणं वीकपुर, कै सीरोही पार। जग मै भूपत थान रो, वुध अनुमान विचार। —रा रू

उ०—३ त्याग मै दिया गढ परणता अपूरौ, वीकपूर अजस दूणा विकासै। क्रीत सु प्रवीत जण जणं रसणा कहावी, रहावी वात जुग च्यार 'रासै'। —रायसिंह रो गीत

वीकम—१ देखो 'विक्रम' (रू भे)

उ०—भगो तोय वाराह, राहु गिळियौ तोय दणीयर। लाघणियो तोय सीह,जेम मथियो तोय सायर। अण हुतै वीकम, घणौ वीटियो वीकोदर, खोडो तोय हणवत, लियो दरसण तोय साकर। —अल्लूजी कवियौ

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

उ०—१ बाधरत ऊचरै, सुणो खट-तीस वस, जुरा आगळि रहै वदू जाही। भोज वीकम तणो सुजस सारै भुयण, नरा तिण वार रा मडप नाही। —राव गागो

उ०—२ विघ रा जाण गाथ रा वीकम, पारिख वाण हाथ रा पाथ। जुध रा भीम खळा रा गजण, नाथ' रा बुध गणनाथ। —आईदान पाल्हावत

उ०—३ पलटियो नही ग्रहिया पलो, सत हरचद बिरदा सधै। दातारपणै 'गजवध' दुभल, वीकम क्रन हुता वधै। —सू प्र

उ०—४ 'जवदळ' 'पदम' रायसीग जुजम्टळ, हरचद वीकम भोज हुवा। माणी मता छता मह् मडळ, मता न माणी जीता मुवा।
—गोरधनजी खीची

वीकमपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू भे)

वीकमायत—स पु.—राठोड वश की एक उपशाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

वीकम्म—१ देखो 'विक्रम' (रू भे)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भें)

उ०—काय भोज वीकम्म काय रुद्र नाग अरज्जन, काय रामण बळराज काय जुजठळ अर गजन। कश्न काय हरचद क्रन कग ग (क) हर कहता, काय समर दद्धीच काय जीवाहन जता।
—मालो आसियो

वीकराळ, वीकराल—देखो 'विकराळ' (रू. भे)

उ०—अकलक कलक मी चढ्यौ, सामुहौ जोवन वीरह वीकराळ। अनवलइ दव परजळै, पगि पगि मौ सखी मडइ आळ।
—वी दे

वीकाण, वीकाणगढ, वीकाणौ—देखो 'वीकानेर'

उ०—१ प्रथम देस जेसाण वीकाण प्रगटी पछै, वरजियौ भाण वेढो उवारचौ। अबै परब्रह्म भाळी प्रकति अद्रजा, धजाळी मद्र अवतार धारचौ।
—मे म

उ०—२ सो वीकाण घरा चै साधै, बळ मेटियौ जु हूता बाधै। केताई गाव थाणायत कोटा, लूटै देस किया सहलोटा।
—रा रू

उ०—३ लोहि हणि 'जैत' वीकांणगढ जै लीयौ, दहुडि खुरसाण अजमेर गढ दाबियौ। खाग भड राण खुरसाण दळ जिण खडै, डीडवाणा सहित सहर साभरि डडै।
—सू प्र.

उ०—४ भिडती खुरसाण जितै दळ भाजा, आयौ 'करण' तुहारी ओट। वीकांणा देसाणी वासै, करनादै पलटै किम कोट।
—महाराणा करणसिंघजी

वीका—स. स्त्री.—राठोड वश की एक उपशाखा।

वीकियोडो—भू. का कृ—१ वेचा हुआ, विक्रय किया हुआ।

२ देखो 'विकियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वीकियोडी)

वीकोजी—सं स्त्री—वीकानेर राजवश की पुत्री या वहिन।

वीकोदर—देखो 'ब्रकोदर' (रू भे)

उ०—१ भगो तोय वाराह राह गिळियौ तोय वणीयर, लाघणियौ तोय सीह जेम्र मथियौ तोय सायर। अण हुंतै वीकम घणै वीटीयौ वीकोदर, खोडो तोय हणवत लियौ दरसण तोय साकर।
—अल्लूजी कवियौ

उ०—२ वीकोदर वीर वर, अनड पाहाड असकित। त्रिविध फौज रचिअणी, अरध आठम चद्राकत।
—गु रू. व

वीकौ—स पु—राठोड वश की वीका नामक उप शाखा का व्यक्ति।

वीक्रम—१ देखो 'विक्रम' (रू भे)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

वीक्रमनगर, वीक्रमपुर—देखो 'विक्रमनगर' (रू भे)

वीक्षण—स. पु [स] देखने की क्रिया, अवलोकन, निरीक्षण।

रू भे—वीख, वेख।

वीख—स पु [सं] १ कदम, डग, पैंड।

उ०—१ छोटी वीख न आपडा, लाबी लाज मरेहि। सयण वटाऊ वाळ रे, लवउ साद करेहि।
—ढो. मा.

उ०—२ सपेख खुरम सुरतांण साथ, नरसिंघ रूप नवकोट नाथ। 'सूरजमल' सभ्रम तै सरीख, वधियौ किरि वामण दियण वीख।
—गु. रू व

उ०—३ वाकरा नूं बरको करण रै पगा अलवळिया मोटयारा नू हुकम कीजै छै। सू असीला सीरोहिया लेनै ऊठिया छै। मलफती वीखा भरै छै। जाणै पावासर रौ हस मोती चुगण चालियौ छै।
—रा सा. स.

उ०—४ राय देह पधराय वार तण चेह विचमा, झळ अग्गी झूलिवा करण लग्गी परकम्मा। भूप हेत सत भाय रूप सोहै पटराणी, वीख वीख जग विमळ ईख लाजै इद्राणी।
—रा. रू

२ चाल, गति वेग।

उ०—१ मागी सीख नरिंद सू, दीन्ही वीख कुवार। जाणै बध पलट्टियौ, सिंध प्रळै री वार।
—रा. रू

उ०—२ कपडा खरची दे कलै, दसा धरा दी सीख। अठी अठा पाछै अवै, वळै देखौ मत वीख।
—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

३ ऊट या घोडे की चाल विशेष।

उ०—१ छूट सुदर वीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ रूप तणा। दुति वकति तुड लगाम दिया, कुळवतिय घूघट जाणि किया।
—रा. रू.

उ०—२ उण गाव रै गोयरै आय नींसरियौ। देखै, तौ एक लुगाई ऊभी छै। देखि नै मन में सकियौ, भई चूडैल नहीं छै। इतरौ जाणि नै रजपूत हीयै रौ जोरावर हुतौ दीठो, बोलाईस तौ खरौ। ताहरा औ ऊंठ वीखै वीखै चलाइ नै नेडौ आयौ।
—कावळै जोईयै नै तीडी खरळ री वात

४ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—आबू रै धणी पाल्हण परमार सरब धातू माहे भरत री भरियो वीतकर री वीख हुतो सू मलाय अचळेसर है । नादियो भरायो जिण विख घालण रा पाप सू पाल्हण रै कोढ उपडियो जीददेव री नावो विख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो ।
—वा दा. ख्यात

५ देखो 'वीक्षण' (रू. भे)

उ०—तूं मोनू हिव जांणदे, म देख म्हनै फु वीख । जलदी मोनूं जावणी, म्हारी सगळा नै ढडीख । —सातीलाल

रू भे—वरीख, बीख, अख, अखा, अखि, ग्रीख, भीख, वरीख, विकख, विक्ख, वीख, वीखा, वेख ।

अल्पा ,—वीखडी ।

वीखडी—देखो 'वीख' (अल्पा., रू. भे)

उ०—साल्ह चलतइ परठिया, आगण वीखडीयांह । सो मइ हियइ लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह । —ढो मा

वीखणी—देखो 'विक्खणी' (रू. भे)

उ०—१ इळादि डब ल्लडं, पवग वाग ऊपडं । खुरा ज खोणि वीखणी, पतग छाइ पोइणी । —गु रू व

उ०—२ हि-थट समद जांण हिलोळ, पमगा हमस पक्खर रोळ । क्रमतं खुरमरं कटकेह, वसुधा वीखणी विडगेह । —गु. रू. व

उ०—३ खेड रा जोध तुरगाण ताता खडं, पै खुरं वीखणी खोण खाना पडं । तप्पिया तालू ए लोह घोडातणं, माड झाफा भरं तेज सू झफणं । —गु. रू व.

वीखणो, वीखवो-क्रि अ—१ रुदन करना , रोना ।

२ विलखना, व्याकुल होना ।

३ तरसना, लालायित होना ।

४ तडफना ।

५ दु.खी होना, पीडित होना ।

६ देखो 'वीकणो, वीकवो' (रू. भे)

७ देखो 'वेखणो, वेखवो' (रू. भे)

उ०—वदनारविंद गोविंद वीखियं, आलोचं आपो आप सू । हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यं, हुओ कतारथ पहिलो हू । —वेलि

वीखणहार, हारो (हारी), वीखणियो—वि० ।

वीखिओडो, वीखियोडो, वीख्योडो—भू० का० कृ० ।

वीखीजणो, वीखीजवो—भाव वा० ।

वीखणणो, वीखणबो, वीखणो, बीखबो, विखणो, विखबो, वींखणो, वींखबो—रू० भे० ।

वीखरणो, वीखरवो—देखो 'बिखरणो, बिखरबो' (रू भे)

उ०—१ वाटइ राई वीखरी, उलहायइ अनेक । लक्ष प्रकारै लूणना विनता करइ विवेक । —मा का. प्र

उ०—२ जद छोहरा नगारा वजावा लागा । जद रामत मे भग पड्यो । लोक वीखर गया । रावलियां रै हाथै दान पिण न आयो नै भूंडा पिण दीठा । —भि. द्र

उ०—३ भयानक हेक करै आराथ, हिका मसतक्क पडै पग हाथ । वंणी डड हेका वीखरियाह, लुटै भुइ हेक लुही भरियाह । —गु रू व

उ०—४ उन्हउ तीन्हउ सरहरउ भरहरउ आहसिउ नीलसिउ अणीआलउ सूंआलु सरसु सकोमल वीतरिउ वीणिउ ऊजलउ जिसउ केयडउ ऊदेली जेवडउ, दूबल पेटि पइसइ, फूटी नीसरइ इसउ कूर परीसिउ । —व. स

वीखरणहार, हारो (हारी), वीखरणियो—वि० ।

वीखरिओडो, वीखरियोडो, वीखर्योडो—भू० का० कृ० ।

वीखरीजणो, वीखरीजवो—भू० का० कृ० ।

वीखराणो, वीखराबो—देखो 'विखराणो, विखराबो' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारो (हारी), वीखराणियो—वि० ।

वीखरायोडो—भू० का० कृ० ।

वीखराईजणो, वीखराईजबो—कर्म वा० ।

वीखरायोडो—देखो 'विखरायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वीखरायोडी)

वीखरावणो, वीखरावबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे)

वीखरावणहार, हारो (हारी), वीखरावणियो—वि० ।

वीखराविओडो, वीखरावियोडो, वीखराव्योडो—भू० का० कृ० ।

वीखरावीजणो, वीखरावीजबो—कर्म वा० ।

वीखरावियोडो—देखो 'विखरायोडो' (रू भे)

(स्त्री वीखरावियोडी)

वीखरियोडो—देखो 'विखरियोडो' ।

(स्त्री वीखरियोडी)

वीखा-स स्त्री [स] १ नाच, नृत्य ।

२ सगम, मिलन ।

३ देखो 'वीख' (३) (रू भे.)

वीखियोडो-भू का कृ.—१ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. २ बिलखा हुआ, व्याकुल हुवा हुआ ३ तरसा हुआ, लालायित हुवा हुआ. ४ तडफा हुआ. ५ दु खी हुवा हुआ, पीडित हुवा हुआ ।

६ देखो 'वीकियोडो' (रू भे)

७ देखो 'वेखियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वीखियोडी)

वीखेरणो, वीखेरबो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबो' (रू भे.)

वीखेरणहार, हारो (हारी), वीखेरणियो—वि० ।
वीखेरिग्रोडो, वीखेरियोडो, वीखेरयोडो—भू० का० कृ० ।
वीखेरीजणो, वीखेरीजबो—कर्म वा० ।

वीखेरियोडो—देखो 'बिखेरियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वीखेरियोडी)

वीखे—१ देखो 'विखे' (रू भे)
२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

वीखोरणो, वीखोरबो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबो' (रू भे)
उ०—सरण साधार सुदतार लहरी समद, करे अदतार नर मीढ केहा । रार लजधार ससार सारो रटै, अगट गढ वीखोरणहार तेहा ।
—गुलजी आढो

वीखोरणहार, हारो (हारी), वीखोरणियो—वि० ।
वीखोरिग्रोडो, वीखोरियोड़ो, वीखोरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
वीखोरीजणो, वीखोरीजबो—कर्म वा० ।

वीखोराणो, वीखोराबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू भे)
वीखोराणहार, हारो (हारी), वीखोराणियो—वि० ।
वीखोरायोडो—भू० का० कृ० ।
वीखोराईजणो, वीखोराईजबो—कर्म वा० ।

वीखोरायोडो—देखो 'बिखरायोडो' (रू भे)
(स्त्री वीखोरायोडी)

वीखोरावणो, वीखोरावबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे)
वीखोरावणहार, हारो (हारी), वीखोरावणियो—वि० ।
वीखोराविग्रोडो, विखोरावियोडो, विखोराव्योडो—भू० का० कृ ।
वीखोरावीजणो, वीखोरावीजबो—कर्म वा० ।

वीखोरावियोडो—देखो 'बिखरायोडो' (रू भे)
(स्त्री वीखोरावियोडी)

वीखो—देखो 'विखो' (रू भे.)
उ०—राठोड दुरगदास आसकरणोत वीखो घणो कीयो न समत १७६३ रा चैत वद ५ जाळोर सू नै जोधपुर सूं सोवेदार नवाब जाफरखा वगैरै था सो नास गया नै स्रीहजूर जोधपुर मे जाळोर सू जाय नै अमल कीयो ।
—मारवाड री ख्यात

वीगडणो, वीगडबो—देखो 'विगडणो, विगडबो' (रू भे)
उ०—१ हरीया वाडी वीगडै, सिर परि धणी न होय । यु चिडीया खाया खेतडा, हाकल करै न कोय ।
—अनुभववाणी
उ०—पण म्हारै औ पण छं-सगै री नाळेर आयो पाछो न मेलु । सो माजी, म्हारो वचन गया, जमवारो अथा जासी । तिण सु थे राजी हूय मनै फुरमावो, ज्यू म्हारो भलो हुवै अर थांहरै सत-तपस्या सु माहरो कुही न वीगडै ।
—कु वरसी साखला री वारता

वीगडणहार, हारो (हारी), वीगड़णियो—वि० ।
वीगडिग्रोडो, वीगडियोडो वीगडयोडो—भू० का० कृ० ।
वीगडीजणो, वीगडीजबो—भाव वा० ।

वीगडाणो, वीगडाबो—देखो 'विगडाणो, विगडाबो' (रू. भे.)
वीगडाणहार, हारो (हारी), वीगडाणियो—वि० ।
वीगडायोडो—भू० का० कृ० ।
वीगडाईजणो, वीगड़ाईजबो—कर्म वा० ।

वीगडायोडो—देखो 'विगडायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वीगडायोडी)

वीगड़ावणो, वीगडावबो—देखो 'विगडाणो, विगडाबो' (रू भे.)
वीगडावणहार, हारो (हारी), वीगडावणियो—वि० ।
वीगडाविग्रोडो, वीगडावियोडो, वीगडाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वीगडावीजणो, वीगडावीजबो—कर्म वा० ।

वीगडावियोडो—देखो 'विगडायोडो' (रू. भे)
(स्त्री वीगडावियोडी)

वीगडियोडो—देखो 'विगडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वीगडियोडी)

वीगन—देखो 'विघ्न (रू भे.)

वीगसणो, वीगसबो—देखो 'विकसणो, विकसबो' (रू. भे.)
उ०—वळै को चेतै जीव, चेतिस्यो चेतणहारो । वीणा वीगसै मन, लखण उजाळै लारो ।
—वील्होजी

वीगसणहार हारो (हारी), वीगसणियो—वि० ।
वीगसिग्रोडो, वीगसियोडो, वीगस्योडो—भू० का० कृ० ।
वीगसीजणो, वीगसीजबो—भाव वा० ।

वीगसियोडो—देखो विकसियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वीगसियोडी)

वीगाड—देखो 'विगाड' (रू भे)
उ०—राव मालदे रा डेरा फळोधी छै । तरै नरै कवर हरराज नु कह्यो—कहो तो म्हे जावा कटक रा वीगाड करां । तरै हरराज आपरो साथ घणो साथै दीयो ।
—नैणसी

वीगाडणो, वीगाडबो—देखो 'विगाडणो, विगाडबो' (रू भे)
उ०—नाहडराव मडोवर धणी हुवो । वाराह एक मडोवर री वाडी वीगाडै । तिण री धणी पुकार होई रही छै । नै एक दिन नाहडराव डेरै होतो थो सु वाराह नीसरियो ।
—नैणसी

वीगाडणहार, हारो (हारी), वीगाडणियो—वि० ।
वीगाडिग्रोडो, वीगाडियोडो, वीगाडयोड़ो—भू० का० कृ० ।
वीगाडीजणो, वीगाडीजबो—कर्म वा० ।

वीगाड़ियोड़ो—देखो 'विगाड़ियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. वीगाड़ियोड़ी)

वीगाड—देखो 'विगाड' (रू. भे)

उ०—नठै माळी बोलियो—महाराज ! आज काल कोईक जानवर हिल्यो छै। सो दिन रा जावता घणी करा छा, पिण रात रा वीगाड कर जावै छै। —रिसालू री वात

वीगाडणौ, वीगाडबौ—देखो 'विगाडणौ, विगाडबौ' (रू भे.)

उ०—१ वागवान नै पूछ्यौ—क्यूं बे वागवान ! बहुत दिन में एसा फल-फूल क्यु लाया, सो कारण काइ छै ? तदी वागवान कही—हजरत, सलामत कवनेयांन, अपरात कु वाग में हमेस क्या वलाय आवती है, सो वाग वीगाडै छै। —रिसालू री वात

उ०—२ अतरायक में पातसाहजी बोल्या क्यूं बे वागवान ! ईतरा दिन में इन्या फल-फूल क्यु ल्यायो। तदि वागवान कह्यो—माहाराज ! कोई आधी रात्रै आवै छै, कोई वलाय छै। सो वाग वीगाडी जाय छै, नित प्रत आवै छै। —रिसालू री वात

वीगाडणहार, हारौ (हारी), वीगाडणियौ—वि०।

वीगाड़िओड़ो, वीगाड़ियोडो, वीगाड्योड़ो—भू० का० कृ०।

वीगाडीजणौ, वीगाडीजबौ—कर्म वा०।

वीगाड़ियोड़ो—देखो 'विगाड़ियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वीगाड़ियोडी)

वीगोड़ो—देखो 'वीघोडो' (रू. भे)

वीगो—देखो 'वीघो' (रू. भे.)

वीग्रह—देखो 'विग्रह' (रू. भे)

वीग्रहणौ, वीग्रहबौ—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू. भे)

उ०—१ तरै रावजी वात आ राखी, कह्यो—माहारो कोट आवसी तरै म्है तोनुं छोडसा। तरै डूगरसी कोट रै मोहड़ै जाई जगहय देपावत नु कहीयो—साबास तैं पाच मास गढ वीग्रहियो। हिमैं हु दोहोरी हु तूं कूंची रावजी नुं सौंप जु भोनुं छोडै। —नैणसी

उ०—२ इण फेर रतनसी कोट झालियो। सावत चहुवाण कान्हर नरनाह री बेटो चहुवाण ईसरदास वडो रजपूत छै। वडो वडो गढ वीग्रहो अे लडाई की। —नैणसी

वीग्रहणहार, हारौ (हारी), वीग्रहणियौ—वि०।

वीग्रहिओड़ो, वीग्रहियोड़ो, वीग्रह्योड़ो—भू० का० कृ०।

वीग्रहीजणौ, वीग्रहीजबौ—कर्म वा०।

वीग्रहियोड़ो—देखो विग्रहियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वीग्रहियोडी)

वीघोड़ो—देखो 'वीघोडो' (रू. भे)

वीघो—देखो 'वीघो' (रू. भे.)

उ०—अग्र विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोडी वात नैं साची मानण खातर हो बण्यो है। नटणै खातर हरगिज नहीं। चावै कोई अकूट करो तथा जाळ। वींरै वास्तै तो वीघं नृत अर विसवै साप हाळी कैवत साची है। —दमदोम

वीड़ग, वीडगाण, वीडंगि, वीडंगी—देखो 'विटंग' (रू. भे.)

उ०—गुटकाण खीदाण वीमाण तणी गत, नाव तोराण दैघाण वणैं। पुम्मराण वेगाण प्रमाण पराछक, वात वनै वीड़गांण भणैं। —किसनजी दधवाड़ियो

वीड, वीड़ड—१ देखो 'विट' (रू. भे)

२ देखो 'बीड़ो' (मह, रू भे.)

वीडणौ, वीडबौ—देखो 'बीड़णौ, बीडबौ' (रू भे)

वीडणहार, हारौ (हारी), वीडणियौ—वि०।

वीडिओडो, वीड़ियोड़ो, वीड्योड़ो—भू० का० कृ०।

वीडीजणौ, वीडीजबौ—भाव वा०।

वीडमौ, वीडवौ—देखो बीडमो' (रू भे)

वीडा—देखो 'वीड़ा' (रू. भे)

वीडाणौ, वीडाबौ—देखो 'वीडाणौ, वीडाबौ' (रू. भे.)

वीडाणहार, हारौ (हारी), वीडाणियौ—वि०।

वीड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

वीडाईजणौ, वीडाईजबौ—कर्म वा०।

वीडादार—देखो 'बीडादार' (रू भे.)

वीडायोडो—देखो 'बीडायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वीडायोडी)

वीडियोडो—देखो 'बीडियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीडियोडी)

वीडो-स पु.—१ जल भरे चरस की लाव [मोटी रस्सी] को बैलों के जुएँ में जोडने का स्थान।

२ देखो 'बीडो' (रू भे.)

वीच-स. पु—१ मार्ग, राह। (उ र.)

२ देखो 'बीच' (रू भे)

उ०—१ तिसडै पूरब री पातसाह समसदी, तिको दिल्ली रा पातसाह ऊपर आयो। कोस २० री दोनू फोजा रैं बीच रह्यी, तरै पूरब रै पातसाह कवाण दिल्ली रै पातसाह नूं मेली "जु थाहरा कटक माहे कोई इसडो छै, जिको आ कवाण चाढै।" —नैणसी

उ०—२ विढै एम वेखियो, इता एकण घर वाळा। वढ वढ भड़ा

विचारि, बीच फेरै विसटाळा। —सू प्र.

उ०—३ छोटा चेल्हरा ऊपर कुत्ता री डोर छूटी सो जाय घेरिया चेल्हरा चीकिया। । त्या ऊपर सुवर भुडण घिरीया। सो घोडा बीच घात फटाय लीया। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ दीवाण रै सामत माहे जिका हुई सु दीवाण माहे पण होत। पण दीवाण री भाग वडो। धरती दै लडाई टाळी। इतरै कहता बीच रावजी रै फोजा री वागा ऊपडी। त्या दीवाण री फोज पाछी मुडी। इतरै केइक वडेरा ठाकुर वीच पडिया जु कयो "ठाकुरा! भागा पाछै काई जावो? —नैणसी

उ०—५ पत्र लिखावै प्रीत सू, आप धरम चो आण। उर सर्स यू छेदियो, कर कर बीच कुराण। —रा. रू.

उ०—६ हरीया तरवर बीच मैं, पछी वासो लेह। कोई कवाडो आय कै, दोस विना दुख देह। —अनुभववाणी

उ०—७ राता माता मैं भया, तै सेती रहमान। हरीया नैणा बीच मैं, निरखु सारगप्रान। —अनुभववाणी

उ०—८ हरीया केता वहि गया, कीया करम कै लारि। घिल घर्ट घन बीच मैं, ध्यान सबै नही धारि। —अनुभववाणी

उ०—९ आज कालि क्या करत हैं, हरीया होय अबेर। क्या जाणु कैसी करै, सभा बीच सवेर। —अनुभववाणी

उ०—१० ए कैसें हैं—वडे सु विद्वान है, वडे महिरवान हैं, वडे सिरदार हैं। वडे वूझदार हैं, वडे दातार हैं। जमी आसमान बीच सभू अवतार हैं। —रा सा स

२ देखो 'विछियो' (रू. भे)

उ०—घम घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम बीच (छ)। तम-नम यम मालू तवै, म्यार (म) चसम म मीच।

—मयाराम दरजी री वात

बीचणो, बीचवो—क्रि. स —१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—खेड धणी सिरि खीजिया, हुई मुगल्ला हेल। ज्यौं गज वारि विहारता, बीचै वारिज वेल। —रा. रू

२ सहार करना, मारना।

३ अलग करना, पृथक करना।

४ त्यागना, छोडना, वहिष्कार करना।

५ वीतना, गुजरना, घटित होना।

उ०—१ धान न भावै चोच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई। तो सों वात कहू मैं कैसी, मेरै मन मे वीचत जैसी।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ तद आ वळै कटारी काढ नै छाती उपरा बैठी, कही, "रे मूरख, आगै तो तै माहे बीची थी अर वळै आयो? तो हमैं तै पासै माल छै सो दै नही तो मारा छा।"

—वूढी ठग राजा री बात

६ बीतना, गुजरना, व्यतीत होना।

उ०—१ जदि जोबन थो जोरि, आव को धरयो उभारो। बीचि गई तरवार, हुवो अगि अखत उवारो। —देवोजी

उ०—२ चोर पिण ऊवै रै घर फाडण नु गया हुता। सु साहूकार बाप वेटो लेखो करण वैठा हुता, सु राती बीची गई। पाछिली राति उठीया। ताहरा ओथ साहूकार पडि रह्या। ऊवै री बेर दीवो करि ढोलियो विछाइ नै वैठो हुती, सु राति बीचि गई।

—स्यामसुदर री बात

बीचणहार, हारो (हारी), बीचणियो—वि०।

बीचिओडो, बीचियोडो, बीच्योडो—भू० का० कृ०।

बीचीजणो, बीचीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।

बीछणो, बीछवो—रू० भे०।

बीचळो, बीचलो—देखो 'विचलो' (रू भे.)

बीचारणो, बीचारवो—देखो विचारणो, विचारवो' (रू भे.)

उ०—पहली पोरसी सूत्र चितारै, बीजी पोरसी अरथ बीचारै। जाणै तीजी पोरसी लागी, वेदन रै वस खुध्या जागी। —जयवाणी

बीचारणहार, हारो (हारी), बीचारणियो—वि०।

बीचारिओडो बीचारियोडो, बीचारयोडो—भू० का० कृ०।

बीचारीजणो, बीचारीजवो—कर्म वा०।

बीचारियोडो—देखो 'विचारियोडो' (रू भे)

(स्त्री बीचारियोडी)

बीचाळ, बीचाळि, बीचाळी, बीचाळू, बीचाळै—देखो 'विचै'(रू भे.)

उ०—१ वगा बीचाळै काढिया, हुड जिम पग झलै। ऊभी मेली साहवी, गढ गोख महलै —कैसोदास गाडण

बीचाळो—देखो 'विचाळो' (रू भे)

बीचि—स स्त्री [स बीचि] १ विवेकहीनता, चचलता।

२ लहर, तरग।

३ हर्ष, खुशी, आल्हाद।

४ किरन, रश्मि।

रू. भे—बीची।

४ देखो 'बीच' (रू त.)

उ०—इस ऊजंका तमाम देखि गिर झगरू बीचि पैसाहर फेरै। अैरूकै झूड नद्द कै तटाक घण घुमरू से घेरै। तहा सेती होकरि कठै अघकध गिडदी ढाळ अगन कुंड से चखबीच भभकतै क्रोध की झाळ। —सू. प्र

५ देखो 'विचि' (रू भे)

वीचिमाळी–स पु॰ [स. वीचिमालिन्] समुद्र, सागर। (डि. को,)

वीचियोडौ–भू का. कृ.—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. २ सहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ. ४ त्याग किया हुआ छोड़ा हुआ, बहिष्कार किया हुआ. ५ बीता हुआ, गुजरा हुआ, घटित हुवा हुआ. ६ बीता हुआ, गुजरा हुआ, व्यतीत हुवा हुआ।
(स्त्री वीचियोडी)

वीची—देखो 'वीच' (रू. भे.)

उ॰—जनहरिया तन वीची मे, नख चख घाटि न वाघ। और साध सब कहन का, राम भजै सोई साध —अनुभववाणी

२ देखो 'विचि' (रू. भे) (इ. ना. मा)

३ देखो 'वीचि' (रू भे)

वीचेतस–स स्त्री.—दुचित। (डि को)

वीछडणो, वीछडबो—१ देखो 'विछुडणो, विछुडबो' (रू. भे.)

उ॰—जीहो सगपण इण ससार ना, जीहो थया अनति वार। जीहो मिल मिल नै वलै वीछडै, जीहो करम लगावै लार रे।—जयवाणी

उ॰—२ पहिलि मिलियइ तेह सुं रे हा, करियइ हास विलास। मिलि नइ वीछडियौ पडै रे हा, तब मन होइ उदास। —वि. कु.

उ॰—३ कुरझडिया कळिमळ कियउ, सुणी ज्यवइ वाइ। ज्याकि जोडी वीछडी, त्या निसि नींद न आइ। —ढो मा

उ॰—४ हसा बुग्गा पटतरो, वीछडिया परवाण। बुग छीलरीया रय करै, हरिया हस विलखाण। —अनुभववाणी

उ॰—५ कुरजडिया कुरळा रही, देख विरगा ताळ। जिण की जोडी वीछडी, जिणका कवण हवाल। —अग्यात

२ देखो 'विछूटणो, विछूटबो' (रू भे)

उ॰—१ वग्गी हाक बहादरा, वीछडि पडै विसाळ। नाराजा ऊबाणिया, खुरसाणिया कपाळ। —रा रू.

उ॰—२ खूम इसी चाढी 'खूमाणं', धोया इसै अनोखै धोत। दसता पडै वीछडै डाडर, पिंड कापड आवै अणपोत।
—मोहकमसिंघ मेडतियौ

उ॰—३ जुध खत्री जाट अग्राज जम जमासा, वाज छड वांण धम धमासा वीर। वीछडै कडा बरम्मा रुधिर विमासा, गग-सिर-धर खडा तमासा-गीर। —हुकमीचद खिडियो

उ॰—४ वीर तन छोह छकडाल कस वीछडे, रूक सूं भिडै असपति सारीस। सीस देवळ तणी डिगण न दियै सकस, स्याम तण भुजा ऊपतज तै सीस —सुजाणसिंघ भोजराजोत सेखावत रो गीत

उ॰—५ वाहता तेग अनमध कध वीछडै, हसत बध हसत दोय टूक होवै। सायजादा दळै हिंदवा पातसाह, 'जसा' अवसर अच्छर तूफ जोवै। —महाराजा जसवर्तसिंहजी री गीत

वीछडणहार, हारौ, (हारी), वीछडणियौ—वि॰।
वीछडिग्रोडौ, वीछडियोडौ, वीछड्योडौ—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछडीजणो, वीछड़ीजबौ—भाव वा॰।

वीछडवाणो, वीछडवाबो—देखो 'वीछुडाणो, विछुडाबो' (रू. भे.)

वीछडवाणणहार, हारौ (हारी), वीछडवाणियौ—वि॰।
वीछडवायोडौ—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछडवाईजणो, वीछडवाईजबौ—कर्म वा॰।

वीछडवायोडौ—देखो 'विछुडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री वीछडवायोडी)

वीछडाणो, वीछडाबो—देखो 'विछुडाणो, विछुडाबो' (रू. भे)

वीछडाणहार, हारौ (हारी), वीछडाणियौ—वि॰।
वीछडायोडौ—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछडाईजणो, वीछडाईजबौ—कर्म वा॰।

वीछडायोडौ—देखो 'विछुडायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री वीछडायोडी)

वीछडावणो, वीछडावबो—देखो 'विछुडाणो, विछुडाबो' (रू. भे.)

वीछडावणहार, हारौ (हारी), वीछडावणियौ—वि॰।
वीछडाविग्रोडौ, वीछडावियोडौ, वीछडाव्योडौ—भू॰ का॰ कृ॰।
वीछडावीजणो वीछडावीजबौ—कर्म वा॰।

वीछडावियोडौ—देखो 'विछुडायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीछडावियोडी)

वीछडियोडौ—१ देखो 'विछुडियोडौ' (रू भे.)
२ देखो 'विछूटियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वीछडियोडी)

वीछडणो, वीछडबो—१ देखो 'विछुडणो, विछुडबो' (रू भे.)

उ॰—१ निजर नो नेह जिण सु हुवै जी, वीछड्या दुख न खमाय। तेह साप्रति किम वीसरै जी, जेहनो जीवन प्राय। —वि कु

उ॰—२ रैण अधारी घण गजै, खडि वांतांण वखाण। वीछडीया मेळा करै, मिरग डाण केकांण। —पना

उ॰—३ वासर सुख ना रयणी सुख, घरै सुख नावत। वालिम वीछडिया तणो, मरम स लागो मन। —ढो मा

२ देखो 'विछूटणो, विछूटबो' (रू भे)

उ॰—है तूट तुड रुळि रुंड मुड, भाजं असुड गै हाड-गुड। वीछडै सघ अनमघ वप्प, झूझार दियै तेगा झडप्प। —गु. रू. ब

वीछडणहार, हारौ (हारी), वीछडणियौ—वि॰।
वीछडिग्रोडौ, वीछडियोडौ, वीछड्योडौ—भू॰ का॰ कृ॰।

वीछड़ीजणौ, वीछड़ीजवौ—भाव वा० ।

वीछड़ियोड़ौ—१ देखो 'विछुड़ियोड़ौ (रू भे.)

२ देखो 'विछूटियोड़ौ (रू भे)

(स्त्री. वीछड़ियोड़ी)

वीछण, वीछणौ-स पु —देखो 'वीछण (रू भे)

उ०—तन धारै वीछण तणौं, जग चुगला री जीह । ग्राठ तरफ खावै उदर, दै छोना दुख दीह । —वा दा

वीछळ, वीछळण-स पु —१ वर्तनो, वस्त्रो व हाथ-पैर ग्रादि को धोने का पानी ।

उ०—धोवट घाट ग्रनोखा धोया, सारा मुह ऊजळा सरीर । सिवला तणी वीछळण साप्रत, चौळ तणै रगिया ग्रण चीर । —मोहकमसिंघ मेडतियो

२ प्रहार ।

उ०—ऊभड़ा भड़ा नीभड़ा ग्रग, वीजड़ा गड़ा वीछळां वग । जमजड़ा घड़ा समवड़ा जग, श्रिज्जड़ा भड़ा तड़फड़ा तग ।—गु रू व.

वीछळणौ, वीछळवौ-क्रि स —धोना, धुलाई करना ।

उ०—ताहरा तळाई ग्रायो । पागड़ो छाडियो । घोड़ै री काढणी हाथ छै । पाणी माहै पथर छै तिकै उपर बैठा छै । पथर माथै बैस हाथ पग वीछळनै ग्राखिया रा गोख छाटीया । —माढणसी कूपावत री वात

वीछळणहार, हारौ (हारी), वीछळणियौ—वि० ।

वीछळिग्रोड़ौ, वीछळियोड़ौ, वीछळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीछळीजणौ, वीछळीजवौ—कर्म वा० ।

वीछळियोड़ौ-भू का कृ —धोया हुग्रा, धुलाई किया हुग्रा ।

(स्त्री वीछळियोड़ी)

वीछामणौ —देखो 'विछाणौ' (रू भे)

उ०—रगित मडप माहि हिव, जाजिम लावो जेह । वारु करै वीछामणा, मोल घणा छै जेह । —प च चौ

वीछाणौ—देखो 'विछाणौ' (रू भे)

वीछाणौ, वीछावौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू भे)

वीछाणहार, हारौ (हारी), विछाणियौ—वि० ।

वीछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीछाईजणौ, वीछाईजवौ—कर्म वा० ।

वीछायोड़ौ —देखो 'विछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वीछायोड़ी)

वीछावणौ—देखो 'विछाणौ' (रू. भे)

उ०—ताहरा वळद उपर सखरा वीछावणा, तिण उपर विणयाणी नू सोहरी वैसाणी । चालिया जावै छै । चालता चालता ग्रागै जाय डेरौ कीयौ । —रळै गढवै री वात

वीछावणौ, वीछाववौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू भे)

वीछावणहार हारौ (हारी), वीछावणियौ—वि० ।

वीछाविग्रोड़ौ, वीछावियोड़ौ, वीछाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीछावीजणौ, वीछावीजवौ—कर्म वा० ।

वीछावियोड़ौ—देखो 'विछायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वीछायोड़ी)

वीछियौ—देखो 'विच्छू' (ग्रल्पा , रू भे.) (शेखावाटी)

वीछुड़णौ, वीछुड़वौ-क्रि ग्र —१ विमुक्त होना ।

उ०—कळ विछुड़ि एक वर्म गिरि कदरि, मदिर माळक एक भरै । ग्रहि त्याग फुरै धन एक गमाय र, कै रिध ग्रादरि सधि करै । —रा रू.

२ देखो 'विछुड़णौ, विछुड़वौ '(रू भे)

उ० —यैं सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ, थाकी ग्रास । वीछुड़तां ही माणसा, मेळउ दियउ उल्हास । —ढो. मा.

३ देखो 'विछूटणौ, विटछूटवौ' (रू भे)

वीछुड़णहार, हारौ (हारी), विछुड़णियौ—वि० ।

वीछुड़िग्रोड़ौ, वीछुड़ियोड़ौ, वीछुड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीछुड़ीजणौ, वीछुड़ीजवौ—भाव वा० ।

वीछुड़ियोड़ौ-भू का कृ.—१ विमुक्त हुवा हुग्रा ।

२ देखो 'विछुड़ियोड़ौ' (रू भे)

३ देखो 'विछूटियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वीछुड़ियोड़ी)

वीछू—देखो 'बिच्छू' (रू भे) (ड र.)

उ०—मिणधर विख ग्रणमाव, मोटा नह धारै मगज । वीछू पूंछ वणाव, रामै सिर पर राजिया । —किरपाराम

वीछूड़ौ—१ देखो 'त्रिच्छूड़ौ' (रू भे)

२ देखो 'वीछण' (ग्रल्पा , रू. भे)

वीछूटणौ, वीछूटवौ—१ देखो 'विछूटणौ, विछूटवौ' (रू भे)

उ० —१ करिमा रा छूटा गाढ जूवळा ग्रफूटा क्रमं, रथा छूटा पीतमरा लूटा वरा रभ । तूटा वाढ वीजळा वीछूटा ग्राभ वीजू तेम, खूटा सीस साकुळा हू जूटा जैतखभ । —राजाधिराज वखतसिंघजी री गीत

उ०—२ हे कळळ मचै हल हल्लकार, मुछाळ वदत मुख मार मार । वीछूटै छूट हुई विकट्ट, निरभीत कई चढिया निकट्ट । —मा वचनिका

उ०—३ चोडे खळ धूहड लाखा चाक, वीरोळे लाख खळां वेडाक । सत्री गुर वीरम धूणे साग, वीछूटो जाणेय साकल वाग ।
—गो. रू

उ०—४ अपछरा का सा वीवाण वीछूटा । छछोहा जवान तरवारघा आछटे छै । ज्या सूं अगजवार हूर वरमाळा सार्थ हो कटे छै ।
—पना

२ देखो विछुडणो विछुडवो'(रू भे)

वीछूटणहार, हारो (हारी), विछूटणियो—वि० ।
वीछूटिओडो, वीछूटियोडो विछूट्योडो—भू० का० कृ० ।
वीछूटीजणो, वीछूटीजवो—भाव वा० ।

वीछूटियोडो—देखो 'विछूटियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'विछुडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विछूटियोडी)

वीछोडणो, वीछोडवो—देखो 'विछोडणो, विछोडवो' (रू भे)

उ०—१ वणे फौज राजा तणे काजवाळी, कयो क्रत्त जैसी फुणा पत्ति काळी । कजाका भडा दीडियो रूप कैसो, 'अभो' नक्र वीछोड वा चक्र असो ।
—रा रू.

उ०—२ जिम मोरा ददरा, सघण घण पावस वूठो । जळ ता मछ वीछोडि, वळे जळ माहि पयठो ।
—अल्लूजी कवियो

वीछोडणहार, हारो (हारी), वीछोडणियो—वि० ।
वीछोडिओडो वीछोडियोडो, वीछोड्योडो—भू० का० कृ० ।
वीछोडीजणो, वीछोडीजवो—कर्म वा० ।

वीछोडियोडो—देखो 'बिछोडियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीछोडियोडी)

वीछोडाणो, वीछोडावो—देखो 'विछोडाणो, विछोडावो' (रू. भे)

वीछोडाणहार, हारो (हारी), वीछोडाणियो—वि० ।
वीछोडायोडो - भू० का० कृ० ।
वीछोडाईजणो, वीछोडाईजवो—कर्म वा० ।

वीछोडायोडो—देखो विछोडायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीछोडायोडी)

वीछोडावणो, वीछोडाववो—देखो 'विछोडाणो, विछोडावो' (रू भे)

वीछोडावणहार, हारो (हारी) वीछोडावणियो—वि० ।
वीछोडाविओडो वीछोडावियोडो, वीछोडाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वीछोडावीजणो वीछोडावीजवो—कर्म वा० ।

वीछोडावियोडो—देखो विछोडायोडो' (रू भे)

(स्त्री वीछोडावियोडी)

वीछोटणो, वीछोटवो—क्रि अ.—१ वहना, निकलना ।

उ०—गयडे एक घाव कीघो । तीसो दूजो सभूनाथ मैं दुधारी सीरा छुटा । वळे घाव हुवो । दूध दही वीछोटवा लागो । वीजो घाव हुवो । लोही वीकरड चाल्या, तीको सभूनाथ लड वेहड हुवा ।
—अरजण हमीर री वात

२ देखो 'विछूटणो, विछूटवो' (रू भे)
३ देखो 'विछुडणो, विछुडवो' (रू भे)
४ देखो 'छूटणो छूटवो' (रू भे)

वीछोटणहार, हारो (हारी), वीछोटणियो—वि० ।
वीछोटिओडो, वीछोटियोडो, वीछोट्योडो—भू० का० कृ० ।
वीछोटीजणो, वीछोटीजवो—भाव वा० ।

वीछोटियोडो—भू का कृ—१ वहा हुआ, निकला हुवा ।

२ देखो 'विछूटियोडो' (रू. भे)
३ देखो 'बिछुडियोडो' (रू भे.)
४ देखो 'छूटियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विछोटियोडी)

वीछोव—देखो 'विछोह' (रू भे)

वीछोवणो, वीछोववो—देखो विछोहणो, विछोहवो' (रू भे.)

वीछोवणहार, हारो (हारी) वीछोवणियो—वि० ।
वीछोविओडो वीछोवियोडो, वीछोव्योडो—भू० का० कृ० ।
वीछोवीजणो, वीछोवीजवो—भाव वा० ।

वीछोवियोडो—देखो विछोहियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीछोवियोडी)

वीछोवो, वीछोह—देखो विछोह' (रू. भे)

वीछोहणो, वीछोहवो—देखो 'विछोहणो, विछोहवो' (रू भे)

वीछोहणहार, हारो (हारी), वीछोहणियो—वि० ।
वीछोहिओडो, वीछोहियोडो, वीछोह्योडो—भू० का० कृ० ।
वीछोहीजणो, वीछोहीजवो—भाव वा० ।

वीछोहियोडो—देखो विछोहियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीछोहियोडी)

वीछोहो—देखो 'विछोह' (रू भे)

उ०—आया मिळ असवार, सुंदर दीठो सास विण । हय हय सिरजणहार, ढोले वीछोहो बिलकुळ
—ढो मा

वीज—देखो 'बीज' (रू भे)

२ देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—१ असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडेचो वाही करि खीज । सुकरि आकास हूत सेलारा, वीजुळ विढण क वुही वीज ।
—केसोदास गाडण

उ०—२ पाल्हउ कवणइ, कउण जम ज तउ वारइ ? कवण वज्र झेलियइ, कउण सिरि वीज सहारइ ।
—अ. वचनिका

३ देखो वीजळी' (रू भे) (ना मा)

उ०—१ सुर दक्खै जे जे सबद, रस अदभुत लख रीज। ईढ करै खग सूं 'अभा', वजर न चकर न वीज। —रा रू

उ०—२ भडज वादळ सवळ वीज सावळ भळक, ग्वळक जळ रुधर घट नाळ खाळा। वाग सुरताण दळ अकळ खूटा वरस, माल' हर सीस सुर-गरद माळा। —अजवो बारहठ

उ०—३ सो रूप री ऐसी, जैसी प्रथी में नही-सरग री परी, आभै री वीज मान सरोवर रौ हस, केळ रो गरभ। सो रूप गुणा-कर निपट अवल पण आल्या सजम मोतियावध।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—४ जइ तूं ढोला, नावियउ काजळिया री तीज। चमक मरेसी मारवी, देख खिवता वीज। —ढो. मा

उ०—५ हीया धसक्कइ कायर लोक, संत तणा मन करइ ससोक। जाणे वीज पडि [अ] अकालि, जाणें मुद्र खुम्या कलिकालि।

—सालिसूरि

४ देखो 'दूज' (रू भे)

वीजइ—१ देखो 'दूजो' (रू भे)

उ०—वीजइ दिनि चचिगदे राइ, बइठउ मन माहि करइ उपाय। मत आवइ रिणधवळाह जान, करिसी झूझ पिंगराजान।

—ढो मा

२ देखो 'वीजली' (रू भे)

३ देखो 'विजय' (रू भे)

४ देखो 'बाज' (रू भे)

विजइथभ—स पु [स विजय स्तभ] विजयस्तभ, कीर्तिस्तम्भ।

उ०—पाल्हणसी भला-भला लोका का कह्या करण चार साभळया। आसू पूंछि अकमाळ लियउ। वीजइथभ वागडी की नाई सकळ ही प्रिथमी प्रतपिज्यउ, यउ गढ लीजउ, हमारउ वइर सूरिताण गोरी राजा सउ कीज्यउ। —अ वचनिका

वीजई—१ देखो 'दूजो' (रू भे)

२ देखो 'वीजळी' (रू. भे)

३ देखो विजय' (रू भे)

४ देखो 'वीज' (रू. भे)

वीजउ—देखो 'दूजो' (रू भे)

उ०—अणहिलवाडा पाटण सामि, वीजउ नफर गयउ तिणि ठामि। उदयचदनय कियउजुहार, परणावउ रिणधवळ कुंमार।

—ढो मा

२ देखो 'वीज' (रू भे)

वीजक—१ देखो वीजक' (रू भे)

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

उ०—डोहन सुडा डड ए, स्रोखड सरपकहिड ए। गज वाग मत्थै मैंगळा, वळकत्त वीजक वद्दळा। —गु. रू व.

उ०—२ रत खाळ-रळ तळ पालर, प्रग्घळ, होहू हूकळ थट्ट हुवै। वळ कत विजूजळ वीजक वद्दळ, ढोल भ्रिमगळ वोम धुवै।

—गु रू. ब

उ०—३ चढै चलै चतुरग महादळ, वीजक जाण वळक्के सावळ। वाजी घोडा पाइ धरत्ती, छूटा साहण हाहुल मात्ती। —गु. रू ब

वीजकणो, वीजकवौ—देखो 'भिचकणो, भिचकवौ' (रू भे)

वीजकणहार, हारो (हारी), वीजकणियो—वि०।

वीजकिओडो, वीजकियोडो, वीजक्योडो—भू० का० कृ०।

वीजकीजणो, वीजकीजवौ—भा वा०।

वीजकाणो, वीजकावौ—देखो भिचकाणो, भिचकावौ' (रू भे)

वीजकाणहार, हारो (हारी), वीजकाणियो—वि०।

वीजकायोडो—भू० का० कृ०।

वीजकाईजणो, वीजकाईजवौ—कर्म वा०।

वीजकायोडो—देखो 'भिचकायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वीजकायोडी)

वीजकियोडो—देखो भिचकियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीजकियोडी)

वीजखणो, वीजखवौ—देखो 'भिचकणो, भिचकवौ' (रू. भे)

उ०—झरडो वीजखियौ, आळखियो मोनूं अवै। कुण जीदो कहि-याह, किण कारण मारू कहो। —पा. प्र.

वीजखणहार, हारो (हारी), वीजखणियो—वि०।

वीजखिओडो, वीजखियोडो, वीजख्योडो—भू० का० कृ०।

वीजखीजणो, वीजखीजवौ—भाव वा०।

वीजखियोडो—देखो भिचकियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वीजखियोडी)

वीजगणित—देखो 'वीजगणित' (रू भे.)

वीजड—देखो 'वीजळा' (मह, रू भे)

वीजडली—१ देखो 'वीजळा' (अल्पा, रू भे)

२ देखो वीजळी' (रू भे)

वीजडहत, वीजडहती, वीजडहथ, वीजडहथौ—देखो 'वीजळाहथ' (रू भे)

वीजडहतौ, वीजडहथौ—देखो 'वीजळाहथ (मह, रू भे)

वीजडाहत, वीजडाहती, वीजडाहथ, वीजडाहथौ—देखो 'वीजळाहथ' (रू भे)

वीजडाहतौ, वीजडाहथौ—देखो 'वीजळाहथ '(मह, रू भे)

वीजडी—१ देखो 'वीजळा' (रू. भे)

२ देखो 'वीजळी' (रू भे.)

उ०—वगतरा ऊपरा तरवारिग्रा रा वाड ग्र टि नै रहिग्रा छै । जाणी वादळा माहै वीजडिग्रा रा सिला ऊपडिग्रा पाखरा ऊपरै सार-धारा फूलधारा वाजी सु ठणाणणण जाणै परभात री झालर ठणकी, नरवगतर विघस हुग्रा । —रा. सा स

वीजजळ, वीजजुळ, वीजजूळ, वीजझळ, वीजझूळ—देखो 'वीजूझळ'

उ०—सग्रामा सभावै वीजजुळा कसा ग्राय सामै, रेण ग्रेक थोडा नामै थावै ग्रसी रीत । न मावै फिरगी हिंदूथान कीधो पाय नामै, ग्राप नामै नाज खाधो विजाई 'ग्रजीत' । —नवलजी लाळस

वीजड—देखो 'वीजळा' (मह , रू भे)

उ०—ऊझडा झडा नीझडा ग्रग,वीजडा गडा वीछळा वंग । जमजडा घडा समवडा जग, ग्रिज्जडा झडा तडफडा तग । —गु रू व.

वीजण—देखो 'वीजणो' (मह , रू भे)

उ०—फुला हळवी पाटो कुंवळी, वीजण इधक खिवाय । 'वील्ह' कहै गुर भाइयो, करणी साच तराय । —वील्होजी

२ देखो 'वीजन' (रू भे)

वीजणी—देखो 'वीजणो' (ग्रल्पा , रू भे)

वीजणू, वीजणो—देखो—वीजणो' (रू भे.)

उ०—ग्राप जुद्ध मे काम ग्रावो, हू सत करू , पछै विमाण मे वैस स्वरग मे जाग्रा जद ग्रपछरावा चमर करसी तिण गे वायरी लागसी ग्रो वीजणो हुमी ग्रवै वीजणो कगावणनै ग्रो बळै ग्रापरा बळ सारू है । —वी स टी

उ०—२ श्रीमत तणा चउवारा झलहलड,जलद्रां सरीरि लगाडीइ, गुलाव तणा ग्रभ्यग कीजइ, वावन्ना श्रीखड घसीयड, चउदिसीयइ वीजणा फिरइ, द्राक्षा ग्रावलीपान कीजड, कलमसालि तणा सीध-वरा करवा कीजइ ग्रच्छा कापडा पहरियड लू ग्राहण्या पाणी पीजइ । —व स

वीजणो, वीजवो—देखो 'वीजणो, वींजवो' (रू भे)

उ०—पान ग्रारोगइ तै घणा, वनिता वीजइ वाय । ग्रगि ग्रति ऊलट धरी, तिहुयण तेह न माय । —मा. का प्र

२ देखो 'वीजणो, वीजवो' (रू भे)

वीजणहार, हारो (हारी), वीजणियो – वि० ।

वोजिग्रोडो, वीजियोडो, वीज्योडो—भू० का० कृ० ।

वीजीजणो, वीजीजवो—कर्म वा० ।

वीजन–स पु [स वीजन] १ चक्रवाक, चकोर पक्षी ।

२ पखे से हवा डालने की क्रिया ।

३ देखो 'वीजणो' (रू भे)

रू. भे —वीजण ।

वीजपुरख, वीजपुरस, वीजपुरुख, वीजपुरुस–स. पु [स. वीजपुरुष] किसी वश का ग्रादि या मूल पुरुष ।

वीजपूर, वीजपूरक—देखो 'बीजपूर' (रू भे)

वीजमत्र—देखो 'बीजमत्र' (रू भे)

उ०—रिध सिध दियण कोयला राणी, ग्राळा वीजमत्र व्रहमाणी । वयण दियै मो ग्रविरळ वाणी, पुणा क्रीत जिम सारगपाणी । —ह र

वीजमारग—देखो 'बीजमारग' (रू भे)

वीजमारगी—देखो 'बीजमारगी' (रू भे)

वीजळ, वीजल–स पु —१ पखा ।

२ देखो वीजळ' (रू भे)

३ देखो 'वीजळा' (रू भे)

उ०—१ जुध सीस पडत घडाह जोळा, वीजळ धक्क चरक्क वहै । गळिवाह लोळावट होय गळीवळ, गूथाबत्थ सुभट्ट ग्रहै ।

—गु रू व

उ० – २ विढै वीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूकळ कळियळ ए । बळिवत ग्रतुळ बळ, जूटा चिहु बळ (वळ) झळहळ दळ वीजळ ए । —गु. रू व.

उ०—३ वीजळ सेल गुरज घण बाजै, गाज त्र वाळ सघण घण गाजै । ग्ररण वमक कोप धड उरिया,छकिया धाव कटारा छुरिया ।

—सू. प्र

उ०—४ वाप रै तखत वैठो, धारि छत्र जोम धारि । वीजळा दिलेस देस, मारि कीध थाळ वारि । —सू. प्र

उ०—५ रीठ पडै धारूजळा, ग्रर धड ढळा उवेड । करै खळां वहुवै वळां, दळ वीजळा निवेड । —रा रू

४ देखो 'वीजळी' (रू भे.)

उ०—१ सोर घीर' सम्मूह, बाण ऊच्छळै वळता । वहै ग्राग वरजाग, वोम किरि वीजळ लता । —गु रू. व

उ०—२ वादळ दळ मेल खडग सभ्र वीजळ, कमधा काठळ फौज कर । घण गाजै गजसीग विरद घण, ग्राफळ मरै कठीर यर ।

—देवराज रतनू

उ०—३ पसवाडै वीजळ खिवै, हो जी, वै रो पेट पीपळ केरो पान । है गवरल, रूडो है नजारो तीखो है नैणा रो । —लो गी.

उ०—४ साकळा कळा चक्र साह, तु ग्राद वीसहत नीमी ताह । साकवरी तुं हीज तु कळा सोम, वीमळा भवर वीजळ गोम ।

—रामदान लाळस

बीजळडी, बीजलडी—१ देखो 'बीजळ' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'बीजळा' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे)

उ०—१ बीजलडी, घण, वरजी ना जाय, थारी घण थारी श्रो हुजा, सावण-भादवो श्रे चमकै बीजळी, जी राज। —लो गी.

उ०—२ था री तो सतायी, गोरी का सायबा, आभा री बीजलडी होय जास्या, म्हारा राज। थैं घण, होस्यो आभा केरी बीजळी, मारू थारी छुदरियो घररासी, म्हारा राज। —लो गी

बीजळसार—देखो 'विजळसार' (रू भे)

उ०—चरखो तो लेल्यू, भवरजी, रागलो जी, हाजी ढोला पीढो लाल गुलाल। तकवो तो लेल्यूं, भवरजी, बीजळसार को जी श्रो जी म्हा री जोडी रा भरतार, पूणी मगा ल्यू जी क बीकानेर री जी। —लो गी

बीजळहत, बीजळहती, बीजळहत्थ, बीजळहत्यी, बीजळहथ, बीजळहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे)

बीजळहथो, बीजलहथो—देखो 'बीजळाहथ' (मह, रू भे)

बीजळा, बीजला—१ देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—राठौड रचेवा रणताळ, बामग डहे बीजला झाळ। बाधै कदील सर्व विवाण, कोसीस भुजै दोना कवाण। —गु. रू. व

२ देखो 'बीजळी' (रू भे) (ना मा)

उ०—१ कसरसै करळा, आकुसा बीजळा। चमवकै चप्पळा, वैरका, बबळा। —गु रू व

उ०—२ खळहळा चलै रळतळा खाळ, बीजळा झळा बीमळा झाळ। गू छळा गळा गू थळा गड्ड, सिघळा कळा साकळा सड्ड। —गु रू व.

बीजळाहत, बीजळाहती, बीजळाहत्य, बीजळाहत्यी, बीजळाहथ, बीजळाहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू भे.)

बीजळाहथौ, बीजलाहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (मह, रू भे)

बीजळि, बीजलि, बीजळी, बीजली—स. स्त्री—१ वह भैस जिसके स्तनो मे एक ही सफेद रेखा या धारी हो। (अशुभ)

२ देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—पछट्टत बीजळि 'केहर' पाणि, सिलह वध हेक करै घमसाणि। जुडै चहुवै दळ रोद दजागि, खिवै घण 'केहर' ऊपर खग्गि। —सू प्र

३ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—१ च्यारइ पासइ घण घणउ, बीजळि खिवइ अगास। हरियाली रुति तउ भली, घर सपति, पिउ पास। —ढो मा.

उ०—२ नख अहिरण धज नळी, कळी वाजू पीडा चक। बजै नास बासली, ताव बीजळी छळी तक। —सू. प्र

उ०—३ ढोलउ जाण्यउ बीजळी, मारू जाण्यउ मेह। च्यारि आख एकठि हुई, सयणां वध्यो सनेह। —ढो मा.

उ०—४ आरूढ पीलवांणा-ऐ, गजिंद-वाग पाणाए। घटा फवज्ज घूघळी, चमक्कि कूंत बीजळी। —गु रू व

उ०—५ कुरजा री टोळी, सहेल्या री हवोळी साथ लीना श्रै लागणा लोयणा देखि रिझवार अडवडे छै। वादळा मैं बीजळी को भळको, ज्यु गुगटा मैं टीकी को पळको पडै छै। हसता तो फूल झडै छै। इण भाति चालता रिमझोळा री घमक पडै छै। —पना

बीजाजळ, बीजाजुळ—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे)

उ०—विढै बीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूकळ कळियळ ए। वळिवत अतुळ बळ, जूटा चिहु बळ, (वळ) झळहळ दळ बीजळ ए। —गु रू. व.

बीजाझळ, बीजाझल—१ देखो 'बीजूझळ' (रू भे.)

२ देखो 'विंध्याचल' (रू भे)

उ०—नग सीसा गळ नीम, गरक असमा चूनागळ। वीझाझळ सिर वर्णे, विक्रम भुग्जा बीजाझळ। —सू. प्र

बीजाविक-स. पु. [स] ऊट।

बीजियोडौ—१ देखो 'बीजियोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'बीजियोडो' (रू भे.)

(स्त्री बीजियोडी)

बीजु—देखो 'विज्जु' (रू भे)

बीजुल, बीजुल—देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडेचै वाही करि खीज। सुकरि आकास हूत सेलारा, बीजुल विढण क वुही बीज। —केसोदास गाडण

बीजुळी, बीजुली—१ देखो 'बीजळा' (रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—काळी कठळि बीजुळी, नीची खिवइ निहल्ल। डर भेदती सज्जणा, ऊचेडती सल्ल। —ढो. मा

बीजूजळ, बीजूजल, बीजूझळ, बीजूझल—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे)

उ०—१ 'अजबो' 'पतो' लिया पण उज्जळ, वैणावत ग्रहिया बीजूजळ सकतावत छळि घणी सिघाळा, आया चापा वस उजाळा। —रा रू.

उ०—२ वाहि वुहाय घणी बीजूजळ, तडळ खगा करै ह्वा तडळ।

इस प्रथमी सिर क्रीत उवारा, परणे अपछर सुरगि पधारा।
—सू प्र

उ०—३ वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सु सर सावळ झळहळ ए। अडडै काछूसळ कुटकै कम्मळ, सोणी रळचळ खळहळ ए।
—गु. रू व

उ०—४ फळकळा दळा चहुवळा फावै करण, घरै वार हेकल पाट-ऊधोर। तूटतो जाय वीजूजळा तणो ताव, जळां वाघा ज्यु ही खळा चो जोर।
— महाराजा मानसिहजी री गीत

उ०-५ जवनाण दळै वीजूभळै, देख भलै कुळ देस री। 'इद्रमाण' खगे वढ ऊजळै, मिळै जोत 'मुकनेस' री।
—रा रू

वीजोग—१ देखो 'विजोग' (रू भे)

२ देखो 'विजोग' (रू भे)

३ देखो 'वियोग' (रू भे)

उ०—राज कुवर सव वरणव्या, सयल सभा साभळी हो सजोग। गगा फळ 'नरपति' कहइ पुत्र कळत्र नवि हुवई वीजोग।—वी. दे.

वीजोरउ—देखो 'बीजोरो' (रू भे.)

वीजोरडी, वीजोरडो—देखो 'बीजोरो' (अल्पा, रू भे.)

उ०—कणवीर पकरणी केतकी, वीजोरडो नारेळ। कवोई कुदाळी थाईसरस, सइवळ वरण तवोळ।
—रुकमणी मगळ

वीजोरी - देखो 'बीजोरी' (रू भे.)

वीजोरो—देखो 'बीजोरो' (रू भे)

वीजो—देखो 'दूजो' (रू भे)

उ०—१ जद जागू तद एकली, जब सोऊ तब वेल। सोहणा, थे मनै छेतरी, वीजी त्रीजी हेल।
—ढो मा

उ०—२ उवै घोडी आणो तो थै बडा घाडवी। बीजो तो धाडा घणा ही करो छो छोटा मोटा। इतरो कहता वेत जणा उठि नै चळू करै नै बोलीमा। चळू भरि पाणि नै कहियो। जे उवै घोड्या आणा तो एथ आइ नै जीमा नही तो ए कलक माथै उदक आवण।
—चौबोली

उ०—३ वधाईदार नु रावजी कडा वगसिया। झालीजी मोती दीया कुवर रा मोहला सिरपाव दीया। वीजो पण कामदारा साहुकारा राज रै राहणे अमरावा ठाकुरा सारा वधाई दीवी।
—कुवरसी साखला री वारता

(स्त्री. वीजी)

वीझण, वीझणउ, वीझणो—देखो 'बीजणो' (रू भे) (उ र)

उ०—१ छाटी पाणी कुमकुमइ, वीझण वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री आगलि विललाइ।
—ढो मा

उ०—२ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उण बागाइत मांहे ग्रीखम रित रा विलाइती वालै रा खस खाना, ऊची ठौड रा बगला, रावटी वालावध रा ठांसा रा गूंथिग्रा भाति भाति खस-खाना वणाया छै। घणे सीतळ पाणी सूं सीचिग्रा थका वीझणां वाइ झापा सू हीफा खाइ रहिग्रा छै।
—रा. सा स

उ०—३ वावळ आगै वीझणो, की पावै सनमान। तूझ रीझ आगै तिसो, 'देवा'! जग चो दान।
—वा. दा.

उ०—४ वाफता रा सेलारा रूमाल केसरिया छै सू माथा ऊपर रालजे छै। वीझणां सू वायेरा लीजे छै। किण भात रा छै? लाहोर रा कियाडा छै। रुपै री डाडी जरी सूं मढी, टुकडी री झालरी।
—रा सा स

वीझणो, वीझवो—देखो 'वीजणो, बीजवो' (रू भे.)

उ०—छाटी पाणी कुमकुमइ, वीझण वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री आगलि विललाइ।
—ढो मा

वीझणहार, हारो (हारी), वीझणियो—वि०।

वीझिग्रोडो, वीझियोडो वीझ्योडो—भू० का० कृ०।

वीझीजणो, वीझीजवो—कर्म वा०।

वीझवण, वीझवन—देखो 'वीझवन' (रू. भे.)

उ०—आडा डूंगर वीझवण, वीच माछळा गयद। सीन कहरै वदरा, किण्य विध्य लोपियो समद।
—मेहोजी गोदारो थापन

वीझाणमाता-स. स्त्री —एक देवी का नाम।

वीझाजळ, वीझाजल, वीझाझळ, वीझाझल—१ देखो 'वीजूझळ' (रू. भे)

२ देखो 'विध्याचळ' (रू भे.)

उ०—नग सीसा गल नीम, गरक असमा चूनागळ। वीझाझळ सिर वणे, विखम भुरजा वीजाझळ।
—सू प्र.

वीझावण, वीझावन—देखो 'वीझवन' (रू. भे)

उ०—सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ अगनी सू वळता थका वीझा-वन हाथिग्रा री पेटरी छाया सूता विसराम करै छै। भुयग सरप नीसरिग्रा छै। सो लू नै तावड री अगनि सूं वळता थका द्रोडि द्रोडि नै हाथिग्रा रै सीतळ सू डाहळा माहे पैसि पैसि रहिग्रा छै।
—रा. सा. सं.

वीझासणि, वीझासणी—१ देखो 'मावलिया'।

उ०—मोपो कहे भूत छै लोभ वीझासणि लीधो। जत्र मत्र रा जाण, कहे कोइ कामण कीधो।
—ध. व. ग्र

२ देखो 'आवड'।

वीझोडणो, वीझोडवो—क्रि स —काटना।

उ०—खाजरू आए हाजर हुआ छै, रावताला नू कहिओ छै। ठाकरै खाजरूआ नै ठरका करो। तिकै रावताला घणी केसर नै घणै क्रसनागर अतर सार्थं माहे गरकाव हुआ थका। उआ सीरोहीआ खाजरू वीभोडीजै छै। —रा सा. स

वीभोडणहार, हारौ (हारी), वीभोडणियौ—वि०।

वीभोडिओडो, वीभाडियोडो, वीभोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीभोडीजणौ, वीभोडीजबौ—कर्म वा०।

वीभोडणौ, वीभोडवौ—रू० भे०।

वीभोडियोडो–भू. का. कृ —काटा हुआ।

(स्त्री वीभोडियोडी)

वीटक–स पु [स] पान का बीडा।

वीटणौ, वीटबौ—देखो 'वींटणौ, वींटबौ' (रू भे.)

उ०—१ गाज नगारा चहू गमा, धर माग रुकाणी, चढिया घूंस बहादरा, बर्धं किरवाणी। देस महेवा वीटिया, त्रिविध तुरकाणी। रावळ 'माल' महाबळी, आगळ हिंदवाणी। —वी. मा.

उ०—२ ककर पथर वीटिया कु नरा, जिण तिण पूछै तोछ जळ। 'सुरावत' तु है कण साचो, आभुखण नव कोट इळ। —सिवनाथसिंघ री गीत

उ०—३ हिरणा नह मावै हियै, सडबौ दीठा स्वास। वाघ घणा मिळ वीटिया, तो पिण तिल नह त्रास। —बा दा.

उ०—४ 'चदण' चदण वीटियौ, अन भीखग उरगाह। इण कारण आया नही, चारण पखी ताह। —बा. दा.

उ०—५ खाग धुबती मारवै, वीट लियौ जोधाण। सज्झै कोट मळेछ दळ, वज्जै बाण कवाण। —रा रू.

उ०—६ विधि विधि विलखा वचन कहइ, वेलिइ वीटिया व्रक्ष। अेह पनुता अवनि तटि, यम चुहुटाडइ चक्ष। —मा का. प्र.

उ०—७ एहवौ धातकीखड ए, परिदखिणा परकार। अठ लख जोयण वीटीयौ, समुद्र कालोदधि सार। —ध व ग्र

उ०—८ सु'दर स्याम सरीर, बाधौ कट राम पीत पीतवर। काळै वादळ सू कै, वीटाणी वीज वरसाळै। —र ज प्र.

वीटणहार, हारौ (हारी), वीटणियौ—वि०।

वीटिओडो, वीटियोडो, वीट्योडौ—भू० का० कृ०।

वीटीजणौ, वीटीजवौ—कर्म वा०।

वीटलो, वीटलौ—१ देखो 'वींटळी' (रू. भे)

उ० —१ उठा सु पाछा मुरडिया, सो अजमेर आया। वीटली सझी तिण ऊपरै भडारी विजैराजजी नै राव अमरसघजी कुसलसघोत ऊदावत वगेरै हरभाण भगवानदासोत राठोड जगतसघ तेजसघोत वगैरै आसामी जद थी। —रा व. वि.

उ०—२ पण उणरी चौडै लडणै री आसग हुई नही। तद वरसघ नू लालच देय अजमेर बुलायो, अरु खातरी करनै वीटली चाढियौ। पीछै वदोवस्त कियो। —द. दा.

उ०—३ इण भात सारा नू सीख सलाह दै बहिर हुवौ सो पहला तो अजमेर गयो सो पहला तो खाजेजी री जारत कीवी, देग कवूल कीवी। फेर वीटली चढ मीराजी री जारत कीवी। —सूरै खीवै काधळोत री बात

२ देखो 'वीटली' (रू. भे)

३ देखो 'वींटणी' (रू भे.)

४ देखो 'वींटी' (रू भे)

वीटवौ–वि — घुमावदार, लपेटेदार।

उ०—सात हमायचा माग, सात सुराई सराब की, सात सीका जमनाजळ री, हलवान पीडा सात, वीटवा सूळा सराब वस्त भाव माहे घात उभी छै। —तिमरलिंग पातसाह री वात

रू भे —वीटीवौ।

वीटिका–स. स्त्री [स वीटि] १ पान की बेल।

२ पान का बीडा तैयार करने की क्रिया।

३ चोली की गाठ।

४ छोटा पान का बीडा।

रू भे.—वीटी।

वीटियोडो—देखो 'वींटियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वीटियोडी)

वीटी—१ देखो 'वींटी' (रू भे) (अ मा)

उ०—सोवन वीटी रयणै जडी, मुफ नाचता देउलि पडी। प्रीतिवचन प्रामी मन माहि, महुतउ पाछउ वलिउ उछाहि। —हीराणद सूरि

२ देखो 'वीटिका' (रू. भे)

वीटीजणौ, वीटीजवौ–क्रि. अ.—१ मादा टिड्डी का ऋतुमती होकर गर्भ धारण करना।

वीटीजियोडो–भू का कृ. (स्त्री) १ ऋतुमती होकर गर्भ धारण की हुई (मादा टिड्डी)

वीटीदार–स पु —विशेप खुदाई वाला, अर्द्ध मडलाकार पत्थर।

वीटीवौ—देखो 'वीटवौ' (रू भे)

उ०—सू नमचा किण भातरा छै ? वीटीवा, चोगानिया, घणै वनातरा लपेटिया, सालूरा लपेटिया, वोयदार रा मढिया, चैंतरा, कलाबूत रै काम रा, सोनै रूपै रै वळा रा, रूपै रा कुलावा लागा

थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलम, चिलमपोस छै।
—रा सा स.

बीटुळी, बीटुली—१ देखो 'बीटळी' (रू भे)
२ देखो 'बीटणी' (रू. भे.)
३ देखो 'बीटी' (रू भे)
४ देखो 'बीटली' (रू भे.)
उ०—सकती बांधै बीटुळी, ढीली मेल्है लज्ज। सरढी पेट न लेटि-यउ, मूध न मेळउ अज्ज।
—ढो. मा.

बीटोरौ—देखो 'भीटोरौ' (रू. भे.)

बीटौ–स. पु [स. वीटा] १ लकडी के डडे से खेला जाने वाला खेल। (प्राचीन)
२ देखो 'बीटी' (रू भे.)
३ देखो 'बीटो' (रू. भे)
उ०—तेज मैं नाहरखा नाहर सै हाथूं अौर 'अमरेस' गहै आसमान बाथूं। 'प्राग' के जै न्याती रोकै नाग की सी नाई, सेल साहेटवाळे त बीटा देत बाई।
—रा. रू

बीटुळ, बीटुल—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)

बीटुळनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू. भे.)

बीठ—देखो 'विस्ठा' (रू भे) (उ. र)

बीठनि–क्रि वि.—अन्दर, मे।
उ०—नर नार उच्छव सेव निरखं, देव दूदभि वज्जए। बाटत नव गुळ सहर बीठनि, राज अविचळ रज्जए।
—रा रू

बीठळ, बीठल—देखो 'विट्ठळ' (रू भे) (ना मा, ह ना मा)
उ०—१ लिखमी ना हर कुण लियै, कुण जीपै करतार। कटक मारण कारणै, बीठळ कीयो विचार।
—पी प्र.
उ०—२ आदि विस्नु नइ आदि माया, हुआ अचळ गठि। मधु पुरख हथलेवडी वरमाळ बीठळ कठि।
—रुकमणि मगळ
उ०—३ आभ गाभ ती नाखियो, धरा लीयो सिर झल। हरीया धर सिर धूणियो, कर गहियो बीठल।
—अनुभववाणी
उ०—४ तइ ब्रह्मा भल भोलव्यु, समु कीउ तप भग। ब्रह्मचारि बीठल करिउ, सोल सहस्रह सगि।
—मा का. प्र.
उ०–५ दीनां लका जै हाथा न कर्ज, दीधा जग सारो जाणै। वेदा भेदां धाता बीठळ, वारवार रटै वाखाणै।
—र ज. प्र

बीठळनाथ, बीठलनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू. भे.)
उ०—कै जम नाम तणो तन सज कर, मै जम हू डर डर मत भाजे। किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां, बीठळनाथ अनाथा वाजै।
—र ज प्र

बीठली—१ देखो 'बीटणी' (रू. भे.)
२ देखो 'बीटी' (अल्पा., रू. भे.)
३ देखो 'बींटली' (रू भे.)
४ देखो 'बींटली' (रू भे)
उ०—सवत१७७७ जेठ माहे अजमेर दाखल हुवा। बीठली लीनी, पातसाही थाणो सो उतार दीनो। तिण ऊपरै पातसा महमदसाह बाइसी मेली निवाब मुदफरखा।
—रा व वि.

बीठळो, बीठलो—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)
उ०—१ मोकू लीन्है जात है, ग्राह नीर कै मांय। बाहर करवा बीठळा, अजू न आवो काय।
—गजउद्धार
उ०—२ मन बुद्धि चित्त अहकार मति, समरति तना अवइ सकति। रहमाण तुहारौ अटल राज, बीठला हिमै सिणगार बाज।
—पी प्र
उ०—३ भाग तणा भामणा ल्या भूधर दुध भजण, विट्ठला ना बीठला मुगिति सारूप समपण। साथा ना साजोति राक सालोक लियै रस, सामी मुगिति समीपि मुझ समपो जोडा जस।
—पी प्र
उ०—४ वस अजुआळ प्रतिपाळ थै बीठला, रामचद राजि मुर भुवण राईआ। पुराणा डोकरा अरज साभळि परी, भाजिहो भाजि मेचक भाईया।
—पी. प्र

बीठुळ, बीठुल—देखो 'विट्ठळ' (रू भे)
उ०—१ रिखव नाभ सुत निमो अलख अणजीत अणकळ, ब्रह्मा सेस महेस दत जोगी धारा थळ। इसो आप अविधूत जिको अन सोईया जायो, बीठुल सा वादतै, गरव गोरखि गमायो।
—पी प्र
उ०—२ भरथ पिता दुख भाळि, हुआे बीठुळ वनवासी। सरगि गियो दसरथ, अनत कीधो अविणासी।
—पी. प्र.
उ०—३ बीठुळ विसवनाथ धन जदपत केसव स्रीवर, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहर। अविगत आदि जुगाद उपावण अकळ अपपर, समरि समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसर।
—पि प्र
उ०—४ मछ कछ वराह माहव, नारसिंघ अनिदय। वेसवांण दुझ्झ बीठुल, रामचद निरदय, कान्ह बुद्ध कलकि केसव, भोम टाळण भारय।
—पि. प्र

बीठुळनाथ, बीठुलनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू भे)

बीठुळु, बीठुलु—देखो 'विट्ठळ' (रू भे)

बीठुळुनाथ, बीठुलुनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू. भे)

बीठौ–वि.—वेष्टित, घिरा हुआ।
उ०—विराजै नगा ओप सू रूप बीठौ, दळा नाथ स्रीनाथ रो रूप

दीठौ । वर्ण साभळी गात झीणं वसन्नं, तिसो भूखणं जोत मोती रतन्नं । —रा. रू.

२ खराब ।

वीडगाण—देखो 'विडग' (रू. भे)

वीडरणौ, वीडरबौ–क्रि. स.—क्रोध करना, गुस्सा करना, क्रोध में विकराल रूप धारण करना ।

वीडरणहार, हारौ (हारी), वीडरणियौ—वि० ।
वीडरिग्रोडौ, वीडरियोडौ, वीडरघोडौ—भू० का० कृ० ।
वीडरीजणौ वीडरीजबौ—कर्म वा० ।

वीडरियोडौ–भू का कृ —क्रोध किया हुग्रा, गुस्सा किया हुग्रा, क्रोध मे विकराल रूप धारण किया हुग्रा ।

(स्त्री वीडरियोडी)

वीडन–स पु —रस्सी के छोर पर लगाया जाने वाला काठ का छोटा टुकडा ।

वीडवसदेस–स पु —एक प्रदेश विशेष । (प्राचीन)

उ०' वीडवसदेस ग्राम सहस्र ७०, गूजरात ग्राम सहस्र ७०, पारीथलदेस ग्राम सहस्र ७०, मालवा ग्राम लख १८ सहस्र ९२, गगा पारदेस ग्राम सहस्र २४, जेजाहुति सहस्र २४, कुकण सहस्य ९, मलयदेस ग्राम लख १, । —व. स

वीडाणी– देखो 'विडाणी' (रू भे)

वीढ—१ देखो 'भीड' (रू भे)

२ देखो 'वेढ' (रू भे)

उ०—१ ग्रगनि मे वाण छूटा ग्रमग्ग, वळी वीढ विहुवै वळा । पछिवाण हूवौ पूठी रखो, 'गजण' ताम दिल्ली दळा ।
—गु रू व

उ०—२ पाना मुख वाजित्र हिलै वाना वैरक्का, मेघ रग मातग वीढ ऊढग कटक्का । पली जेफ सादळा हिली फौजा घमसाणा, व्योम रजी वित्थरी धमस वज्जी केकाणा । —रा रू

वीढण—देखो 'विढण' (रू भे)

वीढणौ, वीढवौ–क्रि स —१ लपेटना, लिपटाना ।

उ०—दही री रजवी दीजै छै । तरगसा माहा सीका काढजै छै । वेवडा ठीहा चाढजै छै वीच खीसरी भरती दीजै छै । सूतसु वीढ सीका ऊपर चाढजै छै । ग्राडै हाथ डोरा दीजै छै इण भात सूळा वर्ण छै । वडी देवगिरी थाळी में उतारजै छै । —रा सा स.

२ देखो 'विढणौ, विढवौ' (रू. भे)

उ०—वीढण सगराम री हाम बाकारता, माहा दोय जाम होय गइ मौने । जोधपुर जहर रा वीज वाया जिकै, तिकै फळ चखाउ ग्राव तीने । —सैरसिंग कोळसिंघ री गीत

३ देखो 'वेढणौ, वेढवौ' (रू भे)

४ देखो 'वीडणौ, बीडवौ (रू भे.)

वीढणहार, हारौ (हारी), वीढणियौ—वि० ।
वीढिग्रोडौ, वीढियोडौ, वीढघोडौ —भू० का० कृ० ।
वीढीजणौ, वीढीजबौ —कर्म वा० ।

वीढियोडौ—१ लपेटा हुग्रा, लिपटाया हुग्रा ।

२ देखो 'विढियोडौ' (रू भे.)

३ देखो 'वेढियोडौ' (रू. भे)

४ देखो 'वीडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वीढियोडी)

वीण–स. स्त्री [स वीणा] १ सपेरो के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष, महुवरि ।

उ०—तद काया हुय जोगी हुवा । मुद्रा घाती । गुजरात गया । ग्रै प्रोहित दीदारु, सखरा पण । ग्रर वीण ग्राछी वजावै । तद सहर माहै वखाण हुवौ,–जु जोगी पण भला, वीण ग्राछी वजावै ।
—नैणसी

२ वासुरी, मुरली ।

३ भैरूजी के भौंपो के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष ।

४ मसक से मिलता जुलता एक फूक वाद्य विशेष ।

५ देखो वीणा' (रू भे)

उ०–१ हस गवण कदळी सुजघ, कटि केहर जिम खीण । मुख ससहर खजन नयण, कुच स्रीफळ कठ वीण । —ग्रग्यात

उ०—२ सहज मदळ जित धमकही, वाजै ग्रनहद वीण । नोरगी वाणी तन रतन, साध भगत लोलीण । —ग्रालमजी

उ० —३ चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचग, विचि हीण । मदिर बोली मारुवी, जाणि भणक्की वीण । —ढो. मा.

रू भे —बीण, वीन, वेण, वेणा, वेणु वैणू, वैण ।
ग्रल्पा, —वेणका

वीणउसिउ, वीणउसीउ–स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ० वीणउसीउ चीणउसीउ मलउसीउ ग्राउचीयउ मूगनउ मयउ मगलिक मेदियउ सीलउर सिंहलउरउं वइरागउ हीरागरउ फुल्लयागरउ पूतलीउ बहूमूल घूणोलिय मीणीय फाल फूटडउ रातउ फूटडउ सूपउती मेघावलि मेघडवर पद्मावलिपदमोत्तर इत्यादि वस्त्राणि ।
—व. स.

वीणकार–स. पु —गवैयो के ग्रन्तर्गत एक भेद जो वीन बजाने का पेशा करते हैं । (मा मा)

रू भे —वीणाकार, वीणिकार ।

वीणणौ, वीणवौ–क्रि स —१ देखो 'विणणौ, विणवौ' (रू. भे)

उ०—१ सु पाछिली पहर छै। आ फूलि सापडि नैवाजोट ऊपरि वैठी छै। छूटा केस छै। उवाहणी लाल घाघरौ छै। ढोलै कसणां काचवौ छै। वैठी थाळी मे चावळ वीणै छै।
—कावळ जोईयै नै तीडो खरळ री वात

उ०—२ तठा उपरायत इलूरा री कूडी तेजवळ रौ घोटौ धोय तयार कीजै छै। मागण वीण मोकळा पाणी सू धोयजै छै। फेर कोरी हाडी मे रांधजै छै। तठा पछै घोटजै छै। —रा सा स

उ०—३ वसत पचमी पछै, नीकळै काची केळा। कूपळ दातण तणी, रगीली रुत री वेळा। फागण उतरै धीव, गवरज्या पूजण चावै। वीण लासवा फूल, चढा चद्रायण गावै। —दसदेव

उ०—४ तसु रग वास तसुवास रग तण, कर पल्लव कोमळ कुसुम। वणि वणि माळिणी केसरि वीणति, भूली नख प्रतिबिंब भ्रम।
—वेलि

३ देखो 'बणणी, वणवी' (रू. भे)
४ देखो 'बुणणी, बुणवी' (रू भे.)
वीणणहार, हारौ (हारी), वीणणियौ—वि०।
वीणिम्रोडो, वीणियोडौ, वीण्योडौ—भू० का० कृ०।
वीणीजणी, वीणीजवौ—कर्म वा०।

वीणत, वीणती—स. स्त्री. [स विनति] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

उ०—१ तूं थो नोज मरै ए म्हारी धीवडी, सूरज तो सुणैला थारी वीणती, आ तो वेमाता सुणैला पुकार, लाय दीनी भवर म्हीणोटियौ। —लो. गी

उ०—२ नी तो म्हे ऊदरा नै घरै निवतनै लायो अर नी म्हे मिन्नी नै ऊदरा मारणा सिखाया। थारा भगवान आगै जाय वीणती करौ जको जिनावरा नै जीव मारणा सिखावै। थारै पाल्या जै मिन्नी मानती व्है तो उणनै मनावौ। —फुलवाडी

उ०—३ तरै जैतेजी नु वीरमदे कहाडियौ—राव सु वीणती करौ नै म्हा कन्हा राव रा हीडा करावौ। ज्यूं थे चाकरी करौ छो त्यु म्हे ही राव री चाकरी करा। —राव मालदे री वात

२ नम्रता, विनम्रता।
रू भे.—विणति, विणती, वीनती।
अल्पा,—वीनतडी

वीणधर—देखो 'वीणाधारी' (रू भे.)

वीणवणौ, वीणववौ—१ देखो 'विनवणौ, विनववौ' (रू भे.)
२ देखो 'विणणी, विणबौ' (रू भे)
वीणवणहार, हारौ (हारी), वीणवणियौ—वि०।
वीणविम्रोडौ, वीणवियोडौ, वीणव्योडौ—भू० का० कृ०।
वीणवीजणी, वीणवीजवौ—कर्म वा०।

वीणवियोडौ—१ देखो 'विनवियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'विणियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री वीणवियोडी)

वीणां—स पु.—१ कपास का पौधा व कपास का डोडा।

उ०—ऊपर छोतरा, गोहू, तरकारी हुवै। पाणी मीठौ। वीणां फागुणिया-मूग, जवार, सेलडी सो हुवै छै। —नैणसी

२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

वीणा—सं. स्त्री. [स] १ प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध तारवाद्य। (अ मा)

उ०—१ वीणाधर रहजाई गावै किण भात, तराज पर नह आवै नारद वीणा री तात। जिणनै सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरग अो भमग वन पाताल सूं आवै। —रा सा स.

उ०—२ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अनेक राग रग वधाई वाटीजै छै। राय अगण धोलहरै गेहणी घणा मगळाचार गीत नाद उमाइची गावै छै। छत्रीस वाजा पच-सवदा वाजै छै। ताहरा नाम तती, वीणा, किनरी, तबूरी, नीसाण एतो पाच सवदा आगै छत्रीस वाजा रा नाम कहै छै। —रा सा. स

उ०—३ ताल म्रदग तबूरे, सुर वीणा वीणाधरि सुदरि। हरखत नृपत हजूर, सर्भ सलाम अलाप कीध सुर। —सू प्र

२ बीन।
३ निसाणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ७ गुरु और ९ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—कीला, लीला, थिरा कुमारि, वीणा, रगी, चगी, वारि। विषा, माळा, वाळा, वाम नीसाणी रा वारा नाम। —पि. प्र.

४ मध्य लघु की पाच मात्रा का नाम। (SIS)
५ पुरुषों की ७२ कलाओ मे से एक। (व स)
६ विद्युत, विजली।
रू भे.—वीण, वीन, बीण, बीन, वीणा, बीणा, वेण, वेन, वैण, वैन, वैण, वैन, बीण, वीन, वीण, वीणा, वेण, वेणा, वेणु, वेणू, वैणा, वैन, वैण, वैणा।
अल्पा,—वेणका, वेणका।

वीणाकार—देखो 'वीणकार' (रू. भे.)

उ०—दक्षिण दिसि तूरी रहित, हीण अगूठउ हत्थि। वीणाकार वाइ सुसर, तास दत दोई नत्थि। —मा का प्र.

वीणादड—स पु [स.] वीणा नामक तारवाद्य के मध्य भाग का लबा दड, प्रवाल।

वीणाधर, वीणाधरि, वीणाधार, वीणाधारी—वि. [स. वीणाधारिन्] (स्त्री वीण धारिणी)

१ वह जो वीणा रखता और बजाता हो।

उ०—ताल म्रदग तबूर, सुरवीणा वीणाधरि सुदरि। हरखत नृपत हजूर, सर्भ सलाम अलाप कीध सुर। —सू. प्र.

उ०—२ वीणाधर सहजाई गावै किण भात, तराज पर नह श्रावै नारद वीणा री तात । जिणनै सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरग श्रो भमग, वन पाताळ सूं श्रावै । —रा. सा. स

स पु.—१ नारद ।

२ भैरूजी के पुजारी, 'भोपे' ।

स स्त्री —३ सरस्वती ।

रू. भे —वीणधर ।

वीणानिनाद-स. स्त्री [स.] स्त्रियों की चौसठ कलाश्रो मे से एक ।

उ०—ग्रहोपचार, व्याकरण, परिनिराकरण, रधन, केसबधन वीणानिनाद, वितडावाद, अकविचार, लोकव्यवहार, प्रहेलिका, स्त्री चतुरसस्टिकला । —व स.

वीणापाणि, वीणापांणी-स. पु. [स वीणापाणि] १ नारद ।

२ भोपा ।

स स्त्री.—३ सरस्वती ।

रू भे.—वेणापाणि, वेणापाणी ।

वीणाप्रसेव-स पु [स वीणा+प्रसेव] वीणा मे लगी वह गट्टी जिसे श्रागे पीछे करके तार से निकलने वाले स्वर को तीव्र या मद किया जाता है ।

वीणार-स पु —१ प्रत्येक चरण में प्रथम एक तगण श्रोर बाद में सात भगण अत में एक लघु श्रोर एक गुरु सहित २६ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त ।

उ०-प्रथम तगण जगण सपत, लुघ गुर सारा लारि । श्राखर बीस छ श्रै वहा, वदा छद बीणार । —पि प्र

२ घुडसवार ?

उ०—१ भड तुरग वीणार, चढै माफी गज केसर । फौज लगै फूलियै, दीध परराठा पस्सर । —गु रू ब

उ०—२ श्रीस हजार तुरग नर, मारू धर बीणार । धडहडियो मडळ धरणि, चडियो राजकुंवार । —रा. रू.

वीणावस-स पु [स वीणावश] एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—' देहरि दडकलस श्रामलसारा सोना तणा जलकइ, जलदिरिणि कुलवधू तणै पागि नूपर खलकइ सडिइ कीरत्तिस्तभ दीसइ, लोकहिया विहसइ, मेघ मल्हार राग गाइय, वीणावस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ । —व. स.

वीणावती-स स्त्री. [स] वीणावादिनी सरस्वती ।

वीणावाद, वीणावदक-वि [स. वीणा+वाद व वादक] वीणा बजाने वाला ।

वीणावादनी, वीणावादिनी-स. स्त्री [स वीणावादिनी] वीणावती सरस्वती ।

वीणासर, वीणासुर-सं. पु [स. वीणा+स्वर] वीणा को बजाने से उत्पन्न ध्वनि, वीणा की झंकार ।

उ०—वीणासुर सहुए करची, तत उतारचा राग । पिण किणही ना नाद सु, कुमरी वित्त न लाग । —श्रीपालरास

वीणास्य-स. पु. [स वीणा+श्रास्य] वीणा रखने वाला, नारद-मुनि ।

वीणाहस्त-स. पु. [स वीणा+हस्त] शिव, महादेव ।

वीणि—१ देखो 'विना' (रू भे.)

उ०—१ थळ माथै निवाण करि, नर काय लीडै नीर । नाळै खोळै न मिळै, रीणायर वीणि हीर । —वील्होजी

उ०—२ भोजन दान सुभाव विणि, दिल कपटी श्रतरि दिवै । जप वीणि जमवारो इकरथ, सुरिजन कवि साची कवै ।

—सुरजनदास पूनियो

२ देखो 'वीणी' (रू भे.) (उ र.)

३ देखो 'वेणी' (रू भे.)

उ०—एक नाखई एकाउली हार, एक ऊतारइ सवि सिणगार । तांणइ वीणि विछोडइ दोर, एक लूस्या दिसइ वदोर ।

—का. दे प्र

वीणिकार—देखो 'वीणकार' (रू भे)

उ०' ' चामरधारिणी वारविलासिनी महल्लकल्लिका उपाध्याय गायन बद्धकार श्रालविणिकार वीणिकार वसकार चतिकार मानताळकार वडाउजिय पखाउजय पाटहिकप्रमुख राजलोक पौरलोक चक्रवालि । —व स

वीणियोडी—१ देखो विणियोड़ी' (रू भे)

२ देखो 'वणियोडो' (रू भे)

३ देखो 'वुणियोडी' (रू. भे)

वीणी-स. स्त्री १ दो कपाटों को मजबूत बद करने के लिए उनके पीछे लगाई जाने वाली श्रर्गला ।

२ चौकोर छिद्र करने का एक कीला विशेष ।

३ हाथ की कलाई ।

४ देखो वेणी' (रू भे.)

रू भे.—वीणी, वेणि, वेणी, वीणि ।

वीणो-स. पु —एक प्रकार का तार वाद्य विशेष ।

२ स्त्रियो के शिर पर चूडामणि (बोर) के नीचे लगाया जाने वाला प्लास्टिक का टुकडा, जो चूडामणि (बोर) के शिर मे गडने से बचाने हेतु लगाया जाता है ।

३ स्त्रियों के शिर के श्राभूपण टीके का ही दूसरा नाम ।

रू भे.—वीणो, वेणो, वैणो ।

वीत–स स्त्री. [स. वीत] १ महावत द्वारा हाथी को अंकुश मार कर पैरों से मारने की क्रिया। (डिं. को.)

[स. वीत] २ हाथी, घोडा या सैनिक जो युद्ध के अयोग्य हो।

वि [स] ३ स्वतंत्र या मुक्त किया हुआ. ४ गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ ५ पसंद या स्वीकृत किया हुआ।

६ युद्ध के अयोग्य।

रू भे —'वीत'

७ देखो वित' (रू भे)

उ०—१ हुसियो जग आसक हुए, वसियो खोवण वीत। रसियो नागी राड सू, फसियो होण फजीत। —बां. दा

उ०—२ हाजर हिंदूवे तुरक, लिये न पर भुंइ लोहि। चीत वटावण हेक तूं, चीत वटावण कोडि। —गु. रू ब

उ०—३ पेसकसी सिर आदरै, वधै कर परवाण। पाय लगी 'अगजीत' रै, वीत धरै चहुवाण। —रा रू

उ०—४ वाटी वीत आपणी वारै, लाछ नही हालेला लारै। थिर ग्रे दिन नह रहसी थारै, तू नर क्यो न ईसवर चितारै।

—बक्सीराम लाळस

वीतक, वीतग–वि —बीता हुआ, गुजरा हुआ।

उ०—१ हु तुज आगळ सौ कहू कन्हैया ! वीतक दुख री वात रे।

—गिरधारी लाल

उ०—२ सैत्रुंजे नायक वीनति साभलो, सीरिखहेसर स्वाम। दीनदयाल तुम्हाने दाखिवु, अंतर वीतग आम। —ध व. ग्र

उ०—३ तु ग्यानी तो पिण तुझ आगै, वीतग कहियै वात जी चौग्रीसै दडके हु फिरियो, वरण तेह विरयात जी। —ध व ग्र.

उ०—४ तसु जातिपाति नही काई नही कोई जेहनै भाई, बलि वाप न काई माई। हुँ तुझ नै आवी मिलियो, वीतग दुख सहु टलियो, घर आगण सुरतरु फलियो। —वि. कु

वीतगराग, वीतगरागी—देखो 'वीतराग' (रू भे)

उ०—मेरू विचैकरि पूरव पच्छिम दोइ विभाग, सोलह सोलह विजय तिहा विचरै वीतगराग, सासतै चौथै आरै तारै स्री अरिहत, एहवै महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत। —ध व. ग्र

वीतणो, वीतबो—देखो वीतणो, वीतबो' (रू भे)

उ०—तरण न्रप पुज सथानक तीजे, वीरचद्र राजा वरणीजे। इक लिस भाग वीतिया आधो, लगि अनुराग सुपन न्रप लाधो।

—सू. प्र.

उ०—२ बीतो अधूरा वार पूरा वेध सूरा वच्चए, सेलं प्रहार धार सार मार मार मच्चए। वग्गा खडग्गे दुहु वग्गे काळ रंग वीरय, अच्छरा उमंगे दूर अंगै चाव रंग चीरय। —रा रू.

उ०—३ पूत पिता एकै थया, थें पढ जावो देस। बोला कोला वोलिया, वीतो वयण विसेस। —रा. रू.

वीतणहार, हारो (हारी), वीतणियो—वि०।

वीतिग्रोडो, वीतियोडो, वीत्योडो—भू० का० कृ०।

वीतीजणो, वीतीजवो—भाव वा०।

वीतद्वेख, वीतद्वेस–वि [स वीतद्वेष] द्वेष रहित, बिना द्वेष का।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो। किणहि डावरा रै माथा मे दीधी। जद तो लोक उण नै ओलभो देवै। भला आदमी छोहरा ना माथा में क्यू दे। अनै किण ही डावरा ना हाथ में लाडू दियो। तथा मूलो दियो। उणानै कोई वरजै नही। ओ राग ओलखणो दोहरो. अनै ऊ द्वेस ओलखणो सोहरो। तिण सू वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिट्या द्वेस तो पहिलाइज मिट जाय। —भि द्र

वीतभय–स पु —१ एक नगरी का नाम।

उ०—अतेउर परिवार लै, भडोपकरण मभाय। 'वीतभय' सेती निकली, 'चपा' नगरी जाय। —जयवाणी

२ भगवान् विष्णु का विशेषण।

वि.—जिसका भय समाप्त हो गया हो, भय रहित।

उ०—वीतभय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय। तिणि रातइ पोसउ कीयो रे, वीर वादण चित लाय रे। —स. कु.

वीतराग–वि. [स वीत+राग] १ जिसे आसक्ति न हो, निस्पृह, कामनाशून्य।

उ०—१ राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो। किणहि डावरा रै माथा में दीधी। जद तो लोक उणनै ओलभो देवै। भला आदमी छोहरा ना माथा मैं क्यूं दे। अनै किणही डावरा ना हाथ मे लाडू दियो। तथा मूलो दियो। उणनै कोई वरजै नही। ओ राग ओलखणो दोहरो, अनै ऊ द्वेस ओलखणो सोहरो। तिण सूं वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिट्यो द्वेस तो पहिलाइज मिट जाय। —भि द्र.

उ०—२ बारमी भावना एम भावइ, अरिहत वीतराग देव रे। धरम ना ए खरा आराधक नाम जपइ नितमेव रे। —स. कु.

२ जितेन्द्रिय।

स. पु —१ बुद्ध का एक नाम।

२ जैनियो के प्रधान देवता का नाम, जिन भगवान।

उ०—१ आगइ तीह ना सरिग्रा काज, जेहे कहिउ कीधउ वीतराग। अठ करम जरा नी ओडी वेलि, गिया इ जि सिदिइ पेलावेली।

—वस्तिग

उ०—२ जिन सेव च्यारै अरध पुस्कर, माहि पच्छिम भाग ए। तिहा मेर विज्जूमाल चिहू दिसि, विचरता वीतराग ए।

—ध व. ग्रं

उ०—३ पटणी पारिख सूरजी सघ सू, जात्र करी लाभ सुजगीमइ समय सुदर कहइ साचउ मइ जाण्यउ, वीतराग देव विसवा वीसइ —म कु

उ०—४ सूत्र सुणउ हित आणी, एती वीतराग नी वाणी हो। जस कल्पावतसिका नामइ सोहइ उवग प्रकामइ हो। —वि कु

रू भे—वीतराग, वीतगरागा, वीतगरागी, वीतरागी, वीयराग, वीयरागी वीयराय।

अल्पा, वीतरागौ वीतरागौ।

वीतरागी—देखो 'वीतराग' (रू भे)

उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जाण्या, दुतियं कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी। —स्रोसुखरामजी महाराज

वीतरागौ—देखो 'वीतराग' (अल्पा, रू भे.)

उ०—भार वाहक नइ कह्या भला, वीमामा वीतरागौ जी। माथा थी मूक्इ कर्घ सहइ, मारग माहि लागौ जी। —स कु

वीतसूत्र-स. पु [स] जनेऊ, यज्ञोपवीत।

वीतसेन-स पु [स] राजा पुरुरवा के पिता का नाम।

वीतसोक-वि स [वीत+शोक] जिसे शोक न हो, शोक रहित।

स पु—अशोक नामक वृक्ष विशेष।

वीतसोका-स. स्त्री [स वीतशोका] एक नगरी का नाम।

उ०—तिम हिज नवमी वच्छ विजय वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा श्रीजो बाहु नमु धरि नेह। नलिनावरत्त चउवीममी पश्चिम विदेह वखाण, वीतसोका नयरी तिहा चौथो सुवाहु सुजाण। —ध व ग्र

वीतहव्य-स पु [स] १ शुनक का पुत्र एव धृति का पिता एक जनकवशीय राजा।

२ हैहय नामक शर्यातिवशीय वत्स का पुत्र।

वि० वि०—मतान्तर मे यह हैहयवशीय तालजघ राजा का पुत्र, सुविख्यात हैहय सम्राट कार्तवीर्य का प्रपौत्र एव जयध्वज राजा का पौत्र था। परशुराम के क्षत्रियसहार के समय यह अपने पिता के साथ हिमालय मे छुप गया था एव परशुराम के निवृत्ति होने पर इसने माहिष्मती नामक नगरी बसाई थी। इसे अपनी दश पत्नियों से प्रत्येक से दश दश पुत्र उत्पन्न हुए थे। जिन्होंने काशि देश के हर्यश्व, सुदेव एव दिवोदास राजाओ को पराजित किया। इसके पुत्रो का वध काशि के दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने किया था, उस समय इसने भृगुऋषि के आश्रम में छिप कर अपनी जान बचायी थी एव उसके बाद इसने ब्राह्मणत्व स्वीकार किया एव भृगुऋषि के कृपाप्रसाद से ब्रह्मर्षि बना था।

वीतहोत, वीहोतर. वीतहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू भे.) (ना. मा.)

वीताणौ, वीतावौ—देखो 'विताणौ, वितावौ' (रू भे)

वीताणहार, हारौ (हारी), वीताणियौ—वि०।
वीतायोडौ—भू० का० कृ०।
वीताईजणौ, वीताईजवौ—कर्म वा०।

वीतायोडौ—देखो 'वितायोडौ' (रू भे)

(स्त्री, वीतायोडी)

वीतावणौ, वीतावबौ—देखो 'विताणौ, वितावौ' (रू भे)

उ०—एक डकी नौवत एक री एक अगरेजी राज री सुण नै सूरवीरा आपरी जात री नै कुळ री सुभाव वीरपणौ भूला और वा सूरमा आळस मे अर अैम मे सरीर निररथक वीतावणौ सुरू कीधौ। —वी. स. टी.

वीतावणहार, हारौ (हारी), वीतावणियौ—वि०।
वीताविओड़ौ, वीतावियोड़ौ, वीताव्योडौ—भू० का० कृ०।
वीतावीजणौ, वीतावीजबौ—कर्म वा०।

वीतावियोडौ—देखो 'वितायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वीतावियोडी)

वीति-स. पु [स. वीतिः] १ घोडा अश्व। (२) खाद्य पदार्थ, भोजन।
३ यज्ञ, हवन। ४ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
५ चमक, दीप्ति, कान्ति।
६ अग्नि, आग।
७ गति, चाल।
८ पैदावार, उपज।
९ खाने पीने की क्रिया, उपभोग।
रू भे—वीति, वीती, वित्ति, वित्ती, वीती।

वीतिमत-स पु [स वीतिमत्] रैवत मनु का पुत्र, एक राजा।

वीतियोडौ—देखो वीतियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वीतियोडी)

वीतिहोत, वीतिहोतर, वीतिहोत्र-स पु [स वीति+होत्र] १ अग्नि, आग। (२) हैहयवशीय वीतहव्य राजा का नामान्तर। (३) प्रियव्रत एव वर्हिष्मती के पुत्रों मे से एक जो रमणक एव धातकी का पिता था। (४) सूर्य, सूरज। (५) इद्रसेन राजा का पुत्र एव सत्यश्रवस् राजा का पिता, एक राजा (६) सुकुमार राजा का पुत्र एव भर्ग राजा का पिता एक राजा। (७) युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि।

रू भे—वितिहोत, वितिहोतर, वितिहोत्र, वीतहोत, वीतहोतर, वीतहोत्र वीतिहोत, वीतिहोतर, वितिहोतर, वितिहोत्र। वित्रहोत, वित्रहोत्र वीतहोत, वीतहोतर, वीतहोत्र, वीतीहोत, वीतीहोतर, वीतीहोत्र, वीत्रहोत, वीत्रहोत्र।

वीती—देखो 'वीति' (रू भे) (ग्र. मा)

वीतीहोत, वीतीहोतर वीतीहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे)

वीतोडो—देखो 'वीतियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वीतोडी)

वीत्थरणौ वीत्थरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे)

वीत्थरणहार, हारौ (हारी), वीत्थरणियौ—वि०।

वीत्थरिग्रोडो, वीत्थरियोडो, वीत्थरयोडो—भू० का० कृ०।

वीत्थरीजणौ, वीत्थरीजबौ—भा० वा०।

वीत्थरियोडो—देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वीत्थरियोडी)

वीत्योडो—देखो 'वीतियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वीत्योडी)

वीत्रहोत, वीत्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू भे.) (ह ना. मा)

वीत्रोट-स. पु—मनमुटाव, वैर।

उ०—डेरा नजीक-नजीक हुवा। बीच परधान फिरीया, वात वणी नही। वीरमदे राव मालदे वीच परधान जुदा फिरीया। राव 'कूंपै' 'जैतै' वीच ग्रादमी फिर, घणी चाकरै वीत्रोट घातियो। राव मालदे डेरा २ पाछा कीया। —नैणसी

वीथरणौ, वीथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू भे.)

वीथरणहार, हारौ (हारी), वीथरणियौ—वि०।

वीथरिग्रोडो, वीथरियोडो, वीथरयोडो—भू० का० कृ०।

वीथरीजणौ, वीथरीजबौ—भाव वा०।

वीथरियोडो—देखो विस्तरियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीथरियोडी)

वीथि, वीथिका, वीथी-स स्त्री [स वीथि, वीथिका, वीथी] १ मार्ग, रास्ता, गली।

२ पंक्ति, कतार।

३ हाट, दुकान।

४ चित्रशाला।

५ वीथी या सडक के रूप मे माने जाने वाले ग्राकाश में नक्षत्रो के रहने के स्थानो के कुछ विशिष्ट भाग।

६ कागज या दीवार जिस पर चित्र बनाया जाता है।

७ सूर्य के चलने का ग्राकाश मार्ग।

८ सत्ताईस प्रकार के दृश्य काव्यो या रूपको मे से प्रकार का रूपक जो एक ही ग्रक का ग्रौर एक ही नायक का होता है। इसमे शृंगाररस ग्रधिक होता है।

रू भे—वीथि, बीथी।

वीदस-स. पु.—श्येन, बाज ग्रादि शिकारी पक्षी।

वीद-स. स्त्री.—१ हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—जळ छोळ चीर भीनो सुजाण, वीद पुछी सासु वीमळ वाण। पोसाक तुज किम नीर पास प्रगट्यो मोय इचरज चव प्रकास। —रामदान लाळस

२ देखो 'वीद' (रू भे)

उ०—खित हर ग्रपच्छर वीद खटै, फिरमाळ बहै वरमाळ कटै। निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै। —रा रू

वीदग, वीदग्ध-स पु [स विदग्ध] १ कवि, पडित। (डि को)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सारनै। कहै मछ भला रूपक करो, ग्रै दम दोस निवारनै। —र रू.

उ०—२ दूहा लघु गिण ग्राधकर, ज्या मझ घट कर एक। रहेस बाकी नाम रट, वीदग ग्रघट विसेक। —र. ज प्र

२ चारणो का एक पर्यायवाची नाम।

उ०—१ जिका भला धन जोडियौ, ऊधमियौ निज ग्राथ। कीरत पोहरै करन रै, वीदग ऊठै वाच। —वा. दा

उ०—२ देवळ विण देव करम विण दरसण, वप वनिता भरतार विना। बामण विण वेद, विद्या विण वीदग, मौज धनह विण जिसी मना। —त्याग प्रसस। री गीत

रू भे—विदग, वीदग, विदग, विदग्ध।

वीदळ, वीदल—देखो 'विदळ' (रू भे)

उ०—भिडज्या भड पारख साल भरै, करवा जुध वीदल मेलि करै। भर रोस जिदै धिक वैण भणै, गैहै राख खळा तिलमात गिणै। —पा प्र.

वीदा—देखो 'वीदावत' (रू भे)

उ०—१ सझै जुध 'वीदह' रा खळ साळ, हिचै खग भाग चदोत 'हिंदोळ'। रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह, नरावत नाहरखा नरनाह। —सू प्र.

उ०—२ ऊदा कै वीदा भड उदार पडियार कमा मडळा पमार। साखला गोड हाडा सधीर, भाटी चवाण निरवाण वीर। —पे रू

वीदावटी—देखो 'वीदावाटी' (रू भे.)

वीदावत-स. पु—राठोडो की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

रू. भे—वीदा, बीदावत, वीदा।

वीदावाटी-स. स्त्री—छापर द्रोणपुर का वह प्रान्त जो राव जोधा के पुत्र वीदा के ग्रधिकार मे था। (ऐतिहासिक)

रू भे.—वीदावटी ।

वीदुखण, विदुसण—देखो 'विध्वस' (रू भे)

वीघणौ, वीघबौ—१ देखो 'विंघणौ, विंधवौ' (रू. भे) (उ. र)

उ०—नागरचाल रा नीपना गोहू, वजर कठकालिग्रा मूछा रा। ग्रावारी सिलाक हुग्रे तिण भाति रा, वारा वारा वरसा रा डावडा रा कान वीधीजै। इण भांति रा पाच पाच मण, दस दस मण गेहू, चावळ ग्राडिग्रा जाबमा घालिग्रा रोळीजै छै। —रा सा स.

२ देखो 'वीधणौ, वीधवौ' (रू. भे.)

उ०—१ पख जाति जीवन लाभइ पार, ग्रनवरतु तीह नउ हुइ सहारु। दीठउ सावज वीधइ वाणि, दुख तणी ऊघाडी खाणि —वस्तिग

उ०—२ पाच सइ धनुख देह परिमाण, तेत्रीस सागरोपम सातमी जाणि। पाप तणा फल एवडा होइ, वज्रकटि वीधिउ छइ सोउ —वस्तिग

उ०—३ नेहइ नव भव वीधेय, दीधिय उग्रसेन राय। कुग्ररि भलीय राजीमति, सीमति तिहुयण माहि। —जयसेखर सूरि

उ०—४ वीधिउ मन रखि नवमइ, नवमइ निज नेठाउ। देई दान सवत्सर, मत्सर मिल्हिय नाहु। —जयसेखर सूरि

वीधणहार, हारौ (हारी), वीधणियौ—वि०।

वीधिग्रोडौ, वीधियोड़ौ, वीध्योडौ—भू० का० कृ०।

वीधीजणौ, वीधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीधि—देखो 'विधि' (रू भे.)

उ०—१ सुजस सुणाई सोभ, पथ ग्रोपम चडै इधकाई। धन्य ध्रम दियै सो धन्य, वीधि सेंई लहैं वडाई। —वील्होजी

उ०—२ जोग नही पाखड, कोप काया मा वसै। जोग नही पाखड, जीव वोहू वीधि तरसै। जोग नही पाखड, वीर जपि गांव जळावै। जोग नही पाखड, कूड कथि दुंनी डुलावै। —वील्होजी

वीधियोडौ—१ देखो 'विधियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वीधियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वीधियोडी)

वीन—१ देखो 'बींद' (रू भे,)

उ०—गूद लाडू लै र वीन वण, कर घमड फुरती घणी। जाय ग्रसधै ग्राम गवाडै, परण पधारै वीनणी। —दसदेव

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू भे)

४ देखो 'विनय' (रू. भे.)

वीनउलौ—देखो 'वदोळौ' (रू. भे.)

उ०—फिरइ वीनउला वीसलराय, वाजित्र वाजइ नीसाणी घाई जीमणवार साजत हुइ, कू कूं चदन पाका पान। कर जोडै राजा कहई, चालउ चउरासी राव की जान। —वी दे.

वींनडी, वीनणी—१ देखो 'वींदणी' (रू. भे.)

उ०—१ गूद लाडू लै' र वीन वण, कर घमड फुरती घणी। जाय ग्रसधै ग्राम गवाडै, परण पधारै वीनणी। —दसदेव

उ०—२ वसी री मा—थारै जच तो वीनणी! ग्रोझाजी नै बुलाय 'र गऊदान देय देवा। —वरसगाठ

वीनणी, वीनबौ—देखो 'विनवणौ, विनववौ' (रू भे)

उ०—१ सतगुर ग्रागल्य वीनती, करंवे लगु पाय। राहू कारण्य गुर वीनऊ, ग्राखर दयौ समझाय। —ग्रग्यात

उ०—२ गोरी नदन वीनऊ स्रीपति सुमति सुजाण। क्रसण तणै वीवाहलो, रिध सिध प्रसिध प्रमाण। —रुकमणी मगळ

वीनणहार, हारौ (हारी), वीनणियौ—वि०।

वीनिग्रोडौ, वीनियोडौ, वीन्योडौ—भू० का० कृ०।

वीनीजणौ, वीनीजबौ—कर्म वा०।

वीनतडी—देखो 'वीणती' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ वाल्हेसर सामी, मानि नै तु ग्रतरयामी। मानि नै सिवगति गामी, वीनतडी मुझ मानो। —प. च चौ.

उ०—२ सहु गच्छपति सिर छाजै, राजेस्वर पाटियइ पाटधारउ। इक वीनतडी ग्रवधारो, स्रीसधना वछित सारउ। —वि. कु

उ०—३ कायम राजा वाडी वाही, सीच्यौ सतगुर नूर। वीनतडी जकै हाजिर सिंवरै सत सुकरत का सूर। —ग्रग्यात

वीनति, वीनती—देखो 'वीणती' (रू. भे)

उ०—१ सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयौ ग्रादेस रे। वार वार वीनति करी रे, लागी पाय नरेस रे। —प. च. चौ.

उ०—२ सहज सहज हिडाय, उदो बोलै वीनती, ग्रावा गुवणि चुकाय। —ऊदोजी नैण

उ०—३ राय पासि पहिलु पहुचेई, पय पणमि वीनती करेई। साभलि वाचा मुझ भूपाल, इणि वणि ग्रछउ ग्रम्हि रखवाल। —सालिभद्र सूरि

उ०—४ ग्राडो सोवो ग्रावियो, मिरजै सहत मुकीम। वळ तज दक्खै वीनती, भूप परक्खै भीम। —रा. रू.

उ०—५ हरि जस रस साहस करै हालिया, मो पडिता वीनती मोख। ग्रम्हीणा तम्हीणै ग्राया, स्रवण तीरथै वयण सदोख। —वेलि

वीनमणी, वीनमवौ—देखो 'विनवणौ, विनववौ' (रू भे)

उ०—१ तापरि खोजो वीनमे, बूझो राघव व्यास। सब लक्षण गुण पदमणि के, जाणै सास्त्र ग्रभ्यास। —प. च चौ

उ०—२ बादल इण परि वीनमें, मात नहीं हु वालो रे। रिणवट ग्रालिम साह सू, जोइ करू ढकचालो रे। —प. च चौ.

उ०—३ ग्राजि चलावै देव हइ, वचन हमारउ मानो नू मान। कर जोडै दूज वीनमे, थँ घरि चालो, नू लावो हो वार। —बी दे

उ०—४ ताहरा राजाजी भोपत ऊपरि चढण लागा। ताहरा राणीजी जसवतदैजी राजि नू वीनमियो। राजि दोहूरा की हुवो, हू जाइ ग्रर भोपति नूँ लै ग्राविस। —द. वि.

वीनमणहार, हारो (हारी), वीनमणियो —वि०।

वीनमणिग्रोडो, वीनमियोडो, वोनम्योडो—भू० का० कृ०।

वीनमीजणो, वीमीजबो—कर्म वा०।

वीनमियोडो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री' वीनमियोडी)

वीनवणो, वीनववो—देखो 'विनवणो, विनववो' (रू भे.)

उ०—१ गोरीनदन वीनवु, ब्रह्मसुता सरसत्ति। सरस वध प्राकृत कवू, द्यउ मुझ निरमल मत्ति। —का दे.. प्र.

उ०—२ कहीउ सघलउ तै ग्रवदात, महुती हरखी निसुणी वात। सखीग्र पाठि वीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ ग्राणद। —हीराणद सूरि

उ०—३ जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन वीनवीइ किसी ? हू वहूग्रर, तू जेठ ! —मा का प्र.

उ०—४ नदियां गै'री कठण लाघणी, पथ खाडा री धार। काजी महमद वीनवै, हरि भजि उतरो पार। —दीनमहमद

उ०—बे कर जोडी वीनवूं जी, सुणि स्वामि सुविदीत। कूड कपट मूकी करी जी, वात कहू ग्राप वीति। —स कु

उ०—६ एक दिन कोमल पाखडी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे ग्रावी सभा मे वीनवै रे लाल, चिरजीवो नरनाथ रे। —प च चौ.

वीनवणहार, हारो (हारी), वीनवणियो—वि०।

वीनविग्रोडो, वीनवियोडो, वीनव्योडो —भू० का० कृ०।

वीनवीजणो, वीनवीजबो—कर्म वा०।

वीनवियोडो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीनवियोडी)

वीनांण–स. स्त्री —१ रचना, कृति, सृजन।

उ०—नूर जिहा भरपूर ग्रग, कठ लोह पखाणी, चोरासी लख भख दियण, निरपख निरवाणी। घड घड भजै भी घडै, पैदास पुराणी, तुज वीनाण न जाणियै, करतार वीनाणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनाण' (रू भे)

वीनांणी–वि.—१ रचना कर्त्ता, सृजन कर्त्ता, कृतिकार।

उ०—नूर जिहा भरपूर ग्रग, कठ लोह पखाणी, चोरासी लख भख दियण, निरपख निरवाणी। घड घड भजै भी घडै, पैदास पुराणी, तुज वीनाण न जाणियै, करतार वीनाणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनाणी' (रू भे)

३ देखो 'वैनाणी' (रू भे)

उ०—१ तदै तरवार वाही। तरवार वाहता तरवार भागी। ताहरां वाळी वहै, "फेट वीनाणी, फेट वीनाणी ! भुडी घडी, भुडी घडी ! ताहरा साजण कहै—दूहा—वाळा म करि वेसास, ग्रसमर ऊजडिया तणो। वाक वीनाणी नाह, वाक तमीणी वोयउत। —चापै वाळै री बात

उ०—२ बरहासा नास धमण वाजती, घासारव साजै घमसाण। वाकडी रावत मेघ वीनाणी, ग्ररियण दळा धमै ग्राराण। —रावत मेघ सीसोदिया री गीत

वीनियोडो—देखो 'विनवियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वीनियोडी)

वीनो–सं. पु —१ सकट, तकलीफ।

२ विनय।

उ०—वीनो पीत सनेह, प्रेम निरवाहै पावन। लाज मारण ग्रहकार, सिरै चाढै सूरातन। —गु. रू.

वीपनी–स स्त्री —प्राय डेढ फुट ऊचा लाल या सफेद फूलों वाला एक प्रकार का वर्षाती पौधा, जिसके फल फलीनुमा होते हैं शरपुखा।

वीपसा, वीप्सा–स स्त्री [स वीप्सा] १ एक प्रकार का शब्दालकार विशेष, जिसमे ग्रादर, ग्राश्चर्य ग्रातुरता, रोचकता घृणा, हर्ष शोक ग्रादि भावो का बाहुल्य प्रकट करने हेतु किसी शब्द का प्रयोग बार बार किया जाता हैं।

उ०—१ चौथै पदकल पच वार चिहु, दोय वीपसा दाखो। कहै 'मछ' इम गीत गोखकर, भूप ग्रवध गुण भाखो। —र रू

उ०—२ बारह मत तुक ग्राठ प्रत, ग्राख वीपसा ग्रंत। छोनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखो ग्राखत। —र ज प्र.

उ०—३ रगण जगण गुरू लघु हुवै, जिण रै तीन तुकत। होय वीपसा चवथ तुक, ग्ररध गोखो ग्राखत। —र ज. प्र.

२ ग्रधिकता, बाहुल्यता।

३ व्याप्त होने की ग्रवस्था या भाव, व्याप्ति।

४ शब्दो की पुनरावृत्ति, शब्दद्विरुक्ति।

रू भे.—विप्सा

वीप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू भे)

वीफरणी, वीफरबो—देखो 'विफरणी, विफरबो' (रू. भे)

उ०—१ भचकै 'बखतेस' गुसै भरियौ, व्रजराज उपासक वीफरियौ। जुध जाणिक क्रोध मतै अजरै, करि दामणि धार सग्राम करै।

—सू. प्र.

उ०—२ अगडूंपरि आप जूटै वीफरै वच्छर दतूसळू कै खाटक कंसै दरसावै। इंद्र वज्र की भाट ऐमी नजर आवै। चाचरू की भचक सुंडाडडू का उपाट। कूभाथळू पर वझ्की काळ दार भुजगा की सी भाट। —सु प्र

उ०—३ कुवेंण देवी साभळ कराळ, वीफरै तिणा इम कहै वाळ। वूथा अवोट जीपै बाणास, आखाढ सिद्ध सौ करै आस।

—मा वचनिका

उ०—४ डाकरतो भरतो डकरा, धरतो मकर सघोर। वीफरतो वाकारियौ, करतो खून कठोर। —सरूपसीगजी रौ गीत

वीफरणहार, हारौ (हारी), वीफरणियौ—वि०।

वीफरिग्रोडो, वीफरियोडो, वीफरयोडो—भू० का० कृ०।

वीफरीजणौ, वीफरीजवौ—भाव वा०।

वीफरियोडो—देखो 'विफरियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीफरियोडी)

वीवरणौ, वीवरवौ—१ देखो 'भीभरणौ, भीभरवौ' (रू. भे)

२ देखो 'विभरणौ, विभरवौ' (रू भे)

उ०—मतवाळा जेम घुमंत महाभड, लोह तणी छक लालुरता। जमदूठ उठत टवै जमदाढा, वाहै आवध वीवरता। —गु रू. बं.

वीवरणहार, हारौ (हारी), वीवरणियौ—वि०।

वीवरिग्रोड़ो, वीवरियोडो, वीवरयोडो—भू० का० कृ०।

वीवरीजणौ, वीवरीजवौ—भाव वा०।

वीवरियोडो—१ देखो 'भीभरियोडो' (रू भे)

२ देखो 'विभरियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीवरियोडी)

वीभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू. भे)

उ०—ज्यानी अवकै पहरका मरद मोजाजी ढोला अवकै पहर का मरद भोत वीभचार करै छै जी भोत वीभचार करै छै जी।

—लो गी

वीभत्स—स पु [स] १ साहित्य के नौ रसो में से एक रस जिसमें घृणित एव जघन्य पदार्थों का वर्णन होता है।

२ देखो 'वीभत्सु' (रू. भे)

रू भे.—वीभच्छ, वीभछ, वीभत्स, विभत्स।

वीभत्सरस—देखो 'वीभत्स' (१)

वीभत्सु—स पु [स] १ अर्जुन का एक नाम।

२ देखो 'वीभत्स' (रू भे.)

रू. भे.—वीभत्सु, विभत्स।

वीभर—देखो 'भीभर' (रू. भे.)

वीभरणौ, वीभरवौ—क्रि. अ.—गर्जना करना, दहाडना।

उ०—रोकै अकबर राह, लै हीदु कूकर लखा। वीभरतो वाराह, पाडै घणा 'प्रतापसी'। —दुरसो आढो

२ देखो 'भीभरणौ, भीभरवौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विभरणौ, विभरवौ' (रू. भे.)

वीभरणहार, हारौ (हारी), वीभरणियौ—वि०।

वीभरिग्रोडो, वीभरियोडो, वीभरयोड़ो—भू० का० कृ०।

वीभरीजणौ, वीभरीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीभरियोड़ो—भू का कृ.—१ गर्जना किया हुआ, दहाडा हुआ।

२ देखो भीभरियोडो' (रू भे.)

३ देखो 'विभरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वीभरियोडी)

वीभळ, वीभल—देखो विभळ' (रू भे.)

वीभळियौ, वीभलियौ—वि —१ रसिक।

२ थकित, श्रात (नयन)।

३ देखो 'विभळ, विभळी' (अल्पा., रू. भे.)

रू भे—वीभळियौ।

वीभळी, वीभली—सं स्त्री —१ एक देवी का नाम।

देखो 'विभळी' (रू. भे)

वीभव—स. पु —१ अर्जुन का एक नाम। (अ. मा.)

२ देखो 'विभव' (रू भे.)

३ देखो 'वैभव' (रू भे)

वीभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

वीभववांन—देखो 'वैभववांन' (रू. भे)

वीभवसाळी, वीभवसाली—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे.)

वीभाडणौ, वीभाडवौ—देखो 'विभाडणौ, विभाडवौ' (रू. भे.)

उ०—कटक वीभाड हराहर अेकल, छित छेकल नाहरडै छेक। 'अमान' तणौ वही भात बमेखळ, टेकल भोम न छोडै टेक।

—ठाकर नवलसिंघ सेखावत रौ गीत

वीभाडणहार, हारौ (हारी), वीभाड़णियौ—वि०।

वीभाड़िग्रोडो, वीभाडियोडो, वीभाड़योड़ो—भू० का० कृ०।

वीभाडीजणौ, वीभाडीजवौ—कर्म वा०।

वीभाडियोडो—देखो 'विभाडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विभाडियोडी)

वीमाणी, वीमाबो—देखो 'विभाणी, विभाबो' (रू. भे)

वीमाणहार हारो (हारी), वीभाणियो—वि० ।
वीमायोडो—भू० का० कृ० ।
वीभाईजणो, वीमाईजवो—भाव वा० ।

वीभायोडो—देखो 'विभायोडो' (रू भे)

(स्त्री० वीभायोडी)

वीभावणो, वीभाववो—देखो 'विभाणो, विभावो' (रू. भे)

वीभावणहार, हारो (हारी), वीभावणियो—वि० ।
वीभाविप्रोडो, विभावियोडो, वीभाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वीभावीजणो, वीभावीजवो—भाव वा० ।

वीभावसु, वीभावसू—देखो 'विभावसु' (रू. भे)

वीभावियोडो—देखो 'विभायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वीभावियोडी)

वीभौ—देखो वैभव' (रू. भे.)

उ०—चू डो उठै गयो, भाग जागीयो। दिन-दिन वात रस आवती गई। चावडा देवीजी री सेवा राव चू डै निपट घणी माडी। मारग वहतो तिण सु दस गुणो हधक वहण लागो। रूपा री नदी वहण लागी। चू डा नू वीभौ जुडतो गयो। घोडा रजपूता री जोड होती गई। —नैणसी

वीमचो—देखो 'विमचो' (रू भे.) (गा. हो)

वीमळ, वीमल—देखो 'विमळ' (रू भे)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—सारीखी जोडी जुडी, भ्रा नारी भ्रउ नाह। राणी राजा सू कहइ, कीजइ भ्रउ वीमाह। —ढो मा

वीमाहणो वीमाहवो—देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू भे.)

वीमांहणहार, हारो (हारी), वीमांहणियो—वि० ।
वीमांहिप्रोडो, वीमाहियोडो, वीमांह्योडी—भू० का० कृ० ।
वीमांहीजणो, वीमांहीजवो—कर्म वा० ।

वीमाहियोडो—देखो 'विवाहियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीमाहियोडी)

वीमा—देखो 'विवांह' (रू भे)

उ०—वीजु हस बोलतो, जदै घणा दिन सू मिळतो। कुसळायत वू भतो, अमल रूपेटा गळतो। वीमा सुण आवियो, वचन थारा रै कारण। धीरज मन नह धरी जनम पायो कुळ चारण। —अरजुनजी बारहठ

वीमासणो वीमासवो—देखो 'विमासणो, विमासबो' (रू भे)

उ०—अरजनजी मन मे वीमासो रह्या। ताहरां मा बोली, 'अरजन बोलो क्यूं ? थाप जीमण ठारो हुवै छै।' ताहरां अरजन बोलियो, 'मांजी, हमीर भाई दुगोटो मागे छै तो मैन द्यो।' —अरजन हमीर री वात

वीमासणहार, हारो (हारी), वीमासणियो—वि० ।
वीमासिप्रोडो, वीमासियोडो, वीमास्योडो—भू० का० कृ० ।
वीमासीजणो, वीमासीजवो—कर्म वा० ।

वीमासियोडो—देखो 'विमासियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० वीमासियोडी)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—मन मूक तणं वीमाह जिको घर, माह 'गोइंद' आप मरै। आयो अड साथि जिको सो घायं, बाळ निमत्त सरीर करै। —गु रू व.

उ०—२ जिकै वेद मुरति ब्राह्मण छै सु अग्नी थापनि ब्राह्मि होम करै छै। घणो गो घ्रत नै कपूर री आहुति दीजै छै। वेद ध्वनि कीजै छै। दूलह नै दूलहनी सेहरा वधिया पून्य साहमा वेमाणिया छै। सेहरा दीजै छै। च्यार फेरा फेरीजै छै। वीमाह कीजै छै। —रा. सा स.

उ०—३ कह्यो जी ! मोनु राजा मेळो। कह्यो जी, राजा महीनै मिळसी, काल्हि राजा बाहिर हुतो, आज माहि पधारियो, महीनै राजा आवै छै, वळै नयो वीमाह करि महल माहे पधारै छै, सु वळै महीनै वाहिर आविसी। —सयणी री वात

उ०—४ जोधाणै जोधाहरी, सुत माणै अमसाह। विच ग्रामर फागण विचै, च्यार थया वीमाह। —रा रू

उ०—५ मोहरि गोठि वीमाह, मोहर दरबार मझारां। ज्हां मोहरि रावता, सदा जिम वहतां सारां। —सू. प्र

वीमाहणो वीमाहवो—देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू भे)

वीमाहणहार, हारो (हारी), वीमाहणियो—वि० ।
वीमाहिप्रोडो, वीमाहियोडो, वीमाह्योडो—भू० का० कृ० ।
वीमहीजणो, वीमाहीजवो—कर्म वा० ।

वीमाहियोडो,—देखो 'विवाहियोडो, (रू भे)

(स्त्री वीमाहियोडी)

वीमुह—देखो 'विमुख' (रू भे)

वीमुहो—देखो 'विमुख' (अल्पा,. रू. भे)

उ०—ना जोहा पै वीमुहा, त्रसधमीर जे नथ। केता कव जन खस गया, अरि केता भारथ। —श्री रायसिंघजी रो गीत

वीम्हर—स पु —झींगुर।

वीयराग—देखो 'वीतराग' (रू भे)

बीयरागी, बीयराय—देखो 'वीतराग' (रू. भे)

उ०—पचाभिगम विधि सु करूं, सक्रस्तव सूधो उच्चरू । जय वीय-राय कहता करम कटै, देव जुहारूं गउ बीसटे । —स कु

बीयाण-स पु —आकाश, गगन ।

उ०—बीयाण चद वड वीयु, ऐराक वीज सापुरस वयण । प्रात गाज पेहली लहवाय, लहवाय पीछे गरवाय ।

—मूळवँ सागावत री वात

बीयाज—देखो 'व्याज' (रू भे)

बीयाजू—देखो 'व्याजू' (रू भे)

उ०—हरीया सामी मनमुखी, माय ममाही हेत । क्यूंईक गाडे रेत में, और बीयाजू देत । —अनुभववाणी

बीयास—देखो 'व्यास' (रू भे.)

उ०—सारद नारद सुक बीयास समरुथ सिमरदं ।

—केसोदास गाडण

बीयोगण, बीयोगणी, बीयोगिण, बीयोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे)

बीयौं—देखो 'दूजो' (रू भे.)

वीर-स. पु [सं] १ बहादुर, शूरवीर । (ह ना. मा.)

वि० वि०—वीर चार प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

१ धर्मवीर २ युद्धवीर ३ दानवीर ४ दयावीर ।

उ०—१ मचियै काळ मदत री, वीर न देखै वाट । एक अनेका सूं हिचै, छाती वज्जर कपाट । —वा. दा

उ०—२ कमधज्ज तजै मनमोह काया चो, वीर तिसोह विसतयरिय । तत लै निरवाण क राज तियाग, गोपीचद भरत्थरिय ।

—गु रू व

उ०—३ धख पख धमळ धीर धारण, निहग तो डर केळ वारण, दुखळ पखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर । यर केण छाजै खाग उछज, अणी भटा चच आवाज, कळहियो 'गजसाह' कळियज, वरळ वध वर वीर । —महाराजा गजसिंह री गीत

उ०—४ समर सगतपुर मडोवर छतरधर समोसर, तकर कर वजर वर धजर ताजो । उसर वगतर ऊभर वीर सासर अतर, 'गग' हर कळोधर कहर गाजो । —नाथो साढू

२ युद्ध करने वाला, योद्धा, सैनिक ।

३ विकट परिस्थितियों मे भी अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाला, साहसी ।

४ विशिष्ट कार्यों में अन्य से वढकर ।

५ कर्मठ, कर्मशील ।

६ वात-चीत मे होशियार वाग्वीर ।

७ बहन या अन्य स्त्री के द्वारा भाई या किसी अन्य पुरुष के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—तितरै हेक दीठ पवित्र गळि आगो, करिप्रणपति लागी कहण । देहि सदेस लगी दुवारिका, वीर वटाऊ ब्राह्मण । —वेलि

८ भाइ, भ्राता । (अ मा., ह. ना मा)

उ०—१ आज उमाहउ मो घणउ, ना जाणू किव केण । पुरुख परायउ वीर वड, अहर फुरक्कइ केण । —ढो. मा

उ०—२ खित्रीवट जे साहस धीर, मालदेव छइ लहुडउ वीर । जिसी प्रीति लखमण नइ राम, राज खनरेद एहवी माम ।

—का दे. प्र.

उ०—३ बागा में बाज्या जगी ढोल, सहरा में बाजी सहनाई जी । मायो म्हारो जामणजायो वीर, चूनड तो ल्यायो रेसमी जी ।

—अमर चूंनडी

उ०—४ चौरी बैठे चक्रधर, वळि सुहिद्रा री वीर । वावै ना सबळा विरिद, पूर्ण कवेसर 'पोर' । —पी. प्र.

उ०—५ चुडलो चिरासी घण री सायबो रे, लंजा ओठीडा है लो । ओढणियो ओढासी म्हारो वीर वाला जी । —लो गी.

९ पति, खाविंद ।

१० पुत्र, वेटा ।

११ मित्र, साथी ।

१२ सखी, सहेली ।

१३ महिला, स्त्री, १४ राठोडो के प्रसिद्ध तेरह वशो मे से एक वश, अथवा इस वश का व्यक्ति । —वा. दा. ख्यात

१५ दूल्हा, वर ।

१६ तीन प्रकार की भावों की साधनाओ मे से एक प्रकार की साधना जिसमे मद्यपानादि द्वारा उन्मत्त होकर साधक द्वारा मनुष्य, भैंसे, भेड या वकरी की बलि दी जाती है । (तान्त्रिक)

उ०—भणांत एक व्याकरण, वीर इस्ट कै करै । तरक्क नीति सासत्राण, एक मुक्ख उच्चरै । —गु रू व.

वि० वि०—यह साधना दिन के प्रथम दस दडो मे पशुभाव से, दूसरे या बीच के दस दडो में वीरभाव से और अन्तिम या तीसरे दस दडा मे दिव्यभाव से करनी चाहिए । मतान्तर से सोलह वर्ष की अवस्था तक पशुभाव से, फिर पच्चास वर्ष की अवस्था तक वीर-भाव से और उसके वाद दिव्यभाव से साधना करनी चाहिये ।

१७ उक्त प्रकार के वीरभाव से साधना करने वाला साधक ।

१८ वज्रयानी सिद्धो के अनुसार वज्रप्रज्ञोपाय योग के द्वारा महाराग मे विराग का दमन करने वाला साधक ।

१९ मोक्ष के अनुष्ठान अर्थात् साधना मे पराक्रम करने वाला या चार

धन-घातिया कर्मरूपी रज अर्थात् कूड़ा-कचरा हटा देने वाला एवं प्राणियों को संयम आदि के अनुष्ठान में विशेष रूप से प्रेरित करने वाला। (जैन)

२० चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी। (जैन)

उ०—१ धन धन गाम नगर जिहां रे, विहरइ वीर जिणिंदो रे। धन धन नर नारी तिके रे, वाणि सुणइ आणंदो रे। —स. कु

उ०—२ दीधा उछदना बाकला, वीर नै 'चंदनबाल'। वृस्टि हुई सोवन तणी, वरत्या मंगल माल। —जयवाणी

उ०—३ लहियै सोभा लोक में, तप करि कसता तन्न। परतखि वीर प्रससियो, धन्नो मुनिवर धन्न। —ध. व. ग्रं

२१ विष्णु का एक नाम।

२२ अर्जुन का एक नाम।

२३ कामदेव।

२४ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक असुर।

२५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२६ पांचजन्य अग्नि का पुत्र एक अग्नि।

२७ एक अग्नि, जो भारद्वाज एवं वीरा के पुत्रों में से एक था और सरयु का पति एवं सिद्धि का पिता था।

२८ कलिंगराज चित्रांगद की कन्या के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा

२९ पुरुवंशीय एक राजा।

३० श्रीगणेश का एक विशेषण।

३१ पुरंजय नामक एक राजा जो मनुवंशीय था।

३२ तामस मन्वन्तर का एक देव।

३३ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रों में से एक पुत्र यादव।

३४ कृष्ण एवं कालिंदी के पुत्रों में से एक पुत्र यादव।

३५ अविक्षित् की पत्नी लीलावती का पिता, एक राजा।

३६ सोमवंशीय राजा, जो तोण्डमान का पिता था।

३७ क्षुप एवं प्रथमा का पुत्र, विदर्भ राजकुमारी नंदिनी का पति एवं विवश का पिता, एक राजा।

३८ पवनसुत हनुमान।

३९ शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस, जिसमें उत्साह वीरता, साहस आदि गुणों का वर्णन होता है। (साहित्य)

४० प्रत्येक चरण में ३१ एवं १६ मात्राओं पर यति या विराम पाया जाने वाला एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष। (पिंगल)

४१ छप्पय छंद का पांचवा भेद जिसमें ६६ गुरू, २० लघु से ८६ वर्ण तथा १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

४२ ठगण के द्वितीय भेद का नाम।

४३ भूत, प्रेत।

उ०—१ जतर मतर टामण टूंणा, कामण टूंमण जांणूं। वीर मूठ विद्या चौहतेरो, आतम देव अजांणूं। —अनुभववांणी

उ०—२ चोसठि जोगणी, प्रेत दयंणी अपारां। विचर भूत वेताळ, वीर पळचर भिततारां। गिरध चील गोमायु, विरख जबू रसवाया। काक कंक की गिणै, आमपळ सभळ आया।

—रा. रू.

उ०—३ पूजै कर कर वीर, घर घर नूंतै गांव में। बळै जगावै वीर मूठ चलावै मोतिया। —रायसिंह सांदू

उ०—४ बैताल वीर मिळिया विहद, चोसठि माकणि महा मद। मिळ समळ ग्रीध आमग अभग, जगण गिद्ध गड्डाक जबग।

—गु. रू ब.

क्रि. प्र जगाणी, जागणी।

४४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव।

वि० वि०—देखो 'भैरव'।

उ० —मळां चूकळां आदरै वीर मेळा, मिळै वाघरै जोगण्यां जुत्थ मेळा। भरै पत्र भंगा अगा रत्त भोगै, अघ्घपत्र दूरा छाक दारू अरोगै। —मे म

४५ महादेव के वे प्रियगण जो श्मशान में ही निवास करते हैं।

क्रि. प्र.—जगाणी, जागणी।

४६ वीरभद्र नामक शिवगण।

४७ दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करते समय शिवगण वीरभद्र के रोम रोम से निकले हुए गण।

उ०—१ तित हूर अपच्छर वीद रटै, फिरमाळ वहै वरमाळ वटै। निरतै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै।

—रा. रू

उ०—२ छायो गयण रज रथ छाजै, विसमी घाव पावणी वाजै। बावन वीर नचण बहबहिया, डेरू जटी चड डहडहिया।

—सू प्र.

उ०—३ खिलै महाकाळी दै दै ताळी नचै वीर रेला, हेला मुंडमाळी पढै सचै हार हेत। इखां जग पांणा वंचै वाहा वाणा वाहा ईसौं, खागा खळा 'सूभाणी' विरच्चै वीरखेत। —प्रभुदान मोनीसर

उ०—४ कतियाणी कह कह नारद दह डह, हेका टह टह वीर हसै। वह रावत ग्रह ग्रह पोरसि ग्रह ग्रह, दूढी ठह ठह होठ डसै।

—गु रू ब

वि० वि०—वीरभद्र के शरीर से निकले हुए गणों में से मुख्य ५२ गण थे जिन्हें 'वीर' संज्ञा दी गई थी। उनके नाम निम्न लिखित हैं। —

(१) क्षेत्रपाल वीर (२) कपिल (३) बटुक (४) नारसिंह (५) गोपाल (६) भैरव (७) गरुड (८) रक्तसुवर्ण

(९) देवसेन (१०) रुद्र (११) वरुण (१२) भद्र (१३) वज्र (१४) वज्रजघ (१५) स्कद (१६) कुरु (१७) प्रियकर (१८) प्रियमित्र (१९) वह्नि (२०) कदर्प (२१) हस (२२) एकजघ (२३) घटापथ (२४) दजक (२५) काल (२६) महाकाल (२७) मेघनाद (२८) भीम (२९) महाभीम (३०) तुगभद्र (३१) विद्याधर (३२) वसुमित्र (३३) विस्वसेन (३४) नाग (३५) नागहस्त (३६) प्रधम्न (३७) कपिल (३८) वकुल (३९) अह्लाद (४०) त्रिमुख (४१) पिशाच (४२) भूतभैरव (४३) महापिशाच (४४) कालमुख (४५) शुनक (४६) अस्थिमुख (४७) रेतोवेद्य (४८) स्मशानचार (४९) कलिकल (केलिकला) (५०) भृग (५१) केटक (५२) विभीषण।

४८ वावन की सख्या का नाम। *

४९ नये बैल को कृषि मे जोतने का अभ्यास कराने की क्रिया।

५० आरम्भ करने की क्रिया।

५१ रवाना होने या करने की क्रिया।

५२ किसी भूत-प्रेत विशेष की उपस्थिति का शरीर में अनुभव होकर तदनुसार अग सचालित होने और मुह की ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, भूत-प्रेत का प्रभाव।

उ०—देखो डाकरण रा घर मे डावडा नै जको मेलै उरण री भूल, क्यूंकि डाकरण तो वीर चढै तद खावहीज चाहे घर रो चाहे पारको उरण सूं तो आघो रहे वो हीज वचै। —वी स. टी.

क्रि प्र—आणो, उतरणो, ऊटणो, चढणो।

५३ यज्ञ की अग्नि।

५४ काली मिर्च।

५५ आलुवुखारा नामक फल।

५६ वाराही कद।

५७ एक प्रकार का सींगिया नामक विष।

५८ पुष्करमूल।

५९ काजी। (अमरत)

६० अर्जुन नामक वृक्ष।

६१ सिंदूर।

६२ लोहा।

६३ लताकरज।

६४ नरकट।

६५ कनेर।

६६ उशीरा, खस।

६७ शालिपर्णी, सरिवन।

६८ ऋषभक नामक औषधि।

६९ तोरी, तुरई जिसकी सब्जी वनाई जाती है।

७० कुश।

७१ नरसल।

७२ मिलावा।

रू भे—वीर, वीरक, वीरक्क, वीरजु, वीरय, वीरय्य, वीररस, वीररस्स, वीराण, वीरारस, वीरारसि, वीरू'।

अल्पा,—वीरो, वीरडो, वीरडो, वीरति, वीरती, वीरो।

वीरकंठ–स पु—१ वीरध्वनि।

२ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष।

वि० वि०—इसके पहले एव तीसरे चरण मे सोलह वर्ण व चौवीस मात्राएँ एव दूसरे व चौथे चरण मे चौदह वर्ण व इक्कीस मात्राए होती हैं। आठ-आठ वर्ण पर अर्द्धविराम एव अत मे लघु-गुरु होते हैं। (र ज प्र, र रू)

रू भे.—*विडकठ, बिरकठ, वीरकठ*।

वीरक–स पु [स] १ चाक्षुष मन्वन्तर के सप्तऋषियो में से एक ऋषि।

२ अगराज वशीय राजा शिवि का पुत्र।

रू भे—वीरक्क।

३ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—दीपक हूत दीपक, अब हू अवक उग्गे। सिध हूता साधिक्क, वीर घर वीरक जग्गे। —गु रू. व.

४ देखो व्रक' (रू भे)

वीरकरमा–वि [स. वीर+कर्मा, कर्मन्] वीरोचित कार्यकर्त्ता।

वीरकळहळ–स स्त्री—वीर-ध्वनि।

उ०—हूकळ सीधवो वीरकळहळ हुवै, वरण कजि अपछरा सूरिमा बहवुवै। त्रिजड हथ मयद जुध गयद घड तोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अढगा बोलणा। —हा भा

वीरकाम–वि [स. वीर+कार्य] १ वीरोचित कार्य करने वाला।

[स. वीरकाम] २ पुत्र की कामना रखने वाला।

वीरकाव्य–स पु [स.] वह काव्य जिसमे वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन होता है।

वीरकुक्षि–स. स्त्री [स] १ वह स्त्री जो वीर पुत्र को जन्म देती है।

२ वह भूमि जिस पर वीर पुत्र उत्पन्न होते हो।

वीरकेत, वीरकेतु–स. पु [स वीरकेतु] १ पाञ्चाल देशाधिपति द्रुपद का पुत्र जो महाभारत के युद्ध मे द्रोण के द्वारा मारा गया था।

२ एक अयोध्या नरेश का नाम।

३ हसध्वज नामक राजा के प्रधान सुमति का पुत्र।

वीरक्क—१ देखो 'वीर (रू भे)

उ०—वीरक्क नचक्क सभक्क सवक्क, चोळक्क पियक्क कळिक्क चहक्क। करक्क हाडक्क गुडक्क वडक्क, खिवै खजरक्क पडै खर-डक्क। —सू प्र

२ देखो 'वीरक' (रू. भे.)

३ देखो 'व्रक' (रू. भे)

वीरखेत-स. पु [स वीर+क्षेत्र] युद्धस्थल।

उ०—१ पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी। वीरखेत पुरत्त रित हेमत प्रघट्टी। —गु. रू. ब

उ०—२ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हेला मुंड-माळी पढै सचै हार हेत। इला जयपाळा बचै वाहा वाणा वाहा ईसाँ।खागां खळा 'सुभाणो' विरच्चै वीरखेत। —प्रभूदान मोनीसर

२ वह भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते हो।

उ०—तरह तरह कै दाव जगू कै झणाकै अपणैं अपणैं फुरगूं की हमराहा हौसनायकू कै हाकै जोधाण मेडतो वीरखेत के जाए भाजै न लहवहै जेतै लडै तेतै बरोबर रहै। —सू प्र

३ वह स्त्री जो वीरपुत्रो को जन्म देती है।

रू भे.—वीरखेत।

वीरखेती—युद्ध।

रू भे —वीरखेती।

वीरगत, वीरगति, वीरगती-स स्त्री [स वीरगति] वीरो को रणक्षेत्र मे मरने पर प्राप्त होने वाली गति।

रू भे.—वीरगत, वीरगति, वीरगती।

वीरगाथा, वीरगाहा-स स्त्री [स वीरगाथा] वीर के वीरतापूर्ण कार्यों का कवित्वमय वर्णन।

वीरघट, वीरघट्ट, वीरघटो-स पु [स वीर+घट] १ हाथी के झूल के बाधने का घटा या घटी।

उ०—१ रात घडी दो एक गई, डक डको सुणियो। तरै जोगेसर जाण्यो कोई सिरदार आवै छै। तिसै हाथी री वीरघट सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोडा री कळहळ सुणी। —जगमाल मालावत री बात

उ०—२ मद धारा वरसता थका गज डवर नीसाण गाजै। वीजळी आकुस विराजै। ग्रिध चात्रिग वीरघट दादुर बोलै। मुगळ लाल ममोळा सा दिखावै। —वचनिका

उ०—३ हाथियों कै हलकै खमूठाणातै खोलै, अरापत कै साथी भद्रजाती कै टोळै। अत देहु कै दिग्गज विध्याचळ के सुजाव, रग-रग चित्रै सुडाडड कै बणाव। झूल की जलूस वीरघट्ट कै ठणकै, वादळा की जगमगाट भरै भोरौं की भकी भणकै। —र रू

२ देवालयो मे लटकाया जाने वाला वडा घटा या छोटी घटी।

रू भे —वीरघट।

वीरडो—देखो 'वीर' (अल्पा, रू भे)

वीरचक्र-स. पु. [स.] सैनिकों को उनके वीरतापूर्ण कृत्यों के लिए शासको द्वारा दिया जाने वाला पदक।

वीरचाळो-सं. पु.—१ युद्ध झगडा।

उ०—१ मारू फौज मता, दियँ पाय दता। कढयकै कपाळा, चढै वीरचाळा। —सू. प्र.

उ०—२ उजेणी महासुर हैयाट आंणी, जुडैवा चढै देव दांणव्य जाणी। चकत्या कमधा रचै वीरचाळा, वणी जाणि भारत्थ पारत्थवाला। —र वचनिका

उ०—३ जानकीनाथ समराथ जाहर जगत, धुरम धमचक रचण वीरचाळा, यस गेत वीरती। तामहो जोध आरोट दसरथ तणा, कीजियँ किसो त्रप जोड काळा, कहै जग कीरती। —र. ज प्र.

२ भूत प्रेतादि का उपद्रव।

३ वीरो का कार्य या चरित्र।

वीरचाव-सं. पु —युद्ध, झगडा।

उ०—किला जीत माभी मारवाड मे कहायँ 'कूपा', धीतवरा यारग मिळयँ वीरचाव। अनेका विभाड रोदो लोडा नै पछाड़ आयो, राजा राज 'भीम' री जमायो मारराव। —वीसनसिंघ कूंपावत री गीत

वीरज-स पु [स. वीर्य] १ सब धातुओ के अत मे निर्मित होने वाली शरीर की सात धातुओ मे से एक धातु, शुक्र रज। (डि को.)

उ०—१ जस भगति जादव जाणि, वणराय रोम वखाणि। वपु वरण वीरज वारि, नह वेर रांमा नारि। —पी प्र.

उ०—२ तरुवर साखा मूळ बिन, रज वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ सो दादू गहिता। —दादूवाणी

२ किसी पदार्थ का सार भाग। (वैद्यक)

३ पराक्रम तेज।

४ बल, सामर्थ्य, वीरता।

५ अन्न आदि का बीज।

६ पुंसत्व, प्रजनन शक्ति।

७ साहस, दृढ़ता।

८ फुर्तिलापन, स्फूर्ति।

९ आभा, कान्ति, चमक।

[स वीर्यज] १० पुत्र, वेटा।

वि०—१ निर्मल, स्वच्छ।

उ०—सग सखी सीळ कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजति राजकुअरि रायअगण, उडीयण वीरज अब हरि। —वेलि

रू भे—वीरज, वीरय, वीरय्य, वीरय्यज, वीरिय, वीरय।

वीरजा-स स्त्री —वीरागना।

वीरजित-स. पु [स.] मगधवशीय सत्यजित् राजा का पुत्र विश्वजित्।

वीरजिन—स पु —भगवान् महावीर स्वामी के लिए प्रयुक्त शब्द । —(स कु)

वीरजु—देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—हथनाळि हवाई कुहक बाण याकी सोर आघात होण लागो वीरजु वडा वडा जोधा । त्या की वीरहाक होण लागी । गय हस्ती त्या की गहणि हूई । —वेलि टी

वीरडो—देखो 'वीर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—टीवा ओलटी वडी जी राजयँ वाई वसवा एक रूसडी जाय। बाहिर से आयो मेरो वीरडो जी यँ राज गोरी आगण ए क कीचड क्यूं । —लो. गी

वीरण—स पु [स] चाक्षुक मन्वन्तर का एक प्रजापति ।

वि० वि०—इसकी असिक्नी (वीरिणी) नामक कन्या का विवाह दक्ष के साथ किया गया था जो ५००० पुत्रो की माता थी । इसे सात्वत धर्मका ज्ञान सनत्कुमार के द्वारा प्राप्त हुआ था जो इसने आगे चलकर रैभ्य ऋषि को दिया था ।

२ कास नामक तृण ।

वीरणक—स पु [स] जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ, धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग ।

वीरणि, वीरणी—स पु [स वीरणि] याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य एक आचार्य ।

वी'रणो, वी'रबो—क्रि अ —१ विस्मरण होना, भूलना ।

२ देखो 'विहरणो, विहरबो' (रू भे)

वी'रणहार, हारो (हारी), वी'रणियो—वि० ।

वी'रिओडो, वी'रियोडो, वी'रयोडो—भू० का० कृ० ।

वी'रीजणो, वी'रीजबो—भाव वा० ।

वीरत—स स्त्री [स. वीरत्व] वीरता, वहादुरी, शौर्य, बल ।

उ०—१ मन भावै चलै खग्रीवट मारग, वीरत दावै घडा वरै । राजापती 'जसौ' महाराजा, कमध सुहावै जकू करै । —नाथो सादू

उ०—२ वडं वडं नरनाह, सै न धण सम्ळो, आनद हुवो उछाह, कगूडो ऊछळी । वीरत कीरत वात, पिरथि सिर वापरी, आयो औरगवाद, फतह कर आपरी । —महाराजा पदमसिंहजी री वात

उ०—३ वीरत कीरत वस वित, मत मोजा गुण मान । सप सुलच्छण धरम सुख, व्हेया अघ सूं हाण । —वा. दा

उ०—४ सुर सरत धर सिर भरत सर, पळ चरत पळचर अघत अत । मिळ अच्छर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत । —र. रू

उ०—५ तेज वडं तखतेस रा है हिंद दिवाकर, तूज सराह न को तूलै वे राह बराबर । देख खळा उर ताप व्है अजसै सैणा उर, वीरत भलपण वीटियो 'परताप' वहादुर । —मोडजी आसियो

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

वीरतराय—स पु —विजययाधिपति, श्रेष्ठवीर । (व० भा०)

वीरतवंत—स पु.—१ वीर, वहादुर, योद्धा ।

उ०—आद 'जसौ' धन आव दाव दूजो यणवल नर, वीरतवत सिद्धरावत करसी घण । रख नारायण ह्रदैं साडसिघ धण जुध स्रावज, विकरम करम वखाण करण सारण मोटा कज । —पा. प्र.

२ बलवान, शक्तिशाली ।

वीरता, वीरताई—स स्त्री —१ वीर होने का भाव, वीरत्व, वहादुरी ।

उ०—१ खेल वीरता खेलणा, अस ढेलणा अपल्ल । 'पतो' हुवै भल जास पख, झुकती लै नभ झल्ल । —जैतदान बारहठ

उ०—२ वीरता, सच्चाई अर डिढता तो इणारै आगै पाणी भरै । म्हनै तो सुण सुण नै इचरज व्है कै आ नाकुछ गुणा रा अवूझ मिनख कॅडा कॅडा वखाण करिया है । म्है तो भगवान री भगती नै ई इणारै सामी फुतरका जिती गिणू । —फुलवाडी

उ०—३ इण तरै आपरा धरम री कुळ री मरजाद री धरती री रिछया करणी औ रजोगुण कहीजै सो जिका मे रजोगुण नही (अभिमान) तिका नै औ दोहा सुण वीररस उपजै नही क्यू कि वामें वीरताई रो उफाण नही । —वी. स. टी.

उ०—४ इसी वीरताई है सो माका रा ही झूंपडा न देवै । वडा वडा राजाआ गढ दे वीरता री मरजाद खोय दी परत इण वीर री ईसी वीरता आदि राजपूती अडग है । —वी स टी.

२ बल, पराक्रम ।

३ वीरता का कार्य, वीरतापूर्ण कार्य ।

४ जोश ।

उ०—झळक नवरग जरकस वसण भूखणा, तेज धन धगन मुख वीरताई । 'जगाहर' 'भीम' कर लगन दिलसी ज्यूंही, अगन झळ धसण मन मगन आई । —किसनो आढो

रू भे,—वीरत, वीरता, वीरताई, वीरती, विरत्ति, विरत्ती, वीरति, वीरती वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती ।

वीरति, वीरती—१ देखो 'वीर' (४२, ४३, ४४, ४५, ४६) (अल्पा, रू भे.)

उ०—राति जगावै वीरती, दिन की लेवै नीद । हरीयो कहै कुराड कु, क्यु करि मुई उलीद । —अनुभववाणी

२ देखो 'वीरता' (रू भे)

उ०—जानकीनाथ समराथ जाहर जगत, चुरस धमचक रचण वीरचाळा, वसै खेत धीरती । ताखडा जोध आरोड दसरथ तणा, कीजियै किसो नृप जोड काळा, कहै जगत कीरती । —र ज प्र.

उ०—२ खळ दळ समर खपावत, क्रिव जण गावत कीरती। सीता वाहर सझता वसुधा जाहर वीरती। —र. ज प्र

उ०—३ नरा नरिंदा पार न लब्भै, वीरति खुरस विढेवा विब्भै। साह तणी घर फाटी सब्भै, ऊमर माड पडे की अब्भै। —गु रू.व

उ०—४ वीरति मुख सूरति विळकुळिय, कमधज तेज कमळ कळमळय। किसन वरण माभिल कठळिय, सूरज किरण जाण भळहळिय। —गु रू. व

उ०—५ वड विना क्रामति न को वीरति, पिंड हुई मत जाय सपति। हमैं इण भति धरी हिम्मति, पुळो पर खिति रहो नरपति। —रा रू.

वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती—देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—१ जळ महि तो समर अपर जन, सर 'प्रताप' समरत्थ। वर्ण न को निरबीज भुव, त्या कमधा वीरत्त। —जैतदान वारहठ

उ०—२ वीरत्ति विढेवा विळकुळेय, मुख राग मूछ भ्रूंहा मिळेय। चख लाल कीध मुख कीध चोळ, कळकळे तेज विकसे कपोळ। —गु. रू व

उ०—३ भाराहरो कुळिभाण कविंदा दियै केकाण, वाचीजे वडा बखाण प्रथमी प्रमाण। मारको अमलीमाण जाडे जोध जुवाण, वीरत्ति दत्ति विनाण जाण ज्याण जाण। —ल पिं

वीरथाट—स पु—सेना, फौज। (अ. मा)

वीरवांण—स पु—देखो 'विरुद' (मह., रू. भे)

उ०—माथे सत्रा खांपा धावे गवावे जिहान माथे, दसु दसा सोभाग छवायो वीरवाण। जीहान जाणी जोम छतं 'नाहरेस' जायो, अजठी ऊठाय आयो आपै ही आथाण। —कमजी दधवाडियो

वीरवेत, वीरवेंत—देखो 'विरुदेत' (रू. भे)

वीरद्युमन, वीरद्युम्न—स पु [स वीरद्युम्न] भूरिद्युम्न नामक राजा का पिता, प्राचीन वीर नरेश।

वि० वि०—अपने खोये हुए पुत्र भूरिद्युम्न को खोजते हुए यह तनुविप्र नामक ऋषि से मिले एव आशा-निराशा से सम्बन्धित तत्वज्ञान पर सवाद किया था।

वीरधनवन, वीरधन्वा, वीरधन्वन—स पु. [स. वीरधन्वन्] १ महाभारत युद्ध मे कौरव पक्षीय त्रिगर्त देश का राजा, जो धृष्टकेतु के हाथो मारा गया था।

१ कामदेव का नाम।

३ धृष्तराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

४ चेदी नरेश का नाम जो दशार्णराजा की पुत्री सुदामा के पति थे। वि० वि०—नल की पत्नी दमयन्ती इन्ही के यहां रही थी और यही से उसे कुंडिनपुर वापिस लिवा ले गये थे।

५ अत्यत पराक्रमी भुजाओ वाले भगवान्।

वीरधरमन, वीधरमा—स. पु [स वीरधर्मन] भारतीय युद्ध मे पाडव-पक्षीय एक राजा।

वीरनद, वीरनद्द—सं पु [स. वीर+नद] वीरो की सन्तान, वीरपुत्र।

वीरनाद—स स्त्री [स.] वीरध्वनि, वीरगर्जना।

उ०—अस्त्र गुलाव अबीर उडायो, सस्त्र पिचरका छिब्र सरसायो। वीरनाद सोइ चग वजायो, रंग फाग सम जग रचायो। —ऊ का

वीरपउतार—वि—वीरो को उत्साहित करने वाला, वीरो को जोश दिलाने वाला।

उ० मेघाडवर छत्र, गगायमुना वमर, मुद्रावतार सीकिरिचोरधार, गयद्रसक्क, रायद्रहवोल रायत्रिभाड, रायपवायण राजा वइठड छइ, डावइ पाखइ मत्रि, वीरपउतार दीवटिया वयगरणा यत्रवाहक चमरहारि छहायता • •• । —व स

वीरपण, वीरपणौ—सं पु—वीरत्व, वीरता, शूरता, बहादुरी।

उ०—१ एक वीर स्त्री आपरा पती री वीरपणो देख मस्त हुई कहै छै ए सखी देख म्हारो पती सिंध होवैं जैडो छै—मो सत्रु ऊपरै आवण री भतो करै पण पग पाछा पडे है छाती धडकै। —वी स टी.

उ०—२ 'पता' अग वण वीरपण, निज वाळापण नेह। जाण जवाहर रग जिम मेटै नही मिटेह। —जैतदान वारहठ

रू भे.—वीरपण वीरपणो।

वीरपरा—स स्त्री—सोलकी वश की एक शाखा।

रू भे—वीरपुरा

वीरपरो—स पु—सोलकी वंश की वीरपुरा शाखा का व्यक्ति।

रू भे—वीरपुरो

वीरपाण, वीरपान—स पु [स० वीरपान] एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ, जो योद्धा युद्ध मे जाते समय या युद्धोपरान्त थकावट मिटाने हेतु पीते थे।

वीरपाटी—स पु.—वीररस की विद्या।

उ०—पढचो वीरपाटी पाव आराण न दिया पाछा, ताखा लाटी वैठो ही उगती मूछा ताण। बाप खाटी मेटनी ऊजळा रूका पाण वापो, राज दाटी भुजा रै भरोसै झाला राण। —माधोसिह झाला रो गीत

वीरपुरा—देखो 'वीरपरा' (रू भे.)

उ०—सोळ किया री साख री विगत—दारिया, माणगोती, वाघेला, लराहा, वालणोत, वीरपुरा, नाथावत, वाराह, खाजीय इत्यादि है। —वा दा. ख्यात

वीरपुरी—स स्त्री —१ श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया या तृतीया के बाद आने वाले सोमवार को मनाया जासे वाला उत्सव ।

२ वह नगर जहा वीर अधिक रहते हो ।

रू भे —बीरपुरी, बीरपुली, वीलपुरी, वीरपुली ।

वीरपुरी—देखो 'वीरपरी' (रू. भे)

वीरपुली—देखो 'वीरपुरी' (रू भे)

वीरप्रसविनि—स. स्त्री [स.] १ वीर पुत्रो की माता ।

२ पृथ्वी जहा वीर उत्पन्न होते हो ।

वीरप्रसु, वीरप्रसू—स. स्त्री [स वीरप्रसू] १ वह स्त्री जो वीरसतान को जन्म देती हो ।

२ वह भूमि जहा वीर उत्पन्न होते हो ।

वीरबळी—देखो 'वीरवळी' (रू. भे)

वीरबहूटी, वीरबहोडी—स. स्त्री —वर्षा ऋतु मे पाया जाने वाला लाल रंग का कीडा विशेष, इद्रवधु ।

उ०—वीरबहूटी आज ही भुव पै मखमल भात, साप्रत सावण तीजणी खूब करो सब ख्यात । —लो. गी

रू भे —वीरबहूटी

वीरबांणी—देखो 'वीरवाणी' (रू. भे)

वीरबाहु—स पु [स.] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

२ महाभारत युद्ध में भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक ।

३ चेदीनरेश जो दशार्णराज सुदामन् की कन्या का पति था ।

वि० वि०—इसकी पत्नी नल की परित्यक्ता पत्नी दमयन्ती की मौसी थी और नल के छोड देने पर दमयन्ती इसी के पास रही थी । इसके पुत्र का नाम सुबाहु एव कन्या का नाम सुनदा था ।

४ राम-रावण युद्ध मे राम पक्षीय एक वानर ।

५ गन्धर्व, जिसने तक्षक से युद्ध किया था ।

६ लकानरेश रावण के एक पुत्र का नाम ।

७ परम विष्णुभक्त काम्पिल्य नगर का राजा, जिसकी पत्नी का नाम कान्तीमती था, जो पूर्वजन्म मे भी इसी की पत्नी थी ।

वि.—जिसकी भुजाएँ पुष्ट अथवा मजबूत हो ।

वीरभदर, वीरभद्द, वीरभद्र—स पु. [स वीरभद्र] १ श्रेष्ठ एव प्रसिद्ध वीर, योद्धा ।

२ वह घोडा जो अश्वमेधीय यज्ञ के लिए उपयुक्त हो ।

३ मनोभद्र नामक सोमवशीय राजा के एक पुत्र का नाम ।

४ अविक्षित राजा की पत्नी निभा का पिता, एक राजा ।

५ यशोभद्र राजा का भाई ।

६ सुगन्धित घास, खस ।

७ भगवान् शकर के क्रोध से उत्पन्न हुवा एक गण जिसने दक्ष यज्ञ को ध्वंस किया था ।

उ०—१ चावदत दीह अगा समा जूझ लाग चाळै, नरा ताळै सामध्रमी तणै साचो नेम । क्रोध वाळै रूप गनीमाण री विधूंस कीधो, 'जोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम । —बद्रीदास खिडियो

उ०—२ राति झाळ चखा चोळ काळी सल्है काळ रूप, रूद्र वीरभद्र काळो करतो आरोध । दोडियो सामही देखै काथा सू हरामी दूठ, जाणै विना माथा सूं बहच वाळो जोध । —करणीदान कवियो

उ०—३ सू मध जेठ कळा धर सारी, आयो रवि ज्यौं किरण अकारी । पड कोपियो किना धार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूं-सण । —रा. रू

उ०—४ सुणि कथ पदम सझै दळ साजा, रिण परणण उच्छव करि राजा । जटी वीरभद्र घणा जगाया, आठ हजार इसा भड़ आया । —सू. प्र.

वि० वि०—दक्ष यज्ञ मे शिव के अपमानित होने के कारण क्रुद्ध होकर जटायें झटकने पर इसका निर्माण हुवा । मतान्तर से क्रुद्ध शिव के सिर से टपकी बूंद के पृथ्वी पर गिरते ही इसका निर्माण हुआ । कई जगह शिव के मुह से उत्पन्न होने या स्वय शिवावतार होने की कथा प्रचलित है । शिवाज्ञा से इसने दक्षयज्ञ को विध्वस हेतु अपने रोमकूपो से रौम्य नामक रुद्रगणेश्वरो की सृष्टी की थी । दक्षयज्ञ के बाद यह शिव सेनापति भी था । इसने शिव-जालधर युद्ध मे भी अपने पराक्रम को दिखाया । समस्त देवगणो व कश्य-पादि ऋषियो के दावाग्नि मे भस्म हो जाने पर मत्रो से सिद्ध भस्म से इसने उन्हें पुनर्जीवित किया था । इसी प्रकार साप व पचमेढू नामक राक्षस के द्वारा देवताओ के निगल लिए जाने पर इसीने उन्हे पुनर्जीवित किया था । हिरण्यकशिपु के उदर-विदीर्ण परान्त विश्वसहारार्थ उद्यत नृसिंहावतार का भी इसी ने दमन किया था ।

रू भे —वीरभद्र ।

वीरभद्रक—स पु [स] गौडदेशाधिपति, जिसकी पत्नी का नाम चपक-मजरी था ।

वीरभाव—स पु —१ बहादुरी, वीरता, शौर्य ।

२ बल, पराक्रम ।

रू भे.—वीरभाव ।

वीरभूम, वीरभूमि, वीरभोम—स स्त्री. [स. वीरभू, वीरभूमि] १ युद्धस्थल, युद्धक्षेत्र ।

२ वह भूमि जहाँ वीरो के जन्म अधिक होते हो ।

३ श्मशान ।

रू भे —वीरभोम ।

वीरमत्र-स पु [स वीर+मत्र] श्मशान भूमि मे भूत-प्रेत एव वीरो को जगाने का मत्र।

उ०—ग्रराध वीरमत्र एक, साधन सधीत रा। सिखत भेद कोकसार, सासत्र सगीत रा। —सू प्र.

वीरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वीरमणि-स पु [स.] १ देवपुर का राजा जिसके पुत्र का नाम रुक्मागद था।

वि० वि०—राम के भाई शत्रुघ्न एव इसके पुत्र रुक्मागद मे राम के अश्वमेध यज्ञ के घोडे को पकड लेने के कारण युद्ध हुआ था। उक्त युद्ध मे शिव ग्राकर इसके पक्ष में थे जिन्होंने शत्रुघ्न को पाश मे बाध लिया था, किन्तु रामचन्द्रजी ने छुडा लिया था।

२ एक परम शिवभक्त राजा, जिसके श्रुतवती नामक पत्नी थी।

वि० वि०—इसकी प्रार्थना सुनकर स्वय शिव ने योगिनियो से युद्ध किया था किन्तु ग्रन्त मे इसकी हार हुई।

वीरमति, वीरमती-स स्त्री [स वीरमती] भारतवर्ष मे बहने वाली एक प्राचीन नदी का नाम।

वीरमत्स्य-स स्त्री [स] एक जाति विशेष। (प्राचीन)

वीरमदे-स पु.—भाटी वश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

वीरमपोता-स पु.—चारण जाति के याचक ढोलियो की एक शाखा। (मा. म.)

रू भे—वीरमपोता

वीरमपोतो-स. पु—चारण जाति के याचक ढोलियों की 'वीरमपोता' नामक शाखा का व्यक्ति।

वीरमरदन-स पु. [स वीरमर्दन] एक दानव का नाम। (पुराण)

वीरमहर-स. पु.—राजा के पार्श्ववर्ती लोगो मे से एक।

उ०— ग्रगमरद कूटिकार चाटुकार उपानहधर श्रृगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक ग्रककार फलिहकार मल्लयोद्ध सत्यपाल वालवध ग्रगरक्षक वीरमहर धनुरद्धर खडगधर दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक । —व स

वीरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वीरमात, वीरमाता-स स्त्री [स वीरमातृ] १ वीरपुत्रो की माता।

१ वीर नामक गणेश की माता।

३ पृथ्वी।

४ शत्रुग्रो का सहार करने वाले वीरो की रक्षा करने वाली देवी।

वीरमारग-स. पु [सं वीरमार्ग] वीरो को वीरगति प्राप्त होने के बाद मिलने वाला स्वर्ग, वैकुंठ।

वीरमुग्दर-स. पु—राजा के पार्श्ववर्ती लोगो मे से एक।

उ०—........वीरमुग्दर धनुरद्धर खडगधर उपानहधर श्रृगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक नरवैध' ..। —व स.

वीरमुठ—देखो 'वीरमूठ' (रू भे.)

उ०—वडावास था कोस ०, उगोरा माहे। सूनो खेडो छै। दत्त राव खीगागाजी रो वारैठ भैरव नीबावत रोहडिया नै। वीरमुठ साथै दीयो। हमैं गजसी नरावत नैं माधो मेवाहरोत छै। —नैणसी

वीरमुद्रिका-स स्त्री [स. वीर+मुद्रिका] पैर की बीच की ग्रगुली में पहनने का छल्ला।

वीरमूठ-स स्त्री—किसी राजा द्वारा कवि को दिया जाने वाला नकद पुरस्कार जो एक मुस्त रुपयो के ढेर मे से दोनों हाथों की मुट्ठी भर कर उठाया जाता था।

उ०—सालवाहण जेसळ सभ्रम, कत्रिया दाळिद्र कप्पियो। करि वीरमूठ वूजो सुकव, थिर वारहठ थप्पियो। —नैणसी

रू भे.—वीरमुठ।

वीरम्रदग-स पु [स वीरमृदग] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—वीरम्रदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहतं त्रवक तणं त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुंगल तणं भूभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी ''...''। —व स

वीरय, वीरय्य—१ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—वीता ग्रधूरा वार पूरा वेध सूरा वच्चए, सेलै प्रहार धार सार मार मार मच्चए। बग्गा खडग्गं दुहू वग्गं काळ रगं वीरय, ग्रछरा उमगं दूर ग्रगं चाव रगं वीरय। —रा. रू

२ देखो 'वीरज' (रू भे.)

वीरय्यज—देख, 'वीरज' (रू भे)

वीररथ-स पु [स] द्विमीढवशीय बहुरथ राजा का नामातर। यह नपजय राजा का पुत्र था।

वीररस, वीररस्स-स पु—१ पीला पीतल। (डिं को)

२ देखो 'वीर' (३८) (रू भे)

उ०—१ 'पातल' री वग ऊपडी, ग्रजड भडी मभ ग्राट। बडी बडी वप वीर री, घडी वीररस घाट। —किसोरदान बारहठ

उ०—२ ऊससै कमध लागो उरसि, राजा चढियो वीररस। उण वार लोह मूहगो हुवो, सोना ही हूता सरस। —सू प्र

उ०—३ विढेवा वधै दाखियो वीररस्स, 'ग्ररसी' हरी कूंत तोलै ग्ररस्स। ग्रोपै फोज माही ग्रमरसिंघ तन्न, किरै जाण लका दळै कूंभ क्रन्न,। —गु रू व.

रू भे—वीररस, वीरारस, वीरारस।

वीररेण, वीररेणु-स पु [स वीररेणु] पाडव पुत्र भीमसेन।

वीरलोक—स पु [स] १ स्वर्ग, बैकुंठ।

२ वीरो को वीरगति प्राप्त होने पर मिलने वाला लोक।

वीरवंत, वीरवत—वि [स वीरवत्] जिसमे वीर अधिक हो, वीरो से युक्त।

उ०—तुम्हें करवड धरम, परिण नथी जाणता मरम। साभलउ वन तै वणावीइ जे व्रक्षवत, नदी ते जे नीरवत, कटक तै जें वीरवत, सरोवर ते जे कमलवत, मेघ ते जे समावत महात्मा ते जे क्षमावत, प्रसाद ते जे धजावत, धरमी ते जे दयावत, आदि। —वाग्विलास

स पु—१ सावर्णि मनु का एक पुत्र। २ ब्रह्मसावर्णि मनु के पुत्र का नाम। ३ साध्य देव।

वीरवर—वि —श्रेष्ठ वीर, योद्धा, बलवान।

उ०—१ व्रजनाथ लिखमी सग बैठो, आराण वाणा ऊफणै डिगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि कूरम पीठ जादम डाहळ जोरवर वाजिया खागं वीरवर। —जगो खिडियो

उ०—२ दिखणी पतसाह राह दोय ध्रोमक्षि, कहि आवध आविया कसि। वेस कहै धरि चाल वीरवर, समर कहै मरणो अवसि।

—सुजाणसिंघ जगन्नाथोत कछवाहा री गीत

उ०—३ वडम पराक्रम वीरवर, विहुर निडर वळ बाह। सर 'प्रताप' केई सुखी, छत्रधर तो कर छाह। —जैतदान बारहठ

स पु.—१ तालध्वज नरेश माधव की पत्नी सुलोचना के द्वारा पुरुष धारण किया गया नाम।

रू भे—वीरवर, वीरवर, वीरव्वर।

२ देखो 'वीरवळ' (रू. भे)

उ०—'पीथळ' सू मजलिस गई, तानसेन सूं राग। रीझ बोल हस खेलवो, गयौ वीरवर साथ। —अग्यात

वीरवरत—देखो 'वीरव्रत' (रू भे)

वीरवरती—देखो 'वीरव्रती' (रू. भे)

वीरवरद—स. पु —शिव, शकर, महादेव। (क कु बो)

वीरवरमन—स पु [स वीरवर्मन्] १ सुभाल, सुलभ, लोल, कुवल एव सरस का पिता एव यम की पुत्री मालिनी का पति, सारस्वत नगराधिपति एक राजा।

वि० वि०—इसने पाण्डवो का अश्वमेधीय अश्व को रोक कर अपने श्वसुर यम की सहायता से कृष्णार्जुन से घोर सग्राम किया था। फिर कृष्ण ने इससे सधि की थी।

२ द्रविड देशाधिपति, एक राजा, जिसकी पत्नी हेमागी पूर्व जन्म मे मोहिनी नामक अप्सरा थी।

वीरवाणी, वीरवानी—स स्त्री —वीरध्वनि, वीरगर्जना।

उ०—कलकार वीरवाणी कजाक, हलकार दुहू वलवाज हाक। धानक टकार भलकार धोह, ललकार मार अणपार लोह। —वि स

रू भे—वीरवाणी

वीरवानी—स. स्त्री—स्त्री, औरत।

उ०—सोनै री थाळी मे लोहरी मेख मारणी ही तो म्हा सू क्यू भिड्यौ? इसी वेगी ही भागवानी हुगी खतम? सीधा ही काखा मैं गोळिया ढूढे। पण म्है ही वाजीदा हा! आगलै री म्यान लेवता ही को सका नी! इसौ वनडया रो नादीद ही कोनी! आ ही नहीं लाधी! एक एक वदे लारी चार-चार वीरवांनी बैठी है। कुआरपणो उतर ग्यो। अवै भला ही वाप आपरी वेटी नै काठी राखो।

—दसदोख

वीरवाहण, वीरवाहन—स पु [स. वीरवाहन] १ ब्रह्महत्या मे पीडित एक राजा।

२ विराध नगरी का एक राजा जिसने वसिष्ठ ऋषि के साथ धर्म सम्बन्धी चर्चा की थी।

वीरविक्रम—स पु —एक शूद्र जिसकी कन्या का विवाह एक चाडाल के साथ हुआ था।

वीरविद्या—स स्त्री —१ वीरो अर्थात् श्मशानो मे भूतो व प्रेतात्माओ को जागृत करने की विद्या, मत्र तत्र।

उ०—नको सुपन जागै नको सुखपती, नको पद तुरिया नको मोग मुगती। नको भूत प्रेत नको वीरविद्या, नको काळ जाळ नकोउ अविद्या। —अनुभववाणी

२ युद्धविद्या।

वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी—देखो 'वीराधिवीर' (रू भे)

उ०—१ कृपा राम सकज्ज, जैतधारी जैतावत। 'वाघ' 'फता' वेढका वीरवीराध निजावत। —रा रू

उ०—२ धड सावकं जोर सूं खाग धारा, हुयै चोट वारी हजारै हजारा। वडा वीरवीराध वाकार वाहै, सु तौ सामुहै चाचरै वाहि स है। —रा रू

उ०—३ मयण काम सूरत्ति, गात गिरवर वीझाचळ। वडो वीर-वीराधि, सिंध रूपी सहस वळ। —गु रू ब

उ०—४ छळ मेन छोटी दहूं ओड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै। खडी लागडो वीरवीराधि केतू, करै रागडां छागडा राहु केतू। —मे म

वीरवैताळ—वि —उत्पात करने वाला, वदमाश, शैतान, उद्दड।

उ०—कहै अचूको ओर कथ, भलो 'काळो' भूपाळ। म्है तो सब जग मोहिया, तू तो वीरवैताळ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वीरव्रक्ष, वीरव्रख—सं पु [सं वीरवृक्ष] अर्जुन नामक वृक्ष का नाम।

वीरव्रत, वीरव्रती—वि. [स] अपने सकल्प पर दृढ रहने वाला।

२ वहुत ही निष्ठा एव आचारपूर्वक रहने वाला, निष्ठावान।

स. पु.—मधु राजा एव सुमना के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जो

मथु एव प्रमथु का पिता एव भोजा का पति था। (पुराण)

रू भे.—वीरवरत, वीरवरती।

वीरव्वर—देखो 'वीरवर' (रू भे)

उ०—'जोधा' 'चापा' 'अखा', भला भणि 'डूंगर' 'भाखर'। 'माडण' 'मडळा' 'करन', वरण फौजा वीरव्वर। —गु. रू व

वीरसंग-स. पु [स वीर-शङ्क] ४९ क्षेत्रपालो मे से ३९ वां क्षेत्रपाल।

वीरस—देखो विरस' (रू भे.)

उ०—पछै राव मालदे तो मेडता माथै कटक कोई नह कीयो। तठा पछै मास ८ राव मालदे समत १६१९ रा काती सुदी १२ काळ कीयो। राव चद्रसेन पाट बैठो। सु चद्रसेन रै भाई ग्रासीया जोर लागा। रजपूत नै रिणमल नै राव वीरस हुम्रो। राव चद्रसेन तो मेडतै री नाव लीयो नही। —नैणसी

वीरसजा, वीरसज्जा—देखो 'वीरसय्या' (रू भे.)

वीरसयन-स पु. [स. वीरशयन] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।

वीरसय्या-स. पु [स वीरशय्या] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।

रू. भे—वीरसजा, वीरसज्जा

वीरसरमा-स. पु [स वीरशर्मा] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण जो कुशिक वशोत्पन्न लक्ष्मी नामक कन्या का पति था।

वि० वि०—इसके तीर्थयात्रा पर जाते समय इसकी पत्नी गर्भवती होने के कारण इसने उसे राजा तोडमान के यहा छोड दी थी। राजा ने छ माह की भोजन सामग्री भरवा दी और फिर भूल गया। ब्राह्मणी ने स्वाभिमानवश भोजन मागा नही और वही मर गई किंतु इसने दो वर्ष बाद उसे वेंकटाचल पर स्थित अस्थिकूट सरोवर मे स्नान करवा कर जीवित कर लिया था।

वीरसिंघ, वीरसिंह-स. पु. [स वीरसिंह] वीरमणि राजा का पुत्र एव रुक्मागद का भाई एक राजा, जिसने राम के अश्वमेधीय अश्व को रोक कर शत्रुघ्न से युद्ध किया था।

वीरसुता, वीरसुम्रा-वि [स. वीरसुता] वीर पुत्रो को जन्म देने वाली, वीरप्रसू।

उ०—एक वीरसुया सती आपरा पुत्र नै हीडा देती थर री रीति सिखावै है। —वी. स टी.

स स्त्री—१ वीरबाला, वीरस्त्री।

२ भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते हैं।

रू भे.—वीरसूया

वीरसू-स. स्त्री [स.] १ वीर पुत्र प्रसव करने वाली स्त्री।

२ वह भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते हैं।

वीरसूया—देखो 'वीरसुता' (रू भे.)

उ०—१ हू आ वीरसूया (वीरमाता) वा राणियां री कूख नै वळिहारी जाऊ और वा राणिया री वळिहारी भ्रूण (गरभ) हीज वा नै कांई तरै सिखाण देवे है सो दाई रा हाथ री नाळो काटण री छुरी नै साव (जन्मतो) हीज बाळक झपटै। —वी स टी

उ०—२ कोई एक वीरसूया (वीर री मा) आगल पुत्र नै ललकारै छै। अरै पूत म्हारी ऊमर खोय आ थणा री दूध पाय घणा दुख सू पाळ मोटो कियो सो आ आस ही के। —वी स. टी.

वीरसेण, वीरसेन-स. पु.—१ युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि। २ एक सूर्यवशी राजा। ३ निषध देशाधिपति नल का पिता। ४ दक्ष राजा का श्वसुर। ५ वसुदेव की धारणी राणी का पुत्र। ६ कृष्ण-वसुदेव के २१ हजार ककणधारी वीरों के प्रमुख अग्रेसर। ७ ऋतुपर्ण राजा का पुत्र एव सुदास राजा का पिता, एक राजा। ८ तीन राजसूय यज्ञ एव सोलह अश्वमेधीय यज्ञ करने वाला अवती नरेश। ९ आलुबुखारा। १० हिमालय मे होने वाली आड नामक जड़।

रू. भे—वद्दरसेन।

वीरस्थान-स पु. [स वीरस्थान] १ स्वर्ग, वैकुंठ।

२ देखो 'वीरासन' (रू भे)

वीरह—देखो 'विरह' (रू भे.)

उ०—कहि चालउ गोरी करइ वीरह वेदन नवि जाणइ कोई। ज्यु राजा राणी मिलइ, यु ईणि कलि मिलजं सव कोई। —बी दे.

वीरहक, वीरहक्क, वीरहक्को—देखो 'वीरहाक' (रू. भे)

उ०—१ खग झट विकट वुडव खरडक, डहकत डारण वीर डहडक। गति घण वैहक छायौयं गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक।

—हीरा मागळिया रै जुध री गीत

उ०—२ चत चैन थका नत चोक चौहटै, सुनतु पुठै वहे सक। समहर समहर मोहर सुजीया, हुग्रै हुवती वीरहक।

—सूरजमल करमसोत री गीत

उ०—३ घुवै सार मार घडै धार धार, हुवै वीरहक्क हजारै हजार। छटा ज्यो विछुटै भुजै सेल छूटै, खगै अग तूटै अनोअग्न खूटै। —रा. रू

उ०—४ नवकोट सुभट कुळवट निहार, सग्राम अडप न्रप छळ सभार। हुई धीर सधीरा वीरहक्क, हर सकति डक डमरू डहक्क।

—रा रू

उ०—५ ऊठचो दिलो हू ओरगसाह एक राह तणै आटै, महाबाह विहू राहा मेटवा अजाद। धका धका चहू चका हूचका खडग धारा। वीरहक्कां हीदवा तुरक्का भिड़ै बाद।

—महाराणा जयसिंहजी द्वितीय री गीत

वीरहथ, वीरहथो, वीरहथ्थ, वीरहथ्थो-स पु—वीर, बहादुर।

उ०—वीरहथा आपहमता, प्रभुता लियण अमाप। कविता रजपूती कदर, तुहि करता 'परताप'। —जैतदान बारहठ

वीरहाक, वीरहाको-स. पु.—वीररसपूर्ण ध्वनि, ललकार।

उ०—१ डमडमें सकति डम्मरू डाक, हैं-थाट हुव्व हुय वीरहाक। गडि ग्रडै भेर दम्माम गज्ज, गयणगज वारह घण गरज्ज।

—गु रू व.

उ०—२ हथनालि हवाई कुहकवाण याको सोर ग्राघात होण लागो। वीरजु वडा वडा जोधा। त्या की वीरहाक होण लागी। गय हस्ती त्या की गर्हणि हुई। वेलि टी.

उ०—ग्रह ग्रहै ग्रवाळ जोगी ग्रमक, सीधवो राग प्रगटत सक। करि वीरहाक ग्रोरैं केकाण, मच राडि ग्राडि गोळा मडाण।

—मा वचनिका

रू भे—वीरहक, वीरहाक, वीरहक, वीरहक्क, वीरहक्को।

वीरहोत, वीरहोतर, वीरहोत्र–स पु [स वीरहोत्र] १ विन्ध्याचल पर्वत पर स्थित एक स्थान।

२ हैहय राजवश का ग्राद्यपुरुष हैहय सम्राट।

वीरांगणा, वीरांगना–स. स्त्री [स वीरांगना] वीर स्त्री, बहादुर स्त्री।

उ०—वीरागना वचन-ए ढोलण ढोली नूं कह इतरी ढोल री पला (ढोल री पीठ वा गत) में इतरी क्यू ताकीद करै जोधार तो ग्रापरा वाह घोडा नै चर चरवादार मालक नै घोडी सफै छै तै मालक है सो बगतर पहरै इतरी देर छै। —वी स टी

वीराण वि०—१ वीरो का, वीरो से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

२ भयानक, भयावह।

स पु—१ युद्ध, समर, सग्राम।

उ०—चादो ईसरदास सचाळो, 'विसन' सुजाव गढा रखवाळो। चाड घणी 'तेजल' चहुवाणै, वाधै 'चद' तणो वीराणै। —रा रू.

२ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—१ इण भात कमधा ग्रगळी, रुक वजायी 'रोहडै'। वीरांण कि ग्रारण वावरै, ज्या घण तत्तै लोहडै। —रा रू.

उ०—२ दडोदडी तूट माथा कमधा पावडा देवै, रिमा सीस खाथा सार बजावै ग्रारांण। हैकपै कायरा प्राण छूटगा वीरांण हासै, भचक्कै भूलोक रस्था थभायो सु भाण। —बादरदान दधवाडियो

उ०—३ लोधा ग्रासतीक रैणसिंग ऊवारै घडा रो लाडो, ऊवारो भडाला नाम चाढो कुळा ग्रब। गोरा रै ग्रजटी वोल सामळै वीराण गाढो, खगै ऊभो मेदपाट ग्राडो जेतखभ। —कमजी दधवाडियो

उ०—४ मदफरा डाण नीसाण मौज, फरहरा वाण ग्रसुराण फौज। वीराण रूप इण विध वणाय, ग्राराण भूप सनमुक्ख ग्राय।

—वि स

उ०—५ हिंदवाण तुरकाण हिचै, रिण ढाण वीरांण त्राताण रचै। करडक्क हुवै सिलहक्क कडा धमचक्क भचक्कत सेल धडा।

—सू प्र.

३ देखो 'वीरान' (रू. भे)

उ०—काळा सा मिरघलडाजी, घट ऊजळ पेटा। चोरी जाय करैजी वीराणै खेता। —दीन सुदरदी

४ देखो विडाणो' (रू भे.)

रू भे—वीराण, वैराण, विराण, विरान, वेराण, वेरान, वैराण, वैरान।

वीराणी–स- स्त्री.—वीरता, बहादुरी।

वि०—१ भयानक, भयावह।

२ वीररसपूर्ण।

३ वीरों का, वीरो से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

उ०—रमै वीर हडुडै हालरै जमै जोगराणी, वीम घोम मडै वहै मेछाणी वैराक। पढै पाठ वीराणी चीतौड थान चढै पाणी, 'ग्रडसाणीर' डैरोस ऊकडै ग्रैराक। —महादान महडू

४ देखो 'वीरानी' (रू भे)

वीराणो– १ देखो वीरान' (मह, रू भे)

२ देखो 'विडाणो' (रू भे)

वीरान–वि० [फा वीरान] १ उजडाहुग्रा, श्रीहीन।

२ जनशून्य, उजाड, जगल।

रू भे.—विराण, विरान, वीराण, वेराण, वेरान, वैराण, वैरान, मह—वीराणो, वेराणो।

वीरानी–स. स्त्री. [फा. वीरान] वीरान या उजाड होने की ग्रवस्था या भाव।

रू भे—वीराणी।

वीरा–स स्त्री. [सं] १ पत्नी, स्त्री।

२ वधू।

३ माता।

४ वीर पत्नी, वीर स्त्री।

५ वहिन, भगिनि।

उ०—उठै नी, ग्रै चारण वीरा, सूती छै सुखडा री नीद, थारी तो गाया मैं ग्रै, खीची घोडा फेरिया। ज्या तो गाया कै, ग्रै चारण, तूं खेती गूगळ-धूप, ज्या तो गाया कै ग्रै खीची मारै कोरडा।

—लो गी.

६ पुत्री, बेटी।

७ बडो या वृद्ध पुरुषो व स्त्रियो द्वारा पुकारा जाने वाला किसी कुलवधू या युवा स्त्री के लिए सम्बोधन सूचक शब्द।

८ स्त्रियो द्वारा वृद्धो के ग्रतिरिक्त ग्रन्यो को पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सबोधन सूचक शब्द।

उ०—१ कै इता मैं मोडा रै वारै घोडा री हीस सुणीजी। कमसल वात करता ई ग्रायग्यो। सेठाणी ग्राडो खोल बोली–वीरा, थारी ऊमर तो लाँठी। —फुलवाडी

उ०—२ सासरा री मगरी ढळता ई उणनै मडो साम्ही घकियौ। सुगन तौ भला व्हिया। वेल सूं हेटै उतर वा मुडदा नै हाथ जोडिया अेक खाधिया नै होळै'सी'क पूछ्यौ—वीरा, कुण चलियौ।
—फुलवाडी

६ वायुपुत्र भरद्वाज नामक अग्नि की पत्नी और वीर की माता।

१० वीर्यचंद्र राजा की कन्या एव करधम की पत्नी जो अविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसने अपने पौत्र मरुत्त के द्वारा सर्पसत्र प्रारभ करवाया था जिसे अविक्षित की पत्नी वैशालिनी ने अपने पति के द्वारा बन्द करवाया था।

११ मुरा, मुरामासी।

१२ केला।

१३ ऐलुवा।

रू भे—वीरा।

वीराचारि, वीराचारी-स पु. [स वीराचारिन्] १ अपने इष्टदेव की वीरभाव से उपासना करने वाले एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त।

२ वीर बहादुर या योद्धा का आचार, कर्त्तव्य।

उ०—इम आरोडिउ तपि जा करणु, पुरूख पराभवि सारू मरणु। दुरजोधनि तउ पखउ करीजइ, "वीराचारि कुलु जाणी-जइ।"
—सालिभद्र सूरि

वीराजमांन—देखो 'विराजमान' (रू. भे.)

उ०—ठाकुरजी स्रीदाऊजी रा मिंदर मे सेवा तौ महाराज अभै-सिंघजी गुसाईंजी विठलरायजी १७८६ कोटै सु लाय वीराजमान किया नै मिंदर रो मोटो कमठो मा'राज विजैसिंघजी करायो।
—मारवाड री ख्यात

वीरातन-स. पु—१ बहादुरी, वीरता।

उ०—१ हणमत द्रोण हिल्लोळवा, वीरातन किरि विळकुळै। दळ-थभ विढण दखणाधि सू, ऐम ऊठियौ भुज आमलै। —गु रू ब

उ०—२ सुजड-हथा "चाद राउ" समोभ्रम, विधि वीरातन वैर विधि। रोपै जई पवगि आसण रिध, रिप तई भजै राज रिधि।
—राव रिडमल रो गीत

उ०—३ आरण कियौ उछाह, वीरातन वद्धियौ। मारू लोह मराट, चमू सझ चढ्ढियौ। —किसोरदान बारहठ

२ बहादुर, वीर, योद्धा।

रू भे—वीरायतन।

वीरादवीर, वीरादिवीर, वीरादीवीर—देखो 'वीराधिवीर' (रू भे.)

उ०—कथ सुणी अेम 'विसनै' कमध, मेडतियै गूलरपत मदध। सामहा जाय मिळियो सधीर, विसनेस कमध वीरादवीर। —पे. रू

वीराधपत, वीराधपति, वीराधपती-सं. पु.—[स. वीराधिपति] वीरो मे श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि, महावीर।

वीराधवीर—देखो 'वीराधिवीर' (रू भे)

उ०—१ मूछा अणी अूंह मेळ, दाढी कर दाखि जी। विढती वीराधवीर, सूर जितै साखि जी। —गु रू. ब.

उ०—२ वरवीर खूमाण वीराधवीरं, झळी-मूळ 'सादूळ' वैवै कठीर। भलो भीच कल्याण मल्लो भुजाळो, 'मानावत' वेढीमणो मच्छराळो। —गु रू. ब.

उ०—३ गेळा उघमै अवाक भाला छाक डाक दै दै आणं, धाडा धाडा आपाणं भरोसै भुजा धींग। चद्रहास ऊवाणं वीराधवीर जाणं चीजा, दिली री कवारी फोजा गाणं देवीसीग।
—राव देवीसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—४ वीराधवीर जिसा धीर पडिर। यारी वी रजपुती असी आकाय। ज्या सू जमराज पणि देसत खाय। या नै आगवणि कुण करै। सिर उपर रूठा फिरै। —पना

वीराधि-स पु—वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—जोगी तुझ ना जयो जूना जुवारी, महादेव माहेस अणकल मुरारी। महावीर वीराधि अेकलमलं, अधिक आप उदार दाता अदल। —पी. प्र.

वीराधिवीर-स पु—वीरशिरोमणि, महावीर।

उ०—१ सुत रूक्क हुवौ अक पोह सधीर, अक सुतण बाहु वीरा-धिवीर। सुत बाहु सगर परगट ससार असमज सगर सुत त्रप उदार।
—सू प्र.

उ०—तेहैं घोडै किस्या खिन्नी चडिया। पंचवीस वरस ऊपहरा। पचास वरस माहि। लुघसघानीक। वीराधिवीर। आकरणात मूछ। —का दे प्र

उ०—३ वीराधिवीर. हेला हमीर। 'मधुकर' सुतन्न, किरतव्व क्रन्न। —र वचनिका

रू भे—विराधवीर, वीराधवीर, वीराधवीर, वीराधिवीर, वीराधि-वीर, वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी, वीरादवीर, वीरादि-वीर वीरादीवीर, वीराधवीर।

वीरापाचम-स स्त्री—भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पचमी।

वीरावारस-स स्त्री.—कार्त्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी।

वीरावीज-स स्त्री—कार्त्तिक शुक्ला द्वितीया।

वीरायतन—देखो 'वीरातन' (रू. भे.)

उ०—सातल तणउ रुधिर सुरताणि, वाघउ वीरायतन वखाणि। पदम नाभ पडिति मति कही, बीजा खड समापति हुई।
—का दे प्र.

वीरारस, वीरारसि—देखो 'वीर' (३८)

उ०—१ घणि वाजित्र घण घाउ, घमघमि अपछर घूघरा। वाधा वीरारस तणा, नाराजिआ निहाउ। —र. वचनिका

उ०—२ तुकमा रूप खतम फतै रा फब्बिया, देखता उर दभ भरदा दब्बिया। विहसतौ निज वदन ´वीरारस वेस री, दीपायौ हद दौर मुरद्धर देस री। —किसोरदान बारहठ

उ०—३ वीरारस घरण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोण। सेल सावळ कुंत मुदगर, उछळई अति स्रोण। —रूकमणी मगळ

उ०—४ वीभाजळ रूप गयद चढि मेघाडबर विराजै। नौबतूं कै निहाव वीरारस वाजै। जिस वखत जळावोळ हालोहळसै फौज हल्ली। नालू कै निहाव सेती धरती थरसली। —सू प्र.

वीरावी–क्रि वि —वीरो मे।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरच जाणं, धूरजटी तावा ऊच भावा मेर धींग। भ्रावा लोम रिखी राम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सामवेद वेदागा वीरावी सभूसींघ। —हुकमीचद खिडियौ

वीरासण, वीरासन–स पु [स वीर+आशन] १ निगाह या चौकसी रखने की क्रिया, रखवाली।

२ युद्ध आदि मे अधिक जोखिम वाला पद।

३ वीर सिपाही।

[स वीर+आसन] ४ वीरों के वैठने का ढग विशेष।

उ०–जिल अमक सै वीरासन बैठा न गया, पिछाडी को हाथ टेक कर अगाडी पैर फैला दिया। जिस वखत रघुनाथसिंघ अैसा निजर आया, मानौं बुभी मसाल सा दीदार दिखलाया।

—दुरगादत्त बारहठ

५ पहरा दिया जाने वाला स्थान।

६ घुटना मोडकर वैठने क्रिया।

७ योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमे वायें पाव को घुटने से मोडकर इसके पजे को गुदा के नीचे उत्तर दक्षिण आडा रखकर और दाहिने पाव की एडी वाये पाव के अगूठे को लगाकर घुटने को छाती की तरफ ऊचा करके वैठना होता है। हाथो या पावो के हेर फेर से इसका दूसरा प्रकार भी होता है।

उ०—एक आसरण अरु ऊकडू, पडिमा काउसग रात। पद्मासन वीरासणो, रहै छकाया-नाथ। —जयवाणी

रू भे —वीरस्थान

वीरि–सं. स्त्री —१ वहन, भागिनी। (ह ना मा.)

२ वीर स्त्री।

उ०—एक नारि रण नइ तडि ऊभी, वधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि धाय पडतउ नवि जाणिउ, न्याय वीरु कुल वीरि वखाणिउ। —सालिसूरि

३ देखो 'वीरी' (रू. भे)

वीरिणी–स स्त्री.—[स] १ वह स्त्री जिसका पति एवं पुत्र जीवित एव सुखी हो।

२ वीरण प्रजापति की कन्या एव दक्ष प्राचेतस की पत्नी।

वि० वि०—इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अगूठे से हुई वताते हैं। इसके एक हजार पुत्र एव पचास कन्याएँ उत्पन्न हुई थी।

३ शुक्रपत्नी पीवरी का नाम।

४ ब्रह्मा की पौत्री एव वीरसेन राजा की कन्या जो चाक्षुप राजा की पत्नी थी।

५ एक प्राचीन नदी का नाम।

वीरियां—देखो वेळा' (रू भे)

वी'रियोडौ—भू० का० कृ०—१ विस्मरण हुवा हुआ, भूला हुआ।

२ देखो 'विहरियोडौ' (रू भे.) (स्त्री वी'रियोडी)

वीरी—स. पु. १—वैरी, शत्रु, दुश्मन।

उ०—सदेसाहि ववज पडघौ, लाच्या परवत दुरघट घाट। परि-देसा परि-भूमि गयस, वीरी जगह न चालइ वाट। —वी दे.

२ देखो 'वीरि' (रू. भे.)

वीरीयां—देखो 'वेला' (रू भे)

उ०—१ इसी तरै कागद लिख मेलियौ, चारण साथै। सौ कागद वाच नै रामदासजी तिण हौज वीरीयां हेरू मेलिया, अनै कयौ मन तौ साढिया लीया वसा। चारण नै घोडो सिरपाव दे नै सीख दीनी पधारो वाइ नै जुहार कहेजो। —रा० सा० स.

उ०—२ मा बोली—'अरजन, वात साभळी ? वाप, हमीर दुणोटी मागै छै। कह्यौ—वाप, जीमण बैसे छै, तीयै वीरीयां अर-जन सु मोनु दुणोटी मेलहौ।" —अरजन हमीर री बात

वीरु—देखो 'वीर' (रू भे.)

उ०—१ सउ कूयर पचगलउ किंवहरि पडिवा जाइ। वीरू वीरु मति आगलउ करणू पडइ तिणि ठाइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक नारि रण नइतडि ऊभी, वधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि धाय पडतउ नवि जाणिउ, न्याय वीरु कुलवीरि वखाणिउ। —सालिसूरि

उ०—३ हउ ओलखावउं अनइ वीरु वीर, तइ होइवउ उत्तर नाम धीर। छइ जीह दुरयोधन तीह खेडउ, हेला सही कौरवमान मोडउ। —सालिसूरि

वीरुज, वीरुज्भ, वीरुभ–स पु [स वीर+उज्भ] अग्निहोत्र नही करने वाला ब्राह्मण।

वीरुधा–स स्त्री. [स] नागमाता सुरसा की तीन कन्याओ में से एक।

वि० वि०—इसकी अन्य दो वहनो का नाम अनला एव रुहा था।

वीरूप—वि० [स. विरूप] भयकर, भयावह डरावना।

उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीरूप अग।
देवी बाल जूवा अध वेख वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसाभुजाळी।
—देवि

रू भे —वीरूप।

वीरेस, वीरेसर, वीरेसुर, वीरेस्वर—स पु [स. वीर+ईश एव वीर+ईश्वर] १ शिव, महादेव।

२ वीर, अत्यन्त वीर पुरुष।

३ पवनसुत हनुमान।

वीरोचद—देखो 'विरोचन' (रू. भे.) (ना डिं को.)

वीरोचदसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू भे.)

उ०—वीरोचदसुत अहपर वारौ, रव सुत तणौ अमरपुर राज।
धीनि दातार 'कलावत' नरपुर, अनत रोर केही गत आज।
—दुरसौ आढौ

वीरोचन—देखो 'विरोचन' (रू भे)

उ०—ऊधम किर राळै घर अदर, वाग असोक लागडै वानर।
दहुवै जुवा भडा खळ दहिया, वीरोचन अमर दळ वहिया।
—सू प्र.

वीरोचनसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

वीरोटण, वीरोटणी—स. स्त्री जादू-टोने आदि करने वाली स्त्री. जादूगरनी।

उ०—तद कान्हौ बोल्यौ तमक, मत करणा मक्कर। वीरोटण पण वेखता, नह सोभ चढै नर। —ठाकुर कुभारसिंघ मेडतियौ

वीरोटियौ—स. पु [स. वीर+रा प्र ओट, ओटियौ] (स्त्री. वीरोटण, वीरोटणी) १ मत्र-तत्र द्वारा श्मशान भूमि मे भूत-प्रेत जगाने वाला पुरुष, जादूगर।

२ देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कई खाय पीलिया कोणा, कई जाळ जाळोटिया। मुरधर मल्ल वणै इण मेवै, वाळ बंड वीरोटिया। —दसदेव

रू. भे —विरोटियौ।

वीरोध—देखो 'विरोध' (रू. भे.)

उ०—बाण पाराथ तणौ जाण वीरोध री, विखम थट रोध री किया वासौ। जबर भुज धारिया हणूं वळ जोध री, धमक भुज धारिया अरुण धांसौ। —रावत अजीतसिंघ री गीत

वीरोळणौ, वीरोळबौ—देखो 'विरोळणौ, विरोणवौ' (रू. भे.)

उ०—घोडै खळ धूहड लाखा चाक, वीरोळै लाख खळा वेढाक, खत्री गुर वीरम धूणै खाग, वीछूटौ जाणेय साकल बाग।
—गो रू

वीरोळणहार, हारौ (हारी), वीरोळणियौ—वि०।

वीरोळिग्रोडौ, वीरोळियोडौ, वीरोळ्योडौ—भू० का० कृ०।

वीरोळीजणौ, वीरोळीजवौ—कर्म वा०।

वीरोळियोडौ—देखो 'विरोळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीरोळियोडी)

वीरौ—स पु —१ भाई, भ्राता।

उ०—१ उठो बाइसा बाधौ राखडी, थारा वीरोसा रा जतन कराव।
उठौ मानेतण खोलो कोथळी, थारै सासु नणद नै ओढावा।
—लो गी.

उ०—२ श्रो माय घालो जायफळ नै जावंतरी, श्रो तेल बनडा रै अग चढसी ओ। लेखो वा रा भाभीसा कर लेसी, श्रो दमडा वारा वीरोजी भर देसी। —लो गी.

उ०—३ चाकरडी रै मारू, था रै वडोडै वीरैजी नै मेल राय, भरियै रै भाद्रवै, रै म्हारा गाढा मारू, घर वसो। वडोडै वीरैजी री, गवरादै, लडोकडी नार, राय, साझतडी रीसवैली म्हारै वावैजी सूं मोरची माडसी। —लो. गी.

उ०—४ कुण वीरौ कुण बहनडी रे, जोयजो मोहरी बात। इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै विलापातौ रे। —जयवाणी

(स्त्री वीरी)

२ भाई के नाम पर बहिन द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—१ धीवडियां घर बाळापण धीर, उगेरै 'वीरौ' ऊची राग।
जोवता दुग दुग तारौ अेक, सरावै धरती रा सौभाग। —साभ

उ०—२ म्हनै वीरौ सुणण रौ अर बाई नै वीरौ गावण रौ कितरौ कोड हो, जिण रो कोई पार नी। म्हू आवतौ जितरी बार लारै पड जावती—बाई एकर तौ वीरौ सुणाय दे! अर वा झीणा कठ सू सरू कर देवती। —अमर चूनडी

३ देखो 'वीर' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ रमता राम एक रग रता, माया मोह विलै नही मता।
सतिम साध सु लच्छन धीरा, सो कहीयै अजरामर वीरा।
—अनुभववाणी

उ०—२ भगवत नइ भव पूछिया कह्यउ, तुं छइ चरम सरीरौ रे।
सूरियाभ वारता सहु, गोतम पूछी कहि वीरौ रे। —स कु.

रू. भे.—वीरौ

वीरय—देखो 'वीरज' (रू भे)

वीरयचद, वीरयचदर, वीरयचद्र—स पु. [स. वीर्यचन्द्र] करधम राजा की पत्नी एव अविक्षित राजा की माता का पिता।

वीरयधर, वीरयधारी—स पु [स वीर्य+धारिन्] प्लक्षद्वीप के मूल निवासी क्षत्रिय। (पुराण)

वीरधवत, वीरधवान-स. पु [स. वीर्यवत्, वीर्यवान] १ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक दानव।

२ एक सनातन विश्वे देव।

वीरधसह-स पु. [स. वीर्यसह] सूर्यवशी राजा सोदास का कल्माषपाद नामक पुत्र।

वीरधहारी-स पु. [स वीर्यहारी] दु सह नामक यक्ष की पुत्री के गर्भ से किसी चोर के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

वील—स पु.—१ किसी बन्द कमरे मे सामान आदि रखने के लिए आमने-सामने की दीवार में लगाया जाने वाला लबा पत्थर।

२ देखो 'बीलो' (मह रू. भे)

उ०—१ प्रथम पीपळ साग सीसमह, आमली अधिकार। वडबोर वील वहेड बाउळ, कूरमदी कथार। —रुकमणी मगळ

उ०—२ जाळ जागडो रू ख, सघन गायडमल गाढो। वील सरेसा वडी खजूरा सिरसी डाढो। खर खोदरिया माय, गोहिरा साप गजवरा। झड झाखड जड जाय, उरणिया वडै अमब रा। —दसदेव

उ०—३ कनक कुंभ श्रीफल जिमा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रग। पाका वील नारिंग सा रे, मानु युगल चकोर रे रग। —प च चौ.

३ देखो 'बील' (रू भे)

वीलाणौ, वीलाबौ—देखो 'विलाणौ, विलावौ' (रू भे.)

उ०—वरसा वदीत हुइ सरद आइ। ससि अम्रत सूवै छै जोतिफळै गइ जुन्हाइ। आकास निरमळ हुवौ। वादळ वीलाया। सीपा गरभ धारण कीयौ छो। ज्या मोती जाया। —पना

वीलाणहार, हारौ (हारी), वीलाणियौ —वि०।

वलायोडौ—भू० का० कृ०।

वीलाईजणौ, वीलाईजबौ—भाव वा०।

वीलायोडौ—देखो विलायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वीलायोडी)

वीलावणौ, वीलावबौ—देखो 'विलाणौ, विलावौ' (रू. भे)

वीलावणहार, हारौ (हारी), वीलावणियौ—वि०।

वीलाविश्रोडौ, वीलावियोडौ, वीलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलावीजणौ, वीलावीजबौ—भाव वा०।

वीलावियोडौ—देखो 'विलायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वीलावियोडी)

वीलियौ—देखो 'बीलौ' (अल्पा, रू भे.)

वीली—देखो 'बीलौ' (अल्पा, रू. भे)

वीलोणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू भे.)

उ०—थापियौ कीरड ताय सीथर थान, मही नद गोळन गोळजी उगोळ माय। गाजै सु अखब सुब चरै गाय, मन धरै वीलोणौ करण माय। —रामदान लाळस

वीलोणौ, वीलोबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडवौ' (रू. भे)

वीलोणहार, हारौ (हारी), वीलोणियौ—वि०।

वीलोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलोईजणौ, वीलोईजबौ—कर्म वा०।

वीलोयोडौ—देखो 'विलोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोयोडी)

वीलोवणौ, वीलोवबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडवौ' (रू. भे.)

वीलोवणहार, हारौ (हारी), वीलोवणियौ—वि०।

वीलोविश्रोडौ, वीलोवियोड़ौ, वीलोव्योडौ—भू० का० कृ०।

वीलोवीजणौ, वीलोवीजबौ—कर्म वा०।

वीलोवियोड़ौ—देखो 'विलोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोवियोडी)

वीलौ—देखो 'बीलौ' (रू. भे)

वील्हणवटी, वील्हणवाटी-स. स्त्री —नागौर जिले के 'मारोठ' गाव के आस पास का प्रदेश।

उ०—दहिया री उतन यू सुणियौ छै, दिखण नूं नासिक त्र्यबक गोदावरी कनै गढ थालनेर थी। इतरी ठौड दहिया रै अजमेरा माहैं हुती। देरावर परबतसर गाव ५२. सावर घाटियाळी। हुरसार वील्हण री बेटी हुरधवळ धणी। माहरोट री वील्हणवटी नाव। —नैणसी

वि० वि०—इसका नाम वील्हण दहिये के नाम से हुआ।

वील्हो-स. पु —१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

उ०—वील्हा वायस, विझळा, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागलो, ते ऊधी टगाय। —मा का प्र.

२ देखो 'बीलौ' (रू भे)

वीवणोटौ—देखो दूणौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—ताहरा साजण री नजर नै हमीर री नजर एक हुई। ताहरा हमीर री आख सू चाळधा ठळक-ठळक पडवा लागा। ताहरा साजण कहै छै, "बाप, हवे रोवै छै? सु अरजनजी विचै वीवणोटौ आरोगवा पधारा था। —अरजन हमीर री वात

वीवनो, वीवन्नो—देखो 'विवनो' (रू. भे.)

उ०—परचड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पच दिन। 'गजसाह' वसुह राखी पगै, हहै मुज्ज डिगियो गिगन। —गु रू. ब.

बीवरो–स पु.—१ आलवन, सहारा।

उ०—रहो बीवरै रामरम, अनरथ मणो मलत। या हिज है भ्रम आतमा, ऐं तीरथ ऐं तत्त। —बा. दा.

२ लीन या मग्न होने की अवस्था या भाव।

३ देखो 'विवरो' (रू. भे.)

बीवसाल—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—सवळां सु सहीयारो कोजई, पाणी पहिली पाळ। रुखमईयो बोलै सुणि राजा, जोईजइ बीवसाल। —रुकमणी मगळ

बीवांण—देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०—१ अपछरा का सा बीवांण बीछूटा। छछोहा जवान तरवारघां आछटै छै। ज्या सु अगजवार हुरवरमळा साथै ही कटै छै। —पना

उ०—२ भोम बाजत्र धरै सुर पग बीवाणा, मणुं सुर पधारो जोत भैळा। आपरै सेवगा महर रावळ 'भ्रमर', वीहद भूलो नही तैण वेळा। —रावळ हरराजजी री गीत

बीवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव विमळ विचार करै बीवाह। सुंदर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह। —वेलि

उ०—२ मंदिर तरि किया खिणतरि मिळिवा, विचित्र सखिए समाग्रत। कीधै तिणि बीवाह ससक्रित, करण सु तणु रति ससक्रत। —वेलि

उ०—३ तद विजोगण री मा विजोगण नू कह्यो, आपा वांणीया छा अर ऐ राजा छै। अर आपा इसा मिसपत कांई नही। ए बीजा बीवाह करसै तद तनै दुहागण कर राखसी। तू कही साह नू परणीज ज्यौं घर री धणीयांणी हुवै। —बीजड बीजोगण री वात

बीवाहलो, बीवाहिलु, बीवाहिलो—देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

उ०—१ गोरीनदन वीनऊ, स्रीपति सुमति सुजाण। क्रस्ण तणो बीवाहलो, रिधसिघ प्रसिघ प्रमाण। —रुकमणी मगळ

उ०—२ सयल मण वछिय काम-कुभोवम, पास पय कमलु पणमेवि भत्ति। सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु बीवाहलउ, सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति। —ऐ जै. का. स

उ०—३ गवरीय नदन बीनवु जी, स्रीहरि सुरतरु आंणि। क्रिस्न तणो बीवाहिलो जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण। —रुकमणि मगळ

बीवाहु—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ अभिवनु उत्तरकूयरि वरिउ, आवी क्रसिण बीवाहु सु करिउ। पहुतउ सहूइ कन्हडपुरि, च्यारि कन्न विहु पडवि वरी। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ आदरि अरिदल आमला, सामलावांनि बीवाहु। आसारंगि रमाडिय, माडिय मनि उच्छाहु। —जयसेखर सूरि

बीवाहणो, बीवाहबो—देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे.)

बीवाहणहार, हारो (हारी), बीवाहणियो—वि०।

बीवाहिओडो, बीवाहियोडो, बीवाहयोड़ो—भू० का० कृ०।

बीवाहीजणो, बीवाहीजबो—कर्म वा०।

बीवाहियोडो—देखो 'विवाहियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीवाहियोडी)

बीसभर—देखो 'विस्वभर' (रू. भे.)

उ०—प्रतिम येह उपाय, बीसभर न विसारियै। साथै धरम सहाय, पल पल रांण प्रतापसी। —दुरसो आढो

बीसभरा—देखो 'विस्वभरा' (रू. भे.)

बीस–वि.—दस का दुगुना, पन्द्रह व पाच का योग।

स स्त्री —२० की सख्या।

उ०—१ रीझी सुण चद्रावत राणी, साम साथ कज स्रवण सुहांणी। गायण बीस परम जस गावै, दूणं हित ऊठो दरसावै। —रा रू.

उ०—२ बीस कोस दिस वाम, बीस दाहणं तरफ्फं। जाळ घर सामही, करै वेमुही सरफ्फं। —रा. रू

रू. भे.—बीस।

बीसण—देखो 'व्यसन' (रू भे.)

बीसण्—देखो 'विस्णु' (रू भे.)

बीसन—देखो 'विस्णु' (रू भे.)

उ०—वळतो ढोलो इम कहै, एह वचन मम आख। मारू सु सकलपियो, ब्रह्मा बीसन री साख। —ढो मा

२ देखो 'व्यसन' (रू भे.)

बीसनर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

बीसनु—देखो 'विस्णु' (रू भे.)

बीसभुज, बीसभुजाण, बीसभुजा–स पु [स बीस+भुजा] १ लकानरेस रावण। (अ. मा.)

उ०—१ साफण जुधा बीसभुज आसुर, दीन निवाजण अनुज सहोदर। बोले साख त्रिकुट लिछमीवर, उमग रीसवाळो अवधेस्वर। —र ज. प्र.

उ०—२ सुत भ्रात कटै सक धोट वधै घक, बीसभुजांण विचारियौ जी। निरवीजां बांनर नेम नमुस्सर, धेस इसौं मन धारियौ जी। —र. रू

स स्त्री.—२ दुर्गा, महामाया।

वि०—जिसके बीस भुजाएँ हो।

रू. भे.—वीसभुज, बीसभुजा, बीसभूजा।

वीसभुजाळ—१ देखो 'वीसभुजाळी' (मह,. रू भे)

२ देखो वीसभुजाळी' (मह,. रू. भे)

वीसभुजाळी-स स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया।

रू. भे—वीसभुजाळी, वीसाभुजाळी।

मह., रू भे.—वीसभुजाळ वीसभुजाळ,।

वीसभुजाळौ-वि—जिसके बीस भुजाएँ हो।

स पु—लकानरेश रावण।

मह, रू भे—वीसभुजाळ, वीसभुजाळ।

वीसभूजा—देखो 'वीसभुजा' (रू भे)

उ०—देवी भूतडा भ्रम्मरी वीसभूजा, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजा। देवी राखस घोमरै रक्त रती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्मदुती। —देवि

वीसम, वीसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे) (उ र)

वीसमणौ, वीसमवौ-क्रि. ग्र. [स. विश्राम] १ ग्राराम करना, ठहरना।

उ०—१ इकि डोकरि तिणि दीसि पाच पूत्र इकि वहूय सउ कु ती नइ ग्रावासि वटेवाहु वीसमिया। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सुगुरु साथिय हीण घणु भमिया, विसम वाट किहाइ न वीसमिया। वसइ जं जिनमदिरि सीयलइ, विहु परे तीहे तापु सही टलइ। —जयसेखर सूरि

उ०—३ सीतल सीलछाया वीसमउ, भावना नीरिहिं सीचिउ धरउ। फुल पत्र वार देवलोक जाणि, एह व्रक्ष नउ फल मुकति निरवाणि। —वस्तिग

२ शयन करना, सोना।

उ०—छायल फूल विछाय, वीसमतो वरजागदे। गैमर गोरी राय, तिण ग्रामास ग्रडाविया। —सोभा हीमालावत री गीत

३ ग्रवसान होना, मरना।

उ०—'मान' हर 'माल' हर 'ग्रमर' हर वीसमै, ग्रन पहू ग्रोसरै नको ग्राया। ग्रसुर दळ ऊपटै, ग्राज हू ग्रेकलौ, जुडन कज पवारी 'स्याम' जाया। —कछवाहा सुजाणसिंघ स्यामसिंघोत सेखावत री गीत

वीसमणहार, हारौ (हारी), वीसमणियौ—वि०।

वीसमिग्रोडौ, वीसमियोडौ, वीसम्योडौ—भू० का० कृ०।

वीसमीजणौ, वीसमीजवौ—भाव वा०।

बीसमणौ, वीसमवौ, वीसम्मणौ, वीसम्मवौ—रू. भे.।

वीसमियोडौ-भू का. कृ—१ विश्राम किया हुग्रा ग्राराम किया हुग्रा, ठहरा हुग्रा। २ शयन किया हुग्रा, सोया हुग्रा। (३) ग्रवसान हुवा हुग्रा, मरा हुग्रा।

(स्त्री. वीसमियोडी)

वीसमी, वीसमै—देखो 'विसम' (रू. भे)

उ०—१ हुईय कामिनि रूपि निरूपमी, रहिउ भीम तमी मुख वीसमी। वहुल भक्ष मनुक्ष करै करी, गयउ सो तडि कीचक सुंदरी। —सालिसूरि

उ०—२ उठै हुसन दळ लिया ग्रभूता, हिलियौ महण क दक्खण हूता। ग्रौ वीसमै दिवस खडि ग्रायौ, लेखवता मग मास न लायौ। —रा रू.

वीसमौ—१ देखो 'विसम' (रू. भे)

उ०—१ मरै घण गाजियै जिकौ सादूळ महि, सग्रा चा ढोल सिर सकै किम 'जसौ' सहि। वयण घण साभळै रहै किम वीसमौ, सुपह सादूळ कुणि गिणै ग्रापा समौ। —हा का.

उ०—२ 'गोइद' पेखि जैसळगिरौ, बाघ वीसमौ वीरवर। रिण-वार राण 'ग्रमरेस' रा, कुरंगा जेम गया कु ग्रर। —गु रू. व.

२ देखो 'वीसवौ' (रू भे.)

वीसम्मणौ, वीसम्मवौ—देखो 'वीसमणौ, वीसमवौ' (रू भे)

उ०—पखा करै ग्रछर विहू पासै, पखणि सेव सचपै पाव। सिरदारा पाथरि वीसम्मियौ, समहरि निसभरि 'मान' सुजाव। —सुरताण मानावत री गीत

वीसम्मणहार, हारौ (हारी), वीसम्मणियौ—वि०।

वीसम्मिग्रोडौ, वीसम्मियोडौ, वीसम्म्योडौ—भू० का० कृ०।

वीसम्मीजणौ, वीसम्मीजवौ—भाव वा०।

वीसम्मियोड़ौ—देखो 'वीसमियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वीसम्मियोडी)

वीसर-स. स्त्री—१ भूल, विस्मरण।

२ देखो 'विसर' (रू भे.)

वीसरणौ-वि०—भूलने वाला, विस्मरण होने वाला।

वीसरणौ, वीसरवौ—देखो 'विसरणौ, विसरवौ' (रू भे.)

उ०—१ ताहरा एकण वहू कह्यो, "वीजो तो किण ही विध विसारै न पडै, जो सावण लागतै स्यु ग्रापा कुवरजी नु जुदी जुदी गोठा करो। भीनर राखा। ग्रादमी चाकिया सारा नु ग्रमला-पाणिया सु गळतान राखा तो वीसर जावै। —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ लिव लागी तूटै नही, लिव ग्रतर की तार। लागत ही सु वीसरी, हरीया तन की सार। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ क्यों वीसरै दान क्यो वीसरै मान क्यो वीसरै जुगति सु जीमियौ धान। क्यो वीसरै साप नै सीस रौ घाव, क्यो वीसरै वैरिया जदि पडै दाव। —मेहोजी गोदारा थापन

उ०—४ मोताज ग्रम्हा हरवळ मिळण, सो कुळवाट न वीसरू। 'गोरधन' कियौ 'गजवध' ग्रग्र, कळह ग्राप ग्रग्र मैं करू। —सू प्र

उ०—५ दिनि निसि माधव देखवा, हीयडा माहि हाम। भूख त्रिखा निद्रा नही, वीसरिया सवि काम। —मा. कां प्र.

वीसरणहार, हारो (हारी), वीसरणियौ—वि०।
वीसरिग्रोडौ, वीसरियोडौ, वीसरयोडौ—भू० का० कृ०।
वीसरीजणौ, वीसरीजवौ—कर्म वा०।

वीसराणौ, वीसरावौ—देखो 'विसराणौ, विसरावौ' (रू भे)

उ०—हीरा तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन। वीसराई उण वात नै, नागर ग्यात नवीन। —बगसीराम प्रोहित री बात

वीसराणहार, हारो (हारी), वीसराणियौ—वि०।
वीसरायोडौ—भू० का० कृ०।
वीसराईजणौ, वीसराईजवौ—कर्म वा०।

वीसरायोड़ौ—देखो 'विसरायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीसरायोडी)

वीसरावणौ, वीसरावबौ—देखो 'विसराणौ, विसरावौ' (रू भे.)
वीसरावणहार, हारो (हारी), वीसरावणियौ—वि०।
वीसराविग्रोडौ, वीसरावियोडौ, वीसराव्योडौ—भू० का० कृ०।
वीसरावीजणौ, वीसरावीजवौ—कर्म वा०।

वीसरावियोडौ—देखो 'विसरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. वीसरावियोडी)

वीसरियोडौ—देखो 'विसरियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री वीसरियोडी)

वीसवळौ—स. पु.—कलेजे पर पानी से भरी एक थैली।

वीसविसवा, वीसविसा, वीसवीसा, वीसवीस्वा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

उ०—१ वीसविसवा भक्ती कर, एक विसवो दै नंद। पुण्य कीनो राक्षस भख, होय जावै ग्रदादुद। —श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ जमवान सु एवजखान जिसा, वप रीस ग्रमापक वीसविसा। यधि ज्गेड ग्रबद्दल सैद वळै, भुज सार लियो जिण भार भळै। —रा रू.

उ०—३ दिल उजळ 'सिवा' ग्रवनीमा दूदा, वडपण दाखा वीसवीसा। कपडा दीसा न देसै कमधज, देखीजै ग्राखरा दीसा। —सिवसिंघ मेडतिया री गीत

वीसवौं—वि०—जिसका स्थान क्रम से उन्नीस के बाद हो।
रू. भे —बीसमौं, वीसवौं वीसमौं।

वीससणौ, वीससवौ—क्रि० स०—१ विश्वास करना, ऐतबार करना।

उ०—१ मन उल्हसइ कलवी तणा, ऊससइ वेलि वितान। लोक लोकनइ वीससइ, विणसीइ जवाना पांन। —नळदवदती रास

उ०—२ विदुरि पवाचिउ लेखु, दुरयोधन मन वीसिसउं। एसु पुरोहित वेसु, कालु तुम्हारउ जाणिजउ। —सालिभद्र सूरि

क्रि० अ०—२ विश्वास होना, ऐतबार होना।
वीससणहार, हारो (हारी), वीससणियौ—वि०।
वीससिग्रोडौ, वीससियोडौ, वीसस्योडौ—भू० का० कृ०।
वीससीजणौ, वीससीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीससाकरण—स. पु. [स विश्रसाकरण] रूप, रस, गध एव स्पर्श का अपने से भिन्न रूप, रस, गध एव स्पर्श मे मिलने से उस वर्णादि का मेल। (जैन)

वीससियोडौ—भू० का० कृ०—१ विश्वास किया हुआ, ऐतबार किया हुआ।
२ विश्वास हुवा हुआ, ऐतबार हुवा हुआ।
(स्त्री वीससियोडी)

वीसहत, वीसहती—सं स्त्री.—१ देवी, दुर्गा, महामाया।
२ सरस्वती गिरा, भारती।

उ०—चिंता विघन विनासणी, कमळासणी सगत। वीसहती हसवाहणी, माता देहु सुमत। —ग्रग्यात

रू. भे.—वीसहत, वीसहती, बीसहत्थ, वीसहत्थी, बीसहथ, बीसहथि, बीसहथी, बीसहथ्थ, बीसहथ्थी, वीसहत्थ, वीसहत्थी, वीसहथ, वीसहथि, वीसहथी, वीसहथ्थ, वीसहथ्थी, हातबीसाळी।

वीसहती—देखो 'वीसहथौ' (रू भे.)

वीसहत्थ, वीसहत्थी—देखो 'वीसहती' (रू. भे)

उ०—नमो कूखमांडी नमो काति काळी, नमो त्रिपूरा तोतला प्रेत ताळी। नमो वीसहत्थी नमो वीर सगा, नमो उडळा ग्रोडणी गोम ग्रगा। —मा. वचनिका

वीसहत्थौ—देखो 'वीसहथौ' (रू. भे)

वीसहथ. वीसहथि, वीसहथी—देखो 'वीसहती' (रू. भे)

उ०—१ तउ वीसहथि विरोळि, तइ वीसहथि विरोळियइ। भावठि भागइ तू तणइ, हिज्यउ सु कांइ हिंगोळि। —ग्र. वचनिका

उ०—२ कहै ग्रोरि केकाण, सेल ग्रसुराण करू सळ। वीसहथी हथवीस, ग्रोक पाळ रत ऊजळ। —सू. प्र.

उ०—३ खळहळां खत चळवळा खापर, वीसहथ भर विळकुळी। मह वळा चव रघुनाथ ग्रमला, मड सुसबद मडळी। —र ज. प्र.

उ०—४ बूझइ किसूं वापडा मानव, वीसहथी सहु लहइ विचार। गवरी जाणं लाडगहेली, ईसर देव तणा ग्रधिकार। —महादेव पारवती री वेलि

वीसहथौ—स. पु —लकाधिपति रावण।
वि.—वीस भुजाग्रो को धारण करने वाला।

रू. भे —वीसहतो, वीसहत्थौ, वीसहथ्थौ।

वीसहथ्थ, वीसहथ्थी—देखो 'वीसहतो' (रू भे)

वीसहथ्थौ—देखो 'वीसहथौ' (रू भे)

वीसहे'क—वि.— करीब बीस, लगभग बीस।

उ०—तद श्रै मोटियार था, सतावी खड़ कोसा पाचा-साता श्राय पोहता। श्राण वतळाया श्रै घिरीया, सो रीठ वागो। सो श्रादमी वीसहे'क सु वेणीदास रा बेटा दोय, भतीजा दस, वीजा भाई वध खरळ काम श्राया। —कुंवरसी साखला री वारता

वीसाभुजाळी—देखो 'वीसभुजाळी' (रू. भे.)

उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रग, देवी रूप श्रवार वीरूप श्रग। देवी बाळ जूवा श्रघ वेख वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसांभुजाळी। —देवि.

वीसाम, वीसांमउ—देखो 'विसराम' (रू भे)

उ०—१ न लियइ वीसांम उन विरहइ, पवन वेग तै वाटै वहइ। कहइ उडइ पखी श्रागासि, प्रगडइ श्राया पूगळ पासि। —ढो मा

उ०—२ ललित सरोवर पेखियइ ए, वली सत्ता नी वावि। तिहा वीसामउ लीजियइ ए, वड नइ चउतर श्रावि। —स कु

वीसांमणौ, वीसामवौ—देखो 'विसरामणौ, विसरामवौ' (रू. भे)

वीसांमणहार, हारौ (हारी), वीसामणियौ—वि०।

वीसामिश्रोडौ, वीसामियोडौ, वीसाम्योडौ—भू० का० कृ०।

वीसांमीजणौ, वीसामीजवौ—भाव वा०।

वीसामियोडौ—देखो 'विसरामियोडौ' (रू भे)
(स्त्री, वीसामियोडी)

वीसांमो—देखो 'विसराम' (मह, रू भे)

उ०—भारवाहक नइ कह्या भला, वीसामा वीतरागी जी। माथा थी मूकइ कर्ध लहइ, मारग माहि लागी जी। —स कु

वीसार—स स्त्री —१ विस्मरण, भूल।
२ देखो 'विस्तार' (रू भे.)

वीसारण, वीसारणौ—देखो 'विसारणौ' (रू भे)

उ०—दुख-वीसारण, मनहरण, जउ ईं नाद न हुंति। हियडउ रतन-तळाव ज्यउ, फूटी दह दिसि जति। —ढो मा.

वीसारणौ, वीसारबौ—देखो 'विसारणौ, विसारबौ' (रू भे)

उ०—१ साहजादा श्रजीम साश्रतखा सग, श्रजमेर मैं सहायक राखे श्रवरग। इनायत खान जोधपुर दोर्ड श्रा वीसार, श्रसुरा की घोर को न जोर को न पार। —रा. रू.

उ०—२ थैं सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ थाकी श्रास। मत वीसारउ मन-थकी, उवा छइ थाकी दास। —ढो मा.

उ०—३ श्राय न्रपति पूछो विध एही, सावधान हुय धरम सनेही। किसै श्रग्यान धरम वीसारो, सूरजकुळ चो धरम सभारो। —सू प्र.

उ०—४ श्रम सनेह कुळ मारग धारा, प्राणहूत वधि श्राप पियारा। श्राप वचन मैं सीस श्रधारै, वायक प्रिया कहण वीसारै। —सू प्र

वीसारणहार, हारौ (हारी), वीसारणियौ—वि०।

वीसारिश्रोडौ, वीसारियोडौ, वीसारचोडौ—भू० का० कृ०।

वीसारीजणौ, वीसारीजवौ—कर्म वा०।

वीसारियोडौ—देखो 'विसारियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. वीसारियोडी)

वीसावत—सं पु —वीका राठोडो की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

उ०—श्रठ प्राणकुवर निरवाण रै दोय कवर हुश्रा, श्रमरीजी वीसोजी। तिण रा श्रमरावत वीका है माजन रा परधान। श्रठ वीसोजी रा वीसावत वीका है भूकरकै रा परधान। —द दा

वीसास—देखो 'विस्वास' (रू भे)

उ०—१ काई कीयो कपटी तणौ रे, श्रसुर तणी वीसास। राय ग्रह्यौ हिव पदमणी नै, गढनो करसी ग्रास। —प च चौ.

उ०—२ जब कह्यो मात पै श्रघट जोय हिन मागहु श्रच्छ्या फेर होय। उण कयौ मात इक पुत्र श्रास, सौ विणौ कूंप केसौ वीसास। —रामदान लाळस

उ०—३ पेस करा जो पदमणी जी, तुम उपजै वीसास। विण वीसास किसी परैं जी, व्है सहुनैं रग रास। —प. च चौ.

वीसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू भे)

वीसासणौ, वीसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—कहि श्रालिम कैसी परैंजी, तुम वीसासउ मन। 'लालचद' कहै साभलोजी, वादल कहेज वचन। —प च चौ.

वीसासणहार, हारौ (हारी), वीसासणियौ—वि०।

वीसासिश्रोडौ, वीसासियोडौ, वीसास्योडौ—भू० का० कृ०।

वीसासीजणौ, वीसासीजवौ—कर्म वा०।

वीसासियोडौ—देखो 'विस्वासियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री वीसासियोडी)

वीसासौ—देखो 'विस्वास' (श्रल्पा, रू भे)

उ०—हिवै नव ग्रीवैं कं पचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार। प्रत्येकेप्रतिमा वीसासौ तिहा जाण, श्रडत्रीस सहस सत-साठ श्रछै गुण खाण। —वृ स्त

वीसियौ—स पु —एक प्रकार का घास विशेष।
रू. भे.—वीस्यौ।

वीसी-स. स्त्री—१ समय, अवधि।

२ वीसमी शताब्दी।

३ वह स्थान जहा लागत अदा करके शाकाहारी भोजन प्राप्त किया जाता है, भोजनालय।

४ बीस वर्ष का समय। (युग)

५ एक ही प्रकार के बीस पदार्थों का समूह, कोडी।

६ गणना का वह प्रकार, जिसमे बीस-बीस चीजो के समूह को एक-एक इकाई मान कर रखा जाता है।

७ ज्योतिष शास्त्र मे साठ सवत्सरो के तीन विभागो में से कोई एक विभाग।

वि० वि०—इनमे प्रथम ब्रह्मावीसी, द्वितीय विष्णुवीसी एव तृतीय रुद्रवीसी कहलाती है।

(१) ब्रह्मावीसी—(१) प्रभव (२) विभव (३) शुक्ल (४) प्रमोद (५) प्रजापति (६) अगिरा (७) श्रीमुख (८) भाव (९) युवा (१०) धाता (११) ईश्वर (१२) बहुधान्य (१३) प्रमाथी (१४) विक्रम (१५) वृष (१६) चित्रभानु (१७) सुभान (१८) पार्थिव (१९) तारण (२०) व्यय।

(२) विष्णुवीसी:—(१) सर्वजित (२) सर्वधारी (३) विरोधी (४) विकृति (५) खर (६) नदन (७) विजय (८) जय (९) मन्मथ (१०) दुर्मुख (११) हेमलम्ब (१२) विलब (१३) विकारी (१४) शार्वरी (१५) प्लव (१६) शुभकृत (१७) शोभन (१८) क्रोधी (१९) विश्वावसु (२०) पराभव।

(३) रुद्रवीसी—(१) प्लवग (२) कीलक (३) साम्य (४) साधारण (५) विरोधकृत (६) परिधावी (७) प्रमादी (८) आनन्द (९) राक्षस (१०) अनल (११) पिंगल (१२) कालयुक्त (१३) सिद्धार्थ (१४) रौद्र (१५) दुर्मति (१६) दुंदुभी (१७) रुधिरोद्गारी (१८) रक्ताक्षी (१९) क्रोधन (२०) क्षय।

८ बीस गाथा, श्लोको या छदो का समूह।

९ जैन मतानुसार बीस विहरमानो के नामो का समूह।

वि० वि०—देखो 'विहरमाण'।

रू भे.—विसी, बीसी।

वीसूणी—देखो 'विस्राति' (रू भे)

वीसूरण, विसूरणो—देखो 'विसूरण' (रू. भे)

वीसूरणो, वीसूरबो—१ देखो 'विसरणो, विसरबो' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरणो, विसूरबो' (रू भे)

वीसूरणहार, हारो (हारी), वीसूरणियो—वि०।

वीसूरिओडो, वीसूरियोडो वीसूरयोडो—भू० का० कृ०।

वीसूरीजणो, वीसूरीजबो—भाव वा०।

वीसूरियोडो—१ देखो 'विसरियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'विसूरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीसूरियोडी)

वीसूविसा, वीसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे.)

उ०—अपत रहिया 'अखै' 'अजा' 'गोकळ' इसा, रीत खत्रवाट री वोय दीनी रसा। विगाडची धरम धर तणो वीसूविसा, दियो जळ हाथ सु सात पीढी दिसा। —स्यामजी वारहठ

वीसेंक-वि०—बीस के लगभग।

रू भे.—वीसे'क।

वीसेविसा, वीसेवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

उ०—तू सुधी तू साधवी, तूं नर भक्ति निधान। विधि वाधी वारू विसैं, वीसेविसा समान। —मा. का. प्र.

वीसोतर-वि०—एक सौ बीस।

सं पु—चारण जाति जिसमे कुल एक सौ बीस गोत्र हैं।

उ०—वीसोतर का छोगा, दिल का उदार। जस जुगतेम कूं बखाणें, सब ही ससार। —बा. दा.

रू. भे—वीसोतर, वीसोत्तर।

वीसोतरि, वीसोतरी—देखो 'विसोत्तरि' (रू. भे)

वीसोत्तर—देखो 'वीसोतर' (रू. भे)

वीसोत्तरि, वीसोत्तरी—देखो 'विसोत्तरी' (रू भे.)

वीसो-स. पु—१ बीस की सख्या का वर्ष।

२ बीस की सख्या का सवत्।

रू भे.—बीसो।

वीस्यो—देखो 'वीसियो' (रू. भे)

वीहग—देखो 'विहग' (रू भे)

वीहगडो—देखो 'विहग' (अल्पा,. रू भे)

वीह—देखो 'बी' (रू भे)

उ०—निमो हस हसा तणो जोति हरता, निमो काळ ही वीह राखै करता। निमो धरम ही तूफ निस दीह ध्यावै, निमो वडो जण वीण तुबर वजावै। —पी. ग्र.

वीहड—देखो 'बीहड' (रू भे.)

वीहणो, वीहबो—देखो 'बीहणो, बीहबो' (रू. भे-)

उ०—१ आसराव, नाहूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हुवो, तिण नूं देवी बीहाडण लागी सु आसराव बीहै नही नै बाण हिरण नू साधियो हुतो सु बाहयो, तरै देवी खुश हुई नै आसराव नू कहण लागी, तोनू हू तूठी तू जाणै सु माग। —नैणसी

उ०—२ वीहडो जिके मरण सुं वीहै, रहज्यो जिकोज साथ रहै। सिर साटै देसी सादावत, कोट म वीहै 'भोज' कहै ।
—भोजराज रूपावत री गीत

उ०—३ वोलि न सक्कू वीहतउ, हेक ज वात हुई। राजि अपूठा वाहुडउ, माळवणी मूई । —ढो मा.

उ०—४ जसु अठार मुकुट वद्ध राजा, सेव करइ कर जोड जी। कोणिक थी वीहतउ राय चेडउ, कूप पडचउ बल छोड जी ।
—स. कु

वीहणहार, हारो (हारी), वीहणियो—वि० ।
वीहिओडो, वीहियोडो, वीहयोडो—भू० का० कृ० ।
वीहीजणो, वीहीजवो—भाव वा० ।

वीहर—देखो 'वहीर' (रू भे)

वीहरणो, वीहरवो—देखो 'विहरणो विहरवो' (रू. भे.)

उ०—तिरसूळ धीव उरमझ ताय, फळ जहु उवर म वर वीहरै फवाय। सिर चकर वीहर कर काट सोय, हुकार डकर घमजगर होय। —रामदान लाळस

वीहरणहार, हारो (हारी), वीहरणियो—वि० ।
वीहरिओडो, वीहरियोडो, वीहरयोडो—भू० का० कृ० ।
वीहरीजणो, वीहरीजवो—कर्म वा० ।

वीहरियोडो—देखो 'विहरियोडो' (रू भे)
(स्त्री वीहरियोडी)

वीहळ, वीहल—१ देखो 'वीहली' (रू. भे.)
२ देखो 'वीहल्ल' (रू. भे.)
३ देखो 'विह्वल' (रू भे)।
४ देखो 'वेहळ' (रू भे)
५ देखो 'वेहल' (रू भे)

वीहळा—स स्त्री —देवी, दुर्गा, महामाया ।

उ०—देवी चद्रघटा महम्माय चडी, देवी वीहळा अन्नळा वड वड्डी। देवी जम्मघटा वदीजै जडवा, देवी साकणी डाकणी रुद्ध सव्वा।
—देवि

वीहळी, वीहली—स. स्त्री —१ वह स्त्री जिसका पति पास मे नही हो, वियोगिनी ।

उ०—वीज न देखै वीहलिया, पीव परदेम थयाह । आपण लीयै झबूकडा, गळि लागै सिहराह । —ढो मा.

२ देखो 'विह्वल' (अल्पा, रू भे)

वीहलो—स. पु.—वीहल्ल राजपूत वश का व्यक्ति ।
वि०—हद से ज्यादा, अत्यधिक ।

उ०—देख्यो दरियो भरियो जल घणोजी, तव वोलै नरनाथ। वारिधि पूरो हल वीहलो हुइ रे, मुछा घालै हाथ । —प च चौ
देखो 'विह्वल' (अल्पा रू भे.)

वीहल्ल—स पु.—एक राजपूत वश।

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया । जयवता यादव वीहल्ल, नर निकुभ गिरूया गोहिल्ल । —का. दे प्र
रू. भे.—वीहळ, वीहल

वीहसणो, वीहसवो—क्रि० अ०—१ हसना, हर्षित होना ।

उ०—विसराळ अबाळ धुरै रवि वीहस, लाह आखेट लकाळ। अजेरा जेरण घेर असगा, फेर दुहाई फाळ । —मा बचनिका

१ हिनहिनाना ।

उ०—साठ तुरिय पाखरचा सजुत, बीसलदे साथहि वीहसत। जाई परभोमई सचरचो, कोई न जाणइ साभरघा-राव। उलिगाणउ होई सचरचो, देस उडीसइ पहुता जाई। —बी. दे.

वीहाण—१ देखो 'विहाण' (रू भे)
२ देखो 'विहाणो' (रू भे)

वीहाणी—देखो 'विहाणी' (रू भे)

वीहाणू—१ देखो 'विहाण' (रू भे)
२ देखो 'विहाणो' (रू भे)

वीहाणो—१ देखो 'विहाण' (अल्पा रू भे)
२ देखो 'विहाणो' (रू. भे.)

वीहा—देखो 'विवाह' (रू. भे)

उ०—तद वीहू जाय कुवर नु कही, "जो माहाराज फुरमावै छै, स्रो नाळेर पाछो देवो। वीजो वीहा सु जोख छै तो एक-दोय करो।" तद कुवर कह्यो, "वीहू तू अरज करै, जो म्हारै तो पण छै-सरीक रो नाळेर आयो पाछो न फेरू । —कुवरसी साखला री वारता

वीहाडणो, वीहाडवो—१ देखो 'वीहाणो, वीहावो' (रू भे)

उ०—आसराव, नाहूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हुवो, तिण नू देवी वीहाडण लागी सु आसराव वीहै नही नै वाण हिरण नूं साधियो हुतो सु बाह्यो, तरै देवी खुस हुई नै आसराव नू कहण लागी, तोनूं हु तूठी, तु जाणै सु माग । —नैणसी

२ देखो 'वीहावणो, वीहाववो' (रू. भे.)
वीहाडणहार, हारो (हारी), वीहाडणियो—वि० ।
वीहाडिओडो, वीहाडियोडो, वीहाडचोडो—भू० का० कृ० ।
वीहाडीजणो, वीहाडीजवो—कर्म वा० ।

वीहाडियोडो—१ देखो वीहायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वीहावियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीहाडियोडी)

वीहाडणौ, वीहाडवौ—१ देखो 'वीहाणौ, वीहावौ' (रू भे.)

२ देखो 'वीहावणौ, वीहाववौ' (रू. भे)

वीहाडणहार, हारौ (हारी), वीहाडणियौ—वि०।

वीहाडिग्रोडौ, वीहाडियोडौ, वीहाड्योडौ—भू० का० कृ०।

वीहाडीजणौ, वीहाडीजवौ—कर्म वा०।

वीहाडियोडौ—१ देखो 'वीहायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वीहावियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वीहाडियोडी)

वीहाणौ, वीहावौ—१ देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू भे.)

२ देखो 'वीहाणौ, वीहावौ' (रू भे)

३ देखो 'वीहावणौ, वीहाववौ' (रू भे)

वीहाणहार, हारौ (हारी), वीहाणियौ—वि०।

वीहायोडौ—भू० का० कृ०।

वीहाईजणौ, वीहाईजवौ—कर्म वा०।

वीहायोडौ—१ देखो 'विवाहियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वीहायोडौ' (रू भे)

३ देखो 'वीहावियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वीहायोडी)

वीहार—देखो 'विहार' (रू. भे.)

उ०—नवलाख निवतरै सहत नूर, नित दिवस वदै रंगरळी पूर। आपरी इण हीज लीला उदार, वड सगत करण जै जग वीहार। —रामदान लाळस

वीहाव—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—तद ठगै कह्यौ, "फळाणां रा बेटा हुवौ नही ?" तद ईयै कही, राज हुवा छा। तद ठग रै बेटै कही, तौ थे म्हाहरा बहनेई हुवौ। फलाणै वरस थाहरौ बाप आयौ हुतौ। तद वीहाव कीयौ हुतौ। —बूढी ठग राजा री बात

वीहावणौ, वीहाववौ—क्रि. स १—व्यतीत करना समाप्त करना।

उ०—वीजा नु परौ वीजो कान्ही मेल्हण लागा। तरै देवडै बीजै घण ही इणा ठाकरा नै कह्यौ—मो नु परौ अळगौ मत मेल्हौ। तरै इणां ठाकुरै कह्यौ—कूकडौ जिण गाव न हुवै छै तठै ही रात वीहावै छै। —राव चन्द्रसेन री बात

२ देखो 'वीहाणौ, वीहावौ' (रू भे.)

३ देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू भे)

वीहावणहार, हारौ (हारी), वीहावणियौ—वि०।

वीहाविग्रोडौ, वीहावियोडौ, वीहाव्योडौ—भू० का० कृ०।

वीहावीजणौ, वीहावीजवौ—कर्म वा०।

वीहाडणौ, वीहाडवौ, वीहाडणौ वीहाडवौ, वीहाणौ' वीहावौ —(रू: भे.)

वीहावियोडौ—भू० का० कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, समाप्त किया हुआ।

२ देखो 'वीहायोडौ' (रू भे)

३ देखो 'विवाहियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वीहावियोडी)

वीहूर—स. पु —वातचक्र, हवा का चक्र।

वि० वि०—देखो 'बघूलौ' (रू भे.)

वु—स पु.—१ प्रात काल, सवेरा। (एका)

२ रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रदोप। (,,)

३ घनपटल। (,,)

वुग्रणौ, वुयवौ—१ देखो 'वहणौ,वहवौ' (रू भे)

उ०—१ प्रतापसिह नै साम्ही आवतो देखनै ठाकर म्यान सूं तलवार बारै काढली। घेरौ नैन्ही होवण लाग्यौ अरु ठाकर वार करै उण पै'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर री माथौ वाढ नाख्यौ। दुस्मिया रै मन चीती व्ही। —अमरचूंनडी

उ०—२ जिण मारग केहर वुयौ, रज लागी तिरणाह। वे वन ऊभा सूकसी, नह चरसी हिरणाह। —वा. दा.

२ देखो 'बोवणौ, बोववौ' (रू. भे)

वुग्रणहार, हारौ (हारी), वुग्रणियौ – वि०।

वुइग्रोडौ, वुइयोडौ, वुग्रोडौ—भू० का० कृ०।

वुईजणौ, वुईजवौ—भाव वा०।

वुग्राणौ, वुग्रावौ—देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू. भे)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू भे)

वुग्राहणहार, हारौ (हारी) वुग्राणियौ—वि०।

वुग्रायोडौ—भू० का० कृ०।

वुग्राईजणौ, वुग्राईजवौ—कर्म वा०।

वुग्रायोडौ—१ देखो 'वहायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बोवायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वुग्रायोडी)

वुग्रारणौ, वुग्रारबौ —देखो 'वुहारणौ, वुहारणौ' (रू भे)

वुग्रारणहार, हारौ (हारी), वुग्रारणियौ—वि०।

वुग्रारिग्रोडौ, वुग्रारियोडौ, वुग्रारघोडौ—भू० का० कृ०।

वुग्रारीजणौ' वुग्रारीजवौ—कर्म वा०।

वुग्रारियोडौ—देखो 'वुहारियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वुग्रारियोडी)

वुग्रारी—देखो 'वुहारी' (रू. भे)

वुग्रारौ—देखो 'वुहारौ' (रू भे)

वुग्रावणौ, वुग्रावबौ—१ देखो वहाणौ, वहावौ' (रू. भे)

२ देखो 'वोवाणौ, वोवावौ' (रू भे)

वुग्रावणहार, हारौ (हारी), वुग्रावणियौ—वि० ।

वुग्राविश्रोडौ, वुग्रावियोडौ, वुग्राव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुग्रावीजणौ, वुग्रावीजवौ—कर्म वा० ।

वुग्रावियोडौ—१ देखो 'वहायोडौ, (रू भे)

२ देखो 'वोवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वुग्रावियोडी)

वुइयोडौ, वुग्रोडौ—१ देखो 'वहियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वोवियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वुइयोडी, वुग्रोडी)

वुक—१ देखो 'वक' (रू भे.)

२ देखो 'वुग' (रू भे)

वुकठणौ, वुकठबौ—क्रि. स—निकालना ।

उ०—है वुकठिग्रा काकण हथौ, केवा काढण काज कडछै। भाक समू भळकता भाला, घण लै अरिया खाग घडछै।

—मोहकमसिंघ राठौड री गीत

वुकठणहार, हारौ (हारी), वुकठणियौ—वि० ।

वुकठिग्रोडौ, वुकठियोडौ, वुकठ्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुकठीजणौ, वुकठीजबौ—कर्म वा० ।

वुकढणौ, वुकढबौ—रू० भे० ।

वुकठियोडौ—भू० का० कृ०—निकाला हुग्रा ।

(स्त्री वुकठियोडी)

वुकढणौ, वुकढबौ—देखो 'वुकठणौ, वुकठबौ' (रू भे)

वुकढणहार, हारौ (हारी), वुकढणियौ—वि० ।

वुकढिग्रोडौ, वुकढियोडौ, वुकढ्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुकढीजणौ, वुकढीजबौ—कर्म वा० ।

वुकढियोडौ—देखो 'वुकठियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वुकढियोडी)

वुकानी—देखो 'वुकानी' (रू भे)

वुखार—१ देखो 'भखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'वुखार' (रू. भे)

वुखारी—१ देखो 'वुखारी' (रू भे)

२ देखो 'भखारी' (रू भे.)

वुखारौ—देखो 'भखारी' (रू भे.)

उ०—काय भाई मोमिणौ ग्रौ धन सचौ, सचि सचि छलो वुखारौ ग्रौ धन खाकि ज्यौ भाई होयसी, खाली रह्या वुखारौ ।

—ऊदोजी नैण

वुग—देखो 'वुग' (रू. भे.)

वुगचियौ, वुगची—देखो 'वुगचौ' (ग्रल्पा., रू भे.)

वुगचौ—देखो 'वुगचौ' (रू भे.)

वुगती—देखो 'वुगती' (रू भे)

उ०—"छौ हसता ।" वीदणी तौ ग्रा वात कैय ग्रजेज वेहल सूं हेटै कूदगी । फूदी व्है ज्यूं केर केर उडती फिरी । थोडी ताळ मैं राता-चुट्ट ढालुवा सूं खोळौ भरने पाछी ग्रायगी । वुगती रा पाणी सू वानै सावळ धोया । ठारया ।

—फुलवाडी

वुगदी—देखो 'वुगदी' (रू भे)

वुगदौ—देखो 'वुगदौ' (रू भे)

वुगघ्यानी—देखो 'वकध्यानी' (रू भे)

वुगर—देखो 'वुगर' (रू भे.)

वुगलाभक्त—देखो 'वुगलाभक्त' (रू. भे.)

वुगलाभक्ति, वुगलाभक्ती—देखो 'वुगलाभक्ती' (रू भे)

वुगलाभगत—देखो 'वुगलाभक्त' (रू. भे.)

वुगलाभगति, वुगलाभगती—देखो 'वुगलाभक्ती' (रू. भे)

वुगलियौ—१ देखो 'वुगलियौ' (रू. भे)

२ देखो 'वक' (ग्रल्पा., रू. भे)

वुगलौ—१ देखो 'वुगलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वक' (ग्रल्पा, रू भे)

वुगस—१ देखो 'वुगस' (रू भे)

२ देखो 'वक' (मह, रू भे.)

वुग्गी—देखो 'वुग्गी' (रू भे)

वुडकौ—देखो 'वुडकौ' (रू भे.)

वुडचणौ, वुडचबौ—देखो 'वुडचणौ, वुडचवौ' (रू भे)

वुडचणहार हारौ (हारी), वुडचणियौ—वि० ।

वुडचिग्रोडौ, वुडचियोडौ, वुडच्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुडचीजणौ, वुडचीजबौ—कर्म वा० ।

वुडचियोडौ—देखो 'वुडचियोडौ' (रू. भे)

वुजी—देखो 'वूजी' (रू भे)

वुटावटौ, वुटावटौ—देखो 'वुटावटौ' (रू भे)

वुट्ठणौ, वुट्ठबौ—देखो 'वूठणौ, वूठबौ' (रू. भे)

उ०—तहि ग्ररजुणि मिल्हिऊ, ग्रागिणेय सरु ग्रगि वट्ठीय । वहु दुक्खु मणि चिंतवीय, पडसेन घण नयणि वुट्ठीय ।

—सालिभद्र सूरि

वुट्टणहार, हारो (हारी), वुट्टणियो—वि० ।
वुट्टिओडो, वुट्टियोडो, वुट्टयोडो—भू० का० कृ० ।
वुट्टीजणो, वुट्टीजवो—भाव वा० ।
वुट्टियोडो—देखो 'वूठियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वुट्टियोडी)
वुठणो, वुठवो—देखो 'वूठणो, वूठवो' (रू भे.)
उ०—१ गुलक्यारी क्यारा, चदनगारा, फूल अधिक फावदा है।
चादरिया छूट, ज्यूं घण वुठ, ऊजळ जळ झळकदा है।
—गज-उद्धार
उ०—२ अठो सतारो अमीर जद्द सोवास जुटिया आणे, वुठिया आतसा आग प्रथी व्है अचव । जैतवादी 'चापा' 'कुंपा' जुटिया सिव जीउ जाणें, खागा झाल अठी सुं उठीया खेतखम ।
—पहाडखा आढो
वुठणहार, हारो (हारी), वुठणियो—वि० ।
वुठिओडो, वुठियोडो, वुठ्योडो—भू० का० कृ० ।
वुठीजणो, वुठीजवो—भाव वा० ।
वुठियोडो—देखो 'वूठियोडो' (रू भे) (स्त्री वुठियोडी)
वुठो—देखो 'उठो' (रू भे)
वुठै—देखो 'उठै' (रू भे)
वुट्ठणो, वुट्ठवो—देखो वूठणो, वूठवो' (रू भे)
उ०—सोळसै समत, वरस छहतरे वयट्ठे । सुकळ पक्ख भाद्रवे, घुम्मि वरखा घण वुट्ठे । —गु रू व.
वुट्ठणहार, हारो (हारी), वुट्ठणियो,—वि० ।
वुट्ठिओडो, वुट्ठियोडो, वुट्ठयोडो—भू० का० कृ० ।
वुट्ठीजणो, वुट्ठीजवो—भाव वा० ।
वुट्ठियोडो—देखो 'वूठियोडो' (रू भे)
(स्त्री वुट्ठियोडी)
वुडणो, वुडवो—१ देखो 'वूडणो, वूडवो' (रू. भे)
२ देखो 'उडणो, उडवो' (रू भे)
वुडणहार, हारो (हारी), वुडणियो—वि० ।
वुडिओडो, वुडियोडो, वुड्योडो—भू० का० कृ० ।
वुडीजणो, वुडीजवो—भाव वा० ।
वुडवणो, वुडववो—देखो 'वूडणो, वूडवो (रू भे)
२ देखो 'उडणो उडवो' (रू भे)
उ०—दग झट विकट वुडव खरडक, डहकत डारण वीर डहडक । गति घण गेहक छायीयं गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक ।
—हीरा मागलिया री गीत
वुडवणहार, हारो (हारी), वुडवणियो—वि० ।
वुडविओडो, वुडवियोडो, वुडव्योडो—भू० का० कृ० ।
वुडवीजणो, वुडवीजवो—भाव वा० ।
वुडवियोडो—१ देखो 'वूडियोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'उडियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वुडवियोडी)
वुडियोडो—१ देखो 'वूडियोडो' (रू. भे)
२ देखो 'उडियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वुडियोडी)
वुड्ढो—देखो 'वूढो' (रू भे)
वुढण—देखो 'वूढण' (रू भे)
वुढापो—देखो 'बुढापो' (रू भे)
वुढो—देखो 'वूढो' (रू. भे)
वुढ्ढो—देखो 'वूढो' (रू भे.)
उ०—तूं हिज आज जुगाद तूं, तू वुढ्ढी वाळी । तुहिज तरुण किसोर तूं माता मतवाळी । —गज उद्धार
(स्त्री वुढ्ढी)
वुणणो, वुणवो—१ देखो 'बुणणो, बुणवो' (रू भे)
२ देखो 'वणणो, वणवो' (रू भे)
वुणणहार, हारो (हारी), वुणणियो—वि० ।
वुणिओडो, वुणियोडो, वुण्योडो—भू० का० कृ० ।
वुणीजणो, वुणीजवो—कर्म वा० ।
वुणवाणो वुणवावो—१ देखो वुणाणो, वुणावो' (रू भे)
२ देखो 'वणाणो, वणावो' (रू भे)
वुणवाणहार, हारो (हारी) वुणवाणियो—वि० ।
वुणवायोडो—भू० का० कृ० ।
वुणवाईजणो, वुणवाईजवो—कर्म वा० ।
वुणवायोडो—१ देखो वुणायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वणायोडो' (रू भे)
(स्त्री वुणवायोडी)
वुणाई—देखो 'बुणाई' (रू. भे)
वुणाणो, वुणावो—१ देखो 'बुणाणो, बुणावो' (रू. भे)
२ देखो 'वणाणो, वणावो' (रू भे)
वुणाणहार, हारो (हारी), वुणाणियो—वि० ।
वुणायोडो—भू० का० कृ० ।
वुणाईजणो, वुणाईजवो—कर्म वा० ।
वुणायोडो—१ देखो 'बुणायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वणायोडो' (रू भे)
(स्त्री. वुणायोडी)
वुणावणो, वुणाववो—१ देखो 'बुणाणो बुणावो' (रू भे)
२ देखो 'वणाणो, वणावो' (रू भे)
वुणावणहार, हारो (हारी), वुणावणियो—वि० ।
वुणाविओडो, वणावियोडो, वुणाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वुणावीजणो, वुणावीजवो —कर्म वा० ।
वुणावियोडो—१ देखो 'बुणायोडो' (रू भे)
२ देखो वणायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वुणावियोडी)

वुणियोड़ो—१ देखो वुणियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बणियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वुणियोडी)

वुधर—१ देखो 'उधर' (रू भे)

२ देखो 'भूधर' (रू भे)

उ०—वल्य राठोडा ऊ कही, साभल्य वुधर भेव । विसनोई करिस्या भ्रकर, हुकम करो हरिदेव । —केसौजी गाडण

वुपर—देखो 'ऊपर' (रू भे)

उ०—उसण येक गजमुख लबोदर, धरणी कनक मुकुट फरसोधर। पीतबर सोभा तन वुपर, विनायक दायेक विद्या बर । —बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ मुहैं भ्रणिया वुपरे नाकतो 'मधकर', भव वै मन भ्रातरो भयो । सहली दिली हुई भ्रणसकती, गहली री वेव्हडो गयो । —राजा माधौसिंघ कछवाहा री गीत

वुर—देखो वुर' (रू भे.)

वुरको – देखो 'बुरको' (रू भे)

वुरडणो, वरडबो—देखो 'वुरडणौ वुरडवौ' (रू भे.)

वुरडणहार, हारो (हारी), वुरडणियो—वि० ।

वुरडिग्रोडो, वुरडियोडो, वुरड्योडो—भू० का० कृ० ।

वुरडीजणो, वुरडीजवो—कर्म वा० ।

वुरडियोडो—देखो वुरडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वुरडियोडी)

वुरचितो वुरचींतो – देखो 'वुरचितौ' (रू. भे)

वुरज—देखो 'वुरज' (रू. भे)

वुरजी—देखो 'बरछी' (रू भे) (डि. को)

वुरज्ज—देखो 'वुरज' (रू भे)

वुरझी—देखो 'वुरछी' (रू. भे) (डि ना मा.)

वुरटी—देखो 'वुरटी' (रू भे.)

वुरड – देखो 'वुरड' (रू भे)

वुरडी – देखो 'वुरडी' (रू भे)

वुरवंछ वुरवछो—देखो वुरचीतौ' ।

वुराई—देखो 'वुराई' (रू भे.)

उ०—निहचै नाव राखि तन मन तैं, विकम छोडि वुराई । धरगं माहि धका नही खावै, हालौ हक सराई । —भ्रनुभववाणी

वुराणो, वुरावो—देखो 'वुरावणौ, वुरावबौ' (रू. भे)

वुराणहार, हारो, (हारी), वुराणियो—वि० ।

वुरायोडो—भू० का० कृ० ।

वुराईजणो, वुराईजवो—कर्म वा० ।

वुरादो—देखो 'वुरादौ' (रू भे.)

वुरायोडो—देखो 'वुरावियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वुरायोडी)

वुरावणो, वुरावबो—देखो 'वुरावणौ, वुरावबौ' (रू. भे)

वुरावणहार, हारो (हारी), वुरावणियो—वि० ।

वुराविग्रोडो, वुरावियोडो, वुराव्योडो—भू० का० कृ० ।

वुरावीजणो वुरावीजवो—कर्म वा० ।

वुरावियोडो—देखो 'वुरावियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुरावियोडी)

वुरी—देखो 'वुरी' (रू. भे)

उ०—सिरदार री कृपा और सुद्ध मन री चाह सारा रै होवै है । सुद्ध मन रा सिरदार री चाकर वुरी कहै नही वुरी सुणै नही । —वी. स. टी.

२ देखो वुरौ' (पु)

उ०—नारी नेह न कीजियै, नारी वुरी संसार । हरिया नारी गजिया, सै भगा करतार । —भ्रनुभववाणी

वुरो—१ देखो 'वुरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वास विजै भगती की । भ्रोथि रामसिंघजी प्रिथीराज जी बिजै री भगति जीमिया । ताहरा राजाजी वुरा किया । इया नू कहाडियो जु थे मोनू थोडाई छा । —द. वि

उ०—२ कलि खोटी पीहरी वुरो, रीस करी मत कोय । हरिया माया भगति कै, जाह ताह भ्राडी होय । —भ्रनुभववाणी

उ०—३ पाडोसी पिंडत वुरो, जो हरि भगति न होय । हरिया हरिजन गाँव घर, ता तुल्य भलो न कोय । —भ्रनुभाववाणी

उ०—४ किसको वुरो न कीजियै, जो सिध होय भ्रसिध । हरिया भ्राडी भ्रावसी, जिसी कमाई कीध । —भ्रनुभववाणी

उ०—५ भलो किसो कु चाहियै, वुरो न कीरियै कोय । जन हरिया सब कु कह्या, राम भजो नर लोय । —भ्रनुभववाणी

वुलगणो, वुलगबो—क्रि स. (गीत या गायन) प्रारम्भ करना ।

उ०—विरहानळ प्रज्वळइ भ्रगु, साखिजन सू विरगू । एहवऊ काई थ्यू विप्र चित्त न वुलगई गीत्तू । न कुण हीसू हसइ, सदा नीससइ; बोलावि खीजइ, दिहाडइ देह खीजइ । भ्रादि । —रा सा स.

वुलगणहार, हारो (हारी), वुलगणियो—वि० ।

वुलगिग्रोडो, वुलगियोडो, वुलग्योडो—भू० का० कृ० ।

वुलगीजणो, वुलगीजबो—कर्म वा० ।

वुलगार—देखो 'बुलगार' (रू भे.)

उ०—सोनहीरी फूला नकसी फूला मुखमल री गादी घातिया, सावरा हथवासा, वुलगारां डाबा सहित ऊमास राजाना रा हाथा री ऊम्राहीज वडा नै पीपलारीग्रा साखा सू नागलिग्रा।
—रा सा. स

वुलगियोडौ—भू० का० कृ०—(गीत या गायन) प्रारम्भ किया हुआ।

(स्त्री वुलगियोडी)

वुलडोग—देखो 'बुलडोग' (रू भे)

वुलसरी, वुलसिरी—देखो बोलसरी' (रू. भे)

उ०—जउ सूकी तुहइ वुलसिरी, जउ वीधी तुहइ मोतीसिरी। जउ डुहलूं तुहइ गगाजल जाणि जउ थोडी तुहइ सपुरिस वाणि।
—नळदवदती रास

वुलाक—देखो 'बुलाक' (रू भे)

वुलाकी—देखो 'बुलाकी' (रू भे)

वुलाणौ वुलावौ—१ देखो 'बुलाणौ, बुलावौ' (रू भे)

उ०—हवि मूंह्लि वुलावु, पीहरि जावा मन। मुझ विना दुहल्या थाता, हुसि पुत्री नैं तन।
—नळारयान

२ देखो 'बौळाणौ, बौळावौ' (रू भे)

वुलाणहार, हारौ (हारी), वुलाणियौ—वि०।

वुलायोडौ—भू० का० कृ०।

वुलाईजणौ, वुलाईजबौ—कर्म वा०।

वुलायोडौ—१ देखो 'बुलायोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बौळायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वुलायोडी)

वुलावण—देखो 'बुलावण' (रू भे)

वुलावणौ, वुलावबौ—१ देखो 'बुलाणौ, बुलावौ' (रू भे)

२ देखो 'बौळाणौ, बौळावौ' (रू भे.)

उ०—१ वुलावा भीमराय देसनी सधि, लगइ आवीउ बहु सैन्य लेई ए। भीमनइ कहइ निसध, तमे वलु भूपति। रूडइ ठामि हवइ वइसीइ ए।
—नळदवदती रास

उ०—२ रथ तणउ माहरइ खप ज नही, माहरू नथी अहीइ कांई सही। घणउ कहितइ रथ राखिउ तेणि ननइ आवइ वुलावा जेणि।
—नळदवदती रास

उ०—३ सैन्य सांमग्री सघळी करी, दवदती पीहरि नीसरि। चद्रयसाना प्रणम्या पाय, वुलावा आवइ तिहा राय।
—नळदववती रास

वुलावणहार, हारौ (हारी), वुलावणियौ—वि०।

वुलाविग्रोडौ, वुलावियोडौ, वुलाव्योडौ—भू० का० कृ०।

वुलावीजणौ, वुलावीजबौ—कर्म वा०।

वुलावियोडौ—१ देखो 'बुलायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो बौळायोडौ (रू भे)

(स्त्री वुलावियोडी)

वुलावौ—देखो 'बुलावौ' (रू भे)

वुलि, वुली. वुल्ली—१ देखो 'बुलि' (रू. भे)

२ देखो 'बुल्ली' (रू भे)

वुवाणौ, वुवावौ—देखो 'बोवाणौ; बोवावौ' (रू. भे)

वुवाणहार, हारौ (हारी), वुवाणियौ—वि०।

वुवायोडौ—भू० का० कृ०।

वुवाईजणौ, वुवाइजबौ—कर्म वा०।

वुवायोडौ—देखो 'बोवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वुवायोडी)

वुवारणौ, वुवारबौ—देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू भे)

वुवारणहार, हारौ (हारी), वुवारणियौ—वि०।

वुवारिग्रोडौ, वुवारियोडौ, वुवारयोडौ—भू० का० कृ०।

वुवारीजणौ, वुवारीजबौ—कर्म वा०।

वुवारियोडौ—देखो 'बुहारियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. वुवारियोडी)

वुवारी—१ देखो 'बुहारी' (रू भे)

२ देखो बहू' (अल्पा., रू भे)

उ०—दस कोस रौ पैडौ पार कर दियौ। गाव रै गळियारै गळियारै जावतो हो के अेक बारणा मायै घू घटो काढ्या उठानै अेक लुगाई ऊभी दीसी। चौधरी फट लखग्यो कै है तो आ इण गाव री वुवारी।
—फुलवाडी

वुवारौ—देखो 'बुहारौ' (रू भे)

वुवाळा—देखो 'बुवाळा' (रू. भे.)

वुवाळौ—देखो 'बुवाळौ' (रू भे)

वुवासौ—देखो 'वहुवासौ' (रू भे)

वुवाह—स पु —वाह-वाह, धन्यवाद।

उ०—सिलप्पी रचायं जे रूका असी चार सोभै, बिणायं रतन्ना विधा कागरा वुवाह। आमासा अनोखा गोखा पराभा मेघ भासै असां, दान रा सोभा झरोखा विराजे दुवाह।
—मोहकमसिंघ रूपावत री गीत

वुवोतर—देखो 'बमोत्तर' (रू. भे.)

वुवोतरमों, वुवोतरवों—देखो 'वश्रोत्तरमों' (रू. भे)

वुवोतरे'क—देखो 'वश्रोत्तरे'क' (रू भे)

वुवोतरो—देखो 'बश्रोतरो' (रू. भे)

वुसत—देखो 'वस्तु' (रू भे) (ह ना. मा)

उ०—१ दीया वुसत अनूप है, दिया करो सब कोय। घर में धरा न पाइयें, जे कर दिया न होय। —अग्यात

उ०—२ हरीया ख्याली खलक में, के तो गया वसाय। के आया ज्युई गया, वुसत मुसाय मुसाय। —अनुभववाणी

उ०—३ मनवा उलटि मिल्या निज मन कूं ससा सोग न व्यापे तन कु। अरध उरध विच रसतह लाया, जोखा जल न वुसत विसाया। —अनुभववाणी

वुसताज, वुसताद—देखो 'उसताद' (रू भे.)

उ०—पड वुसताज आहरणे असपत, दुजडे देतो खळा दुख। केस केस सधियो कंलपुरा, रावळ अवर तणी रुख।

—जगतसिंघ सीसोदिया री गीत

वुसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे)

वुसुत—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—वप ब्रहम विधत री सरव वुसुत री, तु गगा तू गावतरी। पारवती निमो हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी. ग्रं

वुस्त—देखो 'वस्तु' (रू भे)

वुस्ताज, वुस्ताद—देखो 'उसताद' (रू भे)

वस्तु—देखो 'वस्तु' (रू भे)

वुहणो, वुहवो—१ देखो 'वहणो, वहवो' (रू भे)

उ०—१ हिंदवा राव हयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा। गई स्रग विवाणा वैस इद्र आगळी, वुही वारगना त्रिना वीदा। —महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—२ असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडेचें वाही करि खीज। सुकरि आकास हूत सेलारा, वीजुल विढण क वुही वीज।

—केसोदास गाडण

उ०—३ जिण माथै सखो मारा धणी री साग वरछी वुही जाणणी अरयात दूसरा जोधारा रा हाथ रा सस्त्र सू तो अधकटिया अध-मरिया हुवा रोवे छे ने म्हारा पति रा सस्त्र लागोडा पछे, जीव विना हीज होवे छे सस्त्र लागोडा कोइ वचे नही। —वी स टी.

२ देखो 'वोवणो, वोववो' (रू. भे)

वुहणहार, हारो (हारी) वुहणियो—वि०।

वुहिप्रोडो, वुहियोडो, वुह्योडो—भू० का० कृ०।

वुहीजणो, वुहीजवो—भाव वा०/कर्म वा०।

वुहत्तर, वुहत्तरि, वुहत्तरी—देखो 'वश्रोत्तर' (रू भे.)

वुहरउ—देखो 'वोंरो' (रू भे) (उ र)

वुहरणो, वुहरवो–क्रि स —१ खरीदना, क्रय करना।

उ०—दोसी वुहरइ अतिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र। एक वइण कहइ कथाकल्लोल, एक वइण वीकइ मंजीठ चोल।

—नळदवदती रास

२ देखो 'व्यवहारणो, व्यवहारवो' (रू. भे)

वुहरणहार, हारो (हारी), वुहरणियो—वि०।

वुहरिप्रोडो, वुहरियोडो, वुहरयोडो—भू० का० कृ०।

वुहरीजणो, वुहरीजवो—कर्म वा०।

वुहराडणो, वुहराडवो—देखो 'वुहराणो, वुहरावो' (रू. भे)

वुहराडणहार, हारो (हारी) वुहराडणियो—वि०।

वुहराडिप्रोडो, वुहराडियोडो, वुहराड्योड़ो—भू० का० कृ०।

वुहराडीजणो वुहराडीजवो—कर्म वा०।

वुहराडियोडो—देखो 'वुहरायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वुहराडियोडी)

वुहराणो वुहरावो—देखो 'वुहराणो, वुहरावो' (रू भे.)

वुहराणहार, हारो (हारी), वुहराणियो—वि०।

वुहरायोडो—भू० का० कृ०।

वुहराईजणो, वुहराईजवो—कर्म वा०।

वुहरायोडो—देखो 'वुहरायोडो' (रू भे)

(स्त्री वुहरायोडी)

वुहरावणो, वुहराववो—देखो 'वुहराणो, वुहरावो' (रू. भे)

वुहरावणहार, हारो (हारी), वुहरावणियो—वि०।

वुहराविप्रोडो, वुहरावियोडो, वुहराव्योडो—भू० का० कृ०।

वुहरावीजणो, वुहरावीजवो—कर्म वा०।

वुहरावियोडो—देखो 'वुहरायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वुहरावियोडी)

वुहरियोडो–भू० का० कृ०—१ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ।

२ देखो व्यवहारियोडो' (रू भे)

(स्त्री वुहरियोडी)

वुहाडणो, वुहाडवो—१ देखो 'वोवाणो, वोवावो' (रू भे)

२ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू भे)

वुहाडणहार, हारो (हारी), वुहाडणियो—वि०।

वुहाडिप्रोडो, वुहाडियोडो, वुहाड्योडो—भू० का० कृ०।

वुहाड़ीजणो, वुहाडीजवो—कम वा०।

वुहाडियोडो—देखो 'वहायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोवायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वुहाडियोडी)

वुहाणो, वुहावो—१ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू भे)

उ०—वाहि वुहाय घणी वीजूजळ, तडळ खगा करै झाँटतळ। द्रम प्रथमी सिर क्रीत उवारा, परणे अपछर सुरगि पधारां।
—सू. प्र.

२ देखो वोवाणो, ओवावो' (रू भे)

वुहाणहार, हारो (हारी), वुहाणियो—वि०।

वुहायोडो—भू० का० कृ०।

वहाईजणो, वुहाईजवो—कर्म वा०।

वुहायोडो—१ देखो 'वहायोडो' (रू भे.)

२ देखो 'वोवायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वुहायोडी)

वुहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

उ०—समत बयाळै मांह काती वद कळस थप्यो। मुकति को वुहार कीनो साचो गुर जाणियै। —सेवादास

वुहारडी - १ देखो 'वुहारी' (अल्पा., रू भे.)

२ देखो 'वहू' (अल्पा, रू भे)

वुहारण—देखो 'वुहारण' (रू. भे)

वुहारणो, वुहारवो—देखो 'वुहारणो, वुहारवो' (रू भे.)

उ०—गाया री मैं गोरचा वुहारी भैंस्यां रा खरळा-खरळा गोबर गेरचो उपला थाप्या सौ रै पचास। मारुणी घणा कमावणी।
—लो गी

वुहारणहार, हारो (हारी), वुहारणियो—वि०।

वुहारिओडो, वुहारियोडो वुहारयोडो,—भू० का० कृ०।

वुहारीजणो, वुहारीजवो—कर्म वा०।

वुहारि—१ देखो वुहारी' (रू भे.)

२ देखो 'वहू' (अल्पा, रू भे)

वुहारियोडो – देखो 'वुहारियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वुहारियोडी)

वुहारी—देखो 'वुहारी' (रू भे.)

वुहारो—देखो 'वुहारी' (रू भे)

वुहावणो, वुहाववो—१ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू. भे.)

उ०—करै घात वोलै पारसी, वगतर तवा फिरै जाणै आरसी। कवाणां कुजा जिम कुरवरिया विलख मेहा जिम ओसरिया। नाली निहाव, गोळा वुहाव। गढ सिखर छडी, कायरा का जीव तुडी।
—अ. वचनिका

२ देखो 'वोवाणो, वोवावो' (रू. भे.)

वुहावणहार, हारो (हारी), वुहावणियो—वि०।

वुहाविओडो, वुहावियोडो, वुहाव्योडो—भू० का० कृ०।

वुहावीजणो, वुहावीजवो—कर्म वा०।

वुहावियोडो—१ देखो 'वहायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोवायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वुहावियोडी)

वुहियोडो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वुहियोडी)

वुहुतर, वुहुतरि, वुहुत्तर, वुहुत्तरि, वुहुत्तिरि—देखो 'बओत्तर' (रू भे.)

वूग—१ देखो 'वूग' (रू. भे.)

२ देखो 'वूक' (रू. भे.)

वूंगरड—देखो 'वुगरड' (रू भे)

वूंगी—देखो 'वूक' (रू भे.)

वूगी—देखो 'वूगो' (रू भे)

वूघरो—देखो 'वूंघरो' (रू भे)

वूक—देखो 'वूक' (रू भे)

वूकियो, वूको—देखो 'वू को' (रू भे.)

वूट—देखो 'वट' (रू भे)

वूटी—देखो 'वूटी' (रू भे)

वूटो—देखो 'वूटो' (रू भे)

वूतणो, वूंतवो—देखो 'वूंतणो वूतवो' (रू भे.)

वूतणहार, हारो (हारी) वूंतणियो—वि०।

वूतिओडो वूतियोडो, वूत्योडो—भू० का० कृ०।

वूतीजणो, वूतीजवो—कर्म वा०।

वूतियोडो—देखो 'वूतियोडो' (रू भे)

(स्त्री वूतियोडी)

वूद—देखो 'वूंद' (रू भे)

उ०—मेरी गई पुकार सब, ज्यूं समद मे वूद। सुणी न अेको सावळा, कान रहे हो मूद। —गजउद्धार

वूदड—१ देखो 'वूंद' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'वूंदी' (मह, रू भे.)

वूवड़ी—१ देखो 'वूंद' (अल्पा, (रू. भे)

२ देखो 'वूंदी' (अल्पा, रू. भे.)

वूंदळा—देखो 'वूंदळा' (रू भे)

वूदा—देखो 'वूदा' (रू भे)

वूदी—१ देखो 'वूदी' (रू भे)

२ देखो 'वूद' (रू. भे)

वूंव—देखो 'वूव' (रू भे.)

वूवडा—देखो 'वूमडा' (रू भे)

वूंवाडो—देखो 'वूंव' (मह, रू. भे)

वूंमडा—देखो 'वूमडा' (रू भे)

वू-स. पु—१ अर्क, सूर्य। (एका)

२ यमु (,,)

३ तूल। (,,)

४ कबूतर। (,,)

५ बहुत, अत्यधिक। (,,)

६ सर्व, सब। (,,)

७ देखो 'वू' (रू भे)

८ देखो 'वहू' (रू भे)

वूअणो, वूअवो—१ देखो 'वहणो वहवो' (रू भे)

उ०—पाचा (छा) डेरा हता ज्या हुआ छै, पकवाना का थाळ डेरा नै वूआ छै। पाचा रग-राग वरताणा, मालूका हुआ मन का जाणा दारू की झड लगायी छै, जसा भी पीधो छै, म्याराम नै पीयो छै।

—मयाराम दरजी री वात

२ देखो वोवणो, वोवणो' (रू भे)

वूअणहार हारो (हारी), वूअणियो—वि०।

वूइयोडो वूइयोडो, वूआडो, वूयोडो—भू० का० कृ०।

वूईजणो, वूईजवो—भाव वा०।

वूआणो, वूआवो—१ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू भे)

२ देखो 'वोवाणो, वोवावो' (रू भे)

वूआणहार हारो (हारी), वूआणियो—वि०।

वूआयोडो—भू० का० कृ०।

वूईजणो, वूईजवो—कर्म वा०।

वूआयोडो—१ देखो 'वहायोडो' (रू भे)

२ देखो 'वोवायोडो' (रू भे)

(स्त्री वूआयोडी)

वूआवणो, वूआववो—१ देखो 'वहाणो, वहावो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोवाणो, वोवावो' (रू भे)

वूआवणहार हारो हारी) वूआवणियो—वि०।

वूआविओडो, वूआवियोडो, वूआव्योडो—भू० का० कृ०।

वूआवीजणो, वूआवीजवो—कर्म वा०।

वूआवियोडो—१ देखो 'वहायोडो' (रू भे)

२ देखो 'वोवायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वूआवियोडी)

वूइयोडो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोवियोडो' (रू भे)

(स्त्री वूइयोडी)

वूई—देखो 'वुई' (रू भे)

वूक—देखो 'वूक' (रू भे.)

वूकड—देखो 'वूक' (मह, रू. भे)

वूकडो—देखो 'वूक (अल्पा, रू भे.)

वूखीचडी—देखो 'वहुखीचडी' (रू भे)

वूग—१ देखो 'वूक' (रू. भे)

२ देखो 'वूग' (रू भे)

वूडो—देखो 'वुडो' (रू भे.)

वूच—देखो 'वूच' (रू भे)

वूचकी—देखो 'वूचकी' (रू भे)

वूचड—देखो 'वूचड' (रू भे)

वूचडखानो—देखो 'वूचडखानो' (रू भे)

वूचो—देखो 'वूचो' (रू भे)

वूजी वूजीसा—स. स्त्री [स वधू] १ वृद्धा स्त्री।

वि० वि०—सर्व प्रथम औरत घर में व्याह कर आती है उस समय उसको "वू" कहकर पुकारा जाता है। उसके सन्तानोत्पत्ति होने पर सन्तान भी उसको 'वू' कहने लग जाती है। परन्तु उसकी वृद्धावस्था होने पर उसको 'वूजी' कहने लग जाते हैं।

२ माता।

उ०—आप कोई वात री चिंता फिकर करसी नी। वूजी नै म्हारा पाव धोक अरज करसी अर टावरा माथै हाथ फेरसी। म्हारी कानी सू अमला री मनवार मानसी। —अमर चूनडी

३ दादी।

४ दादीसासु।

५ सासु।

उ०—काकी वोली - जवरजी बेटा! म्हारो एक काम करोला? म्हनै थारै काकीसा री कागज पढनै सुणाय दो वीरा! म्हू थांनै

विलावणी करती वखत बूजी रै छानै माखण री लूदी दू ला।
—अमरचूनडी

उ०—२ सेठा रै कैणा मुजब सेठाणी पाचू वहुवा नै इण अवखी वेळा मैं साथ निभावण वास्तै समझावण लागी तौ चारू मोटोडी वहुवा कह्यौ—बूजीसा, इण मैं इत्ती समझावण री काई वात। म्हारीसाख किसी न्यारी है।
—फुलवाडी

रू भे.—बुजी, बूज्जी।

बूजो—१ देखो बूजो' (रू भे)

२ देखो बू झो' (रू. भे.)

बूज्जी—१ देखो बूज्जी' (रू भे.)

२ देखो 'बूजी' (रू. भे.)

बूझ—१ देखो 'बूझ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछ' (रू भे)

३ देखो बू झ' (रू भे)

बूझणी, बूझबौ—१ देखो 'पूछणी, पूछवौ' (रू भे)

उ०—आवी खबर अचीतिया, विसमै जैसी वत्त। तद राठौड बूझियौ, 'दुरग' 'आसावत्त'।
—रा रू.

२ देखो 'बूझणी, बूझवौ' (रू भे)

बूझणहार, हारौ (हारी), बूझणियौ—वि०।

बूझिग्रोडौ, बूझियोडौ, बूझ्योडौ—भू० का० कृ०।

बूझीजणौ, बूझीजबौ—कर्म वा०।

बूझताछ—देखो 'पूछताछ' (रू. भे)

बूझवार-वि —बुद्धिमान।

उ०—ए कैसे हैं—वडे सु विद्वान है, वडे महिरवान हैं, वडे मिरदार हैं। वडे बूझवार हैं, वडे दातार हैं। जमी आसमान बीच सभू अवतार हैं।
—रा. सा स

बूझबूझाकड, बूझबूझागर—देखो 'बूझबूझाकड' (रू भे.)

बूझली—देखो 'बूझली' (रू. भे.)

बूझवणी, बूझववौ—१ देखो 'बूझणी, बूझवौ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछणी, पूछवौ' (रू भे.)

बूझवणहार, हारौ (हारी), बूझवणियौ—वि०।

बूझविग्रोडौ, बूझवियोडौ, बूझव्योडौ—भू० का० कृ०।

बूझवीजणी, बूझवीजबौ—कर्म वा०।

बूझवियोडौ—१ देखो 'बूझियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'पूछियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बूझवियोडी)

बूझाडणौ, बूझाड़बौ—१ देखो 'बूझाणी, बूझावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणी, बुझाणौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणी, पूछावौ' (रू. भे.)

बूझाडणहार, हारौ (हारी), बूझाडणियौ—वि०।

बूझाडिग्रोडौ, बूझाडियोडौ, बूझाड़्योडौ—भू० का० कृ०।

बूझाडीजणौ, बूझाडीजबौ—कर्म वा०।

बूझाडियोडौ—१ देखो 'बूझायोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'बुझायोडौ, (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोडौ' (रू भे)

(स्त्री बूझाडियोडी)

बूझाणी, बूझावौ—१ देखो 'बूझाणी, बूझावौ' (रू. भे)

२ देखो 'बुझाणी, बुझावौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणी, पूछावौ' (रू. भे)

बूझाणहार, हारौ (हारी), बूझाणियौ—वि०।

बूझायोडौ—भू० का० कृ०।

बूझाईजणौ, बूझाईजबौ—कर्म वा०।

बूझायोड़ौ—१ देखो 'बूझायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बुझायोडौ' (रू भे)

३ देखो 'पूछायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बूझायोडी)

बूझावणौ, बूझावबौ—१ देखो 'बूझाणी, बूझावौ' (रू. भे)

२ देखो 'बुझाणी, बुझावौ' (रू भे)

३ देखो 'पूछाणी, पूछावौ' (रू भे)

बूझावणहार, हारौ, (हारी), बूझावणियौ—वि०।

बूझाविग्रोडौ, बूझावियोडौ, बूझाव्योडौ—भू० का० कृ०।

बूझावीजणौ, बूझावीजबौ—कर्म वा०।

बूझावियोड़ौ—१ देखो 'बूझायोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बुझायोडौ' (रू भे)

३ देखो 'पूछायोडौ' (रू भे)

(स्त्री बूझावियोडी)

बूझियोडौ—१ देखो 'बूझियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'पूछियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बूझियोडी)

बूट—१ देखो 'बूंट' (रू. भे.)

२ देखो 'बूट' (रू. भे)

बूटकी—देखो 'बूंटी' (अल्पा., रू. भे.)

बूटणी, घूटबौ—देखो 'बूठणी, बूठवौ' (रू. भे.)

उ०—१ लुटी सामान भंडारा ऊवार पाग राव लागी, सोमा डाणे आणे राव खूटो खजाना सचूप। तणी वाघ साम घटा मोजा मार्ण रावतूटो, राणे राव रूपाधार वूटो यद्र रूप। —महादान महड़ू

उ०—२ पगी लुटी चगी सामा हुई माण पाण वाळी, जाफ छूटी पाता घणा आणा वाळी फोक। रीझा तूठी अछेह ज्यू ऊठी फाट राणा वाळी, नाणा वाळी मूठी वूटी मेह ज्यू निघोक।
—महादान महड़ू

वूटणहार, हारो (हारी), वूटणियो—वि०।

वूटिओडो, वूटियोडो, वूटयोडो—भू० का० कृ०।

वूटीजणी, वूटीजवो—भाव वा०।

वूटियोडो—देखो 'वूठियोडो' (रू भे)

(स्त्री वूटियोडी)

वूटियो—देखो 'वूटो' (अल्पा, रू भे)

वूटी—देखो 'बूंटी' (रू. भे)

वूटो—देखो 'वटो' (रू भे)

(स्त्री वूटी)

वूठ-स स्त्री —वर्षा होने की गति या क्रिया।

वूठणो, वूठवो—देखो 'वूठणो, वूठवो' (रू भे)

उ०—१ • • भला हुइ वही, परीस्या कोइ कहइ नही, सही प्रथिवी रही गहगही, सावइं कादम माचइ, कारसणी नाचइ, नीपजइ मातइ थान, देवता प्रधान, नासइ दुकाल, भाद्रवइ वूठइ सुगाल। —व म

उ०—२ सोरम फूट जब्बाध एम, घण वूठं जळहर लहर जेम। पेखियै ताम सोभा परम्म, किसनागर अवर जख कदम्म।
—गु रू व

उ०—३ ऊनमियउ उत्तर दिसइ गाज्यउ गुहिर गभीर। मारवणी प्रिउ सम्भरयउ, नयणे वूठउ नीर। —ढो मा

उ०—४ सेवै नर सदीना सुरघर, सदा नीरोगी ही रवै। वूठं जारी वातडी नै, वगत वटाऊडा कवै। —दसदेव

उ०—५ गाढा वाढणो अवगाढ महूगढ, उत्तर प्रगट घर पैला। सेला झड माच्यो साहवखा, वूठो सरस वूदेला।
—साहवखां आखरोत कछवाहा री गीत

उ०—६ दीपं मजलस निस दिवस, हित चित नित मनुहार। विंद 'अभो' वूठो विभै, इद तणे आचार। —रा रू.

वूठणहार, हारो (हारी), वूठणियो—वि०।

वूठिओडो, वूठियोडो, वूठ्योडो—भू० का० कृ०।

'वूठीजणो, वूठीजवो—भाव वा०।

वूठाळु, वूठाळू-वि —वरसने वाला, वर्षा करने वाला।

उ०—कठळ वूठाळू रूपकध, वधिया किलावा चमरवध। तहमद् भूल कसि घट ताम, जगी धरि हूवदा पूठि जाम। —सू प्र.

वूठियोडो—देखो वूठियोडो' (रू भे)

(स्त्री वूठियोडी)

वूडपरवा, वूडपिरवा—देखो 'वूडपरवा' (रू. भे)

वूडवेम—देखो 'वूढजाम'

वूढ—१ देखो 'वूढ' (रू भे.)

२ देखो 'वूढो' (मह, रू भे)

३ देखो वूढण' (मह., रू भे)

वूढजाम—देखो 'वूढजाम' (रू भे)

वूढण, वूढणि वूढणी—देखो 'वूढण' (रू भे)

वूढणो, वूढवो—देखो 'वूढणो, वूढवो' (रू भे.)

वूढणहार, हारो (हारी), वूढणियो—वि०।

वढिओडो वढियोडो, वूढयोडो—भू० का० कृ०।

वूढीजणो, वूढीजवो—भाव वा०।

वूढपरवा, वूढपिरवा—देखो 'वूडपरवा' (रू भे)

वूढल—१ देखो 'वूढो' (मह, रू भे)

२ देखो 'वूढण' (रू भे)

वूढली—१ देखो 'वूढण' (अल्पा, रू भे)

२ देखो वूढो' (अल्पा, रू भे)

वूढलो—देखो 'वूढो' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री वूढली)

वूढवाळ, वूढवावळ-स. स्त्री —वृद्धावस्था, वुढापा।

उ०—पेमजी जवरा हुकमां हाल्या। अं मै वूढवाळ फोडा घाल्या। सपना ला सेंग हीडा-सुमन, उलटा झडखला ज्यूं झूरडीजै है। कुभावना हाला काली नस रा कीडा कुसम, सुलटा तिणखला सा तुरडीजै। —दसदोख

वूढवेम—देखो 'वूडजाम'

वूढसुवागण, वूढसुहागण-स स्त्री —वृद्धा सुहागिन स्त्री।

वूढाई—देखो 'वुढाई' (रू भे)

वूढापण, वूढापणो—देखो 'वुढापणो' (रू भे.)

उ०—आवि तू पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तू आधारी जी। तुझ विण कुण वूढापणइ, करिस्यइ अम्हारी सारो जी। —स. कु.

वूढापो—देखो 'वुढापो' (रू. भे)

उ०—१ किसनजी की कूंत नी सक्यो। सोखीनाई अर खरच-वरच री चीजा वस्तुवा सू खूब राजी हुयो। वूढापै हाळा ओखदा माथै वै'म ही नी गयो। ओसध्या ही तीस-पंतीस ताई री अकल मैं आई। —दसदोख

उ०—२ बाळापण तरण गयो, वड वूढापो थाय। हरीया कर सिर कपिया, धीख भरी नही जाय। —अनुभववाणी

वूढि—१ देखो 'वूढापो' (रू. भे)
२ देखो 'वूढो' (रू भे)

वूढियोडो—देखो 'वूढियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वूढियोडी)

वूढो—१ देखो 'बुढण' (रू. भे.)
२ देखो 'वूढो' (स्त्री.)

वूढैवारै—देखो 'वूढैवारै' (रू. भे)
उ०—इतरी कहिनै जैत डेरै आयो। आय रजपूताणी नूं रीसांणी, 'जु वूढैवारै राजा कनै मारी कमी कराई।' इम कहि नै जैत छाडियो। —जैतमाल पुमार री वात

वूढो—देखो 'वूढो' (रू भे)
उ०—१ हरीया वूढा ना गिनै, तरना गिनै न बाळ। काळ पसारा सकळ जुग, ज्यू मकडी का जाळ। —अनुभववाणी
उ०—२ व ळा तो तरणा भयो वूढो तो ई न आपो चेतो। जनहरि-रांम वीज विन वाह्या, कहा निपावै खेती। —अनुभववाणी

वूढोठाडो, वूढोठाढो—सं पु. (स्त्री. वूढीठाडी, वूढीठाढी) अति वृद्ध पुरुष।
उ०—आळी भोळी गावै बा तो घर वर पावै। परणी-पाती गावै वा तो पुतर खेलावै। वूढीठाढी गावै ज्या नै वैकूटा री वासो। —लो गी

वूढोठेरो—स. पु (स्त्री. वूढीठेरी, वूढीढेरी) अति वृद्ध पुरुष।
उ०—जै कोई धूजी नै परणी-पाती गावै, परणी पाती गावै, गोद पुतर खेलावै। जै कोई धूजी नै वूढीठेरी गावै, वूढीठेरी गावै वा वैकूटां नै जावै। —लो. गी.
रू. भे—वूढोढेरो।

वूढोडैण—देखो 'वूढोडैण' (रू भे) (स्त्री. वूढीडैण)

वूढोढेरो—देखो 'वूढोढेरो' (रू. भे.)

वूढोभोड—स पु—अति वृद्ध पुरुष।
उ०—ऊट, वकरी री जोडी जुडै, जद मन कद मिळै ? एक करै नूई बीनणी रा कोड, दूजी करै आखं अदीठ वूढोभोड। पेलडी लटवा करै—हाथ जोडै। बीजी मू सूजावै, माथो फोडै। —दसदोख

वूणा—देखो 'वूणा' (रू. भे)

वूतणो, वूतवो—देखो 'वू तणो, वू तवो' (रू. भे)
वूतणहार, हारो (हारी), वूतणियो—वि०।
वूतिओडो, वूतियोडो, वूत्योडो—भू० का० कृ०।
वूतीजणो, वूतीजवो—कर्म वा०।

वूतियोडो—देखो 'वू तियोडो' (रू भे.)
(स्त्री वूतियोडी)

वूतेलो—स पु—वातचक्र, वगूला।
वि० वि०—देखो वघूळो' (रू भे.)

वूत्कार—देखो 'वूत्कार' (रू भे)

वूथ—देखो 'वूथ' (रू भे.)

वूथेळियो—देखो 'वथूळो' (अल्पा., रू भे)

वूथेळो—देखो 'वथूळो' (रू भे)

वून—देखो 'वू द' (रू. भे)

वूनै—देखो 'वूनै' (रू. भे.)

वूर—१ देखो 'वूर' (रू.भे.)
२ देखो 'वूरो' (मह., रू भे.)

वूवणो, वूववो—१ देखो वहणो, वहवो' (रू भे.)
उ० कू डी कुतको होक चीपियो, कमर कस उठ वूवो रे। झोळी झंडा और पीजरी, जिण माही एक सूवो रे। —रैदास धत्तरवाळ
२ देखो 'वोवणो, वोववो' (रू भे)
वूवणहार, हारो (हारी), वूवणियो—वि०।
वूविओडो वूवियोडो, वूव्योडो—भू० का० कृ०।
वूवीजणो, वूवीजवो—भाव वा०।

वूवियोडो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे)
२ देखो 'वोवियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वूवियोडी)

वूसट—स पु—चपेटा। (उ र)

वूसर—१ देखो 'असुर' (रू भे)
उ०—रे मन वूसर क्यू बैठो रूस र, साहिव सेती साण्या, माया देखि भयो मतिवाळो, या वाता मन मांन्या। धन जोबन अजरी को पाणी, कर सू जासी नीसर, मनखा देही वळै न पावै, हरि सिंवरी मन वूसर। —हरजी वणियाळ
२ देखो 'ऊसर' (रू. भे)

वूहणो, वूहवो—देखो 'वहणो, वहवो' (रू. भे.)
उ०—१ कू झडिया करळव कियउ, घरि पाछिलै दरगि। सूती साजण सभरघा, करवत वूही अगि। —ढो. मा.

उ०—२ कू फड़िया कळिग्रळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। मिसि भरि सज्जण सल्लिया, नयणे बूहा नीर। —ढो मा

उ०—३ सिर ढाकण कुण सा ग्रह्यो, जुवती चढतें (वेसा) जोम। दिन दिन जोवन दीहड़ा, वूहा जावै वोम। —मा वचनिका

उ०—४ घाव चोट निहस घरहरै, भाळ दुग ऊछळे भभ। वूही तेग मेर सिरि वजर, वजर देह खगधार वज। —सुरजनदास पूनियौ

उ०—५ इसडा हीज गडा रा ढिग मारग माहे पडिया। परमेसर री का इसडी हीज घडी वूही। उठा चढि ग्रर कीतासर पधारिया। —द वि

उ०—६ ताहरा सिवो छाजू री वेटो नदी थी निजीक सिकार खेलतो हुतो, सू कूकवो सुणनै दोड ग्रायो। साहिजादी नदी माहे वूही जावती दीठी। —नैणसी

वूहणहार, हारौ (हारी), वूहणियौ—वि०।
वूहिग्रोडौ, वूहियोडौ, वूह्योडौ—भू० का० कृ०।
वूहीजणौ, वूहीजवौ—भाव वा०।

वूहा—देखो 'वूहा' (रू भे.)

वूहाणौ, वूहावौ—देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू भे)

वूहाणहार, हारौ (हारी), वूहाणियौ—वि०।
वूहायोडौ—भू० का० कृ०।
वूहाईजणौ, वूहाईजवौ—कम वा०।

वूहायोडौ—देखो 'वहायोडौ' (रू भे

(स्त्री. वूहायोडी)

वूहारणौ, वूहारवौ—देखो 'वुहारणौ, वुहारवौ' (रू भे)

वूहारणहार, हारौ (हारी), वूहारणियौ—वि०।
वूहारिग्रोडौ वहारियोडौ, वूहारयोडौ—भू० का० कृ०।
वूहारीजणौ, वूहारीजवौ—कर्म वा०।

वूहारियोडौ—देखो 'वुहारियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वूहारियोडी)

वहारी—देखो 'वुहारी' (रू भे)

वूहारौ—देखो 'वुहारौ' (रू. भे.)

वूहावणौ, वूहाववौ—देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू. भे.)

वूहावणहार, हारौ (हारी), वूहावणियौ—वि०।
वूहाविग्रोडौ, वूहावियोडौ, वूहाव्योडौ—भू० का० कृ०।
वूहावीजणौ, वूहावीजवौ—कर्म वा०।

वूहावियोडौ—देखो 'वहायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. वूहावियोडी)

वूहियोडौ—देखो 'वहियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूहियोडी)

वूही-वि —पागलपनयुक्त, पागलपन की।

उ०—एकर री वात, राजी रै जापै मे पौन-हवा निकलगी। वावली वडा करण लागगी। गूग विखेरै ग्रर तत्ता-पत्ता सूं वूही वाता करै। जकै सूं घर हाळा नै भूतणी री वैम वड गयौ है। —दसदोख

वें—देखो 'वें' (रू. भे)

वेंकट—देखो 'वेंकटगिरि' (रू. भे)

वेंकटगिर, वेंकगिरि, वेंकटगिरी—स. पु [स वेंकट+गिरि] दक्षिण भारत मे स्थित एक पर्वत, जहा विष्णु का प्रसिद्ध स्थान है ग्रौर भारत के कोने-कोने से भक्त दर्शनार्थ ग्राते हैं।

रू. भे —वेंकट, वेंकिट, वेंकिटगिर, वेंकिटगिरि, वेंकिटगिरी

वेंकटाचळ—देखो 'वेंकटगिरि'

वेंकटेस, वेंकटेसर, वेंकटेसुर, वेंकटेस्वर—स पु. [स. वेंकट+ईश, वेंकट+ईश्वर] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

२ शेषनाग का नाम।

३ दक्षिण भारत के तिरूपति बालाजी का एक नाम।

वेंकिट, वेंकिटगिर, वेंकिटगिरि, वेंकिटगिरी—देखो 'वेंकटगिरि' (रू भे.)

वेंगळा, वेंगला—स. स्त्री —मूर्ख स्त्री, मूर्खा।

उ०—१ भगवान री समझदारी कै दुनिया मैं ग्रैडा मूरख ग्रर ग्रधरमी ग्रादमी घणा नी व्है, नीतर सगळा ससार री ई पोखाळी व्है जातौ। ग्रा दुनिया जीवण जोगी ई नी रै'ती। वो धरमात्मा भतीजो नीठ उण वेंगळा नै समझाई। —फुलवाडी

उ०—२ सेठ जूझळ खावता बोल्या—थनै हेलौ नी मारयौ तौ किणी दूजा नै मारयौ। घर मैं दूजौ कुण है जिणनै हेलौ मारू। थारै पीहर वाळा ई थनै वेंगळा कैता सो यूं थोडा ई कैता। —फुलवाडी

उ०—३ पण सेठाणी ग्रैडी वेंगळा कै वा ग्रापरै जायोडा वेटा नै ई नी ग्रोळखै। वोळी-घोनी नै कठै ई रातिदो तौ नी हैं। नी वेटा री वोली पिछाणी ग्रर नी उणनै ग्रोळखियौ। —फुलवाडी

वेंच—देखो 'वेंच' (रू. भे.)

वेंचणौ, वेंचवौ—देखो 'बेचणौ, वेचवौ' (रू. भे.)

उ०—रामदासजी साढिया लेनै दुघोड ग्राया। इणा नै तौ ग्राखडी छै, घाडी वासी राखणी नही। साढिया रजपुता नै वेंच दीनी। —रा. सा. स.

वेंचणहार, हारो (हारी), वेंचणियो—वि० ।
वेंचिम्रोडो, वेंचियोडो, वेंच्योडो—भू० का० कृ० ।
वेंचीजणो, वेंचीजवो—कर्म वा० ।

वेंचवाडो—देखो 'वेंचवाडो' (रू. भे.)

वेंचाणो, वेंचावो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू. भे.)

वेंचाणहार, हारो (हारी), वेंचाणियो—वि० ।
वेंचायोडो—भू० का० कृ० ।
वेंचाईजणो, वेंचाईजवो—कर्म वा० ।

वेंचायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंचायोडी)

वेंचावणो, वेंचाववो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू. भे.)

वेंचावणहार, हारो (हारी), वेंचावणियो—वि० ।
वेंचाविम्रोडो, वेंचावियोडो वेंचाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वेंचावीजणो, वेंचावीजवो—कर्म वा० ।

वेंचावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंचावियोडी)

वेंचियोडो—देखो 'वेंचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंचियोडी)

वेंट—देखो 'वेंट' (रू. भे.)

वेंटणो, वेंटवो—देखो 'वाटणो, वाटवो' (रू. भे.)

उ०—बेटा रै जलम री खुसी मे वामण सवा मण मिसरी पतासा वेंट्या अर जाट सवा मण गुळ वेंट्यो। पछै दोनू घरा मे दोनू वाता दिनोंदिन भरै पडण लागी। —फुलवाडी

उ०—२ डावडी कह्यौ—गाव में तौ सगळै वधाई री पाच मण गुळ वेंटीजग्यो अर थें हाल ताई सूताई हौ। आज तो आपरै गाव सोनै री सूरज ऊगियो। आपरै करमा रो परताप कै इण गाव राजा री कवर तोरण वादियो। —फुलवाडी

वेंटणहार, हारो (हारी), वेंटणियो—वि० ।
वेंटिम्रोडो वेंटियोडो, वेंटयोडो—भू० का० कृ० ।
वेंटीजणो, वेंटीजवो—कर्म वा० ।

वेंटाणो, वेंटावो—देखो 'वटाणो वटावो' (रू. भे.)

वेंटाणहार, हारो (हारी), वेंटाणियो वि० ।
वेंटायोडो—भू० का० कृ० ।
वेंटाईजणो, वेंटाईजवो—कर्म वा० ।

वेंटायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंटायोडी)

वेंटावणो, वेंटाववो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू. भे.)

वेंटावणहार, हारो (हारी), वेंटावणियो—वि० ।
वेंटाविम्रोडो, वेंटावियोडो, वेंटाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वेंटावीजणो, वेंटावीजवो—कर्म वा० ।

वेंटावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंटावियोडी)

वेंटियोडो—देखो 'वाटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंटियोडी)

वेंडाक—१ देखो 'वेंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंडो' (मह., रू. भे.)

वेंडो—देखो 'वेंडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंडी)

वेंण—१ देखो 'वहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

३ देखो 'वेन' (रू. भे.)

वेंत—१ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

उ०—१ वीजळी काई किडकी, आभा नै सैचनण कर दियौ। खेजडी हेटै चार हाथ ऊडी घेड खुदग्यो। च्यारू आदमिया री जीभा वेंत वारै निकळगी। आख्या रा डोळा वारै आय पडग्या। —फुलवाडी

उ०—२ धरू जावता वो इज रुखाळी वाळो खेत आयो। ताळा छेक ऊभी वाजरी झोला खावती ही। दो दो वेंत लावा जडाव री जात सिट्टा मोत्या रै उनमान परळाट करता हा। —फुलवाडी

उ०—३ अदाता, आप किसो विस्वास करोला—इणरी ऊची अेलम के फगत दोय घडी में वेंन वेंत लावा वाळ आय जावै। सेवा ज्यू लरड लरड वधै। —फुलवाडी

उ०—४ वेदा री तो गिरै-दसा ई भवगी। जूता अर वेंता रा डर सू जाणता जको ई विद्या विसरग्या। किणी यतर-वेद सू की कारी लागी नी। —फुलवाडी

२ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

३ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

४ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

वेंतणो, वेंतवो—देखो 'वेंतणो, वेंतवो' (रू. भे.)

वेंतणहार, हारो (हारी), वेंतणियो—वि० ।
वेंतिम्रोडो, वेंतयोडो, वेंत्योडो—भू० का० कृ० ।
वेंतीजणो वेंतीजवो—कर्म वा० ।

वेंतरणो, वेंतरवो—देखो 'वेंतणो, वेंतवो' (रू. भे.)

वेंतरणहार, हारौ (हारी), वेंतरणियौ—वि० ।

वेंतरिम्रोडो, वेंतररियोडो, वेंतरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वेंतरीजणौ, वेंतरीजवौ—कर्म वा० ।

वेंतराणौ, वेंतरावौ—देखो 'वेंताणौ, वेंतावौ' (रू. भे.)

वेंतराणहार, हारौ (हारी), वेंतराणियौ—वि० ।

वेंतरायोडो—भू० का० कृ० ।

वेंतराईजणौ, वेंतराईजवौ—कर्म वा० ।

वेंतरायोडो—देखो 'वेंतायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंतरायोडी)

वेंतरावणौ, वेंतराववौ—देखो 'वेंताणौ,, वेंतावौ' (रू. भे.)

वेंतरावणहार, हारौ (हारी), वेंतरावणियौ—वि० ।

वेंतराविम्रोडो, वेंतरावियोडो, वेंतराव्योडो—भू० का० कृ० ।

वेंतरावीजणौ वेंतरावीजवौ—कर्म वा० ।

वेंतरावियोड़ो—देखो 'वेंतायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंतरावियोडी)

वेंतरियोडो—देखो 'वेंतियोडो' (रू भे)

(स्त्री वेंतरियोडी)

वेंताणौ, वेंतावौ – देखो 'वेंताणौ, वेंतावौ' (रू. भे.)

उ०—थान दोय वाफता रा, दोय माहमुदी, पाच सेल्हा अवल ल्याई । सो दरजी भरमल रै कारखानै वेंसाणिया । वागो पैहरण नै कुंवरसी रै थो सो दोपोर पोढिया जद ले गई । उण ऊपर वेंताया जाधिया तीन वाफता रा कराया ।

—कुंवरसी साखला री वारता

वेंताणहार, हारो, (हारी), वेंताणियौ—वि० ।

वेंतायोडो—भू० का० कृ० ।

वेंताईजणौ, वेंताईजवौ—कर्म वा० ।

वेंतायोडो—देखो 'वेंतायोडो' (रू भे)

(स्त्री वेंतायोडी)

वेंताळीस, वेंतालीस—देखो 'वयाळीस' (रू भे.)

वेंतावणौ, वेंताववौ—देखो 'वेंताणौ, वेंतावौ' (रू भे.)

वेंतावणहार, हारौ (हारी), वेंतावणियौ—वि० ।

वेंताविम्रोडो, वेंतावियोडो, वेंताव्योडो—भू० का० कृ० ।

वेंतावीजणौ, वेंतावीजवौ—कर्म वा० ।

वेंतावियोडो—देखो 'वेंतायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतावियोडी)

वेंतियौ–वि.—एक वालिश्त लम्बा ।

स पु —केवल एक वालिश्त लम्बा व्यक्ति, जो प्रायः पृथ्वी तल के अन्दर पाया जाता है और पृथ्वी पर जीवित नही रह सकता ।

वेंदी—देखो 'विंदी' (रू भे)

वेंद्रिय—देखो 'वेइंद्रिय' (रू. भे)

वेंहरौ–स पु —विवाद ।

उ०—उरजन तणौ लसै ऊतरियौ, सुत जगमाल रहियौ सुधर । वेंहरौ हुम्रो वेहू गढ विग्रह, हाडा अनै 'हमीर' हर ।

—रावत पत्ता आमेट री गीत

वे'—देखो 'वेह' (रू भे)

वे–स पु —१ काम, कार्य । (२) वैद्य, हकीम । (३) पल्लव । (४) कल्पवक्ष । (५) पीपर । (६) वेग, गति । (एका.)

७ स्वरूप, आकार ।

८ पोशाक ।

सर्व —१ 'वौ' का बहुवचन ।

२ उस । (अमरत)

३ वह का बहुवचन उन ।

उ०—वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक । वे खाधा वे मानिया, हुवा कृतात खुराक । —वा दा.

४ वह का बहुवचन, वे ।

उ०—मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटा हत्थ । वे ही क्रपण कपाट नू, ऊघाडण असमत्थ । —वा. दा.

४ तृतीय पुरुष के लिए सम्बोधन सूचक शब्द, वह (सम्मान सूचक) ।

उ०—काम तो करणौ इज चाहिजै । सगळै ई काम व्हाला है. चाम व्हाला कठैई कोनी । पण थोडो घणौ काम तो सेठाणीजी नै ई करणौ चाहिजै । पण वे तो डोल रै एल ई नी दे ।

—अमरचू नडी

अव्य —५ सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—अहो आवो वे यार वैठो दरवार ।, ए चादणी रात, कहो मजलीस की वात । कहो कौंण कौंण, मुलक कौंण कौंण राजा देखै, कोण कौंण पातिस्या देखै, कौंण कौंण दईवान देखै, कौंण कौंण महिवान देखै ।

—रा. सा स.

६ देखो 'वे' (रू भे)

उ०—१ उठै वे दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा । कहि गगा तन मजन कीधा, दान वितान मान करि दीधा ।

—रा रू.

उ०—२ रहता सेती रचीयै, क्या वहता सुं काम । भाव जहा हसि वोलियै, वे भावत वेकाम । —अनुभववाणी

रू. भे.—वेंह, वें।

वेग्रत—देखो 'वेग्रत' (रू भे)

वेग्रकल—देखो 'वेग्रकल' (रू भे)

वेग्रकली—देखो 'वेग्रकली' (रू भे)

वेग्रखरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू भे.)

वेग्रखरीचौसर—देखो 'वेग्रखरीचौसर' (रू भे)

वेग्रखरी, वेग्रक्खरी, वेग्रल्खरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू भे)

वेग्रद—वि०—वेइज्जत, प्रतिष्ठारहित।

उ०—ठिकाणा री मालक घोडा रजपूतां नै वेग्रद राखतो सो इण सारू उणरी स्त्री कह रही है—हे सखिया ग्रठै ठिकाणा में भड नै घोडा सुहगा हा सो एक ग्रादमी सु फाट उडता (युद्ध होता) भड नै घोडा मुहगा हो गया। —वी स टी

वेग्रदव—देखो 'वेग्रदव' (रू. भे)

वेग्रदवी—देखो 'वेग्रदवी' (रू भे)

वेग्ररथ, वेग्ररथी—देखो वेग्ररथ' (रू. भे)

वेग्राखरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे)

वेग्राव—देखो वेग्राव (रू. भे.)

वेग्रावरू—देखो 'वेग्रावरू' (रू भे)

वेग्राळिस, वेग्राळीस—देखो 'बयाळीस' (रू भे)

वेग्रासी—देखो 'बयासी' (रू. भे.)

वेइविय, वेइंवी, वेइप्रिय—देखो 'वेइप्रिय' (रू. भे)

वेइंसाफ—देखो 'वेइसाफ' (रू भे)

वेइसाफी—देखो 'वेइसाफी' (रू. भे)

वेइ—देखो 'वेई' (रू भे)

उ०—राजा वीसलदेव ग्रजमेर राज करै। वडो महाराज, तैसू कोई ग्रधको नही। तिण सौ मूळवै लागवजी हुई, चारण वैसवटै वेइ। वेसवडो मूळवै पासै रहै ग्रर मूळवो चणडोळियो रहै।

—मूळवै सागावत री वात

वेइज्जत—देखो 'वेइज्जत' (रू. भे)

वेइज्जती—देखो वेइज्जती' (रू भे)

वेइतवार—देखो 'वेइतवार' (रू भे.)

वेइया—देखो 'वेदिका' (रू भे) (जैन)

वेइल्म, वेइल्मी—देखो 'वेइल्म' (रू भे)

वेई—देखो 'वेई' (रू. भे)

उ०—१ मन में घरता भरट घरट जिम भूखं घूमै, मेलै घर गया मऊ भटकि मूमा पर भूमै। वेटा नै मा वाप वेचि दे जीमण वेई, रूलतां रिगता राक करै वेललाटा केई। —ध. व. ग्र.

उ०—२ पछै समत १६७२ वळै पाछो ग्रायो, तद कामडो पटै दियो। पछै विकूकोहर पाणी री तीण वेई माहोमाह बोलाचाली हुई तद भाटी ग्रचळदास मारियो। —नैणसी

उ०—३ गूजवो कोहर तौ, तठै चारण री वित पावण वेई, सु कोहर चाढियो, सु पाणी नीसरै नही। ताहरा चारण बिरवडो कही—'वडा राठोड घेरी छै ज्यूं पाय। —नैणसी

उ०—४ जदै वीरमदे कहण लागो—'ज, हु उठै पठाण रै जाय ग्रर वध वेई ग्ररज करू। ताहरा कल्याणमल सवरण माहै समझतो हुतो, ताहरा कह्यौ—'राज। वध वेई ग्ररज मता करो।

—नैणसी

वेईठणौ, वेईठवौ—देखो 'बैठणौ, बैठवौ' (रू भे)

वेईठणहार हारौ (हारी), वेईठणियौ—वि०।

वेईठिग्रोडो, वेईठियोडो, वेईठयोडो—भू० का० कृ०।

वेईठीजणौ, वेईठीजवौ—भाव वा०।

वेईठाणौ, वेईठावौ—देखो 'बैठाणौ, बैठावौ' (रू. भे.)

वेईठाणहार, हारौ (हारी), वेईठाणियौ—वि०।

वेईठायोडो—भू० का० कृ०।

वेईठाईजणौ, वेईठाईजवौ—कर्म वा०।

वेईठायोडो—देखो 'बैठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेईठायोडी)

वेईठावणौ वेईठाववौ—देखो 'बैठाणौ, बैठावौ' (रू भे.)

वेईठावणहार हारौ (हारी), वेईठावणियौ—वि०।

वेईठाविग्रोडो, वेईठावियोडो, वेईठ व्योडो—भू० का० कृ०।

वेईठावीजणौ, वेईठावीजवौ—कर्म वा०।

वेईठावियोडो—देखो 'बैठायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वेइठावियोडी)

वेईठियोडो—देखो 'बैठियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वेईठियोडी)

वेईमान—देखो 'वेईमान' (रू. भे)

वेईमानी—देखो 'वेईमानी' (रू भे)

वेउल—स पु [स विचकिलः] एक प्रकार की चमेली। (उ र)

उ०—१ वनि वनि विकसइ वेउल, खेउ लगाडइ चीति, दीठा द्राखह मडव, मंड वधारइ प्रीति। वर विलसइ ग्रलवेसर केसर हेठि सुवेस, ग्रध पुगइ ऊतरायणि रायणि फलिय ग्रसेस।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ मवरिया सहकार, चपक उदार। वेउल वकुल, भ्रमर कुल सकुल, कलरव करइ कोकिल तणा कुल। प्रवर प्रियगु पाडल, निरमळ जळ, विकसित कमळ। —रा० सा० स०

वेउवियलद्धी, वेउवियलधी, वेउव्वियलद्धी, वेउव्वियलधी—देखो 'वैक्रियलब्धि' (रू भे) (जैन)

वेऊ—स पु —१ एक प्रकार का शाक विशेष।

उ०—वालु नइ वेलातरू, वेऊ वेतस वाणि। वघ्रारू वाहलु लीउ वाउलीऊ वखाणि। —मा का प्र

२ देखो वेऊ' (रू. भे)

वेकट—स पु —१हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा।

२ हीरे-जवाहिरात की परख करने वाला, जौहरी।

३ युवा पुरुष।

रू भे—वेकट, वेकठ

वेकटी, वेकढी—देखो 'विकट' (रू. भे)

उ०—वागी ग्रखगा काहुळा नाग करतका साफलं वही, गुडं सिधू वाहुळा जुभाऊ कं गाराज। लडं वहादरेस धूत मूंहडा गेणाग लागी, नत्रीठा वेकढी वागी खळा धूनाराज। —प्रभूदान मोतीसर

वेकणी, वेकवी—देखो 'वेखणी, वेखवी' (रू भे)

उ०—चपला गत मूंवीह, परी गई ग्रपछर परे। ग्राय ग्रागळ ऊभीह, कमळादे नर वेक्रिया। —पा प्र

वेकणहार, हारो (हारी), वेकणियो—वि०।

वेक्रिग्रोड़ो, वेकियोडो, वेक्योडो—भू० का० कृ०।

वेकीजणो, वेकीजवो—कर्म वा०।

वेकदर—देखो 'वेकदर' (रू. भे)

वेकदरी—देखो वेकदरी' (रू भे)

वेकदरो—देखो 'वेकदर' (ग्रल्पा,. रू भे.)

वेकर—स पु. १—एक प्रकार का घास विशेष।

२ एक प्रकार की मिट्टी विशेष।

३ देखो 'वेकर' (रू भे)

रू भे—वेकरडी, वेकरियो।

वेकरडी—१ देखो 'वेकर' (ग्रल्पा., रू भे.)

२ देखो 'वेकर' (ग्रल्पा, रू. भे)

वेकरडो—१ देखो 'वेकर' (मह, रू भे)

२ देखो 'वेकर' (मह, रू भे)

वेकरार—देखो 'वेकरार' (रू. भे)

वेकरारी—देखो 'वेकरारी' (रू. भे)

वेकरियो—१ देखो 'वेकर' (ग्रल्पा, रू. भे)

२ देखो 'वेकर' (ग्रल्पा, रू भे)

वेकळ—१ देखो 'वेकळू' (रू. भे)

२ देखो 'विकळ' (रू. भे)

वेंकल—देखो 'विकळ' (रू भे)

उ०—मुला सूनित तै करी, तैं कीया विसमल। खलडी गला कटाय कै, क्या कीया वेंकळ। —ग्रनुभववाणी

वेकळी—१ देखो 'वेकळी' (रू. भे.)

२ देखो व्याकुळी' (रू भे)

३ देखो 'व्याकुलता' (रू भे)

वेकळू—देखो 'वेकळू' (रू भे)

उ०—१ पछै सिंझ्या ताई खेत रै चारूमेर होळै होळै चकारा देवती फिरी। सूरज हमेसा री गळाई ग्राथूण दिस रै घोरा री वेकळू मलमल में गडग्यो हो। —फुलवाडी

उ०—२ मन ई मन ग्रा सोच राजी व्ही कै जकी कूडा में मोहर न्हाकी, वा सीख में राम-जाणै काई वगसैला! वा मन लगाय ग्रापरी खट-पट में ग्रळूजगी। वेकळू रेता कूडा भर भरने मळवा माथै लाय राळघा। —फुलवाडी

उ०—३ ग्रंडा ग्रंडा ग्रकरम, ग्रन्याव ग्रर ग्रधरम चुपचाप सहै, चुस्कारी ई नी करै। वेकळू रेत रा लाठा घोरा में विरखा री पाणी रिसै ज्यू उण राज री रचा रै ग्रतस में सगळा ग्रकरम, ग्रन्याव झरै चुडकी ई नी ऊठै। —फुलवाडी

वेकस—देखो 'वेकस' (रू भे)

वेकसूर—देखो 'वेकसूर' रू भे)

वेकांनूनी—देखो 'वेकानूनी' (रू भे)

वेकाम, वेकामो—देखो 'वेकाम' (रू भे)

उ०—१ धरि ही हरि सु हित लाय रहो, मन रे मत जाह भटकण कूं। कण पाखो काम वेकाम करै, थोथा भूर फटकण कूं।

—सुरजनदास पूनियो

उ०—२ जाकै घट विरहा वसै, जा घट प्रगटै राम। जनहरिया घट विरह विन, सोई घट वेकाम। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ रहता सेती रचीयै, क्या वहता सु कांम। भाव जहा हुसि वोलियै, वै भावत वेकाम। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ सहजै जीव जिंद कुं छाडै, ताकु कहत हरामा। काजी करद गऊ सिर सारै, विना दोस वेकामा। —ग्रनुभववाणी

वेकाज - देखो 'वेकाज' (रू भे)

उ०—तु क्यु सूतो नींद भरि, भजन विनां वेकाज। जनहरिया जोरी करै, खडो सिराणै वाज। —ग्रनुभववाणी

वेकावू—देखो 'वेकावू' (रू भे)

वेकायदा—देखो 'वेकायदा' (रू भे)

वेकार—देखो 'वेकार' (रू भे)

वेकारी—देखो 'वेकारी' (रू भे)

वेकी—देखो 'वेकी' (रू भे)

वेकीमती—देखो 'वेकीमती' (रू. भे.)

वेकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे)

वेकुथहत्थिराज, वेकुथहत्थिराय, वेकुंथहत्थिराज, वेकुंथहत्थिराय—स. पु. [स. वैकुण्ठहस्तिराज] हाथियो की सेना का नायक। (जैन)

वेकूफ, वेकूब—देखो 'वेवकूफ' (रू भे)

वेकूवी—देखो 'वेवकूफी' (रू भे)

वेख—१ देखो 'विस' (रू भे.)

२ देखो 'वीक्षण' (रू भे)

३ देखो 'वीख' (रू. भे)

४ देखो 'वेख' (रू भे)

५ देखो 'वेस' (रू. भे)

वेखटक वेखटकै—देखो 'वेखटकै' (रू भे)

वेखणौ, वेखवौ—क्रि. स—[स वि+ईक्षणम्] १ अवलोकन करना, देखना।

उ०—१ बजि थाळ सकळ वाजित्र वजै, कुसम सघण सुरियद किया। वेखियां हीज आवै वणै, तण दिन तणौ अजोधिया।

—सू प्र

उ०—२ बळीवळी वीरहाक नीपता नगारा वागी, सेना पीठ लागी जोस धारिया सक्रोध। उववरा आसमाण भुजाटां सेल री अण्या, वेखौ कस वस माथै नडिता विरोध। —वादरदान दधवाडियौ

उ०—३ वणै चार, आभास वदनारविंद, उरं ऊपजै वेख रेखा अणद। सदा हेत सता इसा नेत सोहै, महा मंण रूपी तिका नेण मोहै। —रा रू

उ०—४ भंग्व डावी भणां दुगडियौ मान दिरीजै, जो राजा जीमणौ पोहर हैकण ठैहरीजै। अख आडो वेखता पौर खोडस पारभण, आठ पोहर योमास चलैऊ मेडी तै सुण। —पा प्र

२ निरीक्षण करना, जांचना।

३ जानना, समझना।

उ०—१ कथ सुणि न्रप दाखियौ क्रिपा करि हवि तूं मांग कहै सुजि हाजरि। एक वार ओखद तत एहौ, जपियौ मैं वेखा गुण जेहौं। —सू प्र.

उ०—२ वेदा भेदा वेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौराण। राघौ नाम सरीख, नह को नर देव नागिंद्र। —र ज. प्र

वेखणहार, हारौ (हारी), वेखणियौ—वि०।

वेखिओडौ, वेखियोडौ, वेख्योडौ—भू० का० कृ०।

वेखीजणौ, वेखीजवौ—कर्म वा०।

वेखणौ, वेखवौ, वीखणौ, वीखवौ, वेकणौ, वेकवौ, ओखणौ, ओखवौ —रू. भे।

वेखता—देखो 'वेखता' (रू. भे)

वेखवर—देखो 'वेखबर' (रू भे)

वेखवरदारी—देखो 'वेखबरदारी' (रू भे.)

वेखवरी—देखो 'वेखबरी' (रू भे)

वेखरच—देखो 'वेखरच' (रू. भे.)

उ०—उठा धरमदुवार मागि नीसरिया हुता। मरि, छूटि, तूटि, घणौ वेखरच हुइ, तूटि मरि, भूखा मरि अर नीसरिया हुता। तियै वास्तै पातिसाहजी खिजिया। —द वि

वेखवेरी—देखो 'वेखवेरी' (रू. भे.)

वेखातर, वेखातरि—देखो 'वेखातर' (रू. भे.)

वेखास—स. पु—१ प्रयत्न, प्रयास, कोशिश।

उ०—कोई कहै मोनि पाठ ग्रह विध्या, कोई वसतै वनवासा। सतगुर विन ससा नही भाजै, भावै कोटि करौ वेखासा।

—अनुभववाणी

२ विश्वास, एतबार।

उ०—सुण जिनवर सेत्रुंजाधणीजी, दास तणी अरदास। तुज आगल बालक परैजी, हुतो करूं वेखास, रे जिनजी मुज पापी नै तार।

—वृस्त

३ विलाप, रुदन।

उ०—१ सुणि मारुवणी यावइ घरै, व्याप्यउ विरह मयण बळ धरै। सूती सेज करै वेखास, मोडइ अग, मू कइ नीसास।

—ढो मा

उ०—२ वोल्हावे मन विलखा किया, देवसूत्र एहवा थया। वार ढोलउ करइ वेखास, वळि वळि जोवइ मारू-सास। —ढो. मा.

वेखियोडौ—भू० का० कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ २ निरीक्षण किया हुआ, जाचा हुआ. ३ समझा हुआ जाना हुआ। (स्त्री वेखियोडी)

वेखुदी—वि [फा. बेखुदी] जिसमे चेतना न हो, बेखबर।

उ०—वेखुदी वे आदि वेगम, अजर अचळ अचाल। चिदानद अरूप अवगति, खबर दारौं ख्याल। —ह पु. वां.

वेखून—वि.—निरापराध, वेखून।

उ०—श्रीकम अरज करा छा तूना, मोटी अकलि समापै मूना। जादवराव निमी जर जूना, वैकठ मा राखै वेखूना। —पी प्र.

वेग–स.पु [स] १ प्रवाह, वहाव।

उ०—वहै खग आय खळा भळ वेग, तुटै घण आप तणी सिर तेग। सथी करि मेछ घणा समराथ, भटी भड ताम पडै भाराथ। —सू प्र

२ शरीर मे से मल-मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति।

३ मोतिया बिन्द का समय पर ऑपरेशन न होने पर नेत्र मे चलने वाली सूल, पीडा।

४ वायु विकार।

५ चौवीस गुणो मे से एक गुण जो आकास, जल, तेज वायु और मन मे पाया जाता है। (न्याय)

६ गति, चाल।

उ०—१ पमग वेग उप्पडै, वरण सनूर वकडै। खुलै अपार खगय भणी सकत्ति अग्रय। —रा रू

उ०—२ चोखी वात फैलता नै जेज लागै पण भूडी वात तौ पवन रै वेग उडै। रेडियो मे खवर पूगै ज्यू आ खवर धानपुर पूगी तौ गाव मे खळवळी माचगी। मिनखा रा अवै मूडा जितरी ई वाता। —अमरचू नडी

७ तीव्र गति, तेज चाल।

उ०—१ राति सामीर सारग डाणं ग्रहै, वाइ ऊपडिया लीण जाणै वहै। हद्द वेहद्द पै वेग पै हैमरा, पाधरा जाण पाहाड उड्डै परा। —गु रू व.

उ०—२ जिम लवण रहित रसवती वचन रहित सरस्वती, कठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन, फल रहित वृक्ष, तप रहित भिक्षुक। वेग रहित घोडो, केस रहित मोडो, वस्त्र रहित सिणगार, स्वरण रहित अलकार, इत्यादि। —रा सा स

उ०—३ मझि खगा भाट खेल्है मलग, आफळै अणी परधार अग। पवन रा कुटवी वेग पाण, उड्डइ सिधगुटका जिम उडाण। —सू प्र

८ आवेश, जोश ९ दृढ प्रतिज्ञा। १० प्रेम, अनुराग। ११ वीर्य, शुक्र। १२ वीर्यपात, वीर्यस्खलन। १३ शक्ति, वल, सामर्थ्य। १४ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (अ मा)

उ०—१ मम ढील करौ हल वार म लावौ, वेग चढो वहिला वहिला। भिडता भड सूरज मडळ भेदै, झूळ भरै रम झूक झला। —गु रू. व

उ०—२ सुगुण सनेही नाहला, वाला वेग पधार। अलवेला अलजौ घणौ, देखण पीव दीदार। —ढो. मा

उ०—३ सोवायत इद्र साह री, राव दिसी तिण-वार। गोयदास पमार सग, पूगी वेग पुकार। —रा रू.

उ०—४ चद उठी दळ वेग चलाया, आई ठीक नजीक सु आया। प्रळै काळ जिसडा दळ पावस, दळपत छत्रहूत कोसा दस। —सू. प्र

१५ प्रसन्नता, आनन्द।

१६ देखो 'वेग' (रू भे)

रू भे.—वैंग, वेघ वेघौ, वेव, वैग, वैंगाण।

वेगइरउ, वेगइरौ–क्रि वि —अपेक्षाकृत शीघ्र, जल्दी।

उ०—पयी, हेक सदेसडउ, लग ढोलइ पैहुच्चाय। जोवन जायइ प्राहुणउ, वेगइरउ घर आय। —ढो. मा.

वेगउ—देखो 'वेगो' (रू भे) (उ र.)

उ०—चदमुखी, हसा-गमणि, कोमळ दीरघ केस। कचन-वरणी कांमनी, वेगउ गावि मिळेस। —ढो. मा.

वेगड, वेगडउ–स पु —१ राठौडो की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'वेगड' (रू भे)

३ देखो 'वेगडो' (मह, रू भे)

उ०—१ सवा कोटि धन खरचियो, हरखगी 'महमद शाह' हो। विरूद दियो वेगड तणी, प्रगट थयो जग माहि हो। —ऐ. जै. का सं.

उ०—२ कमधा घर ऊगो किरणाळो, भुज लग हय पावू भालाळो वेगड धमल कध वळवाळो, वाखाणू धाधल राव वाळो। —पा प्र.

उ०—३ कमळ भाडै पडै न चाले कलोडा, छड भाजै भरै जीव छोळा। 'अजारो' पूजिया माड काधो अवै, वेगड ताड तो जिसी वेळा। — हरनाथसिंह चापावत री गीत

उ०—४ राठउडै उदियउ चउड राउ, वेगडइ साड वीरम वियाउ। साळवडी थाणउ दे सधीर, हठमल्ल राउ थाणै हमीर। —रा ज. सी.

उ०—५ वेगडउ साड 'विकउ' विवन्न, कुळ भाण तेथि उदियउ 'करन्न'। ऊधरिय छत्र फेरावि आण, ताई मडोवर मूलताण। —रा. ज. सी

४ देखो 'दोगळो' (मह, रू भे)

वेगडरीगडी—स. स्त्री एक प्रकार की वन्दूक।

वेगडि—देखो 'वेगडी' (रू भे)

वेगड्यो–स पु —१ घोडे का नाम। (सभा)

२ देखो वेगडो' (अल्पा , रू भे)

वेगडी–स स्त्री. [स विकटश्रृ गी] तीक्ष्ण और सीधे सीगो वाली गाय या भैस। (उ र)

रू भे —वेगडी।

वेगडो—१ देखो 'वेगड' (रू. भे)

२ देखो वेगडो' (रू भे)

उ०—१ पावू पाट रै रूप राठवडा, सेवै तूझ सधीरा। वेगडै पाल्ह लीया वरदाई, सिध तणा साढी रा।

—पावू धाधळोत राठौड रो गीत

उ०—२ माधो ग्रटक न ऊनरै माधो कटक न जाय। वेटी साटै वेगडो, घर बैठो घर खाय। —बां दा ख्यात

उ०—३ वाछना वरमाळ वेगडा, वकता सुणै 'दूदै' वसियो। जेसळगिरा तिको दिन जाणै, हाथा ताळी दे हसियो।

—दूफो सांदू

उ०—४ मदि मालम थान मसूरियो, प्रोथ हूत खड ग्रावजै। वेगडा 'पाल' गज वाहरू, दम इक जेज म लावजै। —पा प्र

उ०—५ दरगह राण कळण विच दारुण, गो नाही सुधो कळण। कांधो कुण माडै 'कांधळ' रा, वेगड़ा धोरी तूझ वण।

—चतुरभुज बारहठ

३ देखो दोगळो' (रू. भे)

वेगड, वेगडउ—१ देखो 'वेगड' (रू. भे.)

२ देखो 'दोगळो' (मह , रू भे)

३ देखो 'वेगडो' (मह , रू भे)

उ०—उहि महाभर कध, भार भलपण सध्राहि। वेगड वांमी वहण प्रिथी ऽाभी पतिसाहि। —गु रू. व.

वेगडियो—१ देखो 'वेगड' (अल्पा , रू भे.)

२ देखो 'वेगडो' (अल्पा , रू भे)

वेगडी—देखो 'वेगडी' (रू भे)

वेगडो—१ देखो 'वेगड' (रू भे)

२ देखो 'दोगळो' (रू भे)

३ देखो वेगडो' (रू भे.)

उ०—वाजिया वेगडा, विवख भ'जै थडा। ऊजडै सझ्झडा, धूज प्रिथ्वी पुडा। —गु रू व

वेगतत–क्रि वि —तत्काल, शीघ्र, तुरन्त।

उ०—चीत माज 'करनला' कर विचार, 'लाखण' रै नाही पुत्र लार। सुब सुदा दीस्ट जोयो सगत्त, ताहा उठयो लाखण वेगतत।

—रामदान लाळस

वेगम–स पु —१ वह स्थान जहा पर कोई नही जा सके, अगम्य स्थान।

उ०—१ सुख सागर की सेन वताई, मेरा ग्रतर जाण रया। लगम मगन सतगुरु कर दीना, वेगम देस गया।

—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ वेगम का जाणत कौन वजारा, याही सहर की मोय वतावै। सो सत् गुरु हमारा। —स्रीहरिरामजी महाराज

२ देखो 'वेगम' (रू भे)

उ०—१ पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटं रण सरीत। सूरमा लडै चवडै समाळ, वेगमा घसै पडदै विचाळ। —वि स.

उ०—२ हरीया परणी पीव सु, खेलै अग लगाय। दूजी वेगम देख करि, ग्रावै ज्यु उठि जाय। —अनुभववाणी

उ०—३ दळ दिली कळळ दरोळ, चढि वेगमा चख-डोळ। तिण वार दळ सुरताण, खळ भळै इम खुरसाण। —सू प्र.

उ०—४ पाटवी हेळवी वेगमं पैलकै, तैं समै ग्रंलकै लीध टाळा। पागती 'दलो' नै 'रतन' परणीजता, वाट जोती रही 'गजन' वाळा।

—महाराजा जसवतसिहजी रो गीत

वेगमी—देखो वेगमी' (रू भे)

वेगर—देखो 'वेगर' (रू भे.)

वेगरज—देखो 'वेगरज' (रू भे)

वेगरजी—देखो 'वेगरजी' (रू भे)

वेगरणी–वि.—मध्यस्थ।

उ०—व्या'रा वेगरणी, विचावला, दळपट, लपचेडू ग्रर जार आयेला भोदू पटावै तथा खूब खावै-पीवै है। मोफतिया इमा मौका मौज-मजा ही किया करै है। —दसदोख

रू. भे - वैगरणी।

वेगरणो–स पु —मध्यस्थता।

वि०—मध्यस्थ।

रू भे —वैगरणो।

वेगळ—देखो 'वेगळ' (रू. भे)

वेगळि वेगलि वेगळी. वेगली, वेगळु, वेगलु, वेगळो, वेगलो—क्रि वि० —१ शीघ्र, जल्दी।

उ० —१ अकस्मात् धूंग्ररि पडिवा लागी, एतलनइ नालिनी वेगळि भागी, वस्तु चावणी कीजइ, लहरइ सिढ भीजइ, एकै आपणी वस्तु तिवारइ ग्ररद्धमूलि दीजइ ग्रनैरै लीभीए तिवारइं तै वस्तु लीजइ सार गाठडी सुग्रहीत कीजइ, ...। —व स.

उ०—२ राजद्वार कोठार, जीन-साला काढीजै जरद जरद्दी घडै लोह लोहे कूटीजै। वेनाणी वेगळा, वाढ घालै केवाणा, कूंत वाण कीजति ग्रणी तीखा खुरसाणा। —गु. रू ।.

उ०—३ वरहास दोड़ै वेगळा, किरि खड़ै नभ उर मडळा। हुइ हमस धम धम है-खुरा, वाजत धम-धम पाखरा। —गु रू व

२ दूर।

उ०—१ वेग वाळचा हय रे रे रथ सुं रथ वाघ्यौ रळी। गज थाट मोगर वहइ उवट, वैद्रवा थई वेगळी। —रुकमणी मगळ

उ०—२ व्याधि जरा रहि वेगली, ग्रलीग्र लक्षण होइ जेह। वेदि जे विधि विस्तरी, सविकौ पालइ तेह। —मा का. प्र.

उ०—३ ग्राहेडीइ मन फेरव्यु, ग्रिहेवा लागु हाथ रे। रेहि रे पापी नूंह वेगलु, नल छि माहारु नाथ रे। —नळाख्यान

उ०—४ वेलि विहूणा पत्र पंरि, हू हूइ छउ हीण। विटल रहि रे वेगलु, ग्रागलि थिका ग्रमीण। —मा का प्र.

उ०—५ किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, ग्राहार ऊपरि करइ ग्रनास्था। सरव सिंगार, मानि ग्रगार। तिणइ ग्रवला (ग्रत-रगत) फूला कीधा वेगला। चद तपइ पान, थया विखवान।

—रा. सा. स.

वेगवत वेगवान-वि [स वेगवान्] वेगपूर्वक चलने वाला, तेज चलने वाला।

उ०—घोडा छै सु महा वेगवत छै। रथ छै सु महा ग्रतरिख वहै छै। चदाणणि कहता रुखमणीजी के साथि ए चालिया। सु किसा दीसै छै। जिसा ग्रयोध्या का वासी वैकुंठ तै। —वेलि टी.

स. पु —१ विष्णु।

२ दैत्य जो कृष्ण पुत्र साम्ब के द्वारा मारा गया था।

३ कश्यप एव दनु का पुत्र एक दानव।

४ एक नाग।

रू भे —वेगवती।

वेगवाहिनी-स. स्त्री [स] १ गगा नदी का एक नाम। (२) कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत) (३) एक प्राचीन नदी (पुराण)

वेगसर-स पु —१ तेज गति से चलने वाला घोडा।

२ देखो वेगसर' (रू भे)

वेगानगी—देखो 'वेगानगी' (रू भे)

वेगानौ—देखो 'वेगानौ' (रू. भे.)

वेगागळ वेगागळौ—१ घोडे के गले में बाधने का चमडे या सूत का तस्मा या रस्सा।

२ घोडा, ग्रश्व। (ह ना. मा)

उ०—ऊपडि फौज घटा ग्राडवर, रज धूळ हि छायौ रातवर। चडिया घडै घडाला चचळ, वाजै नास वहै वेगागळ। —गु रू. व

वि.—तेज गति से चलने वाला, ग्रति चचल।

उ०—सिणगारै सरब हेम मे साकति, गळै गज्जगाह वध ए। वेगागळ वाजराज वाहण या, दीपत सरल कध ए। —गु. रू. व

क्रि वि —तेज गति से, तीव्रगति से।

उ०—१ कसस्सै कठळा, ग्राकुसा वीजळा, चमक्कै चप्पळा, वैरका ववळा। ढंच ढालव्वळा, ग्रसि ऊतामळा, वहै वेगागळा, वाज वाहै नळा। —गु. रू. व

उ०—२ ग्रनूप रूप चित्राम ग्रग, वेगागळ थळ नाचै विडग। ग्रद-भूत पराक्रम गुण ग्रछेह, ऊचास कना सपतास ग्रेह। —गु रू. ब.

रू भे —वेगागळ, वेगाळ, वेगाळौ, वैगागळ, वंगागळ, वंगागळौ, वैगाळ, वंगाळौ।

वेगार—देखो 'वेगार' (रू. भे.)

उ०—ग्राज री सिंझ्या तौ घरवाळा नै ग्रौ काम सभळाय देणौ हौ। थारै गिया पछै तौ सेवट ग्रा लोगा नै ई ग्रै सगळा काम करणा है। महाराणी व्हैतां थका ई इत्ता दिन घरवाळा री धणी ई वेगार काढी। —फुलवाडी

वेगारी—देखो 'वेगारी' (रू भे)

वेगाळ वेगाळौ-वि०—१ तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी, शीघ्र-गामी।

उ०—१ कळ चाळ नित्र छाग्राळ कदळ भीच काळ भुजाळ, सुडाळ दरगह साबता वेगाळ खंग वडाळ। किरमाळ वळ रिणताळ केता जीपणा जमजाळ। —पीर ग्रासियौ

उ०—२ चमराळा व्है चूर, वेगाळा तेजी वडा। पडता घर भेळा पडै, सर गोळा नर सूर। —र. वचनिका

२ जल्दबाज, उतावला।

३ तेज वाला, तेजस्वी।

क्रि० वि०—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—ग्रायै यह उजवाळ, कवरा गुर मिसलत करै। वीरम दिस वेगाळ, जद लिखिया कागळ 'जगै'। —गो रू.

२ देखो 'वेगागळ' (रू. भे)

उ०—१ वहै वेगाळ उरा उण वार, घडा चढ घिक्क सरा घूंकार। सभ्र रु डमाळ सिभू सिरताज, विचै दळ सुर हिलोहळ वाज।

—गो. रू.

उ०—२ धडहडै सात-पुडि धुजि धम-हम धरा, डब ग्रोधूळ ग्रंबर चडै डबरा। वावता नास वेगाळ तेजी वहै, गाहटा गोम पाहाड पाए गहै। —गु. रू व.

उ०—३ गाळे माण कायरा सोकिया तीर वाण गोळा, गजा कध ढाळे पाण तोकिया तेगाळ। भाण रथां रोकिया गैणाग येल रीधा भाळे, 'गीधा' वाळे सत्रा धांण झोकिया वेगाळ।
—जालमसिंह चापावत री गीत

रू भे.—वेंगाळ, वेंगाळो।

वेगावेगि—क्रि० वि०—शीघ्र, जल्दी।

उ०—चीतवियउ चहुवाणि, जउहर की माडउ जुगति। हुव हुइ-स्या हरपुर दिसा, वेगावेगि विहाणि। —अ. वचनिका

वेगिनी—स. स्त्री. [स] एक नदी का नाम।

वेगुना, वेगुनाह—देखो 'वेगुनाह, (रू भे)

वेगेरौ—देखो 'वेगौ' (रू. भे.)

उ०—पथी एक सदेसडो, लग ढोलै पहुचाइ। जोवन जावै प्राहुंणौ, वेगेरौ घर आइ। —ढो मा

वेगो—वि० [स्त्री. वेगी] १ शीघ्र,जल्दी, अविलम्ब।

उ०—१ काळा काळा केस भवर, म्हारी आटी कामणगारी रे। आधी रा अमला मैं, म्हारी सेज अलूंणी रे, वेगा वावडज्यो। हा रे सासू रा जाया, वेगा वावडज्यो। —फुलवाडी

उ०—२ खिसकण वाळा मिनखा रा पग हा जठै ई चिपग्या। मासी अणूती जोर सू हसी। बोली—थानै म्हारी बोली विचै ई कुत्तां री बोली वेगी समझ मैं आवै। आवै जकी ई चोखी।
—फुलवाडी

उ०—३ वेगा दूत दिलीपतवाळा, आवै गूजर खड उताळा। चाहै दुरग सकू तजि ताळा, समपै धन मणि मुकत विसाळा। —रा. रू.

उ०—४ ताहरा राणै जान करि परणीजण नूं चालियो। ताहरा बगडावता नू आदमी मेल्हिया जु राणैजी परणीजण नूं चढिया छै। थे वेगा आवो। —देवजी बगडावत री बात

रू. भे—वेगौ, वेगउ, वेगेरौ, वेघ, वेघौ, वेंगो।

वेघ, वेघौ—१ देखो 'वेग' (रू. भे.)

२ देखो 'वेगौ' (रू भे.)

उ०—१ पोलि उघाडी गढ तणी, सरल सभावै रांणी रे। मुकया तेडण मत्रवी, वेघ पधारौ सुलतानो रे। —प. च. चौ.

उ०—२ महिर करी हिव मोहि, बीदा करी वेघौ घणी जी। आलिम साथै होय, पोलि लगै पहुँचावियौ जी। —प. च चौ

उ०—३ तै ऊपरि ए पदमणी, आइ आपा पासी। स्यु करिवो सूधी मतौ, वेघौ कहौ विमासी। —प च. चौ.

उ०—४ बादसाह हूत कह्यौ छोड जे इणा नै वेघा, एं न छडै हिंदू धरम विनादी आफेक। कह्यौ साह 'भाण' नंद पातवा छुडावौ किसा? एक एक प्रती चहा माथौ एक एक।
—सक्तावत गोकळदास (सावर) री गीत

वेड—१ देखो 'वीहड' (रू भे.)

उ०—त्या माहै ऊगौ मुदौ बोल्यौ, राज्याजी, राम राम, राज्याजी समाध्या छौ। राजा हस्यौ। तरै ऊगै कह्यो, महाराज, जाट गधेडा की तरह छै, वेड का रहिण वाळा छा, बोलण की कू ही जाणा छा नही, माफ करिज्यो। —कहवाट सरवहियै की बात

२ देखो 'वेड' (रू भे)

३ देखो वैंडो' (मह, रू भे)

४ देखो वेंड' (रू भे)

५ देखो वेड' (रू भे)

उ०—बाग वणाया वेड मैं, काटा आक कटाय। सीसम आंबा तर सघण लाखा दिया लगाय। —चिमनदान रतनू

६ देखो 'वेढ' (रू भे)

उ०—१ वेड परायण इसी वचाइ, मही सरायण सुणज्यो मूठ। निज नारायण गुरु निवाजै, फजर गइ तारायण फूठ।
—बाकीदास बीठू

उ०—२ बाट प्रसाद वळोवळ बागा, असना भागी लोभ तणी। चेला गुरा वेड री चरचा, साधा सौ सौ कोस सुणी।
—बाकीदास बीठू

वेडकी—देखो 'वेडकी' (रू भे.)

२ देखो 'वेड' (अल्पा, रू. भे.)

वेडणी —देखो 'वेडणी'।

वेडणौ, वेडबौ—१ देखो वेडणौ, वेडबौ' (रू भे)

उ०—बळदेव महाबळ तासु भुजाबळि, पिडि पहरतै नवी परि। विजडा मुहे वेडतै बळभद्र, सिरा पुज कीधा समरि। —वेलि

२ देखो वेढणौ, वेढबौ' (रू भे)

वेडणहार, हारौ (हारी) वेडणियौ—वि०।
वेडिओडो वेडियोडो, वेडघोडो—भू० का० कृ०।
वेडीजणौ, वेडीजबौ—कर्म वा०।

वेडलौ—१ देखो 'वेडौ' (अल्पा, रू. भे.)
२ देखो 'वेढलौ' (रू भे)

वेडाफोड—देखो 'वेडाफोड' (रू भे)

वेडियोडो—१ देखो 'वेडियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'वेढियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वेडियोडी)

वेडी—१ देखो 'वेडौ' (रू. भे)

२ देखो 'वेंडो' (वि स्त्री)

वेड़्कौ, वेड़्खौ—देखो 'वेड़्खौ' (रू. भे)

वेडो—देखो 'वेडो' (रू भे)

उ०—वैकुंठ वेडो विसन ढोयो, सचियार साल्हिया लेविसी। पारगिराय पुहुचाय फाभराय, वास निहचळ देविसी। —कदोजी नैण

वेच—देखो 'वें'ज' (रू भे.)

वेचको—देखो 'वें'ज' (अल्पा, रू भे)

वेचणौ, वेचवौ—क्रि. स—१ खर्च करना, व्यय करना।

उ०—विद्या लेवानु बीजु भेद, सांभलु प्रांणी! माणसिउ खेद। सुत भणाव्यानु जु खप होय, तु धन वेचीजइ अति जोइ। —नळदवदती रास

२ देखो 'वेचणौ, वेचवौ' (रू भे)

उ०—१ पांच तत महा तत रहै पास, सभारै सना प्रभु सास सास। गुण तीन दास पतिसाह गाढ, वेचिया प्रभु थारा विकाड। —पी. ग्र

उ०—२ वेचै मत तू वेगडी, चित नाणा री चाह। वळै न मिळसी वेगडी, नाणा दीधा नाह। —बा. दा

उ०—३ आदू अखइ मोहती दूहो कहै, राजा वेचू नहीं तो ओखौ खाण मिळ। पण घोडो उराको छै। रवियाण चढ, ऐराक बीज वड बीज प्रात गाज, सापुरस वेण, पैहिली तो लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहल हमीर री वात

उ०—४ मन मे धरता मरट घरट जिम भूखै घूमै, मेलै घर गया मक भटकि मूआ पर भूमे। बेटा नै मा वाप वेचि दै जीमण वेइ रूलता रिगता राक करै वेललाटा केई। —ध व ग्र

३ देखो 'वैचणौ, वेचवौ' (रू भे)

उ०—१ अथवा सालि दालि घ्रत पक्वान्नादिक अथवा देवद्रव्य वस्त्रादिक जइ घणइ मूलिइ आपणइ घरि वावरइ। अनेराइ स्रावक हूइ दिइ। अथ महात्मा दरसनी थिकु देवद्रव्य वधारी प्रासादादिकं वेचइ। —षष्टीशतक

उ०—२ गुरु एकइ जि अनइ स्रावक एकइ जि छइ। पुण चैत्य देहरा जूआ जूआ अनेरा अनेरा ना कराव्या छइ। तिहा जं द्रव्य छइ तै परस्परिइन वेचइ। पेला देहरा नु उलिइ देहरइ, ओल्या देहरानू पेलइ देहरइ न वेचइ। मनि भेद आणइ। —षष्टीशतक

उ०—३ ···· ··तै राजा जं राज्य पालइ, तै अमात्य जे न्याय दिखाडइ, तै कापड जे पखालिउ सूकइ, तै कारधा [जं] बुद्धि सीझइ तै तुरगम जे वेगि पूजइ, तै द्रव्य जं सत्पात्रि वेचीइ। —व स

उ०—४ ·· ·· उन्मारगि न चालइ, गुरु उपदेस झालइ, घरमतत्व न हालइ, नवै क्षेत्रे वेचइ धन, जिसिउ बावनु चदन इस्या सीतल मन, इस्या कहीए स्वजन,·· ···· ·। —व स

वेचणहार, हारौ (हारी), वेचणियौ—वि०।

वेचिओड़ौ, वेचियोड़ौ, वेच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचीजणौ, वेचीजवौ—कर्म वा०।

वेचत्र—देखो 'विचित्र' (रू भे.)

वेचरा, वेचराज, वेचराजी, वेचराय—देखो 'वहुचराय' (रू. भे.)

उ०—वेचराजी रा चरणां कूकडा हैं ज्या नू मिन्नी न मारै। —बा दा. ख्यात

वेचांण—देखो 'वेचाण' (रू भे.)

वेचाक, वेचाख—देखो 'वेचाक' (रू भे)

उ०—रईयत सरव गई। धरती हेमा आगै वस सगै नही। कितराहेक वरस यूही धोंकळ रह्यो। हिवै रावळ मालोजी कुटेवा पडिया। यू करता घट घणौ वेचाक हुवौ। —नैणसी

वेचाडणौ, वेचाडवौ—देखो 'वेचाणौ, वेचावौ' (रू. भे.)

वेचाडणहार, हारौ (हारी), वेचाडणियौ—वि०।

वेचाडिओड़ौ, वेचाडियोड़ौ, वेचाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचाडीजणौ, वेचाडीजवौ—कर्म वा०।

वेचाडियोड़ौ—देखो 'वेचायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री वेचाडियोड़ी)

वेचाणौ, वेचावौ—देखो 'वेचाणौ, वेचावौ, (रू. भे)

वेचाणहार, हारौ (हारी), वेचाणियौ—वि०।

वेचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचाईजणौ, वेचाईजवौ—कर्म वा०।

वेचायोड़ौ—देखो 'वेचायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वेचायोड़ी)

वेचारौ—देखो वेचारौ' (रू भे)

वेचाळ, वेचाल—वि०—जिसका चाल चलन ठीक नही हो, बदचलन।

वेचावणौ, वेचाववौ—देखो 'वेचाणौ, वेचावौ' (रू. भे)

उ०—तरथ तेहे विविध चैत्यै ज जे जिनद्रव्य ऊपजइ तै जिनद्रव्य देवद्रव्य परस्परइ एक चैत्यनउ द्रव्य बीजइ चैत्यि जे सुगुरु स्रावक न वेचावइ। षष्टीशतक

वेचावणहार, हारौ (हारी), वेचावणियौ—वि०।

वेचाविओड़ौ, वेचावियोड़ौ, वेचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचावीजणौ, वेचावीजवौ—कर्म वा०।

वेचावियोड़ौ—देखो 'वेचायोड़ौ (रू. भे)

(स्त्री वेचावियोड़ी)

वेचियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ।

२ देखो 'वेंचियोड़ौ' (रू भे)

३ देखो 'वेचियोडी (रू भे)
(स्त्री वेचियोडी)

वेचिराग—देखो 'वेचिराग' (रू भे)

वेचेत, वेचेतै, वेचैतै—देखो 'वेचेत' (रू भे.)

वेचैन—देखो 'वेचैन' (रू भे.)

वेचैनी—देखो 'वेचैनी' (रू भे.)

वेचौ–स पु —गाय भैस का दूध जमाया नही जाकर देवताश्रो को अर्पण करने की क्रिया।

वि० वि०—गाय व्याहने के बाद कुछ दिनो तक उस गाय का दूध जमाने योग्य नही होता है। सात आठ दिनो के बाद जब दूध जमाने योग्य हो जाता है तब गाय का सूर्य पूजा जाता है और उस दिन गाय का सम्पूर्ण दूध पित्तरो को चढा कर बाल-बच्चो को पिला दिया जाता है।

वेच्छाळ, वेच्छाल–स पु —एक प्रकार का कद विशेष।
उ०— सिगमडी सीदूरीया, तिहा तथिरिण पालि। सहसमुखी सजीवनी, वच्छनाग वेच्छाल। —मा का प्र.

वेछराज, वेछराय—देखो 'बहुचराय' (रू भे.)

वेछाड—देखो वैछाड' (रू भे)

उ०—१ सहस तेर' असवार, सीह सादूळ समोसर। वीस गयद्र वेछाड, निहस पावस गिर नीभर। —सू प्र.

उ०—२ वैसारै चख बोळ, छकै आया वेछाडा। चढ सयद फिर चढै प्रचड कठीर पहाडा। —सू प्र

उ०—३ आका रीठ कुरीठ, वयड छोडै वेछाडा। इसा दीठ अवनाड, पीठ लै हलै पहाडा। —सू. प्र.

वे'ज, वे'जको—देखो 'बे'ज' (रू. भे)

वेजड—देखो 'वेजड' (रू भे)

वेजवान—देखो 'वेजवान (रू भे)

वेजवाल–वि. [फा. वे+अ जवाल=पतन] जिसका पतन न हो, नष्ट नही होने वाला।

उ०—ईसवर निरकुस है, चाहै स करै। खुदा इरादो करै अेक चीज को पैदा करै असवाव उसको। खुदा ताला री पातसाही वेजवाल है। अैतजादुल मुलक। —वा. दा. ख्यात

वेजान—देखो 'वेजान' (रू. भे.)

वेजा–स पु.—१ घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें घोडे के अगले पैर या चारो पैर पीडित रहते हो। (शा. हो)
२ देखो 'वेजा' (रू. भे.)

वेजागर—देखो 'वेजारा'।

वेजाताणा–स. पु —ताना बाना।

उ०—कीडी कुजर आद दै, सब जीन जहाणा, तु निराकार आकार मझ सरवग समाणा। जेथी तेथी पेखियै, तु वेजाताणा, तुही एक तू, हू ऐता जाणा। —केसोदास गाडण

वेजापता, वेजाब्ता—देखो 'वेजाब्ता' (रू भे)

वेजारा—देखो 'वेजारा' (रू भे)

वेजारी–वि०—१ चतुर, होशियार।
२ देखो 'वेजारी' (रू भे)

उ०—आाळा गूथण री त्यामची ऐडी कै नामी म नामी वेजारा नै ई गात करै। हाथ भर लाबी अर तीखी आळी। फूठरी अर झीणी गूथ्योडी। माय दोय खण। —फुलवाडी

वेजु, वेजू—देखो 'विज्जु' (रू भे)

वेजोड़—देखो 'वेजोड' (रू भे)

वेजौ—देखो 'वेजौ' (रू. भे)

वेज्ज—देखो 'वैद्य' (रू भे.)

वेज्यास—देखो 'वेज्यास' (रू. भे)

उ०—दिसापाळ भूपाळ त्या छूट द्रढ्ढ, गिरा ओट सेवा तणी कोट गढ्ढ। गजै मेघ ज्यौ वेग नीसाण गाजै, भया आस वेज्यास मैवास भाजै। —रा. रू

वेझ, वे'झ, वेझको—देखो 'वे'ज' (रू भे)

उ०—इसै मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतो, सो महाडोळ री पाखती आई लागो। साम्हो जोवतो वहै। महाडोळ री खोळी रै वेझ कर भरमल देखै छै। कोस एक पुहचाय सारो जाब्तो दे पाछो घिरियो। सो घिर घिर पाछो देखै। —कुवरसी साखलारी वारता

वेझड—देखो 'वेजड' (रू भे]

वेझु—देखो 'वेझौ' (रू भे)

उ०—१ सक्ति अपूरव सहज ठहराणी, दुगति दूर हराणी। वाणी तेहिज वेझु वेधइ, कीरति तास वखाणी रे। —वि कु.
उ०—२ तरस्या आई गज तुरी परिहरि का प्रामाद। वेझु विण वेधिउ रहइ, उत्तर एक सवाद। —मा कां. प्र

वेट—१ देखो 'वेठ' (रू भे)
२ देखो वेट' (रू भे)

वेटीजणौ, वेटीजवौ–क्रि स —बकरी का गर्भ धारण करना।

वेटीजियोडी–स स्त्री —गर्भ धारण की हुई बकरी।

वेटेरिनरी अस्पताल, वेटेरिनरी सफाखानौ–स पु —पशुग्रो का चिकित्सालय।

वेठ–स. स्त्री —१ लपेटने की क्रिया।

२ देखो 'वेठ' (रू. भे)

उ०—१ जाएक डोकर खोलई, जिम वाघ वियायो, वाढी दीधो वेठ मा, घरतार गमायो। क्या तेरा आगएा किया, हमका घन आएँ, आध दिया हम वीरमा, सब घरती माए। —वी मा.

उ०—२ वसती री हुवै वाभ वेठ नह काढणी, कामेती उराह मूंढ मे हुवै घणी। वाकी किण री वीह खुसी व्है खेलणा, एता दं किरतार फेर नह बोलणा। —अग्यात

३ देखो 'वेट' (रू भे)

वेठऊडो-वि०—वेगार का कार्य करने वाला।

उ०—वेगार वेठऊडा हासल, पान चराई न देवै। चवरी माफ चहूँ देस मैं, जको विस्णोई नही देवै। —साहबरामजी

वेठणौ, वेठवौ-क्रि० स०—१ लपेटना।

२ घेरा डालना, घेरना।

३ निभाना।

उ०—१ काछेल वेघ वढिया कलह, ग्रहण पाल पूरी गरत। वेठिया हुता 'धूडे' विवध, आया जे 'पावू' अरथ। —पा. प्र.

उ०—२ साझ मडीजै साकुरा, कमरा कसवाई, आफूगाळं ऊन्दा अगा अडपाई। बाथोटै सह वेलिया, मनवार कराई, विध विध याने वेठिया, म्है खूद खिमाई। —वी. मा.

४ सहन करना, सहना।

उ०—सोघता गिली अगिआरि, आहेडीइ काढी। धिरि राखएा मन तेणि कीधूं, वेदन वेठी गाढी। —नळाख्यान

५ वेगार निकालना, वेगार का कार्य करना।

६ पालन-पोपएा करना।

उ०—१ वीरमदं री छोटो भाई भीमसीध किसडो हेक सिरदार। वेंडा घोडा रजपुता री वेठणहार। रजपुतवट रूपगा री रिझवार। दातार जूझार। भाइजी रे सामी आवएा री तयारी कीनी। —पना

उ०—२ वेठं वेटा जेम वीदगा, करे मीढ भड अवर कसो। चारण वरएा तएो राव चापा, जग सर तारण तरएा जसो। —मेगराज आढो

वेठणहार, हारौ (हारी), वेठणियौ—वि०।

वेठिओडो, वेठियोडो, वेठयोडो —भू० का० कृ०।

वेठीजणौ, वेठीजवौ—कर्म वा०।

वेठन-स स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ लपेटने का वस्त्र, लपेटन।

वेठियोडो-भू० का० कृ०—१ लपेटा हुआ २ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ ३ निभाया हुआ. ४ वेगार निकाला हुआ, वेगार का कार्य किया हुआ. ५ पालन-पोपएा किया हुआ. ६ सहा हुआ, सहन किया हुआ।

(स्त्री. वेठियोडी)

वेठियो—देखो 'वेठियौ' (रू भे.)

वेड-स पु.—१ वन, जगल।

उ०—सगता री लीनी सुरह, बीच धरती वेड। कर आयो बूढं कह्यो, खीची ठाकुर खेड। —पा प्र.

२ कटीले पदार्थों (झाडियो) का बना हुआ मकान का अहाता, घेरा।

उ०—सरसा दळ सायर स क्रमतं, मळवा छळं माडियौ मेड। माझी मेर गयो दळ मुरडे, वड रहियौ काटा री वेड। —दूदो आसियो

३ सीमा आखिरी छोर।

४ एक प्रकार का चन्दन विशेप।

५ देखो 'वेढ' (रू भे)

६ देखो 'वैड' (रू भे)

रू भे.—वेड।

वें'ड, वें'डकी—देखो 'वैड' (रू भे)

वेडण-वि०—१ सहार करने वाला, नाश करने वाला।

२ तोडने वाला, विच्छेदन करने वाला, काटने वाला।

उ०—हूतो जाएा सगत, गढा जड मूळ उखेलएा। हूतो जाएा सगत वडा असुरा सिर वेडण। —पा प्र.

रू भे—वेढएा।

वेडणौ, वेडवौ—१ देखो 'वेडएाौ, वेडवौ' (रू भे.)

२ देखो 'वेढणौ, वेढवौ' (रू भे)

वेडणहार, हारौ (हारी), वेडणियौ—वि०।

वेडिओडो वेडियोडो, वेडयोडो—भू० का० कृ०।

वेडीजणौ, वेडीजवौ—कर्म वा०।

वेडर-वि०—निशक, निर्भय।

उ०—गिए छप्पय चा वरएा लघु, त्यां मज्झै दळ टाळ। आधा कीधा ऊवरै, वेडर नाम वताळ। —र. ज. प्र.

वेडली—देखो 'वेडी' (अल्पा, रू. भे.)

वेडलो—देखो 'वेढलो' (रू. भे.)

वेडाणी-वि०—१ दुप्ट, नोच।

२ देखो 'विडाणी' (पु.)

३ देखो 'वेदाणी' (रू. भे.)

वेडाक—१ देखो 'वेंडाक' (रू भे)

२ देखो 'वेडो' (मह, रू. भे.)

उ०—१ उ तोलै ऐराक, वोळण खळ उवावरी। वीरमदे वेडाक, मेळ वचन नह मानिया। —गो रू

उ०—२ चोडै खळ धूहड लाखा चाक, वीरोळै लाख खळा वेडाक। खत्री गुर वीरम धूणै खाग, वीछूटो जाणय साकळ वाग। —गो. रू.

वेडागर, वेडागार—देखो 'वेढीगारो' (मह, रू भे)

वेडागारी—देखो 'वेढीगारो' (पु.) (रू. भे)

वेडागारो—देखो 'वेढीगारो' (रू भे)

वेडागारौ—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे)

वेडाय-स पु—१ सूवर, शूकर।

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

वेडारोटी—देखो 'वेढारोटी' (रू भे.)

वेडाळ—देखो 'वेडाळ' (रू भे)

वेडावतो-वि०—१ जबरदस्त, जोरदार।

२ वीर, बहादुर।

वेडाहळ-स पु—मुसलमान, यवन।

वेडि, वेडिइ-स. पु—१ बाग, बगीचा।

२ वन, जगल।

उ०—१ नयण ला म्रग नी उपमा किसी, हुईइ हारिउ वेडि जई वसी। चरण चारिहिं हस हरावती, वचनि जीणइ जीती भारती। —सालिसूरि

उ०—२ सूयारडउ हूउ दाघ देवा, गिउ वेगि वेडिइ पुण कास्ट लेवा। द्रस्टिइ न दीसइ दिसि धलि रोली, तु आविली भीमिइ भडिम्र मूली। —सालिसूरि

वि०—१ जगल का, जगली।

उ०—जिहा सिवा तणा फेरकार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घुरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट। लाघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, वेडि विलाउ घुरकइ। —सभा

२ देखो 'वेडो' (रू भे)

वेडियोडो—१ देखो 'वेडियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेडियोडी)

वेडियो-स पु—जट (बकरी या ऊट के बाल) को कातने के निमित्त उसकी बनाई हुई गेंडुरी नुमा पूनी।

वेडी-स स्त्री—बकरी या ऊट के बालों को साफ कर कातने के निमित्त वृताकार बनाया गई गेंडुरीनुमा पूनी।

वि०—१ मस्त, मत्त।

२ कलहप्रिय, झगडालू।

३ वीर, बहादुर।

४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—'केहरि' वेडो (वं) घणू, मज्जीठी मुहराइ। 'करन' 'कमो' एकै मतै, वे ऊभा पडगाहि। —गू. रू व.

५ देखो 'वेडि' (रू भे.)

उ०—वेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइ। रीछ सांचरइ, वोरू-तणा यूथ विस्तरइ। वेडी रा मांह भाढूकइ, ठामि ठामि वन रा भइसा ढूकइ। —सभा

वेडीमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू भे.)

उ०—ऊगती मोसरा दहायक प्रभावा, सीत वरमिया क गात रा सभ। मांन रा वाळिया वचन वेडीमणा, गळा गाळिया गरव गज-सभ। —राजुरांम बारहट

वेडीवाहो—देखो 'वेडीवाहो' (रू. भे)

वेडूर-स. पु [स. वैडूर्य] धूमिल रग का एक प्रकार का रत्न या बहु-मूल्य पत्थर जिसे लहसुनिया भी कहते हैं।

वेडो-सं पु—खड्डा, गड्ढा।

उ०—१ सु भी रोज नवी-नवी जायगा बरछी खोहै सु भ्रागणा में वेडा-वेडा हुय रह्या। ताहरा राणी एक दिन सात तवा लोह रा, सवा-सवा मण रौ एक-एक तवो, कराय भर जठै सेतरांम भाय बैसतो तठै गचमे तवा गडाया। ऊपर विछावणा विछाया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा सेतराम कह्यो—महाराज! हू बैठतो तठै बरछी गडती, सु दीसै छै आज कोई म्हारी मसकरी कीवी छ तद राजा विछावण परहा कराय देखै तो कासूं? सारै ही वेडा-वेडा छै। —नैणसी

वि.—मस्त, मत्त।

वेडोळ—देखो 'वेडोळ' (रू. भे.)

वेढग—देखो 'वेढग' (रू भे.)

वेढगापण, वेढगापणौ—देखो 'वेढगापणौ' (रू. भे.)

वेढंगो—देखो 'वेढगो' (रू भे)

वेढ-स स्त्री [स वेध] १ युद्ध, सग्राम, लडाई।

उ०—१ वेढ वडाई राजिया, सूरो दळ सिणगार। मेल धमका सिर सहै, भ्रावै जब इकतार। —अनुभववाणी

उ०—२ वळ जोधाण तणी दिस वळिया, भू लूटण टळिया सुज मिळिया। नाहरखांन नांदिया माहै, वेढ कमळ लीधौ खग वाहै। —रा. रू

उ०—३ उर थक्का वळवार विढण क्यूं वीसरं, लग्गा लोह लकीर नमता नीसरै। वाव फरूकं वेढ वलै नह वापरं, पाणा चढिया किलम जिकै 'परताप' रे। —किसोरदान बारहठ

उ०—४ रावळ भोजदे विजैराव लाजा री बेटौ लूद्रवै धणी हुवौ। निपट वडौ रजपूत हूवौ। कहै छै बरसा १५ तथा १६ री ऊमर माहे पचास वेढ जीती हुती। —नैणसी

२ घर, गृह, धाम।

३ युद्धस्थल, रणभूमि।

उ०—वगसर भग्गा वेढ तज, सुण बग्गा नीसाण। ताप उनग्गा तेग री, अर डग्गा आरांण। —किसोरदान बारहठ

४ योद्धा, वीर। (डिं नां मा)

५ एक प्रकार का आभूषण विशेष। (व. स.)

उ०—वीटी वेढ गाठोडा, वलि दीधा घणा घोडा। स्रावक स्राविका आवइ, मोती थालं वधावइ। —ऐ जै का स.

६ देखो 'वेड' (रू भे)

रू. भे —वीढ, वेढ, वेढि, वेढी, वैढ, वेड, वेढण, वेढि, वेढी, वंड, वंढ।

अल्पा,—वेढडी।

वेढक–स. पु —युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—१ मिरचं 'मुहकम' माग्गियौ, कर छळ मिळ अप्रकास। वेढक डेरै वज्जियं, पडिया सुहड पचास। —रा रू

उ०—२ सूरा 'अहूवाळ' सुजड हथ 'साडा', 'जैता' जगमल जैत्र'ई। काघिल कळिमूळ सदा कळि चालण वैरा वेढक वरदाई। —गु. रू व.

उ०—३ वड रावत जिकं वडा ग्रह वेढक, झडपे अरियण खडग झड। आया जूहार कुअर गुर आगळि, भड कमधज लख अवर-भड। —गु रू व.

वि —वीर, वहादुर।

उ०—जुध दुरग दत चढ़िया जिता, खित पाडं मुगळा सळा। वळ साह डोहि आयौ दुझल वेढक रगिया वीजळा। —सू. प्र

२ निशक, निर्भय।

३ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—ऊगता भाण 'अगजीत' रा, वेढक भड अरिघड वना। सांमुहा आया भारथ सझण, एक उतन रा ऊपना। —सू. प्र

रू. भे.—वेढक, वंढक।

अल्पा,—वेढकौ, वेढकौ।

वेढकौ—देखो 'वेढक' (अल्पा, रू भे.)

उ०—'कूपा' 'राम' सकज्ज, जैतधारी 'जैतावत'। वाघ फता वेढकां वीरवीराध 'विजावत'। —रा. रू

वेढगरौ, वेढगारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू भे.)

उ०—'वखतेस' 'खळा' सिर वेढगरौ, हर काकण सौ 'अमरेस' हरौ। सग 'राम' 'रुवे' 'जेसिह' सही, गज रूप सझै रिम टेक ग्रही। —रा. रू.

वेढडी—देखो 'वेढ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—वडा पतिसाह करि किलग सा वेढडी, महमहण हमै पिरिणी-जिनै मेघडी। आजि रै बाधियौ कडी तरगस अभिगि, प्रिथी रै धिणी ससमाथ चडियौ पविगि। —पी. ग्र

वेढण—१ देखो 'वेडण' (रू. भे)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे)

वेढणबाई–स. स्त्री —[देश.] व्यर्थ की बातें करने वाली स्त्री।

वेढणौ, वेढवौ—क्रि स १—युद्ध करना, सग्राम करना।

२ सहार करना, नाश करना।

३ काटना, विच्छेदन करना।

४ युद्ध मे मरना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—तितरइ नाथू डोड डूगर वागडी कहइ छइ—इसउ नही हो ठाकुरे! इसउ कीजइ–गळइ सात सइ साळिग्राम तुळसी की माळा घातिजइ, अचळेसर का आवास थइ लोहडउ करता करता गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ, जितरा जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा अश्वमेघ जग्याग का फळ लीजइ। इणि विधि जीवण वेढिजइ तउ सूरज मडळ भेदिजइ। —अ वचनिका

वेढणहार, हारौ (हारी), वेढणियौ—वि०।

वेढिओडौ, वेढियोडौ, वेढयोडौ—भू० का० कृ०।

वेढीजणौ वेढीजवौ—कर्म वा०।

वेढणौ वेढवौ, वीडणौ, वीडवौ, वेडणौ, वेडवौ, वेडणौ, वेडवौ, वंडणौ, वंडवौ, वंढणौ, वंढवौ—रू भे.।

वेढव—देखो 'वेढव' (रू भे.)

वेढमण—देखो 'वेढीमणौ' (मह, रू भे)

वेढमणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू भे)

वेढमल वेढमल्ल–वि०—युद्ध का उस्ताद, युद्ध मे निपुण एव दक्ष योद्धा, वीर।

रू भे —वेढमल, वेढमल्ल, वेढीमल वेढीमल्ल, वेढीमल, वेढीमल्ल, वैढमल, वैढमल्ल, वैढीमल, वैढीमल्ल।

वेढमी–स स्त्री —एक प्रकार की रोटी विशेष।

उ०— • • खाड माडा, पूरण माडा, कुडकरा माडा, पत्र-वेटिया माडा, आकासिआ माडा, आछा माडा, खाटउ चूरिमउ,

गुलिउ चूरिमउ, प्रधान पनोली, रोटी बाटी, ठोठि अगार करि वेढमी, मरूयाडिनी पचधार लपनसी, सुदलित सुललित वरनारि परीमी। —व स

रू. भे —वेढिमी, वंढमी।

वेढलौ—स पु —१ स्त्रियो के कान के ऊपरी भाग में पहनने का आभूषण विशेष।

२ कुत्तो के कानो मे पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष।

उ०—जिका री मूडहथ मोहनाळ हाथ भर नस, वड रै पान जिसा कान, ताजणासेद पूछ नाहरसा पजा बाघ सी आख, पातळी लीक जाडे आठ। इण भात रा कुत्ता। बनाती पटा, रूपै री भवरकडी रेसमी डोर, काना मे रूपै सोनै रा वेढला, गलै मे निजर रा ताइत। —रा सा स

रू भे —वेडलो वंढलो।

वेढमाणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू भे.)

उ०—विढण नमी नेठाह हथवाहा वेढीमणा, रीत सराह दोय राह रौधा। वडा खळ आदरा अवक वेढामणा, करै जुध पाधरा सणक कीधा। —सेरसिंह री गीत

वेढागर, वेढागारी, वेढागारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे)

वेढारोटी—स. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

वि वि —गेहू के कम आटे के लौंदे को रोटी की तरह वेल कर उस पर गीला-गीला नमकीन पदार्थ फैला दिया जाता है और किनारों को थोडा-थोडा उलट कर चौकोर बना दिया जाता है। फिर थोडी देर सुखा कर तेल अथवा घी मे तल दी जाती है।

रू भे —वेडारोटी, वेढारोटी, भेडारोटी, भेढारोटी, वेडारोटी।

वेढिगर, वेढिगरौ—वि०—१ वीर बहादूर।

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—वे तरफ भड वेढिगरा, जूटा हगामी जग रा। धस मसक धरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस। —र रू

३ देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे)

वेढि—देखो 'वेढ' (रू. भे) (ह ना भा)

उ०—१ हीदू तुरक पडइ पोसाता, नित नित वेढि ऊतारइ। नितु ऊठवइ एकमना राउत रोसि चडया रणि मारइ। —का दे. प्र

उ०—२ गुरुदेव सुमति समापि गुण, भुम्रपतिश्र जेम 'रतन्न' भण। पित जासु 'महेस' नरेस पर, गढ वेढि लिश्रो जिणि देवगिर। —र वचनिका

उ०—३ जई प्रधानि खान वीनविया, हीदू वेढि करेसइ। खान भणइ सहूइ सज थाउ, एछवा दाउ देसइ। —का. दे. प्र

वेढिमी—देखो 'वेढमी' (रू भे)

उ०—हासा गहु, काठा गहु, जालिया गहु, वाजिया गहु, वांसिया गहु, एतलै प्रकारै गहु ना माडा, तै किम ? खाडमाडा, पूरणमाडा, आछा माडा, करकरा माडा, आकास माडा, एतली पडमूदीना माडा। लहचूई पोली, खूवी रोटी, वारू वडा, वेढिमी, वडा तो केहवा छइ ? —व स

वेढियोडौ—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ. २ सहार किया हुआ, नाश किया हुआ ३ काटा हुआ, विच्छेदन किया हुआ. ४ वीरगति प्राप्त।

(स्त्री वेढियोडी)

वेढी—१ देखो 'वेडि' (रू भे.)

२ देखो वेडी' (रू भे.)

३ देखो वेढ' (रू भे)

वेढीगार वेढीगारी वेढीगारौ—स पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—'वखतौ' अगळी वेढीगारा, 'जगपत' हरी तिलक जूझारा। भाटी जोधा मुहर भुजाळी, 'सकतौ' 'भगवानोत' सिधाळी। —रा रू.

वि० १ वीर, बहादुर।

उ०—१ मछराळा मू छाळ, वेहद हव वेढीगारा। सुर भगा लख वार, अधी इक छाप्रप सारा। —मा वचनिका

उ०—२ पाजा लोप सीधू जीउ अरावा व्है अवाजा पूर, मातगा गराजा घुर जठी साजा मोह। मारहटा सैनह मचायो ताजा जोस माथै, वेढीगारै र'जा भोम काजा चकावोह। —हुकमीचद खिडियौ

उ०—३ कळहळ काछिया छणकाग कडिया, नैडो घुरै नगारौ। आयो पीव काळ अणचीतो, 'रामडो' वेढीगारौ। —ठा रामसिंघ बिलाडा री गीत

२ शक्तिशाली, वलशाली।

उ०—१ साकै नही सघीर, दिन उगै पसरा दियै। वहै अरोडा वीर, वेढीगारो राठवड। —गो रू.

उ०—२ जोईया मिलै जीयार, कथन 'दळा' हूता कहै। मारै छै कायमार, वेढीगारो राठवड। —गो रू

रू. भे —वेढीगार, वेढीगारी, वैढंगारौ, वेडागर, वेडागार, वेडागारी, वेडागारौ, वेढागर, वेढागार, वेढागारी, वेढागारौ, वेढिंगर, वेढिगरौ, वंढगरौ, वंढगारौ, वंढीगार, वंढीगारी, वंढीगारौ।

वेढीमण, वेढीमणौ, वेढेसणौ—वि०—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ वरव्वीर 'खूमाण' वीराधवीर, कळीमूळ 'सादूळ' वंवै कठीर। भलो भीच कल्याणमल्लो भुजाळी,' मानावत' वेढीमणौ मच्छराळौ। —गु. रू व

उ०—२ अेकलै भुजा दहू छ्र खड घातै अवर, दस दिसा वजै जस तणौ डाकौ। 'माल' हर 'वीर' हर पछै वेढीमणं, 'सूर' हर तीसरौ कियौ साकौ। —नरहरदास बारहठ

उ०—३ चालसी जुध गयण धोम चेढीमणौ, मुगला गाळसी जोम मेढीमणौ। तरह लकाळ सी घाट तेढीमणौ, वाळसी क्या कसर दाटै वेढेमणौ। —वदरीदास खिडियौ

२ जवरदस्त।

उ०—जळचर वनचर आतगो, जळचर जळ मे जोर। वनचर अति वेढीमणौ, जो कछु लाभै कोर। —गज-उद्धार

३ शक्तिशाली, वलशाली।

उ०—विढण नमो नेठाह् हयवाह् वेढीमणा, गीत सराह दोय राह रीधा। वडा खळ आदरा अवक वेढामणा, करै जुध पाधरा सणक कीधा। —सेरसिंह री गीत

४ युद्ध करने वाला, युद्ध प्रिय, योद्धा।

उ०—वडा गहलोत मन्न मालम वसू धार चढ धोळहर जेम ढळियौ। 'मुकन' री सुधारै मीत वेढीमणा, 'भीमडा' परम वी जोत मिळियौ। —भीमा गहलोत री गीत

रू. भे—वेढीमणौ, वैढीमणौ, वेडीभणौ, वेढमणौ, वेढामणौ।

मह०,—वेढमण, वंढमण, वेढमण, वैढमण, वंढमणौ, वैढीमण, वैढीमणौ।

वेढीमल, वेढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू भे)

वेण-स पु—१ सूयवशी राजा प्रथु के पिता का नाम।

२ वास का वृक्ष या वास। (ना मा., ह ना मा)

उ०—ताल साल मालिका वकुल कुवजक खरजूरी, बोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी। कुमुद ढाक कल्हार वेण कचनार विराजै, सोन जाय पल्लव असोक सुर धोक सु साजै। —रा. रू.

३ सेना, सैन्यदल।

४ नाक मे पहनने का आभूषण विशेष नथ।

उ०—आदू मजन करिध पाट पेहरै देही दळ। नयणं कज्जळ रेख, तिलक कुकम भाळीयण। कणं कान आटक, वेण नासा मोतीहळ। हार उर चदन विलेप, रची कावण कटि मेखळ। —गु रू व.

५ देखो वचन' (रू. भे)

उ०—१ पीहर हदी डुंबणी, राग आलापै तेण। ढोली मारू ऊमरै, कहि समझावै वेण। —ढो. मा.

उ०—२ ठग कामेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सेण। चोर न कीजै पाहरू, अहसपती रा वेण। —वा दा.

उ०—३ होवै सुविनीत सेणा रे। धारै गुरु वेणा रे। जैसी ढलती छाया रे। राखै प्रीत सवाया रे। —जयवाणी

उ०—४ जीहो काया माया कारमी, जीहो जेसो सुपनो रेण। जीहो विणसता देर लागै नही, जीहो मानो सतगुरु वेण। —जयवाणी

उ०—५ आदू अखई मोहतो दूहो कहे राजा वेचू नही तो ओखो खाण मिळू ' पण घोडो उराकी छै। रवियाण चद, ऐराक वीजै वडवीज, प्रात गाज, सापुरस वेण, पैहिली तो लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

उ०—६ सुदर सर असुरह दळै, जळ पीयौ वेणेह। 'ऊदै' नरयद काढियौ, तस नारी नयणेह। —ऊदैसी अरसी री गीत

६ देखो वीण' (रू भे)

उ०—१ उभा मोरली नाद लीधै अवूरै, मारो जागसी साम वादै मधूरै। विकसै हसं वेण ऊचो वजायौ, सपत्तं पताळं सुरग्गं सुणायौ। —ना. द.

उ०—२ लुटै साथ जाणै अमीढार लीधो, कियौ वेण नाद सजीवन्न कीधो। विजोगी सजोगी वजे वेण वायौ, प्रभू आपरी जाण अप्रत्त पायौ। —ना. द.

७ देखो 'वीणा' (रू भे.)

उ०—नोवत तेर तूर नीभ्रमे, वहू वदिण वहु जस वहसे। वेण ताळ मिरदग वजावै, मीत नाद गुण गध्रव गावै। —रामरासौ

८ देखो 'वेणी' (रू भे)

९ देखो 'वहण' (रू. भे.)

रू. भे—वेणु, वेणू, वैण।

वेणका—१ देखो 'वीण' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'वीणा' (अल्पा., रू भे)

उ०– वळकुळै ईस नारद वजे वेणका, भमळ अह चळचळै जोस काथै। मूंग थाळी जुई खळै गळ महीसर, 'भान' हर मळै दळ केण माथै। —मेगराज आढो

३ देखो 'वेणी' (अल्पा , रू. भे)

वेणचि, वेणची—देखो 'वेणची' (रू भे)

वेणरावमुनि-स पु.—नारद मुनि का नाम।

वेणसुत—देखो 'वेनसुत' (रू भे)

वेणा-स स्त्री.—१ भारत मे वहने वाली पर्णासा नामक नदी जो कृष्णा नदी मे जाकर मिलती है।

वि० वि०—यह नदी वरुण की सभा मे रह कर उनकी उपासना करती है। इस नदी के तट पर तीन रात उपवास करने से मनुष्य

मोर एव हस युक्त विमान से स्वर्ग जाता है। इसी नदी के तटवर्ती जनपद के राजा को सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय के समय पराजित किया था।

२ देखो 'वीण' (रू. भे)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे)

वेणाट—स पु —प्राचीन कालीन भारत के दक्षिण का एक छोटा प्रदेश जो अब केरल का तिरुविताकर हिस्सा बन गया है।

वेणापांणि, वेणापाणी—देखो 'वीणापाणी' (रू. भे)

वेणि, वेणिका, वेणी—स स्त्री [स]—१ स्त्रियो के बालो की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ डसण बीज दाडम, वेणि वासग भुय गम। भटियाणी वर कमध, समद, गगा नदि सगम। —गु रू ब

उ०—२ वणी भुजग रूप वेणि, मग 'सीस मोतिय। प्रजा लजै न छत्र पाति, जोय तास जोतिय। —सू प्र

उ०—३ सिरि वेणी सिरली असी, जाणइ वासिग नाग। बीहता मारइ बभणइ, किधु ताहरू त्याग। —मा का प्र

उ०—४ रतन में राखडी वेणी वासग जडी, सूभरा वाहडी लहक लोडै। स्वाति नो विंदलो नासिका निरमयो, आजु आल्यगन क्रस्न क्रोडै। —रुकमणी मगळ

२ कलाई, मणिबध।

३ नदी का प्रवाह।

४ गगा नदी का नाम।

उ०—जळं चद्र सिळी थाई जगचख, रेणायर सासतो रहै। ज्यमाल उत जाइ छाडे जुध, वेणी जळ उपराठ वहै।

—रामदास राठौड मेडतिया रो गीत

५ शाकद्वीप की एक नदी का नाम।

६ देखो 'त्रिवेणी'।

७ देखो 'वीण' (रू भे)

८ देखो 'वीणा' (रू भे.)

उ०—१ पुण्यइ मयगल वाझइ वारि, पुण्यवत भुज नावइ हारि। पुण्यइ हुइ नित नवला रग, पुण्यइ सुणीइ वेणि म्रदग।

—का. दे प्र

उ०—२ गढ ऊपरि नितु हुइ पेखणा, सुणीइ वेणि म्रदग। नितु उछव नितु पातल नाचइ, नितु नितु नवला रग। —का दे प्र

९ देखो 'वहणी' (रू भे)

१० देखो 'वेणीस्कद'।

रू. भे.—वेण, वेणि, वेणी, वेनी, वैणी, वीणि, वीणी, वेण, वेणु, वेणू, वेनी, वैण, वैणि, वैणी।

अल्पा.,—वेणका, वेणका।

वेणीडड, वेणीदड—स स्त्री —स्त्रियो के बालो की गूथी हुई चोटी।

उ०—१ च दवदन ऊपरि घटा रे, सोहैं वेणीडंड रे रग। (अथ) म्रगानयनी उपरइ रे, बाध्यौ व्याल प्रचंड रे। —प. च. चौ.

उ०—२ वेणीडड जिसउ विराजइ वासउ, पिंड उदमाद धरत पाव। अख ताइ वद तणइ विलागउ, अख लइतउ घणाइ अख राव। —महादेव पारवती री वेलि

रू भे —वेणीडड, वेणीदड, वैणडड, वैणदड, वैणीडड, वैणीदड।

वेणीफूल—स पु —स्त्रियो के सिर का आभूषण विशेष।

रू. भे.—वेणीफूल।

वेणीमाधव—स पु —प्रयाग मे स्थित श्रीविष्णु भगवान का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—सध्यावट हेटै हणूमान पौढे है, वडी मूरत है। वेणीमाधव प्रमुख चवदै माधव है प्रयागै। सरस्वती कूप रो ळल लाल है प्रयागै। लोपामुद्रा दोय देवी प्रयागै। —बा. दा ख्यात

वेणीस्कद, वेणीस्कध—स पु [स वेणीस्कन्द] जन्मेजय के सर्पसत्र मे दग्ध कौरव्यकुलोत्पन्न एक नाग।

वेणु—स पु —१ शतजित् राजा का पुत्र, एक राजा।

२ देखो 'वीण' (रू. भे)

उ०—१ एकि वीणा वेणु म्रदग यमल सख पटह कसालप्रमुख अगुणपचास वादित्रस्वर माभलावइ मधुर, एकि तिलकु बकुल असोक चपक कुद मचकुदादि पुस्पप्रकर सपानुडइ प्रचुर, एकि दीवानी परि उद्योत करइ। —व. स.

उ०—२ रली रग राग नाना विधि, सुनि-मडळ कै छाजै। पति सू प्रीति जीति गुण दूजा, वेणु गगन मे बाजै —ह. पु वा

उ० —३ दादू रग भर खेलू पीव सौ, तह बाजै वेणु रसाल। अकल पाट पर बैठा स्वामी, प्रेम पिलावै लाल। —दादुवाणी

३ देखो 'वीणा' (रू भे)

उ०—पटुपटह म्रदग करडि मरद्दल वेणु तलिमताल कसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहभभ हडुक ढक्क वुक्क त्रबक काहल काहली बरगा प्रभ्रति वादित्र। —व. स

४ देखो 'वेण' (रू. भे)

५ देखो 'वेणी' (रू. भे)

रू. भे —वेणु, वेणू' वेनु, वेनु।

-वेणुजध–स पु. [सं] युधिष्ठर की सभा मे उपस्थित एक प्राचीन महर्षि।

वेणुदारि–स पु [स.] अक्रूर (बभ्रू) की पत्नी का हरणकर्त्ता एक यादव जिनके पुत्र को कर्ण ने अपने दक्षिणदिग्विजय के समय हराया था।

वेणुदारितक—शृगार मे एक प्रकार का आसन विशेष।

रू भे—वेणुविदारित।

वेणुमडळ, वेणुमडल–स पु [स वेणुमण्डल] कुशद्वीपीय एक भाग।

वेणुमंत—देखो 'वेणुमान'।

वेणुमती–स स्त्री. [स] पश्चिमोत्तर'देश की एक नदी। (पुराण)

वेणुमान–स पु [म वेणुमान्] १ एक वंश। (पुराण)

२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वेणुवन–स पु [स] राजगृह मे स्थित एक उपवन का नाम, जहाँ राजा विंबसार के समय गौतम बुद्ध ठहरे थे।

वेणुविदारित—देखो 'वेणुदारितक' (रू भे)

वेणुवीणाधरा–स स्त्री. [स.] कुमार कार्त्तिकेय की एक अनुचरी।

वेणुहय–स. पु [स] वेणु राजा का नाम।

वेणुहोत, वेणुहोतर, वेणुहोत्र–स पु [स वेणुहोत्र] वीतिहोत्र राजा का नाम जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र एव गार्ग्य का पिता था।

वेणू—१ देखो 'वीण' (रू भे)

२ देखो 'वीणा' (रू भे)

३ देखो 'वेण' (रू भे)

४ देखो 'वेणी' (रू भे)

वेणो–स पु—१ सोने-चादी के आभूषणों पर खुदाई के काम में कुछ गहरे खड्डे (छेद) करने का लोह का एक औजार विशेष।

२ वढई का एक औजार विशेष।

३ देखो 'वहणो' (रू. भे)

४ देखो 'वीणो' (रू. भे)

रू. भे—वेणौ।

वें'णो, वें'वो—देखो 'वहणो, वहवो' (रू भे)

उ०—अलग राख आरोह, तसा कपडा वेंतोडा। खरहंड नासा खाच, रजक प्याले अण रोडा। —पा. प्र.

वेण्या, वेण्वा–स स्त्री. [स] विन्ध्य पर्वत से निकली हुई चौदह नदियो में से एक।

वेतड—देखो 'वितड' (रू भे.)

उ०—अर ऊभी वेतड साहण सिंगार नू आवतो देखि साम्हौं हालियो। इण रीति दो ही गजा आप आप रा कलावा सू आधोरण नू उडाय रीस मैं अध होय समीप आवता ही लोयण (नेत्र) मिळाया। —व भा

वेत–स स्त्री—१ वूदी एव चितौड के बीच के पठार से छत्तीस मील दूर वहने वाली नदी।

उ०—तिण वेत नदी ऊपर वडी जगळ छै। तिण मे द्रोव, करड़ री वडी ऊगम छै। तिका ठोड जोय आया। जाणियौ माहरी हसम थाड अठ चरसी। —नैणसी

२ देखो 'वेंत' (रू. भे)

३ देखो 'वेत' (रू भे.)

उ०—१ थें किलै मे सची सताब करजै। हू वेत लागिया आयस्यू। —गोपाळदास गौड री वारता

उ०—२ तठै आगै बाग आयौ। देखनै माहै ऐठा मल फल-फूल खाया, पिण वाग मैं जावतो घणौ दीठो। तठै तौ पिण हीरण वीचारियौ–जो आ जागा भली छै, मारो चारौ पिण मोकळो छै, पिण दिन रा तौ वेत लागै नही, अवै रात रा चरवा नै आवस्या। —रीसालू री वात

उ०—३ प्रणह-मल्ल वाहा पलव, 'ईंदा' हर राखै रूकि अव। वर-वीर धीर सुरताण वेत वाखाण चौरासी वीर-खेत। —गु. रू व.

४ देखो 'वेत' (रू भे.)

५ देखो 'वेन' (रू भे)

वेतकल्लुफ—देखो 'वेतकल्लुफ' (रू. भे)

वेतकल्लुफी—देखो 'वेतकल्लुफी' (रू भे.)

वेतघर—देखो 'वेतधर' (रू भे)

वेतड—देखो 'वेंतड' (रू भे)

वेतन–स पु [स] कुछ निश्चित समय तक प्राय एक मास तक काम करने के वदले दिया जाने वाला धन या पारिश्रमिक, तनख्वाह।

उ०—मान देई राखियु, सुपिया अस्व अनेकि। दस सहस्र वेतन परिठयु, नि मुख्य कीधु एक। —नळाख्यान

वेतनभोगी–वि०—वेतन लेकर काम करने वाला।

वेतमीज–देखो 'वदतमीज' (रू. भे.)

वेतमीजी—देखो 'वदतमीजी' (रू भे.)

वेतर—१ देखो 'वेतरू' (रू भे)

२ देखो 'व्यंतर' (रू भे.)

उ०—रक रूळ दा मारकर, कोई मल कहावै, वेतर भूत आराध कर, कोइ देव मनावै। डाकण का मत्र सीख कर, कोइ साध कहावै, आख्या आधा होय कर कोइ वाट वतावै। —केसोदास गाडण

वेतरणी-स. स्त्री.—१ दर्जी द्वारा कपडे का माप लेने की क्रिया।

२ देखो 'वैतरणी' (रू भे.)

वेतरह—देखो 'बेतरह' (रू. भे.)

वेतरु, वेतरू-स स्त्री.—वह गाय, भैंस, बकरी आदि मादा पशु जो निकट भविष्य मे शीघ्र प्रसव करने वाली हो।

रू भे —वेतर, वैंतर।

वेतलब—देखो 'बेतलब' (रू. भे.)

वेतलबी—देखो 'बेतलबी' (रू भे.)

वेतस-स. स्त्री [स] १ जभीरी, बिजौरा।

उ०—वालु नइ वेलातरु, वेरु वेतस वाणि। वधारु वाहलु लीउ, वाउलीउ वखाणि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'वेतसु' (रू भे.)

रू भे —बेतस।

वेतसवन-स पु [स] एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ मृत्यु ने तपस्या की थी।

वेतसिका-स स्त्री [स] वह तीर्थ जिसकी सेवा ब्रह्मा ने की थी। इस की यात्रा करने से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

वेतसिनी-स स्त्री [स] एक प्राचीन नदी का नाम। (पुराण)

वेतसु-स पु [स.] एक दानव, जिसका वध इन्द्र ने किया था।

वेता—देखो 'वेत्ता' (रू भे.)

वेताब—देखो 'बेताब' (रू भे)

वेताबी—देखो 'बेताबी' (रू भे.)

वेतार—देखो 'बेतार' (रू भे.)

वेताळ, वेताल-स पु [स.] १ भूत-प्रेतो की एक प्रकार की योनि विशेष। (पुराण)

उ०—वेताल भीसणाकार, मुखि करता फार फेत्कार, कतातावतार मुखि मेल्हतउ झाल, हस्ति देता ताल, इस्या ऊछलिआ वेताल। —व. स.

२ वह शव जिस पर भूत-प्रेतो ने अधिकार कर लिया हो।

३ वदीजन, भाट।

४ देव विशेष।

५ द्वारपाल, दरवान।

६ युद्धप्रिय देव।

उ०—१ ग्रहमड किनां फुट्टी वळै, घसक तळातळ आतळै। मुखै हसै सकति महावळ, वेताळा कुळ व्याकुळै। —मा वचनिका

उ०—२ सीकोतरि सवकणी प्रेत डवकणी अपारा, विवध भूत वेताळ धीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु विरक जवू रसवाया, काक कक की गिणै आसपळ समळ आया। अछरा स्त्र गार धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियौ। महि गयण सग खेळा मिळै, आगम जग विसारियौ। —रा. रू

उ०—३ हुए हक्क सूरा उठी मेर हक्का, करै भूत वेताळ चडी किलक्का। करै जोर प्राहार वेपार कुंता, दिपै जुद्ध जाणै भ्रगू सिभू दूता। —रा. रू.

७ छप्पय छन्द का एक भेद विशेष, जिसमे ६५ गुरु व २२ लघु, कुल ८७ वर्ण वा १५२ मात्राएँ होती हैं।

८ देखो 'वेताळ' (रू भे)

रू. भे.—बैताळ, वइताळ, वेयाळ, वेयाल, वैंताळ, वैंताल, वैंताळी।

वेतालजननी-स स्त्री [स] कुमार कार्तिकेय की एक मातृका।

वेताळभट, वेतालभट, वेताळभट्ट, वेतालभट्ट-स पु —एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पडित।

वेताळिक—देखो 'वैताळिक' (रू भे)

वेताळीस, वेतालीस—देखो 'बयाळीस' (रू भे)

वेताव—देखो 'वेताब' (रू. भे.)

वेतुड—देखो 'वितड' (रू भे)

वेतुको—देखो 'बेतुको' (रू भे)

(स्त्री वेतुकी)

वेत्ता-वि० [स] ज्ञाता, जानकार, तत्ववेत्ता। (अमरत)

स पु —पडित, कवि।

रू. भे.—वेता।

वेत्रकीयवन-स. पु [स.] वह वन जहाँ भीम ने बकासुर का वध किया था।

वेत्रकूट-सं. पु. [स] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम।

वेत्रगगा-सं. स्त्री [स] हिमालय से निकलने वाली एक नदी का नाम।

वेत्रवती-स. स्त्री. [स] परियात्र नामक पर्वत से निकली चौदह नदियों मे से वेतवा नामक नदी।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसो प्रीत जतातां। वेत्रवती जळ पीय लहरतो घण गरजतां, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर घण पान करतां। —मेघ

वेत्रहा-स पु. [स वेत्रहन्] देवराज इन्द्र का एक नाम।

वेत्रासन-स पु. [स] वेंत का बना हुआ एक प्रकार का आसन विशेष।

वेत्रासुर-स पु [स] १ यमुना नदी मे मिलने वाली वेत्रवती नदी के गर्भ से उत्पन्न सिधुद्वीप नामक राजा का पुत्र, प्राग्ज्योतिपपुर का राजा एक प्रसिद्ध असुर, जो इन्द्र के द्वारा मारा गया था। (पुराण)

२ देखो 'वृत्रासुर' (रू भे.)

रू भे.—वैत्रासुर।

वैत्रिक-स. पु [स.] १ प्राचीन भारतीय एक जनपद।

२ उक्त जनपद का निवासी।

वेयळियो—देखो 'वेयळियो' (रू भे)

वेयाग—देखो वेयाग' (रू. भे)

वेथी—देखो 'वेथी' (रू भे.)

उ०—कितरा एक दिन रावजी असमाधिया रहि अर वैकूठ सिधाया। उठै राजा भारमल पणि वैकूठ सिधाया। विहू राजवियां दिन आठ वेथी हुई। ओथि राजा भगवतदास नूं टीको हुयो। —द वि

वेदग—देखो 'वेदग्य' (रू. भे.) (ना. मा)

वेदंड—देखो 'वितुंड' (रू भे.)

वेदत—१ देखो 'वेद' (रू भे)

२ देखो 'वेदांत' (रू भे)

वेद-स पु [स] १ धार्मिक या आध्यात्मिक विषय अथवा किसी विषय का सच्चा एवं वास्तविक ज्ञान।

२ भारतीय आर्यों के सर्वमान्य वे चार ग्रन्थ जो मनुष्य रचित नहीं हैं बल्कि ये ब्रह्मा के मुख से निकले हुए माने जाते हैं, श्रुति।

उ०—१ वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण, वळे खट भाख जीहा वखाणे। भात पौराण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगता तणा भेद आणे। —र ज प्र

उ०—२ पहु तिलक कीध कुंकम सु पाणि, मोतिया अक्षत चाढे प्रमाणि। जस जोतख द्विज्ज लिखत जत्र, मुख पढत महा द्विज वेद मंत्र। —सू प्र.

उ०—३ प्रथी करण थिर वेद पुराणां, करम जिका बळ हीण कुराणां। यों जग में रवि वंस उजागर, प्रगटै भूप रूप परमेस्वर। —रा. रू.

३ भगवान् श्री विष्णु का नाम।

४ ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—१ नमो कामणी वेद माया कुमारी, नमो सैंहस नैणी प्रबोधा सैंसारी। नमो सेसकंठी नमो सोळ सामा, नमो भूचरी खेचरी रूद्र भामा। —मा वचनिका

उ०—२ लोक वेद को डर नहीं, रस भीना दिन राति। कामी प्रेमी हरि भगत, नहीं सूझै दिन राति। —परमानद वणियाळ

५ जय जयकार की ध्वनि।

६ ज्ञान।

उ०—१ जनहरिया ज्युं नाव घी, अन पाणी ज्युं वेद। जै कोई न्यारो जाणिसी, जिन कुं आयो भेद। —अनुभववाणी

उ०—२ नामी घरि आया, नाच नचाया, सहचा मुख सिवरदा है। रग रग आरभा, भया अचभा, छुछम वेद भणंदा है। —अनुभववाणी

७ चार की सख्या। * (डिं. को.)

उ०—भणि तेरहसो छासठि भेद, विगति मात्र सोलह ध्रू वेद। आखर लघू गुरु इगिआर, वदा सुभकर छद विचार। —ल. पि.

८ तीन की सख्या। * (डिं को.)

९ छन्द।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—रिण तूर पयच-सव्द वेद रुढै, गयणाग क अवनिधि गडडै। ढळकै गज-ढाला ढूहरिय, अनडा सिरि जाणक अच्छरिय। —गु रू. व.

११ योग, जोड।

१२ मागणियार मुसलमानो की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति। (मा म.)

१३ नाईयो की शाखा जो हजामत के धन्धे के साथ-साथ मरहम पट्टी आदि कुछ वैद्यगी का काम भी करती है। (मा. म.)

१४ उक्त शाखा का व्यक्ति। १५ भृगु के कुल मे उत्पन्न एक मत्रकार। १६ सिंधुद्वीपराजा का भाई जो शिव भक्त था। १७ जनमेजय का उपाध्याय व धौम्य ऋषि का शिष्य, एक ऋषि।

२० विवाह वेदी पर बोले जाने वाले मत्र।

उ०—ताहरा छोकरचा वाघै दोळा फेरा च्यार लीया। ताहरा वाभण एक पागुळो ओथ पडियो हुतो तिकै नु वाघै कह्यो। रे तू वामण छै। जै भणियो छै तो तू वेद पढ। का मारीस। ताहरा वाभण बीहतै क्यु भणियो। —देवजी वगडावता री बात

२१ देखो 'वैद' (रू भे.)

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या—किणहि रोगी नै वेद ओखध पावा लागो कहे औ ओखध पी जा रोग जातो रहसी। जद रोगी वोल्यो—मू हडा मैं तो घालू नही। म्हारा मीरा मे कूड दो। —भि. द्र.

उ०—२ बाप घणो ई समझायो, पण वो तो मान्यो ई नीं। वेद हकीम ई घणो ई पालियो तो ई उणरै की होयं वैठी नी। बेटा रा वाद आगै सेठा री तो खायो पीयो ई अग लागै नी। —फुलवाडी

उ०—३ अमोलक सू अमोलक हीरो कोई पेट में खावण सूं तो रह्यो। आप सगळा जाणो ई हो, काई वताव्। कुठौड पीड़ अर

सुसरोजी वेद। राड कवरसा लारै सती होवण री हठ झाल राख्यौ।
—फुलवाडी

२२ देखो 'वेघ' (रू भे.)

उ०—धमाधम वाण गोळा वीखम गाजिया, साझिया मरण खत्रिया धरम सैद। मडोवर तणा अदराजिया मेहतै, वाजिया वेहू धरती तणौ वेद। —सेरसिगजी, कौलसिहजी री गीत

रू भे —वेद, वेदत, वेय, वेह।

वेदउदय—स पु [स. उदयवेद] सूरज, सूर्य। (डि. को)

वेदक—१ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—मतव्य मान, गतव्य ग्यान, वेदक विधान, धर धेय ध्यान। सुन जाग सूर, चद्राक चूर, सुख मन सचार, अम्म्रत अपार।
—ऊ का

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

वेदकरता—स पु. [स वेदकर्तृ] १ वेदो की रचना करने वाला, ब्रह्मा।
२ विष्णु का नाम।
३ शिव शकर।
४ सूरज, सूर्य।
५ वर पक्ष के वे मनुष्य जो विवाहकृत्य सम्पन्न हो जाने पर वधू के घर वर तथा वधू को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु जाते हैं।

वेदकल्प—स पु [स.] अथर्ववेद का एक भाग।

वेदका—स स्त्री [स वेदिका] विवाह वेदी, चवरी।

उ०—अलगो ऊमराकोट तोरण काळमी आई, नामी वस वधाई आरती नरा नाथ। विप्रा गठ जोडी दाघ वेदका समीप वैठे, बनो बनी मेहदी हाथ मिळायो विख्यात। —बादरदान दधवाडिया

वेदकार—वि० [स] वेदो के रचयिता, वेदों का रचनाकर्त्ता।

वेदगगा—स स्त्री—कृष्णा नदी में मिलने वाली एक दक्षिण भारतीय नदी।

वेदगरभ—स पु [स वेदगर्भ] १ ब्रह्मा।
२ ब्राह्मण।
रू भे - वेदगरभ।

वेदगरभा—स स्त्री [स. वेदगर्भा] १ सरस्वती नदी।
२ रेवा नदी।

वेदगरभापुरी—स स्त्री [स वेदगर्भापुरी] एक तीर्थ विशेष।

वेदगाय—स पु [स] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

वेदगी—स स्त्री—१ होशियारी, चतुराई, दक्षता, विशेषता।

उ०—राजाजी नै उणरी भोळी अर अबूझ बात सुणनै हसी आयगी। बोल्या—भोळा ठीकरा, हाथ जोडना मैं थंडी काई वेदगी। म्हैं कदै ई नी जोडया तो ई जाणू। —फुलवाडी

२ देखो 'वैद्यगी' (रू भे)

वेदगुप्त—स. पु [स] १ भगवान् श्रीकृष्ण।
२ पराशर ऋषि का पुत्र।

वेदग्य—वि० [स वेदज्ञ] १ वेदो का ज्ञाता, वेदो का जानकार।
२ ब्रह्मज्ञानी।
स पु—ब्रह्मा।
रू भे —वेदग वैदंग, वैदगर, वैद्यक, वैद्यग।

वेदजणणी—स. स्त्री [स वेदजननी] वेदो की माता, सावित्री।

वेदजा—स स्त्री [स जात-वेद] १ अग्नि, आग। (ना डि को)
२ द्रौपदी। (म भा)
वि० वि० (मि जागसेनी)
रू भे.—वेदिजा, वेदीजा।

वेदण—देखो 'वेदना' (रू भे)

उ०—अम्है न करिस्या कोइ, साजनिया सहु को करौ। फिर दूणी दुख होइ, वेदण विछडिया पछै। —जसराज

वेदणौ, वेदबौ—देखो 'वेधणौ वेधबौ' (रू भे)

उ०—काटै वेदै घसै पथर पर, तथा तपाय कढावै तोल। सुर पूजा सोरभ गुण समपै, खेडा सचनण री खैल। —स्वरूपदास

वेदतीरथ—स पु [स वेदतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ। (प्राचीन)

वेदत्रय, वेदत्रयी—स स्त्री. [स वेदत्रयी] तीन वेदो का समूह, जिसमे ऋगवेद यजुर्वेद एव सामवेद होते हैं। (व भा)

वेदवरस, वेददररसन—स पु [स वेददर्श, वेददर्शन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने सुमन से अथर्ववेद, सहिता सीख कर अपने शिष्यों को प्रदान की थी।

वेदद्विस—स पु [स वेदद्विप] चेदि देशाधिपति वृहद्रथ का पुत्र।

वेदधकी—स. पु [स वेध+रा. धकी] युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर, बहादुर।

उ०—हैजमा हिलोळ हुता तेगा उसा टीलो हलै, साथ वीर चलै चडी चाटीलो समद। वेदधकी जगा मेळै वारगा माटीलो वीद, कँवाणा कोमको वागा आटीलो कमद। —हुकमीचद खिडियो

वेदधरम—स पु [स वेदधर्म] वेदिक धर्म।

उ०—१ उत्तम नाम वस उजवाळो, वेदधरम चो वधव वडाळो। धरपति जेणि सोस छत्रधारे, एम प्रतग्या करै उचारे। —सू प्र.

उ०—२ खग्ग वल विस्तरि अकव्वर से सत्रु अग्ग, इक्कल निवाह्यो जिहं वेदधरम नत्ताको। आसमुद्र उरवि वासी अज्ज कृतमन्य देत, धन्यवाद वीर अग्रगण्य रान 'पत्ता' कौं। —वालावक्स पालावत

रू. भे.—वेदोधरम, वेदोध्रम ।

वेदधुनि, वेदध्वनि–स स्त्री [स. वेदध्वनि] वैदिक मत्रो के उच्चारण की ध्वनि ।

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अधकार फीटइ, गाय तणा गाला खूटा, तारागण विरल हुउ, चद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तणी उलि लवइ, देव तणा बार ऊघडिया, प्रभातिक तूरय वाजिया, राजभवनइ वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका ऊपजइ, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणै घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुआ । —व स

उ०—२ जिकै वेद मूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाडि होम करै छै । घणो गो घ्रत नै कपूर री आहुति दीजै छै । वेदध्वनि कीजै छै । दूलह नै दूलहनी सेहरा बाधिआ पूरब साहमा वेसाणिआ छै । —रा सा स

रू भे.—वेदधुनि, वेदवध्वनि, वेदोधनि, वेदोधनी, वेदोधुण, वेदोधणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी, वेदोध्वनि ।

वेदन, वेदना–स स्त्री [स वेदन एव वेदना] १ पीडा, कष्ट, व्यथा ।

उ०—१ लै नै सिरचद मु हुतै नु राणीजी कहियो हुतो ज्यू गुण हुवै तिम करिया । सु न का गाठि न का वेदन इउ ही उपाय करि घर वात थापी । —द वि

उ०—२ राजा उच्यौ, वेग सतावमू रे राणी ऊपर न करघो द्वेस रे । ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे, राख्यो इण समता भाव विसेख रे । —जयवाणी

उ०—३ जीहो वेदना नरक में सासती, जीहो जरा तापसी खेद । जीहो वेदना दस प्रकार नौं, जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद । —जयवाणी

उ०—४ पल आगे पल भी सुवै, पल मन धरै न धीर । हरिया वेदन विरह की, निस दिन भई सरीर । —अनुभववाणी

२ तकलीफ ।

३ प्रसूता स्त्रियों को प्रसव के समय होने वाली शारीरिक पीडा या व्यथा ।

उ०—वाझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जाणत मूंड भमायो । पूत कपूतन कौं चटसाला कि, ज्यूं कुलटा सुसराळ सुणायो । —ऊ. का

४ रोग, बीमारी ।

उ०—१ ओखद करि करि जु मूवा, वेदन पडी न हाथि । जा ओखद सु ऊत्तरै, वाकी पडी अनाथि । —अनुभववाणी

उ०—२ धान न भावै चौंच निरोई इण वेदन मोनूं खरी विगोई । तौ सौं वात कहूं मैं कैसी, मेरे मन मैं वीचत जैसी । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ विध चूका वैद न जाणै वेदन, ओखध लहै न पीड अथाह । रात दिवस खटकै उर 'राजो', साजो तेण नही पतसाह । —पीरदान आसियौ

उ०—४ मु सारा मुलका रा वेद बुलाया, पिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहर मैं पाडो फेरचो—नागजी नै ताजो करै, तिण नै लाखपसाव देवा । सु वैदा नै तो वेदन लाधी नही ।
राजा वेद बुलाय कै, कुवर देखाई बाह, वैदा वेदन काळ ही, करक कलेजा माहि । —नागजी नागवती री वात

उ०—५ तारा अ भाटी कलकरण केहरौत कनै गया । तद कलकरण आदमी हजार दोय सू कवर वीकैजी माथै आयौ, अर राव सेखै नू कहायो कै थे आय म्हारै सामल हुवो ज्यूं काची वेदन काट देवा । —द. दा.

५ भय एव हिंसा की पुत्री ।

रू. भे —वेदन, वेदनि, वेदण, वेदनि, वेवना ।

वेदनाथ–स पु [स.] १ एक विश्वनाथ नामक ब्राह्मण एव कमलालया का पुत्र एक राजा ।

वि० वि०—इसे ब्राह्मण का साग या द्रव्य चुराने के कारण पुनर्जन्म मे वानरयोनि प्राप्त हुई । अपने मित्र सिन्धुद्वीप मुनि की सलाह के अनुसार यह धनुष्कोटि तीर्थ मे जाकर पापमुक्त हुआ था ।

२ महादेव, शिव ।

वेदनिंदक–वि. [स] १ वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक ।

२ बोद्ध धर्म का अनुयायी ।

वेदनि—देखो वेदना' (रू भे.)

उ०—१ बूटी परखि गाठि ग्रह बाधी, जम भव वेदनि तूटी जाहकै रोग सदा अगि रहता, वोहत होती तपनाइ । या बूंटी रस घापि र पीया, जीणि वोहडी सताप न पाई । —वील्होजी

उ०—२ वेदनि विरह विथा तन माही, पडदा खोलि मिळौ क्यूं नांही । जन हरिदास कै आस तुम्हारी, विलम कहा पति देव मुरारी । —ह. पु. वा.

वेदनिध, वेदनिधि–स पु [स] एक प्राचीन महर्षि ।

वेदनीय–वि० [स] जो वेदना उत्पन्न करे, वेदना उत्पन्न करने वाला । (कर्म) (जैन)

वेदपाठ–स पु. [स] वेद के मत्रो का पाठ, वेदाध्ययन ।

उ०—नको सुचि क्रिया न को वेदपाठ, न को मुखवाणी न को मोन काठ । न को तनत्यागी न को ग्रेहचारा, न को नवनाथं न को पथवारा । —अनुभववाणी

वेदपाठी–वि० [स. वेद+पाठिन्] वेदो को पढने वाला, वेदों का अध्ययन करने वाला ।

उ०—१ वेदमत्र बोलत, वेदपाठी ब्राह्मण। पहरै पट्ट अबोट, द्रव्य अर्पे घरण सघण। —गु रू व.

उ०—२ तहा वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मन्त्रबळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इद्र आदि देवता अडसठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु, अस्ट परवत, दसो दिग्गाळ आदि सं आवाहन करि आहुती कर प्रसन्न किया। —सिंघासण बत्तीसी

वेदपित–स पु —अग्नि, आग। (अ मा)

वेदफळ–स. पु —वैदिक कर्म करने मे प्राप्त होने वाला फल।

वेदबाह बेदबाहु–स पु [स वेदबाहु] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

३ पुलस्त्य ऋषि का नाम।

४ रैवत मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

वेदबीज–स पु [स] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ ब्रह्मा।

वेदभू वेदभूम, वेदभूमि, वेदभूमी–स स्त्री [स. वेदभू, वेदभूमि] १ वह स्थान जहाँ वेदो का अध्ययन किया या कराया जाता है, ऋषि-आश्रम।

उ०—ई वेदभूम री धरम नही, ओलं सी बात बणा लेवै। आ बात जिंदगी मोत तणा, सगळा री सोच सला लेवै। —करणीदान बारहठ

२ वैदिक भूमि हिन्दुस्तान, भारत।

३ देवताओ का एक गण विशेष।

वेदमतर, वेदमत्र–स. पु [स. वेदमन्त्र] १ वेदों मे आये हुए मत्र।

२ एक प्राचीन जनपद का नाम। (पुराण)

३ उक्त जनपद का निवासी।

४ मूलमत्र।

वेदम—देखो 'वेदम' (रू भे)

वेदमत–स पु.—वेदो में उल्लिखित मत, वैदिक मत या नियम।

उ०—माजी मानै वेदमत, सुणं सदा सुरगाह। सती आठमी सापरत, दसमी स्रीदुरगाह। —वा दा.

वेदमाता–सं स्त्री. [स. वेदमातृ] १ सावित्री, गायत्री।

२ दुर्गा, शक्ति।

३ वीणावादिनी, सरस्वती।

४ गायत्री मत्र।

वेदमात्रका, वेदमात्रिका—देखो 'वेदमाता'।

वेदमालि, वेदमाली–स पु [स. वेदमालि] रैवत मन्वन्तर के एक वेदज्ञ ब्राह्मण का नाम।

वि० वि०—कुछ समय पश्चात् अपने परिवार के पालन-पोषण हेतु इसने अनीति से धन कमाना शुरू किया। जावती मुनि के उपदेश से इसे ज्ञान हुआ। परिणामस्वरूप इसने अपने दोनो पुत्रों को अपने धन का दो भाग देकर शेष बचे धन को धर्मकार्य मे लगादिया और स्वय नरनारायणाश्रम बद्रीवन मे जाकर तपस्या कर पापमुक्त हुआ।

वेदमितर, वेदमित्र–स पु. [स. वेदमित्र] व्यास की ऋक्शिष्य परम्परा मे से माण्डुकेय नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य जो स्वय शाकलगोत्रीय था।

वेदमुड–स पु [स.] एक असुर का नाम।

वेदमूरत, वेदमूरति वेदमूरती–वि० [स वेदमूर्ति] १ वेदो का पूर्ण ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति नीला आला वस केलि खभ सूंना गलिया थका काचना रा कलसा री वेह करिनै चौंरी पधराया छै। हथळेवौ जोडि छेहडा बाधिया छै। सु जाणि मन बाधिया छै। जिकै वेदमूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाडि होम करै छै। —रा. सा स.

२ सूरज, सूर्य।

वेदरद, वेदरदी—देखो 'वेदरदी' (रू भे.)

उ०—१ चालनि मोरा सह्या दुख पावै, रसराज ऐसी वेदरदी होय रही, काहैं कू तो पनघट जावंरी आवै, —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ चालो चालो सहिया म्हारी सावरै री लैर, प्यारो गयौ कही बिरह वेदरदी. खोजल्या नै उवा रा सूधा पैर। —रसीलै राज रा गीत

उ० — ३ हेरी हेरी मा मन लै गयौ, सावरो सनेही अलबेलो मा। नैन लगाय मन लै गयौ वेदरदी, दिल बिच छाय रयौ। —रसीलै राज रा गीत

वेदरस–स पु [स] बृहस्पति का नाम। (अ मा)

वेदरह, वेदराह–स पु [स. वेद+अ राह] वेदो मे बताया गया मार्ग वेदमार्ग, ।

वेदल — देखो 'वेदिल' (रू भे)

उ०—१ थे नाळेर किण नैं बदायो ? म्हैं थानै काहु कहिनै मेलिया था ? तरै उमरावा अर पुरोहितजी पाछली वात ज्यू हुई त्यू कही। कागद दिखायौ। स्रीरिणमल जी वेदल हुवा। —राव रिणमल री वात

उ०—२ वळै ढाढिया नु मुख वचन समाचार मारवणी कह्या छा सु कह्या पिण ढाढी डरै छै। ताहरा ढोलोजी बोलिया थे वेदल (क्यू) छौ। ताहरा ढाढी बोलिया कवरजी आपनै दीठा तौ घणा राजी छा पिण मरण सू डरा छा। —ढो. मा.

उ०—३ तरै पाधरी कवरजी री हजूर आई। कवरजी ढोलियै बैठा छै। तद मालवणी आण मुजरो कीयो। जद कुवरजी हाथ पकड नै घणा आदर सु मालवणी नै ढोलियै बैसाणी। पिण मालवणी वेदल घणी छै। —ढो. मा

वेदवत–वि० [स] १ वेदो का ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—१ कामिणी कहि काम काळ कहि केवी, नारायण कहि अवर नर। वेदारथ इम कहै वेदवत, जोग तत्त जोगेसवर। —वेलि

उ०—२ जु वेदवत भला ब्राह्मण था। त्या वेद री वेदोक्ति विचारची। वात पणि कही चाहीजे अर मन माहे भय उपनो छै। मत वसदेवजी बुरो मानै पणि जरूर हुई। ब्राह्मण जु कछु अरम्म होय कहै। —वेलि टी

२ ब्रह्मज्ञानी।

वेदवचन–स पु [स] वेदो का मूलपाठ।

वेदवती–स स्त्री [स] १ राजा कुशध्वज की कन्या जो दूसरे जन्म में सीता हुई थी।

२ द्रोपदी। (म भा)

३ एक प्राचीन नदी जो परियात्र पर्वत से निकली १४ नदियो मे से एक थी।

४ एक अप्सरा का नाम।

वेदवदन–स पु [स] १ ब्रह्मा। (डि को)

२ व्याकरण।

वेदवधुनि, वेदवध्वनि—देखो 'वेदधुनि' (रू. भे)

उ०—कुदन मे थाळ द्रोव दधि कुंकम, पूरित अक्खत तदुळ। इत्यादिक गीत नाद वेदवधुनि, मगळ धमळ मगळ। —गु रू ब

वेदवा–वि०—जिसकी कोई दवा नहीं हो, विना दवा का।

उ०—जाह कोई जोग न जुगति है, जाह नही धेग न तेग। हरीया दवा न वेदवा, जाह कोई पौंण न वेग। —अनुभववाणी

वेदवाक्य–स पु [स] १ वेद का कोई वाक्य।

२ पूर्ण रूप से प्रमाणित कोई वात जिसका खडन नही किया जा सके।

वेदवादी–वि०—[स वेदवादिन्] १ वेदो का अच्छा ज्ञाता।

२ वेदो मे उल्लिखित मार्ग पर चलने वाला।

वेदवावंत—देखो 'दवावंत' (रू भे)

वेदवाहन–स पु [स वेद+वाहनम्] सूरज, सूर्य।

वेदवित, वेदविद—वि० [स वेदवित्] वेदो का जानकार, वेदज्ञ।

उ०—वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कपित चित लागा कहण। हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण। —वेलि

स पु.—१ वेदविशारद ब्राह्मण।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

रू भे.—वेयविम, वेयवी।

वेदविदुख, वेदविदुस–वि [स. वेदविदुप] वेदो का ज्ञाता, पडित, विद्वान्।

उ०—सिलपी काम हुयौ सह सिद्ध, ब्रह्मा साखि रचै जिग विधि। उचारै वेदविदुस अनेक, विचारै जिग सुविधि विमेक। —रांमरासौ

स. पु —ब्राह्मण, पडित।

वेदवेद्या–स स्त्री [स] वह देवी जो वेदों से जानी जाती है। उक्त देवी के निवास स्थान चिन्तामणि ग्रह के चार दरवाजे चारो वेद हैं।

वेदव्यास–स. पु [स] १ एक प्राचीन ऋषि, जो सत्यवती एव पराशर के ससर्ग से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ही वेदो के विभाग करके आधुनिक रूप दिया।

उ०—१ का तन आलस करत ऊध, का फिर सूधा करत सूध। का मन मूरख विकल जास का हुय वैठै वेदव्यास। —अनुभववाणी

उ०—२ ताह मांहि लै अधिका उतिमि, ग्यान रूप गाहेडि गडा। वारहट अनै रिखि वरावरि, वेदव्यास ईसर वडा। —पी. ग्र.

२ वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईस द्वापरो मे उत्पन्न होने वाले अट्ठाईस वेदव्यासो का समूह। (पुराण)

रू भे —वेदव्यास

वेदवृद्ध, वेदव्रध–स पु —[स वेदवृद्ध] व्यास की सामशिष्य परम्परा मे से कौथुम पाराशर्य नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य।

वेदसरमन, वेदसरमा–स. पु [स वेदशर्मन् वेदशर्मा] १ एक वेदज्ञ ब्राह्मण।

वि० वि०—इसने ब्राह्मणो को देने के लिए सकल्पित धन ब्राह्मणो को नही दिया। इसलिए इसे शृगाल-योनि प्राप्त हुई। यह वेदनाथ का मित्र था एव सिन्धुद्वीप मुनि के उपदेशानुसार धनुष्कोटि तीर्थ मे शाप मुक्त हुआ था।

२ विदुर का मित्र, जो विदुर के साथ कालिंजर पर्वत पर गया।

वि० वि०—कालिंजर पर्वत के सिद्धो के उपदेशानुसार इसने सोमवती अमावस्या के दिन 'अघ तीर्थ' पर स्नान करके मुक्ति प्राप्त की।

३ शोणाश्व राजा का एक पुत्र।

४ विष्णु भक्त शिवशर्मन के पुत्र का नाम।

५ मुनिशर्मन नामक विष्णु भक्त के द्वारा पिशाच योनि से मुक्त हुआ एक ब्राह्मण ।

वेदसिनी—स स्त्री एक प्राचीन नदी । (पुराण)

वेदसिरस वेदसिरा—स पु [स वेदशिरस्, वेदशिरा] १ वाराह-कल्पान्तर्गत वैवस्त मन्वन्तर मे से पन्द्रवें युगचक्र मे उत्पन्न एक शिवावतार, जो सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अतर्भाग में स्थित वेदशीर्ष नामक स्थान पर अवतीर्ण हुआ था । इसका प्रमुख अस्त्र महावीर्य था ।

२ प्राण राजा का पुत्र, एक राजा ।

३ स्वारोचिष मन्वन्तर के विभु नामक इद्र का पिता ।

४ रैवत मन्वन्तर के सप्तऋषियो मे से एक ।

५ एक भृगुवशीय ऋषि, जो मार्कंडेय का पुत्र था ।

वि० वि०—इसकी माता का नाम मूर्धन्या व पत्नी का नाम पीवरी था इसके अनेक पुत्रों का सामूहिक नाम मार्कंडेय था । इसकी तपस्या शुचि नामक अप्सरा ने भग की थी, जिससे उत्पन्न कन्या का हरण यमधर्म ने करना चाहा किन्तु इसके श्राप से वह काशी मे धर्म नामक नदी बना ।

६ कृशाश्व ऋषि एव धिषणा का पुत्र, एक ऋषि, जिसे पाताल में नागों से विष्णुपुराण का ज्ञान प्राप्त हुआ ।

वेदसीरस—स पु. [स. वेदशीर्ष] सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अन्तर्भाग मे स्थित एक स्थान । (पुराण)

वेदस्परस—स पु [स वेदस्पर्श] कबध ऋषि का देवदर्श नामक शिष्य एक आचार्य ।

वेदस्म्रति, वेदस्म्रती—स स्त्री [स वेदस्मृति] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वेदस्री—स पु [स वेदश्री] रैवत मन्वन्तर का एक प्राचीन ऋषि ।

वेदस्रुत—स. पु [स. वेदश्रुत] १ वशिष्ठ के पुत्र का नाम ।

२ रैवत मन्वन्तर का एक देव ।

वेदस्रुति—सं स्त्री. [स. वेदश्रुति] एक प्राचीन नदी का नाम । (पुराण)

वेदांग—सं पु [स. वेद+अङ्ग] १ वेदों के छः अगो मे से कोई एक अग ।

वि० वि०—उक्त छः अगो के नाम निम्नलिखित हैं—

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द ।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरच जाणं, धुरजटी ताव ऊच भावां मेर धीग । माश लोम रित्ती राम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सांमवेद वेदागा वीरावी सभूसीग ।

—हुकमीचद खिडियो

२ बारह आदित्यो मे से एक आदित्य ।

३ सूरज, सूर्य ।

स स्त्री —४ छः की सख्या । * (डिं. को.)

वि०—छ । * (डिं को)

वेदाणी—स स्त्री —१ दाख, द्राक्ष । (अ. मा.)

२ देखो 'वेनाणी' (रू. भे)

उ०—धका पार जोवता वार लग्गे वरणता, तडित सार अवतार अणी गुण धार अनता । वेदाणी तन मजि रजि आभीच लगन्नै, घडै सघर पुळ सज्जि धूप डवर वासन्नै । —रा. रू.

३ देखो 'विनाणी' (रू. भे)

वेदांत—स पु [स] १ चराचर विश्व को एक ब्रह्म एव अद्वैत मानने वाला एक दर्शन, जिसमे वेदो के चरम उद्देश्यो का वर्णन है ।

उ०—१ चितयौ रामचन्द्र री ओर, चित म्हारौ हो गयो चकोर । सब ब्रह्मग्यान, वेदात विसारयौ, तन मन धन वारयौ ।

—मी. रा.

उ०—२ सिखा फरहरती, उतरासगी धोती, हाथि पवीत्रीसळ, तूरीउ जनोइ, सिर भद्रिउं, तिलक वक्षारिउ, गायत्री साधनु, त्रिकाल-सध्याराधन, प्रभातस्नान, नित्यदान, वेद पढइ, वेदांत जाणइ, सिद्धात वखाणइ, देव तरपण, गुरुतरपण, रिखितरपण, पित्रतर-पण, इसिउ नैस्टिक ब्राह्मण । —व स

२ वैदिक सिद्धान्तो का निरूपण व विवेचनकर्ता शास्त्र ।

३ ७२ कलाओ मे से एक ।

रू. भे.—वेदात, विदात, विदाती, वेदत ।

वेदातसूत्र—स पु [स] वेदातशास्त्र का मूल माना जाने वाला महर्षि बादनारायण कृत सूत्र ।

वेदाती—वि० [स वेदातिन्] वेदात का श्रेष्ठ ज्ञाता, ब्रह्मवादी ।

उ०—राता विखै विकार सूं, आप सवारथी पर हती । "वील्ह" कहै एक वीनती, विसन टाळि वेदाती । —वील्होजी

रू भे.—वेदाती, मदाती ।

वेदांनो—स पु.—१ एक प्रकार का अमरूद विशेष जिसमे बीज नही होते ।

२ एक प्रकार अनार विशेष ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति किण भाति रा सरवत छाणीजै छै । घणा वेदानैं, दाडिम कुळी रा रस लीजै छै । सो घणी कालपी मिसरी रा भेळ सूं घणी एल्चो नै मिरचा रै भेळ वोह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पाणी सू ऊजळै गळणै फोळि फोळि फारीजै छै । —रा. सा स.

रू. भे —वेदांणो ।

वेदात्मा—स पु [स] १ सूरज, सूर्य ।

२ भगवान् विष्णु ।

वेदादि, वेदादिबीज—स पु प्रणव ओकार का मत्र ।

वेदाधिदेव—स पु [स] ब्राह्मण ।

वेदाधिप वेदाधिपत, वेदाधिपति, वेदाधिपती—स. पु [स वेदाधिप, वेदाधिपति] चारो वेदों के माने जाने वाले अधिपति ग्रह ।

वि० वि०—ऋग्वेद के बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मगल और अथर्ववेद के बुध अधिपति हैं

वेदार—स पु [स. वेदार] गिरगिट (हि को)

वेदारण—स पु [स] दक्षिण मे स्थित एक तीर्थस्थान ।

उ०—दिखण में भीम नदी भीम सकरी कहावै। क्रस्ण वेणी क्रस्णा कहावै। दक्षिण मे वेदारण तीरथ है । —बा दा ख्यात

वेदासवा, वेदास्वा—स स्त्री [स वेदाश्वा] भारत की एक नदी का नाम । (प्राचीन)

वेदि—वि [स वेदि] १ पडित, विद्वान् ।

२ देखो 'वेदी' (रू. भे)

वेदिउ वेदिग्रो—देखो 'वेदियौ' (रू भे)

उ०—१ रामा हवइ रुदु हसिइ, रूठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदिउ, तु घर मदफलि आवि । —मा का प्र.

उ०—२ रडती रहि रुदु हसइ, रूठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदिउ, तू मदिर माहि आवि । —मा का प्र

वेदिक—देखो वेदिक' (रू भे)

वेदिका—देखो वेदी' (अल्पा , रू भे.)

वेदिजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदिन—वि. [स वेदिन्] १ जानने वाला, ज्ञाता ।

२ विवाह करने वाला, दुल्हा ।

३ विद्वान्, पडित ।

स पु —१ पढाने वाला, शिक्षक ।

२ ब्राह्मण या ब्राह्मण की उपाधि ।

वेदियौ—स पु.—१ वेदो का ज्ञाता वेदज्ञ, पडित ।

उ०—वेदिया ब्राह्मण पाचसइ ए, वेद भणइ दरबारि । गच्छवासी जती सातसइ ए, सूझतउ ल्यइ आहार । —स कु

२ ज्योतिष विद्या जानने वाला, ज्योतिषी ।

३ विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला कर्मकाण्डी ब्राह्मण ।

उ०—१ सिद्धराव आप रै नाव नवौ वसायौ, नै पूरव सू वामण, उदीच वेदिया १००० तेडाइ नै गाव ५०० सू सिद्धपुर दीयौ, गाव ५०० सीहोर रा दीया । —नैणसी

उ०—२ आवइ अेक अगन्योत्तरी मली वेदिया व्यास । माई मीटि आपणी, मुनि मूकइ मसवास । —मा का. प्र.

३ देखो 'वैद्य' (अल्पा रू भे)

उ०—तु क्या करी है वेदिया, ओखद पाणी देह । हूरीया जिन वेदन दई, सारा सोय करेह । —अनुभववाणी

रू भे —वेदिउ, वेदिग्रो ।

वेदिल—देखो 'वेदिल' (रू भे)

उ०—तू गोरी मत वेदिल होय ओजी राज, इबकै जावा जद सागै ले चालाजी राज । झूटा ढोला झूठ न बोल ओ जी राज, सदाई जावौ थे सागै कदे न ले चालौ जी राज । —लो. गी.

वेदिसद—स पु [स. वेदिषद] बर्हिषद नामक महाराजा ।

वेदी—स स्त्री [स] विवाह आदि शुभ कार्यों एव यज्ञ करने के लिए साफ करके तैयार की हुई ऊची भूमि, मिट्टी का चबूतरा, चौकी ।

उ०—१ अब विवाह को आरभ भयौ । ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि बैठा छै जिसा साक्षात मूरतिवंत वेद । वेदी छै सु रतन जडित छै । नीला बास छै । अरजन (अरण ?) कहता रूपा का कलसा की वेह छै । —वेलि टी.

उ०—२ खट कास्टं निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर । विव पडित वेदी सग्रह, सोभत अगनि सनूर । —रा. रू

उ०—३ अति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जडित वेदी दुति राजै । दिव्य कास्ट खट जाति अदूखति, अगर कपूर घिरत जुत आहुति । —रा. रू.

उ०—४ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सू लै आवै । वेदी जिगा विवाह, साज सुभकार सजावै । ग्रह रेणुका राख, दात निरमळ कर निरखै । वासण बरतण रगड, ऊजळा घोरा हरखै ।

—दसदेव

२ वह अगूठी जिस पर किसी का नाम खोद कर अकित किया हुआ हो ।

३ वीणावादिनी सरस्वती ।

४ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

५ चबूतरा, चौकी ।

६ ब्रह्मा का नाम ।

७ रहस्य, गुप्त बात ।

८ ब्रह्मा की पत्नी ।

वि०—१ जानने वाला, ज्ञाता ।

उ०—तूं अध्यातम मत वेदी, तइ करमप्रक्रति सहु छेदी रे । ससार तरी तु बइठउ, सिवसदिर मा जइ पइठउ रे । —वि कु.

२ विद्वान, पडित ।

३ वेदो का, वेदो से सम्बन्धित ।

रू. भे —वेदि, वेदी, वेदि ।

अल्पा ,—वेदिका ।

वेदीजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदीतीरथ—स. पु [स वेदीतीर्थ] कुरुक्षेत्र का एक पुण्यक्षेत्र ।

वेदीसवद, वेदीसब्द—देखो 'वेधीसवद' (रू. भे.)

वेदू, वेद्दू—वि०—१ वेदज्ञ, वेदो का जानकार ।

२ विद्वान, पडित ।

स. पु —१ ब्रह्मा, विधि ।

उ०—वेदु जटधर चवे वीणाती, निरखं मधुवन तणो निवास ।
व्रजवासी कयळास वसावो, विसन अमां दीजै व्रजवास ।
—अग्यात

२ देखो 'वेद' (रू भे)

उ०—अनत तणी नहि अत नाम लालच रिणि नाहीं, रूप रेख निही रग कही हव का हिज काई । सास आस निहिवास वाणि नह खाण न वेदु, अनत नाम अकाज आति नह जाति न भेदु ।
—पी प्र

वेदेह—देखो 'विदेह' (रू भे)

वेदेही—देखो 'विदेही' (रू भे.)

उ०—पारब्रह्म राजा वसै, नगर वेदेही माहि । ग्यान कुंवर जुग राज पदवी, जुग जुग राज कराहि । —श्रीहरिरामजी महाराज

वेदोकत, वेदोकति, वेदोकती,वेदोकित वेदोक्त, वेवोक्ति, वेदोक्ती—स पु [स. वेदोक्त, वेदोक्ति] १ वेदवाक्य, वेदवचन ।

२ वेदो मे कहे गये मत्र ।

३ शास्त्रोक्त वचन ।

४ वेदो मे वर्णित विधि, वैदिक विधि ।

उ०—१ कजि उदकजळि सूंज कराए, जमण सिनान कियो नृप जाए । वेदोकत मत्रा सुण वांणी, जळ अजळि आपी जग जाणी ।
—रा रू.

उ०—२ ज्यौं रचना नृप ज्याग री, की वरणं कविराव । वेदोकत सासत्र वचन, पगि पगि लगन प्रभाव । —रा रू

उ०—३ अठार भार वनस्पती का पत्र फूल फळ, अडसठ तीरथ का निरमळाचार जळ । राजा 'जैसाह' कन्यावळ की सकळप लियो सो वेदोकति ससकार करि पार कियो । —रा रू

उ०—४ जू वेदवत भला व्राह्मण था । त्या वेद री वेदोकित विचारची वात पणि कही चाहीजै अर मन माहै भय उपनो छै । मत वसदेवजी बुरो मानै पणि जरूर हुई । —वेलि टी.

उ०—५ ब्रह्म-कवच पजर-विसन, रक्षा-राम उचार । वेदोक्ती सू व्राहमण, आसीसे अणपार । —रा. रू

रू. भे.—विदोगत, विदोगति, विदोगती, विदौगत, विदौगति, विदौगती,, वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती ।

वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा नारद करै वेदोगत चवरी होम कटक चढियो । फिरियो नही उवर मत फाटै, फेरा कमध इसा फिरियो ।
—वलू चापावत री गीत

उ०—२ वेदोगत धरम विचारी वेदविद, कपित चित लागा कहण । हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण । —वेलि

उ०—३ सेतरांम सभ्रमी, इळा ऊठियै कनूजा । जगत जात रिणछोड, कीध वेदोगति पूजा । चाम्रोडो परचाड, वहै लाखो फूलाणी । धारा धड ऊतारि, चाढि राठोडा पाणी । —गु. रू. ब.

उ०—४ सतिया 'आम' सहेत, दाग वेदोगति दीघा, केसरिया कमधजा, करै अत उच्छव कीधा । वड चापावत 'वलू', कमध 'भाऊ' कूंपावत, अवर भीच उमराव, रोस भरिया वहु रावत । —सू. प्र.

वेदोधनि, वेदोधनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू भे)

वेदोधर—स पु [स] ब्रह्मा विधि, विरचि ।

रू भे.—वेदोधर ।

वेदोधरम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे)

वेदोधुण, वेदोधुणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे)

उ० -१ आमना चत्र वेद प्रहमाणय विप्रय रुघ जुज्जर साम अथरवणय जपय । वेदोधुनि जै जै सब्दय वणय, गुजार रव अर पडसदय घणय । —गु. रू. व

उ०—२ दियै रिख स्त्र ग आहुति देवस, मेवा घ्रत होमैं असि सुमस । निघूम अगनि विप्रा मुखनाद वेदोधुनि ज्वाळा लागी वाद ।
— रामरासो

उ०—३ वधाई वाजा रा अहुग्रार, चत्र विध मगळ मगळचार । वेदोधुनि विप्र तणे चत्र विधि, सुर नर नाचै देव प्रसिधि ।
—रामरासो

वेदोध्रम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

उ०—वेदोध्रम रिख्या राम विचारि, चिआरै आस्रम ध्रम चिआर । दया द्रुम ध्रम रघुपति देखि, पदारथ च्यार छीया फळ पेखि ।
—रामरासो

वेदोध्वनि, वेदोध्वनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोपनिसद-स पु. [वेदोपनिषद] एक उपनिषद का नाम ।

वेदो—देखो 'वेदी' (रू भे)

उ०—तौ पिण स्वामीजी रात्रि मैं वखाण वाचे जठै वावेचा ढोलक बजावै । गावै । वखाण मैं विघ्न पाडै । जद भाया कह्यौ —महा-राज दूजी जायगा उतरौ। स्वामीजी बोल्या— खेतसीजी नव दिक्षित है सो देखा परीखह खमवा किसायक सैठा हैं । कितरायक दिना वेदी कियौ पछै वावेचा लातर गया । परयूखरण मैं इंद्रध्वज काढयौ । स्वामीजी रा मूढा आगै घणी वेला ऊभारही गावै बजावै तान करै । जद केइ स्रावक वावेचा सू वेदी करवा लागा । जद स्वामीजी कह्यौ—वेदी मत करौ । —भि द्र.

वेधगी—देखो 'वेधागी' (रू भे)

वेध-वि० [स] १ जो जानने के लिए हो, ज्ञातव्य ।

२ जो बताने या सिखाने के लिए हो ।

३ जो विवाह करने के लिए हो ।

स पु.—१ ग्रहों का किसी ऐसे स्थान अर्थात् नक्षत्र मे पहुँचने की क्रिया जहाँ से उसका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो। (ज्योतिष)
२ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहों नक्षत्रों, तारो आदि को देखने की क्रिया ।

३ तीव्र प्यास, बहुत तेज प्यास ।

उ०—एहरइ वेध न लागइ ए, आगइ ए अगि न अगि । अटकै ताहरै आसि सिइ जाइ सिद्द गिरिवर स्र गि । —जयसेखर सूरि

[स वेध] ४ छेदने की क्रिया, छेदन ।

५ घाव ।

६ छेद, छिद्र ।

[स वेधस्] ७ सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।

८ भगवान् विष्णु ।

९ शिव शकर, महादेव ।

१० सूरज, सूर्य ।

११ पडित, विद्वान ।

१२ दक्ष एव प्रजापति ।

१३ अर्क, आक, मदार ।

१४ यत्रादि से ग्रह, तारा, नक्षत्रादि को देखने की क्रिया ।

१५ आकर्षण, मोहकता ।

उ०—मुक्ति रमणि जाणी करी तै ऊपरि थयू चित्त । वेध लागउ तेहनइ घणउ, नाम समरइ रे तेहनू नित कि । —नळदवदती रास

१६ कळह, झगडा ।

उ०—१ कळि लागी मुगमळा ताम हसियौ जोगणपुर । वसू हुवै घर वेध, अगै विढिया पाडव-कुर । —गु. रू व.

उ०—२ वसो वधति बहुग्र, अतर गति गठि वेध उतपनौ । सजोगि अगनि पतगौ, प्रजळय अप मज्झेण । —गु. रू व

उ०—३ वोलै इण पर खान तहव्वर, धाण-मथाण हुवण दिल्ली घर । पख हिंदू भ्रम थया प्रमेसर, आदरयौ घर वेध अकव्वर ।
—रा. रू

उ०—४ चिगता उवेल पखरै चरित, रक्खै मेळ अमेळ रुख । वध वेध वळै खळ वास ज्यू, दाह जळै उर साह दुख । —रा रू.

१७ वैमनस्यता, शत्रुता ।

उ०—तिण दिन सोनगरा पिण राव रिडमल मारिया छै, धणलै वसता थका । तठा पछै मडोवर पायौ । सोभत राणै आपरी तरफ सु दीवीं छै । तठा पछै कितराहीक दिना राणै मोकळ नै सीसोदिया चाचै-मेरा वेध वाधियौ । —नैणसी

१८ देखो 'वेध' (रू भे)

उ०—१ पडै वेध कूरमजदै राण छळ 'पीपली', खळा सर बीज जिम वहै खवती । जागरण भडाभड छूट गोळा जठै, रुक झड डडै-हड रमै रवती । —वसराम रावळ

उ०—२ वकती मुख सावळ देव वळी, कळपै चारणी गत हस कळी । लग वेध अमीणिय धेन लए, दुलहा सुण देवल साद दए ।
—पा. प्र.

उ०—३ यु करता, दोनूं भाया आपस मैं दूदै अर भोज वडौ वेध पडियौ । ताहरा राव सुरजन वेटा वेऊ तेडिनै कह्यौ— थै मो ऊपर फिरिया । थे म्हारो कह्यौ न मानौ । म्हें राज सूं कोई काम नहीं ।
—नैणसी

उ०—४ बीता अधूरा वार पूरा वेध सूरा वच्चए, सेलै प्रहार धार सार मार मार मच्चए । वग्गा खडग्गै दुहूँ वग्गै काळरगै वीरय, अखरा उमगै दूर अगै चाव रगै चीरय । —रा. रू

रू भे.—वेधा, वेद, वेधस, वेधा, वेधि, वेधौ, वेह ।

वेध, वेधग्र - देखो 'वेधेग्र' (रू भे)

वेधक-वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला ।

२ जानकार, विद्वान, पडित ।

उ०—जै वेधक सहु वात ना रे, गुण रस जाणइ खास । मूरख पसु जाणइ नही रे, सेलडी कडव मिठास । वि कु

स. पु. [स. वेधक] १ धनिया ।

२ कपुर ।

३ एक नरक का नाम ।

वेधकारी-वि०—१ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—पढावै कुराणा तिका पढावै काजिया पूजा, सुराणा पुराणा धेन ब्रहमाणा सेव । राजा तणौ छत्रधारी खागधारी राजहस,

दाणवा सूं वेधकारी ग्रवत्तारी देव ।
—महाराणा स्रीजयसिंहजी (दूसरा) रो गीत

२ मारने वाला ।

३ सहार करने वाला, नाश करने वाला ।

वेधडक—देखो 'निधडक' ।

वेधणी—देखो 'वेधनी' (रू. भे.)

वेधणौ–वि० [स्त्री वेधणी] १ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

२ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

३ मारने वाला, वध करने वाला ।

वेधणौ, वेधवौ–क्रि. स [स वेधनम्] १ नाश करना, सहार करना ।

२ मारना ।

उ०—१ वडा खळ वेधत साबळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कपि लाह । जुडे धज सेल वहै जवनेस, दखै रवि तांम झोका 'मुकदेस' ।
—सू. प्र

उ०–२ वानरपति विख्यात वर, वेध्यु जाणी वालि । सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइ तिणि तालि । —मा. का प्र.

३ चीरना, फाडना ।

४ छेद करना, छेदना, भेदना ।

उ०—१ सिलहाण ग्रगाण वेधांण सरां, पखराण केकाण ग्रमीच परा । ग्रति लोण उफाण धराण धसी, जगवल्ल उगाण फनाण जिसी । —सू प्र.

उ०—२ कपि कटक हूचक कटक धंतक, उरक वेधक सरक ग्रंतक । ग्रतक तक भड भचक इक इक, पढि जरक मुद गरक पासक ।
—सू. प्र.

उ०—३ वे वे कवाण भूथाण वध, ग्रसमांन छिवत रोसाण ग्रध । चख मछी रध छेदे चकास, उडता विहग वेधै ग्रकास । —वि. स

५ युद्ध करना, सग्राम करना ।

६ तोडना ।

७ ज्योतिष के ग्रहो का किसी ऐसे स्थान मे पहूचना जहा से उनका किसी ग्रन्य ग्रह मे सामना होता हो ।

उ०—१ गजरा नवग्रही प्रोयिया ग्रोचै, वळै वळै विधि विधि वळित । हसत नखित्र वेधियौ हिमकरि, ग्ररघ कमळ ग्रलि ग्रावरित ।
—वेलि

उ०—२ दूलह सधीर विच दीपियौ, हीर जिहा गुण उज्जळा । रिख ग्र द सतै किर वेधियो बीज चद्र वाधै कळा । —रा. रू.

८ यत्रो ग्रादि की सहायता से ग्रहो, नक्षत्रो, ग्रौर तारो ग्रादि को देखना ।

वेधणहार, हारौ (हारी), वेधणियौ—वि० ।

वेधिग्रोडो, वेधियोडो, वेध्योडो—भू० का० कृ० ।

वेधीजणो, वेधीजबौ—कर्म वा० ।

वेधणौ, वेधवौ, वेदणौ, वेदबौ, वेहणौ, वेहवौ—रू. भे. ।

वेधनी–स स्त्री. [स.] १ हाथी के कानो को वेधने का एक ग्रोजार विशेष ।

२ मोती ग्रादि वेधने का उपकरण विशेष ।

३ ग्रकुश ।

रू. भे.—वेधणी ।

वेधय, वेधयण—देखो 'वेधेग्र' (रू. भे.)

वेधरम—१ देखो 'विधरम्म' (रू. भे)

२ देखो 'ग्रधरम' (रू भे)

वेधस–स. पु [स वेधस] १ हथेली के ग्रगूठे की जड के पास का स्थान जिसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं ।

२ ग्रगिराकुलोत्पन्न एक मत्रकार ।

३ देखो 'वेध' (रू भे)

रू भे —वेधस ।

वेधसी–स स्त्री [स] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वेधागी–स पु [स] योद्धा, वीर ।

रू. भे.—वेध गी ।

वेधाणौ—देखो 'वेध' (१, २) (रू. भे)

उ०—राजा क्रूलरि राणिया, सोहै ईही भति । किरि वेधांणै किरतिया, चदो पूनम रति । —गु. रू वं.

वेधा–स पु [स] १ दक्ष ग्रादि प्रजापति । २ राजा हरिश्चन्द्र का पिता । ३ ग्रगद के एक पुत्र का नाम ।

४ देखो 'वेध' (रू. भे) (नां मा , ह. ना मा)

वेधाता—देखो 'विधाता' (रू. भे)

वेधातिथ वेधातिथि–स. स्त्री [स. वेधातिथि] वह तिथि, जिस दिन सूर्यादि नक्षत्रों एव लग्न का नक्षत्र एक ही रेखा ग्रर्थात् एक ही सीध मे हो ।

वि० वि०—सूर्यादि नक्षत्रो एव लग्न के नक्षत्र के एक ही सीध मे होने पर वेध होता है इसमे विवाह वर्ज्य है ।

वेधाधि, वेधाधी–स. स्त्री —सरस्वती, भारती ।

रू. भे —वेधाधी ।

वेधि—देखो 'वेध' (रू भे)

उ०—भमरडउ मरिवा ग्रणबीहतउ, पसरि पइसइ केतकिई हतउ, कठिन कटक कोडि कुटीरडइ, पडिउ वेधि पछइ पुणि ग्रारडइ ।
—सालिसूरि

वेधित—देखो 'वेधियोडौ'।

वेधियोडौ-भू. का. कृ —१ नाश किया हुआ, सहार किया हुआ. २ मारा हुआ ३ चीरा हुआ, फाडा हुआ. ४ छेद किया हुआ, छेदा हुआ, भेदा हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ ६ तोडा हुआ ७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान मे पहुचा, हुआ होना कि जहा से उनका किसी अन्य ग्रह से सामना हुआ हो. ८ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहो, नक्षत्रो, तारो आदि को देखा हुआ।

वेधौ-वि० [स वेधस्] १ पडित, विद्वान। (ह ना मा.)

२ शत्रु, दुश्मन। (ह ना. मा)

उ०—दत कवि पळै मिळै चित दुनिया, वेधो जळै जवास विध। खेधी खेह वळै छळ लागा, सोभा मिळै अखाड सिव।

—महाराजा मानसिंघ रो गीत

३ सयोगी जन।

उ०—करहा, तू मनि रूग्रडउ, वेध्यां करइ विछोह। ग्रजइ कुग्रारउ वप्पडा, नही ज कामिण मोह। —ढो मा.

४ युद्ध करने वाला, सग्राम करने वाला।

वेधीलो-वि० [स वेध+रा प्र इलो] युद्ध करने वाला, वीर वहादुर, योद्धा।

उ०—वागड रै काठ वहुवाण भड किवाड रजपूत वेधीला छै सु धणिवा रै नै वहुवाणा रै रस थोडा दिन हुवै छै। तद मारवाड रा रजपूता नू वडा वडा पटा देनै सदा वागड रै राजथान वाम राखै छै। —नैणसी

वेधीसवद, वेधीसव्द-स पु [स शव्द+वेधी] अर्जुन। (ह ना मा)

रू भे —वेदीसवद वेदीसव्द।

वेवेग्र, वेवेग्रण, वेधेय, वेधेयण-वि [स वेधेय] मूर्ख नासमझ, वेवकूफ। (ग्र. मा.)

रू. भे —वेधग्र, वेधग्रण, वेधय वेधयण।

वेधौ-स पु —१ शका सशय सदेह।

उ०—हुग्रो राम दुजराम, व्रह्मा रै मन मा वेधौ। फरसी साठी फरसि, खरी खत्रिया सिर खेधौ। —पी ग्रं

२ देखो 'वेदौ' (रू भे)

उ०—राजा ईग्रा री वेधो सुणे ग्रवोलीग्र रह्या। तरै सारी ही दन उदमाद सूं काट साफ रै वखत सवागढ ग्राय, इग्रा ग्रहु जणा सहत दाखल हुग्रा।

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

३ देखो 'वेध' (रू भे)

उ०—वेधो दूंद न वीसरै, 'चद' तणो हरनाथ। पथ ग्रळगो लघता, लारालगो साथ। —रा. रू

वेध्या-स. पु [स विधाता] व्रह्मा, विरचि।

उ०—वेध्याइ याह्नि वदन ज रचिळ, त्याहारि सार इहू नूं हरिळं। तर लीधी ताहा खाण थई लि, मुख मनोहर करिळ। —नळाख्यान

वेन-स पु [स] १ चाक्षुष मनु एव नड्वला के वशज महाराज ग्रग ग्रौर सुनीथा (जो कि मृत्यु ग्रधर्म की मानस पुत्री थी) के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो सूर्यवशी राजा प्रथु का पिता था।

वि० वि०—कही-कही पर इसे तेईसवा वेदव्यास एव कर्दम के पुत्र ग्रनग का पुत्र भी कहा गया है। इसका पालन-पोषण इसके मातामह के घर हुग्रा था। यह वचपन मे ही दुष्ट एव दुष्टप्रकृति के स्वभाव वाला था ग्रत. वच्चो व जानवरों का गला दवा कर हत्याऐं खूब करता था। इसी क्रूरता के कारण इसके पिताजी ग्रग देश छोड कर चले गये। तत्पश्चात् इसे राज्यपद प्राप्त हुग्रा ग्रौर दुष्टता ग्रादि मे भी ग्रत्यधिक वृद्धि हुई। इसी कारण से ऋषियो ने कुशत्रण से इसका वध कर दिया किन्तु ग्रनग के दूसरी सन्तान न होने के कारण राज्य सिंहासन खाली रहता था ग्रत राज्य मे ग्रातक वढा। तव ऋषियो ने इसकी जाघ को मथा, तव एक श्यामवर्ण नाटे कद का एव कुरूप व्यक्ति निकला जिसे ऋषियो ने निषाद ग्रर्थात् वैठने के लिए कहा इसलिए इसका नाम निषाद ही रखा गया। फिर इसके दोनो हाथो का मथन किया गया, जिनसे एक स्त्री एव पुरुष निकले। पुरुष को (जिसका नाम प्रथु रखा गया था) विष्णु ग्रवतार एव स्त्री को लक्ष्मी का ग्रवतार माना गया।

२ वैवस्त मनु के दस पुत्रो मे से एक।

३ देखो 'वहन' (रू. भे)

रू. भे —वेंण, वेन, वेंण।

वेनड, वेनडी—देखो 'वहन' (ग्रल्पा., रू भे.)

वेनट—देखो 'वेनट' (रू भे)

वेनतनय-स पु [स वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड। (ना. डिं. को) [स वेनतनय] २ सूर्यवशी राजा पृथु।

वेनतियाइत-स पु [स वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड।

वेनती—देखो 'विनती' (रू भे.)

उ०—१ कुवर तो ह्वालण नै तयार हुवो छै। ग्रवै कुंवर ग्राप री साथ तैयार कर नै राजा सौ वेनती कीवी, कही, "जो माहाराज, मनै मेलजै। हु साह नु पण लै ग्राईस ग्रर समुद्र पण देख ग्राईस।'
— वीजड वीजोगण री वात

उ०—२ ग्रर हू तो वीजै काम ग्राया छा। ताहुरा जैत कहियो 'रावजी कही जिम थाहरी वेनती राजा सौं करा। इतरा दिन किम

कहियो नही ?' ताहरा राव कहिया, 'जु रांणी वहड कहायो छै, नररसघ री सगाई करो तो था कनै रांहणी आवै। राजा सौं आ वीनती करो।' —राजा नरसिंघ री वात

वेनवा—देखो 'वेनवा' (रू भे)

वेंनसीव—देखो 'वेनसीव' (रू भे)

वेनसुत–सं पु [स] अग एव सुनीथा के गर्भ से उत्पन्न वेन राजा का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा।
रू भे—वेरगसुत, वेणसुत।

वेनांणी—१ देखो 'वेनांणी' (रू भे.)

उ०—राजद्वार कोठार, जीण साला काढीजै, जरद जरद्दी घडै, लोह लोहै कूटीजै। वेनांणी वेगला, वाढ घालै केवाणां, कूत वांण कीजति, अणी तीखा धुरसाणां। —गु रू. व.

उ०—२ रांमण ताड सराड छड अघसला रेही, दीप दिसावरि नीपनी वेनांणी गेही। सुध गज-वेल हलूळ फळ महिडभज नेही, 'अचळं' खान घमोडिया उणहारी ऐही। —मालो सादू

२ देखो 'विनाणी' (रू. भे)

वेनी—देखो 'वेणी' (रू. भे.)

वेनियो–स. पु—वबूल की पतली टहनियों की छाल।

वेनीत—देखो 'वेनीत' (रू भे.)

वेनु—देखो 'वेणु' (रू भे)

वेनोई—देखो 'वहनोई' (रू भे)

वेपतरी—देखो 'वेपतरी' (रू. भे)

वेपरवा—देखो 'वेपरवाह' (रू भे)

वेपरवाई—देखो वेपरवाही' (रू. भे)

उ०—वेपरवाई पतसाह, मनवा मतवाळा। सतगुरु हेरदै सवद का, भर जोर पयाळा। —केसोदास गाडण

वेपरवाह—देखो 'वेपरवाह' (रू. भे)

वेपरवाही—देखो 'वेपरवाही' (रू. भे.)

वेपाक—देखो 'वेपाक' (रू भे)

वेपार—१ देखो 'व्यापार' (रू भे)

२ देखो वेपार' (रू भे)

उ०—हुए हवक सूरा उठी मेर हवका, करै भूत वेताळ चडी किलक्का। करै जोर प्राहार वेपार कुतां, दियं जुद्ध जांणे अगू सिभु दूतां। —रा रू

वेपारह—देखो 'वेपारह' (रू भे.)

वेपारहो, वेपारियो—देखो वेपारियो' (रू. भे)

वेपारी—१ देखो 'वोपारी' (रू भे,)

२ देखो 'व्यापारी' (रू भे)

वेपोड, वेपोर—देख वेपोड' (रू भे)

उ०—किरपण माया मारणी, सूम दुख सहै सरीर। जनहरिया हरि नाव धन, पाया सु वेपोर। —अनुभववाणी

वेपुड़ि वेपुडी—देखो 'वेपुडी' (रू भे.)

उ० सु मेघ को आडम्ब जाणे जोगिणी आवी छै। रत वहता लोही वरसती वेपुडी कहता वादल की पणि वेपुडी वहै छै। सु दोवडा वादळ आम्हा साम्हा हूया। —वेलि टी.

वेपूठ–वि०—विमुख।

उ०—जनहरिया ससार में सुख दुख दोऊ झूठ। जव तै सुख भर दुख गिनै, तव हरि तै वेपूठ। —अनुभववाणी

वेपोहर—देखो वेपोहर' (रू भे)

वेपोहरी—देखो वेपोहरी' (रू भे)

वेफरवाण, वेफरवांणी–वि० [फा वे+फर्मान] विना आज्ञा, विना हुक्म, विना आदेश।

उ०—हीदू घाव करै अजीया सिर, हरि सु वेफरवांणी। खावै स्वाद करै मुख सेती, जीव दया नही जाणी। —अनुभववाणी

वेफाड, वेफाड—देखो वेफाड' (रू भे)

उ०—करै एक एका धकै जन्न कन्न, पडै हाथ जाणे झडै ताडपत्र। किता सीस वेफाड चौफाड केता, जपै रूप लेखै कवी ओप जेता। —रा रू

वेफार—देखो वेपोहर (रू भे)

वेफारी—देखो 'वेपोहरी' (रू. भे)

वेफिकर—देखो वेफिक्र' (रू भे.)

उ०—मन अकबर मजबूत, फूट हीदवा वेफिकर। काफर कोम कपूत, पकडू राण प्रतापसी। —दुरसो आढो

वेफिकरी—देखो 'वेफिकी' (रू भे)

वेफिकरो, वेफिक्र—देखो 'वेफिक्र' (रू भे)

वेफिक्री—देखो वेफिक्री' (रू भे)

वेवगत—देखो वेवक्त' (रू भे)

वेवस—देखो 'विवस' (रू भे)

वेवसो—देखो 'वेउमो' (रू भे)

वेवाण—देखो 'वेवांण' (रू भे)

वेवार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

वेवाह—१ देखो 'वेवाह' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (रू भे)

वेबुद्धि, वेबुद्धी—देखो 'वेबुद्धि' (रू भे)

वेबुनियाद—देखो 'वेबुनियाद' (रू भे)

वेभव—देखो 'वैभव' (रू भे.)

वेभू—देखो 'वैभव' (रू भे)

वेभाव—देखो वेभाव' (रू भे.)

वेम–स पु [स] १ वेग, जोश।

उ०—ताहरा पछीत खोदणीं वेठै नीचीत थकी खोदै छै। खोदतै खोदतै गली की जिसडी मैं माथौ मावै। खीवौ तरवार काढिनै बैठौ छै। माथौ ग्राघौ करै माथै मैं तरवार री धूं। इण ग्रागुली घाली करि ने जोयौ। जोइनै खणोतरा रै माथै हाडी देइ नै ग्रावी पीयौ। तितरै खीवं वेम भरी नै तरवार वाही सु हाडी उपरा वाजी। सु हाडी फूटि गई। —चौवोली

२ बार, दफा, मर्तबा।

३ देखो 'वेम' (रू भे)

उ०—ताहरा सागमरावजी ग्रमल कर घोडी ऊपर चढिया, ताहरा खुरी कीवी। घोडी हुती सु नही। ताहरा सागमरावजी विसनदास नूं कहायौ। कह्यौ—घोडी व्याई। कू ड कियौ? वेम उरहो मेल्हो। ताहरा विसनदास सागमरावजी नू कहायौ—थै वेहनेई छौ तीयै कारण ग्रामगौ कियौ। वेम देवा नही। ताहरा सागमराव मानी नही नै लडण नू चढियौ। ताहरा ग्राचारण सागमरावजी नू कहियौ—जु राज! चढीजै नहीं। घोडी रो वेम हू लै ग्राईस। —नैणसी

वे'म—देखो 'वहम' (रू भे)

उ०—१ ग्राडा रै ग्रागळ जडनै वेटी होळै होळै कंवण लागी—म्हने खखरडी माथै ग्रेक मोहर चमकती दीसी। पण सामी ई वै लोग निपटने ग्रावता हा। जे लुळनै मोहर उठावूं तो वाने तुरत वे'म व्हैतो। —फुलवाडी

उ०—२ पण म्हारा करार री निवळा सेठा नै काई वेगौ! ग्रगाह ग्रळगा वगाय नोडिया मैं जरू करघोडी गाठडी वारै काढी। वाणिया री जात किसी चात्र ग! कंडा पूर में हीरा-मोती लुकाय राखै। कोई वे'म करै तो करै इज कीकर! —फुलवाडी

उ०—३ ग्रर ग्रठी हथ-ळेवा री वगत वीदराजा नै ग्रो वे'म व्हियौ के हाथ री ठौड कठैई गुलाव री कवळी फूल तो नी ग्रायग्यौ। वीदणी री खुली ग्राख्या रै साम्ही सपना री कावड घूमण लागी जकी घूमती ई गी। —फुलवाडी

वेमजी—देखो 'वेमजी' (रू भे)

वेमन—देखो 'वेमन' (रू भे)

वेमाणिक, वेमांणिय, वेमाणी, वेमाणीक, वेमाणीय, वेमानिक—देखो 'वैमानिक' (रू भे)

उ० १ भुवनपति वीस इद्र मिल्याजी, सोलह व्यतर सार। जोइ सहुदस वेमाणिय जुडघाजी, चौसठ इद्र सुविचार। —वृस्त

उ० २ —ग्रसुरादिक दस होय वाण व्यतरिया ग्रट्ठ, जोइस पच वेमाणिय दुविहा मुत्तं दिट्ठ। पनरै भेदै सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनुमानादिक हिव एहनो कहिसूं ग्रधिकार। —वृस्त.

वेमाता, वे'माता–स स्त्री [स विधाता] १ विधाता, ब्रह्मा।

[सं वृद्धिकामाता] बच्चे के जन्म के बाद छठी रात को भाग्यलेख लिखने वाली एव बच्चे को स्वरूप प्रदान करने वाली एक प्रकार की काल्पनिक देवी।

उ०—१ सेठा रै वेटा री हूवोहूव ग्राप सू उणियारी मिळै। वेमाता री कुदरत। खुद सेठ देखता तो ई ग्रोळख नी सकता। ग्रवै वाता करघा सावळ ठा पडगी कै उणियारी तो ग्रवस मिळै पण ग्राप दूजा हौ। —फुलवाडी

उ०—२ वेमाता ई माव लखणा वायरी वीनै कै रूप ग्रर रीस नै ग्रेकठ क्यूं करी। सगळा रूप री जाणौ मठ मार दियौ। राणीजी कना सू पग नी पकडाऊ तो म्हैं राजा री कवर नी। —फुलवाडी

उ०—३ ग्रर परतख दीखणा मैं दस वरसा जितौ लाठौ। वेमाता ग्रणूती निकमी वेळा मैं ग्रणूता कोड-मोद सू घडचौ। खाथै रळ-कंतौ काळै केसा री चौकरणी भडूली ग्रेडी लागती जाणै वरसा लग मकराणा री सिलाडी माथै घोट्योडी काजळ घटा वणनै लूमै। —फुलवाडी

उ०—४ वेमाता नै रीस तो घणी ई ग्राई। पण जोर काई करती लाचार होयनै जवाव दियौ—म्हे सेठ रा वेटा रै जनम रा ग्राक लिखण वास्ते ग्राई हू। वेगौ ग्रागळ खोल, वेळा टळै। —फुलवाडी

उ० ५ वेमाता ग्राखतो पडनी थकी बोली—म्हैं कोई ठाली नी भटकिया करू। छटी री रात म्हैं सेठा रै वेटा रा भाग मैं ग्राखर घालण सारू ग्राई हू। —फुलवाडी

वि० वि०—लोक में 'वेमाता' शब्द ग्रति प्रचलित है। जिसका प्रयोग बच्चे के जन्म का विधान करने वाली देवी तथा जन्म की छठी रात बच्चे की भाग्य-लिपि लिखने वाली एक मातृ-देवी के ग्रर्थ मे किया जाता है। इस वेमाता (रूपा०-वीमाता) शब्द की व्युत्पत्ति स वृद्धिकामाता' से हुई है। इस सम्बन्ध मे डा० वासुदेव शरण ग्रग्रवाल का ग्रभिमत ज्ञातव्य है—

'ग्रार्यवती ग्रौर ग्रार्यवृद्धा देवी एकही होनी चाहिए। यह देवी कौनसी थी, इसके सम्बन्ध में यह सम्भावना प्रतीत होती है कि जिसे

आज-कल लोक मे 'विहाई' (वृद्धार्या) या 'वीमाता' (वृद्धिकामाता) कहते हैं, वही 'आर्यवृद्धा' होनी चाहिए। लोक में विश्वास है कि वेमाता बच्चे को देखने के लिए छठी पूजन की रात मे अवश्य आती है और उसके भाग्य का शुभाशुभ फल अवश्य लिख जाती है। इसी लिए उस रात जागरण आवश्यक माना जाता है। उसे ही षष्ठी जागरण कहते हैं"

इससे स्पष्ट है कि 'वेमाता' (वृद्धिकामाता) और 'विहाई' (वृद्धार्या) एक ही देवी के नाम हैं, जसा कि विद्वान डा० अग्रवाल ने सुझाया है। दोनो का व्युत्पत्ति क्रम इस प्रकार रहा होगा—

वेमाता=वृद्धिकामाता=विद्धिआमाता =विहिआमाता=विही-माता=बिईमाता=बीमाता=वेमाता।

विहाई=वृद्धार्या=वृद्धार्यिका=विदाइया=वीधाइया=वीहाई=विहाई। आर्य वृद्धा का उल्लेख कादम्बरी में तथा आर्या व वृद्धा के नाम से वन पर्व मे भी आया है।

रू भे —वेमाता, वेहमाता, विहाई विहाईमाता, वेहमाता, वॅ'माता वॅमाता, वॅह।

वेमार—देखो 'बीमार' (रू भे.)

उ०—पातसाह महमद वडो धरमात्मा हुवो। औ ओखदा री हाट ४ मडावी, वैद्य राखिया। वेमारां नूं दारू धरम री बीजे। रोगिया नूं खावा नूं दीजै ओढण विछावण दीजै। — नैणसी

वेमारी—देखो 'बीमारी' (रू भे)

वेमालूम—देखो 'बेमालूम' (रू भे)

वेमिळावट—देखो 'बेमिळावट' (रू भे)

वेमुख—१ देखो 'बेमुख' (रू भे)

२ देखो 'विमुख' (रू भे)

उ०—१ हरिया मास मसाण है, भूत राकसी खाण। सोई भखै धिनादमी, वेमुख वडा अजाण। —अनुभववाणी

उ०—२ जाग्या सोई जाणियै, हरिया हरि के हेत। हरि वेमुख सु जागिया, ता मुख पडसी रेत। —अनुभववाणी

उ०—३ गुर दरसन परसन नही, हरिया वेमुख जानि। अधा नर वेवै नही, पीपल बाधी तानि। —अनुभववाणी

उ०—४ हरीया करणी क्या करै, गुर सुं वेमुख थाय। तोगे तूटी वरत ज्यूं, खवडखत को जाय। —अनुभववाणी

उ०—५ वाकु आर पार नही कोई रह्या राम सु वेमुख सोई ब्रह्म विचार भया जन पारा, और रह्या वार का वारा।

—अनुभववाणी

वेमू—स स्त्री—वह गाय भैंस आदि पशु जो प्रसव देने वाले हो।

वेय—१ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म वेय उच्चरैय, गीत तुबरु गावै, रभा अवसर रमैं, वीण सरसत्ती बजावै। सिव अवलोकण करै, इद्र सिर चम्मर ढाळै। व्यास उकति वरनवै, पाउ गगा पखाळै। —अलुनाथ कवियो

२ देखो 'वेय' (रू भे)

वेयकाल—स पु [स वेद काल] भोगने का समय। (जैन)

वेयड्ढ, वेयड्ढह, वेयड्ढ—स. पु,—एक पर्वत का नाम।

उ०—१ अरजुनु बोलइ घरु भडारी, पाछइ आवइ लउ उपगारि। खेचरु बोलइ सांभलि सामि, गिरि वेयड्ढ सुणीइ नामि।

—सालिभद्रसूरि

उ०—२ गिरि वेयड्ढह तलि गयऊ, पणमिउ नाभि मल्हारु। निव मणिचूडह राजु दिइ, पडिलउ एउ उपकारु। —सालिभद्रसूरि

वेयण, वेयणा, वेयणि, वेयणी—१ देखो 'वचन' (रू भे.)

२ देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ दस मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसति। —वेलि

उ०—२ ए जु भमर बोलिवा नै मणणाट करै छै। सु मानु गरभवती व्याकुळता जणावै छै। जब वेयण लागै छै प्रसूत हुइवा की तव गरभवती कूजै छै। विलाप करै छै। सु ए कोकिला बोलै। सोई मानू वनसपती नै वेयणलागी छै। अर कूजै छै। ईंहि समै वनसपती वसत जायो। —वेलि टी०

उ०—३ लाख जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तणा दुक्ख तिणि न कहाइ। नरय वेयण जो कहइ विचार, केवल नाणी न जाइ पारि। —वस्तिग

वेयरणी—देखो 'वैतरणी (रू भे) (जैन)

वेयविय, वेयविय, वेयवी—देखो 'वेदविद' (रू भे) (जैन)

वेयहद, वेयहदी—देखो 'वेहद' (रू भे)

उ०—न को जोग जुगता न को जत जोखा, न को सात सुख न को दसदोखा। न को मनवाचा न को स्वाल सबदी, न को हृदि माही न को वेयहदी। —अनुभववाणी

२ देखो 'वेहद' (रू. भे.)

वेयाळ, वेयाल—१ देखो 'वेताळ' (रू. भे)

२ देखो 'वेताळ' (रू भे.)

३ देखो 'व्याळ' (रू भे)

वेयावच, वेयावच्च—वि० [स वैयावृत्य] १ वयोवृद्ध, गुणवृद्ध।

२ देखो 'वैयावच्च' (रू. भे.)

उ०—१ वेयावच दस प्रकारनी, करजो चित्त लगाय। कायक रसायण ऊपजे, दुख दालिद्र दूरै जाय। —जयवाणी

उ०—२ पीठी न करावै अग, ग्रही वेयावच सग। करै करावै नहीं ए, जात न जणावै सही'ए। —जयवाणी

उ०—३ ससार तारण दु कावली, चवथी व्रत देह दस्तार रे। अखोड आविल निम जाणवी, कल (इ) य वेयावच्च सार रे। —कवि कुसललाभ

उ०—४ भली साधवी यसोभद्रा, पालइ पचाचार रे। विनय वेयावच करइ वारु गिणइ गुरुणी नी कार रे। —स कु.

उ०—५ आपणा जाणपणा नै आगलै, गिणु न केहू नै गान। विनय वेयावच्च नहींय विवेकना, अति मोटौ अभिमान। —ध० व० ग्रं

वेर-स स्त्री [स. वेर] १ शरीर, बदन, देह।

२ शत्रु, दुश्मन।

३ विलम्ब, देर।

उ०—१ लसकर पिण अलघो गयो, जूझण वेला जाणि। वडै वेर हूम कु भई, वादल कहैं ए वाणी। —प. च चौ

उ०—२ माढा रचनै मेलियौ, वीरम नै नाळेर। परणीजण आयजियौ, वीचै मत कीजौ वेर। —वी मा.

४ देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०-१ केइ वड पूरण काज कर, फूलै नह मन फेर। 'पातल' धीर गभीरपण, भल रखण इण वेर। —जैतदान वारहठ

उ०—२ वणि होळिका थंभभ्भुय वेरा, सिरपर वह झेलूं समसेरा। धार विहार श्रणी घट धीरग, चुख-चुख होय पडूं रिण चीरग। —सू प्र.

उ०—३ 'वाघा' हर नाहर जेण वेर, धासाहर थाहर लीध घेर। घुव तोप सघण अवाळ श्रीह, वहसिया चाळ वाधण अवीह। —वि. स.

उ०—४ इम परखै राजा आवेरी, आवै हित घर वेर अवेरी। 'अजमळ' तेड 'दुरग' 'आसांणी', कथ धारी मेटण तुरकाणी। —रा० रू.

५ देखो 'वोर' (रू भे)

६ देखो 'वैर' (रू. भे)

७ देखो 'वैर' (रू भे)

उ०—तउ ईह ना मौलि तणा पटउला, हेला वलउ कांइ करउ अवेला। जाउ पराए सवि मू पसाइ, मारउ न वेरइ नृप नइ उपाइ। —सालिसूरि

रू. भे.—वेर।

वेरक—१ देखो 'बेरक' (रू. भे)

२ देखो 'वेरक' (रू. भे.)

३ देखो 'वैरक' (रू. भे)

वेरजा-वि०—विना इच्छा एव विना स्वीकृति, स्वीकृति रहित।

उ०—सुख सुवायत करी, दुख दुवायत पासै टाळी। तेरी रजा करी सैतान की वेरजा करी. आई वलाय दफै करी। —नी. प्र.

वेरजो-स. पु—चीढ वृक्ष पर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का गोंद विशेष, गधविरोजा। (अमरत)

वेरणी-सं. पु—बढई का लोहे, लकडी आदि मे छेद करने का औजार विशेष।

वि०—१ चीरने वाला, काटने वाला।

२ देखो 'वारणी' (रू भे)

वेरणौ, वेरवौ—देखो 'वैरणौ, वेरवौ' (रू. भे.)

उ०—वारा दरवार मैं ई' उणरै खोजा नीव अर वडला निजर सू ई पैला ऊचा वधग्या। राजाजी विना सोच्यांई हुयमारा नै हुकम दियो कै उणरा दोनूं पग वाढ वेरा में वरकाय दो। दुस्टी करोतिया सू पग वेरण ढूका। —फुलवाडी

वेरणहार, हारौ (हारी), वेरणियौ —वि०।

वेरिग्रोडौ, वेरियोडौ, वेरयोडौ—भू० का० कृ०।

वेरीजणौ, वेरीजवौ—कर्म वा०।

वेरतन-स. पु [स वैरीतनय] वैरी, दुश्मन, शत्रु। (व. भा)

वेरपरळय, वेरपरळै—देखो 'वेरप्रळै' (रू. भे)

वेरपरवाह—देखो 'वेपरवाह' (रू. भे)

वेरपरवाही—देखो 'वेपरवाही' (रू. भे)

वेरप्रळय, वेरप्रळै-सं पु—प्रलयकाल, कल्पांत।

उ०—सारा 'चापा' 'जोधं' सग, 'ऊदा' मिळिया आय। उलटिया अजमेर दिस, वेरप्रळै करवाय। —रा० रू.

वेरमण-स पु—त्यागने की क्रिया, त्याग।

वेरवदा-स स्त्री.—राठोडो की प्रसिद्ध तेरह शाखाओ मे से एक शाखा। (वा. दा ख्यात)

वेरह—देखो 'विरह' (रू. भे)

उ०—तठा उपराति राजान सिलामति मरद रित रै समै री पूनिम री चद्रमा सोळै कळा लिया सपूरण निरमळी रैण री उजळी जादणी रै किरण करि नै हस नु हसणी देखै नहीं'ने हसणी हस देखै नहीं छै। मिळि सकता नही छै। तारा वार-वार माही माहे वोलि वोलि नै वेरह गमावता छै। —रा सा. स.

वेरहडी-स पु —घोडो का एक प्रकार का रोग विशेष जो घोडे के अगले पैर की नली मे होता है। (शा हो)

वेरहम—देखो 'वेरहम' (रू भे)

वेरहमी—देखो वेरहमी' (रू भे)

वेरहर, वेरहरि—देखो 'वेरहर' (रू. भे)

उ०—आदरत ओट सळ चाल अडिया अडर, दुफळ खग चाल संलोट देता। वेरहर जठै पगवाळ खग वजावै, कठै खुसियाळ खुसियाळ कैता। —तिलोकदान बारहठ

वेराण—१ देखो 'वीराण' (रू भे)

२ देखो 'वीरान' (रू भे)

वेरांणयो—देखो वीरान' (मह., रू भे)

वेरान—१ देखो 'वीराण' (रू. भे)

२ देखो 'वीरान' (रू. भे.)

उ०—नरै राव सूजा नू लिख नै घणी दिलासा दे वासियो। नरो आप वसियो तिण दिन ठोड वोहोत वेरान सु नरा रो मन टिकै नही। —नैणसी

वेरा—देखो 'वेळा' (रू भे)

वेराई—देखो 'वैराई (रू भे.)

वेराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे)

उ०—वचन ए भल अविया रे, सरिया वांछित काम। जाति समरण ग्यान थी रे, आयो वेराग वेऊ ताम के। —जयवाणी

वेरागढ—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—हीरा थे लाईजो वेरागढ देस रा म्हांरा राज, मोती थे लाईजो बनडी रै हार जडायजो, रे तोरे आयजो। —लो गी.

वेरागर-स. पु.—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—सदा हुवै मोती सागरा, हीरा वेरागर होय।

—सरसती भडार

२ देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

वेरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे)

उ०—साभल! है राणी राजा नै करडा न वोलियै, निसक हुई जै नाय। इसी वेरागण अर्ज तू दीसै नही, तू वैठी छै राज कै माय।

—जयवाणी

(स्त्री वेरागण)

वेराग्य—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—वेराग्य रगिइ चारित्र लीधउ, प्रतिमाइ रहिउ मुनि रे। नलरानाइ तै यती दीठु, ध्यानस्थ सोभइ वनि रे। —नळदवदंतीरास

वेराडणो, वेराडवो—देखो 'वैराणो,वैरावो' (रू भे.)

वेराडणहार, हारो (हारी), वैराडणियो—वि०।

वेराडिओडो, वेराडियोडो, वेराड्योडो—भू० का० कृ०।

वेराडीजणो, वेराडीजवो—कर्म वा०।

वेराडियोडो—देखो 'वैरायोडो' (रू भे)

(स्त्री वेराडियोडी)

वेराज—देखो वेराज' (रू. भे)

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रू भे)

उ०—१ जद स्वामीजी वोल्या—थे कहो भीखणजी रा स्रावक दान नही देवै तो जे लेवाल तै सरव थारै इज आसी। अनै थे कहो तै घरम थानै इज हुवै, थे वेराजी क्यूं थया। थे निंदा क्यू करो।

—भि. द्र

उ०—२ सेठ जोर री डकार लेवतां बोल्या—गया महीना री वात है, कोई मामूली लेण-देण रा मामला में एक अफसर म्हारा सू वेराजी व्हैग्या। म्हनै ई रीस आयगी के देवता-देवता ई अकड वतावै, सो आपसरी में भोड व्हैग्यो। —अमरचूंनडी

उ०—३ नदीया नीर नही। सतीया सत नही। ब्राह्मणा वधारो नही असत्रियां रूप नही। इण तरै सराप दे, वेराजी हुय नै स्री सिवजी मा'राज नै चेला सकरजी कैळास पधारिया। —मारवाड री ख्यात

वेराजीपण, वेराजीपणो, वेराजीपो-स. स्त्री.—वेराजी होने की अवस्था या भाव।

उ०—जद स्वामीजी कह्यो—किणहिरै गूवडो दुखतो घणो नै पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै कै वेराजी व्है? जद कह्यो—राजी हुवै। ज्यूं दुखदाइ छूटा वेराजीपो नही। —भि. द्र.

रू भे.—वैराजीपण, वैराजीपणो वैराजीपो

वेराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे)

२ देखो 'वैराट' (रू. भे)

वेराणो, वेरावो—देखो 'वैराणो वैरावो' (रू भे)

वेराणहार, हारो (हारी), वेराणियो—वि०।

वेरायोडो—भू० का० कृ०।

वेराईजणो, वेराईजवो—कर्म वा०।

वेरायोडो—देखो 'वैरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वेरायोडी)

वेरावणो, वेरावबो—देखो 'वैराणो, वैरावो' (रू. भे.)

वेरावणहार, हारो (हारी), वेरावणियो—वि०।

वेराविओडो, वेरावियोडो, वेराव्योडो—भू० का० कृ०

वेरावीजणो, वेरावीजवो—कर्म वा०।

वेराविंयोडी—देखो 'वेरायोडी' (रू भे)
(स्त्री. वेराविंयोडी)

वेरासती-स स्त्री—वैमनस्य, मनोमालिन्य।

उ०—तद हाजीखा कयौ, जो हाथी तौ म्हारै अेक है अौर सोअन देंरा नू नही, नै पाअ छै सू हमारी वैर है। तद ठाकुरा पाछा आय राणा नूं उतर दियौ। तद इण वात ऊपर राणै रै नै हाजी रै वेरासती हुई। —द दा

वेराह—देखो 'वेराह' (रू भे.)

उ०—जग तूठौ वदी जणा, स्रीदूलह 'अमसाह'। किया सवाई माढहै, तळ थाई वेराह। —रा रू

वेरि—१ देखो 'वैरी' (रू भे)
२ देखो 'वेरी' (रू भे)
३ देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०—अदग ढोल मगळी रवाव तार सार ली। वजति वेरि वेरिय, भणं कि फकि भेरिय। —रा० रू०

वेरिया—देखो 'वेळा' (रू भे)

वेरियोडी—देखो 'वैरियोडी' (रू भे)
(स्त्री वेरियोडी)

वेरी—१ देखो 'वेळा' (रू भे)
२ देखो वेरी' (रू भे)

उ०—१ भैंस्या नै अपटाळ तिला री कच्चर, खोपरा रो गिर अर कुपासिया रौ बाटो। चरण सारू सूवा री पाख रै उनमान पराळ चौपटी पीवण मारु वेरी रौ साफ सुथरो ठाडो पाणी। सवार-सिझ्या सातू भैंस्या नै सपाडो। —फुलवाडी

उ०—२ वसती घणी। धरती हळवा ४० छै। ऊनाळी नही। कालभ्रर व्याव २ वोराडा री केर वाहळो गाव नजीक छै। तठै वेरिया छै। वावडी एक वाहाळै माहे छै। भाखर खुभराडियो कहीजै। भाखर री खाभ वसै। —नैणसी

३ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—नीदडली वेरण हुय रही, इण सगीवी हो मूडो नही कोय के। मूल तो मिलै नारकी, गति माठी मैं कोई फेर न जोय। —जयवाणी

(स्त्री. वेरण)

वेरुख—देखो 'वेरुख' (रू भे)

वरुखी—देखो 'वेरुखी' (रू भे)

वेरुलिय-स.स्त्री.—वैदूर्यमणि, जिसका आधुनिक नाम नीलम है। (जैन)

वेरू—देखो 'वेळा' (रू. भे)

उ०—वेगी आयी न करी वेरू, खाडै करि सू दक्खण खेरु। रत्ता मुग्गळ नीली टोपी, ततकाळै नरवद्दा लोपी। —गु रू. व.

वेरोक—देखो 'वेरोक' (रू. भे.)

वेरोजगार—देखो 'वेरोजगार' (रू भे)

वेरोजगारी—देखो 'वेरोजगारी' (रू भे)

वेरो-स पु—१ कूआ, कूप।

उ०—१ दुनिया मैं निवळा अर गरीब घणा है, इण कारण अै लोग टणकेल अर सूरवीर है। वेटी! म्हारो आ भुळावण थारै वास्ते अणूंती मूंघी पडैला, आ जाणता थका ई म्हैं थनै विखा रा ऊडा वेरा मैं थरकावूं, थू म्हारी इण लाचारी नै समझै है कै नी। —फुलवाडी

उ०—२ म्हू अवै उण भोळा कमेडा नै काई जवाव देवती। उणारा विस्वास नै किया खडत करती। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो। उणनै किया तोडती। जिण वरत रै सहारै वो वेरा मैं उतरियोडी हो, उणनै किया वाढती। —अमरचूनडी

उ०—३ उनाळा रा पाणी री तकलीफ रा दिना मे कोई आपरा सगा गिनायता रै घरै जाय जम्यो तो किणीई वेरा-कोहटा करतै दिन तोड दिया पण आसाढ रा चावणा पख रा ऐ दिन जावता खारा जैर व्है ज्यू लागता हा। —रातवासौ

२ देखो 'वेरी' (रू भे)

उ०—१ डाणै आपरी वेटी वेई वर देखण नै काठी कमर वाध ली। आडसर, मूमासर, रिणी' र राजगढ ब्यारा कानी भंवाळी खावण नीसरघो। पर फूटरी-फररी भवरी रै वर री वेरी कठै ही नी पटघो। —दसदोख

उ०—२ जै फिरगी नै वेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय, तोप मुंहाणी म्हानै वाडै, रहो कैद कै माय। इतनी सुणकै डूंगजी, स, बोल्यो कडवा वेण, ई मूंडै को घणो लोटिया! म्हानै आयो लेण? —डूगजी, जवारजी री छावली

उ०—३ अेक वर, देवर, वागा मैं ले चाल, वेरो तो पाडा, अौ देवरिया, नारी-मरद को नारी होय तो पडचा-रिडचा फळ खाय। मरद हुवै तो तोडै फूल गुलाव रो, राजा जैमल पडचा-रिडचा फळ खाय। लो- गी.

रू- भे.—वैरो

वेळ-वि०—१ समान, तुल्य।
२ वहुत ज्यादा, अत्यधिक। (अ मा)
सं पु—१ समुद्र, सागर।

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति वाध अपारण। वेळ निजर विद्दुसा, असह कवि भ्रमण अकारण। —रा रू.

२ तरग, लहर, हिलोर । (ह ना मा)

उ०—१ उमर वरस एकादस आई, श्रठै सुणी नृप चद्र श्रवाई। सुणता मात्र मूच नृप सधियौ, वेळ समुद्र जेम दळ वधियो। —सू प्र

उ०—२ वाणिजा वधू गौ वाछ असइ विट, चोर चकव विप्र तीरथ वेळ। सूर प्रगटि एतला समपिया मिळिया विरह विरहियां मेळ। —वेलि

उ०—३ जिम मधुकर नइ कमलणी गगासागर वेळ लुवधा ढोलउ मारुवी, कांम कतूहळ केळ। —ढो मा

उ०—४ सुत सस्रत छद खट पच नव सपूरण, भेदगर च्यार दस बोध भाळी। भ्ररथ जुत बोलवौ हेळ वीजा 'भजा', वेळ भ्रम्रततणा उदध वाळी। —र. ज प्र

उ०—५ मिळ भ्रावत लोढ कि बोढ मही, जमना दळ वेळ समुद्र जही। उर माळ भणाभण ऊमरिय, पवगा तुरिय रव पाखरिय। —रा रू

उ०—६ जैता नाम सग्राम की, जोवै वाट कमध। ज्या दधि दक्खै वेळ वळ, हीण परक्खै वध। —रा रू

३ गले मे धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

४ अगुली में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि० वि०—यह सोने, चादी या तावे के तार से गुंथी हुई अगूठी होती है। कतिपय लोग तावे के तार से गुथी हुई देवजी या भैरवजी आदि देवताओ की वेळ (अगूठी) अगुलियो मे पहनते हैं।

५ पागल।

६ पागलपन।

उ०—१ केई दिना सू काली मासी घर घर बकै तो ई म्हैं उण री गिनरत नी करी। जाण्यौ वा कालायां करै तो छो करती। आप उण नै इत्ती माथै नी चाढता तो उण री काई मजाल कै घर घर यू वेळ बाता वकती फिरै। —फुलवाडी

उ०—२ कदेई कदेई तो यू भ्रैडी वेळ बाता करै के म्हनै ई जूभ्रळ छूट जावै। पण म्हारा सू ई कोगत करियां बिना थारो जीव धापै कोनी। —फुलवाडी

उ०—३ वो चोर हमेसा कीं न की ऐडी वेळ बाता करतो ई रैवतो उणनै ढावण सारू दूजोडी चोर भ्रेक समभदारी री बात करी— सात पीढिया लग भ्रा माया तो भ्रपारै खाया नी खूटै। भ्रबै चोरी नी करनै इज्जत सू ठायो भ्रपडला तो सावळ! जीव भ्रस्टपौर सुरक सुरक करै। —फुलवाडी

उ०—४ ढालू खाती वीदणी रै मूंडा साम्ही देख वीद कैवण लागो— भ्रैडी वेळ वात वळै कदै ई करज्यो मती' भायजी जाणै जित्ती खीभ करैला। वै रूप त्रिचै लुगाई रै गुणा री घणो आदर करै। —फुलवाडी

७ आग, अग्नि।

८ सहसा मन मे उठने वाली तरग, उमग, भावना।

उ०—१ ईडरिया आधार री, वीर चढै तो वेळ। हसत चढै चारण हुवे, माया सरसत मेळ। —वा. दा.

उ०—२ वेळ री महण भ्रणथाग वीर, हेतवा देण हेळा हमीर। सेण री सैण भ्रर सत्रु साल, ढाविया विरुद जोधाण ढाल —पे. रू

९ देखो 'वेल' (रू. भे)

उ०—१ रवि ऊगै साहावदी, खान इनायत वेळ। भ्रासुर भ्रायो खेडिया, ज्यौं सागर ऊमेळ। —रा रु.

उ०—२ सभ्रै सूर भ्रसुराण दळ पूर भ्रायो सिखर, किणी नह थियै भ्रव वेळ कीजै। वारता जिसी 'गग' कही वीकमपुरी, 'जैतसी' जोधपुर दुरग लीजै। —राव जैतसी री गीत

१० देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—विरघ वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ महोछव मेळ विदाई। पूजा पाठ निराठ, वरै अ्रनमाळा भोखी। जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोखी। —दसदेव

११ देखो वेल' (रू.भे)

१२ देखो 'वहल' (रू भे.)

रू भे —वेला

वेल—स पु.—१ खेत में कुए से नाली द्वारा जाने वाले पानी का वहाव।

२ एक प्रकार का लघु काव्य।

३ रेखा लाईन।

उ०—मच फाग छटी रव लाग महा, कल सोर न प्राण कवाण कहा। वधि वेल धमाधम सेल वहै, गुणि खीज कि वीज सिलाव वहै। —रा. रू

४ होलिका-दहन के दस दिन वाद अर्थात चैत्र कृष्ण दशमी को सधवा स्त्रियो द्वारा किये जाने वाले "दसामाता" या "दसादहाडो" के व्रत के दिन सूत के दस धागो के डोरे पर दस गांठे लगाकर गले मे धारण की जाने वाली तात।

५ देखो वेल' (रू भे.)

उ०—१ आयो फिर डेरा 'भ्रजो' नरपत सहत निवाव। दक्खण दूत चलाविया, तेडण वेल सिताव। —रा रू.

उ०—२ परत न लभै पार तिण पसरी वेल अपार। उत्तम मध्यम भ्रधम में, नर सुर नाग कुमार। — राठौडा री वसावळी

उ०—३ ना रे ना भोला, वीज वास्तै नी है। यू तो सारै ई'ज पडग्यो, विना वताया पार नीं जावैला। वो मतीरो इमरती वेल रो

है, सो राजा नै भेट देवण खातर रुखाळियोडो है।

—अमर चूनडी

उ०—४ पसरी मुकति वेल रूपहरी, गगा वहै इसी छवि गहरी। उठै वसाय दीजियै आतुर, पारकेस नामै पारकपुर। —सू. प्र.

उ०—५ भावजी रे हमनै नोसर हार, वेल वधी मेरै वाप की रे। ज्यू वाली ज्यू इव, ज्यू बीडी ज्यू नाल। —लो गी

६ देखो 'वेला' (रू. भे.)

७ देखो 'वहल' (रू भे)

उ०—चोधरण तोई फिटक मैं नी आई। वा तौ दूजै दिन वेल जुताय घणी सारू किणी फूठरा नाव री सोय मैं पीहर रै मारग वहीर व्हैगी। —फुलवाडी

८ देखो 'वेळा' (रू. भे)

९ देखो 'वेळ' (रू. भे)

उ०—१ चढै वेल वरियाम, सुजळ तै आगळ चचळ, गरजि नाद गभीर, रोडि रिणतूर अवागळ। असल फौण ओपत्ति, वहुत चीधा वैरक्का, मारवाड मरजाद, भडा अनडा मारक्का। —गु. रू वं.

उ०—२ रचता इसी राजसर राणा, लेखौ जगरी कवण लहै। अम सूरज वहतौ आघनर, वेला पग माडतौ वहै।

—महाराणा राजसिंह री गीत

वेलकि, वेलकी–स. स्त्री —एक प्रकार का मिट्टी का वर्तन विशेष।

वेलख, वेलखि–स पु [स वेलक] वाण का फर, पुख स्थान।

उ०—विळकुळियौ वदन जेम वाकारयौ, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि। क्रिसन रुकम आरध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि वधि। —वेलि

रू भे —वेलख, वेलखि

वेलड—१ देखो वेलड' (मह , रू. भे)

वेलडली, वेलडि वेलडी–स स्त्री —१ एक प्रकार का मिट्टी का वर्तन विशेष।

रू भे —वेलडली, वेलडि, वेलडी, वेलडली, वेलडि, वेलडी

२ देखो 'वेन' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ वरस सीम काउसग रह्यउ, वेलडिए वीटाणउ रे। पखी माला माडिया, सीत तावड सोखाणउ रे। —स कु

उ०—२ वाता करता परवाडो वीत ग्यो। राजा वाळी मतीरी पाकनै राणवाण व्हैग्यो। वेलडी कुम्हळीजगी अर कूपळ वळगी। चोथै दिन देवनै चौधरी मतीरौ लेयनै राजारे दरवार कानी वहीर व्हियौ। —अमरचूनडी

उ०—३ मनोहारा सार स्रगार रसमा, अनुभवी थया तरवरा। वेलडी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधरा। —वि. कु.

उ०—४ माया विसरी वेलडी, हरीया पसरी दूरि। केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि विसूरि। —अनुभववाणी

वेळच, वेलच—देखो 'वेळच' (रू भे)

वेळचो, वेलचो—देखो 'वेळचो' (रू. भे)

वेलज, वेलज्ज—देखो 'वेलज' (रू. भे.)

वेलडली, वेलडि, वेलडी—१ देखो 'वेलडली' (रू भे.)

२ देखो वेल' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ नै (तै) भय मिटयौ जाण नै नदी उपरै वाग लगायौ छै। माहीवला फूल हुवै छै। घणी वेला, घणी वेलडिया, गी (नी) लोतरी चीभडा, खरवूजा, नीला गोहू, साल, दाल घणी नीपजै छै। इसडो वाग छै। —रिसालू री बात

उ०—२ विण तरुग्रर जिम वेलडि, कठ विना जिम माल। पुरुख विहूणी पद्मनी, किणि परि ठेलिसि काल ? —मा. का, प्र.

उ० ३ गिरि गिरि वाधइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास। मंडइ मोर कला घणी, विरहुणीया तन त्रास। —मा. का प्र.

उ०—४ वेम्या विम नी वेलडी, कामी कूकम व्रक्ष। वाली वाउ-लीउ करिय, लघु वयमाहिं लक्ष। —मा का. प्र.

वेलण–स. स्त्री —१ नीद में, स्वप्न में या अचेतनावस्था मे बकने की क्रिया।

२ देखो 'वेलण' (रू. भे)

उ०—वेलण वेलीजी वाह, मिरगानैणी जी राज। मूगफळी सी घणरी आगळी, जी म्हा रा राज। —लो. गी

उ०—२ हलूइ हाथइ चालइ, मांहि थी थूलउ टालइ, एक लगै पाटउ, माहइ दीजइ माटउ, वेलण स्यु वेलीइ, हलूइस्यु मेल्हीइ, घ्रत स्यु मिल्या, लोह कडाहे तल्या, सव्द कल कलइ, निरधूम अगनि वलइ, '' । —व. स.

रू भे —वैलण

वेलणियो–वि०—नीद में, स्वप्न मे या अचेतनावस्था में बकने वाला।

स पु —१ रहट के घूमने वाले चक्र पर पडे लट्ठे पर वैल हाकने वाले के स्थान के नीचे लगाया जाने वाला एक डडा विशेष जिसमें साकल या रस्सा डाल कर वैलो के जूए से जोडा जाता है।

२ देखो वेलण' (अल्पा , रू. भे)

वेलणौ, वेलवौ–क्रि० अ०—१ छट-पटाना, तड-फडाना।

उ०—१ हमि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मडै खफर पत्र मिळै। तिल तिल हुइ टूकड, वेलै तुरमड, मच्छक तडफड तुच्छ जळै।

—गु. रू व

उ०—२ ढाढी गाया निसह भरि, सुणियउ साल्ह सुजाण। अोछइ पाणी मच्छ ज्यउ, वेलत थयउ विहाण। ढो मा.

२ देखो 'वेलणो, वेलवो, (रू भे)

उ०—१ वेलण वेली जी वांह, मिरगानैणी जी राज। मूगफळी सी धण री आगळी, जी म्हारा राज। —लो गी.

उ०—२ ······माहिथी थूलउ टालइ, एक लगे पाटउ, माहइ दोजइ साटउ, वेलण स्यु वेलीइ, हलूइस्यु मेल्हीइ, घ्रतस्युं मिल्या, लोह कडाहिं तल्या, सब्द कलकलइ निधूम अगनि बलइ, नीपना सतपुडा खाजा, तुरत कीधा ताजा, सदला नैं साजा, मोटा जांणे प्रासाद ना छाजा, चिहु खुणे साजा एहवा खाजा प्रोस्या········। —व. स

३ देखो 'वेलणो, वेलवो' (रू. भे)

उ०—१ सेठा रै वेलणा रै सागै इणी भात सेठाणी री वेलणो चालू हो। अर वेटी दोनूं जणा री वेलणो चुपचाप सुणतो रहयो। मा रै मूडा सूं बाप रै चेतारी बात सुणनै राजी व्है जातो अर वारै सीत री बात सुणनै अणूतो विलखो व्है जातो। इण सूं आगै उणारी समझ नीही। —फुलवाडी

उ०—२ सेठाणी री काळजो अणूतो काचो हो। हुरख मनावण री बात सुणिया पछै तो वा वत्ती रोवण लागी। कदास सेठ सीत में वेलण तो नी लागग्या! अबै वा करै तो काई करै। सेवट काठो हारनै वा कहयो—थे भलाई नी मानो, म्हें तो पचा नै बुलावूं। —फुलवाडी

उ०—३ घरविद री वाता रै पछै मासी राजाजी रा समचार पूछया तो वा सुभट निसक भाव सूं कहयो कै राजाजी तो उण दिन पछै गंगी री तिथ ई नी ली। गूजरी अलोप व्हैगी तो ई हाल उणारी प्रीत वास्तै वेलै। —फुलवाडी

वेलणहार, हारो (हारी), वेलणियो—वि०।
वेलिओडो, वेलियोडो, वेल्योडो—भू० का० कृ०।
वेलीजणो, वेलीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।
वेळणो, वेळवो, वेलणो, वेलवो—रू भे

वेलवार—देखो 'वेलदार' (रू भे)

उ०—१ पेंसठ हाथ रै पछै रेळी रै कारण वेरो खुदणो दूभर व्हैगो तो म्हें अेक वाजिदा सिरावा री सोय में निकळियो। वो सिरावो जात रो वेलवार हो। —फुलवाडी

उ०—२ डारण तेड वेलवार मुरजालदै, रोठ घतोजै रीठ में चला चग अदै। रैत थली री रात दिन मन पै धडकदै, कोटडिया धमका करै चोवीस भडदै। —पा प्र

वेलदारी—देखो 'वेलदारी' (रू भे)

वेलपतर, वेलपत्र, वेलपात—देखो 'वेलपत्र' (रू. भे)

, वेललाट—देखो 'विलबिलाट' (रू. भे)

उ०—मन मैं धरता मरट घरट जिम भूखें घूमैं, मेलै घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमैं। वेटा नैं मा बाप वेचि द्यै जीमण वेइ, रूलतां रिगता रांक करैं वेललाटा केइ। —ध व. ग्रं.

वेळा—स. स्त्री. [सं वेला] १ समुद्र का तट या किनारा।

२ सीमा, हद।

३ रात-दिन का चोवीसवा भाग, पल।

४ काल, वक्त, समय।

उ०—१ तठा उपरांति राजान सिलामति तोरण बाधीजै छै। घणा गज डवर पेसारा करि मडोवर महले पधारया छै। सुभ दिन सुभ घडी सुभ मुहुरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा माहि आणि पाट सिंघासण विराजमान किया छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर ढुळै छै। —रा सा स

उ०—२ वेली तदि वळभद्र बापुकारै, सम्र सावतो अजे लगि साथ। तूठै वाहवियै आ वेला हुव, जीपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ। —वेलि

उ०—३ लाठा लाठा मौतबिर वेलाकुवेळा दही दूध री मिस लेय गूजरी रै घरै आवता सकता कोनी। काली मासी खुडको व्हैता ई जाग जाती। सगळा नै मीठो जवाब देती। किणी माथै छीटा नी देवती। —फुलवाडी

उ०—४ वूजी काई, वूजी रा वेटा नैं ई गीगला री कितरो कोड है। लारली वेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जदरी बात है-पूणचो काठो पकड लियो अर वट्ट करतो कावळी वदार नाखी। —अमर चूनडी

पद—वेळापूळ=समय।

५ अवकाश, फुरसत।

उ०—१ कवर नै खेत री रुखवाळण रा बोल याद आया। उण री देखा देख वो कह्यो—विरथा झिकाळ करण री म्हनै वेळा कोनी। थे सगळी वाता थारै काना सुणली हो, म्हें पाछो काई गिणावूं। —फुलवाडी

उ०—२ आ री घाल्या तीन दिन व्हिया आपरै पाखती ई नी आय सकी। दिन मैं चार-पाच वेळा चूघाणा पडै। थोडै दिना पछै तो धाट दळियो खावणो सीख जावेला। पछै वेळा ई वेळा है। आपनै अठा ताई आवण सारु अेकर ई फोडा नी खावणा पडैला। महाराणी अपूठी धिरनै बोली—म्हें जावूं। फेर वेळा मिळी तो आय नै मिळ लेवूला। अबारू थू आरी साळ-सभाळ कर। —फुलवाडी

६ मौका, अवसर।

उ०—१ तव रुखमणीजी डावै पासै वैसाण्या। ज्यों विधि छै त्यों बोल वाचा लै। ज्यों कह्यो छै त्यो करि नै विवाह पूरण कीयो।

तिहि वेळा वेद का पठणहारा। मुंहमांगी सु नव ही निधि पाई।
—वेलि टी.

उ०—२ जगत री रीत है आप री स्त्री नै प्रथम मिळाप री वेळा देखणं है अनै इण सूरवीर रै पाछो हटण रो पूठ लारै देखण री प्रण है कै पाछो हटू नही पूठ लारै देखू नही। —वी. स. टी

मुहा०—१ वेळा रा वाया मोती नीपजै—उचित अवसर पर काम करने से लाभ होता है।

२ वेळा देख वरतणो—अवसरवादी होना।

७ बार, दफा, मरतबा।

उ०—१ ताहरा कोई परमेस्वर री स्याल हुवो, जु कवाण काढ नै रावजी रै गळै माहे घालण करै। ताहरा एक वेळा तो कवाण ऊपर सै रही गळा रै। —नैणसी

उ०—२ जुडिया 'बीर' तणी जुग जाणं, दाखव पथी देख दुयै। काळा सूं विढना कै वेळा, हामें कै हथवाह हुयै। —दूदी वारहठ

उ०—३ चौधरी तीन वेळा जमी ताई लुळ लुळ नै खम्माघणी अरज कर नै ऊची राजा रै मूडा कानी देख्यो तो पगा नीचै सू धरती सिरकती लागी। ओ तो सागण उण दिन खेत मे आयो जिकोज आदमी। —अमरचूंनडी

उ०—४ दो तीन वेळा जीभ फेरनै डोकरियो आपरो दात सभाळियो। पछै थूक गिटतो कंवण लागो—तो रामजी भला दिन देवै—तीनूं जणा हाकरता जमराज रै पाखती पूगा। —फुलवाडी

उ०—५ वेटा रै मरिया पछै नित अेक वेला तो म्हनै आ वात सुणाणी ई पडै। जाणता थका ई दूजी बात सुणावण री मन ई नी करै। —फुलवाडी

८ देर, विलम्ब।

उ०—विढता घणी लगाई वेळां, समहर सूर सव दा। सुर श्रीया साद करै सागावत, रथी आवो रायजादा।
—जैसिंह नरूका कछवाहा री गीत

९ देखो 'वेळ' (रू. भे)

रू भे—वरिया, वरिया, विर, विरया, विरिया, विरिया, विळिया, विलिया, विलीया वीरिया, वीरिया, वीरीयां, वीरीया, वेर, वेरा, वेरिया, वेळ, वेल, वेंल, वेळा, वेला, वरिया, वरीयां विरया, विरिया, वीरिया, वीरीया, विलिया, विल्या, वेर, वेरा, वेरिया, वेरी, वेल वेला, वेलि, वेली, वेळु, वेलु वेळू, वेलू वेल्या, वेल्हा, वेंळा, वेंला मह, वेळो, वेलो

वेला-स. पु—१ जन्म, जीवन।

उ०—ढोर माहि जीव घणउ दुख सहइ, चारि पांणी नवि वेला सहइ। परवसि ध्या करमि घालइ घाटि, वहइ भार तै मारइ साटि।
—वस्तिग

२ कष्ट, सकट।

उ०—आगइ नारी तणइ वियोग, कूबड देहि हऊड कुयोग। वेला पाडी मझ समकाल, उपगार नूं फल हवूं ततकाल।
—नळदवदती रास

रू. भे—वेल्हा, वैंळा, वैला

३ देखो वेळ' (रू भे)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे)

उ०—१ वाल्हा विम आवु तिहा रेलो वेला विखमी जायरे सनेही। सुख चाहना जीव नइ रे लो, मत को ई लागू थाय रे सनेही।
—वि कु.

उ०—जिकै पारस्व केरी करिस्यति भक्ति, तिकै धन्य वारू मनुस्या प्रसक्तिम। भली आज वेला भया वीतरागा, खुसी माहि भेळ्या नमद्देव नागा। —स कु

उ०—३ सवरी सावक करइ पोसउ, आठ पुरहि गुरु मुखइ। उचरइ दडक त्रिण्ह वेला, सामाइक पणि तिणि रुपइ। —स कु.

उ०—४ बूढे मन आदर करे तेह सजाई लीध, दासी नै सनकारि सिराणी सगली सिधो दीध। भोजन पान सजाई करता वेला कीध, वाधी रात पडी छै आकुल थायो म सीध। —ध व प्र.

उ०—५ इण वातै मोनै लाज कहावै, पुत्र थका मा दुखणी थावै। हू समझू थारै समझावै, बात कही वेला घनी थावै। —जयवाणी

वेळाइत, वेलाइत-स पु—समुद्र, सागर।

क्रि वि—उचित समय पर।

उ०—उठियो जगड लाग असमाणं, उर 'अजमाल' तणी व्रत माणं। उण वेळा 'लालो' मिळ आगा, वेळाइत खचाणी वागा।
—रा० रू०

वेळाउळ, वेलाउल—१ देखो 'विलावळ' (रू भे) (ध. व प्र)

२ देखो 'वेळाउळ' (रू भे)

उ०—१ ३० सहस्र आगर, २४ सहस्र नगर, २४ सहस्र करवड, १६ सहस्र खेड, १४ सहस्र वेलाउल, ३६ कोडि कुल, ४८ सहस्र पत्तन, ४९ सहस्र उद्यानवन,·· · ·· । —व स

वेळाउळधी, वेलाउलधी—देखो 'वेळावळधी' (रू. भे.)

वेळाकूल, वेलाकूल-स पु—वन्दर, वानर।

उ०—किसलय नीकलता गहगहइ, वेलाकूलै रा गहगहइ। मूड लक्ष धान्य नीपजइ, सकल वाछित सुख सपजइ। —नळ दवदती रास

वेलाज्वर, वेलाज्वर-सं पु [स वेलाज्वर] वह ज्वर जो मृत्यु के समय होता है।

वेलातर वेलातर-सं पु.—एक प्रकार का शाक (सब्जी) व व्यंजन विशेष।

उ०—वालु नइ वेलातरु, वेऊ वेतस वाणि। वघ्रारु गहलु लीउ, वाउलीउ वखाणि। —मा का प्र

वेलाधिप, वेलाधिपत वेलाधिपति, वेलाधिपती–स पु. [स वेलाधिपति] दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता।

(फलित-ज्योतिष)

वि० वि०—जिस दिन जो वार होता है उसी दिन की पहली वेला का वेलाधिपति उसी वार का ग्रह होता है।

वेलापात—देखो 'विलापात' (रू. भे.)

उ०—मारवणी री सरीर सोरभ किस्तुरी जिसो छै। उठै पीवण साप हुता जिकै सास पी गया। तिण सु मारवणी निरजीव हुय गई। परभातै जगाई जागी नही। ताहरा ढोलोजी दीवाघरी सखी बोलाउ। सगळाई आणि भेळा हुवा। ढोलोजी प्रति वेलापात करण लगा। —ढो मा.

वेळापुळ वेलापूळ–स पु—अच्छा मुहूर्त, शुभ समय।

उ०—नित रा ओळवा सू आती आय बा खुद केई दिना सू वादळ नै मन री वात बतावणी चावती ही। आज काले करतां दिन टळता गिया। औ अणचीत्यो जोग सजग्यो तो इण नै क्यू टाळै! वेळापुळ वायोड़ा ई मोती निपजै। —फुलवाडी

वेळायो—देखो 'वेळायो' (रू. भे)

वेलाळ वेलाल–स पु—१ पवन, हवा। (ना डिं को)

२ समुद्र, सागर।

वेळावळ, वेळावळ–स. पु—१ समुद्र, सागर। (ना, डिं. को, ह ना मा)

२ देखो 'विळावळ' (रू भे)

रू भे.—वेळाउळ वेलाउल, वेळाकूल, वेलाकूल।

वेळावळधी, वेलावलघी–स स्त्री.—विष्णु-पत्नी लक्ष्मी। (ह ना, मा)

रू भे—वेळाउळघी, वेलाउलघी

वेळावसेक, वेळाविसेक–स स्त्री.—बालकों मे होने वाला बालग्रह नामक रोग समूह मे से कोई एक रोग विशेष।

उ०—वाळ-कन्हैयो थोडो घणो ई ओपरो लखावतो कै मासी नै वेळा-विसेक री वैंम व्हैतो तो सात वेळा अवारनै लूण-मिरच करती। खुदीखुद ई मन करै जणा झाडो देती, हळको हाथ करती। —फुलवाडी

वेलास—१ देखो 'वेलस' (रू भे.)

२ देखो 'विलास' (रू भे)

वेळाहरण, वेलाहरण–स. पु [स वेला+धारणम्] समुद्र, सागर।

उ०—रांमा अवतारि वहै रणि रावण, किसी सीख करणाकरण। हू ऊधरी त्रिकुटगढ हूती, हरि वर्ध वेळाहरण। —वेलि

वेलि—१ देखो 'वेल' (रू भे)

उ०—१ तेरे पासा खासा दासा, पासा वासाहि का प्यासा, मेरी आसा वेली फेलि तूं ही इछ्या अभा है। —ध व ग्र.

उ०—२ मुझ आंगणि सुरतरु वेलि फैली, चिंतामणि करियल आवि मिली जसु समरणि सुर धेनु मिली, सो सेवउ जिनवर रग रली। —स कु.

उ०—३ तेल विहूणउ दीवडु, मूल विहूणी वेलि। पाणी विहूणी दद्दूरी, तिम होई ति महेलि। —मा का प्र

उ०—४ रामा अवतार नाम ताइ रुकमणि, मान सरोवरि मेरुगिरि। बाळकति करि हस चौ बाळक, कनक वेलि बिहु पान किरि। —वेलि

उ०—५ मूरखु कोइ छइ खरउ गमारु, सूकडि वाली करइ छार। जिन धरम लाधउ पाय म पेलि, सुख तणी ऊपाडी म वेलि। —वस्तिग

२ देखो 'वेली' (रू. भे.)

३ देखो 'वेळा' (रू भे)

वेलियोडो–भू. का कृ—१ तड-फडाया हुआ, छट पटाया हुआ।

२ देखो 'वेलियोडी' (रू भे.)

३ देखो 'वेलियोडो' (रू रू)

(स्त्री वेलियोडी)

वेलियो—१ देखो 'वेलियो' (रू भे.)

२ देखो 'वेल' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'वळद' (अल्पा, रू भे)

४ देखो 'वहलियो, (रू भे)

उ०—गाम रा मोजीज आदमिया आयनै रावळै मुजरो अरज कियो अर जाजम ढाळ नै गाम मे अमल रो हाको करायो। घोडा नै दाणो अर वेलिया नै गुळ फटकडी दिरीजी। रोटा वास्तै आटो गूदीजियो, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालो पीसता सिला लोढी बाजण लागी। —अमरचूनडी

वेली—१ देखो 'वेली' (रू भे.)

उ०—१ वेलो तदि वळभद्र वापूकारै, सत्र साबतो अजे लगि साथ। वूठे वाहवियै आ वेळा, हल जीपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ। —वेलि

उ०—२ "बालो" भालो झल्लिया, रिण कालो रावत्त। जुध वालो वेलो जिहा, 'तेजो' 'सूजावत्त'। —रा रू.

२ देखो 'वेल' (रू. भे)

उ०—१ पीडति हेमत सिसिर रितु पहिलो, दुव दाळघो वसत हित दाखि। व्याए वेली तणी तरुवरा, साखा विसतरिया वैसाखि। —वेलि

उ०—२ मळयानिळ वाजि सुराज थिया महि, भई निसंकित ग्रक भरि। वेलो गळि तरुवरा विलागी, पुहुप भार ग्रहणा पहरि।

—वेलि

उ०—३ हरीया कडवी वेलका, कडवाई फळ किध। जब वेली तैं वीछडै, होय नाव को सिध। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ त्रिगुन तें गुन ऊपजे, गुन के त्रिगुन माहि। जनहरिया फल वेल तैं, फल विन वेलो नाहि। —ग्रनुभववाणी

३ देखो 'वेळा' (रू भे.)

वेलीडो—देखो 'वेली' (ग्रल्पा, रू भे)

वेळु, वेलु—१ देखो 'वाळू' (रू भे)

उ०—ठाढो वेळु की रेत, भवुकंला पुंवण घणा। वरसो ग्राऊ की राति, काल्हो का ग्रौंस घणा। —समसदीन

२ देखो 'वेळू' (रू भे)

३ देखो 'व्याळू' (रू भे)

४ देखो 'वेळा' (रू भे)

वेळुका, वेलुका—देखो 'वाळू' (रू भे)

उ०—उपवन करि ग्रति ग्रेह उसीरा, नोख गुलाव छडक घण नीरा। जळ गुलाव वेळुका जमावै, विमळ पटी सीनळ विछवावै।

—सू. प्र.

वेळू, वेलू—वि०—१ व्याकुल, वेचैन, विह्वल।

उ०—द्विज भयो वेळू ग्रजामेलू, कामवेळू वाम यैं। जमदूत खेलू काळ वेळू, कठ मेळू ग्राम यैं। सुत हेत हेलू नाम लेलू, कर उवेळू साम यैं, ऐसा गोविंदु कृपासीधू, दीन बंधू राम यैं। —करुणासागर

२ सहायक, मददगार।

३ देखो 'बाळू' (रू भे)

उ०—१ वेळू घाणी पील कर, कोई तेल कढावै।

—केसोदास गाडण

उ०—२ वली वचन कहै सूवटो, जो तिल मा तेल न होय। तो वेलू मैं किहा थको, राय विचारी जोय। —वि कु

४ देखो 'व्याळू' (रू भे)

५ देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०—द्विज भयो वेळू ग्रजामेळू कामकेळू वाम यैं। जमदूत खेलू काळ वेळू कठ मेळू ग्राम यैं। सुत हेत हैलू नाम लेलू कर उवेळू साम यैं, ऐसा गोविंदू कृपासिधू दीनवधू राम यैं। —करुणासागर

रू. भे—वेळू, वेलू, वेळु, वेलु

वेलै—स पु—ग्राकार, ग्राकृत्ति।

उ०—गूंगी री धणी ठेट काठियावाड जायनै घोडो लायो। लाखा मैं टाळको। उपरैटा री ग्रोद री। पळकतो कमेत रंग। कांना तीखो। धणक ज्यू तणियोडी लाबी गावड। गाळिया छोटा। ग्रगर चोडो। ढाला जेडा पुट्ठा। लावो वाळचो। केसावळो लावी। चौडा सूम। लावै वेलै। चोडो लिलाड। गळा रै सुद देवमिण।

—फुलवाडी

वेळो, वेलो—स पु—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

२ क्रौंच पक्षी।

३ कष्ट, सकट, ग्रापत्ति।

४ वश।

५ पूजा ग्रादि का सामान रखने का साधन या उपकरण।

उ०—यू कहनै रातरा मडोवर रया नै प्रभात रा उठ देखे तो सैंरुजी री मूरत वेलै मैं लाधी तद साखलै नापै कवरजी ग्रोवीकंजी नु कयो—गोरोजी ग्राप रै सार्गं हालसी ग्ररु थारी राज जाडो वधसी। —द दा.

६ देखो 'वेळा' (मह०, रू भे)

उ०—वस्त्राभरण जिणै हरचा तै छूटइ इण मेलो जी। ग्रादिनाथ नी पूजा करइ ' प्रहउठी बिहु वेलो जी। —स कु.

७ देखो वेळो' (रू. भे)

उ०—सामजी रामजी बूंदी रा वासी। स्रावगी जाति रा वेद। दोनू भाई वेला रा (जोडै जनम्या)। उणीयारो सूरत एक सरीखी दीसै। केलवै दीक्षा लेवा ग्राया। —भि द्र.

वेल्या—१ देखो 'वेल' (ग्रल्पा., रू भे)

२ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—हरसा मेरा वेटा रै, होवेली साझ सवेरी रै रोज। मेरा समरथ मोभी! भोजन री वेल्या रै ऊभी रोयसी। हरसा! मेरा लाल रे ग्रावैली पर घर कैंगे धीय। मेरा मोभी रे वेटा, भोली किन्या ने रै फोडा घालसी। —लो. गी

वल्यौ—देखो 'वैल' (ग्रल्पा, रू भे)

वेल्हणो, वेल्हवो—क्रि. स—१ चीरना, फाडना। किसी दल या समूह को बीच मे से दो भागों मे पृथक करना, दूर करना, हटाना।

उ०—वेल्हतो गजा है थाट लागा ग्रटळ, रीठ वागा खगा दुवै राहा। जोध जसराज पूणी भली जूजवी, सेल रोळै दुहू पातिसाहा।

—महाराज जसवतसिंघ रो गीत

२ देखो वेलणो, वेलवो' (रू भे)

३ देखो 'वैलणो, वैलवो' (रू. भे)

वेल्हणहार, हारौ, (हारी), वेल्हणियौ—वि० ।
वेल्हिग्रोडौ, वेल्हियोडौ, वेल्हयोड़ौ—भू का. कृ. ।
वेल्हीजणौ, वेल्हीजबौ—कर्म वा० ।

वेल्हा - १ देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०—प्रहरं प्रहर ज ऊनरयु, दिवला साख भरेह । धण जीती, प्रिय हारियउ, वेल्हा मिळण करेह । —ढो. मा

२ देखो 'वेला' (रू भे.)

वेल्हियोड़ौ-भू का कृ —१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, सहार किया हुआ

२ देखो 'वेलियोडौ' (रू भे)

३ देखो 'वेलियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वेल्हियोडी)

वेव—देखो 'वेग' (रू भे)

उ०—१ एक अचभ्रम परखणौ, मति छति सकति अजेव । ज्यौं मनि ग्रावै सामि कै, पाय दिखावै वेव । —रा रू.

उ०—२ महातेज मैं राजि वाजी समत्थ, रहै वेव पेखैं खड़ा देव रत्थ । दुनी मग्ग राजान री सोभ देखै, लखै काम रै नास सो वाधि लेखै । —रा० रू०

उ०—३ तेजी वितड ऊडड तेव, विख्यात राग अख्यात वेव । परवत पख पक्खर प्रचड, एराकी पिठ खुरसाण खड । —गु. रू व.

उ०—४ गुरड वेव साहस घटै, मरण सक हणवत मुडै । जग यता थोक पावै जदै, पाल' वचन झूठा पडै । —पा प्र

वेवफूफ—देखो 'वेवकूफ' (रू. भे.)

वेवकूफी—देखो 'वेवकूफी' (रू. भे)

वेवक्त, वेवगत—देखो 'वेवक्त' (रू. भे)

वेवड—देखो 'दोवड' (रू भे.)

वेवडियौ—देखो 'वेवडौ' (अल्पा, रू भे)

वेवड़ीचूड —'वेवडीचूड' (रू. भे.)

वेवड़ौ—एक प्रकार का वर्तन विशेष ।

२ देखो 'वेवड़ौ' (रू. भे)

उ०—मसाला वेसवार लूण चरायजै छै । दही री रजवो दीजै छै । तरगसा माहा सीका काढजे छै । वेवड़ा ढीहां चाढजै छै । वीज खीसरी भरती दीजे छे । सू तसु वीढ सीका ऊपर चाढजै छै । आडे हाथ डोरा घी रा दीजे छै । इण भात सूळा वर्ण छै —रा. सा स

३ देखो 'वेडौ (रू भे)

वेवटौ—देखो 'वपटौ' (रू भे)

वेवणौ—देखो 'वेवणी' (रू. भे)

उ०—हळदी अेक खवारी लेयनै सरड सरड सगळी फूस बुवार, दियौ । उखरडी सू सिलाम करनै वा आगै वहीर व्ही । आगै जावता उणनै अेक चूलो सांमी धकियौ । चूलो कह्यौ—हळदी बाई थोडी म्हारी बेवणी साफ करदे । —फुलवाडी

वेवणौ, वेववौ—देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू. भे)

उ०—१ रीस मे दांत पीसती बोली—रुळनी लायोडी रा डीकरा ग्रैडा नाजोगा नी व्हैना तो किण रा व्हैला । बाप गै तो नन्नो पत्तो ई कोनी, पछै इत्ती करडावण किण बात री । पैं'ला मा नै जाय बाप रो नांव तो बूझ, पछै मारग वेवती पिणियारयां सूं रोळघा करजे । —फुलवाडी

उ०—२ पाचा नै ई तेवडै तो फूटळी कर न्हाकै । पण कोई जोधा कै सूरवीर व्है तो लडतो ई ओपै । ठगा नै तो ठगाई करनै हाथ बतावै तो साचैली जीत । मारग वेवता परख ई व्ही । यो तो पछै की सोच नी करघो । —फुलवाडी

२ देखो 'वेवणौ, वेववौ' (रू भे)

उ०—१ अरधीया थम वेघोघीया वडायर, वरद ग्रप धारीया वात वेवै । दली नै मंडोवर पगा रा पर्छ अडग, दली नै मडोवर धका देवै । —तेजसी खिडियौ

उ०—२ ऊपरलै देवलोक सरवारथ सिद्ध सीम, चिहु दिसि सरखा देवता ए । उपजइ एथ मनुस्य तप सयम करी, सुख भोगवै अम वेवता ए । —स कु.

वेवणहार, हारौ (हारी), वेवणियौ—वि० ।

वेविग्रोडौ, वेवियोड़ौ, वेव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वेवीजणौ, वेवीजवौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

वेवतन—देखो 'वेवतन' (रू भे)

वेवना—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—कमळा सोचती—इसै जीवणै ना तो मर जावणौ ई भलौ । वा कदै-कदै मा बाप रै दुख नै देख'र अपघात करण री सोचती । जद धरम आडौ ऊभ'र आगळी हिलाय'र कैतो 'अपघात घोर पाप' । घरवाळा वै-नै ग्रेकली को छोडता हा नी । पण तोई वा तो मायली वेवना सू घुळती जावती ही । —वरसगाठ

वेवफा—देखो 'वेवफा' (रू भे)

वेवळ—देखो वेवळ' (रू. भे)

वेवलियौ, वेवलौ वेवल्यौ—देखो 'वेवलौ' (रू भे.)

वेवांण—देखो 'विमान' (रू भे.)

उ०—१ लपर्फं गं जूह लोहा कं धरा तडफर्फ सूर, वडक्कं खेचरा रभा झडफ्फ वेवांण । महा वेग वहिया गनीम भद्र तणं म.थं, क्रोधगी हमीर' वाळी दांमणी वेवाण । —तेजराम श्रासियौ

उ०—२ साट सीरम्भ उरम्भ हुइ साहणा, घाघरट थाट घासार हाल घणा । तापडे ऊपडे तेज माही तुरा, उड्डिया जाण वेवांण श्राकास रा । —गु रू व

वेवा—देखो 'वेवा' (रू. भे.)

वेवाई—१ देखो 'वेवाई' (रू. भे)

२ देखो 'विवाई' (रू भे)

३ देखो 'व्याई' (रू भे)

उ०—श्रेहडो वचार माडा ही मलिया । श्रर श्राय, देवी रै वर थकी श्रदीठ समचार बूझिया । कोई वेवाई, कोई जमाइ, कोई वदेई सगा कह मलिया । भाया रा नाम लै कुसल पूछिया । —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वेवाणी, वेवाबौ—देखो 'वहाणी, वहावौ' (रू. भे.)

वेवाणहार, हारौ (हारी), वेवाणियौ- वि० ।

वेवायोडौ—भू० का० कृ० ।

वेवाईजणौ, वेवाईजवौ—कर्म वा० ।

वेवायोडौ—देखो 'वहायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वेवायोडी)

वेवार—देखो वेसवार' (रू भे)

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

वेवाई—देखो 'विवाई' (रू भे)

वेवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे)

वेवाहणौ, वेवाहवौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू. भे)

वेवाहणहार, हारौ (हारी), वेवाहणियौ—वि० ।

वेवाहिश्रोडौ, वेवाहियोडौ, वेवाह्योडौ—भू० का० कृ० ।

वेवाहीजणौ, वेवाहीजवौ—कर्म वा० ।

वेवाहियोडौ—देखो विवाहियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वेवाहियोडी)

वेवाही—देखो 'व्याई' (रू भे)

उ०—१ थयौ सूरग वीवाह, रग सूरग रह्यौ वेवाहियां । —श्रीपालरास

उ०—२ स्वजन वेवाहिय धूरइ, भूरइ निगहिय नेह । लेई श्रचेत ऊपाडिय, माडिय श्रांणीय गेहि । —जयसेखर सूरि

वेवियोडौ—१ देखो 'वहियोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'वेवियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वेवियोडी)

वेसभाळ—वि० [श्र वे+राज सभाळ] बिना चेतना का, वेसुध, चेतनारहित ।

वेस—स पु. [स वेश] १ पहनने के वस्त्र, पोशाक, वेश ।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नै कहै छै—हे कंथ । श्राप भलां भाग नै जीवता घरे श्राया । श्रवै म्हारी वेस धारण करावौ । श्रबै म्हनै श्रा चूडिया सूं लाज श्रावै छै सो हू तौ हमै चूडिया पैलै जनम भेटसू । —वी स टी.

उ० —२ श्रेक दिन सिंझ्या रा घोडा माथै बैठौ वौ यूं ईं,विरया तवडका मारतौ हौ कै उणनै मरवर री पाळ सू उतरती पिणियारघा री झूलरी साम्ही धकियौ भात-भात रा सुरगा भात-भांत रा रूपाळा उणियारा । रू रू मे जोबन छळकै । —फुलवाडी

उ०—३ पछै समेट खाम कर थेली मे घात कागळ प्रोहित नु पहुँचायौ । धिरमौ एक वेस एक जनांनो श्रवल, रुपीया सव इतरा प्रोहित नु विदा रा मेलिया । मण एक सीरावणी मारग री मेली । —कुवरसी साखला री वारता

२ कपडे श्रादि पहनने या पहन कर सजने या किसी श्रन्य को पहना कर सजाने का ढग, तरीका ।

उ०—१ श्रर श्राप न हालो तौ कन्या नू तरुणी हुई जाणि चद्राउता पुरोहित री घरणी दिवाई मोनू बींद री वेस कराइ साहस थी श्राणियो तौ भी दिल्ली रा दूत दसोर पुगा जाणि पाछी ही पलाईजे । —व भा.

उ०—२ पछे नरवद छानो घोडे-वहल वेस ने जंनारण या कोस १ श्ररट छै तठै रह्यौ । सु सुपयारी श्राथण री मजूरणी रौ वेस करने माथै घडौ लै नीसरी । —नैणसी

उ०—३ श्राज निसह म्है चालिस्या, वहिस्या, पथी वेस । जउ जीव्या तउ श्राविस्या, मुया त उणि हिज देस । —ढो. मा.

क्रि प्र.- करणौ, कराणौ, देणौ, धारणौ, पहरणौ, पहराणौ, वदळणौ, बदळाणौ, लेणौ ।

३ रगमच के पीछे का स्थान ।

४ भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश द्वार ।

५ वेश्याश्रों का मोहल्ला ।

६ वेश्या का घर ।

७ शरीर, दहन ।

उ०—१ श्रावइ श्रावासि श्रापणइ परि लूहता केस । पुण्य हुई तु पामीई, वेस्या केरु वेस । —मा. कां. प्र.

उ०—२ सुंदरभाल विसाळ, अलक सम माळ अनोपम। हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम। क्रपा धाम नव कंज, नयण अभिराम सनेही। रुचि कपोल ग्रीवा त्रिरेख, छवि वेस अछेही। निरखत संत सनमुख निजर, करण पुनीत सुप्रीत कर। गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान ओ ध्यान कर। —रा रू

८ स्थिति, हालत, अवस्था।

९ रूप, सौन्दर्य।

१० रूप, स्वरूप।

[सं. वेश] ११ एक दानव जो आयु राजा की रक्षार्थ देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि —१ विशेष, श्रेष्ठ बढ़िया।

उ०—१ अै वस्तुआ आपरै हीज लायक छै। म्हारै लायक नहीं तद रावजी राखी। घोडौ एक निपट वेस थौ सो रावजी राखियौ। —ठाकुर जैतसी री वात

उ०—२ कुतक खिदर धव काठ रा, विदर पजावण वेस। तौ पिण हाजर राखणा, घणा मेहमा हमेस। —बा दा

उ०—३ दिस बनावौ ग्रहन कू, तौ सुख पाऊ वेस। भिळिया भ्यानी भागसी; जासी सर्व ग्रन देस। —श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—४ सदा मनोरथ सुभ करण, वाणी अख्यर वेस। सारा पहली समरियै, गवरी पुत्र गणेस। —पनां

२ देखो 'वेसर' (रू भे.)

उ०—सुधीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। सुरु गुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै। मुख प्रकास हास मद, ओपमा उजासय। उदै अरद्ध भाणए, मयंकज प्रकासय। —सू प्र

३ देखो 'वेस्या' (रू भे)

उ० —मुहनउ लेई सवि समुदाय आव्यु जिहां वइठउ छइ राय। अप आयस लही वर वेस रगगणि कीधउ प्रवेस। —हीराणंद सूरि

४ देखो वेस्य' (रू भे)

उ०—कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवदा। विणज विसाळ कुण वेस, कुण सुद्र कहदा। —केसोदास गाडण

५ देखो 'वयस' (रू भे)

उ०—१ आळम वाळा राजवी घर रा घर मैं दारू पी रोटी खाय सूय रैणी, घर री काम परोपकार, वीरता, देस सेवा, आदि आछा काम न करणा मैं व्रथा यू ही वेस ऊमर गमावै है। —वी स टी

उ०—२ हैंम वरनी हेम गिर, वाली लहुवै वेस। कथ विहुणी कामणी साची कहि सदेस। साची कहै सदेस वैण मीठा करू, राज मुवै मर हुय्य रग महिला धरू। —मा वचनिका

उ०—३ हमें सारी नाग नारी उचारी विहारी हूत, सवारी पधारी वळै लेतौ आजै सूक। कठै था री वेस भ्रमी जुद्धकारी वाता करै, फूणाधारी दीठौ न छै आगकारी फूक। —मुरारीदास बारहठ

उ०—४ संसव तनि सुभपति जोवण न जाग्रति, वेस सधि मुहिणा सु वरि। हिव पळ पळ चढती जि होइ सै, प्रथम ग्यान एहवी परि। —वेलि.

उ०—५ देवी रग्न नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीरूप अग। देवी बाल जूवा अघ वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसां भुजाळी। —देवि.

रू भे —वेस, वैस, वेख, वेसि, वैस।

वेसऊर—देखो 'वेसऊर' (रू भे)

वेसऊरी—देखो 'वेसऊरी' (रू. भे)

वेसकार-स पु. [स वेषकार] किसी वस्तु की सुरक्षार्थ उस पर लपेटा हुआ कपडा।

वेसकीमत, वेसकीमती—देखो 'वेसकीमती' (रू भे)

वेसजुवति वेसजुवती—देखो 'वेसयुवती' (रू भे)

वेसण—देखो 'वेसण' (रू. भे.)

वेसणियौ—स. पु.—वेसन, नमक मिर्च आदि के घोल को पका कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

वेसणी—देखो वेसणी' (रू भे.)

वेसणौ—देखो 'वैसणौ' (रू. भे.)

वेसणो, वेसवौ—देखो वैठणौ, वैठवौ' (रू. भे.)

उ०—काम पडिया वगतर टोप पेरवा री आखडी। केसरिया वागा विना पेरवा री आखडी। दात रा चुडा विना वडाग्णा राखणरी आखडी। घुडवेल वेसवा री आखडी। गाया री घासमारी लेवा री आखडी। —रा. सा स

वेसणहार, हारौ, (हारी), वेसणियौ—वि०।

वेसिओडौ वेसियोडौ, वेस्योडौ—भू० का० कृ०।

वेसीजणौ, वेसीजवौ—भाव वा०।

वेसधर—स पु [सं वेशधर] जैनो का एक सप्रदाय, छद्मवेषी।

वेसन—१ देखो 'वेसण' (रू भे)

२ देखो 'विसण' (रू भे)

वेसनर वेसन्नर—देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

उ०—१ वेसनर भी लकडी लोह पाखाण लुकाए। —केसोदास गाडण

उ०—२ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर, काम वाण ग्रहिय करगि। वळि रितुराइ पसाइ वेसन्नर, जण भुरडीतौ रहै जगि। —वेलि.

वेसनव—देखो 'वंसणव' (रू भे)

वेसबधू—देखो वेसवधू' (रू भे.)

वेसबर—देखो वेसवर' (रू, भे)

वेसवरी—देखो वेसवरी' (रू भे)

वेसवार—देखो 'वेसवार' (रू भे.)

उ०—तठा उपरात खरगोस होसनाक वणावै छै। मछळाद मिटा-यजै छै। नान्हो छून देगचा मे घातजै छै। माहे वेसवार हल्द घणा सूठ मिरच जायफळ तज लाग घातजै छै। —रा. सा. स

वेसव्र—देखो 'वेसवर' (रू भे.)

वेसव्री—देखो 'वेसवरी' (रू भे)

वेसभूसा-सं स्त्री [स वेषभूषा] १ किसी देश, सप्रदाय, जाति आदि के द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक २ शरीर की सजावट हेतु पहने हुए कपडे। (अ. मा, ह ना मा)

वेसम—देखो 'वेस्म' (रू भे) (ह ना. मा.)

वेसमझ—देखो 'वेसमझ' (रू. भे)

वेसमझी—देखो 'वेसमझी' (रू भे)

वेसमण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे) (जैन)

वेसयुवति, वेसयुवती-स स्त्री [स वेशयुवती] वेश्या, रण्डी। रू भे वेसजुवति, वेसजुवती।

वेसर, वेसरु-स स्त्री [स वेश्वर या वेसर] १ खच्चर।

उ०—१ अलूखानि जण साथि मोकल्या, देखाडयू मेल्हाण। घोडा हाथी ऊट पोठिया, वेसर पूठि पल्हाण। —का दे प्र

उ०—२ पाडा गाडा पोठिया, वली वेसरा वादि। भार भरिया भल सचरइ, अमल चढिया उन्मादि। —मा का प्र

२ देखो 'वेसर' (रू भे)

उ०—१ आभा झळपट अग क चर्दे चीरिया, दरियाई धुज देह धरे डग धीरिया। लटकण झोला लेह क वेसर वकिया भरिया भूखण भार क लचकं लकिया। —र. हमीर

उ०—२ काइ नाम की जातिया, सुदर वोहत सरूप। नख चख दीसै अति चतुर, वल वेसर छळ रूप। —पना

उ०—३ नाका नी नथडी लावजो, म्हारै नाका नी नथडी लाव। म्हारै वेसर फूल लगावो हो, म्हानै खेलण द्यो गनगोर। —लो. गी

उ०—४ तन मोड वाकी निजर त्रिपुरा, सलज चढिया सोहळी। सळ नाक चाढै विकट सोहै, अहर वेसर अळवळी। —मा वचनिका

उ०—५ सुभ नाक वेसर जडितस सौवन, असुर पास अळूझए। सिणगार असुरा छळण समहर, सगति अदभुत सझ ए। —मा वचनिका

वेसरज—देखो 'वेसरज' (रू भे.)

वेसरम—देखो वेसरम' (रू. भे.)

वेसरमी—देखो वेसरमी' (रू. भे.)

वेसलूक, वेसलूग-वि० [फा वे+सलूक] १ विना ढग का, तौर-तरीके रहित।

२ विना सम्बन्ध या रिश्ते।

३ अव्यवहार।

४ वेचैन, घबराया हुआ, उद्विग्न।

उ०—अवं कुभो जीव रो उकराळयो, ऐकल असवारी मंडोवर गयो। तरा रिणमलजी माळियै बैठा अळगा सु कुंभा नै आवतो ओळखियो। तितरै आयो रिणमलजी नु मिळियो। कुभो गळगळो हुवो। तरा रिणमलजी पूछियो—अवार एकलो वेसलूक सो क्यु? खातणी वाळा विगाडी दीसै छै। —राव रिणमल री वात

वेसवण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे)

वेसवधू—देखो वेसवधू' (रू भे)

वेसवनिता-स स्त्री [स वेशवनिता] वेश्या, रण्डी।

वेसवा—देखो 'वेस्या' (रू भे) (जैन)

वेसवाद—देखो 'वेस्वाद' (रू. भे)

वेसवानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे)

वेसवार-स. पु [स] पीसे हुए नमक, मिर्च, लौंग, हल्दी, धनिया, काली मिर्च आदि मसालो का चूर्ण।

उ०—१ तं मं घणो नान्हो छुनियो मास मदी प्रांव कढाई में तळजै छै। वेसवार मसाला घात उहा माडा मे घातजै छै।

—रा सा स.

उ०—२ मास रधाणा देगचा वेसवार अपारा, सूळा त्यार किया सही जाजै घ्रत झारा। आया थाळ मिठाइया पकवान जझारा, भोजन छपन छतीस भांत जीमै जुग सारा। —पा. प्र.

उ०—३ आगै समघडो हथियार खोल नै वैठो छै। ससो एकै रजपूत नु दीयो। कह्यो, 'सखरो वणावो'। उण कह्यो, "भला, जी' तठै रजपूत वेसवार ससै नू दे अर अगीठी जगायो छै।

—पीठवं चारण री वात

उ०—४ तठा उपरात मोदियां नै हुकम हुवो छै। भुजाई सारू सारी ही वमत सीधो मीठाण वेसवार सरव लेय राती नाडी चाल-ज्यो म्है सिकार रम वण नाडी आवा छा। —रा. सा. स.

उ०—४ जरै जीमण नै पचधारी लापसी मोकळी मगळीक कीधी। घणा दाळ भात वणाया। घणा वेसवारां राधिया, सालणा वणाया। जीमण तयार हुवौ। तरा आईदान जैतसीजी कनै गयौ नै कह्यौ, पधारीजै, रसोडौ तयार हुवौ छै। —जैतसी ऊदावत री वात

२ पहले हड्डिया अलग करके पीस कर मसाले मिला कर पकाया हुआ मास।

रू. भे —विसवार, वेसवार, वेवार, वेसवार, वेसवारौ, वेसार।

वेसवारियोखीच–स पु [स वेसवार+कृशर] वाजरी के साथ कुछ मोठ कूट कर उनके छिलको को अलग कर फिर उबालते समय नमक, मिर्च, धनिया आदि वेसवार' एव काचरियो के छोटे-छोटे टुकड़े मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।

रू भे —वेम्वारियोखीच, वेसवारियोखीच, वेस्वारियोखीच।

वेसवारौ—देखो 'वेसवार' (रू. भे)

उ०—वेसवारी वळाहि, साजमणी हुँता ससा। खरा न खाधा जाहि, विस भरीया वेसूर रा। —पीठवै चारण री वात

वेसवास–स पु —१ वेश्या या रण्डी का घर।

२ देखो 'विस्वास' (रू भे.)

वेसस्त्री–स स्त्री —वेश्या, रण्डी।

वेसामी, वेसांमी—देखो 'विस्राति' (रू. भे)

उ०—मुहम प्रकोप उदेपुर माथै, सातैइ महण थया फिर साथै। लाधा जळ वेसांमी लीजै, छीजै जतु प्रजा पुर छीजै। —रा रू.

वेसा—देखो 'वेश्या' (रू. भे.)

उ०—महि तु सूप्रहा रूपइ थई, वेसा ,,पजरि बइठउ जई। राज-कुमरि हिव अतिहि अलजई, महती मागलि कहिवा गई। —हीराणंद सूरि

वेसाडणौ, वेसाडवौ—देखो 'वैठाणौ, वैठावौ' (रू भे)

वेसाडणहार, हारौ (हारी), वेसाडणियौ—वि०।

वेसाडिओडौ, वेसाडियोडौ, वेसाड्योडौ—भू० का० कृ०।

वेसाडीजणौ, वेसाडीजवौ—कर्म वा०।

वेसाडियोडौ—देखो 'वैठायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसाडियोडी)

वेसाणौ, वेसावौ–क्रि स —१ उत्पन्न करना, व्याप्त करना।

उ०—ज्यू कोइ रै स्रद्धा वेसाणीनै कहै हिवै तू गुरु कर। तब तै कहै दोय चार जणा नै पूछ सू तथा आगला गुरु नै पूछ सू। तै कहसी तौ गुरु कर सू। जव जाणणी इणरै स्रद्धा पक्की वैठी नही। —भि. द्र.

२ देखो 'वैठाणौ, वैठावौ' (रू. भे)

उ०—वेडी घाली वेसाणियौ रे, राह ग्रह्यौ जिम चद। जोरी कोई चालियौ, सिंह पड्यौ जिम फद। —प. च. चौ

वेसाणहार, हारौ, (हारी), वेसाणियौ—वि०।

वेसायोडौ —भू० का० कृ०।

वेसाईजणौ, वेसाईजवौ—कर्म वा०।

वेसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

वेसायोडौ–भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, व्याप्त किया हुआ।

२ देखो 'वैठायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसायोडी)

वेसार–स पु —विश्वास, भरोसा, एतवार।

वि०—१ विना सार का, तत्वहीन।

२ विना तलवार वाला, जिसके पास तलवार न हो।

३ विना चर्वी का, चर्वीहीन।

४ देखो 'वेसवार' (रू. भे)

वेसावणौ, वेसाववौ—देखो 'वैठाणौ, वैठावौ (रू. भे)

वेसावणहार, हारौ (हारी), वेसावणियौ—वि०।

वेसाविओडौ, वेसावियोडौ, वेसाव्योडौ—भू० का० कृ०।

वेसावीजणौ, वेसावीजवौ——कर्म वा०।

वेसावियोडौ—देखो 'वैठायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वेसावियोडी)

वेसास—१ देखो 'विस्वास' (रू भे)

उ०—मेछै वहतै मेलिया, दूत कमधा पास। साहरै रहिया आज लग, थै म्हारै वेसास। —रा रू.

उ०—२ वळै रूखमइयै कहै छै। इतना राजवस छोडिनै अहीर सू सगाई करै। सू वूढा हुआ को वेसास को मत करो। देखो माता पिता कितरउ चूकै छै। —वेलि टी.

उ०—३ काम सूप नह कीजिए, विदर तणो वेसास। रांणै कीधौ 'राजसी', हुओ जगत मैं हास। —वा. दा.

उ०—४ मन री उदास वेसास न जिय री, खान पान सुख नहीं उण घाळी। कद मिळसी रसराज सावळडौ, वनमाळी गोकुळ री ग्वाळी। —रसीलैराज री गीत

२ देखो 'वेसास' (रू. भे.)

उ०—पीर न को वेपीर सो, आस न जिसी निरास। सकल न कोई अकळ सा, सास न सा वेसास। —अनुभववाणी

वेसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू भे)

उ०—१ वेसासघात लै विसतरी, सळी सळी कुळ सोधिया। सुपनख्या वेध कीयो सवळ, रावण राम विरोधिया। —सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ माल खायो ज्यारी त्यारो रती हीयै नायो मोह, कुबदी सू छायो भायो नही रमाकत। वेसासघात सूं काम कमायो बुराई वाळो, माजनो गमायो नीवावता रै महत। —कविराजा वाकीदास

वेसासडउ, वेसासडो—देखो 'विस्वास' (अल्प, रू. भे.)

उ०—करहा तुझ वेसासडे, मै विसारिया सहूकाज। रखे वीच वासो करै, मारू न मेळै आज —ढो मा

वेसासणो, वेसासवो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासवो' (रू भे)

उ०—१ तठै कालवूत हसतणी रै फरस करि नै छिवितरी खाड मांहे पडै छै। पछै लोह साकल रा प्रास नाखिनै तिकै हाथी पकडीजै छै। इणी भाति रा सीधली गजराज वेसासनै आणिम्रा छै। तांह नूं घणा मलींदा, वेसवार, मोगर दै दै नै पाटि आणिनै सझाया छै। —रा सा स.

उ०—२ सुजु करै अहीरा सरिस सगाई, ग्रोलाडै राजकुळ इता। ग्रिधपणै मति कोइ वेसासौ, पातरिया माता इ पिता। —वेलि

उ०—३ प्रमेसुर अक तणै परमाण मडै घर 'छाडा' वेध मडाण। वेसासै दाखै कोल वचन्न, मारू राव ग्रोह धरै वडमन्न। —गो. रू.

उ०—४ जळ माहे जगदीस, विढै मघकीट विभाडै वतळावै वेसासि, पछै दाणवा पछाडै। —पी ग्र.

उ०—५ तारा खडिया रा साथ नै परतीत आई। सगा रा नाम-ठाम ठीक पहुता, वेसास्या। तरै खडियै आईदान आय सुभराज कीयो। तरै जेतसीजी घोडा सू उतरिया। वाह-पसाव करिनै मिळिया। —जेतसी ऊदावत री बात

वेसासणहार, हारो (हारी), वेसासणियो—वि०।
वेसासिग्रोडो, वेसासियोड़ो, वेसास्योडो—भू० का० कृ०
वेसासीजणो, वेसासीजवो—भाव वा।

वेसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे)

उ०—१ रिणमल्ल राउ कूभेण राणि, वेसासि चूकि वूहउ विनाणि कूभेणि कूड कीयउ कदम्म, मारियउ 'रडण' साख्यात ग्रम्म। —रा. ज सी.

उ०—२ सत्रियै सपुत्रै वधवै समेत्रै सगै, न क्यों समरयै न हुवै सामासि। वाट वसना पडै न की वाट बाहर चडै, ती वसती तणी किसी वेसासि। —तेजोजी चारण

वेसासियोडो—देखो 'विस्वासियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसासियोडी)

वेसासो—देखो 'विस्वास' (रू. भे)

उ०—वरसा सौ जीवण की आसा, पण एक घडिय नही वेसासा। समयसुदर कहइ अथिर ससारा, जनमि जनमि जिन ध्रम आधारा। —स. कु.

वेसि—१ देखो 'वयस' (रू भे)

२ देखो 'वेस' (रू. भे)

उ०—अन्न उदक पय परिहरि, आभरण ऊवेखि। वकुल त्वचा वीटि करि, तरुणी तापस वेसि। —मा का प्र.

३ देखो 'वेस्या' (रू. भे)

उ०—वेसि पभणइ वेसि पभणइ 'मन्त्रि सुणि वात। ए सहूइ धन ताहरउ रहिय भोगवि भली परि, मत्रीसर इम सभली वचनवद्ध रहिउ तसु घरि। —हीराणद सूरि

४ देखो 'वेस्य' (रू भे.)

वेसियोडो—देखो 'वंठियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वेसियोडी)

वेसी–वि.—१ वेस धारण करने वाला या वेसधारण किया हुआ।

२ देखो 'वैसी' (रू भे.)

उ०—१ इण कारण इण सामाजिक रूप री मिनख नै जितो वेसी बोध होसी वो उती ई समरथ वणसी। —फुलवाडी

उ०—२ म्हारी औ डिड विस्वास कै धरती माथै मिनख सू वेसी की चीज कोनी। —फुलवाडी

उ०—३ केई जणा मिनकी रै प्रगट व्हिया ऊदरा हुडवडै ज्यू कानी कांनी न्हाटा। केई डावडिया नै तो डर रै कारण जाफ आयगी। विडरूपता विचै ई वानै भूत रो डर वेसी लागो। औ खगडो व्हियो तो कांई व्हियो।

—फुलवाडी

वेसुद—देखो 'वेसुध' (रू. भे)

उ०—भली भात परुसारो किया नै दारू पावता गया। तरै सारा लोटपोट वेसुध हुवा तरै सड वेउ आडा देनै लगाइ दिया। कत-राहैक वळ मूवा वाकी रा फळसा रै मुहडै आया सु खीली खटका विगर मारिया और साथ डूगर रा घरा ऊपर मेलियो।

—नैणसी

वेसुद्धि, वेसुधी—१ देखो 'वेसुध' (रू. भे.)

२ देखो 'वेसुधी' (रू. भे)

वेसुमार—देखो 'वेसुमार' (रू. भे)

उ०—कळहिया कमध आसुर सक्रुद्ध, जदुवस भाण किर भांण जुद्ध। ओळा कि अतुळ गोळा अपार, वरखत दहू दळ वेसुमार।

—रा. रू.

वेसुर, वेसुरो—देखो 'वेसुर' (रू भे)

वेसुंवाद—देखो 'वेस्वाद' (रू. भे.)

वेसूर—देखो 'वेसऊर' (रू भे)

उ०—वीसळदे वेसूर खाटी पण खाधी नही। कीधी घात कहर, माया उण में मोतिया। —रायसिंह सादू

वेसूरत—देखो 'बदसूरत'।

वेसूं'रौ—देखो 'वेसऊर' (अल्पा, रू भे.)

वेसूल, वेसूलौ—वि०—१ निष्कटक।

२ विना दर्द।

उ०—वेसूल फूल-धारा विहार, भालं पडत डोले भभार। सग्राम लोह वाहै सनद्ध, विपरित घाउ ऊभळा-वद्ध। —गु. रू व.

३ अपार, असीम।

उ०— छह दरसन छिनवं पाखडा, एक न जाणं नाव अखडा। केना देख पाखि नर भूला, विखै करम करिग्या वेसूला।

—अनुभववाणी

४ अमर्यादित।

वेसोटौ—देखो 'वेसोटौ' (रू भे.)

वेसौ—देखो 'वेसौ' (रू भे)

उ०—घर वेसा धरवेस कहाया, धिल धरवेस मता नही पाया। हाथै भडा गलै वागली, धरि छाडि मागै भीख आगली।

—अनुभववाणी

वेस्टक—वि. [स वेष्टक] १ चारों ओर से ढकने या आवृत करने वाला।

२ घेरा डालने वाला।

वेस्टकापथ—स. पु [स वेष्टकापथ] एक प्राचीन शिव स्थान। (पुराण)

वेस्टण, वेस्टन—स. पु. [स. वेष्टन] १ कोई वस्तु आदि लपेटने का कपडा।

२ लपेटने की क्रिया या भाव।

३ घेरने की क्रिया या भाव। (४) पगडी, साफा।

५ नृत्य का एक प्रकार का भाव विशेष। (६) घेरा, अहाता।

वेस्टित—वि. [स. वेष्टित] १ लपेटा हुआ २ लिपटा हुआ. ३ घेरा हुआ ४ ढका हुआ, आच्छादित।

उ०—जगत मात जननी जग जानी, मदिरा रुधिर छाक मन मांनी। वेस्टित अरून उरन के अबर, तप मुख मनहु प्रात रात-बर। —मे. म.

वेस्टितकरण—स. पु.—शृगार मे एक प्रकार का आसन विशेष।

वेसम—स पु. [सं. वेश्म] घर, गृह, मकान।

रू. भे.—वेस्म वेसम।

वेस्य—स पु [स. वैश्य] १ व्यापार करने वाला, व्यापारी, बनिया।

२ व्यापारिक समुदाय। ३ वैश्य जाति।

४ वैश्य जाति का व्यक्ति।

रू भे.—वइस, वईस, वयस, विस, वंस, वइस, वईस, वेस, वेसि, वेईस, वंस, वंस्य।

वेस्यागना—स. स्त्री [स] वेश्या वृत्ति करने वाली स्त्री।

वेस्या—स स्त्री. [स. वेश्या] १ वह स्त्री या स्त्रियो का वर्ग जो धन लेकर सभोग कराने का व्यवसाय करती हैं। पातर, रण्डी, वेश्या।

उ०—१ खेरवा मे स्वामीजी कनै श्रोटो स्याल उधो अवळी वोल्यो थें स्रावक नें दियाइ पाप कही नें वेस्या नें दियाइ पाप कहो छै, इण लेखें स्रावक अनें वेस्या सरीखा गिण्या। —भि. द्र

उ०—२ सपरिकरि सध्या समइ, रथि बइसीनइ राय। वेख धरी विवहारिया, वेस्या नइ घरि जाय। —मा का प्र.

वि० वि०—वेश्याओं के कई वर्ग होते हैं—(१) पातर (२) भगतन (३) रामजनी (४) हुरकनी—ये हिन्दु हैं तथा (५) कचनी (६) सावत ये मुसलमान हैं। धन लेकर सभोग कराना इन सब का सामान्य व्यवसाय है। परन्तु इनके रहन-सहन एव व्यवसाय करने के कुछ अलग अलग तरीके हैं इस कारण ये वर्ग एक दूसरे से कुछ भिन्नता रखते हैं।

(१) पातर —इनके बाप, भाई आदि जागरी होते हैं और इनकी उत्पत्ति राजपूतो से मानी जाती है। जागरी लोग अपनी वहन-बेटियो से सभोग का कार्य करवाते हैं। इनकी औरतें यह कार्य नही करती। कवारी लडकी से व्यवसाय कराना पाप समझा जाता है। इसलिये जिस लडकी को पातर बनाना चाहते हो उसके विवाह की रस्म छोटी ऊम्र में ही गणेशजी के साथ पूरी कर दी जाती है और उसके जवान होने पर ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ इसका प्रथम सभोग करा दिया जाता है। उस रात गाना बजाना व उत्सव मनाया जाता है उसके बाद उसका व्यवसाय चलने लगता है। इसके अतिरिक्त ये कुछ गाना-बजाना व नाचने का कार्य भी करती हैं। इस कार्य की तालीम इन्हें मीरासी लोग या भगत देते हैं। किसी मुसलमान के साथ सभोग कराने का इनमें प्रतिबंध है। विधवा औरतें किसब का व्यवसाय नही कर सकती। इनकी पोशाक पाजामा, और लवा अगरखा तथा सिर पर दुपट्टा है। कभी कभी घाघरा अगरखा भी पहनती हैं। इनका धर्म शाक्तिक है। खान-पान राजपूतो जैसा है। धोबी ढोली, मोची, वाभी, महत्तर और मुसल-मानो से ये परहेज करती हैं।

(२) भगतन —इनकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से मानी जाती है। इनके विवाह रस्म किसी गरीब साधु के साथ फेरे दिरवा कर पूरी करवादी जाती है। साधु को कुछ धन देकर उससे यह वात तय करवा ली जाती है कि वह इस लडकी का कोई दावा नहीं करेगा। ऐसा साधु यदि न मिले तो पातरियो की तरह इनके विवाह

की रस्म भी गणेश जी साथ फेरे दिरवा कर पूरी करादी जाती है। यह 'क्वारपना' उतारना होता है। कवारी लडकी से किसब करवाना इनमे भी वर्जित है। विवाहित औरतें किसब का व्यवसाय नही करती। पातरियो की तरह ये भी गाना-बजाना व नाचने का कार्य करतीं हैं परन्तु इस कला में पातरिया ज्यादा शिक्षित होती हैं। पोशाक इनकी भी पातरियो जैसी होती हैं। सभोग कराने मे मुसलमानो से परहेज नही करती परन्तु उनके हाथ का खाना-पीना नही करती। दारू, मास, गाजर, सलजम, प्याज व लहसुन से परहेज करती हैं। धर्म इनका वैष्णव है, इष्ट हनुमानजी का रखती हैं।

इन दोनो के अलावा हिन्दुओ में रामजनी और हुरकनी नामक वेस्याओ के दो वर्ग और हैं पर उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है।

(३) कचनी —ये मुसलमान रडिया हैं। ऐसा कहा जाता है कि पहले इनको 'कजरी' कहा जाता था, परन्तु बादशाह अकबर ने कजरी के स्थान पर कचनी नाम रख दिया। इनके भाई-बाप आदि कचन कहलाते हैं। इनका रहन-सहन मुसलमानी ढग का होता है। औरतें परदा रखती हैं और लडकियों को रण्डी बनाने के लिये कलावतो से गाने-बजाने व नाचने की तालीम दिलाई जाती है। पातरियो और भगतनो की तरह इनका भी 'कुमारपना' उतारा जाता है पर कोई मजहबी या वैवाहिक रस्म पूरी नही की जाती। पातरियो की तरह ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ लडकी का प्रथम सभोग करवाया जाता है। उस रात लडकी को दुलहिन बना कर उस आदमी के पास भेज दिया जाता है, सुबह अपनी बिरादरी मे मिठाई बाटी जाती है।

कचनिया सिर खोल कर नाचती हैं। कभी-कभी बरातो मे नाचने भी जाती हैं। गाने-बजाने व नाचने मे ये पातरियो और भगतनियों से अधिक दक्ष होती हैं। अदाएँ दिखा कर ग्राहको को फसाना और लूटने मे चालाक होती हैं। गजल और ठुमरी इनका खास गाना है। पोशाक इनकी अगिया, कुरती, पजामा और दुपट्टा है। इनका चूडा काच का होता हैं।

कचनी के अलावा मुसलमान वेस्याओ का एक 'सावत' वर्ग और होता हैं, परन्तु उसका विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है।

इन सब के अतिरिक्त इसी प्रकार का व्यवसाय करने वाली एक किसबन या कसबन नामक कौम है। जो पहले हिंदू थी मगर अब मुसलमान है। ये छोकरियो को मोल लेकर पोशीदा कसब कराया करती थी। एक बार एक मुसलमान छोकरी ने इस काम के लिए मना किया एव परदे मे बैठ कर कुरान पढने लगी और दूसरी छोकरिया इसको परदा खोल कर बदनीयति से देखती थी तब इसने बददुआ दी कि जाओ तुम्हारे वस्त्र चौडे आ जाये एव गर्मी हो जाय। उसी दिन से ये बाजार मे कसब कमाने के कारण कसवन या टकियाई या टकियारी कहलाने लगी।

मारवाड मे गुजरात से उस समय आई जिस समय वहा के हाकिमो के अहदी मारवाड मे आते थे। इनकी खाप चौहान, चापावत, सोढा, भाटी आदि है। ये पहले रामदेवजी को मानती थी और अब खुदा आदि का नाम लेती हैं एव मुसलमानी ढग बरतती है। इनके नाम हिंदुओ जैसे होते हैं। और इनकी पोशाकें रडियो व ग्रहणियो जैसी होती हैं। ये गाना-बजाना नही जानती। ये शराब पीती हैं। किन्तु सूअर एव झटके का मास नही खाती। ये चलते फिरते आदमी को फसा लेती है। इनकी लडकियों की शादी तेलियो, घाचियो आदि की उन स्त्रियो के लडको से की जाती है जो मुसलमानों के घर घुम जाती है। इनकी ब्याही स्त्री कसब कमाने का काम नही करती और अगर करती है तो वह जाति-च्युत कर दी जाती है। जाति-च्युत औरत को जाति मे लेने के लिए अजमेर भेजा जाता है। वहा उसें गुनहगारी मे पचों का हुक्का भरना पडता है।

२ स्वर्ग-लोक की अप्सराएँ।

उ०—देराणी वचन—आज झगडा ऊपरै जावतां भेस करियो छै। कुसम फूला री मोह अनै वसण कपडा रगिया है। केसर मैं नेह न देह सदैव जो नेह म्हा सू राखता हा सो भी आज नही अरथात म्हारा सू ही सनेह छोडियोडा होवैं ज्यू सोह रहिया छै। इण वास्तै म्हनै तो तुलें है की वाभीजी साहब म्हारैं पती लोडी सौक बसावैला अरथात जुद्ध मैं मारीज अपछरा वरसी हू सत करनै जासूं जितरै लोडी सौक घकै मिळसी। जेठाणी कहै—हे देरांणी तूं उण कुळ मैं उपजी है जठै थारै माता पिता रा दोनू ही पख बिना दाग रा अरथात निकलक है-सो काई मूडो सो वेस्या ही थारो सुहाग खोस लेवै।

—वी. स टी.

रू भे —वेसा, वेस, वेसा, वेसि, वैस, वैस्या।

वेस्याकार—एक वर्ग विशेष ?

उ० 'गधिकायण दौष्यिकापण सौवरणकार कास्यकार मणिकार पूगीफलतांबूलिक मालिक सौत्रिक लडुककार कादुकिकार कणकार वेस्याकार चरमकार मल्लक खलक धान्यखलक वाटक वाटिका वामी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर। —व स.

वेस्यारत–वि०—वेस्याओ मे अनुरक्त, लीन, वेश्यागामी।

उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैण माही राज करै। तेथी जुवारी, मासाहारी, सुरापानी, वेस्यारत, चोर, आखेटी, परदारत रो नाम नही।

—सिंघासण बत्तीसी

वेस्याहटी-स पु —वेश्याओ का मुहल्ला । (सभा)

वेस्समण, वेस्रवण —देखो 'वैस्रवण' (रू. भे)

वेस्वारियोखीच—देखो 'वेसवारियोखीच' (रू भे.)

वेह-स. पु. [स वृद्धि] १ विवाह मण्डप (विवाह वेदी) के चारों कोणो (चारों उपदिशाओ—नैर्ऋत्य, मारुत, ईसान एव आग्नेय) में हरे वासो के सरक्षण में रखे जाने वाले मटके जो ६-६ की सख्या में ३६ होते हैं ।

उ०—१ दिन ऊगी, ताहरा ग्गिामलजी सीसोदिया रा माथा वाढि चवरी रचाय, तियां री चोकया कीवी । तिया ऊपर वरछारी वेह माडी । अर सीसोदिया री वेटिया राठोडा नू परणाई । च्यार पोहर दिन वीमाह किया । —नैणसी

उ०—२ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति नीला भाला वस केलि खभ सूना गलिग्रा थका काचना रा कळसारी री वेह करि नै चौरी पधराया छै । हथळेवो जोडि छेहडा वाधिया छै । सु जाणे मन वाधिया छै। —रा सा. स.

उ०—३ विप्र मूरति वेद रतन मं वेदी, वस ग्रास अरजुनमं वेह । अरणी अगनि अगर मं इधण, ग्राहुति घ्रत घणसार अछेह ।

—वेलि

उ०—४ स्रुति वायक सुभ मत्र, तवं फल दायक तोरण । पधरायो परणवा, 'ग्रभो' ग्रायो राय अगण । नहरत मारुत निरखि, कूंण ईसान अगन कसि, वस हरित जुत वेह, दीप रस नेह प्रसट दिस ।

—रा. रू

उ०—५ तव लगन लखि रिखि उरधि, स्रव कूण प्रावथ सुरधि । रचि कनक वेह सुरग, ग्रोपति नव खण ग्रग ।

—रा रू.

वि० वि०—ये मटके (कलश) राजा महाराजाओं के सोने-चादी के होते थे एव दूसरो के मिट्टी के होते हैं, जिन पर लाल कपडे लपेटे हुए होते हैं । इनमे राजे-मगद आदि डाले जाते हैं कही सात सुपारिया एव कुछ मूग डाले जाते हैं । ये कलश लडके की शादी मे सात, नौ या इग्यारह होते हैं, जो 'तोरण थभ' के पास रखे जाते हैं एव लडकी की शादी मे छत्तीस होते हैं जो विवाह-मडप (विवाह वेदी) के चारो ओर नौ-नौ के चार समूहो मे रखे जाते हैं, इनमे सबसे ऊपर वाले कलश को 'वूझो' कहते हैं एव हरे बासो के सरक्षण मे चारों उपदिशाओ मे रखे जाते हैं एव आठो दिशाओ मे दीपक जलाये जाते है ।

२ मगल-कलश ।

३ विवाह-मडप, विवाह-वेदी ।

सर्व —वह, वे ।

२ देखो 'वेद' (रू. भे)

उ०—वदं व्रहमाण वियारं वेह । —भ गीपुराण

३ देखो 'विधाता' (रू. भे)

उ०—१ ग्रासक हमारा वोई, जिन रचना रची सब कोई । वेह कहियं अपरमपारा, ज्या कू क्या जाणं ससारा ।

—स्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ हरीया लेख लिलाट मैं, जो वेह वाल्या अक । सुख दुख भुगतो आपणा, कहा करी गैरक । —अनुभववाणी

उ०—३ वेह समत्थ वणावियो, वाघ डाच जम वत्थ । जिण माझल लग जाडिया, माय जाय गज मत्थ । —बा. दा.

४ देखो 'वयस' (रू भे)

उ०—कायर लाखा जतन कर, वेह न विसेख पाय । सूरा समहर सहरै, जाता जुगा न जाय । —रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'वेमाता' (रू. भे)

उ०—पोही अक वेह प्रमाण, मारू खोटा मडिया । सक भड चढं सिकार, सभै छला सावर सु वर । —गो रू.

६ देखो 'वेस' (रू भे)

७ देखो 'वेघ' (रू भे)

उ०—सुई तणइ वेहि मूंसल घालेवउ करइ, मूसल फूलावेवउं करइ, ऊभा पीइ, कलकलता वूकइ, बफाता गिलइ, वलि वाधी कोडिया हणइ लीख तणइ वेहि वाल ग्रोड, मव धाया तेर पडइ ।

—व स

रू भे.—वेह, वंह, वें, वेह ।

अल्पा ,—वेहडली, वेहडली ।

वेहक—१ देखो 'वहक' (रू भे.)

२ देखो 'वेहक' (रू. भे)

उ०—हका वेली हक है, वेहका वेहक । हरीया हेकं हक विन, सब दिन जाहि अन्हक । —अनुभववाणी

वेहकणो, वेहकवो —देखो 'वहकणो, बहकवो' (रू भे)

वेहकणहार, हारो (हारी), वेहकणियो—वि० ।

वेहकिग्रोडो, वेहकियोडो वेहक्योडो—भू० का० कृ० ।

वेहकीजणो, वेहकीजवो—भाव वा० ।

वेहका—देखो 'वेहका' (रू भे.)

वेहकाणो, वेहकावो—देखो 'वहकाणो वहकावो' (रू भे.)

वेहकाणहार, हारो (हारी), वेहकाणियो—वि० ।

वेहकायोडो—भू० का० कृ० ।

वेहकाईजणो, वेहकाईजवो—कर्म वा० ।

वेहकायोड़ो—देखो वहकायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वेहकायोडी)

वेहकावणौ, वेहकाववौ—देखो 'वहकाणौ, वहकावौ' (रू भे)

वेहकावणहार, हारो हारी), वेहकावणियो—वि० ।

वेहकाविप्रोडो, वेहकावियोडो, वेहकाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वेहकावीजणौ, वेहकावीजवौ—कर्म वा० ।

वेहकावियोडौ—देखो 'वहकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. वेहकावियोडी)

वेहकियोडौ—देखो वहकिग्रोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वेहकियोडी)

वेहड वेहडउ—१ देखो 'वेहड' (रू भे)

२ देखो वे'डौ' (मह, रू भे)

वेहडली—देखो 'वेह' (अल्पा, रू भे.)

वेहडाफोड—देखो 'वे'डाफोड' (रू भे)

वेहडु, वेहडू, वेहडौ—१ देखो वे'डौ' (रू भे)

उ०—१ इसैं समइयै मैं भालुवा आण अरज कीवी छै। भाखरा रा खुडा वेहडा माहा सूवर नीचा उतरिया छै। राजाना देसोता सूवरा सामी वाग लीवी छै। फडकडा फडवडाया जावै छै।

—रा. सा स.

उ०—२ छत्रवट तूझ दसरथ नद ओप अच्छेहडा, वाढै खगा रिण दसमाथ कर घड वेहडा। वळमुग्गहूंत निकसै वेण आखर वेहडा, जुग पद घसै मुगट सहीव सुरपत जेहडा। —र ज प्र

२ देखो 'वैसौ' (रू भे)

उ०—छत्रवट तूझ दसरथ नद ओप अच्छेहडा, वाढै खगा रिण दसरथ कर घड वेहडा। वळमुखहूत निकसै वेण आखर वेहडा, जुग पद घसै मुगट सहीव सुरपत जेहडा। —र. ज प्र.

वेहटु, वेहडू—स पु—राह मे चलनेवाले, राहगीर पथिक।

उ०—ताहरा लोकै पूछियो-भाई कं-रा उचाळा? कह्यो-जी! फोफाणद थळ री चारण छै। घास चारण जावै छै सात बीस भैसया नै वजण पडै छै, सू माहरी धरती माहै घास थोडा, सू महेवची मैं घास चारण आया छै, सू भैस्या तौ चरत्या-चरत्या आघ्या वूहचा सू म्है मारग वेहडू हुवा, सू आघा जास्या।

—फोफाणद री वात

वेहटौ—देखो 'वेहटौ' (रू. भे)

वेहडउ, वेहडु, वेहडू, वेहडौ—१ देखो वे डौ' (रू. भे)

उ०—१ वडरानी भीड, हुई पीड, तुटई चीड, एक उतावळि दोडइ छै, एक माथइ वेहडुं चरडइ छै, लूगडू तै माथै ओढई छै, वेहडू तै फोडइ छै। एक एक मइ अडइ छै, धडाधड पडइ छै, माहोमाह लडई छै हवई नानी लाडी, चीखल भी पडइ आडी, बीजानी भीजइ साडी, तै माठै करइ राडी, सोक सोकनी करइ चाडी"…

—रा. सा स.

उ०—२ तोरण त्रीकम आविया, ल्यो वेहडा वर नारि। वर वेहडु वंकुडु नायक, वदियु कर च्यारि। —रुकमणी मगळ

२ देखो 'वैसौ' (रू भे.)

उ०—तोरण त्रीकम आविया, ल्यो वेहडा वर नारि। वर वेहडु वंकुडु नायक, वदियु कर च्यारि। —रुकमणी मगळ

वेहण—स पु [स विधाता] विधाता, ब्रह्मा।

उ०—नखत्रैत जोध निरेहण, वड खत्री सारिख वेहण। एकल्ल मल्ल दुमल्ल आकल, कहि कलहि अकल। —ल पिं

वेहणउ, वेहणौ—वि. [स वेधनकम्] छेदन करने वाला, वेधने वाला।

वेहणौ, वेहवौ—क्रि. अ.—१ चालू होना, चालू रहना।

उ०—नै जेसोजी भाडडै नागोर रै गाव गया। उठै कोट करायनै माणस राखनै राणा कनै चीतोड गया। उठै गाव १४० ताणी मला सोळकी वाळी दियो। तठै रामदास माल्हण री वाप मरियो। राणा कुंभा थका आया पछै ओ पटो वेहतो थो। —नैणसी

२ डरना, भयभीत होना।

उ०—ओ कहि वेसवटो राजा वीसळदे पास रह्यो छै। ताहरा वेहतो सो उठ उबो हुवो नै हाथ जोडिया। ताहरा राजा पूछियो, "थारै जिका मन माहै वीनती छै सु कहि।" ताहरा वेसवटै वीनती कीवी "माहाराज सलामत, हू राजा पासै रहू छु नै मूळवै किम दुख पाय रावळो विगाडियो, ईयै वात हू ज जाणू।' ताहरा राजा कह्यो, "तनू किम न लागो। करसी सो पासी"

—मूळवै सागावत री वात

३ देखो 'व्होणौ, व्होवौ' (रू भे)

उ०—अडिया मुजि पडिया मुह ऊधे, सहज कोय देखै सुर-असुर। आखतो वेह कोय नह आयो, अमरा' जम राव तणै ज उर।

—जोगीदास कवारियो

४ देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू भे)

उ०—लुगाई रै नावे वसा आभडवा री आखडी। सरसै घोडै चढवा री आखडी। काछी घोडै चढवा री आखडी। पालखी चढवा री आखडी। कपुर विना पान चाववा री आखडी लुगाई सु रात मैं एक वार भोग करणी, उपरत करवारी आखडी। किसतुरी विना रहवा री आखडी। फाटा कपडा सीवणरी आखडी। साथ नै वल हुवा विना जीमणरी आखडी। वावडी री पाणी पीवण री आखडी। वेहती नदी री पाणी पीवण री आखडी।

—रा. सा. स.

५ देखो वेधणौ, वेधवौ' (रू. भे.)

उ०—काया झबकइ कनक जिम, सुंदर, मेहै सुक्ख। तेह सुरगा किम हुवइ, जिए वेहा बहु दुक्ख। —ढो मा.

वेहणहार, हारो (हारी), वेहणियो—वि०।

वेहिग्रोडो, वेहियोडो, वेहयोडो—भू० का० कृ०।

वेहीजणो, वेहीजबो—भाव वा, कर्म वा.।

वेहत-स स्त्री—एक पौष्टिक ग्रौपधि का नाम।

वेहद, वेहदी—१ सर्वशक्तिमान्, ईश्वर।

उ०—१ वेहद वडा गोडिया कौतिक करदा। —केसोदास गाडण

उ०—२ हरिया वेहद कै घटा, नहीं हदि की ग्रास। ससा सोग न ताप तन, नाव निरासा वास। जनहरिया वेहद घरा, घन ग्रनहद की घोर। बाजा राग ग्रपग धुनि, एक ग्रखंडी टोर। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ हरीया हदि का जीवडा, ता कु धका ग्रनत। जाह गुर-पाया वेहदी, लै निरवाण चढत। —ग्रनुभववाणी

२ वैकुण्ठ, स्वर्ग।

उ०—१ हरीया हदि ग्रासामुखी, ताहि न करियै हेत। वेहद वास निरास घर, ताकु तन मन देत। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ सहज नाम कु धाबि के, सुरति चढै ग्रसमान। हरियै निज पद परसिया, वेहद का वसवांन। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ हरिया हदि कु छाडि कै, वेहद पुंहता जाय। दिल दरगै दीवान मैं, धका न धूंमी काय। —ग्रनुभववाणी

३ सत्यस्वरूप, ईश्वर।

उ०—हदि का रता हदि मैं, वेहद का वेहद। हरिया वेहद पाय कै हदि भई सब रद। —ग्रनुभववाणी

४ सत, भक्त।

उ०—हदि बैठा हदि की कहैं, वेद पुराना वाचि। हरीया वेहद बावरा, रह्या राम सु राचि। —ग्रनुभववाणी

५ ब्रह्म, परब्रह्म।

उ०—१ वेहद सुख सागर भरयो, पथ न पग पारेह। हरीया हरिजन पीवसी, हदि सु हुय न्यारेह। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ जनहरिया हदि मैं घणा, सुख दुख भरम सनेह। वेहद काम न कलपना, ग्रति ग्रानंद ग्रछेह। —ग्रनुभववाणी

६ ब्रह्मपद।

उ०—वेहद कु पुहचै नही, हरीया हदि कै लोक। तन तो, माटी मैं मिल्यो, मन ग्यो सांसै सोक। —ग्रनुभववाणी

७ ब्रह्मसुख, ब्रह्मग्रानन्द।

उ०—सहज का भेद सोई सत जांणै, हदि कुं जीत वेहद मांणै। सहज का ग्रासण महज ग्रासा, सहज मैं खेलणा सहज पासा। —ग्रनुभववांणी

८ ग्रनहद नाद।

उ०—होतव सा जोतव नही, ग्ररथु मा न गन्ध। वैंन न को वेहद सा, साम न सा समरथ। —ग्रनुभववाणी

९ योग, समाधि।

उ०—सहज मे सांम सुख रास ग्रंमं पिंड्या, रूम मैं रूम ररकार जागै। दास हरिराम गुरदेव परताप तैं, हदि कु जीत वेहद लागै। —ग्रनुभववाणी

१० सत्य।

उ०—हरिया हदि का जीव कु, वेहद की गम नांहि। कीडी केरै नाळ ज्यू कै ग्रावं कै जाहि। —ग्रनुभववाणी

११ ज्ञान।

उ०—१ वचन सुन्या वेहद का, हदि न ग्रावै दाय। हरिया सुन्य मैं साईया, ता सु ध्यांन लगाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ जनहरिया हम कु कह्या, सतगुरु ग्रैसा दाव। हदि का पासा छाडि दै, वेहद साम्हा ग्राव। —ग्रनुभववाणी

वि.—१ जानने का इच्छुक, जिज्ञासु।

२ ज्ञानी।

उ०—हदि छाडि वेहद भया, हरीया राम हजूर। ग्रखंड उजाळा गैब का, निसा न ऊगै सूर। —ग्रनुभववाणी

३ देखो 'वेहद' (रू भे.)

उ०—कह कह याका सेसनाग वेहद वाखाण। —केसोदास गाडण

वेहदी—देखो 'वहदी' (रू. भे)

वेहद्द—देखो 'वेहद' (रू. भे)

उ०—१ वेहद्द हद्द वागै वणाव, चम्मीर हीर जामै जडाव। जगमगै जोप मसवी ग्रनूप, नीलक्क मसजर लाल सूप। —गु. रू. व.

उ०—२ राति साभीर सारग डाणै ग्रहै, वाइ उपडिया लीए जाणै वहै। हद्द वेहद्द वै वेग पै हैमरा, पाघरा जाए पाहाड उडुं परां। —गु रू व

२ देखो 'वेहद' (रू. भे)

वेहन—देखो 'वहन' (रू भे)

वेहनडी—देखो 'वहन' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—रहि-रहि वेहनडी! वच न तू रोई, लै लोटिका जळ मुख धोई। फटि रे हिया! नीवालुवा, पाथरी घडियो कै ग्रोघट लोह। झरघझलियो फूटइ नही, सगुणा प्रीतम तणो विछोह। —बी दे.

वेह्नि, वेह्नी—देखो 'वह्न' (रू. भे.)

वेह्नेई, वेह्नोई—देखो वह्नोई' (रू भे)

वेह्माता –देखो 'वेमाता' (रू. भे)

उ०—१ हरिया तन को गीरवो, कहा करै नर देख। वेह्माता दाणी दळै, ग्रौरा लिखती लेख। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ राम सुणी मोरी वीनती, राम सुणी मोरी वीनती। मा मोरी, वेह्माता सुणी ग्रे पुकार, कुलडली सावळ हुई, मा मोरी वेह्माता सुणी ग्रे पुकार, कूवडली सावळ हुई। —लो गी

उ०—३ तूं तो नोज मरे, ग्रे म्हारा री धीवडी, सूरज तो सुणैला थारी वीनती। ग्रा तो वेह्माता सुणैला पुकार, लाय दो नी भंवर, म्हानै चीणोटियो। —लो गी.

वेहर-स स्त्री —१ काटने की क्रिया या भाव, कत्तन।

२ भोजन करने की क्रिया या भाव।

वेहरणौ, वेहरवौ—देखो 'वेरणौ वेरवौ' (रू भे)

उ०—मुनिवर वेहर पाछा वल्याजी, लागी छै थोडी सी वार। बीजो सिंघाडो इहा ग्राविग्रोजी, देवकी घर वार। —जयवाणी

वेहरणहार, हारौ (हारी), वेहरणियौ—वि०।

वेहरिग्रोडौ, वेहरियोडौ, वेहरयोडौ—भू० का० कृ०।

वेहरीजणौ, वेहरीजवौ—कर्म वा०।

वेहराणौ, वेहरावौ—देखो 'वेराणौ, वेरावौ' (रू भे)

उ०—मोदक थाल भरी करी जो, मंदिर माहे थी लाय। केसरी सिंह जटा जिसा जो, वेहराया उलटै जी भाव। —जयवाणी

वेहराणहार, हारौ, (हारी), वेहराणियौ –वि०।

वेहरायोडौ—भू० का० कृ०।

वेहराईजणौ, वेहराईजवौ—कर्म वा०।

वेहरायोडौ—देखो वेरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वेहरायोडी)

वेहरियोडौ—देखो 'वेरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री वेहरायोडी)

वेहरी—१ देखो 'वेहरौ' (रू भे)

२ देखो 'वहरी' (रू भे)

वेहरौ —१ देखो 'वेहरी' (रू. भे)

२ देखो 'वहरी' (रू. भे)

३ देखो 'वेंडौ' (रू. भे.)।

वेहळ वेहल-स. स्त्री —१ ढोलियो की एक शाखा विशेष या उक्त शाखा का एक व्यक्ति। (मा म)

२ देखो 'वेहल' (रू. भे)

उ०—१ वैरी वेहल वरण रा, दीठा जिण जिण देस। माडेचा ते मेळिया, ग्राभपुवा 'ग्रमरेस'। —वा दा

उ०—२ कुण विस ग्रवै वेहळा कूंपा, खेड सुपह मन खीज करै। सरवर हंस विनाई सारै, सर विन हंसा केम सरै। —राव कूंपा री गीत

३ देखो 'वहल' (रू भे.)

उ०—१ इका वेहला रहकला ऊपर वैसाणजे छै। सू इका वेहला रहकला किण भ त रा छै? गुजराती, सुरती, खंभाइची, मुजनगरी, हैसारी, उजीण रा, वणिया घणै सीसूरा, पीतल लोह दात रा जडिया, लाल सलहटी रा गदहरा विछाया थका, चादणी ढालिया थका ग्राण हाजर हुवा छै। —रा. सा स

उ०—२ तठा उपरात करि नै राजान मिलामति कावली कूतरा, लाहोरीकूतरा, विलाती कूतरा, लोलमी, लोलभी जीभ रा, वलिमै पूछ रा, लापडै कान रा, दाडमी दत रा, सिंघ रा हथरा, केहरी कवरा, झाफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भातरा कूतरा, चीतरा, मुखमली, रेसमी, मुवा रा वणाग्रा, साकळिग्रा जडिग्रा, वेहला पालखिया ऊपरै बैठा वहै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ रिमझिम करती वा बीदणी बीद गी वेहल मे चढी। ग्रो बीद कितरो समागियो! कितरो सुखी! भूत रा रू-रू मैं जाणै सूळा खुवण लागी। हीया मैं जाणै भट्टी चेतन व्हैगी। —फुलवाडी

४ देखो 'विह्वल' (रू. भे)

उ०—ग्रर पोरस मेछा घणी कामणि हुदी कथ्य, सामळि बैठी साप्रत महागिरिदा मध्य। महागिरिंदा मध्य स्रवण कथ सामळी, वेहळ मदन विराम थयो तन व्याकुळी। —मा. वचनिका

रू भे —वहळ, वीहळ, वोहल, वेहलि, वेहळ, वैहल।

वेहलि—क्रि वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—क्रमि क्रमि जान पहूतिय, सुहदिणि, 'भीमपली पुरै' गुर हरसिउ मणि। ग्रह गिरि वीर जिणिदह मदरि, मडिय वेहलि नदि सुवासरि। —ऐ. जै. का स.

२ देखो 'वहल' (रू. भे)

३ देखो वेव्ल' (रू, भे)

४ देखो 'वेहल' (रू भे.)

वेहलियौ, वेहली —देखो 'वेल' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०—वेहलियारी फुरणी वाज रही छै। जग घूघरा वाज रह्या छै। सू वेहलिया किण भात रा छै? थेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै हालार रा छै सुवालख रा छै, देस-देसरा इकरग सपेत छै। जाहरी सपेती ग्रागै बगला ही मगसा नजर ग्रावै, महदी सु रंगिया वनात रा मोहरा लालै सूतरी नाग्रा, रेसम री रास, सीगा पीतळ

री सोळी। वनाती भूला घातिया रहकला इका खडसला जूना छै। सू हालिया थका घोडा री माम पाडै। इसा वेहली जूता रहकला इका खडसल आण हाजर हुवा छै। —रा सा स.

वेहली—देखो 'वहली' (रू भे.)

वेहाण–स स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढापा।

२ देखो 'विमान' (रू भे)

३ देखो 'विहाण' (रू. भे)

उ०—उदै नभसीस थयो तिसप्राण, विजाणह होसिय केम वेहाण। पयंपत वैण सलै परधान, जपै मुख कायर फोट जवांन। —पा प्र

वेहांम, वेहामी वेहामौ—देखो 'विस्रांति'

वेहा—देखो 'विधाता' (रू भे)

उ०—१ अेराकी वडा खेंगरू गात अेहा, वणावै कवी कत्थ लोहत्थ वेहा। नळी जत्र मैं जासु वाखांण नख्ख, उलट्टा कटोरा वर्णं चत्र अख्ख। —र वचनिका

उ०—२ मोमिण होय स आपो मारै औरचा मारण केहा? मोमिण होय स तुटी सांधै, मरियो दुसमण घातै वेहा। —समसुदीन

उ०—३ सूरकुळ मुकट अणघट अनट जीह सुज, वयण मुख दाखिया अंक वेहा, दया जन दखणा। सामरथ भभीखण रक राखै सरणा, तसा आपणा सुदत लक तेहा, रजवट्ट रखणा। —र ज. प्र.

वेहार—१ काटने की क्रिया।

उ०—धध धीर खिलवक हवकोहवक, घूप सवक्क धमचक्क, वण वार प्रसक बाधा रक, रुक झटक्क रह चक्क। वग्गी खग धारा वारूवारा, वार करारा, वेहारा, धड तूटै सारा अग अपारा, जोड करारा जूंझारा। —रा. रू.

२ देखो 'विहार' (रू. भे.)

वेहारी—१ देखो 'विहारी' (रू भे)

उ०—गांया ग्वाळी कानी काळी वसी वाळी, वेहारी, जाजा जांजी प्रिथी प्राजी मोटी आजी मोरारी। लका लीधी दानं दीधी सोभा कीधी सवाई, साचा साचो काचा काचो वाणी वाचो वमाई। —पि प्र

२ देखो 'व्यवहारी' (रू भे)

वेहाल—देखो 'वेहाल' (रू भे)

उ०—१ रांम मिवरिया वाहिरी, खाली नर खुसयाल। हरिया जब तें जांणियै, वेमारग वेहाल। —अनुभववाणी

उ०—२ हरिया अपनैं ह्वाल मैं, खलक फिरै खुसियाल। होसी खालिक वाहिरी, हैंदू तुरक वेहाल। —अनुभववाणी

उ०—३ सत दादू ब्रह्म आदू, महा निरपख चाल। दुस्ट तासू वैर कीनौ, मुवौ हुय वेहाल। तौ हरिलाल जी हरिलाल, है नित भक्ति पख हरिलाल। —भगतमाळ

वेहाली—देखो 'वेहाली' (रू. भे.)

वेहियोडो–भू का कृ,—चालु रहा हुआ, चालु हुवा हुआ. २ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ. ३ देखो 'होयोडो' (रू. भे.)

४ देखो 'वहियोडो' (रू भे)

५ देखो 'वोंधयोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वेहियोडी)

वेहो–स पु—वदला, प्रतिकार, प्रतिशोध।

उ०—सो सपूत जं पीछो राखै, दुरजन हीण वदै ना भाखै। वैरा तिणा विसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा। —डाढाळै सूर री वात

वै—देखो 'वै' (रू भे)

उ०—महाराज, वी ठाव वरखा घणी होइ पण पाणी ठहरै नही। तळसीर सू भी पाणी नही आवै। रुपियो वी वहीत लगायो, सब निसफळ हुवो। तो कारण सो चितातुर ही रहै। वी नू चितित देख वै री दोय स्त्री परम सुदरी, नव यौवना सदा चितित रहै। —सिघासण वत्तीसी

वैकुठ, वैकठ, वैकुठ—देखो 'वैकुठ' (रू. भे)

वैक्रति, वैक्रती–स पु [स वैकृत] १ रिक्त, खाली।

२ विकार, विकृति, विगाड।

रू भे—वैकृति

वैग–स पु—१ चाल गति।

२ पानी का वहाव।

३ पानी के वहाव का रास्ता।

वि०—पागल

वैगण—देखो 'वेगण' (रू. भे) (अमरत)

वैगणी—देखो 'वेगणी' (रू. भे.)

वैगागळ—देखो 'वेगागळ' (रू भे) (अ मा)

उ०—चढिया काज चचळ, वाळि छूट वैगागळ। हरड किहाडा हीर, माणकै वीर हमीर। —गु. रू. व

वैचणो, वेचवो—देखो 'वैचणो, वैचवो' (रू भे.)

वंचणहार, हारौ (हारी), वंचणियौ—वि० ।
वंचिग्रोडौ, वंचियोडौ, वंच्योडौ—भू० का० कृ० ।
वंहीजणौ, वंचीजबौ—कर्म वा० ।

वंचवाडौ—देखो 'वंचवाडौ' (रू. भे.)

वंचाणौ, वंचावौ—देखो 'वंटाणौ, वटावौ' (रू. भे.)
वंचाणहार, हारौ (हारी), वंचावणियौ—वि० ।
वंचायोडौ—भू० का० कृ० ।
वंचाईजणौ, वंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वंचायोडौ—देखो 'वंटायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. वंचायोडी')

वंचावणौ, वंचावबौ—देखो 'वटाणौ. वटावौ' (रू. भे.)
वंचावणहार, हारौ (हारी), वंचाणियौ—वि० ।
वंचाविग्रोड़ौ, वंचावियोडौ, वंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंचावीजणौ, वंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वंचावियोडौ—देखो 'वटायोडौ' (रू भे)
(स्त्री वंचावियोडी)

वंचियोडौ—देखो 'वंचियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वंचियोडी)

वंछणौ, वंछबौ—देखो 'वंचणौ, वंचबौ' (रू. भे.)
वंछणहार. हारौ (हारी), वंछणियौ—वि० ।
वंछिग्रोडौ, वंछियोडौ, वंछयोडौ—भू० का० कृ० ।
वंछीजणौ, वंछीजबौ—कर्म वा० ।

वंछियोडौ—देखो 'वंचियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वंछियोडी)

वंछौ-स पु,—बटवारा, हिस्सा ।
उ०—है साहू रा बेटा या पण थाहरा पिता रै वासै ग्रावौ है । थे ईणी नै वंछौ माल रौ द्यौ । —साहूकार री वात

वंड—१ देखो 'वंड' (रू भे.)
२ देखो 'वंडौ' (मह , रू भे)

वंडाक—१ देखो 'वंडाक' (रू भे)
उ०—हद वंडाक हजारी । —किसनौ ग्राढौ
२ देखो वंडौ' (रू भे)

वंडाराग—देखो 'वंडाराग' (रू भे.)

वंडूर—देखो 'वंडूर' (रू भे)

वंडूरज—स पु [स. वंडूर्य्य] वंडूर्यमणि ।

वंडौ—वि० [स वितुण्ड] (स्त्री वंडी) १ दातार, उदारचित्त. मौजी ।
उ०—मन जाणै सहल दियण वित मौजां, ग्रै दोय पण धरिया ग्रमठ । वंडा री वाता इज वंडी, वंडा रा पंडा विकट ।
—ग्रग्यात

२ ग्रद्भुत, ग्रनोखा, विचित्र ।
उ०—मन जाणै सहल दियण वित मोजा, ग्रै दोय पण धरिया ग्रमठ । वंडा री वाता इज वंडी, वंडा रा पंडा विकट ।
—ग्रग्यात

३ देखो 'वंडौ' (रू. भे)
उ०—१ मन जाणै सहल दियण वित मोजा, ग्रै दोय पण धरिया ग्रमठ । वंडा री वातां इज वंडी, वंडा रा पंडा विकट । —ग्रग्यात
उ०—२ छिन-छिन में पग चाप सूं, छिन-छिन करसू चाव । पातर सौ तौ ही परा, राजंद ! वंडा राव ।
—मयाराम दरजी री वात
उ०—३ हैमरा हीस नर लसकरा कह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वंडा । ग्राहाडा खड रज-मडळ ग्रोछाडयो, पहाडा ग्रगम सर सुगम पंडा । —महाराजा जसवतसिंह री गीत
उ०—४ तरै सवानद वीरम सू पूछण लागौ । कहैं—ठाकुरा काहू वात छै । तरै ग्रो कहै ठाकुरा काहू कहजै । कहवा तौ लाज ग्रावै छै । पण ठाकुरा म्हारी बेटी नू परणिग्रा पाछै मूडौ हुमै देखाळियौ छै । सो रातै सूती मेल भाज ग्राया छै । सो वंडा हुग्रा छैक ? बीजी वहू कामण किग्रो छै ! सो हुमै राधियौ धान रहसी हौ, ठाकुरै !
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वंण—१ देखो 'वहन' (रू भे)
२ देखो 'वेण' (रू भे)
३ देखो 'वीणा' (रू भे)
४ देखो 'वचन' (रू भे)
उ०—१ सब कू बुलाया वंण ग्रकवर साह बोलै, मेरी निसा खातरी है तुमारै महोलै । तुम पातसाहा के सवादी सूर तै सूर, तुमारी सिहाय ग्रावै मेरै मुख नूर । —रा रू.
उ०—२ नैणा राम वसौ हरि वंणा, सकल सुग्या सुख लाधा । सुर तेतीस घेरि घर ग्राया, सतगुर डोरा वाधा । —ह. पु वा
उ०—३ वारवधु ही हरण वित, नेह जणावै नैण । यूं सिर लेवा ऊचरै, वेरी मीठा वंण । —वा. दा.
उ०—४ सुणि जोध वंण भाखत सभ, रिणमल्ल माण ग्राणियै रभ । वाळा वै रूक चौरग चाडि, ग्राखत धूम्रलोचन ग्रोनाडि ।
—मा. वचनिका

वंत—स पु.—१ रीति, उपाय, प्रकार, ढग ।
२ हिसाव-किताव ।
३ माप, नाप ।

उ०—सीमाळ पेंहली कानडदेजी तीरें रहतो। पछै कानडदेजी जाळोर ऊपर घर कराया तिकै देखण नू सीमाळ नूं मेलियो नै सूरमाळ नं साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलाय्त देख क्यू वंत मैं खोड काढी। —नैणसी

४ बनावट, रचना।

५ वश, काबू, नियन्त्रण।

६ चिन्ता, दुख।

उ०—सूधा वचन सुणे सगळाई, साथ घेरिया गमा सिपाई। जतनै सुता रहै इम जाणी, इण दुख कंद हुवो 'आसाणी'। वंत करै नह और विचारू, मार सुता मिरजा नूं मारू। —रा. रू

७ अनुकूल।

उ०—कै सूत वंत सुभ वात कजि, सोभै दूत समद रा। आवियास मिळ भ्रम इद्र रै, कै इळ वंद्ळ इद रा। —रा रू.

८ देखो 'वेंत' (रू. भे)

९ देखो वेत' (रू भे)

उ०—दाखे सकव सुणो अनदाता, अमा मिळण नह भाग इसो। सारै रसी वहै तन सिदियो, कहो मिळण चो वंत किसो। —पीठवो

१० 'देखो 'वैत' (रू. भे.)

उ०—पडै रोर बहु ओर, कणह कणह सम कीधो। वेचि वेचि नर वंत, लोभ लाधी तहा लीधो। —कोकावती रै दान री कवित

रू भे—वेंत, वेत।

वंतणो, वंतबो—देखो 'वेंतणो, वेंतबो' (रू. भे)

वंतणहार, हारो (हारी), वंतणियो—वि०।

वंतिओडो, वंतियोड़ो, वंत्योडो—भू० का० कृ०।

वंतीजणो, वंतीजबो—भाव वा०।

वंताणो, वंताबो—देखो 'वेंताणो, वेंताबो' (रू. भे)

वंताणहार, हारो (हारी), वंताणियो—वि०।

वंतायोडो—भू० का० कृ०।

वंताईजणो, वंताईजबो—कर्म वा०।

वंतायोडो—देखो 'वेंतायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वंतायोडी)

वंताळीस, वंतालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे)

वंतावणो, वंताववो—देखो 'वेंताणो, वेंताबो' (रू भे)

वंतावणहार, हारो (हारी), वंतावणियो—वि०।

वंताविओडो वंतावियोडो, वंताव्योडो—भू० का० कृ०।

वंतावीजणो, वंतावीजबो—कर्म वा०।

वंतावियोडो—देखो 'वेंतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वंतावियोडी)

वंतियोडो—देखो 'वेंतियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वंतियोडी)

वंन—१ देखो 'वहन' (रू भे.)

२ देखो 'वचन' (रू भे)

उ०—१ हरीया असली असलि वन, चवै न कमसलि वंन। असली जो कमसलि चवै, तो दिन वरतै रैन। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया अदर ऊपजै, असा निकसै वंन। मिळिया सेती मन कहै, यो दुरजन यो सैन। —अनुभववाणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे)

वंनोई—देखो 'बहनोई' (रू भे)

वंम, वं'म—देखो 'वहम' (रू भे)

उ०—१ सुनार रै क्यू दरसणा मैं ही टोटो बताईजै है? सूरज उगाळी सुनार सामो मिळै, लोग मूढो फोरै सामै सिर सळ घालै वंम रै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै अवस टाळै। बो' आपरी मा री ही हाचळ नी छोडै। —दसदोख

उ०—२ एक'र री वात, राजी रै जापै मे पोन हुवा निकळगी। वावळी बडा करण लागगी। गू ग विखैरै अर' तत्ता-पत्ता सू बूही वाता करै। जकै सू घर हाला नै भूतणी री वंम वड गयो है। —दसदोख

वंरागर—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

वंसो—देखो 'वेंसो' (रू. भे)

वंह—देखो 'वे' (रू भे)

उ०—सतजुग कै पहरै मा सोनै को घाट, सोनै को पाट, सोनै को कळस, सोनै को टको। पाचा कोड्या को मुखी गुर पहळाद कळस थाप्यो, वंह कळस जस धरम हुवै, सो ईह कळस हुइयो। —जाभो

वेंहचणो, वेंहचबो—देखो 'वेंचणो, वेंचबो' (रू भे)

उ०—१ बीजा ही सवणिया नू पूछियो। तिया कह्यो—जिकै राणी रै प्रसूत हुसी। तियै री बेटो धरती रो धणी हुसी। आप राजी हुवा। मालोजी जाया। घणो हरख हुवो। घणी वधाया वेंहची। —नैणसी

उ०—२ घोडा रजपूता नूं बकस दिया। एक घोडो आप राखियो। पुकार दिल्ली गई। अहदी आयो। घोडा ल्यावो। मालेजी नूं जोर पडियो। घोडा मागीजै। ताहरा मालेजी आदमी मूकिया। कह्यो—चवडा घोडा ल्याव। ताहरा कह्यो—घोडा तो वेंहच दीधा। —नैणसी

उ०—३ पछै नरै रै टीकै गोयद वैठो। हमें रोज लडाया पडै। धरती वसै नही। ताहरा राव सूजेजी गोयद नू तेडायो। पोकरणा नू तेडाया। धरती आधो-आध वेंहच दीवी। कोट नरै रै माथै साटै कियो। उवै जाळ सौं सीम पडी। —नैणसी

वेंहचणहार हारो (हारी), वेंहचणियो—वि०।

वेंहचिओडो, वेंहचियोडो, वेंहच्योडो—भू० का० कृ०।

वेंहचीजणो, वेंहचीजबो—कर्म वा०।

वेंहचाणो, वेंहचावो—देखो 'वटाणो वटावो' (रू भे)

उ०—अठै वीरमजी रा कामेती दाण ऊपर वैसै राति री हींसी वेंहचाइ दे। कदे सरव गोलक मेल आवै। कहै-यै सवारै लेज्यो। जै नाहर बकरी मारै तौ एकै बकरी री इग्यारह बकरी लै। कहै नाहर तो जोईया री छै। —नैणसी

वेंहचाणहार, हारो (हारी), वेंहचाणियो—वि०।
वेंहचायोडो—भू० का० कृ०।
वेंहचाईजणो वेंहचाईजवो—कर्म वा०।

वेंहचायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वेंहवायोडी)

वेंहचावणो, वेंहचावबो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू भे.)

वेंहचावणहार, हारो (हारी) वेंहचावणियो—वि०।
वेंहचावियोड़ो, वेंहचावियोडो, वेंहचाव्योडो—भू० का० कृ०।
वेंहचावीजणो, वेंहचावीजवो—कर्म वा०।

वेंहचावियोड़ो—देखो वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंहचावियोडी)

वै-स पु—१ श्री कृष्ण का एक नाम। (एका.)

२ स्वर्गलोक। (एका.)

३ पति, खाविंद।

४ मालिक, स्वामी।

५ एक प्रकार का अव्यय विशेष जो निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ में काम लिया जाता है। किन्तु अधिकांशत इसका प्रयोग पाद पूर्ति हेतु भी होता है।

क्रि० वि०—१ निश्चय ही।

उ०—रिमां मांण मूकै नही वै रण गो वढर्त्ताह, धण भूभौ रण भोम ही चढियां चाखडियाह। चढै रण चाखडी सामही चालियो, भूभते भलो रायसिंह तै भालियो। —हा. भा.

२ ही।

३ भी।

४ देखो 'वयस' (रू. भे)

उ०—सिसु वै मिती त्रित्ती, उदयो पोगड मड सिंगारी। ज्यौं अदा रक तरय, प्राभ डाळ सगि पत्तेणम —रा. रू.

५ देखो 'वे' (रू भे)

उ०—१ माया जब तब ही बुरी, हरिया आदि' र अंत। बडै बडै मुनजन छळे, वै ग्हतै एकत। —अनुभववाणी

उ०—२ ए वाडी, ए सर-केरी पाळ। वै साजण वै दीहडा, रही सभाळ सभाळ। —ढो. मा.

उ०—३ नित सवार सिंम्या वै री वै चीजा देखतां देखतां दो री ठोड हजार आल्या व्हैती तौ ई भाती भाय जाती। नित वै री वै सागै चीजां देखणा विचै तौ आल्या मीच अधारी करणो उण नै आछो लागतो। —फुलवाडी

उ०—४ पण सेठा री मन तौ सेठा रै वस हो, वै तौ उण दिन सूं ई कोडाया होय सील-व्रत धारण कर लियो। सोच्यो कै बेमाता अर जमराज आपरै हिसाब सूं चालै तो सेठ ई आपरै हिसाब सूं चालैला।

—फुलवाडी

रू. भे.—वै।

वैअखरी वैआखरी—देखो 'वेअखरी' (रू भे.)

वैईजयत—देखो 'वैजयत' (रू भे.)

वैईजयतिक—देखो 'वैजयतिक' (रू. भे.)

वैईजयतिका— देखो 'वैजयती' (रू भे)

वैईजयती— देखो वैजयतीमाळा'।

वैईस—देखो 'वेस्य' (रू भे.)

उ०—बाभन खत्री कौन है, कुन सुदर कुं वैईस। हरीया आतम हेक है, दूजा कोय न दीस। —अनुभववाणी

वैकंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे.)

उ०—वैकठ विलासि अपुन्य प्रकासि अपार अपार अगम पर, निरकार नर मधुकटक मारण विघन विडारण केवल रूप वराह करं। धर दाढ धर करि दैत कण कण रे, पण रामण लक लई दधि लोप लज, अविगति अज 'हमीर' समरि हरआ सि निरतर, गग्रह वेहऊ गग्रहि गजधज पख धज। —पि. प्र.

वैकठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू भे.)

वैकठवासी—देखो 'वैकुंठवासी (रू. भे)

वैकक्ष, वैकक्षक, वैकक्षिक-स स्त्री. [स] जनेऊ की तरह पहनी जाने वाली माला।

वैकटिक-स. पु [स] रत्नों की पारख करने वाला, जौहरी।

वैकण—देखो 'वैकरण' (रू. भे.)

वैंकणो, वैंकवो—देखो वहकणो, वहकवो' (रू. भे.)

वैंकणहार, हारो (हारी), वैंकणियो—वि०।
वैंकिओडो, वैकियोड़ो, वैंक्योडो—भू० का० कृ०।
वैकीजणो, वैंकीजवो—भाव वा०।

वैकरण—स पु [स वैकर्ण] १ वात्स्यमुनि।

२ एक प्राचीन जनपद।

वैकरतन—स पु [स. वैकर्तन] १ कुन्ती पुत्र कर्ण का नाम।

२ सूर्य पुत्र का नाम।

३ सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम।

वैंकरणिक, वैंकरणी—सं पु [स. वैकर्णिक] १ राज्य कर्मचारी विशेष। २ कश्यपकुलोत्पन्न वैकर्णेक नामक एक गोत्रकार।

रू भे.—वयगरणी, वयगरणु, वयगरणौ।

वैंकल—देखो 'विकळ' (रू भे)

वैंकल्प—देखो 'विकल्प' (रू भे)

वैंकल्पिक—वि [स] १ ऐच्छिक। २ सदिग्ध।

वैंकल्य—स पु [स] १ न्यूनता, कमी। २ विकलाग, लगडा। ३ घबडाहट, व्याकुलता। ४ अनिश्चितत्व।

वैं'काणौ, वैं'काबौ—देखो 'वहकाणौ, वहकावौ' (रू भे)

वैं'काणहार, हारौ (हारी), वैं'काणियौ—वि०।

वैं'कायोडौ—भू० का० कृ०।

वैं'काईजणौ, वैं'काईजबौ—कर्म वा०।

वैं'कायोडौ—देखो 'वहकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वैं'कायोडी)

वैंकाळ—स पु [स वैकाल] मध्यान के बाद का समय, सध्याकाल।

वैं'कावणौ, वैं'कावबौ—देखो वहकाणौ, वहकावौ' (रू भे)

वैं'कावणहार, हारौ (हारी), वैं'कावणियौ—वि०।

वैं'काविप्रोडौ, वैं'कावियोडौ, वैं'काव्योडौ—भू० का० कृ०।

वैं'कावीजणौ, वैं'कावीजबौ—कर्म वा०।

वैं'कावियोडौ—देखो वहकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वैं'कावियोडी)

वैं'कियोडौ—देखो 'वहकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. वैं'कियोडी)

वैंकुट—देखो 'वैकुठ' (रू भे)

वैंकुटनाथ—देखो वैंकुंठनाथ' (रू भे)

वैंकुट्ठ—देखो 'वैंकुठ' (रू भे)

वैंकुट्ठनाथ—देखो 'वैंकुंठनाथ' (रू भे.)

वैंकुट्ठनायक—देखो वैकुंठनायक' (रू भे)

उ०—तोरणं श्रीकम आविया त्यौ वेहडां वर नारि। वर वेहडु वैंकुट्ठनायक, वदियु कर च्यारि। —रुकमणी मगळ

वैंकुठ—स पु. [स] १ भगवान् श्रीविष्णु का एक नाम।

उ०—छिपै मेघ सोभा इसी भाळ छाजै, रवी पत्त है कुंडळं क्राति राजै। भजै मुकुट सोभा सवा कूण भाखै, रहै मान तै ध्यान वैंकुठ राखै। —रा रू

२ भगवान् विष्णु के रहने का स्थान, स्वर्ग।

उ०—१ राजा असमाधियौ हुतौ। तिकै राजा नू वरस १०० पूरा हुवा। ताहरा तुरक नू जासूसे जाय खबर दीनी, राजा मैहा तो यो प्रकार हुवौ, वैंकुठ प्राप्त हुवौ। —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ वैंकुठ वेडौ विसन ढोयौ, सचियार साल्हिया लेविसी। पारगिराय पुहचाय आभराय, वास निहचळ देविसी। —ऊदोजी नैण

उ०—३ दिज मूरत देहरा, पडै जसराज पडता, घणा गढा सिर ढाक, चडै वैंकुठ चडता। अज्या मेल इकठा, चरै सौ सिंघ भुजाळा, सोह लोग ससार आज तौ वाज दुलाळा। —सुरजनदास पूनियौ

उ०—४ हिक सिवड पडै अण वारहट, सौ पडिया बका सुहड। वैंकुठ गयौ 'वीठल्ल' रौ, अजवसाह' राखे अचड। —रा. रू.

३ देवराज इन्द्र का नाम। ४ तुलसी का नाम। ५ रैवत मन्वन्तर एव चाक्षुक मन्वन्तर का एक देवगण।

रू भे—वईकुंठ, वयकुट, वयकुठ, वयकूट, वेकुठ, वैकु ठ, वैकूट, वैकूठ, वैकुठ वैकूट, वैंकूठ, वईकुंठ, वयकुंठ, विकुंठ, वैकु ठ, वैकु ठ, वैंकूठ वैकठ वैकुट्ठ, वैकुटि, वैकुटी, वैकूट, वैकूठ।

वैंकुंठचतुरदसी, वैकुठचवदस—स- स्त्री. [स वैकु ठचतुर्दशी] कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी।

वैंकुठनाथ—स पु [स] १ भगवान् विष्णु।

उ०—वैकु ठ पधारौ। तिणि वेळा राजा रतन वैकु ठनाथ महाराज सू अरज करि कहिग्री। महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड। राठौडा माहै हू इज। मुदै मो नू कहिग्री इज चाहीजै। मो साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कांमि आया। हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा। गौड अरजन सारीखा। सीसोदिया सुजाणसिंघ सारीखा। झाला दळथभ सारीखा। और छत्रीस वस हिंदू सरजीत कीजै। वैकुंठवास दीजै। —र वचनिका

२ देवराज इन्द्र।

रू भे—वैकठनाथ वैकुट्ठनाथ, वैकूटनाथ, वैकूठनाथ।

वैकु ठनायक—स पु [स] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

रू भे—वैकठनायक वैकुट्ठनायक वैकूटनायक, वैकूठनायक।

वैकु ठलोक—स पु—स्वर्गलोक विष्णुलोक।

वैकु ठवास—स पु [स] १ विष्णु का एक नाम।

उ०—अठवासी सहस रिख करै आस, वखाणै सको वैकुंठवास। पाच तत महा तत रहै पास, सवारै तना प्रभु सास सास। —पी. ग्र.

२ स्वर्ग।

उ०—वैकु ठ पधारौ। तिणि वेळा राजा रतन वैकु ठनाथ महाराज सू अरज करि कहिग्री। महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड। राठौडा माहै हू इज। मुदै मो नूं कहिग्री इज चाहीजै। मो साथै

वडा वडा गढपति छत्रपति कामि श्राया । हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा । गौड श्ररजन सारीखा । सोसोदिश्रा सुजाणसिंघ सारीखा । झाला दळथभ सारीखा । श्रौर ही छत्रीस वस हिंदू सरजीत कीजं । वंकु ठ-वास दीजं । —र. वचनिका

मुहा.—वंकु ठवास होणौ —स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना । रू भे —वंकू टवास, वंकू ठवास ।

वैंकुठवासी—स पु [स] विष्णु का एक नाम ।
रू भे —वंकुठवासी, वंकठवासी, वैंकूठवासी ।

वैंकुठविलासी—स पु [स.] १ विष्णु का एक नाम ।

२ ईश्वर ।

रू भे —वैंकुटविलासी, वैंकूटविलासी, वैंकूंठविलासी ।

वैंकुठि, वैंकुठी—स स्त्री [स वैंकुठ+रा प्र ई] १ पालकीनुमा रथी, जिसे सजा कर उसमे शव को बैठा कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं ।

२ देखो 'वैंकुठ' (रू भे.)

उ०—साम्हो सारि दखिण घड साम्हो, निवहि मुहरि चालियो निराट । सादूळो वैंकुठि गो सूधौ, वैंकुंठ तणी न भूलो वाट ।
—खेतसी लाळस

रू भे.—वैकुंटी वैकुंठी, वैंकूटी, वैंकूटी, वैंकूठी ।

वैंकूट—देखो 'वैंकुठ (रू. भे)

वैंकूटनाथ—देखो वैंकुठनाथ' (रू भे)

वैंकूटनायक देखो 'वैंकुठनायक' (रू भे)

वैंकूटवास देखो 'वैंकुंठवास' (रू भे)

वैंकूटविलासी - देखो 'वैंकुठविलासी' (रू. भे) (ना मा)

वैंकूटी —देखो 'वैंकुठी (रू भे.)

वैंकूठ—देखो 'वैंकुठ' (रू भे)

उ०—१ श्रम्मरा वधायौ लोक सरायौ वैंकूठ वाळी, सूरा थोक थायौ वेद रचायौ सग्ब । श्रावा काम परा हूत पठो घोडे चाल श्रायौ, पायौ 'जालमेस' हूता सवायौ परब । —प्रभूदान मोतीसर

उ०—२ जीहा न बोलै झूठ, स्रवणा झूठ न साभळै । वरजै कुण वैंकूठ, माधव दरगह मोतिया । —रायसिंह सादू

उ०—३ काल किसी सारै नहीं मारै सुलटी मूठ । हरीया हरि-जन ऊतरै, उलटि चढै वैंकूठ । —ग्रनुभववाणी

उ०—४ जळ चादरू की धरहर तमासै का विसतार । सौ कैसी, वैंकूठ सै छूटी जाणि गगा हजार धार । छछोहे श्राव गहर फौंहारा छूटै । जमी सै मेघ जाणि श्रसमान सै जुटै । —सू प्र.

वैंकूंठनाथ—देखो 'वैंकुठनाथ' (रू भे)

वैंकूठनायक—देखो 'वैंकुठनायक' (रू भे.)

वैंकूठवास—देखो 'वैंकुंठवास' (रू. भे.)

वैंकूठवासी—देखो वैंकुठवासी' (रू. भे)

वैंकूठविलासी—देखो वकुठविलासी' (रू भे.)

वैंकूंठी – दखो 'वैंकुठी' (रू. भे)

वैंक्रत—देखो विक्रत' (रू भे)

उ०—मह श्रादसिर सुण वचन मोह, तातें न उचित श्रव क्रोध तोह । करनला' कयौ सुणियौ न कान, वैंक्रत भेरव मुख चोळ-वान । —रामदान लाळस

वैंक्रयसरीर—देखो 'वैंक्रियसरीर' (रू. भे) (जैन)

वैंक्रात—देखो 'विक्रात' (रू. भे.)

वैंक्रातमणि, वैंक्रातमणी, वैंक्रातमिण—स स्त्री [स वैक्रान्तमणि] एक प्रकार का रत्न विशेष ।

वैंक्रिय—स, पु स — वह जिस में छोटे, वडे, एक श्रनेकादि रूप वनाने की शक्ति हो (जैन)

वैंक्रिय-लब्धि—स स्त्री [स] वह लब्धि जिस के प्रभाव से छोटे बडे श्रादि विविध रूप वनाये जा सके । (जैन)

उ०—श्रांमोसहि, विप्पोसहि, खेलोसहि, सव्वोसहिलब्धि वैंक्रिय-लब्धि । —व स.

वि वि मनुष्य श्रौर तिर्यंचो को यह लब्धि तप श्रादि के श्राचरण करने से प्राप्त होती हैं ।

वैक्रियसरीर—स पु [स. वैक्रियशरीर] १ देव श्रौर नारकी जीवो का शरीर । (जैन)

२ वह शरीर जिसमें हाड, मास, लोही श्रादि न हो श्रौर मृत्यु के पश्चात कपूर की तरह विखर जाता हो । (जैन)

वैखरी—स स्त्री [स]- १ चार प्रकार के नाद (स्वर) मे एक प्रकार का नाद जो कठ से उच्चरित माना जाता है ।

उ०—१ पराचित चितवन करै, पस्यती मनन मनार । मध्यमा लखत व्यवहार कु वैखरी ऊग्रहकार । —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ मूळधार मे परा नाद है जाणिये, स्वाधिस्ठान मे पस्यती पहचानिये हृदय स्थान मध्यमा, वदन मे वैखरी । —साधक सुधा

२ वाक्शक्ति ।

३ वाग्देवी, सरस्वती ।

४ बोलने की शक्ति ।

वैखांनस, वैखानसि—स पु [स वैखानस] १ वानप्रस्थ श्राश्रम का व्यक्ति ।

२ वराह रूपी भगवान् श्रीविष्णु का नाम । यह रूप पातालवासी हिरण्याक्ष के वध के लिए धारण किया था ।

३ चपक नगरी का राजा, जिसने श्रपने पित्तरो के उद्धार के लिए उन्हें मार्गशीर्ष शुक्ल इग्यारस के व्रत का पुण्य दिया था ।

२ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी।

रू. भे.—विखांनस।

वैंग—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—१ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा विसराम। हरिया जम लै जावसी, वैंग सिवरियै राम। —अनुभववाणी

उ०—२ सांभि सभ स्वार क्या करत नर बावरा, वैंग भजि वैंग हरि दाव आई। दास हरिराम तन खाक मिळ जाहिगें, चूक सब जाणि जुग चतुराई। —अनुभववाणी

वैंगरणी—देखो 'वेगरणी' (रू भे)

वैंगरणौ-वि०—प्रबन्ध करने वाला, प्रबन्धक।

उ—वैंगरणां सैंगरणा मुहता, साद करई सुधार। दोमी दळ की सकया आणइ, माहइ चक्र-तलार। —रुकमणी मगळ

२ देखो 'वेगरणौ' (रू. भे.)

वैंगलेय-स. पु [स] भूतो का एक गण विशेष। (पुराण)

वैंगांण—देखो 'वेग' (रू भे.)

उ०—गुटकाण सीदाण विमाण पराछक तणी गत, नाव तीराण देधाण भणे। पुखराण वैंगांण प्रमाण पराछक, वात वसै विडगाण भणे। —किसनजी दधवाडियो

वैंगागळ, वैंगागळौ—देखो 'वेगागळ' (रू. भे)

उ०—राठोडा सींह वधी, वधी सोह हिंदुसथांना, वरकरार नव कोट, हसम राखिया खजाना। दिल्लीवै सुरताण, वाज वका वैगागळ, सूटी लै मेल्हिया, जूह मद वहता मेंगळ। —गु. रू. व

वैंगायन-स पु [स] भृगु के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार।

वैंगार—देखो 'वेगार' (रू. भे.)

वैंगाळ, वैंगाळौ—१ देखो 'वेगागळ' (रू. भे) (अ मा.)

२ देखो 'वेगाळ' (रू भे)

वैंगौ—देखो 'वेगौ' (रू. भे)

उ०—१ मा कह्यो—बेटा महाराज उतावळ करै छै। सतावी करि घरै हालो। ताहरा कुंवर कह्यो—माजी वैंगा ही हालस्या। आडी ऊभी वाता करि ऊठियो। आपरै जनाने गयो। मोळ गुवा आणि मुजरो कियो। राग-रग हुवा, हसिया, खेलिया, पोढिया। —पलक दरियाव री वात

उ०—२ एक वीर स्त्री आप रा पती नै कह रही है—हे पती आज आपरो वैंगो रात्री वदीत हुवा विना ही जागणो और चर (चरवादार) घोडा नै वेगो कसियो तिणसू म्हनै उनमांन होवै कै है थारा कोई पाहुणा मिळिया है। —वी. स. टी.

वैंग्यांनिक-वि० [स. वैज्ञानिक]-१ विज्ञान का ज्ञाता। २ विज्ञान का, विज्ञान सम्बन्धी। ३ प्रयोगों द्वारा नये ज्ञान सूत्र की खोज करने वाला।

वैंड, वैंड, वैंडकी, वैंडकी—देखो 'वेंड' (रू. भे.)

वैंडो, वैंडो—१ देखो 'वेंडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वैंडो' (रू भे.)

३ देखो 'वेसो' (रू भे.)

उ०—१ राजा वळै समझाय कह्यो—बेटा, थारी मसा परवाण वैंडी राजकवरी रा तो कठै ई वावडी ई नी व्हिया। अबै थूं कै ज्यूं करू। म्हारी कैणो मान अर ब्याव सारू हुंकारो भर दै। —फुलवाडी

उ०—२ उणियारो बतावण सारू सिरदार सुभट नटग्या। कह्यो कै वैंडा दुस्टी रो तो मूडो देख्या ई पाप लागै भेटका व्हैता ई झटको। दोय ढोल नी करा जितै चैन नी पडै। —फुलवाडी

(स्त्री वैंडी)

वैंचणो, वैंचवो—देखो 'वैंचणो, बंचवो' (रू भे.)

वैंचणहार, हारो (हारी), वैंचणियो—वि०।

वैंचिओडो, वैंचियोडो, वैंच्योडो—भू० का० कृ०।

वैंचीजणो, वैंचीजवो—कर्म वा०।

वैंचवाडो—देखो 'वैंचवाडो' (रू. भे.)

वैंचाणो, वैंचावो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू. भे)

वैंचाणहार, हारो (हारी), वैंचाणियो—वि०।

वैंचायोडो—भू० का० कृ०।

वैंचाईजणो, वैंचाईजवो—कर्म वा०।

वैंचायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वैंचायोडी)

वैंचावणो, वैंचाववो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू. भे)

उ०—थारा बीरोसा कागद मेहलियो। आध (ए) वैंचावण घरै आवो औ जूझारजी. झगडै किण विध जूजिया। —जूझारजी री गीत

वैंचावणहार, हारो (हारी), वैंचावणियो—वि०।

वैंचाविओडो, वैंचावियोडो, वैंचाव्योडो—भू० का० कृ०।

वैंचावीजणो, वैंचावीजवो— कर्म वा०।

वैंचावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वैंचावियोडी)

वैंचियोडो—देखो 'वैंचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैंचियोडी)

वैंछग-वि०—चपल, चचल, उछ्खल।

उ०—उभै सहस अठसठ धुज ऊतग, वीस सहस हैमर धुज-वैंछग।

निज पोसाक सु केसरि नोखा, जवहर ग्रतर म्रिगंमद जोखा।
—सू प्र

वंछरा, वंछराय—देखो 'वछ्चराय' (रू भे.)

वंछाड़—देखो 'वंछाड' (रू भे.)

वंछाणौ, वंछावौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू भे)

वंछाणहार, हारौ (हारी), वंछाणियौ—वि०।
वंछायोडौ—भू० का० कृ०।
वंछाईजणौ, वंछाईजवौ—कर्म वा०।

वंछायोडौ—देखो 'विछायोडौ (रू भे)
(स्त्री. वंछायोडी)

वंछावणौ, वंछाववौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू. भे.

वंछावणहार, हारौ (हारी) वंछावणियौ—वि०।
वंछाविग्रोडौ, वंछावियोडौ, वंछाव्योडौ—भू० का० कृ०।
वंछावीजणौ, वंछावीजवौ—कर्म वा०।

वंछावियोडौ—देखो 'विछायोडौ' (रू भे)
(स्त्री वंछावियोडी)

वंजत—देखो 'वंजयत' (रू भे)

वंजती—१ देखो 'वंजयती' (रू भे)
२ देखो 'वंजयतीमाळा' (रू भे)

वंजतीमाळ, वंजतीमाळा—देखो 'वंजयतीमाळा' (रू. भे)
उ०—१ चक्र सामि सख मामि पदम पति ग्रना गदापति, प्रीतवर पगरण भला फाविति इसी मति। महि कट मेखळ कहै कानि मकराइ कि कुंडळ, उरि वंजतीमाळ रिदै कुस्टामिणि कमळ।
—पी प्र

उ०—२ सख चक्र पदम रु गदा, उर वंजतीमाळ। मोर मुकुट कट काछनी, प्रायौ सुंदर लाल। —गजउद्धार

उ०—३ वंज तीमाळा, ग्रधिक विसाळा, कौस्तभ मणि सोहदा है। ग्रगुलत्ता छाजै, विविध विराजै, ग्रति ही रूप ग्रनदा है।
—गज-उद्धार

वंज—देखो 'वंज' (रू. भे)

वंजणती—१ देखो 'वंजयती' (रू. भे)
२ देख 'वंजय तीमाळा' (रू भे)

वंजनाथ—देखो 'वंद्यनाथ' (रू भे)
उ०—राठौड कूंपौ महिराजौत वडौ दातार, ग्राखाडसिघ रजपूत स्रीवंजनाथ महादेव रौ ग्रवतार, वरस ३५ में काम ग्रायौ। इतरा प्रवाडा तौ प्रसिद्ध कूंपाजी रा छै। —राव मालदै री वात

वंजभ्रत—स. पु. [स वंजभृत] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वंजयंत—स. पु. [स,] १ देवराज इन्द्र।
२ देवराज इन्द्र का राजभवन।
३ इन्द्र का झडा, पताका।
४ झण्डा, पताका।
५ तिमिध्वज की राजधानी का नाम।
६ घर मकान।
७ क्षीरसागर के मध्य का पर्वत।
रू भे.—वंजयत, वंईजयंत, वंजंत।

वंजयतिक—सं. पु. [स] ध्वजा या पताका को उठाकर चलने वाला।
रू भे.—वंईजयतिक।

वंजयतिका—१ देखो 'वंजयती' (रू भे)
२ देखो 'वंजयतीमाळा' (रू. भे)

वंजयती—स स्त्री [स] १ ध्वजा, पताका, झण्डा।
२ चिन्ह, लक्षण।
३ एक प्रकार का पौधा विशेष, जिसके हाथ-हाथ भर लम्बे एव चार-पाच ग्रगुल चौडे पत्ते एव कई दलो के फूल होते हैं।
४ देखो 'वंजयतीमाळा' (रू भे)
रू भे—वंजती, वंजयती, वईजयती, वंईजयतिका, वंईजयती वंजती।

वंजयतीमाळ, वंजयतीमाळा—स स्त्री [स वंजयतीमाला] १ मोतियो ग्रादि का हार।
२ पाच रगों की घुटको तक लटकती हुई एक प्रकार की माला, जिसे कृष्ण भगवान् पहनते थे।
३ भगवान् श्रीविष्णु की माला।
उ०—ब्रह्मा विसन महेस इद्र सुर साथै विराजमान हुआ छै। ग्राप विसन चत्रभुजरूप धारि। वागा वणाउ करि। सख चक्र गदा पदम धारि। वंजयतीमाळा मोर मुकट कुंडळ विसाल मदन मोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर विराजमान हुआ छै।
—र. वचनिका

रू भे—वंजती, वंजतीमाळ, वंजतीमाळा, वंजयती, वंजयतीमाळ, वंजयतीमाळा, वंजणती वईजयती, वंजतीमाळ, वंजतीमाळा, वंजयती।

वंजयिकीविद्याग्यान—स पु [स वंजयिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ प्रकार की कलाओं में से एक प्रकार की कला विशेष।

वंजो—स पु—घोडों का एक प्रकार का रोग विशेष, जो मुरचो पर होता है। (शा हो.)

वंड—देखो 'वेढ' (रू. भे)
उ०—परभोम लई समदा लगै, राठोडा साका रहै। गळहत्य वस गोहिला तणौ, वंड खड्ग गहि सग्रहै। —गु रू व.

वंडणौ, वंडवौ—देखो 'वेढणौ, वेढवौ' (रू भे.)

उ०—पाडवा नीलो पलाण, असी घोडै राव आण। वंडतै उभे विकास, आग्नि जिसो उवास। —गु. रू. ब

वंडणहार, हारो (हारी), वंडणियो—वि०।

वंडिग्रोडो, वंडियोडो, वंडयोडो—भू० का० कृ०।

वंडीजणो, वंडीजवो—कर्म वा०।

वंडय-स पु [स] वसिष्ठ ऋषि का पैतृक नाम।

वंडाक—१ देखो 'वंडाक' (रू भे)

२ देखो 'वंडो' (रू. भे)

वंडाळव्रत-स पु [स विडालव्रत] एक प्रकार का ढोंग विशेष, जिसमे दिखावे के लिए साधु (सज्जन) बनकर छुपे रूप मे पाप व कुकर्म किये जाते हैं।

वंडाळव्रति, वंडाळव्रती-वि० [स. विडालव्रती] १ पाप एव कुकर्म करते हुए भी साधु बना रहने वाला।

२ ढोंग रचनेवाला, ढोंगी।

वंडियोडो—देखो वेढियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वंडियोडी)

वंडूर्यो-स पु—खराब कलिन्दा।

वंडूरयपरवत-स. पु [स वैडूर्यपर्वत] एक पर्वत जो गोकर्ण तीर्थके समीप स्थित है।

वंडूरय वंडूरयमणि, वंडूरयमणी—देखो 'वंडूरयमणि' (रू भे.)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वंडूरय सूरचकात चद्रकात नील महानील इद्रनील सवकर विसकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी लोहीताक्ष मसारगल्ल हसगरब्भ पुलक अक अजन अरिस्ट चिंतामणि। —व स

वंदोच्योडै-वि —घबराया हुआ, विचलित हुवा हुआ।

उ०—पेमजी बोल्या—भाया तणी भीड, भायेला भाजै नही। लोग यूही कैवै' ··· बीच मे ही दलाल बोल उठ्यौ—आपणी बडाई पछै कराला, पैली रिपिया ल्यावौ, काम पक्को मणावा। पेमजी वंदोच्योडै राज री रकम रा आयोडा ढाई हजार रिपिया री थैलो भरियोडी मेल दी, दलाल देवता रै आगे वगा नाखी अर कैयो—की वता ले जाचौ सा। —दसदोस

वंढ—देखो 'वेढ' (रू भे)

उ०—हाथी लखमन हेत, वलियी वंढ लगायकै। चित उत धरियो चेत, मिळवा कामण माणवा। —गज-उद्धार

वंढक—देखो 'वेढक' (रू भे)

उ०—कर्न होत जो ऊठे 'अजमाल' वंढक अकळ, लडण तेढक गळा दळा लाहो। साजतो नही अमपेल 'अडसीह' नु, हांमटै सेल कमेन हारो। —बद्रीदास खिडियो

वंढगारो, वंढगारी—देखो 'वेढीगारो' (रू भे)

वंढणो, वंढवो—देखो 'वेढणो, वेढवो' (रू भे.)

वंढणहार, हारो (हारी) वंढणियो—वि०।

वंढिग्रोडो, वंढियोडो, वंढयोडो—भू० का० कृ०।

वंढीजणो, वंढीजवो—कर्म वा०।

वंढमण, वंढमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू भे)

वंढमल, वंढमल्ल—देखो वेढमल' (रू. भे.)

वंढमी—देखो 'वेढमी' (रू भे)

वंढलो—देखो 'वेढलो' (रू.)

वंढियोडो—देखो 'वेढियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वंढियोडी)

वंढीगार—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

वंढीमण, वंढीमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे)

उ०—मूछां रा वळाका दीधा सीसोद गनीमा माथै, धूर हास तमासै मुनिंद्र रीधा धीर। म्यान हू उखेलताई कीधा खाग तेढीमणै, वंढीमणै मेलताई कीधा महावीर। बद्रीदास खिडियो

वंढीमल, वंढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू भे)

वंण-स पु [स. वचन] १ स्तुति, वन्दना।

उ०—राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वंण। सुणै वधायो गिरिसुता, सो ह्वौ मो सुख वंण। —बा दा.

२ देखो 'वेण' (रू. भे) (अ. मा.)

३ देखो 'धीण' (रू भे)

उ०—रति रयण सुदि नर नारी रामति, गाळि प्रमदति गावही। मुख गान दिन निस स्वाम मगळ, वंण चग वजावही। —रा. रू.

४ देखो 'वीणा' (रू भे)

उ०—१ तिसा वंण स्रीमडळ जत्र ताल, सहनाय वसी अनै सीस ढाल। सुधा कुंडळी खजरी चग सोहै, वजै चंग मिरदग सोभा विमोहै। —रा रू

उ०—२ घूघरा तणा झरणाट हुय घमाघम, वंण रा तत्र तरणाट वाजै। नकीवा बोल हरणाट हुय नोवता, गयणाघर मवद गरणाट गाजै। —खेतसो बारहठ

५ देखो 'वेणी' (रू भे)

६ देखो 'वहन' (रू भे)

७ देखो 'वचन' (रू. भे)

उ०—१ उदियागर उगियो. इदु राका अविरचा, रग कुरग रहणी, पाव वाधी अरचा। कोल सेम भूतेस, वंण सुर वचन चवीजे, विद्यावत बुधवत, कहचो तुम तुम्हा कहीजे। —कोल्हजी चारण

उ०—२ या विचार वंण बोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ कै रोम व्योम कू उट्ठै, रान कै आए जम रान सै छट्टै। —रा. रू.

उ०—३ करण अखियात चढ़ियो भला काळमी, निवाहण वैण भुज वाधिया नेन। पवारा सदन वर-माळ सू पूजियो, खळा किरमाळ सू पूजियो खेत। —वाकीदास ग्रासियो

उ०—४ रज पळटै दिन ही घटै, सूर पळट्टै छाह। सूरा हदा वोलिया, वैण पळट्टै नाह। —राव रिणमल री वात

उ०—५ चित वडपण सुभ चितवण वजर लीक सम वैण। गाढ स्यामध्रम धरण गह, रहण 'पतो' दिन रैण। —जैतदान वारहठ

उ०—६ तू मोटी महमाइ, धरम धरि ऊपरि धरणी। वध वाणी दै वैण, क्रपा करि हे कुडळणी। —पी प्र

उ०—७ सुरग न देखू अपणा नैणा, तौ न पतीजूं गुर का वैणा। सुरग दिखाऊ तेरै ताईं, सुरग गयो मन फेरै नाही। —वील्होजी

वैणडड, वैणदड–स पु [स वेणी+दण्ड] १ एक प्रकार का सर्प विशेष।

उ०—गढा भूखियो कामरी हाम गाढी, दिनो मूछ वळ पाण सत्ताण दाढी। पौरसै तरसै उसस्सै प्रचड, विकरसै हुसै ऊधसै वैणडड। —गु रू व.

२ देखो वेणीदड (रू. भे)

वैणन–स पु. [स दैणन.] श्वान, कुत्ता। (ह ना मा)

वैणव–वि [स] बास का, वास सम्बन्धी।

स पु [स वैणव] १ वास का वीज या फल।

२ विश्वामित्र के वशज एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

[स वैणव] ३ बास का डडा विशेष, जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है।

रू. भे —वैणव।

वैणवी–स स्त्री [स] १ वशलोचन।

[स वैणविन्] २ वशी वजाने वाला व्यक्ति।

३ शिव, महादेव।

वैणसगाई—देखो 'वयणसगाई' (रू भे)

उ०—वैणसगाई वरणिया, अगण दधक्खर खैर। थई सगाई जेण थळ, वळै न रहियो वैर। —र ज प्र.

वैणा—देखो 'वीणा' (रू भे)

उ०—वैणा पुस्तक धारिणी, कासमीर कदरि वसति, गीत नाद गुण गाह, दियण देवि कवियण दियति। —अ वचनिका

वैणावैणी—देखो 'वोलचाल'।

उ०—तद इण कही, ओर तो मुझ कु कोई न राखै, पिण एक देपाळ राखैगा। तद पातसाह कही, तो भला जाई। तद पातसाह तो ओर हुरम पासै गयो। तद रातै आ सुखपाळ चढ नै देपाळ रे गई। आई नै कह्यो, देपाळ नुं कहायो, मैं पातसाह सुं वैणावैणी हुई तै पण हू अठै तोनु तक नै आई छु। जे रजपूतपणो डावै छै तो मोनुं राख। —देपाळधध री वात

वैणि, वैणी—१ देखो 'वेणी' (रू भे)

उ०—१ वणि माग उतवग गूंथ वैणी मोताहळ मिळ मझ्झऐं। सिणगार असुरा छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झऐं।

—मा वचनिका

उ०—२ पिक-वाण जाण वैणी पनग, हिरणाखी हंसा-गमणि। रग-महल सिंध राजान सुर, रमति राज-पुत्री रमणि।

—गु. रू. वं.

उ०—३ लोयण चचळ चपळ, अचळ घू जिस मन धारण। कढि मयद मुख इद्र, दीरघ वैणी अहि दारण। —गु. रू. वं.

उ०—४ केहरि जिम कढि क्रिस्स, लगति चालती गजिग्रह। सोभति वैणी सरप, हुरै धीरज्ज खगिग्रह। —गु. रू व.

२ देखो 'वहणी' (रू भे)

वैणीडड, वैणीदड—देखो 'वेणीडड' (रू. भे)

वैणो–स पु —१ वढई का एक प्रकार का औजार विशेष।

२ देखो 'वीणो' (रू. भे)

वैंणो—देखो 'वहणो' (रू भे.)

वैंणौ, वैंवौ—१ देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू भे.)

उ०—अरु नरसिंघ पण वीकैजी माथै आयो, नै तरवार कवरजी नूं वाही सू वगतर कटनै खंवै रै झरपट सी लागी। समचै वीकैजी कयो, 'नरसिंघ, तरवार यूं वैहै।' इसौ कहनै तरवार वाही सू नरसिंघ रा दोय धड हुवा। —द. दा

२ देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)

वैणौ, वैवौ—१ देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू. भे)

२ देखो होणौ, होवौ' (रू. भे.)

वैतड–स पु —१ अष्ट वसुओ मे आपका एक पुत्र।

२ देखो 'वितड' (रू भे)

वैतडी–स. पु [स वैतण्डी] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

वैतड्य–स पु [स वैतण्ड्य] आयु राजा का एक पुत्र, राजा।

वैत–स पु —१ सवारी, वाहन।

२ ऊट।

उ०—मारवाड रा माणस च्यारसौ मारिया गया। नै असवाव वैंतां वगैरै सारी लूटियो। अरु रावजी री आण फेरी। इण तरै दिन १५ तथा २० मारवाडा रा थाणा सरव मार उठाया। नै कई भाज गढ में पैठा। —द. दा.

४ वह गद्य-पद्य रचना, जिसमे अनुप्रासो व समासो की अधिकता हो।

उ०—सू लिखियौ नहीं तद आलमगीर पाणी वध करघो। पात-साहजी तिसा मरता री ज्यान कवज होणी लागी। तद साजिहांन जी कयौ, 'लावौ भाई रजूनामा लिख दें।' जब दवात-कलम हाजर किया। पीछै पातसाहजी कलम हाथ लेकर कागज में आ वैंत लिखी। —द. दा.

५ नियम, प्रण, प्रतिज्ञा।

६ दाव, पेच।

७ गुरुमंत्र।

८ लता, वेल।

९ देखो 'वेंत' (रू भे.)

१० देखो 'वेत' (रू. भे)

११ देखो 'वंत' (रू भे.)

उ०—१ जद राजा कही, 'तू सोमवार रै दिन थारी वेंटी री स्वयंवर कर। जिंरै गळै माहे हयणी फूला री माळा घाते, तैनू परणाय दे।' तद आ वात मुहतै पण कबूल कीवी। कही 'वीवाह ईंयं ही ज वैंत करसां। —हसराज वछराज री वात

उ०—२ मेलि परवांन मांन महाराज कीधा मन्हैं, लोपियौ हुकम करतूत लहसी। हुई सहुकौ कहै हाक मैं हाकमी, रेत वर वंत दुस्ट दूर रहसी। —ध व. ग्र.

रू. भे.—वंत, भेत, भैंत, वेंत, वेत।

वैंतड़—देखो 'वेंतड' (रू. भे)

वैंतणौ, वैंतवौ —देखो वेंतणौ, वेंतवौ' (रू भे)

वैंतणहार, हारौ (हारी), वैंतणियौ—वि०।

वैंतिग्रोडौ, वैंतियोडौ, वंतयोडौ—भू० का० कृ०।

वैंतीजणौ, वैंतीजवौ—कर्म वा०।

वैंतनिक—स पु. [स वेतन+इक प्रत्य] वेतन लेकर कार्य करने वाला व्यक्ति, नौकर।

वैंतर—१ देखो 'वेतर' (रू. भे)

२ देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)

उ०—१ हेकठा हुआ वळितणे हेत, पळहारी वंतर भूत प्रेत। खेचरा भूचरा खेत पाळ, काळिका पुत्र भैरव कंकाळ। —गु रू. ब.

उ०—२ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा वह वंतर। वीर सिद्ध वैताळ निसाचर भूचर खेचर। —गु रू ब.

वैंतरणि, वैंतरणी—स. स्त्री. [स] १ उडीसा प्रान्त मे बहने वाली एक पवित्र नदी।

२ पितृलोक से बहते समय गगा नदी का नाम। (पुराण)

३ यमराज के द्वार पर (नरक पे) बहने वाली एक नदी। (गरुड पुराण)

उ०—धवळ न अटकै धुर वहै, कासू पाणी कीच। इण री जननी तारही, वैंतरणी रै बीच। —बां. दा.

वि० वि०—कहा जाता है कि उक्त नदी मे जल की जगह गर्म लोहू, अस्थि, मज्जा आदि तेज प्रवाह से बहता है। यह नदी मरने के बाद जीवात्मा को पार करनी पडती हैं। इसमे से ब्राह्मण को गो-दान करने वाला धर्मात्मा ही पार हो सकता है एव पापी को इसे पार करने में कठिनाई होती है और दुख भोगना पडता है। यह नदी सती के वियोग से जो अश्रुधारा शिव के नेत्रों मे वही उसी से बनी थी। इसका विस्तार दो योजन है।

४ दान मे दी गई वे वस्तुए जो परलोक मे उन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने की अभिलाषा से दी जाती हैं।

५ देखो 'वेतरणी'।

रू. भे—वेतरणी, वैंतरणी, वेनरणी, वेयरणी।

वैंतरणीइग्यारस, वेतरणीएकावसी, वेतरणीग्यारस—स स्त्री [स. वैंतरणी एकादशी] मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी।

वैंतरणौ, वैंतरवौ—देखो वेंतणौ, वेंतवौ' (रू. भे)

वैंतरणहार, हारौ (हारी), वैंतरणियौ—वि०।

वैंतरिओडौ, वैंतरियोड़ौ, वैंतरयोडौ—भू० का० कृ०।

वैंतरीजणौ, वैंतरीजवौ—कर्म वा०।

वैंतरियोडौ—देखो 'वेंतियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वैंतरियोडी)

वैंतवार—वि०—मूर्ख, नासमझ। (अ मा)

वैंतांडारूपा—स. स्त्री —विकृत रूप धारण करने वाली देवी।

उ०—सीकोतर सोमया तु सुधीर, वैताडारूपा विकट वीर। सीवरघां सीधा धातु सभेव अहिमुखा मुगट फंसाजु अेव। —रामदांन लाळस

वैंताढ्य, वैंताढ्यगिरि—सं. पु —एक पर्वत का नाम।

उ०—अत्त दीरघ वैंताढ्य, वीस सत्तरसो आढ्य सत्तर मडा नदी ए पच चूला सदीए। —वृस्त

वैंताणौ, वैंतावौ—देखो 'वेंताणौ, वेंतावौ' (रू. भे.)

वैंताणहार, हारौ (हारी), वेंताणियौ—वि०।

वैंतायोडौ—भू० का० कृ०।

वैंताईजणौ, वैंताईजवौ—कर्म वा०।

वैंतायोड़ौ—देखो 'वेंतायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वैंतायोडी)

वैंताळ, वैंताल—स. पु. [स.] १ व्यास की ऋकशिष्य परपरा में से जातुकर्ण्य आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रहकं तूर अवाळ, चड कळिचाळ कहक्कं। वकं वीर वेताळ, ग्रीघ वेताळ गहक्कं। —सू. प्र.

उ०—२ वीरम्मं वैताळ, खिलं खेतपाळ। कटक्का कसस्सं, सुभट्ट सनस्सं। —गु. रू. व.

उ०—३ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा वह वेतर। वीर सिद्ध वेताळ निसाचर भूचर खेचर। —गु. रू. व

उ०—४ वेताल वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख, जवक्क रीछ वड्डाक जक्ख। —गु रू. ब.

बेताळरस, वेतालरस—स पु [स] गंधक, मिर्च और हरताल के योग से बनने वाला एक प्रकार का रस विशेष। (वैद्यक)

बैताळिक, वैतालिक—स पु [स वैतालिक] १ राजाओ आदि को उनकी कीर्तिगान करके जगाने वाला व्यक्ति भाट, बन्दीजन।

उ०—प्रभात समउ हुउ, अधकार फीटइ, गाय तणा गाला छूटा, तारागण विरल हुउ चद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तणी उलि लवइ, देव तणा बार ऊघडिया, प्रभातिक तूरय वाजिया, राजभवनइ बैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका ऊपजइ, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणे घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुआ। —व स.

वि० वि०—ये लोग राजाओं को किसी विशेष घटना, बात आदि की सूचना देने का कार्य करते थे।

२ व्यास की ऋकशिष्यपरंपरा में से शाकधूणि नामक आचार्य का एक शिष्य

रू. भे —वेताळिक, वेताळिक, वेताळिक।

बैतालिकीविद्याग्यान—स स्त्री. [स. वैतालिकीविद्याज्ञान] ६४ कलाओ मे से एक।

बैताळी—स पु [स. वैताली] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे)

उ०—काज माळी कमाळी उताळी फिरे माहाकाळी, नचे, आळी जाळी वीर वैताळी निसक ताळी वाज अरावा सावात जाळी नराताळी, लाघडं, प्रजाळी जाणं हेकं साथ लक। —किसनजी आढो

बैताळीस, वैतालीस—देखो 'वंयाळीस' (रू भे.)

उ०—पनरैसं वैतालीस कोडीरे, अडवन्न लख अधिकं जोडी। छत्तीस सहस अधिक कही रे, प्रतिमा सगली सरद हीयं रे। —वृस्त

बैतियांण—वि —समर्थ, सामर्थ्यवान् शक्तिशाली, बलवान्।

रू. भे.—वहतीवांण, वैहतीवाण।

बैतियोडो—देखो 'वैंतियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वैतियोडी)

बैतुड—देखो 'वितड' (रू भे.)

बैतुल—स. पु —घोडा, अश्व। (ना. डि. को.)

बैत्रासुर—१ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे)
२ देखो 'वेत्रासुर' (रू. भे)

बैत्रासुरतडळ, वैत्रासुरतडल—स पु—वृत्रासुर नामक राक्षस का वध करने वाला, इन्द्र। (ना. डि. को.)

बैथी—देखो 'वेथी' (रू. भे.)

उ०—जोर कियौ सारं वैथी मागं नही, रुमाल लपेट कै पांय परै है। खाडी वगस जद मेडतौ दीनी, दूदी जमेसर नाव धरै है। —सेवादास

बैदग—स. पु.—१ आयुर्वेद, वैद्यक, चिकित्सा।
२ देखो 'वैद्य' (रू. भे)
३ देखो 'वेदग्य' (रू भे)

बैदगर—१ देखो 'वैद्य' (रू. भे)

उ०—नाडी निरख भया वैदगर, अनत ओखदी कीन्हा। सारी धात रसायन करि करि, आतम एक न चीन्हा। —अनुभववाणी

२ देखो वेदग्य'।

बैदगी—१ देखो 'वैदंग' (रू. भे)
२ देखो वैद्य' (रू भे)
३ देखो 'वेदग्य' (रू भे)

बैद—स. पु [स] १ विद ऋषि के एक पुत्र का नाम।
२ विद ऋषि के वशज।
३ देखो 'वैद्य' (रू भे)

उ०—१ हरीया पीर परापती, तन तैं दई लगाय। वैद विचारा क्या करै, बिन भुगत्या नही जाय। —अनुभववाणी

उ०—२ ज्योतिषी वैद पोराणिक जोगी, सगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तो अरथ कहि। —वेलि.

उ०—३ वैद किण ही री आल्या री कारी कीधी। आख ठीक हुवां वैद बधाई मागं। जद कहै पचा नै पूछ सू। पच कहसी सूझ तो हुवो तो बधाइ देसूं, जद वैद वोल्या—तो नै काइ दीसे है? —भि. द्र.

बैदक—वि०—जानकार, ज्ञाता।

उ०—व्याकरण वेद वैदक, विविध, भला उदर सहुको भरौ। धरमसीह रतन बहुला धरणी, कोई गरब रखै करो। —ध. व ग्रं.

२ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म ग्यान रसायण सुर धुन वेद तथा जोतिस, व्याकरण च धनुरधर जळतर मन्त्राक्षर वैदक। —रा. सा स

३ देखो 'वैद्यक' (रू. भे)

४ देखो 'वैद्य' (रू भे.) (अ मा)

वैदगी—देखो वैद्यगी' (रू भे)

वैदथिन–स पु. [स] विद ऋषि कुलोत्पन्न ऋजिश्वन नामक आचार्य।

वैदरभ, वैदरभ–स. पु. [स वैदर्भ] १ रुक्मणी के पिता का नाम।

२ दमयंती के पिता का नाम।

३ आधुनिक बरार प्रदेश का नाम, विदर्भदेश। (व स)

उ० मलय सिंगल कोसल नइ अध्य, स्री परवत द्राविड नइ वच्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्री वैदरभ पाटल प्रति सार। —नळदवदतीरास

४ उक्त प्रदेश के राजा भीम का नाम।

वैदरभि, वैदरभी–स पु [स वैदर्भी] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा के पिता का नाम।

२ विदर्भ नरेश के वशज भार्गव नामक आचार्य का नाम।

३ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक की राजकुमारी रुक्मणी का नाम।

४ विदर्भ नरेश की राजकुमारी और नल राजा की पत्नी का नाम।

५ कुश नामक राजा की पत्नी एव कुशाम्ब, कुशनाभ आदि की माता का नाम।

६ सगर महाराजा की पत्नी का नाम, जिसके साठ हजार पुत्र कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि मे भस्म हुए थे।

७ मलयध्वज की पत्नी का नाम।

८ काव्य रचना की एक प्रकार की शैली विशेष, जिसमें मधुर वर्णों से मधुर रचना की जाती है। यह करुण, श्रृंगारादि रसो के लिए अधिक उपयुक्त है। (साहित्य)

वि० वि०—लाटी, पाचाली एव गौडी इसके अन्य तीन प्रकार होते हैं।

वैदराज—देखो 'वैद्यराज' (रू. भे)

उ०—भणत एक व्याकरण, वीर इस्ट कै करै, तरक्क नीति सास्त्राणि, एक मुख उच्चरै। भारत एक सव्व धात, केळवै रसायण, अगाध वैदराज राज श्रोखदी विचारण। —गु रू ब

वैदल–स. पु [स] १ परांवटा नामक खाद्य पदार्थ २ दाल का अनाज

३ भिखारी के भीख मांगने का पात्र।

वैदही—देखो 'वैदेही' (रू भे.) (ना मा)

वैदांणी, वैदांनी—देखो 'वैनांणी' (रू. भे.)

उ०—तीतर लव्वा वाटवड, वैदांणी बुगलाह। लखं पखीवण रह्या, वाह वाह जी वाह। —गज-उद्धार

वैदिक–वि० [स] १ वेदो में वर्णित, वेदोक्त।

उ०—विद्या वेदां में वैदिक विधि वरणी, प्रपणी करणी सू जगपार उतरणी। निरभय नीयता यता नरनारी, करता विस्वभर भरता सुखकारी। —ऊ का

२ वेदोक्त कृत्य करने वाला।

३ वेदो का ज्ञाता, पडित।

४ वेदो का, वेदो से सम्बन्धित।

रू भे—वैदिक, वेदक, वोदक, वैदक।

वैदूरय, वैदूरयमणि, वैदूरयमणी–स पु. [स वैदूर्यमणि] १ हरे रग के रत्न।

२ लहसुनिया नामक रत्न विशेष। (व. स.)

रू भे,—वैडूरय, वैडूरयमणि, वैडूरयमणी।

वैदेह–स पु [स] १ विदेहराज जनक।

२ विदेह का निवासी।

३ वैश्य या व्यापारी।

४ ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न वैश्यपुत्र।

५ महाराजा निमि के पुत्र तथा वशजो के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधनसूचक शब्द।

६ विदेह देश के राजा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

वैदेहरात–स पु [स] एक प्राचीन ऋषिगण जो विश्वामित्र के कुल से उत्पन्न हुए थे।

वैदेही–स स्त्री. [स] १ विदेह राजा जनक की कन्या सीता, जानकी।

२ जनमेजय पुत्र शतानीक की पत्नी का नाम।

३ विदेह कुलोत्पन्न।

४ पिप्पली। (अ. मा)

रू भे—वैदई, वैदही।

वैद्य–वि [स] १ वेद का, वेद सम्बन्धी।

२ औषधि का, चिकित्सा सम्बन्धी।

३ चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

स. पु [स. वैद्य] १ आयुर्वेद का ज्ञाता एव उसी के अनुसार चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, आयुर्वेदाचार्य।

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या कोइ नै आख्या न सूझै तिण पूछ्यो सहर मे नागा किता अनै ढकिया किता ? जद वैद्य बोल्यो —आख्या मैं ओखध घाल नै सूझतो तो हू कर देऊ अनै नागा ढकिया तू देखलै। —भि द्र

उ०—२ हकीम वैद्य सरव पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जाण असाध्य व्याध जगदबा, अबा वासै आई। —मे म

२ विद्वान, शास्त्राचार्य।

३ वैद्य नामक जाति का व्यक्ति जो वैश्य माता, व ब्राह्मण पिता के ससर्ग से उत्पन्न होता है।

४ सब विद्याओं का ज्ञाता, विष्णु भगवान्।

५ मुख देवों मे से एक।

६ वरुण एवं सुनादेवी के पुत्र का नाम, जो घृणि एव मुनि का पिता था।

रू, भे—वेद, वँद, वइदउ, वयद, वेज्ज, बँदंग, वेदगर. बँदगी वँद, वँदक, वँद्यक।

अल्पा,—वेदियौ।

वैद्यक–स पु.—१ रोगो के निदान एवं चिकित्सा आदि के विवेचन का शास्त्र।

२ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक। (व स.)

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

४ देखो 'वेदग्य' (रू भे)

उ०—व्यापारी सहू वाणिआ, जोसी वँद्यक व्यास। मागण पणि मिलिया वहू, सहू नी पूगइ आस। —मा का प्र.

रू. भे—वेदक, वैन्ई, वँदक, वँदणी, वँदिक, वँदक, वैद्यग, वैद्यिक।

वैद्यकक्रिया–स स्त्री.—स्त्रियो की ६४ कलाओं में से एक कला का नाम। (व स)

वैद्यग–स पु—१ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मत्रकार।

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे)

३ देखो 'वेदग्य' (रू भे)

वैद्यगी–स पु—वैद्य का कार्य चिकित्सा।

रू भे—वेदगी, वेदगी, वँदगी।

वैद्यनाथ–स पु [स] १ बगाल का एक प्रसिद्ध तीर्थं।

२ मण्डोर का एक प्रसिद्ध स्थान।

३ धन्वन्तरि।

४ शिव, महादेव का एक अवतार जो चिताभूमि में से रावण की प्रार्थना पर हुआ था।

५ महादेव के द्वादश ज्योतिर्लिगों मे से एक।

रू भे.—वँजनाथ, वँजनाथ, वँधनाथ।

वैद्यराज–स पु [स] वह वैद्य जो चिकित्सा करने में अति दक्ष हो।

रू भे—वइदराज, वईदराज, वेदराज, वँदराज।

वैद्यिक—देखो 'वैद्यक' (रू भे.)

उ०—वैद्यिक ज्योतिस निमित्त नैं ए, भाखै परिग्रह कै काज कैं। जिकै तज निकल्या ए, धन मीटा मूनिराज कैं। —जयवांणी

वैद्युतगिर, वैद्युतगिरि–स पु [स वैवृतगिरि] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वैद्रभा, वैद्रवा—देखो 'विदरभा' (रू भे.)

उ०—१ काई भूला भमई गज थाटन रे, वाटन रे वळती न लहई वैद्रभा रे। डोनी घाल्या दाणव आवइ रे, काइ पावइ रे कीधुं कुवधी आपणउ रे। —रुकमणी मगळ

उ०—२ वेग वाल्या हथ रे रे, रथ सुं रथ वांध्यौ रळी। गज थाट मोगर वहइ उवट वैद्रवा थई वेगळी। —रुकमणी मंगळ

वैध—देखो 'वैध' (रू. भे.)

वैधनाथ—देखो 'वैद्यनाथ' (रू भे)

वैधव, वैधव्य–सं पु [सं. वैधव्य] विधवा होने की अवस्था, विधवापन

रू. भे—वैधव।

वैधस–स पु [स] वेधस के वशज हरिश्चन्द्र का एक नाम।

वैधी–स. पु [सं. वेधिन] दुश्मन, शत्रु। (अ. मा.)

वैधीकरण–स पु—कुती पुत्र अर्जुन। (अ. मा.)

वेधौ—देखो वेदौ' (रू भे.)

वैध्रत, वैध्रति, वैध्रती वैध्रित, वैध्रिति, वैध्रिती–स- पु [स. वैधृति]

१ फलित ज्योतिष शास्त्र के २७ योगो में से सत्ताईसवें योग का नाम जिसमें शुभ कार्य करना निषिद्ध है।

उ०—व्यतीपात वैध्रति वली, सूरिजनी सक्राति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकाति। —मा का. प्र

२ तामस मन्वन्तर का देवगण या देवगणों की माता।

३ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के धर्मसेतु नामक अवतार की माता।

४ ग्यारवें मन्वन्तर धर्मसावर्णि के इन्द्र का एक नाम।

५ विधृति के पुत्रों का सामूहिक नाम।

वैन–सं पु [सं] व्यास की सामशिष्य परम्परा के अन्तर्गत शृंगी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'बहन' (रू. भे)

उ०—१ अरु वैन अेक रिडमल री निकी पाटण तवरा नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खडेले लाया। पीछै रावजी खडेलो लूटियो। तद इण प्राणकवर नूं पकडी अर रावजी सीवीकैंजी आपरी ठकुराणी करी नै बैल बैसाणी। —द. दा.

उ०—२ जी साहिवा छोटी ननद थाकी वैन, वाईसा कर मानती जी म्हारा राज। जी साहिवा वानै लगाई अत्ती देर विसूर म्हारी नायजी म्हारा रा'ज। —गणगोर री गीत

३ देखो 'वचन' (रू. भे)

उ०—थर हर कपै नेहाँ थका रे अलगा पावै चैन। ओरा री कुणसी चलै रे, न मानै माइता रा वैन —जयवाणी

वैनड़—देखो 'वहन' (मह, रू. भे)

उ०—१ हरसा भाई म्हारा रे, वैनड़ भाई री गाढी नेह।

—जीणमाता री गीत

उ०—२ जीण मेरी बाई ये ऊंची सो घालूं ये थानं बैसणू, वैनड़ भाई जीमा साथ। जामण की ये जाई, विच विच वदळा ये वाल्हा गासिया। —जीणमाता री गीत

वैनड़लो, वैनडी—देखो 'वहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हू तो जीमण बैठ' र हेली जी मारू', आय परोसै म्हारी वैनडी, वीरै रै आंगण आंबो मोरियो। —लो गी.

वैनतीय वैनतेअ वैनतेय-स. पु [स वैनतेय] विनता का पुत्र, पक्षी-राज गरुड। (अ मा, ना मा.)

उ०—१ सेवतो ठेकांण बाजी सेस धू पयाळ लावी, वैनतेय खसे वेग वणै न विचार। कामनी सपूती लीधा कोळमुड कीत काज, मोपै करां परावरी वुध री भाचार। —बादरदान दधवाड़ियो

उ०—२ तोयधी मुनिंद्र पाण वचै व्याळ वैनतेय, दूठ अद्र वचै घाण जुआण दधीच। बरूथा सत्रां चा बाधा चढ रायासाल बीजै, वीर खागा खाधा जेन लाधा भीम बीच। —हुकमीचद खिड़ियो

२ गरुड की प्रमुख सतानों में से एक सतान का नाम।

रू. भे —वैनतीय, वैनतेय।

वैनहोत, वैनहोतर, वैनहोत्र-स पु [सं वैनहोत्र] १ वीतिहोत्र नामक राजा का नामान्तर जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र था।

वैनांणी—१ देखो 'विनाणी' (रू भे)

२ देखो 'वैनांणी' (रू भे)

वैनायकीविद्यावांन-स. पु [स] वैनायिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ कलाओ मे मे एक।

वैनासिक-स पु. [स. वैनाशिक] १ जन्म नक्षत्र से तेरहवां नक्षत्र। (फलित ज्योतिष)

२ जन्म नक्षत्र से सातवा, दसवा एव अठाहरवा नक्षत्र।

वि० वि०—उक्त तीनो नक्षत्र अशुभ माने जाते है। इन्हें निधन-तारा भी कहते हैं। इन में यात्रा एव शुभ कार्य नही किये जाते हैं।

वैनीत—१ देखो 'वेनीत' (रू. भे)

उ०—कळह हली वळ वेल सु वैनीत वधारी, जाट कहू वायक जोर रा फुरमास न धारी। लिया वळघहू जाटदा तद कीध तयारी, जान पड़ता जोईया वाजा वजवारी। —वी. मा,

२ देखो 'विनीत' (रू भे)

वैनु—देखो 'वैनु' (रू भे.)

वैनोई—देखो 'वहनोई' (रू भे.)

वैन्य-सं पु. [स.] १ भृगुकुलोत्पन्न एक मत्रकार का नाम।

२ राजा पृथु का नामान्तर।

३ राजर्षि पृथि का नाम।

४ राजर्षि पृथी का नाम।

५ अत्रि ऋषि का नाम।

वैपस्चित-स पु. [स वैपश्चित] विपश्चित ऋषि कुलोत्पन्न तार्क्ष्य नामक ऋषि का नाम।

वैपार—देखो व्यापार' (रू भे)

उ०—१ पर घरनी छासि, कठ विहुणी रासि, अवसर विना भास, कुकुळ नो दास। फूस नो आग जमाइ नो भाग, काचो ताग, पाणी नो साग गदीवा नो तेज दुरजन नो हेज। उधारा नो वैपार, रांड ना सिणगार। पावइयानो प्यार। रा. सा स

उ०—२ उर झुकमा असपत्त सू तुकमा लेवण त्यार। पाछा करण 'प्रताप' ज्यू, वेढ अपत वैपार। —किसोरदान बारहठ

वैपारी—देखो 'व्यापारी' (रू भे)

उ०—दुनिया साळी कैवै कै पुलिस वेईमान है, म्हू पूछू कै आज रै जमांना में कुण वेईमान नी है? ए ब्लेक करणिया वैपारी, ए रिस्वता ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाइ तो म्हांरा माईवद है। पछै म्हानै इज क्यूं बदनाम किया जावै? —अमर चूंनड़ी

वैपुर-स पु—गगन, आकाश। (ना हि. को)

वैफुल, वैफुली—देखो 'वहुफुली' (रू भे)

उ०—पोह पसै सेवत्री पाडला, जोख वणी गुलजार। वैफुल वादी ऊपरै, रहिया भवर गुजार। —पना

वैभव-स पु. [स] १ विभव, ऐश्वर्य।

उ०—चळ वैभव, सपत सुचळ, चळ जोवण, चळ देह। चलाचली के खेल में, भलाभली कर लेह। —अज्ञात

२ धन, दौलत, सम्पति, द्रव्य।

उ०—अश्रिति इद्र प्रताप पाक पिंड तेज प्रभा-कर। क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर। —गु. रू. ब.

३ बहुतायत, आधिक्य।

४ महिमा महत्व।

५ सामर्थ्य, शक्ति।

६ कार्य, धन्धा, व्यवसाय।

रू भे —वभौ, विभौ, विभव विभौ, वेभव, वैभव, वंभौ, विभ, विभव, विभाव, विभौ, विहव, वीभव, श्रीभौ, वेभू, वेभव।

वैभवता-स पु. [सं. वैभव+ता प्र] वैभव होने की अवस्था या भाव।

रू भे —विभवता, वीभवता।

वैभववान-वि० [स वैभव+वान्] १ विभववान्, ऐश्वर्यवान।

२ धनवान्, सम्पत्ति वाला, दौलत वाला।

३ महत्त्वपूर्ण, महिमा वाला।

४ व्यवसायी ।

५ सामर्थ्यवान, शक्तिशाली ।

रू. भे —विभववांन, वीभववान ।

वैंभाडक, वैंभाड्डकि, वैभाडिक–स पु. [स] पूर्णभद्र नामक आचार्य जो गोत्र प्रवर्तक भी कहे जाते हैं ।

वैंभवसाळी, वैंभवसाली–वि० [स. वैंभवशाली] १ वैंभववान, ऐश्वर्यवान ।

२ जिसके पास अत्यधिक धन-दौलत हो ।

रू. भे —विभवसाळी, विभवसाली, वीभवसाळी, वीभवसाली ।

वैंभाखरा—देखो 'विभीसरा' (रू भे)

उ०—उवै वार वभ्भीखरणी चालि आयौ, लखै तैं हरणू मान पावा लगायौ । प्ररणामेस वैंभाखरणा भूप येनू जपै आव लकेस स्रीराम जेनू । —सू प्र.

वैंभार–स पु.—वैंहार नामक पर्वत जो राजगृह के पास स्थित है ।

उ०—जिन आदेस लेइ करी जी, चढिया मुनि गिरि वैंभार । सिल उपरी जइ करी जी, दोय मुनि अरणसरण लीधउ सार । —स. कु.

रू. भे —वैंहार ।

वैंभीखण—देखो 'विभीसरा' (रू भे)

वैंभीत—१ देखो 'भैंभीत, (रू भे)

२ देखो 'भयभीत' (रू भे.)

वैंभीसरा, वैंभीसणि, वैंभीसणी–स. पु [स. वैंभीषणि] १ मणि कुंडल नामक वैश्य को शाप मुक्त करने वाला विभीषण का पुत्र ।

२ देखो 'विभीसरा' (रू भे)

वैंभोज–स पु. [स] द्रह्यु के वशज एक प्राचीन जाति ।

वैंभ्राज–स पु. [स] १ सुमेरू पर्वत के पश्चिम मे स्थित सुपार्श्व नामक पर्वत पर स्थित एक जगल का नाम । पुराण)

२ पांचालनरेश का नाम जो ब्रह्मदत्त का पिता था ।

३ एक लोक विशेष का नाम ।

वैं'म, वैंम–स पु —१ सम्बन्ध, लगाव, गरज ।

उ०—बूढी भोळी डोकरया नैं आपरा वेटा वेगा सा छुडा ल्यावरण रा वसतो घमड दिखाळै है । भुवाळी ग्वावतो फिरै । घर-वर गेडा काटै । मिनखां मैं रिरावै, लीलडी काढै । गव्हाया री गरज करै, वकीला सूं वैंम राखै । —दसदोख

२ देखो 'वहम' (रू. भे)

उ०—१ पटवारी है क, तैंसीलदार ? किसनजी की कूत नी सक्यौ । सौखीनाई अर खरच-वरच री चीजा-वसतुवा सूं खूब राजी हुयौ। बूढापै हाला ओखदां माथै वैं'म ही नी गयौ । ओसध्या ही तीस-पेंतीस ताई री अकल मैं आई । —दसदोख

उ०—२ एकर री वात, राजी रै जापै मैं पौन-हवा निकळगी । वायळी वडा करण लागगी । गूग विखेरै अर तत्ता-पत्ता सूं वूहो वाता करै । जकै स घर हाला नैं भूतणी री वैं'म वड गयौ है ? —दसदोख

उ०—३ पण राजी तो दवटी पडी ही टीली मारै । जकै सू सै भूतणी री वैं'म करै है, सनीपात नैं कुरण समझै ? कोई जिद वतावै, कोई चूडावरण री नाव लेवै है । कोई ओपरी छाया कढावरण री उतावळ करै, कोई पलीत नैं पाणी डुलावणी वतावै । —दसदोख

उ०—४ उदास मन सूं वानै कियाई ठिरडतो-ठिरडतो मोटर मे आय नै बैठ्यो तो वैंठता पारण एक जोर रा हचीडा सागै वा स्टारट व्हैगी । जाणै उणनै वैं'म हौ कै म्हूं आळाणी नीं कर दूं अर पाछो रवानै नी व्हे जाऊ । —अमर-चूंनडी

वैंमनस्य–स पु [स] १ वैर, दुश्मनी, शत्रुता ।

२ मानसिक शीथलता, उदासी ।

वैंमर—देखो 'विवर' (रू भे)

उ०—तैंरा समै आप रा धणी री कही हकीकत धारि, मूरत उठाई, मूरत नीचै वैंमर थौ, तठै होई घर वीसी चाली ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वैंमांणिक—देखो 'वैंमानिक' (रू भे)

वैंमाणिकदेव—देखो 'वैंमानिकदेव' (रू भे)

वैंमांणी, वैंमांणीक, वैंमाणीय, वैंमानिक–वि० [सं. वैंमानिक] १ विमान सम्बन्धी, विमान का ।

२ आकाश में विचरण करने वाला ।

स पु —१ हवाईजहाज पर सवार होने वाला ।

२ हवाईजहाज चलाने वाला ।

३ एक प्राचीन तीर्थ जहां स्नान करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है तथा वह विमानों में चाहे वहीं घूम सकता है ।

४ देखो वैंमानिकदेव' (रू भे)

उ०—पचेंद्रि तिरजच नैं मानव, एह थया इकवीस जी । विंतर जोतिसी नै वैंमानिक इम दडक चोवीस जी । —ध व ग्र.

रू भे.—विमाणिक, विमाणी, विमाणीक, विमाणीय, विमानिक, वेमाणिक, वेमाणिय, वेमाणी, वेमाणीक, वेमाणीय, वेमानिक, वैंमाणिक ।

वैंमानिकदेव–स पु [स वैमानिकदेव] स्वच्छ, निर्मल एव रत्नजडित विमानो मे विचरण करने वाले देव । (जैन)

उ०—ति चउरिंद्री गरभज वली, नर तिरयच कह्या केवली । भवण जोतिख वैंमानिकदेव, चउवीस दडक ए नित मेव । —सं. कु

वि० वि०—ये देव दो प्रकार के होते हैं—(१) कल्पोपपन्न देव —

वे देव जिनमे छोटे-बडे आदि का व्यवहार होता है। ये बारह प्रकार के होते हैं।

(२) कल्पातीत देव —वे देव जो अहमिंद्र होते हैं अर्थात जिनमें छोटे-बडे आदि का भाव या व्यवहार नही होता है। इनके दो भेद हैं।

१ ग्रैवेयक एव २ अनुत्तरोपपातिक।

लोक पुरुषाकार है जो चौदह राजू परिमाण है। नीचे तेहरवें राजू का काफी हिस्सा छोड कर ऊपर के हिस्से मे ग्रीवा के स्थान मे रहने वाले देव ग्रैवेयक देव कहलाते हैं। जो नौ प्रकार के होते हैं। जिन देवो की स्थिति, प्रभाव, सुख,द्युति (कांति), लेश्या आदि अनुत्तर प्रधान है या स्थिति, प्रभाव आदि मे जिन सें बढकर कोई दूसरे देव नही है वे अनुत्तरोपपातिक देव कहलाते हैं। ये देव पाच प्रकार के होते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर छब्बीस प्रकार के वैमानिक देव होते हैं।

रू. भे.—विमाणिकदेव, विमानिकदेव, वंमाणिकदेव।

वै'माता, वैमाता—देखो 'वेमाता' (रू. भे)

वैमार—देखो वीमार' (रू भे)

उ०—सु जैत प्रभात री सिकार चढियो हुतो। वैसाख जैठ रैं लूवा रा दिन हुंता। सु जैत ताहरा ही ज सिकार रम नैं लू री झकोळियो थको घणौ तावडै सो वैमार थको आय नै खसखानै माहै आय पोढियो। सु खसखानै बाहरा घणीरी छडकाव कीयो।

—जैतमाल पुमार री वात

वेमितरा, वैमित्रा—स. पु [स वैमित्रा] १ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम। २ सात शिशु माताओ मे से एक।

वै'मी, वैमी—देखो 'वहमी' (रू भे)

वैमुख—देखो 'विमुख' (रू भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचित्तं ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरी रिपु प्राणी, ताह न कदे सतावै। —र. रू

वैम्रग, वैम्रिग—स पु [स वैमृग] कश्यप एव दनु का एक पुत्र दानव।

वैयकी—देखो 'वंयकी' (रू भे)

वैयमक—स. पु [स] एक प्राचीन जाति।

वैयर—१ देखो 'वैर' (रू भे)

२ देखो 'वैर' (रू भे)

वैयस्व—स. पु. [स वैयश्व] व्यश्व का वंशज विश्वमनस् नामक एक आचार्य।

वैयाध्रपद्य—स पु. [स.] युधिष्ठिर द्वारा अज्ञातवास काल में धारित नाम।

वैयायिक—स पु. [स.] १ दर्शन सिद्धान्त। (बौद्ध)

२ सर्वश्रेष्ठ एव धार्मिक कर्मो मे विघ्नकर्ता एक क्रूर देव।

वैयार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—लियो जनम नर ससार, लागो जगत वैयार। जै नर बिसा हरि सू कोल, भूलो ग्रभ का सव बोल। —ऊदोजी नैण

वैयालिस, वैयालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे)

वैयावच, वैयावच्च, वैयायत, वैयावृत्य—स. पु. [स. वैयावृत्य] एक प्रकार का व्रत या तप विशेष जिसमे आचार्य आदि बडे एव आदरणीय पुरुषों की दस प्रकार से सेवा की जाती है। (जैन)

वि० वि०—उक्त व्रत या तप मे आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, गलानी (रोगी), तपस्वी, स्थविर, स्वधर्मी, कुल (गुरु भ्राता), गण (सम्प्रदाय के साधू) और सघ (तीर्थ) को आहार, वस्त्र, पात्र, औषधोपचार आदि दिये जाते है तथा पाद, पीठादि की चम्पी की जाती है।

रू. भे.—वेयावच, वेयावच्च।

वै'योडो, वैयोडो—१ देखो 'वहियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'व्होयोडो (रू भे.)

(स्त्री वै'योडी, वैयोडी)

वैयो—देखो 'वइयो' (रू भे.)

वैरग, वैरगी—१ देखो 'विरग' (रू भे)

उ०—भग्ग मुहगी करतै भु अतर, वनचर ऊसर थया वैरग। निस दिन अरज करै निसासै, सस आगळ ऊभो सारंग। —रूघो मुहतो

२ देखो 'वैरग' (रू भे.)

वैरडेय—स पु- [स] एक गोत्रकार प्राचीन ऋषि।

वैर—स पु [स वैर] १ प्रतिकार, बदला।

उ०—१ तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति इणि भांत सूं राजान री वात सुणनै अजमेर रैं थाणां री हकीकत सांमळनैं आदि वैर उगराह नूं असुराण तुरकाण रा दळ राजान ऊपरै विदा हुआ सो किण भात रा कहीजै छै। —रा. सा. स

उ०—२ तरैं रैवारिया कही, 'साहिबो कुंवरसी साखले री छै। तिण कही, म्हारो रजपूत था पल्हू मे मारियो। तैरै वैरमे लै जावा छा, अर थानु मारा छा।' तद अे मेटियार था, सतावी खड कोसा पाचा-साता आय पोहता। —कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ एक वार घणा सूरा रा चाचरां री खाज मेटा। कण कण करा। घकचाळा करि कामणी भेटा। कीति उवारां। आगला जाळ घर महाजोधार सारिखा रा वैर कळिया काढा। भसमासुर रा विरोध माहै इद्रादिक देवता वाढा। —मा वचनिका

उ०—४ केसरीसिंघ अचळदासोत। समत १६९० डाभडी ओईसा री पटे। सु दरदास रै वैर सोढा मारियो। सु दरदास सुरताणोत।

जोधपुर मेवरो पटै। पछै लवेरा री साडा सोढै ली, नठै वाहर आपड सोढा सूं वेढ हुई, काम आयौ। —नैणसी

२ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध।

उ०—१ गाम मे उणा री औ ढग ही कै नी किणी सू दोस्ती अर नीं किणी सूं वैर। मारग आवणौ अर मारग जावणौ। खडी खाणी न कोई पडी उठावणी। पोता री मौज मे मस्त रैवणौ। —अमरचूनडी

उ०—२ हूठियो सिर हिंदुवा, भाड मेलै खूमाणा, आदि वैर समरै, सरस दिल्ली सुरताणा, राजा सूरजसिंघ, जोध गजसिंह जमज्जड, किसनसिंघ करमेत, 'करन' सपेख महाभड। —गु. रू व

उ०—३ सौ जोडी तीन सोनै ग, चोकडो एक मोतिया रो, सोनै रा हथियार आदमिया कुवरसी कनै राखिया। तद कुवर कह्यो, केई तौ सिरदार था, वैर तौ वडो पडियो। इव जाणा हा, तठौ पूठो कर वाकी रा काहि नु जावण देवा हा वात पण नीवडी। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ ताहरा नरसध सीघळा रै पण नाळेर पकडियौ अर कहियौ, 'दिन ५ तथा ६ माहे साहौ मेलजो तो आसा, नही तो म्हाहरै काम छै। म्हारै माथै वैर छै।' ताहरा सीघळा पण तुरत साहौ दीनौ। —राजा नरसिंघ री वात

क्रि प्र.—उगराणौ, उगराहणौ, करणौ, घातणौ, पडणौ, वाधणौ, भागणौ, लैणौ, वाळणौ, होणौ।

३ फसल। (डूंगरपुर-भील)

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'वेर' (रू भे)

उ०—१ जनावरा ने कैरै नाव घातो छो सु कहो। ताहरा कुवर कही वरा ना साच कहीजै नही। ताहरा राणी कही तो हू थाहरी अरध सरीरी किसी विध छु अर मैं थारै पगा राखस नैं मरायो अरथे मना साच कह्यो नही तो थाहरै प्यार किसो। —चोबोली

उ०—२ रह्यौ तै माहे माळियै वाळो घर अठाणी मारियो। मार अर मरव चुकाय दीया। पण देवाळो काढियो नही। वैरां रै कपडो गहणां सुधो सरव चुकाय दीयो। आप पुराणै घरै जाय रह्यो। हमैं परची जेही वाणीत पासा मागैं, सु दस रुपिया रै काम आवै। —ठकुरै माह री वात

रू भे—वइअर, वइयर, वइर, वईअर, वईयर, वईर, वयर, वेर, वैयर, वइअर, वइयर, वइर, वइरि, वइरी, वईअर, वईयर, वईर, वयर, वेर, वेरता।

अल्पा,—वैरडो।

मह,—वेरौ।

वैरक, वैरक्क, वैरख—स पु [स वेर, वेरम्] १ शरीर, वदन।

२ हाथी, हस्ती। (अ मा)

३ वैरी, शत्रु, दुश्मन।

४ देखो 'वैरक' (रू भे)

उ०—पाना मुख वाजित्र हिलै वाना वैरक्कां मेघ रग मातग वीढ ऊढग कटक्का। पली जेभ सादळां हिली फौजा धमसाणा, व्योम रजी वितथरी धमस वदजी केकांणा। —रा. रू

रू भे—वेरक, वेरक।

वैरडो—देखो 'वैर' (अल्पा., रू भे.)

वैरडो—१ दोगला, वर्णसकर।

२ वैर का बदला लेने वाला।

उ०—रायसिंघ तिण पाट रहै सेवै तुरकाणी, लाखणसी घर छाड हुवो नाडूली राणी। सेवा कीध सकत्त, वधै वरदांन बडाई। व्याती गढ वधनोर, हुओ सवाइ चहुँ भाई। चहुवाण वस रूपक वडो, रावा गजनैं वैरडो। वरदान आस लीधो वडै, खुरासाण ऊपर खडो। —मालौ आसियौ

३ देखो 'वैर' (अल्पा, रू भे)

४ देखो 'वैरडो' (रू. भे)

वैरण, वैरणि, वैरणी—शत्रु दुश्मन, वैरी। (स्त्री)

उ०—१ पवन तू वैरण, धीमी धीमी चाल, उडती दीमै भवरजी री पामडी। कोयन वैरण, मधरी मधरी बोल, ज्यू चित आवै भवरजी नै गोरडी। —लो गी

उ०—२ कोयल अे कोयल वैरण, पिहु-पिहु बोल, हा अे वैरण, पिहु-पिहु बोल, चढती बाई नै यै सबद सुणाइयो। —लो. गी

उ०—३ लाभ लेइजै लोयणा, मजन राखै सवरी। उलसै देखण न होयो, वैरण लाज बुरी। —पना

उ०—४ ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रही रस लाइ। चिहू पहूरै चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ। —ढो मा

उ०—५ नारी वैरणि पुरुख की, पुरुखा वेरी नारि। अतकाळ दोनौं मुयै दादू देखि बिचारि। —दादूवांणी

उ०—६ जिहि अह्यारी वैरणी, पेला भवनी होय। सज्जल-सिउ सुख माणीइ, निलवटि निलख्या जोय। —मा का प्र.

रू भे.—वैरिण, वैरिणि, वैरिणी।

वैरणौ, वैरवौ—देखो 'वेरणौ, वेरवौ' (रू भे)

उ०—आपरो पौरस सीह वाजण रो नही—हाथळ (भुजा रा) जोर सू हाथीया नैं भाजै अरथात जिका री तरवार सू हाथिया रा असुड (सोस) वैरीजै वे भड सिंघ वाजै। —वी स टी

वैरणहार, हारो (हारी), वैरणियौ—वि० ।
वैरिप्रोडो, वैरियोडो, वैरयोडो—भू० का० कृ० ।
वैरीजणो, वैरीजबौ—कर्म वा० ।

वैरत-स पु [स] एक प्राचीन जाति । (पुराण)

वैरता—देखो 'वैर' (रू भे.)

उ०—१ नही हिंदू सू वैरता, नही मुसलमान सू प्रीति । सब कुछ करि सब तै अगम, या साहिब की रीति । —ह पु वा.

उ०—२ ना काहू सू वैरता, मोहन बावै साध । जन हरिदास आठौं पहर, भजिए राम अगाध । —ह. पु. वा

उ०—३ तामस गुण रस वैरता, राजस रस अभिमान । स्वातिग रस गुण लुडखडी, तहा जीव तोडै तान । —ह पु वा.

वैरदेय-स पु. [स] वैदिक काल का एक असुर ।

वैरभाव-स. पु —मनमुटाव, विरोधाभाव, शत्रुता, वैमनस्यता ।
रू भे —वैरभाव ।

वैरभावना-स स्त्री —मनमुटाव, विरोधभाव, वैमनस्यता, शत्रुता ।
रू भे —वैरभावना ।

वैरवाढ—स पु —विरोध, शत्रुता ।

उ०—ताहरा कह्यौ—माहरै घोडो सखरो कोई हुतो नही, तिकण पगा माँग लियो छै । तै आगे ऊमरकोट सोढां रै वडा-वडा घोडा छै । तै भाभैजी कना मांग लियो छै । ताहरा कह्यो—इसरै ऊटै सिलह क्यु छै ? ताहरां कहियो—म्हारै वैरवाढ छै । राजा छा, साथै सिलह चाहीजै हीज ; —नैणसी

वैर वैत्रासुर-स पु. [स. वृत्रासुर वैरी] वृत्रासुर राक्षस का दुश्मन, देवराज इन्द्र । (ना डिं को)

वैरस-वि०—विना रस का, नीरस, सारहीन ।

वैरसुध-स स्त्री —वदला, प्रतिकार ।
रू भे.—वैरसुध ।

वैरहर, वैरहरण, वैरहरि-स पु —शत्रु का वशज, शत्रु ।
(अ मा , ह ना , मा)

उ०—१ सरणाई चरण वखाणाँ, सरणै, मन जोगी जेहा अमर । 'रांमा' वदन वखाणै रामा, हात वखाणै वैरहर । —पदमा सादू

उ०—२ दोढ वरस लग रहिया दोळा, रोळा कर कर थाका रहे । चकर अदीठ 'विजै' चक्रवत रा, वैरहरां ऊपरा वहे । —ऊमेदसिंह सादू

उ०—३ सिर सपत सग्रहे निहसै नित प्रत, करिमर नीप सहीयै करि । रेवत पूठि वसै जइ रणमल, वास म भिण तई वैरहरि ।
—राव रिडमल रो गीत

वि०—शत्रुता मिटाने वाला, दुश्मनी खत्म करने वाला ।

रू भे—वेरहर, वैरहर, वैरहरण, वैरीहर, वेरहर, वेरहरि, वैरीहर ।

वैरागर—देखो 'वैरागर' (रू भे)

वैरांण, वैरान—१ देखो 'वीराण' (रू. भे)
२ देखो 'वीरान' (रू भे.)

उ०—१ अरु जिण दिना मैं साखलो नापो चीतोड सू जागळ आयो, सूं ओ पण जोधपुर हाजर है । पीछै इण वीकैजी नू कयो कै जगाळू रो पडगनो वैरान हुय रयो है , सू थै हालो तो ठिकाणो वाधा । —द. दा.

उ०—२ ओ भरथनेर भरथजी दसरथजी रै वेटा वसायो कदीम छै । नै कई वार वैरान हुवो अरु कई वार आवाद हुवो । पण हजार वरस री वात है । जोइयाँ इणनू आवाद कियो । पण आपस रै असरचै मैं वळै वैरान कियो । —द दा

वैरांम-स स्त्री. [स वैराम] एक प्राचीन जाति ।

वैराई—देखो 'वैराई' (रू. भे)

उ०—१ कसि वांक वाळा काढि, वैराईया सिर वाढि । हैकप भो महलार, त्या दीध द्रव्य तोखार । —रा रू

उ०—२ वाहरुवा हुए न को वैराई, घण वहस केकाण घुप्रा । पोह फुटन सभी दे परभूय, 'सलख' लिया ताय सलख हुआ ।
—राव सलखा रो गीत

वैराक-स पु —एक प्रकार का वढिया शराव जो चौथी बार निकाला हुआ तथा तेज होता है ।

उ०—१ तठा उपराति करिन राजान सिलामति दारू री पाणीगी मडिग्रो छै । सो किण भांति री दारू । उलटै रो पलटै, पलटै री अैराक, अैराक रो वैराक, वैराक रो सदली, सदली रो कदली, कदली रो कहर, कहर रो जहर, जहर रो कटाव, कटाव रो नेस, नेस रो जेस, जेस रो मोद मोद रो कमोद कमोद, रो हूल ।
—रा. सा स.

उ०—२ तठा उपरायत दारू रा घडा मगायजै छै । सू दारू किण भात री छै ? अैराक री वैराक सदली री कदली फूल री अतर वाती वर्के घुवाघोर तिवारा री काढियो, वोदी वाड मैं नाखिया जग उठै । वाप री पियो वेटो छिकै, असवार रो पियो प्यादो छिकै । राजा पीवै परजा छिकै । —रा, सा स

वैराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—पछै थोडा दिना पछै नाथजी दुवारै मैं खेतसीजी स्वामी घणा वैराग सू घणा महोच्छव सू रगूजी नै खेतसीजी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी । जिन मारग रो उद्योत घणो थयो । —भि. द्र

उ०—२ ठाकुर जी री ओ परसाद नी देणो सता रै हाथ हो । वो मिंदर रा ठाकुरजी नै छोड सीधो सता रै जाय पगा पडियो ।

कह्यो-बापजी, म्हनैं तौं वैराग सूझियो। म्हारी मुगती अबै आप रै हाथ है। म्हारै हीयै अणचीत्यो वैराग रो गोटो ऊठियो-अबै आपरै सरणो हू। —फुलवाड़ी

उ०—३ विरह न को वैराग सा, रव सा ना कोई रग। हरख न सा हासा नही, सत सा ना कोई सग। —अनुभववांणी

वैरागढ—देखो 'वैरागर'।

उ०—सिरदार वनाजी, हीरा थै लाईज्यो हे वैरागढ देस रा, उमराव वनाजी, मोती थैं लाईज्यो हे समदर पार रा, सिरदार वनाजी, सेवरियै झबूकै ओ आभा वीजळी। —लो. गी

वैरागण-सं. स्त्री.—१ वैरागी स्त्री।

उ०—१ अपणा गिरधर कारणै, मीरा वैरागण हो गई रे। —मीरा

उ०—२ दोउ कुळ छोड भई वैरागण, हरि सौं टेर दई रे। —मीरा

उ०—३ राजा सवाई जैसिंघजी वैरागणिया नु परणाय मथुरा मैं, व्रंदावन मैं वैरागपुरो वसायो। —वा दा ख्यात

२ वैरागी की स्त्री या कन्या।

३ सन्यासियों का एक प्रकार का छोटा काष्ट का उपकरण विशेष, जो तपस्या या भजन करते समय रात्रि में वक्षस्थल के अग्र भाग तथा बाहुमूल मे सहारे के रूप मे लगाया जाता है।

रू. भे —वैरागण, वेरागण।

वैरागणौ, वैरागवौ-क्रि० अ० १ सासारिक क्रियाओ व वस्तुओ से विरक्त होना।

२ सन्यास लेना।

३ ईश्वर भजन मे लीन होना, ईश्वर के प्रति आसक्त होना।

४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटना।

क्रि. स —५ सासारिक क्रियाओ व वस्तुओ से मन हटाना।

६ त्यागना। ७ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटाना।

वैरागणहार, हारौ (हारी), वैरागणियौ—वि०।

वैरागिओडौ, वैरागियोडौ, वैरांग्योडौ—भू० का० कृ०।

वैरागीजणौ, वैरागीजवौ—भाव वा० कर्म वा०।

वैरागर-वि०—१ बहुत गहरा।

२ खाली रिक्त।

स पु—१ खाली भूमि।

२ गहरा कूआ।

३ हीरो की खान।

उ०—हीरा वैरागर हुवै, सीप समदरां थाय। नग लाखीणा नीपजै, 'माल' तणी घर माय। —बी. मा.

४ एक पर्वत का नाम जहा हीरो की खान है।

५ एक देश का नाम

उ०—ककरा दामरा सघण काछ पचाळ निरतर, सेतबध रामेस लागी नव दीपां सायर झाडखड मेवाड खड गुज्जर वैरागर, वागड महियड सहित खेड पावट पारक्कर। —नैणसी

६ एक प्रकार का कपडा विशेष।

७ एक प्रकार का रत्न विशेष।

उ०—१ बाघ घरे ओपत वेरागर, ताम्र गळियौ न घाय तन। दूजै 'रतन' आज घड दीठो, रण अहरण भूरो रतन।

—राव सत्रुसाल हाडा रो गीत

उ०—२ वर सफर वागली, सार चक्र समसेरा। बाधी गाठ बदूक, डक बक हक डेरा। खेह धूणी खेरवै, वक तू ज वैरागर। अग वभूत भूरी जटा, जरद कथा जोगेसर। सुरजनदास पूनियो

८ हीरा नामक रत्न विशेष।

उ०—रथ मातग तुरग अग प्रति अग सिगारै, जगमगाति नव जोति साजि माणक सुधारै। सोभि जान सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर भोमि वैरागर भ्राजै।

—रा. रू

रू. भे —वइरागर, वयरागर, वेरागर, वेरागर, वइरागर, वइरागरि, वयरागर, वयरागरि, वेरागर, बैरागर, वैरागिर, वैरागिरि।

वैरागि—देखो वैरागी' (रू भे.)

वैरागियोडौ-भू० का० कृ०—१ सासारिक क्रियाओ व वस्तुओ से विरक्त हुवा हुआ। २ सन्यास लिया हुआ। ३ ईश्वर भजन में लीन हुवा हुआ, ईश्वर के प्रति आसक्त हुवा हुआ। ४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटा हुआ। ५ सासारिक क्रियाओ व वस्तुओ पर से मन हटाया हुआ। ६ त्यागा हुआ। ७ किसी कार्य या वस्तु का त्यागा हुआ। (स्त्री वैरागियोडी)

वैरागियौ—१ देखो 'वैरागी' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ एक सगपण प्रीतम तणो, बेलैं बीजो व्रत धार रे। तीजो तपसी वैरागियो, राणी करुणा न करि लिगार रे। —जयवाणी

उ०—२ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया क्रस्ण नरेस। गज सुकुमार वैरागियो, लागी धरम नी रेस। —जयववाणी

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा, रू भे.)

वैरागिर, वैरागिरि—१ देखो 'वैरागर' (रू भे)

वैरागी-स पु [सं] (स्त्री वैरागण) १ व्यक्ति, जिसके मन मे विराग उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, वैराग्यवान्।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता, सो जन है वैरागी। कहै सुखराम सुणो भाई साधो, और सबी है रागी।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ बालपणे भारमलजी स्वामी नें आखी उत्तराध्ययन ऊभा-ऊभा चितारणी इसी आग्या स्वामीजी दीधी। जद भारमलजी स्वामी बोल्या—स्वामीनाथ कदाचित नींद मैं हेंठो पड जाउ तो। जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूजनें खूणें ऊभा रहो। इण रीतें आखो उत्तराध्ययन री सझाय अनेक वार कीधी। इसा बैरागी पुरुख। —भि. द्र

२ सन्यासी, साधु।

उ०—१ सतगुरु सब्द हिरदै धर लीया, अखड प्रेम रस पीया। हरिराम बैरागी बोलें, सदा अमर जुग जीया।

—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ अपनी मोज चलें अरु बैठें आसम वरण उलागी। एका एकी विचरें ऐसें, जग वन सिंघ बैरागी।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ बैरागी वन मैं वसं, घरबारी घर माहि। राम निराळा रह गया, दादू इनमे नाँहि। —दादूबाणी

उ०—४ रसी उसीर पक्ष ठहराणें उठै प्रणाम करै रिख आणे। आतम ग्यान समुद्र अथागी, रमता परमहस बैरागी।

—सू. प्र.

३ त्यागी पुरुष।

उ०—१ बैरागी विरकत भलो, जुग सु न्यारा मन। हरिया बिरही सो भलो, सब सु दासा तन। —अनुभववाणी

उ०—२ इतलें स्वामीजी गोचरी करनें पाछा पधारया। जद···
······ए कह्या—भीखणजी! थें बैरागी वाजो नें इण मोहला मैं मुखतो थयो तिण रा घर सू पकवान लाया! ति वारें भीखणजी स्वामी बोल्या—इण रो दोख काइ? जद ···· ··ए कह्यो थें बैरागी वाजो नें इसा काम करो। —भि द्र

उ०—३ अब (तो) हरि नाम लो लागी। सब जग कौ यह माखन चोरयौ, नाम धरयौ बैरागी। कित छोडी वह मोहन मुरळी, कित छोडी सब टोपी। मुड मुडाइ डोरी कटि बाधी, माथै मोहन टोपी।

—मीरां

४ उदासीन वैष्णव सम्प्रदाय।

वि० वि०—यह विरक्त साधुओ की तरह का एक सम्प्रदाय है। इनके व सन्यासियों के मत मे अन्तर है। विष्णु को अपना इष्ट मानते हैं तथा विष्णुअवतार राम, कृष्णादि को पूजते हैं अतः वैष्णव कहलाये। ये लहसन, प्याज, सलगम, गाजरादि नहीं खाते तथा गाजा, चरस, शराब आदि नहीं पीते। ग्यारस, जन्माष्टमी, नृसिंहअवतार आदि के दिन व्रत रखते हैं व उत्सव मनाते हैं। गीता, रामायण, महाभारत आदि इनकी धर्मपुस्तकें हैं। इनमें चार सम्प्रदाय हैं जिनमे भाव भक्ति के नियम अलग अलग हैं।

१ रामानुज सम्प्रदाय—जिसे श्री सम्प्रदाय भी कहते हैं तथा रामानुजाचार्य ने चलाया था। इस सम्प्रदाय का उन्होंने सेवडो को शास्त्रार्थ मे जीत कर चलाया था। इनकी पाटगादी मद्रास में गादीधर, आचार्य कहलाते हैं। ये शादी नही करते। गादी पर विद्वान ब्राह्मण ही बैठता है जो इनका पाटवी चेला होता है। इन के चेलो के दोनो भुजाओ पर यज्ञ, पूजादि के बाद चादी की तप्त-मुद्रा से शख, चक्र, गदा पद्म आदि के चिन्ह लगाये जाते हैं। बालको के केसर की छाप लगाते हैं जिसे शीतलमुद्रा कहते हैं। ये तुलसी की माला पहनते हैं व शिर पर सफेद मिट्टी का अर्द्धपुड (तिलक) लगाते हैं। इनके मन्दिरो मे शेषशाई, वेनीगोपाल व जुगल मूर्ति राधाकृष्ण व सीताराम आदि की रहती है। ये आरती के वक्त तांबे का शख बजाते हैं एव असली शख को हाड का मानते हैं।

२ विष्णुस्वमी द्वारा चलाया हुआ शिव सम्प्रदाय जिसे रौद्र सम्प्रदाय वा विष्णु स्वामी सम्प्रदाय भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय का सिद्धात है कि शुद्धाद्वैत ईश्वर कृष्ण रूप ऐक ही है। ये भी तुलसी की माला पहनते हैं तथा अर्द्धपुड तिलक लगाते हैं।

३ ब्रह्म सम्प्रदाय, जिसे माध्व, गौड व महाप्रभु सम्प्रदाय भी कहते हैं। इसे ब्रह्माजी ने चलाया था व माध्वाचार्य ने प्रसिद्ध किया था। ये कृष्ण को इष्टरूप में मानते हैं। मन्दिरो मे जुगल मूर्ति राधाकृष्ण की होती हैं। ये विष्णु कहलाते हैं तथा हथियार भी बाधते हैं।

४ सनकादिक सम्प्रदाय या निम्मार्क सम्प्रदाय जिसे सनकादिक ने चलाया था तथा अरुणऋषि के पुत्र निम्मार्क स्वामी ने फैलाया था। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त द्वैताद्वैत है अर्थात ईश्वर माया से अलग नहीं है। कृष्ण ही इनका इष्ट है। राधाकृष्ण की जुगल मूर्ति की पूजा व उपासना करते हैं। ये निहग व गृहस्थी भी हो सकते हैं।

रू भे—बइरागी, बयरागी, बिरागी, बेरागी, बैरागी, वइरागी, वयरागी, विरागी, वेरागी, वैरागी।

अल्पा,—वयरागियौ, वेरागियौ, बैरागियौ, बैरागीयो।

बैरागीयो—१ देखो 'बैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—अप हुवौ बैरागीयो रे, जीता विसय कखाय, खटको जेहना रे मन थी टल्यौ रे। सेठ सहित सयम लीयौ रे, सद्गुरु पासे जाय। —वि कु.

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा., रू भे)

बैराग्य-सं पु [स] १ ससार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होने की मन की एक प्रवृति विशेष, जिससे लोग सासारिक झझट छोड कर एकात मे रहते हुए ईश्वर-भजन करते हैं।

२ असन्तोष, अप्रसन्नता।

३ घृणा, ग्लानि, अरुचि।

५ किसी के प्रति राग-भाव न होने की अवस्था या भाव।

उ०—ससार असार, दुखनु भडार, जिसिउ पीपल नूं पान, जिस्यु गजेंद्र नु कान, जिस्यु वीज नु झबुकु, पोइणिनिइ पाणी तणउ टवकु, जिस्यु वहुवोलनी जीभ नु लोलु, जिस्यु काग नु डोलो, जिस्यु धज नु अचल, तिसिव संसार चचल, वैराग्य। —व. स

रू भे —वइराग, वयराग, विराग वेराग, वैराग, वैराग्य, वइराग, वयराग, विराग विरागीय, विरागी, वेराग, वेराग्य, वैराग।

अल्पा, —वयरागियो, वेरागियो, वैरागियो, वैरागीयो।

वैराडी-स स्त्री —एक प्रकार की रागिनी विशेष।

रू भे —वइराडी, वयराडी।

वैराज-स. पु [स] १ विरजस् नामक प्रजापति के सात पुत्रों में से एक जो पितर कहे जाते हैं।

२ देखो 'वेराज' (रू भे)

वैराजी—देखो वेराजी' (रू भे.)

उ०—१ बूदी में सवाईराम ओसवाल चरचा करतां भिक्खु कह्यो—गाय भैंस रा मुहडा आगे घणो चारो नाख्या ओगालो करै। जब तेह कहै—मोनें ढाढो कह्यो—वैराजी थयो तब स्वामीजी कह्यो—थें ढाढा थया म्हारो म्यान चारो थाय। इम कह्यां राजी थयो। —भि. द्र.

उ०—२ देसूरी नों नाथ साधु स्त्री वेटी मा छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकृति करडी, आछी तरह आगया में चालै नही। तीन वरस आसरै टोला में रह्यो। पछै टोला बारै निकल गयो। कनै हुंता त्या साधा स्वामीजो नैं आय कह्यो—नाथो छूट गयो। जद स्वामी जी कह्यो—किणहिरै गूवडो दुखतो घणो ने पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै के वैराजी ? —भि. द्र.

उ०—३ जद तै राजी होय बोल्या—म्हारै काल की गराक आयो। रुपियो हाथ में लेई देखं तो खोटो। माहै तावो नें ऊपर रूपो। अलगो न्हाखनै बोल्यो—प्रभातै खोटा नाणा रो दरसन हुओ। जद ऊ वोल्यो—साहजी वैराजी क्यूं हुआ। परसूं तो म्हैं पइसो आण्यो सो तावो नाणो बाधो। —भि. द्र.

वैराजीपण, वैराजीपणो, वैराजीपो—देखो 'वेराजीपो'।

वैराट—स पु. [स वैराटः] १ इन्द्रगोपक कीट, वीर-वहूटी।

२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों मे से एक जो भीम द्वारा मारा गया था।

३ राजा विराट का उत्तर नामक पुत्र।

वि० १ विराट का, विराट सम्बन्धी।

२ लम्बा-चौडा, विस्तृत, फैला हुआ, वडा।

उ०—घटयदा वैराट घाट, केता निरवहा। —केसोदास गाडण

३ आकार की दृष्टि से महान्, बडा, विशाल।

उ०—१ ब्रह्म नमो छब ब्रह्म, ब्रह्म कहिजै ब्रह्मचारी। ब्रह्म नान्हो वैराट, क्रम अक्रम कूडा रो। —पी. ग्र

उ०—२ करतार मेह करति, ब्रम चिहुं रसा वरसति। परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार। —पी. ग्र.

उ०—३ दास तन भजन विन सो सबी दासरथ, थिरू वस कोड वातै न थावै। देवपत रूप वैराट थारो दुगम, अणु मन सेवगा सुगम आवै। —र ज प्र

उ०—४ पयपै पुराण आदि पुरुख, उपजै ब्रह्मा ईस अलख। थया तिण रूप सरूप सुघट्ट घटै घठघाट वैराट सुघट्ट। —रा. वसावली

४ भयकर, भयावह।

उ०—१ अडडाट नाद वैराट अज, घट्ट जाणि दूजो घडै। वरमाळ झाळ गोळा वहनि, प्रळैकाळ छोळा पडै। —सू प्र

उ०—२ इतरै मलग गैवी मरद उठीयो, उठि नै हाक मारै छै। तिकै रै पगी वारह मण लोह री साकळ पग माहे नवगजो जोधो, वडो माथो। सिर ऊपर घणी वावरी छै, ऊपर उधो तवलो। सवा मण री कुतको हाथ माहै छै। वडो भुजाडड। वैराट रूप धारिया थका निरवाणी योगिंद्र हुवो तिसडो। कनै कपडो नही, दिगबर आडवर धारिया थका। —तिमरलिंग पातसाह री वात

६ देखो 'विराट' (रू भे) (सभा)

उ०—१ घणी ग्राह ना मारिवा भलो धायो, हरि तूझ अवतार वेदै हुलायो। निमो वामणा राम वैराट ब्रह्म, अधिक रीजियो इदि ऊपरि अग्रमु। —पी ग्र.

उ०—२ देस सहू मैं दीपतो रे, वारू देस वैराट। सहू को लोक सुखी सदा रे, वरतै निज कुल वाट। —ध. व. ग्र

उ०—३ मगध कोसल अग वग कलिंग कासी कुरु देस, सोरठ कछ विदेह जागल कुसावरत कहेस। भग ल्गोवीर वैराट मलय साडिल सूरसेन, वरण पचाल दसारण कुंणाल देस में चैन। —वृस्त

७ देखो 'ब्रह्मरध्र'।

उ०—१ चख सूरिज नै चद्रमा, घणनामी घट घाट। पिंडी मोटी मोटो प्रभु, वप छोटी वैराट। —पी ग्र

उ०—२ लगी चोट सत सवद की, खुल्हा ब्रह्म कपाट। मेवासा सव जीत्त कै, वस्या नगर वैराट। —अनुभववाणी

उ०—३ वाटि विगट वैराट की, पुंहचैगा कोई सूर। हरीया कायर थकि रह्या, दरगाह रहीया दूर। —अनुभववाणी

रू भे—वराट, विराट, वेराट, वैराट, वइराट, वयराट, विराड, वेराट।

वैराटरूप-स पु [स] परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप।

वैराणी, वैरावो—देखो वैराणी, वैरावो' (रू भे.)

वैराणहार, हारो (हारी) वैराणियौ—वि० ।
वैरायोडौ—भू० का० कृ० ।
वैराईजणौ, वैराईजबौ—कर्म वा० ।

वैरात—देखो 'वरात' (रू, भे)
उ०—दिली वैरात छातपत दोळा, 'दूदौ' वर राजा दिखण । सयगण हरी वरै साहिजादी, रायजादी पोढियौ रिण ।
—दूदा नगराजोत री गीत

वैराय वैरायत—स. पु. [स वैर+आयत] शत्रु, दुश्मन वैरी ।
उ०—१ वह राणा राव विवाद विवरजित, 'जोध' कळह कथ जिका जुइ । वैरायता तो वाळी भगवद, हव जाणै फ़ळवाट हुइ ।
—महम्मदजी बारहठ

उ०—२ तिण समै लाय जैतसीजी राजा नै वकारियौ । कह्यौ, राजा सूराचद थाह सू सूडा राजा रौ वैर मागू तो मैं रजपूती होय तिका करि । ताण सूरावद रा राजा सू तो काई हुवौ नही । राघोदै आघा वधतो थको सेल री राजा रै घमोडी । तिका पैलै पार नीगळी । तरै मोड दीठी, दोखै तो वैरायत ।
—जैतसी उदावत री वात

रू भे—वैरायत, वैरावत ।

वैरायोडौ—देखो वैरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री वैरायोडी)

वैरावत—स पु—१ राठौडो की एक उपशाखा ।
२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो वैरायत' (रू भे)

वैरि—देखो 'वैरी' (रू भे)

वैरिण, वैरिणि, वैरिणी—देखो 'वैरण' (रू भे)
उ०—दादू माया वैरिणि जीव की, जनि को लावै प्रीति । माया देखै नरक कर यहु सतन की रीति ।
—दादूवाणी

वैरिय—देखो 'वैरी' (अल्पा, रू भे)

वैरियोडौ—देखो 'वैरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. वैरियोडी)

वैरी—स पु [स वैरिन्] (स्त्री वैरण, वैरणि, वैरणी वैरिण वैरिणि वैरिणी) दुश्मन, शत्रु । (ह ना मा)
उ०—१ ससार मैं सगळा दुख चोखा पण पेट री दाझ खोटी । भगवान् सात भव रा वैरी दुस्मण नै ई पेट री दाझ मत दीजै ।
—अमरचूंनडी

उ०—२ गगेव खीची काग मडा किवाड, वैरिया जडा उपाड । जिण की सेल कहू वणाय, सुणिया मन प्रसन थाय वरखा रितु लागी, विरहणी जागी । आभा झरहरै, वीजा आवास करै ।
—रा. सा स.

उ०—३ सीहा रा वैरी सको, सीह न कोय सहाय । जेज करै नह जूझता, जग तै विमुहौ होय ।
—वा दा

रू भे—वइरि, वअरी, वइअरि, वइअरी, वइयरि, वइयरी, वइरि, वइरी, वईअरि, वईअरी, वईयरि, वईयरी, वईरि, वईरी, वयरि, वयरी, वाइरि, वाइरी, वायरि, वायरी, वेरि, वेरी, वैरि, वैरी, वइअरि, वइअरी, वइयरि, वइयरी, वइरि, वइरी वईअरि, वईअरी, वयरि, वयरी, वाइरि, वाइरी, विरी, वेरि, वेरी, वैरि, वैरिय ।

अल्पा,—वैरीडौ, वैरीडो ।

वैरीडौ—देखो 'वैरी' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ कोई परवा नी, लैणौ होसी तो खैलेस्या । पण वैर वेगी घेराला जद मूंडौ ऊचौ कराला । लागै जितौ तरची ल्यौ, चाहीजै जिका आदमी मागौ । कुवाडा-गडासी राखौ अर वैरीडै नै चटकै' र नीचै आडा नाखौ, जद जी मैं जी आवै ।
—दसदोख

उ०—२ विसको पियालो, अे गोरी धण, वैरीडा नै प्याय, वारी धण वारी अे हुजा था नै पियालो अे काचै दूध को, जी राज ।
—लो गी

वैरीवाडौ, वैरीवारौ—स पु [स वैरी+पाटक] शत्रुओ का मोहल्ला, देश या निवास स्थान ।
उ०—१ घर घेडौ पिय अचपळौ, वैरीवाडै वास । नित रा वाजै ढोल्डा, कद चुडलै री आस ।
—अग्यात

उ०—२ वैरीवाडै वासडौ, सदा खणकै खाग । हेली के दिन पाहुणौ, चूडौ भाग सुहाग ।
—वी स

उ०—३ देस मैं वैरीवाडै वास कीयौ तो फळ पायौ । पण भागणी, तै सूरज री सोस खाधौ हुतो तो परमेस्वर पर दाद नही पावै । ताहरा कह्यौ, "मैं थारी अगीली नही खाधी है । जुठौ कलक मनू मता देई ।
—नाहरी हरणी घरमै के वावत सावतसी री वात

उ०—४ आगण वाई घर कळह, वैरीवारै वास । नदी कराडै रूखडौ यद तद हुवै वणास ।
—नाहरी हरणी धरमै के वावत सावतसी री वात

वैरीसाल—वि०—शत्रुओ के दिल मे खटकने वाला ।

वैरीहर—देखो 'वैरहर' (रू भे) (डि को)
उ०—'पाल' री काळ वैरीहरा पाडतौ, विभड ओभाडतौ सेल वेकै । पठाणा होक भोका देयतौ पाघरै, ठोक जाडा गयौ मूळ ठेकै ।
—जोधा सिसोदिया री गीत

वैरोचन—स पु [स] १ विरोचनसुत वलि जो दैत्य था एव प्रह्लाद का पौत्र तथा पाताल का अधिपति था ।

२ सूर्य के एक पुत्र का नाम।
३ अग्नि के एक पुत्र का नाम।
४ देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—१ प्रथम राजा आदि, पुत्र भरत, पुत्र सूरघजिसा, पुत्र ईखवाक। अठै ईखाग वंस थाप्यौ। इखाग पुत्र समुद्र, पुत्र चद्रमा, पुत्र बुध पुत्र पुनर्दैत्य, पुत्र विद्याधर, पुत्र मुचकुंद, पुत्र हिरणाकुस, पुत्र पहिलाद, पुत्र वैरोचन, पुत्र बळिराजा, तिको चकवै हुवौ। —रा वंसावळी

उ०—२ वैरोचन तन वहरियो, विप्र छुडायै बाळ। तिण पुन्यथी पुत्र पामियो, बलिराजा विरदाळ। —रा वंसावळी

उ०—३ भली हुइ जे नही वळी वैरोचन रै सत्य। मो देखता मडियो, हरि बळि मागळि हत्य। —रा. वंसावळी

रू भे —वैरोचन।

वैरोचनि, वैरोचनी—स. स्त्री [स] विरोचनसुता एव त्वष्टपत्नी यशोधरा का नाम।

वैरोचि, वैरोची—स. पु [स वैरोचि] पातालनरेश बलि का ज्येष्ठ पुत्र बाण नाम असुर जो अनिरुद्ध की पत्नी ऊषा का पिता था तथा शिव के वरदान से देवताओ पर शासन करता था।

वैरोट—देखो 'विराट' (रू. भे)

उ०—मत्स्य सिंगल कोसल नइ अव्य स्त्री परवत द्राविड नइ वच्छ। वैरोट तापी लाजी धार, स्त्रीवदरभ पाटल अति सार। —नळदवदतीरास

वैरो—१ देखो वैरी' (रू भे)
२ देखो वेरी' (रू भे)
उ०—वैरै वैस न भरवियै मन मैं रही सधीर। हरीया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर। —अनुभववाणी
३ देखो वैर' (रू भे)
उ०—व्हाला नइ वहरी विचइ, नवि करवउ वैरो। पद ना अवगुण देखि नइ, नवि करवउ चेरो। —स. कु

वैं'रो—देखो 'वहरो' (रू भे)

वैल—१ देखो वैल' (रू भे.)
२ देखो 'वीहळियौ' (रू भे.)
३ देखो 'वहल' (रू. भे.)
उ०—अरु वैन अेक रिडमल री तिको पाटण तवरा नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इण नूं खडेलै लाया। पीछे रावजी खडेलौ लूटियौ। तद इण प्राणकवर नू पकडी अरु रावजी सीरोकैजी आगरी ठकुराणी करी। नै वैल वैसाणी। —द दा

वैलडली, वैलडी,—१ देखो 'वैल' (अल्पा, रू. भे.)
२ देखो 'वहल' (अल्पा., रू. भे.)

वैलण—१ देखो 'वेलण' (रू भे.)
२ देखो वेलण' (रू भे)

वैळणौ, वैळवौ—१ देखो 'वेलणौ, वेलवौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वैलणौ, वैलवौ' (रू भे.)
उ०—अेक दिन वसी नै बराबर बुखार वणियो रयौ। रात नै बुखार १०४ डिगरी हुयग्यौ, जकै रै जोर सू वैळण लाग्यौ। रै-रै'र कंवतो मा गोमती! तू कठै है? हाय! म्हारै जीता-जी तनै दूसरै रौ द्वारौ देखणौ पडियौ। —वरसगाठ
३ देखो 'वेलणौ, वेलवौ' (रू भे)
वैळणहार, हारौ (हारी), वैळणियौ—वि०।
वैळिओडो, वैळियोडो, वैळयोडो—भू० का० कृ०।
वैळीजणौ, वैळीजवौ—भाव वा०

वैलणौ, वैलवौ—१ देखो वेलणौ, वेलवौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वैलणौ वैलवौ' (रू भे)
३ देखो 'वेलणौ, वेलवौ' (रू. भे)
वैलणहार, हारौ (हारी), वैललणियौ—वि०।
वैलिओडो, वैलियोडो, वैल्योडो—भू० का० कृ०।
वैलीजणौ, वैलीजवौ—कर्म वा०।

वैलवान—स पु —रथ को हाकने वाला व्यक्ति सारथी।
उ०—भोजास गाव अरु जात गोदारी, सेखो नाम जम को प्यारो। रथ को वैलवान वड भारी, थापन कीनेऊ ताहि विचारी। —मेहोजी गोदारी थापन

वैळा, वैला—१ देखो 'वेळा' (रू. भे)
२ देखो 'वेला' (रू. भे)

वैळियोडो, वैलियोडो—१ देखो 'वेलियोडो' (रू. भे.)
२ देखो वैलियोडो (रू भे.)
३ देखो वेलियोडो' (रू भे)
(स्त्री वैळियोडी, वैलियोडी)

वैलो—क्रि वि —१ उस ओर, उस तरफ।
उ०—दादू सेख मुसायख ओलिया, पैगंबर सब पीर। दरसन सौं परसन नही, अजहू वैली तीर। —दादूवाणी
२ देखो 'वहल' (रू. भे)
३ देखो 'वेली' (रू भे)

वैलै—देखो वैलै' (रू भे.)
उ०—सुरह गाय री ग्रीवा इण गाय सू लाबी हुवै। वैलै ही लाबी छै सुरह गाय इण गाय सू। १३ लाख चमर प्रमुख देसा सूं हिंद मैं आवै है। —वा दा ख्यात

वंळी वंलो—देखो वेली' (रू भे)
वंल्यो – देखो 'वंल' (अल्पा., रू भे)
वंल्व–स पु. [स.] विल्व नामक वेल का पत्ता या फल।
वंव—देखो 'वंव' (रू भे)
वंवणी—देखो 'वेवणी' (रू भे)
वंवणो—देखो 'वहणी' (रू भे)
वंवणो, वंववो—१ देखो 'वहणी, वहवो' (रू भे)
  २ देखो 'वेवणो, वेववो' (रू भे)
  वंवणहार, हारो (हारी), वंवणियो—वि०।
  वंविग्रोडो, वंवियोड़ो, वंव्योडो—भू० का० कृ०।
  वंवीजणो, वंवीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।
वंवतन—देखो 'वेवतन' (रू भे)
  उ०—तिको भाई राजा नु इम कहै, "पठाणा दुसमण नेंडा राखजे नहीं।" राजा रे मोहल माहे सुदराणो दहड तिका पदमणो कहै, "राजा, दुसमण नेडा राखीया तिका घको खाघो। फोजा कर साथ भेळो कर पाहड माहा सो ईहा नू खेद काढो, वंवतन करो।
  —राजा नरसिंघ री वात
वंवस—१ देखो 'वंवस्वत' (रू भे.)
  २ देखो 'विवस' (रू भे)
वंवसरणमनु–स पु. [स] ब्रह्मा के चौदह मनुग्रो मे से एक, वंववस्त।
वंवस्त, वंवस्वत–स पु. [स.] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम।
  २ एक रुद्र का नाम।
  ३ शनिचर जी महाराज।
  ४ ब्रह्मा के चौदह पुत्रो (मनु) मे से एक, जो मनुष्यो के मूल पुरुष माने जाते हैं।
  ५ एक प्रकार का तीर्थ विशेष जिसमे स्नान करने वाला स्वय तीर्थरूप हो जाता है।
  ६ वर्तमान मन्वन्तर का नाम। (पुराण)
  ७ यम, धर्मराज।
  रू. भे —वंवस, वइवस्त, वइवस्तु, वंवस।
वेवस्वती–स. स्त्री —यमुना नदी का नाम।
वंवार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
  उ०—रमेश बोलियो—हू ेई चोर हू जको वीजे री जमानत घताऊ? थं आज ई काम पडियो' र आज ई भूलग्या। वाणियां री कांई प्रीत! सेठ कयो इयं में चिणण री तो वात ई कोयनी, आ तो वंवार री वात है। खैर, अवार तो सिधावो, काल सोच' र कंवाय देसू।
  —वरसगाठ
  २ देखो 'व्यापार' (रू भे)
  ३ देखो 'व्यवहारिक' (रू भे)
वंवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू भे)
वंवियोडो—१ देखो 'वहियोडो' (रू भे.)
  २ देखो 'वेवियोडो' (रू भे.)
  (स्त्री वंवियोडी)
वंसदर—देखो 'वंस्वानर' (रू. भे)
  उ०—१ वंसदर लकड पाखाण, जिम लोह लुकाया।
  —केसोदास गाडण
  उ०—२ साखि दियै स्रीराम, कुवर तो अर्जु कवारो। कथ सुणो एक कानि, वीर मनि वात विचारो। विखे रहा वनवासि, जानकी झली भेल्यो। वंसदर रै पासि, थिरत रही किम रेल्यो।
  —सुरजनदास पूनिग्रो
  उ० –३ उवा माहि मिळै जेताह' आय, वंसदर जाणिक झोल वाय।
  —सू प्र
वंसधि, वंसघो—देखो 'वयसधि' (रू भे.)
  उ०—सु इह तो न बाळक अवस्था माहे सूत्रे छै। नें योवण आयें जागें छै। इहि विधि को सधि सु वयसधि कहावे। जैसे सुपिनो। न सोवें न जागे छै। आगे पल पल चढतो होसी। पिणि हिवें वंसंधि को इसो प्रथम स्थान ताको इसी परिछै। —वेलि टी.
वंसनर—देखो 'वंस्वानर' (रू भे) (ह ना मा)
  उ०—जळै सहर पुर जास, निसा ओजास निहारै। साह अळै सपेखि, सोच मद मोच सभारै। खडीवन समरत्थ, पत्थ निज हत्थ जळायो। कना लक विण सक, हणू वंसनर लायो। —रा. रू
वंसपा, वंसपायन–स पु. [स वैशपायन] १ वेदव्यास के एक शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि जो यजुर्वेद के प्रवर्तक थे तथा हरिवश के प्रचारक थे। इन्होने जनमेजय को महाभारत सुनाया था।
  उ०—वंसपा एम ओचरै, जनमेजे स्रवणां धरै। विस्तरै वाणीइ गुण पाडव तणा रै। पाडव ना गुण विस्तारी नै साभल तुं, भूपाल, जेनै पोता ना करी जाणे स्वामी स्रीदीनदयाल।
  —नळाख्यान
  २ एक ऋषि जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे उपस्थित था।
  ३ शौनक ऋषि से तत्वज्ञान पर सवादकर्त्ता एक ऋषि।
  रू भे —वंसमपायन।
वंस—१ देखो वेम' (रू भे.)
  २ देखो 'वेसर' (रू. भे)
  ३ देखो 'वेस्या' (रू भे)
  ४ देखो 'वेस्य' (रू भे)
  उ०—रस सचे माखी जुही, कीडी ज्यू कणरास। धरै भेस जिर्म जीरवं, वंस दुकाना वास। —वा. दा.
  ५ देखो 'वयस' (रू भे)

उ०—१ पढती वेंस नेंण ग्रणियारें, तूं घरि घरि मत डोल। मीरा कै प्रभु हरि ग्रविनासी, चेरि भई बिन मोल। —मीरा

उ०—२ हूह वाद माती कहर साह वें देखवें, मार पडियो कहर गजा भारा। वेंस कह, 'वीठळा', हालि घर दिसि वजा, सरम कह, 'वीठळा', वाजि सारा। —लिखमीदास व्यास

उ०—३ ग्रभग मछरीक इण भांति सू ऊचरें मूदो माहरो खरो काम माथें। वेंस हूता कह्यो, राजि ग्रपछर वरो सरम, थें हुवो इदलोक साथें। —लिखवीदास व्यास

वेंसक—स. स्त्री [स. वेशक] १ वेश्या, रंडी।

उ०—व्रतभगी हूं ग्ररथ खय, नाहा भय रस नास। कुकवी वेंसक तुल्य कर, वरण सुकवि विमास। —वा दा.

२ देखो 'वेसक' (रू. भे.)

३ देखो 'वेंठक' (रू भे)

वेंसण—देखो 'वेसण' (रू. भे)

वेंसणव—देखो 'वेंस्णव' (रू. भे.)

वेंसणी—स स्त्री.—१ चार प्रकार की गाथाम्रो मे से एक प्रकार की गाथा विशेष, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं। (र ज प्र)

उ०—रूपा भरण वेंसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत। ऊजळ तिलक विप्रणी ग्रोपत तिलक सुद्रणी लाल ग्रोपत। —र ज प्र.

२ वेंश्य की स्त्री।

वेंसणु—१ देखो 'वेंस्णव' (रू भे)

उ०—कट्टर गौ-भक्त-गाया कसाई लेवें है, विर्य सू ऊपर कोई वोली को देवें नी, इत्ता डागरां री (१५०) मुकातं वोली दी है, कूंई थेई वधी नी, तिलक काढण नें है, दीखो तो वेंसणू धरम में हो। —वरसगाठ

२ देखो 'विस्णु' (रू भे)

३ देखो 'वेंसणी' (रू भे)

उ०—जीण मेरी वाई यें ऊची सी धालू यें थांनें वेंसणू, वेनड भाई जोमा साथ, जामण की यें जाई, विच विच वदळा यें वाल्हा गासिया। —जीणमाता री गीत

वेंसणो—देखो 'वेंसणो' (रू. भे.)

उ०—१ जीण म्हारी वाई ग्रें ऊची सी धालू तमें वेंसणो। जीणमाता री गीत

उ०—२ छाडें छतर वेंसणो, भूपति छाडें देस। हरिया सेफ सराय में, काळ किया परवेस। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ चनण चोकी कडेरी थारी वेंसणो, तुळछी री माळा थारें हाथ। ग्रायो हलकारो स्रीभगवांन रो।

वेंसणो, वेंसवो—देखो 'वेंठणो, वंठवो' (रू भे)

उ०—१ जूजर वेरें वेंसता, जळ में जोखा होय। हरिया हरि सिवरन विना, पारि न पुहता कोय। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ स्रावक स्राविका फारवा लागा। वेंसतें चौमासें तो ए द्रस्टात दीवो। तिण सू ग्रमरसिहजी वाला तो राजी रह्या। भिखवाला नें समभावा लागा। पछे उतरतें चौमासें फतेचदजी गोटावत वोल्यो—भीखणजी भिखवाला नें इज निखेधो पिण पुन्य वाला नेडा वेटा त्याने क्यूं नही निखेधो। —भि. द्र

उ०—३ ग्रो राती भोजन वहरावें, ग्रा र वेंस छोनें चमकावें। ग्राप ग्रधारें ग्रोरा चदणा, दुनिया धरम लाभ गुरवदणा। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ मन कै मड है तत वाधी तणी, पेम परतीत की लाब पीठी सुधि ग्रर बुधि का वेंस विनायका, रस कै डोरडे गाठि गीठी। —ग्रनुभववाणी

उ०—५ ताहरा ढोलेंजी कह्यो ऊभा रह्या तो सफ़ै कोई नही। थारें काम छे तो ऊट फेफ़ार छु तूं वासें चढि वेंस कागळ लिख मोनें देज्यें तू परो उतरें। ताहरा विवऊरियो ऊट ऊपर वेंसि कागळ लिखण लागो। —ढो. मा

वेंसणहार, हारो (हारी), वेंसणियो—वि०।

वेंसिग्रोडो, वेंसियोडो, वेंस्योडो—भू० का० कृ०।

वेंसीजणो, वेंसोजवो—कर्म वा०, भाव वा०।

वेंसन—देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—भोपना सकति सेव, वेंसना ग्रौतार ध्यावें, वमना कै वेद पाठ, चतुराई चालि में। परवाई पखी में लोक, निरापेखी जन कोई, हरियें के राम एक, नहीं लाल पाल में। —ग्रनुभववाणी

वेंसनर—देखो 'वेंस्वानर' (रू भे)

उ०—खड ई धरा पाणी वेंसनर, सरव थोक सग्रह करें। जाळोर नाम करवा जरू, चढि पठाण नह ऊतरें। —गु रू. ब

वेंसनव, वेंसनो—देखो 'वेंस्णव' (रू भे)

उ०—१ हैदरावाद मे गुजरातिया रो पुगो करवान कहावें। कैई गुजराती वणिक जेंनी, केंई वेंसनव है। केसोमद नूं फ्रोडीमल वगेरें ठावा ग्रादमी हुता। —वा. दा ख्यात

उ०—२ क्या गिरही क्या वेंसनो, राम सिवरि में पारि। जन-हरिगा सिवरन निना, वाकु ग्रार न पार। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ भगति वेंसना नवध्या करिहै, दसधा की कुछि खवरि न परि है। छापा तिलक वनावें वाना, इनतें साहिव रहिया छाना। —ग्रनुभवयाणी

वेंसन्नर—देखो 'वेंस्वानर' (रू भे)

उ०—१ महादुरग अजमेर, 'सूर' जीतो रिण चाचर। जळियो जोगणपुरो, वाइ जाणै वैसन्नर। पाखरिजै गज थट्ट, खान सुरताण मिळै दळ। कटक वध अनिमध्ध, हुऐ फौजा हीलोहळ। —गु. रू. ब.

उ०—१ भोम भारभर हार कपं हर, कोम कोड डर, है-पुरै पत्थर। उट्ठि वैसन्नर, सामठा सध्धरं, सुभटा झूलर, फोज घासाहर। —गु. रू ब

वैसमपायन—देखो 'वंसपायन' (रू भे.) (मा. म.)

वैसायक-वि० [स वैषयिक] १ किसी पदार्थ का या पदार्थ सम्बन्धी। २ विषयी, लपट।

वैसलीण वसलीन-स. पु [अ. वेस्लिन] मरहम की तरह का एक प्रकार का चिकना पदार्थ विशेष, जिसका चमडी पर कोमल एव चिकनी बनाने के लिए लेपन किया जाता है।

उ०—आळा अर आलमारचा मैं ताकत वेगी लायोडी वग-सिला-जीत री सीस्या जचाई पडी है। किरीम-पाउडर खिजाव, वैसलीन रा भरयोडा भाडिया, जैं, मार्थं जेळमाळा वणाया भिलै है। तेल-फुलेल, अतर-सैंट रा फटर अर सावण—सोढं रा गोढं-गोढं सूरा सिद्धूक राजा-मा' राजा रा सा पडधा दीखें। पटवारी है क, तैसील-दार ? किसनजी की कूत नी सक्यो। —दसदोख

वैसवारियोखोच—देखो 'वेसवारियोखीच' (रू भे)

वैसाणणो, वैसाणवो-क्रि स.—१ दफनाना, गाडना।

उ०—मैं तो इण नु मुहडा स बहुत कही जिको कोई म्हारै काम नही। तद राजा भीमसेण ईसो सुण पडिता नु बुलाय बूझियो राजा नळ मोनूं दोस लगायो। ईण री अबै कासु करा, तद पडिता वेद मरजाद कह्यो, राणी दमंतो थारै घर वेटी कर राखो, पछै दमंती नै धरती खोदि माहि वैसांणो ऊपर हळ री चाव कढावो पछै बारै काढो, इतरै नवो जन्म हुवो। —ढो. मा

२ अधिकार मे करवाना, हुकूमत देना।

उ०—गाव मारियो, बाळियो, लूटियो। दिन दो मद्दोर रहा। आसोज सुदि १५ वीसळपुर डेरो कीयो, दिन ७ रहा। पछै राव राम नु सोभत वैसाणनै कटक परा गया। तठा पछै वळै राव रांम जाय फोज लायो। —मारवाड री ख्यात

३ देखो 'वैठाणो, वैठावो' (रू. भे)

उ०—१ राजा की राणी नू गरभ मास सात को थो। तद सगळा मत्री प्रधान मिळ राणी री पेट परनाळियो। पेट मा थी पुत्र नीसरियो। ती सतमासिया नूं राज दीन्हो। राज सु दान पुण्य करि सिघासण वैसाणियो। —सिघासण बत्तीसी

उ०—२ सुधो लगावसी, तवोल खाण नै देसी, अर चोसठ कोठा मह्ळ माडसी, त्यां माहि थांनु वैसाणसी। —पंचदडी री वारता

उ०—३ अरु वैन अेक रिडमल री तिकी पाटण तंवरा नू परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खडेले लाया। पीछै रावजी खडेलो लू टियो। तद इण आणकवर नूं पकडी अरु रावजी स्त्री वीकैजो आपरी ठकुराणी करी। नै वैल वैसाणी। —द दा

उ०—४ पछै अचळो रिणमलोत मुलताण जाय तुरका री कटक आण जगमाल नू मराय नै वडा भाई गोपा नू विकूपुर रै पाट वैसांणियो नै जगमाल रा वेटा नू परो काढियो। —नैणसी

उ०—५ तदै जगदेव दरबार आयो, तिको,वो साटूक री वागो पहिरणे छै, रुपिया १) री पाघ माथै थै काना हाथा माहै कडा सु ईसं सलूक सू मुजरो कियो। राजा छाती सू लगाय मिळियो, कनै वैसांणियो नै पोसाख देखि नै कह्यो, 'वेटा इसा कपडा क्यू।' —जगदेव पवार री बात

वैसाणणहार, हारो (हारी), वैसाणणियो—वि०।

वैसाणिओडो, वैसांणियोडो वेसाण्योडो—भू० का० कृ०।

वैसाणीजणो, वेसाणीजवो—कर्म वा०।

वैसांणियोडो-भू का कृ—१ गाडा हुआ, दफनाया हुआ। २ अधिकार मे करवाया हुआ, हुकुमत मे दिया हुआ। ३ देखो 'वैठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैसाणियोड़ी)

वैसानर—देखो 'वंस्वानर' (रू भे)

वैसाख-स पु. [स वैशाख] १ चैत्रमास के वाद एव ज्येष्ठ मास के पहले आने वाला एक महीना, जिसकी पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र मे पडती है।

उ०—१ लागने वैसाख री, बीज अरो अळवड। राम कियो मिळ 'केहरी' करी जिही सतखड। —रा रू

उ० - २ मासोत्तम वैसाख मैं, गढ जाळ धर हूंत। रांणी पधरावी महर, सार्थं कुवर सपूत। —रा रू

२ वाण चलाने की एक मुद्रा विशेष।

३ घोडा का एक रोग विशेष, जिसमे उसका शरीर भारी हो जाता है। (शा. हो)

४ मथदण्ड।

रू. भे —बिसाख, वैसाख, वइसाख वइसाह, वयसाख, विसाख, वैपाखि, वैसाखी।

मह ,—वैसाखो।

वैसाखनदण, वेसाखनदन-स पु [स वैशाखनन्दन[गर्दभ, गधा।

वैसाखा—देखो 'विसाखा' (रू. भे) (अ मा.)

वैसाखि, वैसाखी-वि० [स. वैशाखी] वैशाख मासकी, वैशाख मास से सम्बन्धित।

उ०—तकरा समै कासी माहै वरस दन माहै, हेकरा दन वैसाखी पूरणमासी करवत देग्रै। तठै करवत रा लंरार सारा वीजा ही कोही हूंता ते पण ओरा मिळिग्रा। पूछ पूछ करवत दंण लागो।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाटेल री वात

स. स्त्री —१ वैशाख मास की पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त होती है। इस दिन लोग जलाशयो पर जाकर स्नान करते है।

२ वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतिया, ग्रक्षयतृतीया।

३ सौर मास की सक्रान्ति को मनाया जाने वाला उत्सव।

४ लगडे ग्रादमी के बगल मे रखने की एक प्रकार की लकडी।

५ वसुदेव की एक पत्नी। (पुराण)

६ देखो 'वैसाख' (रू भे.)

उ०—पीडति हैमत सिसिर रितु पहिली दुख टाल्यो वसत हित दाखि। व्याए वेली तणि तरुवरा सा । विसतिया वैसाखि
—वेलि

रू. भे —वैसाखि वैसाखी, व्याएसाही।

वैसाखीग्रसटमी, वैसाखीग्रस्टमी, वैसाखीग्राटम—स स्त्री [स वैशाखी-ग्रष्ठमी] वैशाख शुक्ला ग्रप्टमी को किया जाने वाला ग्रपराजिता देवी का व्रत एव पूजा। इस दिन देवी को उशीर ग्रौर जटामासी के जल से स्नान कराने से समस्त तीर्थों मे स्नान करने के समान फल होता है।

वैसाखीवरत, वैसाखीव्रत—स पु [स वैशाखीव्रत] वैशाखमास की पूर्णिमा को किये जाने वाला व्रत।

वैसाखो—देखो 'वैसाख' (मह, रू भे)

उ०—तासु उपरि प्रभु ग्रवतरया, मुदि वारस वैसाखो जी। चवद स्वप्न राणी लहया, सुपन पठिक सुत दाखो जी। —स कु.

वैसाडणो वैसाडवो—देखो 'वैठाणी, वैठावी' (रू भे)

उ०—देही कण इगार जू तपै, राजर माथ मयड उगतउ भाण। माघ पडित ईम उचरई, चउरी कुवर वैसाडी छई ग्राणि।
—वी. दे

वैसाडणहार, हारो (हारी), वैसाडणियो—वि०।

वैसाडिग्रोडो वैसाडियोडो, वैसाडयोडो—भू० का० कृ०।

वैसाडीजणो, वैसाडीजवो—कर्म वा०।

वैसाडियोडो—देखो 'वैठायोडो' (रू भे)

(स्त्री वैसाडि ोडी)

वैसाणो, वैसावो—देखो 'वैठाणी, वैठावी' (रू. भे)

वैसाणहार, हारो (हारी), वैसाणियो—वि०।

वैसायोडो—भू० का० कृ०।

वैसाईजणो, वैसाईजवो—कर्म वा०।

वैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

उ०—१ पुहप छै सु कान रा वाण छै। सु काम ग्रापणा वाण हाथ लीया। रितिराइ कहता वसत तै कै पसाइ करि जन मनुस्य ग्रागि सौं सपरस करता था सु तैं दुख तै रहता हुग्रा। समस्त नर जगत्र वैसानर परसती रहीयी। —वेलि टी

उ०—२ ग्रह झाळा गरजत, वधै लोळा वैसानर। नर पुर जन हरि नाम, उचरि समरत ग्रगोचर। सती ग्रग पति सग, उलसि रग पावक ग्रकित। रोम ग्रस्त पळ चरम, होम वपु नाडि सामि हित।
—रा रू

वैसारण—देखो 'वैसारिण' (रू. भे.) (ग्र मा, ह ना. मा)

वैसारणो, वैसारवो—देखो वैठाणी, वैठावी' (रू भे)

वैसारणहार हारो (हारी), वैसारणियो—वि०।

वैसारिग्रोडो वैसारियोडो, वैसारयोडो—भू० का० कृ०।

वैसारीजणो, वैसारीजवो—कर्म वा०।

वैसारद—देखो 'विसारद' (रू भे)

वैसारिण—स स्त्री [स.] मछली।

रू भे —वैसारिण, वैसारण।

वैसारियोडो—देखो 'वैठायोडो' (रू भे)

(स्त्री वैसारियोडी)

वैसारू—देखो 'वैसारू' (रू भे)

वैसाल—स स्त्री [स वैशाल] १ विशाल नामक राजा के द्वारा वसाया हुग्रा एक नगर। २ एक प्राचीन ऋषि।

वैसालि—देखो 'वैसाली (रू भे.)

वैसालिनी—स. स्त्री. [स वैशालिनी] विशाल राजा की पुत्री जो ग्रवि-क्षित राजा की पत्नी एव मरुत्त ग्राविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसके स्वयवर के समय ग्रवीक्षित राजा ने इसे वल-पूर्वक पकड लिया था किन्तु उपस्थित राजाग्रो ने ग्रवीक्षित को पराजित कर पुन स्वयवर करने की माग विशाल राजा से की किन्तु ग्रवीक्षित के पिता करधम ने स्वयर मे उपस्थित सभी राजाग्रो को परास्त कर ग्रपने पुत्र को वन्धन मुक्त कर इसका हरण किया एव ग्रवीक्षित के साथ इसका पाणिग्रहण सस्कार किया।

वैसाली—स स्त्री [स वैशाली] २ एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने वसायी थी एव, जहाँ का लिच्छवी राजवश इति-हास प्रसिद्ध है तथा महावीर वर्द्धमान का जन्म इसी नगरी मे हुग्रा था।

स पु,—२ ग्रगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

रू भे.—वैसालि।

वैसालेय—स- पु [स वैशालय] विशाल का वशज, तक्षक नामक एक ग्राचार्य।

वैंसावणो वैंसावबो—देखो 'वैंठाणो, वैंठावो' (रू भे.)

वैंसावणहार, हारो (हारी), वैंसावणियो—वि० ।

वैंसाविश्रोडो, वैंसावियोडो, वैंसाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वैंसावीजणो, वैंसावीजबो—कर्म वा० ।

वैंसावियोडो—देखो 'वैंठायोडो' (रू भे)

(स्त्री वैंसावियोडी)

वैंसास—देखो 'विस्वास' (रू भे)

उ०—१ विरच जाय स्वारथ विना, स्वारथ जितरै सैण । वणक तणो वैंसास की, वणक तणो की वैंण । —बा. दा.

उ०—२ तो दिन्न मेवाड, तो वियप्प कापिय सीसं । ना ऊ रयण वहीजे, वैंसास कुंभकरण कृतघ्न । —नैणसी

उ०—३ माहाराजा नेडो तो कोइ गाम म्हो । असतरी कठा सूं ल्याव् । तरै तामस करनै कह्यो । तरै पथर री पूतळी रो कह्यो । तरै कान्हड़देजी कह्यो । उरी लै आव । माहरी छाती ऊपर मेल दै । मन वैंसास छै । —वीरसदे सोनीगरा री वात

उ०—४ तद भरमल री मा कह्यो, "जो राज पूछियो कदे नही । अर बिना पूछिया कहू, सो इसो कोई हरख आपरै न थो । अर वैंसास पिण कोई न थो । तैसूं कही नही ।" तद राणै कह्यो—किसी जायगा राखिया, सो ठोड दिखावो ।

—कुंवरसी साखला री वारता

वैंसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे)

वैंसासणो, वैंसासबो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासबो' (रू भे.)

उ०—१ तुरी सपताण तूल, फाटकियो नाखी भूल । वैंसासयै दीन्ही वाच, डावहियै लगाण डाच । —गु रू. ब

उ०—२ इण भात हालतो देख नै गोढवाड पाखती सोनगरा री ठकुराई सु सोनगरा नू अमावा हुवा जु ए पाखती भुडो, इण नैडा थका म्हानु विगाड, तरै राव रिणमल नुं परणाय नै वैंसासिया, आवोजाव हुई । तरै सोनगरां मिळ नै बेटी नु कह्यो—बाई म्हे थारा माटी आगै रह सका नही, तु वैंसासै तो म्हे रिणमल नुं मारा । —राव रिणमल री वात

वैंसासणहार, हारो (हारी), वैंसासणियो—वि० ।

वैंसासिओडो, वैंसासियोडो, वैंसास्योडो—भू० का० कृ० ।

वैंसासीजणो, वैंसासीजबो—कर्म वा० ।

वैंसासि—देखो 'विस्वास' (रू भे)

वैंसासियोडो—देखो 'विस्वासियोडो' (रू भे)

(स्त्री वैंसासियोडी)

वैंसिक—स पु [स वैशिक] वेश्याओं के साथ भोग विलास करने वाला एक प्रकार का नायक। (साहित्य)

वैंसियोडो—देखो 'वैंठियोडो' (रू भे)

(स्त्री वैंसियोडी)

वैंसी—स स्त्री.—१ वैश्य की स्त्री ।

२ चार प्रकार की गाथाओ मे से एक, जिसमे २७ लघु वर्ण होते हैं ।

उ०—१ विप्री तेरह लघुव दीजं, लघु यकवीस खित्रणी लीजं । सतावीस लघु वैंसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई ।

—र. ज. प्र

उ०—२ विप्री लुघ तेरह री वणाउ, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाउ । लुघ सतावीस वैंसी लखाइ, सहि सेख सुद्रणि मभाइ ।

—ल पि

वैंसेसिक—स पु. [स वैशेषिक] छ: दर्शनों मे से एक कणाद कृत दर्शन, जिसमे पदार्थों का विचार एव द्रव्यो का निरूपण है ।

वैंसो—वि०—१ किसी की नकल का या किसी के अनुरूप ।

२ उस प्रकार का ।

रू भे—वेसो, वेहडु, वेहडो वेहड, रेहडूं, वेहडो, वे'डो, वैडो ।

वैंस्णव—वि [स वैष्णव] (स्त्री वैंस्णवी) विष्णु का, विष्णु सम्बन्धी ।

स पु —विष्णु का उपासक, भक्त ।

उ०—चहुधा चरित्र वैंस्णवं विचित्र, त्रैलोक तत्र, वह मिळत अत्र । परिग्रह्म पूरण, तत मग्न तूरण, परमात्मा प्राप्त, वह पुरूख आप्त ।

—ऊ का

२ हिन्दुओ में, विष्णु की उपासना करने वाला एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय ।

३ इस सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति ।

रू भे—वेसनव, वेसनव्व, वैस्नव, वैस्नव्व, वइसनव, वेसनव, वैसणव, वैसणू, वैसनव, बेसनो, वैस्णवु ।

वैंस्णवचाप—स. पु [स वैष्णवचाप] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सारग नामक धनुष ।

वैंस्णवी—स स्त्री. [स वैष्णवी] १ विष्णु की शक्ति ।

उ०—तावदिद सकल जगजीवति ईस्वरै विस्वकर्त्रित्व मा मनति मनीसिण, एकि ससार नी स्त्रस्टि ईस्वर हुती कहइं, एकि ब्रह्मा, एकि वैंस्णवी, एकि सावमाया, एकि सक्तितउ कहइ, पणि लक्ष्मीकृत स्त्रस्ठि मानीइ । —व. स.

२ देवी, दुर्गा ।

उ०—देवी वैंस्णवी महेसी ब्रह्ममांणी, देवी ईद्राणी चद्रांणी रमा-राणी । देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इळा आधार आसुर हाता । —देवि.

३ गगा ।

४ लक्ष्मी ।

५ तुलसी ।

६ वैष्णव सम्प्रदाय की स्त्री ।

उ०—खाली एक अखरोट घोती मे आपरा सरीर नै आभडछट सूं वचावण री फिजूल कोसीस करती दरसण री भूखी वैस्णवियां, ढीली घोती अर नेहरू जाकेट पैरयोडा व्यापारी, दस गज री साडी ने गैलाई सू लपेटनै माथै पर फूग्रा अर साग-भाजी रा ओडा ऊचायोडी मराठणिया, ऊजळा दही व्है जिसा कपडा मैं फूटरी-फूटरी गुजरातणिया अर हाथा मैं थैलिया लियोडा ग्राहक सब एक साथै ईज वाडा मायनै सूं वकरिया निकळी व्है ज्यू परभात मैं ईज निकलग्या हा। —रातवासो

वैस्णवु—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—वैस्णवु रानि चाग्इ पुहुर जागइ । —उ र

वैस्य—देखो 'वेस्य' (रू भे)

वैस्या—देखो 'वेस्या' (रू भे)

वैस्येसवर, वैस्येसुवर, वैस्येस्वर—स पु. [सं वैश्येश्वर] महानदा के उद्धारार्थ अवत्तीर्ण हुआ एक शिवावतार ।

वैस्रप—स पु [स वैसृप] कश्यप एव दनु का एक पुत्र दानव ।

वैस्रवण—स पु [स वैश्रवणः] १ धनपति, कुपेर । (अ मा, ना मा ह ना मा.]

२ लकापति रावण ।

३ शिव, महादेव ।

रू भे.—वैसवरण, वईस्रवण, वैसमण वेसवण वेस्रमण, वेस्रवण ।

वैस्रावणाय, वैस्रावणालय—स पु [स. वैश्रवणालय] १ कुवेर के रहने का स्थान ।

२ वट वृक्ष । (अ मा, ना मा., ह ना मा)

वैस्वजुग—देखो 'वैस्वयुग' (रू. भे.)

वैस्वदेव—स पु [स वैश्वदेव] १ विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ ।

२ विश्वदेव को दिया गया उपहार ।

वैस्वदेवत—स पु. [स वैश्वदेवत] सत्ताईस नक्षत्रो मे से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र ।

वैस्वयुग—स. पु. [स. वैश्वयुग] वृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत, क्रोधी, विश्वासु और पराभाव नामक पाच सवत्सरों का युग या समूह । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—वैस्वजुग ।

वैस्वानर—स. पु [स वैश्वानर] १ अग्नि की उपाधि । २ इन्द्र सभा का एक महर्षि। ३ भानुनाम अग्नि के प्रथम पुत्र का नाम ।

४ वह अग्नि जो अन्न पचाती है ।

५ कश्यप एव दनु के एक पुत्र दानव का नाम, जिसके, उपदानवी, हयशीरा, पुलोमा एव कालका नाम की चार कन्याएँ थी ।

६ वेदांत में चेतन शक्ति ।

७ परमात्मा, ईश्वर ।

८ आग, अग्नि ।

उ०—जउ वैस्वानर ताढउ थाइ, पस्चिम ऊगइ दीस । नारायण टलतउ कान्हडदे, कहि न नामइ सीस । —का दे. प्र.

९ अग्नि देवता ।

रू. भे.—वसदर, वेसदर, वेसानर, वैसदर, वैसानर, वासदर, विसनर, विसन्नर, विस्वानर, वीसनर, वेसनर, देसन्नर, वेसवानर, वैसानर, वैसदर, वैसनर, वैसनर, वैसन्नर, वैसानर, वैसानर ।

वैस्वानरचूरण—स पु [स. वैश्वानरचूर्ण] सेंधानमक, अजवायन और हर्रे आदि से वनाया जाने वाला एक प्रकार का पाचक चूर्ण विशेष । (वैद्यक)

वैस्वानरि, वैस्वानरी—स पु [स. वैश्वानरि] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

वैस्वामित्र—स. पु. [स. वैश्वामित्र] विश्वामित्र के वशज ।

वैवारियोखीच—देखो 'वेमवारियोखीच' (रू भे)

वैहग—देखो विहग' (रू भे.)

उ०—सोभत मद सीतळ समीर, कोकला कुहक क्रत सथर कीर । वाणी अनेक कुजत वैहग, नाचत मयूर आनद अग ।

—मयारांम दरजी री वात

वैहचणो, वैहचवो—देखो वैचणो, वैचवो' (रू. भे.)

उ०—यूं करता, दोनूं भायां रे आपस मैं दूदै अर भोज रै वडो वेध पडियो । ताहरा राव सुरजन वेटा वेळ तेडिनै कह्यो—थे मौ ऊपर फिरिया । थै म्हारो कह्यो न मानो । म्हैं राज सू कोई काम नही । थे धरती वैहच ल्यो । —नैणसी

वैहचणहार, हारो (हारी), वैहचणियो—वि० ।

वैहचिओडो, वैहचियोडो, वैहच्योडो—भू० का० कृ० ।

वैहचीजणो, वैहचीजवो—कर्म वा० ।

वैहचियोडो—देखो वैचियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वैहचियोडी)

वैहडणो, वैहडवो—देखो 'विहडणो, विहडवो' (रू. भे.)

उ०—भागीरथी तणे तट भारथ, सत्र वैहडिया वजाडै सार । रिम रेवग भेळाकर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिंगार ।

—चतुरी मोतीसर

वैहडणहार, हारो (हारी), वैहडणियो—वि० ।

वैहडिओडो, वैहडियोडो, वैहडयोडो—भू० का० कृ० ।

वैहडीजणो, वैहडीजवो—कर्म वा० ।

वेंहडियोडो—देखो 'विहडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंहडियोडी)

वेंह—१ देखो 'वयस' (रू भे.)
उ०—छापर तवल ज वजिजवा, हुइ मरदा हल्ल। लाज कहै मर ज्यावणौ, वेंह कहै घर चल्ल। —सिवसिंघ वागेला री गीत
२ देखो 'विधाता' (रू भे)
३ देखो 'वे'माता' (रू. भे.)
उ०—पमगा छाढ पागडा वात अेघडा विचारी, आगं तूट आपणै वेर 'सारग' वडारी। होसी होवण हार वेंह लिखियो जिम हुसें, इण अपार धन देख कहो डर जावा कैसें। पा. प्र.
४ देखो 'वेह' (रू भे.)

वेंहणौ, वेंहबौ—देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू. भे)
उ०—वळे आधा चलाया। सु धरती कोस एक आय रही। सासरै सो नेंडो गयो। इतरै एक वडो पाकेट ऊठ पाहड हुवै तिसडो वडो विपरीत तिको आडो आय फिरियो। सु घोडे नु आघो वेंहण देवै नही। —माडणसी कूपावत री वात
वेंहणहार, हारौ (हारी), वेंहणियौ—वि०।
वेंहिओडो, वेंहियोडो, वेंहयोडो—भू० का० कृ०।
वेंहीजणौ, वेंहीजवौ—भाव वा०।

वेंहतीवांण—१ देखो 'वेंतियाण' (रू. भे.)
२ देखो 'वहतीवाण' (रू भे.)
उ०—६०००) गाव रै हासल रा घड कसाल पाटो। ५०००)रु मारग वेंहतीवांण सु समत १७१६ पातसाह। —नैणसी

वेंहरणौ, वेंहरबौ—देखो 'वेंरणौ, वेंरवौ' (रू भे)
उ०—जिसो जोध बलि भद्र पळव दाणव महारियै। जिसो वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप वेंहरियै। —गु रू. व
वेंहरणहार, हारौ (हारी), वेंहरणियौ—वि०।
वेंहरिओडो, वेंहरियोडो, वेंहरयोडो—भू० का० कृ०।
वेंहरीजणौ, वेंहरीजवौ—कर्म वा०।

वेंहराडणौ, वेंहराडवौ—देखो 'वेंराणौ, वेंरावौ' (रू भे)
वेंहराडणहार, हारौ (हारी), वेंहराडणियौ—वि०।
वेंहराडिओडो, वेंहराडियोडो, वेंहराडयोडो—भू० का० कृ०।
वेंहराडीजणौ, वेंराडीजवौ—कर्म वा०।

वेंराडियोडो—देखो 'वेंरायोडो' (रू. भे)
(स्त्री. वेंराडियोडी)

वेंहराणौ, वेंहराबौ—देखो 'वेंराणौ, वेंरावौ' (रू. भे)
वेंहराणहार, हारौ (हारी), वेंहराणियौ—वि०।
वेंहरायोडो—भू० का० कृ०।
वेंहराईजणौ, वेंहराईजबौ—कर्म वा०।

वेंहरायोडो—देखो 'वेंरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंहरायोडी)

वेंहरावणौ, वेंहरावबौ—देखो 'वेंराणौ, वेंरावौ' (रू. भे.)
वेंहरावणहार, हारौ (हारी), वेंहरावणियौ—वि०।
वेंहराविओडो, वेंहरावियोडो, वेंहराव्योडो—भू० का० कृ०।
वेंहरावीजणौ, वेंहरावीजवौ—कर्म वा०।

वेंहरावियोडो—देखो 'वेंरायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. वेंहरावियोडी)

वेंहरियोडो—देखो 'वेंरियोडो' (रू. भे)
(स्त्री वेंहरियोडी)

वेंहळ, वेंहल-वि०—१ विना हल का, हलरहित।
२ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
३ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
४ देखो 'वहल' (रू भे.)
उ०—१ पछै सचियायजी आय सुपनै मैं हुकम दियो, वांसै हाथ दिया नै कह्यौ—काळै वागै, काळी टोपी, वेंहल रै काळी खोळी, काळा वळद जोतरिया, जिदा रै रूप किया साम्हा मिळसी। औ गैचद छै, तू मत चूकै, कूट मारै। —नैणसी
उ०—२ तद आसयानजी बोलिया—जु बेटी थारी परणाय, म्हे जांणा। तद ब्राह्मण बेटी परणाई, फेरा लिया। पछै कानै रा आदमी ब्राह्मण री बेटी नै वेंहल बैसाण लै हालिया। —नैणसी
उ०—३ इतरै महाडोल मगायो। भरमल नुं असवार कीनौ। महाडोल रै पूठै रथ वेंहला लगाई, पूठै उठ, घोडा सारा आगै पाछै। इसै मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय गेहतो सो महाडोल री पाखती आइ लागो। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ सागला कही, वेंहल छोड देवो, आपै चली आसो। तद खरळा वहलवान नु उतार रथ ऊपर सहेली नु चाढि वहीर कीवी। वहला भारवरदारी सारी रथ रै पूठै लगाय दीया। ऊभा देखण लागा। —कुंवरसी सांखला री वारता

वेंहलणौ, वेंहलवौ-क्रि अ, बुझना।
उ०—अरिसेन वहू जत एक हियू अव वाहर पाल' हुतै तइयू। मुझ वाधव 'पाल' जिसो न मिळै, वस दीपक आज परौ वेंहलै। —पा. प्र
वेंहलणहार, हारौ (हारी), वेंहलणियौ—वि०।
वेंहलिओडो, वेंहलियोडो, वेंहल्योडो—भू० का० कृ०।
वेंहलीजणौ, वेंहलीजवौ—भाव वा०।

वेंहलि, वेंहली—देखो वहल' (रू. भे.)
उ०—कह्यौ—मोहरत री वेळा टळी जाय छै। प्रोळ खोलो। सेजवाळा बारणै ऊभा छै। तरै उणै प्रोळ खोली। सेजवाळा सोह

माहे आया। तरै रावळा वंहली माहि था कूद-कूद जीनसालिया उतरिया। दहिया रा जिके कोट माहै हुता सु सोह कूट मारिया।
—नैणसी

वंहलियोड़ौ-भू० का० कृ०—बुझा हुआ।
(स्त्री वंहलियोड़ी)

वंहळौ, वेहलौ-वि० (स्त्री. वंहळी वेहली) १ दुखी, व्यथित, व्याकुल।
उ०—तिरसो निवांण तायै ग्रहै तट, वेहळौ जाम त्रिया पीहर वट। जग कवियण थावै दुखी जाम, तद ग्रहै छत्रिया सरण ताम।
—रामदान लाळस

२ मस्त, उन्मत।
३ शीघ्र, अतिशीघ्र, जल्दी।
उ०—१ युध थाणाय चारण हीण सकै, धवले दन कोळम गाम धकै। कमधां घर राज किसूं कहला, वत वाहर वीर चढ़ौ वंहला।
—पा. प्र.

उ०—२ घल जाघड टाकेय जूझ घणी, तिम खूर वंधै संहै वार तणी। पुड जूझुहै 'पाल' हुतै पहला, विड़गा पर झीण न्हखौ वंहला।
—पा प्र

रू भे—वेहलौ, वंहिलौ।

वंहवार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)
उ०—जं ऊपर रौ तभर सुपर वंहवार, जिण थूभा ऊपरी फाब फडक्क फाडतौ। जिण समचै सोव्रन्न, जेण वदरा वधावै। जिण सोभावै हाट, जेण लाख्या लूटावै।
—कमरसी खीवौ सूरोत आसियौ

वंहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू भे.)
वंहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

वंहायस-स पु [स] १ पातालनरेश बलि का एक विमान जिसे मय ने वनाया था तथा यह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित एव अनेक आयुधों से युक्त था।
२ एक प्रसिद्ध तीर्थ कुण्ड जो नरनारायणाश्रम के पास स्थित है।
वि०—आकाश का, आकाश सम्बन्धी।

वंहार—१ देखो 'व्यवहार' (रू भे)
उ०—नयन तै आसू खेरिया, कब म्हैं भेटस्या सांभरधा-राव। जीवन घडीय तै नवि रहई, जिण सू कागली हुवा वंहार।
—वी दे.

२ देखो 'वंभार' (रू भे)

वंहारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू भे)

वंहासक, वंरासिक-वि० [स. वंहासिक] हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा, विदूषक।

वंहियोड़ौ—देखो 'वहियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. वंहियोड़ी)

वंहिलौ—देखो 'वंहलौ' (रू भे.)
उ०—मध कीटभ दं मार, हार देवता हुई हरि। आहि आहि सुर तबै, किसन वंहिलौ ऊपर करि।
—पी. प्र.

वंहूं, वंहू, वंहू—देखो 'वेऊ' (रू भे)
उ०—खीवो, विजो धाडावी वडा दोडा वडा चोर। विजो सोभित वसै। खीवो नाडौल वसै। वंहूं रा भोसाप वडा। ऊ उण रो नाम जाणै। ऊ उण रो नाम जाणै। पिण मिळिया कदे नहीं।
—वीवोली

वंहूकणौ वंहूकवौ—देखो 'विसूकणौ, विसूकवौ' (रू. भे.)
वंहूकणहार, हारौ (हारी), वंहूकणियौ—वि०।
वंहूकिओड़ौ, वंहूकियोड़ौ वंहूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वंहूकीजणौ, वंहूकीजवौ—भाव वा०।

वंहूकियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ' (रू भे)
वंहूकियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री वंहूकियाडी)

वंहूगणौ, वंहूगवौ—देखो 'विसूकणौ, विसूकवौ' (रू. भे.)
वंहूगणहार, हारौ (हारी), वंहूगणियौ—वि०।
वंहूगिओड़ौ, वंहूगियोड़ौ, वंहूग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वंहूगीजणौ, वंहूगीजवौ—भाव वा०।

वंहूगियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ' (रू. भे)
वंहूगियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री वंहूगियोड़ी)

वोंकार—देखो 'वोंकार' (रू. भे)
वोंसे—देखो 'वांसे' (रू भे.)

वोंसलौ गोंसूलौ—देखो 'वसूलौ' (रू भे)

वो-स पु—१ विनय, प्रार्थना। (एका)
२ सातस्वर, सप्तस्वर। (एका)
३ समय, काल, वक्त। (एका)
४ पेड वृक्ष। (एका)
५ रथ हाकने वाला, सारथि। (एका)
६ देखो वौ' (रू भे)

वोअणौ, वोअवौ—देखो 'वोवणौ, वोववौ' (रू. भे.)
वोअणहार, हारौ (हारी), वोअणियौ—वि०।
वोइओड़ौ, वाइयोड़ौ वोयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वोईजणौ वोईजवौ—कर्म वा०।

वोइयोडौ—देखो 'वोवियोडौ' (रू भे)
(स्त्री वोइयोडी)

वोई—देखो 'वही'।

अबै दोन्यू मांमा—भाणेज रै आल्या मैं जांणै भेरू विवै। हाथां रै वटका भरै। म्हारै एवड मैं सूं इज वकरी लेय गया? पर वोई जोर रै जरकै? वाघ रै गळै वाडला नै हाथ नाखियो।

—अमरचूनडी

उ०—२ जाकै सिर मोर मुकुट मेरै पति वोई, सख चक्र गदा पद्म कठ माळा सोई। आई मैं भक्त जाण जगत देख मोई, असुवन जळ सीच सीच प्रेम वेल वोई। —मीरा

वोउखीचडी वोऊखीचडी—देखो 'वहुखीचडी' (रू भे.)

वोक—१ देखो 'वोक' (रू भे.)

२ देखो 'बूक' (रू भे)

वोकड, वोकड, वोकडो, वोकडु, वोकडो—देखो 'वोकडो' (रू भे)

वोकणो, वोकवो—देखो 'वोकणो, वोकवो' (रू भे)

वोकणहार, हारो (हारी), वोकणियो—वि०।

वोकिग्रोडो, वोकियोडो, वोक्योडो—भू० का० कृ०।

वोकीजणो, वोकीजवो—कर्म वा०।

वोकारणो, वोकारवो—देखो 'वाकारणो, वाकारवो' (रू. भे)

उ०—सुणीजै स्यारा री सरणाट, भाडकां तीतर तीखा बोल। वोकारै वसनीडी सून्याड, आपणी आपो राखै तोल। —साफ

वोकारणहार, हारो (हारी), वोकारणियो—वि०।

वोकारिग्रोडो, वोकारियोडो, वोकारचोडो—भू० का० कृ०।

वोकारीजणो, वोकारीजवो—कर्म वा०।

वोकारियोडो—देखो 'वाकारियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वोकारियोडी)

वोकियो—१ देखो वोखो' (अल्पा., रू. भे)

२ देखो 'बूकियो' (रू भे)

वोकों—देखो 'वोखो' (रू. भे)

(स्त्री वोकी)

वोखद, वोखदि, वोखदी, वोखध—देखो 'ओखध' (रू. भे)

उ०—करक कळजे भारी वोखद न लागै कारी, तुम घर जावो वैद मेरै पीर भारी है। विरहिन विरह वाढचो 'तातै दुख भयो गाढौ, विरह के वाण लै लै विरहिनी मारी है। —मीरां

वोखलो, वोखियो—देखो वोखो' (अल्पा, रू. भे)

(स्त्री. वोखली

वोखो—देखो 'वोखो' (रू भे)

(स्त्री वोखी)

वोडणो, वोडवो—देखो 'वोडणो वोडवो' (रू भे)

वोडणहार हारो (हारी), वोडणियो—वि०।

वोडिग्रोडो, वोडियोडो वोडचोडो—भू० का० कृ०।

वोडीजणो, वोडीजवो—कर्म वा०।

वोड़णो, वोडावो—देखो 'वोटाणो, वोटावो' (रू. भे.)

वोडाणहार, हारो (हारी), वोटाणियो—वि०।

वोडायोडो—भू० का० कृ०।

वोडाईजणो, वोडाईजवो—कर्म वा०।

वोडायोडो—देखो 'वोडायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वोडायोडी)

वोडियोडो—देखो 'वोटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वोडियोडी)

वोडियो—देखो 'वोटियो (रू. भे,)

वोंडी—देखो 'वोरडी(रू भे)

वोचणो, वोचवो—देखो 'वोचणो, वोचवो' (रू. भे.)

वोचणहार, हारो (हारी), वोचणियो—वि०।

वोचिग्रोडो, वोचियोडो, वोच्योडो—भू० का० कृ०।

वोचीजणो, वोचीजवो कर्म वा०।

वोचियोडो - देखो 'वोचियोडो' (रू भे)

(स्त्री वोचियोडी)

वोछो—देखो ओछो' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिवेणी तटि याम तहा वयू ना जाइयै, ए पासा ए डाव सीस लै चाइयै। वोछै पांणी पैमि समद क्यू छडिए, हरिहा जन हरिदास भजि अलग निरजननाथ तहा मिळि लाडिए।

—ह. पु, वा.

उ०—२ वोछा करै गुमान वडा कै नाहि रे, भादू वरसै मेह नदी घर राहि रे। दरिया उभळै नाहि ता माहि समाहि रे, हरिहा जन हरिदास यूं साधि देखि जग माहि रे। —ह पु वा

वोज—स पु—१ खाट की की बुनावट।

२ देखो 'वोझ' (रू भे)

वोजनीळो—स पु—शुभ रग का एक प्रकार का घोडा विशेष।

(शा हो)

वोजलखो—स पु -शुभ रग का एक प्रकार का घोडा विशेष।

(शा हो)

वोझाडो—स. पु—१ झटका।

२ प्रहार, चोट।

वि०—प्रहार करने वाला।

वोट—१ देखो 'ओट' (रू भे.)

उ०—१ जग सू प्रीति कहा लो कोजै, सकळ काळ की चोट। उलटी खेल अनळ का सुत लो, पकडि राम की वोट।

—ह पु वा.

उ०—२ भडा हांक भंकमप तीर गोळी वहै, सुभटन ताकै वोट चोट सन्मुख सहै। ग्यान खडग लै हथि न फिरि पूठा फिरै, हरिहा जन हरिदास सूरवीर अरिजीत सहरिका होय रहै। —ह पु वा

उ०—३ जन हरिदास हरि सुमरता, दूरि मान सब बोट। राग दोख हिरदै नही, करसूं करै न चोट। —ह. पु वां.

उ०—४ तहा कध का छेद, मान नर बोट न छूटै। दस दरवाजा रोकि, काळ काया गढ लूटै। —ह पु. वां.

उ०—५ मान बोट ऊभा अजू, सकै तौ पडदा टालि। साहिब के पडदा नही, तू अपणी बोट सभाळि। —ह. पु. वां.

२ देखो बोट' (रू भे)

उ०—पूना धर बीधो सर पाधर हैदळ गैदळ सबळ हीचि। पडचौ नह सेवौ आय पावा बोट मारतो समद बीचि।

—राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर री गीत

बोटणौ, बोटबौ—देखो बोटणौ बोटबौ' (रू. भे)

उ०—१ नमो नर नाह हयवाह 'पदमा' निडर, बोट अरियाट अमुरां सवाही। साहिया खडग 'करणेस' रा छावडा, मालियौ भलो अवसाण माहो। —पदमसिंघ री गीत

उ०—२ सालळै सीधूश्री राग सरणाइया, भलाई आज भारथ करो भाइया। मेह मेहा सरिसि आथि छूटा मोहरि, बांण वाणां सरिसि बोढ़िया बहादरि। —पी. ग्रं.

बोटणहार, हारौ (हारी), बोटणियौ—वि०।

बोटिप्रोडो, बोटियोड़ो, बोटयोड़ो—भू० का० कृ०।

बोटीजणौ, बोटीजबौ—कर्म वा०।

बोटर—स. पु. [अं] वोट देने वाला या वोट देने का अधिकार रखने वाला व्यक्ति।

बोटरलिसट, बोटरलिस्ट—सं. स्त्री. [अं. वोटरलिस्ट] वह सूची जिसमें वोट देने वाले या वोट देने का अधिकार रखने वाले व्यक्ति का नाम दर्ज हो।

बोटियोडो—देखो 'बोटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोटियोड़ी)

बोडबिलाव, बोडबिलाव, बोडबिलावर—देखो 'बोडबिलाव' (रू. भे.)

बोढ—सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई।

२ देखो 'बोढ' (रू. भे.)

बोढण—स स्त्री—१ सर्प की कचुकी।

उ०—रुणां रुचि मांही रस पाया, पोवन छवया सहजि घरि आया। अहि बोढण ज्यूं तजि गुणकाया, मेदो जाइ अभेद समाया। —ह. पु वा.

२ ओढ़ने का वस्त्र, चादर आदि।

उ०—जांहि अधोगति अध, अग्यांन, आलस 'उरि' लागा। 'त्रिविधि' अधारै बैसि, ग्यान बोढण नहि नागा। —ह पु. वा.

बोढणियो, बोढणौ—देखो 'ओढणौ' (रू. भे.)

बोढणौ, बोढबौ—देखो 'बोटणौ, बोटबौ' (रू. भे.)

उ०—सांमद हुवह सुजळ सायर, रैण सुत जळनध रैणायर। सुजळ गोहीरव सायर, महण घण महरांण। सुतर 'सूरज' सुजळ सारै अरि ओहाळै उतारै। मारका सत्र बोढ मारै जुड़ै 'गंजण' जुवान। —महाराजा गजसिंह री गीत

बोढणहार, हारौ (हारी), बोढणियौ—वि०।

बोढिप्रोड़ो, बोढियोडो, बोढ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बोढीजणौ, बोढीजबौ—कर्म वा०।

बोढा—देखो 'बोढा' (रू. भे)

बोढियोडौ—देखो 'बोटियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बोढियोडी)

बोदौ—वि.—छोटा, कनिष्ठ।

उ०—ताहरा पाबूजी कह्यो—बाई! हू तोनूं दोदै सूंमरै री सांढा रा वरग आण देईस। ताहरां गोगोजी हसिया कही—आजै दोदो सूमरो बोदौ रावण कहीजै। तैरी सांढां किसीभात लै आवसी? ताहरां पाबूजी बोलिया—सांढा लै आईस। —नैणसी

बोदौ—देखो 'बोदौ' (रू भे.)

उ०—पीसणियां पीसै, रांधणिया रांधै, वखतसर न्हावौ-धोवौ अर सिक्यां सीख री बाता साधै। लंगर मैं बैठ'र जीमै, कतार मैं कासण मांजै, नूंवा डरता रैवै, बोदां री भी भाजै। अफसर रै हुकमा हालै थको मौज सूं मालै। —दसदोख

बोपणौ, बोपबौ—देखो 'ओपणौ, ओपबौ' (रू. भे)

उ०—दमक छटा छविडड पताका देखिया, पटा हाट व्योपार जुहारां देखिया। आभुखण नर नारि ईसी विध बोपिया, जांण क सुरपुर लोक इधक छवि जोपिया। —वगसीराम प्रोहित री बात

बोपणहार, हारौ (हारी), बोपणियौ—वि०।

बोपिप्रोडो, बोपियोडो, बोप्योड़ो—भू० का० कृ०।

बोपीजणौ, बोपीजबौ—कर्म वा०।

बोपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे)

उ०—१ दुनिया री बोपार है, सूका देख-देख छोडै अर हरया देख-देख'र चरै। जकै घर सूं सोकळो खायो-कमायो अर मोटा मोटा कारज सारचा बी. घर री ही आज रहोयो अर गिलर करै है। —दसदोख

उ०—२ सुत को दुख दिल मांहे दहै, साह सहरि एक दिली है। बरै गरब लखमो ओतार सोदो सूत वडो बोपार। —भीमराज

उ०—३ उण देस वालो जठै प्राणां री बोपार जिण सिरदार रै हम तम होवै, कठै ई सगुवा ऊपर चढै है कठा सूं ई दुसमणां री फौज ऊपर आय गई है इण तरै प्रांणां री बोपार होवै जठै लै चालै। —बी स. टी.

उ०—४ वणक कहै बोपार विध, सीखो गुरु सूं सोझ। ऊंट मुग्रा नहि ओरवौ, कापड ऊपर बोझ। —बां. दा.

वोपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—रे वोपारी करि दिल इकतारी, पाया धीर सभाळो। चोदरि कोळ कियो मन मेरा, उदयो दसवद टाळो। —भीखराज

वोपारौ—देखो 'व्यापार' (मह., रू. भे.)

उ०—भला हम विणजारा पूरे साह का, विणज करण वोपारौ। भला खोटा खोटा विणज न वोहरां, मांणिक्य दाखौ वारौ।

—दीनमुहम्मदी

वोपियोडो—देखो 'वोपियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोपियोडी)

वोयार-सं पु—१ कन्या का सम्बन्ध निश्चित करते समय दामाद या दामाद के सम्बन्धियों द्वारा कन्या के पिता या सरदारों को दिया जाने वाला धन।

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

वोमर—देखो 'वोभर' (रू भे.)

उ०—१ मोपी पटची करणें नें पेसें करी हो, नीं तो करणो जाणो वाढ्योडा तिला मैं। मोठ री छ्यां देख्यो मजा करी। दतौ कै परो'र करणें वोमर वासतें री हांडी भर'र मगाई। हांडी रै वासतें मैं एक धोवो फूट्योडी मिरचा नखाई। अचेत परी राजी रो मूडो जगती मिरचां री हांडी मायं मेलायो। —दसदोख

उ०—२ बठै प्रधनूडी सी एक परचिरांणी, सास सुक रियो मोट्यो चूलै कनै बैठी कायर छोर्लै है। पाळो लागै जद वोभर मैं हाथ तप वै, फणा ही सैं सायै लकड़ी ही फ'रेल देवै है। —दसदोख

वोभरियो—१ देखो 'वोभरियो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोभरो' (मल्ला, रू. भे)

वोमरो—देखो 'वोभरो' (रू. भे)

वोमगी—देखो वोमगी' (रू भे)

वोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.) (अ मा, ह. ना मा)

उ०—१ रत खाळ रळ तळ पाखर प्रघळ, होहू हूकळ बहू हुवै। वळकत विजूजळ वीजक वहळ, ढोल त्रिमगळ वोम धुवै।

—गु रू व

उ०—२ गोम डमर हुम्रै वोम गाहीजियै, भ्रत रै घोम गर दोम भागा। सोन रा ऊपड़ै घोम रा सकुडै, गयण गजगाह दळ रगह लागा। —कल्यांणदास महडू

उ०—३ वोम भरावै गाजियै, ढोल हुवा सब ठौड। आयो रूपो' 'रांम' तण, हाम घणी राठौड। —रा रू.

उ०—४ अरोहै हस्ए रांम मैड भनुज्ज, धरा वोम धुज्जै सिरा लक धुज्ज। अडीलभ जोधा पदम्म अठारा, पिलै याट नीसांण वाजै भ्रठारा। —सू प्र

उ०—४ वोम गमकुर गाजिया थी, दिवस गमिया डाहिया। निरखी थणी गोहिल नवेंद, गोरळ वैठै गाहिया। —पी ग्रं.

वोमकेस, वोमकेसी—देखो 'व्योमकेस' (रू. भे) (ध. मा, ना. मा, ह. ना. मा)

वोमगंगा—देखो 'व्योमगंगा' (रू भे.)

उ०—देवी नाकेगी ताति कन्या वरिया, देवी मोह मगुनत भोमा गुमीना। देवी वोमगा देवी वोमगंगा, देवी गुरा गंगा गुणोदर घणा। —देवि.

वोमगांमी—देखो वोमगी' (रू. भे.)

वोमचरी—देखो 'वोमचरी' (रू भे)

वोमतलक, वोमतिलक—देखो 'वोमतलक' (रू भे)

वोमदेव-सं पु [स वामदेव] शिव, महादेव। (ना. मा.)

वोमपट, वोमपाट-स पु [स. व्योम+पट] आकाशमार्ग।

उ०—मगु उपडै वमशोविर वडैन दिपटा पाटो वोमपटो माडै रगत दरमा डोलाय। चोटी घणा वाढै राव दसद वजाय अडै, 'हटो' वाळै आडा वहो भोमिया टैराव। —ईसरदास सिद्धियो

वोमवाण, वोमवांणी-स स्त्री [स व्योम+वाणी] आकाशवाणी, देववाणी।

उ०—देवी गोर रूपा घणी अरव निहि, देवी नागरूपा मवरूपा अरव निढि। देवी वज्र विमोहणी वोमवाणी, देवी तोतला गुणता मतिवाणी।

—देवि

वोमि—देखो 'व्योम' (रू भे)

उ०—१ 'वोर'हर राउ सामळि वयण, लोग्राइ लिया राता रतण। ऊससिय वोमि सागर मबोह, वांमळियै कवियै अवलोह।

—रा ज. सी.

उ०—पाखिरण सजोणह बखह घल्लि, सिरि वाळ बोह हारद न हल्लि। तोवड्ढ मुखरि साहिवद तांणि, सासोकि घईनह वोमि लगि।

—रा. ज. सी.

वोर—देखो 'भोर' (रू. भे)

उ०—चावली तणा घणा ज्यूं बरसै, पाया जतन न भीतो राज। दिसी भींत वोर सौ दूजो, रारण हाक न पड़ियो राज।

—राजा'माधोसिंह भदसहा री गीत

वोरगत—देखो 'वोरगत' (रू. भे)

वोरणौ, वोरबो-क्रि स—१ टुबोना, तर-बतर करना।

उ०—दिगता लौं दौरै मचल मन मोरै मुदमुदी, विदातो कमोरै विसय विस वोरै सुन्युदी। पधारै पार्वो को निपत गण सावों शुटि तलै, मिलावै मेघा को विधि विधि निसेघा पत मलै।

—ऊ का

२ देखो 'बुहारणो, बुहारवौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बोडणो, बोडवौ' (रू. भे.)
बोरणहार, हारौ (हारी), बोरणियौ—वि०।
बोरिग्रोडौ, बोरियोडौ, बोरयोडौ—भू० का० कृ०।
बोरीजणौ, बोरीजवौ—कर्म वा०।

बोराणी बोरावौ—१ देखो 'बुहराणौ, बुहरावौ' (रू भे.)
२ देखो 'बौराणौ, बौरावौ' (रू. भे)
बोराणहार हारौ (हारी), बोराणियौ—वि०।
बोरायोडौ—भू० का० कृ०।
बोराईजणो, बौराईजवौ—कर्म वा०।

बोरायोडौ—१ देखो 'बुहरायोडौ' (रू. भे)
२ देखो 'बौरायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री बोरायोडी)

बोरियोड़ौ–भू का. कृ.—१ डुबोया हुआ, तर-बतर किया हुआ।
२ देखो 'बुहरायोडौ' (रू भे.) ३ देखो 'बोडियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोरियोडी)

बोरु—देखो 'बोर' (रू भे)

बोरौ, बो रौ—देखो 'बों'रौ' (रू भे)
उ०—१ खळकत जांझळिया वाजण नै लागी, भूखा मरतोडी खळकत पड भागी। बो'रा थळ विहुणा तिल खळकत तरजै, बूढी चेली नै साधू ज्यौं वरजै। —ऊ का.
उ०—२ कदे तो पडग्यो काळ अभागो, गिण-गिण काढयो दोरौ। कदे तो ठाकर लाटो लाट्यो, कदे लाटग्यो बो'रो। —चेतमानखो

बोळणौ, बोळवौ—१ देखो 'बोळणौ, वोळवौ' (रू. भे)
२ देखो 'वोळणौ, बोळवौ' (रू. भे)
उ०—१ नारायण रौ नाम ज्या, नह लीधौ निरणाह। वा जमवारौ बोळियो, ज्यू ज गळ हिरणाह। —ह. र.
उ०—२ उतोलै अंराक, बोळण खळ उववरा। वीरमदे वेंडाक, मेळ वचन नह मानिया। —गो रू
उ०—३ लख वेरे पँदास लख वीरम मुख बोळे, हैवर दोय हजारिया, सोहडा थट चोळे। सहस दसाही साढिया, टीकायत टोळे, ऊ पण कीधी ग्रेकठी, गोरख इक गोळे। —वी मा.
उ०—४ महल चौबार अदवा तणा माळिया, दिनै बोळीजतै जुरा दहसी। मडळ ध्रु सथिर ग्रहराव सिर मेदणी, राव गांगो कहै, त्या गीत रहसी। —राव गांगो
बोळणहार, हारौ (हारी), बोळणियौ—वि०।
बोळिग्रोडौ, बोळियोड़ौ, बोळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोळीजणौ, वोळीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोलणौ, बोलवौ—१ देखो 'वोळणौ, वोळवौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोलणौ, बोलवौ' (रू भे.)
३ देखो 'बौळणौ, बौळवौ' (रू. भे)
उ०—१ वावडी री पाणी पीवण री आखडी। वेहती नदी रौ पाणी पीवण री आखडी। भूखा रौ मुहडौ देखण री आखडी। दूध को बोलण री आखडी। मारग हालता टळवा री आखडी अऊत री धन लेवा री आखडी। —रा. सा. स.
उ०—२ वरस पाच बोळधा पछी, तिसडे मेह न वूठ। खड पाखै सहू एकठा, हुआ मांणस मन मठ। —ढो. मा.
बोलणहार, हारौ (हारी), बोलणियौ—वि०।
बोलिग्रोडौ, बोलियोडौ, बोल्योडौ—भू० का० कृ०।
बोलीजणौ, बोलीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोळाई—देखो 'बौळाई' (रू. भे)

बोलाई—देखो 'बोलाई' (रू भे)

बोळाऊ, बोलाऊ—देखो 'बौळावौ' (रू भे.)
उ०—१ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सूदरि साथि। हरीया जासै हेकलौ, करि बोलाऊ हाथि। —अनुभववाणी
उ०—२ बोलाऊ कहण लागा कुवरजी दुख मती करो। मारू नै दाग द्यो। थे पाछा चालो। मारवणजी री तीजी बहन चपा थानै परणास्यां। —ढो. मा
उ०—३ साचौ धणी विपत में सामी, तेड्या आवै तीजी ताळ। विखमी वाट तणौ बोळाऊ, साई तू काळा तणौ सुगाळ। —ग्रोपो आढो
उ०—४ सु रूंम-सुम रै पातसाह इणा पीरजादा नूं तेरै कोड रुपिया री माल दियो नै विदा किया, सु पाछा वळता जेसळमेर आय उतरिया। असवार २०० पातसाह रा सेखरै साथै बोळाऊ, सु मूळराज रतनसी उणा नू मारनै वित सोह लियो। —नैणसी
उ०—५ अलग राख आरोह तसा कपडा वेतोडा, खरहड नासा खाच रजक प्याले अल रोडा। ऊमी ऊमाल कतार अठी आधी निस ऊपर, बोळाऊ बीटिया धुरज चोवड कस ग्रपर। —पा. प्र.

बोळाणो, बोळावौ – देखो 'बौळाणौ, बौळावौ' (रू. भे)
उ०—१ पायक ग्रस रथ पथ अपारा, हाथी पाखरवत हजारा। वहतै सीतकाळ बोळायो, ग्रो वैसाख अजेगढ आयो। —रा. रू.
उ०— २ रुतिया दोय होवदिया इक काळ बोळाई।
—केसोदास गाडण
उ०—३ होळै सीक वोल्या—हाको मत कर। मतै मतै लोग हूकेला जको हाथै आई चीज पाणी माय सूं काढ ले जावेला। म्हैं कंवू तो थू किसो साच मानैला कै ग्रो सगळो धन-माल म्हारौ इज है। म्हारै साथै इज ग्रो छळ व्हियो। मोळी सेठाणी धोखा में आय सगळी माया बोळाय दी। —फुलवाड़ी

उ०—४ सेठ अटकता अटकता बोल्या—काले सूं ईं आपरी डणियारी देख्या पछे आंख्यां साम्ही बीजळियां खिवै। माया रा लोभ मैं म्हैं तो रूप री कदे गिनरत ई नी करी। अर गिनरत करै जैडो रूप धकै ई नी आयो। पोहरी देवण री भलाई में माया तो सगळी बोळाईजगी। फगत सोना रा अं पारसनाथजी बच्या। —फुलवाडी

उ०—५ तरै सोढी कहै—थांहरै ढोल री पछेवडो १ मोनूं दीजै इण पछेवडा री दरसण करीस नै मोहल में वैठी रहीस। नै अेक ओ मनभोळियो ढूंम अठै राखो। ओ मोहल नीचै ऊभो थाहरो जस गावसी, सु सुणीस ने वैठी दिन बोळाइस। —नैणसी

बोळाणहार, हारो (हारी), बोळाणियो—वि०।

बोळायोडो—भू० का० कृ०।

बोळाईजणो बोळाईजबो—कर्म वा०।

बोलाणो, बोलावो—१ देखो 'वौळाणो, बोळावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलाणो, बुलावो' (रू. भे.)

उ०—साह गयो दरगाह सूं, निज रहवासि अनेह। हितकर बोलाया हितू, गोसळ अतर गेह। —रा रू

बोलाणहार, हारो (हारी), बोलाणियो—वि०।

बोलायोडो—भू० का० कृ०।

बोलाईजणो, बोलाईजबो—कर्म वा०।

बोळायोडो—देखो 'वौळायोडो' (रू भे.)

(स्त्री बोळायोडी)

बोलायोडो—देखो वौळायोडो' (रू. भे)

२ देखो 'बुलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोलायोडी)

बोळावणो, बोळाववो—देखो 'वौळाणो, वौळावो' (रू भे.)

उ०—१ एकण जीभ करि कितरा हेक गुण कह्या जाय। वळे मारवणी रै सातवीसी सहेल्यां छै तिकै विण माहा सुघड छै, त्या सु मारवणी वात विगत करनै दिन बोळावै छै। —ढो. मा.

उ०—२ सू किसा-अेक सरदार जुवान छै? पाकां पाका वरियांमा नू, भजरायलां नू, सीवरा नू, डाणहुला डाकियां नू, फरहदता नूं, लोह घडा लाह पर डाहलां नू, सोसी देता, कटारी उगराइ खाता, पचासां बोळावियां आर्थे आध वाढ उतरियां, जियारा पांच-पांच हजार दांम पाटा-बधाई रा पाटेदार खाय चुका छै। —रा. सा. स.

उ०—३ सजण बोळावै हूं वळी, ऊभी मंदिर पूठ। हिवडो काचा तार ज्यू, गयो लडगां तूट। —अग्यात

बोळावणहार, हारो (हारी), बोळावणियो—वि०।

बोळाविमोड़ो, बोळावियोडो, बोळाव्योडो—भू० का० कृ०।

बोळावीजणो, बोळावीजबो—कर्म वा०।

बोलावणो, बोलाववो—१ देखो 'वौळाणो, वौळावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलाणो, बुलावो' (रू. भे.)

उ०—मंदिर हूता ऊतरथउ, रवि ऊगतइ वार। मागणहार बोलाविया, पूछण तास विचार। —ढो मा.

बोलावणहार, हारो (हारी), बोलावणियो—वि०।

बोलाविमोड़ो, बोलावियोडो, बोलाव्योडो—भू० का० कृ०।

बोलावीजणो, बोलावीजबो—कर्म वा०।

बोळावियोडो—देखो 'वौळायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळावियोडी)

बोलावियोड़ो—१ देखो 'वौळायोडो' (रू भे.)

२ देखो 'बुलायोडो' (रू भे.)

(स्त्री बोलावियोडी)

बोळावी, बोळावू, बोळावो—देखो 'वौळावो' (रू भे.)

उ०—१ बोळावू वळता कहै, ढोला पाछो आय। मारू सु लहूडी वहन, तो परणास्यां जाय। —ढो. मा.

उ०—२ बोळावू वेदल मनै, पुगळ पुहुता जास। मारवणी दीवा-घरी, रहिया ढोला पास। —ढो. मा

बोलाह—१ देखो 'वोल्लाह' (रू. भे.)

२ देखो 'वोल्लाह' (रू. भे.)

बोळियोड़ो—१ देखो 'बोळियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'वौळियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळियोडी)

बोलियोडो—१ देखो 'बोळियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वोलियोडो' (रू. भे)

३ देखो 'वौळियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बोलियोडी)

बोलींट, बोलींठ—देखो 'वोलीट' (रू भे)

बोलींटियो, बोलीठियो—देखो 'वोलीठ' (अल्पा., रू. भे.)

बोळी बोळी, बोळघू-दोळघू—देखो 'ओळी-दोळी' (रू. भे)

उ०—यण प्रकार हीरां सहेलियां मैं उछव करै छै। गवर कै बोळी-दोळी घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावैं छै, जोड का जवान की सगत पाऊ ओ वर चावै छै। हीरा को रूप देख सुरद मन मैं जाणै छै। धन्य छै ऊ पुरस नू इ नारि नै महल मैं माणै छै। —बगसीराम प्रोहित री बात

बोल्लाह—सं पु. [स.] १ वह घोड़ा जिसके दुम और अयाल के बाल पीले हो। (शा. हो.)

२ देखो 'बोल्लाह' (रू. भे.)

बोवड़णो, बोवड़बो—क्रि. अ.—बरसना।

उ०—१ फुणाटा झाट बीजड़ा भड़ा ऊफणा, खुणाटा बोवड़ै थाट खेदी। वादगीरा हदा साद घट वीचतै, भीम मुगळा मिळै नाद भेदी। —राव भीमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ घटा उमडै अपार सेन बोवड़ै विकट घाट, गीळा सरा मार घूमै ग्रमागळां लागा गाज। व्रजनाथ इद्र आगै राखी व्रज धार वूठा, सार वागा कोटी 'देवै' राखियौ सकाज। —महाराज देवसिंघ हाडा री गीत

बोवडणहार, हारौ (हारी), बोवड़णियौ—वि०।
बोवड़िओड़ो, बोवड़ियोड़ो, बोवड्योड़ो—भू० का० कृ०।
बोवड़ीजणो, बोवड़ीजवौ—भाव वा०।

बोवड़ियोड़ो—भू का. कृ.—वरसा हुआ।
(स्त्री बोवड़ियोड़ी)

बोवार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोवौ—स. पु.—करघे में नीचे की ओर का वह उपकरण जिसे कपड़े का ताना ठीक बैठाने के लिए पैर रखकर ऊपर-नीचे करते रहते हैं।

बोसरणो, बोसरवौ—क्रि० स० [स. व्युत्+सृज्] १ छोड़ना, त्यागना।
२ देखो 'विसरणौ विसरवौ' (रू. भे.)
बोसरणहार, हारौ (हारी), बोसरणियौ—वि०।
बोसरिओड़ो, बोसरियोड़ो, बोसरयोड़ो—भू० का० कृ०।
बोसरीजणो, बोसरीजवौ—भाव वा०।

बोसराणो, बोसरावौ—क्रि० स० [स. व्युत्+सृज्] त्याग कराना, छुड़ाना।

उ०—जब एक जणै सौ मण चणां भिखारयां नै लूटाय दिया। दूजै सौ मण रा भूगडा सेकाय दिया। तीजै सौ मण चणा री घूगरी रधाय खुवाइ। चौथै सौ मण चणा री रोट्यां कराय पाखती खाटो करायनै जीमाया। पाच मैं सौ मण चणा बोसराय नै हाथ लगावा रा त्याग किया। —भि द्र.

२ देखो 'विसराणो, विसरावौ' (रू. भे.)
बोसराणहार, हारौ (हारी), बोसराणियौ—वि०।
बोसरायोड़ो—भू० का० कृ०।
बोसराईजणो, बोसराईजवौ—कर्म वा०।

बोसरायोड़ो—भू का कृ—१ त्याग कराया हुआ, छुड़ाया हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बोसरायोड़ी)

बोसरावणो, बोसरावबौ—१ देखो 'बोसराणो, बोसरावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'विसराणो, विसरावौ' (रू. भे.)
बोसरावणहार, हारौ (हारी), बोसरावणियौ—वि०।
बोसराविओड़ो, बोसरावियोड़ो, बोसराव्योड़ो—भू० का० कृ०।
बोसरावीजणो, बोसरावीजवौ—कर्म वा०।

बोसरावियोड़ो—देखो 'बोसरायोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बोसरावियोड़ी)

बोसरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बोसरियोड़ी)

बोसरू—सं पु. [सं. व्युत्+ससर्ग] त्याग, परित्याग।

उ०—१ भव अनत भमता थकां, कीया देह सबध। त्रिविध त्रिविधं करी बोसरू, तिण सु प्रतिबध। —स. कु.

उ०—२ इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र। त्रिविध त्रिविध करि बोसरू, करू जनम पवित्र। —स. कु

बोह—देखो बोह' (रू भे.)

उ०—हुवै मगळ धमळ दमगळ वीर-हक, रग वूठो कमध जग रूठो। सघण वूठो कुसुम बोह जिण मोड सिर, विक्रम उण मौड सिर लोह वूठो। —बांकीदास आसियो

२ देखो 'बौध' (रू भे)

बोहडणो, बोहडवौ—देखो 'बहोडणो, बहोड़वौ' (रू. भे)
बोहडणहार, हारौ (हारी), बोहडणियौ—वि०।
बोहडिओड़ो, बोहडियोड़ो, बोहड्योड़ो—भू० का० कृ०।
बोहड़ीजणो, बोहड़ीजवौ—कर्म वा०।

बोहडाणो, बोहडावौ—देखो 'बहोडाणो, बहोडावौ' (रू भे)
बोहडाणहार, हारौ (हारी), बोहड़ाणियौ—वि०।
बोहड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।
बोहडाईजणो, बोहडाईजवौ—कर्म वा०।

बोहडायोड़ो—देखो 'बहोडायोड़ो' (रू भे.)
(स्त्री. बोहडायोड़ी)

बोहडियोड़ो—देखो बहोडियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहडियोड़ी)

बोहत—देखो 'बहुत' (रू. भे)

उ०—१ छद कह्या त बोहत आवै, खरतर को पतियायौ। हिव की वेळा हिव न भाग्यो, सकि रह्यौ कदरायौ। —ध. व. ग्र.

उ०—२ अमैपुरा जेवत सूर बागल नरेसर, अहरराव राठोड़ करत करहा दानेसुर। जलखेड़िया कमधज सघ्र चदेल सोहु वारिया, वरै सुमत बोहत सूरमा अ-लिखत पारक वीर कपाळिया। —रा. व. वि.

वोहतपत, वोहतपति, वोहतपती—स. पु —पाण्डु पुत्र अर्जुन का नाम।
उ०—पुस्तक नाखे परा, पंडित सोय वेद पुराण। भारथ भज्जे भीम, वोहतपत चूके वाणां। —चोथ वीठू

वोहतर—देखो 'बग्रोत्तर' (रू भे)
वोहदीपी—देखो 'वोहदीपी' (रू. भे.)
वोहनामी—देखो 'बहुनामी' (रू. भे.)

उ०—आयो गुर जंभ अचभ अजोनी, धरम धुराऊ दाखवियो। सभरायळ सामी अतरजामी, वोहनामी हरि हेत कियो। —गोकळजी

वोहरगी—देखो 'बहुरगी' (रू. भे.)
वोहरगत—देखो 'वोरगत' (रू भे)
वोहराळ—देखो 'वोहराळ' (रू. भे.)
वोहरूपी—१ देखो 'बहुरूपी' (रू. भे.)
२ देखो 'वोहरूपी' (रू भे.)
वोहरो—देखो 'वो'रो' (रू. भे)

उ०—आ गाथा सुण नै मोजीरामजी वोहरो बोल्यो—अरे जसू उरहो आव रे घर तो लूंट लियो नै माथै वलै डड करै। ज्यूं भीखणजी महाव्रत तो पाचूं ई परहा भ'गा कहे। अनै वलै चौमासी रो दड कहे छै। —भि. द्र.

वोहळणो, वोहळबो—१ देखो 'बोळणो, वोळबो' (रू भे.)
२ देखो 'वोहळणो, वोहळबो' (रू. भे)
३ देखो 'वोळणो, वोळबो'।
वोहळणहार, हारो (हारी), वोहळणियो—वि०।
वोहळिप्रोडो, वोहळियोड़ो, वोहळ्योडो—भू० का० कृ०।
वोहळीजणो, वोहळीजबो—कर्म वा०।

वोहळाणो, वोहळाबो—१ देखो 'वोहळाणो, वोहळाबो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळाणो, वोळाबो' (रू. भे)
वोहळाणहार, हारो (हारी), वोहळाणियो—वि०।
वोहळायोडो—भू० का० कृ०।
वोहळाईजणो, वोहळाईजबो—कर्म वा०।

वोहळायोडो—१ देखो 'वोहळायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वोळायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. वोहळायोडी)

वोहळियोडो—१ देखो 'बोळियोडो' (रू भे)
२ देखो 'वोहळियोडो' (रू भे)
३ देखो 'वोळियोडो' (रू भे)
(स्त्री. वोहळियोडी)

वोहळो—देखो 'वो'ळो' (रू भे.)

उ०—कहो (है) वाट, राजा सुणो, दीठा वोहळा देस। रामत ख्याल विनोद रस, नारी निरूपम वेस। —ढो. मा.

वोहार - देखो व्यवहार' (रू. भे)

उ०—उपज्या जिणम्या भी मुवा, भ्रो जग को वोहार। सतगुर जाणि विचारियो, मरै न दूजी वार। —परमानद वणियाल

वोहि, वोहित, वोहिति, वोहित्य, वोहिथ—१ देखो 'वोहित्य' (रू. भे.) (ह. नां. मा)
२ देखो 'वहुत' (रू भे.)

वोही—देखो 'वही' (रू. भे.)

उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत विराजणी आप। वोही बगळो मणखावणो, तो विण घणो 'प्रताप'। —जैतदान बारहठ

उ०—२ सीतळ छांय कदम की छोडी, धूप सहा अति भारा। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, वोही प्राण पियारा। —मीरां

वोहोत—देखो 'वहुत' (रू. भे.)
वोहोनामी—देखो 'बहुनामी' (रू. भे)
वोहोळो—देखो 'वो'ळो' (रू भे)
वोहो—देखो 'वहुत' (रू. भे)

वौ—स. पु.—१ पत्ता, पान। (एका)
२ तलवार, खड्ग। („)
३ पुत्र, बेटा। („)
४ जुलाहे का एक प्रकार का औजार विशेष जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठाते और गिराते हैं। यह दो नरसलों का होता है जिसके ऊपर नीचे तागे बधे रहते हैं और जिनके बीच मे तागे एक एक करके निकलते रहते हैं।

सर्व.—१ वह।

उ०—१ मुल्क रो उतरादी काकड माथै, गोडा-गोडां लग बरफ में ऊभे, उणै भ्रो कागद पढ्यो तो उणरी छाती फूलीजगी। वौ सोचण लागो—राजा फूल जिसी कोमळ अर वज्जर जिसी कठोर, चाद जिसी फूटरी अर चडिका सी विकराळ। अठै उणरै सागै वा ई बदूक लियां ऊभी व्हैती तो किसोक नामी रैवतो। —अमर-चूनडी

उ०—२ जाणै वौ न जायो जमदूत जाडै, पुराणै अढारै कियो वूम पाडै। रस्समे समर्थ कह्यो सन्नमत्थै, समवाद गाता ग्रहै पार सत्थै। —ना. द.

उ०—३ अबरा नै सुख आपरो, वौ सुख मानै आप। वानै इण धारण वहै, तै छानै न 'प्रताप'। —जैतदान बारहठ

२ उस।

उ०—मारग में भगतणियां रा डेरा आया। अेक रूपाळी भगतण सूं चार-पांचेक मोट्यार वोछरडाया करता हा। चौधरण रै सागै सागडी हो। वो वा मोट्यारा नै वरजिया कै किणी भली लुगाई सूं छेड़छाड़ करणो वेजा वात है। —फुलवाडी

रू. भे.—वो, वोव।

वोगर, वोघर—सं. पु.—वाघ के शरीर की गंध।

वोड़णो, वोड़वो—क्रि० अ०—१ निवृत्त होना।

उ०—जिसं दखणी फिरै ताई आय वागा। तिण री मा'राज सूं मालम हुई सेवा सूं-वोड़तां। पीछै मा'राज पोसाक करी अरू पाघ सदा जूडै सू बांधता सू उणदिन ऊतावळ में बाध सकिया नही, यू हीज पाघ मस्तक ऊपर देय कमर बाधी। —द. दा.

२ देखो 'वोडणो, वोडवो' (रू. भे.)

३ देखो 'वहोडणो, वहोडवो' (रू भे.)

वोडणहार, हारो (हारी), वोडणियो—वि०।

वोडिग्रोडो, वोड़ियोड़ो, वोड़घोडो—भू० का० कृ०।

वोडीजणो, वोडीजवो—भाव वा०।

वोडाणो, वोड़ाबो—क्रि० स०—१ निवृत्त करना।

२ देखो 'वोडाणो, वोडावो' (रू भे)

३ देखो 'वहोडाणो, वहोडावो' (रू भे)

वोडाणहार, हारो (हारी), वोडाणियो—वि०।

वोडायोडो—भू० का० कृ०।

वोडाईजणो, वोडाईजवो—कर्म वा०।

वोडायोड़ो—भू० का० कृ०—१ निवृत्त किया हुआ।

२ देखो 'वोडायोडो' (रू. भे)

३ देखो 'वहोडायोडो' (रू भे)

(स्त्री वोडायोडी)

वोडियोडो—भू का. कृ.—१ निवृत्त हुवा हुआ।

२ देखो 'वोडियोडो' (रू भे)

३ देखो 'वहोडियोडो' (रू भे)

(स्त्री वोडियोडी)

वोछाड़, वोछार, वोछाळ—देखो वोछाड' (रू भे)

वोढउर, वोढपुर, वोढपूरो—स पु—नल राजा के द्वारा विजित एक नगर का नाम।

उ०—महारास्ट्र कामाक्ष आभीर, कच पापातिक निरमदा नीर। वोढउर अनइ भलू स्रीमाल, दक्षणदेसि जीपिआ भूपाल। —नळदवदंती रास

वोत—देखो 'वहुत' (रू. भे)

वोपार—देखो 'व्यापार' (रू भे)

उ०—१ जनहरिया हरि नाव की, पूजी विन वोपार। खाई कव खूटै नही, पाई वसत अपार। —अनुभववाणी

उ०—२ वापडा नासतिक मिनख साची कैया करै है कै—दायजो देय'र वेटी री मौत मोल लेवणी है। धन रा ठोकाकड लोभी लोग मरज-मादगी रै समै भी वहू री हीडी क्यूं करै? वारो तो ओ वोपार है कै—मोकळी वहुवा मारै अर मोकळो धन कमावै। —दसदोख

उ०—३ हीरा री कीमत तो जमी सू वारै निकळिया पछै व्है। म्हारे साथै वोपार में इणरो थोडो घणो सीर राख देवूला। खासी भली पूजी भेळी व्हिया न्यारी दुकान मडाय देवूला। आज तो थूं सेठा रै चिणायोड़ी प्याऊ माथै वैठी पगार लेवै, पछै थू खुद गाव गाव प्याऊ लगावण जोग वण जावैला। —फुलवाडी

उ०—४ पड गहणा लियै दियै नह पाचा, सत्र खत नह दाखै ग्रह सार। सोड तणा वापार सरखो, वळ माडिवो 'अखै' वोपार। —दुरसो आढो

वोपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—१ असी संगति साध की, ज्यू वोपारी हाट। जनहरिया जब गाहकु, सवद मिळावै साट। —अनुभववाणी

उ०—२ तद खाफरो राजारै दरवार वडै लाजमै पोसाख सूं जाय मुजरो कियो। राजा पूछियो—तू कुण छै? अरज कीवी—वोपारी छू, रामवाजार में दुकान छै, हजार दस वरस दिन मैं जगात रा भरू छूं, राजा फुरमावो किसै कारज आया छो सू कहो। —राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

उ०—३ तद राजा पूछी—साह! थारी अरज कहि, खाफरै अरज करी—जीव री आंमा पाऊ, कवल पाऊ तो अरज करू। राजा फुरमायो—तूं तो वोपारी छै तै—मैं इसी। जीव री किसी तकसीर छै? काई जगात री चोरी आयी छै तो तकसीर माफ छै, म्हा रो कवल छै। —राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

वोम—देखो 'व्योम' (रू भे)

उ०—१ नमो रूपनद्दा सवद्दा रसीली, नमो लच्छि रंभा नमो वोम लीली। नमो मोहणी कमळा मूख मूंनी, नमो धोम धूतारणी सम धूनी। —मा. वचनिका

ऊ०—२ वणै जेथ तेथा तोहि जोति वासी, प्रिथी वोम सामद्र तूंही प्रकासी। नही ठौड तू जेथ तै दाख नेसं, अखै इद ऊभा आदेस आदेस। —मा वचनिका

वोर—स. स्त्री—विल्ली या वकरी का ऋतुमति होने की क्रिया।

वोरणो, वोरवो—देखो 'बुहारणो, बुहारवो' (रू भे)

वोरणहार, हारो (हारी), वोरणियो—वि०।

वोरिग्रोडो, वोरियोडो, वोरघोडो—भू० का० कृ०।

वोरीजणो, वोरीजवो—कर्म वा०।

वौराणो, वौरावौ-क्रि० अ०—१ बिल्ली या बकरी का गर्भधारण के लिए ऋतुमति होना।

२ देखो 'बुहारणो, बुहारवो' (रू. भे.) ३ देखो 'बौराणो, बौरावो' (रू. भे.)

वौराणहार, हारो (हारी), वौराणियो—वि०।

वौरायोडो—भू० का० कृ०।

वौराईजणो, वौराईजवो—कर्म वा०।

वौरायोडी-स. स्त्री.—ऋतुमति हुवी हुई बकरी या बिल्ली।

वौरायोडौ—१ देखो 'बुहरायोडो' (रू. भे.) २ देखो 'बौरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वौरायोडी)

वौरावणो, वौराववो—१ देखो 'बुहराणो, बुहरावो' (रू. भे.)

२ देखो 'वौराणो, वौरावो' (रू. भे.)

वौरावणहार, हारो (हारी), वौरावणियो—वि०।

वौराविम्रोड़ो, वौरावियोड़ो, वौराव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वौरावीजणो, वौरावीजवो—कर्म वा०।

वौरावियोडौ—१ देखो बुहरायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वौरायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वौरावियोडी)

वौरियोडौ—देखो 'बुहारियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वौरियोडी)

वोळणो, वोळवो-क्रि० अ०—१ पहुँचना।

२ भेजना।

३ उस पार जाना ४ लांघना, पार करना।

५ विदा होना।

६ व्यतीत होना, बीतना।

उ०—फूल कथ रै कोट में राज करै छै। घणा दिन वोळिया। राज जमियो। फूल कहण लागो, 'म्हारै बाप री वैर, धरणि नु मैं मारणी।' ताहरा प्रधान बोलियो—राज, थांहरै घोडा नही। तो कहियो—घोडा ल्यो। —लाखै फूलांणी री वात

७ खोना, गवांना, गुमाना।

८ ठगा जाना व अन्य को ठगना।

क्रि० स०—९ उपभोग करना, आनन्द लूटना।

१० सहार करना, मारना।

११ नाश करना, नष्ट करना।

१२ व्यतीत करना, बीताना।

उ०—१ दत देता धन माणतां, जगि सुणतां जसवास। वसुधा इण पर वौळिया, नवकोटी खट-मास। —गु. रू. ब.

उ०—२ मार सार मारकां इळा हुवै आपाणी, मुहि लगां हैं धुरां, जेह रमखी तै मांणी। वर केता वोळिया, कळह केवाई कुनारी, पुरख न परणी किणिह, आद जुगादि कुमारी। —गु रू. बं.

१३ मृत प्राणी के शव को दफनाना।

१४ रक्षा करना, हिफाजत करना।

१५ देखो 'वोळणो, वोळवो' (रू. भे)

वोळणहार, हारो (हारी), वोळणियो—वि०।

वोळिओडो, वोळियोडो, वोळ्योडो—भू० का० कृ०।

वोळीजणो, वोळीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।

वोळवणो, वोळववो, वोहळणो, वोहळवो, वोळणो, वोळवो, वोळवणो, वोळववो, वउळणो, वउळवो, वउलणो, वउलवो, वोहळणो, वोहळवो, वोळपणो, वोळवो, वोहळणो, वोहळवो—रू. भे.।

वोळवणो, वोळववो—देखो 'वोळणो, वोळवो' (रू. भे)

उ०—भी वरखा रित वोळवी वोती सरद अदूंद। हिम रुत आवी वीचव्यौ, फेर प्रगट्टघो फद। —रा रू

वोळवणहार, हारो (हारी,) वोळवणियो—वि०।

वोळविम्रोडो, वोळवियोडो, वोळव्योडो—भू० का० कृ०।

वोळवीजणो, वोळवीजवो—कर्म वा०, भाव वा०।

वोळवियोडो—देखो 'वोळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वोळवियोडी)

वोलाऊ—देखो 'वोळावौ' (रू भे)

वोळाणो, वोळावो-क्रि० स० (वोळणो, वोळवो क्रिया का प्रे. रू) १ बिताना, गुजारना।

उ०—१ वरसाळो इण पर वोळायो, और न को वरसात जणायो। उठी सरद सीतरित आई, सकळ दळै विणि सोभ सफाई। —रा रू

उ०—२ वात हुई ग्रीखम वोळाई, ऊपर धुर वरखा रुत आई। असतखांन डर थयो अचिंतो, विचित्रा तणो सोच सुण वीतो। —रा. रू.

२ पहुंचाना।

३ विदा देना, विदा करना।

उ०—१ नर जांणै दिन जात है, दिन जांणै नर जाय। गई वोळावणहारियां, गणगोर वोळाय वोळाय। —अग्यात

उ०—२ दळकार हठै दखणाध रा, दिल्ली फौजा निरबही। फिरि जाण अपूठा बाहुडै, जांन वोळाए मादही। —गु रू. बं.

४ भिजवाना, भेजना।

५ पीछा करना या कराना, अनुगमन करना या कराना।

६ खोना, गुमाना।

७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया करना/कराना ।
८ उपभोग करना/कराना, आनन्द लूटना/लूटाना ।
९ उस पार भेजना १० लघाना, पार कराना या लांघना ।
११ सहार करना/कराना, मारना/मरवाना ।
१२ नाश करना/कराना, नष्ट करना/कराना ।
१३ खर्च करना ।
१४ रक्षा करना, हिफाजत करना ।
१५ ठगाना ।
१६ लोटाना, लौटने को प्रवृत्त करना ।
१७ देखो 'वोळाणो, वोळावो' (रू. भे.)
वोळाणहार, हारो (हारी), वोळाणियो—वि० ।
वोळायोडो—भू० का० कृ० ।
वोळाईजणो, वोळाईजवो—कर्म वा० ।
बोळावणो, वोळाववो, वोह्ळाणो, वोहळावो, वोहळावणो, वोह्ळावो, वोळाणो, वोळावो, वोळावणो, वोळाववो, वोहळाणो, वोहळावो, वोहळावणो, वोह्ळाववो, वउळाणो, वउळावो, वउलाणो वउलावो, वउळावणो, वउळाववो, वळवणो, वळववो, ववळाणो, ववळावो, वुळाणो, वुळावो, वुळावणो, वुळाववो, वोळाणो, वोळावो, वोलाणो, वोलावो, वोळावणो, वोळाववो, वोलावणो वोलाववो, वोह्ळाणो, वोहळावो, वोहळावणो, वोह्ळाववो वोळावणो, वोळाववो, वोहळाणो, वोहुळावो, वोहळावणो, वोहुळाववो—रू. भे ।
वोलाणो, वोलावो—देखो 'वुलाणो, वुलावो' (रू. भे)
वोलाणहार, हारो (हारी), वोलाणियो—वि० ।
वोलायोडो—भू० का० कृ० ।
वोलाईजणो वोलाईजवो—कर्म वा० ।
वोलायोडो—देखो 'वुलायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वोलायोडी)
वोळायोड़ो—भू० का० कृ०—१ विताया हुआ, गुजारा हुआ । २ पहुँचाया हुआ । ३ विदा दिया या किया हुआ । ४ भेजा हुआ या भिजवाया हुआ । ५ पीछा किया या करवाया हुआ, अनुगमन किया या कराया हुआ । ६ खोया हुआ, गुमाया हुआ । ७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया किया या करवाया हुआ । ८ उपभोग किया या करवाया हुआ, आनन्द लूटाया हुआ । ९ उस पार भेजा हुआ । १० लाघा हुआ, लघाया हुआ, पार किया हुआ । ११ संहार किया/कराया हुआ, मारा/मरवाया हुआ । १२ नाश किया/कराया हुआ, नष्ट किया हुआ/कराया हुआ । १३ खर्च किया हुआ । १४ रक्षा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ । १५ ठगाया हुआ । १६ लौटाया हुआ, लौटाने को प्रवृत्त किया हुआ । १७ देखो 'वोळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वोळायोड़ी)

वोळावणी—स. स्त्री.—१ विदा देने की क्रिया, विदाई ।
२ मृत प्राणी के शव को अन्त्येष्टी क्रिया ।
३ गणगोर को विदा देने का दिन ।
रू भे.—वोळावणी, वोळावणी, वोल्हावणी ।
वोळावणो, वोळाववो—१ देखो 'वोळाणो, वोळावो' (रू भे.)
उ०—१ नर जाणे दिन जात है, दिन जांणे नर जाय । गई वोळावणहारियां, गणगोर वोळाय वोळाय । —अज्ञात
२ देखो 'वोळाणो, वोळावो' (रू. भे.)
वोळावणहार, हारो (हारी), वोळावणियो—वि० ।
वोळावियोडो, वोळावियोडो, वोळाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वोळावीजणो, वोळावीजवो—कर्म वा० ।
वोलावणो, वोलाववो—देखो 'वुलाणो, वुलावो' (रू. भे.)
वोलावणहार हारो (हारी), वोलावणियो—वि० ।
वोलावियोडो, वोलावियोडो, वोलाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वोलावीजणो, वोलावीजवो—कर्म वा० ।
वोळावियोड़ो—१ देखो 'वोळायोडो' (रू भे.)
२ देखो 'वोळायोडो' (रू. भे)
(स्त्री वोळावियोडी)
वोलावियोड़ो—देखो 'वुलायोडो' (रू. भे)
(स्त्री वोलावियोडी)
वोळावो, वोळावू, वोळावो—स. पु—१ विश्राम स्थान, ठहरने का स्थान ।
उ०—ओ हस नडो निवांण, ओ हस कोडो नेवरो । ओ मो माही-ठाण, ओ वोळावो सजणां । —पदमै चारण री वात
२ सम्मान पूर्वक विदा देने की क्रिया ।
३ वह व्यक्ति जिसे राह में डाकुओं आदि से रक्षा के लिए साथ ले लिया जाता है, राह-रक्षक ।
उ०—१ किय ढाळो पूनागर कनै, आय खवर यण रैविया । सो तुरग असी ऊठा संहत, है वोळावो खोचियां । —पा. प्र.
उ०—२ गैरी सू दोय गैर, कश आप हूतां करी । वोलावै री बैर वाप वैर हूँना वहत । —पा. प्र.
उ०—३ अलवाणि आपार, मिळै कोळी मूंछाळा, सोढा मिळिया सरस वळै वोळावै वाळा । जत नायक जोइया, वेढ घायक वाडेला, गिर मिणिया गामेत तेग वघा तूवेला । —पा. प्र.
४ देखो 'वुलावो' (रू भे)
उ०—आता कहै न आव, वळता वोळावो नही । तिण सज्जण घर पाव, वळै न दीजै, वीभरा । —वीभरै अहीर री वात

रू. भे.—वोळाऊ, वोळावी, वोळावू, वोळावी, वोळायत; वोळाक, वउळावू, वळावी, वोळवी, वोळावू, वोळावो, वोल्हावो ।

वोळियोडो-भू. का कृ.—१ पहुँचा हुआ। २ भेजा हुवा। ३ उस पार गया हुआ। ४ लाघा हुआ, पार किया हुआ। ५ विदा हुवा हुआ। ६ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ। ७ खोया हुआ, गवाया हुआ, गुमाया हुआ। ८ ठगाया हुआ या अन्य को ठगा हुआ। ९ उपभोग किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ। १० सहार किया हुआ, मारा हुआ। ११ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ। १२ व्यतीत किया हुआ, विताया हुआ। १३ मृत प्राणी के शव को दफनाया हुआ। १४ रक्षा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ। १५ देखो 'वोलियोडो' (रू भे)
(स्त्री वोळियोडी)

वौ'ळौ—देखो 'वौ'ळौ' (रू भे)

वोळहाणो, वोळहावो—१ देखो 'वोळाणी, वोळावो' (रू भे.)
उ०—कोई वीर वालक आपरै पिता री वैर लैण सारू समिझयो सो उण वालक वीर नै समझावै कि वरस पांच तो वोळ्हाया अनै छठो जांण री अवै जेफ नही इण छट्ठ वरस पछै सातमो वरस लागसी तद थू घोड असवार हो जासी जद थारा पिता री वैर लेजै। —वी स. टी.
२ देखो 'वोळाणी, वोळावो' (रू. भे.)
वोळ्हाणहार, हारो (हारी), वोळ्हाणियो—वि० ।
वोळ्हायोडो—भू० का० कृ० ।
वोळ्हाईजणो, वोळ्हाईजवो—कर्म वा० ।

वोल्हाणो, वोल्हावो—देखो 'वुलाणी, वुलावो' (रू. भे)
वोल्हाणहार, हारो (हारी), वोल्हाणियो—वि० ।
वोल्हायोडो—भू० का० कृ० ।
वोल्हाईजणो, वोल्हाईजवो—कर्म वा० ।

वोळहायोडो—१ देखो 'वोळायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वोळायोडो' (रू. भे)
(स्त्री वोळ्हायोडी)

वोल्हायोडो—देखो 'वुलायोडो' (रू भे)
(स्त्री वोल्हायोडी (रू. भे.)

वोळ्हावणी—देखो 'वोळावणी' (रू भे)

वोळ्हावणो, वोळ्हाववो—१ देखो 'वोळाणी, वोळावो' (रू भे)
२ देखो 'वोळाणी, वोळावो' (रू भे.)
वोळ्हावणहार, हारो (हारी), वोळ्हावणियो—वि० ।
वोळ्हाविओडो, वोळ्हावियोडो, वोळ्हाव्योडो—भू० का० कृ० ।
वोळ्हावीजणो, वोळ्हावीजवो—कर्म वा० ।

वोल्हावणो, वोल्हाववो—देखो 'वुलाणी, वुलावो' (रू भे.)
वोल्हावणहार, हारो (हारी), वोल्हावणियो—वि० ।
वोल्हाविओडो, वोल्हावियोडो, वोल्हाव्योडो—भू० का० कृ०
वोल्हावीजणो, वोल्हावीजवो—कर्म वा० ।

वोळ्हावियोडो—१ देखो 'वोळायोडो' (रू भे)
२ देखो 'वोळायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वोळ्हावियोडी)

वोल्हावियोडो—देखो 'वुलायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. वोल्हावियोडी)

वोळ्हावो—१ देखो 'वोळावो' (रू. भे)
२ देखो 'वुलावो' (रू. भे.)

वोल्हावो—देखो 'वुलावो' (रू भे.)

वोव—देखो 'वो' (४) (रू भे)

वोवार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

वोवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे)

वोवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे)

वोह—१ देखो 'वोह' (रू भे)
उ०—मुख तं मीठा बोलणा, अंदर भरिया खार। वाकै कपट का, हरिया वोह वोहवार। —अनुभव
२ देखो 'वोध' (रू भे)

वोहत—देखो 'वहुत' (रू. भे.)

वोहनामी—देखो 'वहुनामी' (रू भे)

वोहरणो, वोहरवो—क्रि० अ०—१ घूमना, फिरना ।
२ देखो 'वुहारणो, वुहारवो' (रू. भे)
उ०—माया सोदै मानवी, केता वोहरै हाट। हरीया हां तणी, ताहि न जाणै साट। —अनुभववाणी
३ देखो 'व्यवहारणो, व्यवहारवो' (रू भे.)
वोहरणहार, हारो (हारी), वोहरणियो—वि० ।
वोहरिओडो, वोहरियोडो, वोहरयोडो—भू० का० कृ० ।
वोहरीजणो, वोहरीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

वोहराणो वोहरावो—देखो 'वुहराणी, वुहरावो' (रू. भे.)
वोहराणहार, हारो (हारी), वोहराणियो—वि० ।
वोहरायोडो—भू० का० कृ० ।
वोहराईजणो, वोहराईजवो—कर्म वा० ।

वोहरायोडो—देखो 'वुहरायोडो' (रू भे)
(स्त्री. वोहरायोडी)

वोहरावणो, वोहराववो—देखो 'वुहराणी, वुहरावो' (रू भे)
वोहरावणहार, हारो (हारी), वोहरावणियो—वि० ।
वोहराविओडो, वोहरावियोडो, वोहराव्योडो—भू० का० कृ० ।
वोहरावीजणो, वोहरावीजवो—कर्म वा० ।

वोहराविथोड़ो—देखो 'वुहरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वोराविथोडी)

वोहरो—देखो 'वो'रो' (रू भे.)

उ०—१ भला हम विणजारा पूरै साह का, विणज करण वोपारी। भला खोटा खोटा विणज वोहरं, माणिका दावो पारो।
—दीन सुदरदी

उ०—२ साच सिदक जमले वोहरां, विसनो विसन जपाय। विसन जप्या सुख सापजै, जम गजण ना छुटाय। —वील्होजी

वोहळाणो, वोहळावो—१ देखो 'वोळाणो, वोळावो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळाणो, बोळावो' (रू. भे.)

वोहळाणहार, हारो (हारी), वोहळाणिवो—वि०।
वोहळायोडो—भू० का० कृ०।
वोहळाईजणो, वोहळाईजवो—कर्म वा०।

वोहळायोडो—देखो 'वोळायोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वोहळायोडी)

वोहळावणो, वोहळाववो—१ देखो 'वोळाणो, वोळावो' (रू भे)
२ देखो 'वोळाणो, वोळावो' (रू. भे.)

वोहळावणहार, हारो (हारी), वोहळावणियो—वि०।
वोहळाविम्रोडो, वोहळावियोडो, वोहळाग्योडो—भू० का० कृ०।
वोहळावीजणो, वोहळावीजवो—कर्म वा०।

वोहळावियोडो—१ देखो 'वोळायोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. वोहळावियोडी)

वोहळो—देखो 'वो'ळो' (रू भे)

वोहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—१ मुख तैं मीठा वोलणा, अदर भरिया खार। याकै कूड'र कपट का, हरिया वीह वोहवार। —अनुभववांणी

उ०—२ हरिया अैसा को मिळै, साहिव का सचियार। झूठ न वाकै कपट को, रच नही वोहवार। —अनुभववाणी

वोहवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे)

वोहआरी, वौहारी—देखो व्यवहारी' (रू भे)

वोहि, वोहित, वोहिति वोहित्य, वोहिय—देखो 'बोहित' (रू. भे.)

वोहरो—देखो 'वो'रो' (रू. भे)

वोहोवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—वाजै हाक वीर धुन वेदा, चवै महारिख मंगळाचार। घड भड वेहड आडियै धारै, वर लाडियै हुम्रो वोहोवार।
—दूदा नगराजोत री गीत

व्यंग, व्यग्य—स. पु. [स. व्यग्य] १ कोई लगती हुई वात. ताना, चुटकी।
२ व्यजना शक्ति से प्रकट होने वाला साधारण अर्थ से कुछ विशिष्ट अर्थ।

रू भे.—विंग, व्यंग।

व्यंगुळ, व्यंगुल—सं पु. [स. व्यगुल] एक अगुल का साठवां भाग।

व्यजक—वि० [सं.] प्रकट करने वाला, जाहिरकर्त्ता।
स. पु [स व्यजक] १ नाटकीय हाव भाव द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटन।
२ सकेत, चिन्ह, निशान।

व्यजण, व्यंजन—स. पु. [स. व्यजन] १ व्यक्त होने, या प्रकट करने का भाव या क्रिया।
२ छप्पन प्रकार के भोजन।

उ०—१ अर वरात रा प्राघूंणका नू महानस मैं वुलाय खटरस मय नाना व्यजनां री व्रात पूरण त्रिप्ति चखावियो। —व भा.

उ०—२ दादू आदर भाव का, मीठा लागै मींठ। विण आदर व्यजण वुरा, जीमण वाळा ठोठ। —दादूवाणी

उ०—३ अति व्यंजन पळ अन्न, रचै जीमण वछित रस। आसव छकि आपान, वर्णं जदुवस जथा वस। —व भा.

३ अच्छा भोजन, वढिया खाद्य पदार्थ।

उ०—रावल भगति भोजन तणी रे, सहुम्र कराई सभ। रूडी व्यजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे। —प च. चौ.

४ स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, अक्षर।
५ अग, अवयव।

रू भे—वजण, विंजण, विज्ज्न, ब्यंजन, व्यजन, वंजण, विंजण, विंजन, व्यिंजण, व्यिजन।

व्यजनदवादसी, व्यजनद्वादसी—सं. स्त्री. [स व्यजनद्वादशी] मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष, इस दिन विष्णु की पूजा कर अन्नकूट की तरह ही व्यजन बना कर विष्णु को भोग लगाया जाता है।

व्यंजनहारिका—स स्त्री. [सं] एक अमंगलकारी शक्ति जो नव वधुओं के द्वारा बनाये गये भोजन उठा ले जाती है। (पुराण)

व्यजना—स स्त्री. [स] १ प्रकट करने की क्रिया या भाव।
२ शब्द शक्ति के तीन भेदो में से वह शब्द शक्ति जो मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त मूल में छिपे हुए अकथित अर्थ को द्योतित करती है अर्थात् अभिधा व लक्षणा शक्तियो द्वारा अपने-अपने अर्थ को प्रकट करने के वाद व्यंगार्थ का वोध कराने वाली शक्ति।
रू भे.—व्यंजना।

व्यंतर—सं. पु.—१ भूत-प्रेत योनि विशेष या उक्त योनि के भूत।

२ एक देवयोनि विशेष या उक्त योनि के देव ।

उ०—१ भवनपति व्यतर नै जोतसी, भेद त्रिमाणिक पावै । सुर वर तै मिलनै सगला, नाम निर्वाणू भावै । —जयवांणी

उ०—२ भुवनपति वीस इद्र मिल्याजी, सोलह व्यतर सार । जोइ सहु दस वेमाणिय जुड्या जी, चौसठ इद्र सुविचार । —वृस्त.

उ०—३ वावन वीर किये अपनै वस, चौसट्ठि योगिनी पाय लगाइ । डाइण साइणि व्यतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ । —घ. व ग्र.

रू. भे.—वितर, वेतर, वेंतर, ।

अल्पा,—वितरियो, व्यतरियो ।

व्यतरियो—देखो 'व्यतर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—असुरादिक दस होय वाण व्यतरिया अट्ठ, जोइस पच वेमाणिय दुविहा सूत्तं दिट्ठ । पनरै भेदै सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनुमानादिक हिव एहनो कहिसु अधिकार । —वृस्त.

व्यद—स. [स. विंदु] १ वीर्य, बीज ।

उ०—भूमि परेखो ही नरां, कहा परेखो व्यद । भुय विन भला न नीपजै, कण अण तुरी, नरिंद । —जलडा मुलडा भाटी री वात

२ देखो 'वीद' (रू. भे.)

उ०—रीझवै हुसे रिखेस, देखवै रजै दिनेस । अभि लोह धार इद, धारणा वरंत व्यद । —सू प्र.

व्यंदु—देखो 'विंदु' (रू भे)

व्यंध्य—देखो 'विंध्य' (रू. भे)

उ०—अथ मदावर लोह नी साकल त्रोडि, आलानस्तभ मोडि, हस्तिसाल भांजि, पउतार गाजइ, कमाड फाडइ, मठ मदिर पाडिइ हस्ति नी यूथ स्मरइ, व्यध्य मनमाहि धरइ, वन मांहि सांचरइ । —व स.

व्यंब—देखो 'त्रिंब' (रू. भे.)

उ०—विचै नासिका अग्र मोती बिराजै, मनू राजकै द्वार सुक समाजै । वणै होट नीकै सुरग विसाळ, लसै विद्रुमी कोमळ व्यब लाल । —वगसीराम प्रोहित री वात

व्यंस—स पु. [स. व्यश] १ सिंहिका एव विप्रचित्ति के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

२ इन्द्र-शत्रु, एक दानव ।

व्यउ—देखो 'विवाई' (रू. भे) (अमरत)

व्यक्त—वि. [स.] १ प्रकट किया हुआ, जाहिर किया हुआ, प्रकटित ।

उ०—मिथ्याद्रस्टि तणी उत्थापक, व्यक्त गुणे सुविलासी । वलि विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति अभ्यासी । —वि. कु

२. साफ, स्पष्ट ।

उ०—.........इसिउ श्रीगौतमस्वामि दिशि तपनउ निधान, क्रियानउ भंडार, गुणनउ परमावधि, करुणा नउ निधि, वात्सल्य नउ समुद्र, नस.जाल व्यक्त्तां दीसइ, अस्थिपञ्जर हीला दसहूलता जिसा गांगठि अजाणि सूत्रधारि काष्ट मेलिउ सालसंचउ ठगठगतउ मेलीउ हुउ जिसिउ । —व. स.

रू. भे.—व्यगत ।

व्यक्ति, व्यक्ती—स. स्त्री. [स व्यक्ति] १ व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होने या करने की क्रिया या भाव ।

सं॰ पु.—२ मनुष्य, आदमी ।

उ०—गुनाली गाऊ मैं पुनि न विद्यताऊ पथ पहू, कुपथ्यादी वाह्न धरम पथ वाह्न गय धहूं । प्रनिग्या लेता ह्व पुण्य ब्रह्म वेता ल्ह्त पगूं, भगा सत्ती वत्ती विगुनदळ व्यक्ती हुत भगूं । —ऊ. का.

३ पिंड, शरीर।

रू. भे —व्यगति, व्यगती ।

व्यग्र—वि. [स.] १ व्याकुल, उद्विग्न, परेशान, दुःखी ।

उ०—गोवर के गननायक की गुन, गाय करी सु अपा गुनगारयो । गायन व्यग्र प्रलाप गह्यो जनु, ऊठ कै अग्र प्रलाप उचारयो । —ऊ का.

२ भयभीत, डरा हुआ, घबराया हुआ ।

३ किसी कार्य में लीन, आसक्त, मग्न ।

व्यग्रता—स. स्त्री. [स. व्यग्र+ता प्र.] व्यग्र होने की अवस्था या भाव ।

व्यजण, व्यजणक, व्यजन—स पु. [स. व्यजन] १ पंखा । (डि. को)

२ परो आदि से हवा खाने की क्रिया ।

व्यतिकर, व्यतिकार—स पु. [स] १ समिश्रण, मिलावट ।

२ सम्बन्ध, संसर्ग, लगाव ।

३ आघात, चोट ।

४ घटना ।

५ अवसर, मौका ।

६ पारस्परिक सम्बन्ध ।

७ आपसी लेन-देन, अदल-बदल ।

व्यतिक्रम, व्यतिक्रमण—सं. पु. [स व्यतिक्रम] १ क्रम में होने वाला उलट-फेर, क्रम का विपर्यय ।

२ व्रत भग की इच्छा, अतिक्रम । (जैन)

३ व्रत भग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करने की क्रिया । (जैन)

उ०—अतिक्रम इच्छा जाणियै, व्यतिक्रम वस्तु-प्रसग । अतिचार देस भग है, अनाचार सब भग । —जयवांणी

४ आपत्ति, सकट, तकलीफ।

५ पापकर्म, असत्यकर्म ।

६ जुर्म, अपराध।

७ उल्लघन, अवहेलना।

८ लापरवाही।

९ विपरीत होने की अवस्था; वैपरीत्य।

रू. भे.—वितिक्रम।

व्यतिक्रमी-वि —व्यतिक्रम करने वाला।

रू भे.—वितिक्रमी।

व्यतिक्रमणौ, व्यतिक्रमबौ-क्रि० स०—व्यतिक्रमण करना।

उ०—सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दडवीरज यो जिवारी जी। ईसानेंद्र करावियउ, ए श्रीजउ उद्धारो जी। —स. कु

व्यतिक्रमणहार, हारौ (हारी), व्यतिक्रमणियौ—वि०।

व्यतिक्रमिश्रोडौ, व्यतिक्रमियोडौ, व्यतिक्रम्योडौ – भू० का० कृ०।

व्यतिक्रमीजणौ, व्यतिक्रमीजबौ—कर्म वा०।

व्यतिक्रमियोडौ-भू. का कृ.—व्यतिक्रमण किया हुआ।

(स्त्री. व्यतिक्रमियोडी)

व्यतिपात-स. पु [स. व्यतीपात] १ सम्पूर्ण रीति से प्रस्थान या सम्पूर्णत. विच्छेद।

२ बडा भारी प्राकृतिक उत्पात या उपद्रव।

३ असम्मान, अपमान।

४ विष्कभ आदि सत्ताइस योगों में से सत्रहवा योग, जिसमें शुभ कार्य एव यात्रादि निषिद्ध है। ५ भारी सकट-सूचक अपशकुन।

६ अमावस्या के दिन रविवार, श्रवण धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, या मृगशिरा नक्षत्र होने पर होने वाला एक प्रकार का योग विशेष, जिस दिन गगा-स्नान का बडा फल होता है।

रू. भे —वितिपात, वितीपात व्यतीपात।

व्यतिरेक-स. पु.—१ अतर, भेद, फर्क।

उ०—बाबल रै पुर हूत वहू, वर-पुर मैं व्यतिरेक। विधवा मो पीहर बहव, है न सासरै हेक। —रेवतसिह भाटी

२ एक प्रकार का अर्थालकार विशेष, जिसमें उपमेय में उत्कर्ष या उपमान में अपकर्ष दिखाकर उपमेय की विशेषता का वर्णन हो।

व्यतीत-वि. [स] १ मरा हुआ, मृत्त।

२ त्यागा हुआ, परित्यक्त।

३ तिरस्कृत, उपेक्षित।

४ गुजरा हुआ, गया हुआ, समाप्त।

उ०—१ भादरवै ले घूड, मोछवा गोगा मांडां,। पेची पीळ साज, चढावा खीर र खांडां। पाऊस हुआ व्यतीत, टिकै ना टीब ठिकाणै। दत-गत भाग दौड, हेड रमवा हल मांणै। —दसदेव

उ०—२ घोडो मांणस जै धकै चढियो सो ही गुड मेळो हुवो। इसी इसी वाता कही सो रावजी सुण कर बहुत नाराज हुआ। रात तौ फिकर करतां भाज-घड करतां करता व्यतीत कीवी। परभात पोह पीळी री नकारी हुवी। —ढाढाळा सूर री वात

उ०—३ बोलइ तें आगलि वानर कूदतो रे, आवी मन ना मानीता मीत रे। आगति स्वागति करिस्यु थाहरी रे, रजनी माहरै प्यारि करो व्यतीत रे। —वि. कु.

उ०—४ यू करता बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आया रोजीना अवाज करै छै। जै सांई री पलक मैं खलक बसै छै। सो अेक दिन कधार री बादसाह थी सो इण फकीर री वात सुण मन मैं विचारी अर भिस्ती नूं कही—जै थारै बादसाह नूं जाय अरज कर—हमको बरस बारह व्यतीत हुवै, अब क्या हुकम है? इण भांति भिस्ती नू कई बार कही पण भिस्ती कहै—मोसर नहीं। और अरज करणी आप चाहै नही। —साई री पलक मे खलक

रू भे.—वितीत, वीतीत, व्यतीत, वतीत, वदीत, वदीतउ, वदीतै, वदीतौ, वितीत, वितीति।

व्यतीतणौ, व्यतीतबौ-क्रि. अ.—१ मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।

२ त्यागना, छोडना।

३ तिरस्कृत होना, उपेक्षित होना।

४ गुजरना, समाप्त होना।

क्रि० स०—५ मारना, सहार करना।

६ त्याग करने को प्रवृत्त करना, छुडाना।

७ गुजारना, समाप्त करना।

८ तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।

व्यतीतणहार, हारौ (हारी), व्यतीतणियौ—वि०।

व्यतीतिओडौ, व्यतीतियोडौ व्यतीत्योडौ—भू० का० कृ०।

व्यतीतीजणौ, व्यतीतीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

व्यतीतणौ, व्यतीतबौ, वतीतणौ, वतीतबौ—रू. भे.।

व्यतीतियोडौ-भू. का कृ —१ मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त हुवा हुआ। २ त्यागा हुआ, छोडा हुआ। ३ तिरस्कृत हुवा हुआ, उपेक्षित हुवा हुआ। ४ गुजरा हुआ, समाप्त हुवा हुआ। ५ मारा हुआ, सहार किया हुआ। ६ त्याग करने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, छुडाया हुआ। ७ गुजारा हुआ, समाप्त किया हुआ। ८ तिरस्कार किया हुआ, उपेक्षा किया हुआ।

(स्त्री. व्यतीतियोडी)

व्यतीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू भे)

उ०—व्यतीपात वैध्रति वली, सूरिजनी सक्राति। ब्राह्मण हेंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

व्यतीपातव्रत–स. पु. [स.] किसी शुभदिन के व्यतीपात को स्वर्ण निर्मित सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति की पूजन क्रिया।

वि० वि०—ज्योतिष शास्त्रानुसार व्यतीपात के प्रारभ व समाप्ति सूर्य व चन्द्रमा के गणित से होती है। सूर्य के क्रोधावश पृथ्वी पर गिरे आसुओ से व्यतीपात की उत्पत्ति हुई। शुभ कार्यों मे इसका त्याग व लोकोपकार कार्यों में इसका ग्रहण होता है।

व्यतीपाति, व्यतीपाती–वि.—१ उपद्रव करने वाला।

२ प्रस्थान किया हुआ।

३ अपमान किया हुआ, असम्मान किया हुआ।

रू भे —वितीपाती।

व्यथा–स स्त्री [स.] १ रोग, बीमारी। (ह. नां. मा.)

२ भय, डर।

३ चिन्ता, दुख।

४ कष्ट, दु.ख।

उ०—१ आखरी लाख मानैं न श्रो, खाक करी मम खाल रो। कुण सुणै साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल रो। —ऊ. का

उ०—२ कहती सकू मन व्यथा, विन कहिया तन ताप। मो जोवन मैमत हुवो, विरहण करै विलाप। —अग्यात

उ०—३ नहिं सही जाय जद हूं निडर, कही जाय मोटी कथा। वय वखत अमोलक हूं वृथा, विमळ हियैं खोटी व्यथा। —ऊ का

५ विकलता, व्याकुलता, परेशानी।

६ पीडा, वेदना, दर्द।

उ०—१ दादू सिर करवत वहै, अग परस नहिं होइ। माहि कलेजा काटियैं, यहु व्यथा न जाणैं कोइ। —दादूवाणी

उ०—२ सखी सुहागिनि सब कहैं, पिव सौं परस न होइ। निस वासर दुख पाइयै, यहु व्यथा न जाणैं कोइ। —दादूवाणी

रू. भे —विथा, व्यथा, विथ, विया।

व्यथित–वि० [स] १ विकल, व्याकुल, परेशान।

२ डरा हुआ, भयभीत।

३ दु खी, पीड़ित, कष्टमय।

४ रोगी, बिमार।

रू भे.—विथित, व्यथित, विथित।

व्यधाधर, व्यधाधारी—देखो 'विद्याधर' (रू भे.) (नां मा.)

व्यभचार, व्यभिचार, व्यभीचार–स पु. [स. व्यभिचार, व्यभीचार]

१ दूषित आचरण, बदचलनी।

२ रति क्रीडा, सभोग, भोग।

उ०—मि वरियु वीरसेन सुत आदि, हुस तणैं वचनै उल्लादि। देव तहाँ पित नि ठारि, पुत्री साथि सु व्यभचार। —नळाख्यांन

३ सती न होने की स्थिति या भाव, असतीत्व।

४ स्त्री का पर-पुरुष से व पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध।

उ०—दादू मरणा खूब है, निपट पूरा व्यभिचार। दादू पति को छोड कर, आन भजै भरतार। —दादूबाणी

५ कामपिपासा को अनुचित रूप से शान्त करने की क्रिया या भाव।

६ अनियमितता, अपवाद।

७ अपराध, दोष। ८ असत्य, झूठ।

रू भे.—विभचार, वीभचार, विभचार, वीभचार।

व्यभिचारी–वि० [स. व्यभिचारिन्] (स्त्री. व्यभिचारण, व्यभिचारणी, व्यभिचारिण, व्यभिचारिणी) १ व्यभिचार करने वाला, पतित।

उ०—जन्म लगैं व्यभिचारणी, नख सिख भरी कळंक। पलक एक सन्मुख जळी, दादू धोयैं अक। —दादूबाणी

२ पथभ्रष्ट, कुपथ-गामी।

३ दोषी अपराधी।

४ परस्त्री-गामी।

उ०—छत्री धरम छोडियो छेला, चौडै हुय व्यभिचारी रे। पर-व्योडी रै पास न पोढै, पातर लागै प्यारी रे। —ऊ. का

५ रतिक्रीडा करने वाला सभोग करने वाला, भोगी।

६ असत्य, झूठा।

स. पु —१ वह स्त्री या पुरुष जो पर-पुरुष या पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखता हो।

२ बदचलन, दूषित आचरण।

रू भे.—विभचारी, भिभचारी, विभचारी।

व्यभ्यास–स पु. [स. वि=विशेष+अभ्यास] विशेष अभ्यास।

उ०—प्रमान सास्त्र मात्र को स्वपंडत स्वयम् पढै, गुनीन अग मन्य हूं व्यभ्यास अन्य मैं वढै। प्रकाड पाठ पाठ के त्रिकरमकाड को करै, तनै त्रई उपासना ब्रह्मांड ग्यान तैं तरै। —ऊ का

व्यय–स पु. [स. व्यय] १ उपभोग के कारण वस्तु मे आने वाला ह्रास, घटौती।

२ निर्माण मे होने वाला खर्च, लागत।

३ नाश, बरबादी।

४ मद विशेष का खर्च।

५ लग्न से ग्यारहवा स्थान। (फलित ज्योतिष)

६ बृहस्पति की गति या भार के विचार से एक वर्ष या सवत्सर।

७ एक नाग का नामान्तर।

व्ययकरण, व्ययकरणि, व्ययकरणिक, व्ययकरिण, व्ययकरिणि, व्यय-करिणिक-स. पु [स. व्यय-कर्णिक] व्यय या भुगतान अधिकारी।

उ०—१ राजा युवराजकुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सामत लघु सामत तलवर तंत्रपाल चतुरमीतिक ताडकपनि मंत्रि महामंत्रि ग्रहवाहक स्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार घरमाधिक सौवरणक देवक मडलक गड्डुरक उरटक इस्टिकाक घोडकाक यमक पुरोहित दडनायिक ••••••। —व. स

उ०—२••••••स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक घरमाधिकरिणिक सौवरण्णकरिणिक देवकरिणिक मडलकरिणिक उरट्टकरिणिक इस्टिकारिणिक यमककरिणिक पुरोहितकरिणिक दडनायिक सेनापति पउतार आरोहक प्रतीकारप्रारिक माहागारिक माणिक्यभाडागारिक••••••। —व. स.

रू. भे.—वयगरणी, वयगरणीक, वयगरणु, वयगरणौ।

व्यरथ-वि. [स व्यर्थ] १ फजूल, फालतू, योंही।
२ अर्थ रहित, मतलब रहित, निरर्थक।
३ लाभविहीन।
रू भे—विरथ, विरथ।

व्यरथता-सं स्त्री. [स. व्यर्थता] व्यर्थ होने की स्थिति या भाव।

व्यलागणौ, व्यलागबौ—देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू भे.)

उ०—सत्र सामत व्यळागौ सारै, तळ छळि घण लाल प्रत ग।
पाव प्यळोभ घसि लगि बसियौ, नागणि नै डरि कहै हम.नाग।
—चतुरा रामावत राठोड री गीत

व्यलागणहार, हारौ (हारी), व्यलागणियौ—वि०।
व्यलागिओडौ, व्यलागियोडौ, व्यलाग्योडौ—भू० का० कृ०।
व्यलागीजणौ, व्यलागीजबौ—भाव वा०।

व्यलागियोडौ—देखो लागियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री व्यलागियोडी)

व्यळीक, व्यलीक-वि [स व्यलीक] १ झूठा, असत्य।
२ अप्रिय, अप्रीतिकर।
स पु [स. व्यलीक] १ कारण, जिससे दुःख हो।
२ जुर्म, अपराध, दोप।
३ कपट, धोखा।
४ असत्यता, झूठाई।
[स व्यलीक] ५ लपट या कामी पुरुष।
६ वह पुरुप जो गुदा मैथुन कराने का आदि हो।

व्यवधान-स. पु [स व्यवधान] १ बीच मे आडी आकर आड करने वाली वस्तु।
२ रोक, रुकावट।
३ भेद, रहस्य।
४ छिपाव, दुराव।

व्यवसाइ, व्यवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे)
२ देखो व्यवसायी' (रू. भे.)

व्यवसाइयौ, व्यवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सुभट नै आयुधि, सेवक नी स्वामिभक्ति, कलावत नी कला, व्यवसाईया नी व्यवसायि, पृथ्वीपति नी न्यायि, भाग्यवत नइ भाग्योदयि, एतला प्रदेस माहरी वासभूमि••••••।
—व. स.

उ०—२ भोई सोई भरथिया, सोनी नइ सूतार। व्यवसाईया सहू जातिना, जे जोईइ तिणी वारि। —मा का प्र.

व्यवसाय-स पु. [स व्यवसाय] १ जीविका, पेशा।
२ उद्योग, प्रयत्न, कोशिश।
३ कार्य, धन्धा।
४ व्यापार।
५ अभिप्राय, मतलब।
६ कार्य का सम्पादन। ७ विष्णु का नामान्तर। ८ शिव का नाम।

रू. भे.—विवसाइ, विवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाय, व्योसाय, विवसाइ, विवसाई, विवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाई।

व्यवसायि, व्यवसायी-सं. पु. [स. व्यवसायिन्] १ व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।
२ वह व्यक्ति जो पेशेवर हो।
३ उद्यम या प्रयत्नशील व्यक्ति।
४ व्यापार करने वाला, व्यापारी।
५ किसी कार्य का अनुष्ठानकर्त्ता व्यक्ति।
६ व्यवसाय करने की क्रिया।

रू भे - विवसाइ, विवसाई, विवसाइ, विवसाई, विवसायी, व्यवसाइ, व्यवसाई।
अल्पा,—विवसाइयौ, विवसाईयौ, विवसायौ, व्यवसाइयौ, व्यवसाईयौ।

व्यवस्था-स स्त्री [स] १ किसी निर्धारित कार्य की शास्त्रोक्त विधि।
२ चीजो वस्तुओ को सजाकर अलग-अलग रखने की क्रिया।
३ स्थिति, हालत, दशा।
४ किसी कार्य के लिए पूर्वनिर्धारित योजना।
५ कार्यकलाप, प्रवन्ध, इन्तजाम।
रू. भे.—विवस्था, व्यवस्था, विवस्था।

व्यवस्थापक-स पु [स.] व्यवस्था करने वाला, प्रबन्धक।

व्यवस्थापण, व्यवस्थापन-स. पु. [स. व्यवस्थापन] व्यवस्था या प्रबन्ध करने की क्रिया या भाव।

व्यवस्थापित-वि० [स.] १ व्यवस्थित, नियमानुसार।
२ निर्धारित, निश्चित।
३ सुसज्जित। (वस्तुएं)

व्यवस्थित-वि. [स.] १ जिसकी व्यवस्था की गई हो।
२ क्रम से चलने वाला।
३ सजाया हुआ, सुसज्जित।
४ निर्धारित किया हुआ, निश्चत।

व्यवहरिक—देखो 'व्यवहारीक' (रू. भे.)

उ०—.........वयवत ते जे स्नेहवत, व्यवहरिक ते जे नयावत, घरणि ते जे सीलवति, छइल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवति, वस्त्र ते जे पवालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवत, साधु ते जे क्षांतिवत, करह ते जे विगवत, तुरंग ते जे वेगवत. हस्ति ते जे भद्रजातीय, मन्त्रि ते जे बुद्धिमत, कर ते जे वीरघवत, राय ते जे प्रसस्य जातिवत। —व स

व्यवहार-स. पु. [स.] १ आचरण, चाल-चलन। (हिं. को.)
२ पेशा, धन्धा।
३ व्याज-बट्टे या लेन-देन का धन्धा।
४ व्यापार, व्यवसाय।
५ रीति, रस्म, रिवाज।
६ सम्बन्ध, रिश्ता।
७ मुकदमा या मुकदमा की जांच-पड़ताल करने वाला।
८ अधिकार, हक।

उ०—कहिवौ उवरस्ये जिकू, जाणां छां निरधार। पिण इण अवसर नारी नै, कहिवा नौ व्यवहार। —जयवांणी

९ शास्त्रोक्त-विधि, नियम।
१० बर्ताव, आचार, सलूक।

उ०—कै किणी घरगोडिया राजपूत रै सागै उणरी ब्याव व्हियौ व्हैतो तौ नी वा दस दिन मंसा परवांण लापतै रै' पाती अर नी इण भात लापतै रह्यां पछै पाछी गाव मैं पग धर सकती। सासरिया कै खुद पीवरिया नाक कांन वाढ नै विगाडियौ कर न्हांकता। मूंडा मैं आवै ज्यूं जणौ जणौ अरळ-विरळ गाळियां काढती। माजनो गमतौ। पण बाप तौ दिखावटी मंडी व्यवहार करयो जांणै की अजोगती वात नी व्ही। —फुलवाडी

११ भेद, अन्तर, फर्क।

उ०—सरगुण निरगुण परख कै, 'इनकै लखै व्यवहार। अगम निगम अनुभव लखै, कर कर हंस विचार। —श्रीहररांमजी महाराज

१२ छ सूत्रो मे से एक सूत्र का नाम। (जैन)

उ०—व्यवहार सूत्र दस सै गुणविचार, इग्यारह रसंघ सत सट्टार। पंचकल्प तौ पचम छेद, सवा इग्यारसै संगत्या वेद। —ध व. ग्रं.

रू. भे.—ववहार, ववार, विवहार, वियहार, विवार, बुहार, वेवार, वेवार, वोवार, वोहार, व्यवहर, व्यवहार, व्योहार, व्योहार, ववहार, ववार, विवहार, विवहार, विवार, विव्हार, विहिवार, बुहार, वेवार, वेवार, वेवार, वैवहार, वंवार, वैहार, वोवार, वोवार, वोवार, वोहवार, वोहार, वोहोवार, व्यवार, व्यहवार, व्योहार।

व्यवहारणौ, व्यवहारबौ-क्रि० स०—१ आचरण करना।
२ पेशा या धन्धा करना।
३ व्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन करना।
४ व्यापार करना, व्यवसाय करना।
५ रीति-रिवाजों का पालन करना।
६ मुकदमे की जांच-पड़ताल करना।
७ अधिकार करना हक जमाना।
८ शास्त्रोक्त विधियो या नियमो का पालन करना।
९ अन्तर करना, तुलना करना।
१० बर्ताव करना, सलूक करना।

व्यवहारणहार, हारौ (हारी), व्यवहारणियौ—वि०।
व्यवहारियोड़ो, व्यवहारियोड़ो, व्यवहारयोड़ो—भू० का० कृ०।
व्यवहारीजणौ व्यवहारीजबौ—कर्म वा०।
वुहरणौ, वुहरबौ, वोहरणौ, वोहरबौ—रू भे।

व्यवयारिश्रो—देखो व्यवहारियौ' (रू भे.)

उ०—१ गढ मढ मंदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ ताड आराम वनखंड विभूंइमा त्रिभूंइमा आवास, चउरासी चहूटा, तिहां व्यवहारिया नौ गजघटा, श्रीमाली पोरुआड ओसवाल गूजर कहोल वाइडा हुंबड मोढ, लाडुआ श्रीमाली, अडालजा......। —व. स.

उ०—२ व्यवहारिआ महरद्धिक वसइ, आप हेठा कहिनइ नवि कसइ। जेह तणी छइ प्रसन्न द्रेठि, इस्या तिहां छइ न्यायवत सेठि। —नळदवदंती रास

व्यवहारिक-वि —१ व्यवहार से सम्बन्धित।
२ व्यवहार के उपयुक्त या व्यवहार करने योग्य।
३ व्यापार या व्यवसाय से सम्बन्धित, व्यापारिक।

रू. भे वैवारिक, व्यवहरिक, व्यवहारिक, व्यावहारीक।

व्यवहारियोड़ौ-भू का कृ—१ आचरण किया हुआ। २ पेशा या धन्धा किया हुआ। ३ व्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन किया हुआ। ४ व्यापार किया हुआ, व्यवसाय किया हुआ। ५ रीति-रिवाजों का पालन किया हुआ। ६ मुकदमें की जांच-पड़ताल किया हुआ। ७ अधिकार किया हुआ, हक जमाया हुआ। ८

शास्त्रोक्त विधियो व नियमो का पालन किया हुआ। ९ अन्तर किया हुआ, तुलना किया हुआ । १० वर्ताव किया हुआ, सलूक किया हुआ।

(स्त्री व्यवहारियोडी)

व्यवहारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ ·· · ··काला पीला नीला धउला इस्या पटोला, सूकडि न समूह, कपूर ना पूर, घणा केसर ना अलवेसरपणा, अगर ना भर, सुगधपणपूरी इसी कस्तूरी, मनोहर माणिक्य, मनोग्य रूडा रत्न, अनेकि विदेसी वस्तु, इसिउ व्यवहारिया तणउ भवन।
—व स.

उ०—२ लेता तो राजो होय ए, पिण दुस्मण जिम जोय ए। गुरे कहै च्यारां माय ए, कुण व्यवहारियो कहवाय ए।
—जयवाणी

उ०—३ जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण वधाव्या, वदरवालि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणि परि वादिवा आव्या कुणही जौ तस्या वहिल ई कल्होडा, कुण ही पल्लाण्या आसण होडा, केई करहि चडी धाइ दह दिसि दोडा, केइ मुखि माणइ तवोल-लवग डोडा। —रा सा स

व्यवहारी, व्यवहारीउ–वि [स व्यवहारिन्] उत्तम आचरण वाला।

व्यवहारीओ, व्यवहारू–स पु —१ व्यापार करने वाला, व्यवहारी।

उ०—किहा सुखासण किहा डोली ? किहां व्यवहारू नइ कोली रे ? किहा दीपोच्छव किहा होली ? किहा जव रोटी गहू पोली रे ?
—नळदवदती रास

२ व्यवसाय करने वाला, व्यवसायी।

३ वेश्य, बनिया।

उ०—वभण भाट भला वसइ, व्यवहारिआ विसेख। राजकुळी रूडी तिहा, छयल छत्रीसे रेख। —मा का प्र

४ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

५ व्याज-वट्टे पर रुपये का लेन-देन का कार्य करने वाला, साहूकार।

रू भे.—ववहारी, ववारी, वहवारी, व्यवहारी, ववहारी, विवहारी विहारी, वेहारी, वंहारी, वोवारी, वोहारी, वौवारी, वौहवारी, वौहारी, व्यवारी, व्यहवारी, व्यारी, व्यारीउ।

अल्पा ,—ववहारियौ, ववारियौ, वहवारियौ, व्यवहारियौ, विवहारिउ, विवहारिओ, विवहारियौ, विवहारीउ, विवहारीओ, विवहारीयौ, विहारियौ, वैवारियौ, वैहवारियौ, व्यवारियौ, वोहरियौ, वौवारियौ, वौहवारियौ, व्यवहारिओ, व्यववारियौ, व्यवारियौ, व्यहवारियौ।

व्यवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

व्यवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा , रू. भे)

व्यवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे)

व्यसन–स पु [सं.] १ अशुभ वात, अमांगलिक वात।

२ निरर्थक कार्य या प्रयत्न।

३ किसी कार्य या वात के लिए मन की एक प्रवृत्ति या रूचि, जिससे मनुष्य उसी कार्य मे सलग्न रहता है।

४ दूषित मनोविकारो के कारण भोगविलास या अन्य बुरे कार्यों के लिए होने वाली आसक्ति, जिसके विना रहना कठिन हो, बुरी आदत।

उ०—१ तीन लोक को मोल जाय तन सुकवि जगावै, हीरो लागो हाथ पुनरभव फेर न पावै। ठाला भूला ठोठ कुबुध नहिं छोडै काल्हा, पुण्य गया परवार व्यसन जद लागा वाल्हा। —ऊ का

उ०—२ हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वामीजी नें कह्यो—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रो व्यसन है। जब स्वामीजी वोल्या–काचरिया रो अटक्यो किसो विवाह रहै। —भि द्र.

५ असमर्थता, असामर्थ्य।

६ कष्ट, दुख।

७ विपत्ति, सकट।

रू. भे.—विरसन, बिसन, बिसन्न, विसन, विसन्न, व्यसन, विसन, विमन्न विसिन, विस्न, वीसण, वीसन, व्यस्न।

व्यसनी–सं पु [स. व्यसनिन्] वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का व्यसन हो।

रू भे.—विसनी, व्यसनी भिसणि भिसणी, भसिणी, विसनी, विसनीउ, विसिनि, विसिनी, विस्नी, व्यस्नी।

व्यस्टि, व्यस्टी–पु [स व्यष्टि] १ समूह या समाज से अलग किया हुआ।

उ०—निकाई छाई तै प्रकट प्रभुताई सिख नखा, समस्टी व्यस्टी तै सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा। धरे तूं धारै तूं परज प्रत पारै धन धनी, सभी को सहारै प्रळय लय धारै करसनी। —ऊ. का.

२ सनारू नामक आचार्य का शिष्य व विप्रचित्ति का आचार्य।

व्यस्त–वि. [स] १ आकुल, व्याकुल, घवराया हुआ।

२ काम मे लगा हुआ, कार्य में फसा हुआ।

३ इधर-उधर, आगे पीछे, ऊपर नीचे हुवा हुआ।

४ फैला हुआ, व्याप्त।

व्यस्तार–स पु [स] १ हाथी की कनपट्टियो से मद के चूने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'विस्तार' (रू भे.)

ब्यस्न—देखो 'व्यसन' (रू भे.)
ब्यस्नी—देखो 'व्यसनी' (रू भे.)

ब्यस्व-स पु [स व्यश्व] १ यम का उपासक एक राजा ।
२ ऋग्वेद के कुछ मत्रो के द्रष्टा एव अश्विनो के कृपापात्रो मे से एक प्राचीन ऋषि ।

ब्यहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)
ब्यहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा , रू भे)

ब्यहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे)

ब्यहू, ब्यहू—देखो 'वेऊ' (रू भे) (उ. र)

ब्यां-सर्व —वह का बहुवचन, उन ।
क्रि वि —१ ऐसे, इस तरह ।
२ वैसे, उस तरह ।

ब्यांण-सं. स्त्री —१ समधी की स्त्री ।

२ वह स्त्री जो किसी जागीरदार की लडकी के दहेज में दी जाती हैं और उसे भी वरपक्ष के किसी दास को उसी दिन विवाह दी जाती है ।

रू भे.—बिवायण, बिवाहण, बिवाहिणि, विवाहिणी, वेवाण, ब्यांण, व्याहणी, वियाण, व्यायण, व्यावण ।

ब्यांणु, ब्यांणू-सं. पु [स वि+अणु] अणु से बडा, विशेष अणु ।

उ०—अणू तै ब्यांणू तै ब्रहदळ विभूतै अति विभू, तुजे ना जाने को सुहृद स्वसु जानै भल अभू । कहैं क्या ध्यावै धी कहन नहि आवै कुळकुळं, मदाधो मायावी तुम रु हम भावी सम तुलै ।
—ऊ का.

ब्यान-स. पु [स. व्यान] शरीर में रहने वाली दश प्रकार के वायु मे से एक प्रकार का वायु जो शरीर मे सचार करता है तथा इसके द्वारा शरीर मे रस पहुँचना, शरीर से पसीना निकलना, खून का चलना व अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती हैं ।
रू भे —व्यान, वियान ।

ब्यानदा-स. स्त्री. [स व्यानदा] शरीर मे 'व्यान' वायु प्रदान करने वाली शक्ति ।

ब्याम-स. पु [स व्याम] दोनो भुजाओ को दोनो ओर फैलाने के बाद एक हाथ की अगुलियो के सिरे मे दूसरे हाथ की अगुलियो के सिरे तक की लम्बाई का नाप ।

ब्यामोह—देखो 'व्यामोह' (रू. भे)
ब्याव—देखो 'विवाह' (रू भे.)

उ०—१ जलमी रा रे जाया सार ज करतो छिन-छिन धीय री, हरसा वीर म्हारँ राव गढा रे करतो ब्याव ।
—जीणमाता री गीत

उ०—२ मेठा तिहां पागती पांणी, नेमजी मांहे उद्याल्यो पांणी । मान्यो मान्यो जांणी जाणी, ब्याव मनाय लियो मादांणी जी ।
—जयवाणी

उ०—३ कठै है कुरीती ? पिता-पुरखी रीत पर चालणी कांई कुरीती है ? भ्रजार रूपचद रै घरै बेटी रो ब्याव हो जणी गुळ रो लेणटो रांधियो तो कोयनी ? माईतां री रीत मरजाद पर आप रै सरूप नै देखणो पडै है ।
—वरसगांठ

उ०—४ मानी है पछै मिनख कमावै क्यों है ? ब्याव-सगाई, ओसर-मोसर, रीत-रवाना अै ईज तो नांगा-कांमा करण नै । म्हारी आपरी बेन कैवै है कै म्हारै तो अै ईज देखणा व्याव है
—वरसगांठ

ब्याही ब्याई-स. पु. (स्त्री. ब्यांण, व्यायण) सगा, समधी ।

उ०—थे थयू करणो रै भाई पोळिया म्है छां म्हारी बेनड रा लेवाळ । वीरो तो आयो सैंया अथाइया, ब्याई जी नै लटक जुहार । मेलो तो मेलो ब्याईजी बेन नै, आयो बाई रै पैलै मावण री तीज । म्हानै तो ठीक नहीं भोळा ब्याईजी, पूछो थारी ब्या-यणजी नै बात ।
—लो गी

रू भे.—बिवाई, बियाही बिवाई, बिवाही, वेवाई, वेवाही, वेवाई, वेवाही, व्याई, ब्यांयी, ब्याही, वियाई, वेवाई, वेवाही, व्याही ।

ब्याऊ—१ देखो 'विवाई' (उ र)
२ देखो 'ब्याजू' (रू भे)

ब्याकरण-स. पु [स] १ एक प्रकार का शास्त्र विशेष, जो वेदो के छः अगों मे से एक माना जाता है । (हि को)

उ०—१ स्वामीजी कनै एक ब्राह्मण आयनै पूछयो साधा व्याकरण भण्या हो । स्वामीजी बोल्या—म्है तो व्याकरण कोइ भण्या नही । जद ब्राह्मण बोल्यो—व्याकरण भण्या बिना साम्प्र ना मरम हुवै नही ।
—भि. द्व

उ०—२ सब्द ही खट सास्त्र कहियै, सब्द ही नव ब्याकरण । सब्द ही सस्क्रत पण कहियै, सब्द ही पद उच्चारण ।
—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—३ कोई कहसी रुखमणीजी श्रीक्रसणजी सों अनुराग हुअउ सु विण देख्या कयो करि हुआे । तिको जवाब देई छै । रुखमणीजी ब्याकरण पढचा पुरांण पढचा । ईतना सवही माफ ऐक हीको अधिकार पायो ।
—वेलि टी

वि० वि०—उक्त शास्त्र में, बोलचाल एव साहित्यिक भाषा के स्वरूप, गठन, अवयवो, प्रकारो, पारस्परिक सम्बन्धो, रचनाविधान व रूप परिवर्तन पर विचार होता है ।
२ भाषा सम्बन्धी नियमो के सकलन की पुस्तक ।
३ व्याख्या, विवेचन ।

४ निर्माण, रचना ।
५ ७२ कलाओं में से एक कला ।
६ स्त्रियों की चौसठ कलाओं मे से एक कला । (व. स)
७ आठ की संख्या । * (डि. को.)
रू भे —वियाकरण, व्याकरण, वियाकरण ।

व्याकरणी–स पु [स. वैयाकरण] व्याकरण का ज्ञाता पंडित ।

व्याकळ —देखो 'व्याकुळ' (रू भे)

व्याकुळ, व्याकुल–वि. [स व्याकुल] १ घबराया हुआ, बेचैन, दु खी ।

उ०—१ वरमाळा लै कंठि वणावै, पलक खुली तदि त्रिया न पावै । उण दुख हूत जीव व्याकुळ अति, पड़ै न जक सोचै नित भूपति । —सू. प्र.

उ०—२ मनुष्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवै छै। अर रूखां की छाह वाछै छै । सु ये वात रो न्याउ छै। इसी गरमी हुई छै। जु सूरय पणि हेमाचळ को सरणौ पकडै छै। अर सूरज ही त्रखि आया छै। —वेलि टी.

२ उदास, खिन्नचित्त ।

उ०—आप बिना गोपिन सब व्रज की, व्याकुळ भई निराट । मीरा के प्रभु दरसण दीज्यो, करज्यो आनद ठाट । —मीरा

३ भयभीत, डरा हुआ, विह्वल ।

उ०—व्याकुळ तातैं भई तनु देही, सिर पर जम का घेरा । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा । —मीरा

४ क्षोभयुक्त ।

उ०—पाच पचीसी वस किये, मेरा पला न पकडै कोय । मीरा व्याकुळ विरहणी रे, कोई आन मिळावै मोय । —मीरा

५ उदास, चचलता रहित ।

उ०—आवै सवेग आकळा, वदन्न नैंण व्याकुळा । पवंग छाड पाधरा, असस्त रोम ऊधरा । —मा वचनिका

६ उत्कंठित, उत्सुक ।
स पु.—समुद्र, सागर । (ना. डि को)
रू भे.—व्याकुल, व्याकुळी, वकळ ।

व्याकुळणौ व्याकुळवौ–क्रि अ.—१ घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना ।

उ०—हुळा-बोळ चौरग दळा बीच मूजं हरण, गजा कुळटघा कुळत हुअै घर गाह । व्याकुळत भमग रव वळत घूळी रवण, "सूर" रो चढै तिणवार 'गजसाह' । —कल्याणदास महडू

२ उदास होना, खिन्नचित्त होना ।
३ भयभीत होना, डरना, ।

उ०—अहमड किना फुट्टो वळै, धमक तळातळ आतळै । मुखै हसै सकति महाबळ, वेताळा कुळ व्याकुळै । —मा वचनिका

४ उतावला होना, आतुर होना ।
५ कम्पकम्पाना, धूजना ।
व्याकुळणहार, हारौ (हारी), व्याकुळणियौ—वि० ।
व्याकुळिओडौ, व्याकुळियोडौ, व्याकुळ्योडौ—भू० का० कृ० ।
व्याकुळीजणौ, व्याकुळीजवौ —भाव वा० ।

व्याकुळता, व्याकुलता–स. स्त्री. [स. व्याकुलता] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव ।
२ खिन्नचित्त होने की अवस्था, उदासी ।
३ भय, डर ।
रू भे.—बेकळी, वेकळी ।

व्याकुळियोडौ–भू. का. कृ —१ घबराया हुआ, व्याकुल हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ २ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ ३ भयभीत हुवा हुआ डरा हुआ, विह्वल हुवा हुआ ४ उतावला हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ ५ कम्पकम्पाया हुआ, धूजा हुआ । (स्त्री व्याकुळियोडी)

व्याकुळी–वि.—भयभीत, बेचैन, व्याकुल ।

उ०—सळसळी चापली चळी सिर 'सेख' रै, वीजळी तणी वपु देण विवा । व्याकुळी गिरा आरत सुणे बचाडै, आकुळा लिइ कर झाल अवा । —बालावक्स बारहठ

रू भे —वेकळी, वेकळी ।

व्याकोस–वि. [स व्याकोष] १ बढाया हुआ, फुलाया हुआ ।
२ खिला हुआ, विकसित ।
३ वृद्धि को प्राप्त, वृद्धिमान ।

व्याक्रति—देखो 'विक्रति' (रू भे)

उ०—सूक्ष्म सरीर, व्याक्रति बहीर, झीनातिझीन चित विदित चीन । पद परम पून्य सकल्प सून्य, निरवाण नित्य अतर अनित्य । —ऊ का

व्याखांन, व्याख्यान–स पु [स. व्याख्यान] १ व्याख्या करने की क्रिया
२ भाषण, वक्तृता ।
रू भे.—व्याखान, व्याख्यान ।

व्याखानसद, व्याख्यानसद–वि. [स. व्याख्यानसद] १ व्याख्या करने वाला, टीकाकार ।
२ भाषण देने वाला, वक्ता ।
रू. भे —वखांणसद, व्याख्यानसद वखाणसद, ।

व्याख्यांनसाळा व्याख्यानसाला–सं. पु. [स व्याख्यानशाला] व्याख्यान देने का स्थान ।

व्याख्या–स. स्त्री [स.] समझाने के लिए किसी बात या विषय का किया जाने वाला विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण व उसकी टीका ।

व्याघात–स. पु. [स.] १ आघात, प्रहार, चोट ।

२ विघ्न, बाधा, अड़चन, रुकावट।

उ०—रिखिजी कहे पुत्र दो ए हुसी, पिण थे मांनो एक बात रे लाला। व्रत लेसी बालापणें, जो नवि करो व्याघात रे लाला।

—जयवाणी

३ ज्योतिष शास्त्र के सत्ताईस योगो में से तेरहवा योग।

वि वि —किसी शुभ कार्य करने में इस योग की नौ घटि अशुभ मानी है, जिसमें कोई शुभ कार्य करना वर्जित है।

४ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें एक ही साधन द्वारा दो विरोधी बातो के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र-सं पु [स] सिंह, शेर।

२ यातुधान नामक राक्षस का पुत्र व निरानंद नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

३ भाद्रपद माह मे सूर्य के साथ घूमने वाला एक यक्ष।

वि —१ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

२ मुख्य, प्रधान।

व्याघ्रकेतु-स पु. [स] १ पांचाल राजकुमार जो कौरव पक्ष में था एव सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

२ पांचाल योद्धा जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

व्याघ्रग्रीव-स पु [स.] एक प्राचीन देश। (पुराण)

व्याघ्रचरम, व्याघ्रचरम्म व्याघ्रचांम-स. स्त्री. [स व्याघ्रचर्म्म] शेर की खाल जिस पर सन्यासी बैठते हैं एव शोभा या सजावट के लिए कमरो मे लटकाई जाती है।

व्याघ्रदत्त-सं पु [स] १ पांडवपक्षीय एक राजा जो श्रेष्ठ रथियो मे से एक था।

२ मगध राजकुमार जो कौरव पक्ष की ओर से लडते हुए सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

३ अश्वथामा द्वारा मारा गया एक पांडव पक्षीय राजा।

४ द्रोण के द्वारा मारा गया एक पांडवपक्षीय पांचाल का योद्धा।

व्याघ्रनख—देखो 'वाघनख' (रू भे.)

व्याघ्रनखी—देखो 'वाघनखी' (रू. भे)

व्याघ्रनांखून—देखो 'वाघनख'

व्याघ्रनाइक, व्याघ्रनायक-स. पु [स व्याघ्रनायक] गीदड, शृंगाल।

व्याघ्रपद, व्याघ्रपाद-स पु. [स] वसिष्ठ ऋषि का पुत्र एव उपमन्यु के पिता एक प्राचीन ऋषि।

व्याघ्रमुख-स पु [स] १ एक देश का नाम।

२ एक पर्वत का नाम।

व्याघ्रहन-स. पु [स.] उर्ध्वंष्ट्री नामक एक राक्षस का पुत्र एव शरभ का पिता, एक राक्षस।

व्याघ्राक्ष-स पु [स.] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

२ एक राक्षस का नाम। (पुराण)

व्याघ्री-स. स्त्री. [स] वसिष्ठ की पत्नी का नाम।

व्याडि—देखो 'व्याडि' (रू भे.)

व्याज-स पु [स.] १ कपट, छल, धोखा। (अ. मा., ह ना. मा.)

२ बाधा, विघ्न, अड़चन।

३ विलम्ब, देरी।

४ बहाना, मिस।

उ०—गगदेव रै खुरासाण खेत री अति वेग वाजी सुणियो जिसडो ही तुरग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट रै व्याज करि बवादवा सू ईसान दिसा री अटवी मे बूंदी सौं पाच कोस परै लग जाइ सिकार रा रमणा मैं पाच ही दिन बिताइ एक मह्द दोइ याराह गाडा घलाइ चाह करि सायकाळ रै समय बूंदी आयो।

—व. भा.

५ ऋण की राशि पर लिया जाने वाला अतिरिक्त धन, सूद।

उ०—१ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो माग्या पडै। साहूकार तो व्याज सहित देवै अने दिवाल्यो मूल ही मैं तोटो घालै। ज्यू भगवतै सूत्र भाख्या तिम प्रमाणे चालै तै साधु अनै पाचमो आरा नौं नाम लेइ सूत्र प्रमाणे न चालै तै असाध।

—भि द्र.

उ०—२ नाकी राखण जीव कसै घणा रे, काढै करडै रुपये व्याज रे। ओसर-मोसर ढोल बजाय दे रे, चतुर सुधारै सगला काज रे।

—जयवाणी

६ व्याज पर दी जाने वाली राशि, ऋण।

उ०—गांम चलता सुकन गिणीजै, हणतो विण किण ही न हणीजै। विण ग्रहणै दीजै मत व्याज, निस्चै वरस नो राखै नाज।

—ध व. ग्र

रू. भे.—विआज, बियाज, व्याज, विम्राज, वियाज, वीयाज।

व्याजउक्ति—देखो 'व्याजोक्ति' (रू. भे)

व्याजडियो-सं पु —व्याज पर रुपया देने वाला व्यक्ति।

व्याजनिंदा-स स्त्री. [स.] १ छल, कपट या बहाने से की जाने वाली निन्दा, जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निन्दा जान न पडे।

२ एक प्रकार का शब्दालकार जिसमें इस प्रकार निन्दा की जाय।

व्याजबटो-स. पु —वह व्यवसाय जिसमे ऋण देने व व्याज वसूल करने का कार्य किया जाता है।

व्याजस्तुति-स स्त्री [स.] १ स्तुति के शब्दो मे निन्दा व निन्दा के शब्दो मे स्तुति करने की एक प्रकार की क्रिया-विशेष।

२ एक प्रकार का अर्थालकार विशेष, जिसमे इस प्रकार से निन्दा या स्तुति की जाय।

रू. भे.—बिम्राजस्तुति, बियाजस्तुति, व्याजसतुति, व्याजस्तुति, व्याजस्तूती।

व्याजू–सं. पु —वह रकम जो व्याज के उद्देश्य से लेन-देन की जाती है।

रू. भे.—बियाजू, व्याजू, वाज्यू बियाजू, वीयाजू, व्याजू।

व्याजोक्ति–स. स्त्री [स.] १ कपटयुक्त बात।

२ किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए किया जाने वाला बहाना।

३ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए बहाना युक्त कथन किया जाय।

रू. भे —व्याजोकती, व्याजोक्ति।

व्याज्यू—देखो 'व्याजू' (रू भे.)

व्याड–स पु. [सं.] १ सर्प, साप।

२ देवराज इन्द्र।

३ दुष्ट हाथी।

४ मांसभक्षी जीव।

५ गुण्डा, दुष्ट।

व्याडि–स. पु. [स.] एक प्रसिद्ध व्याकरणकर्ता का नाम।

रू भे —व्याडि।

व्याणी–वि स्त्री.—प्रसव देने वाला मादा पशु।

व्याणी–सं. स्त्री.—जन्म देने की क्रिया।

व्याणो, व्यावो—देखो 'व्याणो, व्यावो' (रू. भे)

उ०—१ पीडति हेमंत सिसिर रितु पहिलो, दुख टाळ्यो वसत हित दाखि। व्याए वेली तणी तरवरां, साखा विसतरिया वैसाखि।
—वेलि

उ०—२ तरै मीयां नै समाचार हुवा तरै मीयां फौज री घमसाण करनै रांमदासजी ऊपर चढिया। रामदासजी नै भाखडी छै तेह दीठा खिसणो नही। साढ पिण एक व्याइ सो साढ ऊभी छोडनै जाण री भाखडी। तरै तोडिया नै पखाळ नै सांड ऊपरै घाल लियो नै भागो खडीया। —रा सा. स.

उ०—३ ज्यूं एक साहूकार जिहाज मैं बैस समुद्र पार व्यापार करवा गयो। पाछो भावता कपडै री मजूस में एक गरभवती ऊदरी भाइ सो व्याई। साहूकार देखिनै बोल्यो इण नै समुद्र मैं नही न्हाखणी। जावता करै। —भि. द्र.

उ०—४ कोट मुलक खिडिया के खंड, व्याइ वसूहक फाटो ब्रह-मड। वडा वडा भावै वरियाम, 'भ्रबर' भागै करै सलाम।
—गु. रू. ब.

२ देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू. भे.)

व्याति–स. पु.—एक तारा जो मृग के नीचे रहता है। इसको संस्कृत में लुब्धक कहते हैं।

व्याध–स पु [स] १ शिकार करने वाला, शिकारी।

उ०—तळ खचै वाण, दुसटी पांण, रटै नराण रखिभाण। भ्रह व्याध डसाण, चूके बांण, वध सीचाण वळ सत। —भगतमाळ

२ प्राचीन काल की एक शिकारी जाति, किरात, बहेलिया।

३ दुष्ट नीच भादमी।

४ देखो 'व्याधि' (रू भे.) (भ्र. मा, ह ना. मा.)

उ०—१ फोहै जो विधि कहु वखाणि, गुल्म रोग पिण सो विधि जाण। पेट सूळ जो होइ भगाध, सून डम नैं नासैं व्याध।
—ध व. ग्र.

उ०—२ कळू मे भ्रमती व्याध प्रेत सूं उवारै केता, तेरासै तेईस जीता भूलोक ताठौड। भ्रघा गुणा गीतां साख वेद्धां मैं कीरती गावै, रेणवा रूखाळी पावू भगजी राठौड।
—बादरदान दधवाडियो

उ०—३ हूं ही करै हित हाण, कभी तन व्याध जगावै। धणो राज भय धरै, ररो धन नास करावै। —र. रू

रू. भे.—व्याघ, व्याधि।

व्याधि–स स्त्री. [स] १ रोग, बीमारी। (व. स.)

उ०—१ लियां नाम सुख लाभ, व्याधि दुख भ्राधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करैं, भरी वडपण ऊथापैं। —र. रू.

उ०—२ व्याधि जरा रहि वेगली, भलोभ्र लक्षण होइ जेह। वेदि जं विधि विस्तरी, सविकी पालइ तेह। —मा कां प्र

२ कष्ट दुख, पीडा। ॐ (डि. को.)

उ०—१ रीत ग्राद जदुवस घराणैं, जगा विघन जिगन सम जाणैं। 'जीवण' हरतायोत सजोसो, भासुर व्याधि हरण किर भोसो।
—रा. रू.

उ०—२ भ्राधि व्याधि चिंता सहु चूरइ, वइरी कर न सकइ को बूरउरी, सुंदर रूप मनोहर मूरती, हार हियइ मस्तकि सेहरउ री।
—स. कु.

३ कुष्ट या कोढ नामक रोग।

४ झगडा, बखेडा, टटा।

५ साहित्य में तैंतीसवा सचारी भाव।

७ मृत्यु की एक पुत्री का नाम।

रू. भे.—बियाधि, व्याघ व्याधि, वाही, व्याध, व्याधिय, व्याधी, मह.,—बियाधो।

व्याधित–वि [स] रोगी, बीमार।

व्याधिय, व्याधी—देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

उ०—वुग्र व्याधिय ग्राधि उपाधिय मैं, सुघ लाधिय सुन्य समाधिय मैं। निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुपनै मन ससय सोग नही।
—ऊ. का.

व्याप—१ देखो 'व्याप्य' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्माड व्यास, परघी प्रकास, प्रति व्याप एस, व्यापक विसेस। वैराट ब्रह्म, सानद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ का

२ देखो व्यापक' (रू भे)

व्यापक–वि [स.] १ चारो ओर फैलाया हुआ, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र विद्यमान।

उ०—१ ब्रह्माड व्यास, परघी प्रकास, प्रति व्याप एस व्यापक विसेस। वैराट ब्रह्म, सानद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ का.

उ०—२ तुं जाह तांह व्यापक रहै, कठै अव्यापक नाहि। तुम्हि कु किसका डर नही, जनहरिया मुझि माहि। —अनुभववाणी

उ०—३ ज्यु घायल उर सालै पीरा, त्यु त्यु व्यापक राम सरीरा। घायल की घायल सो जानै, परगट कहि दिखलाउ छानै।
—अनुभववाणी

उ०—४ मै निद्रा प्रासा इधक ना तिस व्यापक सुधा।
—केसोदास गाडण

उ०—५ अठोत्तर पुत्री जाति अनूप, भलासु न दोइ हजार सरूप। उपना एकण पिंड अनेक, हूवा ससार व्यापक हेक।
—रा. वमावळी

उ०—६ सुपहा दर चचळ वाळ सरू, घट व्यापक गोरखनाथ गरु। तुहताण जिसौं चढवाण तपै, कर वेढ सिवाड मैं वास कपै।
—पा प्र.

२ छाया हुआ।
३ सामान्य, साधारण।
४ ढकने या घेरने वाला।
रू भे—बियाप, वियापक, व्यापक, वापक, विम्रापक, वियापक, बीम्रापक, वीयापक, व्याप।

व्यापण–स स्त्री [स व्यापन] फैलाव, विस्तार।

व्यापणौ, व्यापबौ–क्रि अ [स वि+आप्लृ] १ चारो ओर फैलना, व्यापक होना, व्याप्त होना।

उ०—१ विकट जडी मुहरा धरया, काम भुजग डस लीन। विख व्याप्यौ, उतरै नही, परस्यां विना प्रवीण। —अग्यात

उ०—२ देवी नीर रै रूप तूं आग ठारै, देवी तेज रै रूप तू नीर हारै। देवी ग्यान रै रूप तू जगत व्यापी, देवी जगत रै रूप तू धरम थापी। —देवि.

उ०—३ निज यस दिसि दिसि व्यापए, थापए चउ विह सघ। सूरउ तेहज सामिय, धामिय कामिय रग। —जयसेखर सूरि

२ विद्यमान होना, उपस्थित होना।

उ०—१ तुमही कहो अरधगा हमारी, हम हू लगाया कारा। कोटि ब्रह्माड मे व्यापि रह्यौ है, सो निज वर है हमारा। —मीरा

उ०—२ नमो खाग हथ्थी नमो खप्पराळी, नमो काळिका काळ-रात्री ककाळी। नमो सब व्यापी नमो सुक्ख दाता, नमो गोरी पारवती ग्यान गाता। —मा. वचनिका

३ समाना, प्रविष्ट होना।
४ छाना, फैलना।
५ घेरना, ढकना।
६ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ मैं निकल्या कदाग्रहो छड ए, ए रिखीस्वरौं नो दंड ए। परसन पूछै तूं वांकडा ए, ए क्रोध व्यापण रा टाकडा ए।
—जयवांणी

उ०—२ जा घट विरह न व्यापही, भयै अव्यापक तन। जनहरिया घट विरह विन, जाणि अलूणो अन। —अनुभववाणी

उ०—३ लियां नाम मुख लाभ, व्याधि दूख आधि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, अरी वडपण ऊथापै। —रा रू.

उ०—४ अहूं आगि ता तन वसे, व्यापै विघन करोडि। जन-हरीया पद स्वात कु, जाता लेह बहोडि। —अनुभववाणी

उ०—५ नाव परताप जळ जोगणी चडका, भैरवा भूत छळ छेद नाही। नाव परताप तै विघन व्यापै नही, नाव परताप तिहु लोक माही।
—अनुभववाणी

७ होना।

उ०—१ प्यारी पोढी पीव सग, कोऊ न व्यापै वीह।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख सपत्ति, व्यापत नाहि विपत्ती। —मे. म

उ०—३ जे मन राखै रामजी, अपने अग लगाइ। दादू कुछ व्यापै नही, जे कोटि काळ भख जाइ। —दादूवाणी

८ विचार उत्पन्न होना।

उ०—हियै तहव्वर खान रै, व्यापी यौं विपरीत। दाहु अकब्बर मोगयौ, नीरग साह नचीत। —रा. रू.

९ असर होना, प्रभाव पडना।

उ०—परिचय पीवै राम रस, राता सिरजनहार। दादू कुछ व्यापै नही, ते छूटै ससार। —दादूवाणी

१० उत्पन्न होना।

उ०—राजा घणी चतुराई सु ऊारि भरि खवास्वरा रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नाव री कळवाणी करि दीनी। जावो राण्या नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरै पधारिया। उण राति राजाजी व्रतीक थ्या तियै सुख में पोढ्या छै। आधी राति रै समै महाराज ने त्रखा घणी व्यापी, तरै खवास कना सु जळ मगायो। तरै खवास असमभ थकै मत्री ऊारी हाजर कीनी। —रा. वसावळी

११ पहुचना।

उ०—पच पडवि वनतरि विमासिउ, तेरिमूं वरस केमि गमेसिउ बुद्धि नारद महारिसि आपी, मध्यदेस रहियो तुम्हि व्यापी।
—सालिसूरि

व्यापणहार, हारो (हारी), व्यापणियो—वि०।

व्यापिओडो, व्यापियोडो, व्याप्योडो—भू० का० कृ०।

व्यापीजणौ, व्यापीजवो—भाव वा०।

बिआपणौ, बिआपवौ, बियापणौ, बियापवौ, ब्यापणौ, ब्यापवौ, वापणौ, वापणौ, विआपणौ, विआपवौ, वियापणौ, वियापवौ, बीआपणौ, बीआपवौ—रू भे।

व्यापत—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

व्यापति, व्यापती—देखो 'व्याप्ति' (रू भे)

उ०—आवइ सकल कलापति, व्यापति मांडइ कोडि। बइठा स्व-जन सुखासनि, वासणि धन दिइ कोडि। —जयसेखर सूरि

व्यापार—स पु. [स.] १ व्यवहार, सम्बन्ध।

उ०—जाहरा उवै नु राजा पासै लै गया, ताहरा मारगि मैं जावतां हटवाणियै री देणी हुतो तिको बोलियो, रजपूत, म्हारो लहणो दीयै जाह। तोनु राजा मारिसी। औ छाडै नही। ताहरा वडै, व्यापारी सु व्यापार हुतो, तिकै आया। आइनै कह्यो, ठकुराळा, टको-पईसो खरचतो अपूठो मत जोए। म्है खरच पूरवस्यां। अर छोटै व्यापारी रो करज दीयो। —बाप री सीख री वात

२ कर्म, कार्य, काम।

३ धधा, व्यवसाय, क्रय-विक्रय का पेशा।

४ उद्योग, उद्यम।

५ आचरण, चारित्रिक, व्यवहार।

६ विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का सयोग। (न्याय)

रू. भे —वेपार, बंपार, वोपार, व्यापार, व्योपार, व्यौपार, वापार, बेपार, वेवार, वैपार, बैंवार, वोपार, वोवार, व्योपार, व्यौपार।

मह.,—वेपारो, वोपारो।

व्यापारिक—वि. [स] व्यापार का, व्यापार से सम्बन्धित।

व्यापारी—स. पु. [स. व्यापारिन्] १ व्यापार करने वाला, क्रय-विक्रय करने वाला, सौदागर।

उ०—१ सांझ परी गई, गुदडी परी थइ, दीवइ जोति भई। चोहटइ भीड मिटी, व्योपारी नी महिमा घटी, हाटइ ताला जडइ। आप आप रै घर आया, कूची लाया। स्त्री सोलह सिंगार सजै, गणिका जार नै भजै। —रा. सा. स

उ०—२ ताहरा वडै व्यापारी सं व्यापार हुतो, तिकै आया। आइनै कह्यो, ठकुराळा, टको-पइसो खरचतो अपूठो मत जोए। म्है खरच पूरवस्यां। अर छोटै व्यापारी रो करज दीयो। यूं करता राजा गुनह माफ कीयो। —बाप री सीख री वात

उ०—३ पाटण सहर, तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै। बडो धनेस्वरी। तिणरै देवीदास नामो अेका-अेक बेटो। सो वरसा पनरह माहें हुवो, तिको बडो सपूत। नामै-लेखै बिणज व्यापार माहे बहोत खबरदार। —पलक दरियाव री वात

उ०—४ व्यापारी सहू वाणिआ, जोसी वैद्यक व्यास। मागण पणि मिळिया बहु, सहूनी पुगइ आस। —मा. का प्र.

२ वैश्य, बनिया।

उ०—१ कह्यो महाजन आवै जिणा नै पइसा लेइ रोटिया कर घालबो कर। महाजन आवै ज्यानै मेर तैं ब्राह्मणी नो घर बताय देवै। कंतलै एक कालै च्यार व्यापारी घणा कोसा रा थाका आया। मेरा नै कह्यो उत्तम घर बताओ जद ब्राह्मणी रो घर बतायो। —भि द्र

उ०—२ तिम हिज जेठमलजी कह्यो थे जास्यो तो और व्यापारी आण वसासा पिण साधा नैं काढा इसो अन्याय म्हे करां नही। जद वावेचा कूचिया लेइ आप आप रे घर गया। —भि. द्र

३ व्यवसाय, कार्य-धन्धा या पेशा करने वाला व्यक्ति।

रू. भे —वेपारी, बंपारी, बोपारी, ब्योपारी, ब्यौपारी, वापारी, वेपारी, वैपारी, वोपारी, वौपारी, व्योपारी, व्यौपारी।

व्यापियोडो—भू. का. कृ.—१ चारों ओर फैला हुआ, व्यापक हुवा हुआ, व्याप्त हुवा हुआ। २ विद्यमान हुवा हुआ, उपस्थित हुवा हुआ। ३ समाया हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ। ४ छाया हुआ, फैला हुआ। ५ घेरा हुआ, ढका हुआ। ६ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ। ७ हुवा हुआ। ८ विचार उत्पन्न हुवा हुआ। ९ असर हुवा हुआ, प्रभाव पडा हुआ। १० उत्पन्न हुवा हुआ। ११ पहुँचा हुआ।

(स्त्री. व्यापियोडी)

व्यापी—वि. [स. व्यापिन्] १ व्याप्त या व्यापक होने वाला या हुवा हुआ।

२ सर्वत्र फैलने वाला या फैला हुआ।

३ आच्छादित या आच्छादन करने वाला।

स. पु —विष्णु भगवान का नाम।

रू भे.—बिप्रापी, व्रियापी, विप्रापी, वियापी।

व्याप्त–वि [स] १ फैला हुआ, पसरा हुआ. २ भरा हुआ, परिपूर्ण ३ सम्मिलित, शामिल. ४ समाया हुआ, प्रविष्ट हुआ हुआ. ५ आच्छादित।

रू. भे —बियाप, व्यापत।

व्याप्ति, व्याप्ती–स स्त्री [स] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव।

२ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों मे से एक।

३ नियम या सिद्धान्त जो सर्वत्र लागू होने वाला हो।

४ फैलाव, विस्तार।

५ परिपूर्ण होने की अवस्था, परिपूर्णता।

रू. भे.—व्यापति, व्यापती।

व्याप्तिग्यान–स. पु. [स. व्याप्तिज्ञान] साध्य को देख कर साध्यवान् के या साध्यवान को देख कर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध मे होने वाला ज्ञान। (न्याय)

व्याप्य–वि. [स] वह जो व्याप्त करने योग्य या व्यापनीय हो।

रू भे.—व्याप।

व्याप्रत–सं. पु [स. व्यापृत] १ सचिव, मत्री। (डि. को)

२ कामदार। (डि को.)

४ नौका, नाव।

वि —१ किसी कार्य मे लीन या सलग्न।

व्याप्रति–स पु [स. व्यापृति] १ कार्य, धन्धा।

२ कार्य, कर्म।

३ उद्योग, परिश्रम।

४ पेशा, धधा।

व्यामोह–स. पु [स व्यामोह] १ मोह, अज्ञान।

उ०—व्यामोहे वर वीर, घर घर सत देखि घणउ, आयउ राह हर आप रद, समहरि 'अचळ' सधीर। —अ वचनिका

२ व्याकुलता, परेशानी।

रू. भे.—व्यामोह।

व्यायण—देखो 'व्याण' (रू भे)

उ०—मेली तो मेली व्याईजी वंन मैं, आयी वाई रै पेलै सावण री तीज। म्हांनै तो ठीक नही मोळा व्याईजी, पूछो थारी व्यायण जी नै वात। —लो गी

व्यायांम–स. पु [स व्यायाम] १ शरीर को मजबूत एव पुष्ट बनाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक श्रम, कसरत।

२ परिश्रम, महनत।

३ थकावट।

४ रति-क्रिया के बाद होने वाली थकावट।

५ कोशिश, प्रयत्न, प्रयास।

व्यायांमसाळ, व्यायांमसाल, व्यायांमसाळा, व्यायांमसाला–स. स्त्री. [स व्यायामशाला] वह स्थान जहां व्यायाम किया जाय।

उ०—जिनमदिर धवलमदिर राजभुवन देवकुल अट्टाल प्रासादमाल रोगसाल पोसधसाल रथसाल हस्तिसाल, तुरंगसाल व्यायांमसाल टकसाल आस्थांनसभा धीगरणसभा व्यवकरणसभा......... ।

—व. स.

व्यायांमी–वि.—व्यायाम करने वाला।

व्यायोग–स पु. [स] एक प्रकार का रूपक विशेष। (साहित्य)

व्यायोडी–स स्त्री —मादा पशु जो प्रसूता हो गई हो, ब्याई हुई, जिसने बच्चा प्रसव किया हो।

व्यायोडी —देखो 'विआहियोड़ी' (रू भे)

(स्त्री. व्यायोडी)

व्यारण—देखो ''वारण' (रू. भे.) (अ. मा.)

व्यारो, व्यारोड—देखो 'व्यवहारी' (रू भे) (ऊ. र.)

व्याळ, व्याल–स पु. [स. व्याल] १ दुष्ट व्यक्ति, निर्दयी व्यक्ति। (अनेका.)

२ मौत का दिन, मृत्युकाल। („)

३ सर्प, सांप। („)

उ०—१ माधव ! कोयड मक सखी, धै को अभिनयु व्याल। फणि फाटी मद जन्मियु, आगइ जेम मराल। —मा का. प्र.

उ०—२ तोयधी मुनिंद्र पाण वर्ष व्याळ वैननेय, दूठ अद्र वर्षे पांण जुमाण दधीच। वहवा मत्री ना याघा चद रायासान वीजै वीर राणा साधा जे न साधा मोम वीच। —हुकमीचद खिड़ियो

उ०—व्याळ नू जगायो सोर विद्रुजा चलायो वज्र, सीपती भ्रमायो कै सुणायो वीर साद। धुरजटी जटा हूं अघायो वीरभद्र आयो, देव दळा कारी यूं आयो मेघनाद। —जोरावरसिंघ

उ०—४ वरमाळ मुड नि छाल नग की, लाल केसरि जूसणं। वपु भस्म लेप स्मसान राजित, व्याळ पांणि विभूसण। —ला. रा

४ हस्ती, हाथी। (अ मा., अनेका)

उ०—१ अटवी-अभा अटवी वरणन। अनेकोरकट अक्ष गहन। विविध व्याळ सारदूळ। काल कफाल। वेताल। क्षेत्रपाल। साकिनी। डाकिनी। योगिनी। यक्ष। राक्षस। गधरव विद्याधर। खेचर। भूत। प्रेत। पिशाच। क्रीडादिक कारि।

—सभा

उ०—२ 'मदमसत हळवळ, हालि मैंगळ, विमळ स्यांमळ घटा वद्ळ, जाणि रद बग पत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ। हीस हैंमर कळळ हूंकळ, दुकळ सुकळां सोर दमगळ, वीज पळकत सेल वळवळ प्रबळे हळ भूपाळ। —महाराव हणुतसिंघ सेखावत रो गीत

५ शेपनाग।

उ०—नही तू काळ नही तू क्रम्म, नही तू ब्याळ नही तूं ब्रह्म। नही तूं देव नही तू दंत, नही तू भेव नही तू भंत।

—ह. र

६ दुष्ट हाथी।
७ बुरा या उपद्रवी व्यक्ति।
८ पवन, हवा, वायु।

उ०—दी आग्या दूसरा, मेळ कीजे ग्रह मगळ। उण समयं दिस आठ, काठ जगं दावानळ। भेळि भाळ तण भुवण, करं मजण दोनूं कर। परि भूनं जळ पाणि, सकत किरि माण सरोवर। रव अगनि ब्याळ धूवा रवण, सीर ज्वाळ इळ समिळै। सुज सती होम करता सु वणि, मिळे घोम नभ मडळे।

—रा. रू.

९ शिकारी या हिंसक जन्तु।
१० भगवान् विष्णु का एक नाम।
११ राजा, नृप।
१२ सिंह, शेर।
१३ बाघ, चीता।
१४ दण्डक छन्द का एक भेद विशेष।

रू भे.—विश्राळ वियाळ, ब्याळ, व्याल, बयाळ, विश्राळ वियाळ, बीम्राळ, बीयाळ, वेयाळ।

ब्याळखळ-स. पु. [स. व्यालखल] १ मोर, मयूर। (ना. मा)
२ पक्षिराज गरुड।
३ सिंह, शेर।

ब्याळग्राही-स. पु [स व्यालग्राहिन्] सांपो को पकडने वाला, सपेरा।

ब्याळग्रीव, ब्यालग्रीव-स. पु [स व्यालग्रीव] एक देश का नाम।

ब्याळधीस ब्यालधीस-स. पु [स व्यालधीश] १ शेषनाग।
२ ऐरावत हाथी।

ब्याळपाळ-स. पु [स. व्यालपाल] चन्दन। (ना मा.)

ब्यालरेस-स पु —सर्पों का समूह।

ब्याळसूदन-स. पु [स. व्यालसूदन] १ पक्षिराज गरुड।
२ मोर, मयूर।
३ सिंह, शेर।

ब्यालारि-सं. पु [स व्याल+अरि] १ सर्प-शत्रु गरुड। (अ मा)
२ मोर, मयूर।
३ सिंह, शेर।

ब्यालिक-सं पु [स] सपेरा।

ब्याळी, ब्याली-स. पु [स व्याली] १ शिव शंकर, महादेव।
२ मोरनी।
३ सिंह की स्त्री, शेरनी।

ब्याळू-स पु [स. विकालिक] १ रात्रि का भोजन, सायकालीन भोजन।

उ०—१ अलख तू हिज आळसिया उदम, पाळग तू हिज न पाळा पाळ। वाटण तू ही न ब्याळा ब्याळू, गोविंद तू हिज न ग्वाळा ग्वाळ।

—ओपो आढो

उ०—२ पूनम री घट्ट चादणी रात। वै दोनूं जणा धानपुर पूगा जितरै ब्याळू वेळा व्हैगी। गाम रा गोर मैं छोरा कब्वडी रमता हा अर चावटं वेठ्या लोग-बाग वाता करता हा। —अमरचूनडी

रू भे—बियाळू, वेळू, ब्याळू, वियालू, वियाळू, वेळू, वेलु, वेळू, वेलू।

ब्याव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ एम गुणसठं साठो आयो, राव सहंसमल ब्याव रचायो। धरपति 'अजो' मोड सिर धारे, परणीजण साचोर पधारै।

—रा. रू.

उ०—अत्र माइता ब्याव की होस कीनी छै। रामेपुर ब्राह्मण नै आग्या दीनी छै। रामेपुर अठा सुं गुजरात नै व्यायो छै। अहमदाबाद नगर मैं आयो छै। तदि कपूरचंद सेठ सुणि पायो छै। सेठ आपका आदमी लिनायं रामेपुर नै बुलायो छै।

—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ रजपूता नै उपदेस पसू चारो खाण वाळं ही सामधरम पाळियो तो है। राजपूता थै नरदेह हो, अन धणी री खावो दुख मैं सहायता धणी सू लो ब्याव सावा आदि मैं ईजत राखे है अंडा घणा कारण है सो थे राजपूती री राह चालणी चाहो नै तांहरो उद्धार चाहो तो धणी री बुरी नै आपरी न्यूनता जाणी।

—बी स टी

उ०—४ हरसा वीर मेरा रे, राव गढा रै, करतो ब्याव। मेरी मा का रे जाया, घुडला तो हसती रे देतो घूमता।

—जीणमाता री गीत

ब्यावडो—देखो 'विवाह' (अल्पा., रू भे)

उ०—ओसर मोसर माय, ब्यावड़ा आडी आवै। चारै पारै मिळा, करवला भोज मणावे। कूतरडी रै भेळ, गिणीजै नीरो माडो। पण घिटाळ टळं, नरा अपजस अवाडो।

—दसदेव

ब्यावट-स पु. [स व्यावर्त्त] दोष महादोष।

उ०—हरजीमल सेठ रागी थयो, जद रुघनाथजी से उरजोजी साघु मोटो ओलियो लेई वाचवा लागो। भीखणजी उठं अमकडियै गाम काची पाणी लीधो, अमकडियै गाम कवाड जडनै सूता, अमकडियै नित्य पिंड लीधी, इत्यादिक अनेक दोख पांना सू वाचवा लागो। जद सेठजी वोल्या—जोधपुर जाशो राजा कनै पुकारो। आ तो ब्यावट है। ओ भगडो म्हा सू नही मिटं।

—भि. द्र

ब्यावण, ब्यावणी—देखो 'ब्यावण' (रू. भे)

ब्यावणू—देखो 'ब्यावणू' (रू भे)

व्यावणो, व्यावबो—१ देखो 'व्याणो, व्याबो' (रू. भे.)

उ०—सारचिया में स्वामीजी पधारया। एक बाई कह्यो स्वामीजो म्हारै भेंस व्यावै जब पधारो तो लाहो लेवू। तै किम भेंस व्यायां एक महिना तांइ दूध दही चावर देवै पिण विलोवै नहीं। तै देवी रै टाणं पधारज्यो। —भि. द्र

२ देखो 'विवाहणो, विवाइवो' (रू भे.)

व्यावणहार, हारो (हारी), व्यावणियो—वि०।
व्यावियोडो, व्यावियोडो, व्याव्योडो—भू० का० कृ०।
व्यावीजणो, व्यावीजवो—भाव वा०, कर्म वा०।

व्यावर–स स्त्री—१ गाय भेंस आदि की जिनेंद्रिय या योनि।

२ प्रसव देने की क्रिया।

उ०—दूहो दुपटो दाम, जोडघा सो ही जाणसी। व्यावर तणो विराम, बांझ न जाणं धीभरा। —धीभरा ग्रहीर री वात

व्यावलो—देखो विवाहलो' (रू भे.)

व्यावहारिक, व्यावहारीक—देखो 'व्यवहारिक' (रू भे.)

व्यावियोड़ी–वि. स्त्री.—१ जिसका विवाह हो गया हो।

२ जिसने बच्चे को जन्म दिया हो, प्रसूता।

व्यावियोड़ो—देखो 'विवाहियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. व्यावियोड़ी)

व्यावू–स. पु [अनु.] कुत्ते के भौंकने की आवाज।

उ०—पण मोट्यार वेटा उणरै केणा री कीं गिनरत करै नी। वो घडी घडी वारै माथै धसळां करतो कुत्ता री गळाई भुसै। सांकडै आया पूछ हिलावै। आठ पौर कळकळ करतो वो कुत्ता री भांत व्यावू व्यावू करतो रेवै। मोट्यार काटी वेटा उण रै भुसणा री की यारै करै नीं। —फुलवाडी

व्यास–स पु. [स] १ वेदों का सग्रह, विभाग व सम्पादन द्वारा पुनर्रचना करने वाले एक महर्षि, जो पाराशर ऋषि व धीवर कन्या सत्यवती (मत्स्यगन्धा) के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे।

उ०—१ सावतरी सांमि रा करै वाखांण किताई, रुखमांगद द्विरीक साध नारद सवाई। पारासुर पैंहळाद सेस गंगेव महेसुर, अरिजण नै अक्रूर व्यास रिखि वारट ईसर। —पी. ग्र

उ०—२ सहज कळा जागी सवें, तन मन वचनां सास। जनररिया इदर कथा, वेद न जांणे व्यास। —अनुभववाणी

उ०—३ देवी वालमिक व्यास रूपै तूं ऋत, देवी रांमायण पुरांणो भागवत्त। देवी काबा रै रूप तू पाथ लूटै, देवी पाथ रै रूप भाराथ जूटै। —देवि

वि० वि०—इन्होंने पुराण, भागवत, महाभारत व वेदांतसूत्र आदि की रचना की थी। ये नदी के बीच टापू पर उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन व रंग काला होने के कारण कृष्ण कहलाये। इनका जन्म सत्यवती की कौमारावस्था में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनकी माता सत्यवती का विवाह भीष्म पितामह के पिता महाराज शान्तनु से हुआ था। जिससे उसे विचित्र वीर्य व चित्रांगद नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। इन दोनों पुत्रों की मृत्यु निसन्तान होने के कारण वंश की स्थापना के लिए इन्हें सत्यवती ने नियोग की आज्ञा दी। अतः दोनों की पत्नियों अम्बिका व अम्बालिका से नियोग कर क्रमशः धृतराष्ट्र व पाण्डु को जन्म दिया एवं अम्बिका की दासी से विदुर को जन्म दिया। इन्होंने सजय को दिव्यदृष्टि दी थी। विभिन्न मन्वन्तर में जन्म लेकर वेदों के विभाग, सग्रह व सम्पादन करने वाले अट्ठाईस महर्षियों में इनका अन्तिम नाम है। सभी अट्ठाईस महर्षियों को व्यास कहते हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

स्वयभू, मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु, इन्द्र, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, ऋषभ, सुतेजा, अन्तरिक्ष, सुधन्वा, त्र्यारुणि, धनञ्जय, कृतञ्जय, ऋतञ्जय, भरद्वाज, गौतम, हर्यात्मन, वाजश्रवा, तृणबिन्दु, ऋक्ष, शक्ति, पराशर, जातुकर्ण और कृष्णद्वैपायन।

२ ब्राह्मण जो कथावाचक व ज्योतिषी होते हैं।

उ०—१ दियै 'गजन' फिर वूझिया, 'अजन' बडा उमराव। प्रोहित व्यासां वारठां, पूछे रीत प्रभाव। —रा. रू

उ०—२ व्यापारी महू वांणिया, जोसी वैदक व्यास। मांगण पणि मिलिया बहू, सहूनी पूगइ आस। —मा. कां प्र.

३ गोल वृत्त मे स एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी निकल जाने वाली रेखा। (रेखा गणित)

४ फैलाव, विस्तार।

रू भे.—वियास, बीयास, व्यास, विपास, वियास, व्यासि, व्यासी।

व्यासगीता–स. स्त्री. [सं] एक उपनिषद का नाम।

व्यासगुफा–स. स्त्री [स] बद्रिकाश्रम के पास की एक गुफा जहां व्यासजी द्वारा पुराणों की रचना की गई थी।

व्यासतीरथ–स पु. [स व्यासतीर्थ] एक प्रसिद्ध तीर्थ। (पुराण)

व्यासपूनम, व्यासपूरणिमा–स. स्त्री. [स व्यासपूर्णिमा] आषाढ की पूर्णिमा जिसे गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं।

व्यासवन–स. पु. [स] कुरुक्षेत्र मे स्थित एक वन जिसमे एक पुण्य तीर्थ है।

व्यासस्थल, व्यासस्थली–स पु. [स.] कुरुक्षेत्र मे एक तीर्थ, जहां व्यास ने अपने पुत्र वियोग से सतप्त हो शरीर त्याग देने का निश्चय किया था।

व्याससूतर, व्याससूत्र–स पु. [स. व्याससूत्र] वेदांतसूत्र।

ब्यासि, ब्यासी—देखो 'ब्यास' (रू. भे.)

ब्याह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ नव नव खेल वसत नित तिर आयौ मधुमास। परणा-वण 'जैमाह' नूं, आगम ब्याह प्रकास। —रा रू

उ०—च्यार चक्र चमरी वेद छुछम पढै, अरघ अर उरघ कै बीच फेरा। दास हरिराम कहै ब्याह अैसा रच्या, आय नही जाय वळ फेर घेरा। —अनुभववाणी

उ०—पछै रूण साखला रै पधारिया। साखला नाळेर लै रावजी रै साम्हा आया। साखलौ टीवायत रावत कहावतौ जिण री बेटी रावजी नू परणाई। अर रावजी पण खरा मेंहरवान हुय ब्याह कियौ। —नैणसी

उ०—४ रग विण ब्याह, वेस विण रामति, सुदरि विण ग्रिह-वास जिसौ। सुरताण कहै कलियाण समोभ्रम, त्याग पखै कुळ जलम तिसौ। —त्याग प्रससा री गीत

ब्याहक-वि —विवाह करने वाला, दुल्हा।

उ०—हैरान हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडे। गजगाह 'भीम' 'गाजी' हुओ, ब्याहक लाडी लाडडे। —गु. रू. व.

ब्याहणौ, ब्याहवौ—१ देखो 'ब्याणौ, ब्यावौ' (रू. भे.)

उ०—१ इतरै फकीर पाखती घोडा वधिया छै जिका रै साम्हौ जोवणै लागियौ। सो पायगा माहै वधी च वरढाल नजर चढी। अेक सूरेजी री सवारी रौ घोडौ अंवर आम्बी वडी सी कीमत रौ। चवरढालती सूं ब्याही छै सो अेक तौ वछेरौ वरस अढाई रौ हुवौ। अेक वछेरौ महिना नौ री हुई सो दोनूं पाखती वधिया खडा छै। —सूरै खीवै काधळोत री बात

उ०—२ ताहरा खान जाय घोडी सभाळी। घोडी रा पगा माही सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी। ताहरा खान मन में कहण लागियौ—जै अेम दोय वार ब्याही छै पण गट्टी नू तौ तोड नाखसी। यूं जाण घोडी नू कायजौ देय, गट्टी सुद्दा वाहर काढी। —सूरै खीवै काधळोत री बात

उ०—३ आ कुत्ती एक बाळद री सागै थी ब्यामण थी सो ई ठाव ब्याही। —साह रांमदत्त री वारता

२ देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू भे)

उ०—१ सोमपाल री सु कन्या, जयमाळा तसु नाम। ग्रप विक्रम सग ब्याहई, नगर सोपारै गाम। —पचदडी री वारता

उ०—२ सुरजन सुत बूदी सदन, सग्या दुरजणसाल। ब्याहण हू वळभद्र नू, हुवौ सहायक हाल। —व. भा.

ब्याहणहार, हारौ (हारी), ब्याहणियौ—वि०।

ब्याहिओड़ो. ब्याहियोड़ौ, ब्यह्योडौ—भू० का० कृ०।

ब्याहीजणौ, ब्याहीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

ब्याहति, ब्याहती—देखो 'ब्याहृति' (रू भे)

ब्याहदापौ-स. पु —१ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाली एक सरकारी कर विशेष।

२ देखो 'दापौ'।

ब्याहलौ-स. पु —१ डिंगल का एक (छद) गीत विशेष।

२ देखो 'विवाहलौ' (रू भे.)

उ०— गुरु गोविंद कै सरणै आयौ, कुळ की लज्या पेली। क्रस्ण क्रपा तै कयं ब्यावलौ, भणै पदमैयौ तेली। —रुकमणी मगळ

ब्याहार-स पु [म] १ वक्ता, भापण। २ ध्वनि, नाद, उच्चारण।

ब्याहियोडी—देखो 'ब्यायोडी' (रू भे.)

ब्याहियोडौ—देखो 'विवाहियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. ब्याहियोडी)

ब्याहिलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

ब्याही—देखो 'ब्याई' (रू भे.)

ब्याहुलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे)

ब्याहृत-वि. [स व्याहृत] बोला हुआ, भापण दिया हुआ, उच्चरित किया हुआ।

ब्याहृति, ब्याहृती-स स्त्री [स. व्याहृति] १ भापण, वक्तृता।

२ बयान।

३ भू, भुव., स्व. आदि मत्र जो गायत्री मत्र के साथ जपे जाते है।

उ०—ब्याहृती गायत्री, स्रुती, धारत नही धरम भ्रनी, स्रुती औ स्म्रति सरव धूर में धसाता। वकती मे वाद वाद, वूझन करती विवाद, सीतळप्रसाद सरव जात को जीमाता। —ऊ का.

रू भे —ब्याहति, ब्याहती।

ब्यिजण, ब्यिजन-स. स्त्री. [स वीजन] १ हवा वायु।

उ०—गल्या पीतल रताजणी सणा पखावज धौंकार करइ छइ। न्रत्यकी पात्र न्रत्य करइ छइ। ततवितत घन सुखिर पचवरण वाजित्र वाजइ छइ। पचवरण छत्र धारिया छइ। चामर ब्यिजन विहु पखि हुइ छइ। —का. दे प्र

२ देखो 'ब्यजन' (रू भे)

ब्युतक्रस्ट-स. पु [स व्युत्क्रुष्ट] व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर बोलने की क्रिया या भाव। (सगीत)

ब्युत्थितास्व, ब्युथितास्व-स. पु [स. व्युत्थिताश्व] इक्ष्वाकुवशीय एक राजा का नाम।

ब्युत्पत्ति-स स्त्री. [स.] १ मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान।

२ शब्द का मूल रूप।

३ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

ब्युत्पन्न-वि. [स] निकला हुआ, निकसित।

२ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान ।

व्युसिताश्व–स पु. [स व्युषिताश्व] पुरुवशीय एक राजा का नाम जो राजा कक्षीवान् की पुत्री भद्रा का पति था ।

वि. वि.—इसकी पत्नी भद्रा अत्यन्त सुन्दर होने के कारण यह अति कामासक्त रहता था अत इसकी असामयिक मृत्यु हुई । मृत्यूपरान्त इसके शव से भद्रा को सात पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

व्युस्ट–स पु [स. व्युष्ट] १ पुष्पार्ण एव दोषा के पुत्रो मे से एक, जो पुष्करिणी का पति एव सर्वतेजस् का पिता था ।

२ विभावसु एव उषा के पुत्रो मे से एक पुत्र, वसु ।

व्यूंवर–स. पु [स व्योमवर] देवराज इन्द्र । (अ. मा)

व्यूढ–वि. पु] स] १ पूर्ण, भरा हुवा, पूरा ।

२ विवाह किया हुआ, विवाहित ।

३ सेना की आकृति ।

उ०—प्रौर की उवेल प्रानो पूरी पन भेल भेल, सेलबो पसद कीनो वाहनो धनी की तैं । नाम परतापसिंह प्यार को पितु तै पायो, व्यूढ वरदान वडा धन्वप धनीको तैं । —ऊ. का.

व्यूढोरस, व्यूढोरू–स पु [स] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था ।

व्यूह–सं. पु. [सं व्यूह] १ समूह, झुण्ड । (अ मा., ह. ना. मा)

२ सेना, फौज ।

३ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष रूप से खडा करने का ढग, सेना-विन्यास ।

उ०—१ सुत 'प्राणद' 'महेस', खगं पडवेस घडच्छै । विड वाजे पडिहार, व्यूह चक्राकन अच्छै । —रा रू.

उ०—२ डगा घीसता सांकळा सूत डोरा, घरा यूं खणे ज्यू वणे खेत धोरा । भला जूह वै वेरिया व्यूह भेदी, विजै मित्र जै चित्र सग्राम वेदी । —व. भा

४ शरीर, देह ।

उ०—वभीछन कूं पाट वैठाए, सीता सहत प्रवधपुर आए । भरथ सत्रघन लछमन रामा, पूरण विस्णु व्यूह अभरामा ।

—ऊदोजो अडीग

५ तर्क-वितर्क ।

६ निर्माण, रचना ।

७ चक्र ।

८ भ्रमरजाळ ।

रू. भे.—व्यूह ।

व्यूहन–स पु. [स. व्यूहन] १ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष ढग से खडा करने की क्रिया ।

२ निर्माण करने की क्रिया ।

व्योंत—देखो 'वेंत' (रू भे.)

व्योंतणो, व्योंतवो 'वेंतणो, वेंतवो' (रू. भे.)

व्योंतणहार, हारो (हारी), व्योंतणियो—वि० ।

व्योंतिप्रोडो, व्योंतियोडो व्योंत्योडो—भू० का० कृ० ।

व्योंतीजणो, व्योंतीजवो—कर्म वा० ।

व्योंताणो व्योंतावो—देखो 'वेंताणो, वेंतावो' (रू भे)

व्योंताणहार, हारो (हारी), व्योंताणियो—वि० ।

व्योंतायोडो—भू० का० कृ० ।

व्योंताईजणो, व्योंताईजवो—कर्म वा० ।

व्योंतायोडो—देखो 'वेंतायोडो' (रू भे.)

(स्त्री व्योंतायोडी)

व्योंतियोडो—देखो वेंतियोडो' (रू भे.)

(स्त्री व्योंतियोडी)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे)

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—प्रादर भक्ति, मो मन परिखो ए, तूं तो पहला व्योपारी सारिखो ए । जइ कहां राजा खेदै भरचो ए, पिण इतरो कहां ठाडो पडचो ए । —जयवांणी

व्योम–स पु [स व्योमन्] १ आकाश, आसमान । (हि नां मा)

उ०—१ प्रपंच पच तत्व को तुही उपावनी, क्षमाप वह्नि वायु व्योम तू खपावनी । ब्रह्म्म की तुही रजा भुजा बलदनी, नमामि 'इदरा' 'समद' नदनी । —मे म.

उ०—२ पत्र सुधारै जोगणो, माळ सुधारै रभ पथ चलेबो सोम रवि, पेखै व्योम अचभ । —रा रू.

२ जल, पानी ।

३ अोडल, अभ्रक ।

४ सूर्य का मदिर ।

५ बादल, मेघ ।

६ शून्य ।

६ विष्णु का नाम ।

७ पवन, वायु, हवा ।

६ नीला, आसमानी । * (हिं. को)

१० यदुवशीय राजा दशार्ह के पुत्र जो जीमूत का पिता था ।

रू भे.—वोम. बौम, व्योम, वयोम, वोम, वोमि, वौम ।

व्योमकेस, व्योमकेसी–सं पु [स व्योमकेश,'व्योमकेशिन्] शिव, महादेव ।

उ०—उरमाळ मुड नि छाल अग की खाल केसरि जूसण । वपु भस्म लेप स्मसान राजित, व्याळ पाणि विभूसण । गण भूतेस पिसाच कौतुक, अत तनु जटा जुटी । जय व्योमकेस महेस त्र्यबक, भीम भूतप धुरजटी ।

—ला. रा.

व्योमगगा–स स्त्री. [स.] आकाशगगा।

उ०—भवानी नमो कच्छपी स्वान भासा, भवानी नमो ऐल ईसान आसा। भवानी नमो व्योमगंगा वलच्छा, भवानी नमो चेतना दैन दच्छा। —मे. म.

रू. भे —वोमगगा, व्योमगगा, वोमगगा।

व्योमगमन–स स्त्री [स] आकाश मे उडने या विचरण करने की क्रिया।

व्योमगमनी–वि. [स] आकाश मे उडने या विचरण करने वाला।

स. स्त्री —आकाश मे उडने या विचरण करने की विद्या।

व्योमचर, व्योमचारी–स. पु [स व्योमचर, व्योमचारिन्] १ आकाश मे विचरण करने वाला, देवता।

२ सूर्य, सूरज। ३ चान्द, चन्द्रमा।

४ आकाश में उडने वाले पक्षी। ५ गन्धर्व।

वि.—आकाश मे विचरण करने वाला।

व्योममडळ–स पु. [सं व्योममण्डल] आकाश।

व्योमम्रग–स. पु [स. व्योममृग] चन्द्रमा के दसवें घोडे का नाम।

व्योमयान–स पु [सं व्योमयान] एक प्रकार का वह यान जिसमे बैठ कर आकाश में उडा जा सकता है।

व्योमवली, व्योमवल्ली–सं स्त्री [स. व्योमवल्ली] अमरवेल नामक लता विशेष।

व्योमसरिता–स स्त्री. [स] आकाश मे बहने वाली नदी, आकाशगगा।

व्योमारि–स पु [स] एक विश्वदेव का नाम।

व्योमाळ–स पु [स व्योम] आकाश। (डिं ना. मा.)

व्योमसुर–स. पु. [सं] मायासुर का पुत्र एव कस का अनुगामी एक असुर। कृष्णवध के लिए वह गोकुल गया था जहा इसका वध कृष्ण ने किया था।

व्योरौ–स पु.—१ भेद, रहस्य।

२ कारण।

उ०—तिसैं समियै माहे भाणोज मानधाता आइ मुजरौ कीयो। राण्या कहे छै भाणोज एकै समियै थारै मामोजी नु तूं पूछे खुसियाळ करि कवळ अर पूछै माहाराजा मोहल माहे पधारौ छौ ताहरा नीसासा क्यु नाखौ छौ, इतरौ ब्योरौ म्हा नु ले देई। —चौबोली

३ विवरण, वृतात, हाल।

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार।

५ व्याख्या, टीका।

६ सक्षिप्त जानकारी, परिचय।

७ बयान।

रू भे —ब्योरौ।

व्योहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—यू हम छाड्या जग व्योहार, सुख थोडा दुख अनत अपार। माता पूत पिता नही कोय, स्वारथि आय मिल्या पख दोय। —ह पु वा.

व्योची–स स्त्री —एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष। (अमरत)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू भे)

उ०—दमक छटा छविडड पताका देखिया, पटा हाथ व्योपार जुहारा पेखिया। आभुखण नर नारि ईसी विध वोपिया, जाणक सुरपुर लोक, इधक छबि ओपिया। —बगसीराम प्रोहित री वात

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०——आपणी आपणी वाणी राजवसी राजावा कै रूपक सुणाए, सूरवीर सामत ताकू अनत सुहाए। एतै कवि वीरता कै अग्रकारी, स्रीमहाराज कै सुभचितक विद्या जस कै व्योपारी। —रा. रू

व्रंग—देखो वग' (रू भे)

उ०—व्र ग हुवै भोपाळ वसती गढ कोट उजाडै व्र ग हुवै नर नारि सूरवीरा पति पाडै। व्र ग हुवै राज्यद्र, राज लै वधव मारै, व्र ग गोई गोठिया, दाव दोरू मैं सारै। व्र ग न कीजै भाइयो व्र ग को को छीजै, विसन भगत 'ऊदौ' कहै, जाणता व्र ग न कीजै। —ऊदोजी नैंण

व्रद–स. पु [सं वृद] १ समूह, झुण्ड। (अ. मा.)

उ०—१ आपगा दळण गोखम जळण आहोटो, विसै खटचलण कळिया कदम व्रद। वारवाहा करी आठ मासा वळण, नहु करी वळण कू जसोमत नद। —वा. दा.

उ०—बणै रूप व्रदावन ओप वाधू सदा सेवत देवत व्रद साधू। तरा भार अट्ठार नू भार तैसो, अनेका विराजै व्रखा रूप अैसो। —रा रू.

उ०—३ डाक चमु वजाडे ग्रीधा गळ डळा, वीजुजळा भुजावळा भाजे खळा व्रद। अच्छरा अरजा करै आटीला वीवाण आवो, अगहोमा कहे उभी आवी पुरा इद। —वनजी खिडियो

उ०—४ लखि फौज तुग लडग, ऊवग फिर दधि अग। वणि सुरथ पायक व्रंद, जग जाण दळ जयचद। —रा रू.

२ ढेर, समुच्चय।

उ०—भवानी नमो सत्य आलाप वाळा, भवानी नमो व्रंद विद्या विसाळा। भवानी नमो देव हेरभ माता, भवानी नमो तन्नमो सत आता। —मे. म.

३ गले मे होने वाला अर्बुद।

४ एक प्रसिद्ध कवि का नाम।

५ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ मुहूर्त।

रू. भे.—ब्रंद, विंद।

ब्रंदा—स. स्त्री. [स. वृन्दा] १ तुलसी।

२ गोकुल के समीपस्त वन।

३ कृष्ण की प्रेमिका राधिका का नाम।

४ जालंधर नाम दैत्य की पत्नी और कालनेमि की कन्या का नाम।

रू भे—विंदा।

ब्रंदारक—स पु. [स वृन्दारक] देवता। (ना. मा.)

उ०—घट घाव बजे तठ आठ घडी, पर आरण ज्यां पण रीठ पडी। थिर चूर हुआ कर सूर थके, छळ पेख ब्रंदारक व्योम छके। —रा. रू

वि.—१ मनोहर, सुन्दर। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ अत्यधिक, बहुत।

रू भे.—बंदारक, ब्रंदारक, विंदारक।

ब्रंदारकतरव, ब्रंदारकतरु—स पु. [स. वृंदारकतरु] देव वृक्ष, कल्पवृक्ष।

उ०—सिसु वै मिस्ती विस्ती, उदमो पोगंड मह सिंगारो। ज्यों ब्रंदारकतरव, प्रांमें डाळ सगि पत्तेणम। —रा. रू.

वृंदारका—स पु [स वृंदारक] १ देवता। (अ मा)

२ देखो 'ब्रंदारिका' (रू भे)

ब्रंदारिका—स. स्त्री [स वृंदारिका] अप्सरा।

रू. भे.—ब्रंदारका।

ब्रंदावन—सं पु [स. वृन्दावन] १ वह स्थान या चबूतरा जिस पर तुलसी का पौधा उगा हुआ हो।

२ मथुरा से ६-७ मील दूर एक प्रसिद्ध तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण का क्रीडाक्षेत्र माना जाता है। (ह ना मा)

उ०—१ परणीजे मधूपुरी, 'अमो' ब्रंदावन आयो, पेखि धाम सुख परम, भडा तीरथ मन भायो। परखि निगम द्रुम पुंज, हेक सुख कुंज निहारे, हेक पुळिण हित करे, हेक जळ जमण विहारे। —रा रू

उ०—२ वर्णे रूप ब्रंदावन ओप वाधू, सदा सेवत देवत ब्रंद साधू। तरां भार अट्ठार नू भार तैसो, अनेका विराजे ब्रता रूप ऐसो। —रा. रू.

रू. भे.—बनरावन, बिंद्रावन, बिंद्रावन, ब्रंदावन, बिंदावन, वनरावन, बिंदरावन, बिंदावन, बिनरावन, बिनराविन, वींदावन।

ब्रंदावनपत, ब्रंदावनपति, ब्रंदावनपती—स पु [स वृन्दावन+पति] १ श्रीकृष्ण।

२ ईश्वर। (ना. मा.)

ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव—स. पु. [स. वृन्दावन+राज] श्रीकृष्ण।

रू भे.—ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव।

ब्रंदावनवासि, ब्रंदावनवासी—सं पु. [स. वृंदावन+वासिन्] १ वृंदावन मे वास करने वाले, वृंदावन निवासी।

२ श्रीकृष्ण।

३ विष्णु।

४ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां मा)

रू. भे—मद्रावनवासी।

ब्रंदावनेस, ब्रंदावनेसर, ब्रंदावनेसुर, ब्रंदावनेस्वर—स. पु. [स. वृंदावनेश्वर] श्रीकृष्ण।

ब्रंदावनेसरी, ब्रंदावनेसुरी, ब्रंदानेस्वरी—स स्त्री. [स. वृंदावनेश्वरी] राधिका।

ब्रंभचार—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—भींवर छोडयो जाळ, धूट छोडयो वावरियै। पापी पीवे छांणि जुलम, करता मुंह छुरियै। फरद कसाई हट मुटा ब्रंभचार तांह लीयो, बांमण गतरी वाणियां प्रबळ पलम तांह कीयो। —ऊदोजी नैण

ब्रंभचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

उ०—कुण हींदू कुण तुरक, कुण काजी ब्रंभचारी। कुण मुला दरवेस, जती जोगी जटधारी। कुण बाळक कुण व्रध, कुण राजा कुण पज्जा। सूर धीर का काम ओर का नही अनजा। —अल्लूजी कवियो

ब्रंभा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—सुर नर कोडि तेतीस, रुद ब्रंभा सकर रही। जांन अरजन भींव, पांचू वीर इकायती। —ऊदोजी नैण

ब्रंम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

२ देखो 'भ्रम' (रू भे)

ब्रंमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू भे)

उ०—दयावान नर दाखजे वडे नम विदवान। दीरघ ई के नाम दख गणो एक ब्रंमग्यांन। —एका

ब्रंमग्यानी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू भे.)

ब्रंमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

ब्रंमरूप—स पु [स. ब्रह्मरूप] १ वेद। (अ मा.)

२ देखो ब्रह्मरूप' (रू भे)

ब्रंमवरधन—स पु [स भर्मन्+वर्द्धन] ताम्र ताम्बा। (अ मा)

ब्रंमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे) (एका)

ब्रंहम, ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे.)

उ०—निराकार निरवाण, जोगेस्वरा दुलभ जाग तेजोमय। रूप विस्नु रहमाण, पकज नाभ ब्रंहम उतपन्नो। —सू प्र

उ०—२ जिण ब्रहम तणं मारीच जाणि, मारीच तणं कासिप प्रमाणि। सुत कासिप सूरज तप असाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। —सू प्र

ब्रहमा ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रक–स पु. [स वृक] १ भेडिया।

उ०—गोमायू जरख ब्रक गूघुवा, मिस क सवद आवत सुणी। मुख रयण लगं अतस मही, आज धणू उदियामणी। —पा प्र

२ श्वान, कुत्ता। (अ. मा)

३ शृगाल, सियार, गीदड।

४ कौआ, काक।

५ उल्लू।

६ उदर मे स्थित एक प्रकार की अग्नि विशेष।

७ डाकू, लुटेरा।

८ सूर्यवंशी राजा रुरुक का एक पुत्र।

उ०—सभ्रम सुदेव ब्रप विजयसूर पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर। सुत रुरुक हुवौ ब्रक पोह सधीर ब्रक सुतण वाहु वीराधीवीर। —सू प्र

९ कृष्ण एव सत्या का एक पुत्र। १० हरति राजा का नाम।

११ सृष्टि एव छाया का एक पुत्र। १२ रोहित राजा का नाम।

१३ पाडव पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया था।

१४ एक राजा, जिसने जीवनभर मास-भक्षण नही किया।

१५ श्रीकृष्ण एव मित्रविंदा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

१६ द्रोपदी के स्वयवर में उपस्थित एक राजा, जो महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से युद्ध करते हुए मारा गया था।

१७ शिष्ट एव सुच्छाया के पुत्रो में से एक पुत्र राजा।

१८ भरूक राजा का पुत्र एव वाहुक राजा का पिता एक राजा।

१९ शूर एव मारिषा का पुत्र, दुर्वाक्षी का पति एव तक्ष तथा पुष्कर का पिता एक राजा।

२० वृथु वैन्य एव अर्चिष्मती के पुत्र का नाम।

२१ वत्सक यादव एव मिश्रकेशी नामक अप्सरा के पुत्रों मे से एक

२१ शकुनि नामक राक्षस का पुत्र।

वि० वि०—इसने शिव की आराधना कर यह वरदान प्राप्त किया कि वह जिसके मस्तक पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा या मर जायेगा। इस वरदान का प्रयोग इसने पार्वती को प्राप्त करने हेतु शिव पर ही करने को उद्यत हुआ। तब शिव भाग कर विष्णु के पास गये। विष्णु ने ब्रह्मचारिन् का रूप धारण कर इसे अपने स्वय के मस्तक पर ही हाथ रखने को प्रेरित करके भस्म किया।

वि.—क्रूर क्रोधिला। (डि. को)

रू भे—ब्रक, ब्रक्क, वीरक, वीरक्क, ब्रक्र, ब्रख, ब्रख्ख, ब्रिक्ख, ब्रिख, ब्रिख्ख।

ब्रककरमा–स पु. [स. वृककर्मा] एक असुर का नाम।

ब्रकखड–सं पु [स वृकखण्ड] एक ऋषि का नाम।

ब्रकग्राह–स पु. [स. वृकग्राह] एक ऋषि का नाम।

ब्रकजभ–स पु [स. वृकजंभ] एक ऋषि का नाम।

ब्रकदत–स. पु. [सं वृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम जिसकी सातदिनी नामक पुत्री लकापति रावण के भाई कुभकर्ण को ब्याही गई थी।

उ०—बाणासुर बोटियो, माघ चेतियो सदा सिवि। दळं दैत ब्रकदत, खळा ऊपरा हिमं खिवि। —पी. ग्रं.

ब्रकदस–सं. पु [स वृकदश] कुत्ता, श्वान।

ब्रकदीप्ति–स. स्त्री [स. वृकदीप्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेव–स पु [स. वृकदेव] वसुदेव के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेवा–स. स्त्री [स. वृकदेवा] वसुदेव की पत्नी और देवक की कन्या जिसका दूसरा नाम देवकी था, कृष्ण, अवगाहक, नदक आदि की माता।

ब्रकनिव्रति–स. पु. [सं वृकनिवृति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकरथ–स. पु [सं वृकरथ] दानवीर कर्ण के एक भाई का नाम।

ब्रकल–स. पु [स स. वृकल] १ श्लिष्ठि के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

२ वृक नामक राजा का नाम।

३ अक्रूर के एक पुत्र का नाम।

ब्रकासुर–स पु [स वृकासुर] कोक एव विकोक का पिता एक राक्षक।

ब्रकास्व ब्रकास्व–स. पु [स वृकाश्व] एक प्राचीन ऋषि।

ब्रकुट ब्रकुटक, ब्रकुटि, ब्रकुटी, ब्रकुट्टी—देखो 'भ्रकुटि' (रू भे)

ब्रकोदर, ब्रकोदर–स पु. [स. वृकोदर] १ भेडिया।

२ भीमसेन। (अ मा)

उ०—रुठ इसी दे रेस, ऊठ महामड ऊठ अव। कूट गहै छै केस, दूठ ब्रकोदर देख रे। —रामनाथ कवियौ

३ किसी प्रसिद्ध भीमनामक योद्धा हेतु किया जाने वाला सम्बोन्धन सूचक शब्द।

४ ब्रह्म।

रू भे.—वक्रोदर, ब्रकोदर, वक्रोदर, विकोदर, वीकोदर, ब्रखोदर।

ब्रकोदरी–स स्त्री. [स. वृकोदरी] पूतना राक्षसी की एक बहन का नाम।

ब्रक्क–स पु [स. वृक्क] १ हृदय, दिय।

२ गुरदा।

३ देखो 'ब्रक' (रू. भे.)

ब्रक्ख, ब्रक्ष–स. पु [स. वृक्ष] १ पेड, रूख।

उ०—१ अनेकं फलं भारिया ब्रक्ख ओपं, लियं चाहि सेवा न को जाय लोपं। सुगधाकर सुदर फूल सोहै, महाथम सौरभ सिभू विमोहै। —रा रू,

उ०—२ मद मदोमत्ता ब्रक्ख घक्का मुडे, गाजता मेघ पाहाड काळा गुडे। ओप ढंचाळ ढाळां घटा ऊपडे, ऊपरे चीघ आकास नेजा अडे। —गु रू बं

उ०—३ जळ पी रूख तळे सोय रहिया। इतरै एक सिंह आइयो। ती नू देख वी ब्रक्ष पर एक बादर थो जिको एक डाळ तोड कुमार पर गेरी। सो सचेतो होय देखै तो नाहर। ती सूं देख रूख पर चढ गयो। सिंह वी ठाव ही बैठ रहियो। —सिंघासण बत्तीसी

२ धर्म।

३ दक्ष पुत्री अनला एवं कश्यप के ससर्ग से उत्पन्न सन्तान।

रू भे.—बिरक्ख, बिरख, बिरछ, बिरिख, बिरिछ, बीरख, ब्रक्ख, ब्रख, ब्रच्छ, बछ, विरक्ख, विरख, विरछ, विरिक्ख, विरिक्ष, विरिख, विरिखि, ब्रक्षि, ब्रख, ब्रख्ख, ब्रच्छ, ब्रछ, ब्रस, ब्रिक्ख, ब्रिख, ब्रिख्ख।

ब्रक्षचिकित्सा–स. स्त्री. [स वृक्षचिकित्सा] ७२ कलाओ में से एक कला का नाम।

ब्रक्षराज–स पु [स. वृक्षराज] १ पारिजात का वृक्ष।

२ पीपलक नामक वृक्ष।

३ कल्पवृक्ष।

४ वटवृक्ष।

ब्रक्षवासी–स. पु [स वृक्षवासिन्] कुबेर की सभा का एक यक्ष।

ब्रक्षायुरवेदयोग–स. पु. [स वृक्षायुर्वेदयोग] वृक्षो चिकित्सा और उन्हें रोपने की विधि, वृक्षो का ज्ञान, चौसठ कलाओ मे से एक।

ब्रक्षासण, ब्रक्षासन–स पु [स वृक्षासन] योग के चोरासी आसनो में से एकप्रकार का आसन विशेष।

वि० वि०—इस आसन मे दोनो हाथो के पजो को जमीन पर सीधा रख कर उन पर सिर टिका कर दोनो पावो को आकाश की तरफ लम्बा करके उलटे मस्तक स्थिर रहना होता है।

इस आसन में प्राण जय शीघ्र होता है। यह आसन करके पाव को घुटने से मोड कर एडियो को जघा के निम्न भाग के पास लाने पर अर्द्धवृक्षासन कहलाता है।

ब्रक्षि—देखो 'ब्रक्ष' (रू. भे)

उ०—गोरी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम ब्रक्षि। विनय करीनइ विलपती, विधि विधि थई विलक्षि। —मा. का. प्र.

ब्रख–स पु [स वृष] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम। (अनेका)

२ कल्प वृक्ष। (,,)

३ देवराज इन्द्र। (,,)

४ धर्म। (,,)

५ इच्छा अभिलाषा। (,,)

६ भगवान् श्रीकृष्ण।

७ ग्यारवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। (पुराण)

८ पति, स्वामी।

९ कामदेव।

१० बलिष्ठ व्यक्ति, बलशाली।

११ कामुक व्यक्ति, कामी।

१२ शत्रु, दुश्मन।

१३ न्याय।

१४ शिव का नादिया।

१५ मूसा, चूहा।

१६ दया। १७ भरतवशीय राजा जो मधुराजा का पिता था।

१८ पूर्वकाल मे पृथ्वी का शासक एक असुर।

१९ सृजय एव यदुवशीय उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपालिका के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

२० इक्ष्वाकुवशीय त्रिवृष्ण राजा के पुत्र व्यरुण राजा का पुरोहित।

२१ स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर। २२ विकुठ देवो मे से एक।

२३ अनायुषा के पुत्रो मे से एक दैत्यपुत्र जो ब्रह्महन्, पशुहन् आदि का पिता था।

२४ कृष्ण एव सत्या के पुत्रो में से एक पुत्र।

२५ कृष्ण एव कालिदी के एक पुत्र का नाम।

२६ हैहयवशीय कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र।

२७ अगराज कर्ण का एक नाम।

२८ देखो 'ब्रक' (रू भे)

उ०—भैरव डावी भणे दुरगडियो मान दिरीजै, जो राजा जीमणो पोहर हैकण ठेहरीजै। ब्रख आडो वेखता पोर खोडस पारभस, आठ पोहर योमास चलैऊ भेडो ते सुण। —पा प्र'

२९ देखो 'ब्रक्ष' (रू भे) (अ मा., ना. मा., ह ना मा)

उ०—ब्रख-जड तोड मोड वैरिया, घर धाखजळ दात धरै। माह राव असो मद मंगळ, कोट गढा सैलोट करै।

—महाराजा जसवत सिंघ री गीत

उ०—२ उवै पाहड उपर नूत री व्रख हतौ। तैरा हाथी रै जितरा फळ। सु फळ नीचा पडै। तद फळ री पाणी नीसर ग्रर परी सोनौ हुवै। तद श्री उठै फळ सेधा हुवैं सु खावै ग्रर उहा पाखा री सोनौ हुवै तैरी ईटा कर भेळी करै। —ठकुरै साह री बात

उ०—३ तिण वनि गहण विचाळइ पथी, ग्राविया गग सनान कियउ। चढस्या किम करता चीतवणी, व्रख एकण विसराम लियउ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ तद योगी राजा नू वन माही लेय गयौ। वी ठाव एक सीसम री व्रख। तौ पर एक मुरदौ वधियौ छै। जोगी कही—ई मुरदै नू पेड पर सू छोडि ग्राणौ। जोगी ग्राप पूरव दिसा जाय मत्र साधै। —सिंघासण वत्तीसी

३० देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—१ उण खग नाम खेत जुघ ग्रावर, हुय पुर रचै चद्री चद्रा-वर। सामद तट करि राज समाजा, रिघू तपै तेरह व्रख राजा।
—सू प्र.

उ०—२ घणी पधारै धाम, सुजस खाटै जगसारै, राज कियौ बड रीत, गिणौ व्रख सैस इग्यारै। रह्या जितै रघुराव, घरम मरजादा धारै, ग्राप पधारत ग्रोक, ग्रवधपुर जीव उधारै।
—र. रू.

३१ देखो 'व्रखभ' (ग्र मा., ना मा, ह न'. मा)

३२ देखो विस' (रू भे.)

उ०—१ पाताळ ग्रनइ (ग्र) ग्रतलोक ग्रादीपुरि, हेकाहेक मनइ सह हार। व्रखघारी ग्राखियउ विसभर, दसमउ व्रख राखियउ दुवार। —महादेव पारवती री वेल

उ०—२ वेणी डड जिसउ विराजइ वासउ, पिंड उदमाद घरती पाव। व्रख ताइ चद तणइ विलागउ, व्रख लक्ष्तउ घणाइ व्रखराव।
—महादेव पारवती री वेलि

रू भे—वीरख, व्रक्ख, व्रख, व्रस, व्रस, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

व्रखक—स पु [स. वृषक] १ साण्ड, बैल। २ गान्धार के राजा सुबल का पुत्र जो द्रोपदी स्वयंवर में शामिल था तथा महाभारत युद्ध में अर्जुन के द्वारा मारा गया था।

३ मोर, मयूर। (ग्र मा)

४ एक कलिंग देशाधिपति का नाम।

रू भे—व्रसक।

व्रखकरमा—स पु. [स वृषकर्मा] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

व्रखकेतु—स पु [स वृषकेतु] १ शिव, महादेव। २ कलिंग देश का एक राजकुमार।

३ कामदेव। (ग्र मा.)

४ युधिष्ठर के ग्रश्वमेधीय यज्ञ मे ग्रश्वरक्षक ग्रगराज कर्ण के पुत्रो मे से एक जो वभ्रुवाहन के द्वारा मारा गया था।

रू. भे—व्रसकेतु।

व्रखक्राथ—स पु. [स. वृषक्राथ:] द्रोणनिर्मित्त गरुडव्यूह के हृदय स्थान मे खडा कौरव पक्षीय योद्धा।

व्रखचक, व्रखचकर, व्रखचक्र—स पु [स वृषचक्र] मुहूर्त्तशास्त्र का एक योग विशेष जिसकी गणना सम्वन्धित मास की सूर्य सक्रान्ति से की जाती है।

वि० वि०—गृहारम्भ के समय सूर्य सक्रान्ति से गणना करके श्रेष्ठ-नेष्ठ समय का निर्णय किया जाता है। फलितार्थ है कि सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की नक्षत्र तक गिनती के प्रथम ७ नक्षत्रो का गृहनिर्माण ग्रशुभ, ८ से १८ तक के ११ नक्षत्रो का गृहनिर्माण शुभ ग्रौर १९ से २८ तक के १० नक्षत्रो का गृहनिर्माण ग्रशुभ होता है। वास्तव मे सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की सख्या जब ८ से १८ तक हो तभी गृहनिर्माण का कार्यारम्भ शुभ एव शेष मे ग्रशुभ होता है। (मुहूर्त चिन्तामणि)

रू भे—व्रसचक, व्रसचकर, व्रसचक्र।

व्रखण—स पु [सं वृषण] १ देवराज इन्द्र।

२ दानवीर कर्ण।

३ घोडा, ग्रश्व।

४ भगवान् श्रीविष्णु। ५ साण्ड, बैल।

६ वृक्ष, पेड। ७ ग्रण्डकोश। ८ वृषभराशि।

९ सहस्त्रार्जुन राजा का पुत्र एक राजा।

रू भे—व्रसण।

व्रखणकच्छ, व्रखणकच्छु—स पु [स वृषणकच्छु] एक प्रकार का वह रोग जिसमें पसीने, मैल ग्रादि के कारण ग्रण्डकोश के पास छोटी-छोटी फुसिया हो जाती हैं।

व्रखणस्व, व्रखणास्व—स पु [स. वृषण+ग्रश्व] इन्द्र के घोडे का नाम।

व्रखदस—स पु [स वृषदश] मदराचल के निकट का एक पर्वत।

व्रखदरभ—स पु [स स. वृषदर्भ] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ उशीनर देशाधिपति शिवि राजा का नाम, जिसने कबूतर की रक्षार्थ ग्रपने शरीर का माँस दिया था।

३ श्रीविष्णु भगवान का नाम।

४ एक राजा जिसने प्रण एव गुप्त नियम वनाया था कि ब्राह्मणो को सिर्फ सोना-चाँदी, घी ग्रादि दान मे दिया जाय।

रू भे—व्रसदरभ।

व्रखदेवा—स पु [स वृषदेवा] १ विष्णु भगवान्।

स स्त्री—२ वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

रू. भे.—व्रसदेवा।

व्रसद्वीप–स. पु [स वृषद्वीप] एक द्वीप का नाम।

रू. भे.—व्रसद्वीप।

व्रखधार, ब्रखधारिण, ब्रसधारी–स. पु. [स. विष+धारिन्] १ सर्प, साप।

२ जहरीला जानवर।

३ शिव, महादेव।

उ०—पाताळ ग्रनइ (ग्र) ग्रतलोक ग्रादीपुरि, हेकाहेक मनइ सह हार। ब्रसधारी ग्रालियउ विसभर, दसमउ व्रख राखियउ दुवार।

—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—व्रसधार, व्रसधारिण, व्रसधारी।

व्रखधुज; ब्रखध्वज–स पु. [स वृषध्वज] १ शिव, महादेव।

२ वृत्र-इन्द्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक ग्रसुर।

३ गणेश, विनायक।

४ कर्ण के एक पुत्र का नाम।

५ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

६ प्रवीरवशीय राजा जिसने ग्रपने स्वजनों का नाश किया था।

७ रथध्वज के पिता एक जनकवशीय राजा।

रू. भे —व्रसधुज, व्रसध्वज।

व्रखध्वजा–स. स्त्री [स वृषध्वजा] देवी, दुर्गा।

रू. भे.—व्रसध्वजा।

व्रखपत, ब्रखपति, ब्रखपती–स पु [स वृषपति] शिव, महादेव।

रू भे —व्रसपत, व्रसपति, व्रसपती।

व्रखपरवा–स. पु [स वृषपर्वन्] १ ग्रांगिरा कुलोत्पन्न एक महर्षि।

२ वृत्र ग्रनुयायी एक ग्रसुर।

३ एक ऋषि जो गन्धमादन पर्वत के पास स्थित ग्रपने ग्राश्रम मे रहता था यहीं पर इसने वनवास-काल मे पाण्डवो को उपदेश दिया था। ४ शिव का एक नाम।

५ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक जो ग्रसुरो का राजा था।

वि. वि —इसके राजपुरोहित शुक्राचार्य थे। इन्द्र-वृत्र युद्ध में इन्द्र से व देवासुर युद्ध मे ग्रश्विनो से इसने युद्ध किया था। इसके शर्मिष्ठा, चन्द्रा व सुन्दरी नामक तीन कन्याएं थी। एक वार शर्मिष्ठा के द्वारा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का ग्रपमान किया गया तब शुक्राचार्य ने इसका राज्य छोड जाने का निश्चय किया किन्तु इसने उनसे वही रहने की प्रार्थना की ग्रौर ग्रपनी पुत्री शर्मिष्ठा को जन्मभर के लिए देवयानी की दासी बना कर रखा।

व्रखभ–स. पु [स. वृषभ] १ साण्ड, बैल। (ग्र मा., हिं नां मा., ह. नां मा)

उ०—१ तू उपजइ न खपइ नहु ग्राइस, कुळ न कहिइ कहियउ उकळीण। भीनउ नादि विनोद महाभडि, ब्रखभ चढई तइ वावइ वीण।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाघ ब्रखभ एकठा वहता, करइ नही मन सका काइ। मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रथ गज ब्रखभ तुरग रथ, दन ग्रनमिति सत दास। सुसा विदा किय नेम सू, पूरण प्रेम प्रकास। —रा. रू.

उ०—४ जै जै सद्द उचार डाक डमरू कर वाजे, मोर हस म्रगराज चडी खगराज गरज्जै। एक हस्ति ग्रारूही व्रखभ ग्रस वस्ट्र विगत्ती, सरभ चील सादूळ रीछ बदर तर रत्ती। —रा. रू.

२ शखिनी जाति की स्त्री के लिए चार प्रकार के पुरुषो में से श्रेष्ठ पुरुष। (कामशास्त्र)

३ कुशाग्र राजा का पुत्र व पुण्यवत् राजा का पिता एक राजा।

४ हैहयवशीय कार्तवीर्य सहस्रार्जुन राजा का एक पुत्र।

५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ भीम के द्वारा मारा गया कलिंगनरेश का भाई।

७ राम सेना का एक यूथपति बन्दर। ८ काशिराज की कन्या जयती का पति व ग्रनमित्र राजा का पुत्र।

९ सूर्य वीथी का एक नाम।

१० एक प्रकार की ग्रोषधि। ११ गान्धार राजा के पुत्र का नाम।

१२ चौवीस प्रकार के ग्रवतारो में से एक। (ग्र. मा.)

१३ ज्योतिष की वारह राशियो मे से दूसरी राशि।

१४ फलित ज्योतिष मे वारह प्रकार के लग्नो मे से दूसरा लग्न।

१५ सृष्टि व छाया का पुत्र एक राजा। १६ एक ग्रसुर जो कृष्ण के द्वारा मारा गया।

रू भे.—व्रखभ, विखभ, विलभ्र, व्रखव, व्रख्ख, व्रसभ, व्रिखख, व्रिख, व्रिखभ, व्रिख्ख।

व्रखभकेतु–स पु [स वृषभकेतु] शिव, महादेव।

रू भे —व्रसभकेतु।

व्रखभगत, ब्रखभगति, ब्रखभगती–स पु [स वृषभगति] शिव, महादेव।

रू भे —व्रसभगत, व्रसभगति, व्रसभगती।

व्रखभचकर, ब्रखभचक्र—देखो 'व्रखचक्र'।

व्रखभधज, ब्रखभधुज, ब्रखभधुजी, ब्रखभध्वज–स पु [स वृषभध्वज]

१ शिव, महादेव। (ग्र मा, कु कु बो., नां. मा)

उ०—ऊठिया विसन ग्रनइ ब्रह्मादिक, जिगन न होवइ राव ग्रजाण। धुर ताइ करइ प्रणाम ब्रखभध्वज, कथ ब्रह्म तउ वेद पुराण।

—महादेव पारवती री वेलि

२ यम, धर्मराज। (ना मा)

रू. भे.—व्रखवधुज, व्रखभधुज, विखभधुज, विखभ्रधुज, व्रखभधज, व्रखभध्वज, व्रसभधुज, व्रसभध्वज।

व्रखभरासि, ब्रखभरासी—सं. स्त्री [स वृषभराशि] ज्योतिप की बारह राशियो में से एक।

व्रखभवाहण, ब्रखभवाहन—स. पु. [स वृषभवाहन] शिव, महादेव। (क. कु. बो.)

व्रखभांक—स पु. [स. वृपभाक] शिव, महादेव।
रू भे.—व्रखभाक।

व्रखभांण, ब्रखभांणु ब्रखभांन ब्रखभानु—देखो 'व्रसभानु' (रू. भे.)
उ०—वेली तरळा तरा विलूवी, वरण हरियाळी वीसवसा। ब्रप ब्रखभाण तणा हर नागर, उपवन जोवण जोग इसा। —वा दा.

व्रखभांनुजा—स. स्त्री. [स वृषभानुजा] कृष्ण की प्रेमिका राधिका।
उ०—नद सुतन ब्रखभानुजा, जुग जुग अविचळ जोर। उर मे वसै 'अजीत' कै, जय जय जुगळकिसोर। —गजउद्धार

व्रखभानुनदणी, ब्रखभानुनंदणी, ब्रखभानुनंदिनी—स स्त्री. [स वृप-भानुनंदिनी] कृष्ण-प्रेमिका राधिका।
रू. भे—व्रसभांनुनदणी, व्रसभानुनंदिणी, व्रसभानुनंदिनी।

व्रखभानसुता—स स्त्री. [सं. वृषभानुसुता] कृष्ण-प्रेमिका राधिका।
रू. भे.—व्रसभानुसुता।

व्रखभा—स स्त्री [स वृपभा] भारत की एक नदी का नाम।

व्रखभासा—स स्त्री [स वृपभापा] इन्द्रपुरी अमरावती का एक नाम।

व्रखभेक्षण—स पु [स वृपभेक्षण] श्रीकृष्ण का एक नाम।

व्रखराज, ब्रखराय, ब्रखराव—स पु [स वृपराज] १ शिव, महादेव।
२ सर्प, साँप।
[स वृक्षराज] ३ कल्पवृक्ष। ४ वटवृक्ष।
उ०—ब्रखराव तिसा गिरराव विराजइ, ग्रति साखा सवळकता ग्रग। सिसहर तणी पाखती सोहइ, ग्रह जाणे लागा गयणग। —महादेव पारवती री वेलि

व्रखरासि, ब्रखरासी—देखो 'व्रखभरासि'
उ०—इसी गरमी हुई छै। जु सूर्य पणि हेमाचळ की सरणी पकडे छै। ग्रर सूरज ही व्रखि ग्राया छै। ग्रौर तौ सब मनुस्य तौ रूखै ग्रावै ही ग्रावै। मानु सूरज ब्रखरासि नही ग्रायो छै। व्रिख कहता रूख की छाह ग्रायो छै। —वेलि टी

व्रखरूढ—स पु [स वृपरूढ] रथ। (डि. ना मा)

व्रखल—स. पु [स वृपल] १ शूद्र।
२ घोडा, ग्रश्व।
३ जातिच्युत व्यक्ति।
रू भे.—व्रखल, व्रसल।

व्रखलाछण, ब्रखलाछन—स. पु [स वृप-लांछन] शिव, महादेव।
रू. भे.—व्रसलाछण, व्रसलाछन।

व्रखली—स. स्त्री [स वृपली] १ वह कन्या जो विवाह के पहले रज-स्वला हो गई हो।
२ वह स्त्री जो रजस्वला हो।
३ बाझ स्त्री।
४ वह स्त्री जिसने मृत बच्चे को जन्म दिया हो।
५ वह स्त्री जो अपने पति को छोडकर पर पुरुप से प्रेम करती है।
रू. भे—व्रसली।

व्रखलीपत, ब्रखलीपति, ब्रखलीपती—स पु [स वृपलीपति] १ वह पुरुप जिमका विवाह ऐसी कन्या से हुआ हो जो विवाह के पहले रजस्वला हुई हो।
२ २ रजस्वला स्त्री का पति।
३ मृत बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री का पति।
४ बाझ स्त्री का पति।
५ दुश्चरित्रा स्त्री का पति।
रू भे—व्रसलीपत, व्रसलीपति, व्रसलीपती।

व्रखव—देखो 'व्रखभ' (रू भे)
उ०—ग्रा पुगळ री उपनी, ग्रौ सुरत री साहा। ग्रा पदमण ग्रौ ब्रखव गण, नार इण जोगी नाह। —पर्ना

ब्रखवात—स पु. [स वृपवात] वन, जगल।
रू भे—व्रिखवात।

व्रखवाहण, ब्रखवाहन—स पु [सं वृप-वाहन] १ शिव, महादेव।
२ ग्यारह रुद्रो में से एक रुद्र का नाम।
रू भे.—व्रसवाहण, व्रसवाहन।

व्रखसकरांत, ब्रखसकराति, ब्रखसकराती, ब्रखसक्रांत, ब्रखसक्राति, व्रखसक्राती—स स्त्री [स वृपसक्रांति] वृपभ राशि मे सूर्य के प्रवेश करने का दिन एव उक्त दिन मनाया जाने वाला पर्व।
उ०—जेठ मास लागो छै। सूरिज ब्रखसक्राति ग्रायो छै। सु जाणी जे छै। सूरिज व्रखा नै दरखता रा ग्रोली ताकै छै। तौ बीजा लोका री कौण बात। सूरजजी उतराध सांमा वहै छै। सु जाणीजै छै। हेमाचळ रौ सरणौ लियै छै। —वेलि टी.

व्रखसांन—देखो 'व्रखसेन' (रू. भे) (ग्र. मा)

व्रखसार—स पु [स वृपसार] श्रेष्ठ बैल, साण्ड। (ग्र. मा.)

व्रखसेण, ब्रखसेन—स पु [स वृपसेन] १ दानवीर कर्ण का एक पुत्र जिसकी पत्नी का नाम भद्रावती था यह अर्जुन द्वारा मारा गया था।
२ यमसभा मे उपस्थित एक राजा। ३ ब्रह्मसावर्णि के पुत्रो मे से एक।
रू भे.—व्रखसान, व्रखसेण, व्रखसेन, व्रिखसेण, व्रिखसेन, व्रिससेण, व्रिससेन।

[स वृषसूनु] ४ बैल, साण्ड। (अ मा.)
५ इन्द्र का पुत्र। ६ कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र।
७ अर्जुन। (अ मा, ह ना मा.)
रू भे—व्रखसांन, व्रखसेन, व्रससेन।

व्रखस्कध—स. पु [स वृषस्कध] शिव, महादेव। (डिं. को.)
रू भे—व्रसस्कध।

व्रखाक—स पु. [स वृषाक] शिव, महादेव।
रू भे—व्रसांक।

व्रखाङ—स पु [स वृषांक] एक असुर का नाम।

व्रखाणगुण—स पु [स वृषाण गुण] भोजन। (अ. मा)

व्रखा—स. पु [स. वृषा] १ इन्द्र का एक नाम। (ना. डि को ह. ना मा.)
२ देखो 'वरसा' (रू भे.)
उ०—१ सीत घांम दुख व्रखा सहायैं, अनि तजि कदमूळ खणि खायैं। दुख अनेक इम तन मझि दाझै, सुख आगिला जनम कजि साझै। —सू प्र
उ०—२ सजळ सलहर, सपत्र, सतप, सुरसु ग ससीतळ। प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, व्रखा, विग्रह, राका मिळ। —र ज प्र

व्रखाकप, व्रखाकप—देखो 'व्रखाकपि' (रू भे.) (अ मा)

व्रखाकपायी—स स्त्री [स वृषाकपायी] १ लक्ष्मी।
२ गोरी।
३ इन्द्र-पत्नी शची।
४ अग्नि-पत्नी स्वाहा।
५ सूर्यपत्नी।

व्रखाकपि, व्रखाकपी—स पु [स वृषाकपि] १ सूरज, सूर्य।
२ शिव, महादेव।
३ रुद्र का एक नाम।
४ देवराज इन्द्र।
५ विष्णु भगवान।
६ एक महर्षि जो देवताओं के यज्ञ मे उपस्थित थे।
७ अग्नि, आग।
८ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)
९ ईश्वर, परमात्मा।
रू भे—व्रखाकप, व्रखाकर, व्रखाकप।

व्रखाकृति, व्रखाकृती—स पु [स वृषाकृति] १ विष्णु। २ सूर्य, सूरज। ३ आग, अग्नि। ४ देवराज इन्द्र।

व्रखागिर, व्रखागिरि, व्रखागिरी—स पु [सं. वृषागिर] एक प्राचीन महर्षि।

व्रखादरभ, व्रखादरभि—स पु [स वृषादर्भि] काशीनरेश अनुवंशीय शिवि का पुत्र।

व्रखामित्र—प पु [स वृषामित्र] एक महर्षि जिसने पाण्डवो को वन-वास काल मे उपदेश दिया था।

व्रखासण, व्रखासन—स. स्त्री [स वृष+आसन] शिव, महादेव।
उ०—कवहू नहिं मगत और पिया, तजि संगत गौर व्रखासन की। रघुनाथ जु राव रै दासन के चित आसन आन उपासन की। —र ज. प्र.

व्रखासुर—स पु [सं वृषासुर] भस्मासुर नामक दैत्य।
रू भे—व्रसासुर।

व्रखि, व्रखी—स. पु [स वृषिन्] १ इन्द्र, देवराज। (अ मा, ना मा., ह ना मा)
उ०—गोव्रप्राव गिरपत गिरद, धर नग धराधर धार। गिरधारी गिरधर धरै, व्रखी कोप जिण वार। —अ मा.
२ मगल ग्रह। (अ मा)
३ वृक्ष, पेड।
४ वृषभ राशि।
उ०—इसी गरमी हुई छै। जु सूरय परिण हेमाचळ की सरणी पकडै छै। अर सूरज ही व्रखि आया छै। और तौ सव मनुस्य तौ रूंखं आवै ही आवै। मानूं सूरज व्रख रासि नही आयौ छै व्रिख कहता रूख की छाह आयौ छै। —वेलि टी.
रू भे—व्रखि।

व्रखोत्सरग—स. पु [स वृषोत्सर्ग] एक विशेष प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसके अनुसार किसी मृत्त व्यक्ति के पीछे उसकी स्मृत्ति मे किसी बछडे को दाग कर साड बना दिया जाना है। (पुराण)
रू भे—व्रसोत्सरग।

व्रखोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे)

व्रख्ख—१ देखो 'व्रक' (रू भे)
२ देखो व्रक्ष' (रू भे.)
३ देखो 'व्रखभ' (रू भे)
उ०—देवी कौमारी चामुडा विजैकारी, देवी कुवेरी भैरवी क्षेम-कारी। देवी अगस व्रख्ख हस्ती मयखं, देवी पख केकी गरुड धिरट पखं। —देवि

व्रगुद, व्रगुट्ट, व्रगुटि, व्रगुटी, व्रगुट्टी—देखो 'भ्रकुट' (रू भे)
उ०—निरत रत सुर रिखराज महनाण मैं, चख भवर व्रगुट फट कमळ पहिचांण मे। मिळ कीयौ विधाता 'मान' 'सुरताण' मे, महा-रिण नर समद समद जोधाण मे।
—ठाकुर सुरताणसीग री गीत

व्रचत्र—देखो 'विचित्त' (रू भे)

व्रचित्र—देखो 'विचित्र' (रू भे)

व्रच्छ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे)

उ०—उड विहग इच्छ, विस्राम व्रच्छ, जिह छाह जीव-सुख हूँ सदीव। तह नहिं तमाम, घन सीत घाम, फल फूल फार, अघ्वग उदार। —ऊ का

उ०—२ सुघ्यावत हूँ मातहू वेण अक्खै, भणुंमात मोमी फळा वीण भक्खे। स्रिया छाह राखिया व्रच्छ सूघा, अनें रास कोरा लिया व्रच्छ ऊघा। —सू प्र.

व्रचिछक—देखो 'व्रस्चिक' (रू भे)

व्रछ—देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

उ०—१ वर्णं वाग अतही विहद, ता में ·······कुवाय। आधी-फर अवर लगी, व्रछ रहे ठहराय। —गजउद्धार

उ०—२ पुळियो जस माग वहे अेक पथी, पाछं वर छखडी वण पात। ताकव येम पूछियो तरवर, व्रछ करवर रहियो कण वात। —रुगनाथ भाक सिघोत रो गीत

व्रछिक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे)

व्रज—स. पु. [स] १ मथुरा और वृदावन के चारो ओर का प्रदेश या भूभाग जहाँ श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीडा की थी।

उ०—१ कुहक वाण ऊडवाण भयकर, औसर इद्र जांणि व्रज ऊपर। हूँ घण रूप जगत छत्र हट्टं, पीरस गिरहर चद परट्टं। —सू. प्र.

उ०—२ इद्र धरा व्रज ऊपरं, ज्या पेलं जळ जाळ। घर हिंदू सुर पीडवा, आया चामरआळ। —रा रू.

उ०—३ आखि पलव करसाख आगळी, उधरियो तिणि सिर अनड। व्रज राखियो विगोयो वासव, वडो अवर कुण विसन वड। —ह. ना. मा

२ समूह, झुण्ड। (ह नां. मा)

३ व्रज-भाषा।

४ हविर्धान एव धिषणा का पुत्र, जो स्वयभुव मनु का वशज था।

५ देखो वज्र' (रू भे.)

उ०—कमघज भुज निमज सकज सुसुपह कज, राखै रज रिणतूर रुडं। दम्मामा गरज वहे व्रज दोमज, गज पाताडक भुरज गुडं। —गु रू व

६ देखो 'व्रज्या' (रू भे)

रू भे—विरज, व्रज, व्रज्ज, व्रज्ज, व्रिज, व्रिज्ज।

व्रजइद, व्रजइदु—देखो 'व्रजयद' (रू. भे)

व्रजचद—स पु [स. व्रजचद्र] १ श्रीकृष्ण भगवान। (अ मा)

२ ईश्वर, परमात्मा। (ना मा.)

रू. भे—व्रजचद।

व्रजणौ, व्रजवौ—क्रि अ—१ जाना, गमन करना।

क्रि स.—२ मना करना, रोकना।

३ टालना।

व्रजणहार, हारौ (हारी), व्रजणियौ—वि०।

व्रजिओडौ, व्रजियोडौ, व्रज्योडौ—भू० का० कृ०।

व्रजीजणौ, व्रजीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

व्रजदेव—स पु. [स] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजदेव।

व्रजदेस—स पु [स व्रजदेश] व्रजभूमि।

रू भे—व्रजदेस।

व्रजनद—स पु [स] श्रीकृष्ण।

व्रजन—स. पु. [स वृजन, वृजिन] १ पाप। (ह ना. मा)

२ कष्ट, दुख, तकलीफ। (अ मा)

३ अजमीढ एव केशिनी के ससर्ग से उत्पन्न तीन पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

व्रजनाइक—देखो 'व्रजनायक' (रू भे.)

उ०—नाथण नाग नगर व्रजनाइक, आवण महर आगणै। पावन पुरखि नाम पुरखोत्तम, भूधर चरित भामणै। —पिं प्र

व्रजनाथ—स पु [स] श्रीकृष्ण।

रू भे—व्रजनाथ।

व्रजनायक—स पु [स] १ श्रीकृष्ण।

उ०—सुतन जसोमति साम सरीर, वजावण वंस वळिभद्र वीर। नमो व्रजनायक ऊतिम नाम, प्रमेसर पार ब्रहम प्रणाम। —पिं प्र.

२ विष्णु। (डिं को.)

रू भे—व्रजनाइक, व्रजनायक, व्रजनाइक।

व्रजपत, व्रजपति, व्रजपती, व्रजपत्त, व्रजपत्ति, व्रजपत्ती—स पु. [स व्रजपति] श्रीकृष्ण का एक नाम। (ना मा)

उ०—कमळ नयण कळि प्रणकळ, वहि व्रिद लियण अतुळ वळ। व्रजपत्ति सति रुखमणि वर, धन हरि नरहर गिरधर। —पिं प्र.

रू. भे—व्रजपत, व्रजपति, व्रजपती।

व्रजवाळ—स पु [स व्रजवाल] व्रज के बालक श्रीकृष्ण।

रू भे.—व्रजवाळ।

व्रजवासी—स पु.—१ रामावत साधुओ का एक भेद विशेष। (मा. म)

२ देखो 'व्रजवासी' (रू भे)

व्रजभाखा, व्रजभासा—स स्त्री [स व्रजभाषा] मथुरा के आसपास के व्रज प्रदेशो में बोली जाने वाली वह भाषा जिसकी उत्पति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। यह भाषा अत्यन्त कर्णमधुर मानी जाती है।

उ०—ब्रजभाखा मुरधर विमळ, आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डवर, वरणू करि विस्तार। —सू प्र

ब्रजभूखण, ब्रजभूसण–स पु [स ब्रजभूषण] १ श्रीकृष्ण। (अ मा)

उ०—चीर चोरि तर ऊपर चढियो, गोपगना तणा गोवाळ। अरज करै ऊभी जळ अतर, दै ब्रजभूखण दीनदयाळ। —ह. ना मा

२ ईश्वर, परमात्मा। (ना मा., ह. नां मा.)

रू. भे.—ब्रजभूखण, ब्रजभूसण।

ब्रजभूप–स. पु. [स] श्रीकृष्ण।

उ०—दिविदु दिवान दिवस वासुर दिन, अह इगियारसि दिविसि अनूप। कीजै वरत भजन पिणि कीजै, भगतवछळ रीझै ब्रजभूप। —ह ना मा

ब्रजमडळ–स पु. [स. ब्रजमडल] ब्रज और उसके आस-पास के प्रदेश जो कि तीर्थ माने जाते हैं।

उ०—विखय मुलक रासट उपवरतन, जनपद नीव्रति देस जनात। मडळ नकौ अहेडौ ब्रजमंडळ, अवतरिया हरि करण अख्यात। —ह. ना. मा

रू भे—ब्रजमडळ, विरजमडळ।

ब्रजमोहन–सं. पु [स] श्रीकृष्ण।

ब्रजयद–स पु [स. ब्रजेंद्र] श्रीकृष्ण। (अ मा.)

रू भे.—ब्रजइद, ब्रजइदु, ब्रजयद, ब्रजइद, ब्रजइदु।

ब्रजराज, ब्रजराय, ब्रजराव–स. पु [स ब्रजराज] १ श्रीकृष्ण का नाम।

उ०—१ राज धनखधर रामजी, चक्रधर ब्रजराज। सदा सुधारै सत कै, केई विकटै काज। —गजउद्धार

उ०—२ नरनाथ जाण राखै निजर, वाण बखाणा विसतरै। ब्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै। —रा. रू

उ०—३ हुवो घटियो कळू अघट 'बीका' हरो, भलो सोभाग ससार भारी। राज हिंदवाण री लाज जिम रहावी, राज री लाज ब्रजराज राखै। —आसियो भोपत

२ वसुदेव।

उ०—करग मसलै उरज तोडै अगिया कसा, चित चलै अलोकिक करै चाळी। वेख नट तणो खडो वनवेथिया, वटपडो कुवर ब्रजराज वाळो। —बा. दा.

रू. भे—ब्रजराज, विजराज।

ब्रजरेणू–स. स्त्री [स] ब्रज भूमि की धूलि।

उ०—फर विधान करवत लै कासी, लै ब्रजरेणू लेटै। पग्यो न दिल प्रभु रै पद पकज, मिसत न त्यातिक भेटै। —र रू

ब्रजलाल–स. पु. [स] श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजवणता, ब्रजवनता, ब्रजवनिता–स. स्त्री. [सं. ब्रजवनिता] ब्रज में निवास करने वाली स्त्रियां, गोपिकाएँ।

रू भे—ब्रजवणता ब्रजवनिता।

ब्रजवल्लभ–स. पु [स] ब्रज के प्रिय, श्रीकृष्ण।

ब्रजवासी–स पु [स] (स्त्री. ब्रजवासण, ब्रजवासणी) १ श्रीकृष्ण।

उ०—वसीधारी ब्रजवासी विहारी, पूरी जैरी प्रीति राधा पिआरी। काळी लीला खेलियो काज काळो, गाए ध्याए देव गाया गुआळो। —पिं प्र.

२ ब्रज मे निवास करने वाला व्यक्ति।

उ०—जद त्या कह्यो—म्हैं भीखणजी स्वामी रा टोला री। जद तै बोली—हे राडा! थे पैलकेई म्हारी रोटी ले गई। उरही दो म्हारी घ ट। इम कहि घाट लेवा लागी। जद एक ब्रजवासणी वरजै—हे कीकी! अतीत नै दियो पाछो मत लै। जद तै बोली—कुता नै म्हाख देसू पिण इणा कना सूं तो उरहो लेसू। —भि. द्र.

३ वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

४ ईश्वर, परमेश्वर। (ह ना मा.)

रू. भे—ब्रजबासी, ब्रजवासी, ब्रजवासी, ब्रजवासी।

ब्रजविलास–स. पु. [स.] श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजविहार, ब्रजविहारी–स पु—श्रीकृष्ण। (अ. मा)

ब्रजवैकुंठविहारी–स पु—श्रीकृष्ण। (अ. मा)

ब्रजस्पति ब्रजस्पती–स पु—श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजाग्ना–स स्त्री—ब्रज की स्त्री, गोपिका।

ब्रजाग, ब्रजाक, ब्रजाग, ब्रजागनि, ब्रजागनी, ब्रजागि ब्रजागिन–स पु [स वज्र+अग] १ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—वाजिन्न जेम पइ ठवइ वेस, दोमजा अस्सि ओपमा देस। माणिक्क लियउ भीदडइ मागि, वइरिया सिरै वाहण ब्रजागि। —रा ज. सी

२ देखो 'वजरग' (रू भे)

उ०—वाहरू सीत जाणै ब्रजागि, लसकर कपि मिळिया वेध लागि। जैंचद दळावळ देखि जाण, तोलै खग बोलै एम ताम। —सू प्र.

३ देखो 'वजराक' (रू भे)

उ०—१ धडछइ धार विद्दुक हुवइ घड, खाग ब्रजाग वाव रण खेत्र। गण आठै वाजिया विसम गति, निलवट सुर वाधियो नेत्र। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ मागधि मागि वजागि महाभड, जोध जडाग वडा छळ जागै। मेर मजाद देस दस मालिय, मुगळा कह्नै पेसकस मागै। —ल. पि.

उ०—३ दस दिसा एम फुरमाण दीध, लायका भडां सिर चाढ लीध। जुध सराजाम सज्झि सज्झि ध्रजागि, लोहमैं सरसि भुव उरसि लागि। —सू प्र

उ०–४ 'तीड' री 'सळख' कुळ चाढ तोड, दन खगां विरद ध्रजवाळ दोड। 'वीरम' 'सळखावत' खगा वाग, जोइया वाढि विढियो ध्रजाग। —सू. प्र

उ०—५ इणि भांति रा घोडा असवार आगि ध्रजागि माहे ग्रडि पडै। सिर पडिग्रै लडै। हाथिग्रा रै दात चडै। हिंदू मुसळमाण। नरसमद खुरसाण। च्यारि चकू नव खड प्रिथी रा जगजेठ जोग्रार जमदूत राजिंद्र जोगिंद्र रूप करि उजेणि खेति नर हैंवर धेधिंगर चोदत हुआ। —र. वचनिका

उ०—६ हथनाळ हवाई हूकळत, गजनाळा गोळा गडिग्रडंत। बळनी ध्रजागि उड्डै वहंत, ग्रारावो छूटो ग्रावरंत। —गु. रू व.

उ०—७ हुय हैकप कांपियो हजरति, लागुग्रा परै नीसरी लाग। वहमड 'ग्रमर' मूजाडड वहतो, वाढाळी जळहळी ध्रजाग। —केसोदास गाडण

व्रजिन–स पु [सं वृजिन] १ पाप, कुकर्म (ग्र. मा.)
२ कष्ट, दु ख, पीड़ा। (ना. मा.)
रू. भे —व्रजिन।

व्रजियोड़ो–भू. का. कृ —१ गया हुग्रा, गमन किया हुग्रा। २ मना किया हुग्रा, रोका हुग्रा। ३ टाला हुग्रा।
(स्त्री. व्रजियोडी)

व्रजेंद्र–स पु [सं. व्रज+इन्द्र] श्रीकृष्ण।

व्रजेन—देखो 'व्रजन' (रू. भे)

व्रजेस्वर–स पु [स व्रज+ईश्वर] श्रीकृष्ण।

व्रज्ज—१ देखो 'व्रज' (रू भे.)

उ०—१ देवी गौर रूपा ग्रखां नव्व-निद्धि, देवी सबकळां ग्रक्कळां सव्व सिद्धि। देवी ध्रज्ज विमोहणी वोमवाणी, देवी तोतला गूंगला कतियाणी। —देवि.

उ०— २भरै माग मिंदूर मारग भाळै, वहै सामळो ध्रज्ज सेरी विचाळै। वहै लारलै वार पिंढार वाळै, नवा नेह सू देह गोपी निहाळै। —ना. द.

२ देखो 'व्रज' (रू भे)

उ०—घहहडइ धरा पइ मगरधज्ज, वेगवत जेम गइणागि ध्रज्ज। जुधि दियइ साखि ससार जास, दोनाळो चढियउ किसनदास। —रा. ज सी.

व्रज्जवासी—देखो 'व्रजवासी' (रू भे.)

उ०—ग्री काहे को कस रैं हेत त्रासी, विचैं वाट माथैं वहै ध्रज्जवासी। घरै कस रैं पु बळी तात घाठी, तदा ताहरी केथ खग्रोट ताठी। —ना. द

व्रज्या–स. स्त्री. [सं] वेदोक्त विधांन, रीति, मार्ग।

उ०—ग्रर वार वार सिराहि भोगा मैं ग्रासक्त ग्राळची ग्रौर ग्रव-नीसा रा ग्रासय मैं सूतो वीररस जगायो। उठै ही सुपुत्र री बणायो बापी समेत ग्रापरा ग्रभिधान करि ग्रङ्कित ईस्वरी री ग्रगार ईखि ग्रज्ञान हू ऊतरि वेद री व्रज्या करि वगेम्वरी री ग्ररचन कियो। —व. भा.

रू भे.—वरज्या, व्रज।

व्रण–सं पु [स] १ जख्म, घाव।

उ०—कठमाला गड़ गुवड सबला, व्रण कुरम रोग टलड सगला। पीड़ा न करइ कुण गलि फोडक, नित नांम जपड स्रीनाकउडड। —म. कु.

उ०—२ पगहाथ पड़ै नस माथ पखैं, लग चाव सुरा रव दाव लखैं। ग्रंग एक थकैं तड़फैं ग्रसुरा, सिर चीर नरा व्रण सेल सरा। —रा रू

२ फोडा-फुन्सी, वालतोड।
३ चेचक का दाग।
४ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ वपा व्रण चोळ वर्ण तिणवार, जोधापति हूंत समेम जुहार। सझै रवि सेस महेस सराह, ग्रखै व्रण वार 'ग्रभैमल' वाह। —सू. प्र.

उ०—२ सिन्नान वात मधि सधियास, उचरत मत्र गायत्रि ग्रभ्यास। ग्राश्रम चत्र ग्ररु वर्ण व्रण उदार, क्रत करत दान खोडस प्रकार। —सू. प्र.

५ देखो 'वरणन' (रू. भे.)

उ०—कसि ग्रावध हल्लै, कमध ग्राजू व्रण ग्रग्गी। मुख सूरज वारह मडै, मौंह मूंछ भिडग्गी। —सू प्र

रू. भे.—वग्ग, व्रण, व्रन, व्रन्न. वण, व्रन।

व्रणसोथ, व्रणसोस–स. स्त्री. [सं व्रणशोथ] फोडे, घाव ग्रादि पर होने वाली सूजन। (ग्रमरत)

व्रतत, व्रतति, व्रतती, व्रततु, व्रततू—देखो 'व्रतात' (रू. भे)

उ०—१ भयो ग्राप सुर भूप को, ग्रातम कदन ग्रनत। ग्रपछर 'ग्राणद' रैं थकै, वरण्यो सव व्रतत। —पा. प्र

उ०—२ सइ मुखि ढोलइ पूछिया, मारू तणा व्रतति। ढोलउ नइ माऊ, ग्निहइ वेसारी एकति। —ढो मा.

उ०—३ निसुणीउ वयणु गमेलउ वोलइ, कोइ न तिहुयणि जो तुझ तोलइ। निसुणउ हिव इह कन्न व्रततू, एह रहइं होइ सतणु कतू। —सालिभद्र सूरि

व्रत–स पु [स] संकल्प, प्रतिज्ञा।

उ० —१ एती एक न ग्रादरी, जेती ग्रक्खी साह। कमधज्जा नव कोट रा, ग्रोट लियो व्रत चाह। —रा. रू.

उ०—२ जगनाथ का हेमराज राज काज पूरा, 'अजमाल' के व्रत काज सूरां तैं सूरा। अखैराज प्रोहित को हित मार्ये कूण, 'दलपत' का द्रोणगुर जैसं जोर दूणा। —रा. रू.

उ०—३ 'जैंतौ' 'सूर' तणौ जग्राई, भुज तिण जोड 'समेळौ' भाई। 'पीथौ' 'भुकन' किन्है व्रत पूरा, साथै दलरामोत सनूरा। —रा रू.

उ०—४ वारंगना रही धारे व्रत, व्रत स्योमावत तणै उमाह। पिडि खुरसाणै बीद परखियो, वळि कुडाणै हुवा विमाह। —उदैभाण राठौड री गीत

२ नियम।

उ०—१ केइक पुण्यवत प्राणिया रे, चेत कियो धरम सार। साधु स्रावक व्रत सग्रह्या, समकित सैंठो धार रे। —जयवांणी

उ०—२ बलता गुरु वोलिया तरं ए, तू पहला व्योपारी की परै ए। तैं बाका प्रस्न बाता कही ए, पिण जाणू छूं व्रत लेसी सही ए। —जयवांणी

उ०—३ जोग जिग व्रत धरत नेम, अनत महमा गरत पेम। सिर सहत निसदिन घोम सीत, मन पच इद्री दवन जीत। —अनुभववाणी

३ धर्म, कर्त्तव्य।

उ०—वडै वस ऊपनी वडी रांणी भटियाणी, बोली राजा हूत जिका पूरै व्रत जांणी। तौ पुठै वरजाग साख जैसांण सुभत्ती, पहू चोरी परणतां वढे नह को चक्रवती। —रा. रू.

उ०—२ सुज कत व्रत अमरा सुपुरि, चोग्रोडी हरि ऊचरै। छत्रपती सनेह 'चदू' छडी, सेखावत व्रत सभरै। —रा रू.

४ आराधना, भक्ति।

उ०—१ विल मौ ध्यान त्रकाळग्य दरसी, वीरचद्र राजा इण वरसी। अवै सिव सीस चढासी आचां, सिव रीझसी देखि व्रत साचा। —सू प्र.

उ०—चालो चालो चपाबाडी, सातू मिळ सहेली है। नणंद म्हारी। ईसर गोरजां रो व्रत करस्या, और रमसां सेलस्या सारी। —रसीलै राज रा गीत

५ पुण्य प्राप्ति हेतु पुण्य तिथि को नियमपूर्वक किया जाने वाला उपवास।

६ अनुष्ठान करने की पद्धति, विधि।

७ अनुष्ठान करने की क्रिया या कार्य।

८ यज्ञ, हवन, होम।

९ देश, राष्ट्र। (अ मा)

१० कुएँ से मोट (चरस) निकालने का मोटा रस्सा।

११ अभूतरजस् देवों मे से एक।

१२ चाक्षुप मनु एव नड्वला के पुत्रो में से एक।

१३ देखो 'व्रत्त' (रू. भे.)

१४ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—'अजन' करायो एक, डेरै व्रत जैसी। रूप सोभ तारीक, ओप मुर चोभ अनैसी। —रा. रू.

रू भे.—वरत, व्रत, व्रत्त, वरत, वरत्त, विरत, व्रतु, व्रित।

व्रतउपवास—स. पु. [स.] किसी प्रतिज्ञा या कार्य सिद्धि हेतु किया जाने वाला उपवास।

व्रतघण—स पु. [स. वृत्रघ्न] इन्द्र का नाम।

व्रतचरया—स. स्त्री. [स व्रतचर्या] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने की क्रिया।

व्रतचारी—स पु [स व्रतचारिन्] व्रत करने वाला।

व्रतणौ, व्रतबौ—देखो 'वरतणौ, वरतबौ' (रू. भे)

उ०—वाहि तेग समाहि भासी, हहकारो भ्रलियो। धन्य तेरी ध्यान करमणि, सीझनी साको कियो। —बीलहोजी

व्रतणहार, हारी (हारी), व्रतणियौ—वि०।

व्रतिग्रोडी, व्रतियोडी, व्रत्योडी—भू० का० कृ०।

व्रतीजणी, व्रतीजबौ—कर्म वा०।

व्रतद्वयीपूनम, व्रतद्वयीपूरणिमा—स. स्त्री. [स व्रतद्वयीपूर्णिमा] फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को किया जाने वाला नक्तव्रत तथा सूर्योदय पर सूर्य का एव चन्द्रोदय पर चन्द्रमा का पूजन।

वि० वि०—उक्त पूजन नक्तव्रत्त करने का कारण है कि उक्त दिन कश्यपऋषि के औरस और अदिति के गर्भ से अर्यमा (आदित्य) एव अनसूया के गर्भ से चन्द्रमा उत्पन्न हुए थे।

व्रतधार, व्रतधारी—वि. [स व्रतधारिन्] व्रत धारण करने वाला।

उ०—व्रतधारी स्रावक, हुवा ए, राजादिक बहु लोग। पुन्न तणै परसाद थी ए, थायै सगला थोक। —ध. व ग्र

उ०—२ 'सागो' 'साहिब' तणौ सिघाळी, वाकमि बीद 'लवेरै' वाळो। धारण मेर 'पतौ' व्रतधारी, 'ईंदावत' कळि लियण उधारी। —रा रू.

उ०—३ 'केहरि' तणा परा लडण अकूणौ, लीधां वरत 'जगपती' 'लूणौ'। अ कूपा साथै अहकारी, घणी तणा जतना व्रतधारी। —रा रू.

उ०—४ तरसि पधार हुआ तय्यारी, 'धीर' तणौ आयो व्रतधारी। राणी जळती 'ऊदै' राखी, सुल नव कोट किया जग साखी। —रा. रू

व्रतपारणा—स पु [स.] व्रत की समाप्ति जो प्राय तुलसी या भगवान् को अर्पित पदार्थ से की जाती है।

व्रतभग, व्रतभगी—स. पु [स व्रत-भग] १ व्रत या नियमों को भग करने वाला व्यक्ति।

२ काव्य रचना का एक दोष।

उ०—व्रतभगी ह्वै अरथ खय, नाहा भय रस नास। कुकवी वैसक तुल्य कर, वरणं सुकवि विमास। —वा. दा.

व्रतभिक्षा, व्रतभीख—सं पु. [स. व्रतभिक्षा य भिक्षाव्रत] यज्ञोपवीत के समय बालक द्वारा मागी जाने वाली भिक्षा।

व्रतमाण, व्रतमान—देखो वरतमाण' (रू. भे)

उ०—माह मास व्रतमान, भ्ररक वैठो उत्तराइणि। सुकल पख्य रिति सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि। —ल. पि.

व्रतवैरी—स. पु [सं वृत्र+वैरी] इन्द्र, सुरपति।

व्रतसग्रह—स. पु [स] यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाने वाली दीक्षा।

व्रतहा—देखो 'व्रत्रहा' (रू. भे.) (अ मा. ह ना मा)

व्रतात, व्रतांति—स पु [स वृत्तात] १ किसी बीती हुई घटना, बात विषय या स्थिति से सम्बन्धित विवरण।

उ०—उत्तमकुमर किहा अछै, आगलि कहि व्रतांत। जीवै छै किंवा मूओ, भाजि भाजि मन भ्रात। —वि. कु.

२ समाचार, खबर।

उ०—आ वात जाणि सलखराज प्रमार बाई तरफ टळि नागोर आयो अर संवध री व्रतात अजमेर कहायो। —व. भा

३ विषय, प्रसग।

४ दशा, हालत।

रू भे.—विरतत, विरतति, विरतात, व्रत, व्रतात, विरतत, विरतति, विरतात, व्रतत, व्रतति, व्रतंती, व्रततु, वततू, व्रत, व्रत्त, व्रत्तात, व्रत्तात्त।

व्रतारि, व्रतारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे)

व्रतासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू भे.)

उ०—सुरनाथ व्रतासुर साम्रियात, प्रगटै कि सस्त्र रव वज्रपात। सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव। —रा रू.

व्रति—स स्त्री [स. वृत्ति] १ चक्कर, घुमाव।

२ परिधि, व्यास।

उ०—वृति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जडित वेदी दुति राजै। दिव्य कास्ट खट जाति अदूखती, अगर कपूर घिरत जुत आहुति। —रा रू

३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा।

४ चित्त, मन आदि की क्रियाएँ या व्यापार।

५ चित्त, मन आदि की स्थितियाँ।

उ०—व्रति आदि सस्त्र विद्या वरण, उच्छव वादि अघट्टिया। परकास उरध रवि पेखिया, किरि मधु मास पलट्टिया। —रा. रू.

वि० वि०—ये स्थितियाँ पाँच प्रकार की होती हैं जैसे—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, विरुद्ध आदि।

५ इच्छा, चाह, अभिलाषा।

उ०—वधै भक्ती स्रद्धा भवन नर स्परधा व्रति वधै, वसै वौ जिग्यासा अगम गम आसा व्रति वधै। अभ्यासी वेराग्य प्रनत अनुराग्य व्रति वधै। वधै वेरघा लभी तव चरन लभी व्रति वधै। —ऊ. का.

७ क्रिया, कर्म या विधान, जिसके करने से कुछ होता है।

उ०—तु ही करत्ता धरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तुं ही, तुं ही नाही मरत्ता अभय भयहरत्ता नित तुं ही। तु हीं ग्याता ग्येय प्रक्रति वनि ग्याता पद तु हीं। तु ही ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता व्रत तु ही। —ऊ का.

८ प्रकृति, स्वभाव, आदत।

९ वर्तमान में होने की अवस्था स्थित अस्तित्व।

१० हालत, दशा, परिस्थिति।

११ परिस्थिति, स्थिति।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह, व्रति अच्छर लेत विमोह। सव सस्त्र सजुन सूर, पयदात कुड सपूर। —रा. रू.

१२ याचना कार्य, भिक्षा वृत्ति।

१३ गति।

उ०—आगै सेरविलद सेन सनमुख चलायो, दळ जादव ऊपरां जाण नाळव दरसायो। कुहक बांण हथनाळ विसळ वरखै तिणवारा, व्रति सामण वद्दळा जाण वण मत्ती धारा। —रा. रू

१४ तौर, तरीका, ढग, रीति।

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जलद विद्रति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा. रू.

१५ आचरण, चालचलण, चरित्र।

१६ धन्धा, पेशा।

१७ जीविका, रोजी।

१८ मजदूरी, पारिश्रमिक।

१९ किसी जनसमूह, समुदाय या जाति के लोगों द्वारा किसी अन्य जाति या जनसमूह के लोगों के घर पर जीविकोपार्जन के लिए किसी अवसर पर या साधारण समय में नियमपूर्वक सेवा के रूप में किया जाने वाला कार्य।

२० नीयत।

२१ किसी दीन, विधवा, छात्र आदि को लगातार निश्चित समय पर सहायतार्थ दिया जाने वाला कुछ धन।

२२ मनु नामक रुद्र की पत्नी।
२३ अमिताभ देवों मे से एक।
२४ व्याख्या, टीका।
२५ शब्दार्थ बतलाने वाली शब्द शक्ति।
२६ वाक्य की रचना करने की शैली।

वि वि.—संस्कृत भाषा मे ये शैलियां चार प्रकार की मानी जाती हैं जैसे —

१ कैशिकी (कौशिकी) वृत्ति—इसके द्वारा शृगार रस का वर्णन किया जाता है।

२ सात्वती वृत्ति—इसके द्वारा वीर रस का वर्णन किया जाता है।

३ आरभटी वृत्ति—इसके द्वारा रौद्र व वीभत्स रसो का वर्णन किया जाता है।

४ भारती वृत्ति—इसके द्वारा अवशेष रसों का वर्णन किया जाता है।

२७ गीत तथा वाद्य के प्रयोग-वैचित्र्य का प्रदर्शन। (सगीत)

वि —गोलाकार, गोल।

उ०—सिर चमर चौसर सोह, अति सूर किरण विमोह। परिवेस सुभट सप्रीत, गढ भावियौ 'अगजीत'। —रा. रू.

रू. भे.—वरती, बिरत, बिरति, बिरती, बिरत्ती, बीरत, व्रित, वरत, विरत, विरति, विरती, विरत्त, विरत्ति, विरत्ती, वीरत, वीरति, वीरती, व्रती, व्रत्ति, व्रत्ती, व्रिति, व्रिती, व्रित्ति, व्रित्ती।

व्रतिन—स. पु. [स] वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर का अठारहवा व्यास।

व्रतियोडौ—देखो 'वरतियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. व्रतियोडी)

व्रती, व्रतीक—स पु [स. व्रतिन्] १ व्रत धारण करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ भादू वेर छै ब्राह्मण व्रतिया रे, मूस मजारी जेम। वलै सगपण सांकडौ रे दूध रुद्र मेल तेम के। —जयवाणी

उ०—२ राजा घणी चतुराई सु भारी भरि रखीस्वरा रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवाणी करि दीनी, जावो रांण्यां नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरै पधारिया। उण राति राजाजी व्रतीक थ्या तिको सुख मैं पोढ्या छै। —रा. वसावळी

२ देखो 'व्रति' (रू भे.)

रू. भे.—वरत, वरती।

व्रतु—देखो 'व्रत' (रू भे)

उ०—१ व्रतु लेउ विदुर गयउ वन माहि, कन्ह वली द्वारावती जाइ। विहु पखि चालइ दल सांमही, विहु पखि आवइ भड गह-गही। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सांमीय गणहर पासि पांचइ ए हरखिहिं व्रतु लिइ ए। साभली बलिभद्र वात नियमवृ ए पूठए पूछइ प्रभु कन्ह ए। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ सुगुरु यसोधर पासि हरखिहिं ए पांच ए व्रतु धरए। कणगावलि तपु एकु बीजऊ ए करई रयणावली ए। —सालिभद्र सूरि

व्रतेयु—स. पु [स] राजा रौद्राश्व एव घृताची के दस पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

व्रतेसर, व्रतेसरी, व्रतेसुर, व्रतेसुरी, व्रतेस्वर, व्रतेस्वरी—स. पु [सं. वृत्ति+ईश्वर+ई] वह व्यक्ति या जनसमुदाय जो किसी अन्य व्यक्ति या जनसमुदाय के घर विशेष अवसर पर या साधारण समय मे नियमित रूप से सेवा के रूप मे जीविकोपार्जन हेतु कार्य करता है। (मा. म.)

उ०—गोडा रैं कुळदेवी नारायणी केळ मैं विराजै है। केळा गोड न खावै। केळा रा पान रा दोनां मैं जीमै नही। लाखण गोड भाट हुवौ जिण रै वस रा लाखणोत भाट गोडा रा व्रतेसरी। —बां. दा. ख्यात

रू भे.—वरतेसरी, विरतेसर, बिरतेसरी, बिरतेस्वर, बिरतेस्वरी, वरतेसर, विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी।

व्रत्त—स पु [स वृत्त] १ जीविका का साधन।

२ चरित्र, चालचलन।

३ कश्यप एव कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

४ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक विन्दु उसके अन्दर के मध्यबिन्दु से समान अन्तर पर हो।

५ वह छन्द जिसके प्रत्येक पद मे अक्षरो की सख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम हो।

६ शिष्ट एव सुच्छाया के पुत्रो मे से एक पुत्र राजा।

७ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसमे रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण एव अत मे गुरु एव लघु हो।

वि —१ जीवित जिन्दा।

२ घटित हुवा हुआ।

३ मरा हुआ, मृत्त।

४ दृढ, मजबूत।

५ बीता हुआ, गुजरा हुआ।

६ देखो 'व्रत' (रू भे)

७ देखो 'व्रतात' (रू भे)

उ०—१ आय निकट बूंदीस सों सब व्रत्त कहाया। —व. भा.

उ०—२ रहै कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखै। जेह व्रत्त जिन पक्षै बाधक, तेह कदापि नवि भाखै। —वि कु.

उ०—वलतू मयणा वीनवै रे, तात ! सुणो मुझ व्रत्त। तुमनैं पिण करमैं किया, होजी राजन ! राज निमित्त। —स्रीपाळरास

रू. भे.—व्रित।

व्रत्तात, व्रत्तात्त—देखो 'व्रतात' (रू भे.)

उ०—१ स्वजन वेवाहिय धूरई भूरइ निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आणीय गेहि। भूतलि भमर भोलिय डोलिय जिम न चडत, विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय तैं व्रत्तांत।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ पाणी राजोर कर पाच कोस परा जाय नीसरिया। कराडै लागिया। जाय राजा सू मिळिया। रतन पांच म्हौंडा साम्है मेलिया। मगळो व्रत्तांत कहि सुणाइयो। राजा कही—सावास थानू, अपणा धणी री आग्या पाळी। इतरी कहि पाच करोड इनाम दीन्हा। —सिघासण वत्तीसी

उ०—३ सेठ उज्जेण आय राजा नू सकळ यात्रा रा व्रत्तात कहि त्या स्त्री-पुरस री वारता कही। राजा कही—मोनू लेय हाल। सेठ कही—बहुत दूर। तद राजा वीं नू गुटकी देय तत्काळ दोनूं जाय पहुँचिया। —सिंघासण वत्तीसी

उ०—४ भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर यग्य करायो। देवी री आग्या हुई—हमें भाऊ पाछो दिखण नू परो जावै, दूजैं महीनै आय साह सू जग करै तौ भाऊ री फतै हुवै। विरामणा श्री व्रत्तात्त भाऊ नू सुणायो। भाऊ न मानियो।

—वा दा ख्यात

व्रत्तारि, व्रत्तारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू भे)

व्रत्तासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू भे.)

व्रत्ति—देखो 'व्रति' (रू भे)

व्रत्तिकार—वि. [स वृत्तिकार] १ वृत्ति करने वाला।

२ टीका करने वाला, टीकाकार।

व्रत्ती—देखो व्रति' (रू. भे)

उ०—१ आ व्रत्ती किम आदरू, कु वर कोमळ आक्रती। पिण हर अरि पालणी, कुसळ राखणी व्रती। —रा रू.

उ०—२ व्रत्ती तीन चीन मन मेरा, निरभय पद लो सरना। निरभय पद सुखराम निजानद, अपना आप अमरना।

—स्रीसुखरामजी महाराज

व्रत्यनुप्रास—स. पु [स. वृत्ति+अनुप्रास] एक प्रकार का अनुप्रास विशेष जिसमे एक या अनेक व्यजन-वर्ण भिन्न-भिन्न रूपो में बार-बार आते हो।

व्रत्र—स. पु [स. वृत्रः] १ अन्धेरा, अन्धकार।

२ पर्वत, पहाड।

३ बादल।

४ शत्रु दुश्मन।

५ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—व्रत्र।

व्रत्रघन, व्रत्रघ्न—स. पु [स वृत्रघ्न] वृत्रासुर का शत्रु इन्द्र।

व्रत्रहा—स पु. [स वृत्रहा] देवराज इन्द्र। (नां मा)

रू भे—व्रतहा।

व्रत्रारि, व्रत्रारी—स. पु [स वृत्र+अरि] वृत्रासुर का दुश्मन, इन्द्र।

रू. भे—वरतारी, व्रत्रअरी, वरतारी, व्ररत्तारी, वरत्रारि व्रतारि, व्रतारी व्रत्तारि, व्रत्तारी।

व्रत्रासुर—स पु. [स वृत्रासुर] त्वष्टा का पुत्र एक राक्षस जो देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि० वि०—इसकी माता का नाम दानु था। यह पूर्वजन्म मे पाण्डय देश का राजा चित्रकेतु था जो सम्पूर्ण विद्याधरो का राजा था, किन्तु पार्वती के शाप के कारण असुरयोनि में जन्म लिया। एक वार इन्द्र ने विश्वरूपा नामक ब्राह्मण को मार डाला अत· उसके पिता त्वष्टा ने इन्द्र से बदला लेने वाले पुत्र की प्राप्ति हेतु यज्ञ मे आहूतिया दी एव इसे उत्पन्न किया। इसके आतक से भयभीत होकर इन्द्र, गन्धर्व, किन्नर आदि भगवान् विष्णु की शरण मे गये। विष्णु की राय से इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों (जो कि नारायण कवच मत्राभ्यास के कारण अत्यधिक बलवान् हो गई थी) से वज्र बनाकर उसी वज्र से इसका वध किया।

रू भे.—व्रेती, विव्रा, विव्रासुर, वेव्रासुर, वैव्रासुर, व्रतासुर, व्रत्तासुर, व्रत्र।

व्रथ, व्रथा—वि. [स वृथा] १ निष्प्रयोजन, व्यर्थ, फिजूल।

उ०—१ सुक पिक लगै सवाद, भल थोडो ही भाखणो। व्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यू भैरिया।

—महाराजा बळवतसिंघ रतलाम

उ०—२ पण म्हारै श्री पण छै—सगै री नाळे'र आयो पाछो न मेलु। सो माजी, म्हारो वचन गया, जमवारो व्रथा जासी। तिण सु थे राजी हुय मनै फुरमावो, ज्यू म्हारो भलो हुवै, अर थाहरै सत तपस्या सु माहरो कुही न वीगडै।

—कुँवरसी साखला री वारता

उ०—३ आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणो घर रो काम, परोपकार, वीरता, देससेवा आदि आछा काम न करणा में व्रथा यू ही वेस ऊमर गमावै है।

—वी स टी.

उ०—४ मुंधा हालरा उगेर व्रथा पालणैं हलाया माता, पोखैं केण कारणैं जिवाया थानैं पीव। लोक लाज धारणैं फिरगी हूंता फाट लेता, जै'र खाय धणी रै बारणै देता जीव।

—दलजी महडू

२ असत्य, झूठ। (अ. मा, ह. ना. मा.)

रू. भे.—विरथा, व्रथा, विरथा, व्रिथा।

व्रद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—'अमर' आगरै अखिग्रात उवारी, भड जीवण व्रद भारी। पच हजारी मुगळ पाडियो, कमधज तणी कटारी। —रूघो मुहतो

उ०—२ खानाणी खडै खडग वळ खाधी, लाधी भ्रो व्रद भ्राज सलाह। काघल कहै, रूघियाँ केहर, साथ किसी ताइ किसी सनाह।
—राव काघळ री गीत

उ०—३ लहे श्रद्दा-भ्रग्या श्रदा मेघ लीघी, दसँकघ भ्रागै हणु भ्राणि दीधी। वदै राण नू कोण कै दात वारा, किसै वैर तै थाट मारै कवारा। —सू प्र

व्रदधारी—देखो 'विरुदधारी' (रू भे)

उ०—तू मोटी दातार भगतवच्छळ व्रदधारी, 'जगो' कहै कर जोड भ्ररज हरि सुणी हमारी। काया नगर मझार पच तसकर पावीजै, काम क्रोध मद मछर कुबुध ममता काढीजै। —ज खि

व्रदपूर—देखो 'विरुदधारी'

उ०—१ जोधा भड एह पटायत जाणि, वधै जुध सूर 'उमेद' वखाणि। सभ्रै खळ थाट खगा भ्रट सूर, 'पतौ' 'महराण' तणी व्रदपूर। —सू प्र

उ०—२ कळायण वीच लडत करूर, 'पतौ' इद्रभाण तणी व्रदपूर। 'नाथौ' 'भ्रमरावत' खाग उनाग, 'जगावत' जूटत सूर भ्रजागि। —सू प्र

व्रदराज—देखो 'विरुदधारी'

उ०—रिणवट वाघ जीप जुध राणा, लड ग्रह मुर सुरताण लिया। खित चित कोट जिसा खूमाणा, दूसासण व्रदराज दिया।
—हरिदास केहरियो

व्रदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह, रू. भे.)

व्रदाळी—१ देखो 'विरुदावळी' (रू भे.)

२ देखो 'विरुदाळी' (रू भे)

व्रदाळौ—देखो 'विरुदाळी' (रू भे.)

व्रद्द—देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—जिकै वस दाता हुवा सूर जेता, तिकै व्रद्द बोलै सुणै भूप तेता। उभै वात री पात दाखै भ्रहाची, खत्रीध्रम्म छाडौ क घांनख खाची। —सू. प्र

उ०—२ वणै सुरदाता उभै व्रद्द वका, लिया हूत पै'ली दिवी दान लका। दुवै छेह सामद्र बाघौ वधारं, उतारेस पार पदम भ्रठार।
—सू प्र

व्रद्ध—स. पु [सं. वृद्ध] (स्त्री व्रद्धा) १ युवा एव प्रोढावस्था के बाद आने वाली मनुष्य की एक अवस्था, बुढापा।

२ उक्त अवस्था को प्राप्त व्यक्ति, बूढा।

उ०—तिम त्रिलोचना नै घरै, आवी व्रद्धा नारि। मैं पूछयो ए कुण अछै, मुझ प्रिया तिण वारि। —वि कु.

वि.—१ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त।

२ बुद्धिमान, पण्डित।

३ बडी उम्र का।

रू. भे.—विरघ, विरिघ, भ्रद्ध, भ्रध, विरध विरिध, विरिधि, व्रध,व्रधु, व्रध्ध, व्रिद, व्रिद्ध, व्रिध।

व्रद्धकन्या—स. स्त्री. [स वृद्धकन्या] कुणिगर्ग महर्षि की वालब्रह्मचारिणी पुत्री।

वि० वि०—नारद के उपदेश से इसने गालव ऋषि के शिष्य शृगवत ऋषि से विवाह किया एव भ्रपन तप का आधा पुण्य उसे दिया। एक रात उसके साथ रह कर पुन घोर तपस्या मे लीन हो गई। स्वर्ग लोक जाते समय अपने आश्रम को तीर्थ स्थान वना दिया।

व्रद्धकेसव—स पु [स. वृद्धकेसव] सूर्य की एक मूर्त्ति। (पुराण)

व्रद्धक्षत्र—स पु. [स. वृद्धक्षत्र] १ सिन्धु नरेश जयद्रथ का पिता।

२ पुरुवशीय एक राजा जो भारतीय युद्ध मे पाडव पक्षीय था एवं अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।

व्रद्धक्षेम—स. पु. [स. वृद्धक्षेम] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा के पिता का नाम।

२ वृष्णिवशीय राजा जो पाडव पक्ष मे लडता हुआ वाल्हिक द्वारा गया था।

व्रद्धगरग—स पु. [स वृद्धगर्ग] दुश्चिन्हो की उत्पत्ति के वारे मे अत्रि ऋषि को ज्ञान देने वाला एक आचार्य।

व्रद्धगारग्य—स पु. [स वृद्धगार्ग्य] वह महर्षि, जिसने नीलवृषभ छोडने, अमावस्या के दिन तिलमिश्रित जल से तर्पण करने व वर्षाऋतु मे दीपदान करने के बारे मे पितरो से पूछा था।

व्रद्धता—स स्त्री. [स. वृद्धता] १ वृद्ध होने की अवस्था, बुढापा।

२ दुख, कष्ट। (डिं को)

रू भे—विरधाई, विरधापण, बिरधापणी, व्रद्धता, व्रधता, व्रधपण, व्रधपणी, व्रध्धपण, व्रध्धपणी।

व्रद्धपूनम, व्रद्धपूरणिमा—देखो 'व्रद्धपूनम' (रू भे)

व्रद्धवयस, व्रद्धवेस—स पु [स वृद्धवयस] वृद्धावस्था, बुढापा।

रू भे—व्रधवयस, व्रधवेस।

व्रद्धसरमा—स पु [स वृद्धशर्मन्] १ आयु एव स्वर्भानु के ससर्ग से उत्पन्न पाच पुत्रो मे से एक।

२ वसुदेव की बहन श्रुतदेवा का पति व दन्तवक्र का पिता करुष देशीय राजा।

व्रद्धसरवा, व्रद्धस्रवा–स पु. [स वृद्धश्रवस्] देवराज इन्द्र ।
रू. भे —व्रधसरवा, व्रधस्रवा ।

व्रद्धसेना–स स्त्री. [स वृद्धसेना] सुमति राजा की पत्नी एवं देवताजित राजा की माता का नाम ।

व्रद्धाचळ–स. पु [स वृद्धाचल] मद्रास मे स्थित एक तीर्थस्थान ।

व्रद्धात्रि, व्रद्धात्री–स. पु [स वृद्धात्रि] एक प्राचीन ऋषि ।

व्रद्धास्रम–स पु. [सं वृद्धाश्रम] वृद्धावस्था, बुढापा ।

व्रद्धि–स स्त्री. [स वृद्धि] १ बढने की अवस्था, वढोतरी ।

उ०—ऊरध अकास, पाताळ पास, सब ठोर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध । वैराग व्रद्धि, सुख वळ सम्रद्धि, निरभय निसांन, निरधन निधान ।
—ऊ का

२ वृद्ध होने की अवस्था, बुढापा ।
३ व्याज, सूद । ४ लाभ ।
५ प्रगति, विकास ।
६ बच्चा उत्पन्न होने पर घर मे होने वाला सूतक ।
७ देखो 'व्रद्धियोग' ।
रू भे.—विरधि, विरधी, विरिधि, व्रधि, व्रधी, व्रिदि, व्रिदी व्रिद्धि व्रिद्धी, व्रिधि, व्रिधी ।

व्रद्धिका–स. स्त्री. [स. वृद्धिका] वृक्षो पर गिरे हुए शिव-वीर्य से उत्पन्न स्त्रिया जो मनुष्य का मास भी भक्षण कर लेती हैं ।

व्रद्धतिथ, व्रद्धतिथि, व्रद्धतिथी–स स्त्री [स वृद्धतिथि] किसी मास या पक्ष मे दो तिथि या क्षयतिथि के अतिरिक्त वह तिथि जो घडियो में पूर्ण हो ।

व्रद्धियोग–स पु [स वृद्धियोग] सत्ताईस प्रकार के योगो मे से एक योग विशेष ।

व्रद्धिसराद्ध, व्रद्धिसराध, व्रद्धिस्राद्ध, व्रद्धिस्राध–स पु [स वृद्धिश्राद्ध] विवाहादि मागलिक अवसरो पर पितरो आदि के लिये नान्दीमुख नामक श्राद्ध ।

व्रध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे)

उ०—१ आलम का अडसाल, ईखै गूडर आसना । गढ का गा गढपति कन्हड, व्रध अर तरणा बाळ । —अ वचनिका

उ०—२ देवी रगत नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीरूप अग । देवी बाळ जूवा व्रध वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसा भुजाळी ।
—देवि.

उ०—३ सू अकबर वा जिहानगीर तथा साहिजांन अै तीन पीढी तो राजावा नू मूसलमान करण री उपाय मैं रया पण तावै आयी नही । साजिहानजी सू तो सादलेखा अरज इण बात री करी थी । तद हजरत इसी कही, मैं तो अब व्रध हो गया सू कोई इस जगा वेठागा जिसकू भारी है । —द दा

२ देखो 'वध' (रू भे)

व्रधपण, व्रधपणौ—देखो 'व्रद्धता' ।

व्रधवयस—देखो 'व्रद्धवेस' (रू भे)

व्रधवा—देखो 'विधवा' (रू भे)

व्रधवापण, व्रधवापणो—देखो 'विधवापणो' (रू. भे)

व्रधवेस—देखो 'व्रद्धवेस' (रू. भे.)

व्रधसरवा, व्रधस्रवा—देखो 'व्रद्धस्रवा' (रू. भे)

व्रधाराज, व्रधाराय, व्रधाराव–स पु. [स वृद्धराज] ब्रह्मा ।

उ०—सिधाराव रै गणेस व्रधाराव रै दिनेस सोहे, जोध बळी राव रै लकेस रो है जेम । अलोकराव रै मककेत तायजादो तेम, ऊमेद राव रै 'अजो' रायजादो येम ।
—रावराजा अजीतसिंहजी री गीत

व्रधा—देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

उ०—ताहरा आनी वाघेलो भोळै राजा भीम नूं कहै, राज, प्रथीराज नायो छै । थे पण मता चढी । मनू विदा करौ और उमराव मोहतो विदा करो । ताहरा राजा कहै छै, अनाजी व्रधा हुवा । लूणसाह तो काम मेलियो छै । था बाहरो तो अठै सरै नही ।
—हाहुल हमीर री बात

व्रधि, व्रधी—१ देखो वध' (रू भे)

उ०—व्रधि किया वळ व्र द । —रामरासो

२ देखो 'व्रद्धि' (रू भे)

उ०—'बाका' हरख न व्रधि सू, हाण हुवा नह सोक । हरि सतोख दियो हियै तिण नू दीध त्रिलोक । —बा. दा

व्रधु–वि. [स. वृद्ध] दीर्घ, वृहद, विशाल । (अ मा)
२ देखो व्रद्ध' (रू भे)

व्रध्य–स पु —१ एक सूर्यवशी राजा ।
२ देखो व्रद्ध' (रू भे)

व्रध्यपण, व्रध्यपणो—देखो 'व्रद्धता' ।

उ०—बाळापणै धोळा भया, तरुणापणै भया लाल । व्रध्यपणै काळा भया, कारण कोण जमाल । —जमाल

व्रध्नेचा–स स्त्री —चौहान वश की एक शाखा ।

व्रध्नेचो–स पु —उक्त शाखा का व्यक्ति ।

व्रन—देखो व्रण' (रू भे)
२ देखो 'वरण' (रू भे)

उ०—१ झाळ व्रन हुई अवकास विच झळहळै, मार हेका वियां हियै मिळती । 'अमर' ची भगवती खुरम मुह आगाळी, गळ अजै ऊगजै मीर गळती । —केसोदास गाडण

उ०—२ भो सजन चालतडा, रोय रोय गम रतन्न । पडिया विसरा चौसरा, आसु मोती व्रन । —ढो. मा.

उ०—३ तन घरा घटा तराज, घरर घर वाज तिलक व्रन। पत दत बक पाज, वर्ण सोभाज सेत व्रन। —सू. प्र.

उ०—४ मिळि माह तणी माहूटि सूं मसि व्रन, तपि ग्रासाढ तणी तपन। जन ग्रोजन परि ग्रधिक जाणियो, मध्यरात्रि प्रति मध्याहन। —वेलि

उ०—५ कळी सेत व्रन पोळटें, पडे जोखिम फळस, खसें खूभी, हुवें मडप खागो। मीतडा भाजि ढहि जाइ धरती भिळें, मीतडा नह जाय, कहै 'गागो'। —गागो

उ०—६ गढवाडाय जीवत कोण गजे, व्रन पाल गया घव पाल वजे। जग माफ ग्रमा घट प्राण जिते, इह गावत हेरण कोण मतें। —पा. प्र

व्रनग्रढार-स. पु—१ ग्रति उदार या दातार व्यक्ति।

२ प्रजा समूह।

व्रनखट—देखो 'खटदरसण' (२) (रू भे)

व्रनणी, व्रनवी—देखो 'वरणणी, वरणवौ' (रू. भे)

व्रनणहार, हारौ (हारी), व्रनणियौ—वि०।

व्रनिग्रोडो, व्रनियोडो, व्रन्योडो—भू० का० कृ०।

व्रनीजणी, व्रनीजवौ—कर्म वा०।

व्रनवणी व्रनववौ—देखो 'वरणणी, वरणबौ' (रू भे.)

उ०—१ दस जोयण लगं जियें री देही, व्रनवतां जोवता विस्तार। इउ हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा व्रख वाधिया उदार। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ व्रनवजइ काम रूप रउ वणतउ, हेमा सरस हजूर हुग्रउ। कहइ स कूट वाळियउ कद्रप, मयण सही भउळजं मूग्रउ। —महादेव पारवती री वेलि

व्रनवणहार, हारौ (हारी), व्रनवणियौ—वि०।

व्रनविग्रोडो, व्रनवियोडो, व्रनव्योडो—भू० का० कृ०।

व्रनवीजणौ, व्रनवीजबौ—कर्म वा०।

व्रनवियोडौ—देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रनवियोडी)

व्रनियोडौ—देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री व्रनियोडी)

व्रन्न—१ देखो 'व्रण' (रू. भे)

२ देखो 'वरण' (रू भे.)

उ०—१ देवी जरूखणी भरूखणी देव जोगी, देवी व्रम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जानेसुरी व्रन्न मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा। —देवि.

उ०—२ महल्ल गोख सोभ मान, कूदनी कळस्य ए, परात काच नील व्रन्न, ग्रारिसं ग्ररस्स ए। पवं गिरा पगार पोळि, लोहमे कपाट ए, (जु) सिगमेर सीस जाणि, ग्रोपियत ग्राट ए। —गु. रू ब

उ०—३ काटल ग्रावघ मूभ कर, मन मदाडण व्रन्न। ग्रावघ रा्ँ ऊजळा, मेंला ज्यां रा मन्न। —बा दा.

व्रप—देखो 'विप्र' (रू. भे)

उ०—१ करतार घणू कासू कहां, वडा देव वामण व्रपा। केसवा रखे कुमया करे, किसन हिमें करिजो क्रिपा। —पी ग्र

उ०—२ हरि हरि करि उद्धरें, वडो सेवग वभीखण, हरि हरि करि उद्धरें, गजह सामद ध्रू ग्रज्जण। हरि हरि करि उद्धरें, दक्खि व्रप वडो सुदामा, हरि हरि करि उद्धरें, मेख सकर सिव व्रहमा। —ज. खि.

व्रमड—देखो 'व्रह्माड' (रू भे)

उ०—रिग्गण चो साम जगत चो तारण, ग्राधारण व्रमड ग्रकवीस। जण जण कना काहा तु जाचें, जाच येक दाता जगदीस। —ग्रोपो ग्राढो

व्रम—१ देखो 'व्रह्म' (रू भे) (ना मा)

उ०—ग्रकालग्यान दरसी निज व्रम कूं पहिचाणें। भूत, भवस्त, वरतमान जुगति सौं जाणें। च्यार वेद नो व्याकरण खट सासत्रूं के विनाण। पिडत विद्या में पारावार जाणें नवदूण पुराण। —सू. प्र.

२ देखो 'व्रह्मा' (रू. भे)

व्रमग्राखर—देखो 'व्रह्माक्षर' (रू भे)

व्रमकुड - देखो 'व्रह्मकुंड' (रू भे)

व्रमखाड—देखो 'व्रह्मखाड' (रू भे.)

व्रमग्य—देखो 'व्रह्मग्य' (रू भे.)

व्रमग्यान—देखो 'व्रह्मग्यान' (रू भे)

व्रमग्यानी—देखो 'व्रह्मग्यानी' (रू भे)

व्रमचरच—देखो 'व्रह्मचरच' (रू भे)

व्रमचार—१ देखो 'व्रह्मचरच' (रू भे)

२ देखो 'व्रह्मचारी' (रू भे.)

व्रमचारी—देखो 'व्रह्मचारी' (रू भे)

व्रमजोग—देखो 'व्रह्मयोग' (रू. भे)

व्रमतीरथ—देखो 'व्रह्मतीरथ' (रू भे)

व्रमदड—देखो 'व्रह्मदड' (रू. भे)

व्रमदवार—देखो 'व्रह्मद्वार' (रू. भे)

व्रमदांन—देखो 'व्रह्मदांन' (रू. भे)

व्रमदिन—देखो 'व्रह्मदिन' (रू. भे)

व्रमदेत, व्रमदैत, व्रमदैत्य—देखो 'व्रह्मदैत्य' (रू. भे.)

व्रमदोख, व्रमदोस—देखो 'व्रह्मदोस' (रू. भे.)

ब्रमद्रोह—देखो 'ब्रह्मद्रोह' (रू भे)
ब्रमनाभ—देखो 'ब्रह्मनाभ' (रू भे)
ब्रमनिस्ट—देखो 'ब्रह्मनिस्ट' (रू भे.)
ब्रमपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू भे.)
ब्रमपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू भे.)
ब्रमपुतर—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)
ब्रमपुतरि, ब्रमपुतरी—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू भे)
ब्रमपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू भे)
ब्रमपुत्रि, ब्रमपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे)
ब्रमभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे)
ब्रममूरत—देखो 'ब्रह्ममूरत' (रू भे)
ब्रमरध्र—देखो 'ब्रह्मरध्र' (रू भे.)
ब्रमरात, ब्रमरात्रि—देखो 'ब्रह्मरात' (रू भे)
ब्रमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू भे)
ब्रमवादिनी—देखो 'ब्रह्मवादिनी' (रू. भे.)
ब्रमविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू भे)
ब्रमवेता ब्रमवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता (रू भे)
ब्रमसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे)
ब्रमसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे)
ब्रमसूत, ब्रमसूत्र—देखो 'ब्रह्मसूत' (रू भे)

उ०—तीरथ-राव प्रयागि, राव कमधज्ज पधारै, ब्रमसूत निय पहरि करगि प्रंजळि कुस धारै। करि मजन विधि सहित, कीध तरपण गंगा तट, विवह दान दे वि.ा, ब्रकमाळी ब्रक्खे वट।
—गु. रू व

ब्रमहत्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू भे)
ब्रमाणी—देखो 'ब्रह्माणी' (रू भे)

उ०—नाचै तिम नट्ट थई जिम नाच, महोदधि मदफ कूदै सुज माछ। सपेखै सभ निसभ सधीर, ब्रमाणी ताम धई वर वीर।
—मा वचनिका

ब्रमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)
ब्रम्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)
ब्रम्मधिया, ब्रम्मधी, ब्रम्मधीया—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू भे.)

उ०—'करण' सुजाव वधं नौ करगा. ब्ळ हूता गम अगम कीया। चाढै धूमडळ चीतौडा, धू धारक जिम ब्रम्मधीया।
—राणा जगतसिंघ री गीत

ब्रम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे.)

उ०—देवी विस्णु रै रूप जधा वधारै, देवी मुकुंद रै रूप मधुकीट मारै। देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म ब्रम्मा, देवी साच तण मेलिया जोग सम्मा।
—देवि.

ब्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे.)
ब्ररख, ब्ररस—देखो 'वरस' (रू भे.)
ब्रव—देखो 'ब्रव' (रू भे)
ब्रवण-स पु.—दान, पुण्य। (ग्र मा, ह. ना मा)

उ०—पवन चदन रव हर पनग पूरण दळद्री प्रेत। विध्र अगन मूरख ब्रवण दीरघ ऊ कहि देत।
—एका.

वि —दातार, दानी, उदार।

उ०—कुमर किरणाळ सुपहू सपखाळ, विरदि उजुआळ सकज धजवध। प्रसिधि दधि पाज ब्रवण गज वाज, मदति ब्रजराज मरद ब्रनमध।
—ल. पिं

रू. भे.—ब्रवण।

ब्रवणलोकेस, ब्रवणलोकेसु, ब्रवणलोकेसू-स पु—ईश्वर, परमात्मा।
(ना मा)

ब्रवणो, ब्रववो-क्रि. स—१ दान देना।

उ०—१ मन महराण धिनो गैवाडा, दाखै धाडा दस दिसा। राजा अन वादै रजवाडा, तु गढवाडा ब्रवै तिसा।
—राणा भीमसीग री गीत

उ०—२ ब्रवतार उदार लाखो इसो, जगा जेठ दातार 'जैहै' जिसो। धरा-थभ ज्गाडेज धूमै धडै, ब्रवै वाज जेहा ज गीता वडै।
—ल पिं.

उ०—३ जग जांणै रै जग जाणं, जिण लक ब्रधी जग जांणै। स्रीमुख दाख सुकठ सहोदर, राख प्रभाव घराणै।
—र. ज. प्र

२ देना।

उ०—१ तांम सूझै न को ठाम धवळह तणा, घणा अन राइया रूख राखै घणा। ब्रवै काय रम रथ जूथ जाणै सुवर, पढै कवि पखियां 'जसो' घू कळपतर।
—हा झा.

उ०—२ ब्रवतो ब्रव रीझ झडी मैं कळवळ, सोभा समद झडी मैं साद। जिम चितराण जीव झडी मैं, ब्रावै घडी घडी मैं याद।
—राणा सिमुंसिंघ री गीत

उ०—३ ब्रदवा लै जाइस ज्या ब्रपजस, चक्रवत ब्रवै न जाणै चोज। राजा ब्रमर करै लै रूपग, मंगळ वेगागळ दे मोज।
—किसनो ब्राढो

उ०—४ घर प्रीत पूछै गहर भूधर कहै विध कवि राव। उर वधत हरख ब्रमाप सुण सुण ब्रवै कोडपसाव।
—र रू

३ वित्तीर्ण करना, वितरित करना, वाटना।

उ०—राजा कमधज सुतण पदारथि, उण सुत गणपति भूप ब्रवण ब्रथि। तोगनाथ जिण सुतण भूप तवि, कीरति पार जेण न लहै कवि।
—सू. प्र.

४ त्यागना, छोडना।

५ अर्पण करना।

६ बोलना, कहना।

उ०—व्रवियो सिध आराध वडाळी, असठी अक्षर मंत्र जप अ वाळी। अजमावण कजि मंत्र त्रप अक्खै, दुगम पहाड फोडि इम दक्खै।
—सू. प्र

व्रवणहार, हारो (हारी), व्रवणियौ—वि०।

व्रविओडौ, व्रवियोडौ, व्रव्योडौ—भू० का० कृ०।

व्रवीजणौ, व्रवीजवौ—कर्म वा०।

व्रवणौ, व्रववौ—रू० भे०।

व्रस—१ देखो 'व्रख' (रू भे)

२ देखो 'व्रखभ' (रू. भे)

३ देखो 'विस' (रू भे)

४ देखो 'वरस' (रू भे)

५ देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

उ०—नना नदघा परहरी, पर नदघा न करेह। सोभ नही ससार मां, पळतै पत्र गहि लेह। पळतै पत्र गहि लेह, व्रस देखो नर सोई। और पाप कू नफो, निंदन नफो न कोई। —वील्होजी

व्रसक—देखो 'व्रखक' (रू. भे.)

व्रसकेतु—देखो 'व्रखकेतु' (रू. भे.)

व्रसचक, व्रसचकर, व्रसचक्र—स पु [स वृश्चिक] १ वृश्चिक राशि का नाम। (अ. मा)

२ देखो 'व्रखचक्र' (रू भे.)

व्रसण—देखो 'व्रखण' (रू. भे)

व्रसणकच्छ, व्रसणकच्छु, व्रसणकछ—देखो 'व्रखणकच्छ' (रू भे) (अमरत)

व्रसदरभ—देखो 'व्रखदरभ' (रू. भे)

उ०—महाराजा मोरध्वज री व राजा व्रसदरभ री जिण भूखी आत्मा हित आपरै बेटा नू चीर सिह नू खुवायो सो मोरध्वज अक्षय पुण्य पायो। —साह रामदत्त री वारता

व्रसदेवा—देखो 'व्रखदेवा' (रू. भे)

व्रसद्वीप—देखो 'व्रखद्वीप' (रू भे.)

व्रसधार, व्रसधारिण, व्रसधारी—देखो 'व्रखधारी' (रू भे)

व्रसधुज, व्रसध्वज—देखो 'व्रखध्वज' (रू भे)

व्रसध्वजा—देखो 'व्रखध्वजा' (रू भे)

व्रसपत, व्रसपति, व्रसपती—१ देखो 'व्रखपति' (रू भे)

२ देखो 'ब्रहस्पति' (रू भे) (अ. मा)

उ०—औ व्रसपत दसमैं ग्रह आयौ, विदुख तियां दुण लाभ बतायौ। कुळ अप उग्र थयौ हूं कोई, सुतन प्रताप चौगुणौ सोई।
—रा रू

व्रसभ—देखो 'व्रखभ' (रू भे)

व्रसभकेतु—देखो 'व्रखभकेतु' (रू. भे)

व्रसभगत, व्रसभगति, व्रसभगती—देखो 'व्रखभगति' (रू भे)

व्रसभधज, व्रसभधुज, व्रसभध्वज—देखो 'व्रखभध्वज' (रू भे)

व्रसभाक—देखो 'व्रखभांक' (रू भे)

व्रसभांण, व्रसभांणु, व्रसभांन, व्रसभांनु—स. पु. [सं वृषभानु] कृष्ण-प्रेमिका राधा के पिता का नाम।

रू. भे.—व्रखभांन, विरखभांण विरखभांणु विरखभांन, विरख-भानु, व्रखभाण व्रखभाणु व्रखभांन, व्रखभानु।

व्रसभानुनदणी, व्रसभांनुनदिणी, व्रसभानुनदिनी—देखो 'व्रखभांनुनदिनी' (रू भे)

व्रसभांनुसुता—देखो 'व्रखभानुसुता' (रू भे.)

व्रसल—देखो 'व्रखल' (रू भे.)

व्रसलांछण, व्रसलांछन—देखो 'व्रखलांछन' (रू भे)

व्रसली—देखो 'व्रखली' (रू भे)

व्रसलीपत, व्रसलीपति, व्रसलीपती—देखो 'व्रखलीपति' (रू भे)

व्रसवाहण, व्रसवाहन—देखो 'व्रखवाहण' (रू भे)

व्रससेण, व्रससेन—देखो 'व्रखसेन' (रू भे)

व्रसस्कध—देखो 'व्रखस्कध' (रू. भे)

व्रसाक—देखो 'व्रखाक' (रू भे)

व्रसासुर—देखो 'व्रखासुर' (रू. भे)

व्रसोत्सरग—देखो 'व्रखोत्सरग' (रू भे)

व्रस्चक—देखो 'व्रस्चिक' (रू भे)

उ०—रवि मीन रासि सनि करक राहु, अरु मकररासि केतहु अथाह। कहि व्रस्चक भाण बुध बुध प्रकास, तन लगन मियुन सुभ अनत तास।
—सू प्र.

व्रस्चकसकरात, व्रस्चकसकराति, व्रस्चकसकराती, व्रस्चकसकरायत, व्रस्चकसक्रांत, व्रस्चकसक्राति, व्रस्चकसक्रांती, व्रस्चकसक्रायत, व्रस्चकस-क्राति—देखो 'व्रस्चिकसक्राति' (रू भे)

उ०—व्रस्चकसक्रात दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सघीस। राजै तदि मगळ कुभ रासि, कहि मीन ब्रहस्पति बळ प्रकासि।
—सू प्र.

व्रस्चिक—स. पु. [स वृश्चिक] (स्त्री व्रस्चिकणी, व्रस्चिकनी) १ विच्छू।

उ०—अकठ फोडि घटि अम्ह तणइ, रोम सरूपी राय। तै पीक पाखइ मूंहनइ, व्रस्चिकनी परी थाइ। —मा का प्र

२ बारह राशियो में से आठवी राशि। (ज्योतिष)

३ वारह लग्नों मे से आठवा लग्न । (फलित ज्योतिष)

रू. भे – व्रच्छिक, व्रछिक, व्रस्चक ।

ब्रस्चिकपत्रिका–स स्त्री [स वृश्चिकपत्रिका] पोई नामक साग ।

ब्रस्चिकप्रिया–सं स्त्री. [स. वृश्चिकप्रिया] पोई नामक साग ।

ब्रस्चिकसकरांत, ब्रस्चिकसकराति, ब्रस्चिकसकरांती, ब्रस्चिकसकरायंत, ब्रस्चिकसक्रांत, ब्रस्चिकसक्रांति, ब्रस्चिकसक्रांती, ब्रस्चिकसक्रायत–स स्त्री [म वृश्चिकसक्रांति] वृश्चिक राशि मे सूर्य का प्रवेश एवं इस दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

रू भे – व्रस्चकसकरात, व्रस्चकसकराति, व्रस्चकसकराती, व्रस्चकसकरायत व्रस्चकसक्रात व्रस्चकसक्राति, व्रस्चकसक्रायत ।

ब्रस्चिकाळी–स स्त्री. [स वृश्चिकाली] प्राय सारे भारत मे पाई जाने वाली विच्छू नामक लता ।

ब्रस्टर—देखो 'विस्टर' (रू. भे) (नां मा)

ब्रस्टरसव, ब्रस्टरसवा, ब्रस्टरस्रव, ब्रस्टरस्रवा–स पु. [स विष्टरश्रवस्]

१ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा)

२ श्रीकृष्ण । (ग्र. मा) ३ विष्णु भगवान का नाम ।

ब्रस्टि, ब्रस्टी–सं. स्त्री. [स. वृष्टि] १ वर्षा, मेह ।

उ०—तीरथकर नइ पारणे, कुण करसइ मुझ होडि । ब्रस्टि करू सोवन तणी, साढी वारह कोडि । —स. कु

२ बहुत सी चीजो को एक साथ ऊपर से गिराने की क्रिया ।

३ एक ही क्रिया को लगातार वार वार करने की क्रिया ।

रू. भे —व्रस्टी, व्रस्ठी, व्रिस्टि, व्रिस्टी ।

ब्रस्णि, ब्रस्णी–स॰ पु. [स. वृष्णि] १ बादल, मेघ ।

२ यादव वश ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ देवराज इन्द्र ।

ब्रस्णिकगरभ, ब्रस्णिगरभ–स. पु. [स वृष्णिकगर्भ] श्रीकृष्ण ।

ब्रहमड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू भे)

उ०—१ दखे साख ज्यारा जती वस दीता, सकौ कत त्रिलोक री नाथ सीता । ब्रहमड कोडेक भाजे वणावे, इसी राम माता कठे कामि आवे । — सू. प्र

उ०—२ भणके चली कोमर्डा तूर भेरी, फवे सख सहनाय आनेक फेरी । विखम्मी सुरा सिद्धवा डाक वागी, ब्रहमड इक्कीसमें हाक वागी । —सू प्र

ब्रहम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू भे.)

उ०—जोग पथ जाणे नही, माया रूपी कान्ह । जादम वस छुडाय करि, दीयौ ब्रहम निदान । —सुरजनदास पूनियौ

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

ब्रहमण, ब्रहमांण, ब्रहमांणय—१ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ वेद मत्र पाठी चत्र वेदह, जाणे जोतिख भेद सुभेदह । होम दियें आहूत हुतासण, तेडे ताम इसा ब्रहमण । —गु रू. व

उ०—२ आमना चत्र वेद ब्रहमांणय विप्रय, रूघ जुज्जर सांम अथरवणय जपय । वेदोवुनि जे जे सव्वदय वणय, गुजार रव भेर पडसदय घणय । —गु. रू. व.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रहमाणी —देखो 'ब्रह्माणी' (रू भे)

उ०—देवी वैस्णवी महेसी ब्रहमाणी, देवी इद्रायणी चद्राणी रनाराणी । देवी नारसिंघी वराही विख्यात्ता, देवी इळा आधार आसूर हाता । —देवि.

ब्रहमि, ब्रहमी—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

ब्रह, ब्रहत, ब्रहती–वि [स. वृहत्] १ आकार की दृष्टि से अत्यन्त बडा, विशाल ।

२ विस्तार की दृष्टि से बहुत लम्बा-चौडा ।

३ अपार, बहुत ।

स. पु.—१ वेद ।

२ ब्रह्म ।

३ प्रत्येक चरण मे नौ अक्षरो वाला वर्णवृत्त ।

रू भे —व्रह, व्रहत, व्रहती, व्रहद, वहद, व्रिहत, व्रिहद ।

ब्रहत्कलप–स. पु [स वृहत्कल्प] एक सूत्र विशेष ।

उ०—छ छेदे महानिसीथ निसीथ, पाच सहस गिणिजै इवीथ । ब्रहत्कलप बीजो वाखाण, ज्यारसें बिहुतर सख्या जाण । —ध. व. ग्र

ब्रहवग–स पु. [स वृहत्+अग] हाथी, हस्ती ।

ब्रहदबळ–स पु—वृहदब नामक एक सूर्यवशी राजा जो विश्रुतवान का पुत्र था ।

उ०—ग्रपति प्रसेनजीत तै नदण, खुनक प्रसेन सुतण खळ खडण । बळवत खुनक सुजाव ब्रहदबळ, दुझल हुवो हरवळ कैरव दळ । —सू. प्र.

ब्रहदभाण ब्रहदभाण, ब्रहदभाणु, ब्रहदभांन, ब्रहदभांनु–स पु. [स. वृहद्भानु] १ आग, अग्नि । (ह. ना. मा)

२ चित्रक ।

३ सूरज, सूर्य ।

४ सत्यभामा के पुत्रो मे से एक ।

रू भे.—ब्रहदभाण, ब्रहदभानु, व्रिहदभाण, व्रिहदभाणु व्रिहदभान, व्रिहदभानु ।

ब्रहदभोज–स पु.—पुराणोक्त वृहद्राज नामक एक सूर्यवशी राजा ।

उ०—जे सुत ग्रहदभोज जगजाहर, ग्रहदभोज सुत वह्न्य क्रीतवर। जिण त्रप वह्नि सुजाव क्रतजय, जेण सुजाव नरेस रणजय।
—सू प्र.

ग्रहदळ, ग्रहदल—वि. [स. वृहदल] अत्यधिक बडा, बहुत बडा।

उ०—अणू तें ग्याणू तें ग्रहदल विभूतें अतिविभू, तुजैना जानें को सुहृद स्वसु जाने भल त्रभू। कहैं क्या ध्यावेधी कहन नहिं आवें कुल फुलें, मदाधी मायावी तुम रु हम भावी तुलें। —ऊ. का

ग्रहदस्व—स. पु [स वृहदश्व] एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—१ काहु जिण सुतण वीर ग्रप केहौ, जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ। जे सुत ग्रहदस्व भूप करण जय, तें सुत भानुमानु तेजोमय।
—सू. प्र

उ०—२ आरद्र जेगसुत वसग्रोर, जें सुत जवनासव ग्रहा जोप। सभ्रम जवनासव हुवौ स्राव, ग्रहदस्व जेण सुत तप वधाय।
—सू प्र.

ग्रहनट, ग्रहन्नट, ग्रहन्नड—स. पु [स वृहन्नट] अर्जुन। (अ. मा)

उ०—सूभइ रडइ भुहि पडइ मनि कप थाइ, देखी जतू कटक उत्तर सून्य थाइ। पाछउ हुव वलि ग्रहन्नड मइ म मारि, सूटा पखइ कहि न भूलउ का विचारि। —सालिभद्र सूरि

रू भे.—व्रिहनट, व्रिहन्नट, व्रिहन्नड।

ग्रहन्नळा—स. स्त्री. [सं वृहन्नला] १ वनवास काल के बाद एक वर्ष के अज्ञातवास काल मे राजा विराट के यहा स्त्री वेष मे रहते समय अर्जुन का नाम।

२ अर्जुन।

ग्रहमड, ग्रहमडक—देखो 'ग्रह्माड' (रू. भे)

उ०—१ भिडे मुख मूछ अणी भुवहार, धरे हथ रौळवियौ चवधार। वर्णां मुख चोळ छिबै ग्रहमड, 'पतै' अस हाकलियौ परचड।
—सू. प्र.

उ०—२ कोट मुलक खिडिया केताइ खड, ग्याइ वसूहक फाटी ग्रहमड। वडा वडा आवै वरियाम, 'अबर' आगै करै सलाम।
—गु. रू. ब.

उ०—३ ग्रहमड किना फुट्टी वळं, धसक तळातळ आतळं। मुखं हसै सकति महाबळ, वेताळा कुळ व्याकुळं। —मा वचनिका

उ०—४ घट मैं तारा चद रवि, घट मांहि ग्रहमड। हरिया घट मैं राम है, वाको जोति अखड। —अनुभववाणी

उ०—५ भूझारा आवध भळहळंय, ग्रहमडक वीजां वळवळंय। सैफळी वाजियौ सामताह, भेलियौ लोह मुह रावताह।
—गु रू व

ग्रहमंडी—१ देखो ग्रह्मा डी' (रू भे)

उ०—सिव सकत्ती सम मुगती, सिव भक्ति सकति सकति सिव सभै। आतम सकति सकति सिद्धौ, सिव सकति पिंड ग्रहमडी।
—गु. रू. ब.

२ देखो ग्रह्माडी' (रू. भे.)

ग्रहम—स पु—१ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे २१ मात्रायें होती है।

उ०—दस एकादस मात्र दे, एकांणि पायें एम ग्रहम छंद वाखाणिजें, गुण लखपति निगेम। —ल पिं

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यानी सो वडा ग्रहम विचारै। —फैसोदास गाडण

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—१ दसरत्थ विमै इम नजर दीध, कामना पुत्र धरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अनाप, आविया ग्रहम सिव बिसन आप।
—सू. प्र.

उ०—२ सिव ग्रहम बिसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप जिगन व्रत सगि पाय। त्रिय भूप धरम थित गरम ताम, कामना सकळ त्रप ज्याग काम।
—सू प्र.

उ०—३ रगतासुर मैं रीत, सूर उदै जसण सभै। माहव ग्रहम महेस मु, गावै आडा गीत। —मा वचनिका

उ०—४ साळउ दइ हाथ तपै तप संकर, ग्रहम तियइ रउ करइ विचार। बीजी दुनी राखडी बाधइ, सम्रुनाथ अचळ ससार।
—महादेव पारवती री वेलि

ग्रहमकपाळ—देखो 'ब्रह्मकपाळ' (रू भे.)

ग्रहमकरम—देखो 'ब्रह्मकरम' (रू भे)

ग्रहमकवच—देखो ब्रह्मकवच' (रू भे)

ग्रहमकाड—देखो 'ब्रह्मकाड' (रू भे.)

ग्रहमकुड—देखो ब्रह्मकुड' (रू. भे)

ग्रहमकूरच—देखो 'ब्रह्मकूरच' (रू भे)

ग्रहमक्षत्र, ग्रहमक्षत्री ग्रहमखत्री—देखो 'ब्रह्मक्षत्र' (रू भे)

ग्रहमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू भे)

ग्रहमग्यान—देखो ब्रह्मग्यान' (रू भे.)

उ०—ज्या नदिया मजन करै, धरै सदा हरि ध्यान। उर निरोध हर आसरै, विसरै नह ग्रहमग्यान। —अ मा.

ग्रहमग्यानी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

उ०—ग्रहमग्यानी सो वडा ब्रहम विचारै। —फेसोदास गाडण

ग्रहमघातक, ग्रहमघातकी—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू भे)

ग्रहमघातणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ग्रहमघातिक, ग्रहमघातिकी—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू भे)

उ०—स्रीनाथ रुद्र गणपति सकळ, भासकर मिळ पच ए। इण माहि भेद जाणै जिको, ब्रह्मघातिकी मान ए। —मा वचनिका

ब्रह्मघातिणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू भे)

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज ब्रह्मचरध—देखो 'ब्रह्मचरच' (रू भे)

उ०—सो घणा स्त्री कहै इण हीज धड सूं एकण घण री पती ग्ररघात ब्रह्मचरच व्रत वाळो एकण हीज वरा रो पती आप री वैर लै नै पहसी। —वी स टी

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे.)

ब्रह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

ब्रह्मपुराण—देखो 'ब्रह्मपुरांण' (रू भे)

उ०—तवता कुराण काजी तठै, ब्रह्मपुराण वचाविया। आसुरा धरम मेटै 'अजै', सुरा धरम धरमाविया। —सू प्र

ब्रह्मपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे)

ब्रह्मफांस—देखो 'ब्रह्मपास' (रू भे)

ब्रह्मभोज—'ब्रह्मभोज' (रू. भे)

ब्रह्ममुहुरत, ब्रह्ममूहुरत—देखो 'ब्रह्ममुहुरत' (रू भे)

ब्रह्मयोनि—देखो 'ब्रह्मयोनि' (रू भे)

ब्रह्मरध्र—देखो 'ब्रह्मरध्र' (रू भे)

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू भे)

ब्रह्मळा—वि —१ विमल, पवित्र।

उ०—सफन व्रह्म कै मिनान, केक अप्पण करै, ध्रम्त केक न्यास ध्यान, चढि पाठ उच्चरै। जपत गायत्रीस जाप, वेद मत्र ब्रह्मळा, करत पूज नौ प्रकार, केक कत कम्मळा। —सू प्र

ब्रह्मलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे)

ब्रह्मवाणी—देखो 'ब्रह्मवाणी' (रू भे)

ब्रह्मवाचा—देखो 'ब्रह्मवाचा' (रू भे)

उ०—देमपति सभ्रम दमण ऊदम अगम गम हीदुआं ओपम, सरम-धारी करण सुधरम ब्रह्मवाचा दानि विक्रम। जस करन समदि भण जगम दीपिओ विरदाळ, ताई भूपाळ जी भूपाळ। —ल पि

ब्रह्माड—देखो 'ब्रह्माड' (मह., रू. भे.)

उ०—नमो आदि नाराइणी, ब्रह्माणी ब्रह्माड। रुद्राणी जाणी रिधू, अतुळित तेज अखड। —मा. वचनिका

ब्रह्माण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू भे.)

उ०—१ ओ जो हूं आज चूकू अवसाण, वकै नह वेद मुखा ब्रह्माण। जावै वित कमा मूझ जीयार, धरा नह छोळ दियै इंद्रधार। —गो रू.

उ०—२ मानै ब्रह्माण पढै पुराण, वदै वखाण रिखेसवर। गुण भणै जगत्त गुर सको असुर सुर, तेम अठारह भार तर। —पे प्र.

२ देखो 'ब्रह्माणी' (रू भे.)

उ०—हुय चौप कोड चमंड हुय, कर कोड नवं कनियाण कथ। खट कोड लखै ब्रह्माण खडी, तव लाखइ लोवळियाळ लडी। —पा. प्र.

३ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—पढावै कुराणा तिका पढावै काजिया पूजा, सुराणा पुराणा घेन ब्रह्माणा सेव। 'राजा' तणौ छत्रधारी खागधारी राजहम, दाणवा सूं वेधकारी अवतारी देव। —महाराणा जयसिंह (दूसरा) री गीत

ब्रह्माणी—१ देखो 'ब्रह्माणी' (रू भे)

उ०—१ नमो आदि नाराइणी, ब्रह्माणी ब्रह्माड। रुद्राणी जाणी रिधू, अतुळित तेज अखड। —मा. वचनिका

उ०—२ पचम नाम प्रसिद्ध, सकदमाता सुरराणी। ब्रह्माणी कालि रखि, कहा तिम काइयाणी। —मा वचनिका

२ देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे)

उ०—चौथी राणी विनीता ब्रह्माणी। तिणरै पुत्र-पहिलो नव-नाटक, बीजो चद्रमा, तीजो कोरम। —रा वसावळी

ब्रह्मान—१ देखो 'ब्रह्म' (मह, रू भे)

२ देखो 'ब्रह्मा, (मह; रू भे)

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ 'भगवत' सुतण हुऔ ब्रहु भुवणै, घण दीहा लग नाम घणो। ब्रह्मा विमन महेस वदीतो, तप तुगिम जस तूझ तणो। —गोपाळ मीसण

उ०—२ नमो मात ध्याता नमो रग जाणी, नमो वाळ ध्याती ब्रह्मा वखाणी। नमो राखि सधा नमो छांह रूपी, नमो उमया चोभुजी द्रग ओपी। —मा. वचनिका

उ०—३ नाव परताप सब सत महमा करै, विसन सिव सेस ब्रह्मादि सारा। दास हरिराम निज नाव परताप तै, होय जुग माहि नर निसतारा। —अनुभववाणी

उ०—४ कमध कहै कर रूक कळासो, आतम जोध विद्या अभि-यासो। वात रहै ब्रह्मा वरसासो, हुयसी जुद्ध नहीं ऐ हासो। —गु. रू. व.

ब्रहमि—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—नरिंदि चौथो प्रभु नारसीध नाहरू, विळ परमेस वेदा तणो वाहरू। ब्रहमि पीधा निही वेद चत्र वाळिया, अधिकि आरण तणा वचन अजूआळिया। —पी. ग्रं

२ देखो 'ब्रह्म' (अल्पा, रू भे)

ब्रहमिण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे.)

ब्रहमो—देखो 'ब्रह्मा' (मह, रू भे.)

ब्रहम्मड—देखो 'ब्रह्माड' (रू भे)

उ०—ब्रहम्मड कोटेक जो रोम वास, स तो जोवता जेणि केतो सर'स । एको राम री दास जोरै अपारै, धरा सात दीपावती सेस धारै । —सू. प्र.

ब्रहम्मा—देखो ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—१ देवी खम्मया खम्मया ईसनारी, देवी धारणी मुड त्रिभुवन्न धारी । देवी सव्वदा रूप श्रो रूप सीमा, देवी वेद पारख्ख धरणी ब्रहम्मा । —देवि

उ०—२ देवी सत्तमी ग्रस्ठमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम्म पूजा । देवी सरसती लख्खमी महाकाळी, देवी कन्न विस्णु ब्रहम्मा कमाळी । —देवि

ब्रहब्रह, ब्रहब्ब्रह-स स्त्री —युद्ध स्थल में वीरो द्वारा की जाने वाली जोशीली आवाज ।

उ०—१ कतियाणी फ्रहफ्रह नारद डहडह, हेका टहटह वीर हसै । वह रावत ब्रहब्रह पोरसि ब्रहब्रह, दूडी ठहठह होठ डसै ।
—गु रू ब

उ०—२ दहट्टह रभ ब्रहब्ब्रह वीर, मिळै रणताळि कमध्वज मीर । निहट्टा निग्रहि बाध्यो नेत्र, खरा खुरसाण मरुध्धर खेत्र ।
—राउ जैतसी री रासो

ब्रहसपत, ब्रहसपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहस्पती-स पु [स. बृहस्पतिः] १ वह व्यक्ति जो महाविद्वान एव पडित हो ।

२ बुधवार के बाद व शुक्रवार के पहले आने वाला दिन ।

३ एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अगिरस के पुत्र एव देवताओ के गुरु माने जाते हैं । (अ मा.)

उ०—स्त्री गुरन पति ब्रहस्पति कहै, देवन पति गोविंद । देवन पति ब्रह्मा वदै, साखन पति पति अब । —अज्ञात

वि वि —इनकी पत्नी तारा को सोम हरण कर ले गया तब इनका सोम के साथ युद्ध हुआ । ब्रह्मा आदि देवताओ ने इनकी पत्नी तो वापिस दिलवादी किन्तु इनकी पत्नी व सोम के समागम से बुध की उत्पत्ति हुई ।

४ सौर जगत का पांचवा ग्रह ।

उ०—१ तेजमै रूप वह पुत्र ताच, सोभा अपार गुण एह साच । ब्रहसपति भवन दसमै वखांणि, जिण हीज भवन रविनंद जाणि ।
—सू प्र.

उ०—२ सुग्रही अनें कै इद्र सार, इण रीत ब्रहसपति गुण उदार । अव कहू सनीसर गुण अनेक, अनेक तणी तत वचन एक ।
—सू प्र.

उ०—३ ग्रस्चकसक्रांत दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सधीस । राजै तदि मगळ कुभ रासि, कहि मीन ब्रहस्पति वळ प्रकासि । —सू प्र

५ नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि की रचना करने वाले एक ऋषि ।

उ०—ठग कामेनी ठोठ गुर, चुगल न कीजे सैण । चोर न कीजे पाहरू, ब्रहस्पति रा वैण । —बां दा.

६ युद्ध, यज्ञ, वुद्धि आदि के अधिष्ठाता देव ।

७ वैशाली के मरुत्त आविक्षित मरुत्त राजा का पुरोहित एक अगिराकुलोत्पन्न ऋषि ।

वि० वि०—इसने अपने बडे भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता से सभोग किया था । गर्भस्त बालक के द्वारा उक्त क्रिया करने में अत्यधिक अडचनें पैदा किये जाने पर इसने उसे जन्मांध होने का शाप दिया । ममता एव इसके ससर्ग से भरद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था ।

८ सोलहवे द्वापर के भगवदवतार गोकर्ण के चार पुत्रों मे से एक ।

९ चौथे द्वापर के एक वेदव्यास का नाम ।

रू. भे —ब्रहतीपति, ब्रहमपत, ब्रहसपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहम्पति, ब्रहस्पती, ब्रिहसपत, ब्रिसपत, बिरसपति, बिरसपती, बिरस्पत, बिरस्पति, बिरस्पती, बिसपत, बिसपत, बिसपति, बिसपती, ब्रपत, ब्रसपति, ब्रसपती ।

ब्रहसपतवार, ब्रहसपतिवार, ब्रहसपतीवार, ब्रहस्पतवार, ब्रहस्पतिवार, ब्रहस्पतीवार—देखो ब्रहस्पति' (२)

ब्रहामण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—१ उदै अरवक ऊगहत, माळ लवख मडही । स्रीवत साह लाखपत्ति, कवि ऋोड दी धुही । वियास भट्ट के महत, जोतिकी ब्रहांमण । कथा पुराण भागवत, भारथ रामाइण । —गु रू ब

उ०—२ माड नव तैरही नवै ब्रह मांडिया, ब्रहांमण फरै नारद बचाळै । रोढ़णी वीदणी छेह सर राळिया, रुघर तबोळ मुख हूत राळै । —दुरसो आढो

ब्रहास ब्रहासि-स पु —अश्व, घोडा । (ना डिं को)

उ०—१ अवागळ धीह ब्रहब्रह तूर, 'कलावत' जग करत करूर । वहै असवार अनेक ब्रहास, दियै खग झाटक गोयददास' ।
—सू प्र.

उ०—२ विढै महता जुधि ओर ब्रहास, दियै खग झाटक गोकळ-दास । वैरीहर बाढत वीजळ वाह, 'गोपाळ' कराळ करै गजगाह ।
—सू प्र

उ०—३ लूणकन समोभ्रम आइ लास, विलहणा हुग्रइ छूटइ ब्रहास । अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ आपि ।
—रा ज. सी.

उ०—४ फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊवास ग्रसिस आरिखि अमूल । वणवीर चडिय तेवहि ब्रहासि, अहिकार थंभ आइइ अयासि ।
—रा. ज सी

उ०—५ नाठै ससउ पिंगळ आवासि, वासाइ राजा चव्यइ ब्रहासि। घरि सूना छइ राणी सही, नळ राजा किणि लखियउ नही। —ढो मा

ब्रह्मंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

ब्रह्मि—देखो 'ब्रह्मा' (अल्पा, रू भे.)

ब्रह्माड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू भे.)

उ०—१ सोना रा कळस घणा ताइ सुदर, खणा मांडिया इकवीस अखड। जडिया कुदण तणी जेवडी, वास जिकै लागा ब्रह्माड।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सातै ही ब्रह्माड सकिया, पुड सातै सकिया पयाळ। बाजियौ लोह रहक सिर बाजह, लागा युध करिवा लकाळ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रहिस्यै जुग बोल जितै धर अबर, सायर सिला तिरावण हार। इकवीसूं ब्रह्माड उपावै, नांव समीणां सूं निसतार।
—परमानद वणियाळ

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

उ०—१ रोमच अग धोम रूप, ब्रह्म तेज मैं वणं, जटास छमटा जडागि, आग नेत्र ऊफणं। वसिस्ठ आय जेण वार, ध्यान कीध धू-मती, दईव सेन दुभ नद, भै न कोइ भूपती। —सू. प्र.

उ०—२ सीचै अम्रत अंग प्रति सजम, जोवन लगै विकार जरा जम। परमहस आणद मैं प्राणी, ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वाणी।
—सू प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—आरद्र जेयसुत वस ओप, जै सुत जवनासव ब्रह्म जोप। सभ्रम जवनासव हुवौ साव, ब्रहदस्व जेण सुत तप वधाव।
—सू प्र

३ देखो 'ब्रह्माड' (रू भे.)

उ०—दहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगा तै कीध विचार। ईसर तू जगदीस तणउ प्रस, सहु श्रह्मं माडियउ ससार।
—महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—सभ्रत ब्रह्म के सिनान केक अप्पण करै, धरत्त केक ध्यास ध्यान, चडि पाठ उच्चरै। जपत गायत्रीस जाप, वेद मत्र ब्रहमळा, करत पूज नौ प्रकार, केक कत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रह्मगिनांन, ब्रह्मग्यान—देखो 'ब्रह्मग्यान' (रू. भे)

उ०—लछ भरतार लील लहरी रव ताप पाप भौ टाळै। 'ईसर' तणौ रमै तौ आतम, ब्रह्मगिनान विचाळै। —ईसरदास बारहठ

ब्रह्मग्यानी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

उ०—सारस बतक मुरगावी बक खेल सजै। हरख नचत तीर खजन कुमार हुजै। छह रिति जिन्ह के तट परि ब्रह्मग्यानी सिध मुनिराज छावै। मानसरोवर के भौळै भूल अनेक (क) लीलग आवै। —सू प्र.

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज, ब्रह्मचरय्य, ब्रह्मचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू भे)

उ०—सो घणा स्त्री कहै इण हीज धड सू एकण धण री पती भरताथ ब्रहमचरय व्रतवाळो एकणहीज धण री वैर लेने पडसी। भरताथ ज्यारो ब्रह्मचरय्य व्रत निस्ट हुवोडो है और पर स्त्री गमण आदि कळ का सू पूरित है तिकै विना सिर तरवार वाह नही सकसी। —वी स टी

ब्रह्मचारिणी—देखो ब्रह्मचारिणी' (रू. भे)

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रह्मजळ—देखो 'ब्रह्मजळ' (रू. भे.)

ब्रह्मजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू भे)

ब्रह्मदेव—स पु—१ देखो 'ब्रह्मा'।

उ०—सुर मिळै कीव मसलति सकाज, आखी प्रभु आगळ अरज आज। सुरिद्र मिळै ब्रह्मदेव साथ, हरि अग्र रहै सह जोडि हाथ।
—सू प्र.

२ देखो 'ब्रह्मदेव' (रू. भे.)

ब्रह्मद्वार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे)

ब्रह्मधिया, ब्रह्मधी—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू. भे.)

ब्रह्मपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू भे)

ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे)

ब्रह्मपुतर, ब्रह्मपुत्र—देखो ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रह्मपुत्री—देखो ब्रह्मपुत्री' (रू भे.)

ब्रह्मपुराण—देखो 'ब्रह्मपुराण' (रू. भे)

ब्रह्मभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रह्ममुहूरत, ब्रह्ममूहूरत—देखो 'ब्रह्ममुहूरत' (रू भे)

ब्रह्मयोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे)

ब्रह्मरध्र—देखो 'ब्रह्मरध्र' (रू. भे)

ब्रह्मरिसी—देखो 'ब्रह्मरिसी' (रू भे)

ब्रह्मरूप—देखो ब्रह्मरूप' (रू. भे)

उ०—सोडस आखर पय सखर, सहि गुर एकण साथि। ब्रह्मरूप गुण वाचिया, न्याइ एणि अहीनाथि। —पिं. प्र

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो ब्रह्मलेख' (रू भे)

ब्रह्मलोक—देखो ब्रह्मलोक' (रू. भे)

ब्रह्मविद्या—देखो ब्रह्मविद्या (रू भे)

ब्रह्मवेता, ब्रह्मवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)

ब्रह्मसिर—देखो 'ब्रह्मसिर' (रू भे)
ब्रह्मसुतन—देखो 'ब्रह्मसुतन' (रू. भे)
ब्रह्मसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे)
ब्रह्मसू—देखो ब्रह्मसू' (रू भे.)

उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विस्वचतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हस देहनायक । —वेलि

उ०—२ ए अनिरुधजी का नाम । चतुरमुख । चतुरवरण । चतुरातभाविस्व । चतुरजुग विधायक । सरवजीव विस्वकेत । ब्रह्मसू नरवर हस देहनायक । —वेलि टी

ब्रह्महत्या, ब्रह्महित्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू भे)
ब्रह्माड, ब्रह्माडि—देखो 'ब्रह्माड' (रू भे)
ब्रह्माण—देखो 'ब्रह्म' (मह., रू भे.)
ब्रह्माणी—देखो 'ब्रह्माणी' (रू भे)
ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ कूकतडी मेल्ही चिहुँ कनारां, नीघसजइ प्रागळि नीसांण । ब्रह्मा विस्णु पधारस वहिला, जोगेसर तेडीया जांण । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सिव ब्रह्मा विसनर कहैं, सत मरै सब साखि । रांम नांम एकौ भला, हरीया हिरदै राखि । —अनुभववाणी

उ०—३ विवध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा स्री ब्रह्माजी कनै सिधाइजै दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै असुर विहडीजै, कीत्त कानै सुणीजै । —मा. वचनिका

उ०—४ हेला तउ महेस्वर तणी स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या ब्रहस्पति तणी, प्रतिग्या फरसराम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान वलि तणउ, अवस्टभ मेरु तणउ गरुयाई गगन तणी, तेज तु सूरच तणउ, क्षमा धरणि तणी, ''' । —व स.

ब्रह्माव—१ देखो 'ब्रह्माव' (रू भे)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—तिण मात वदइ अन्य बीजा भूपति, अति ही गति दाखवइ असउ । ए ब्रह्माव उपाव आखियउ, रिख तीरइ वाधउ रेवत । —महादेव पारवती री वेलि

ब्रह्मावत - देखो 'ब्रह्मावत' (रू भे)
ब्रह्मावरत—देखो ब्रह्मावरत' (रू भे)

उ०—'' रत्नपुर कामरू ओडियाण जालधर सिंधु आरव वगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थान पुरासन मूलथांण मद्र अद्र अजरवेध विराट करहड वाड्व हैव आरयावरत्त ब्रह्मावरत्त त्रिगरत्त प्रभुति देसा । —व स

ब्रह्मावरि—देखो 'ब्रह्मावरि' (रू भे.)
ब्रह्मासन—देखो ब्रह्मासन' (रू. भे)
ब्रह्मास्त्र—देखो 'ब्रह्मास्त्र' (रू भे.)
ब्रामण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—कनवज पारस्वै महोरगढ राज करता, तिण आपरी गुरगो-आधार वीसारचो, महापुन्यवत तिण एक ब्रांमण देरासर पूजिवा भणी राख्यौ, तिणनै घणां गाय सांसण दीना । ब्रामणा री वस वधारचो । —रा. वमावळी

व्रास, व्रासि, व्रासु—१ देखो 'त्रास' (रू भे.)

उ०—उहं खग चोट धडा सू प्रत, भडाचा सीस दडाची भत । अणी मर फूटै कूंत अव्रास, ज्वार वपै किरि वाजै व्रास । —गु रू व.

२ देखो 'भरोसो' (रू भे)

उ० —व्रासि परधन को नवि ग्रहि तिहा चुप्रु युग नी विधि रहि? गो ब्राह्मण नी पूजा घणी, वात सी तै युग तणी? —नळाख्यान

ब्राहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—वळे लिखी आ वात विमळ मल्लिनाथ ब्राहमण । स्त्री सुर मगळ सवद आदि कहिया नह अवगुण । —सू प्र

व्राचड—स स्त्री —अपभ्रश भाषा का एक भेद विशेष जो आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रान्त में व्यवहार में आता था ।

व्राजणी, व्राजवी—देखो 'विराजणी, विराजवी' (रू. भे.)

उ० —चढि एण विध चक्रवत्ति, तदि व्राजियोस तखत्ति । चौसरा चमर सचार, वणि झपट वारंवार । —सू प्र.

व्राजणहार, हारो (हारी), व्राजणियो—वि० ।
व्राजिम्रोडो, व्राजियोडो व्राज्योडो—भू० का० कृ० ।
व्राजीजणी, व्राजीजवी—भाव वा० ।

व्राजियोडो—देखो 'विराजियोडो' (रू भे)
(स्त्री. व्राजियोडी)

व्रात—स स्त्री [स व्रात] समूह, झुण्ड ।

उ०—अर वरात रा प्राघुणका नू महानम मैं बुलाय खटरस मय नाना व्यजना री व्रात पूरण त्रिप्ति चखावियौ । —व भा

रू भे —व्रात ।

व्रात्य—वि. [स व्रात्य'] व्रत का, व्रत से सम्बन्धित ।

स पु —१ नीच या कमीना पुरुष ।
२ शूद्र पिता एव क्षत्रियाणी माता के ससर्ग से उत्पन्न वर्णसंकर ।
३ वह ब्राह्मण जिसका समय पर यज्ञोपवीत सस्कार न होने के कारण पतन हो गया हो ।
४ सेना मे रहने वाला, सैनिक ।

उ०—नरेस देस देस के निदेस मानतै नही, थिरान थान थान के जवान जानतै नही । धरा अमात्य व्रात्य माक माक माधरै नही, करोर हा अतादि मा खमा खमा करै नही । —ऊ का

ब्राळ-स. स्त्री —१ अग्नि शिखा, आग की लपट ।

उ०—खळ हळा चलै रळतळा खाळ, बीजळा भळा बीमळां ब्राळ।
गूछळा गळां गूथळा गडु, सिंघळा कळा साकळा सह्नु ।
—गु रू. व.

२ वाष्प, भाप ।

ब्राहम—देखो 'ब्रह्म' (रू भे.)

उ०—अलख जिणावे सो जणी, न याजो और कही। जाह कै दळ वळ एतळा 'उदा', ब्राहम सोध्यौ ही लाधो नही। —ऊदोनैण

ब्राहमण, ब्राहमण, ब्राहम्मण, ब्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—१ आणद लखण रोमाचित आसू, वाचत गदगद कठ न वर्णं।
कागळ करि दीधो करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राहमण तणं।
—वेलि

उ०—२ वेदमत्र बोलत, वेद पाठी ब्राहमण। पहरै पट्ट अवोट, द्रव्व आपै घण सघण। —गु रू. व

उ०—३ विकमाईत नाम ब्राहम्मण, वूझै मत्र कुमत्री वमण।
अतह करण दुरम्मति आई, वहै खुरम्मह जेठो भाई।
—गु रू व

उ०—४ ब्रह्मादिक सारीखा ब्राह्मण, धवग्रह कन्हइ अनाथा नाथ। वेई जोडी देखता वरावर, हथलेवइ ले दीधउ हाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्राह्मणी—देखो 'ब्राह्मणी' (रू भे)

ब्राह्मी—देखो 'ब्राह्मी' (रू. भे.)

ब्रिंद—देखो 'व्रद' (रू भे)

उ०—सिध थया रिखि काज सहि, वघ किआ खळ व्रिंद।
—रामरासो

ब्रिंदा—देखो 'व्रदा' (रू भे)

ब्रिंदारक—देखो 'व्रदारक' (रू भे.)

ब्रिकोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू भे)

ब्रिक्ख, ब्रिख-स पु—१ जल, वारि।

२ देखो 'व्रक' (रू भे)

३ देखो 'व्रक्ष' (रू भे.)

उ०—१ ऐहा जोध वहसिया आया, काजळ मसि (क) वरती काया। माथै छत्रस ऊजळ दीठा, वळियै व्रिक्ख किरि हस वयठा।
—गु रू. व

उ०—२ जड ऊवड व्रिक्ख पडत जुआ, है पाए पहाड मसट्ट हुआ।
पतिसाह पयाण पुर किय, असमानक अस्सरिण ऊलटिय।
—गु रू व.

उ०—३ दळ सिणगार कहे 'गोदाउत', थिर जस अथिर कळू थावत। व्रिख छाया आचारि खत्री वस, पातां सू सोभा पावत।
—हरिराम राठोड ऊहड री गीत

उ०—आकुळ थ्या लोक केहवी अचिरज, वछित छाया ए विहित।
सरण हेम दिसि लीघी सूरिज, सूरिज ही व्रिख आसरि। —वेलि

४ देखो 'व्रख' (रू. भे)

५ देखो 'व्रखभ' (रू भे)

६ देखो 'वरस' (रू भे.)

७ देखो 'विस' (रू. भे)

ब्रिखभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे)

उ०—वाणिज विण साह महर हाटा विण, जळ विण गाव वसै जेहडौ। विण गाया व्रिखभ, सभा पडित विण, महमा तीरथ तेहडौ। —त्याग-प्रससा री गीत

उ०—२ काइरं भैरस वीभच्छरस किआ। सुरै सातरस अदभुतरस किआ। दूणिआ करुणारस किआ। वैकुठ सू लिखमी सहित आप विसन गुरड चढि आया। कविळास सू सिघवाहणी चडी सहित ईसर व्रिखभ चढि आया। —र वचनिका

ब्रिखवात—देखो 'व्रखवात' (रू भे) (अ. मा)

ब्रिखसेण, ब्रिखसेन—देखो 'व्रखसेण' (रू भे)

ब्रिख—१ देखो 'व्रक' (रू. भे)

२ देखो 'व्रख' (रू भे)

३ देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

४ देखो 'वरस' (रू भे.)

५ देखो 'विस' (रू भे)

ब्रिज, ब्रिज्ज—देखो 'व्रज' (रू भे)

उ०—अगम पथ इण इसक री, निर्भ ठाकुरै नाहि। डग ग्वाळणिया डोलियौ, सुरपुरपत व्रिज माहि। —र. हमीर

ब्रित—१ देखो 'व्रत' (रू भे)

२ देखो 'व्रत्त' (रू भे)

ब्रिति, ब्रिती, ब्रित्ति, ब्रित्ती—देखो 'व्रति' (रू भे.)

ब्रिथा—देखो 'व्रथा' (रू भे)

उ०—वके वयण लकेस विभीखण, म्है तो भुजवळ मिंता। वांणी व्रिथा हुवै रे वीरा, चित अधकाणी चिंता। —र. रू

ब्रिद—१ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—गुण जाणग लाखो खत्रीआ गुर, असि दातार धमिनमी आसुर। धरती पछिमी करामति-धारी, भूपा रूप लियै व्रिद भारी।
—ल पिं

२ देखो व्रद्ध' (रू भे.)

ब्रिदि, ब्रिदी—१ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—तुं सा ब्रह्म विसन ही तरिया, तैं उर ऊपरि माणस धरिया।
तैं पावइ वडा व्रिदि पाया, तैं जगदीस जिसा नर जाया। —पी. प्र.

३ देखो 'व्रद्धि' (रू भे)

ब्रिद्द—देखो 'विरुद' (रू. भे)

उ०—सिरोमणि साल लिखे ब्रिद 'लाल', लहै खट भाग वणी वधि लाज । ब्रिधी परमांण विसेस वखांण, तपै तुटितांण पट्टा सिरताज ।
—ल पि

ब्रिद्दी—स स्त्री [स. वृद्धि] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता विशेष जो अष्टवर्ग की औषधियों में गिनी जाती है। (अमरत)

ब्रिद्ध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे)

ब्रिद्धि, ब्रिद्धी—१ देखो 'व्रद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रद्धियोग'।

ब्रिध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ नमो मोह माया नको काम क्रोध । नको ब्रिध तरणा, नको बाळ बोध ।
—अनुभववांणी

उ०—चोवीसमां अवतार वेदव्यास जैसे । सो कैसे बाळ वय विद्या बुधि सनकादिकूं जैसे । सुखदेव से तरण ब्रिध सो वेदव्यास जैसे ।
—सू प्र

उ०—३ ब्रिध जूनां दीठो बोहत, वर्न राजि इण भाज । देवां सुत असुहां दमण, उकति दतायो राज ।
—मा वचनिका

उ०—४ तठां उप्रांत सुर, रिम जत्य, गध्रप माहे ब्रिध, जूनो मोहर घणो दीठो । विवध सासत्र रा जाणणहार त्रिपाळदरसी इसा श्रीव्रह्माजी कनै सिधाईजै दरद सुणाईजे, कहे, तिका विध कीजै असुर विहडीजै, कीत कानै सुणीजै ।
—मा वचनिका

ब्रिधप, ब्रिधपण, ब्रिधपणो—स. पु.—वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

उ०—सुजु करै अहीरां सरिस सगाई, ओळाहै राजकुळ इता । ब्रिधपणै मति कोई वेसासो, पांतरिया माता इ पिता ।
—वेलि

ब्रिधि ब्रिधी—देखो 'व्रद्धि' (रू भे.)

उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तंतु ब्रिधि अहोनिसि । मधुकर रसिक सु भगति मजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि ।
—वेलि

ब्रिप, ब्रिप्प—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—रोम तणो रुघनाथ पार सिव सकति न पांमै । नरहर रै नाम में जोनि ब्रह्मा ब्रिप जांमै ।
—पी ग्र

ब्रिप्पि, ब्रिप्पी—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

उ०—ब्रिप्पी लुघ तेरह री वणाउ, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाउ । लुघ सतावीस वैसी लखाइ, सहि सेख लेख सुद्रणि सभाइ ।
—रा पि

ब्रिप्र—देखो 'विप्र' (रू भे)

ब्रिप्रि ब्रिप्री—देखो 'विप्री' (रू भे)

ब्रिसपत, ब्रिसपति, ब्रिसपती—देखो 'व्रहस्पति' (रू भे)

उ०—कहिजै कासु सुकवि धोड गुण नावै धातां, आप अगम जग ईस वेद नह जाणै वाता । तत पांच गुण तीन कोम डिगपाळ कमाली सोम राह छिनि सूर क्रेत ब्रिसपति कोलाळी ।
—पी. ग्र

ब्रिसरोल, ब्रिसमेन—देखो 'व्रसमेन' (रू भे)

ब्रिरिट, ब्रिरटी—देखो 'व्रस्टी' (रू. भे)

उ०—ध्यान भणइ मयनइ उपाय, विद्रिनी ब्रिरिट हुनइ । माहि । मइ कवि नइ रोहा समर, गूटा देव दिगम चउदमइ ।
—का. दे.

ब्रिस्पत, ब्रिस्पति, ब्रिस्पती—देखो 'व्रहस्पति' (रू भे.)

ब्रिह—देखो 'विरह' (रू भे)

उ०—ब्रिह की मारी विरहनी, न मन बैठी धारि । वा ही ह सीतल मारो, वा तो को तन जारि ।
—अनुभववा

उ०—२ ब्रिह की मारी बिरहनी, देह सु भई वदेह । ... जिन सु करै, साई बिना सनेह ।
—अनुभववा

उ०—३ वन वा गुज गु गिरवर मोरां मोया नद नदीना नेर । रगराज इण मावरे धिन उठ रह्यो, ब्रिह जोवनिया री नेर
—रमीमे राज रा ग

ब्रिहत, ब्रिहत्त—देखो 'व्रहत' (रू भे)

ब्रिहदनांण, ब्रिहदमांणु ब्रिहदमांन, ब्रिहदमांनु—देखो 'व्रहदमांनु' (रू भे

ब्रिहनट, ब्रिहन्नट ब्रिहन्नड—देखो 'व्रहन्नट' (रू. भे.)

ब्रीज—देखो 'बीज' (रू भे.)

उ०—हरीया मगी राम है, का सतगुर की सीन । जै पैठे दुर्ग चलै, अर न एको भीख ।
—अनुभववा

उ०—२ बाळापण तरणा गयो, अब बुढापो आय । हरीया सिर कपिया, धीरत भरो नही जाय ।
—अनुभववा

उ०—३ सला जु सीया आयै छै । तांह का हाथ गांधि रा उभा रहे छै । ज्यों मदिवहनो हाथी ब्रीरत दोय चलै । अर मुरड ने कभो रहै । स्यों सतममणीजी ऊमा रहता जाय छै ।
—वेलि

ब्रीयणो, ब्रीयवो—१ देखो 'बीखणो, बीखवो' (रू भे)

२ देखो 'वेगणो, वेलवो' (रू भे.)

ब्रीयणहार, हारो (हारी), ब्रीयणियो—वि० ।

ब्रीतिग्रोडो, ब्रीतियोडो, ब्रीयोडो—भू० का० कृ० ।

ब्रीतोजणो, ब्रीतोजबो—भाव वा० ।

ब्रीलियोडो—१ देखो 'बीलियोडो' (रू भे)

२ देखो 'वेलियोडो' (रू. भे)

(स्त्री ब्रीलियोडी)

ब्रीड, ब्रीडा—स. स्त्री [स] लज्जा, शर्म । (अ मा, एका मा मा रू भे —ब्रीड, ब्रीडा ।

ब्रीडित—वि.—शर्मिन्दा, लज्जित, सकुचित ।,

उ०—सुसमित मुनमित निज वदन सु ब्रीडित, पुंडरीकाग्र प्रसन । प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगालो रातिवा मन ।
—

व्रीवणो, व्रीवबो—देखो 'व्रीवणो, व्रीववो' (रू भे)

व्रीवणहार, हारो (हारी), व्रीवणियो—वि०।

व्रीविप्रोडो व्रीवियोडो व्रीव्योड़ो—भू० का० कृ०।

व्रीवीजणो, व्रीवीजबो—भाव वा०।

व्रीवियोडो - देखो 'व्रीवियोडो' (रू भे)

(स्त्री. व्रीवियोडी)

व्रोद, व्रोध—देखो 'विरोध' (रू. भे)

उ०—पडे ग्रमावड व्रोद छतरधर फिरग पालटे, ग्राटधर क्रोध भुज गयण ग्रडिया। सोध ग्रगरेज हिंदुवाण ग्राया सरव, जोध सिर सेस रै कदम जुडिया। —कोठारिया रावत जोधसिंघ री गीत

व्रोहाळ—देखो 'भ्रू' (मह, रू भे.)

उ०—भालाळ क्रोधाळ म्यूं वंण भणं, मिळ मूंछ व्रोहाळ रोसाळ मुणं। वाइया मत कावळ वेंण वको, धुर ग्राज हुसी मोय हूंत धको। —पा, प्र.

व्हरियो—देखो 'वडियो' (रू भे)

व्हा—देखो 'वा' (रू भे)

व्हाणी—देखो 'वाहणी' (रू भे.)

व्हा—१ देखो 'वा' (रू भे.)

२ देखो वाह' (रू भे.)

उ०—१ महाराणी झिझकनै लारै जोयो। पछै खिलखिल हसी। बोली—व्हा ग्रे काली मासी व्हा! थू ठेट ग्रठा ताई खुर रगडती किसै सुरग रै लोभ सू ग्राई। सिझ्या रा घरै ई मिळ जावती। —फुलवाडी

उ०—२ पण थूं तो म्हारे सूं ई वीस गुणी वत्ती काली निकळी। कूकरियां रै ग्रेंठा हाचळा नै धोवण तौ देणा हा। व्हा ग्रे काळी डीकरी व्हा! कोई देख लियो तो म्हारी तो कीं कोनी, थारी ग्रकल बखाणीला। —फुलवाडी

उ०—पच माय रा माय हसिया। ग्रो राईकी तो साव ग्रबूझ डळो। ग्रे साच बोल जाता तो पछै धादो ई काई वात रो हो। व्हा, व्हेगी इणरै हाथा न्याव ? ग्रेंडी न्याव निवेडण जोग ग्रकल व्हेती तो तडो लिया लरडियां रै लारै ढरर-ढरर करतो क्यू रवडतो। —फुलवाडी

व्हार—१ देखो 'वहार' (रू. भे.)

२ देखो 'बाहर' (रू भे)

व्हाळी—देखो 'वाळी' (ग्रल्पा, रू. भे.)

व्हाळो—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

व्हालो—देखो 'वालो' (रू भे)

उ०—१ झावकि पइठी झाळि, सुंदरि दीठी सास विण। जिमि व्हाला विच बाळ, प्रिव जोई मारू नही। —ढो. मा.

उ०—२ राणी माडया ढपला नै सोगी रे, माहरै व्हालां को पडे वियोगी। हा हा करू हिवै कासू रे, माहरौ हिवडो फटै मा मू। —जयवाणी

उ०—३ माहरै ग्राथा-पोथी हुती, दी थी तमारै हाथो जो। जिम जाणो तिम राखजो, व्हाली माहरी ग्राथी जी। —जयवाणी

उ०—४ क्रोधी काम विगाडदै, रीस किया देही छीजै रे। व्हाला पण वेरी हुवै, ऐसो काम किम कीजै रे। —जयवाणी

उ०—५ लुगाया रै कोई री टावर घोड़ियै मैं सूतो तो कोई री वारै रमण नै गयोडो, तो कोई रै चूल्है पर घाट हिलाया बिना ग्रोदो व्है ही पण सगळा नै ग्राप ग्राप री जीव व्हालो। —रातवासो

व्हेणो, व्हेबो—१ देखो 'होणो, होवो' (रू. भे)

उ०—१ काई भरोसो रीसा बळती ग्रवकै लोठो लेयनै म्हारा माथा मैं नी ठरकाय दै। पण इसी कोई वात नीं व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो वाता करण लाग्यो। —ग्रमरचूनडी

उ०—२ ग्रन्नदाता ग्राप महीनो भर व्हियो नित रोज किला मैं पधारो। घात व्हेणी व्हेती तो कदेई व्है जाती। धनजी-भीमजी माथै ग्रापरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण काई ए दो ग्रादमी दरबार सूं ई वत्ता सामरथ है। —ग्रमरचूनडी

उ०—३ ज्यूं त्यू करनै दिन ऊगो। मिनख दिसा फराखती जावण लाग्या तो मसाण कानी गिरजडा भमता निगै ग्राया। देखण वाळा नै वहम व्हियो। जाय नै देखै तो बाटका रै ग्रोळै लाभू रै छोकरा री लास पडी। —ग्रमरचूनडी

उ०—४ ग्रागै ई हाथ ग्रर लारै ई हाथ, रक्षा करै गोरखनाथ। चूंधी सी क ग्रास्यां भारत री नकसी व्है जिसो चे'रो, जावडा दोनूं कानी बैठोडा, जाणै एक कानी हिंदमहासागर ग्रर दूजै कानी, बंगाळ री खाडी। —ग्रमरचूनड़ी

उ०—५ ठीक तो थूं उणरो बाप है। बडी खतरनाक छोरो है। उण माथै तीन सौ दो पूरी लागू व्हेग्यो है, बचणो मुसकल है। —ग्रमरचूंनडी

उ०—६ सिरिमानजी ग्रो तीन सौ दो रो मामलो है, ग्रापनै ध्यान व्हेणो चाहिजै। तीन हजार सूं एक पाई कम नीं चालै। —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—७ उणनै दाग दिया नै दो दिन व्हियां पछै ई धणी-लुगाई दोन्यू जणा मूंडा मे ग्रन्न रो दाणो तकात नी घाल्यो। —ग्रमरचूंनडी

उ०—८ भूपति इम भाखियो, हमैं सुभडा किम व्हीजै। बोल्या भड्ड धजवज, कमधपति सोच न कीजै। —मे. म.

उ०—९ घेरो नेन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर यार करै उण पै'लीज प्रतापसिंह री तलवार चुई सो ठाकर री माथो वाढ नाख्यो। दुस्मिया रै मन चीतो व्हो। —अमरचूनड़ी

उ०—१० जिण दिन सू म्हूं इणरी मा नै खांधै चढायनै आयो हूं, उण दिन सूं लगायनै आज दिन तांई ओ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री वाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलाई व्हो। पण इणरै जावण में जेज नी व्है। —अमरचूनड़ी

उ०—११ तनक सुधा लिय अगर तन, पारस अय परसत। व्है कथण इण दुत हरण, द्रग 'प्रताप' दरसत। —जैतदांन बारहठ

उ०—१२ इण उपरांत ई हसनै बोल्या—बो रोज गावो जिको चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दो नी लाडू। आज तो म्हू साचाणी चाकरी माथै पहिर छियो हूं। —अमरचूनड़ी

उ०—१३ सिळह भड़ा व्है फैजमा, गुडि पाखर गजपट्ट। सूं वाधो दखणादि दळ, राठोड़ै, रिणपट्ट। —गु. रू. बं.

उ०—१४ म्हनै तो हाल तांई भरोसो नी व्है, कै थो सपनो है कै साच है म्हारी लाडल बेटी थू दुहाग री चिंता मत करजै। राजावां रा तो ऐ ठाट छिया करै। —फुलवाड़ी

उ०—१५ भलो—व्है तो इसा बरस आगलो कै म्हारा सूं बत्तो विदरूप अणियारो इण दुनिया में अबै ई कोई होवैला। पण आज म्हारो भरम मिटग्यो। थैनै सुधो तो आज ई'लो किणी रूपाळा सू रूपाळा राजकंवर नै ई नीं अबो व्हैला। —फुलवाड़ी

२ देखो 'बहणो, वहवो' (रू. भे.)

म्हैणहार, हारो (हारी), म्हैणियो—वि०।

म्हिवोड़ो, म्हैवोड़ो—भू० का० कृ०।

म्हैईजणो, म्हैईजबो—भाव वा०।

म्हैंपोड़ो—१ देखो 'म्हापोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बहिपोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री म्हैंपोड़ी)